Index starts from page 715. For jumping to the letter you need, type [x] in search field. x is the letter you want. Example: [k]

!!श्रीः ॥

# बृहद्धातुकुसुमाकरः

## अथ भ्वादयः ( १ )

( १ ) **भू—सत्तायाम्** (होना)। (अक.। अनि.। पर.।) (**अधि**—सत्ता चलाना, **अनु**—समझना, अनुभव करना, **अभि**—जीतना, पीड़ा देना, **उत्**—उत्पन्न होना, **परा**—पराभव करना, **प्र**—प्रकट होना, निकलना, **प्रति**—बदले में देना, **परि**—अपमान करना, तिरस्कार करना, घेरना, **वि**—आश्रय देना, पालन करना, **व्यति**—परस्पर मित्र होना, **सम्**—उत्पन्न होना, हो सकना।)

| | एक. | द्वि. | बहु. | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | भवति[१] | भवतः[२] | भवन्ति[३] | प्र.पु. |
| | भवसि | भवथः | भवथ | म.प्र. |
| | भवामि[४] | भवावः | भवामः | उ.पु. |
| लिट् | बभूव[५] | बभूवतुः | बभूवुः | प्र. |
| | बभूविथ | बभूवथुः | बभूव | म. |
| | बभूव | बभूविव | बभूविम | उ. |
| लुट् | भविता | भवितारौ | भवितारः | प्र. |
| | भवितासि | भवितास्थः | भवितास्थ | म. |
| | भवितास्मि | भवितास्वः | भवितास्मः | उ. |

१ भू + ति इति स्थिते 'कर्तरि शप्' इति शप्प्रत्यये + भू अ ति इति जाते 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' इति गुणे अवादेशे च 'भवति' इति रूपम्। अत्र 'भव' इत्येतदङ्गम्।

२ भव + तस् 'ससजुषो रुः' इति रुत्वे, 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इति विसर्गे।

३ 'अतो गुणे' इति पररूपमेकादेशः।

४ 'अतो दीर्घो यञि' इति दीर्घः।

५ भू + णल् 'भुवो वुग् लुङ्लिटोः' इति वुगागमे, भूव + अ 'लिटि धातो' रिति द्वित्वम्। भूव् भूव् अ 'हलादिः शेषः' भूभूव् अ 'ह्रस्वः' इति ह्रस्वे, भु भूव् अ। 'भवतेरः' इति उकारस्य अकारे, भभूव् अ, 'अभ्यासे चर्च' इति भस्य बकारे, बभूव।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृट् | भविष्यति | भविष्यतः | भविष्यन्ति | प्र. |
| | भविष्यसि | भविष्यथः | भविष्यथ | म. |
| | भविष्यामि | भविष्यावः | भविष्यामः | उ. |
| लोट् | भवतु-भवतात् | भवताम् | भवन्तु | प्र. |
| | भव-भवतात् | भवतम् | भवत | म. |
| | भवानि | भवाव | भवाम | उ. |
| लङ् | अभवत् | अभवताम् | अभवन् | प्र. |
| | अभवः | अभवतम् | अभवत | म. |
| | अभवम् | अभवाव | अभवाम | उ. |
| वि.लि. | भवेत् | भवेताम् | भवेयुः | प्र. |
| | भवेः | भवेतम् | भवेत | म. |
| | भवेयम् | भवेव | भवेम | उ. |
| आ.लि. | भूयात् | भूयास्ताम् | भूयासुः | प्र. |
| | भूयाः | भूयास्तम् | भूयास्त | म. |
| | भूयासम् | भूयास्व | भूयास्म | उ. |
| लुङ् | अभूत् | अभूताम् | अभूवन् | प्र. |
| | अभूः | अभूतम् | अभूत | म. |
| | अभूवम् | अभूव | अभूम | उ. |
| लृङ् | अभविष्यत् | अभविष्यताम् | अभविष्यन् | प्र. |
| | अभविष्यः | अभविष्यतम् | अभविष्यत | म. |
| | अभविष्यम् | अभविष्याव | अभविष्याम | उ. |

**कृत्सु**—भवितव्यम्,[१] भवनीयम्, भव्यम्,[२] भाव्यम्,[३] भूतः,[४] भूतवान्,[५] भवन्,[६] भवन्ती,[७] भविष्यन्[८], भविष्यती,[९] भविष्यन्ती, भवितुम्,[१०] भूत्वा,[११]

१ वलाद्यार्धधातुकत्वादिट्।

२ अचो यत्।

३ 'ओरावश्यके'। इति ण्यत्, णित्वात् 'अचोऽञ्णिति' इति वृद्धिः।

४ 'क्तक्तवतू निष्ठा' कित्वान्न गुणः।

५ प्रायः क्तप्रत्ययस्येव क्तवतु प्रत्ययस्यापि प्रक्रिया।

६ 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे'। भू + अत् इति स्थिते 'कर्तरि शप्' इति शपि, भू + अ + अत् इति स्थिते 'सार्वधातुके' इति गुणे, अवादेशे च भव + अत् इति जाते 'अतो गुणे' इति पररूपे 'भवत् इति प्रातिपदिकम्।

७ 'उगितश्च' इति ङीप्, शप्श्यनोर्नित्यम्' इति नित्यं नुम्।

८ तौ सत् शतृशानचौ 'सत्' संज्ञौ स्तः। लृटः सद्वा।

९ 'आच्छीनद्योर्नुम्' इति वा नुम्।

१० 'तुमुन्ण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम्' समानकर्तृकेषु तुमुन्, वलाद्यार्धधातुकत्वादिटि, मान्तत्वात् 'कृन्मेजन्त'; इत्यव्यत्वम्।

११ समानकर्तृकयोः पूर्वकाले' इति कित्वान्न गुणः। श्र्युकः किति' इति इडभावः 'क्त्वातो सुन्कसुनः' इत्यव्ययत्वम्। 'अव्ययकृतो भावे' इति भावार्थकोऽयम्।

सम्भूय,[1] भविता,[2] भवित्री[3], भूष्णूः[4], भविष्णुः, भावुकः, विभूः, प्रभूः, विभुः, प्रभुः, भूतिः, भावः, प्रभवः, भवः, भवनम्, भुवनम्, भूमिः, अद्भुतः। एवं सर्वेभ्योऽपि धातुभ्यः यथासम्भवं कृत्याः कृतः उणादयश्चोह्याः।

**भावे**—१ भूयते[5]। २ बभूवे। ३ भविता[6]। ४ भाविष्यते, भविष्यते। ५ भूयताम्। ६ अभूयत। ७ बभूवे। ८ भाविषीष्ट-भविषीष्ट। ९ अभावि[7]। १० अभाविष्यत- अभविष्यत।

कर्मणि

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | अनुभूयते | अनुभूयेते | अनुभूयन्ते | प्र. |
| | अनुभूयसे | अनुभूयेथे | अनुभूयध्वे | म. |
| | अनुभूये | अनुभूयावहे | अनुभूयामहे | उ. |
| लिट् | अनुबभूवे | अनुबभूवाते | अनुबभूविरे | प्र. |
| | अनुबभूविषे | अणुबभूवाथे | अनुबभूविध्वे | म. |
| | अनुबभूवे | अनुबभूविवहे | अनुबभूविमहे। | उ. |
| लुट् | अनुभाविता | अनुभावितारौ | अनुभावितारः। | प्र. |
| | अनुभावितासे | अणुभावितासाथे | अनुभावितासाध्वे | म. |
| | अनुभाविताहे | अनुभावितास्वहे | अनुभावितास्महे | उ. |

चिण्वद्भावाभावपक्षे—अनुभविता, अनुभवितासे, अनुभवितास्महे इत्यादि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृट् | अनुभाविष्यते, | अनुभाविष्येते | अनुभाविष्यन्ते | प्र. |
| | अनुभाविष्यसे | अनुभाविष्येथे | अनुभाविष्यध्वे। | म. |
| | अनुभाविष्ये | अनुभाविष्यावहे | अनुभाविष्यामहे। | उ. |

चिण्वद्भावाभावपक्षे—अनुभविष्यते, अनुभविष्येते इत्यादि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लोट् | अनुभूयताम् | अनुभूयेताम् | अनुभूयन्ताम् | प्र. |
| | अनुभूयस्व | अनुभूयेथाम् | अनुभूयध्वम् | म. |
| | अनुभूयै | अनुभूयावहै | अनुभूयामहै | उ. |
| लङ् | अन्वभूयत | अनुभूयेताम् | अन्वभूयन्त | प्र. |
| | अन्वभूयथाः | अन्वभूयेथाम् | अन्वभूयध्वम् | म. |
| | अन्वभूये | अन्वभूयावहि | अन्वभूयामहि | उ. |

१ समासेऽनञ्पूर्वेक्त्वो ल्यप्।
२ ण्वुल्तृचौ इति तृच्।
३ 'ऋन्नेभ्यो ङीप्' इति ङीप्।
४ 'ग्लास्थश्च स्नुः' चादूभुवः, 'श्र्युकः' इति नेट्।
५ यकः कित्वान्न गुणः।
६ स्यसिच्सीयुट्तासिषु भावकर्मणोरुपदेशेऽज्झनग्रहदृशां वा चिण्वदिट् च (६-४-६२) उपदेशे योऽच् तदन्तानां हनादीनां च चिणीवाङ्गकार्यं वा स्यात् स्यादिषु परेषु भावकर्मणोर्गम्यमानयोः स्यादीनामिडागमश्च। अयमिट् चिण्वद्भावसन्नियोगशिष्टत्वात्तदभावे न। चिण्वद्भावपक्षे 'अचोऽञ्णिति' इति वृद्धिः। चिण्वद्भावाभावपक्षे तु न वृद्धिः, भविता इत्येव।
७ 'चिण् भावकर्मणोः' च्लेश्चिण् स्याद् भावकर्मवाचिनि तशब्दे परे। 'चिणो लुक्' चिणः परस्य त शब्दस्य लुक्।

| वि. लि. | अनुभूयेत | अनुभूयेयाताम् | अनुभूयेरन् | प्र. |
|---|---|---|---|---|
| | अनुभूयेथाः | अनुभूयेयाथाम् | अनुभूयेध्वम् | म. |
| | अनुभूयेय | अनुभूयेवहि | अनुभूयेमहि | उ. |
| आ. लि. | अनुभाविषीष्ट | अनुभाविषीयास्ताम् | अनुभाविषीरन् | प्र. |
| | अनुभाविष्ठाः | अनुभाविषीयास्थाम् | अनुभाविषीढ्वम्-ध्वम् | म. |
| | अनुभाविषीय | अनुभाविषीवहि | अनुमाविषीमहि | उ. |

पक्षे—अनुभविषीष्टेत्यादि।

| लुङ् | अन्वभावि | अन्वभाविषाताम् | अन्वभाविषत | प्र. |
|---|---|---|---|---|
| | अन्वभाविषिष्ठाः | अन्वभाविषाथाम् | अन्वभाविढ्वम्-ध्वम् | म. |
| | अन्वभाविषि | अन्वभाविष्वहि | अन्वभाविष्महि | उ. |

पक्षे—अन्वभवि अन्वभविषाताम् अन्वभविषत इत्यादि।

| लृङ् | अन्वभाविष्यत | अन्वभाविष्येताम् | अन्वभाविष्यन्त | प्र. |
|---|---|---|---|---|
| | अन्वभाविष्यथाः | अन्वभाविष्येथाम् | अन्वभाविष्यध्वम् | म. |
| | अन्वभाविष्ये | अन्वभाविष्यावहि | अन्वभाविष्यामहि | उ. |

पक्षे—अन्वभविष्यत इत्यादि।

## णिजन्ते

| लट् | भावयति[1] | भावयतः | भावयन्ति | प्र. |
|---|---|---|---|---|
| | भावयसि | भावयथः | भावयथ | म. |
| | भावयामि | भावयावः | भावयामः | उ. |
| लिट् | भावयामास[2] | भावयामासतुः | भावयामासुः | प्र. |
| | भावयामासिथ | भावयामासथुः | भावयामास | म. |
| | भावयामास | भावयामासिव | भावयामासिम | उ. |

पक्षे—भावयाञ्चकार भावयाम्बभूव इत्यादि।

| लुट् | भावयिता | भावयितारौ | भावयितारः | प्र. |
|---|---|---|---|---|
| | भावयितासि | भावयितास्थः | भावयितास्थ | म. |
| | भावयितास्मि | भावयितास्वः | भावयितास्मः | उ. |
| लृट् | भावयिष्यति | भावयिष्यतः | भावयिष्यन्ति | प्र. |
| | भावयिष्यसि | भावयिष्यथः | भावयिष्यथ | म. |
| | भावयिष्यामि | भावयिष्यावः | भावयिष्यामः | उ. |
| लोट् | भावयतु-भावयतात् | भावयताम् | भावयन्तु | प्र. |
| | भावय | भावयतम् | भावयत | म. |
| | भावयानि | भावयाव | भावयाम | उ. |

१. भू + (णिच्) इ इति स्थिते, 'अचोऽञ्णिति' इति वृद्धौ, भौ + इ इति भवति। औकारस्य आवादेशे, भावि इति भवति। 'सनाद्यन्ता धातवः' इति णिजन्तस्य 'भावि' इत्यस्य धातुत्वात् लडादयः। तत्र लटि 'कर्तरि शप्' इति शपि, भावि + अ + ति इति जाते, वकारोत्तरेकारस्य 'सार्वधातुके--' ति गुणे अयादेशे 'भावय' इत्यङ्ग [illegible]। ततो भावयति इत्यादि।

२. 'भावि' इत्यस्य अनेकाच्त्वात् 'कास्प्रत्ययादाम्--' इत्याम् कृभ्वस्त्यनुप्रयोगश्च।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लङ् | अभावयत् | अभावयताम् | अभावयन् | प्र. |
| | अभावयः | अभावयतम् | अभावयत | म. |
| | अभावयम् | अभावयाव | अभावयाम | उ. |
| वि. लि. | भावयेत् | भावयेताम् | भावयेयुः | प्र. |
| | भावयेः | भावयेतम् | भावयेत | म. |
| | भावयेयम् | भावयेव | भावयेम | उ. |
| आ. लि. | भाव्यात् | भाव्यास्ताम् | भाव्यासुः | प्र. |
| | भाव्याः | भाव्यास्तम् | भाव्यास्त | म. |
| | भाव्यासम् | भाव्यास्व | भाव्यास्म | उ. |
| लुङ् | अबीभवत्[1] | अबीभवताम् | अभीभवन् | प्र. |
| | अबीभवः | अभीभवतम् | अभीभवत | म. |
| | अबीभवम् | अबीभवाव | अबीभवाम | उ. |
| लृङ् | अभावयिष्यत् | अभावयिष्यताम् | अभावयिष्यन् | प्र. |
| | अभावयिष्यः | अभावयिष्यतम् | अभावयिष्यत | म. |
| | अभावयिष्यम् | अभावयिष्याव | अभावयिष्याम | उ. |

**आत्मनेपदपक्षे**—१. भावयते[2]। २ भावयाञ्चक्रे। ३. भावयिता। ४. भावयिष्यते। ५. भावयताम्। ६. अभावयत। ७. भावयेत। ८. भावयिषीष्ट। ९. अबीभवत। १०. अभावयिष्त। इत्यादि। **कृत्सु**—भावयितव्यः, भावनीयः, भाव्यः, भावितः, भावयन्, भावयन्ती, भावयमानः, भावयितुम्, भावयित्वा, परिभाव्य। इत्यादि।

## सन्नन्ते

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | बुभूषति[3] | बुभूषतः | बुभूषन्ति | प्र. |
| | बुभूषसि | बुभूषथः | बुभूषथ | म. |
| | बुभूषामि | बुभूषावः | बुभूषामः | उ. |
| लिट् | बभूषाञ्चकार | बभूषाञ्चक्रतुः | बभूषाञ्चक्रुः | प्र. |
| | बभूषाञ्चकर्थ | बभूषाञ्चक्रथुः | बभूषाञ्चक्र | म. |
| | बभूषाञ्चकार | बभूषाञ्चकृव | बभूषाञ्चकृम | उ. |

एवं—बभूषाम्बभूव, बभूषामास इत्यादि।

१ भू + इ (णिच्) लुङ् इति स्थिते। 'च्लि लुङि' (३-१-४१) 'णिश्री--' (३-१-४८) ति चङि 'चङि' (६-१-११) इति द्वित्वे उत्तरखण्डस्य वृद्ध्यवादेशयोः भू भाव अत् इति जाते, ततः 'णौ चङ्युपधाया ह्रस्व' (७-४-१) इति उपधाह्रस्वे अभ्यासे अकाराभावेन 'सन्यतः' इत्यस्याप्रवृत्या 'ओः पुयण्ज्यपरे' (७-४-८०) इति अभ्योकारस्य इकारे, 'दीर्घो लघोः' (७-४-९४) इति दीर्घे अडागमे च 'अबीभवत्' इति रूपम्।

२ 'णिचश्च' (१-३-७४) इत्यात्मनेपदम्।

३ 'पूर्ववत्सनः' (१-३-६२) इति परस्मैपदम्। 'इको झल्, इगन्तझलादिः सन् कित् स्यात्। कित्वात्र गुणः। 'सनिग्रहगुहोश्च' ग्रहे गुहेः उगन्तादेकाचश्च सन इण्न स्यात्। इति नेट्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुट् | बुभूषिता | बुभूषितारौ | बुभूषितारः | प्र. |
| | बुभूषितासि | बुभूषितास्थः | बुभूषितास्थ | म. |
| | बुभूषितास्मि | बुभूषितास्वः | बुभूषितास्मः | उ. |
| लृट् | बुभूषिष्यति | बुभूषिष्यतः | बुभूषिष्यन्ति | प्र. |
| | बुभूषिष्यसि | बुभूषिष्यथः | बुभूषिष्यथ | म. |
| | बुभूषिष्यामि | बुभूषिष्यावः | बुभूषिष्यामः | उ. |
| लोट् | बुभूषतु-तात् | बुभूषताम् | बुभूषन्तु | प्र. |
| | बुभूष-तात् | बुभूषतम् | बुभूषत | म. |
| | बुभूषाणि | बुभूषाव | बुभूषाम | उ. |
| लङ् | अबुभूषत् | अबुभूषताम् | अबुभूषन् | प्र. |
| | अबुभूषः | अबुभूषतम् | अबुभूषत | म. |
| | अबुभूषम् | अबुभूषाव | अबुभूषाम | उ. |
| वि. लि. | बुभूषेत् | बुभूषेताम् | बुभूषेयुः | प्र. |
| | बुभूषेः | बुभूषेतम् | बुभूषेत | म. |
| | बुभूषेयम् | बुभूषेव | बुभूषेम | उ. |
| आ. लि. | बुभूष्यात् | बुभूष्यास्ताम् | बुभूष्यासुः | प्र. |
| | बुभूष्याः | बुभूष्यास्तम् | बुभूष्यास्त | म. |
| | बुभूष्यासम् | बुभूष्यास्व | बुभूष्यास्म | उ. |
| लुङ् | अबुभूषीत् | अबुभूषिष्टाम् | अबुभूषिषुः | प्र. |
| | अबुभूषीः | अबुभूषिष्टम् | अबुभूषिष्ट | म. |
| | अबुभूषिषमं | अबुभूषिष्व | अबुभूषिष्म | उ. |
| लृङ् | अबुभूषिष्यत् | अबुभूषिष्यताम् | अबुभूषिष्यन् | प्र. |
| | अबुभूषिष्यः | अबुभूषिष्यतम् | अबुभूषिष्यत | म. |
| | अबुभूषिष्यम् | अबुभूषिष्याव | अबुभूषिष्याम | उ. |

**कृत्सु-** बुभूषिंतव्यम्, बुभूषणीयम्, बुभूषन्, बुभूषितम्, बुभूषितुम्, बुभूषित्वा, सम्बुभूष्य, बुभूषुः, बुभूषा।

## यङि

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | बोभूयते[1] | बोभूयेते | बोभूयन्ते | प्र. |
| | बोभूयसे | बोभूयेथे | बोभूयध्वे | म. |
| | बोभूये | बोभूयावहे | बोभूयामहे | उ. |
| लिट् | बोभूयाञ्चक्रे | बोभूयाञ्चक्राते | बोभूयाञ्चक्रिरे | प्र. |
| | बोभूयाञ्चकृषे | बोभूयाञ्चक्राथे | बोभूयाञ्चकृढ्वे | म. |
| | बोभूयाञ्चक्रे | बोभूयाञ्चकृवहे | बोभूयाञ्चकृमहे | उ. |

१ यङो ङित्वात् 'अनुदात्तङित आत्मनेपदम्' इति आत्मनेपदम्। सन्नन्तवत् प्रक्रिया।

एवं—बोभूयामास, बोभूयाम्बभूव इत्यादि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुट् | बोभूयिता | बोभूयितारौ | बोभूयितारः | प्र. |
| | बोभूयितासे | बोभूयितासाथे | बोभूयिताध्वे | म. |
| | बोभूयिताहे | बोभूयितास्वहे | बोभूयितास्महे | उ. |
| लृट् | बोभूयिष्यते | बोभूयिष्येते | बोभूयिष्यन्ते | प्र. |
| | बोभूयिष्यसे | बोभूयिष्येथे | बोभूयिष्यध्वे | म. |
| | बोभूयिष्ये | बोभूयिष्यावहे | बोभूयिष्यामहे | उ. |
| लोट् | बोभूयताम् | बोभूयेताम् | बोभूयन्ताम् | प्र. |
| | बोभूयस्व | बोभूयेथाम् | बोभूयध्वम् | म. |
| | बोभूयै | बोभूयावहै | बोभूयामहै | उ. |
| लङ् | अबोभूयत | अबोभूयेताम् | अबोभूयन्त | प्र. |
| | अबोभूयथाः | अबोभूयेथाम् | अबोभूयध्वम् | म. |
| | अबोभूये | अबोभूयावहि | अबोभूयामहि | उ. |
| वि. लि. | बोभूयेत | बोभूयेयाताम् | बोभूयेरन् | प्र. |
| | बोभूयेथाः | बोभूयेयाथाम् | बोभूयेध्वम् | म. |
| | बोभूयेय | बोभूयेवहि | बोभूयेमहि | उ. |
| आ. लि. | बोभूयिषीष्ट | बोभूयिषीयास्ताम् | बोभूयिषीरन् | प्र. |
| | बोभूयिषीष्ठाः | बोभूयिषीयास्थाम् | बोभूयिषीध्वम् | म. |
| | बोभूयिषीय | बोभूयिषीवहि | बोभूयिषीमहि | उ. |
| लुङ् | अबोभूयिष्ट | अबोभूयिषाताम् | अबोभूयिषत | प्र. |
| | अबोभूयिष्ठाः | अबोभूयिषाथाम् | अबोभूयिध्वम् | म. |
| | अबोभूयिषि | अबोभूयिष्वहि | अबोभूयिष्महि | उ. |
| लृङ् | अबोभूयिष्यत | अबोभूयिष्येताम् | अबोभूयिष्यन्त | प्र. |
| | अबोभूयिष्यथाः | अबोभूयिष्येथाम् | अबोभूयिष्यध्वम् | म. |
| | अबोभूयिष्ये | अबोभूयिष्यावहि | अबोभूयिष्यामहि | उ. |

**कृत्सु**—बोभूयितव्यम्, बोभूयनीयम्, बोभूय्यम्, बोभूयितम्, बोभूयमानः, बोभोयितुम्, बोभूयित्वा, परिबोभूय्य।

## यङ्लुकि

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | बोभवीति-[1]बोभोति | बोभूतः[2] | बोभुवति[3] | प्र. |
| | बोभवीषि-बोभोषि | बोभूथः | बोभूथ | म. |
| | बोभवीमि बोभोमि | बोभूवः | बोभूमः | उ. |

१ 'चर्करीतं परस्मैपदमदादिवच्च' इति परस्मैपदम्। 'यङो वा' यङन्तात् परस्य हलादेः पितः सार्वधातुकस्य ईड्वा स्यात्।

२ अपित्वादीट् न।

३ 'अदभ्यस्तात्' अभ्यस्तात् परस्य झस्य अत् स्यात्। 'अचिश्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ' (६-४-७७) इति उवङ्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लिट् | बोभवाञ्चकार[१] | बोभवाञ्चक्रतुः | बोभवाञ्चक्रुः | प्र. |
| | बोभवाञ्चकर्थ | बोभवाञ्चक्रथुः | बोभवाञ्चक्र | म. |
| | बोभवाञ्चकार-कर | बोभवाञ्चकृव | बोभवाञ्चकृम | उ. |

एवं—बोभवामास, बोभवाम्बभूव । इत्यादि ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुट् | बोभविता[२] | बोभवितारौ | बोभवितारः | प्र. |
| | बोभवितासि | बोभवितास्थः | बोभवितास्थ | म. |
| | बोभवितास्मि | बोभवितास्वः | बोभवितास्मः | उ. |
| लृट् | बोभविष्यति | बोभविष्यतः | बोभविष्यन्ति | प्र. |
| | बोभविष्यसि | बोभविष्यथः | बोभविष्यथ | म. |
| | बिभविष्यामि | बोभविष्यावः | बोभविष्यामः | उ. |
| लोट् | बोभवीतु-बोभोतु-बोभूतात् | बोभूताम् | बोभुवतु | प्र. |
| | बोभोहि-बोभूतात् | बोभूतम् | बोभूत | म. |
| | बोभवानि | बोभवाव | बोभवाम | उ. |
| लङ् | अबोभवीत्-अबोभोत् | अबोभूताम् | अबोभवुः | प्र. |
| | अबोभवीः-अबोभोः | अबोभूतम् | अबोभूत | म. |
| | अबोभवम् | अबोभूव | अबोभूम | उ. |
| वि. लि. | बोभूयात् | बोभूयाताम् | बोभूयुः | प्र. |
| | बोभूयाः | बोभूयातम् | बोभूयात | म. |
| | बोभूयाम् | बोभूयाव | बोभूयाम | उ. |
| आ. लि. | बोभूयात् | बोभूयास्ताम् | बोभूयासुः | प्र. |
| | बोभूयाः | बोभूयास्तम् | बोभूयास्त | म. |
| | बोभूयासम् | बोभूयास्व | बोभूयास्म | उ. |
| लुङ् | अबोभूवीत्-अबोभोत् | अबोभूताम् | अबोभवुः | प्र. |
| | अबोभूवीः-अबोभोः | अबोभूतम् | अबोभूत | म. |
| | अबोभूवम् | अबोभूव | अबोभूम | उ. |
| लृङ् | अबोभविष्यत् | अबोभविष्यताम् | अबोभविष्यन् इत्यादि । | |

**कृत्सु**—बोभवितव्यम्, बोभवनीयम्, बोभुवितः, बोभुवत्, बोभुवती, बोभूत्वा, परिबोभूय, बोभवितुम् । इत्यादि ।

**कर्मव्यतिहारे**—१. व्यतिभवते, व्यतिभवेते, व्यतिभवन्ते । २. व्यतिबभूवे, व्यतिबभूवाते, व्यतिबभूविरे । ३. व्यतिभविता, व्यतिभवितासे । ४. व्यतिभविष्यते । ५. व्यतिभवताम् । ६. व्यत्यभवत । ७. व्यतिभवेत । ८. व्यतिभविषीष्ट । ९. व्यत्यभविष्ट । व्यत्यभविष्ठाः । व्यत्यभविषि । १०. व्यत्यभविष्यत ।

१ अनेकाच्त्वादाम् - कृभ्वस्त्यनुप्रयोगश्च ।
२ वलाद्यार्धधातुकत्वादिट् ।

सत्ताद्यर्थनिर्देशश्चोपलक्षणम्। यागात्स्वर्गो भवतीत्यादौ उत्पद्यत इत्याद्यर्थनिर्देशात्। उपसर्गास्तु विद्यमानस्यैव अर्थविशेषस्य द्योतकाः। **सम्भवति** = उत्कटैककोटिकसंशयविषयो भवति। **पराभवति** = पराजयते। **अनुभवति** = उपभुङ्क्ते। **अभिभवति** = हिनस्ति पराजयते वा। **उद्भवति** = उत्पद्यते। **परिभवति** = तिरस्करोति। **प्रतिभवति** = उत्तमर्णाधमर्णयोर्मध्यस्थो भवति।

**(२) एध—वृद्धौ** (बढ़ना)। अकर्मक। सेट्। आत्मनेपदी।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | एधते | एधेते | एधन्ते[1] | प्र. |
| | एधसे | एधेथे | एधध्वे | म. |
| | एधे | एधावहे[2] | एधामहे | उ. |
| लिट् | एधाञ्चक्रे[3] | एधाञ्चक्राते | एधाञ्चक्रिरे | प्र. |
| | एधाञ्चकृषे | एधाञ्चक्राथे | एधाञ्चकृढ्वे[4] | म. |
| | एधाञ्चक्रे | एधाञ्चकृवहे | एधाञ्चकृमहे | उ. |

एवम्—एधामास। एधाम्बभूव[5] इत्यादि बोध्यम्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुट् | एधिता[6] | एधितारौ | एधितारः | प्र. |
| | एधितासे | एधितासाथे | एधिताध्वे | म. |
| | एधिताहे | एधितास्वहे | एधितास्महे | उ. |
| लृट् | एधिष्यते | एधिष्येते | एधिष्यन्ते | प्र. |
| | एधिष्यसे | एधिष्येथे | एधिष्यध्वे | म. |
| | एधिष्ये | एधिष्यावहे | एधिष्यामहे | उ. |
| लोट् | एधताम् | एधेताम् | एधन्ताम् | प्र. |
| | एधस्व | एधेथाम् | एधध्वम् | म. |
| | एधै | एधावहै | एधामहै | उ. |
| लङ् | ऐधत[7] | ऐधेताम् | ऐधन्त | प्र. |
| | ऐधथा | ऐधेथाम् | ऐधध्वम् | म. |
| | ऐधे | ऐधावहि | ऐधामहि | उ. |
| वि. लि. | एधेत | एधेयाताम् | एधेरन् | प्र. |
| | एधेथाः | एधेयाथाम् | एधेयध्वम् | म. |
| | एधेय | एधेवहि | एधेमहि | उ. |

१ एध + अन्ते इति स्थिते 'अतो गुणे' (६-१-९६) इति पररूपमेकादेशः। 'एधन्ते'।

२ 'अतो दीर्घो यञि' (७-३-१०१) इति दीर्घः।

३ कृधातोर्द्वित्वे कृकृ इति जाते, 'उरत्' इति ऋकारस्य अकारे, ततः चुत्वे, 'इको यणचि' इति ऋकारस्य रेफे च 'चक्रे' इति भवति। एधां + चक्रे = एधाञ्चक्रे।

४ 'इणः षीध्वंलुङ्लिटां धोऽङ्गात्' इण्णन्तादङ्गात् परेषां षीध्वंलुङ्लिटां धस्य मूर्धन्यः स्यात्। इति धस्य ढः।

५ भवतेरस्तेश्च परस्मैपदित्वाद् अत्रापि परस्मैपदमेव।

६ तासः स्यस्य च वलाद्यार्धधातुकत्वादिट्।

७ 'आडजादीनाम्' अजादीनामाट् स्याल्लुङादिषु। आ + ए + त = 'आटश्च' आटोऽचि परे वृद्धिरेकादेशः स्यात्, इति वृद्धौ 'ऐधत'।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आ ले. | एधिषीष्ट[1] | एधिषीयास्ताम् | एधिषीरन् | प्र. |
| | एधिषीष्ठाः | एधिषीयास्थाम् | एधिषीध्वम् | म. |
| | एधिषीय | एधिषीवहि | एधिषीमहि | उ. |
| लुङ् | ऐधिष्ट | ऐधिषाताम् | ऐधिषत[2] | प्र. |
| | ऐधिष्ठाः | ऐधिषाथाम् | ऐधिढ्वम्-ध्वम्[3] | म. |
| | ऐधिषि | ऐधिष्वहि | ऐधिषमहि | उ. |
| लृङ् | ऐधिष्यत | ऐधिष्येताम् | ऐधिष्यन्त | प्र. |
| | ऐधिष्यथाः | ऐधिष्येथाम् | ऐधिष्यध्वम् | म. |
| | ऐधिष्ये | ऐधिष्यावहि | ऐधिष्यामहि | उ. |

**भावे**—१ एध्यते। ५ एध्यताम्। ६ ऐध्यत। ७ एध्येत लिडादिषु कर्तृवत्। ९ ऐधि।

णिचि

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | एधयति | एधयतः | एधयन्ति | प्र. |
| | एधयासि | एधयथः | एधयथ | म. |
| | एधयामि | एधयावः | एधयामः | उ. |
| लिट् | एधयाञ्चकार | एधयाञ्चक्रतुः | एधयाञ्चक्रुः | प्र. |
| | एधयाञ्चकर्थ | एधयाञ्चक्रथुः | एधयाञ्चक्र | म. |
| | एधयाञ्चकार-चकर | एधयाञ्चकृव | एधयाञ्चकृम | उ. |

एवम्—एधयाम्बभूव। एधयामास।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुट् | एधयिता | एधयितारौ | एधयितारः | प्र. |
| | एधियितासि | एधयितास्थः | एधयितास्थ | म. |
| | एधयितास्मि | एधयितास्वः | एधयितास्मः | उ. |
| लृट् | एधयिष्यति | एधयिष्यतः | एधयिष्यन्ति | प्र. |
| | एधयिष्यसि | एधयिष्यथः | एधयिष्यथ | म. |
| | एधयिष्यामि | एधयिष्यावः | एधयिष्यामः | उ. |
| लोट् | एधयतु-तात् | एधयताम् | एधयन्तु | प्र. |
| | एधय-तात् | एधयतम् | एधयत | म. |
| | एधयानि | एधयाव | एधयाम | उ. |
| लङ् | ऐधयत् | ऐधयताम् | ऐधयन् | प्र. |
| | ऐधयः | ऐधयतम् | ऐधयेत | म. |
| | ऐधयम् | ऐधयाव | ऐधयाम | उ. |
| वि. लि. | एधयेत् | एधयेताम् | एधयेयुः | प्र. |
| | एधयेः | एधयेतम् | एधयेत | म. |
| | एधयेयम् | एधयेव | एधयेम | उ. |

१ प्रत्यावयवत्वात् 'आदेशप्रत्यययोः' इति षत्वम्।

२ 'आत्मनेपदेष्वनतः' अनकारात्परस्य आत्मनेपदेषु झंस्य 'अत्' इत्यादेशः स्यात्।

३ 'इणः षीध्वम्–' इत्यत्र इड्भिन्न एवं इणिह गृह्यत इति मते तु 'ध्वम्' इत्यपि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आ. लि. | एध्यात् | एध्यास्ताम् | एध्यासुः | प्र. |
| | एध्याः | एध्यास्तम् | एध्यास्त | म. |
| | एध्यासम् | एध्यास्व | एध्यास्म | उ. |
| लुङ् | ऐदिधत् | ऐदिधताम् | ऐदिधन् | प्र. |
| | ऐदिधः | ऐदिधतम् | ऐदिधत | म. |
| | ऐदिधम् | ऐदिधाव | ऐदिधाम | उ. |
| लृङ् | ऐधयिष्यत् | ऐधयिष्यताम् | ऐधयिष्यन् | प्र. |
| | ऐधयिष्यः | ऐधयिष्यतम् | ऐधयिष्यत | म. |
| | ऐधयिष्यम् | ऐधयिष्याव | ऐधयिष्याम | उ. |

**आत्मनेपदपक्षे**—१ एधयते । २ एधयाञ्चक्रे । ३ एधयिता । ४ एधयिष्यते । ५ एधयताम् । ६ ऐधयत । ७ एधयेत । ८ एधयिषीष्ट । ९ ऐदिधत । १० ऐधयिष्यत । **सनि**—१ एदिधिषते २ एदिधिषाञ्चक्रे । ८ एदिधिषीष्ट । अजादित्वात् यङ्यङ्लुकौ न स्तः । **कृत्सु**—एधनीयम्, एधनम्, एधकः, एधः, एधः-एधसी, एधिता, एधितः, क्तिन्नास्ति अ-एधा, एधितुम्, एधितव्यम्, एध्यमानः, एत्-एध्-एधौ, एधः, ईषदेधः-दुरेधः स्वेधः, एधित्वा, समेध्य, एध्यः, एधमानः, एधिष्यमाणः,ण्यन्तस्य तु एधयिता, एधना, एधयितुम्, एधयितव्यः, एधयित्वा, एधयन्, एधयमानः, एधयिष्यन्, एधयिष्यमाणः इत्यादि ।

( ३ ) **स्पर्ध—सङ्घर्षे**। सङ्घर्षः =पराभिभवेच्छा (संघर्ष करना) अकर्म.। सेट्। आत्मने.। कर्मणो[1] धात्वर्थेनोपसङ्ग्रहात् अकर्मकत्वम् ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | स्पर्धते | स्पर्धेते | स्पर्धन्ते | प्र. |
| | स्पर्धसे | स्पर्धेथे | स्पर्धध्वे | म. |
| | स्पर्धे | स्पर्धावहे | स्पर्धामहे | उ. |
| लिट् | पस्पर्धे | पस्पर्धाते | पस्पर्धिरे | प्र. |
| | पस्पर्धिषे | पस्पर्धाथे | पस्पर्धिध्वे | म. |
| | पस्पर्धे | पस्पर्धिवहे | पस्पर्धिमहे | उ. |
| लुट् | स्पर्धिता | स्पर्धितारौ | स्पर्धितारः | प्र. |
| | स्पर्धितासे | स्पर्धितासाथे | स्पर्धिताध्वे | म. |
| | स्पर्धिताहे | स्पर्धितास्वहे | स्पर्धितास्महे | उ. |
| लृट् | स्पर्धिष्यते | स्पर्धिष्येते | स्पर्धिष्यन्ते | प्र. |
| | स्पर्धिष्यसे | स्पर्धिष्येथे | स्पर्धिष्यध्वे | म. |
| | स्पर्धिष्ये | स्पर्धिष्यावहे | स्पर्धिष्यामहे | उ. |
| लोट् | स्पर्धताम् | स्पर्धेताम् | स्पर्धन्ताम् | प्र. |
| | स्पर्धस्व | स्पर्धेथाम् | स्पर्धध्वम् | म. |
| | स्पर्धै | स्पर्धावहै | स्पर्धामहै | उ. |

१ धातोरर्थान्तरे वृत्तेः धात्वर्थेनोपसंग्रहात् । प्रसिद्धेरविवक्षातः कर्मणोऽकर्मिका क्रिया ॥ वाक्यपदीयम् ३-८८ ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लङ् | अस्पर्धत | अस्पर्धेताम् | अस्पर्धन्त | प्र. |
| | अस्पर्धथाः | अस्पर्धेथाम् | अस्पर्धध्वम् | म. |
| | अस्पर्धे | अस्पर्धावहि | अस्पर्धामहि | उ. |
| वि लि. | स्पर्धेत | स्पर्धेयाताम् | स्पर्धेरन् | प्र. |
| | स्पर्धेथाः | स्पर्धेयाथाम् | स्पर्धेध्वम् | म. |
| | स्पर्धेय | स्पर्धेवहि | स्पर्धेमहि | उ. |
| आ. लि. | स्पर्धिषीष्ट | स्पर्धिषीयास्ताम् | स्पर्धिषीरन् | प्र. |
| | स्पर्धिषीष्ठाः | स्पर्धिषीयास्थाम् | स्पर्धिषीध्वम् | म. |
| | स्पर्धिषीय | स्पर्धिषीवहि | स्पर्धिषीमहि | उ. |
| लुङ् | अस्पर्धिष्ट | अस्पर्धिषाताम् | अस्पर्धिषत | प्र. |
| | अस्पर्धिष्ठाः | अस्पर्धिषाथाम् | अस्पर्धिध्वम् | म. |
| | अस्पर्धिषि | अस्पर्धिष्वहि | अस्पर्धिष्महि | उ. |
| लृङ् | अस्पर्धिष्यत | अस्पर्धिष्येताम् | अस्पर्धिष्यन्त | प्र. |
| | अस्पर्धिष्यथाः | अस्पर्धिष्येथाम् | अस्पर्धिष्यध्वम् | म. |
| | अस्पर्धिष्ये | अस्पर्धिष्यावहे | अस्पर्धिष्यामहि | उ. |

**भावे**—१ स्पर्ध्यते। २ पस्पर्धे। ६ अस्पर्ध्यत। ९ अस्पर्धि।

णिचि

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | स्पर्धयति | स्पर्धयतः | स्पर्धयन्ति | प्र. |
| | स्पर्धयसि | स्पर्धयथः | स्पर्धयथ | म. |
| | स्पर्धयामि | स्पर्धयावः | स्पर्धयामः | उ. |
| लिट् | स्पर्धयाञ्चकार | स्पर्धयाञ्चक्रतुः | स्पर्धयाञ्चक्रुः | प्र. |
| | स्पर्धयाञ्चकर्थ | स्पर्धयाञ्चक्रथुः | स्पर्धयाञ्चक्र | म. |
| | स्पर्धयाञ्चकार-चकर | स्पर्धयाञ्चकृव | स्पर्धयाञ्चकृम | उ. |
| लुट् | स्पर्धयिता | स्पर्धयितारौ | स्पर्धयितारः | प्र. |
| | स्पर्धयितासि | स्पर्धयितास्थः | स्पर्धयितास्थ | म. |
| | स्पर्धयितास्मि | स्पर्धयितास्वः | स्पर्धयितास्मः | उ. |
| लृट् | स्पर्धयिष्यति | स्पर्धयिष्यतः | स्पर्धयिष्यन्ति | प्र. |
| | स्पर्धयिष्यसि | स्पर्धयिष्यथः | स्पर्धयिष्यथ | म. |
| | स्पर्धयिष्यामि | स्पर्धयिष्यावः | स्पर्धायिष्यामः | उ. |
| लोट् | स्पर्धयतु-तात् | स्पर्धयताम् | स्पर्धयन्तु | प्र. |
| | स्पर्धय-तात् | स्पर्धयतम् | स्पर्धयत | म. |
| | स्पर्धयानि | स्पर्धयाव | स्पर्धयाम | उ. |
| लङ् | अस्पर्धयत् | अस्पर्धयताम् | अस्पर्धयन् | प्र. |
| | अस्पर्धयः | अस्पर्धयतम् | अस्पर्धयत | म. |
| | अस्पर्धयम् | अस्पर्धयाव | अस्पर्धयाम | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| वि. लि. | स्पर्धयेत् | स्पर्धयेताम् | स्पर्धयेयुः | प्र. |
| | स्पर्धयेः | स्पर्धयेतम् | स्पर्धयेत | म. |
| | स्पर्धयेयम् | स्पर्धयेव | स्पर्धयेम | उ. |
| आ. लि. | स्पर्ध्यात् | स्पर्ध्यास्ताम् | स्पर्ध्यासुः | प्र. |
| | स्पर्ध्याः | स्पर्ध्यास्तम् | स्पर्ध्यास्त | म. |
| | स्पर्ध्यासम् | स्पर्ध्यास्व | स्पर्ध्यास्म | उ. |
| लुङ् | अपस्पर्धत् | अपस्पर्धताम् | अपस्पर्धन् | प्र. |
| | अपस्पर्धः | अपस्पर्धतम् | अपस्पर्धत | म. |
| | अपस्पर्धम् | अपस्पर्धाव | अपस्पर्धाम | उ. |
| लृङ् | अस्पर्धयिष्यत् | अस्पर्धयिष्यताम् | अस्पर्धयिष्यन् | प्र. |
| | अस्पर्धयिष्यः | अस्पर्धयिष्यतम् | अस्पर्धयिष्यत | म. |
| | अस्पर्धयिष्यम् | अस्पर्धयिष्याव | अस्पर्धयिष्याम | उ. |

**आत्मनेपदपक्षे**—१ स्पर्धयते। २ स्पर्धयाञ्चक्रे। ३ स्पर्धयिता। ४ स्पर्धयिष्यते। ५ स्पर्धयताम्। ६ अस्पर्धयत। ७ स्पर्धयेत। ८ स्पर्धयिषीष्ट। ९ अस्पर्धत। १० अस्पर्धयिष्यत।

**सनि**—१ पिस्पर्धिषते। २ पिस्पर्धिषाञ्चक्रे-मास-बभूव। ३ स्पर्धिषिता। ९ अपिस्पर्धिषिष्ट। **यङि**—१ पास्पर्ध्यते। २ पास्पर्धाञ्चक्रे। ८ पास्पर्धिषीष्ट। ९ अपास्पर्धिष्ट। **यङ्लुकि**—१ पास्पर्धीति - पास्पर्द्धि। पास्पर्द्ध। पास्पर्धति। २ पास्पर्धाञ्चकार। ६ अपास्पर्त्-अपास्पद। **म.** अपास्पाः अपास्पर्द्। **कृत्सु**—स्पर्धितव्यम्, स्पर्धनीयम्, स्पर्धनः[१], स्पर्धः, स्पर्ध्यम्, स्पर्धितः, स्पर्धकः, स्पर्धी, स्पर्धिता, स्पर्धितम्,[२] स्पर्धा,[३] स्पर्धितुम्, स्पर्धित्वा, आस्पर्ध्य, स्पर्धमानः, स्पर्धिष्यमाणः, स्पर्धयितव्यम्, स्पर्धयमानः, पिस्पर्धिषा, पिस्पर्धिषुः, **आ** = आस्पालने, आस्पर्धते। आस्पर्धा। स्पर्धालुः,[४] पस्पर्धी[५]।

**(४) गाधृ—प्रतिष्ठालिप्सयोर्ग्रन्थे च।** प्रतिष्ठा - ख्यातिः, लिप्सा-लब्धुमिच्छा प्राप्त्यमिलापा। (यश प्राप्त करना, लेने की अभिलाषा करना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | गाधते | गाधेते | गाधन्ते | प्र. |
| | गाधसे | गाधेथे | गाधध्वे | म. |
| | गाधे | गाधावहे | गाधामहे | उ. |
| लिट् | जगाधे | जगाधाते | जगाधिरे | प्र. |
| | जगाधिषे | जगाधाथे | जगाधिध्वे | म. |
| | जगाधे | जगाधिवहे | जगाधिमहे | उ. |

१ 'अनुदात्तेतश्च' (३-२-१४९) इति ताच्छीलादौ युच् प्रत्ययः।
२ 'क्तोऽधिकरणे च' (३-२-७६) इति कर्तृभावाधिकरणेषु क्तप्रत्ययः।
३ 'गुरोश्च हलः' (३-३-१०३) इति स्त्रियामकारप्रत्ययः।
४ 'अत्र स्पर्धा लात्यादते मितद्रादित्वाद् (३-३-१८०) डुः' इति धातुका व्याख्यायाम् (१-२)।
५ णिनि प्रत्यये रूपमेवम्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुट् | गाधिता | गाधितारौ | गाधितारः | प्र. |
| | गाधितासे | गाधितासाथे | गाधिताध्वे | म. |
| | गाधिताहे | गाधितास्वहे | गाधितास्महे | उ. |
| लृट् | गाधिष्यते | गाधिष्येते | गाधिष्यन्ते | प्र. |
| | गाधिष्यसे | गाधिष्येथे | गाधिष्यध्वे | म. |
| | गाधिष्ये | गाधिष्यावहे | गाधिष्यामहे | उ. |
| लोट् | गाधताम् | गाधेताम् | गाधन्ताम् | प्र. |
| | गाधस्व | गाधेथाम् | गाधध्वम् | म. |
| | गाधै | गाधावहै | गाधामहै | उ. |
| लङ् | अगाधत | अगाधेताम् | अगाधन्त | प्र. |
| | अगाधथाः | अगाधेथाम् | अगाधध्वम् | म. |
| | अगाधे | अगाधावहि | अगाधामहि | उ. |
| वि. लि. | गाधेत | गाधेयाताम् | गाधेरन् | प्र. |
| | गाधेथाः | गाधेयाथाम् | गाधेध्वम् | म. |
| | गाधेय | गाधेवहि | गाधेमहि | उ. |
| आ. लि. | गाधिषीष्ट | गाधिषीयास्ताम् | गाधिषीरन् | प्र. |
| | गाधिषीष्ठाः | गाधिषीयास्थाम् | गाधिषीध्वम् | म. |
| | गाधिषीय | गाधिषीवहि | गाधिषीमहि | उ. |
| लुङ् | अगाधिष्ट | अगाधिषाताम् | अगाधिषत | प्र. |
| | अगाधिष्ठाः | अगाधिषाथाम् | अगाधिध्वम् | म. |
| | अगाधिषि | अगाधिष्वहि | अगाधिष्महि | उ. |
| लृङ् | अगाधिष्यत | अगाधिष्येताम् | अगाधिष्यन्त | प्र. |
| | अगाधिष्यथाः | अगाधिष्येथाम् | अगाधिष्यध्वम् | म. |
| | अगाधिष्ये | अगाधिष्यावहि | अगाधिष्यामहि | उ. |

**कर्मणि**—गाध्यते। जगाधे। गाध्यताम्। जगाधि।

### णिचि

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | गाधयति | गाधयतः | गाधयन्ति | प्र. |
| | गाधयसि | गाधयथः | गाधयथ | म. |
| | गाधयामि | गाधयावः | गाधयामः | उ. |
| लिट् | गाधयाञ्चकार | गाधयाञ्चक्रतुः | गाधयाञ्चक्रुः | प्र. |
| | गाधयाञ्चकर्थ | गाधयाञ्चक्रथुः | गाधयाञ्चक्र | म. |
| | गाधयाञ्चकार-चकर | गाधयाञ्चकृव | गाधयाञ्चकृम | उ. |
| लुट् | गाधयिता | गाधयितारौ | गाधयितारः | प्र. |
| | गाधयितासि | गाधयितास्थः | गाधयितास्थ | म. |
| | गाधयितास्मि | गाधयितास्वः | गाधयितास्मः | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृट् | गाधयिष्यति | गाधयिष्यतः | गाधयिष्यन्ति | प्र. |
| | गाधयिष्यसि | गाधयिष्यथः | गाधयिष्यथ | म. |
| | गाधयिष्यामि | गाधयिष्यावः | गाधयिष्यामः | उ. |
| लोट् | गाधयतु-तात् | गाधयताम् | गाधयन्तु | प्र. |
| | गाधय-तात् | गाधयतम् | गाधयत | म. |
| | गाधयानि | गाधयाव | गाधयाम | उ. |
| लङ् | अगाधयत् | अगाधयताम् | अगाधयन् | प्र. |
| | अगाधयः | अगाधयतम् | अगाधयत | म. |
| | अगाधयम् | अगाधयाव | अगाधयाम | उ. |
| वि. लि. | गाधयेत् | गाधयेताम् | गाधयेयुः | प्र. |
| | गाधयेः | गाधयेतम् | गाधयेत | म. |
| | गाधयेयम् | गाधयेव | गाधयेम | उ. |
| आ. लि. | गाध्यात् | गाध्यास्ताम् | गाध्यासुः | प्र. |
| | गाध्याः | गाध्यास्तम् | गाध्यास्त | म. |
| | गाध्यासम् | गाध्यास्व | गाध्यास्म | उ. |
| लुङ् | अजगाधत् | अजगाधताम् | अजगाधन् | प्र. |
| | अजगाधः | अजगाधतम् | अजगाधत | म. |
| | अजगाधम् | अजगाधाव | अजगाधाम | उ. |
| लृङ् | अगाधयिष्यत् | अगाधयिष्यताम् | अगाधयिष्यन् | प्र. |
| | अगाधयिष्यः | अगाधयिष्यतम् | अगाधयिष्यत | म. |
| | अगाधयिष्यम् | अगाधयिष्याव | अगाधयिष्याम | उ. |

**आत्मनेपदपक्षे**—१ गाधयते। २ गाधयाञ्चक्रे। ३ गाधयिता। ४ गाधयिष्यते। ५ गाधयताम्। ६ अगाधयत। ७ गाधयेत। ८ गाधयिषीष्ट। ९ अजगाधत। १० अगाधयिष्यत। इत्यादि। **सनि**—१ जिगाधिषते। २ जिगाधिषांचक्रे। ३ जिगाधिषिता। ४ जिगाधिषिष्यते। ५ जिगधिषिताम्। ६ जिगधिषत। ७ जिगधिषेत। ८ जिगधिषिषीष्ट। ९ अजिगाधिषिष्ट। १० अजगाधिषिष्यत। **यङि**—१ जागाध्यते। २ जागाधांचक्रे। ३ जागाधिता। ४ जागाधिष्यते। ५ जागाध्यताम्। ६ अजागाध्यत। ७ जाघाध्यत। ८ जागाधिषीष्ट। ९ अजाधिष्ट। १० अजागाधिष्यत। **यङ्लुकि**—१ जागाधीति - जागाद्धि। २ जागाधाञ्चकार। ३ जागाधिता। ४ जागाधिष्यति। ५ जागाधीतु जागाद्धु-तात्। ६ अजागाधीत् अजाधात्। ७ जागाध्यात्। ८ जागाध्यात्। ९ अजागाधीत्। १० अजागाधिष्यत्। **कृत्सु**—गाधितव्यम्, गाधनीयम्, गाध्यम्, गाधमानः, गाधितुम्, गाधित्वा, प्रगाध्य, गाधनः, गाधा।

(५) **वाधृ—लोडने**। लोडनं प्रतिघातः (रोकना, बाधा देना, दुःख देना) सकर्म.। सेट्। आत्मने.। सर्वं गाधति (४) वत्।

**(६-७) नाथृ-नाधृ—याच्ञोपतापैश्वर्याशीष्षु**। याच्ञा = भिक्षा। उपतापो रोगः। (याचना करना, रोगी होना, श्रीमान् होना, आशीर्वाद देना।) सकर्म.। सेट्। आशीरर्थे आत्मने.। याच्ञोपतापैश्वर्येषु परस्मैपदम्।

१ नाथते। २ ननाथे। ३ नाथिता। ४ नाथिष्यते। ५ नाथताम्। ६ अनाथत्। ७ नाथेत। नाथिषीष्ट। ८ अनाथिष्ट। ९ अनाथिष्यत। शेषं सर्वं 'गधाति' (४) वत्। एवं नाधत्यदयः।

**कृत्सु**—नाथनीयम्, नाथनम्, नाथः, नाथकः, नाथी, नाथितः, नाथा, नाथितुम्, नाथितव्यम्, नाथित्वा, सन्नाथ्य, नाथ्यम्, नाथमानः, नाथ्यमानः, नाथिष्यमाणः। एवं नाधनीयम्, नाधनम् इत्यादि।

**(८) दध—धारणे**। धारणमिह धरणम्।(धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना) सकर्म.। सेट्। आत्मने.।

१. दधते दधेते दधन्ते **प्र.** दधसे दधेथे दधध्वे **म.** दधे दधावहे दधामहे **उ.** २. दधे दधाते देधिरे **प्र.** देधिषे देधाथे देधिध्वे **म.** देधे देधिवहे देधिमहे **उ.** ३. दधिता **प्र.** दधितासे **म.** दधिताहे **उ.** ४. दधिष्यते **प्र.** दधिष्यसे **म.** दधिष्ये **उ.** ५. दधताम् दधेताम् दधन्ताम् **प्र.** दधस्व दधेथाम् दधेध्वम् **म.** दधै दधावहै दधामहै **उ.** ६. अदधत अदधेताम् अदधन्त **प्र.** अदधथाः अदधेथाम् अदधध्वम् **म.** अदधे अदधावहि अदधामहि **उ.** ७. दधेत दधेयाताम् दधेरन् **प्र.** दधेथाः दधेयाथाम् दधेध्वम् **म.** दधेय दधेवहि दधेमहि **उ.** ८. दधिषीष्ट दधिषीयास्ताम् दधिषीरन् **प्र.** दधिषीष्ठाः दधिषीयास्थाम् दधिषीध्वम् **म.** दधिषीय दधिषीवहि दधिषीमहि **उ.** ९. अदधिष्ट अदधिषाताम् अदधिषत **प्र.** अदधिष्ठाः अदधिषाथाम् अदधिढ्वम्-ध्वम् **म.** अदधिषि अदधिष्वहि अदधिष्महि **उ.** १०. अदधिष्यत **प्र.** अदधिष्यथाः **म.** अदधिष्ये **उ.**।

**कर्मणि**—१ दध्यते ५ दध्यताम् ६ अदध्यत। ७ दध्येत। लिडादिषु देधे इत्यादि कर्तरिवत्। ९ अदाधि अदाधिषाताम् इत्यादि विशेषः। **णिचि**—१ दाधयति-ते। २ दाधयाञ्चकार-चक्रे। ९ अदीदधत्-त। **सनि**—दिदधिषते। २ दिदधिषाञ्चक्रे। ९ अदिदधिषिष्ट। **म.** ढ्वम्-ध्वम्। **यङि**—दादध्यते। २ दादधाञ्चक्रे। ३ दादधिता। ९ अदादधिष्ट। **म.** ढ्वम्-ध्वम्। **यङ्लुकि**—दादधीति-दादद्धि इत्यादि। **कृत्सु**—दधितव्यम्, दधनीयम्, दाध्यम्, दधितः, दधमानः, दधित्वा, सन्दध्य, दधितुम्, दधनः,[1] क्विपि - सुधत्[2] -सुधद् - सुधधौ - सुधधः। इत्यादि।

**(९) स्कुदि—आप्रवणे**। आप्रवणमुत्प्लवनमुद्धरणं च। (चलना, कूदना, ऊपर उठाना) आद्ये अकर्मकः। द्वितीये सकर्मकः। सेट्। आत्मने.।

---

१ 'अनुदात्तेश्च हलादेः' (३-२-१४९) इति ताच्छील्ये युच्।
२ क्विपि 'एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः' (८-२-३७) इति भष्भावः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | स्कुन्दते | स्कुन्देते | स्कुन्दन्ते | प्र. |
| | स्कुन्दसे | स्कुन्देथे | स्कुन्दध्वे | म. |
| | स्कुन्दे | स्कुन्दावहे | स्कुन्दामहे | उ. |
| लिट् | चुस्कुन्दे | चुस्कुन्दाते | चुस्कुन्दिरे | प्र. |
| | चुस्कुन्दिषे | चुस्कुन्दाथे | चुस्कुन्दिध्वे | म. |
| | चुस्कुन्दे | चुस्कुन्दिवहे | चुस्कुन्दिमहे | उ. |
| लुट् | स्कुन्दिता | स्कुन्दितारौ | स्कुन्दितारः | प्र. |
| | स्कुन्दितासे | स्कुन्दितासाथे | स्कुन्दिताध्वे | म. |
| | स्कुन्दिताहे | स्कुन्दितास्वहे | स्कुन्दितास्महे | उ. |
| लृट् | स्कुन्दिष्यते | स्कुन्दिष्येते | स्कुन्दिष्यन्ते | प्र. |
| | स्कुन्दिष्यसे | स्कुन्दिष्येथे | स्कुन्दिष्यध्वे | म. |
| | स्कुन्दिष्ये | स्कुन्दिष्यावहे | स्कुन्दिष्यामहे | उ. |
| लोट् | स्कुन्दताम् | स्कुन्देताम् | स्कुन्दन्ताम् | प्र. |
| | स्कुन्दस्व | स्कुन्देथाम् | स्कुन्दध्वम् | म. |
| | स्कुन्दै | स्कुन्दावहै | स्कुन्दामहै | उ. |
| लङ् | अस्कुन्दत | अस्कुन्देताम् | अस्कुन्दन्त | प्र. |
| | अस्कुन्दथाः | अस्कुन्देथाम् | अस्कुन्दध्वम् | म. |
| | अस्कुन्दे | अस्कुन्दावहि | अस्कुन्दामहि | उ. |
| वि. लि. | स्कुन्देत | स्कुन्देयाताम् | स्कुन्देरन् | प्र. |
| | स्कुन्देथाः | स्कुन्देयाथाम् | स्कुन्देध्वम् | म. |
| | स्कुन्देय | स्कुन्देवहि | स्कुन्देमहि | उ. |
| आ. लि. | स्कुन्दिषीष्ट | स्कुन्दिषीयास्ताम् | स्कुन्दिषीरन् | प्र. |
| | स्कुन्दिषीष्ठाः | स्कुन्दिषीयास्थाम् | स्कुन्दिषीध्वम् | म. |
| | स्कुन्दिषीय | स्कुन्दिषीवहि | स्कुन्दिषीमहि | उ. |
| लुङ् | अस्कुन्दिष्ट | अस्कुन्दिषाताम् | अस्कुन्दिषत | प्र. |
| | अस्कुन्दिष्ठाः | अस्कुन्दिषाथाम् | अस्कुन्दिध्वम्-ढ्वम् | म. |
| | अस्कुन्दिषि | अस्कुन्दिष्वहि | अस्कुन्दिष्महि | उ. |
| लृङ् | अस्कुन्दिष्यत | अस्कुन्दिष्येताम् | अस्कुन्दिष्यन्त | प्र. |
| | अस्कुन्दिष्यथाः | अस्कुन्दिष्येथाम् | अस्कुन्दिष्यध्वम् | म. |
| | अस्कुन्दिष्ये | अस्कुन्दिष्यावहि | अस्कुन्दिष्यामहि | उ. |

**कर्मणि**—स्कुन्द्यते। ५ स्कुन्द्यताम्। ९ अचुस्कुन्दि। लिडादिषु कर्तारिवत्। **णिचि**—स्कुन्दयति-ते। **सनि**—चुस्कुन्दिषते। २ चुस्कुन्दिषाञ्चक्रे। ९ अचुस्कुन्दिषिष्ट। **यङि**—चोस्कुन्द्यते। २ चोस्कुन्द्याञ्चक्रे। ९ अचोस्कन्दिष्ट। **यङ्लुकि**—चोस्कुन्दीति-चोस्कुन्ति। अचोस्कुन्। **कृत्सु**—स्कुन्दितव्यः, स्कुन्दनीयः, स्कुन्द्यः, स्कुन्दितः, स्कुन्दमानः,

स्कुन्दनः,[१] स्कुन्दः, स्कुन्दितुम्, स्कुन्दित्वा, प्रस्कुन्द्य। स्कुन्दा,[२] कुन्दम्[३]।

(१०) **श्विदि—श्वैत्ये।** शुक्लीभवनम्। (सफेद होना, शुभ्र होना) अकर्म.। सेट। आत्मने.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | श्विन्दते | श्विन्देते | श्विन्दन्ते | प्र. |
| | श्विन्दसे | श्विन्देथे | श्विन्दध्वे | म. |
| | श्विन्दे | श्विन्दावहे | श्विन्दामहे | उ. |
| लिट् | शिश्विन्दे | शिश्विन्दाते | शिश्विन्दिरे | प्र. |
| | शिश्विन्दिषे | शिश्विन्दाथे | शिश्विन्दिध्वे | म. |
| | शिश्विन्दे | शिश्विन्दिवहे | शिश्विन्दिमहे | उ. |
| लुट् | श्विन्दिता | श्विन्दितारौ | श्विन्दितारः | प्र. |
| | श्विन्दितासे | श्विन्दितासाथे | श्विन्दिताध्वे | म. |
| | श्विन्दिताहे | श्विन्दितास्वहे | श्विन्दितास्महे | उ. |
| लृट् | श्विन्दिष्यते | श्विन्दिष्येते | श्विन्दिष्यन्ते | प्र. |
| | श्विन्दिष्यसे | श्विन्दिष्येथे | श्विन्दिष्यध्वे | म. |
| | श्विन्दिष्ये | श्विन्दिष्यावहे | श्विन्दिष्यामहे | उ. |
| लोट् | श्विन्दताम् | श्विन्देताम् | श्विन्दन्ताम् | प्र. |
| | श्विन्दस्व | श्विन्देथाम् | श्विन्दध्वम् | म. |
| | श्विन्दै | श्विन्दावहै | श्विन्दामहै | उ. |
| लङ् | अश्विन्दत | अश्विन्देताम् | अश्विन्दत | प्र. |
| | अश्विन्दथाः | अश्विन्देथाम् | अश्विन्दध्वम् | म. |
| | अश्विन्दे | अश्विन्दावहि | अश्विन्दामहि | उ. |
| वि. लि. | श्विन्देत | श्विन्देयाताम् | श्विन्देरन् | प्र. |
| | श्विन्देथाः | श्विन्देयाथाम् | श्विन्देध्वम् | म. |
| | श्विन्देय | श्विन्देवहि | श्विन्देमहि | उ. |
| आ. लि. | श्विन्दिषीष्ट | श्विन्दिषीयास्ताम् | श्विन्दिषीरन् | प्र. |
| | श्विन्दिषीष्ठाः | श्विन्दिषीयास्थाम् | श्विन्दिषीढ्वम् | म. |
| | श्विन्दिषीय | श्विन्दिषीवहि | श्विन्दिषीमहि | उ. |
| लुङ् | अश्विन्दिष्ट | अश्विन्दिषाताम् | अश्विन्दिषत | प्र. |
| | अश्विन्दिष्ठाः | अश्विन्दिषाथाम् | अश्विन्दिष्यध्वम्-ढ्वम् | म. |
| | अश्विन्दिषि | अश्विन्दिष्वहि | अश्विन्दिष्महि | उ. |

१ 'अनुदात्तेतश्च—' (३-२-१४९) इति युच्प्रत्ययः।
२ 'धातोरिदित्वेन उपदेशावस्थायाम् नुमो विधानात् धातोर्गुरुत्वात् 'गुरोश्च हलः' (३-३-१०३) इति स्त्रियामकारो लघूपधगुणाभावश्च।
३ पचाद्यचि सकारस्य बाहुलकात् लोपे रूपमिति क्षीरस्वामी।

| लृङ् | अशिवन्दिष्यत | अशिवन्दिष्येताम् | अशिवन्दिष्यन्त | प्र. |
|---|---|---|---|---|
| | अशिवन्दिष्यथाः | अशिवन्दिष्येथाम् | अशिवन्दिष्यध्वम् | म. |
| | अशिवन्दिष्ये | अशिवन्दिष्यावहि | अशिवन्दिष्यामहि | उ. |

**णिचि**—१ शिवन्दयते-शिवन्दयति। २ शिवन्दयाञ्चक्रे-चकार। ३ शिवन्दयिता। ४ शिवन्दयिष्यते-ति। ५ शिवन्दयताम्-शिवन्दयतु। ६ अशिवन्दयत-त्। ७ शिवन्दयेत-त्। ८ शिवन्दयिषीष्ट-शिवन्द्यात्। ९ अशिवन्दत-त्। १० अशिवन्दयिष्यत-त्। **सनि**—१ शिशिवन्दिषते। ९ अशिशिवन्दिषिष्ट। १० अशिशिवन्दिषिष्यत। **यङि**—१ शेशिवन्द्यते। ९ अशेशिवन्दिष्ट। १० अशेशिवन्दिष्यत। **युङ्लुकि**—१ शेशिवन्दीति-शेशिवन्ति। २ शेशिवन्दाञ्चकार। ३ शेशिवन्दिता। ४ शेशिवन्दिष्यति। ५ शेशिवन्दीतु-शेशिवन्तु। ६ अशेशिवन्दीत्-अशेशिवन्। ७ शेशिवद्यात् शेशिवद्याताम् शेशिवन्धुः। ८ शेश्विन्द्यात्। शेशिवन्द्यास्ताम् शेशिवन्द्यासुः। ९ अशेशिवन्दीत्। १० अशेशिवन्दिष्यत्। **कृत्सु**—शिवन्दितव्यः, शिवन्दनीयः, शिवन्दितः, शिवन्दमानः, शिवन्दनः, शिवन्दितुम्, शिवन्दित्वा, शिवन्दकः -न्दिका, शिशिवन्दिषकः -षिका।

**(११) वदि—अभिवादनस्तुत्योः**। (सत्कारपूर्वक कुशल प्रश्न पूछना, नमस्कार करना, स्तुति करना) सकर्म.। सेट्। आत्मने.।

१ वन्दते। २ ववन्दे। ३ वन्दिता। ४ वन्दिष्यते। ५ वन्दताम्। ६ अवन्दत। ७ वन्देत। ८ वन्दिषीष्ट। ९ अवन्दिष्ट। १० अवन्दिष्यत।

**कर्मणि**—वन्द्यते। **णिचि**—वन्दयति-ते। **सनि**—विवन्दिषते। **यङि**—वावन्द्यते। **यङ्लुकि**—वावन्दीति-वावान्ति इत्यादि। **कृत्सु**—वन्दकः -न्दिका, वन्दिता, वन्दित्री, वन्दमानः, वन्दयमानः, विवन्दिषभाणः, वावन्द्यमानः, वन्दनम्, वन्दनीयम्, वन्दः, वन्दी, वन्दितः, युच्-वन्दना, वन्दितुम्, वन्दितव्यम्, वन्दित्वा, अभिवन्द्य, वन्द्यम्, वन्दिष्यमाणः। आरु - वन्दारु।

**(१२) भदि—कल्याणे सुखे च**। (शुभ कर्म करना, सुखी होना) अकर्म.। सेट्। आत्मने.।

भन्दते। बभन्दे। इत्यादि 'वन्दति' (११) वत्। भद्रम् = शुभम्। भद्रा करोति = मुण्डयति। माङ्गल्यमुण्डनेन संस्करोत्यर्थः।

**(१३) मदि—स्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु**। (स्तुति करना, तुष्ट करना, आनन्द करना, उन्मत्त होना, सोना, चाहना, चमकना, प्रकाशित होना)

स्तुतिगत्योः सकर्मकः, अन्यत्र अकर्मकः सेट्. आत्मने.। मन्दते, ममन्दे।

इत्यादि 'वन्दति' (११) वत्। मन्दकः - न्दिका, मन्दिरम्,[१] मन्द्रम्, मन्द्रः[२], मन्दारः[३], मन्दुरा[४], मन्दाकः,[५] मन्दितम्[६] मन्दनः[७]।

**(१४) स्पदि—किञ्चिच्चलने।** चलनं - कम्पनम् (धीरे-धीरे चलना, काँपना, थरथराना) अकर्म.। सेट। आत्मने.।

स्पन्दते। पस्पन्दे। इत्यादि 'वन्दति' (११) वत्। **णिचि**—स्पन्दयति। **कृत्सु**—स्पन्दनीयम्, स्पन्दनम्, स्पन्दः, स्पन्दकः, स्पन्दी, स्पन्दिका, स्पन्दितः, स्पन्दा, स्पन्दितव्यम्, स्पन्दितुम्, स्पन्दित्वा, निस्पद्य, स्पन्द्यम्, स्पन्दमानः, स्पन्दिष्यमाणः।

**(१५) क्लिदि—परिवेदने।** परिवेदनं = शोकः (रोना, शोक करना) सक.। सेट्। आत्मने.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | क्लिन्दते | क्लिन्देते | क्लिन्दन्ते | प्र. |
| | क्लिन्दसे | क्लिदेथे | क्लिन्दध्वे | म. |
| | क्लिन्दे | क्लिन्दावहे | क्लिन्दामहे | उ. |
| लिट् | चिक्लिन्दे | चिक्लिन्दाते | चिक्लिन्दिरे | प्र. |
| | चिक्लिन्दिषे | चिक्लिदाथे | चिक्लिन्दिध्वे | म. |
| | चिक्लिन्दे | चिक्लिन्दिवहे | चिक्लिन्दिमहे | उ. |
| लुट् | क्लिन्दिता | क्लिन्दितारौ | क्लिन्दितारः | प्र. |
| | क्लिन्दितासे | क्लिन्दितासाथे | क्लिन्दिताध्वे | म. |
| | क्लिन्दिताहे | क्लिन्दितास्वहे | क्लिन्दितास्महे | उ. |
| लृट् | क्लिन्दिष्यते | क्लिन्दिष्येते | क्लिन्दिष्यन्ते | प्र. |
| | क्लिन्दिष्यसे | क्लिन्दिष्येथे | क्लिन्दिष्यध्वे | म. |
| | क्लिन्दिष्ये | क्लिन्दिष्यावहे | क्लिन्दिष्यामहे | उ. |
| लोट् | क्लिन्दताम् | क्लिन्देताम् | क्लिन्दन्ताम् | प्र. |
| | क्लिन्दस्व | क्लिन्देथाम् | क्लिन्दध्वम् | म. |
| | क्लिन्दे | क्लिन्दावहै | क्लिन्दामहै | उ. |
| लङ् | अक्लिन्दत | अक्लिन्देताम् | अक्लिन्दन्त | प्र. |
| | अग्लिन्दथाः | अक्लिदेथाम् | अक्लिदध्वम् | म. |
| | अक्लिन्दे | अक्लिन्दावहि | अक्लिन्दामहि | उ. |

१ 'इषिमदिमुदिखिदिच्छिदिभिदिमन्दि' (द. ३-८-२६) किरच् प्रत्यये रूपमेवम्। मन्दिरम् - आलयः।
२ 'स्फायितञ्चि—' (द. ३-८-३१) इत्यादिना रक् प्रत्यये रूपमेवम्। मन्द्रः = मधुरस्वरः, मन्दगतिश्च।
३ 'अङ्गिमदिमन्दिभ्यः—' (द. ३-८-६४) इत्यारन् प्रत्यये रूपमेवम्। मन्दारः = देववृक्षविशेषः।
४ 'मन्दिवशि—' (द. ३-८-२१) इत्युरच् प्रत्ययः। मन्दन्तेऽस्यां वाजिन इति मन्दुरा = वाजिशाला।
५ बाहुलकादौणादिके आकन् प्रत्यये रूपमेवम्। मन्दाक शब्दात् मत्वर्थीये इनि प्रत्यये मन्दाकिनी इति सिध्यति। मन्दाकिनी - नदीविशेषः।
६ 'क्तोऽधिकरणे च ध्रौव्यगतिप्रत्यवसानार्थेभ्यः' (३-४-७६) इति गत्यर्थकत्वात्, अकर्मकत्वाच्च अधिकरणे क्तप्रत्ययः।
७ 'चलनशब्दार्थादकर्मकात्—' (३-२-१४८) इति ताच्छीलिके युचि रूपमेवम्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| वि. लि. | क्लिन्देत | क्लिन्देयाताम् | क्लिन्देरन् | प्र. |
| | क्लिन्देथाः | क्लिन्देयाथाम् | क्लिन्देध्वम् | म. |
| | क्लिन्देय | क्लिन्देवहि | क्लिन्देमहि | उ. |
| आ. लि. | क्लिन्दिषीष्ट | क्लिन्दिषीयास्ताम् | क्लिन्दिषीरन् | प्र. |
| | क्लिन्दीषीष्ठाः | क्लिन्दिषीयास्थाम् | क्लिन्दीषीध्वम् | म. |
| | क्लिन्दिषीय | क्लिन्दीषीवहि | क्लिन्दिषीमहि | उ. |
| लुङ् | अक्लिन्दिष्ट | अक्लिन्दिषाताम् | अक्लिन्दिषत | प्र. |
| | अक्लिन्दिष्ठाः | अक्लिन्दिषाथाम् | अक्लिन्दिध्वम् | म. |
| | अक्लिन्दिषि | अक्लिन्दिष्वहि | अक्लिन्दिष्महि | उ. |
| लृङ् | अक्लिन्दिष्यत | अक्लिन्दिष्येताम् | अक्लिन्दिष्यन्त | प्र. |
| | अक्लिन्दिष्यथाः | अक्लिन्दिष्येथाम् | अक्लिन्दिष्यध्वम् | म. |
| | अक्लिन्दिष्ये | अक्लिन्दिष्यावहि | अक्लिन्दिष्यामहि | उ. |
| | | णिचि | | |
| लट् | क्लिन्दयते | क्लिन्दयेते | क्लिन्दयन्ते | प्र. |
| | क्लिन्दयसे | क्लिन्दयेथे | क्लिन्दयध्वे | म. |
| | क्लिन्दये | क्लिन्दयावहे | क्लिन्दयामहे | उ. |
| लिट् | क्लिन्दयाञ्चक्रे | क्लिन्दयाञ्चक्राते | क्लिन्दयाञ्चक्रिरे | प्र. |
| | क्लिन्दयाञ्चकृषे | क्लिन्दयाञ्चक्राथे | क्लिन्दयाञ्चकृध्वे | म. |
| | क्लिन्दयाञ्चक्रे | कलिन्दयाञ्चकृवहे | क्लिन्दयाञ्चकृमहे | उ. |
| लुट् | क्लिन्दयिता | क्लिन्दयितारौ | क्लिदयितारः | प्र. |
| | क्लिन्दयितासे | क्लिन्दयितासाथे | क्लिन्दयिताध्वे | म. |
| | क्लिन्दयिताहे | क्लिन्दयितास्वहे | क्लिन्दयितास्महे | उ. |
| लृट् | क्लिन्दयिष्यते | क्लिन्दयिष्येते | क्लिन्दयिष्यन्ते | प्र. |
| | क्लिन्दयिष्यसे | क्लिन्दिष्येथे | क्लिन्दयिष्यध्वे | म. |
| | क्लिन्दयिष्ये | क्लिन्दयिष्यावहे | क्लिन्दष्यामहे | उ. |
| लोट् | क्लिन्दयताम् | कलिन्दयेताम् | क्लिन्दयन्ताम् | प्र. |
| | क्लिन्दयस्व | क्लिन्दयेथाम् | क्लिन्दयध्वम् | म. |
| | क्लिन्दयै | क्लिन्दयावहै | क्लिन्दयामहै | उ. |
| लङ् | अक्लिन्दयत | अक्लिन्दयेताम् | अक्लिन्दयेरन् | प्र. |
| | अक्लिन्दयथाः | अक्लिन्दयेथाम् | अक्लिन्दयध्वम् | म. |
| | अक्लिन्दये | अक्लिन्दयावहि | अक्लिन्दयामहि | उ. |
| वि. लि. | क्लिन्दयेत | क्लिन्दयेताम् | क्लिन्दयेरन् | प्र. |
| | क्लिन्दयेथाः | क्लिन्दयेथाम् | क्लिनदयेध्वम् | म. |
| | क्लिन्दयेय | क्लिन्दयेवहि | क्लिन्दयेमहि | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आ. लि. | क्लिन्दयिषीष्ट | क्लिन्दयिषीयास्ताम् | क्लिन्दयिषीरन् | प्र. |
| | क्लिन्दयिषीष्ठाः | क्लिन्दयिषीयास्थाम् | क्लिन्दयिषीध्वम् | म. |
| | क्लिन्दयिषीय | क्लिन्दयिषीवहि | क्लिन्दयिषीमहि | उ. |
| लुङ् | अचिक्लिन्दत | अचिक्लिन्देताम् | अचिक्लिन्दन्त | प्र. |
| | अचिक्लिन्दथाः | अचिक्लिन्देथाम् | अचिक्लिन्दध्वम् | म. |
| | अचिक्लिन्दे | अचिक्लिन्दावहि | अचिकिन्दमहि | उ. |
| लृङ् | अक्लिन्दयिष्यत | अक्लिन्दयिष्येताम् | अक्लिन्दयिष्यन्त | प्र. |
| | अक्लिदयिष्यथाः | अक्लिन्दयिष्येथाम् | अक्लिन्दयिष्यध्वम् | म. |
| | अक्लिन्दयिष्ये | अक्लिन्दयिष्यावहि | अक्लिन्दयिष्यामहि | उ. |
| **सनि**—१ | चिक्लिन्दिषते | चिक्लिन्दिषेते | चिक्लिन्दिषन्ते | प्र. |
| | चिक्लिन्दिषसे | चिक्लिन्दिषेथे | चिक्लिन्दिषध्वे | म. |
| | चिक्लिन्दिषे | चिक्लिन्दिषावहे | चिक्लिन्दिषामहे | उ. |

२.चिक्लिन्दिषाञ्चक्रे। ३ चिक्लिन्दिषिता। ४ चिक्लिन्दिषिष्यते। ५ चिक्लिन्दिषताम्। ६ अचिक्लिन्दिषत। ७ चिक्लिन्दिषेत। ८ चिक्लिन्दिषिषीष्ट। ९ अचिक्लिन्दिषिष्ट। १० अचिक्लिन्दिषिष्यत। **यङि**—१ चेक्लिन्द्यते चेक्लिन्द्येते चेक्लिन्द्यन्ते **प्र.** चेक्लिन्द्यसे चेक्लिन्द्येथे चेक्लिन्द्यध्वे **म.** चेक्लिन्द्ये चेक्लिन्द्यावहे चेक्लिन्द्यामहे **उ.** २ चेक्लिन्द्याञ्चक्रे ३ चेक्लिन्दिता। ४ चेक्लिन्दिष्यते। ५ चेक्लिन्द्यताम्। ६ अचेक्लिन्द्यत। ७ चेक्लिन्द्येत। ८ चेक्लिन्दिषीष्ट। ९ अचेक्लिन्दिष्ट। १० अचेक्लिन्दिष्यत। **यङ्लुकि**—१ चेक्लिन्दीति-चेक्लिन्ति चेक्लिन्तः चेक्लिन्दति **प्र.** चेक्लिन्दीषि चेक्लिन्दिस चेक्लिन्थः चेक्लिन्थ **म.** चेक्लिन्दीमि चेक्लिन्द्मि चेक्लिन्द्वः चेक्लिन्द्मः **उ.**। २ चेक्लिन्दाञ्चकार। ३ चेक्लिन्दिता। ४ चेक्लिन्दिष्यति। ५ चेक्लिन्दीतु - चेक्लिन्तु - चेक्लिन्तात्। ६ अचेक्लिन्दीत् अचेक्लिन् -त्। ७ चेक्लिन्द्यात्। ८ चेक्लिन्द्यात्। ९ अचेक्लिन्दीत्। १० अचेक्लिन्दिष्यत्। **कृत्सु**—क्लिन्दितव्यः,क्लिन्दनीय,क्लिन्द्यः,क्लिन्दितः,क्लिन्दमानः,क्लिन्दितुम,क्लिन्दित्वा, क्लिन्दनम्। इत्यादि।

**( १६ ) मुद—हर्षे।** (आनन्दित होना, प्रसन्न होना। अनु—अनुमोदन करना)। अकर्म.। सेट्.। आत्मने.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | मोदते | मोदेते | मोदन्ते | प्र. |
| | मोदसे | मोदेथे | मोदध्वे | म. |
| | मोदे | मोदावहे | मोदामहे | उ. |
| लिट् | मुमुदे | मुमुदाते | मुमुदिरे | प्र. |
| | मुमुदिषे | मुमुदाथे | मुमुदिध्वे | म. |
| | मुमुदे | मुमुदिवहे | मुमुदिमहे | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुट् | मोदिता | मोदितारौ | मोदितार: | प्र. |
| | मोदितासे | मोदितासाथे | मोदिताध्वे | म. |
| | मोदिताहे | मोदितास्वहे | मोदितास्महे | उ. |
| लृट् | मोदिष्यते | मोदिष्येते | मोदिष्यन्ते | प्र. |
| | मोदिष्यसे | मोदिष्येथे | मोदिष्यध्वे | म. |
| | मोदिष्ये | मोदिष्यावहे | मोदिष्यामहे | उ. |
| लोट् | मोदताम् | मोदेताम् | मोदन्ताम् | प्र. |
| | मोदस्व | मोदेथाम् | मोदध्वम् | म. |
| | मदै | मोदावहै | मोदामहै | उ. |
| लङ् | अमोदत | अमोदेताम् | अमोदन्त | प्र. |
| | अमोदथा: | अमोदेथाम् | अमोदध्वम् | म. |
| | अमोदे | अमोदावहि | अमोदामहि | उ. |
| वि. लि. | मोदेत | मोदेयाताम् | मोदेरन् | प्र. |
| | मोदेथा: | मोदेयाथाम् | मोदेध्वम् | म. |
| | मोदेय | मोदेवहि | मोदेमहि | उ. |
| आ. लि. | मोदिषीष्ट | मोदिषीयास्ताम् | मोदिषीरन् | प्र. |
| | मोदिषीष्ठा: | मोदिषीयास्थाम् | मोदिषीध्वम् | म. |
| | मोदिषीय | मोदिषीवहि | मोदिषीमहि | उ. |
| लुङ् | अमोदिष्ट | अमोदिषाताम् | अमोदिषत | प्र. |
| | अमोदिष्ठा: | अमोदिषाथाम् | अमोदिढ्वम् | म. |
| | अमोदिषि | अमोदिष्वहि | अमोदिष्महि | उ. |
| लृङ् | अमोदिष्यत | अमोदिष्येताम् | अमोदिष्यन्त | प्र. |
| | अमोदिष्यथा: | अमोदिष्येथाम् | अमोदिष्यध्वम् | म. |
| | अमोदिष्ये | अमोदिष्यावहि | अमोदिष्यामहि | उ. |

**भावे**—१. मुद्यते। २. मुमुदे। ५. मुद्यताम्। ६. अमुद्यत। ९. अमोदि। **णिचि**—मोदयति-ते। २. मोदयाञ्चकार-चक्रे। **सनि**—मुमुदिषते-मुमोदिषते। २. मुमुदिषाञ्चक्रे-मुमोदिषाञ्चक्रे-षामास-षाम्बभूव। **यङि**—मोमुद्यते। **यङ्लुकि**—मोमुदीति-मोमोत्ति। **कृत्सु**—मोदनीयम्, आमोदनम्, मोदन:, मोदक:, मोदिता, मुदित:, क्विप्-मुत्-द्, मोदितुम्, मोदितव्यम्, मोदित्वा, सन्मुद्य, मोद्यम्, मोदमान:, मोदिष्यमाण:, प्रमुदित:, प्रमोदित:, प्रमुदितवान्-प्रमोदितवान्, मुत्[1]-मुदौ-मुद:, प्रुद्ग:-[2]मौद्गम्, मुदिर:,[3] मुद्रा[4]।

१ स्त्रियाम्, 'संपदादिभ्य:–' (वा. ३-३-१०८) इति क्विपि रूपमेवम्।

२ 'मुदिग्रोर्गगौ' (द.उ. ३-६६) इति गक् प्रत्यये रूपम्। कित्त्वान्न गुण:। मोदयन्त्यनेनेति मुद्ग: = सस्यजातिविशेष:। मुद्गेन संसृष्टं = मौद्गम्।

३ 'इषिमदिमुदि–' (द.उ. ८-२६) इत्यादिना किरच् प्रत्यये रूपम्। मोदन्तेऽनेनेति मुदिर: = मेघ:।

४ 'स्फायितञ्चि–' (द.उ. ४-३१) इत्यादिना रक् प्रत्यये रूपमेवम्।

कुमुदम्[१]-मोदनः[२], प्रमुदितम्,[३] प्रमोदितम्।

**(१७) दद—दाने**। (दान करना, देना, त्याग करना)। सकर्म. सेट्. आत्मने.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | ददते | ददेते | ददन्ते | प्र. |
| | ददसे | ददेथे | ददध्वे | म. |
| | ददे | ददावहे | ददामहे | उ. |
| लिट् | 'ददद | दददाते | दददिरे | प्र. |
| | दददिषे | दददाथे | दददिध्वे | म. |
| | ददे | ददावहे | ददामहे | उ. |
| लुट् | ददिता | ददितारौ | ददितारः | प्र. |
| | ददितासे | ददितासाथे | ददिताध्वे | म. |
| | ददिताहे | ददितास्वहे | ददितास्महे | उ. |
| लृट् | ददिष्यते | ददिष्येते | ददिष्यन्ते | प्र. |
| | ददिष्यसे | ददिष्येथे | ददिष्यध्वे | म. |
| | ददिष्ये | ददिष्यावहे | ददिष्यामहे | उ. |
| लोट् | ददताम् | ददेताम् | ददन्ताम् | प्र. |
| | ददस्व | ददेथाम् | ददध्वम् | म. |
| | ददै | ददावहै | ददामहै | उ. |
| लङ् | अददत | अददेताम् | अददन्त | प्र. |
| | अददथाः | अददेथाम् | अददध्वम् | म. |
| | अददे | अददावहि | अददामहि | उ. |
| वि. लि. | ददेत | ददेयाताम् | ददेरन् | प्र. |
| | ददेथाः | ददेयाथाम् | ददेध्वम् | म. |
| | ददेयम् | ददेवहि | ददेमहि | उ. |
| आ. लि. | ददिषीष्ट | ददिषीयास्ताम् | ददिषीरन् | प्र. |
| | ददिषीष्ठाः | ददिषीयास्थाम् | ददिषीढ्वम् | म. |
| | ददिषीय | ददिषीवहि | ददिषीमहि | उ. |
| लुङ् | अददिष्ट | अददिषाताम् | अददिषत | प्र. |
| | अददिष्ठाः | अददिषाथाम् | अददिध्वम् | म. |
| | अददिषि | अददिष्वहि | अददिष्महि | उ. |
| लृङ् | अददिष्यत | अददिष्येताम् | अददिष्यन्त | प्र. |
| | अददिष्यथाः | अददिष्येथाम् | अददिष्यध्वम् | म. |
| | अददिष्ये | अददिष्यावहि | अददिष्यामहि | उ. |

१ कुं मोदयतीति कुमुदम्। अन्तर्भावितण्यन्तात् मूलविभुजादित्वेन (वा. ३-२-५) इति कप्रत्यये रूपम्। कौ =पृथिव्यां मोदते इत्यपि विगृह्णन्ति।

२ 'अनुदात्तेतश्च हलादेः' इति तच्छीलादिषु कर्तृषु युच् प्रत्ययः।

३ निष्ठायाम् 'उदुपधाद्भावादिकर्मणोः—' (१-२-२१) इति कित्त्वविकल्पनात् रूपद्वयम्। भावादि-कर्मभ्यामन्यत्र मुदितः, मुदितवान् इत्येव भवति।

**कर्मणि**—द्यते। **णिचि**—दाद्यते। **सनि**—दिददिषते। **यङि**—दादद्यते। **कृत्सु**—दादकः -दिका, ददनीयम्, ददनम्, ददिता, ददितव्यम्, ददित्वा, ददितः, ददितुम्, ददुः, ददिवान्,[१] ददनः[२]।

(१८-१९) **ष्वद-स्वर्द—आश्वादने**। (स्वाद लेना, चखना)। सकर्म. सेट्. आत्मने.। १. स्वदते। २. सस्वदे। ३. स्वदिता। ४. स्वदिष्यते। ५. स्वदताम्। ६. अस्वदत। ७. स्वदेत। ८. स्वदिषीष्ट। ९. अस्वदिष्ट। १०. अस्वदिष्यत।

**कर्मणि भावे च**—स्वद्यते। **णिचि**—स्वादयति-ते। **सनि**—सिष्वदिषते। **यङि**—सास्वद्यते। **यङ्लुकि**—सास्वदीति-सास्वत्ति। **कृत्सु**—स्वदितव्यम्, स्वदनीयम्, स्वाद्यम्, स्वदितः, स्वदनमानः, स्वदितुम, स्वदनम्, स्वादः, स्वदित्वा, आश्वाद्य। एवमेव 'स्वदते' इत्यादि।

(२०) **उर्द—माने क्रीडायाञ्च**। मानं = परिमाणम्। (नापना, गिनना, क्रीडा करना, खेलना)। अकर्म. सेट्. आत्मने.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | ऊर्दते | ऊर्देते | ऊर्दन्ते | प्र. |
| | ऊर्दसे | ऊर्देथे | ऊर्दध्वे | म. |
| | ऊर्दे | ऊर्दावहे | ऊर्दामहे | उ. |
| लिट् | ऊर्दाञ्चक्रे | ऊर्दाञ्चक्राते | ऊर्दाञ्चक्रिरे | प्र. |
| | ऊर्दाञ्चकृषे | ऊर्दाञ्चक्राथे | ऊर्दाञ्चकृढ्वे | म. |
| | ऊर्दाञ्चक्रे | ऊर्दाञ्चकृवहे | ऊर्दाञ्चकृमहे | उ. |
| लुट् | ऊर्दिता | ऊर्दितारौ | ऊर्दितारः | प्र. |
| | ऊर्दितासे | ऊर्दितासाथे | ऊर्दिताध्वे | म. |
| | ऊर्दिताहे | ऊर्दितास्वहे | ऊर्दितास्महे | उ. |
| लृट् | ऊर्दिष्यते | ऊर्दिष्येते | ऊर्दिष्यन्ते | प्र. |
| | ऊर्दिष्यसे | ऊर्दिष्येथे | ऊर्दिष्यध्वे | म. |
| | ऊर्दिष्ये | ऊर्दिष्यावहे | ऊर्दिष्यामहे | उ. |
| लोट् | ऊर्दताम् | ऊर्देताम् | ऊर्दन्ताम् | प्र. |
| | ऊर्दस्व | ऊर्देथाम् | ऊर्दध्वम् | म. |
| | ऊर्दै | ऊर्दावहै | उर्दामहै | उ. |
| लङ् | और्दत् | और्देताम् | और्दन्त | प्र. |
| | और्देथाः | और्देथाम् | और्देध्वम् | म. |
| | और्दे | और्दावहि | और्दामहि | उ. |

१ 'विभाषा पूर्वाह्णापराह्णाभ्याम्' (४-३-२४) इति सूत्रे 'पपुष आगतम् = पपिवद्रूप्यम्' इति भाष्यप्रगोगात् भाषायामपि क्वसुर्भवति। क्वसुप्रत्यये, न शसददवादिगुणानाम्' (६-४-१२६) इति निषेधात् एत्वाभ्यासलोपौ न।

२ 'अनुदात्तेतश्च हलादेः' (६-४-१२६) इति ताच्छीलिको युच्। अनादेशः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| वि. लि. | ऊर्देत | ऊर्देयाताम् | ऊर्देरन् | प्र. |
| | ऊर्देथाः | ऊर्देयाथाम् | ऊर्देध्वम् | म. |
| | ऊर्देय | ऊर्देवहि | ऊर्देमहि | उ. |
| आ. लि. | ऊर्दिषीष्ट | ऊर्दिषीयास्ताम् | ऊर्दिषीरन् | प्र. |
| | ऊर्दिषीष्ठाः | ऊर्दिषीयास्थाम् | ऊर्दिषीढ्वम्-ध्वम् | म. |
| | ऊर्दीषीय | ऊर्दिषीवहि | ऊर्दिषीमहि | उ. |
| लुङ् | और्दिष्ट | और्दिषाताम् | और्दिषत | प्र. |
| | और्दिष्ठाः | और्दिषाथाम् | और्दिध्वम् | म. |
| | और्दिषि | और्दिष्वहि | और्दिष्महि | उ. |
| लृङ् | और्दिष्यत | और्दिष्येताम् | और्दिष्यन्त | प्र. |
| | और्दिष्यथाः | और्दिष्येथाम् | और्दिष्यध्वम् | म. |
| | और्दिष्ये | और्दिष्यावहि | और्दिष्यामहि | उ. |

**कर्मणि**—१. और्द्यते। ९. और्दि। **णिचि**—१. ऊर्दयति-ऊर्दयते। ९. और्दिषत्-त। **सनि**—ऊर्दिदिषते। ऊर्दिदिषाञ्चक्रे। अजादित्वाद्यङ्-यङ्लुकौ न। **कृत्सु**—ऊर्दितव्यम्, ऊर्दनीयम्, ऊर्द्यम्, ऊर्दितः, ऊर्दमानः, ऊर्दितुम्, ऊर्दनम्, ऊर्दित्वा, समूर्द्य।

**(२१-२४) कुर्द-खुर्द-गुर्द-गुद—क्रीडायामेव**।(खेलना)। अकर्म.सेट्. आत्मने.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | कूर्दते | कूर्देते | कूर्दन्ते | प्र. |
| | कूर्दसे | कूर्देथे | कूर्दध्वे | म. |
| | कूर्दे | कूर्दावहे | कूर्दामहे | उ. |
| लिट् | चुकूर्दे | चुकुर्दाते | चुकूर्दिरे | प्र. |
| | चुकूर्दिषे | चुकूर्दाथे | चुकूर्दिध्वे | म. |
| | चुकूर्दे | चुकूर्दिवहे | चुकूर्दिमहे | उ. |
| लुट् | कूर्दिता | कूर्दितारौ | कुर्दितारः | प्र. |
| | कूर्दितासे | कूर्दितासाथे | कूर्दिताध्वे | म. |
| | कूर्दिताहे | कूर्दितास्वहे | कूर्दितास्महे | उ. |
| लृट् | कूर्दिष्यते | कूर्दिष्येते | कूर्दिष्यन्ते | प्र. |
| | कूर्दिष्यसे | कूर्दिष्येथे | कूर्दिष्यध्वे | म. |
| | कूर्दिष्ये | कूर्दिष्यावहे | कूर्दिष्यामहे | उ. |
| लोट् | कूर्दताम् | कूर्देताम् | कूर्दन्ताम् | प्र. |
| | कूर्दस्व | कूर्देथाम् | कूर्दध्वम् | म. |
| | कूर्दै | कूर्दावहै | कूर्दामहै | उ. |
| लङ् | अकूर्दत | अकूर्देताम् | अकूर्दन्त | प्र. |
| | अकूर्दथाः | अकूर्देथाम् | अकूर्दध्वम् | म. |
| | ऊकूर्दे | अकूर्दावहि | अकूर्दामहि | उ. |
| वि. लि. | कूर्देत | कूर्देयाताम् | कूर्देरन् | प्र. |
| | कूर्देथाः | कूर्देयाथाम् | कूर्देध्वम् | म. |
| | कूर्देय | कूर्देवहि | कूर्देमहि | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आ. लि. | कूर्दिषीष्ट | कूर्दिषीयास्ताम् | कूर्दिषीरन् | प्र. |
| | कूर्दिषीष्ठाः | कूर्दिषीयास्थाम् | कूर्दिषीध्वम् | म. |
| | कूर्दिषीय | कूर्दिषीवहि | कूर्दिषीमहि | उ. |
| लुङ् | अकूर्दिष्ट | अकूर्दिषाताम् | अकूर्दिषत | प्र. |
| | अकूर्दिष्ठाः | अकूर्दिषाथाम् | अकूर्दिध्वम् | म. |
| | अकूर्दिषि | अकूर्दिष्वहि | अकूर्दिष्महि | उ. |
| लृङ् | अकूर्दिष्यत | अकूर्दिष्येताम् | अकूर्दिष्यन्त | प्र. |
| | अकूर्दिष्यथाः | अकूर्दिष्येथाम् | अकूर्दिष्यध्वम् | म. |
| | अकूर्दिष्ये | अकूर्दिष्यावहि | अकूर्दिष्यामहि | उ. |

**णिचि**—१. कूर्दयते। २. कूर्दयाञ्चक्रे। ३. कूर्दयिता। ४. कूर्दयिष्यते। ५. कूर्दयताम्। ६. अकूर्दयत। ७. कूर्दयेत। ८. कूर्दयिषीष्ट। ९. अचुकूर्दत। १०. अकूर्दयिष्यत। **सनि**—१. चुकूर्दिषते। २. चुकूर्दिषाञ्चक्रे। ३. चुकूर्दिषिता। ४. चुकूर्दिषिष्यते। ५. चुकूर्दिषताम्। ६. अचुकूर्दिषत। ७. चुकूदिषेत। ८. चुकुर्दिषिषीष्ट। ९. अचुकूर्दिषिष्ट। १०. अचुकूर्दिषिष्यत। **यङि**—१. चोकूर्द्यते। २. चोकूर्दाञ्चक्रे। ३. चोकूर्दिता। ४. चोकूर्दिष्यते। ५. चोकूर्द्यताम्। ६. अचोकूर्द्यत। ७. चोकूर्द्यत। ८. चोकूर्दिषीष्ट। ९. अचोकूदिष्ट। १०. अचोकूर्दिष्यत। **यङ्लुकि**—१. चोकूर्दीति-चोकूर्ति। २. चोकूर्दामास। ३. चोकूर्दिता। ४. चोकूर्दिष्यति। ५. चोकूर्दातु-चोकूर्त्तु-चोकूर्तात्। ६. अचोकूर्दीत्-अचोकूर्द। ७. चोकूर्द्यात्। ९. अचोकूर्दीत्। १०. अचोकूर्दिष्यत्। **कृत्सु**—कूर्दितव्यम्, कूर्दनीयम्, कूर्दितः, कूर्दित्वा, कूर्दितुम्, कूर्दितवान्, कूर्दकः-र्दिका, कूर्दयिता-त्री, कूर्दयन्, कूर्दयमानः, कूर्दयिष्यमाणः, कुर्त्-कुर्द्-कूर्दौ-कूर्दः, कूर्दः, कूर्दनः, कूर्द्यम्, कूर्द्यमानः, कूर्दा, कूर्दना, कूर्दनम्, प्रकूर्द्य, चोकूर्दनम् इत्यादि। एवमेव 'खुर्दते', 'गुर्दते', 'गुदते' इत्यादीनि रूपाणि बोध्यानि।

**(२५) षूद (सूद) — क्षरणे**। क्षरणम् = प्रस्रवणम्। अयं हिंसायामपि वर्तते। (टपकना, झरना, मार डालना या मारने की कोशिश करना)। सकर्म. सेट्. आत्मने.।

१. सूदते। २. **प्र.** सुषूदे। **म.** सुषुदिषे। **उ.** सुषुदे। ३. सूदिता। ४. सूदिष्यते। ५. सूदताम्। ६. असूदत। ७. सूदेत। ८. सूदिषीष्ट। ९. असूदिष्ट। १०. असूदिष्यत।

**कर्मणि**—सूद्यते। **णिचि**—सूदयति-ते। ९. असूषुदत्। **सनि**—सुसूदिषते। **यङि**—सोसूद्यते। **यङ्लुकि**—सोषूदीति-सोसूत्ति। **कृत्सु**—सूदितव्यम्, सूदनीयम्, सूद्यम्, सूदितः, सूदितुम्, सूदित्वा, निषूद्य, मधु सूदते हिनस्ति इति मधुसूदनः[1]। सूदयति क्षारयति रसान् इति सूदः[2] = पाचकः। सूदितुं हिंसितुं शीलमस्यास्तीति सूदी, सूदिता[3]।

१ मधुं = तन्नामकमसुरं सूदयति = हिनस्ति इति मधुसूदनः 'नन्द्यादिषु' (३-१-१३४) पाठात् ण्यन्तात् कर्तरि ल्युः। 'सातपदाद्योः' (८-३-११)इति मूर्धन्यनिषेधः।

२ पचाद्यच्। सूदः = सूपकारः पङ्क्श्च।

३ 'सूददीप–' (३-२-१५३) इति ताच्छीलिकस्य अनुदात्तेत्वलक्षणयुचो निषेधात् 'तृन्' (३-२-१५३) इति तृन्।

**(२६) ह्लाद—अव्यक्ते शब्दे।** अव्यक्तशब्दः = बाद्यादिघोषः (अस्पष्ट शब्द करना)। अकर्म. सेट्. आत्मने.।

१. ह्लादते। २. जह्लादे। इत्यादि 'गाधति' (४) वत्। **भावे**—ह्लाद्यते। **सनि**—जिह्लाद्यते। **यङ्लुकि**—जाह्लादीति-जाह्लात्ति। **कृत्सु**—ह्लादितव्यम्, ह्लादनीयम्, ह्लाद्यम्, ह्लादितः, ह्लादमानः, ह्लादितुम्, ह्लादित्वा, प्रह्लाद्य, ह्लादः, निह्लादः = शब्दः, ह्रदः, ह्लादिनी = वज्रम्, तडिद्वा। ह्लादिन्यौ वज्रतडितौ इत्यमरः।

**(२७) ह्लादी—सुखे च।** चकाराद् अव्यक्ते शब्दे। (सुखी होना, प्रयत्न करना, अस्पष्ट शब्द करना)। अकर्म. सेट्. आत्मने.।

ह्लादते। जह्लादे। इत्यादि 'गाधति' (४) वत्। निष्ठायाम् - प्रह्लन्नः। प्रह्लादः। ह्लादिनी[1]। आह्लन्नः[2] आह्लान्नवान्।

**(२८) स्वाद—आस्वादने।** (स्वाद लेना, चखना)। सकर्म. सेट्. आत्मने.। स्वादते। सस्वादे। इत्यादि 'गाधाति' (४) वत्।

**(२९) पर्द—कुत्सिते शब्दे।** (वायु त्याग करना)। अकर्म. सेट्. आत्मने.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | पर्दते | पर्देते | पर्दन्ते | प्र. |
| | पर्दसे | पर्देथे | पर्दध्वे | म. |
| | पर्दे | पर्दावहे | पर्दामहे | उ. |
| लिट् | पपर्दे | पपर्दाते | पपर्दिरे | प्र. |
| | पपर्दिषे | पपर्दाथे | पपर्दिध्वे | म. |
| | पपर्दे | पपर्दिवहे | पपर्दिमहे | उ. |
| लुट् | पर्दिता | पर्दितारौ | पर्दितारः | प्र. |
| | पर्दितासे | पर्दितासाथे | पर्दिताध्वे | म. |
| | पर्दिताहे | पर्दितास्वहे | पर्दितास्महे | उ. |
| लृट् | पर्दिष्यते | पर्दिष्येते | पर्दिष्यन्ते | प्र. |
| | पर्दिष्यसे | पर्दिष्येथे | पर्दिष्यध्वे | म. |
| | पर्दिष्ये | पर्दिष्यावहे | पर्दिष्यामहे | उ. |
| लोट् | पर्दताम् | पर्देताम् | पर्दन्ताम् | प्र. |
| | पर्दस्व | पर्देथाम् | पर्दध्वम् | म. |
| | पर्दै | पर्दवहै | पर्दामहै | उ. |
| लङ् | अपर्दत | अपर्देताम् | अपर्दन्त | प्र. |
| | अपर्दथाः | अपर्देथाम् | अपर्दध्वम् | म. |
| | अपर्दे | अपर्दावहि | अपर्दामहि | उ. |

१ 'श्वीदितः—' (७-२-१४) इति निष्ठायामिण्निषेधः। 'ह्लादो निष्ठायाम्' (६-४-९५) इति निष्ठायां ह्रस्वे निष्ठातकारधातुदकारयोर्नत्वे च रूपमेवम्।

२ क्तिनि रूपमेवम्। 'ह्लाद—' (६-४-९५) इत्यत्र योगविभागात् क्तिन्यपि ह्रस्व इति काशिकादिषु स्पष्टम्। भाष्ये योगविभागो न दृश्यते।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| वि. लि. | पर्देत | पर्देयाताम् | पर्देरन् | प्र. |
| | पर्देथाः | पर्देयाथाम् | पर्देध्वम् | म. |
| | पर्देय | पर्देवहि | पर्देमहि | उ. |
| आ. लि. | पर्दिषीष्ट | पर्दिषीयास्ताम् | पर्दिषीरन् | प्र. |
| | पर्दिषीष्ठाः | पर्दिषीयास्थाम् | पर्दिषीध्वम् | म. |
| | पर्दिषीय | पर्दिषीवहि | पर्दिषीमहि | उ. |
| लुङ् | अपर्दिष्ट | अपर्दिषाताम् | अपर्दिषत | प्र. |
| | अपर्दिष्ठाः | अपर्दिषाथाम् | अपर्दिध्वम् | म. |
| | अपर्दिषि | अपर्दिष्वहि | अपर्दिष्महि | उ. |
| लृङ् | अपर्दिष्यत | अपर्दिष्येताम् | अपर्दिष्यन्त | प्र. |
| | अपर्दिष्यथाः | अपर्दिष्येथाम् | अपर्दिष्यध्वम् | म. |
| | अपर्दिष्ये | अपर्दिष्यावहि | अपर्दिष्यामहि | उ. |

**भावे**—पर्द्यते। **णिचि**—पर्दयति-ते। **सनि**—पिपर्दिषते। **यङि**—पापर्द्यते। **यङ्लुकि**—पापर्दीति-पापर्त्ति। **कृत्सु**—पर्दितुम्, पर्दित्वा, प्रपर्द्य, पृदाकुः[1] = सर्पः पर्दकः-र्दिका, पिपर्दिषकः, पापर्दकः। पर्दनः,[2] पर्दमानः, पर्दिष्यमाणः।

(३०) **यती—प्रयत्ने**। प्रयत्नः = उद्योगः। (प्रयत्न करना, उद्योग करना)। अकर्म. सेट्. आत्मने.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | यतते | यतेते | यतन्ते | प्र. |
| | यतसे | यतेथे | यतध्वे | म. |
| | यते | यतावहे | यतामहे | उ. |
| लिट् | येते | येताते | येतिरे | प्र. |
| | येतिषे | येताथे | यतिध्वे | म. |
| | येते | येतिवहे | येतिमहे | उ. |
| लुट् | यतिता | यतितारौ | यतितारः | प्र. |
| | यतितासे | यतितासाथे | यतिताध्वे | म. |
| | यतिताहे | यतितास्वहे | यतितास्महे | उ. |
| लृट् | यतिष्यते | यतिष्येते | यतिष्यन्ते | प्र. |
| | यतिष्यसे | यतिष्येथे | यतिष्यध्वे | म. |
| | यतिष्ये | यतिष्यावहे | यतिष्यामहे | उ. |
| लोट् | यतताम् | यतेताम् | यतन्ताम् | प्र. |
| | यतस्व | यतेथाम् | यतध्वम् | म. |
| | यतै | यतावहै | यतामहै | उ. |

१ 'पर्देर्णित् संप्रसारणमलोपश्च' (द.उ. १-१५२) इत्यनेन काकुप्रत्ययः, संप्रसारणं, णित्वम्, अलोपश्च। पृदाकुः = पर्दकः, सर्पश्च।

२ 'चलनशब्दार्थादकर्मकाद् युच्' (३-२-१४८) इति ताच्छीलिको युच् प्रत्ययः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लङ् | अयतत | अयतेताम् | अयतन्त | प्र. |
| | अयतथाम् | अयतेथाम् | अयतध्वम् | म. |
| | अयते | अयतावहि | अयतामहि | उ. |
| वि. लि. | यतेत | यतेयाताम् | यतेरन् | प्र. |
| | यतेथाः | यतेयाथाम् | यतेध्वम् | म. |
| | यतेय | यतेवहि | यतेमहि | उ. |
| आ. लि. | यतिषीष्ट | यतिषीयास्ताम् | यतिषीरन् | प्र. |
| | यतिषीष्ठाः | यतिषीयास्थाम् | यतिषीध्वम् | म. |
| | यतिषीय | यतिषीवहि | यतिषीमहि | उ. |
| लुङ् | अयतिष्ट | अयतिषाताम् | अयतिषत | प्र. |
| | अयतिष्ठाः | अयतिषाथाम् | अयतिध्वम् | म. |
| | अयतिषि | अयतिष्वहि | अयतिष्महि | उ. |
| लृङ् | अयतिष्यत | अयतिष्येताम् | अयतिष्यन्त | प्र. |
| | अयतिष्यथाः | अयतिष्येथाम् | अयतिष्यध्वम् | म. |
| | अयतिष्ये | अयतिष्यावहि | अयतिष्यामहि | उ. |

**भावे**—यत्यते। **णिचि**—१. यातयते-ति। २. यातयाञ्चक्रे। ३. यातयिता। ४. यातयिष्यते। ५. यातयताम्। ६. अयातयत। ७. यातयेत। ८. यातयिषीष्ट। ९. अयायतत। १०. अयातयिष्यत। **सनि**—१. यितयिषते। ९. अयियतिषिष्ट। १०. अयियतिषिष्यत। **यङि**—१.यायत्यते।९.अयायतिष्ट।१०.अयायतिष्यत।**यङ्लुकि**—१.ययतीति यायत्ति। ९. अयायतीत्। **कृत्सु**—यतितव्यम्, यतनीयम्, यत्यम्,[1] यत्तः, यतवान्, यतमानः,[2] यतनम, यतितुम्, यतित्वा, प्रयत्य:, यत्नः,[3] यतिः,[4] **आ**=वशीकरने, आयतते, आयत्तः, आयत्तः[5]-आयत्तवान् आयत्तिः। **प्र**=प्रयतते। यतिष्यमाणः यातकः-तिका, यतिता-त्री, यातयिता-त्री।

**(३१-३२) युतृ-जुतृ—भासने**। (चमकना, प्रकाशित होना) अकर्म. सेट्. आत्मने.। योतते। युयुते। इत्यादि 'रोचति' वत्। युतित्वा योतित्वा। एवं जोतते। जुजुते इत्यादि।

**(३३-३४) विथृ-वेथृ—याचने**। (मांगना, याचना करना) द्विकर्म. सेट. आत्मने.।

१. वेथते। २. विविथे। ४. वेथिष्यते। ९. वेथिषीष्ट। अवेथिषाताम्। **णौ चङि**—

१ 'तकिशसिचतियतिजनीनामुपसंख्यानम्' (वा. ३-१-९७) इति हलन्तलक्षणण्यदपवादतया यत् प्रयत्ने रूपमेवम्।

२ 'ताच्छील्यवयोवचनशक्तिषु चानश्' (३-२-१२९) इत्यनेन ताच्छील्यार्थे चानश्प्रत्यये रूपमेवम्। शानच् प्रत्ययेऽप्यमेव। यतमानः = यमनियमाद्यङ्गविशिष्टयोगाभ्यासकविशेषः।

३ भावे, 'यजयाचयत विच्छप्रच्छरक्षो नङ्' (३-३-९०) इति नङ् प्रत्यये रूपम्।

४ सार्वधा[illegible]हितं औणादिके कर्तरि इन् प्रत्यये रूपमेवम्।

५ निष्ठायाम्, 'श्वीदितः–' (७-२-१४) इति इण्निषेधः।

अविवेथत्। एवमेव वेथते। विवेथे। 'वेपति' वत्। अस्यायुच् नास्ति।

**( ३५ ) श्रथि—शैथिल्ये**। (शिथिल करना, ढीला करना, शिथिल होना, ढीला होना)। अकर्म. सेट. आत्मने.।

श्रन्थते। शश्रन्थे। इत्यादि 'वन्दति' (११) वत्। **सनि**—सिश्रन्थिषते। इत्यादि। **यङि**—श्रन्थ्यते। **यङ्लुकि**- शाश्रन्थीति-शाश्रन्ति।

**( ३६ ) ग्रथि—कौटिल्ये**। (वक्र होना, टेढा होना, दुष्ट होना, गांठ बांधना, गूथना)। **अव**- चादर आदि से मुख आदि को छिपाना। अकर्म. सेट्. आत्मने. इदित्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | ग्रन्थते | ग्रन्थेते | ग्रन्थन्ते | प्र. |
| | ग्रन्थसे | ग्रन्थेते | ग्रन्थध्वे | म. |
| | ग्रन्थे | ग्रन्थावहे | ग्रन्थामहे | उ. |
| लिट् | जग्रन्थे | जग्रन्थाते | जग्रन्थिरे | प्र. |
| | जग्रन्थिषे | जग्रन्थाथे | जग्रन्थिध्वे | म. |
| | जग्रन्थे | जग्रन्थिवहे | जग्रन्थिमहे | उ. |
| लुट् | ग्रन्थिता | ग्रन्थितारौ | ग्रन्थितारः | प्र. |
| | ग्रन्थितासे | ग्रन्थितासाथे | ग्रन्थिताध्वे | म. |
| | ग्रन्थिताहे | ग्रन्थितास्वहे | ग्रन्थितास्महे | उ. |
| लृट् | ग्रन्थिष्यते | ग्रन्थिष्येते | ग्रन्थिष्यन्ते | प्र. |
| | ग्रन्थिष्यसे | ग्रन्थिष्येथे | ग्रन्थिष्यध्वे | म. |
| | ग्रन्थिष्ये | ग्रन्थिष्यावहे | ग्रन्थिष्यामहे | उ. |
| लोट् | ग्रन्थताम् | ग्रन्थेताम् | ग्रन्थन्ताम् | प्र. |
| | ग्रन्थस्व | ग्रन्थेथाम् | ग्रन्थध्वम् | म. |
| | ग्रन्थै | ग्रन्थावहै | ग्रन्थामहै | उ. |
| वि. लि. | अग्रन्थत | अग्रन्थेताम् | अग्रन्थन्त | प्र. |
| | अग्रन्थथाः | अग्रन्थेथाम् | अग्रन्थध्वम् | म. |
| | अग्रन्थे | अग्रन्थावहि | अग्रन्थामहि | उ. |
| वि. लि. | ग्रन्थेत | ग्रन्थेयाताम् | ग्रन्थेरन् | प्र. |
| | ग्रन्थेथाः | ग्रन्थेयाथाम् | ग्रन्थेध्वम् | म. |
| | ग्रन्थेय | ग्रन्थेवहि | ग्रन्थेमहि | उ. |
| आ. लि. | ग्रन्थिषीष्ट | ग्रन्थिषीयास्ताम् | ग्रान्थिषीरन् | प्र. |
| | ग्रान्थिषीष्ठाः | ग्रान्थिषीयास्थाम् | अग्रन्थिषीध्वम् | म. |
| | ग्रन्थिषीय | ग्रन्थिषीवहि | ग्रन्थिषीमहि | उ. |
| लुङ् | अग्रन्थिष्ट | अग्रन्थिषाताम् | अग्रन्थिषत | प्र. |
| | अग्रन्थिष्ठाः | अग्रन्थिषाथाम् | अग्रन्थिध्वम् | म. |
| | अग्रन्थिषि | अग्रन्थिष्वहि | अग्रन्थिष्महि | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृङ् | अग्रन्थिष्यत | अग्रन्थिष्येताम् | अग्रन्थिष्यन्त | प्र. |
| | अग्रन्थिष्यथाः | अग्रन्थिष्येथाम् | अग्रन्थिष्यध्वम् | म. |
| | अग्रन्थिष्ये | अग्रन्थिष्यावहि | अग्रन्थिष्यामहि | उ. |

शेषं 'श्रन्थति' (३५) वत्। **कृत्सु**—ग्रन्थकः, ग्रन्थनम्, ग्रन्थनीयम्, ग्रन्थितः, ग्रन्थितुम्, ग्रन्थित्वा, ग्रन्थ्यम्, ग्रन्थ्यमानः। इत्यादि।

**(३७) कत्थ—श्लाघायाम्**। श्लाघा - अविद्यमानगुणसम्बन्धज्ञापनम्। (प्रशंसा करना, स्तुति करना, झूठी बड़ाई करना)। सकर्म. सेट्. आत्मने.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | कत्थते | कत्थेते | कत्थन्ते | प्र. |
| | कत्थसे | कत्थेथे | कत्थध्वे | म. |
| | कत्थे | कत्थावहे | कत्थामहे | उ. |
| लिट् | चकत्थे | चकत्थाते | चकत्थिरे | प्र. |
| | चकत्थिषे | चकत्थाथे | चकत्थिध्वे | म. |
| | चकत्थे | चकत्थिवहे | चकत्थिमहे | उ. |
| लुट् | कत्थिता | कत्थितारौ | कत्थितारः | प्र. |
| | कत्थितासे | कत्थितासाथे | कत्थिताध्वे | म. |
| | कत्थिताहे | कत्थितास्वहे | कत्थिस्महे | उ. |
| लृट् | कत्थिष्यते | कत्थिष्येते | कत्थिष्यन्ते | प्र. |
| | कत्थिष्यसे | कत्थिष्येथे | कत्थिष्यध्वे | म. |
| | कत्थिष्ये | कत्थिष्यावहे | कत्थिष्यामहे | उ. |
| लोट् | कत्थताम् | कत्थेताम् | कत्थन्ताम् | प्र. |
| | कत्थस्व | कत्थेथाम् | कत्थध्वम् | म. |
| | कत्थै | कत्थावहै | कत्थामहै | उ. |
| लङ् | अकत्थत | अकत्थेताम् | अकत्थन्त | प्र. |
| | अकत्थथाः | अकत्थेथाम् | अकत्थध्वम् | म. |
| | अकत्थे | अकत्थावहि | अकत्थामहि | उ. |
| वि. लि. | कत्थेत | कत्थेयाताम् | कत्थेरन् | प्र. |
| | कत्थेथाः | कत्थेयाथाम् | कत्थेध्वम् | म. |
| | कत्थेय | कत्थेवहि | कत्थेमहि | उ. |
| आ. लि. | कत्थिषीष्ट | कत्थिषीयास्ताम् | कत्थिषीरन् | प्र. |
| | कत्थिषीष्ठाः | कत्थिषीयास्थाम् | कत्थिषीध्वम् | म. |
| | कत्थिषीय | कत्थिषीवहि | कत्थिषीमहि | उ. |
| लुङ् | अकत्थिष्ट | अकत्थिषाताम् | अकत्थिषत | प्र. |
| | अकत्थिष्ठाः | अकत्थिषाथाम् | अकत्थिध्वम्-ढ्वम् | म. |
| | अकत्थिषि | अकत्थिष्वहि | अकत्थिष्महि | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृङ् | अकथिष्यत | अकत्थिष्येताम् | अकत्थिष्यन्त | प्र. |
| | अकत्थिष्यथाः | अकत्थिष्येथाम् | अकत्थिष्यध्वम् | म. |
| | अकत्थिष्ये | अकत्थिष्यावहि | अकत्थिष्यमहि | उ. |

**कर्मणि**—कत्थ्यते। **णिचि**—१. कत्थयते। २. कत्थयाञ्चक्रे। ३. कत्थयिता। ४. कत्थयिष्यते। ५. कत्थयताम्। ६. अकत्थयत। ७. कत्थयेत। ८. कत्थयिषीष्ट। ९. अचिकत्थत। १०. अकत्थयिष्यत। **सनि**—१. चिकत्थिषते। २. चिकत्थिषाञ्चक्रे। ३. चिकत्थिषिता। ४. चिकत्थिष्यते। ५. चिकत्थिषताम्। ६. अचिकत्थिषत। ७. चिकत्थिषेत। ८. चिकत्थिषिषीष्ट। ९. अचिकत्थिषिष्ट। १०. अचिकत्थिष्यत। **यङि**—१. चाकत्थ्यते। २. चाकत्थाञ्चक्रे। ३. चाकत्थिता। ४. चाकत्थिष्यते। ५. चाकत्थ्यताम्। ६. अचाकत्थ्यत। ७. चाकत्थ्येत। ८. चाकत्थिषीष्ट। ९. अचाकत्थिष्ट। १०. अचाकत्थिष्यत। **यङ्लुकि**—१. चाकत्थीति-चाकत्ति। २. चाकत्थाञ्चकार। ३. चाकत्थिता। ४. चाकत्थिष्यति। ५. चाकत्थीतु-चाकत्थात्-चाकत्थु। ६. अचाकत्थीत्-अचाकत्थ। ७. चाकत्थ्यात्। ८. चाकत्थ्यात्-चाकत्थ्यास्ताम्। ९. अचाकत्थीत्। १०. अचाकत्थिष्यत्। **कृत्सु**—कत्थितव्यम्, कत्थनीयम्, कत्थ्यम्, कत्थितः, कत्थमानः, कत्थितुम्, कत्थन्, कत्थित्वा, विकत्थ्य, विकत्थी, विकत्थनः, कत्थकः-त्थिका, कत्थिता-त्री, विकत्थमानः, कत्थिष्यमाणः, कत्थयिष्यमाणः, कत्-कत्थौ, कत्थः, कत्थः, विकत्थी, कत्थ्यमानः, कत्था, कत्थना, कत्थयित्वा।

**( ३८ ) अत—सातत्यगमने**। (जाना, सदैव जाते रहना)। सकर्म. सेट्. परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | अतति | अततः | अतन्ति | प्र. |
| | अतसि | अतथः | अतथ | म. |
| | अतामि | अतावः | अतामः | उ. |
| लिट् | आत | आततु | आतुः | प्र. |
| | आतिथ | आतथुः | आत | म. |
| | आत | आतिव | आतिम | उ. |
| लुट् | अतिता | अतितारौ | अतितारः | प्र. |
| | अतितासि | अतितास्थः | अतितास्थ | म. |
| | अतितास्मि | अतितास्वः | अतितास्मः | उ. |
| लृट् | अतिष्यति | अतिष्यतः | अतिष्यान्त | प्र. |
| | अतिष्यसि | अतिष्यथः | अतिष्यथ | म. |
| | अतिष्यामि | अतिष्यावः | अतिष्यामः | उ. |
| लोट् | अततु-तात् | अतताम् | अतन्तु | प्र. |
| | अत-अततात् | अततम् | अतत | म. |
| | अतानि | अताव | अताम | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लङ् | आतत् | आतताम् | आतन् | प्र. |
| | आतः | आततम् | आतत | म. |
| | आत | आताव | आताम | उ. |
| वि. लि. | अतेत् | अतेताम् | अतेयुः | प्र. |
| | अतेः | अतेतम् | अतेत | म. |
| | अतेयम् | अतेव | अतेम | उ. |
| आ. लि. | अत्यात् | अत्यास्ताम् | अत्यासुः | प्र. |
| | अत्याः | अत्यास्तम् | अत्यास्त | म. |
| | अत्यासम् | अत्यास्व | अत्यास्म | उ. |
| लुङ् | आतीत् | आतिष्टाम् | आतिषुः | प्र. |
| | आतीः | आतिष्टम् | आतिष्ट | म. |
| | आतिषम् | आतिस्व | आतिस्म | उ. |
| लृङ् | आतिष्यत् | आतिष्यताम् | आतिष्यन् | प्र. |
| | आतिष्यः | आतिष्यतम् | आतिष्यत | म. |
| | आतिष्यम् | आतिष्याव | आतिष्याम | उ. |

**कर्मणि**—१. अत्यते। २. **प्र.** आते, आताते, आतिरे। ३. आतिता। **म.** अतितासे। ४. आतिष्यते। ५. अत्यताम्। ६. आत्यत। ७. अत्येत। ८. अतिषीष्ट। ९. आति, आतिषाताम्, आतिषत। १०. आतिष्यत।

णिचि

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | आतयति | आतयतः | आतयन्ति | प्र. |
| | आतयसि | आतयथः | आतयथ | म. |
| | आतयामि | आतयावः | आतयामः | उ. |
| लिट् | आतयामास | आतयामासतुः | आतयामासुः | प्र. |
| | आतयामासिथ | आतयामासथुः | आतयामास | म. |
| | आतयामास | आतयामासिव | आतयामासिम | उ. |
| लुट् | आतयिता | आतयितारौ | आतयितारः | प्र. |
| | आतयितासि | आतयितास्थः | आतयितास्थ | म. |
| | आतयितास्मि | आतयितास्वः | आतयितास्मः | उ. |
| लृट् | आतयिष्यति | आतयिष्यतः | आतयिष्यन्ति | प्र. |
| | आतयिष्यसि | आतयिष्यथः | आतयिष्यथ | म. |
| | आतयिष्यामि | आतयिष्यावः | आतयिष्यामः | उ. |
| लोट् | आतयतु-आतयतात् | आतयताम् | आतयन्तु | प्र. |
| | आतय-आतयतात् | आतयतम् | आतयत | म. |
| | आतयानि | आतयाव | आतयाम | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लङ् | आतयत् | आतयताम् | आतयन् | प्र. |
| | आतयः | आतयतम् | आतयत | म. |
| | आतयम् | आतयाव | आतयाम | उ. |
| वि. लि. | आतयेत् | आतयेताम् | आतयेयुः | प्र. |
| | आतयेः | आतयेतम् | आतयेत | म. |
| | आतयेयम् | आतयेव | आतयेम | उ. |
| आ. लि. | आत्यात् | आत्यास्ताम् | आत्यासुः | प्र. |
| | आत्याः | आत्यास्तम् | आत्यास्त | म. |
| | आत्यसम् | आत्यास्व | आत्यास्म | उ. |
| लुङ् | आतितत् | आतिताम् | आतितन् | प्र. |
| | आतितः | आतिततम् | आतितत | म. |
| | आतितम् | आतिताव | आतिताम | उ. |
| लृङ् | आतयिष्यत् | आतयिष्यताम् | आतयिष्यन् | प्र. |
| | आतयिष्यः | आतयिष्यतम् | आतयिष्यत | म. |
| | आतयिष्यम् | आतयिष्याव | आतयिष्याम | उ. |
| | | आत्मनेपदपक्षे | | |
| लट् | आतयते | आतयेते | आतयन्ते | प्र. |
| | आतयसे | आतयेथे | आतयध्वे | म. |
| | आतये | आतयावहे | आतयामहे | उ. |
| लिट् | आतयाञ्चक्रे | आतयाञ्चक्राते | आतयाञ्चक्रिरे | प्र. |
| | आतयाञ्चकृषे | आतयञ्चक्राथे | आतयाञ्चकृढ्वम् | म. |
| | आतयाञ्चक्रे | आतयाञ्चकृवहे | आतयाञ्चकृमहे | उ. |
| लुट् | आतयिता | आतयितारौ | आतयितारः | प्र. |
| | आतयितासे | आतयितासाथे | आतयिताध्वे | म. |
| | आतयिताहे | आतयितास्वहे | आतयितास्महे | उ. |
| लृट् | आतयिष्यते | आतयिष्येते | आतयिष्यन्ते | प्र. |
| | आतयिष्यसे | आतयिष्येथे | आतयिष्यध्वे | म. |
| | आतयिष्ये | आतयिष्यावहे | आतयिष्यामहे | उ. |
| लोट् | आतयताम् | आतयेताम् | आतयन्ताम् | प्र. |
| | आतयस्व | आतयेथाम् | आतयध्वम् | म. |
| | आतयै | आतयावहै | आतयामहै | उ. |
| लङ् | आतयत | आतयेताम् | आतयन्त | प्र. |
| | आतयथाः | आतयेथाम् | आतयध्वम् | म. |
| | आतये | आतयावहि | आतयामहि | उ. |
| वि. लि. | आतयेत | आतयेयाताम् | आतयेरन् | प्र. |
| | आतयेथाः | आतयेयाथाम् | आतयेध्वम् | म. |
| | आतयेय | आतयेवहि | आतयेमहि | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आ. लि. | आतयिषीष्ट | आतयिषीयास्ताम् | आतयिषीरन् | प्र. |
| | आतयिषीष्ठाः | आतयिषीयास्थाम् | आतयिषीध्वम् | म. |
| | आतयिषीय | आतयिषीवहि | आतयिषीमहि | उ. |
| लुङ् | आतितत | आतितेताम् | आतितन्त | प्र. |
| | आतितथाः | आतितेथाम् | आतितध्वम् | म. |
| | आतिते | आतितावहि | आतितामहि | उ. |
| लृङ् | आतयिष्यत | आतयिष्येताम् | आतयिष्यन्त | प्र. |
| | आतयिष्यथाः | आतयिष्येथाम् | आतयिष्यध्वम् | म. |
| | आतयिष्ये | आतयिष्यावहि | आतयिष्यामहि | उ. |

सनि

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | अतितिषति | अतितिषतः | अतितिषन्ति | प्र. |
| | अतितिषसि | अतितिषथः | अतितिषथ | म. |
| | अतितिषामि | अतितिषावः | अतितिषामः | उ. |
| लिट् | अतितिषाम्बभूव | अतितिषाम्बभूवतुः | अतितिषाम्बभूवुः | प्र. |
| | अतितिषाम्बभूविथ | अतितिषाम्बभूवथुः | अतितिषाम्बभूव | म. |
| | अतितिषाम्बभूव | अतितिषाम्बभूविव | अतितिषाम्बभूविम | उ. |
| लुट् | अतितिषिता | अतितिषितारौ | अतितिषितारः | प्र. |
| | अतितिषितासि | अतितिषितास्थः | अतितिषितास्थ | म. |
| | अतितिषितास्मि | अतितिषितास्वः | अतितिषितास्मः | उ. |
| लृट् | अतितिषिष्यति | अतितिषिष्यतः | अतितिषिष्यन्ति | प्र. |
| | अतितिषिष्यसि | अतितिषिष्यथः | अतितिषिष्यथ | म. |
| | अतितिषिष्यामि | अतितिषिष्यावः | अतितिषिष्यामः | उ. |
| लोट् | अतितिषतु-तात् | अतितिषताम् | अतितिषन् | प्र. |
| | अतितिषः | अतितिषताम् | अतितिषत | म. |
| | अतितिषाणि | अतितिषाव | अतितिषाम | उ. |
| लङ् | अतितिषत् | अतितिषताम् | अतितिषन् | प्र. |
| | अतितिषः | अतितिषतम् | अतितिषत | म. |
| | अतितिषम् | अतितिषाव | अतितिषाम | उ. |
| वि. लि. | अतितिषेत् | अतितिषेताम् | अतितिषेयुः | प्र. |
| | अतितिषेः | अतितिषेतम् | अतितिषेत | म. |
| | अतितिषेयम् | अतितिषेव | अतितिषेम | उ. |
| आ. लि. | अतितिष्यात् | अतितिष्यास्ताम् | अतितिष्यासुः | प्र. |
| | अतितिष्याः | अतितिष्यास्तम् | अतितिष्यास्त | म. |
| | अतितिष्यासम् | अतितिष्यास्व | अतितिष्यास्म | उ. |
| लुङ् | अतितिषीत् | अतितिषिष्टाम् | अतितिषिषुः | प्र. |
| | अतितिषीः | अतितिषिष्टम् | अतितिषिष्ट | म. |
| | अतितिषम् | अतितिषिष्व | अतितिषिष्म | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृङ् | अतितिषिष्यत् | अतितिषिष्यताम् | अतितिषिष्यन् | प्र. |
| | अतितिषिष्यः | अतितिषिष्यतम् | अतितिषिष्यत | म. |
| | अतितिषिष्यम् | अतितिषिष्याव | अतितिषिष्याम | उ. |

अजदित्वात् यङ्-यङ्लुकौ न स्तः।

कृत्सु—अतितव्यम्, अतनीयम्, अत्यम्, अतितः, अतन्,[1] अतन्ती, अतिष्यन्, अतिष्यन्ती-अतिष्यती, अतित्वा, अन्वत्य, आतकः-तिका, आतयमानः, आतयिष्यमाणः, अत्-अतौ, अतः, अतितम्[2]-तः-तवान्, आतितः, आत्यम्, अत्यमानः, आतः, आत्तिः, आतना, आत्माः,[3] आतितुम्, अतिथिः,[4] पदाभ्यामततीति पदातिः[5]।

**( ३९ ) चिती—संज्ञाने।** (अच्छी तरह विचार करना, चिन्तन करना, होश में आना)। अकर्म. सेट्. परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | चेतति | चेततः | चेतन्ति | प्र. |
| | चेतसि | चेतथः | चेतथ | म. |
| | चेतामि | चेतावः | चेतामः | उ. |
| लिट् | चिचेत | चिचेततुः | चिचितुः | प्र. |
| | चिचेतिथ | चिचेतथुः | चिचित | म. |
| | चिचेत | चिचितिव | चिचितिम | उ. |
| लुट् | चेतिता | चेतितारौ | चेतितारः | प्र. |
| | चेतितासि | चेतितास्थः | चेतितास्थ | म. |
| | चेतितास्मि | चेतितास्वः | चेतितास्मः | उ. |
| लृट् | चेतिष्यति | चेतिष्यतः | चेतिष्यन्ति | प्र. |
| | चेतिष्यसि | चेतिष्यथः | चेतिष्यथ | म. |
| | चेतिष्यामि | चेतिष्यावः | चेतिष्यामः | उ. |
| लोट् | चेततु-चेततात् | चेतताम् | चेतन्तु | प्र. |
| | चेत-चेततात् | चेततम् | चेतत | म. |
| | चेतानि | चेताव | चेताम | उ. |
| लङ् | अचेतत् | अचेतताम् | अचेतन् | प्र. |
| | अचेतः | अचेततम् | अचेतत | म. |
| | अचेतम् | अचेताव | अचेताम | उ. |

१ 'ग्रामं ग्रामाय वा अतन्—' इत्यत्र 'गत्यर्थकर्मणि—' (२-३-१२) इत्यनेन द्वितीयाचतुर्थ्यौ भवतः।

२ 'अतितो ग्राम्' अतितो ग्रामः अतितं देवदत्तेन, इदमेषामतितम्। इत्यादौ 'गत्यर्थाक—' (३-४-७२) इति, 'क्तोऽधिकरणे च धौव्यगति—' (३-४-७६) इति च क्रमेण कर्तृकर्म-भाव-अधिकरणेषु क्तः प्रत्ययः

३ मनिण् प्रत्ययः (६-८१ द.उ.)।

४ दशपाद्युणादिवृत्तौ (१-४४) इथिन् प्रत्ययः।

५ 'पादस्य पदाज्याति—' (६-३-५२) इति पद्भावः। औणादिक इण् प्रत्ययः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| वि.लि. | चेतेत् | चेतेताम् | चेतेयुः | प्र. |
| | चेतेः | चेतेतम् | चेतेत | म. |
| | चेतेयम् | चेतेव | चेतेम | उ. |
| आ.लि. | चित्यात् | चित्यास्ताम् | चित्यासुः | प्र. |
| | चित्याः | चित्यास्थाम् | चित्यास्त | म. |
| | चित्यासम् | चित्यास्व | चित्यास्म | उ. |
| लुङ् | अचेतीत् | अचेतिष्टाम् | अचेतिषुः | प्र. |
| | अचेतीः | अचेतिष्टम् | अचेतिष्ट | म. |
| | अचेतिषम् | अचेतिष्व | अचेतिष्म | उ. |
| लृङ् | अचेतिष्यत् | अचेचिष्यताम् | अचेतिष्यन् | प्र. |
| | अचेतिष्यः | अचेतिष्यतम् | अचेतिष्यत | म. |
| | अचेतिष्यम् | अचेतिष्याव | अचेतिष्याम | उ. |

**भावे**—चित्यते। २.चिचेते। ९.अचेति। **णिचि**—चेतयति-ते। २.चेतयाञ्चकार-चक्रे। ९. अचीचित्-त। **सनि**—चिचितिषति-चिचेतिषति। **यङि**—चेचित्यते। **यङ्लुकि**—चेचितीति-चेचेत्ति। **कृत्सु**—चेतनीयम्, चेत्यम्, चित्तः,[१] चित्तवान्, चितित्वा-चेतित्वा, चेतनः,[२] चित्,[३] चेतः,[४] चेतयः,[५] सञ्चित्य, चेतकः, चेतिता, चित्तिः, णिजन्तस्य चेतना, चेतितव्यम्, चित्यमानः, चेतिष्यन्, चेतिष्यमाणः, चेतनम्, चित्तः,[६] चेतनः,[७] प्रायश्चित्तम्[८], चित्-चितौ-चितः, चिन्तः।

**(४०) च्युतिर् (च्युत्) —आसेचने।** (सींचना, भीगोना, बहना)। सकर्म. सेट्. परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | च्योतति | च्योततः | च्योतन्ति | प्र. |
| | च्योतसि | च्योतथः | च्योतथ | म. |
| | च्योतामि | च्योतावः | च्योतामः | उ. |
| लिट् | चुच्योत | चुच्योततुः | चुच्युतुः | प्र. |
| | चुच्योतिथ | चुच्योतथुः | चुच्युत | म. |
| | चुच्योत | चुच्युतिव | चुच्युतिम | उ. |

१ 'श्वादितो निष्ठायाम्' (७-२-१४) इतीण्णिषेधः।
२ 'बाहुलकात् नन्द्यादित्वेन' (३-१-१३४) कर्तरि ल्युः।
३ 'सम्पदादिभ्यः–' (वा. ३-३-९४) इति भावे बाहुलकात् क्विप्। चित् = चैतन्यमित्यर्थः।
४ 'असुन्' (द.उ. ९.४९) इत्यन् प्रत्ययः। चेतः = मनः।
५ 'अनुपसर्गाल्लिम्पविन्दधारिणरिविद्युरेजिचेतिसातिसाहिभ्यश्च' (३-१-१३८) इति ण्यन्तादस्मात् कर्तरि श प्रत्ययः, शप्रत्ययस्य सार्वधातुकत्वेन णेरयादेशः। चेतयः = जीवः। अकारान्तोयं शब्दः।
६ 'इगुपधज्ञा:–' (३-१-१३५) इति कर्तरि कः।
७ बाहुलकात् नन्द्यादित्वेन (३-१-१३४) इति कर्तरि ल्युः।
८ 'प्रायस्य चित्तिचित्तयोः' ग.सू. (६-१-१५६) इति सुट्। एवं क्तिन्यपि ज्ञेयम्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुट् | च्योतिता | च्योतितारौ | च्योतितारः | प्र. |
| | च्योतितासि | च्योतितास्थः | च्योतितास्थ | म. |
| | च्योतितास्मि | च्योतितास्वः | च्योतितास्मः | उ. |
| लृट् | च्योतिष्यति | च्योतिष्यतः | च्योतिष्यन्ति | प्र. |
| | च्योतिष्यसि | च्योतिष्यथः | च्योतिष्यथ | म. |
| | च्योतिष्यामि | च्योतिष्यावः | च्योतिष्याम | उ. |
| लोट् | च्योततु-च्योततात् | च्योतताम् | च्योतन्तु | प्र. |
| | च्योत-च्योततात् | च्योततम् | च्योतत | म. |
| | च्योतानि | च्योताव | च्योताम | उ. |
| लङ् | अच्योतत् | अच्यतताम् | अच्योतन् | प्र. |
| | अच्योतः | अच्योततम् | अच्योतत | म. |
| | अच्योतम् | अच्योताव | अच्योताम | उ. |
| वि. लि. | च्योतेत् | च्योतेताम् | च्योतेयुः | प्र. |
| | च्योतेः | च्योततम् | च्योतेत | म. |
| | च्योतेयम् | च्योतेव | च्योतेम | उ. |
| आ. लि. | च्युत्यात् | च्युत्यास्ताम् | च्युत्यासुः | प्र. |
| | च्युत्याः | च्युत्यास्तम् | च्युत्यास्त | म. |
| | चुत्यासम् | च्युत्यास्व | चुत्यास्म | उ. |
| लुङ् | अच्योतीत् | अच्योतिष्टाम् | अच्योतिषुः | प्र. |
| | अच्योतीः | अच्योतिष्टम् | अच्योतिष्ट | म. |
| | अच्योतिषम् | अच्योतिष्व | अच्योतिष्म | उ. |
| लृङ् | अच्योतिष्यत् | अच्योतिष्यताम् | अत्योतिष्यन् | प्र. |
| | अच्योतिष्यः | अच्योतिष्यतम् | अच्योतिष्यत | म. |
| | अच्योतिष्यम् | अच्योतिष्याव | अच्योतिष्याम | उ |

**कर्मणि**—च्युत्यते। चुच्युते। **णिचि**—च्योतयति-ते। **सनि**—चुच्युतिषति-चुच्योतिषति। **यङि**—चोच्युत्यते। **यङ्लुकि**—चोत्युतीति-चोच्योत्ति। **कृत्सु**—च्योतितव्यः, च्योतनीयः, च्युतितः, च्योतन्, च्योतन्ती, च्युतितम् - च्योतितम् जलेन, च्योतित्वा - च्युतित्वा विच्युत्य, च्योतितुम्।

**(४१) श्च्युतिर्—क्षरणे।** (टपकना, झरना, सींचना, प्रोक्षण करना, छींटा देना)। सक.। सेट्। परस्मै.। श्च्योतति। चुश्च्योत। इत्यादि सर्वं 'च्योतति' (४०) वत्

**(४२) मन्थ—विलोडने।** (बिलोना, मथना, पीड़ा देना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.।

१ मन्थति। २ **प्र.** ममन्थ, ममन्थतुः। **म.** ममन्थिथ। **उ.** ममन्थिव। ३ मन्थिता। ४ मन्थिष्यति। ५ मन्थतु। ६ अमन्थत्। ७ मन्थेत्। ८ मथ्यात्, मथ्यास्ताम्। ९ अमन्थीत्। १० अमन्थिष्यत्।

**कर्मणि**—मथ्यते। ३ मन्थिता। ९ अमन्थि। **णिचि**—मन्थयति-ते। **सनि**—मिमन्थिषति। **यङि**—मामथ्यते। **यङ्लुकि**—मामन्थीति-मामन्ति। **कृत्सु**—मन्थितव्यः, मथितः, मन्थन्-न्ती मथित्वा-मन्थित्वा, विमथ्य, मन्थितुम्, मन्थानः, मन्थकः-न्थिका, मिमन्थिकः-षिका, मामथकः-थिका, मन्थिता-त्री, मन्थयिता-त्री, क्विपि-मत्-मथ्-मथौ-मथः, मन्थः, मन्थनम् : मन्थनी।

( ४३-४६ ) **कुथि-पुथि-लुथि-मथि—हिंसासंक्लेशनयोः** (मार डालना, दुःख देना, दुःख भोगना, पीडित होना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | कुन्थति | कुन्थतः | कुन्थन्ति | प्र. |
| | कुन्थसि | कुन्थथः | कुन्थथ | म. |
| | कुन्थामि | कुन्थावः | कुन्थामः | उ. |
| लिट् | चुकुन्थ | चुकुन्थतुः | चुकुन्थुः | प्र. |
| | चुकुन्थिथ | चुकुन्थथुः | चुकुन्थ | म. |
| | चुकुन्थ | चुकुन्थिव | चुवुन्थिम | उ. |
| लुट् | कुन्थिता | कुन्थितारौ | कुन्थितारः | प्र. |
| | कुन्थितासि | कुन्थितास्थः | कुन्थितास्थ | म. |
| | कुन्थितास्मि | कुन्थितास्वः | कुन्थितास्मः | उ. |
| लृट् | कुन्थिष्यति | कुन्थिष्यतः | कुन्थिष्यन्ति | प्र. |
| | कुन्थिष्यसि | कुन्थिष्यथः | कुन्थिष्यथ | म. |
| | कुन्थिष्यामि | कुन्थिष्यावः | कुन्थिष्यामः | उ. |
| लोट् | कुन्थतु-तात | कुन्थताम् | कुन्थन्तु | प्र. |
| | कुन्थ-तात् | कुन्थतम् | कुन्थत | म. |
| | कुन्थानि | कुन्थाव | कुन्थाम | उ. |
| लङ् | अकुन्थत् | अकुन्थताम् | अकुन्थन् | प्र. |
| | अकुन्थः | अकुन्थतम् | अकुन्थत | म. |
| | अकुन्थम् | अकुन्थाव | अकुन्थाम | उ. |
| वि. लि. | कुन्थयेत् | कुन्थयेताम् | कुन्थेयुः | प्र. |
| | कुन्थेः | कुन्थेतम् | कुन्थेत | म. |
| | कुन्थेयम् | कुन्थेव | कुन्थेम | उ. |
| आ. लि. | कुन्थ्यात् | कुन्थ्यास्ताम् | कुन्थ्यासुः | प्र. |
| | कुन्थ्याः | कुन्थ्यास्तम् | कुन्यास्त | म. |
| | कुन्थ्यासम् | कुन्थ्यास्व | कुन्थ्यास्म | उ. |
| लुङ् | अकुन्थीत् | अकुन्थिष्टाम् | अकुन्थिषुः | प्र. |
| | अकुन्थीः | अकुन्थिष्टम् | अकुन्थिष्ट | म. |
| | अकुन्थिषम् | अकुन्थिष्व | अकुन्थिष्म | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृङ् | अकुन्थिष्यत् | अकुन्थिष्यताम् | अकुन्थिष्यन् | प्र. |
| | अकुन्थिष्यः | अकुन्थिष्यतम् | अकुन्थिष्यत | म. |
| | अकुन्थिष्यम् | अकुन्थिष्याव | अकुन्थिष्याम | उ. |

**कर्मणि**—कुन्थ्यते। **णिचि**—१ **प्र.** कुन्थयति। **म.** कुन्थयसि। **उ.** कुन्थयामि। २ **प्र.** कुन्थयाञ्चकार। **म.** कुन्थयाञ्चकर्थ। **उ.** कुन्थयाञ्चकार-चकर। ३ कुन्थयिता। ४ कुन्थयिष्यति। ५ कुन्थयतु-तात्। ६ अकुन्थयत्। ७ कुन्थयेत्। ८ कुन्थ्यात्। ९ अचुकुन्थयत्। १० अकुन्थयिष्यत्। **आत्मनेपदपक्षे**—१ कुन्थयते। २ कुन्थयाञ्चक्रे। ३ कुन्थयिता। ४ कुन्थयिष्यते। ५ कुन्थयताम्। ६ अकुन्थयत। ७ कुन्थयेत। ८ कुन्थयिषीष्ट। ९ अचुकुन्थत। १० अकुन्थयिष्यत। **सनि**—१ चुकुन्थिषति। २ चुकुन्थिषामास। ३ चुकुन्थिषिता। ४ चुकुन्थिषिष्यति। ५ चुकुन्थिषतु-तात्। ६ अचुकुन्थिषत्। ७ अचुकुन्थिषेत्। ८ चुकुन्थिष्यात्। ९ अचुकुन्थिषीत्। १० अचुकुन्थिषिष्यत्। **यङि**—१ चोकुन्थ्यते। २ चोकुन्थाञ्चक्रे। ३ चोकुन्थिता। ४ चोकुन्थिष्यते। ५ चोकुन्थ्यताम्। ६ अचोकुन्थ्यत। ७ चोकुन्थ्येत। ८ चोकुन्थिषीष्ट। ९ अचोकुन्थिष्ट। १० अचोकुन्थिष्यत। **यङ्लुकि**—१ चोकुन्थीति-चोकुन्ति। २ चोकुन्थाञ्चकार। ३ चोकुन्थिता। ४ चोकुन्थिष्यति। ५ चोकुन्थीतु - चोकुन्तु - चोकुन्थात्। ८ अचोकुन्थिषीत् - अचोकुन्। ७ चोकुन्थ्यात्। ८ चोकुन्थ्यात्। ९ अचोकुन्थीत्। १० अचोकुन्थिष्यत्। **कृत्सु**—कुन्थितव्यः, कुत्थितः, कुर्थित्वा - कुन्थित्वा। इत्यादि। एवं पुन्थति। लुन्थति। मन्थति। इत्यादीनि सर्वाणि रूपाणि 'कुन्थति' (४३) वत्।

**(४७) षिध (सेध्) —गत्याम्।** (जाना, नि–रोकना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.।

१ सेधति। २ सिषेध। ३ सेधिता। ४ सेधिष्यति। ५ सेधतु - तात्। ६ असेधत्। ७ सेधेत्। ८ सिध्यात्। ९ असेधीत्। १० असेधिष्यत्।

**कर्मणि**—१ सिध्यते। ५ सिषिधे। ९ असेधि। **णिचि**–सेधयति-ते। ९ असीषिधत्[१]। **सनि**—१ सिसिधिषति[२]-सिसेधिषति। २ सिसिधिषाञ्चकार। ९ असिसिधि- षीत्। **यङि**—सेषिध्यते[३]। २ सेधिषाञ्चक्रे। ९ असेधिषिष्ट। **यङ्लुकि**—सेषिधीति- सेषेद्धि। **कृत्सु**—सेधितव्यम्, सेधनीयम्, सेध्यम्, सिधितः,[४] सिद्धः,[५] सिद्धवान्, सेधन्, सिधित्वा, सेधित्वा,[६]

१ 'दीर्घो लघोः' (७-४-९४) इति दीर्घे।
२ 'रलो व्युपधात्–' (१-२-२६) इति कित्वविकल्पः। कित्वपक्षे 'क्ङिति च' इति गुणनिषेधः। अकित्वपक्षे लघूपधगुणः।
३ 'नित्यं कौटिल्ये गतौ' (१-३-२३) गत्यर्थात् कौटिल्य एव यङ् स्यान्न तु क्रियासमभिहारे।
४ 'षिध' इत्यकारेत्त्वपक्षे रूपम्।
५ 'षिधु' इति उदित्त्वपक्षे– 'यस्य विभाषा' यस्य क्वचिद्विभाषयेड्विहितः ततो निष्ठाया इण्न स्यात्।
६ 'उदितो वा' उदितः परस्य क्त्वः इड्वा स्यात्।

सिद्ध्वा, सेधितुम्, सुषेधः[१]-दुःषेधः-निषेधः, सिध्रः[२], सिध्रकः[३]-सिध्रकावनम्, अभिसेधयन्[४] गाः, निषेधति प्रतिषेधति-निवारयतीत्यर्थः। आसेधति = निरुणद्धि, उत्सेधति = उन्नयति। अपसेधति = अपनुदति।

(४८) **षिधू—शास्त्रे माङ्गल्ये च**। शास्त्रम् = शासनम्। माङ्गल्यम् = मङ्गलक्रिया। (आज्ञा करना, शासन करना, मङ्गल कर्म करना)। **नि-प्रति**—निषेध करना, मना करना, **प्र**—प्रसिद्ध होना, कीर्तिमान होना। सकर्म.। सेट्.। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | सेधति | सेधतः | सेधन्ति | प्र. |
| | सेधसि | सेधथः | सेधथ | म. |
| | सेधामि | सेधावः | सेधामः | उ. |
| लिट् | सिषेध | सिषिधतुः | सिषिधुः | प्र. |
| | सिषेधिथ-सिषेद्ध | सिषिधथुः | सिषिध | म. |
| | सिषेध | सिषिधिव-ध्व | सिषिधिम-ध्म | उ. |
| लुट् | सेधिता-सेद्धा | सेधितारौ-सेद्धारौ | सेधितारः सेद्धारः | प्र. |
| | सेधितासि-सेद्धासि | सेधितास्थः सेद्धास्थः | सेधितास्थ सेद्धास्थ | म. |
| | सेधितास्मि-सेद्धास्मि | सेधितास्वः सेद्धास्वः | सेधितास्मःसेद्धास्मः | उ. |
| लृट् | सेधिष्यति-सेत्स्यति | सेधिष्यतः-सेत्स्यतः | सेधिष्यन्ति-सेत्स्यन्ति | प्र. |
| | सेधिष्यसि-सेत्स्यसि | सेधिष्यथः-सेत्स्यथः | सेधिष्यथ सेत्स्यथ | म. |
| | सेधिष्यामि-सेत्स्यामि | सेधिष्यावः-सेत्स्यावः | सेधिष्यामः सेत्स्यामः | उ. |
| लोट् | सेधतु-तात् | सेधताम् | सेधन्तु | प्र. |
| | सेध-तात् | सेधतम् | सेधत | म. |
| | सेधानि | सेधाव | सेधाम | उ. |
| लङ् | असेधत् | असेधताम् | असेधन् | प्र. |
| | असेधः | असेधतम् | असेधत | म. |
| | असेधम् | असेधाव | असेधाम | उ. |

१ अत्र सुषामादित्वात् (८-३-९८) षत्वम् सुषेध इत्यत्र 'उपसर्गात्–' (८-३-६५) इति, दुःषेध इत्यत्र 'नुम्विसर्जनीयशर्व्यवायेऽपि' (८-३-५८) इति च यद्यपि षत्वं सिद्धम्, तथापि कर्मप्रवचनीयानां सुदुर्निसां षत्वनिषेधकत्वात् तत्रापि षत्वप्राप्त्यर्थम्, गत्यर्थे सेधतेर्गतौ (८-३-११३) इति निषेधबाधनार्थं च सुषामादिषु पाठ इत्यवधेयम्।

२ औणादिके (द.उ. ८-३१) रक् प्रत्यये रूपम्। सिध्रः = साधुः, आसनप्रकारश्च।

३ सिध्र इव सिध्रकः, इवार्थे संज्ञायां वा कन् प्रत्ययः। सिध्रकः = वृक्षविशेषः। सिध्रकावनम् इत्यत्र 'वनगिर्योः–' (६-३-११७) इत्यत्र कोटरादित्वात् दीर्घः। वनं पुरगामिश्रकासिध्रका–(८-४-४) इति णत्वम्। सिध्रकवृक्षप्रचुरो वनविशेषः-सिध्रकावनम्।

४ 'सेधतेर्गतौ' (८-३-११३) इत्यत्र षत्वनिषेधः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| वि. लि. | सेधेत् | सेधेताम् | सेधेयुः | प्र. |
| | सेधेः | सेधेतम् | सेधेत | म. |
| | सेधेयम् | सेधेव, | सेधेम | उ. |
| आ. लि. | सिध्यात् | सिध्यास्ताम् | सिध्यासुः | प्र. |
| | सिध्याः | सिध्यास्तम् | सिध्यास्त | म. |
| | सिध्यासम् | सिध्यास्व | सिध्यास्म | उ. |
| लुङ् | असेधीत्-असैत्सीत् | असेधिष्टाम्-असैद्धाम् | असेधिषुः-असैत्सुः | प्र. |
| | असेधीः-असैत्सीः | असेधिष्टम्-असैद्धम् | असेधिष्ट-असैद्ध | म. |
| | असेधिषम्-असैत्सम् | असेधिष्व-असैत्स्व | असेधिष्म-असैत्स्म | उ. |
| लृङ् | असेधिष्यत्-असेत्स्यत् | असेधिष्यताम् असेत्स्यताम् | असेधिष्यन्-असेत्स्यन् | प्र. |
| | असेधिष्यः-असेत्स्यः | असेधिष्यतम्-असेत्स्यतम् | असेधिष्यत-असेत्स्यत | म. |
| | असेधिष्यम्-असेत्स्यम् | असेधिष्याव-असेत्स्याव | असेधिष्याम-असेत्स्याम | उ. |

**कर्मणि**—सिद्ध्यते। ५ सिषिधिषे-सिषित्से। ९ असेधि। असेधिषाताम्-असित्साताम्। असेधिषत-असित्सत। **म.** असेधिढ्वम्-ध्वम्-असेद्ध्वम्। **णिचि**—सेधयति-ते। ९ असीषिधत्-त। **सनि**—सिषिधिषति-सिषेधिषति-सिषित्सति। **यङि**—सिषिध्यते। **यङ्लुकि**—सेषींधीति-सेसद्धि। **कृत्सु**—सेधनीयम्, सेधनम्, सेधकः, सेधी, सेधिता, सिद्धः, सिद्धिः, सेधितव्यम्-सेद्धव्यम्, सेधितुम्-सेध्धुम्, सेधित्वा-सिद्ध्वा, निषिध्य, सेध्यम्, सेधन्, सेधिष्यन्, **कर्मणि**—सिध्यमानः, सेधिष्यमाणः, **प्रति**—प्रतिसिद्धः, प्रतिषेधः, **निः**—निषेधकः, निषिद्धः, निषेधः, **आ**—आसेधः, आसिद्धः, **उत्**—उत्सिद्धः, उत्सेधः।

**( ४९ ) खादृ—भक्षणे**। (खाना) सकर्म.। सेट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | खादति | खादतः | खादन्ति | प्र. |
| | खादसि | खादथः | खादथ | म. |
| | खादामि | खादावः | खादामः | उ. |
| लिट् | चखाद | चखादतुः | चखादुः | प्र. |
| | चखादिथ | चखादथुः | चखाद | म. |
| | चखाद | चखादिव | चखादिम | उ. |
| लुट् | खादिता | खादितारौ | खादितारः | प्र. |
| | खादितासि | खादितास्थः | खादितास्थ | म. |
| | खादितास्मि | खादितास्वः | खादितास्मः | उ. |
| लृट् | खादिष्यति | खादिष्यतः | खादिष्यन्ति | प्र. |
| | खादिष्यसि | खादिष्यथः | खादिष्यथ | म. |
| | खादिष्यामि | खादिष्यावः | खादिष्यामः | उ. |
| लोट् | खादतु-खादतात् | खादताम् | खादन्तु | प्र. |
| | खाद-खादतात् | खादतम् | खादत | म. |
| | खादानि | खादाव | खादाम | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लङ् | अखादत् | अखादताम् | अखादन् | प्र. |
| | अखादः | अखादतम् | अखादत | म. |
| | अखादम् | अखादाव | अखादाम | उ. |
| वि. लि. | खादेत् | खादेताम् | खादेयुः | प्र. |
| | खादेः | खादेतम् | खादेत | म. |
| | खादेयम् | खादेव | खादेम | उ. |
| आ. लि. | खाद्यात् | खाद्यास्ताम् | खाद्यासुः | प्र. |
| | खाद्याः | खाद्यास्तम् | खाद्यास्त | म. |
| | खाद्यासम् | खाद्यास्व | खाद्यास्म | उ. |
| लुङ् | अखादीत् | अखादिष्टाम् | अखादिषुः | प्र. |
| | अखादीः | अखादिष्टम् | अखादिष्ट | म. |
| | अखादिषम् | अखादिष्व | अखादिष्म | उ. |
| लृङ् | अखादिष्यत् | अखादिष्यताम् | अखादिष्यन् | प्र. |
| | अखादिष्यः | अखादिष्यतम् | अखादिष्यत | म. |
| | अखादिष्यम् | अखादिष्याव | अखादिष्याम | उ. |

**कर्मणि**—खाद्यते। **णिचि**—खादयति-खादयते। २ खादयाञ्चक्रे। ३ खादयिता। ४ खादयिष्यति-खादयिष्यते। ५ खादयतु-खादयतात्। ६ अखादयत्-अखादतयत। ७ खादयेत्-खादयेत। ८ खाद्यात्-खादिषिष्ट। ९ अचखादत्-त। १० अखादयिष्यत्-त। **सनि**—१ चिखादिषति। २ चिखादिषामास। ३ चिखादिषिता। ४ चिकादिषिष्यति। ५ चिखादिषतु-तात्। ६ अचिखादिषत्। ७ चिखादिषेत्। ८ चिखादिषिष्यात्। ९ अचखादिषीत्। १० अचखादिषिष्यत्। **यङि**—१ चाखाद्यते। २ चाखादाञ्चक्रे। ३ चाखादिता। ४ चाखादिष्यते। ५ चाखाद्यताम्। ६ अचाखाद्यत। ७ चाखाद्येत। ८ चाखादिषीष्ट। ९ अचाखादिष्ट। १० अचाखादिष्यत। **यङ्लुकि**—१ चाखदीति-चाखात्ति। २ चाखादामास। ३ चाखादिता। ४ चाखादिष्यति। ५ चाखादीतु-चाखात्तु-चाखात्तात्। ६ अचाखादीत्-अचाखाद्। ७ चाखाद्यात्-चाखाद्याताम्। ८ चाखाद्यात्-चाखाद्यास्ताम्। ९ अचाखादीत्-अचाखादिष्टाम्। १० अचाखादिष्यत्। **कृत्सु**—खादनीयम्, खादनम्, खादकः, खादः, खादी, खादिता, खादितः, खादित्वा, सङ्खाद्य, खाद्यम्, खादन्, खाद्यमानः, खादिष्यन्, खादिष्यमाणः।

(५०) **खद—स्थैर्ये हिंसायां भक्षणे च**। (स्थिर रहना, मार डालना, सताना, खाना)। स्थैर्येऽकर्म., अन्यत्र, सकर्म.। परस्मै.। खदति। चखाद। इत्यादि। 'गदति' वत्। खादिरः।

(५१) **बद—स्थैर्ये**। (स्थिर रहना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.। बदति। बबाद वेदतुः, इत्यादि 'रदति' वत्।

(५२) **गद—व्यक्तायां वाचि**। (स्पष्ट बोलना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | गदति | गदतः | गदन्ति | प्र. |
| | गदसि | गदथः | गदथ | म. |
| | गदामि | गदावः | गदामः | उ. |
| लिट् | जगाद | जगदतुः | जगदुः | प्र. |
| | जगदिथ | जगदथुः | जगद | म. |
| | जगाद-जगद | जगदिव | जगदिम | उ. |
| लुट् | गदिता | गदितारौ | गदितारः | प्र. |
| | गदितासि | गदितास्थः | गदिकतास्थ | म. |
| | गदितास्मि | गदितास्वः | गदितास्मः | उ. |
| लृट् | गदिष्यति | गदिष्यतः | गदिष्यन्ति | प्र. |
| | गदिष्यसि | गदिष्यथः | गदिष्यथ | म. |
| | गदिष्यामि | गदिष्यावः | गदिष्यामः | उ. |
| लोट् | गदतु-गदतात् | गदताम् | गदन्तु | प्र. |
| | गद-गदतात् | गदतम् | गदत | म. |
| | गदानि | गदाव | गदाम | उ. |
| लङ् | अगदत् | अगदताम् | अगदन् | प्र. |
| | अगदः | अगदतम् | अगदत | म. |
| | अगदम् | अगदाव | अगदाम | उ. |
| वि. लि. | गदेत् | गदेताम् | गदेयुः | प्र. |
| | गदेः | गदेतम् | गदेत | म. |
| | गदेयम् | गदेव | गदेम | उ. |
| आ. लि. | गद्यात् | गद्यास्ताम् | गद्यासुः | प्र. |
| | गद्याः | गद्यास्तम् | गद्यास्त | म. |
| | गद्यासम् | गद्यास्व | गद्यास्म | उ. |
| लुङ् | अगादीत्-अगदीत् | अगादिष्टाम्-अगदिष्टाम् | अगादिषुः-अगदिषुः | प्र. |
| | अगादीः-अगदीः | अगादिष्टम्-अगदिष्टम् | अगादिष्ट-अगदिष्ट | म. |
| | अगादिषम्-अगदिषम् | अगादिस्व-अगदिस्व | अगादिष्म-अगदिष्म | उ. |
| लृङ् | अगदिष्यत् | अगदिष्यताम् | अगदिष्यन् | प्र. |
| | अगदिष्यः | अगदिष्यतम् | अगदिष्यत | म. |
| | अगदिष्यम् | अगदिष्याव | अगदिष्याम | उ. |

**कर्मणि**—१ गद्यते। ५ जगदे। ८ गदिषीष्ट। ९ अगादि। **णिचि**—१ गादयति-गादयते। २ गादयाञ्चक्रे। ३ गादयिता। ४ गादयिष्यति-गादयिष्यते। ५ गादयतु-गादयतात्-गादयताम्। ६ अगादयत्-अगादयत। ७ गादयेत्-गादयेत। ८ गाद्यात्-गादयषीष्ट। ९ अजीगदत्-अजीगदत। १० अगादयिष्यत्-अगादयिष्यत। **सनि**—१ जिगदिषति। २ जिगदिषाम्बभूव। ३ जिगदिषिता। ४ जिगदिष्यति। ५ जिगदितु-तात्। ६ अजिदिषत्। ७ जिगदिषेत्। ८ जिगदिष्यात्। ९ अजिगदिषीत्। १० अजिगदिषिष्यत्। **यङि**—१

जागद्यते। २ जागदाञ्चक्रे। ३ जागदिता। ४ जागदिष्यते। ५ जागद्यताम्। ६ अजागदिष्ट। ७ जागद्येत। ८ जागदिषीष्ट। ९ अजागदिष्ट। १० अजागदिष्यत। **यङ्लुकि**—जागदीति-जागत्ति। २ जागदामास। ३ जागदिताम्। ४ जागदिष्यति। ५ जागदीतु-जागत्तु-जागद्दात्। ६ अजागदीत्-अजागत्-द्। ७ जागद्यात्, जागद्याताम्। ८ जागद्यात्, जागद्यास्ताम्। ९ अजागदीत्, अजागदिष्टाम्। १० अजागदिष्यत्। **कृत्सु**—गदनीयम्, गदितव्यम्, गदनम्, गादकः, गादः, अगाद्य, गद्यम्, गद्यमानः, गदिष्यन्, गदिष्यमाणः, गदितुम्, गदित्वा, निगदः, निगादः, गदी, गदन्, गदन्ती।

**(५३) रद—विलेखने।** (विदारण करना, चीरना, खोदना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.।

१ रदति। २ **प्र.** रराद रेदतु रेदुः। **म.** रेदिथ रेदथुः रेद। **उ.** रराद-ररद रेदिव रेदिम। अन्यत् सर्व 'गदति' (५२) वत्। रदनः = दन्तः।

**(५४) णद—अव्यक्ते शब्दे।** (अस्पष्ट शब्द करना, आवाज करना, **प्र—समुद्**—घण्टा या पशु के समान शब्द करना। **व्यनु**—निनादित करना, शब्दों से भर देना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | नदति | नदतः | नदन्ति | प्र. |
| | नदसि | नदथः | नदथ | म. |
| | नदामि | नदावः | नदामः | उ. |
| लिट् | ननाद | नेदतुः | नेदुः | प्र. |
| | नेदिथ | नेदथुः | नेद | म. |
| | ननाद | नेदिव | नेदिम | उ. |
| लुट् | नदिता | नदितारौ | नदितारः | प्र. |
| | नदितासि | नदितास्थः | नदितास्थ | म. |
| | नदितास्मि | नदितास्वः | नदितास्मः | उ. |
| लृट् | नदिष्यति | नदिष्यतः | नदिष्यन्ति | प्र. |
| | नदिष्यसि | नदिष्यथः | नदिष्यथ | म. |
| | नदिष्यामि | नदिष्यावः | नदिष्यामः | उ. |
| लोट् | नदतु-नदतात् | नदताम् | नदन्तु | प्र. |
| | नद-नदतात् | नदतम् | नदत | म. |
| | नदानि | नदाव | नदाम | उ. |
| लङ् | अनदत् | अनदताम् | अनदन् | प्र. |
| | अनदः | अनदतम् | अनदत | म. |
| | अनदम् | अनदाव | अनदाम | उ. |
| वि. लि. | नदेत् | नदेताम् | नदेयुः | प्र. |
| | नदेः | नदेतम् | नदेत | म. |
| | नदेयम् | नदेव | नदेम | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आ. लि. | नद्यात् | नद्यास्ताम् | नद्यासुः | प्र. |
| | नद्याः | नद्यास्तम् | नद्यास्त | म. |
| | नद्यासम् | नद्यास्व | नद्यास्म | उ. |
| लुङ् | अनादीत्-अनदीत् | अनादिष्टाम् अनदिष्टाम् | अनादिषुः-अनदिषुः | प्र. |
| | अनादीः-अनदीः | अनादीष्टम् अनदिष्टंम् | अनादिष्ट-अनदिष्ट | म. |
| | अनदिषम्-अनादिषम् | अनादिष्व अनदिष्व | अनादिष्म अनदिष्म। | उ. |
| लृङ् | अनदिष्यत् | अनदिष्यताम् | अनदिष्यन् | प्र. |
| | अनदिष्यः | अनदिष्यतम् | अनदिष्यत | म. |
| | अनदिष्यम् | अनदिष्याव | अनदिष्याम | उ. |

**कर्मणि**—नद्यते। **णिचि**—१ नादयति। २ नादयामास। ९ अनीनदत्। १० अनादयिष्यत्। **सनि**—१ निनदिषति। २ निनदिषाञ्चकार। ९ अनिनदिषीत्। १० अनिनदिषिष्यत्। **यङि**—१ नानद्यते। ९ अनानदिष्ट। १० अनानदिष्यत। **यङ्लुकि**—१ नानदीति-नानत्ति। ९ अनानदीत्। १० अनानदिष्यत्। **कृत्सु**—नदनीयम्, नदनम्, नादः, नादकः, नादी, नदिता, नदितः, नदितुम्, नदितव्यम्, नदित्वा, सन्नद्य, नाद्यम्, नदन्, नदिष्यन्, निर्णादः अन्तर्णदनम्।

**(५५) अर्द—गतौ याचने च।** अयं हिसायामपि (जाना, मांगना, याचना करना, मारना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | अर्दति | अर्दतः | अर्दन्ति | प्र. |
| | अर्दसि | अर्दथः | अर्दथ | म. |
| | अर्दामि | अर्दावः | अर्दामः | उ. |
| लिट् | आनर्द | आनर्दतुः | आनर्दुः | प्र. |
| | आनर्दिथ | आनर्दथुः | आनर्द | म. |
| | आनर्द | आनर्दिव | आनर्दिम | उ. |
| लुट् | अर्दिता | अर्दितारौ | अर्दितारः | प्र. |
| | अर्दितासि | अर्दितास्थः | अर्दितास्थ | म. |
| | अर्दितास्मि | अर्दितास्वः | अर्दितास्मः | उ. |
| लृट् | अर्दिष्यति | अर्दिष्यतः | अर्दिष्यन्ति | प्र. |
| | अर्दिष्यसि | अर्दिष्यथः | अर्दिष्यथ | म. |
| | अर्दिष्यामि | अर्दिष्यावः | अर्दिष्यामः | उ. |
| लोट् | अर्दतु-अर्दतात् | अर्दताम् | अर्दन्तु | प्र. |
| | अर्द अर्दतात् | अर्दतम् | अर्दत | म. |
| | अर्दानि | अर्दाव | अर्दाम | उ. |
| लङ् | आर्दत् | आर्दताम् | आर्दन् | प्र. |
| | आर्दः | आर्दतम् | आर्दत | म. |
| | आर्दम् | आर्दाव | आर्दाम | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| वि. लि. | अर्देत् | अर्देताम् | अर्देयुः | प्र. |
| | अर्देः | अर्देतम् | अर्देत | म. |
| | अर्देयम् | अर्देव | अर्देम | उ. |
| आ. लि. | अर्द्यात् | अर्द्यास्ताम् | अर्द्यासुः | प्र. |
| | अर्द्याः | अर्द्यास्तम् | अर्द्यास्त | म. |
| | अर्द्यासम् | अर्द्यास्व | अर्द्यास्म | उ. |
| लुङ् | आर्दीत् | आर्दिष्टाम् | आर्दिषुः | प्र. |
| | आर्दीः | आर्दिष्टम् | आर्दिष्ट | म. |
| | आर्दिषम् | आर्दिष्व | आर्दिष्म | उ. |
| लृङ् | आर्दिष्यत् | आर्दिष्यताम् | आर्दिष्यन् | प्र. |
| | आर्दिष्यः | आर्दिष्यतम् | आर्दिष्यत | म. |
| | आर्दिष्यम् | आर्दिष्याव | आर्दिष्याम | उ. |

**कर्मणि**—अर्द्यते। **णिचि**—अर्दयति। २ अर्दयामास-अर्दयाञ्चकार। ३ अर्दयिता। ४ अर्दयिष्यति। ५ अर्दयतु-तात्। ६ आर्दयत्। ७ अर्दयेत्। ८ अर्द्यात्। ९ आर्दिदत्। १० आर्दयिष्यत्। **सनि**—१ अर्दिदिषति। २ अर्दिदिषामास। ३ अर्दिदिषिता। ४ अर्दिदिषिष्यति। ५ अर्दिदिषतु। ६ अर्दिदिषत्। ७ अर्दिदिषेत्। ८ अर्दिदिष्यात्। ९ आर्दिदिषीत्। १० आर्दिदिषिष्यत्। **कृत्सु**—अर्दनीयम्, अर्दनम्, अर्दकः, अर्दिता, अर्दितः, अर्दा, अर्दितुम्, अर्दित्वा, अर्द्यः, समर्द्य, अर्दन्, अर्द्यमानः, अर्दिष्यान्, अर्दिष्यमाणः, अर्दना, अर्दयितुम्, अर्दयितव्यः, अर्दयित्वा, अर्दयन्, अर्दयमानः, अर्दयिष्यन्, अर्दयिष्यमाणः, समर्णः[1], न्यर्णः, व्यर्णः, अभ्यर्णः[2], जनार्दनः,[3] अर्द्यमानः।

**(५६-५७) नर्द-गर्द—शब्दे**। (शब्द करना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.।

१ नर्दति। २ ननर्द ननर्दतुः ननर्दुः। ३ नर्दिता। ४ नर्दिष्यति। ५ नर्दतु। ६ अनर्दत्। ७ नर्देत्। ८ नर्द्यात्। ९ अनर्दीत्।

**कर्मणि**—नर्द्यते। **णिचि**—नर्दयति-ते। **सनि**—निनर्दिषति। **यङि**—नानर्द्यते। **यङ्लुकि**—नानर्दीति-नानर्ति। **कृत्सु**—नर्दितः, नर्दित्वा, विनर्द्य, नर्दितुम्, एवं गर्दति। इत्यादि।

**(५८) तर्द—हिंसायाम्**। (मारना, हिंसा करना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। तर्दति। इत्यादि 'नर्दति' (५६) वत्।

**(५९) कर्द—कुत्सिते शब्दे**। (कौवे के समान शब्द करना, पेट गुड़गुड़ाना, अन्त्रकूजन होना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.। कर्दति। चकर्द। इत्यादि 'नर्दति' (५६) वत्।

**(६०) खर्द—दन्तशूके**।(दंशनहिंसनादिरूपायां दन्तशूकक्रियायामित्यर्थः)(चबाना, दांतों से काटना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। खर्दति। चखर्द। इत्यादि 'नर्दति' (५६) वत्।

---

१ 'न न्द्राः संयोगादयः' (६-१-३) इति रेफस्य द्वित्वनिषेधः।
२ 'अमेश्चाविदूर्ये' (७-२-२५) इति इण्णिषेधः।
३ 'नन्दिग्रहिपचादिभ्यो–' (३-१-१३४) इति नन्द्यादित्वात् कर्तरि ल्युः।

**( ६१-६२ ) अति-अदि—बन्धने**। (बांधना, पाना, हासिल करना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.।

१ अन्तति। २ आनन्त आनन्ततुः आनन्तुः। ५ अन्ततु। ६ आन्तत्। ७ अन्तेत्। इत्यादि 'अर्दति' (५५) वत्। अन्तः अन्तिमम्। अन्तिकम्। एवं 'अन्दति' इत्यादि।

**( ६३ ) इदि—परमैश्वर्ये**। (अमानवीय पराक्रम होना, ईश्वरी शक्ति होना, ऐश्वर्य युक्त होना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | इन्दति | इन्दतः | इन्दन्ति | प्र. |
| | इन्दसि | इन्दथः | इन्दथ | म. |
| | इन्दामि | इन्दावः | इन्दामः | उ. |
| लिट् | इन्दाञ्चकार | इन्दाञ्चक्रतुः | इन्दाञ्चक्रुः | प्र. |
| | इन्दाञ्चकर्थ | इन्दाञ्चक्रथुः | इन्दाञ्चक्र | म. |
| | इन्दाञ्चकार-चकर | इन्दाञ्चकृव | इन्दाञ्चकृम | उ. |
| लुट् | इन्दिता | इन्दितारौ | इन्दितारः | प्र. |
| | इन्दितासि | इन्दितास्थः | इन्दितास्थ | म. |
| | इन्दितास्मि | इन्दितास्वः | इन्दितास्मः | उ. |
| लृट् | इन्दिष्यति | इन्दिष्यतः | इन्दिष्यन्ति | प्र. |
| | इन्दिष्यसि | इन्दिष्यथः | इन्दिष्यथ | म. |
| | इन्दिष्यामि | इन्दिष्यावः | इन्दिष्यामः | उ. |
| लोट् | इन्दतु-इन्दतात् | इन्दताम् | इन्दन्तु | प्र. |
| | इन्द | इन्दतम् | इन्दत | म. |
| | इन्दानि | इन्दाव | इन्दाम | उ. |
| लङ् | ऐन्दत् | ऐन्दताम् | ऐन्दन् | प्र. |
| | ऐन्दः | ऐन्दतम् | ऐन्दत | म. |
| | एन्दम् | ऐन्दाव | ऐन्दाम | उ. |
| वि. लि. | इन्देत् | इन्देताम् | इन्देयुः | प्र. |
| | इन्देः | इन्देतम् | इन्देत | म. |
| | इन्देयम् | इन्देव | इन्देम | उ. |
| आ. लि. | इन्द्यात् | इन्द्यास्ताम् | इन्द्यासुः | प्र. |
| | इन्द्याः | इन्द्यास्तम् | इन्द्यास्त | म. |
| | इन्द्यासम् | इन्द्यास्व | इन्द्यास्म | उ. |
| लुङ् | ऐन्दीत् | ऐन्दीष्टाम् | ऐन्दिषुः | प्र. |
| | ऐन्दीः | ऐन्दीष्टम् | ऐन्दिष्ट | म. |
| | ऐन्दिषम् | ऐन्दिष्व | ऐन्दिष्म | उ. |
| लृङ् | ऐन्दिष्यत् | ऐन्दिष्यताम् | ऐन्दिष्यन् | प्र. |
| | ऐन्दिष्यः | ऐन्दिष्यतम् | ऐन्दिष्यत | म. |
| | ऐन्दिष्यम् | ऐन्दिष्याव | ऐन्दिष्याम | उ. |

**भावे**—इन्द्यते। **णिचि**—इन्दयति। २ इन्दयामास। ३ इन्दयिता। ४ इन्दयिष्यति। ५ इन्दयतु-इन्दयतात्। ६ ऐन्दयत्। ७ इन्दयेत्। ८ इन्द्यात्। ९ ऐन्दिदत्। १० ऐन्दयिष्यत्। **पक्षे**—इन्दयते। इत्यादि। **सनि**—इन्दिदिषति। ९ ऐन्दिदिषीत्। १० ऐन्दिदिषिष्यत्। **कृत्सु**—इन्दित्वा, समिन्द्य, इन्दितुम्, इन्दन् इन्दकः-दिका, इन्दिता-त्री, इन्दितम्-तः-तवान्-इन्दः, इन्द्रः[1]-इन्द्राणी,-इन्दिरा,[2] इन्दितव्यम्, इन्दयितव्यम्, इन्दनीयम्, इन्द्यमानः, इन्दनम्, इन्द्यम्, इन्दिष्यन्-न्ती, इन्दयन्-न्ती, इन्दिष्यन्-न्ती, इन्दयिष्यन्-न्ती-ती, इन्दयमानः-इन्दयिष्यमाणः।

**( ६४ ) बिदि—अवयवे**। (अवयव होना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.। बिन्दति। इत्यादि। 'कुन्थति' (४३) वत्। बिन्दुः बाहुलकादुप्रत्ययः।

**( ६५ ) गडि—वदनैकदेशे**। (गालों में रोग होना, गण्डमाला होना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.। गण्डति। जगण्ड। इत्यादि 'क्रन्दति' वत्।

**( ६६ ) णिदि—कुत्सायाम्**। (निन्दा करना, दोष लगाना) सकर्म.। सेट्। परस्मै.।

१ निन्दति। २ निनिन्द 'निनिन्दतुः' निनिन्दुः। ३ निन्दिता। ४ निन्दिष्यति। ५ निन्दतु। ६ अनिन्दत्। ७ निन्देत्। ८ निन्द्यात्। ९ अनिन्दीत्। १० अनिन्दिष्यत्।

**कर्मणि**—निन्द्यते। **णिचि**—निन्दयति-ते। **सनि**—निनिन्दिषति। **यङि**—नेनिन्द्यते। **यङ्लुकि**—नेनिन्दीति-नेनिन्ति। **कृत्सु**—निन्दनीयम्, निन्दनम्, निन्दकः[3], निन्दी निन्दिता, निन्दितः, निन्दा, निन्दितुम्, निन्दितव्यम्, निन्दित्वा, सन्निन्द्य, निन्द्यम्, निन्दन्, निन्द्यमानः, निन्दिष्यन्, निन्दिष्यमाणः। प्रणिन्दकः[4]-प्रनिन्दकः-न्दिका, निन्दयिता-त्री।

**( ६७ ) टुनदि (नन्द) —समृद्धौ**। (वृद्धि होना, बढ़ती होना। **आ**— सुखी होना, आनन्दित होना, **अभि**— इच्छा करना, स्वीकार करना, प्रशंसा करना, **प्रति**—उपकार करना, धन्यवाद देना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.।

१ नन्दति। २ ननन्द। ३ नन्दिता। ४ नन्दिष्यति। ५ नन्दतु-नन्दतात्। ६ अनन्दत्। ७ नन्देत्। ८ नन्द्यात्। ९ अनन्दीत्। १० अनन्दिष्यत्।

**णिचि**—नन्दयति-नन्दयते। **सनि**—निनन्दिषति। **यङि**—नानन्द्यते। **यङ्लुकि**—

---

१ औणादिके (द. उ. ८-४६) रन् प्रत्यये रूपम्। स्त्रियां प्रयोगे (इन्द्रवरुण १४-१-४९) इत्यादिना ङीप्, तत्संनियोगेनानुमागमश्च भवति।

'अतर्दकास्त्वद्य विकर्दमाशयाः प्रखर्दवृत्तैरसमन्तितान्तिकाः।

श्रुतन्दुकेः चितगजेन्द्ररोधिनः तुष्यन्तु गुणबिन्दुलोलुपः ॥(धा.का. १-९)

२ औणादिके किरच् प्रत्यये रूपम्।

३ 'वा निसनिक्षनिन्दाम्' (८-४-३३) इति कृत्प्रत्ययपरकधातुसम्बन्धिनकारस्य णत्वं विकल्पेन भवति।

४ 'निन्दहिंसक्लिशखाद–' (३-२-१४६) इत्यादिना तच्छीलादिषु कर्तृषु वुञ्। अकादेशः।

'निन्दको रजनीम्मन्यं दिवसं क्लेशको निशाम्।' (भ.का. ७/९३)

नानन्दीति-नानन्ति। **कृत्सु**—नन्दनीयम्, नन्दनम्, नन्दः,[१] नन्दनः,[२] अथुच्-नन्दथुः, नन्दकः,[३] आनन्दी, नन्दिता, नन्दितः, नन्दा, नन्दितुम्, नन्दितव्यम्, नन्दित्वा, नन्दन्, नन्दिष्यन्, रघुनन्दनः,[४] हरिनन्दी,[५] परिनन्दनम्, नन्दयित्नुः[६], ननान्दा,[७] नन्दयन्तः,[८] शेषं 'कन्दति' वत्।

**(६८) चदि—(चन्द) आह्लादे दीप्तौ च।** (आनन्द पाना, खुश होना, चमकना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। १ चन्दति। २ चचन्द।

**णिचि**—नन्दयति-ते। **सनि**—चिचन्दिषति। **यङि**—चाचन्द्यते। **यङ्लुकि**—चचन्दीति-चाचन्ति। **कृत्सु**—चन्दितुम्, चन्दित्वा, चन्दितव्यम्, चन्दनीयम्। चन्द्रः, चन्दिरः, चन्द्रिका, चन्दनम्। इत्यादि 'कुन्थति' (४३) वत्।

**(६९) त्रदि—चेष्टायाम्।** (प्रयत्न करना, उद्यम करना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.।

त्रन्दति। **णिचि**—त्रन्दयति-ते। **सनि**—तित्रन्दिषति। **यङि**—तात्रन्द्यते। **यङ्लुकि**—तात्रन्दीति-तात्रद्धि इत्यादि 'क्रन्दति' वत्।

**(७०-७२) कदि-क्रदि-क्लदि—आह्वाने रोदने च।** (पुकारना, रोना)। आह्वाने, सकर्म.। रोदने त्वकर्म.। सेट्। परस्मैपदी।

१ क्रन्दति। २ चक्रन्द। ३ क्रन्दिता। ४ क्रन्दिष्यति। ५ क्रन्दतु। ६ अक्रन्दत्। ७ क्रन्देत्। ८ क्रन्द्यात् क्रन्द्यास्ताम्। ९ अक्रन्दीत्। १० अक्रन्दिष्यत्।

**कर्मणि भावे च**—क्रन्द्यते। २ चक्रन्दे। ९ अक्रन्दि। **णिचि**—क्रन्दयति-क्रन्दयते। २ क्रन्दयाञ्चकार। ९ अचक्रन्दत्। **सनि**—चिक्रन्दिषति। ९ अचिक्रन्दिषीत्। **यङि**—चाक्रन्द्यते। **यङ्लुकि**—चाक्रन्दीति- चाक्रन्ति। **कृत्सु**— क्रन्दितव्यः, क्रन्दनीयः, क्रन्द्यः, क्रन्दितः, क्रन्दन्, क्रन्दितुम्, क्रन्दनम्, सक्रन्दनः, इन्द्रः, क्रन्दित्वा, आक्रन्द्य। एवं 'कन्दति' 'क्लन्दति' इत्यादि बोध्यम्।

**(७३) क्लिदि—परिवेदने।** परिवेदनं-शोकः। (रोना, शोक करना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। क्लिन्दति। चिक्लिन्द। अक्लिन्दीत्। इत्यादि। 'क्रन्दति' (७१) वत्।

---

१ 'पचाद्यचि' (३-१-१३४) रूपमेवम्। नन्दतीति नन्दः। नन्द एव नान्दः प्रज्ञादित्वात् (५-४-३८) स्वार्थेऽण्। अणन्तात् ङीपि नान्दी = मङ्गलध्वनिः।

२ ण्यन्तात् नन्दयतीति नन्दनः। 'नन्दिग्रहि–' (३-१-१३४) इति कर्तरि ल्युं प्रत्ययः कर्मण्यणोपवादः।

३ नन्दतात् इति नन्दकः 'आशिषि च' (३-१-१५०) इति वुञ्। 'आशिषि च' (वा. ७-३-४५) इति निषेधात् स्त्रियाम् इत्वं न, तेन नन्दका इत्येव भवति।

४ रघूणां नन्दयिता रघुनन्दनः, क्षुम्नादित्वात् (८-४-३९) णत्वं न।

५ हरिं नन्दतीति हरिनन्दी, 'सुप्यजातौ–' (३-२-७८) इति ताच्छील्ये णिनिः।

६ औणादिकः (द.उ. १-१४०) इत्नुच् प्रत्ययो ण्यन्तात् भवति 'नन्दयतीति नन्दयित्नुः आनन्दः प्रमुदितश्च' 'अयामन्ताल्वाय्येत्न्विष्णुषु' (६-४-५५) इति णेरयादेशः।

७ 'नञि च नन्देः' (द. २-६) इति ऋन् प्रत्ययः वृद्धिश्च। न नन्दतीति ननान्दा = पत्युर्भगिनी।

८ 'तॄभूवहि–' (द.उ. ६-१९) इत्यादिना आशिषि झच्प्रत्ययः, षिच्च। नन्द्यात् इत्याशीरर्थे नन्दयन्तः इति रूपम् आनन्द इत्यर्थः।

**(७४) शुन्ध—शुद्धौ।**(शुद्ध होना, पवित्र होना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.। शुन्धति। शुशुन्ध। शुध्यात्। शुध्यास्ताम्। शुधितः, शुधित्वा, इत्यादि वक्ष्यमाण 'कुञ्चति' (१८५) वत्।

**(७५) शीकृ—सेचने।** सेचनम् = आर्द्रीकरणम्। (सींचना) सकर्म.। सेट्.। आत्मने.। शीकते। शिशीके। सर्वं 'क्लीवति' वत्। शीकरोऽम्बुकणः।

**(७६) लोकृ—दर्शने।** दर्शनं = प्रेक्षणम्। (देखना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.।

१ लोकते। २ लुलोके। ३ लोकिता। ४ लोकिष्यते। ५ लोकताम्। ६ अलोकत। ७ लोकेत। ८ लोकिषीष्ट। ९ अलोकिष्ट। १० अलोकिष्यत।

**कर्मणि**—लोक्यते। **णिचि**—लोकयति-ते। ९ अलुलुकत्-त। **सनि**—लुलोकिषते। **यङि**—लोलोक्यते। **यङ्लुकि**—लोलोकीति-लोलोक्ति। **कृत्सु**—लोकितव्यम्, लोकनीयम्, लोक्यम्, लोकमानः, लोकनम्, लोकित्वा, आलोक्य, लोकितुम् लोकयितुम्, लोककः, लोकिका, लोकिता-त्री, लोकयन्-न्ती, लोकिष्यन्-न्ती, लोकयिष्यन्-न्ती-ती, लोक्-लोग्-लोकौ-लोकः, लोकितम्-तः-लोकः-आलोकः, अवलोकः, उलूकः[१], लोकम्ः, विलोकः, प्रलोकी, भयलोकी, लोक्यम्, लोक्यमानः, लोका, लोकना, लोकयित्वा।

**(७७) श्लोकृ—संघाते।** संधातो ग्रन्थः। स च ग्रन्थमानस्य व्यापारो ग्रन्थितुर्वा। (श्लोक बनाना, कविता करना, रचना करना)। आद्येऽकर्मकः, द्वितीये सकर्मकः। सेट्। आत्मने.। श्लोकते। शुश्लोके। इत्यादि 'लोकति' (७६) वत्। उपश्लोकयति = श्लोकैरुपस्तौति इत्यर्थः।

**(७८-७९) द्रेकृ-ध्रेकृ—शब्दोत्साहयोः।** (शब्द करना, उत्साह करना। बढ़ना, बढ़प्पन या आनन्द प्रकट करना)। अकर्म.। सेट्। आत्मने.। द्रेकते। ध्रेकते। इत्यादि 'देवते' वत्।

**(८०) रेकृ—शङ्कायाम्।**(शङ्का करना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। रेकते। रिरेके। सर्वं 'वेषति' (३६७) वत्। रेको नीचः।

**(८१-८५) सेकृ-स्रेकृ-स्रकि-श्रकि-श्लकि—गतौ।**(जाना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। सेकते। स्रेकते। स्रङ्कते। श्रङ्कते। श्लङ्कते। इत्यादि। 'देवति' तथा 'श्रन्यति' (३५) वत्।

**(८६) शकि—शङ्कायाम्।**(शङ्का करना, संशय करना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | शङ्कते | शङ्केते | शङ्कन्ते | प्र. |
| | शङ्कसे | शङ्केथे | शङ्कध्वे | म. |
| | शङ्के | शङ्कावहे | शङ्कामहे | उ. |

१ 'उलति नेत्राभ्यां दहति उलूकः। ऊर्ध्वालोकनादिति निरुक्तम्' इति अमरटीकायां क्षीरस्वामिना उक्तम्। द.उ. वृत्तौ तु (३-४६) 'उत्क्रम्य दृष्टिविषयमालोकयतीति उलूकः कौशिकः' इत्येवं दृश्यते। अत्राहोज्ज्वलदत्तः— 'सर्वस्वे तु ऊर्ध्वौ कर्णावस्येति पृषोदरादित्वात् उलूक इत्यपि साधितम्'। इति।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लिट् | शशङ्के | शशङ्काते | शशङ्किरे | प्र. |
| | शशङ्किषे | शशङ्काथे | शशङ्किध्वे | म. |
| | शशङ्के | शशङ्किवहे | शशङ्किमहे | उ. |
| लुट् | शङ्किता | शङ्कितारौ | शङ्कितारः | प्र. |
| | शङ्कितासे | शङ्कितासाथे | शङ्किताध्वे | म. |
| | शङ्किताहे | शङ्कितास्वहे | शङ्कितास्महे | उ. |
| लृट् | शङ्किष्यते | शङ्किष्येते | शङ्किष्यन्ते | प्र. |
| | शङ्किष्यसे | शङ्किष्येथे | शङ्किष्यध्वे | म. |
| | शङ्किष्ये | शङ्किष्यावहे | शङ्किष्यामहे | उ. |
| लोट् | शङ्कताम् | शङ्केताम् | शङ्कन्ताम् | प्र. |
| | शङ्कस्व | शङ्केथाम् | शङ्कध्वम् | म. |
| | शङ्कै | शङ्कावहै | शङ्कामहै | उ. |
| लङ् | अशङ्कत | अशङ्केताम् | अशङ्कन्त | प्र. |
| | अशङ्कथाः | अशङ्केथाम् | अशङ्कध्वम् | म. |
| | अशङ्के | अशङ्कावहि | अशङ्कामहि | उ. |
| वि. लि. | शङ्केत | शङ्केयाताम् | शङ्केरन् | प्र. |
| | शङ्केथाः | शङ्केयाथाम् | शङ्केध्वम् | म. |
| | शङ्केय | शङ्केवहि | शङ्केमहि | उ. |
| आ. लि. | शङ्किषीष्ट | शङ्किषीयास्ताम् | शङ्किषीरन् | प्र. |
| | शङ्किषीष्ठाः | शङ्किषीयास्थाम् | शङ्किषीध्वम् | म. |
| | शङ्किषीय | शङ्किषीवहि | शङ्किषीमहि | उ. |
| लुङ् | अशङ्किष्ट | अशङ्किषाताम् | अशङ्किषत | प्र. |
| | अशङ्किष्ठाः | अशङ्किषाथाम् | अशङ्किध्वम्-ढ्वम् | म. |
| | अशङ्किषि | अशङ्किष्वहि | अशङ्किष्महि | उ. |
| लृङ् | अशङ्किष्यत | अशङ्किष्येताम् | अशङ्किष्यन्त | प्र. |
| | अशङ्किष्यथाः | अशङ्किष्येथाम् | अशङ्किष्यध्वम् | म. |
| | अशङ्किष्ये | अशङ्किष्यावहि | अशङ्किष्यामहि | उ. |

**कर्मणि**—शङ्क्यते। **णिचि**—शङ्कयति-ते। **सनि**—शिशङ्किषते। **यङि**—शाशङ्क्यते। **यङ्लुकि**—शाशङ्कीति-शाशङ्कि। **कृत्सु**—शङ्कनीयम्, शङ्कनम्, शङ्कः, शङ्ककः, आशङ्की, शङ्किता, शङ्कितः, शङ्का, शङ्कितुम्, शङ्कितव्यम्, शङ्कित्वा, आशङ्क्य, शङ्क्यम्, शङ्कयिता-त्री, शङ्कमानः, कर्मणि- शङ्क्यमानः, शङ्किष्यमाणः, शङ्कुः,[1] शङ्कुला[2]।

१ औणादिके (द.उ. १-२०) कु प्रत्यये रूपमेवम्। शङ्कुः = जलजन्तुभेदः, स्थाणुः, शल्यं च। '—शङ्कवो मकरादयः।' इत्यमरः (१-१०-२०)

२ 'हृषेरुलच्' (द.उ. ८-१०६) इत्यत्र बाहुलकात् उलच् प्रत्यये रूपमेवम्। शङ्कुला = आयुधम्, कुमारक्रीडा च।

**(८७) अकि—लक्षणे** । लक्षणम् = अङ्कनम् (चिह्नम्) । (चिह्न करना, टेढा जाना) ।

सकर्म. । सेट् । आत्मने. ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | अङ्क्ते | अङ्केते | अङ्कन्ते | प्र. |
| | अङ्क्से | अङ्केथे | अङ्क्ध्वे | म. |
| | अङ्के | अङ्कावहे | अङ्कामहे | उ. |
| लिट् | आनङ्के | आनङ्काते | आनङ्किरे | प्र. |
| | आनङ्किषे | आनङ्काथे | आनङ्किध्वे | म. |
| | आनङ्के | आनङ्किवहे | आनङ्किमहे | उ. |
| लुट् | अङ्किता | अङ्कितारौ | अङ्कितारः | प्र. |
| | अङ्कितासे | अङ्कितासाथे | अङ्किताध्वे | म. |
| | अङ्किताहे | अङ्कितास्वहे | अङ्कितास्महे | उ. |
| लृट् | अङ्किष्यते | अङ्किष्येते | अङ्किष्यन्ते | प्र. |
| | अङ्किष्यसे | अङ्किष्यथे | अङ्किष्यन्ते | म. |
| | अङ्किष्ये | अङ्किष्यावहे | अङ्किष्यामहे | उ. |
| लोट् | अङ्क्ताम् | अङ्केताम् | अङ्कन्ताम् | प्र. |
| | अङ्क्ष्व | अङ्केथाम् | अङ्क्ध्वम् | म. |
| | अङ्कै | अङ्कावहै | अङ्कामहै | उ. |
| लङ् | आङ्क्त | आङ्केताम् | आङ्कन्त | प्र. |
| | आङ्क्थाः | आङ्केथाः | आङ्क्ध्वम् | म. |
| | आङ्के | आङ्कावहि | आङ्कामहि | उ. |
| वि. लि. | अङ्केत | अङ्केयाताम् | अङ्केरन् | प्र. |
| | अङ्केथाः | अङ्केयाथाम् | अङ्केध्वम् | म. |
| | अङ्केय | अङ्केवहि | अङ्केमहि | उ. |
| आ. लि. | अङ्किषीष्ट | अङ्किषीयास्ताम् | अङ्किषीरन् | प्र. |
| | अङ्किषीष्ठाः | अङ्किषीयास्थाम् | अङ्किषीध्वम् | म. |
| | अङ्किषीय | अङ्किषीवहि | अङ्किषीमहि | उ. |
| लुङ् | आङ्किष्ट | आङ्किषाताम् | आङ्किषत | प्र. |
| | आङ्किष्ठाः | आङ्किषाथाम् | आङ्किध्वम् | म. |
| | आङ्किषि | आङ्किष्महि | आङ्किष्महि | उ. |
| लृङ् | आङ्किष्यत | आङ्किष्येताम् | आङ्किष्यन्त | प्र. |
| | आङ्किष्यथाः | आङ्किष्येथाम् | आङ्किष्यध्वम् | म. |
| | आङ्किष्ये | आङ्किष्यावहि | आङ्किष्यामहि | उ. |

णिचि

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | अङ्क्यते | अङ्क्येते | अङ्क्यन्ते | प्र. |
| | अङ्क्यसे | अङ्क्येथे | अङ्क्यध्वे | म. |
| | अङ्क्ये | अङ्क्यावहे | अङ्क्यामहे | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लिट् | अङ्क्याञ्चक्रे | अङ्क्याञ्चक्राते | अङ्क्याञ्चक्रिरे | प्र. |
| | अङ्क्याञ्चकृषे | अङ्क्याञ्चक्राथे | अङ्क्याञ्चकृढ्वे | म. |
| | अङ्क्याञ्चक्रे | अङ्क्याञ्चकृवहे | अङ्क्याञ्चकृमहे | उ. |
| लुट् | अङ्क्यिता | अङ्क्यितारौ | अङ्क्यितारः | प्र. |
| | अङ्क्यितासे | अङ्कियातासाथे | अङ्क्यिताध्वे | म. |
| | अङ्क्यिताहे | अङ्क्यितास्वहे | अङ्क्यितास्महे | उ. |
| लृट् | अङ्क्यिष्यते | अङ्क्यिष्येते | अङ्किष्यन्ते | प्र. |
| | अङ्क्यिष्यसे | अङ्क्यिष्येथे | अङ्क्यिष्यध्वे | म. |
| | अङ्क्यिष्ये | अङ्क्यिष्यावहे | अङ्क्यिष्यामहे | उ. |
| लोट् | अङ्क्यताम् | अङ्क्येताम् | अङ्क्यन्ताम् | प्र. |
| | अङ्क्यस्व | अङ्क्येथाम् | अङ्क्यध्वम् | म. |
| | अङ्क्यै | अङ्क्यावहै | अङ्क्यामहै | उ. |
| लङ् | आङ्क्यत | आङ्क्येताम् | आङ्क्यन्त | प्र. |
| | आङ्क्यथाः | आङ्क्येथाम् | आङ्क्यध्वम् | म. |
| | आङ्क्ये | आङ्क्यावहि | आङ्क्यामहि | उ. |
| वि. लि. | अङ्क्येत | अङ्क्येताम् | अङ्क्येरन् | प्र. |
| | अङ्क्येथाः | अङ्क्येयाथाम् | अङ्क्येध्वम् | म. |
| | अङ्क्येय | अङ्क्येवहि | अङ्क्येमहि | उ. |
| आ. लि. | अङ्क्यिषीष्ट | अङ्क्यिषीयास्ताम् | अङ्क्यिषीरन् | प्र. |
| | अङ्क्यिषीष्ठाः | अङ्क्यिषीयास्थाम् | अङ्क्यिषीध्वम् | म. |
| | अङ्क्यिषीय | अङ्क्यिषीवहि | अङ्क्यिषीमहि | उ. |
| लुङ् | आञ्चिकत | आञ्चिकेताम् | आञ्चिकन्त | प्र. |
| | आञ्चिकथाः | आञ्चिकेथाम् | आञ्चिकध्वम् | म. |
| | आञ्चिके | आञ्चिकावहि | आञ्चिकामहि | उ. |
| लृङ् | आङ्क्यिष्यत | आङ्क्यिष्येताम् | आङ्क्यिष्यन्त | प्र. |
| | आङ्क्यिष्यथाः | आङ्क्यिष्येथाम् | आङ्क्यिष्यध्वम् | म. |
| | आङ्क्यिष्ये | आङ्क्यिष्यावहि | आङ्क्यिष्यामहि । | उ. |

**सनि**—१ आञ्चिकिषते । २ अञ्चिकिषाञ्चक्रे । ३ अञ्चिकिषिता । ४ अञ्चिकिषिष्यते । ५ अचिकिषताम् । ६ आञ्चिकिषत । ७ अञ्चिकिषेत । ८ अञ्चिकिषिषीष्ट । ९ अञ्चिकिषिष्ट । १० अञ्चिकिषिष्यत । **कृत्सु**—अङ्ककः[1]-ङ्किका, अङ्किता-त्री, अन्[2]-अङ्कौ-अङ्क, अङ्कितः-तम्, अङ्कितव्यम्, अङ्कनीयम्, अङ्का,[3] अङ्कनम्, आङ्कनम्, अङ्क्यम्, अङ्कमानः, अङ्कित्वा, अङ्कितुम्, अङ्कः, अङ्कुरः । अङ्कनीयः, अङ्कयिता, क्तिन्नास्ति, युच्– अङ्कना, अङ्कः, अङ्कयितव्यः, अङ्क्यः,

१ 'इदितो नुम् धातोः' (७-१-५८) इति नुम् ।
२ 'संयोगान्तस्य लोपः' (८-२-२३) ।
३ 'गुरोश्च हलः' (३-३-१०३) इति अकारप्रत्ययः ।

अङ्कयितुम्, अङ्कयित्वा, समङ्क्य, अङ्कनम्, अङ्कयन्, अङ्कयमानः, अङ्कयमानः[1], अङ्कयिष्यन्, अङ्कयिष्यमाणः।

(८८) **वकि—कौटिल्ये।** गतौ च (वक्र होना, टेढा होना, दुष्टता करना, नमना। टेढा जाना)। अक.। गतौ सकर्म.। सेट्। आत्मने.। वङ्कते। ववङ्के। इत्यादि 'वन्दति' ११ वत्।

(८९) **मकि—मण्डने।** (संवारना, अलङ्कृत करना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। मङ्कते। इत्यादि। 'वन्दति' (११) वत्।

(९०) **कक—लौल्ये।** (लौल्यं = गर्वश्चापल्यञ्च)। (गर्व करना, चञ्चल होना। प्यासा होना। अकर्म)।। सेट्। आत्मने.। ककते। 'कलति' वत्। काकः।

(९१-९२) **कुक-वृक—आदाने।** (लेना)। सक.। सेट्। आत्मने.।

१ कोकते। २ चुकुके। ९ अकोकिष्ट। 'रोचति' (७४५) वत्। एवं १ वर्कते। २ ववृके। ३ वर्किता। ८ वर्किषीष्ट। ९ अवर्किष्ट। वृकः।

(९३) **चक—तृप्तौ प्रतिघाते च।** (तृप्त होना, सन्तुष्ट होना, चकमा देना, धोखा देना)। अकर्म.। सेट्। आत्मने.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | चकते | चकेते | चकन्ते | प्र. |
| | चकसे | चकेथे | चकध्वे | म. |
| | चके | चकावहे | चकामहे | उ. |
| लिट् | चेके | चेकाते | चेकिरे | प्र. |
| | चेकिषे | चेकाथे | चेकिध्वे | म. |
| | चेके | चेकिवहे | चेकिमहे | उ. |
| लुट् | चकिता | चकितारौ | चकितारः | प्र. |
| | चकितासे | चकितासाथे | चकिताध्वे | म. |
| | चकिताहे | चकितास्वहे | चकितास्महे | उ. |
| लृट् | चकिष्यते | चकिष्येते | चकिष्यन्ते | प्र. |
| | चकिष्ये | चकिष्येथे | चकिष्यध्वे | म. |
| | चकिष्ये | चकिष्यावहे | चकिष्यामहे | उ. |
| लोट् | चकताम् | चकेताम् | चकन्ताम् | प्र. |
| | चकस्व | चकेथाम् | चकध्वम् | म. |
| | चकै | चकावहै | चकामहै | उ. |
| लङ् | अचकत | अचकेताम् | अचकन्त | प्र. |
| | अचकथाः | अचकेथाम् | अचकध्वम् | म. |
| | अचके | अचकावहि | अचकामहि | उ. |

१ इदित्वात् 'अनिदितां–' (६-४-२४) इति नलोपो न।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| वि. लि. | चकेत | चकेयाताम् | चकेरन् | प्र. |
| | चकेथाः | चकेयाथाम् | चकेध्वम् | म. |
| | चकेय | चकेवहि | चकेमहि | उ. |
| आ. लि. | चकिषीष्ट | चकिषीयास्ताम् | चकिषीरन् | प्र. |
| | चकिषीष्ठाः | चकिषीयास्थाम् | चकिषीढ्वम् | म. |
| | चकिषीय | चकिषीवहि | चकिषीमहि | उ. |
| लुङ् | अचकिष्ट | अचकिषाताम् | अचकिषत | प्र. |
| | अचकिष्टाः | अचकिषाथाम् | अचकिध्वम् | म. |
| | अचकिषि | अचकिष्वहि | अचकिष्महि | उ. |
| लृङ् | अचकिष्यत | अचकिष्येताम् | अचकिष्यन्त | प्र. |
| | अचकिष्यथाः | अचकिष्येथाम् | अचकिष्यध्वम् | म. |
| | अचकिष्ये | अचकिष्यावहि | अचकिष्यमहि | उ. |

**भावे**—चक्यते। **णिचि**—चकयति। **सनि**—चिचकिषते। ९ अचिचकिषिष्ट। १० अचिचकिषिष्यत। यङि—चाचक्यते। ९ अचाचकिष्ट। १० अचाचकिष्यत। **यङ्लुकि**—चाचकीति-चाचक्ति। ९ अचाचकीत्। १० अचाचकिष्यत्। **कृत्सु**—चकितव्यम्, चकनीयम्, चाक्यम्, चकितः, चकमानः, चकित्वा, प्रचक्य, चकितुम्, चकोरः।

**(९४-९७) ककि-लकि-श्वकि-त्रकि—गतौ।**(जाना) सकर्म.। सेट्। आत्मने.। इदित्। कङ्क्ते। चकङ्के। कङ्किता। कङ्किषीष्ट। अकङ्किष्ट। सर्वं 'वन्दति' (११) वत्। एवमेव वङ्क्ते। शङ्क्ते। त्रङ्क्ते। इत्यादि बोध्यम्।

**(९८) ढौकृ—गतौ।** (जाना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। ढौकते। डुढौके। तं विप्रप्रदर्शं कृतघातयत्ना यान्तं वने रात्रिचरी डुढौके। (भट्टिः २/२३) ढौकिता। ढौकिषीष्ट। अढौकिष्ट।

**कृत्सु**—ढौककः-किका, ढौकिता-त्री, ढौकयन्-न्ती, ढौकयिष्यन्-न्ती-ती, ढौकमानः, ढौकयमानः, ढौकिष्यमाणः, ढौक्-ग्, ढौकितम्-तः, ढौकः, ढौकनः, ढौकितव्यम्, ढौकयितव्यम्, ढौकनीयम्, ढौकितुम्, ढौक्यमानः, ढौकः, ढौकनम्, ढौकित्वा, प्रढौक्य।

**(९९) त्रौकृ—गतौ।** (जाना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.।

१ त्रौकते। २ तुत्रौके। ३ त्रौकिता। ५ त्रौकताम्। ६ अत्रौकत। ७ त्रौकेत। ८ त्रौकिषीष्ट। १० अत्रौकिष्यत।

**(१००-१०२) ष्वष्क (स्वष्क) वस्क, मस्क—गतौ।** सकर्म.। सेट्। आत्मने.। स्वष्कते। वस्कते। मस्कते। इत्यादि 'कत्थति' (३६) वत्।

**(१०३-१०६) टिकृ-टीकृ-तिकृ-तीकृ—गतौ।** सकर्म.। सेट्। आत्मने.। ऋदित्।

१ टेकते। २ टिटिके। ३ टिकिता। ८ टिकिषीष्ट। ९ अटिकिष्ट। इत्यादि 'त्रिक्ष्विदा' धातुवत्। एवं टीकते। टीक्यते गम्यते ज्ञायते अनया टीका व्याख्यानम्। १ टेकते। २ तितिके। ३ तेकिता। ८ अतेकिष्ट। १ तीकते। २ तितीके। इत्यादि बोध्यम्।

**(१०७) रघि—गतौ**। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। रङ्घते। 'वन्दति' (११) वत्।

**(१०८) लघि—गतौ, भोजननिवृत्तौ च**। (जाना, उपवास करना, **उत**—लांघना, मर्यादा का अतिक्रमण करना)। सकर्मकोऽकर्मकश्च। सेट्। आत्मने.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | लङ्घते | लङ्घेते | लङ्घन्ते | प्र. |
| | लङ्घसे | लङ्घेथे | लङ्घध्वे | म. |
| | लङ्घे | लङ्घावहे | लङ्घामहे | उ. |
| लिट् | ललङ्घे | ललङ्घाते | ललङ्घिरे | प्र. |
| | ललङ्घिषे | ललङ्घाथे | ललङ्घिध्वे | म. |
| | लङ्घधे | ललङ्घिवहे | एलङ्घिमहे | उ. |
| लुट् | लङ्घिता | लङ्घितारौ | लङ्घितारः | प्र. |
| | लङ्घितासे | लङ्घितासाथे | लङ्घिताध्वे | म. |
| | लङ्घिताहे | लाङ्घितास्वहे | लङ्घितास्महे | उ. |
| लृट् | लङ्घिष्यते | लङ्घिष्येते | लङ्घिष्यन्ते | प्र. |
| | लङ्घिष्यसे | लङ्घिष्येथे | लङ्घिष्यध्वे | म. |
| | लङ्घिष्ये | लङ्घिष्यावहे | लङ्घिष्यामहे | उ. |
| लोट् | लङ्घताम् | लङ्घेताम् | लङ्घन्ताम् | प्र. |
| | लङ्घस्व | लङ्घेथाम् | लङ्घध्वम् | म. |
| | लङ्घै | लङ्घावहै | लङ्घामहै | उ. |
| लङ् | अलङ्घत | अलङ्घेताम् | अलङ्घन्त | प्र. |
| | अलङ्घथाः | अलङ्घेथाम् | अलङ्घध्वम् | म. |
| | अलङ्घे | अलङ्घावहि | अलङ्घामहि | उ. |
| वि. लि. | लङ्घेत | लङ्घेयाताम् | लङ्घेरन् | प्र. |
| | लङ्घेथाः | लङ्घेयाथाम् | लङ्घेध्वम् | म. |
| | लङ्घेय | लङ्घेवहि | लङ्घेमहि | उ. |
| आ. लि. | लङ्घिषीष्ट | लङ्घिषीयास्ताम् | लङ्घिषीरन् | प्र. |
| | लङ्घिषीष्ठाः | लङ्घिषीयास्थाम् | लङ्घिषीढ्वम् | म. |
| | लङ्घिषीय | लङ्घिषीवहि | लङ्घिषीमहि | उ. |
| लुङ् | अलङ्घिष्ट | अलङ्घिषाताम् | अलङ्घिषत | प्र. |
| | अलङ्घिष्ठाः | अलङ्घिषाथाम् | अलङ्घिढ्वम् | म. |
| | अलङ्घिषि | अलङ्घिष्वहि | अलङ्घिष्महि | उ. |
| लृङ् | अलङ्घिष्यत | अलङ्घिष्येताम् | अलङ्घिष्यन्त | प्र. |
| | अलङ्घिष्यथाः | अलङ्घिष्येथाम् | अलङ्घिष्यध्वम् | म. |
| | अलङ्घिष्ये | अलङ्घिष्यावहे | अलङ्घिष्यामहे | उ. |

**णिचि**—१ लङ्घ्यते। ९ अलङ्घिषत। १० अलङ्घिष्यत। **सनि**—१ लिलङ्घिषते। ९ अलिलङ्घिषीष्ट। १० अलिलङ्घिषिष्यत। **यङि**—१ लालङ्घ्यते। ९ अलालङ्घिष्ट। १० अलालङ्घिष्यत। **यङ्लुकि**—१ लालङ्घीति-लालङ्क्ति। ९ अलालङ्घीत्। १० अलालङ्घिष्यत्। **कृत्सु**—लङ्घितुम्, लङ्घित्वा, लङ्घनम्, लङ्घितव्यम्, लङ्घनीयम्, लङ्घकः-ङ्घिका, संलङ्घ्य, लङ्घितवान्, लघुः, लङ्घिता-त्री, लङ्घयिता-त्री, लङ्घयन्-न्ती, लङ्घयिष्यन्।

**(१०९) अघि—गत्याक्षेपे।** आक्षेपो निन्दा। गतौ गत्यारम्भे चैतन्ये च। (गति करना, आरम्भ करना, निन्दा करना)। अकर्म.। सेट्। आत्मने.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | अङ्घते | अङ्घेते | अङ्घन्ते | प्र. |
| | अङ्घसे | अङ्घेथे | अङ्घध्वे | म. |
| | अङ्घे | अङ्घावहे | अङ्घामहे | उ. |
| लिट् | आनङ्घे | आनङ्घाते | आनङ्घिरे | प्र. |
| | आनङ्घिषे | आनङ्घाथे | आनङ्घिध्वे | म. |
| | आनङ्घे | आनङ्घिवहे | आनङ्घिमहे | उ. |
| लुट् | अङ्घिता | अङ्घितारौ | अङ्घितारः | प्र. |
| | अङ्घितासे | अङ्घितासाथे | अङ्घिताध्वे | म. |
| | अङ्घिताहे | अङ्घितास्वहे | अङ्घितास्महे | उ. |
| लृट् | अङ्घिष्यते | अङ्घिष्येते | अङ्घिष्यन्ते | प्र. |
| | अङ्घिष्यसे | अङ्घिष्येथे | अङ्घिष्यध्वे | म. |
| | अङ्घिष्ये | अङ्घिष्यावहे | अङ्घिष्यामहे | उ. |
| लोट् | अङ्घताम् | अङ्घेताम् | अङ्घन्ताम् | प्र. |
| | अङ्घस्व | अङ्घेथाम् | अङ्घध्वम् | म. |
| | अङ्घै | अङ्घावहै | अङ्घामहै | उ. |
| लङ् | आङ्घत | आङ्घेताम् | आङ्घन्त | प्र. |
| | आङ्घथाः | आङ्घेथाम् | आङ्घध्वम् | म. |
| | आङ्घे | आङ्घावहि | आङ्घामहि | उ. |
| वि. लि. | अङ्घेत | अङ्घेयाताम् | अङ्घेरन् | प्र. |
| | अङ्घेथाः | अङ्घेयाथाम् | अङ्घेध्वम् | म. |
| | अङ्घेय | अङ्घेवहि | अङ्घेमहि | उ. |
| आ. लि. | अङ्घिषीष्ट | अङ्घिषीयास्ताम् | अङ्घिषीरन् | प्र. |
| | अङ्घिषीष्टाः | अङ्घिषीयास्थाम् | अङ्घिषीध्वम् | म. |
| | अङ्घिषीय | अङ्घिषीवहि | अङ्घिषीमहि | उ. |
| लुङ् | आङ्घिष्ट | आङ्घिषाताम् | आङ्घिषत | प्र. |
| | आङ्घिष्ठाः | आङ्घिषाथाम् | आङ्घिध्वम् | म. |
| | आङ्घिषि | आङ्घिष्वहि | आङ्घिष्महि | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुङ् | आङ्घिष्यत | आङ्घिष्येताम् | आङ्घिष्यन्त | प्र. |
| | आङ्घिष्यथाः | आङ्घिष्येथाम् | आङ्घिष्यध्वम् | म. |
| | आङ्घिष्ये | आङ्घिष्यावहि | आङ्घिष्यामहि | उ. |

**णिचि**—१ अङ्घयते। २ अङ्घयाञ्चक्रे। ३ अङ्घयिता। ४ अङ्घयिष्यते। ५ अङ्घयताम्। ६ आङ्घयत। ७ अङ्घयेत। ८ अङ्घयिषीष्ट। ९ आङ्घिषत। १० आङ्घयिष्यत। **सनि**—१ आञ्जिघिषते। २ आञ्जिघिषाञ्चक्रे। ३ अञ्जिघिषिता। ४ आञ्जिघिषिष्यते। ५ अञ्जिघिषताम्। ६ आञ्जिघिषत। ७ अञ्जिघिषेत। ८ अञ्जिघिषिषीष्ट। ९ आञ्जिघिषिष्ट। १० आञ्जिघिषिष्यत। **कृत्सु**—अङ्घनीयः, अङ्घयिता, अङ्घितः, अङ्घः, अङ्घयितव्यः, अङ्घनम्, अङ्घित्वा अङ्घम्।

**( ११०-१११ ) वधि-मधि—गत्याक्षेपे।** अक्षेपो निन्दा। गत्यारम्भे चैतन्ये। (जाना, निन्दा करना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। वङ्घते। ववङ्घे। मङ्घते। ममङ्घे। इत्यादि 'वन्दति' (११) वत्।

**( ११२ ) राघृ—सामर्थ्ये।** (समर्थ होना, योग्य होना)। अकर्म.। सेट्। आत्मने.। राघते। गाधति (४) वत्।

**( ११३ ) लाघृ—सामर्थ्ये।** (समर्थ होना)। अकर्म.। सेट्। आत्मने.। लाघते। ललाघे। गाधति (४) वत्।

**( ११४ ) द्राघृ—सामर्थ्ये आयामे च।** (शक्तिमान् होना, लम्बा करना, तानना)। अकर्म.। सेट्.। आत्मने.। द्राघते। दद्राघे। गाधति (४) वत्।

**( ११५ ) श्लाघृ—कत्थने।** (प्रशंसा करना, आत्म स्तुति करना, फुसलाना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। श्लाघते। शश्लाघे। इत्यादि गाधति (४) वत्।

**( ११६ ) फक्क—नीचैर्गतौ।** नीचगतिः =मन्दगमनम् सद्व्यवहारश्च। (धीरे-धीरे जाना, रेंगना, खराब आचरण करना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.।

१ फक्कति। २ पफक्क पफक्कतुः पफक्कुः। ३ फक्किता। ४ फक्किष्यति। ५ फक्कतु। ६ अफक्कत्। ७ फक्केत्। ८ फक्क्यात्। ९ अफक्कीत्। १० अफक्किष्यत्।

**सनि**—पिफक्किषति। **यङि**—पाफक्यते। **यङ्लुकि**—पाफक्कीति-पाफक्ति। इत्यादि 'नर्दति' (५६) वत्।

**( ११७ ) तक—हसने** (हंसना, उपहास करना, ठट्ठा करना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.। १ तकति। २ तताक तेकतुः तेकुः।

**णिचि**—ताकयति-ताकयते। **सनि**—तितकिषति। **यङि**—तातक्यते। **यङ्लुकि**—तातकीति-तातक्ति।

**( ११८ ) तकि—कृच्छ्रजीवने।** दुःख (तङ्गी) से जीवन बिताना। अकर्म.। सेट्। परस्मै.। तङ्कति। ततङ्क। ततङ्कतुः। इत्यादि 'क्रन्दति' (६१) वत्।

**(११९) बुक्क—भषणे**। भषणं = श्वरवः। (भौंकना, कुत्ते के समान शब्द करना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | बुक्कति | बुक्कतः | बुक्कन्ति | प्र. |
| | बुक्कसि | बुक्कथः | बुक्कथ | म. |
| | बुक्कामि | बुक्कावः | बुक्कामः | उ. |
| लिट् | बुबुक्क | बुबुक्कतुः | बुबुक्कुः | प्र. |
| | बुबुक्किथ | बुबुक्कथुः | बुबुक्क | म. |
| | बुबुक्क | बुबुक्किव | बुबुक्किम | उ. |
| लुट् | बुक्किता | बुक्कितारौ | बुक्कितारः | प्र. |
| | बुक्कितासि | बुक्कितास्थः | बुक्कितास्थ | म. |
| | बुक्कितास्मि | बुक्कितास्वः | बुक्कितास्मः | उ. |
| लृट् | बुक्किष्यति | बुक्किष्यतः | बुक्किष्यन्ति | प्र. |
| | बुक्किष्यसि | बुक्किष्यथः | बुक्किष्यथ | म. |
| | बुक्किष्यामि | बुक्किष्यावः | बुक्किष्यामः | उ. |
| लोट् | बुक्कात्-तात् | बुक्कताम् | बुक्कन्तु | प्र. |
| | बुक्क-तात् | बुक्कतम् | बुक्कत | म. |
| | बुक्कानि | बुक्काव | बुक्काम | उ. |
| लङ् | अबुक्कत् | अबुक्कताम् | अबुक्कन् | प्र. |
| | अबुक्कः | अबुक्कतम् | अबुक्कत | म. |
| | अबुक्कम् | अबुक्काव | अबुक्काम | उ. |
| वि. लि. | बुक्केत् | बुक्केताम् | बुक्केयुः | प्र. |
| | बुक्केः | बुक्कतम् | बुक्केत | म. |
| | बुक्केयम् | बुक्केव | बुक्केम | उ. |
| आ. लि. | बुक्क्यात् | बुक्क्यास्ताम् | बुक्क्यासुः | प्र. |
| | बुक्क्याः | बुक्क्यास्तम् | बुक्क्यास्त | म. |
| | बुक्क्यासम् | बुक्क्यास्व | बुक्क्यास्म | उ. |
| लुङ् | अबुक्कीत् | अबुक्किष्टाम् | अबुक्किषुः | प्र. |
| | अबुक्कीः | अबुक्किष्टम् | अबुक्किष्ट | म. |
| | अबुक्किषम् | अबुक्किष्व | अबुक्किष्म | उ. |
| लृङ् | अबुक्किष्यत् | अबुक्किष्यताम् | अबुक्किष्यन् | प्र. |
| | अबुक्किष्यः | अबुक्किष्यतम् | अबुक्किष्यत | म. |
| | अबुक्किष्यम् | अबुक्किष्याव | अबुक्किष्याम | उ. |

**णिचि**—बुक्कयति-ते। **सनि**—बुबुक्किषति। **यङि**—बोबुक्यते। **यङ्लुकि**—बोबुक्कीति-बोबुक्ति। **कृत्सु**—बुक्ककः-क्किका, बुबुक्किषकः-षिका, बोबुक्ककः-क्किका, बुक्का, बुक्कनीयम्, बुक्कः, बुक्कित्वा बुक्कमानः, बुक्कनम्, बुक्कितवान्।

(१२०) **कखे—हसने**। (हंसना) सकर्म.। सेट्। परस्मै.। एदित्। कखति। चकाख। 'गदति' (५२) वत्।

(१२१) **ओखृ—शोषणालमर्थयोः**। (शुष्क होना, सूखना, कान्तिमान होना, अलङ्कृत करना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। ऋदित्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | ओखति | ओखतः | ओखन्ति | प्र. |
| | ओखसि | ओखथः | ओखथ | म. |
| | ओखामि | ओखावः | ओखामः | उ. |
| लिट् | ओखाञ्चकार | ओखाञ्चक्रतुः | ओखाञ्चक्रुः | प्र. |
| | ओखाञ्चकर्थ | ओखाञ्चक्रथुः | ओखाञ्चक्र | म. |
| | ओखाञ्चकार | ओखाञ्चकृव | ओखाञ्चकृम | उ. |
| लुट् | ओखिता | ओखितारौ | ओखितारः | प्र. |
| | ओखितासि | ओखितास्थः | ओखितास्थ | म. |
| | ओखितास्मि | ओखितास्वः | ओखितास्मः | उ. |
| लृट् | ओखिष्यति | ओखिष्यतः | ओखिष्यन्ति | प्र. |
| | ओखिष्यसि | ओखिव्यथः | ओखिष्यथ | म. |
| | ओखिष्यमि | ओखिष्यावः | ओखिंष्यामः | उ. |
| लोट् | ओखतु-तात् | ओखताम् | ओखन्तु | प्र. |
| | ओख-तात् | ओखतम् | ओखत | म. |
| | ओखानि | ओखाव | ओखाम | उ. |
| लङ् | औखत् | औखताम् | औखन् | प्र. |
| | औखः | औखतम् | औखत | म. |
| | औखम् | औखाव | औखाम | उ. |
| वि. लि. | ओखेत् | ओखेताम् | ओखेयुः | प्र. |
| | ओखेः | ओखेतम् | ओखेत | म. |
| | ओखेयम् | ओखेव | ओखेम | उ. |
| आ. लि. | ओख्यात् | ओख्यास्ताम् | ओख्यासुः | प्र. |
| | ओख्याः | ओख्यास्तम् | ओख्यास्त | म. |
| | ओख्यासम् | ओख्यास्व | ओख्यास्म | उ. |
| लुङ् | औखीत् | औखिष्टाम् | औखिषुः | प्र. |
| | औखीः | औखिष्टम् | औखिष्ट | म. |
| | औखिषम् | औखिष्व | औखिष्म | उ. |
| लृङ् | औखिष्यत् | औखिष्यताम् | औखिष्यन् | प्र. |
| | औखिष्यः | औखिष्यतम् | औखिष्यत | म. |
| | औखिष्यम् | औखिष्याव | औखिष्याम | उ. |

**णिचि**—१ ओखयति। २ ओखयाञ्चकार। ३ ओखयिता। ४ ओखयिष्यति। ५ ओखयतु-ओखयतात्। ६ औखयत्। ७ ओखयेत्। ८ ओख्यात्। ९ औखिखत्। १० औखयिष्यत्। **सनि**—१ ओचिखिषति। २ ओचिखिषामास। ३ ओचिखिषिता। ४ ओचिखिषिष्यति। ५ ओचिखिषतु-तात्। ६ औचिखिषत्। ७ औचिखिषेत्। ८ ओचिखिष्यत्। ९ औचिखिषीत्। १० औचिखिषिष्यत्। **कृत्सु**—ओखितुम्, ओखितव्यम्, ओखित्वा, ओख्यः, ओखमानः, ओषिष्यमाणः। ओखयितुम्, ओखयितव्यः, ओखयित्वा, ओखयमानः।

**(१२२-१२५) राखृ-लाखृ-द्राखृ-धाखृ—शोषणमलमर्थयोः।** (सूखना, शुष्क होना, भूषित करना, कार्यक्षम होना, रोकना, निषेध करना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। राखति। रराख। रराखतुः। लाखति। द्राखति, धाखति। इत्यादि सर्वं 'खादति' (२८) वत्।

**(१२६) शाखृ—व्याप्तौ।** (शाखा फैलना, डालें पैदा होना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। ऋदित्। शाखति। 'खादति' (२८) वत्।

**(१२७) श्लाखृ—व्याप्तौ।** (व्याप्त होना, फैलना। सकर्म.)। सेट्। परस्मै.।

१ श्लाखति। २ शश्लाख। शश्लाखतुः शश्लाखुः। ३ श्लाखिता। ४ श्लाखिष्यति। ५ श्लाखतु। ६ अश्लाखत्। ७ श्लाखेत्। ८ श्लाख्यात्। श्लाख्यास्ताम्। ९ अश्लाखीत्। १० अश्लाखिष्यत्।

**(१२८) उख—गतौ।** (जाना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | ओखति | ओखतः | ओखन्ति | प्र. |
| | ओखसि | ओखथः | ओखथ | म. |
| | ओखामि | ओखावः | ओखामः | उ. |
| लिट् | उवोख | ऊखतुः | ऊखुः | प्र. |
| | उवोखिथ | ऊखथुः | ऊख | म. |
| | उवोख | ऊखिव | ऊखिम | उ. |
| लुट् | ओखिता | ओखितारौ | ओखितारः | प्र. |
| | ओखितासि | ओखितास्थः | ओखितास्थ | म. |
| | ओखितास्मि | ओखितास्वः | ओखितास्मः | उ. |
| लृट् | ओखिष्यति | ओखिष्यतः | ओखिष्यन्ति | प्र. |
| | ओखिष्यसि | ओखिष्यथः | ओखिष्यथ | म. |
| | ओखिष्यामि | ओखिष्यावः | ओखिष्यामः | उ. |
| लोट् | ओखतु-तात् | ओखताम् | ओखन्तु | प्र. |
| | ओख-तात् | ओखतम् | ओखत | म. |
| | ओखानि | ओखाव | ओखाम | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लङ् | औखत् | औखताम् | औखन् | प्र. |
| | औखः | औखतम् | औखत | म. |
| | औखम् | औखाव | औखाम | उ. |
| वि. लि. | ओखेत् | ओखेताम् | ओखेयुः | प्र. |
| | ओखेः | ओखेतम् | ओखेत | म. |
| | ओखेयम् | ओखेव | ओखेम | उ. |
| आ. लि. | उख्यात् | उख्यास्ताम् | उख्यासुः | प्र. |
| | उख्याः | उख्यास्तम् | उख्यास्त | म. |
| | उख्यासम् | उख्यास्व | उख्यास्म | उ. |
| लुङ् | औखीत् | औखिष्टाम् | औखिषुः | प्र. |
| | औखीः | औखिष्टम् | औखिष्ट | म. |
| | औखिषम् | औखिष्व | औखिष्म | उ. |
| लृङ् | औखिष्यत् | औखिष्यताम् | औखिष्यन् | प्र. |
| | औखिष्यः | औखिष्यतम् | औखिष्यत | म. |
| | औखिष्यम् | औखिष्याव | औखिष्याम | उ. |

**कर्मणि**—१ उख्यते। २ ऊखे ऊखाते। ९ औखि। **णिचि**—१ ओखयति। २ ओखयामास। ३ ओखयिता। ४ ओखयिष्यति। ५ ओखयतु-तात्। ६ औखयत्। ७ औखयेत्। ८ औख्यात्। ९ औखित्। १० औखयिष्यत्। पक्षे—ओखयते इत्यादि। **सनि**—१ ओचिखिषति। २ ओचिखिषामास। ३ ओचिखिषिता। ४ ओचिखिषिष्यति। ५ ओचिखिषतु-तात्। ६ ओचिखिषत्। ७ ओचिखिषेत्। ८ ओचिखिष्यात्। ९ औचिखिषीत्। १० औचिखिषिष्यत्। अजादित्वाद्यङ्यङ्लुकौ न स्तः। **कृत्सु**—ओखितव्यम्, ओखनीयम्, ओख्यम्, उखितः, ओखन्, ओखितुम्, ओखित्वा, प्रोख्यः।

**(१२९) उखि—गतौ**। सक.। सेट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | उङ्खति | उङ्खतः | उङ्खन्ति | प्र. |
| | उङ्खसि | उङ्खथः | उङ्खथ | म. |
| | उङ्खामि | उङ्खावः | उङ्खामः | उ. |
| लिट् | उङ्खाञ्चकार | उङ्खाञ्चक्रतुः | उङ्खाञ्चक्रुः | प्र. |
| | उङ्खाञ्चकर्थ | उङ्खाञ्चक्रथुः | उङ्खाञ्चक्र | म. |
| | उङ्खाञ्चकार | उङ्खाञ्चकृव | उङ्खाञ्चकृम | उ. |
| लुट् | उङ्खिता | उङ्खितारौ | उङ्खितारः | प्र. |
| | उङ्खितासि | उङ्खितास्थः | उङ्खितास्थ | म. |
| | उङ्खितास्मि | उङ्खितास्वः | उङ्खितास्मः | उ. |
| लृट् | उङ्खिष्यति | उङ्खिष्यतः | उङ्खिष्यन्ति | प्र. |
| | उङ्खिष्यसि | उङ्खिष्यथः | उङ्खिष्यथ | म. |
| | उङ्खिष्यामि | उङ्खिष्यावः | उङ्खिष्यामः | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लोट् | उङ्खतु-उङ्खतात् | उङ्खताम् | उङ्खन्तु | प्र. |
| | उङ्ख-उङ्खतात् | उङ्खतम् | उङ्खत | म. |
| | उङ्खानि | उङ्खाव | उङ्खाम | उ. |
| लङ् | औङ्खत् | औङ्खताम् | औङ्खन् | प्र. |
| | औङ्खः | औङ्खतम् | औङ्खत | म. |
| | औङ्खम् | औङ्खाव | औङ्खाम | उ. |
| वि. लि. | उङ्खेत् | उङ्खेताम् | उङ्खेयुः | प्र. |
| | उङ्खेः | उङ्खेतम् | उङ्खेत | म. |
| | उङ्खेयम् | उङ्खेव | उङ्खेम | उ. |
| आ. लि. | उङ्ख्यात् | उङ्ख्यास्ताम् | उङ्ख्यासुः | प्र. |
| | उङ्ख्याः | उङ्ख्यास्तम् | उङ्ख्यास्त | म. |
| | उङ्ख्यासम् | उङ्ख्यास्व | उङ्ख्यास्म | उ. |
| लुङ् | औङ्खीत् | औङ्खिष्टाम् | औङ्खिषुः | प्र. |
| | औङ्खीः | औङ्खीष्टम् | औङ्खिष्ट | म. |
| | औङ्खिषम् | औङ्खिष्व | औङ्खिष्म | उ. |
| लृङ् | औङ्खिष्यत् | औङ्खिष्यताम् | औङ्खिष्यन् | प्र. |
| | औङ्खिष्यः | औङ्खिष्यतम् | औङ्खिष्यत | म. |
| | औङ्खिष्यम् | औङ्खिष्याव | औङ्खिष्याम | उ. |

**कर्मणि**—१ उङ्ख्यते। ३ उङ्खिता। ९ औङ्खि। **णिचि**—१ उङ्खयति। २ उङ्खयामास। ९ औञ्चिखत्। **सनि**—१ उञ्चिखिषति। ९ औञ्चिखिषीत्। १० औञ्चिखिषिष्यत्। **कृत्सु**—उङ्खितव्यम्। उङ्खनीयम्। उङ्खितुम्। उङ्खितः। उङ्खितवान्।

**(१३०) वख—गतौ**। (जाना) सकर्म.। सेट्। परस्मै.। वखति। ववाख ववखतुः। इत्यादि 'रदति' (५३) वत्।

**(१३१) वखि—गतौ**। (जाना) सकर्म.। सेट्। परस्मै.। वङ्खति। इत्यादि 'क्रन्दति' (७१) वत्।

**(१३२-१३९) मख-मखि-णख-णखि-रख-रखि-लख-लखि—गतौ**। (जाना) सकर्म.। सेट्। परस्मै.। मखति। नखति। रखति। लखति। इत्यादि 'रदति' (५३) वत्। एवमेव मङ्खति। नङ्खति। रङ्खति। लङ्खति। इत्यादि 'क्रन्दति' (७१) वत्। बोध्यम्।

**(१४०-१४१) इख-इखि—गतौ**। जाना। सकर्म.। सेट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | एखति | एखतः | एखन्ति | प्र. |
| | एखसि | एखथः | एखथ | म. |
| | एखामि | एखावः | एखामः | उ. |
| लिट् | इयेख | ईखतुः | ईखुः | प्र. |
| | इयेखिथ | ईखथुः | ईख | म. |
| | इयेख | ईखिव | ईखिम | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुट् | एखिता | एखितारौ | एखितारः | प्र. |
| | एखितासि | एखितास्थः | एखितास्थ | म. |
| | एखितास्मि | एखितास्वः | एखितास्मः | उ. |
| लृट् | एखिष्यति | एखिष्यतः | एखिष्यन्ति | प्र. |
| | एखिष्यसि | एखिष्यथः | एखिष्यथ | म. |
| | एखिष्यामि | एखिष्यावः | एखिष्यामः | उ. |
| लोट् | एखतु-एखतात् | एखताम् | एखन्तु | प्र. |
| | एख | एखतम् | एखत | म. |
| | एखानि | एखाव | एखाम | उ. |
| लङ् | ऐखत् | ऐखताम् | ऐखन् | प्र. |
| | ऐखः | ऐखतम् | ऐखत | म. |
| | ऐखम् | ऐखाव | ऐखाम | उ. |
| वि. लि. | एखेत् | एखेताम् | एखेयुः | प्र. |
| | एखेः | एखेतम् | एखेत | म. |
| | एखेयम् | एखेव | एखेम | उ. |
| आ. लि. | इख्यात् | इख्यास्ताम् | इख्यासुः | प्र. |
| | इख्याः | इख्यास्तम् | इख्यास्त | म. |
| | इख्यासम् | इख्यास्व | इख्यास्म | उ. |
| लुङ् | ऐखीत् | ऐखिष्टाम् | ऐखिषुः | प्र. |
| | ऐखीः | ऐखिष्टम् | ऐखिष्ट | म. |
| | ऐखिषम् | ऐखिष्व | ऐखिष्म | उ. |
| लृङ् | ऐखिष्यत् | ऐखिष्यताम् | ऐखिष्यन् | प्र. |
| | ऐखिष्यः | ऐखिष्यतम् | ऐखिष्यत | म. |
| | ऐखिष्यम् | ऐखिष्याव | ऐखिष्याम | उ. |

**कर्मणि**—इख्यते। **णिचि**—एखयति। २ एखयामास। ३ एखयिता। ४ एखयिष्यति। ५ एखयतु-तात्। ६ ऐखयतु। ७ ऐखयेत्। ८ एख्यात्। ९ ऐचिखत्। १० ऐखयिख्यत्। आ. एखयते। **सनि**—१ एचिखिषति। २ एचिखिषाञ्चकार। ३ एचिखिषिता। ४ एचिखिषिष्यति। ५ एचिखिषतु-तात्। ६ ऐचिखिषत्। ७ एचिखिषेत्। ८ एचिखिष्यात्। ९ ऐचिखिषीत्। १० ऐचिखिष्यत्। **कृत्सु**—इङ्खकः[1]- खिका, इङ्खिता-त्री, इङ्खयिता-त्री, इङ्खन्-न्ती, इङ्ख्यन्-न्ती, इङ्खिष्यन्-न्ती-ती, इङ्खयिष्यन्-न्ती-ती, इङ्ख्यमानः, इङ्खितः-तम्, इङ्खः, प्रेङ्खणः[2],

१ 'इदितो नुम्—' (७-१-५८) इति नुम्।

२ वनान्त प्रेङ्खणः पापः फलानां परिणिंसकः।
प्रणिक्षिष्यति नो भूयः प्रणिन्द्यास्मान्मधून्ययम्॥ (भ.का. ९-१०६)
प्रेङ्खतीति = प्रेङ्खणः। बाहुलकात् कर्तरि ल्युट्। इति भट्टिकाव्यव्याख्याने।

इङ्खितव्यम्, इङ्खयितव्यम्, प्रेङ्खणीयम्,[1] इङ्ख्यम्, इङ्ख्यमानः, इङ्खितुम्, इङ्खा[2], इङ्खना[3], प्रेङ्खणम्, इङ्खित्वा, इङ्खयित्वा, प्रेङ्ख्य, समिङ्ख्य।

**(१४२) ईखि—गतौ**। (जाना) सकर्म.। सेट्। परस्मै.। इदित्। प्रायः प्रपूर्वक एवायं प्रयुज्यते। ईङ्खति इत्यादि 'उङ्खति' (१२९) वत्।

**(१४३) वल्ग—गतौ**। (जाना) सकर्म.। सेट्। परस्मै.। वल्गति। इत्यादि 'नर्दति' (५६) वत्।

**(१४४) रगि—गतौ**। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। रङ्गति। ररङ्ग ररङ्गतुः। इत्यादि 'क्रन्दति' (७१) वत्।

**(१४५-१५५) लगि-अगि-वगि-मगि-तगि-त्वगि-श्रगि-श्लगि-इगि-रिगि-लिगि—गत्यर्थाः**। सक.। सेट्। परस्मै.। लङ्गति। इत्यादि 'क्रन्दति' (७१) वत्। (अगि-अङ्ग्)।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | अङ्गति | अङ्गतः | अङ्गन्ति | प्र. |
| | अङ्गसि | अङ्गथः | अङ्गथ | म. |
| | अङ्गामि | अङ्गावः | अङ्गामः | उ. |
| लिट् | आनङ्ग | आनङ्गतुः | आनङ्गुः | प्र. |
| | आनङ्गिथ | आनङ्गथुः | आनङ्ग | म. |
| | आनङ्ग | आनङ्गिव | आनङ्गिम | उ. |
| लुट् | अङ्गिता | अङ्गितारौ | अङ्गितारः | प्र. |
| | अङ्गितासि | आङ्गितास्थः | अङ्गितास्थ | म. |
| | अङ्गितास्मि | अङ्गितास्वः | अङ्गितास्मः | उ. |
| लृट् | अङ्गिष्यति | अङ्गिष्यतः | अङ्गिष्यन्ति | प्र. |
| | अङ्गिष्यसि | अङ्गिष्यथः | अङ्गिष्यथ | म. |
| | अङ्गिष्यामि | अङ्गिष्यावः | अङ्गिष्यामः | उ. |
| लोट् | अङ्गतु-तात् | अङ्गताम् | अङ्गन्तु | प्र. |
| | अङ्ग-तात् | अङ्गतम् | अङ्गत | म. |
| | अङ्गानि | अङ्गाव | अङ्गाम | उ. |
| लङ् | आङ्गत् | आङ्गताम् | आङ्गन् | प्र. |
| | आङ्गः | आङ्गतम् | आङ्गत | म. |
| | आङ्गम् | आङ्गाव | आङ्गाम | उ. |
| वि. लि. | अङ्गेत् | अङ्गेताम् | अङ्गेयुः | प्र. |
| | अङ्गेः | अङ्गेतम् | अङ्गेत | म. |
| | अङ्गेयम् | अङ्गेव | अङ्गेम | उ. |

१ 'कृत्यचः' (८-४-२९) इति णत्वम्।
२ गुरोश्च हलः (३-३-१०३) इति अप्रत्ययः।
३ 'ण्यासश्रन्थो युच्' (३-३-१०७) इति युच्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आ. लि. | अङ्ग्यात् | अङ्ग्यास्ताम् | अङ्ग्यासुः | प्र. |
| | अङ्ग्याः | अङ्ग्यास्तम् | अङ्ग्यास्त | म. |
| | अङ्ग्यासम् | अङ्ग्यास्व | अङ्ग्यास्म | उ. |
| लुङ् | आङ्गीत् | आङ्गीष्टाम् | आङ्गिषुः | प्र. |
| | आङ्गीः | आङ्गिष्टम् | आङ्गिष्ट | म. |
| | आङ्गिषम् | आङ्गिष्व | आङ्गिष्म | उ. |
| लृङ् | आङ्गिष्यत् | आङ्गिष्यताम् | आङ्गिष्यन् | प्र. |
| | आङ्गिष्यः | आङ्गिष्यतम् | आङ्गिष्यत | म. |
| | आङ्गिष्यम् | आङ्गिष्याव | आङ्गिष्याम | उ. |

**णिचि**—अङ्गयति-ते। **सनि**—अञ्जिगिषति। इत्यादि।

वङ्गति, मङ्गति, तङ्गति, त्वङ्गति, श्रङ्गति, श्लङ्गति इत्यादि। सर्वं 'क्रन्दति' (७१) वत्। इङ्गति। इत्यादि 'उङ्खति' (१२९) वत्। रिङ्गति, लिङ्गति 'क्रन्दति' (७१) वत्।

**(१५६) युगि—वर्जने।** (त्याग देना। छोड़ देना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.।

१ युङ्गति युङ्गतः युङ्गन्ति। २ युयुङ्ग युयुङ्गतुः युयुगुः। ३ युङ्गिता युङ्गितारौ युङ्गितारः। ४ युङ्गिष्यति युङ्गिष्यतः युङ्गिष्यन्ति। ५ युङ्गतु-युङ्गतात्। ६ अयुङ्गत्। ७ युङ्गेत्। ८ युङ्ग्यात्। ९ अयुङ्गीत्। १० अयुङ्गिष्यत्। इत्यादि 'कुन्थति' (४३) वत्।

**कृत्सु**—युङ्गकः-ङ्गिका, युयुङ्गिषकः-षिका, युङ्गिता-त्री, युङ्गयिता-त्री, युङ्गन्-ती, युङ्गित्वा, प्रयुङ्ग्य, युङ्गितवान्, युङ्गितः।

**(१५७-१५८) जुगि-बुगि—वर्जने।** (त्याग देना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | जुङ्गति | जुङ्गतः | जुङ्गन्ति | प्र. |
| | जुङ्गसि | जुङ्गथः | जुङ्गथ | म. |
| | जुङ्गामि | जुङ्गावः | जुङ्गामः | उ. |
| लिट् | जुजुङ्ग | जुजुङ्गतुः | जुजुङ्गुः | प्र. |
| | जुजुङ्गिथ | जुजुङ्गथुः | जुजुङ्ग | म. |
| | जुजुङ्ग | जुजुङ्गिव | जुजुङ्गिम | उ. |
| लुट् | जुङ्गिता | जुङ्गितारौ | जुङ्गितारः | प्र. |
| | जुङ्गितासि | जुङ्गितास्थः | जिङ्गितास्थ | म. |
| | जुङ्गितास्मि | जुङ्गितास्वः | जुङ्गितास्मः | उ. |
| लृट् | जुङ्गिष्यति | जुङ्गिष्यतः | जुङ्गिष्यन्ति | प्र. |
| | जुङ्गिष्यसि | जुङ्गिष्यथः | जुङ्गिष्यथ | म. |
| | जुङ्गिष्यामि | जुङ्गिष्यावः | जुङ्गिष्यावः | उ. |
| लोट् | जुङ्गतु-तात् | जुङ्गताम् | जुङ्गन्तु | प्र. |
| | जुङ्ग-तात् | जुङ्गतम् | जुङ्गत | म. |
| | जुङ्गानि | जुङ्गाव | जुङ्गाम | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लङ् | अजुङ्गत् | अजुङ्गताम् | अजुङ्गन् | प्र. |
| | अजुङ्गः | अजुङ्गतम् | अजुङ्गत | म. |
| | अजुङ्गम् | अजुङ्गाव | अजुङ्गाम | उ. |
| वि. लि. | जुङ्गेत् | जुङ्गेताम् | जुङ्गेयुः | प्र. |
| | जुङ्गेः | जुङ्गेतम् | जुङ्गेत | म. |
| | जुङ्गेयम् | जुङ्गेव | जुङ्गेम | उ. |
| आ. लि. | जुङ्ग्यात् | जुङ्ग्यास्ताम् | जुङ्ग्यासुः | प्र. |
| | जुङ्ग्याः | जुङ्ग्यास्तम् | जुङ्ग्यास्त | म. |
| | जुङ्ग्यासम् | जुङ्ग्यास्व | जुङ्ग्यास्म | उ. |
| लुङ् | अजुङ्गीत् | अजुङ्गीष्टाम् | अजुङ्गिषुः | प्र. |
| | अजुङ्गीः | अजुङ्गिष्टम् | अजुङ्गिष्ट | म. |
| | अजुङ्गिषम् | अजुङ्गिष्व | अजुङ्गिष्म | उ. |
| लृङ् | अजुङ्गिष्यत् | अजुङ्गिष्यताम् | अजुङ्गिष्यन् | प्र. |
| | अजुङ्गिष्यः | अजुङ्गिष्यतम् | अजुङ्गिष्यत | म. |
| | अजुङ्गिष्यम् | अजुङ्गिष्याव | अजुङ्गिष्याम | उ. |

**कर्मणि**—जुङ्ग्यते। **णिचि**—जुङ्गयति-जुङ्गयते। **सनि**—जुजुङ्गिषति। **यङि**—जोजुङ्ग्यते। **यङ्लुकि**—जोजुङ्गीति-जोजुक्ति। **कृत्सु**—जुङ्गकः-ङ्गिका, जुजुङ्गिषकः-षिका, जुङ्गिता-त्री, जुङ्गयिता-त्री, जुजुङ्गिषिता, जोजुङ्गिता-त्री, जुङ्गित्वा, विजुङ्ग्य, जुङ्गयन्, जुङ्गितः, जिङ्गितवान्। एवमेव 'बुङ्गति' इत्यादि।

**(१५९) घघ—हसने।** (हंसना, उहास करना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.। घघति। जघाघ 'गदति' (५२) वत्। 'घगृध' इति केचित्। घग्घति।

**(१६०) मघि—मण्डने।** (संवारना, भूषित करना, अलङ्कृत करना)। सकर्म। सेट्। परस्मै.। मङ्घसि। 'क्रन्दति' (७१) वत्।

**कृत्सु**—मङ्घकः-द्घिका, मंङ्घिता-त्री, मङ्घयिता-त्री, मङ्घनः, सुमङ्गितः, सुमङ्घितवान्।

**(१६१) शिघि—आघ्राने।** (सूंघना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। शिङ्घति। 'निन्दति' (६६) वत्।

**(१६२) वर्च—दीप्तौ।** (प्रकाशित होना, चमकना)। अकर्म.। सेट्। आत्मने.।

**(१६३) षच (सच) —सेचने सेवने च।** (सींचना, गीला करना, सेवा करना, सेवा करके सन्तुष्ट करना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। सचते। ५ सेचे। 'चकति' (९३) वत्। सचिवः[1], सक्तुः[2], सर्वं 'कचति' वत्।

---

१ सचिवः = अमात्यः। सचतीति सचिः, सहभावः, 'केशाद् कोऽन्यतरस्याम्' (५-२-१०९) इति मत्वर्थीयो व प्रत्ययो बाहुलकात् इत्याहुः।

२ औणादिके (द.उ. १-१२२) तुन् प्रत्यये रूपमेवम्। 'तितुत्र—' (७-२-९) इतीण्निषेधः। सक्तुः = पिष्टविशेषः।

**(१६४) लोचृ—दर्शने।** (देखना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। लोचते। 'लोकति' (१७६) वत्। **आ**—आलोचने। आलोचते।

**कृत्सु**—लोचकः-किका, लोचिता-त्री, लोचयिता-त्री, लुलोचिषिता-त्री, लोलोचिता-त्री, लोचन्-न्ती, लोचयन्-न्ती, लोचिष्यन्-न्ती-ती, लोचयिष्यन्-न्ती-ती, लोचमानः, लोचयमानः, लोचिष्यमाणः, लोचितम्-तः, लोचितव्यम्, लोचयितव्यम्, लोचनीयम्, लोच्यम्, लोचितुम्, लोचयितुम्, लोचनम्, आलोचनम्, लोचित्वा, लोचयिता, आलोच्य, लोचित्वा, लोचयित्वा।

**(१६५) शच—व्यक्तायां वाचि।** (स्पष्ट बोलना)। अकर्म.। सेट्। आत्मने.। शचते। शेचे। 'चकति' (९३) वत्।

**(१६६-१६७) श्वच-श्वचि—गतौ।** (जाना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। श्वचते। श्वञ्चते। इत्यादि।

**कृत्सु**—श्वचिता-त्री, श्वचमानः, श्वचयमानः श्वचिष्यमाणः, श्वचितव्यम्, श्वचनीयम्ः, श्वचितुम्, श्वाचयितुम्, इत्यादि। श्वञ्चकः-ञ्चिका, श्वञ्चिता-त्री, श्वञ्चितव्यम्, श्वञ्चनीयम्, श्वञ्चितुम्, श्वञ्चयमानः, श्वञ्चनम्, श्वञ्चयित्वा, श्वञ्चित्वा, इत्यादि।

**(१६८) कच—बन्धने।** (बांधना)। सक.। सेट्। आत्मने। कचते। चाकचे। 'कलति' वत्।

**कृत्सु**—कचते बध्नाति यूनां मनांसीति कचः। काचकः-चिका, कचिता-त्री, काचयिता-त्री। काचयन्-त्री, कचमानः, काचयमानः, कचिष्यमानः, कक्-कचौ-कचः, कचितम्ःतः, काचः, कचितव्यम्, काचयितव्यः, कचनीयम्, काचनीयम्, काच्यम्, ईषत्कम्, दुष्कचः सुकचः, कच्यमानः कचितुमः, काचयितुम्, कक्तिः, काचना, कचनम्, कचित्वा, प्रकच्य इत्यादि।

**(१६९) कचि (कञ्च) —दीप्तबन्धयोः।** (बांधना, चमकना, प्रकाशित होना)। दीप्तावक.। बन्धने सक.। सेट्। आत्मने.। इदित्। कञ्चते। ५ चकञ्चे। 'वन्दति' (११) वत्।

**कृत्सु**—कञ्चकः[1]-ञ्चिका, कञ्चिता-त्री, प्रनिकञ्चमानः, कन्-कञ्चौः-कञ्चः, कञ्चितम्ःतः, कञ्चः, कञ्चनीयम्, कञ्च्यम्,[2] ईषत्कञ्चः, दुष्कञ्च, सुकञ्चः, कञ्च्यमानः, कञ्चितुम्, कञ्चा,[3] कञ्चना, कञ्चनम्, कञ्चित्वा, कञ्चयित्वा, प्रकञ्च्य, कञ्चुकम्।

**(१७०) काचि—दीप्तबन्धनयोः।** (चमकना, बांधना)। दीप्तावकर्म.। बन्धने सकर्म.। सेट्। आत्मने. इदित्। काञ्चते। **कृत्सु**—काञ्चकः-ञ्चिका, काञ्चिता-त्री, काञ्चमानः, काञ्चिष्यमाणः, कान्-काञ्चौ-काञ्चः, काञ्चनम्[4], काञ्चितव्यम्, काञ्चनीयम्, काञ्चितुम्, काञ्चित्वाः,

१ 'इदितो नुम्' (७-१-५८) इति नुम्।
२ निष्ठायां सेट्त्वात् 'चजोः—' (७-३-५२) इति कुत्वं न।
३ 'गुरोश्च हलः' (३-३-१०३) इति अः प्रत्ययः।
४ 'अनुदात्तेतश्च हलादेः' (३-२-१४९) इति युच् ताच्छीलिकः।
सुलोचना यत्र शचीसमप्रभा अशाश्वचुः श्वञ्चिसौरभाःकचे।
सकञ्चुकाः काञ्चनकाञ्चि भूषिता व्रजाङ्गना निर्मचनेन नर्मणा'॥ (धातु. का. १-२३)

काञ्चिः[1]-काञ्ची। इत्यादि।

**( १७१ ) मच—कल्कने**। (गर्व करना, दुराचारी होना, पीसना, कूटना)। अकर्म.। सेट्। आत्मने॥ मचते। मेचे। 'चकति' (९३) वत्।

**कृत्सु**—माचकः-चिका, मचिता-त्री, मचमानः, माचयमानः, माचितम्-तः, मचितव्यम्, मचनीयम्, माचनीयम्, माच्यम्, मच्यमानः, मचितुम्, माचयितुम्, मचनम्, मचित्वा प्रमच्य, प्रमाच्य इत्यादि।

**( १७२ ) मुचि—कल्कने**। कथन इत्यन्ये। (कहना, बोलना, पीसना, कूटना, ढगना, गर्व करना)। अकर्म.। सेट्। आत्मने.। मुञ्चते। २ मुमुञ्चे। 'स्कुन्दति' (९) वत्।

**कृत्सु**—मुञ्चितः, मुञ्चः, मुञ्चितुम्, मुञ्चित्वा, मुञ्चितः, मुञ्चयन्, मुञ्चिता-त्री, मुञ्चयिता-त्री, इत्यादि।

**( १७३ ) मचि (मञ्च) —धारणोच्छ्रायपूजनेषु**। (धारण करना, ऊंचा उठाना, मचान बनाना, पूजित होना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। 'कञ्चति' (१६९) वत्। मञ्चः -खट्वा। मञ्चितम्, मञ्चितव्यम्, मञ्चनीयम्, मञ्चयम्, मञ्चयमानः।

**( १७४ ) पचि—व्यक्तिकरणे**। (स्पष्ट करना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। पञ्चते। पपञ्चे। इत्यादि 'वन्दति' (११) वत्।

**( १७५ ) ष्टुच (स्तुच) —प्रसादे**। सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना। अकर्म.। सेट्॥ आत्मने.। स्तोचते। तुष्टुचे। 'रोचति' वत्।

**( १७६ ) ऋज—गतिस्थानार्जनोपार्जनेषु**। (जाना, खड़ा रहना, स्थिर होना, वलिष्ठ होना, जीना, सम्पादन करना, प्राप्त करना, मिलाना)। अकर्म.। सेट्। आत्मने.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | अर्जते | अर्जेते | अर्जन्ते | प्र. |
| | अर्जसे | अर्जेथे | अर्जध्वे | म. |
| | अर्जे | अर्जावहे | अर्जामहे | उ. |
| लिट् | आनृजे | आनृजाते | आनृजिरे | प्र. |
| | आनृजिसे | आनृजाथे | आनृजिध्वे | म. |
| | आनृजे | आनृजिवहे | आनृजिमहे | उ. |
| लुट् | अर्जिता | अर्जितारौ | अर्जितारः | प्र. |
| | अर्जितासे | अर्जितासाथे | अर्जिताध्वे | म. |
| | अर्जिताहे | अर्जितास्वहे | अर्जितास्महे | उ. |
| लृट् | अर्जिष्यते | अर्जिष्येते | अर्जिष्यन्ते | प्र. |
| | अर्जिष्यसे | अर्जिष्येथे | अर्जिष्यध्वे | म. |
| | अर्जिष्ये | अर्जिष्यावहे | अर्जिष्यामहे | उ. |
| लोट् | अर्जिताम् | अर्जेताम् | अर्जन्ताम् | प्र. |
| | अर्जस्व | अर्जेथाम् | अर्जध्वम् | म. |
| | अर्जै | अर्जावहै | अर्जामहै | उ. |

१ औणादिक इन् प्रत्ययः। 'कृदिकारादक्तिनः' (ग.सू. ४-१-१४५) इति वा ङीष्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लङ् | आर्जत | आर्जेताम् | आर्जन्त | प्र. |
| | आर्जथाः | आर्जेथाम् | आर्जध्वम् | म. |
| | आर्जे | आर्जावहि | आर्जामहि | उ. |
| वि. लि. | अर्जेत | अर्जेताम् | अर्जेरन् | प्र. |
| | अर्जेथाः | अर्जेयाथाम् | अर्जेध्वम् | म. |
| | अर्जेय | अर्जेवहि | अर्जेमहि | उ. |
| आ. लि. | अर्जिषीष्ट | अर्जिषीयास्ताम् | अर्जिषीरन् | प्र. |
| | अर्जिष्ठाः | अर्जिषीयास्थाम् | अर्जिषीढ्वम् | म. |
| | अर्जिषीय | अर्जिषीवहि | अर्जिषीमहि | उ. |
| लुङ् | आर्जिष्ट | आर्जिषाताम् | आर्जिषत | प्र. |
| | आर्जिष्ठाः | आर्जिषाथाम् | आर्जिढ्वम् | म. |
| | आर्जिषि | आर्जिष्वहि | आर्जिष्महि | उ. |
| लृङ् | आर्जिष्यत | आर्जिष्येताम् | आर्जिष्यन्त | प्र. |
| | आर्जिष्यथाः | आर्जिष्येथाम् | आर्जिष्यध्वम् | म. |
| | आर्जिष्ये | आर्जिष्यावहि | आर्जिष्यामहि | उ. |

**कर्मणि**—अर्ज्यते। **णिचि**— अर्जयते। २ अर्जयाञ्चक्रे। ९ आर्जिजत-आर्जिजत्। **सनि**—१ आर्जिजिषते। ९ आर्जिजिषिष्ट। १० आर्जिजिषिष्यत। **कृत्सु**—अर्जकः-र्जिका, अर्जिता-त्री, अर्जयिता-त्री, अर्जन्-त्री, अर्जमानः, अर्जयमानः, अर्जिष्यमाणः, ऋक्-ऋग्-ऋजौ-ऋजः, ऋजितम्-तः-तवान् उपार्जितः,[१] अर्जितव्यम्, अर्जयितव्यम्, अर्जनीयम्, ऋज्यम्[२], अर्ज्यम्, ऋज्यमानः, अर्जः, स्वर्गः,[३] अर्जितुम्, ऋक्तिः, अर्जनम्, अर्जित्वा,[४] समृज्य, समर्ज्य।

**(१७७) ऋञ्जि—भर्जने। भर्जनं**—जलं बिना तण्डुलादेः सन्तापविशेषः, पाकविशेष इत्यर्थः। (भूजना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने। इदित्।

लट्—ऋञ्जते ऋञ्जेते ऋञ्जन्ते **प्र.**, ऋञ्जसे ऋञ्जेथे ऋञ्जध्वे **म.**, ऋञ्जे ऋञ्जावहे ऋञ्जामहे **उ.**। लिट्—ऋञ्जाञ्चक्रे ऋञ्जाञ्चक्राते ऋञ्जाञ्चक्रिरे **प्र.**।

**णिचि**—ऋञ्जयते। **सनि**—ऋञ्जिजिषते। **कृत्सु**—ऋञ्जकः[५]-, ऋञ्जिका, ऋञ्जिता-त्री, ऋञ्जमानः, ऋञ्जयमान-, ऋञ्जिष्यमाणः, ऋन्, ऋञ्जौ-ऋञ्जः, ऋञ्जितः-तं-तवान्, ऋञ्जितव्यम्,

१ 'उपसर्गादृति धातौ' (६-१-९१) इति वृद्धिः।
२ 'ऋदुपधाच्च' (३-१-११०) इति भावकर्मणोः क्यप्।
३ 'सुष्ठु ऋज्यते = स्थीयते अस्मिन्—इत्यधिकरणे संज्ञायां 'हलश्च' (३-३-१२१) इति घञ्। न्यङ्क्वादित्वात् (७-३-५३) इति कुत्वम्।' इति अमरसुधा। निष्ठायां सेट्त्वात् अर्ज इत्यत्र कुत्वं न।
४ 'न क्त्वा सेट्' (१-२-१८) इति कित्त्वनिषेधाद्गुणः।
५ 'इदितो नुम् धातोः (७-१-५८) इति नुम्।

ऋञ्जयितव्यम्, ऋञ्जनीयम्, ऋञ्ज्यम्,[1] ऋञ्ज्यमानः[2], ऋञ्जितुम्, ऋञ्जियितुम्, ऋञ्जा, ऋञ्जना, ऋञ्जनम्, ऋञ्जित्वा, ऋञ्जयित्वा, समृञ्ज्य।

**( १७८ ) भृजी—भर्जने।**(भूंजना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने। १ भर्जते। २ बभृजे। **म.** बभृजिषे। **उ.** बभृजिवहे। ३ भर्जिता। ४ भर्जिष्यते। ५ भर्जताम्। ६ अभर्जत। ७ भर्जेत। ८ भर्जिषीष्ट। ९ अभर्जिष्ट। ढ्वम्-ध्वम्। १० अभर्जिष्यत।

**कर्मणि**—भृज्यते। ९ अभर्जि। **णिचि**—भर्जयति-ते। ९ अबीभृजत्-त। **सनि**—बिभर्जिषते। **यङि**—बरीभृज्यते। **यङ्लुकि**—बरीभृजीति-बरिभृजीति-बर्भृजीति- बर्भक्ति। बरिभर्क्ति, बरीभर्क्ति। **कृत्सु**—भर्जितव्यम्, भर्जनीयम्, भृज्यम्[3], भृक्तम्[4], भर्जित्वा, भृक्त्वा, संभृज्य, भर्जितुम्, भर्गः[5]।

**( १७९ ) एजृ—दीप्तौ।** (प्रकाशित होना, कान्तिमान् होना)। अकर्म.। सेट्। आत्मने.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | एजते | एजेते | एजन्ते | प्र. |
| | एजसे | एजेथे | एजध्वे | म. |
| | एजे | एजावहे | एजामहे | उ. |
| लिट् | एजाञ्चक्रे | एजाञ्चक्राते | एजाञ्चक्रिरे | प्र. |
| | एजाञ्चकृषे | एजाञ्चक्राथे | एजाञ्चकृढ्वे | म. |
| | एजाञ्चक्रे | एजाञ्चकृवहे | एजाञ्चकृमहे | उ. |
| लुट् | एजिता | एजितारौ | एजितारः | प्र. |
| | एजितासे | एजितासाथे | एजिताध्वे | म. |
| | एजिताहे | एजितास्वहे | एजितास्महे | उ. |
| लृट् | एजिष्यते | एजिष्येते | एजिष्यन्ते | प्र. |
| | एजिष्यसे | एजिष्येथे | एजिष्यध्वे | म. |
| | एजिष्ये | एजिष्यावहे | एजिष्यामहे | उ. |
| लोट् | एजताम् | एजेताम् | एजन्ताम् | प्र. |
| | एजस्व | एजेथाम् | एजध्वम् | म. |
| | एजै | एजावहै | एजामहै | उ. |
| लङ् | ऐजत | ऐजेताम् | ऐजन्त | प्र. |
| | ऐजथाः | ऐजेथाम् | ऐजध्वम् | म. |
| | ऐजे | ऐजावहि | ऐजामहि | उ. |

१ निष्ठायां सेट्त्वात् 'चजोः कुः—' (७-३-५२) इति कुत्वं न।
२ अस्य धातोरिदित्वात् 'अनिदितां हल—' (६-४-२४) इति नलोपो न।
३ 'ऋदुपधात्—' (३-१-११०) इति कर्मणि क्यप्।
४ 'श्वीदितो निष्ठायाम्' (७-२-१४) इतीण्निषेधः। जकारस्य कुत्वम्।
५ 'अकर्तरि च कारके संज्ञायाम्' (३-३-१९) इति घञ्। निष्ठायामनिट्त्वात् 'चजोः—' (७-३-५२) इति कुत्वम्। भर्गः = शिवः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| वि. लि. | एजेत | एजेताम् | एजेरन् | प्र. |
| | एजेथाः | एजेयाथाम् | एजेध्वम् | म. |
| | एजेय | एजेवहि | एजेमहि | उ. |
| आ. लि. | एजिषीष्ट | एजिषीयास्ताम् | एजिषीरन् | प्र. |
| | एजिषीष्ठाः | एजिषीयास्थाम् | एजिषीढ्वम् | म. |
| | एजिषीय | एजिषीवहि | एजिषीमहि | उ. |
| लुङ् | ऐजिष्ट | ऐजिषाताम् | ऐजिषत | प्र. |
| | ऐजिष्ठाः | ऐजिषाथाम् | ऐजिढ्वम् | म. |
| | ऐजिषि | ऐजिष्वहि | ऐजिष्महि | उ. |
| लृङ् | ऐजिष्यत | ऐजिष्येताम् | ऐजिष्यन्त | प्र. |
| | ऐजिष्यथाः | ऐजिष्येथाम् | ऐजिष्यध्वम् | म. |
| | ऐजिष्ये | ऐजिष्यावहि | ऐजिष्यामहि | उ. |

**भावे**—एज्यते। ९ ऐजि। **णिचि**—एजयति-ते। ९ ऐजिजत्। **सनि**—एजिजिषते। **कृत्सु**– एजितव्यम्, एजनीयम्, एज्यम्, एजितः, एजमानः, एजित्वा, उदेज्य, एजितुम्। एजितवान्, एजिता-त्री, एजकः-जिका, एजयमानः, एजिष्यमाणः, एक्[1]-ग्-एजौ-एजः, एजितः-तम्, उदेजयः[2], जनमेजय,[3] सत्वमेजयः, एज्यमानः, एजा,[4] एजना, एज्याम्[5], एजनम्, प्रेजनम्, समेज्य, प्रेज्य।

**( १८० ) भ्रेजृ—दीप्तौ।** (प्रकाशित होना)। अकर्म.। सेट्। आत्मने.। ऋदित्। भ्रेजते। विभ्रेजे। 'देवति' वत्।

**( १८१ ) भ्राजृ—दीप्तौ[6]।** (चमकना, प्रकाशित होना)। अकर्म.। सेट्। आत्मने.।

१ 'चोः कुः' (८-२-३०) इति कुत्वम्।

२ 'अनुपसर्गाल्लिम्पविन्दधारिपारिवेद्युदेजिचेतिसातिसाहिभ्यश्च' (३-१-१३८) इति शः प्रत्ययः। 'कर्तरि शप्' (३-१-६८) इति शपि गुणायादेशौ। 'अनुपसर्गात्—' (३-१-१३८) इत्यत्र अनुपसर्गग्रहणं अन्यविशेषणम्, अत्रापि– उपसर्गान्तरनिवृत्त्यर्थं च। तेन 'समुदेज' इत्यत्र अचि णिलोप एव। न तु शप्रत्ययः– इति (मा.-धातुवृत्तौ)।

३ 'एजेः खश्' (३-२-२८) इति खश्। शित्वात् शबादिः। 'अरुर्द्विषद्—' (६-३-६७) इति उपपदस्य मुम्।

४ 'गुरोश्च हलः' (३-३-१०३) इत्यकारः प्रत्ययः।

५ निष्ठायां सेट्त्वात् 'चजोः—' (७-३-५२) इति कुत्वं न।

६ भ्वादौ प्रथमतः 'भाजृ दीप्तौ' इति पठित्वा, पुनर्घटादौ 'टु भ्राजृ-दीप्तौ' इति पठ्यते। इमौ उभावपि दीप्त्यर्थकौ ऋदितौ चेति ज्ञायते। न्यासकारस्तु 'भ्राजृ दीप्तौ' इत्येव 'भ्राजभासधुर्वि—' (३-२-१७७) इत्यत्र पपाठ। पदमञ्जर्यामपि (७-४-३) 'भ्राजृ दीप्तौ' इत्येव पाठो लक्ष्यते 'भ्राजधातोः ऋदित्करणमपाणिनीयम्।' इति काशिका (७-४-३) अत्र ज्ञेया। '—ऋदित्वामनुत्तेत्तत्रमात्रफलम्।' इति मा.धा.वृत्तिः। ऋदित्त्वस्य तिङन्त एवोपयोगादस्माभिरुभावपि धातू समुच्चित्योपात्तौ। घटादिष्वेव फणादयः सप्त धातवोऽन्ते पठितः। तत्र 'टुभ्राजृ—' इत्येव पाठः न्यासकार-मैत्रेय-रक्षित-पुरुषकार- सायण-सिद्धान्तकौमुद्यादि- सम्मतः। क्षीरस्वामी तु 'भ्राजृ, टु भ्राजृ—' इत्यादि पठित्वा, टुरुभयस्य— इत्येके। ट्वितोऽशुच्' (३-३-८९) भ्राजथुः। इत्याह। चान्द्राणां काशकृत्स्नीयानां च धातुपाठे भ्राज इत्येव घटादौ पठितः न तु 'टु भ्राजृ' इति इति क्षी. टीकायां प्रतिपादितम्। एतत् सर्वमत्रानुसन्धेयम्। 'अवश्यपठितव्येन फ (फा !) णादिकेन भ्राजते इत्यादीनां सिद्धेः इह (=घटादिभिन्नस्थले भ्वादिषु) पाठोऽनार्ष इव।' इति न्यासकारवचनं मा.धा. वृत्तौ उपात्तमप्यत्रावधेयम्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | भ्राजते | भ्राजेते | भ्राजन्ते | प्र. |
| | भ्राजसे | भ्राजेथे | भ्राजध्वे | म. |
| | भ्राजे | भ्राजावहे | भ्राजामहे | उ. |
| लिट् | बभ्राजे | बभ्राजाते | बभ्राजिरे | प्र. |
| | बभ्राजिषे | बभ्राजाथे | बभ्राजिध्वे | म. |
| | बभ्राजे | बभ्राजिवहे | बभ्राजिमहे | उ. |
| लुट् | भ्राजिता | भ्राजितारौ | भ्राजितारः | प्र. |
| | भ्राजितासे | भ्राजितासाथे | भ्राजिताध्वे | म. |
| | भ्राजिताहे | भ्राजितास्वहे | भ्राजितास्महे | उ. |
| लृट् | भ्राजिष्यते | भ्राजिष्येते | भ्राजिष्यन्ते | प्र. |
| | भ्राजिष्ये | भ्राजिष्येथे | भ्राजिष्यध्वे | म. |
| | भ्राजिष्ये | भ्राजिष्यावहे | भ्राजिष्यामहे | उ. |
| लोट् | भ्राजताम् | भ्राजेताम् | भ्राजन्ताम् | प्र. |
| | भ्राजस्व | भ्राजेथाम् | भ्राजध्वम् | म. |
| | भ्राजै | भ्राजावहै | भ्राजामहै | उ. |
| लङ् | अभ्राजत | अभ्राजेताम् | अभ्राजन्त | प्र. |
| | अभ्राजथाः | अभ्राजेथाम् | अभ्राजध्वम् | म. |
| | अभ्राजे | अभ्राजावहि | अभ्राजामहि | उ. |
| वि. लि. | भ्राजेत | भ्राजेयाताम् | भ्राजेरन् | प्र. |
| | भ्राजेथाः | भ्राजेयाथाम् | भ्राजेध्वम् | म. |
| | भ्राजेय | भ्राजेवहि | भ्राजेमहि | उ. |
| आ. लि. | भ्राजिषीष्ट | भ्राजिषीयास्ताम् | भ्राजिषीरन् | प्र. |
| | भ्राजिषीष्ठाः | भ्राजिषीयास्थाम् | भ्राजिषीध्वम् | म. |
| | भ्राजिषीय | भ्राजिषीवहि | भ्राजिषीमहि | उ. |
| लुङ् | अभ्राजिष्ट | अभ्राजिषाताम् | अभ्राजिषत | प्र. |
| | अभ्राजिष्ठाः | अभ्राजिषाथाम् | अभ्राजिढ्वम् | म. |
| | अभ्राजिषि | अभ्राजिष्वहि | अभ्राजिष्महि | उ. |
| लृङ् | अभ्राजिष्यत | अभ्राजिष्येताम् | अभ्राजिष्यन्त | प्र. |
| | अभ्राजिष्यथाः | अभ्राजिष्येथाम् | अभ्राजिष्यध्वम् | म. |
| | अभ्राजिष्ये | अभ्राजिष्यावहि | अभ्राजिष्यामहि | उ. |

**भावे**—भ्राज्यते। **णिचि**—भ्राजयति-ते। ९ अबिभ्रजत्-त-अबिभ्राजत्-त। **सनि**—बिभ्राजिषते। **यङि**—बाभ्राज्यते। **यङ्लुकि**—बाभ्राजीति-बाभ्राक्ति। **कृत्सु**—भ्राजकः-जिका, भ्राजिता-त्री, भ्राजमानः, भ्राजयमानः, भ्राजिष्यमाणः, भ्राजितम्, भ्राजितव्यम्, भ्राजयितव्यम्, भ्राजनीयम्, प्रभ्राज्यम्, भ्राजितुम्, भ्राजित्वा, भ्राजयित्वा,

विभ्राक्[1]-विभ्राग्-विभ्राजौ, विभ्राजः, भ्राजिष्णुः[2], विभ्राट्-[3]ड्-विभ्राजौ, विभ्राजः, भ्राजथुः,[4] बभ्राजिवान्,[5] भ्रेजिवान्, भ्राता,[6] नभ्राट्[7]। भ्राष्टिः।

**(१८२) ईज—गतिकुत्सनयोः**। (जाना, दोष लगाना, निन्दा करना)। सक.। सेट्.। आत्मने.। ईजते। ईजाञ्चक्रे-ईजाम्बभूव। 'ईक्षति' वत्।

**(१८३) शुच—शोके**। (चिन्ता करना, शोक करना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | शोचति | शोचतः | शोचन्ति | प्र. |
| | शोचसि | शोचथः | शोचथ | म. |
| | शोचामि | शोचावः | शोचामः | उ. |
| लिट् | शुशोच | शुशुचतुः | शुशुचुः | प्र. |
| | शुशोचिथ | शुशुचथुः | शुशुच | म. |
| | शुशोच | शुशुचिव | शुशुचिम | उ. |
| लुट् | शोचिता | शोचितारौ | शोचितारः | प्र. |
| | शोचितासि | शोचितास्थः | शोचितस्थ | म. |
| | शोचितास्मि | शोचितास्वः | शोचितास्मः | उ. |
| लृट् | शोचिष्यति | शोचिष्यतः | शोचिष्यन्ति | प्र. |
| | शोचिष्यासि | शोचिष्यथः | शोचिष्यथ | म. |
| | शोचिष्यामि | शोचिष्यावः | शोचिष्यामः | उ. |
| लोट् | शोचतु-तात् | शोचताम् | शोचन्तु | प्र. |
| | शोच-तात् | शोचतम् | शोचत | म. |
| | शोचानि | शोचाव | शोचाम | उ. |

१ 'भ्राजभासधुर्वि—' (३-२-१७७) इत्यादिना तच्छीलादिषु कर्तृषु क्विप्प्रत्ययः। 'चो कुः' (८-२-३०) इति पदान्ते कुत्वम्। एतच्च घटादिष्वपठितस्य भ्राजृ दीप्तौ, इति भौवादिकस्य भ्राजतेः क्विपि रूपमेवम्।

२ 'भुवश्च' (३-२-१३८) इत्यत्र चकारेणास्मादपि धातोः इष्णुच् प्रत्ययः इति काशिकादिषूच्यते। अत्रापि भ्राजिष्णुरिति द्विविधस्यापि भ्राजतेः सम्पद्यते इति बहवः। 'भ्राजिष्णुना लोहितचन्दनेन—' इति काशिकामुपादाय पदमञ्जर्याम्— 'नैतद् भाष्ये समाश्रितम्' इत्युक्तम्। इदानीं भाष्यकोशेषु 'भुवश्च' (३-२-१३८) इति सूत्रस्य भाष्यमेव नोपलभामहे। धातुकाव्यव्याख्याने तु (२-२०) घाटादिकस्य टु भ्राज०— इति धातोः इष्णुच् प्रत्ययः इति प्रतिपादितम्।

३ 'टु भ्राजृ—' इत्यस्य ताच्छीलिके क्विपि, 'व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राज—' (८-२-३६) इत्यनेन षत्वे, जश्त्वचर्त्वयोश्च रूपमेवम् क्विब्विधायके सूत्रे काशिकायाम् (३-२-१७७) विभ्राट् इत्युदाहृतत्वेऽपि, सूत्रे घटादिपठितयोः तदितरयोरुभयोरपि भ्राज धात्वोर्ग्रहणमेव, षत्वं तु 'व्रश्चभ्रश्च—' (८-२-३६) इत्यत्र राजधातुसाहचर्यात् फणादि (घटादि)। भ्राजतेरेव इत्यादिकं प्रकृतस्थले मा.धा. वृत्तौ स्फुटतम्।

४ ट्वितोऽथुच्' (३-३-८९) इति भावेऽथुच् प्रत्यये रूपमेवम्।

५ कर्तरि लिटः क्वसौ घटादेरन्यत्र पठितस्य भ्राजते रूपमेवम्। घटादिकस्य क्वसौ तु 'फणां च सप्तानाम्' (६-४-१२५) इत्येत्वाभ्यासलोपविकल्पः। तेन रूपद्वयमिति ज्ञेयम्।

६ 'भ्राजते इति भ्राता' इति रूपं क्षीरतरङ्गिण्यां, दशपाद्युणादिवृत्तौ च (द.उ. २.३) भ्राजते स्तृनि, तृचि वा, पृषोदरादित्वात् (६-३-१०९) जकारलोपे च साधितम्' भाष्ये (१-२-६८) तु 'यदि तावद् बिभर्तीति भ्राता' इत्युक्तत्वात् बिभ्रतेर्धारोरेव भ्रातृ शब्द निष्पादनं न्याय्यमिति प्रतिभाति।

७ 'न भ्राजते इति नभ्राट्। नञ् समासे, 'नभ्राण्नपात्—' (६-३-७५) इत्यादिना नञः प्रकृतिभावः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लङ् | अशोचत् | अशोचताम् | अशोचन् | प्र. |
| | अशोचः | अशोतम् | अशोचत | म. |
| | अशोचम् | अशोचाव | अशोचाम | उ. |
| वि. लि. | शोचेत् | शोचेताम् | शोचेयुः | प्र. |
| | शोचेः | शोचेतम् | शोचेत | म. |
| | शोचेयम् | शोचेव | शोचेम | उ. |
| आ. लि. | शुच्यात् | शुच्यास्ताम् | शुच्यासुः | प्र. |
| | शुच्याः | शुच्यास्तम् | शुच्यास्त | म. |
| | शुच्यासम् | शुच्यास्व | शुच्यास्म | उ. |
| लुङ् | अशोचीत् | अशोचिष्टाम् | अशोचिषुः | प्र. |
| | अशोचीः | अशोचिष्टम् | अशोचिष्ट | म. |
| | अशोचिषम् | अशोचिष्व | अशोचिष्म | उ. |
| लृङ् | अशोचिष्यत् | अशोचिष्यताम् | अशोचिष्यन् | प्र. |
| | अशोचिष्यः | अशोचिष्यतम् | अशोचिष्यत | म. |
| | अशोचिष्यम् | अशोचिष्याव | अशोचिश्याम | उ. |

**भावे**—शुच्यते। ९ अशोचि। **णिचि**—शोचयति-ते। ९ अशूशुचत्-त। **सनि**—शुशुचिषति-शुशोचिषति। **यङि**—शोशुच्यते। **यङ्लुकि**—शोशुचीति-शोशोक्ति। **कृत्सु**—शोचितव्यम् शोचनीयम्, शोचन्, शोचितुम्, शुचित्वा[१]-शोचित्वा, शुक्त्वा, शूद्रः[२]-शूद्रा, शुक्तः, शोकः,[३] हृच्छोकः, शोच्यम्[४], शोचनः,[५] शुक्,[६] शुक्रः,[७] शोशुच्यमानः[८] शोचिः[९], शुचितः[१०]-शोचितः, शुचिः[११]। अनु-पश्चात्तापे- सकर्म.। अनुशोचति।क्व

---

१ 'रलो व्युपधात्–' (१-२-२६) इति सेटोः क्त्वासन् प्रत्ययोः कित्त्वविकल्पः।

२ 'शुचेर्दक् रश्च' इति उपादिसूत्रेण रक्प्रत्ययो दकारादेशः, उपधादीर्घश्च इति माधवः। दशपाद्युणादौ तु 'शदेरू च' (द.उ. ८-३४) इति शेदर्धातोरिदं पदं निष्पाद्यते। माधवपक्ष एव प्राचीनः।

३ घञि रूपमेवम्। 'तुन्दशोकयोः–'(३-२-५) इति निपातनात् कुत्वम्। अन्यथा वार्तिकमते 'निष्ठायामनिटः–' (सि.कौ.वा. ७-३-५२) इति संकोचितत्वात् धातोरस्य निष्ठयां सेट्त्वात् कुत्वाप्रसक्तेः। प्रकृयासर्वस्वे तु न्यङ्क्वादित्वं (७-३-५३) आश्रित्यात्र कुत्वं समर्थितम्। हृच्छोकः इत्यत्र 'वा शोकष्यञ्रोगेषु (६-३-५१) इति हृदयशब्दस्य हृदादेशः।

४ ण्यति, 'चजोः कुघिण्ण्यतोः (७-३-५२) इति सूत्रकारमते यद्यपि प्राप्तं कुत्वम्। तथापि 'निष्ठयामनिटः–' (वा. ७-३-५६) इति नियमान्निवर्तते।

५ जुचङ्क्रम्यदन्द्रम्यसृगृधिज्वलशुच–' (३-२-१५०) इत्यादिना तच्छीलादौ युच्।

६ भावे स्त्रियां सम्पदादित्वात् (वा. ३-२-१०८) क्विप्। क्तिनोऽपवादः।

७ 'ऋज्रेन्द्र–' (द.उ. ८-४६) इत्यत्र निपातनात् रक्प्रत्ययान्तः साधुः। शुक्रः = भार्गवः।

८ यङन्तात् शानचि रूपमेवम्।

९ शोचति इति शोचिः = दीप्तिः, शोको वा। सकारान्तः शब्दः। 'अर्चिशुचि–'(द.उ. ९-३०) इति इसि प्रत्ययः।

१० 'उदुपधात् भावकर्मणोः–' (१-२-२१) इति सेटो निष्ठयांः कित्त्वविकल्पः। तेन रूपद्वयम्।

११ 'इगुपधात् कित्' (द.उ. १-४८) इति इन् प्रत्ययः। तस्य कित्त्वात् न गुणः। अहरहः क्लिश्यमाजनं दृष्ट्वा शोचतीति शुचिः = विद्वान्, दक्षश्च।

**(१८४) कुच—शब्दे तारे।** (पक्षी के समान जोर से शब्द करना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.। १ कोचति। २ चुकोच। ३ कोचिता। 'शोचति' (१८३) वत्।

**(१८५-१८६) कुञ्च-क्रुञ्च—गति कौटिल्याल्पीभावयोः** (जाना, टेढा होना, टेढा होना या करना, अल्प या कम होना या करना)। **आङ्**—आकुञ्चित होना, अकड़ जाना। अकर्म.। सेट्। परस्मै.।

१ कुञ्चति। २ चुकुञ्च। ३ कुञ्चिता। ४ कुञ्चिष्यति। ५ कुञ्चतु। ६ अकुञ्चत्। ७ कुञ्चेत्। ८ कुच्यात्। ९ अकुञ्चीत्। १० अकुञ्चिष्यत्।

**कर्मणि**—कुच्यते। **णिचि**— कुञ्चयति-ते। ९ अचुकुञ्चत्-त। **सनि**—चुकुञ्चिषति। **यङि**—जोकुच्यते। **यङ्लुकि**— चोकुञ्चीति-चोकुङ्क्ति। **कृत्सु**—कुञ्चितव्यः, कुञ्चनीयः, कुञ्च्यः, कुञ्चितः, कुञ्चन्, कुञ्चितुम्, कुचित्वा, संकुच्य। एवं क्रुञ्चतीत्यादि।

**(१८७) लुञ्च—अपनयने।** (कतरना चीरना, तोड़ना, छीलना, छाल निकालना, बाल आदि को उखाड़ना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। लुञ्चति। 'कुञ्चति' (१८५) वत्। केशांल्लुञ्चति। लुचित्वा-लुञ्चित्वा।

**(१८८) अञ्चु—गतिपूजनयोः।** (जाना, पूजा करना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। गतौ न लोपः, पूजायां न लोपो न भवति।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | अञ्चति | अञ्चतः | अञ्चन्ति | प्र. |
| | अञ्चसि | अञ्चथः | अञ्चथ | म. |
| | अञ्चामि | अञ्चावः | अञ्चामः | उ. |
| लिट् | आनञ्च | आनञ्चतुः | आनञ्चुः | प्र. |
| | आनञ्चिथ | आनञ्चथुः | आनञ्च | म. |
| | आनञ्च | आनञ्चिव | आनञ्चिम | उ. |
| लुट् | अञ्चिता | अञ्चितारौ | अञ्चितारः | प्र. |
| | अञ्चितासि | अञ्चितास्थः | अञ्चितास्थ | म. |
| | अञ्चितास्मि | अञ्चितास्वः | अञ्चितास्मः | उ. |
| लृट् | अञ्चिष्यति | अञ्चिष्यतः | अञ्चिष्यन्ति | प्र. |
| | अञ्चिष्यसि | अञ्चिष्यथः | अञ्चिष्यथ | म. |
| | अञ्चिष्यामि | अञ्चिष्यावः | अञ्चिष्यामः | उ. |
| लोट् | अञ्चतु-तात् | अञ्चताम् | अञ्चन्तु | प्र. |
| | अञ्च-तात् | अञ्चतम् | अञ्चत | म. |
| | अञ्चानि | अञ्चाव | अञ्चाम | उ. |
| लङ् | आञ्चत् | आञ्चताम् | आञ्चन् | प्र. |
| | आञ्चः | आञ्चतम् | आञ्चत | म. |
| | आञ्चम् | आञ्चाव | आञ्चाम | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| वि. लि. | अञ्चेत् | अञ्चेताम् | अञ्चेयुः | प्र. |
| | अञ्चेः | अञ्चेतम् | अञ्चेत | म. |
| | अञ्चेयम् | अञ्चेव | अञ्चेम | उ. |
| आ. लि. पूजायाम् | अञ्च्यात् | अञ्च्यास्ताम् | अञ्च्यासुः | प्र. |
| | अञ्च्याः | अञ्च्यास्तम् | अञ्च्यास्त | म. |
| | अञ्च्यासम् | अञ्च्यास्व | अञ्च्यासम् | उ. |
| आ. लि. गतौ | अच्यात् | अच्यास्ताम् | अच्यासुः | प्र. |
| | अच्याः | अच्यास्तम् | अच्यास्त | म. |
| | अच्यासम् | अच्यास्व | अच्यास्म | उ. |
| लुङ् | आञ्चीत् | आञ्चिष्टाम् | आञ्चिषुः | प्र. |
| | आञ्चीः | आञ्चिष्टम् | आञ्चिष्ट | म. |
| | आञ्चिषम् | आञ्चिष्व | आञ्चिष्म | उ. |
| लृङ् | आञ्चिष्यत् | आञ्चिष्यताम् | आञ्चिष्यन् | प्र. |
| | आञ्चिष्यः | आञ्चिष्यतम् | आञ्चिष्यत | म. |
| | आञ्चिष्यम् | आञ्चिष्याव | आञ्चिष्याम | उ. |

**कर्मणि**—अञ्च्यते-अच्यते। **णिचि**—अञ्चयति-ते। २ अञ्चयाञ्चकार। ३ अञ्चयिता। ४ अञ्चयिष्यति। ५ अञ्चयतु-अञ्चयतात्। ६ आञ्चयत्। ७ अञ्चयेत्। ८ अञ्च्यात्। ९ आञ्चिचत्। १० आञ्चयिष्यत्। **सनि**—१ अञ्चिचिषति। २ अञ्चिचिषामास। ३ अञ्चिचिषिता। ४ अञ्चिचिषिष्यति। ५ अञ्चिचिषतु-अञ्चिचिषतात्। ६ आञ्चिचिषत्। ७ आञ्चिचिषेत्। ८ अञ्चिचिष्यात्। ९ अञ्चिचिषीत्। १० आञ्चिचिषिष्यत्। **कृत्सु**—अञ्चकः-ञ्चिका, अञ्चिता-त्री, अञ्चन्-न्ती, अञ्चयन्-न्ती, अञ्चिष्यन्-ती-न्ती, अञ्चयमान, अञ्चयिष्यमाणः, प्राङ्,[1] उदङ्, अतिर्यङ्ध्यङ्, न्यङ्, अञ्चितम्[2]-तः-तवान्। अक्तम्-क्तः-तवान्। समक्नः[3]-समक्नवान्, अञ्चः, अञ्चितव्यम्, अञ्चनीयम्, अङ्क्यम्, अञ्च्यम्[4], ईषदञ्चः, दुरञ्चः, स्कञ्चः, अञ्च्यमानः,[5] अच्यमानः। उदङ्कः[6] अञ्चितुम्-अक्तुम्, अञ्चा, अञ्चना, अञ्चनम्-उदकोदञ्चनः, अञ्चित्वा-अक्त्वा समञ्ज्य-समच्य, प्राञ्च्य।

## (१८९-१९६) वञ्चु-चञ्चु-तञ्चु-त्वञ्चु-म्रुञ्चु-म्लुञ्चु-भ्रुचु-म्लुचु—गत्यर्थाः।

(जाना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। वञ्चति। २ ववञ्च ववञ्चतुः ववञ्चुः। ३ वञ्चिता। ४

१ 'ऋत्विग्–' (३-२-५९) इत्यादिना क्विन्, 'अनिदितां–' (६-४-२४) इति नलोपे 'उगिदचां–' (७-१-७०) इति नुम्। नुमो नकारस्य, 'क्विन् प्रत्ययस्य कुः' (८-२-६२) इति कुत्वम्।
२ 'अञ्चेः पूजायाम्' (७-२-५३) इति इट्, गतौ तु नलोपः।
३ 'अचोऽनपादाने' (८-२-४८) इति निष्ठनत्वम्। अपादाने तु 'उदक्तमुदकं कूपात्' इति भवति' 'उदितो वा' (७-२-५६) इति क्त्वायाम् इड्विकल्पात् 'यस्य विभाषा (७-२-१५) इतीण्णिषेधः।
४ गत्यर्थे निष्ठायामनिट्त्वात् कुत्वम् 'पूजायां 'अञ्चेः पूजायाम्' (७-२-५३) इति सेट्त्वात् कुत्वाभावः। 'चजोः कु घिण्ण्यतोः' (७-३-५३) इति कुत्वम्।
५ 'नाञ्चेः पूजायाम्' (६-४-३०) इति पूजायां नलोपः निषेधः। गतौ तु 'अनिदिताम्–' (६-४-२४) इति नलोपः।
६ 'उदङ्कोऽनुदके' (३-३-१२३) इति घञन्तो निपातितः।

वञ्चिष्यति। ५ वञ्चतु। ६ अवञ्चत्। ७ वञ्चेत्। ८ वच्यात्। अनिदितामिति न लोपः। ९ अवञ्चीत्।

**कृत्सु**—वञ्चकः-ञ्चिका, वञ्चिता-त्री, वञ्चयिता-त्री, वञ्चन्-न्ती, वञ्चयन्-न्ती, वञ्चिष्यन्-न्ती-ती वञ्चयिष्यन्-न्ती-ती, वञ्चितुम्, वञ्चितः, वञ्चितव्यम्, वञ्चयमानः, वक्तः-वक्तवान्, वञ्च्यं वञ्चन्ति मणिजः, वचित्वा-वञ्चित्वा-वक्त्वा, वाङ्क्रिः, आवक्रम्। इत्यादि। एवमेव चञ्चति, तञ्चति, त्वञ्चति, भ्रुञ्चति, म्लुञ्चचति, भ्रुचति, म्लुचति। इत्यादि।

**( १९७-२०० ) ग्रुचु-ग्लुचु-कुजु-खुचु—स्तेयकरणे**। (चोरी करना) सकर्म.। सेट्। परस्मै.। उदित्। ग्रोचति। जुग्रोच। अग्रुचत्-अग्रोचीत्। 'जृस्तम्भुम्रुचुम्लुग्रुचुग्लुचुग्लुञ्चुश्विभ्यश्च' शोचति (१८३) वत्। ग्रुक्तः, ग्रुचित्वा, ग्रोचित्वा, ग्रुक्त्वा। एवं ग्लोचति, कोजति। खोजति। इत्यादीनि रूपाणि ज्ञेयानि।

**( २०१ ) ग्लुञ्चु—गतौ**। (जाना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। उदित्। ग्लुञ्चति। जुग्लुञ्च। अग्लुचत्-अग्लुञ्चीत्। इत्यादि। 'कुञ्चति' (१८५) वत्। ग्लुक्तः, ग्लुञ्चित्वा-ग्लुक्त्वा।

**( २०२ ) षस्ज—गतौ**। (जाना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। सज्जति। सकारस्य श्चुत्वेन शकारे तस्य 'झलाञ्जश् झशि' इति जश्त्वेन जकारः। सज्जते। २ ससज्ज-ज्जे। ४ सज्जिष्यति-ते। ६ असज्जत्-त। ७ सज्जेत्-त। ८ सज्ज्यात्-सज्जिषीष्ट। ९ असज्जीत्-असजिष्ट। सज्ज्यते। सिसज्जिषति। सज्जयं, सज्जितः, सज्जित्वा, प्रसज्ज्य।

**( २०३ ) गुजि—अव्यक्ते शब्दे**। (अस्पष्ट बोलना, गुञ्जारव करना)(भोरे की ध्वनि)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | गुञ्जति | गुञ्जतः | गुञ्जन्ति | प्र. |
| | गुञ्जसि | गुञ्जथः | गुञ्जथ | म. |
| | गुञ्जामि | गुञ्जावः | गुञ्जामः | उ. |
| लिट् | जुगुञ्ज | जुगुञ्जतुः | जुगुञ्जुः | प्र. |
| | जुगुञ्जिथ | जुगुञ्जथुः | जुगुञ्ज | म. |
| | जुगुञ्ज | जुगुञ्जिव | जुगुञ्जिम | उ. |
| लुट् | गुञ्जिता | गुञ्जितारौ | गुञ्जितारः | प्र. |
| | गुञ्जितासि | गुञ्जितास्थः | गुञ्जितास्थ | म. |
| | गुञ्जितास्मि | गुञ्जितास्वः | गुञ्जितास्मः | उ. |
| लृट् | गुञ्जिष्यति | गुञ्जिष्यतः | गुञ्जिष्यन्ति | प्र. |
| | गुञ्जिष्यसि | गुञ्जिष्यथः | गुञ्जिष्यथ | म. |
| | गुञ्जिष्यामि | गुञ्जिष्यावः | गुञ्जिष्यामः | उ. |
| लोट् | गुञ्जतु-तात् | गुञ्जताम् | गुञ्जन्तु | प्र. |
| | गुञ्ज-तात् | गुञ्जतम् | गुञ्जत | म. |
| | गुञ्जानि | गुञ्जाव | गुञ्जाम | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लङ् | अगुञ्जत् | अगुञ्जताम् | अगुञ्जन् | प्र. |
| | अगुञ्जः | अगुञ्तम् | अगुञ्जत | म. |
| | अगुञ्जम् | अगुञ्जाव | अगुञ्जाम | उ. |
| वि. लि. | गुञ्जेत् | गुञ्जेताम् | गुञ्जेयुः | प्र. |
| | गुञ्जेः | गुञ्जेतम् | गुञ्जेत | म. |
| | गुञ्जेयम् | गुञ्जेव | गुञ्जेम | उ. |
| आ. लि. | गुञ्ज्यात् | गुञ्ज्यास्ताम् | गुञ्ज्यासुः | प्र. |
| | गुञ्ज्याः | गुञ्ज्यास्तम् | गुञ्ज्यास्त | म. |
| | गुञ्ज्यासम् | गुञ्ज्यास्व | गुञ्ज्यास्म | उ. |
| लुङ् | अगुञ्जीत् | अगुञ्जिष्टाम् | अगुञ्जिषुः | प्र. |
| | अगुञ्जीः | अगुञ्जिष्टम् | अगुञ्जिष्ट | म. |
| | अगुञ्जिषम् | अगुञ्जिष्व | अगुञ्जिष्म | उ. |
| लृङ् | अगुञ्जिष्यत् | अगुञ्जिष्यताम् | अगुञ्जिष्यन् | प्र. |
| | अगुञ्जिष्यः | अगुञ्जिष्यतम् | अगुञ्जिष्यत | म. |
| | अगुञ्जिष्यम् | अगुञ्जिष्याव | अगुञ्जिष्याम | उ. |

**णिचि**—गुञ्जयति-गुञ्जयते। **सनि**—जुगुञ्जिषति। **यङि**—जोगुञ्जयते। **यङ्लुकि**—जोगुञ्जीति-जोगुंक्ति। **कृत्सु**—गुञ्जितः, गुञ्जमानः, गुञ्जयमानः, गुञ्जः, गुञ्जितव्यम्, गुञ्जयितव्यम्, गुञ्जनीयम्, गुञ्जितुम्, गुञ्जा, गुञ्जनम्, गुञ्जित्वा।

**(२०४) अर्च—पूजायाम्** (पूजा करना, मान करना)। **सम्**—पूजना, स्थिर करना, **अनु**—जय-जयकार करना या मान करना। सक.। सेट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | अर्चति | अर्चतः | अर्चन्ति | प्र. |
| | अर्चसि | अर्चथः | अर्चथ | म. |
| | अर्चामि | अर्चावः | अर्चामः | उ. |
| लिट् | आनर्च | आनर्चतुः | आनर्चुः | प्र. |
| | आनर्चिथ | आनर्चथुः | आनर्च | म. |
| | आनर्च | आनर्चिव | आनर्चिम | उ. |
| लुट् | अर्चिता | अर्चितारौ | अर्चितारः | प्र. |
| | अर्चितासि | अर्चितास्थः | अर्चितास्थ | म. |
| | अर्चितास्मि | अर्चितास्वः | अर्चितास्मः | उ. |
| लृट् | अर्चिष्यति | अर्चिष्यतः | अर्चिष्यन्ति | प्र. |
| | अर्चिष्यसि | अर्चिष्यथः | अर्चिष्यथ | म. |
| | अर्चिष्यामि | अर्चिष्यावः | अर्चिष्यामः | उ. |
| लोट् | अर्चतु-अर्चतात् | अर्चताम् | अर्चन्तु | प्र. |
| | अर्च-अर्चतात् | अर्चतम् | अर्चत | म. |
| | अर्चानि | अर्चाव | अर्चाम | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लङ् | आर्चत् | आर्चताम् | आर्चन् | प्र. |
| | आर्चः | आर्चतम् | आर्चत | म. |
| | आर्चम् | आर्चाव | आर्चाम | उ. |
| वि. लि. | अर्चेत् | अर्चेताम् | अर्चेयुः | प्र. |
| | अर्चेः | अर्चेतम् | अर्चेत | म. |
| | अर्चेयम् | अर्चेव | अर्चेम | उ. |
| आ. लि. | अर्च्यात् | अर्च्यास्ताम् | अर्च्यासुः | प्र. |
| | अर्च्याः | अर्च्यास्तम् | अर्च्यास्त | म. |
| | अर्च्यासम् | अर्च्यास्व | अर्च्यास्म | उ. |
| लुङ् | आर्चीत् | आर्चिष्टाम् | आर्चिषुः | प्र. |
| | आर्चीः | आर्चिष्टम् | आर्चिष्ट | म. |
| | आर्चिषम् | आर्चिष्व | आर्चिष्म | उ. |
| लृङ् | आर्चिष्यत् | आर्चिष्यताम् | आर्चिष्यन् | प्र. |
| | आर्चिष्यः | आर्चिष्यतम् | आर्चिष्यत | म. |
| | आर्चिष्यम् | आर्चिष्याव | आर्चिष्याम | उ. |

**कर्मणि**—अर्च्यते। **णिचि**—अर्चयति। २ अर्चयाञ्चक्रे। ३ अर्चयिता। ४ अर्चयिष्यति। ५ अर्चयतु-अर्चयतात्। ६ आर्चयत। ७ अर्चयेत्। ८ अर्च्यात्। ९ आर्चिचत्। १० आर्चयिष्यत्। **सनि**—आर्चिचिषति। **कृत्सु**—अर्चकः-र्चिका, आर्चिता-त्री, अर्चन्-न्ती, अर्चयन्-न्ती, अर्चिष्यन्-न्ती-ती, अर्चयिष्यन्-न्ती-ती, अर्चयमानः, अर्क् अर्चौ अर्चः, अर्चितः-तवान्, अर्चः, अर्चितव्यम्, अर्चयितव्यम्, अर्चनीयम्, अर्च्यम्, ईषदर्चः-दुरर्चः-स्वर्चः-अर्च्यमानः, अर्चितुम्, अर्चयितुम्, अर्चा, अर्चनम्, अर्चित्वा, अर्चयित्वा। समर्च्य।

**( २०५ ) म्लेच्छ—अव्यक्ते शब्दे**। (अस्पष्ट शब्द करना। असम्बद्ध भाषण करना।) अक.। सेट्। पर.। म्लेच्छति। मिम्लेच्छ। 'खेलति' वत्।

**( २०६ ) लछ (लच्छ)—लक्षणे**। (चिह्न करना, निशान करना।) सकर्म.। सेट्। परस्मै.। लच्छति, २ ललच्छ। ९ अलच्छीत्। 'नर्दति' (५६) वत्।

**( २०७ ) लाछि (लाञ्छ)—लक्षणे**। (चिह्न करना, निशान करना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। लाञ्छति। ललाञ्छ। 'वाञ्छति' (२०८) वत्।

**( २०८ ) वाछि (वाञ्छ)—इच्छायाम्**। (इच्छा करना, चाहना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | वाञ्छति | वाञ्छतः | वाञ्छन्ति | प्र. |
| | वाञ्छसि | वाञ्छथः | वाञ्छथ | म. |
| | वाञ्छामि | वाञ्छावः | वाञ्छामः | उ. |
| लिट् | ववाञ्छ | ववाञ्छतुः | ववाञ्छुः | प्र. |
| | ववाञ्छिथ | ववाञ्छथुः | ववाञ्छ | म. |
| | ववाञ्छ | ववाञ्छिव | ववाञ्छिम | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुट् | वाञ्छिता | वाञ्छितारौ | वाञ्छितारः | प्र. |
| | वाञ्छितासि | वाञ्छितास्थः | वाञ्छितास्थ | म. |
| | वाञ्छितास्मि | वाञ्छितास्वः | वाञ्छितास्मः | उ. |
| लृट् | वाञ्छिष्यति | वाञ्छिष्यतः | वाञ्छिष्यन्ति | प्र. |
| | वाञ्छिष्यसि | वाञ्छिष्यथः | वाञ्छिष्यथ | म. |
| | वाञ्छिष्यामि | वाञ्छिष्यावः | वाञ्छिष्यामः | उ. |
| लोट् | वाञ्छतु-तात् | वाञ्छताम् | वाञ्छन्तु | प्र. |
| | वाञ्छ-तात् | वाञ्छतम् | वाञ्छत | म. |
| | वाञ्छानि | वाञ्छाव | वाञ्छाम | उ. |
| लङ् | अवाञ्छत् | अवाञ्छताम् | अवाञ्छन् | प्र. |
| | अवाञ्छः | अवाञ्छतम् | अवाञ्छत | म. |
| | अवाञ्छम् | अवाञ्छाव | अवाञ्छाम | उ. |
| वि. लि. | वाञ्छेत् | वाञ्छेताम् | वाञ्छेयुः | प्र. |
| | वाञ्छेः | वाञ्छेतम् | वाञ्छेत | म. |
| | वाञ्छेयम् | वाञ्छेव | वाञ्छेम | उ. |
| आ. लि. | वाञ्छ्यात् | वाञ्छ्यास्ताम् | वाञ्छ्यासुः | प्र. |
| | वाञ्छ्याः | वाञ्छ्यास्तम् | वाञ्छ्यास्त | म. |
| | वाञ्छ्यासम् | वाञ्छ्यास्व | वाञ्छ्यास्म | उ. |
| लुङ् | अवाञ्छीत् | अवाञ्छिष्टाम् | अवाञ्छिषुः | प्र. |
| | अवाञ्छीः | अवाञ्छिष्टम् | अवाञ्छिष्ट | म. |
| | अवाञ्छिषम् | अवाञ्छिष्व | अवाञ्छिष्म | उ. |
| लृङ् | अवाञ्छिष्यत् | अवाञ्छिष्यताम् | अवाञ्छिष्यन् | प्र. |
| | अवाञ्छिष्यः | अवाञ्छिष्यतम् | अवाञ्छिष्यत | म. |
| | अवाञ्छिष्यम् | अवाञ्छिष्याव | अवाञ्छिष्याम | उ. |

**कर्मणि**—वाञ्छ्यते। **णिचि**—वाञ्छयति-ते। **सनि**—विवाञ्छिषति। **यङि**—वावाञ्छ्यते। **यङ्लुकि**—वावाञ्छीति-वावांष्टि। **कृत्सु**—वाञ्छनीयम्, वाञ्छनम्, वाञ्छकः, वाञ्छी, वाञ्छिता, वाञ्छितः, वाञ्छा, वाञ्छितुम्, वाञ्छितव्यम्, वाञ्छित्वा, प्रवाञ्छ्य, वाञ्छन्, वाञ्छमानः, वाञ्छिष्यन्-वाञ्छिष्यमानः।

**(२०९) आछि—आयामे।** (बढ़ाना, लम्बा करना) सकर्म.। सेट्। परस्मै.। इदित्।

१ आञ्छति। २ आञ्छ-आनाञ्छ। ३ आञ्छिता। ४ आञ्छिष्यति। ५ आञ्छतु। ६ आञ्छत्। ७ आञ्छेत्। ८ आञ्छ्यात्। ९ आञ्छीत्। १० आञ्छिष्यत।

**कर्मणि**—आञ्छ्यते। **णिचि**—आञ्छयति-ते। **सनि**—आञ्चिच्छिषति। **कृत्सु**—आञ्छितव्यम्, आञ्छितः, आञ्छनम्, आञ्छित्वा, प्राञ्छ्य।

**(२१०) ह्रीछ (ह्रीच्छ) —लज्जायाम्।** (लज्जा करना) अकर्म.। सेट्। परस्मै.। ह्रीच्छति। 'क्रीडति' वत्।

**(२११) हूर्छा (हूर्च्छ) —कौटिल्ये**। कौटिल्यमपसरणमिति मैत्रेयः। अकर्म.। सेट्। परस्मै.। हूर्च्छति। जूहूर्च्छ। 'मूर्च्छति' २०२ वत्।

**(२१२) मूर्छा—मोहसमुच्छ्राययोः**। (मूर्च्छित होना, मुरझाना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | मूर्च्छति | मूर्च्छतः | मूर्च्छन्ति | प्र. |
| | मूर्च्छसि | मूर्च्छथः | मूर्च्छथ | म. |
| | मूर्च्छामि | मूर्च्छाव | मूर्च्छामः | उ. |
| लिट् | मुमूर्च्छ | मुमूर्च्छतुः | मुमूर्च्छुः | प्र. |
| | मुमूर्च्छिथ | मुमूर्च्छिथुः | मुमूर्च्छ | म. |
| | मुमूर्च्छ | मुमूर्च्छिव | मुमूर्च्छिम | उ. |
| लुट् | मूर्च्छिता | मूर्च्छितारौ | मूर्च्छितारः | प्र. |
| | मूर्च्छितासि | मूर्च्छितास्थः | मूर्च्छितास्थ | म. |
| | मूर्च्छितास्मि | मूर्च्छितास्वः | मूर्च्छितास्मः | उ. |
| लृट् | मूर्च्छिष्यति | मूर्च्छिष्यतः | मूर्च्छिष्यन्ति | प्र. |
| | मूर्च्छिष्यसि | मूर्च्छिष्यथः | मूर्च्छिष्यथ | म. |
| | मूर्च्छिष्यामि | मूर्च्छिष्यावः | मूर्च्छिष्यामः | उ. |
| लोट् | मूर्च्छतु-मुर्च्छतात् | मूर्च्छताम् | मूर्च्छन्तु | प्र. |
| | मूर्च्छ मुर्च्छतात् | मूर्च्छतम् | मूर्च्छत | म. |
| | मूर्च्छानि | मूर्च्छाव | मूर्च्छाम | उ. |
| लङ् | अमूर्च्छत् | अमूर्च्छताम् | अमूर्च्छन् | प्र. |
| | अमूर्च्छः | अमूर्च्छतम् | अमूर्च्छत | म. |
| | अमूर्च्छम् | अमूर्च्छाव | अमूर्च्छाम | उ. |
| वि. लि. | मूर्च्छेत् | मुर्च्छेताम् | मूर्च्छेयुः | प्र. |
| | मूर्च्छेः | मुर्च्छेतम् | मुर्च्छेत | म. |
| | मूर्च्छेयम् | मूर्च्छेव | मूर्च्छेम | उ. |
| आ. लि. | मूर्च्छ्यात् | मूर्च्छ्यास्ताम् | मूर्च्छ्यासुः | प्र. |
| | मूर्च्छ्याः | मूर्च्छ्यास्तम् | मूर्च्छ्यास्त | म. |
| | मूर्च्छ्यासम् | मूर्च्छ्यास्व | मूर्च्छ्यास्म | उ. |
| लुङ् | अमूर्च्छीत् | अमूर्च्छिष्टाम् | अमूर्च्छिषुः | प्र. |
| | अमूर्च्छीः | अमूर्च्छिष्टम् | अमूर्च्छिष्ट | म. |
| | अमूर्च्छिषम् | अमूर्च्छिष्व | अमूर्च्छिष्म | उ. |
| लृङ् | अमूर्च्छिष्यत् | अमूर्च्छिष्यताम् | अमूर्च्छिष्यन् | प्र. |
| | अमूर्च्छिष्यः | अमूर्च्छिष्यतम् | अमूर्च्छिष्यत | म. |
| | अमूर्च्छिष्यम् | अमूर्च्छिष्याव | अमूर्च्छिष्याम | उ. |

**भावे**—मूर्च्छ्यते। **णिचि**—मूर्च्छयति-ते। अमुमूर्च्छत्-त। **सनि**—मुमूर्च्छिषति।

**यङि**—मोमूर्च्छयते। **यङ्लुकि**—मोमूर्च्छीति-मोमोर्ति। **कृत्सु**—मूर्च्छितव्यम्, मूर्च्छनीयम्, मूर्च्छितः, मूर्च्छकः-र्च्छिका, मूर्च्छिता-त्री, मूर्च्छयिता-त्री, मूर्तम्,[1] मूर्तः-मूर्तवान्, क्विपि-मू-मूर्छौ-मूर्छः, क्तिनि-मूर्ति[2]: मूर्च्छितः[3], मूर्च्छा। इत्यादि।

**(२१३) स्फुर्छा—विस्तृतौ।** (विस्तार करना)। अकर्म.। सेट्.। परस्मै.। आदित्। स्फूर्छति। पुस्फूर्छ। स्फूर्णः। गूर्वीधातु वत्।

**(२१४) युच्छ—प्रमादे।** (दुर्लक्ष्य करना, असावधान रहना, प्रमाद करना)। युच्छति। युयुच्छ। 'खेलति' वत्।

**(२१५) उछि—उञ्छे।** उञ्छः = कणश आदानम्। (थोड़ा-थोड़ा एकत्र करना, थोड़ा-थोड़ा बटोरना, बीनना)। सकर्म.।सेट्। आत्मने.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | उञ्छति | उञ्छतः | उञ्छन्ति | प्र. |
| | उञ्छसि | उञ्छथः | उञ्छथ | म. |
| | उञ्छामि | उञ्छावः | उञ्छामः | उ. |
| लिट् | उञ्छाञ्चकार | उञ्छाञ्चक्रतुः | उञ्छाचक्रुः | प्र. |
| | उञ्छाञ्चकर्थ | उञ्छाञ्चक्रथुः | उञ्छाञ्चक | म. |
| | उञ्छाञ्चकार | उञ्छाञ्चकृव | उञ्छाञ्चकृम | उ. |
| लुट् | उञ्छिता | उञ्छितारौ | उञ्छितारः | प्र. |
| | उञ्छितासि | उञ्छितास्थः | उञ्छितास्थ | म. |
| | उञ्छितास्मि | उञ्छितास्वः | उञ्छितास्मः | उ. |
| लृट् | उञ्छिष्यति | उञ्छिष्यतः | उञ्छिष्यन्ति | प्र. |
| | उञ्छिष्यसि | उञ्छिष्यथः | उञ्छिष्यथ | म. |
| | उञ्छिष्यामि | उञ्छिष्यावः | उञ्छिष्यामः | उ. |
| लोट् | उञ्छतु-तात् | उञ्छताम् | उञ्छन्तु | प्र. |
| | उञ्छ-तात् | उञ्च्थतम् | उञ्छत | म. |
| | उञ्छानि | उञ्छाव | उञ्छाम | उ. |
| लङ् | औञ्छत् | औञ्छताम् | औञ्छन् | प्र. |
| | औञ्छः | औञ्छतम् | औञ्छत | म. |
| | औञ्छम् | औञ्छाव | औञ्छाम | उ. |
| वि. लि. | उञ्छेत् | उञ्छेताम् | उञ्छेयुः | प्र. |
| | उञ्छेः | उञ्चछेतम् | उञ्छेत | म. |
| | उञ्छेयम् | उञ्छेव | उञ्छेम | उ. |

१ निष्ठायाम् 'न ध्याख्यापृमूर्छिमदाम्' (८-२-५७) इति नत्वनिषेधे रूपमेवम् 'राल्लोपः' (६-४-२१) इति छकारस्य लोपः। दीर्घः।

२ 'क्तिच्क्तौ च पूजायाम्' (३-३-१७४) इति क्तिचि रूपमेवम्।

३ 'मूर्छाऽस्य सञ्जाता इत्यर्थे 'तदस्य सञ्जातं तारकादिभ्य इतच्' (५-२-३६) इतीतच् प्रत्यये रूपम्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आ.लि. | उच्छ्यात् | उच्छ्यास्ताम् | उच्छ्यासुः | प्र. |
| | उच्छ्याः | उच्छ्यास्तम् | उच्छ्यास्त | म. |
| | उच्छ्यासम् | उच्छ्यास्व | उच्छ्यास्म | उ. |
| लुङ् | औच्छीत् | औच्छिष्टाम् | औच्छिषुः | प्र. |
| | औच्छीः | औच्छिष्टम् | औच्छिष्ट | म. |
| | औच्छिषम् | औच्छिष्व | औच्छिष्म | उ. |
| लृङ् | औच्छिष्यत् | औच्छिष्यताम् | औच्छिष्यन् | प्र. |
| | औच्छिष्यः | औच्छिष्यतम् | औच्छिष्यत | म. |
| | औच्छिष्यम् | औच्छिष्याव | औच्छिष्याम | उ. |

**कर्मणि**—उच्छ्यते। **णिचि**—उच्छयति-ते। **सनि**—उच्चिच्छिषति। **कृत्सु**—उच्छितव्यम्, उच्छनीयम्, उच्छितः, उच्छितवान्, उच्छितुम्, उच्छकः-च्छिका, उच्छिता-त्री, उच्छन्-न्ती, उच्छिष्यन्-न्ती-ती, उच्छयमानः, उच्छः, उच्छनम्, उच्छित्वा, समुच्छ्य।

**( २१६ ) उच्छी—विवासे**। विवासः = समाप्तिः। (पूरा करना, समाप्त करना, छोड़ना, त्यागना।) प्र. पोंछना। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। प्रायेणायं विपूर्वः। ईदित्। व्युच्छति। 'उच्छति' (२१५) वत्। व्युचिच्छिषति।

**कृत्सु**—व्युच्छकः-च्छिका, व्युच्छिता-त्री, व्युच्छन्-न्ती, व्युट्-व्युशौ-व्युशः। व्युष्टः-ष्टम्-ष्टवान्-व्युष्टा, उच्छः, व्युच्छितव्यम्, व्युच्छनीयम्, व्युच्छ्यम्, उच्छितुम्, उष्टिः-उच्छा, उच्छनम्, उच्छित्वा।

**( २१७ ) ध्रज—गतौ** (जाना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। ध्रजति। दध्राज। 'व्रजति' (२५३) वत्।

**( २१८ ) ध्रजि—गतौ**। (जाना) सक.। सेट्। परस्मै.। ध्रञ्जति। २ दध्रञ्ज। 'क्रन्दति' (७१) वत्।

**( २१९ ) धृज—गतौ**। (जाना)। सक.। सेट्। परस्मै.। धर्जति। दधर्ज। 'कर्षति' वत्।

**( २२० ) धृजि—गतौ**। (जाना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। धृञ्जति। दधृञ्ज। 'बृंहति' (७३६) वत्।

**( २२१ ) ध्वज—गतौ**। (जाना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। ध्वजति २ दध्वाज। 'गदति' (५२) वत्।

**( २२२ ) ध्वजि—गतौ**। (जाना)। सक.। से.। परस्मै.। ध्वञ्जति। २ दध्वञ्ज। 'क्रन्दति' (७१) वत्।

**( २२३ ) कूज—अव्यक्ते शब्दे**। (अस्पष्ट शब्द करना, कूजना।) अकर्म.। सेट्। परस्मै.।

१ कूजति। २ चुकूज। ३ कूजिता। ४ कूजिष्यति। ५ कूजतु। ६ अकूजत्। ७ कूजेत्। ८ कूज्यात्। ९ अकूजीत्। १० अकूजिष्यत्।

**भावे**—कूज्यते। **णिचि**—कूजयति-ते। **सनि**—चुकूजिषति। **यङि**—चोकूज्यते। **यङ्लुकि**—चोकूजीति-चोकूक्ति। **कृत्सु**—कूजनीयम्, कूजनम्, कूजकः, कूजी, कूजिता, कूजितः, कूजितुम्, क्तिन्नास्तिः, अ-कूजा, कूजित्वा, सङ्कूज्य, कूजन्, कूजिष्यन्, ण्यन्तस्य तु-कूजयिता। कूजयितुम्, कूजयितव्यम्, कूजयित्वा, कूजयन्, कूजयमानः, कूज्यमानः कूजयिष्यन्-ष्यमानः।

**( २२४ ) अर्ज—अर्जने।** (सम्पादन करना, पाना, पैदा करना)। सकर्म.। सेट् परस्मै.। अर्जति। आनर्ज। 'अर्चति' (२०४) वत्।

**( २२५ ) षर्ज (सर्ज) —अर्जने।** (उपार्जन करना, प्राप्त करना।) सकर्म.। सेट्। परस्मै.। सर्जति। ससर्ज। 'नर्दति' (५६) वत्।

**( २२६ ) गर्ज—शब्दे।** (शब्द करना, गरजना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.।

१ गर्जति। २ जगर्ज। ३ गर्जिता। ४ गर्जिष्यति। ५ गर्जतु। ६ अगर्जत्। ७ गर्जेत्। ८ गर्ज्यात्। ९ अगर्जीत्। १० अगर्जिष्यत्।

**भावे**—गर्ज्यते। **णिचि**—गर्जयति-ते। **सनि**—जिगर्जिषति। **यङि**—जागजर्यते। **यङ्लुकि**—जागर्जीति-जागक्ति। **कृत्सु**—गर्जनीयम्, गर्जनम्, गर्जकः, गर्जी, गर्जिता, गर्जितः, गर्जना, गर्जितुम्, गर्जितव्यम्, गर्जित्वा, सङ्गर्ज्य, गर्ज्यम्, गर्जन्, गर्जिष्यन्।

**( २२७ ) तर्ज—भर्त्सने।** (डराना)। सक.। सेट्। पर.। तर्जति। ततर्ज। इत्यादि। 'नर्दति' (५६) वत्।

**( २२८ ) कर्ज—व्यथने।** (दुःख देना) सक.। सेट्। परस्मै.। कर्जति। 'नर्दति' (५६) वत्।

**( २२९ ) खर्ज—पूजने च।** (दुःख देना, सताना, आतिश पूजन करना, सम्मान करना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। खर्जति। चखर्ज। नर्दति। (५६) वत्। खूर्जः = पामा।

**( २३० ) अज—गतिक्षेपणयोः।** (जाना, हांकना, दौड़ाना, फेंकना)। गतावकर्मकः। क्षेपणे सकर्म.। सेट्। व्यादेशे अनिट्। परस्मै.।

**लट् प्र.** अजति अजतः अजन्ति। **म.** अजसि अजथः अजथ। **उ.** अजामि अजावः अजामः। **लिट् प्र.** विवाय विव्यतुः विव्युः। **म.** विवयिथ-विवेश-आजिष विव्यथुः विव्य। **उ.** विवाय विव्य विव्यिव विव्यिम। **लुट् प्र.** वेता-अजिता वेतारौ अजितारौ वेतारः-अजितारः। **म.** वेतासि अजितासि वेतास्थः- अजितास्थः वेतास्थ-अजितास्थ। **उ.** वेतास्मि - अजितास्मि वेतास्वः - अजितास्वः वेतास्मः - अजितास्मः। **लृट् प्र.** वेष्यति अजिष्यति वेष्यतः अजिष्यतः वेष्यन्ति - अजिष्यन्ति। **म.** वेष्यसि अजिष्यसि वेष्यथः - अजिष्यथः वेष्यथ-अजिष्यथ। **उ.** वेष्यामि - अजिष्यामि वेष्यावः अजिष्यावः वेष्यामः-अजिष्यामः। **लोट् प्र.** अजतु अजतात्

अजताम् अजन्तु। **म.** अज-अजतात् अजतम् अजत। **उ.** अजानि अजाव अजाम। **लङ् प्र.** आजत् आजताम् आजन्। **म.** आजः आजतम् आजत। **उ.** आजम् आजाव आजाम। **वि. लिङ् प्र.** अजेत् अजेताम् अजेयुः। **म.** अजेः अजेतम् अजेत। **उ.** अजेयम् अजेव अजेम। **आ.लि.प्र.** वीयात् वीयास्ताम् वीयासुः। **म.** वीयाः वीयास्तम् वीयास्त। **उ.** वीयासम् वीयास्व वीयास्म। **लुङ् प्र.** आजीत् अवैजीत् आजिष्टाम्-अविष्टाम् अजिषुः अवैषुः। **म.** आजीः-अवैषीः आजिष्टम् अवैष्टम् आजिष्ट अवैष्ट। **उ.** आजिषम् अवैषम् आजिष्व अवैष्व आजिष्म अवैष्म। **लृङ् प्र.** आजिष्यत् अवेष्यत् आजिष्यताम् अवेष्यताम् आजिष्यन् अवेष्यन्। **म.** आजिष्यः-अविष्यः आजिष्यतम् अवेष्यतम् आजिष्यत अवेष्यत। **उ.** आजिष्यम् अवेष्यम् आजिष्याव अवेष्याव आजिष्याम अवेष्याम।

**कर्मणि**—१ वीयते। २ विव्ये। ३ वायिता। ४ वायिष्यते वेष्यते अजिष्यते। ८ वायिषीष्ट वेषीष्ट अजिषीष्ट। ९ अवायि अवायिषाताम् अवेषाताम् आजिषाताम्। १: अवयिष्यत अवेष्यत अजिष्यत। **णिचि**—वाययति-ते। **सनि**—विवीषति अजिजिषति। **यङि**—वेवीयते। अजादित्वादत्र यङ्लुगस्ति। **कृत्सु**—वायकः[1]-यिका, वेता-त्री,[2] अजिता-त्री, वाययिता, अजन्-न्ती, वाययन्-न्ती, वेष्यन्-न्ती-ती, अचिष्यन्-न्ती-ती वायमानः, वाययिष्यमाणः, परिवीः, परिव्यौ-परिव्यः, समक्-समजौ-समजः, वीतः, अजितः, वायितम्-तः, अजः, अजा[3], आजिः[4], पदाजिः, वेतव्यम्-अजितव्यम्, वाययितव्यम्, वयनीयम्, वायनीयम्, वेयाम्, वाय्यम्, वीयमानः, वाय्यमानः, समजः[5], समाजः[6], उदाजः, वातमजाः[7] (मृगाः) व्यजः, व्याजः,[8] वेतुम्, अजितुम् वीतिः, अक्तिः, समज्या,[9] वायना, प्रवयनम्,[10] प्राजनम्, वायनम्, वीत्वा-अजित्वा, वाययित्वा, प्रवीय प्राज्य प्रवाय्य, औणादिके- अजिनम्[11]-अजिरम्[12]।

**( २३१ ) तेज—पालने**। (पालन करना, रक्षा करना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। तेजति। तितेज। 'खेलति' वत्।

**( २३२ ) खज—मन्थे**। (मथना, हिलाना मन्थन करना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। खजति। चखाज। 'गदति' (५२) वत्।

---

१ 'अजेर्व्यघञपोः' (२-४-५६) इति वीभावः।
२ 'वलादावार्धधातुके वेष्यते' (२-४-५६) इति वा वीभावः।
३ 'अजाद्यतष्टाप्' (४-१-४) इति टाप्।
४ अज्यतिभ्याम्पादे च'(४-१३१) इत्यौणादिकः इण् प्रत्ययः।
५ 'समुदोरजः पशुषु' (३-३-६९) इत्यप्।
६ 'अजिव्रज्योश्च' (७-३-६०) इति कुत्वं न भवति। 'पशूनां समजोऽन्येषां समाजे थ सधर्मिणाम्। इति अमरकोशः।
७ 'वातशुनीतिलशर्धेषु अजधेट्जहातीनां' (वा. ३-२-२८) इति खश्। नुम् सार्वधातुकत्वान्न वीभावः।
८ 'गोचरसंचरवहव्रजव्यज–' (३-३-११९) इति धातोः निपातितः।
९ 'संज्ञायां समजः' (३-३-९९) इति स्त्रियां क्यप् निपातनात् वीभावो न।
१० 'वा यौ' (२-४-५७) इति वीभावो वा।
११ अचिनम् = चर्म। अजति - वीयते वा तत्कर्म, कर्ता वा। इन् प्रत्ययः।
१२ अजिरम् = वेश्म। अजन्यस्मिन् इत्यधिकरणे किर प्रत्ययः।

**(२३३) खजि—गतिवैकल्ये**। (लंगड़ा होना, लंगड़ाना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.। खञ्जति।

**कर्मणि**—खञ्ज्यते। **णिचि**—खञ्जयति-ते। **सनि**—चिखञ्जिषति। **यङि**—चाखञ्ज्यते। **यङ्लुकि**—चाखञ्जीति-चाखंक्ति। **कृत्सु**—खञ्जनः, खञ्जः, खञ्जनकः, खञ्जकः। शेषं 'क्रन्दति' (७१) वत्।

**(२३४) एजृ—कम्पने**। (काँपना) अक.। सेट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | एजति | एजतः | एजन्ति | प्र. |
| | एजसि | एजथः | एजथ | म. |
| | एजामि | एजावः | एजामः | उ. |
| लिट् | एजाञ्चकार | एजाञ्चक्रतुः | एजाञ्चक्रुः | प्र. |
| | एजाञ्चकर्थ | एजाञ्चक्रथुः | एजाञ्चक्र | म. |
| | एजाञ्चकार | एजाञ्चकृव | एजाञ्चकृम | उ. |
| लुट् | एजिता | एजितारौ | एजितारः | प्र. |
| | एजितासि | एजितास्थः | एजितास्थ | म. |
| | एजितास्मि | एजितास्वः | एजितास्मः | उ. |
| लृट् | एजिष्यति | एजिष्यतः | एजिष्यन्ति | प्र. |
| | एजिष्यसि | एजिष्यथः | एजिष्यथ | म. |
| | एजिष्यामि | एजिष्यावः | एजिष्यामः | उ. |
| लोट् | एजतु-एजतात् | एजताम् | एजन्तु | प्र. |
| | एज-एजतात् | एजतम् | एजत | म. |
| | एजानि | एजाव | एजाम | उ. |
| लङ् | ऐजत् | ऐजताम् | ऐजन् | प्र. |
| | ऐजः | एजतम् | ऐजत | म. |
| | एजम् | एजाव | एजाम | उ. |
| वि. लि. | एजेत् | एजेताम् | एजेयुः | प्र. |
| | एजेः | एजेतम् | एजेत | म. |
| | एजेयम् | एजाव | एजाम | उ. |
| आ. लि. | एज्यात् | एज्यास्ताम् | एज्यासुः | प्र. |
| | एज्याः | एज्यास्तम् | एज्यास्त | म. |
| | एज्यासम् | एज्यास्व | एज्यास्म | उ. |
| लुङ् | ऐजीत् | ऐजिष्टाम् | ऐजिषुः | प्र. |
| | ऐजीः | ऐजिष्टम् | ऐजिषट | म. |
| | ऐजिषम् | ऐजिष्व | ऐजिष्म | उ. |
| लृङ् | ऐजिष्यत् | ऐजिष्यताम् | ऐजिष्यन् | प्र. |
| | ऐजिष्यः | ऐजिष्यतम् | ऐजिष्यत | म. |
| | ऐजिष्यम् | ऐजिष्याव | ऐजिष्याम | उ. |

**सनि**—एजिषिषति। **णिचि**—एजयति। **कृत्सु**—एजन्-ती, एजिष्यन्-न्ती-ती, एजिता-जिका, एजिता-त्री, एजमग्नः, एजयमानः, एक्-एग्-एजौ-एजः, एजितः, एजः, उदेजयः, अनमेजयः, अङ्गमेजयः, अत्वमेजयः, एजितव्यम्, एजनीयम्, एजितुम्, एजयितुम, एजित्वा, समेज्य, प्रेज्य।

**(२३५) टूओस्फूर्जा (स्फुर्जा) —वज्रनिर्घोषे**। (मेघ की गर्जना होना, गड़गड़ाना)। अकर्म.। सेट्। पर.। ट्वित्। ओदित्, आदिच्च।

१ स्फूर्जति। २ पुस्फूर्ज पुस्फूर्जतुः पुस्फूर्जुः। ३ स्फूर्जिता। ४ स्पूर्जिष्यति। ५ स्फूर्जतु-तात्। ६ अस्फूर्जत्। ७ स्फूर्जेत्। ८ स्फूर्ज्यात्। ९ अस्फूर्जीत्। १० अस्फूर्जिष्यत्।

**णिचि**—१ स्फूर्जयति-ते। २ स्पूर्जयाञ्चकार। ९ अपुस्फूर्जत्। **यङि**—१ पोस्फूर्ज्यते। ९ अपोस्फूर्जिष्ट। ९ अपोस्फूर्जिष्यत्। **यङ्लुकि**—प्रस्फूर्जीति-प्रोस्फूर्ति। ९ अपोस्फूर्जीत्। १० अपोस्फूर्जिष्यत्। **कृत्सु**—स्फूजितम्-तः, स्फूर्जः, स्फूर्जनः, स्फूर्जितव्यम्, स्फूर्जनीयम्, स्फूर्जितुम्, स्फूर्जन्-स्फुर्जन्।

**(२३६) क्षि—क्षये**। (नष्ट होना, सूक्ष्म होना, ह्रास होना, कम होना)। अकर्म.। अन्तर्भावितण्यर्थस्तु सकर्म.। अनिट्। परस्मै.।

१ क्षयति। २ **प्र.** चिक्षाय चिक्षियतुः चिक्षियुः। **म.** चिक्षियिथ-चिक्षेथ चिक्षियथुः चिक्षिय। **उ.** चिक्षाय-चिक्षय चिक्षियिव चिक्षियिम। ३ क्षेता। ४ क्षेष्यति। ५ क्षयतु। ६ अक्षयत्। ७ क्षयेत्। ८ क्षीयात् क्षीयास्ताम्। ९ **प्र.** अक्षैषीत् अक्षैष्टाम् अक्षैषुः। **म.** अक्षैषीः अक्षैष्टम् अक्षैष्ट। **उ.** अक्षैषम् अक्षैष्व अक्षैष्म। १० अक्षेष्यत्।

**भावे कर्मणि**—क्षीयते। २ चेक्षिये। ९ अक्षायि। **णिचि**—क्षाययति-ते। २ चाययाञ्चकार-चक्रे। ९ अचिक्षयत्-त। **सनि**—चिक्षीषति। **यङि**—चेक्षीयते। **यङलुकि**—चेक्षयीति-चेक्षेति। **कृत्सु**—क्षीणः, क्षितः, क्षित्वा, क्षेतुम्, क्षेतव्यम्, क्षयणीयम्, क्षेतुं योग्यं क्षेयम्, क्षेतुं शक्यं क्षय्यम्, क्षामः इति क्षै = क्षये इत्यस्य रूपम्।

**(२३७) क्षीज—अव्यक्ते शब्दे**। (अस्पष्ट शब्द करना, कराहना, खीजना, दुःखी होकर बड़बड़ाना।) अकर्म.। सेट्। परस्मै.। क्षीजति।

**णिचि**—क्षीजयति। **सनि**—चिक्षीजिषति। **यङि**—चेक्षीज्यते। **यङ्लुकि**—चेक्षीजीति-चेक्षीक्ति।

**(२३८) लज—भर्जने**। (भूँजना, तलना, भूनना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। लजति। ललाज लेजतुः 'रदित' (५३) वत्।

**(२३९) लजि—भर्जने**। (भूजना, भूनना, तलना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। लञ्जति। ललञ्ज। 'क्रन्दति' (७१) वत्।

**कृत्सु**—लञ्जकः-ञ्जिका, लञ्जिता-त्री, लञ्जयिता-त्री, लञ्जितम्-तः, लञ्जः, लञ्जितव्यम्, लञ्जयितव्यम्, लञ्जनीयम्, लञ्जयमानः, लञ्जितुम्, लञ्जनम्, लञ्जित्वा, लञ्जयित्वा।

**(२४०) लाज—भर्त्सने, भर्जने च**। (भूनना, दोष लगाना, निन्दा करना)। सक.। सेट्। परस्मै.। लाजति। २ ललाज ललाजतुः 'खादति' (४९) वत्। लजिः = भृष्टधान्यम्।

**( २४१ ) लाजि—भर्त्सने भर्जने च।** (भूनना, दोष लगाना) सक.। सेट्। पर.। लाञ्जति। २ ललाञ्ज। वाञ्छति (२०८) वत्।

**( २४२ ) जज—युद्धे।** (युद्ध करना, लड़ाई करना, मारना) अकर्म.। सेट्। परस्मै.। जजति। जजाव जेजतुः। 'रदति' (५३) वत्।

**( २४३ ) जजि—युद्धे।** (लड़ाई करना, युद्ध करना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.। १ जञ्जति। २ जजञ्ज। 'क्रन्दति' (७१) वत्। जञ्जकः-ञ्जिका, जञ्जा।

**( २४४ ) तुज—हिंसायाम्।** (दुःख देना, मार डालना, हिंसा करना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। तोजति। तुतोज। 'शोचति' (१८३) वत्।

**कृत्सु**—तोजकः-जिका, तुजिता-त्री, तोजयिता-त्री, तोजन्, तोजयन्, तोजयमानः, तोजितम्, तोजः, तोजितव्यम्, तोजनीयम्, तुज्यमानः, तोजनम्, तुजित्वा, तोजित्वा तोजनम्।

**( २४५ ) तुजि—पालने।** (पालन करना)। सकर्म.। सेट्। पर.। तुञ्जति। 'गुञ्जति' (२०३) वत्।

**कृत्सु**—तुञ्जकः-ञ्जिका, तुञ्जिता-त्री, तुञ्जयिता-त्री, तुञ्जमानः, तुञ्जयमानः, तुञ्जितः-तम्, तुञ्जित्वा, तुञ्जयित्वा, तुञ्जः। तुञ्जितुम्।

**( २४६ ) गज—शब्दे मदे च।** (शब्द करना, मदोन्मत्त होना, या वेसुध होना।) अकर्म.। सेट्। परस्मै.। गजति जगाद। 'गदति' (५२) वत्।

**( २४७ ) गजि—शब्दे** (शब्द करना)। अकर्म.। सेट्। पर.। गञ्जति। जगञ्ज। 'क्रन्दति' (७१) वत्।

**( २४८ ) गृज—शब्दे** (शब्द करना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | गर्जति | गर्जतः | गर्जन्ति | प्र. |
| | गर्जसि | गर्जथः | गर्जथ | म. |
| | गर्जामि | गर्जावः | गर्जामः | उ. |
| लिट् | जगर्ज | जगर्जतुः | जगर्जुः | प्र. |
| | जगर्जिथ | जगर्जथुः | जगर्ज | म. |
| | जगर्ज | जगर्जिव | जगजिम | उ. |
| लुट् | गर्जिता | गर्जितारौ | गर्जितारः | प्र. |
| | गर्जितासि | गर्जितास्थः | गर्जितास्थ | म. |
| | गर्जितास्मि | गर्जितास्वः | गर्जितास्मः | उ. |
| लृट् | गर्जिष्यति | गर्जिष्यतः | गर्जिष्यन्ति | प्र. |
| | गर्जिष्यसि | गर्जिष्यथः | गर्जिष्यथ | म. |
| | गर्जिष्यामि | गर्जिष्यावः | गर्जिष्यामः | उ. |
| लोट् | गर्जतु-गर्जतात् | गर्जताम् | गर्जन्तु | प्र. |
| | गर्ज-गर्जतात् | गर्जतम् | गर्जत | म. |
| | गर्जानि | गर्जाव | गर्जाम | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लङ् | अगर्जत् | अगर्जताम् | अगर्जन् | प्र. |
| | अगर्जः | अगर्जतम् | अगर्जत | म. |
| | अगर्जम् | अगर्जाव | अगर्जाम | उ. |
| वि. लि. | गर्जेत् | गर्जेताम् | गर्जेयुः | प्र. |
| | गर्जेः | गर्जेतम् | गर्जेत | म. |
| | गर्जेयम् | गर्जेव | गर्जेम | उ. |
| आ. लि. | गर्ज्यात् | गर्ज्यास्ताम् | गर्ज्यासुः | प्र. |
| | गर्ज्याः | गर्ज्यास्तम् | गर्ज्यास्त | म. |
| | गर्ज्यासम् | गर्ज्यास्व | गर्ज्यास्म | उ. |
| लुङ् | अगर्जीत् | अगर्जिष्टाम् | अगर्जिषुः | प्र. |
| | अगर्जीः | अगजिष्टम् | अगर्जिष्ट | म. |
| | अगर्षिषम् | अगजिष्व | अगजिष्म | उ. |
| लृङ् | अगर्जिष्यत् | अगर्जिष्यताम् | अगर्जिष्यन् | प्र. |
| | अगर्जिष्यः | अगर्जिष्यतम् | अगर्जिष्यत | म. |
| | अगर्जिष्यम् | अगर्जिष्याव | अगर्जिष्याम | उ. |

**भावे**—गर्ज्यते। **णिचि**—गर्जयति-ते। **सनि**—जिगर्जिषति। **यङि**—जागर्ज्यते। **यङ्लुकि**—जागर्जीति-जागर्क्ति। **कृत्सु**—गर्जितव्यम्, गर्जनीयम्, गर्जनम्, गर्जितुम्, गर्जित्वा, सङ्गर्ज्य, गर्ज्यम्, गर्जन्, गर्जिष्यन्, गर्जितः, गर्जकः संगर्ज्य, गर्जिता-त्री, गृजः, गृज्यम्, गर्ज्यम्, गृज्यमानः, गर्ज्यमानः, गृक्तिः, गर्जना, जिगर्जिषा, गर्जम्।

**(२४९) गृजि—गर्जने** (शब्दे)। (शब्द करना, गर्जना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.। इदित्। गृञ्जति 'वृंहति' वत्।

**कृत्सु**—गृञ्जकः-जिका, गृञ्जिता-त्री, गृञ्जयिता, गृञ्जन्-न्ती, गृञ्जयन्-न्ती-ती, गृञ्जयमानः, गृञ्जयिष्यभाणः, गृञ्जितम्-तः, गृञ्जः, गृञ्जितव्यम्, गृञ्जनीयम्, गृञ्जः, गृञ्जितुम्, गृञ्जा, गृञ्जना, गृञ्जनम्, गृञ्जित्वा, प्रगृञ्ज्य।

**(२५०) मुज—शब्दे**। (शब्द करना) अकर्म.। सेट्। परस्मै.। मोजति। 'शोचति' (१८३) वत्।

**कृत्सु**—मोजकः-जिका, मुमोजिषकः, मोमुजकः, मोजिता-त्री, मोजन्-न्ती, मुजितम्, मुजः, मोजनीयम्, मोज्यम्, मुज्यमानः, मोजितुम, मोजनम्, मोजित्वा-मुजित्वा, मोजम्।

**(२५१) मुजि—शब्दे**। (शब्द करना, गूंजना, भौंरे के समान गूंजना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.। मुञ्जति 'कुञ्जति' (१८५) वत्।

**(२५२) वज—गतौ**। (जाना) सकर्म.। सेट्। परस्मै.। वजति। २ ववाज ववजतुः ववजुः। 'गदति' वत्।

**(२५३) व्रज—गतौ**। (जाना) सकर्म.। सेट्। परस्मै.।

१ व्रजति । २ **प्र.** वव्राज वव्रजतुः वव्रजुः । **म.** वव्रजिथ वव्रजथुः वव्रज । **उ.** वव्राज-ववर्ज वव्रजिव वव्रजिम । ३ व्रजिता । ४ व्रजिष्यति । ५ व्रजतु-व्रजतात् । ६ अव्रजत् । ७ व्रजेत् । ८ व्रज्यात् । ९ **प्र.** अव्राजीत् अव्राजिष्टाम् अव्राजिषुः । **म.** अव्राजीः अव्राजिष्टम् अव्राजिष्ट । **उ.** अव्राजिषम् अव्राजिष्व अव्राजिष्म । १० अव्राजिष्यत् ।

**कर्मणि**—व्रज्यते । **णिचि**—व्राजयति-ते । ९ अवविव्रजत्-त । **सनि**—विव्रजिषति-ते । **यङि**—वाव्रज्यते । **यङ्लुकि**—वाव्रजीति-वाव्रक्ति । **कृत्सु**—व्रजनीयम्, व्रजनम्, व्रजः,[१] व्राजः, परिव्राजकः, व्राजी, व्रजितः, व्रज्या,[२] व्रजितव्यम्, व्रजितुम्, व्रजित्वा, प्रव्रज्य, व्राज्यम्[३], व्रजन्-न्ती, व्रज्यमानः, व्रजिष्यन्-न्ती-ती, परिव्राट्[४]-परिव्राजौ-परिव्राजः, व्राजिः,[५] वज्रम्[६] ।

**( २५४ ) अट्ट—अतिक्रमहिंसयोः** । (अधिक होना, मार डालना, दुःख देना) । सकर्म. । सेट् । आत्मने. । अट्टते । 'अङ्कति' (८७) वत् ।

**कृत्सु**—अट्टकः-टिका, अट्टिता-त्री, अट्टयन्-न्ती, अट्टमानः, अट्टितम्, अट्टः, अट्टितव्यम्, अट्टनीयम्, अट्टितुम्, अट्टनम्, अट्टित्वा ।

**( २५५ ) वेष्ट—वेष्टने** । (लपेटना, घेरना) सकर्म. । सेट् । आत्मने. ।

१ वेष्टते । २ विवेष्टे विवेष्टाते विविष्टिरे । ३ वेष्टिता । ४ वेष्टिष्यते । ५ वेष्टताम् । ६ अवेष्टत । ७ वेष्टेत । ८ वेविषीष्ट । ९ अवेष्टिष्ट । १० अवेष्टिष्यत ।

**कर्मणि**—वेष्ट्यते । **णिचि**—वेष्टयति-ते । ९ अववेष्टत्-त । अविवेष्टत्-त । **सनि**—विवेष्टिषते । **यङि**—वेवेष्ट्यते । **यङ्लुकि**—वेवेष्टीति-वेवेष्टि । **कृत्सु**—वेष्टनीयम्, वेष्टितव्यम्, वेष्टित्वा, संवेष्ट्य, वेष्टितुम्, वेष्टमानः, वेष्टनम्, वेष्टकः-ष्टिका, वेष्टिता-त्री, वेष्टयिता-त्री, वेष्ट्यम्, वेष्ट्यमानः, वेष्टा, वेष्टम् ।

**( २५६ ) चेष्ट—चेष्टायाम्** । (चेष्टा करना, कोशिश करना) । अकर्म. । सेट् । आत्मने. ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | चेष्टते | चेष्टेते | चेष्टन्ते | प्र. |
| | चेष्टसे | चेष्टेथे | चेष्टध्वे | म. |
| | चेष्टे | चेष्टावहे | चेष्टामहे | उ. |
| लिट् | चिचेष्टे | चिचेष्टाते | चिचेष्टिरे | प्र. |
| | चिचेष्टिषे | चिचेष्टाथे | चिचेष्टिध्वे | म. |
| | चिचेष्टे | चिचेष्टिवहे | चिचेष्टिमहे | उ. |

१ 'गोचरसंचरवहव्रज–' (३-३-११९) इत्यधिकरणे घप्रत्ययान्तो निपातितः । व्रजः = गोकुलम् ।
२ व्रजयजोर्भावे क्यप्' (३-३-९८) इति भावे स्त्रीलिङ्गे क्यप् प्रत्ययः । क्तिनोऽपवादः । परिव्रज्या = सन्यासः ।
३ ण्यति, 'अजिव्रज्योश्च' (७-३-६०) इति कुत्वनिषेधः ।
४ परावुपपदे औणादिके (द.उ. ९-८) क्विप् प्रत्यये, दीर्घे जकारस्य षकारे च रूपमेवम् । परित्यज्य सर्वं व्रजति इति परिव्राट् = यतिः ।
५ औणादिके (द.उ. १-५३) ञिप्रत्यये, ञित्वादुपधावृद्धिः । तेन रूपमेवम् । व्राजिः = मनः (मुनिः) ।
६ व्रजति सर्वत्र प्रेरित इति औणादिके (द.उ. ८-४०) रन् प्रत्यये निरूढः । रेफलोपो निपातनात् । वज्रम् = पविः ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुट् | चेष्टिता | चेष्टितारौ | चेष्टितारः | प्र. |
| | चेष्टितासे | चेष्टितासाथे | चेष्टिताध्वे | म. |
| | चेष्टिताहे | चेष्टितास्वहे | चेष्टितास्महे | उ. |
| लृट् | चेष्टिष्यते | चेष्टिष्येते | चेष्टिष्यन्ते | प्र. |
| | चेष्टिष्यसे | चेष्टिष्येथे | चेष्टिष्यध्वे | म. |
| | चेष्टिष्ये | चेष्टिष्यावहे | चेष्टिष्यामहे | उ. |
| लोट् | चेष्टताम् | चेष्टेताम् | चेष्टन्ताम् | प्र. |
| | चेष्टस्व | चेष्टेथाम् | चेष्टध्वम् | म. |
| | चेष्टै | चेष्टावहै | चेष्टामहै | उ. |
| लङ् | अचेष्टत | अचेष्टेताम् | अचेष्टन्त | प्र. |
| | अचेष्टथाः | अचेष्टेथाम् | अचेष्टध्वम् | म. |
| | अचेष्टे | अचेष्टावहि | अचेष्टामहि | उ. |
| वि. लि. | चेष्टेत | चेष्टेयाताम् | चेष्टेरन् | प्र. |
| | चेष्टेथाः | चेष्टेयाथाम् | चेष्टेध्वम् | म. |
| | चेष्टेय | चेष्टेवहि | चेष्टेमहि | उ. |
| आ. लि. | चेष्टिषीष्ट | चेष्टिषीयास्ताम् | चेष्टिषीरन् | प्र. |
| | चेष्टिषीष्ठाः | चेष्टिषीयास्थाम् | चेष्टिषीध्वम् | म. |
| | चेष्टिषीय | चेष्टिषीवहि | चेष्टिषीमहि | उ. |
| लुङ् | अचेष्टिष्ट | अचेष्टिषाताम् | अचेष्टिषत | प्र. |
| | अचेष्टिष्ठाः | अचेष्ठिषाथाम् | अचेष्टिड्ढ्वम्-ध्वम् | म. |
| | अचेष्टिषि | अचेष्टिष्वहि | अचेष्टिष्महि | उ. |
| लृङ् | अचेष्टिष्यत् | अचेष्टिष्येताम् | अचेष्टिष्यन्त | प्र. |
| | अचेष्टिष्यथाः | अचेष्टिष्येथाम् | अचेष्टिष्यध्वम् | म. |
| | अचेष्टिष्ये | अचेष्टिष्यावहि | अचेष्टिष्यामहि | उ. |

**कर्मणि**—चेष्ट्यते। **णिचि**—चेष्टयति-ते। **कृत्सु**—चेष्टकः-ष्टिका, चेष्टिता-त्री, चेष्टितम्, युचि-चेष्टनम्, चेष्टा, चेष्टितव्यम्, चेष्टनीयम्, चेष्टितुम्। अन्यत्र, सर्वं 'वेष्टति' (२५५) वत्।

**( २५७-२५८ ) गोष्ट-लोष्ट—संघाते**। संघातः = समूहः। (बटोरना, एकत्र करना, ढेर लगाना या करना)। अकर्म.। सेट्। आत्मने.। गोष्टते। लोष्टते। 'वेष्टति' (२५५) वत्।

**( २५९ ) घट्ट—चलने**। (चलना)। अकर्म.। सेट्। आत्मने.। घट्टते। जघट्टे। इत्यादि 'कत्थति' (३७) वत्। घट्टयति आत्मनेपदं नास्ति।

**( २६० ) स्फुट—विकसने**। (खिलना, विकसित होना, प्रफुल्लित होना)। अकर्म.। सेट्। आत्मने.।

१ स्फोटते। २ पुस्फुटे। ३ स्फेटिता। ४ स्फोटिष्यते। ५ स्फोटताम्। ६ अस्फोटत। ७ स्फोटेत। ८ स्फोटिषीष्ट। ९ **प्र.** अस्फोटिष्ट अस्फोटिषाताम् अस्फोटिषत। **म.** अस्फोटिष्ठाः

अस्फोटिषाथाम् अस्फोटिड्ढ्वम्-ध्वम् । उ. अस्फोटिषि अस्फोटिष्वहि अस्फोटिष्महि । १० अस्फोटिष्यत ।

**कृत्सु**—स्फोटकः-टिका, स्फोटिता-त्री, स्फोटयिता-त्री, स्फोटमानः, स्फोटिष्यमाणः, स्फोटायिष्यमाणः, स्फुटितम्-तः-तवान्, स्फोटः, स्फोटितव्यम्, स्फोटयितव्यम्, स्फोटनीयम्, स्फोट्यम्, स्फोटित्वा, विस्फोट्य, स्फोटनम् । स्फोटना, स्फोटितुम्, सफोटयितुम् ।

**( २६१ ) अठि—गतौ** । (जाना) सक. । सेट् । आत्मने. । इदित् । अण्ठते । आनण्ठे । 'अङ्कति' (८७) वत् ।

**( २६२ ) वठि—एकचर्यायाम्** । (अकेला जाना) अकर्म. । सेट् । आत्मने. । वण्ठते । ववण्ठे । 'वन्दति' (११) वत् ।

**( २६३-२६४ ) मठि-कठि—शोके** । (दुःख करना, चिन्ता करना, रोकना) । सकर्म. । सेट् । आत्मने. । मण्ठते. ममण्ठे । कण्ठते । चकण्ठे । इत्यादि । 'वन्दति' (११) वत् ।

**( २६५ ) मठि—पालने** । (पालन करना) सकर्म. । सेट् । आत्मने. । 'वन्दति' (११) वत् ।

**( २६६ ) हेठ—विबाधायाम्** । (रोकना, निष्ठुर होना, क्रूर होना) । सकर्म. । सेट् । आत्मने. । हेठते । जिहेठे । 'वेष्टति' (२५५) वत् । **णौ चङि**—अजीहेठत्-अजीहेठत ।

**( २६७ ) एठ—विबाधायाम्** । सकर्म. । सेट् । आत्मने. । एठते । 'एजति' (१७९) वत् ।

**( २६८ ) हिडि—गत्यनादरयोः** । (घूमना, आनादर होना या करना) सकर्म. । सेट् । आत्मने. । हिण्डते । इत्यादि- 'क्लिन्दति' (१५) वत् ।

**( २६९ ) हुडि—संघाते वरणे च** । (वटोरना, एकत्र करना, मान्य करना, वरण करना) अकर्म. । वरणे सकर्म. । सेट् । आत्मने. । हुण्डते । 'क्लिन्दति' (१५) वत् ।

**( २७० ) कुडि—दाहे** । (जलना) सकर्म. । सेट् । आत्मने. । इदित् । कुण्डते । 'स्कुन्दति' (९) वत् ।

**( २७१ ) वडि—विभाजने** । (अलग करना) सकर्म. । सेट् । आ. । वण्डते । ववण्डे । 'वन्दति' (११) वत् ।

**कृत्सु**—वण्डकः-ण्डिका, वण्डिता-त्री, वण्डमानः, वण्डितम्, वण्डितव्यम्, वण्डनीयम्, वण्ड्यम्, वण्डितुम्, वण्डनम्, वण्डित्वा, वण्डयित्वा, वण्डितुम्, वण्डयितुम्, वण्डिष्यन्-न्ती, वण्डयिष्यन्-न्ती-ती । इत्यादि ।

**( २७२ ) मडि—विभाजने** । (अलग करना) । सकर्म. । सेट् । आत्मने. । मण्डते । ममण्डे । 'वन्दति' (११) वत् ।

**( २७३ ) मडि—परिभाषणे**। (उपहास करना, बोलना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। मण्डते। 'वन्दति' (११) वत्।

**( २७४ ) पिडि—संघाते**। (ढेर करना, राशि करना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | पिण्डते | पिण्डेते | पिण्डन्ते | प्र. |
| | पिण्डसे | पिण्डेथे | पिण्डध्वे | म. |
| | पिण्डे | पिण्डावहे | पिण्डामहे | उ. |
| लिट् | पिपिण्डे | पिपिण्डाते | पिपिण्डिरे | प्र. |
| | पिपिण्डिषे | पिपिण्डाथे | पिपिण्डिध्वे | म. |
| | पिपिण्डे | पिपिण्डिवहे | पिपिण्डिमहे | उ. |
| लुट् | पिण्डिता | पिण्डितारौ | पिण्डितारः | प्र. |
| | पिण्डितासि | पिण्डितास्थः | पिण्डितास्थ | म. |
| | पिण्डितास्मि | पिण्डितास्वः | पिण्डितास्मः | उ. |
| लृट् | पिण्डिष्यते | पिण्डिष्येते | पिण्डिष्यन्ते | प्र. |
| | पिण्डिष्यसे | पिण्डिष्येथे | पिण्डिष्यध्वे | म. |
| | पिण्डिष्ये | पिण्डिष्यावहे | पिण्डिष्यामहे | उ. |
| लोट् | पिण्डताम् | पिण्डेताम् | पिण्डताम् | प्र. |
| | पिण्डस्व | पिण्डेथाम् | पिण्डध्वम् | म. |
| | पिण्डै | पिण्डावहै | पिण्डामहै | उ. |
| लङ् | अपिण्डत | अपिण्डेताम् | अपिण्डन्त | प्र. |
| | अपिण्डथाः | अपिण्डेथाम् | अपिण्डध्वम् | म. |
| | अपिण्डे | अपिण्डावहि | अपिण्डामहि | उ. |
| वि. लि. | पिण्डेत | पिण्डेयाताम् | पिण्डेरन् | प्र. |
| | पिण्डेथाः | पिण्डेयाथाम् | पिण्डेध्वम् | म. |
| | पिण्डेय | पिण्डेवहि | पिण्डेमहि | उ. |
| आ. लि. | पिण्डिषीष्ट | पिण्डिषीयास्ताम् | पिण्डिषीरन् | प्र. |
| | पिण्डिषीष्ठाः | पिण्डिषीयास्थाम् | पिण्डिषीध्वम् | म. |
| | पिण्डिषीय | पिण्डिषीवहि | पिण्डिषीमहि | उ. |
| लुङ् | अपिण्डिष्ट | अपिण्डिषाताम् | अपिण्डिषत | प्र. |
| | अपिण्डिष्ठाः | अपिण्डिषाथाम् | अपिण्डिड्ढ्वम्-ध्वम् | म. |
| | अपिण्डिषि | अपिण्डिष्वहि | अपिण्डिष्महि | उ. |
| लृङ् | अपिण्डिष्यत | अपिण्डिष्येताम् | अपिण्डिष्यन्त इत्यादि। | |

**कर्मणि**—पिण्ड्यते। **कृत्सु**—पिण्डकः-ण्डिका, पिण्डिता-त्री, पिण्डन्-ती, पिण्डयन्-न्ती-ती, पिण्डितम्, पिण्डितव्यम्, पिण्डनीयम्, पिण्ड्यमानः, पिण्डिष्यमाणः, पिण्डितुम्, पिण्डा, पिण्डित्वा, पिण्डयित्वा, पिण्डयमानः, पिण्डः, पिण्डनम्। इत्यादि 'क्लिन्दति' (१५) वत्।

**( २७५ ) मुडि—मार्जने।** (स्वच्छ करना या होना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। मुण्डते। मुमुण्डे। 'वन्दति' (११) वत्।

**( २७६ ) तुडि—तोडने।** तोडनं = दारणं हिंसनञ्च। (तोरना, दुख देना, हिंसा करना।) सकर्म.। सेट्। आत्मने.। तुण्डते। तुतुण्डे। वन्दति (११) वत्।

**( २७७ ) हुडि—वरणे।** हरण इत्येके। वरणं = स्वीकारः। (स्वीकार करना, मान्य करना, हरण करना।) सक.। सेट्। आत्मने.। हुण्डते। हुहुण्डे। 'हिण्डति' (२६८) वत्।

**( २७८ ) चडि—कोपे।** (क्रोध करना)। अकर्म.। सेट्। आत्मने.। चण्डते। चचण्डे। 'वन्दति' (११) वत्।

**( २७९ ) शडि—रुजायां संघाते च।** रुजा = रोगः। (रोगी होना, बीमार होना, एकत्र करना, ढेर करना।) अक.। सेट्। आत्मने.। शण्डते। शशण्डे। 'वन्दति' (११) वत्।

**( २८० ) तडि—ताडने।** (मारना, ताडन करना)। सक.। सेट्। आत्मने.। तण्डते। ततण्डे। 'वन्दति' (११) वत्।

**( २८१ ) पडि—गतौ।** (जाना)। सक.। सेट्। आत्मने.। पण्डते। पपण्डे। 'वन्दति' (११) वत्।

**( २८२ ) कडि—मदे।** (दुख या आनन्द में लीन होना, नशा में वेसुध होना।) अक.। सेट्। आत्मने.। कण्डते। चकण्डे। 'वन्दति' (११) वत्।

**कृत्सु**—कण्डकः-ण्डिका, कण्डिता-त्री, कण्डयिता-त्री, कण्डः, कण्डन्, कण्डयिष्यन्, कण्डितम्, कण्डितव्यम्, कण्डयितव्यम्, कण्डनीयम्, कण्ड्यम्, कण्डयमानः, कण्डयिष्यमाणः, कण्डितुम्, कण्डनम्, कण्डित्वा, कण्डयित्वा, प्रकण्ड्य, कण्ड्यमानः। कण्डा, कण्डना।

**( २८३ ) खडि—मन्थे।** मन्थः = विलोडनम्। (मथना, टुकड़ा टुकड़ा करना, हिंसा करना)। सक.। सेट्। आ.। इदित्। खण्डते। चखण्डे। 'वन्दति' वत्।

**कृत्सु**—खण्डकः-ण्डिका, खण्डिता-त्री, खण्ड्यमानः, खण्डिष्यमाणः, खण्डितम्, **खण्डः**, खण्डितव्यम्, खण्डनीयम्, खण्ड्यम्, खण्डनम्, खण्डित्वा, विखण्ड्य।

**( २८४ ) हेड़—अनादरे।** (अपमान करना, अनादर करना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। ऋदित्। हेडते। जिहेडे।

**कृत्सु**—हेडकः-डिका, हेडिता-त्री, हेडयिता-त्री, हेडन्-न्ती, हेडिष्यन्-न्ती-ती, **हेडितम्**, हेडितव्यम्, हेडनीयम्, हेडितुम्, हेडनम्, हेडित्वा, आहेड्य।

**( २८५ ) होड़—अनादरे।** (अपमान करना)। सक.। सेट्। आत्मने.। होडते, **जुहोडे**। 'वेष्टति' (२५५) वत्।

**( २८६ ) वाड़—आप्लाव्ये।** (स्नान करना, नहाना, अङ्ग धोना)। अक.। सेट्। आत्मने.। वाडते। ववाडे। 'लाघति' (११३) वत्।

**( २८७-२८८ ) द्राडृ-ध्राडृ—विशरणे**। विशरणम् = अवयवविभागः। (चीरना, टुकड़े-टुकड़े करना, फाड़ना)। अक.। सेट्। आत्मने.। द्राडते। ध्राडते। 'गाधति' (४) वत्।

**( २८९ ) शाडृ—श्लाघायाम्**। (प्रशंसा करना, स्तुति करना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। ऋदित्। शाडते। 'गाधति' (४) वत्।

**( २९० ) शौटृ—गर्वे**। (गर्व करना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.।

१ शौटति। २ शुशौट शुशौटतुः शुशौटुः। ३ शौटिता। ४ शौटिष्यति। ५ शौटतु-तात्। ६ अशौटत्। ७ शौटेत्। ८ शौट्यात्। ९ अशौटीत्। १ः अशौटिष्यत्।

**कृत्सु**—शौटकः-टिका, शौटिता-त्री, शौटयिता-त्री, प्रशौटन्-न्ती, शौटीरः, शौटमानः, शौटितम्, शौटः, शौटितव्यम्, शौटनीयम्, शौट्यम्, शौट्यमानः, शौटितुम्, शौटित्वा, प्रशौट्य, शौटनम्, शौटना।

**( २९१ ) यौटृ—बन्धने**। (बांधना, वश में रखना) सकर्म.। सेट्। परस्मै.। १ यौटति। २ युयौट। ३ यौटिता। ४ यौटिष्यति। **सनि**—युयौटिषति। यङि—योयौट्यते। शेषं शौटति वत्।

**( २९२-२९३ ) म्लेटृ-म्रेडृ—उन्मादे**। उन्मादः-चित्तविकारः। (पागल होना)। अक.। सेट्। परस्मै.। ऋदित्।

१ म्रेटति। २ मिम्रेट। ३ म्रेटिता। ४ म्रेटिष्यति। ५ म्रेटतु। ६ अम्रेटत्। ७ म्रेटेत्। ८ म्रेट्यात्। ९ अम्रेटीत्। १० अम्रेटिष्यत्।

**भावे**—म्रेट्यते। **णिचि**—म्रेटयति। **सनि**—मिम्रेटिषति। **यङि**—मेम्रेट्यते। **यङ्लुकि**—मेम्रेटीति-मेम्रेत्ति। **कृत्सु**—म्रेटितव्यम्, म्रेटनीयम्, म्रेटितुम्, म्रेटिता-त्री, म्रेटकः-टिका, म्रेटित्वा, प्रमेट्य, म्रेटनम्। एवं म्लेटति। मिम्लेड। इत्यादि।

**( २९४ ) कटे—वर्षावरणयोः**। (बरसना, घेरना, समीप जाना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। १ कटति। २ चकाट। ९ अकटीत्-अकाटीत्।

**कृत्सु**—कटः, कटी, कटकम्, कटुः, काटकः-टिका, कटिता-त्री, कटन्-न्ती, कटिष्यन्-न्ती-ती, कटितम्, कटितव्यम्, कटनीयम्, काट्यम्, कट्यमानः, काट्यमानः, कटितुम्, कटित्वा प्रकट्य।

**( २९५ ) अट—गतौ**। (जाना)। सक.। सेट्। पर.। अटति। 'अतति' (३८) वत्। **कृत्सु**—आटकः-टिका, अटिता-त्री, आटयिता-त्री, अटन्-पर्यटन्-न्ती, आटयन्-न्ती, आटिष्यन्-न्ती-ती, आटयिष्यन्-न्ती-ती, आटयमानः, आटयिष्यमाणः, अट्-अटौ-अटः। अटितम्, आटितम्, अटः, पर्याटी, भिक्षाटः, कुलटा,[1] अटाटः, अटनः, अटितव्यम्, आटयितव्यम्, अटनीयम्, अट्यमानः, आटः, अटितुम्, अटित्वा, पर्यट्य, अटनम्, पर्यटनम्। पर्याटी[2], भिक्षाटः[3],

१ शकन्ध्वादित्वात् (वा. १-१-६४) पररूपम्।
२ 'सुप्यजातौ णिनिस्ताच्छील्ये' (३-२-७८) इति णिनिः।
३ 'कर्मण्यण्' (३-२-१) इति अण्।

रात्रिमटः-रात्र्यटः[१], आटयित्वा, समाट्य, आटनम्। अटाट्या[२]। अटाट्यमानः[३]।

**(२९६) पट—गतौ**। (जाना)। सक.। सेट्। पर.। पटति। पपाट पेटतुः पेटुः। 'रदति' (५३) वत्।

**(२९७) रट—परिभाषणे**। (रटना, याद करना, बोलना, सम्भाषण कना)। अक.। सेट्। परस्मै.। रटति, रराट, रेटतुः रेटुः। 'रदति' (५३) वत्।

**कृत्सु**—राटकः-टिका, रटिता-त्री, राटयिता-त्री, रटन्-न्ती, राटयन्-न्ती, रटिष्यन्-न्ती, रटितम्, रटितः, रटः, रटितव्यम्, रटनीयम्, राट्यम्, रट्यमानः, रटितुम्, रटनम्, रटित्वा, परिराटी[४], परिराटकः[५], सरटितम्[६]-तः-तवान्।

**(२९८) लट—बाल्ये**। (बालक के समान चेष्टा करना या बोलना। अल्प भाषण करना।) अक.। सेट्। परस्मै.। लटति। ललाट। 'रदति' (५३) वत्।

**कृत्सु**—लाटकः-टिका, लाटिता-त्री, लाटयिता-त्री, लटन्-न्ती, लाटयन्-न्ती-ती, लटिष्यन्-न्ती, लटितम्, लटः, लटितव्यम्, लटयितव्यम्, लटनीयम्, लाटयितव्यम्, लाट्यम्, लट्यमानः। लाटः।

**(२९९) शट—रुजाविशरणगत्यवसादनेषु**। (रोगी होना, बीमार होना, छेद करना, जाना, थकना, श्रान्त होना, उदास होना)। सक.। सेट्। परस्मै.। शटति। 'रदति' (५३) वत्।

**(३००) वट्—वेष्टने**। (घेरना, गूंथना, एकत्र करना)। सक.। सेट्। परस्मै.। वटति। ववाट। 'रदति' वत्।

**कृत्सु**—वाटकः-टिका, वटिता-त्री, वटः, वटिः, वटकः-वटका, वटकिनी, वटिमः, वाटः, वटन्, वट्-वटौ-वटः, वटितव्यम्, वटनीयम्, वटितुम्, बटित्वा, वटिष्यन्-न्ती।

**(३०१-३०२) किट-खिट—त्रासे**। (डरना, दुख देना, सताना।) अकर्म.। सेट्। पर.। केटति। खेटति। शेषं सर्वं चेटति वत्।

**(३०३-३०४) शिट-षिट—अनादरे**। (अपमान करना)। सक.। सेट्। परस्मै.। शेटति। शिशेट शिशिटतुः। सेटति। सिसेट। सिसिटतुः। शेषं 'चेटति' वत्।

**(३०५-३०६) जट-झट—संघाते**। (जमा होना, एकत्र होना) अकर्म.। सेट्। परस्मै.। जटति। जजाट। झटति। झझाट। शेषं 'रदति' (५३) वत्।

---

१ 'रात्रेः कृति विभाषा' (६-३-७२) इति मुम् वा।

२ परसर्यापरिचर्यामृगयाटाट्यानामुपसंख्यानम् (वा ३-३-१०१) इति शे यकिट्यशब्दस्य द्वित्वम्, पूर्वभागे यकारनिवृतिदीर्घश्च निपात्यते। केवलं गमनमात्रमर्थः।

३ अटाट्यमानोऽरण्यानि ससीतः सलक्ष्मणः (भ.का. ४-२)

४ 'संपृचानुरुधाङ्यामाङ्यसपरिसृसंसृजपरिदेविसंज्वरपरिक्षिपपरिरट—' (३-२-१४२) इत्यादिना तच्छीलादिषु कर्तृषु घिनुण् प्रत्यये रूपम्।

५ निन्दहिंस क्लिशखादविनापरिक्षिपपरिरट—' (३-२-१४६) इत्यादिना कर्तृषु वुञ्प्रत्यये रूपमेवम्।

६ 'नपुंसके भावे क्तः' (३-३-११४) इति भावे क्तप्रत्ययः।

**(३०७) भट—भृतौ**। (धारण करना, पास रखना, भाड़े पर लेना।) सक.। सेट्। परस्मै.। भटति। बभाट बभटतुः। 'गदति' (५२) वत्।

**(३०८) तट—उच्छ्राये**। (ऊंचा होना, वृद्धिगत् होना।) अक.। सेट्। परस्मै.। तटति। तताट। 'रदति' (५३) वत्।

**(३०९) खट—काङ्क्षायाम्**। (इच्छा करना)। सक.। सेट्। परस्मै.। खटति। चखाट। 'गदति' (५२) वत्।

**(३१०) नट—नृत्तौ**। (नृत्य करना, नाचना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | नटति | नटतः | नटन्ति | प्र. |
| | नटसि | नटथः | नटथ | म. |
| | नटामि | नटावः | नटामः | उ. |
| लिट् | ननाट | नेटतुः | नेटुः | प्र. |
| | नेटिथ | नेटथुः | नेट | म. |
| | ननाट-ननट | नेटिव | नेटिम | उ. |
| लुट् | नटिता | नटातारौ | नटितारः | प्र. |
| | नटितासि | नटितास्थः | नटितास्थ | म. |
| | नटितास्मि | नटितास्वः | नटितास्मः | उ. |
| लृट् | नटिष्यति | नटिष्यतः | नटिष्यन्ति | प्र. |
| | नटिष्यसि | नटिष्यथः | निटिष्यथ | म. |
| | नटिष्यामि | नटिष्यावः | नटिष्यामः | उ. |
| लोट् | नटतु-नटतात् | नटताम् | नटन्तु | प्र. |
| | नट-नटतात् | नटतम् | नटत | म. |
| | नटानि | नटाव | नटाम | उ. |
| लङ् | अनटत् | अनटताम् | अनटन् | प्र. |
| | अनटः | अनटतम् | अनटत | म. |
| | अनटम् | अनटाव | अनटाम | उ. |
| वि. लि. | नटेत् | नटेताम् | नटेयुः | प्र. |
| | नटेः | नटेतम् | नटेत | म. |
| | नटेयम् | नटेव | नटेम | उ. |
| आ. लि. | नट्यात् | नट्यास्ताम् | नट्यासुः | प्र. |
| | नट्याः | नट्यास्तम् | नटयास्त | म. |
| | नट्यासम् | नट्यास्व | नट्यास्म | उ. |
| लुङ् | अनाटीत् | अनाटिष्टाम् | अनाटिषुः | प्र. |
| | अनाटीः | अनाटिष्टम् | अनाटिष्ट | म. |
| | अनाटिषम् | अनाटिष्व | अनाटिष्म | उ. |

पक्षे—अनटीत् अनटिष्टाम् अनटिषुः इत्यादि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृङ् | अनटिष्यत् | अनटिष्यताम् | अनटिष्यन् | इत्यादि। |

**(३११) पिट—शब्दसंघातयोः** । (शब्द करना, ढेर करना) । अकर्म. । सेट् । परस्मै. । पेटति । पिपेट । पिपेटतुः । 'केटति' (३०१) वत् ।

**(३१२) हट—दीप्तौ** । (प्रकाशित होना) । अकर्म. । सेट् । पर. । हटति । जहाट । 'गदति' (५२) वत् ।

**कृत्सु**—हाटकः-टिका, हटिता-त्री, हाटयिता-त्री, हटन्-न्ती, हाटयन्-न्ती, हाट्यम्, हटः, हटितव्यम्, हटनीयम्, हाट्यम्, हट्यमानः, हाट्यमानः, हटितुम् ।

**(३१३) षट—(सट) अवयवे** । (भाग होना, हिस्सा होना) । अकर्म. । सेट् । पर. । सटति । ससाट । 'रदति' (५३) वत् ।

**(३१४) लुट—विलोडने** । (विलोडना, कांपना, हिलना) । सक. । सेट् । परस्मै. । लोटति । लुलोट । शोचति (१८३) वत् ।

**(३१५) चिट—परप्रेक्ष्ये** । (सेवक होना, सेवक के समान आज्ञा पालन करना) । अकर्म. । सेट् । परस्मै. । १ चेटति । २ चिचेट चिचिटतुः चिचिटुः । ३ चेटिता । ४ चेटिष्यति । ५ चेटतु-तात् । ६ अचेटत् । ७ चेटेत् । ८ चेट्यात् । ९ अचेटीत् । १० अचेटिष्यत् ।

**भावे**—चिट्यते । **णिचि**—चेटयति-ते । **सनि**—चिचिटषति-चिचेटिषति । **यङि**—चेचिट्यते । **यङ्लुकि**—चेचिटीति-चेचेट्टि । **कृत्सु**—चेटकः-टिका, चेटिता-त्री, चेटन्-न्ती, चेटयन्-न्ती, चेटिष्यन्-न्ती-ती, चेटितम्-तः, चेट्यम्, चेट्यमानः, चेटनम्, चेटितव्यम्, चेटनीयम्, चेटना, चेटः, चेटी[१]-चेटिः ।

**(३१६) विट—शब्दे** । (शब्द करना) । अक. । सेट् । पर. । वेटति । विवेट विविटतुः । 'चेटति' (३१५) वत् ।

**(३१७) बिट—आक्रोशे** । (शाप देना, गाली देना ।) सकर्म. । सेट् । पर. । बेटति । बिबेट बिबिटतुः । 'चेटति' (३१५) वत् ।

**(३१८) ईट—गतौ** । (जाना) । सकर्म. । सेट् । परस्मै. ।

१ एटति । २ **प्र.** इयेट ईटतुः ईटुः । **म.** इयेटिथ ईटथुः ईट । **उ.** इयेट ईटिव ईटिम । ३ एटिता । ४ एटिष्यति । ५ एटतु-एटतात् । ६ ऐटत् । ७ एटेत् । ८ इट्यात् इट्यास्ताम् इट्यासुः । **म.** इट्याः इट्यास्तम् इट्यास्त । **उ.** इट्यासम् इट्यास्व इट्यास्म । ९ ऐटित् । १० ऐटिष्यत् ।

**कर्मणि**—इट्यते । **णिचि**—एटयति-ते । **सनि**—एटिटिषति । **कृत्सु**—एटकः-टिका, एटिता-त्री, एटन्-न्ती, एटिष्यन्-न्ती-ती, एटयमानः, इट्-इटौ-इटः, इटितः-तम्, एटितः, इटः, एटितव्यम्, एटनीयम्, एट्यम्, इट्यमानः, एट्यमानः, एटितुम्, एटनम्, एटित्वा, एटयित्वा, प्रेट्य, समिट्य ।

१ 'इन्' (दउ. १-४६) इत्यौणादिके इन् प्रत्यये, 'सर्वतो क्तिन्नर्थादित्येके' (वा. ४-१-४५) इति ङीषि, चेटी, चेटिः इति रूपद्वयं भवति ।

**( ३१९ ) किट—गतौ।** (जाना)। अक.। सेट्। पर.। केटति। चिकेट चिकिटतुः। 'चेटति' (३१५) वत्।

**( ३२० ) कटी—गतौ।** (जाना)। सक.। सेट्। पर.। ईदित्। कटति। चकाट। अकटीत्-अकाटीत्। 'गदति' (५२) वत्।

**( ३२१ ) मडि—भूषायाम्।** (अलङ्कृत करना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.।

१ मण्डति। २ **प्र.** ममण्ड ममण्डतुः ममण्डुः। **म.** ममण्डिथ ममण्डथुः ममण्ड। **उ.** ममण्ड ममण्डिव ममण्डिम। ३ मण्डिता। ४ मण्डिष्यति। ५ मण्डतु-मण्डतात्। ६ अमण्डत्। ७ मण्डेत्। ८ मण्ड्यात्। ९ **प्र.** अमण्डीत् अमण्डिष्टाम् अमण्डिषुः। **म.** अमण्डीः अमण्डिष्टम् अमण्डिष्ट। **उ.** अमण्डिषम् अमण्डिष्व अमण्डिष्म। १० अमण्डिष्यत्।

**कर्मणि**—मण्ड्यते। **कृत्सु**—मण्डकः-डिका, मण्डिता-त्री, मण्डन्-न्ती, मण्डिष्यन्-न्ती, मण्डयिष्यन्-न्ती-ती, मण्डमानः, मण्डिष्यमाणः, मण्डितुम्, मण्डनम्, मण्डित्वा, मण्डितव्यम्, मण्डनीयम्, मण्डनः[१] मण्डयिलुः[२]। मण्डूकः[३], मण्डलम्[४]।

**( ३२२ ) कुडि—वैकल्ये।** (कुण्ठित करना)। अक.। सेट्। परस्मै.। इदित्। कुण्डति। 'कुन्थति' (४३) वत्।

**( ३२३-३२४ ) मुड-प्रुड—मर्दने।** (मर्दन करना, घिसना, दवाना)। सकर्म.। सेट्। पर.। मोडति। प्रोडति। 'शोचति' (१८३) वत्।

**( ३२५ ) चुडि—अल्पीभावे।** (कम होना, चुटकी भर परिमाण)। अक.। सेट्। पर। चुण्डति। 'कुन्थति' (४३) वत्।

**( ३२६ ) मुडि—खण्डने।** (चूर्ण करना, क्षौर करना, मुण्डन करना, हजामत करना)। सक.। सेट्। पर.।

१ मुण्डति। २ **प्र.** मुमुण्ड मुमुण्डतुः मुमुण्डुः। **म.** मुमुण्डिथ मुमुण्डथुः मुमुण्ड। **उ.** मुमुण्ड मुमुण्डिव मुमुण्डिम। ३ मुण्डिता। ४ मुण्डिष्यति। ५ मुण्डतु-मुण्डतात्। ६ अमुण्डत्। ६ **प्र.** मुण्डेत् मुण्डेताम् मुण्डेयुः। **म.** मुण्डेः मुण्डेतम् मुण्डेत। **उ.** मुण्डेयम् मुण्डेव मुण्डेम। ८ मुण्ड्यात्। ९ **प्र.** अमुण्डीत् अमुण्डिष्टाम् अमुण्डिषुः। **म.** अमुण्डीः अमुण्डिष्टम् अमुण्डिष्ट। **उ.** अमुण्डिषम् अमुण्डिष्व अमुण्डिष्म। १० अमुण्डिष्यत्।

**कृत्सु**—मुण्डकः-डिका[५], मुण्डिता-त्री, मुण्डयिता-त्री, मुण्डन्-न्ती, मुण्डयन्-न्ती,

---

१ तच्छीलादिषु कर्तृषु 'क्रुधमण्डार्थेभ्यश्च' (३-३-१५१) इति युच् प्रत्ययः। मण्डार्था = भूषणार्थका धातवः।

२ ण्यन्तात् औणादिके (द.उ. १-१४०) इलुच्प्रत्यये, 'अयमन्ताल्वाय्ये त्न्विष्णुषु' (६-४-५५) इति णेरयादेशे च रूपमेवम्।

३ 'शालिमाण्डियांमूकण्' (द.उ. ३-४७) इति ऊकण् प्रत्ययः। मण्डते क्षितिमिति मण्डकः— भेकः।

४ औणादिके (द.उ. ८-१०७) कल प्रत्यये रूपम्। मण्ड्यते = वेष्ट्यते इति मण्डलम् = परिवारः।

५ मुण्डं करोतीत्यर्थे, 'मुण्डमिश्र—' (३-१-२१) इत्यादिना णिच्। 'सनाद्यन्ता धातवः' (३-१-३२) इति धातुसंज्ञायां शतरि रूपमेवम्।

मुण्डितुम्, मुण्डयितुम्, मुण्डितव्यम्, मुण्डनीयम्, यवनमुण्डकः[१]-का, का (क) म्बोजमुण्डः।

**(३२७-३२८) रुटि-लुटि—स्तेये**। (चोरी करना)। सक.। सेट्। परस्मै.। रुण्टति। रुरुण्ट। लुण्टति। लुलुण्ट। 'कुन्थति' (४३) वत्।

**(३२९) स्फुटिर्—विशरणे**। (हिंसा करना, नष्ट होना, विखेरना, विस्फोट होना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.। स्फोटति। पुष्फोट। इत्यादि 'च्योतति' (४०) वत्।

**(३३०) पठ—व्यक्तायां वाचि**। (पढ़ना, सीखना)। सक.। सेट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | पठति | पठतः | पठन्ति | प्र. |
| | पठसि | फठथः | पठथ | म. |
| | पठामि | पठावः | पठामः | उ. |
| लिट् | पपाठ | पेठतुः | पेठुः | प्र. |
| | पेठिथ | पेठथुः | पेठ | म. |
| | पपाठ-पपठ | पेठिव | पेठिम | उ. |
| लुट् | पठिता | पठितारौ | पठितारः | प्र. |
| | पठितासि | पठितास्थः | पठितास्थ | म. |
| | पाठितास्मि | पठितास्वः | पटिथास्मः | उ. |
| लृट् | पठिष्यति | पठिष्यन्तः | पठिष्यन्ति | प्र. |
| | पठिष्यसि | पठिष्यथः | पठिष्यथ | म. |
| | पठिष्यामि | पठिष्यावः | पठिष्यामः | उ. |
| लोट् | पठतु-पठतात् | पठताम् | पठन्तु | प्र. |
| | पठ-पठतात् | पठतम् | पठत | म. |
| | पठानि | पठाव | पठाम | उ. |
| लङ् | अपठत् | अपठताम् | अपठन् | प्र. |
| | अपठः | अपठतम् | अपठत | म. |
| | अपठम् | अपठाव | अपठाम | उ. |
| वि. लि. | पठेत् | पठेताम् | पठेयुः | प्र. |
| | पठेः | पठेतम् | पठेत | म. |
| | पठेयम् | पठेव | पठेम | उ. |
| आ. लि. | पठ्यात् | पठ्यास्ताम् | पठ्यासुः | प्र. |
| | पठ्याः | पठ्यास्तम् | पठ्यास्त | म. |
| | पठ्यासम् | पठ्यास्व | पठ्यास्म | उ. |
| लुङ् | अपाठीत् | अपाठिष्टाम् | अपाठिषुः | प्र. |
| | अपाठीः | अपाठिष्टम् | अपाठिष्ट | म. |
| | अपाठिषम् | अपाठिष्व | अपाठिष्म | उ. |

पक्षे—**प्र.** अपठीत् अपठिष्टाम् अपठिषुः। **म.** अपठीः अपटिष्टम् अपठिष्ट। **उ.** अपठिषम् अपठिष्व अपठिष्म।

---

१ मुण्डो यवन इव इति सगासे मयूरव्यंसकादित्वात् (२-१-७२) विशेषणस्य परनिपातः। एवं का (क) म्बोजमुण्ड इत्यादिष्वपि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृङ् | अपठिष्यत् | अपठिष्यताम् | अपठिष्यन् | प्र. |
| | अपठिष्यः | अपठिष्यतम् | अपठिष्यत | म. |
| | अपठिष्यम् | अपठिष्याव | अपठिष्याम | उ. |

**कर्मणि**—पठ्यते, पठ्येते, पठ्यन्ते इत्यादि।

णिचि

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | पाठयति | पाठयतः | पाठयन्ति | प्र. |
| | पाठयसि | पाठयथः | पाठयथ | म. |
| | पाठयामि | पाठयावः | पाठयामः | उ. |
| लिट् | पाठयाञ्चकार | पाठयाञ्चक्रतुः | पाठयाञ्चक्रुः | प्र. |
| | पाठ्याञ्चकर्थ | पाठयाञ्चक्रथुः | पाठ्याञ्चक्र | म. |
| | पाठ्याञ्चकार-चकर | पाठ्याञ्चकृव | पाठ्याञ्चकृम | उ. |
| लुट् | पाठयिता | पिठयितारौ | पाठयितारः | प्र. |
| | पाठयितासि | पाठयितास्थः | पाठयितास्थ | म. |
| | पाठयितास्मि | पाठयितास्वः | पाठयितास्मः | उ. |
| लृट् | पाठयिष्यति | पाठयिष्यतः | पाठयिष्यन्ति | प्र. |
| | पाठयिष्यसि | पाठयिष्यथः | पाठयिष्यथ | म. |
| | पाठयिष्यामि | पाठयिष्यावः | पाठयिष्यामः | उ. |
| लोट् | पाठयतु-तात् | पाठयताम् | पाठयन्तु | प्र. |
| | पाठय-तात् | पाठयतम् | पाठयत | म. |
| | पाठयानि | पाठयाव | पाठयाम | उ. |
| लङ् | अपाठयत् | अपाठयताम् | अपाठयन् | प्र. |
| | अपाठयः | अपाठयतम् | अपाठयत | म. |
| | अपाठयम् | अपाठयाव | अपाठयाम | उ. |
| वि. लि. | पाठयेत् | पाठयेताम् | पाठयेयुः | प्र. |
| | पाठयेः | पाठयेतम् | पाठयेत | म. |
| | पाठयेवम् | पाठयेव | पाठयेम | उ. |
| आ. लि. | पाठ्यात् | पाठ्यास्ताम् | पाठ्यासुः | प्र. |
| | पाठ्याः | पाठ्यास्तम् | पाठ्यास्त | म. |
| | पाठ्यासम् | पाठ्यास्व | पाठ्यास्म | उ. |
| लुङ् | अपीपठत् | अपीपठताम् | अपीपठन् | प्र. |
| | अपीपठः | अपीपठतम् | अपीपठत | म. |
| | अपीपठम् | अपीपठाव | अपीपठाम | उ. |
| लृङ् | अपाठयिष्यत् | अपाठयिष्यताम् | अपाठयिष्यन् | प्र. |
| | अपाठयिष्यः | अपाठयिष्यतम् | अपाठयिष्यत | म. |
| | अपाठयिष्यम् | अपाठयिष्याव | अपाठयिष्याम | उ. |

सनि

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | पिपठिषति | पिपठिषतः | पिपठिषन्ति | प्र. |
| | पिपठिषसि | पिपठिषथः | पिपठिषथ | म. |
| | पिपठिषामि | पिपठिषावः | पिपठिषामः | उ. |
| लिट् | पिपठिषाञ्चकार | चक्रतुः | चक्रुः | प्र. |
| | पिपठिषाञ्चकर्थ | चक्रथुः | चक्र | म. |
| | पिपठिषाञ्चकार-चकर | चकृव | चकृम | उ. |
| लुट् | पिपठिषिता | पिपठिषितारौ | पिपठिषितारः | प्र. |
| | पिपठिषितासि | पिपठिषितास्थः | पिपठिषितास्थ | म. |
| | पिपठिषितास्मि | पिपठिषितास्वः | पिपठिषितास्मः | उ. |
| लृट् | पिपठिष्यति | पिपठिष्यतः | पिपठिष्यन्ति | प्र. |
| | पिपठिष्यसि | पिपठिष्यथः | पिपठिष्यथ | म. |
| | पिपठिष्यामि | पिपठिष्यावः | पिपठिष्यामः | उ. |
| लोट् | पिपठिषतु-तात् | पिपठिषताम् | पिपठिषन्तु | प्र. |
| | पिपठिष-तात् | पिपठिषतम् | पिपठिषत | म. |
| | पिपठिषानि | पिपठिषाव | पिपठिषाम | उ. |
| लङ् | अपिपठिषत् | अपिपठिषताम् | अपपठिषन् | प्र. |
| | अपिपठिषः | अपिपठिषतम् | अपिठिषत | म. |
| | अपिपठिषम् | अपिपठिषाव | अपिपठिषाम | उ. |
| वि. लि. | पिपठिषेत् | पिपठिषेताम् | पिपठिषेयुः | प्र. |
| | पिपठिषेः | पिपठिषेतम् | पिपठिषेत | म. |
| | पिपठिषेयम् | पिपठिषेव | पिपठिषेम | उ. |
| आ. लि. | पिपठिषिष्यात् | पिपठिष्यास्ताम् | पिपठिष्यासुः | प्र. |
| | पिपठिष्याः | पिपठिष्यास्तम् | पिपठिष्यास्त | म. |
| | पिपठिष्यासम् | पिपठिष्याव | पिपठिष्याम | उ. |
| लुङ् | अपिपठिषीत् | अपिपठिषिष्टाम् | अपिपठिषिषुः | प्र. |
| | अपिपठिषीः | अपिपठिषिष्टम् | अपिपठिषिष्ट | म. |
| | अपिपठिषिषम् | अपिपठिषिष्व | अपिपठिषिष्म | उ. |
| लृङ् | अपिपठिषिष्यत् | अपिपठिषिष्यताम् | अपिपठिषिष्यन् | प्र. |
| | अपिपठिषिष्यः | अपिपठिषिष्यतम् | अपिपठिषिष्यत | म. |
| | अपिपठिषिष्यम् | अपिपठिषिष्याव | अपिपठिषिष्याम | उ. |

यङि

१ पापठ्—यते येते यन्ते, यसे येथे यध्वे, ये यावहे यामहे।

२ पापठाम्बभू—व वतुः वुः, विथ वथुः व, व विव विम। पापठाञ्चक्रे, पापठामास इत्यादि।

३ पापठिता—रौ रः, से साथे ध्वे, हे स्वहे स्महे।

४ पापठि—ष्यते ष्येते ष्यन्ते, ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे, ष्ये ष्यावहे ष्यामहे।

५ पापठ्—यताम् येताम् यन्ताम्, यस्व येथाम् यध्वम्, यै यावहै यामहै।

६ अपापठ्—यत येताम् यन्त, यथाः येथाम् यध्वम्, ये यावहि यामहि।

७ पापठ्ये—त याताम् रन्, थाः याथाम् ध्वम्, य वहि महि।

८ पापठिषी—ष्ट यास्ताम् रन्, ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्, षि वहि महि।

९ अपापठि—ष्ट षाताम् षत, ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम्-ध्वम्, षि ष्वहि ष्महि।

१० अपापठि—ष्यत ष्येताम् ष्यन्त, ष्यथाः षाथाम् ष्यध्वम्, ष्ये ष्यावहि ष्यामहि।

**यङ्लुकि**—पापठीति-पापट्टि। इत्यादि। **कृत्सु**—पाठकः-ठिका, पठिता-त्री, पाठयिता-त्री, पिपठिषिता-त्री, पापठिता-त्री, पठन्-न्ती, पाठयन्-न्ती, पिपठिषन्-न्ती, पठिष्यन्-न्ती-ती, पाठयिष्यन्-न्ती,ती, पिपठिष्यन्-न्ती-ती, पाठयमानः, पाठयिष्यमाणः, पापठ्यमानः, पापठिष्यामाणः, पट्-पठौ पठः, पठितम्-तः, पाठितः-तम्, पिपठिषितः-तम्, पापठितः-तवान्-तम्, पठः, पाठः, पिपठिषुः, पिपाठयिषुः, पापठः, पठितव्यम्, पाठयितव्यम्, पिपठिषितव्यम्, पापठितव्यम्, पठनीयम्, पाठनीयम्, पिपठिषणीयम्, पाठनीयम्, पठ्यम्, पाठ्यम्,पिपठिष्यम्,पापठ्यम्,पठिष्यमाणः,पिपठिष्यमाणः,पापठ्यमानः,पठितुम्,पाठयितुम्, पिपठिषितुम्, पापठितुम्, पठनम्, पाठनम्, पिपठिषणम्, पापठनम्, पठित्वा, पाठयित्वा, पिपठिषित्वा, पापठित्वा, प्रपठ्य, प्रपाढ्य, प्रपिपठिष्य, प्रपापठ्य, निपठः, निपाठः,[1] निपठितिः[2]।

**( ३३१ ) वठ—स्थौल्ये**। स्थौल्यम् =पुष्टता। (मोटा होना, शक्तिवान् होना, स्थूल होना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.। वठति। पठति (३३०) वत्।

**( ३३२ ) मठ—मदनिवासयोः**। मदः =चित्तविकारः।( गर्वीला होना, रहना)। अक.। सेट्। पर.। मठति। ममाठ मेठतुः। रदति (५३) वत्।

**( ३३३ ) कठ—कृच्छ्रजीवने**। (कष्ट से जीवन बिताना)। अक.। सेट्। परस्मै.। कठति। 'रदति' (५३) वत्।

**णिचि**—कठयति-ते। **सनि**—चिकठिषति। **यङि**—चाकठ्यते। **यङ्लुकि**—चाकठीति, चाकट्ठि। **कृत्सु**—काठकः-ठिका, काठिता-त्री, काठयिता-त्री, कठन्-न्ती, काठयन्-न्ती, चिकठिषन्-न्ती, कठिष्यन्-न्ती-ती, कठयिष्यन्-न्ती-ती, काठ्यमानः, काठयिष्यमाणः, कट्, कठितुम्, कठः, काठः, चिकठिषुः, चिकठयिषुः, चाकठः, कठितव्यम्, काठयितव्यम्,कठनीयम्,काठनीयम्,काठ्यम्,ईषत्कठः-दुष्कठः-सुकठः,कठ्यमानः,कठितुम्, कठनम्, काठनम्, कठित्वा, प्रकठ्य, प्रकाठ्य, काठम्, कठिनम्।

१ 'नौ गदनपदपठस्वनः' (३-३-६४) इति करणे वा अप् प्रत्ययः।

२ क्तिनि, 'तितुत्र–' (७-२-९) इति इण्निषेधे प्राप्ते, 'अग्रहादीनामिति वक्तव्यम्' (वा. ७-२-९) इति इट् भवति।

**( ३३४ ) रट्—परिभाषणे**। रठ इत्येके। (बोलना, भाषण करना, रटना)। अक.। सेट्। परस्मै.। रटति। रराट रेटतुः रेटुः। इत्यादि 'रदति' (५३) वत्।

**कृत्सु**—राटकः-टिका, रटिता-त्री, रटनम्, रटनीयम्, रटितव्यम्, राटयितव्यम्, रटितुम्, रटित्वा।

**( ३३५ ) हठ—प्लुतिशठत्वयोः**। बलात्कार इत्यन्ये। (फुदकना, दुष्ट होना, घातकी होना, बलात्कार करना, जुल्म करना)। अकर्म.। सेट्। पर.। हठति। जहाठ। शेषं 'रदति' (५३) वत्।

**( ३३६-३३७ ) रुठ-लुठ—उपघाते**। (मारना, नीचे गिराना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। रोठति। लोठति। 'शोचति' (१८३) वत्।

**( ३३८ ) उठ—उपघाते**। (मारना, ठोकना, नीचे गिराना)। सक.। सेट्। परस्मै.। ओठति। उवोठ ऊठतुः।

**णिचि**—ओठयति ओठयते। **सनि**—ओटिठिषति। शेषम् 'ओखति' (१२८) वत्। **ऊठ**—इत्यके। १ ऊठति। २ ऊठाञ्चकार। ३ ऊठिता। **सनि**—ऊटिठिषति।

**( ३३९ ) पिठ—हिंसासंक्लेशनयोः**। (मार डालना, दुख देना, दुख पाना। कष्ट का अनुभव करना)। सक.। सेट्। पर.। पेठति।

**णिचि**— पेठयति-ते। **सनि**— पिपेठिषति। **यङि**—पेपिठ्यते। **यङ्लुकि**—पेपिठीति-पेपेट्टि।

**( ३४० ) शठ—कैतवे हिंसासंक्लेशनयोश्च**। (ठगना, मार देना, कष्ट देना)। हिंसायां सकर्म.। सेट्। परस्मै.। शठति। 'रदति' (५३) वत्। शाठकः-ठिका, शाठिता-त्री, शाठयिता-त्री, शठितुम्, शठितव्यम्, शठनीयम्, शठः = नैकृतिकः।

**( ३४१ ) शुठ—गतिप्रतिघाते**। (रोकना, जाने में विघ्न होना)। सकर्म.। सेट्। पर.। शोठति। शुशोठ। 'शोचति' (१८३) वत्। **शुठि**—इति स्वामी। शुण्ठति। 'कुन्थति' (४३) वत्।

**( ३४२ ) कुठि—प्रतिघाते**। गतिप्रतिघाते इति केचित्। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। कुण्ठति। 'कुन्थति' (४३) वत्।

**( ३४३ ) लुठि—आलस्ये प्रतिघाते च**। (आलस्य करना, रुकावट होना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। लुण्ठति। लुलुण्ठ। कुन्थति (४३) वत्।

**( ३४४ ) शुठि—शोषणे**। (सूखना, सुखाना)। सक.। सेट्। पर.। शुण्ठति। 'कुन्थति' (४३) वत्।

**( ३४५-३४६ ) रुठि-लुठि—गतौ**। (जाना)। सकर्म.। सेट्। पर.। रुण्ठति। लुण्ठति। 'कुन्थति' (४३) वत्।

**( ३४७ ) चुड्डु—भावकरणे**। (अभिप्राय बताना, इशारा करना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.। चुण्डुति। २ चुचुण्ड।

**णिचि**—चुण्डुयति-ते। **सनि**—चुचुण्डिषति। **यङि**—चोचुड्यते। **यङ्लुकि**—चोचुड्डीति-चोचुड्डि। शेषं 'कुञ्चति' (१८६) वत्। **कृत्सु**—चुड्डकः ड्डिका, चुड्डिता-त्री, चुड्डन्-न्ती, चुड्डिष्यन्-न्ती, चुड्डितम्-तः, चुड्डितव्यम्, चुड्डनीयम्, चुड्डयमानः, चुड्डितम्, चुड्डनम्। चुड्डित्वा, चुड्डः, चुड्डना।

**( ३४८ ) अड्डु—अभियोगे**। (सब ओर से जोड़ना, अपराध लगाना, प्रार्थना करना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। अड्डुति। **णिचि**—अड्डुयति-ते। 'अर्चति' (२०४) वत्।

**( ३४९ ) कड्डु—कार्कश्ये**। (निठुर होना, कठोर होना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.। कड्डुति।

**णिचि**—कड्डुयति-ते। **सनि**—चिकड्डिषति। **यङि**—चाकड्यते। **यङ्लुकि**—चाकड्डीति-चाकट्टि। शेषं 'नर्दति' (५६) वत्।

**( ३५० ) क्रीड्ट—विहारे**। (विहार करना, खेलना, मन बहलाना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | क्रीडति | क्रीडतः | क्रीडन्ति | प्र. |
| | क्रीडसि | क्रीडथः | क्रीडथ | म. |
| | क्रीडामि | क्रीडावः | क्रीडामः | उ. |
| लिट् | चिक्रीड | चिक्रीडतुः | चिक्रीडुः | प्र. |
| | चिक्रीडिथ | चिक्रीडथुः | चिक्रीड | म. |
| | चिक्रीड | चिक्रीडिव | चिक्रीडिम | उ. |
| लुट् | क्रीडिता | क्रीडितारौ | क्रीडितारः | प्र. |
| | क्रीडितासि | क्रीडितास्थः | क्रीडितास्थ | म. |
| | क्रीडितास्मि | क्रीडितास्वः | क्रीडितास्मः | उ. |
| लृट् | क्रीडिष्यति | क्रीडिष्यतः | क्रीडिष्यन्ति | प्र. |
| | क्रीडिष्यसि | क्रीडिष्यथः | क्रीडिष्यथ | म. |
| | क्रीडिष्यामि | क्रीडिष्यावः | क्रीडिष्यामः | उ. |
| लोट् | क्रीडतु-तात् | क्रीडताम् | क्रीडन्तु | प्र. |
| | क्रीड-तात् | क्रीडतम् | क्रीडत | म. |
| | क्रीडानि | क्रीडाव | क्रीडाम | उ. |
| लङ् | अक्रीडत् | अक्रीडताम् | अक्रीडन् | प्र. |
| | अक्रीडः | अक्रीडतम् | अक्रीडत | म. |
| | अक्रीडम् | अक्रीडाव | अक्रीडाम | उ. |
| वि. लि. | क्रीडेत् | क्रीडेताम् | क्रीडेयुः | प्र. |
| | क्रीडेः | क्रीडेतम् | क्रीडेत | म. |
| | क्रीडेयम् | क्रीडेव | क्रीडेम | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आ. लि. | क्रीड्यात् | क्रीड्यास्ताम् | क्रीड्यासुः | प्र. |
| | क्रीड्याः | क्रीड्यास्तम् | क्रीड्यास्त | म. |
| | क्रीड्यासम् | क्रीड्यास्व | क्रीड्यास्म | उ. |
| लुङ् | अक्रीडीत् | अक्रीडिष्टाम् | अक्रीडिषुः | प्र. |
| | अक्रीडीः | अक्रीडिष्टम् | अक्रीडिष्ट | म. |
| | अक्रीडिषम् | अक्रीडिष्व | अक्रीडिष्म | उ. |
| लृङ् | अक्रीडिष्यत् | अक्रीडिष्यताम् | अक्रीडिष्यन् | प्र. |
| | अक्रीडिष्यः | अक्रीडिष्यतम् | अक्रीडिष्यत | म. |
| | अक्रीडिष्यम् | अक्रीडिष्याव | अक्रीडिष्याम | उ. |

**कर्मणि**—क्रीड्यते। **णिचि**—क्रीडयति-ते। **सनि**—चिक्रीडिषति। **यङि**—चेक्रीड्यते। **यङ्लुकि**—चेक्रीडिति-चेक्रीट्टि। **कृत्सु**—क्रीडकः-डिका, क्रीडिता-त्री, क्रीडन्-न्ती, क्रीडयन्-न्ती, क्रीडिष्यन्-न्ती-ती, क्रीडयिष्यन्-न्ती, क्रीडमानः, क्रीडयिष्यमाणः, क्रीडितुम्, क्रीडितव्यम्, क्रीडनीयम्, क्रीडनम्, क्रीडयितुम्, क्रीड्यमानः, क्रीडा।

**(३५१) तुड्—तोडने**। तोडनं = दारणं हिंसनञ्च। (तोड़ना, कतरना, हिंसा करना, दुख देना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.।

१ तोडति। २ तुतोड। ३ तोडिता। ४ तोडिष्यति। ५ तोडतु-तोडतात्। ६ अतोडत्। ७ तोडेत्। ८ तोड्यात्। ९ **प्र.** अतोडीत् अतोडिष्टाम् अतोडिषुः। **म.** अतोडीः अतोडिष्टम् अतोडिष्ट। **उ.** अतोडिषम् अतोडिष्व अतोडिष्म। १० अतोडिष्यत्।

**कर्मणि**—तोड्यते। **णिचि**—तोडयति-ते। **सनि**—तुतोडिषति। **यङि**—तोतुड्यते। **यङ्लुकि**—तोतुडीति-तोतुड्डि। **कृत्सु**—तोडकः-डिका, तोडिता-त्री, तोडयिता-त्री, तोडन्-न्ती, व्यतितोडन्,[१] तोडयन्-न्ती[२], तोडिष्यन्-न्ती-ती, तोडयिष्यन्-न्ती-ती, तोड्यमानः, तोडयिष्यमाणः, तुट्-तुड्-तुडौ तुडः, तुडितम्-तः[३], तोडितम्-तः, तुडः, तोडः, तोडितव्यम्, तोडयितव्यम्, तोडनीयम्, तोड्यम्, तुड्यमानः, तोड्यमानः, तोडनीयम्, तोड्यम्, तुड्यमानः, तोड्यमानः, तोडितुम्, तोडयितुम्, तुट्टिः[४], तोडना, तोडनम्, तोडित्वा-तुडित्वा, तोडयित्वा, प्रतुड्य, प्रतोड्य।

**(३५२) हुड्—गतौ**। (जाना)। सक.। सेट्। परस्मै.। होडति। जुहोड। 'शोचति' (१८३) वत्।

१ 'न गतिहिंसार्थेभ्यः' (१-३-१५) इति निषेधात् कर्मव्यतीहारेऽपि शानच् न।
२ 'तोडनम् = द्रावणम्, इति क्षीरस्वामी। एवमेव पाणिनीयधातुपाठनामके तञ्जापुरीयसरस्वतीमहाल् विमर्शनालप्रमुदिते कोशेऽपि वर्तते। तदानीं धातोः कम्पनार्थकत्वात् 'ण्यन्तात्' 'निगरणचलनार्थेभ्यः—' (१-३-३७) इति शतैव, न शानमिति ज्ञेयम्। हिंसाद्यर्थे तु शानच्, विशेषः।
३ 'उदुपधात् भावादिकर्मणोरन्यतरस्याम्' (१-२-२१) इति सेटोः निष्ठायाः भावकर्मविषये कित्वविकल्पाद् रूपद्वयम्।
४ 'तितुत्र—' (७-२-९) इतीण्णिषेधे, 'ष्टुना ष्टुः' (८-४-४१) इति ष्टुत्वम्।

**(३५३) हूडृ—गतौ।** (जाना)। सक.। सेट्। पर.। हूडति। जूहूड। 'कूजति' (२२३) वत्।

**(३५४) होडृ—गतौ।** (जाना)। सक.। सेट्। पर.। १ होडति। २ जुहोड। ३ होडिता। ४ होडिष्यति। ५ होडतु-तात्। ६ अहोडत्। ७ होडेत्। ८ होड्यात्। ९ अहोडीत्। १० अहोडिष्यत्।

**भावे**—होड्यते। **णिचि**—होडयति-ते। **सनि**—जुहोडिषति। **यङि**—जोहोड्यते। **यङ्लुकि**—जोहोडीति-जोहोड्डि। **कृत्सु**—होडकः-डिका, होडिता-त्री, होडयिता-त्री, होडन्-न्ती, होडयन्-न्ती, होडिष्यन्-न्ती-ती, होडितम्, होडः। होडितव्यम्, होडनीयम्, होड्यम्, होडित्वा, होडितुम्।

**(३५५) रौडृ—अनादरे।** (अपमान करना)। सकर्म.। सेट्। पर.। १रौडति। २ रुरौड। ३ रौडिता। ४ रौडिष्यति। ८ रौड्यात्। ९ अरौडीत्।

**सनि**—रुरौडिषति। **यङि**—रोरौड्यते।

**(३५६-३५७) रोडृ-लोडृ—उन्मादे।** (उन्मत्त होना, पागल होना)। सक.। सेट्। पर.। रोडति। लोडति। 'होडति' (३५४) वत्।

**(३५८) अड—उद्यमे।** (उद्यम करना, प्रयत्न करना)। सक.। सेट्। परस्मै.। १ अडति। २ आड आडतुः आडुः। ३ अडिता। ४ अडिष्यति। ५ अडतु। ६ आडत्। ७ अडेत्। ८ अड्यात्। ९ आडी। १० आडिष्यत्।

**णिचि**—आडयति-ते। २ आडयामास। **सनि**—अडिडिषति। २ अडिडिषामास। **कृत्सु**—अडित्वा, अडितुम्, अडन्, अडः।

**(३५९) लड—विलासे।** विलासः-क्रीडा। (क्रीडा करना, मौज करना)। अक.। सेट्। परस्मै.। लडति। ललाड। **लल**—इत्येके। ललति। ललाल। शेषं 'रदति' (५३) वत्।

**कृत्सु**—लाडकः-डिका, लडिता-त्री, लाडयिता-त्री, लडन्-न्ती, लाडयन्-न्ती, लडिष्यन्-न्ती, लडितम्, लडः, लडनीयम्, लड्यमानः, लडितुम्, लडनम्, लाडनम्, लडित्वा, लाडयित्वा।

**(३६०) कड—मदे।** (दुख या आनन्द में लीन होना, नशा में लीन होना)। अक.। सेट्। परस्मै.। कडति। चकाड।

**णिचि**—कडयति। **सनि**—चिकडिषति। **यङि**—चाकड्यते। **यङ्लुकि**—चाकड्डीति-चाकट्टि। शेषं 'गदति' (५२) वत्। **कडि**—इत्येके। कण्डति। चकण्ड। **णिचि**—कण्डयति-ते। **सनि**—चिकण्डिषति। **यङि**—चाकण्डयते। **यङ्लुकि**—चाकण्डीति-चाकण्डि।

**(३६१) गडि—वदनैकदेशे।** (गालों में रोग होना, गण्डमाला होना)। अक.। सेट्। पर.। गण्डति। जगण्ड।

**णिचि**—गण्डयति-ते। **सनि**—जिगण्डिषति। **यङि**—जागण्डयते। **यङ्लुकि**—जागण्डीति-जागण्डि। शेषं 'क्रन्दति' (६१) वत्।

**( ३६२-३६५ ) तिपृ-तेपृ-ष्टिपृ-ष्टेपृ—क्षरणे। तेपृ-कम्पने च।** (सींचना, प्रोक्षण करना, झरना, चूना)। अक.। सेट्। आत्मने.। १ तेपते स्तेपते। २ **प्र.** तितिपे तितिपाते तितिपिरे। **म.** तितिपिषे तितिपाथे तितिपाध्वे। **उ.** तितिपे तितिपिवहे तितिपिमहे। ३ तेप्ता। ४ तेप्स्यते। ५ तेपताम्। ६ अतेपत। ७ तेपेत। ८ तिप्सीष्ट। ९ अतिप्त अतिप्सताम् अतिप्सत। १० अतिप्स्यत।

**कर्मणि**—तिप्यते। **णिचि**—तेपयति-ते। **सनि**—तितिप्सते। **यङि**—तेतिप्यते। **यङ्लुकि**—तेतिपीति-तेतेप्ति। **कृत्सु**—तेप्तव्यम्, तेपनीयम्, तेप्यम्, तिप्तः, तेपमानः, तेपतुम्, तेपित्वा, संतिप्य, एवं स्तेपते इत्यादि।

**( ३६६ ) ग्लेपृ—दैन्ये। कम्पने गतौ च।** (पराधीन होना, दरिद्र होना, कांपना, जाना)। सक.। सेट्। आत्मने.। ऋदित्। १ ग्लेपते। २ जिग्लेपे। ३ ग्लेपिता। ४ ग्लेपिष्यते। ५ ग्लेपताम्। ६ अग्लेपत। ७ ग्लेपेत। ८ ग्लेपिषीष्ट। ९ अग्लेपिष्ट। १० अग्लेपिष्यत। 'वेष्टति' (३५५) वत्।

**( ३६७ ) टुवेपृ—कम्पने।** (कांपना)। अक.। सेट्। आत्मने.।

१ वेपते। २ **प्र.** विवेपे विवेपाते विवेपिरे। **म.** विवेपिषे विवेपाथे विवेपिध्वे। **उ.** विविपे विविपिवहे विविपिमहे। ३ वेपिता। ४ वेपिष्यते। ५ वेपताम्। ६ अवेपत। ७ वेषेत। ८ वेपिषीष्ट। ९ अवेपिष्ट। १० अवेपिष्यत। शेषं सर्वं 'तेपति' (३६२) वत्।

**( ३६८-३७० ) केपृ-गेपृ-ग्लेपृ—कम्पने गतौ च।** (कांपना, जाना)। अक.। सेट्। आत्मने.। केपते। चिकेपे। गेपते। जिगेपे। ग्लेपते। जिग्लेपे। शेषं 'तेपति' (३६२) वत्।

**( ३७१-३७३ ) मेपृ-रेपृ-लेपृ—गतौ**—(जाना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। ऋदित्। मेपते। रेपते। लेपते। इत्यादि 'वेपते' (३६७) वत्।

**( ३७४ ) त्रपूष्—लज्जायाम्।** (लज्जा करना)। अकर्म.। सेट्। आत्मने.।

१ त्रपते। २ **प्र.** त्रेपे त्रेपाते त्रेपिरे। **म.** त्रेविषे-त्रेप्से त्रेपाथे त्रेपिध्वे-त्रेब्ध्वे। **उ.** त्रेपे त्रेपिवहे-त्रेप्वहे त्रेपिमहे-त्रेप्महे। ३ त्रपिता-त्रप्ता। ४ त्रपिष्यते-त्रप्स्यते। ५ त्रपताम्। ६ अत्रपत। ७ त्रपेत। ८ त्रपिषीष्ट-त्रप्सीष्ट। ९ **प्र.** अत्रपिष्ट अत्रपिषाताम्। अत्रपिषत। **म.** अत्रपिष्ठाः अत्रपिषाथाम् अत्रपिध्वम्। **उ.** अत्रपिषि अत्रपिष्वहि अत्रपिष्महि। पक्षे—**प्र.** अत्रप्त अत्रप्साताम् अत्राप्सत। **म.** अत्रब्धाः अत्रप्साथाम् अत्रब्ध्वम्। **उ.** अत्रप्सि अत्रप्स्वहि अत्रप्स्महि। १० अत्रपिष्यत-अत्रप्स्यत।

**भावे**—त्रप्यते। **णिचि**—त्रपयति-ते। **सनि**—तित्रपिषते-तित्रप्सते। **यङि**—तात्रप्यते। **यङ्लुकि**—तात्रपीति-तात्रप्ति। **कृत्सु**—त्रप्तव्यम्, त्रपितव्यम्, त्रपितुम्, त्रप्तुम्, त्रपणीयम्, त्राप्यम्, त्रप्तः, त्रपित्वा-त्राप्त्वा, त्रपा, अत्रपिष्णुः, त्रपुः। अपत्रप्य, त्रपकः-पिका, त्रपिता-त्री, त्रप्ता-त्री,

त्रपयिता-त्री, त्रपमाणः, त्रपयमाणः, त्रपिष्यमाणः-त्रप्स्यमानः, त्रपयिष्यमाणः, त्रपणीयम्, त्राप्यम्, त्रप्यम्, ईषत्त्रपः, दुस्त्रपः, सुत्रपः, त्रप्यमाणः, त्रपणम्, त्रापम्।

(३७५) **कपि—चलने कम्पने च।** (चलना, कांपना)। अकर्म.। सेट्। आत्मने.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | कम्पते | कम्पेते | कम्पन्ते | प्र. |
| | कम्पसे | कम्पेथे | कम्पध्वे | म. |
| | कम्पे | कम्पावहे | कम्पामहे | उ. |
| लिट् | चकम्पे | चकम्पाते | चकम्पिरे | प्र. |
| | चकम्पिषे | चकम्पाथे | चकम्पिध्वे | म. |
| | चकम्पे | चकम्पिवहे | चकम्पिमहे | उ. |
| लुट् | कम्पिता | कम्पितारौ | कम्पितारः | प्र. |
| | कम्पितासे | कम्पितासाथे | कम्पिताध्वे | म. |
| | कम्पिताहे | कम्पितास्वहे | कम्पितास्महे | उ. |
| लृट् | कम्पिष्यते | कम्पिष्येते | कम्पिष्यन्ते | प्र. |
| | कम्पिष्यसे | कम्पिष्येथे | कम्पिष्यध्वे | म. |
| | कम्पिष्ये | कम्पिष्यावहे | कम्पिष्यामहे | उ. |
| लोट् | कम्पताम् | कम्पेताम् | कम्पन्ताम् | प्र. |
| | कम्पस्व | कम्पेथाम् | कम्पध्वम् | म. |
| | कम्पै | कम्पावहै | कम्पामहै | उ. |
| लङ् | अकम्पत | अकम्पेताम् | अकम्पन्त | प्र. |
| | अकम्पथाः | अकम्पेथाम् | अकम्पध्वम् | म. |
| | अकम्पे | अकम्पावहि | अकम्पामहि | उ. |
| वि. लि. | कम्पिषीष्ट | कम्पिषीयास्ताम् | कम्पिषीरन् | प्र. |
| | कम्पिषीष्ठाः | कम्पिषीयास्थाम् | कम्पिषीध्वम् | म. |
| | कम्पिषीय | कम्पिषीवहि | कम्पिषीमहि | उ. |
| लुङ् | अकम्पिष्ट | अकम्पिषाताम् | अकम्पिषत | प्र. |
| | अकम्पिष्ठाः | अकम्पिषाथाम् | अकम्पिड्ढ्वम्-ध्वम् | म. |
| | अकम्पिषि | अकम्पिष्वहि | अकम्पिष्महि | उ. |
| लृङ् | अकम्पिष्यत | अकम्पिष्येताम् | अकम्पिष्यन्त | प्र. |
| | अकम्पिष्यथाः | अकम्पिष्येथाम् | अकम्पिष्यध्वम् | म. |
| | अकम्पिष्ये | अकम्पिष्यावहि | अकम्पिष्यामहि | उ. |

**भावे**—कम्प्यते। **णिचि**—कम्पयति। **सनि**—चिकम्पिषते। **यङि**—चाकम्प्यते। **यङ्लुकि**—चाकम्पीति-चाकम्प्ति। **कृत्सु**—कम्पकः-म्पिका, कम्पिता-त्री, कम्पयिता-त्री, कम्पयन्[१]-न्ती, कम्पयिष्यन्-न्ती-ती, कम्पमानः, कम्पिष्यमाणः, कन्-कम्पौ-कम्पः, कम्पितम्-तः

१ निगरणचलनार्थेभ्यश्च' (१-३-३७) इत्यनेन ण्यन्तात् परस्मैपदमेव।

तवान्, विकम्पितम्[१]-तः-तवान्, कम्पः, कम्पनः,[२] कम्पः, शिरःकम्पी,[३] कम्पितव्यम्, कम्पयितव्यम्, कम्पनीयम्, कम्पनम्, कम्प्यमानः, कम्पितुम्, कम्पयितुम्, कम्पा, कम्पना, कम्पनम्, कम्पित्वा, कम्पयित्वा, विकम्प्य।

**( ३७६-३७७ ) रबि-लबि—शब्दे।** (शब्द करना, शोर करना)। अकर्म.। सेट्। आत्मने.। रम्बते। ररम्बे। लम्बते। ललम्बे। 'वन्दति' (११) वत्।

**( ३७८ ) अबि—शब्दे।** (शब्द करना)। अक.। सेट्। आत्म.। इदित्। १ अम्बते। २ आनम्बे। ३ अम्बिता। ४ अम्बिष्यते। ५ अम्बताम्। ६ आम्बत। ७ अम्बेत। ८ अम्बिषीष्ट। ९ अम्बिष्ट। १० आम्बिष्यत।

**भावे**—अम्ब्यते। **णिचि**—अम्बयते। **सनि**—अम्बिबिषते। **कृत्सु**—अम्बकः-म्बिका, अम्बिता-त्री, अम्बयन्-न्ती, अम्बमानः, अम्बयमानः, अम्बिबिषमाणः, अम्बिष्यमाणः, अम्बयिष्यमाणः, अन्-अम्बौ-अम्बः, अम्बितम्, अम्बः, अम्बितव्यम्, अम्बयितव्यम्, अम्बनीयम्, अम्ब्यम्, ईषदम्बः-दुरम्बः-स्वरम्बः, अम्ब्यमानः, अम्बितुम्, अम्बनम्, अम्बित्वा, प्राम्ब्य।

**( ३७९ ) लबि—अवस्त्रंसने च।** (शब्द करना, लटकना, नीचे आधा गिरना)। **अव**—लटकना, आश्रय देना, **आ**—विश्वास करना, **वि**—देर करना। अक.। सेट्। आत्मने.।

१ लम्बते। २ **प्र.** ललम्बे ललम्बाते ललम्बिरे। **म.** ललम्बिषे ललम्बाथे ललम्बिध्वे। **उ.** ललम्बे लक्षम्बिवहे ललम्बिमहे। ३ लम्बिता। ४ लम्बिष्यते। ५ लम्बताम्। ६ अलम्बत। ७ लम्बेत। ८ लम्बिषीष्ट। ९ **प्र.** अलम्बिष्ट अलम्बिषाताम् अलम्बिषत। **म.** अलम्बिष्ठाः अलम्बषाथाम् अलम्बिड्ढ्वम्-ध्वम्। **उ.** अलम्बिषि अलम्बिष्वहि अलम्बिष्महि। १० अलम्बिष्यत।

**भावे**—लम्ब्यते। **णिचि**—लम्बयति-ते। **कृत्सु**—लम्बकः-म्बिका, लम्बिता-त्री, लम्बयिता-त्री, लम्बयन्-न्ती, लम्बयिष्यन्-न्ती-ती, लम्बमानः, लम्बिष्यमाणः, लम्बितम्-तः-तवान्, लम्बः, लम्बितव्यम्, लम्बयितव्यम्, लम्बनीयम्, लम्ब्यम्, लम्ब्यमानः, लम्बितुम्, लम्बयितुम्, लम्बा, लम्बना, लम्बनम्, लम्बित्वा, लम्बयित्वा, विलम्ब्य, णिनि प्रत्यये-आलम्बीः, अलाबू,[४] अलम्बुसा[५]।

---

१ 'लगिकम्प्योरुपतापशरीरविकारयोरुपसंख्यानम्' (वा. ६-४-२४) इति नुमो लोपः। अन्यत्र विकम्पित इत्येव 'पीडा व्याध्योः प्रदीपोक्ता लङ्गिकम्प्योर्न लोपिता। निस्स्वो विगालितो नित्यं वातात् विकम्पिता तनुः' इति प्र. सर्वस्वे।

२ 'अनुदात्तेतश्च हलादेः' (३-२-१४९) इति, 'चलनशब्दार्थादकर्मकाद्युच्' (३-२-१४८) इति वा युच् ताच्छीलिकः।

३ 'सुप्यजातौ णिनिः' (३-२-४८) इति णिनिः।

४ 'नञि लम्बेर्नलोपः' (द.उ. १-१७०) इत्यूप्रत्ययः, णिद्वद्भावः न लोपश्च। न लम्बते इत्यलाबूः तुम्बी।

५ अलम्बुसा = इति शाकविशेषः। तदपि पदे प्रकृतधातो र्भवति। 'अम्बुसा ना याता' इति इति पातञ्जलप्रयोगः (महा. १-१-१)।

**( ३८० ) कबृ—वर्णे।** (प्रशंसा करना, स्तुति करना, रंग देना, रंगना)। अक.। सेट्। आत्मने.। ऋदित्। कबते। 'त्रपति' (३७४) वत्।

**( ३८१ ) क्लीबृ—अधाष्टर्ये।** अधाष्टर्यम् = अधृष्टता। (दुर्बल होना, वीर्य रहित होना, लज्जालु होना या डरपोक होना)। अक.। सेट्। आत्म.। क्लीबते। २ चिक्लीबे। ३ क्लीबिता। ४ क्लीबिष्यते। ५ क्लीबताम्। ६ अक्लीबत। ७ क्लीबेत। ८ क्लीबिषीष्ट। ९ अक्लीबिष्ट। म. ढ्व-ध्वम्। १० अक्लीबिष्यत।

**भावे**—क्लीव्यते। **णिचि**—क्लीबयति-ते। **सनि**—चिक्लीबिषते। **यङि**—चेक्लीब्यते। **यङ्लुकि**—चेक्लीबीति- चेक्लेप्ति। **कृत्सु**—क्लीबितव्यम्, क्लीबनीयम्, क्लीबितुम्, क्लीबित्वा, क्लीबनम्, क्लीबः।

**( ३८२ ) क्षीवृ—मदे।** (मदोन्मत्त होना, मस्त होना)। अकर्म.। सेट्। आत्मने.। क्षीवते. 'क्लीबति' (३८१) वत्।

**( ३८३-३८४ ) शीभृ-चीभृ—कत्थने।** (प्रशंसा करना, शेखी मारना, आत्मस्तुति करना)। सकर्म.। सेट्। आत्म.। शीभते। चीभते। 'क्लीबति' (३८१) वत्।

**( ३८५ ) रेभृ—शब्दे।** (शब्द करना)। अकर्म.। सेट्। आत्म.। रेभते। 'वेपति' (३६७) वत्। **लभि** क्वचित् पठ्यते। लम्भते। ललम्भे।

**( ३८६ ) ष्टभि—प्रतिबन्धे।** (रुकावट डालना)। अकर्म.। सेट्। आत्मने.।

१ स्तम्भते। २ तस्तम्भे। ३ स्तम्भिता। ४ स्तम्भिष्यते। ५ स्तम्भताम्। ६ अस्तम्भत। ७ स्तम्भेत। ८ स्तम्भिषीष्ट। ९ अस्तम्भिष्ट। **म.** ढ्वम्-ध्वम्। १० अस्तम्भिष्यत।

**भावे**—स्तम्भ्यते। **णिचि**—स्तम्भयति-ते। **सनि**—तिस्तम्भिषते। **यङि**—तास्तम्भ्यते। **यङ्लुकि**—तास्तम्भीति-तास्तम्भ्धि। **कृत्सु**—स्तम्भितव्यम्, स्तम्भनीयम्, स्तम्भ्यम्, स्तम्भमानः, स्तम्भितः, स्तम्भित्वा, संस्तभ्य, स्तम्भितुम्।

**( ३८७ ) स्कभि—प्रतिबन्धे।** (रुकावट डालना)। सकर्म.। सेट्। आत्म.। स्कम्भते। चस्कम्भे। 'स्तम्भति' (३८६) वत्।

**( ३८८ ) जभी—गात्रविनामे।** (जम्हाई लेना)। अक.। सेट्। आत्मने.। ईदित्। **'रधिजभोरचि'**। १ जम्भते। २ जजम्भे। ३ जम्भिता। ४ जम्भिष्यते। ५ जम्भताम्। ६ अजम्भत। ७ जम्भेत। ८ जम्भिषीष्ट। ९ अजम्भिष्ट। **म.** ढ्वम्-ध्वम्। १० अजम्भिष्यत।

**भावे**—जम्भ्यते। **णिचि**—जम्भयति-ते। **कृत्सु**—जब्धः, जम्भित्वा, जम्बनीयम्, जम्भितुम्, जम्भकः-म्भिका, जम्भिता-त्री, जम्बयिता-त्री, जम्भयन्-न्ती, जम्भयिष्यन्-न्ती-ती, जम्भमानः, जम्भयमानः, जम्भयिष्यमाणः, जब्धवान्, जम्भितः, जम्भः, जभ्यम्, जभ्यमानः, जम्भयमानः, जम्भनम्, जम्मना।

**( ३८९ ) जृभि—गात्रविनामे।** (जम्हाई लेना)। अकर्म.। सेट्। आत्मने.।

१ जृम्भते। २ जजृम्भे। ३ जृम्भिता। ४ जृम्भिष्यते। ५ जृम्भताम्। ६ अजृम्भत। ७ जृम्भेत। ८ जृम्भिषीष्ट। ९ अजृम्भिष्ट। १० अजृम्भिष्यत्।

**भावे**—जृम्भ्यते। **णिचि**—जृम्भयति-ते। ९ अजजृम्भत्-त। **सनि**—जिजृम्भिषते। **यङि**—जरीजृम्भ्यते। **यङ्लुकि**—जरीजृम्भीति-जरीजृम्भि।

**(३९०) शल्भ—कत्थने**। (प्रशंसा करना, आत्मस्तुति करना, शेखी मारना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। शल्भते। शशल्भे। 'कत्थति' (३७) वत्।

**(३९१) वल्भ—भोजने**। (भोजन करना)। सक.। सेट्। आत्मने.। वल्भते। 'कत्थति' (३७) वत्।

**(३९२) गल्भ—धाष्ट्यें**। (धैर्य रखना, साहस करना) अकर्म.। सेट्। आत्मने.। गल्भते। जगल्भे। 'कत्थति' (३६) वत्।

**(३९३) श्रम्भु—प्रमोदे**। (चूकना, गलती करना, **वि**—विश्वास करना)। अकर्म.। सेट्। आत्मने.। उदित्। श्रम्भते। शश्रम्भे। ९ अश्रम्भिष्ट।

**कृत्सु**—श्रम्भित्वा, श्रब्धा, श्रब्धः, श्रम्भितुम्, विश्रम्भः = विश्वासः. 'कत्थति' (३७) वत्।

**(३९४) ष्टुभु—स्तम्भे**। (अवरोध करना, मूर्ख होना)। अकर्म.। सेट्। आत्मने.। १ स्तोभते। २ तुष्टुभे। ३ स्तोभिता।

**कृत्सु**—स्तुब्ध्वा-स्तुभित्वा, स्तोभित्वा, स्तुब्धः, स्तोभः।

**(३९५) गुपू—रक्षणे**। (रक्षा करना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | गोपायति[1] | गोपायतः | गोपायन्ति | प्र. |
| | गोपायसि | गोपायथः | गोपायथ | म. |
| | गोपायामि | गोपायावः | गोपायामः | उ. |
| लिट् | गोपायाञ्चकार[2] | गोपायञ्चक्रतुः | गोपायञ्चक्रुः | प्र. |
| | गोपायाञ्चकर्थ | गोपायञ्चक्रथुः | गोपायाञ्चक्र | म. |
| | गोपायञ्चाकार-चकर | गोपायाञ्चकृव | गोपायाञ्चकृम | उ. |

एवं गोपयामास गोपयाम्बभूव इत्यादि।

**'आयादय आर्धधातुके वा'** (३-१-३१) इति आयप्रत्ययस्य वैकल्पिकत्वात् आयाभावपक्षे रूपम्—

| | | | |
|---|---|---|---|
| जुगोप | जुगुपतुः | जुगुपुः | प्र. |
| जुगोपिथ-जुगोप्थ[3] | जुगुपथुः | जुगुप | म. |
| जुगोप जुगुपिव-जुगुप्व | जुगुपिम | जुगुप्म | उ. |

१ गुपूधूपविच्छिपणिपनिभ्य आयः (३-१-२८) एभ्यः आयप्रत्ययः स्यात् स्वार्थे। गुप् आय इत्यत्र पुगन्तलक्षणगुणे 'सनाद्यन्ता धातवः' (३-१-३२) इति गोपाय इत्यस्य धातुत्वाल्लडादयः।

२ 'गोपाय' इत्यस्य अनेकाचत्वात् आम् कृभ्वस्त्युप्रयोगश्च। 'अतोलोपः' (६-४-४८) इति अकारलोपः।

३ इडभावपक्षे रूपम्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुट् | गोपयिता | गोपयितारौ | गोपयितारः | प्र. |
| | गोपियितासि | गोपयितास्थः | गिपयितास्थ | म. |
| | गोपयितास्मि | गोपयितास्वः | गोपयिस्मः | उ. |

पक्षे—गोपिता-गोप्ता गोपितारौ-गोप्तारौ गोपितारः गोप्तारः इत्यादि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृट् | गोपायिष्यति | गोपायिष्यतः | गोपायिष्यन्ति | प्र. |
| | गोपायिष्यसि | गोपायिष्यथः | गोपायिष्यथ | म. |
| | गोपायिष्यामि | गोपायिष्यावः | गोपायिष्यामः | उ. |

पक्षे—गोपिष्यति-गोप्स्यति गोपिष्यतः गोप्स्यतः गोपिष्यन्ति-गोप्स्यन्ति। इत्यादि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लोट् | गोपायतु-गोपायतात् | गोपायताम् | गोपायन्तु | प्र. |
| | गोपाय-गोपायतात् | गोपायतम् | गोपायत | म. |
| | गोपायानि | गोपायाव | गोपायाम | उ. |
| लङ् | अगोपायत् | अगोपायताम् | अगोपायन् | प्र. |
| | अगोपायः | अगोपायतम् | अगोपायत | म. |
| | अगोपायम् | अगोपायाव | अगोपायाम | उ. |
| वि. लि. | गोपायेत् | गोपायेताम् | गोपायेयुः | प्र. |
| | गोपायेः | गोपायेतम् | गोपायेत | म. |
| | गोपायेयम् | गोपायेव | गोपायेम | उ. |
| आ. लि. | गोपाय्यात् | गोपाय्यास्ताम् | गोपाय्यासुः | प्र. |
| | गोपाय्याः | गोपाय्यास्तम् | गोपोय्यास्त | म. |
| | गोपाय्यासम् | गोपाय्यास्व | गोपाय्यास्म | उ. |

पक्षे—प्र. गुप्यात् गुप्यास्ताम् गुप्यासुः, म. गुप्याः गुप्यास्तम् गुप्यास्त, उ. गुप्यासम् गुप्यास्व गुप्यास्म।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुङ् | अगोपायीत् | अगोपायिष्टाम् | अगोपायिषुः | प्र. |
| | अगोपायीः | अगोपायिष्टम् | अगोपायिष्ट | म. |
| | अगोपायिषम् | अगोपायिष्व | अगोपायिष्म | उ. |

पक्षे—प्र. अगोपीत् अगोपिष्टाम्[1] अगोपिपुः, म. अगोपीः अगोपिष्टम् अगोपि, उ. अगोपिषम् अगोपिष्व अगोपिष्म।

पक्षे—प्र. अगौप्सीत्[2] अगौप्ताम् अगौप्सुः, म. अगौप्सीः अगौप्तम् अगौप्त, उ. अगौप्सम् अगौप्स्व अगौप्सम।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृङ् | अगोपायिष्यत् | अगोपायिष्यताम् | अगोपायिष्यन् | प्र. |
| | अगोपायिष्यः | अगोपायिष्यतम् | अगोपायिष्यत | म. |
| | अगोपायिष्यम् | अगोयिष्याव | अगोपिष्याम | उ. |

१ 'अगोपिष्टां पुरीं लङ्कां अगोप्तां राक्षसी बलम्। (भट्टि. १५१-११३)
२ पक्षे लुङ् 'वदव्रजे–' ति वृद्धिः।

पक्षे—अगोप्स्यत् अगोप्स्यताम् अगोप्स्यन् **प्र.** अगोप्स्यः अगोप्स्यतम् अगोप्स्यतत **म.** अगोप्स्यम् अगोप्स्याव अगोप्स्याम **उ.**

**कर्मणि**—गोपाय्यते-गुप्यते। ९ अगोपायि-ओगोपि। **णिचि**—गोपाययति-ते, गोपयति-ते। ९ अजुगोपायत्-त-अजूगुपत्-त। **सनि**—जुगोपायिषति-जुगुपिषति-जुगोपिषति-जुगुप्सति। **यङि**—जोगुप्यते[1]। **यङ्लुकि**—जोगुपीति-जोगोप्ति। **कृत्सु**—गोपितव्य:-गोपयितव्य, गोपायनीय:-गोपनीयः, गोप्यः, गोपायित:-गुप्तः, गोपायन्, गोपायितुम्-गोप्तुम्, गोपायनम्, गोपायित्वा-गोपित्वा-गुप्त्वा, गोपायक:-यिका- गोपक:-पिका, जुगोपायिषक:-युगोपिषक:-जुगुपिषक:-षिका, जुगुप्सक:-प्सिका, गोपायिता-गोपिता-गोप्ता-त्री, गोपायायिता-गोपायिता-त्री, गोपायन्-न्ती, गोपायिष्यन्, गोपिष्यन्-न्ती-ती, गोपः, गोपायितम्-तः, तवान्, गुप्तम्, गुप्त:-गुप्तवान्, गोपायः, गुपः, गोपाय्यम्-गोप्यम्, दुषद्-गोपायः, दुर्गोपाय:-सुगोपायः, इषद्गोपः।

**( ३९६ ) धूप—संतापे।** (गरम होना, तपाना)। सक.। सेट्। परस्मै.। धूपायति। दुधुप दुधूपतुः दुधूपुः पक्षे धूपायाञ्चकारेत्यादि। सर्वं गोपायति। (३९५) वत्।

**( ३९७-३९८ ) जप-जल्प—व्यक्तायां वाचि, जप**—मानसे च। (बोलना, बकना, जप करना, मन में बोलना)। सक.। सेट्। परस्मै.। १ जपति। २ **प्र.** जजाप जेपतुः जेपुः, **म.** जेपिथ जेपथुः जेप। **उ.** जजाप-जजप जेपिव जेपिम। ३ जपिता। ४ जपिष्यति। ५ जपतु-तात्। ६ अजपत्। ७ जपेत्। ८ जप्यात्। ९ अजापीत्-अजपीत्। १० अजपिष्यत्।

**कर्मणि**—जप्यते। **णिचि**—जापयति-ते। ९ अजीजपत्-त। **सनि**—जिजपिषति। **यङि**—जञ्जप्यते। **यङ्लुकि**—जञ्जपीति-जञ्जप्ति। **कृत्सु**—जापक:-पिका, जिजपिषक:-षिका, जञ्जपक:[2]-जन्जपक:-पिका, जपिता-त्री, जापयिता-त्री, जपन्-न्ती, व्यतिजपन्[3]-न्ती, जापयन्-न्ती, जपिष्यन्-न्ती-ती, जापयिष्यन्-न्ती-ती, जापयमानः, जापयिष्यमाणः, जप्तम्[4] जापितः जपः, कर्णेजपः,[5] जिजपिषुः, जज्जप:-जन्जपः, जञ्जपूकः,[6] जपितव्यम्, जापयितव्यम्,

१ आयप्रत्ययान्तस्य अनेकाच्त्वात् न यङ्लुकौ।

२ 'लुपसदचरजपनभदहदशगृभ्यो भावगर्हायाम्' (३-१-२४) इति सूत्रेण गर्हितं जपतीत्यर्थे यङ्। द्विर्वचनम्, अभ्यासस्य, 'जपजभदहदशभञ्जपशां च' (७-२-८६) इत्यनेन नुमागमे, तस्य 'पदान्तवद्वाच्यः' (वा. ७-४-८५) इति पदान्तवद् भावेन। वा पदान्तस्य' (७-४-५९) इति पाक्षिके परसवर्णे रूपद्वयम्। एवं यङन्ते सर्वत्र रूपद्वयम् ज्ञेयम्।

३ 'प्रतिषेधे हसादीनामुपसंख्यानम्' (वा. १-३-१५) इति वचनात् कर्मव्यतिहारेऽपि न शानच्।

४ सेटोप्यस्य धातोः क्वचिदिडभावेनापि प्रयोगो दृश्यते। तस्य साधुत्वकल्पनाय 'आदितश्च' (७-२-१६) इति सूत्रे, काशिकायां 'चकारोऽनुक्तसमुच्चयार्थः। आश्वस्तः। वान्तः। इत्युदाहरणं दत्तम्।' तदिहानुसन्धेयम् 'नम्जप् व्याश्वसो निष्ठायामिड्वा' इति केचित्। जपितः जप्तः, इति प्रक्रिया कौमुदी।

५ 'स्तम्बकर्णयो रमिजपोः' (३-२-१३) इति सुबन्ते उपपदे अच् प्रत्ययः। 'तत्पुरुषे कृति बहुलम्' (६-३-१४) इति सप्तम्या अलुक्। 'हस्तिसूचकयोरिति वक्तव्यम्' (वा. ३-३-१३) इति वचनात् कर्णेजपः इति सूचके एवं साधुः।

६ 'यजजपशां यङः' (३-२-१६६) इति ताच्छीलादिषु कर्तृषु यङन्तादूकप्रत्यये, 'यस्य हलः' (६-४-४९) इति यकारलोपे, अभ्यासस्य नुमागमे च रूपम्।

जपनीयम्, जापनीयम्, जप्यम्,[१] जाप्यम्, जप्यमानः, जाप्यमानः, जपः,[२] उपजापः, जापः, जपितुम्, जापयितुम्, जप्तिः, जापना, जपना, जपनम्, जापनम्, जपित्वा, जापयित्वा, सञ्जप्य, प्रजाप्य। एवं जल्पति। इत्यादि।

**( ३९९ ) चप—सान्त्वने।** (शान्त करना)। सक.। सेट्। परस्मै.। चपति। 'गदति' (५२) वत्।

**( ४०० ) षप—समवाये।** (पूर्ण ज्ञान होना, संलग्न होना, मिलाप होना)। सकर्म.। सेट्। पर.। सपति। ससाप। इत्यादि 'रदति' (५३) वत्।

**( ४०१-४०२ ) रप-लप—व्यक्तायां वाचि।** (स्पष्ट बोलना)। **अप-लप** = स्वीकार करना, **अनु-लप** = दूसरे के समान बोलना, **आ-लप** = आलाप करना, **वि-लप** = रोना। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। रपति रराप, लपति, ललाप। 'रदति' (५२) वत्।

**( ४०३ ) चुप—मन्दायां गतौ।** (धीरे-धीरे चलना)। अक.। सेट्। परस्मै.। चोपति। चुचोप। 'शोचति' (१८३) वत्।

**( ४०४-४११ ) तुप-तुम्फ-त्रुप-त्रुम्प-तुफ-तुम्फ-त्रुफ-त्रुम्फ—हिंसार्थाः।** (हिंसा करना)। सक.। सेट्। परस्मै.। तोपति। तुम्पति। त्रोपति। त्रुम्पति। तोफति। तुम्फति। त्रोफति-त्रुम्फति। शेषं सर्वं 'शोचति' (१८३) तथा 'कुञ्चति' (१८५) वत्।

**( ४१२-४१३ ) पर्प-रफ—गतौ।** (जाना)। सक.। सेट्। पर.। पर्पति-रफति। 'रदति' (५३) वत्।

**( ४१४ ) रफि (रम्फ) —गतौ।** (जाना)। सक.। सेट्। परस्मै.। रम्फति। 'क्रन्दति' (७१) वत्।

**( ४१५ ) अर्ब—गतौ।** (जाना)। सक। सेट्। पर.। अर्बति। आनर्ब। 'अर्चति' (२०४) वत्।

**( ४१६-४२५ ) पर्व-लर्ब-बर्ब-मर्ब-कर्ब-खर्ब-गर्ब-शर्द-षर्व-(सर्व) -चर्ब** –गतौ। सक.। सेट्। पर.। पर्बति। लर्बति। इत्यादि 'रदति' (५३) वत्।

**( ४२६ ) कुबि—आच्छादने।** (आच्छादित करना)। सक.। सेट्। पर.। कुम्बति। 'कुन्थति' (४३) वत्।

**( ४२७-४२८ ) लुबि-तुबि—अर्दने।** (मार डालना, दुःख देना, नोचना)। सक.। सेट्। परस्मै.। लुम्बति। तुम्बति। 'कुन्थति' (४३) वत्।

**( ४२९ ) चुबि—वक्त्रसंयोगे।** (चूमना, चुम्बन लेना)। सक.। सेट्। परस्मै.।

---

१. 'पोरदुपधात्' (३-१-९८) इति यत्। ण्यपवादः।

२. व्यधजपोरनुपसर्गे' (३-३-६१) इति भावे, अप् प्रत्ययः। उपसृष्टात्तु घञेव। उपजापः।

१ चुम्बति। २ चुचुम्ब। ३ चुम्बिता। ४ चुम्बिष्यति। ५ चुम्बतु। ६ अचुम्बत्। ७ चुम्बेत्। ८ चुम्बयात्। ९ **प्र.** अचुम्बीत् अचुम्बिष्टाम् अचुम्बिषुः। **म.** अचुम्बीः अचुम्बिष्टम् अचुम्बिष्ट। **उ.** अचुम्बिषम् अचुम्बिष्व अचुम्बिषम्। १० अचुम्बिष्यत्।

**कर्मणि**—चुम्ब्यते। **णिचि**—चुम्बयति-ते। **सनि**—चुचुम्बिषति। **कृत्सु**—चुम्बकः-म्बिका, चुम्बिता-त्री, चुम्बन्-न्ती, चुम्बयन्-न्ती, चुम्बिष्यन्-न्ती, चुम्बयिष्यन्, चुम्बमानः, चुम्बयिष्यमाणः, चुम्बः, चुम्बनम्, चुम्बितुम्, चम्बयितुम्, चुम्बितव्यम्, चुम्बयितव्यम्, चुम्बनीयम्, चुम्बयमानः, चुम्बयम्, चुम्बितम्-तः-तवान्, शिरश्चुम्बी, शिरःचुम्बितुं शीलमस्येति ताच्छील्ये णिनि प्रत्यय।

**(४३०) षृभु (सृभ्) —हिंसायाम्।** (मारना)। सक.। सेट्। पर.।

१ सर्भति। २ ससर्भ ससृभतुः। ३ सर्भिता। ४ सर्भिष्यति। ५ सर्भतु-तात्। ६ असर्भत्। ७ सर्भेत्। ८ सृभ्यात्। ९ असर्भीत्। १० असर्भिष्यत्।

**कर्मणि**—सृभ्यते। **णिचि**—सर्भयति-ते। **सनि**—सिसर्भिषति। **यङि**—सरीसृभ्यते। **कृत्सु**—सर्भितव्यम्, सर्भनीयम्, सर्भित्वा-सृब्ध्वा।

**(४३१) षृम्भु—हिंसायाम्।** (मारना)। सक.। सेट्। पर.। सृम्भति। ससृम्भ ससृम्भतुः। इत्यादि। **षिभु (सिभु), षिम्भु (सिम्भु)** इत्येके। सेभति। सिषेभ। इत्यादि। सेधति (४४) वत्। १ सिम्भति। २ सिषिम्भ। ३ सिम्भिता। ८ सिभ्यात्। ९ असिम्भीत्।

**कृत्सु**—सिम्भित्वा-सिब्ध्वा, सिब्धः। इत्यादि।

**(४३२-४३३) शुभ-शुम्भ—भाषणे। भासन**—इत्यके। हिंसायाम्। (भाषण करना, बोलना, मारना, शोभापाना, चमकना। सक.। सेट्। पर.। शोभति। शुशोभ। इत्यादि 'शोचति' (१८३) वत्। शुम्भति। शुशुम्भ। 'कुञ्चति' (१८५) वत्।

**(४३४-४३६) घिणि-घुणि-घृणि—ग्रहणे।** (लेना)। सक.। सेट्। आत्मने.। घिण्णते। जिघिण्णे। घुण्णते। जुघुण्णे। घृण्णते। जिघृण्णे। 'क्लन्दति' (१५) वत्।

**(४३७-४३८) घुण-घूर्ण—भ्रमणे।** (घूमना, भ्रमण करना)। अक.। सेट्। आत्मने.। १ घोणते। २ जुघुणे। ३ घोणिता। ४ घोणिष्यति। ९ अघोणिष्ट। १० अघोणिष्यत।

**कर्मणि**—घुण्यते। **णिचि**—घोणयते। **सनि**—घुघुणिषते। **कृत्सु**—घोणितव्यम्, घोणनीयम्, घोणितुम्, घोणित्वा, घोणः, घोणनम्, घोणन्-न्ती, घोणकः-णिका, घोणिता-त्री।

**(४३९-४४०) पण-पन—व्यवहारे-स्तुतौ च।** (उद्योग या व्यवहार करना, प्रशंसा करना, स्तुति करना)। सक.। सेट्। व्यवहारार्थे-आत्म.। स्तुतौ-पर.। व्यवहारार्थे—१ पणते। २ पेणे पेणाते पेणिरे। ३ पणिता। ४ पणिष्यते। ८ पणिषीष्ट। १० अपणिष्यत। स्तुतौ—**गुपूधूपे**—इति आयप्रत्ययः। १ पणायति। २ पणयाञ्चकार-पणयामास। ३ पणायिता। ४ पणायिष्यति। ५ पणायतु। ६ अपणायत्। ७ पणायेत्। ८ पणाय्यात्। ९ अपाणायीत्। १० अपणायिष्यत्। **'आयादय आर्धधातुके वा'** इति आयप्रत्ययाभावपक्षे आत्मने.।

**कर्मणि**—स्तुतौ-पणाय्यते-पण्यते। **व्यवहारे**—पण्यते। **णिचि**—पाणयति-ते। **सनि**—पिपणायिषति-पिपणिषते। **यङि**—पम्पण्यते। **यङ्लुकि**—पम्पणीति-पम्पण्टि। **कृत्सु**—पणायनीयम्, पणनीयम्, पणायनम्-पणनम्, पणायकः-पाणकः-णिका, पणायिता-पणिता-त्री, पणायितः-पणितः, पणायित्वा-पणित्वा, सम्पणाय्य-सम्पण्य। इत्यादि। एवं—पनायति-पनते। इत्यादि।

**(४४१) भाम—क्रोधे।** (क्रोध करना)। अक.। सेट्। आत्म.। भामते. बभामे। इत्यादि 'गाधति' (४) वत्।

**सनि**—बिभाभिषते। **यङि**—बाभाम्यते। **यङ्लुकि**—बाभाभीति-बाभान्ति। इत्यादि।

**(४४२) क्षमूष्—सहने।** (सहन करना, क्षमा करना)। सक.। सेट्। आत्मने.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | क्षमते | क्षमेते | क्षमन्ते | प्र. |
| | क्षमसे | क्षमेथे | क्षमध्वे | म. |
| | क्षमे | क्षमावहे | क्षमामहे | उ. |
| लिट् | चक्षमे | चक्षमाते | चक्षमिरे | प्र. |
| | चक्षमिषे-चक्षसे | चक्षमाथे | चक्षमिध्वे | म. |
| | चक्षमे | चक्षमिवहे | चक्षमिमहे | उ. |
| लुट् | क्षमिता | क्षमितारौ | क्षितारः | प्र. |
| | क्षमितासे | क्षमिताथे | क्षमिताध्वे | म. |
| | क्षमिताहे | क्षमितास्वहे | क्षमितास्महे | उ. |

पक्षे—**प्र.** क्षन्ता क्षन्तारौ क्षन्तार। **म.** क्षन्तासे क्षन्तासाथे क्षन्ताध्वे। **उ.** क्षन्ताहे क्षन्तास्वहे क्षन्तास्महे।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृट् | क्षमिष्यते | क्षमिष्येते | क्षमिष्यन्ते | प्र. |
| | क्षमिष्यसे | क्षमिष्येथे | क्षमिष्यध्वे | म. |
| | क्षमिष्ये | क्षमिष्यावहे | क्षमिष्यामहे | उ. |

पक्षे—**प्र.** क्षंस्यते क्षंस्येते क्षंस्यन्ते। **म.** क्षंस्यसे क्षंस्येथे क्षंस्यध्वे। **उ.** क्षंस्ये क्षंस्यावहे क्षंसायमहे।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लोट् | क्षमताम् | क्षमेताम् | क्षमन्ताम् | प्र. |
| | क्षमस्व | क्षमेथाम् | क्षमध्वम् | म. |
| | क्षमै | क्षमावहै | क्षमामहै | उ. |
| लङ् | अक्षमत | अक्षमेताम् | अक्षमन्त | प्र. |
| | अक्षमथाः | अक्षमेथाम् | अक्षमध्वम् | म. |
| | अक्षमे | अक्षमावहि | अक्षमामहि | उ. |
| वि. लि. | क्षमेत | क्षमेयाताम् | क्षमेरन् | प्र. |
| | क्षमेथाः | क्षेमेयाथाम् | क्षमेध्वम् | म. |
| | क्षमे | क्षमेवहि | क्षमेमहि | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आ. लि. | क्षमिषीष्ट | क्षमिषीयास्ताम् | क्षमिषीरन् | प्र. |
| | क्षमिषीष्ठाः | क्षमिषीयास्थाम् | क्षमिषीध्वम् | म. |
| | क्षमिषीय | क्षमिषीवहि | क्षमिषीमहि | उ. |

पक्षे—**प्र.** क्षंसीष्ट क्षंसीयास्ताम् क्षंसीरन्, **म.** क्षंसीष्ठाः क्षंसीयास्थाम् क्षंसीध्वम्, **उ.** क्षंसीय क्षसीवहि क्षंसीमहि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुङ् | अक्षमिष्ट | अक्षमिषाताम् | अक्षमिषत | प्र. |
| | अक्षमिष्ठाः | अक्षमिषाथाम् | अक्षमिड्ढ्वम्-ध्वम् | म. |
| | अक्षमिषि | अक्षमिष्वहि | अक्षमिष्महि | उ. |

पक्षे—**प्र.** अक्षंस्त अक्षंसाताम् अक्षंसत, **म.** अक्षंस्थाः अक्षंसाथाम् अक्षन्द्ध्वम् अक्षन्ध्वम्, **उ.** अक्षंसि अक्षंस्वहि अक्षंस्महि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृङ् | अक्षमिष्यत | अक्षमिष्येताम् | अक्षमिष्यन्त | प्र. |
| | अक्षमिष्यथाः | अक्षमिष्येथाम् | अक्षमिष्यध्वम् | म. |
| | अक्षमिष्ये | अक्षमिष्यावहि | अक्षमिष्यामहि | उ. |

पक्षे—**प्र.** अक्षंस्यत अक्षंस्येताम् अक्षंस्यन्त, **म.** अक्षंस्यथाः अक्षंस्येथाम् अक्षंस्यध्वम्, **उ.** अक्षंस्ये अक्षंस्यावहि अक्षंस्यामहि।

**कर्मणि**—क्षम्यते। ९ अक्षमि। **णिचि**—क्षमयति। **सनि**—चिक्षमिषते-चिक्षंसते। **यङि**—चक्षम्यते। **यङ्लुकि**—चक्षमीति-चंक्षन्ति। **कृत्सु**—क्षमितव्यम्, क्षन्तव्यम्, क्षमणीयम्, क्षम्यम्, क्षमितुम्, क्षन्तुम्, क्षमित्वा, क्षान्त्वा, क्षममाणः, क्षमकः-मिका, क्षमिता-त्री, क्षमा, क्षमः, क्षन्ता-त्री, क्षमयिता-त्री, चिक्षमिषिता-चिक्षंसिता-त्री, क्षाम्यन्-न्ती, क्षमयन्-न्ती, क्षमिष्यन्-क्षंस्यन्-न्ती-ती, क्षमिष्यन्-न्ती-ती, व्यतिक्षाम्यमाणः, क्षमयमानः, क्षान्तम्-न्तः, क्षान्तवान्, क्षमितः, क्षम्यात्, क्षम्यमाणः, क्षान्तिः, क्षमणम्, प्रक्षम्य, प्रक्षम्य्य।

**(४४३) कमु—कान्तौ**। कान्तिरिच्छा। (चाहना, इच्छा करना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | कामयते | कामयेते | कामयन्ते | प्र. |
| | कामयसे | कामयेथे | कामयध्वे | म. |
| | कामये | कामयावहि | कामयामहि | उ. |
| लिट् | कामयाञ्चक्रे | कामयाञ्चक्राते | कामयाञ्चक्रिरे | प्र. |
| | कामयाञ्चकृषे | कामयाञ्चक्राथे | कामयाञ्चकृढ्वे | म. |
| | कामयाञ्चक्रे | कामयाञ्चकृवहे | कामयाञ्चकृमहे | उ. |

पक्षे—कामयाम्बभूव, कामयामास इत्यादि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुट् | कामयिता | कामयितारौ | कामयितारः | प्र. |
| | कामयितासे | कामयितासाथे | कामयिताध्वे | म. |
| | कामयिताहे | कामयितास्वहे | कामयितास्महे | उ. |

पक्षे—**प्र.** कमिता कमितारौ कमितारः, **म.** कमितासे कमितासाथे कमिताध्वे, **उ.** कमिताहे कमितास्वहे कमितास्महे ।

| लृट् | कामयिष्यते | कामयिष्येते | कामयिष्यन्ते | प्र. |
|---|---|---|---|---|
| | कामयिष्यसे | कामयिष्येथे | कामयिष्यध्वे | म. |
| | कामयिष्ये | कामयिष्यावहे | कामयिष्यामहे | उ. |

पक्षे—कमिष्यते कमिष्येते कमिष्यन्ते । इत्यादि ।

| लोट् | कामयताम् | कामयेताम् | कामयन्ताम् | प्र. |
|---|---|---|---|---|
| | कामयस्व | कामयेथाम् | कामयध्वम् | म. |
| | कामये | कामयावहे | कामयामहे | उ. |
| लङ् | अकामयत | अकामयताम् | अकामयन्त | प्र. |
| | अकामयथाः | अकामयेथाम् | अकामयध्वम् | म. |
| | अकामये | अकामयावहि | अकामयामहि | उ. |
| वि. लि. | कामयेत | कामयेयाताम् | कामयेरन् | प्र. |
| | कामयेथाः | कामयेयाथाम् | कामयेध्वम् | म |
| | कामयेय | कामयेवहि | कामयेमहि | उ. |
| आ. लि. | कामयिषीष्ट | कामयिषीयास्ताम् | कामयिषीरन् | प्र. |
| | कामयिषीष्ठाः | कामयिषीयास्थाम् | कामयिषीढ्वम्-ध्वम् | म. |
| | कामयिषीय | कामयिषीवहि | कामयिषीमहि | उ. |

पक्षे—**प्र.** कमिषीष्ट कमिषीयास्ताम् कमिषीरन्, **म.** कमिषीष्ठाः कमिषीयास्थाम् कमिषीढ्वम्-ध्वम्, **उ.** कमिषीय कमिषीवहि कमिषीमहि ।

| लुङ् | अचीकमत | अचीकमेताम् | अचीकमन्त | प्र. |
|---|---|---|---|---|
| | अचीकमथाः | अचीकमेथाम् | अचीकमध्वम् | म. |
| | अचीकमे | अचीकमावहि | अचीकमामहि | उ. |

पक्षे—**प्र.** अचकमत अचकमेताम् अचीकमन्त, **म.** अचकमथाः अचकमेथाम् अचकमध्वम्, **उ.** अचकमे अचकमावहि अचकमामहि ।

| लृङ् | अकामयिष्यत | अकामयिष्येताम् | अकामयिष्यन्त | प्र. |
|---|---|---|---|---|
| | अकामयिष्यथाः | अकामयिष्येथाम् | अकामयिष्यध्वम् | म. |
| | अकामयिष्ये | अकामयिष्यावहि | अकामयिष्यामहि | उ. |

पक्षे– अकमिष्यत अकमिष्येताम् अकमिष्यन्त । इत्यादि ।

**कर्मणि**—काम्यते-कम्यते । **णिचि**—कामयति । **सनि**—चिकामयिषते-चिकमिषते । **यङि**—चङ्कम्यते । **यङ्लुकि**—चङ्कमीति-चङ्कन्ति । **कृत्सु**—कामकः[१]-मिका, कामयिता-

१ 'कमेर्णिङ्' (३-१-१३०) इति स्वार्थे णिङ् । अमन्तत्वेन मित्वं तु न, 'न काम्यमिचाम्' (ग.सू. भ्वादौ) इति निषेधात् । अतः 'अत उपधायाः' (७-२-११६) इति वृद्धिः । एवं घञ्यपि ।

कमिता-त्री, कामयन्[१]-न्ती, कामयिष्यन्-न्ती-ती, कामयमान:[२], कामयिष्यमाण:, काम्[३]-कामौ-काम:, कामितम्[४]-त:-तवान्, कान्तम्[५]-त:-तवान्, काम:-कम:, प्रकामी[६], मांसकाम:[७]-मांसकामा, हन्तुकाम:[८] हरिकामा, कम:[९], कमन:,[१०] कामुक:[११]-कामुकी-कामुका:, कामयितव्यम्, कमितव्यम्, प्रकामनीयम्,[१२] प्रकमनीयम्, काम्यम्[१३], कम्यम्[१४], इषत्काम:-दुष्काम:, सुकाम:, काम्यमान:, कामनम्, कनम्, कामयित्वा-कमित्वा,[१५] कान्त्वा, प्रकाम्य-प्रकम्य, कामम्[१६], कमठ:[१७], कन्तु:,[१८] कमलम्,[१९] कंस:[२०]।

**(४४४) अण—शब्दे:** । (शब्द करना)। सकर्म.। सेट्। पर.। अणति। आण। 'अतति' (२९५) वत्।

**(४४५-४५३) रण-वण-भण-मण-कण-क्वण-व्रण-भ्रण-ध्वण — शब्दार्था:** । **धण**— इत्यपि केचित्. (शब्द करना) अकर्म.। सेट्। पर.। रणति। वणति। भणति। गणति। कणति। क्वणति। व्रणति। भ्रणति। ध्वणति। धणति। इत्यादि सर्वं 'गदति' (५२) वत्।

**(४५४) ओणृ—अपनयने**। अपनयनम् = दूरी करणम्। (दूर करना, दूर ले जाना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.। १ ओणति। २ ओणाञ्चकार। ३ ओणिता। ४ ओणिष्यति।

---

१ णिजन्तात् 'णिजश्च' (१-३-७४) इत्युभयपदी, न तु णिङन्तात्।

२ शानच: शित्त्वेन आर्धधातुकत्वाभावात् नित्यं णिङ्। णिङो ङित्त्वात् 'अनुदात्तङित आत्मनेपदम्' (१-३-१२) इति आत्मनेपदमेव।

३ णिङन्तात् शुद्धाच्च धातो: क्विपि 'अनुनासिकस्य–' (६-४-१५) इति उपधादीर्घे। 'मोनो धातो:' (८-२-६४) इति नत्वम्।

४ णिङ् पक्षे 'णेरनिटि' (६-४-५१) इति निष्ठायां णिङो लोप:।

५ णिङभावपक्षे धातोरुदित्वात् क्त्वायाम् इड्विकल्प:। 'यस्य विभाषा (७-२-१५) इति निष्ठायामिण्णिषेधे, 'अनुनासिकस्य–' (६-४-१५) इति दीर्घे च रूपम्।

६ ताच्छील्ये णिनि:।

७ 'शीलिकामिभक्ष्याचरिभ्यो ण:' (वा. ३-२-१) इति अणपवाद: ण:। तेन स्त्रियां टाप्।

८ 'तुं काममनसोरपि।' (वा. ६-३-१०९) इति तुमुनो मकारस्य लोप:।

९ नमिकम्पिस्म्यजसकमहिंसदीपो र: (३-२-१६७) इति ताच्छीलिको र: प्रत्यय:।

१० 'अनुदात्तेश्च हलादे:' (३-२-१४९) इति युच् ताच्छीलिक:। 'ताच्छीलिकेषु' 'वासरूप:–' (३-१-९४) इति विधिर्नास्तीति प्रायिकम्, तेन कम्रा कमना युवति; इति सिद्धम्–' इति सि. कौमुदी।

११ 'लषपतपदस्थाभूकमग–' (३-२-१५४) इत्यादिना तच्छीलादिषु उकञ्। स्त्रियां, 'जानपद–' (४-१-४२) इति विहित:ङीष् कामुकी मैथुनेच्छा चेत् कामुकाऽन्या (वा. ४-१-४२) इति वर्तिकेन अर्थविशेषे नियमित:।

१२ 'न माभूपूकमिगमि–' (८-४-३४) इति, 'ण्यन्तभादीनामुपसंख्यानम्' (वा. ८-४-३४) इति च णत्वनिषेध:।

१३ णिङन्तात्– णिजन्ताच्च 'अतो यत्' (३-१-९७) इति यत्।

१४ शुद्धाद्धातो: 'पोरदुपधात्' (३-१-९८) इति यत्।

१५ णिङभावपक्षे धातोरुदित्त्वात् 'उदितो वा' (७-२-५६) इति क्त्वायामिड्विकल्प:। इडभावपक्षे दीर्घे रूपम्।

१६ 'न कम्यमि–' (ग.सू. भ्वादौ) इति मित्वनिषेधात् णिङन्तात् णिजन्ताच्च न दीर्घविकल्प:।

१७ 'कमेरठ:' (द.उ. ५-५) इत्यठ: प्रत्यय:। कमठ: = कूर्म:, भिक्षाभाजनं वा।

१८ औणादिके (द.उ. १-११२) कुप्रत्यये तुगागम:। कन्तु: = कामी।

१९ औणादिके (द.उ. ८-१०७) कलप्रत्यये रूपम्। कमलम् = पद्मम्।

२० औणादिके (द.उ. ९-२१) सप्रत्यये रूपम्।

५ ओणतु-तात्। ६ औणत्। ७ ओणेत्। ८ ओण्यात्। ९ औणीत्। १० ओणिष्यत्। इत्यादि। ओणकः-णिका, ओणिता-त्री। इत्यादि।

**( ४५५ ) शोणृ—वर्णगत्योः**। (लाल होना, जाना)। अक.। सेट्। परस्मै.। शोणति। शुशोण। 'खेलति' वत्।

**( ४५६ ) श्रोणृ—संघाते**। (एकत्र करना, बटोरना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.। श्रोणति। शुश्रोण शुश्रोणतुः। 'खेलति' वत्।

**( ४५७ ) श्लोणृ—संघाते**। (एकत्र होना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.। श्लोणति। शुश्लोण। 'खेलति' वत्।

**( ४५८ ) पैणृ—गतिप्रेरणश्लेषणेषु**। **प्रैणृ**—इत्यपि (जाना, आज्ञा करना, स्पर्श करना, आलिङ्गन करना)। सकर्म.। सेट्। पर.। पैणति। पिपैण। खेलति वत्। एवं प्रैणति इत्यादि।

**( ४५९ ) ध्रन—शब्दे**। (शब्द करना)। **वण**—इत्यपि केचित्। सक.। सेट्। पर.। ध्रणति। दध्राण। 'गदति' (५४) वत्। वणति। ववाण। इत्यादि।

**( ४६० ) कनी—दीप्तिकान्तिगतिषु**। (चमकना, प्रकाशित होना, समीप जाना या आना)। अकर्म.। सेट्। पर.। कनति। चकान, चकनतुः। इत्यादि। 'गदति' (५४) वत्।

**( ४६१-४६२ ) ष्टन-वन—शब्दे** (शब्द करना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.। स्तनति। तस्तनतुः। इत्यादि। 'गदति' (५४) वत्। एवं वनति। ववान। इत्यादि।

**( ४६३-४६४ ) वन-षण—सम्भक्तौ**। (सेवा करना, चाकरी करना, आपद्ग्रस्त होना)। सक.। सेट्। परस्मै.। वनति। ववान, ववनतुः। इत्यादि 'गदति' (५४) वत्। एवं सनति। ससान। इत्यादि।

**( ४६५ ) अम—गत्यादिषु**। आदिपदेन शब्दसम्भक्तिरिति ज्ञेयम्। (जाना, शब्द करना, सेवा करना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। १ अमति। २ आम। ३ अमिता। ४ अमिष्यति। ५ अमतु-तात्। ६ आमत्। ७ अमेत्। ८ अम्यात्। ९ आमीत्। १० आमिष्यत्।

**णिचि**—आमयति। आमयते। **सनि**—अमिमिषति। **कृत्सु**—अमनीयम्, अमित्वा, अमन्, अमितुम्, अमकः-मिका, अमिता-त्री, आमयिता-त्री, अमन्-न्ती, आमयन्-न्ती, अमिष्यन्-न्ती-ती, आम्यमानः, आमयिष्यमानः, आन्-आमौ-आमः, अमितम्, अमितवान्, अमः, आमः, अम्यम्, आम्यम्, अम्यमानः, आन्ति, समम्य।

**( ४६६-४६७ ) द्रम-हम्म—गतौ**। (जाना)। द्रमति। हम्मति। व्रजति (२५३) वत्।

**( ४६८ ) मीमृ—गतौ शब्दे च**। (जाना, शब्द करना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। ऋदित् १ मीमति। २ मिमीम मिमीमतुः। ३ मीमिता। ९ अमीमीत्। 'क्रीडति' (३५०) वत्।

**कृत्सु**—मीमकः-मिका, मीमिता-त्री, मीमयिता-त्री, प्रमीन्-प्रमीमौ-प्रमीमः, मीमन्-न्ती, मीमयन्-न्ती, मीमिष्यन्-न्ती-ती, मीमितम्, मीमितव्यम्, मीमयितव्यम्, मीमनीयम्, मीम्यम्, मीम्यमानः, मीमितुम्, मीमनम्, मीमित्वा, प्रमीम्य।

**(४६९-४७२) चमु-छमु-जमु-झमु—अदने**।(खाना)। **आ** + चम = आचमन करना।

१ चमति। २ चचाम चेमतुः चेमुः। ३ चमिता। ४ चमिष्यति। ५ चमतु-तात्। ६ अचमत्। ७ चमेत्। ८ चम्यात्। ९ अचमीत्। १० अचमिष्यत्।

**कर्मणि**—चम्यते। २ चेमे। ९ अचमि। **णिचि**—चामयति। **सनि**—चिचमिषति। **यङि**—चञ्चम्यते। **यङ्लुकि**—चञ्चमीति-चञ्चन्ति। **कृत्सु**—चमनीयम्, चमितव्यम्, चाम्यम्, चान्तः, चमनम्, चमित्वा, चान्त्वा, चमितुम्। एवं छमति, जमति। झमति। इत्यादि। **जिमु**—इत्यपि अदने-इति केचित्। जमति इत्यादि।

**(४७३) क्रमु—पादविक्षेपे**। (निर्भयता से जाना, रक्षण करना, बढ़ना)। सक.। सेट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | क्रामति | क्रामतः | क्रामन्ति | प्र. |
| | क्रामसि | क्रामथः | क्रामथ | म. |
| | क्रामामि | क्रामावः | क्रामामः | उ. |
| लिट् | चक्राम | चक्रमतुः | चक्रमुः | प्र. |
| | चक्रमिथ | चक्रमथुः | चक्रम | म. |
| | चक्राम-चक्रम | चक्रमिव | चक्रमिम | उ. |
| लुट् | क्रमिता | क्रमितारौ | क्रमितारः | प्र. |
| | क्रमितासि | क्रमितास्थः | क्रमितास्थ | म. |
| | क्रमितास्मि | क्रमितास्वः | क्रमितास्मः | उ. |
| लृट् | क्रमिष्यति | क्रमिष्यतः | क्रमिष्यन्ति | प्र. |
| | क्रमिष्यसि | क्रमिष्यथः | क्रमिष्यथ | म. |
| | क्रमिष्यामि | क्रमिष्यावः | क्रमिष्यामः | उ. |
| लोट् | क्रामतु-क्राम्यात् | क्रामताम् | क्राम्यन्तु | प्र. |
| | क्राम-क्राम्यात् | क्रामतम् | क्रामत | म. |
| | क्रामाणि | क्रामाव | क्रामाम | उ. |

पक्षे—**प्र.** क्राम्यतु-क्राम्यतात् क्राम्यताम् क्राम्यन्तु, **म.** क्राम्य-क्राम्यतात् क्राम्यतम् क्राम्यत, **उ.** क्राम्याणि क्राम्याव क्राम्याम।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लङ् | अक्रामत् | अक्रामताम् | अक्रामन् | प्र. |
| | अक्रामः | अक्रामतम् | अक्रामत | म. |
| | अक्रामम् | अक्रामाव | अक्रामाम | उ. |

पक्षे—**प्र.** अक्राम्यत् अक्राम्यताम् अक्राम्यन्, **म.** अक्राम्यः अक्राम्यतम् अक्राम्यत, **उ.** अक्राम्यम् अक्राम्याव अक्राम्याम।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| वि. लि. | क्रामेत् | क्रामेताम् | क्रामेयुः | प्र. |
| | क्रामेः | क्रामेतम् | क्रामेत | म. |
| | क्रामेयम् | क्रामेव | क्रामेम | उ. |

पक्षे—**प्र.** क्राम्येत् क्राम्येताम् क्राम्येयुः, **म.** क्राम्येः क्राम्येतम् क्राम्येत, **उ.** क्रम्येयम् क्राम्येव क्राम्येम।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आ. लि. | क्रम्यात् | क्रम्यास्ताम् | क्रम्यासुः | प्र. |
| | क्रम्याः | क्रम्यास्तम् | क्रम्यास्त | म. |
| | क्रम्यासम् | क्रम्यास्व | क्रम्यास्म | उ. |
| लुङ् | अक्रमीत् | अक्रमिष्टाम् | अक्रमिषुः | प्र. |
| | अक्रमीः | अक्रमिष्टम् | अक्रमिष्ट | म. |
| | अक्रमिषम् | अक्रमिष्व | अक्रमिष्म | उ. |
| लृङ् | अक्रमिष्यत् | अक्रमिष्यताम् | अक्रमिष्यन् | प्र. |
| | अक्रमिष्यः | अक्रमिष्यतम् | अक्रमिष्यत | म. |
| | अक्रमिष्यम् | अक्रमिष्याव | अक्रमिष्याम | उ. |

**कर्मणि**—१ क्रम्यते। २ चक्रमे। ५ क्रम्यताम्। ६ अक्रम्यत। ७ क्रम्येत। ९ अक्रमि। **णिचि**—क्रमयति-ते। **सनि**—चक्रमिषति। चिक्रंसते। **यङि**—चङ्क्रम्यते। **यङ्लुकि**—चङ्क्रमिति-चक्रन्ति। **आ**—आक्रमते। **उत्**—उत्क्रमणे। उत्क्रमणे-उत्क्रामति। **अनु**—अनुसरणे। अनुक्रामति। **अति**—लङ्घने। अतिक्रामति। **कृत्सु**—क्रम्यम्, क्रान्त्वा-क्रन्त्वा-क्रमित्वा, क्रमः, क्रमितव्यम्, क्रमनीयम्, क्रमकः-मिका, क्रन्ता प्रक्रन्ता, क्रमिता-सङ्क्रमिता-त्री, क्रमयिता-त्री, काम्यन्-क्रामन्-न्ती, क्रमयन्-न्ती, क्रमिष्यन्-न्ती-ती, क्रममाणः, उपक्रममाणः, पराक्रममाणः, क्रम्यमाणः, क्रमयमाणः, क्रंस्यमाणः, प्रकान्-प्रकामौ-प्रकामः, दूरक्राः-दधिक्राः, वनक्रान्, क्रन्तम्, क्रान्तवान्, नक्रः, त्रिविक्रमः, प्रक्रम्य, विक्रम्य, क्रामम्।

**(४७४) अय—गतौ।** (जाना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। १ अयते। २ अयाञ्चक्रे-बभूव-आस। ३ अयिता। ४ अयिष्यते। ५ अयताम्। ६ आयत। ७ अयेत्। ८ अयिषीष्ट। ९ आयिष्ट। ढ्वम्-ध्वम्। १० आयिष्यत।

**कर्मणि**—अय्यते। ९ आयि। **णिचि**—आययति-ते। **सनि**—अयिषिषते। **कृत्सु**—अयितव्यम्, अयनीयम्, अयितुम्, अयित्वा, अय्यम्, अयितः, अयमानः, पलाय्य, पलायते। आयकः-यिका, आयिता-त्री, प्लायमानः, पलायमानः, अयमानः, आययमानः, अयिष्यमाणः, अत्-अतौ-अतः, अयितम्, अयितवान्, अयः, आयः, आय्यम्, ईषदयः-दुरयः, स्वयः, अतिः, आयना।

**(४७५-४८०) वय-पय-मय-चय-तय-णय—(गतौ)** ।(जाना)। सक.। सेट्। आत्मने.। वयते। ववये। एवं पयते। मयते। चयते। तयते। णयते। सर्वं 'दधति' (८) वत्।

(४८१) **दय—दानगतिरक्षणहिंसादानेषु।** आदानं = ग्रहणम्। (दान-देना, जाना, पालन करना, रक्षा करना, मार डालना, दुख देना, ग्रहण करना)। सक.। सेट्। आत्म.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | दयते | दयेते | दयन्ते | प्र. |
| | दयसे | दयेथे | दयध्वे | म. |
| | दये | दयावहे | दयामहे | उ. |
| लिट् | दयाञ्चक्रे | दयाञ्चक्राते | दयाञ्चक्रिरे | प्र. |
| | दयाञ्चकृषे | दयाञ्चक्राथे | दयाञ्चकृढ्वे | म. |
| | दयाञ्चक्रे | दयाञ्चकृवहे | दयाञ्चकृमहे | उ. |
| लुट् | दयिता | दयितारौ | दयितारः | प्र. |
| | दयितासे | दयितासाथे | दयिताध्वे | म. |
| | दयिताहे | दयितास्वहे | दयितास्महे | उ. |
| लृट् | दयिष्यते | दयिष्येते | दयिष्यन्ते | इत्यादि। |
| लोट् | दयताम् | दयेयाताम् | दयन्ताम् | प्र. |
| | दयस्व | दयेयाथाम् | दयध्वम् | म. |
| | दयै | दयावहै | दयामहै | उ. |
| लङ् | अदयत | अदयेताम् | अदयन्त | प्र. |
| | अदयथाः | अदयेथाम् | अदयध्वम् | म. |
| | अदये | अदयावहै | अदयामहै | उ. |
| वि. लि. | दयेत | दयेयाताम् | दयेरन् | प्र. |
| | दयेथाः | दयेयाथाम् | दयेध्वम् | म. |
| | दयेय | दयेवहि | दयेमहि | उ. |
| आ. लि. | दयिषीष्ट | दयिषीयास्ताम् | दयिषीरन् | प्र. |
| | दयिषीष्ठाः | दयिषीयास्थाम् | दयिषीध्वम्-ढ्वम् | म. |
| | दयिषीय | दयिषीवहि | दयिषीमहि | उ. |
| लुङ् | अदयिष्ट | अदयिषाताम् | अदयिषत | प्र. |
| | अदयिष्ठाः | अदयिषाथाम् | अदयिड्ढ्वम्-ध्वम् | म. |
| | अदयिषि | अदयिष्वहि | अदयिष्महि | उ. |
| लृङ् | अदयिष्यत | अदयिष्येताम् | अदयिष्यन्त इत्यादि। | |

**कर्मणि**—दय्यते। **णिचि**—दाययति। **कृत्सु**—दायकः-यिका, दयिता-त्री, दाययिता-त्री, दाययन्-न्ती, दाययिष्यन्-न्ती-ती, (रामस्य) दयमानः,[1] दायमानः, दयिष्यमाणः, दाययिष्यमाणः,

१ कर्तरि शानच्। 'अधीगर्थदयेषां कर्मणि' (२-३-५२) इति कर्मणि शेषे षष्ठी। अन्यत्र द्वितीयैव। 'राम दयमानः' इति।

सुदत्[1]-सुदतौ-सुदतः, दयितम्, तः, दायितः, दयः, दयिता,[2] दयालुः[3], रत्नदायः,[4] दयितव्यम्, दायितव्यम्, दयनीयम्, दायनीयम्, दाय्यम्, दय्यमानः, दायमानः, दायः, दयितुम्, दायितुम्, दया[5], दायना, दयनम्, दायनम्, दयित्वा, दाययित्वा, प्रदय्य, प्रदाय्य। प्रदिदयिष्य प्रददाय्य।

**( ४८२ ) रय—गतौ**। लय च। (जाना)। सक.। सेट्। आत्मने.। रयते। रेये। 'दधति' (८) वत्।

**( ४८३ ) ऊयी—तन्तुसन्ताने**। (सीना, बुनना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.।

१ ऊयते। २ ऊयाञ्चक्रे। ३ ऊयिता। ४ ऊयिष्यते। ५ ऊयताम्। ६ औयत। ७ ऊयेत। ८ ऊयिषीष्ट। ९ औयिष्ट। १० औयिष्यत।

**कर्मणि**—ऊयते। **कृत्सु**—ऊयकः-यिका, ऊयिता-त्री, ऊययिता-त्री, ऊययन्-न्ती, ऊययिष्यन्-न्ती-ती, ऊयमानः, ऊययमानः, ऊयिष्यमाणः, ऊययिष्यमाणः, ऊः-ऊवौ-ऊवः, ऊतम्-तः, ऊयितम्-तः-तवान्, ऊयः, ऊयितव्यम्, ऊययितव्यम्, ऊयनीयम्, ऊय्यम्, ऊय्यमानः, ऊयितुम्, ऊया, ऊतिः, ऊयनम्, ऊयित्वा, समूय्य।

**( ४८४ ) पूयी—विशरणे**। दुर्गन्धे च। (तोड़ना, चीरना, दुर्गन्ध आना, बदबू आना)। अक.। सेट्। आत्मने.। १ पूयते। २ पुपूये। ३ पूयिता। ४ पूयिष्यते। ५ पूयताम्। ६ अपूयत। ७ पूयेत। ८ पूयिषीष्ट। ९ अपूयिष्ट। **म.** ढ्वम्-ध्वम्। १० अपूयिष्यत।

**भावे**—पूय्यते। **णिचि**—पूययति-ते। **सनि**—पुपूयिषते। **यङि**—पोपूय्यते। **यङ्लुकि**—पोपूयीति-पोपोत्ति। **कृत्सु**—पूयित्वा, पूतिः, पूयः, पूयितव्यम्, पूयणीयम्, पूय्यम्, पूयकः-यिका, पूयिता-त्री, पूययन्-त्री, पूयमानः, पूययमानः, पूयिष्यमाणः, सुपूः, सुपुवौ-सुपुवः, पूतम्, पूतः, पूतवान्, पूयितः, पूय्यम्, पूय्यमानः, पूयितुम्, पूयनम्।

**( ४८५ ) क्नूयी—शब्दे उन्दने च**। (शब्द करना, गीला होना)। शब्दे - अकर्म.। उन्दने - सकर्म.। सेट्। १ क्नूयते। चूक्नूये। ३ क्नूयिता। ८ क्नूयिषीष्ट। ९ अक्नूयिष्ट। 'पूयति' (४८४) वत्।

**( ४८६ ) क्ष्मायी—विधूनने**। (हिलना, कांपना, हिलाना, कपाना)। सक.। सेट्। आत्मने.। क्ष्मायते। चक्ष्माये। 'गादति' (४) वत्।

**( ४८७ ) स्फायी—वृद्धौ**। (मोटा होना, बढ़ना)। अकर्म.। सेट्। आत्मने.। १ स्फायते। २ पस्फाये। ३ स्फायिता। ४ स्फायिष्यते। ८ स्फायिषीष्ट। ९ अस्फायिष्ट। १० अस्फायिष्यत।

---

१ क्विपि, धातुयकारस्य 'लोपो व्योर्वलि' (६-१-६६) इति लोपे, तुक्।

२ तच्छीलादिषु कर्तृषु 'अनुदात्तेश्च हलादेः' (३-२-१४९) इति प्राप्तस्य युचः 'न यः' (३-२-१५२) इति निषेधात्, 'तृन्' (३-२-१३५) इत्यौत्सर्गिकस्तृन्।

३ 'स्पृहिगृहिपतिदयि–' (३-२-१५८) इत्यालुच् तच्छीलादिषु कर्तृषु।

४ 'अण् कर्मणि च' (३-३-१२) इत्यणि रूपमेवम्।

५ 'भिदादेः' (३-३-१०४) आकृतिगणत्वात् स्त्रियामङि रूपमेवम्।

**भावे**—स्फाय्यते। **णिचि**—स्फाययति। **सनि**—पिस्फायिषते। **यङि**—पास्फाय्यते। **यङ्लुकि**—पास्फायीति-पास्फाति। **कृत्सु**—स्फायकः-यिका, स्फावकः[1]-विका, स्फाय्यम्, स्फायमानः, स्फायितव्यम्, स्फायनीयम्, स्फीतः, स्फीतवान्, स्फायितुम्, स्फायित्वा, विस्फाय्य, स्फारः, स्फीतम्[2]-तः, स्फातः, स्फातिः, स्फिरम्[3]-स्फारम्[4]।

**(४८८) ओप्यायी—वृद्धौ।** (बढ़ना)। अकर्म.। सेट्। आत्मने.। ओदित्, ईदिच्च। १ प्यायते। २ पिप्ये। ३ प्यायिता। ८ प्यायिषीष्ट। ९ अप्यायिष्ट।

**यङि**—पेपीयते। **यङ्लुकि**—पाप्याति।

**(४८९) तायृ—संतापपालनयोः।** (संरक्षण करना, पालन करना।) सकर्म.। सेट्। आत्मने.। तायते। तताये। 'स्फायी' (४८७) वत्।

**(४९०) शल—चलनसंवरणयोः।** (चलना, ढकना)। सकर्म.। चलनेऽकर्म.। सेट्। आत्मने.। शलते। शेले। 'दधति' (८) वत्।

**(४९१-४९२) वल-वल्ल—संवरणे सञ्चरणे च।** (आच्छादित करना, ढकना, घेरना, जाना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। वलते। ववले। इत्यादि 'चकति' (९३) वत्। वल्लते। इत्यादि 'कत्थति' (३६) वत्।

**(४९३-४९४) मल-मल्ल—धारणे।** (धारण करना)। सक.। सेट्। आत्मने.। मलते। 'चकति' (९३) वत्। मल्लते। कत्थति (३७) वत्।

**(४९५-४९६) भल-भल्ल—परिभाषणहिंसादानेषु।** (बोलना, मारना, देना)। सक.। सेट्। आत्मने.। भलते। बभले। चकति (९३) वत्। भल्लते। बभल्ले। 'कत्थति' (३७) वत्।

**(४९७) कल—शब्दसंख्यानयोः।** (शब्द करना, गिनना।) शब्देऽकर्म.। संख्याने सकर्म.। सेट्। आत्मने.। १ कलते। २ चकले चकलाते चकलिरे। ३ कलिता। ४ कलिष्यते। ५ कलताम्। ६ अकलत। ७ कलेत। ८ कलिषीष्ट। ९ अकलिष्ट। १० अकलिष्यत।

**कृत्सु**—कालकः-लिका, कलिता-त्री, कालयिता-त्री, कालयन्-न्ती, कालयिष्यन्-न्ती-ती, कलमानः, कालयमानः, चिकलिषमाणः, चाकल्यमानः, कलिष्यमाणः, कालयिष्यमाणः, कल्-कलौ-कलः, कलितम्-तः, कलितः-तम्, कलः, विकलः, सकलः, कलनः[5] कालः, चिकलिषुः, चिकालयिषुः, चाकलः, कलितव्यम्, कालयितव्यम्, प्रनिकलनीयम्[6], प्रनिकालनीयम्, काल्यम्,

१ 'स्फायो वः' (७-३-४१) इति णौ परतः यकारस्य वकारे रूपमेवम्।

२ 'स्फायः स्फी—' (६-१-२२) इति निष्ठायां स्फीभावः। ईदित्वं स्फायेरादेशानित्यत्वे लिङ्गम् 'स्फातः'। इति क्षीरस्वामी।

३ औणादिके (द.उ. ८-२७) इति किरच् प्रत्यये टिलोपे च रूपमेवम्।

४ 'स्फायि—' (द.उ. ८-३१) इत्यादिना रक् प्रत्यये रूपम्।

५ 'अनुदात्तेतश्च हलादेः' (३-२-१४९) इति युच् ताच्छीलिकः।

६ 'शेषे विभाषा—' (८-४-१८) इति णत्वनिषेधः।

कल्यमानः, काल्यमानः, कालः[1]-काली, कलितुम्, कालयितुम्, कल्तिः, कला[2], कालना, कलनम्, कालनम्, कलित्वा, कालयित्वा, संकल्य, प्रकाल्य।

(४९८) **वल्ल—अव्यक्ते शब्दे।** अस्पष्ट इति स्वामी। (अस्पष्ट बोलना, गूंगा होना, चुप होना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। वल्लते। 'कत्थति' (३७) वत्।

(४९९) **देवृ—देवने।** (खेलना, क्रीडा करना)। अकर्म.। सेट्। आत्म.। १ देवते। २ दिदेवे। ३ देविता। ४ देविष्यते। ५ देवताम्। ६ अदेवत। ७ देवेत। ८ देविषीष्ट। ९ अदेविष्ट। १० अदेविष्यत। इत्यादि। 'वेष्टति' (२५५) वत्।

**कृत्सु**—देवनीयम्, देवितुम्, देवनम्, देवित्वा, देवयित्वा, देवन्-न्ती, देवमानः, देवयिष्यमाणः, देवः।

(५००) **तेवृ—देवने।** (खेलना)। तेवते। तितेवे। 'देवति' (४९९) वत्। **कृत्सु**—तेवकः-विका, तेविता-त्री, तेवन्-न्ती, तेवितुम्, तेवितव्यम्, तेवयितव्यम्।

(५०१-५०६) **षेवृ-(सेव्) -गेवृ-ग्लेवृ-पेवृ-मेवृ-म्लेबृ—सेवने। शेवृ-खेवृ-क्लेवृ**—इत्येके। (सेवा करना, चाकरी करना)। अक.। सेट्। आत्मने.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | सेवते | सेवेते | सेवन्ते | प्र. |
| | सेवसे | सवेथे | सेवध्वे | म. |
| | सेवे | सेवावहे | सेवामहे | उ. |
| लिट् | सिषेवे | सिषेवाते | सिषेविरे | प्र. |
| | सिषेविथे | सिषेवाथे | सिषेविध्वे-ढ्वे | म. |
| | सिषेवे | सिषेविवहे | सिषेविमहे | उ. |
| लुट् | सेविता | सेवितारौ | सेवितारः | प्र. |
| | सेवितासे | सिवातासाथे | सेविताध्वे | म. |
| | सेविताहे | सेवितास्वहे | सेवितास्महे | उ. |
| लृट् | सेविष्यते | सेविष्येते | सेविष्यन्ते | इत्यादि। |
| लोट् | सेवताम् | सेवेताम् | सेवन्ताम् | प्र. |
| | सेवस्व | सेवेथाम् | सेवध्वम् | म. |
| | सेवै | सेवावहै | सेवामहै | उ. |
| लङ् | असेवत | असेवेताम् | असेवन्त | प्र. |
| | असेवथाः | असेवेथाम् | असेवध्वम् | म. |
| | असेवे | असेवावहि | असेवामहि | उ. |
| वि. लि. | सेवेत | सेवेयाताम् | सेवेरन् | प्र. |
| | सेवेथाः | सेवेयाथाम् | सेवेध्वम् | म. |
| | सेवेय | सेवेवहि | सेवेमहि | उ. |

१ 'अकतरि च कारके संज्ञायाम्' (३-३-१९) इति घञ्। स्त्रियां 'जानपद–' (४-१-४२) इत्यादिना ङीष् वर्णे विवक्षिते काली। अन्यत्र काला।

२ बाहुलकात् अङ्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आ. लि. | सेविषीष्ट | सेविषीयास्ताम् | सेविषीरन् | प्र. |
| | सेविषीष्ठाः | सेविषीयास्थाम् | सेविषीध्वम्-ढ्वम् | म. |
| | सेविषीय | सेविषीवहि | सेविषीमहि | उ. |
| लुङ् | असेविष्ट | असेविषताम् | असेविषत | प्र. |
| | असेविष्ठाः | असेविषाथाम् | असेविड्ढ्वम्-ढ्वम्-ध्वम् | म. |
| | असेविषि | असेविष्वहि | असेविष्महि | उ. |
| लृङ् | असेविष्यत | असेविष्येताम् | असेविष्यन्त इत्यादि। | |

**कृत्सु**—सेवकः-विका, सेवका[१], सेविता-त्री, सेवयिता-त्री, सेवन्-सेवयन्-न्ती, सेविष्यन्-सेवयिष्यन्। सेवितुम्, सेवयितुम्, सेवित्वा-सेवयित्वा, सेवमानः, सेवयिष्यमाणः, सेवा,[२] सयूः[३], अनिलसेवनम्[४], सेविष्णुः,[५] परिषेवमाणः[६]-निषेवमाणः-विषेवमाण। **सेवृ**[७]-सेवायाम्- इति केचित्। एवं गेवते। ग्लेवते। शेवते। खेवते। क्लेवते इत्यादीनां ज्ञेयम्।

**(५०७) रेवृ—प्लवगतौ।** (उड़कर जाना, तैरकर पार जाना)। अकर्म.। सेट्। आत्म.। रेवते। रिरेवे। 'देवति' (४९९) वत्।

**(५०८) मव्य—बन्धने।** (बांधना, रोकना)। सक.। सेट्। पर.। मव्यति। ममव्य। मव्यिता। 'नर्दति' (५६) वत्।

**(५०९) सूक्ष्य—ईर्ष्यार्थे।** (ईर्ष्या करना, द्वेष करना)। अकर्म.। सेट्। पर.। १ सूक्ष्यति। २ सूषूक्ष्य। ४ सूक्ष्यिष्यति। ८ सूक्ष्यात्। ९ असूक्ष्यीत्।

**कृत्सु**—सूक्ष्यकः-क्ष्यिका, सूक्ष्यिता-त्री, सूक्ष्ययिता-त्री, सूक्ष्यितव्यम्, सूक्ष्ययितव्यम्, सूक्ष्यणीयम्, सूक्ष्यम्, सूक्ष्यमाणः, सूक्ष्यित्वा। इत्यादि।

**(५१०-५११) ईक्ष्य-ईर्ष्य—ईर्ष्यायाम्,** (द्वेष करना, ईर्ष्या करना)। अक.। सेट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | ईर्ष्यति | ईर्ष्यतः | ईर्ष्यन्ति | प्र. |
| | ईर्ष्यसि | ईर्ष्यथः | ईर्ष्यथि | म. |
| | ईर्ष्यामि | ईर्ष्यावः | ईर्ष्यामः | उ. |

१ क्षिपकादित्वात् (ग.सू. ७-३-४५) संज्ञायां इत्व निषेधः। अन्यत्र सेविका।
२ 'गुरोश्च हलः' (३-३-१०३) इति स्त्रियामकारप्रत्ययः।
३ क्विपि, ऊठि अयादेशे च रूपमेवम्।
४ कर्मणि च; येन संस्पर्शात् कर्तुः शरीरसुखम् (३-३-११६) इति कर्मण्युपपदे ल्युट्। 'उपपदमतिङ्' (२-२-१९) इति समासः।
५ 'भुवश्च' (३-३-१३८) इत्यत्र चकारस्यानुक्तसमुच्चयार्थकत्वात् तच्छीलादिषु कर्तृषु धातोरस्मादपि इष्णुच् प्रत्ययः।
६ 'परिनिविभ्यः सेव—' (८-३-७०) इति षत्वम्।
७ मैत्रेयादयः दन्त्यादिं पठन्ति; तत् षोपदेशसोपदेशव्यवस्थापकभाष्यविरोधदुपेक्ष्यम्। तथा च भाष्यम् (६-१-६४) 'अज्दन्त्यापराः सादयः षोपदेशाः, स्मिङ्स्वादिस्विदिस्वञ्जिस्वपयश्चः सृपिसृजिस्तृस्त्यासेकृसृवर्जम्, इति।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लिट् | ईर्ष्याञ्चकार | ईर्ष्याञ्चक्रतुः | ईर्ष्याञ्चक्रुः इत्यादि । | |
| लुट् | ईर्ष्यिता | ईर्ष्यितारौ | ईर्ष्यितारः | प्र. |
| | ईर्ष्यितासि | ईर्ष्यितास्थः | ईर्ष्यितास्थ | म. |
| | ईर्ष्यितास्मि | ईर्ष्यितास्वः | ईर्ष्यितास्मः | उ. |
| लृट् | ईर्ष्यिष्यति | ईर्ष्यिष्यतः | ईर्ष्यिष्यन्ति इत्यादि । | |
| लोट् | ईर्ष्यतु-तात् | ईर्ष्यताम् | ईर्ष्यन्तु | प्र. |
| | ईर्ष्य-तात् | ईर्ष्यतम् | ईर्ष्यत | म. |
| | ईर्ष्याणि | ईर्ष्याव | ईर्ष्याम | उ. |
| लङ् | ऐर्ष्यत् | ऐर्ष्यताम् | ऐर्ष्यन् | प्र. |
| | ऐर्ष्यः | ऐर्ष्यतम् | ऐर्ष्यत | म. |
| | ऐर्ष्यम् | ऐर्ष्याव | ऐर्ष्याम | उ. |
| वि. लि. | ईर्ष्येत् | ईर्ष्येताम् | ईर्ष्येयुः | प्र. |
| | ईर्ष्येः | ईर्ष्येतम् | ईर्ष्येत | म. |
| | ईर्ष्येयम् | ईर्ष्यास्ताम् | ईर्ष्यासुः | उ. |
| आ. लि. | ईर्ष्यात् | ईर्ष्यास्ताम् | ईर्ष्यासुः | प्र. |
| | ईर्ष्याः | ईर्ष्यास्तम् | ईर्ष्यास्त | म. |
| | ईर्ष्यासम् | ईर्ष्यास्व | ईर्ष्यास्म | उ. |

पक्षे—इर्ष्यात् ईर्ष्यास्ताम् ईर्ष्यासुः इत्यादि ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुङ् | ऐर्ष्यीत् | ऐर्ष्यिष्टाम् | ऐर्ष्यिषुः | प्र. |
| | ऐर्ष्यीः | ऐर्ष्यिष्टम् | ऐर्ष्यिष्ट | म. |
| | ऐर्ष्यिषम् | ऐर्ष्यिष्व | ऐर्ष्यिष्म | उ. |
| लृङ् | ऐर्ष्यिष्यत् | ऐर्ष्यिष्यताम् | ऐर्ष्यिष्यन् | प्र. |
| | ऐर्ष्यिष्य | ऐर्ष्यिष्यतम् | ऐर्ष्यिष्यत | म. |
| | ऐर्ष्यिष्यम् | ऐर्ष्यिष्याव | ऐर्ष्यिष्याम | उ. |

**कर्मणि**—ईर्ष्यते । ९ ऐर्ष्यि । **णिचि**—ईर्ष्ययति । **सनि**—ईर्ष्यियिषति-ईर्ष्यिषिषति । **कृत्सु**—ईर्ष्यकः-र्ष्यिका, ईर्ष्यिता-त्री, ईर्ष्ययिता-त्री, ईर्ष्यन्-न्ती, ईर्ष्ययन्-न्ती, ईर्ष्यिष्यन्-न्ती-ती, ईर्ष्ययिष्यन्-न्ती-ती, ईर्ष्यमाणः, ईर्ष्ययिष्यमाणः, ईट्[1]-ईर्ष्यौ-ईर्ष्यः, इर्ष्यितम्-तः-तवान्, ईर्ष्यः, ईर्ष्यितव्यम्, ईर्ष्ययितव्यम्, ईर्ष्यणीयम्, ईर्ष्यम्, ईर्ष्ययमाणः, ईर्ष्यितुम्, ईर्ष्यायितुम्, ईर्ष्या, ईर्ष्यणा, ईर्ष्यणम्, ईर्ष्यित्वा, ईर्ष्ययित्वा, समीर्ष्य्य ।

एवं १ ईर्क्ष्यति । ईर्क्ष्याञ्चकार । ३ ईर्क्ष्यिता । ४ ईर्क्ष्यिष्यति । ५ ईर्क्ष्यतु । ६ एर्क्ष्यत् । ७ ईर्क्ष्येत् । ८ ईर्क्ष्यात्-ईर्क्ष्यात् । ९ ऐर्क्ष्यीत् । १० ऐर्क्ष्यिष्यत् । इत्यादि ।

१ 'लोपो व्योर्वलि' (६-१-६६) इति वलि लोपे, 'झलां जशोन्ते' । (८-२-३९) जश्त्वम् । 'रात् सस्य' (८-२-२४) इति नियमात् संयोगान्तलोपो न ।

**(५१२) हय—गतौ।** (जाना) सक.। सेट्। पर.। १ हयति। २ जहाय जहयतुः। ९ अहयीत्। 'गदति' (५२) वत्।

**(५१३) शुच्य—अभिषवे।** अभिषवः-स्नापनं स्नानं सुरासन्धानञ्च। (स्नान करना, सार निकालना, मथना, छापना)। सक.। स्नानेऽकर्म.। सेट्। पर.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | शुच्यति | शुच्यतः | शुच्यन्ति | प्र. |
| | शुच्यसि | शुच्यथः | शुच्यथ | म. |
| | शुच्यामि | शुच्यावः | शुच्यामः | उ. |
| लिट् | शुशुच्य | शुशुच्यतुः | शुशुच्युः | प्र. |
| | शुशुच्यिथ | शुशुच्यथुः | शुशुच्य | म. |
| | शुशुच्य | शुशुच्यिव | शुशुच्यिम | उ. |
| लुट् | शुचिता | शुचितारौ | शुचितारः | प्र. |
| | शुचितासि | शुचितास्थः | शुचितास्थ | म. |
| | शुचितास्मि | शुचितास्वः | शुचितास्मः | उ. |
| लृट् | शुच्यिष्यति | शुचिष्यतः | शुच्यिष्यन्ति | प्र. |
| | शुच्यिष्यसि | शुच्यिष्यथः | शुच्यिष्यथ | म. |
| | शुच्यिष्यामि | शुच्यिष्यावः | शुच्यिष्यामः | उ. |
| लोट् | शुच्यतु-शुच्यतात् | शुच्यताम् | शुच्यन्तु | प्र. |
| | शुच्य-शुच्यतात् | शुच्यतम् | शुच्यत | म. |
| | शुच्यानि | शुच्याव | शुच्याम | उ. |
| लङ् | अशुच्यत् | अशुच्यताम् | अशुच्यन् | प्र. |
| | अशुच्यः | अशुच्यतम् | अशुच्यत | म. |
| | अशुच्यम् | अशुच्याव | अशुच्याम | उ. |
| वि. लि. | शुच्येत् | शुच्येताम् | शुच्येयुः | प्र. |
| | शुच्येः | शुच्येतम् | शुच्येत | म. |
| | शुच्येयम् | शुच्येव | शुच्येम | उ. |
| आ. लि. | शुच्यात् | शुच्यास्ताम् | शुच्यासुः | प्र. |
| | शुच्याः | शुच्यास्तम् | शुच्यास्त | म. |
| | शुच्यासम् | शुच्यास्व | शुच्यास्म | उ. |

पक्षे—शुच्य्यात् शुच्य्यास्ताम् शुच्य्यासुः इत्यादि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुङ् | अशुच्यीत् | अशुच्यिष्टाम् | अशुच्यिषुः | प्र. |
| | अशुच्यीः | अशुच्यिष्टम् | अशुच्यिष्ट | म. |
| | अशुच्यिषम् | अशुच्यिष्व | अशुच्यिष्म | उ. |
| लृङ् | अशुच्यिष्यत् | अशुच्यिष्यताम् | अशुच्यिष्यन् | इत्यादि। |

**कृत्सु**—शुच्यकः-च्यिका, शुच्यिता-त्री, शुच्ययिता-त्री, शुच्यन्-न्ती, शुच्यन्-न्ती, शुच्यिष्यन्-न्ती, शुच्यमानः, शुच्ययिष्यमाणः, शुच्यितम्-तः-तवान्, शुच्यः, शुच्यितव्यम्,

शुच्यनीयम्, शुच्य्यम्, शुच्यम्, शुच्य्यमानः, शुच्यितुम्, शुच्या, शुच्यना। शुच्यनम्, शुच्यित्वा, प्रशुच्य्य-प्रशुच्य।

**(५१४) हर्य—गतिकान्तयोः।** (जाना, चमकना, प्रकाशित होना)। गतौ सकर्म.। सेट्। पर.। हर्यति। जहर्य। 'नर्दति' (५६) वत्।

**(५१५) अल—भूषणपर्याप्तिवारणेषु।** (भूषित करना, निवारण करना, पूरा करना)। १ अलति। २ आल आलतुः आलुः। सर्वम् 'अटति' (२९५) वत्।

**(५१६) त्रिफला—विशरणे।** (जाना, तोड़ना, विभाग करना)। अक.। सेट्। पर.। १ फलति। २ **प्र.** पफाल फेलतुः फेलुः। **म.** फेलिथ फेलथुः। **उ.** पफाल-पफल फेलिव फेलिम। ३ फलिता। ४ फलिष्यति। ५ फलतु। ६ अफलत्। ७ फलेत्। ८ फल्यात्। ९ अफालीत्। १० अपलिष्यत्।

**भावे**—फल्यते। **णिचि**—फालयति। ९ अपीफलत्। **सनि**—पिफलिषति। **यङि**—पम्फुल्यते। **यङ्लुकि**—पम्फुलीति-पम्पुल्ति। **कृत्सु**—फाल्यम्, फलितुम्, फलितव्यम्, फलनीयम्, फुल्लः, फुल्लवान्, फलित्वा, प्रफल्य।

**(५१७) मील—निमेषणे।** (आंखे मूदना, पलक मारना, **उत्**—जागना, खिलना, फैलना)। **नि**—बन्द करना, होना। सकर्म.। सेट्। पर.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | मीलति | मीलतः | मीलन्ति | प्र. |
| | मीलसि | मीलथः | मीलथ | म. |
| | मीलामि | मीलावः | मीलामः | उ. |
| लिट् | मिमील | मिमीलतुः | मिमीलुः | प्र. |
| | मिमीलिथ | मिमीलथुः | मिमील | म. |
| | मिमील | मिमीलिव | मिमीलिम | उ. |
| लुट् | मीलिता | मीलितारौ | मीलितारः | प्र. |
| | मीलितासि | मीलितास्थः | मीलितास्थ | म. |
| | मीलितास्मि | मीलितास्वः | मीलितास्मः | उ. |
| लृट् | मीलिष्यति | मीलिष्यतः | मीलिष्यन्ति | प्र. |
| | मीलिष्यसि | मीलिष्यथः | मीलिष्यथ | म. |
| | मीलिष्यामि | मीलिष्यावः | मीलिष्यामः | उ. |
| लोट् | मीलतु-तात् | मीलताम् | मीलन्तु | प्र. |
| | मील-तात् | मीलतम् | मीलत | म. |
| | मीलानि | मीलाव | मीलाम | उ. |
| लङ् | अमीलत् | अमीलताम् | अलीलन् | प्र. |
| | अमीलः | अमीलतम् | अमीलत | म. |
| | अमीलम् | अमीलाव | अमीलाम | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| वि. लि. | मीलेत् | मीलेताम् | मीलेयुः | प्र. |
| | मीलेः | मीलेतम् | मीलेत | म. |
| | मीलेयम् | मीलेव | मीलेम | उ. |
| आ. लि. | मील्यात् | मील्यास्ताम् | मील्यासुः | प्र. |
| | मील्याः | मील्यास्तम् | मील्यास्त | म. |
| | मील्यासम् | मील्यास्व | मील्यास्म | उ. |
| लुङ् | अमीलीत् | अमीलिष्टाम् | अमीलिषुः | प्र. |
| | अमीलीः | अमीलिष्टम् | अमीलिष्ट | म. |
| | अमीलिषम् | अमीलिष्व | अमीलिष्म | उ. |
| लृङ् | अमीलिष्यत् | अमीलिष्यताम् | अमीलिष्यन् | प्र. |
| | अमीलिष्यः | अमीलिष्यतम् | अमीलिष्यत | म. |
| | अमीलिष्यम् | अमीलिष्याव | अमीलिष्याम | उ. |

**कर्मणि**—मील्यते। **णिचि**—मीलयति-ते। **सनि**—मिमीलिषति। **यङि**—मेमील्यते। **यङ्लुकि**—मेमीलीति-मेमील्ति। **कृत्सु**—मीलकः-लिका, मीलिता-त्री, मीलयिता-त्री, मीलन्-न्ती, मीलयन्-न्ती, मीलिष्यन्-न्ती-ती, मीलयमानः, मीलयिष्यमाणः, मीलितुम्। मिलितम्-तः-तवान् मीलः, मील्यम्, मील्यमानः, मीलनम्, मीलितव्यम्, मीलनीयम्, मीलित्वा, निमील्य, मीलितुम्, मील्यम्।

**(५१८-५२०) श्मील-स्मील-क्ष्मील—निमेषणे**। (आंखे मूदना, पलक मारना)। अक.। सेट्। परस्मै.। श्मीलति। स्मीलति। क्ष्मीलति। इत्यादि। 'मीलति' (५१७) वत्।

**(५२१) पील—प्रतिष्टम्भे**। (मूर्ख होना, थमाना, रोकना)। सकर्म.। सेट्। पर.। पीलति। 'मीलति' (५१७) वत्।

**(५२२) नील—वर्णे**। (रंगना, रंगाना, नील रंग लगाना)। अक.। सेट्। पर.। नीलति। 'मीलति' (५१७) वत्।

**(५२३) शील—समाधौ**। (मनन करना, मन को एकाग्र करना, पूजा करना)। शीलति। 'मीलति' (५१७) वत्।

**(५२४) कील—बन्धने**। बांधना, कीलों से मजबूत करना। सक.। सेट्। परस्मै.। कीलति कीलतः कीलन्ति। 'मीलति' (४१५) वत्।

**(५२५) कूल—आवरणे**। (आच्छादित करना, ढांकना)। **अनुः**—अनुकूल होना, **प्रति**—विरुद्ध होना। सक.। सेट्। परस्मै.। कूलति। चुकूल। 'कूजति' (२२३) वत्।

**(५२६) शूल—रुजायां सङ्कोषे च**। (पेट दुःखना, पीडा होना, आंव पड़ना, बीमार होना, शूल पर चढ़ना)। अक.। सेट्। पर.। शूलति शुशूल। 'कूजति' (२२३) वत्।

**कृत्सु**—शूलकः-लिका, शूलिता-त्री, शूलयिता-त्री, शूलन्-न्ती, शूलिष्यन्-न्ती-ती, शूलयमानः, शूलयिष्यमाणः, शूलः, शूलितव्यम्। शूलयितव्यम्, शूलनीयम्, शूल्यमाणः, शूलितुम्, शूलयितुम्, शूलनम्, शूलित्वा, प्रशूल्य।

**(५२७) तूल—निष्कर्षे।** (सार निकालना)। सक.। सेट्। पर.। तूलति। 'कूजति' (२२३) वत्।

**(५२८) पूल—संघाते।** (ढेर करना, बटोरना, सञ्चित करना)। अक.। सेट्। परस्मै.। पूलति। 'कूजति' (२२३) वत्।

**(५२९) मूल—प्रतिष्ठायाम्।** (जड़ जमाना), अक.। सेट्। पर.। मूलति। इत्यादि। 'कूजति' (२२३) वत्।

**(५३०) फल—निष्पत्तौ।** निष्पत्तिः = पूर्णता, सिद्धिः। (सफल होना)। अक.। सेट्। पर.। फलति। पफाल फेलतुः फेलुः। 'गदति' (५३) वत्।

**कृत्सु**—फालकः-लिका, फलिता-त्री, फालयिता-त्री, फालयन्-न्ती, फलमानः, फालयमानः, फलिष्यमाणः, फालयिष्यमाणः, फलितम्, फलितव्यम्, फालयितव्यम्, फाल्यम्, फल्यमानः, फलितुम्, फलनम्, फालनम्, फलित्वा, फालयित्वा।

**(५३१) चुल्ल—भावकरणे।** भावकरनम् = अभिप्रायसूचनम्। (अपना अभिप्राय बताना)। अक.। सेट्। परस्मै.। चुल्लति। चुचुल्ल। 'कुञ्चति' (१८५) वत्।

**(५३२) फुल्ल—विकसने।** (विकसित होना, खिलना)। अक.। सेट्। परस्मै.। फुल्लति। पुफुल्ल। इत्यादि। 'कुञ्चति' (१८५) वत्।

**(५३३) चिल्ल—शैथिल्ये भावकरणे च।** (ढिलाई करना) ढीला करना, मन का भाव प्रकट करना। अक.। सेट्। परस्मै.। चिल्लति। चिचिल्ल। 'कुञ्चति' (१८५) वत्।

**(५३४) तिल—गतौ।** (जाना)। **तिल्ल** इत्येके। सक.। सेट्। पर.। तेलति। तितेल। 'चेटति' (३१५) वत्।

**(५३५-५४०) वेलृ-चेलृ-केलृ-खेलृ-क्ष्वेलृ-वेल्ल—चलने।** (चलना, जाना)। एक.। सेट्। परस्मै.। १ वेलति। १ चेलति। १ केलति। १ क्ष्वेलति। १ वेल्लति। १ खेलति। २ चिखेल चिखेलतुः। ३ खेलिता। ४ खेलिष्यति। ५ खेलतु। ६ अखेलत्। ७ खेलेत्। ८ खेल्यात्। ९ अखेलीत्। १० अखेलिष्यत्।

**कर्मणि**—खेल्यते। **णिचि**—खेलयति। **सनि**—चिखेलिषति। **यङि**—चेखेल्यते। **यङ्लुकि**—चेखेलीति- चेखेन्ति। **कृत्सु**—खेलितव्यम्, खेलनीयम्, खेलनम्, खेल्यम्, खेलनम्, खेलितुम्, खेलित्वा, प्रखेल्य, खेला। एवं सर्वं ज्ञेयम्।

**(५४१-५४३) पेलृ-फेलृ-शेलृ—गतौ।** (जाना)। **षेलृ**—इत्येके। सक.। सेट्। परस्मै.। पेलति। फेलति। शेलति। सेलति। इत्यादि 'खेलति' (५३८) वत्।

**(५४४) स्खल—संचलने।** (जाना, गिरना, च्युत होना, ठोकर लगाना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | स्खलति | स्खलतः | स्खलन्ति | प्र. |
| | स्खलसि | स्खलथः | स्खलथ | म. |
| | स्खलामि | स्खलावः | स्खलामः | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लिट् | चस्खाल | चस्खलतुः | चस्खलुः | प्र. |
| | चस्खलिथ | चस्खलथुः | चस्खल | म. |
| | चस्खाल-चस्खल | चस्खलिव | चस्खलिम | उ. |
| लुट् | स्खलिता | स्खलितारौ | स्खलितारः इत्यादि। | |
| लृट् | स्खलिष्यति | स्खलिष्यतः | स्खलिष्यन्ति इत्यादि। | |
| लोट् | स्खलतु-स्खलतात् | स्खलताम् | स्खलन्तु | प्र. |
| | स्खल-स्खलतात् | स्खलतम् | स्खलत | म. |
| | स्खलानि | स्खलाव | स्खलाम | उ. |
| लङ् | अस्खलत् | अस्खलताम् | अस्खलन् | प्र. |
| | अस्खलः | अस्खलतम् | अस्खलत | म. |
| | अस्खलम् | अस्खलाव | अस्खलाम | उ. |
| वि. लि. | स्खलेत् | स्खलेताम् | स्खलेयुः | प्र. |
| | स्खलेः | स्खलेतम् | स्खलेत | म. |
| | स्खलेयम् | स्खलेव | स्खलेम | उ. |
| आ. लि. | स्खल्यात् | स्खल्यास्ताम् | स्खल्यासुः | प्र. |
| | स्खल्याः | स्खल्यास्तम् | स्खल्यास्त | म. |
| | स्खल्यासम् | स्खल्यास्व | स्खल्यास्म | उ. |
| लुङ् | अस्खालीत् | अस्खालिष्टाम् | अस्खालिषुः | प्र. |
| | अस्खालीः | अस्खालिष्टम् | अस्खालिष्ट | म. |
| | अस्खालिषम् | अस्खालिष्व | अस्खालिष्म | उ. |
| लृङ् | अस्खलिष्यत् | अस्खलिष्यताम् | अस्खालिष्यन् | प्र. |
| | अस्खलिष्यः | अस्खलिष्यतम् | अस्खलिष्यत् | म. |
| | अस्खलिष्यम् | अस्खलिष्याव | अस्खलिष्याम | उ. |

(५४५) **खल—सञ्चये**। (संग्रह करना, एकट्ठा करना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। १ खलति। २ चखाल। ३ खलिता। ४ खलिष्यति। 'गदति' (५२) वत्।

(५४६) **गल—अदने**। (निगलना, खाना, भक्षण करना)। सक.। सेट्। परस्मै.। १ गलति। २ जगाल। 'गदति' (५२) वत्।

(५४७) **षल—(सल) गतौ**। (जाना)। सक.। सेट्। परस्मै.। १सलति। २ ससाल सेलतुः सेलुः। 'रदति' (५३) वत्।

(५४८) **दल—विशरणे विदारणे च**। (कुम्भलाना, म्लान होना, चीरना, फाड़ना)। अक.। सेट्। परस्मै.। दलति। ददाल। रदति (५३) वत्।

(५४९-५५०) **श्वल-श्वल्ल—आशुगमने**। (तेजी से जाना)। अक.। सेट्। परस्मै.। श्वलति। शश्वाल। श्वल्लति। शश्वाल्ल। इत्यादि। 'गदति' (५२) वत्।

**(५५१-५५२) खोलृ-खोर्ऋ—गतिप्रतिघाते।** (लंगड़ाना)। अक.। सेट्। परस्मै.। ऋदित्। खोलति। चुखोल। खोरति। चुखोर। इत्यादि 'खेलति' (५३८) वत्।

**(५५३) धोर्ऋ—गतिचातुर्ये।** (अच्छी रीति से गमन करना। चतुराई से चलना। जल्दी से चलना)। अक.। सेट्। पर.। ऋदित्।

१ धोरति। २ दुधोर। दुधोरतुः। दुधोरुः। ३ धोरिता। ४ धोरिष्यति। ५ धोरतु। ६ अधोरत्। ७ धोरेत्। ८ धोर्यात्। ९ अधोरीत्। १० अधोरिष्यत्।

**(५५४) त्सर—छद्मगतौ।** (टेढा जाना। कपट पूर्वक जाना। छिपकर जाना)। अक.। सेट्। परस्मै.। १ त्सरति। २ तत्सार। 'व्रजति' (२५३) वत्।

**(५५५) क्मर—हूर्च्छने।** हूर्च्छनम्-कौटिल्यम्। (शरीर या मन से टेढा होना। वञ्चक होना ठग बनना)। अक.। सेट्। पर.। क्मरति। 'ब्रजति' (२५३) वत्।

**(५५६) अभ्र—गतौ।** जाना। सक.। सेट्। परस्मै.। अभ्रति। आनभ्र। 'अर्चति' (२०४) वत्।

**(५५७-५५८) वभ्र-मभ्र—गतौ।** जाना। सक.। सेट्। पर.। वभ्रति। ववभ्र। ववभ्रतुः। 'नर्दति' (५६) वत्। एवं मभ्रति इत्यादि।

**(५५९) चर—गतौ।** (जाना)। **भक्षणेऽपि।** (खाना)। सक.। गतावकर्म.। सेट्। प.।

१ चरति। २ **प्र.** चचार। चेरतुः। चेरुः। **म.** चेरिथ। चेरथुः। चेर। **उ.** चचार, चचर। चेरिव। चेरिम। ३ चरिता। ४ चरिष्यति। ५ चरतु। ६ अचरत्। ७ चरेत्। ८ चर्यात्। चर्यास्ताम्। चर्यासुः। ९ अचारीत्। १० अचरिष्यत्। **उत्**—उच्चरते। **सम्**—सञ्चरते।

**कर्मणि**—चर्यते। **णिचि**—चारयति-ते। **सनि**—चिचरिषति। **यङि**—चञ्चूर्यते। **यङ्लुकि**—चञ्चुरीति-चञ्चूर्ति। **कृत्सु**—चरितव्यम्। चरणीयम्। चर्यम्। सञ्चर्यम्। गुर्वर्थे-ण्यत्-आचार्यः। चरेराङि चागुरौ। इति गुरुभिन्नार्थे यत्-आचर्यः। चरितः। चरन्। चरितुम्। चरित्वा। सञ्चर्य। चराचरः। चरिष्णुः। चरित्रम्। स्वार्थेऽण्-चारित्रम्।

**(५६०) ष्ठिवु—निरसने।** (थूकना)। अक.। सेट्। पर.।

१ ष्ठीवति। (ष्ठिवुक्लम्विति दीर्घः। सुब्धातुष्ठिवु इति सत्वनिषेषः।) २ टिष्ठेव-तिष्ठेव। टिष्ठिवतुः-तिष्ठिवतुः। ३ ष्ठोविता। ४ ष्ठेविष्यति। ५ ष्ठीवतु। ६ अष्ठीवत्। ७ ष्ठीवेत्। ९ ष्ठीव्यात्। ९ अष्ठेवीत्। १० अष्ठाविष्यत्।

**कर्मणि**—ष्ठीव्यते। **णिचि**—ष्ठेवयति-ते। **यङि**—टेष्ठीव्यते-तेष्ठीव्यते। ऊठभाविनां वकारान्तानां यङ्लुक् नास्ति। **सनि**—टेष्ठिविषति-तेष्ठिविषति- टुष्ठ्यूषति-तुष्ठ्यूषति। **कृत्सु**—ष्ठेवितव्यम्, ष्ठीवनीयम्, ष्ठीव्यम्, ष्ठेवित्वा, ष्ठ्यूत्वा, निष्ठीव्य, ष्ठेवितुम्, ष्ठीवनम्, ष्ठेवनम्, ष्ठेवकः[1]विका, तिष्ठेविषकः, तुष्ठ्यूषकः-षिका, ठिष्ठेविषकः-टुष्ठ्यूषकः-षिका,

१ 'सुब्धातुष्ठिवु–' (वा. ६-१-६४) इति सकारादेशप्रतिषेधः 'ष्ठिवु' इत्यत्र ठकारः औपदेशिकः, थकारो वा इत्यत्र उभयथा मतभेदः। वकारपक्षे ष्टुत्वेन सकारस्य षकारश्रवाणम् इति विशेषः।

तेष्ठेवकः[१]-टेष्ठेवकः-विका, ष्ठेविता-त्री, ष्ठेवयितात्री, ष्ठीवन्[२]-निष्ठीवन् निष्ठीवनम्[३]-ष्ठेवनम्, निष्ठीव,[४] निष्ठ्यूतम्[५], निष्ठ्यूतिः। इत्यादि 'दिव्यति' वत्।

**(५६१) जि—जये**। (जीतना)। अक.। अनिट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | जयति | जयतः | जयन्ति | प्र. |
| | जयसि | जयथः | जयथ | म. |
| | जयामि | जयावः | जयामः | उ. |
| लिट् | जिगाय | जिग्यतु | जिग्युः | प्र. |
| | जिगयिथ-जिगेथ | जिग्यथुः | जिग्य | म. |
| | जिगाय-जिगय | जिग्यिव | जिग्यिम | उ. |
| लुट् | जेता | जेतारौ | जेतारः | प्र. |
| | जेतासि | जेतास्थः | जेतास्थ | म. |
| | जेतास्मि | जेतास्वः | जेतास्म | उ. |
| लृट् | जेष्यति | जेष्यतः | जेष्यान्त | प्र. |
| | जेष्यसि | जेष्यथः | जेष्यथ | म. |
| | जेष्यामि | जेष्यावः | जेष्यामः | उ. |
| लोट् | जयतु-जयतात् | जयताम् | जयन्तु | प्र. |
| | जय-जयतात् | जयतम् | जयत | म. |
| | जयानि | जयाव | जयाम | उ. |
| लङ् | अजयत् | अजयताम् | अजयन् | प्र. |
| | अजयः | अजयतम् | अजयत | म. |
| | अजयम् | अजयाव | अजयाम | उ. |
| वि. लि. | जयेत् | जयेताम् | जयेयुः | प्र. |
| | जयेः | जयेतम् | जयेत | म. |
| | जयेयम् | जयेव | जयेम | उ. |
| आ. लि. | जीयात् | जीयास्ताम् | जीयासुः | प्र. |
| | जीयाः | जीयास्तम् | जीयास्त | म. |
| | जीयासम् | जीयास्व | जीयास्म | उ. |
| लुङ् | अजैषीत् | अजैष्टाम् | अजैषुः | प्र. |
| | अजैषीः | अजैष्टम् | अजैष्ट | म. |
| | अजैषम् | अजैष्व | अजैष्म | उ. |

१ यङन्तेऽपि थकारपक्षे तेष्ठेवकः इति ठकारपक्षे टेष्टेवकः इति रूपम्।

२ शतरि, 'ष्ठिवुक्लमु–' (७-३-७५) इति दीर्घः।

३ ल्युटि पृषोदरादित्वात्(६-३-१०९) इति पाक्षिक उपधादीर्घः इति माधवादयः। चान्द्रास्तु 'ष्ठिवुसिवो दीर्घश्च' इति ल्युड्विषये सूत्रमेव पठन्ति।

४ घञ्यपि 'पृषोदरादित्वात् दीर्घः इति चान्द्रः। ल्युटि घञि च पृषोदरादित्वादेव दीर्घ इति शब्दकल्पद्रुमः।

५ निष्ठायामिण् निषेधः। ऊठ। निष्ठ्यूतम् = उद्गीर्णम्। एवं क्तिन्यपि ऊठ्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृङ् | अजेष्यत् | अजेष्यताम् | अजेष्यन् | प्र. |
| | अजेष्यः | अजेष्यतम् | अजेष्यत | म. |
| | अजेष्यम् | अजेष्याव | अजेष्याम | उ. |

**भावे**—जीयते। २ जिग्ये। ९ अजायि। **णिचि**—जापयति। अजीजपत्।

## सनि

१ जिगीष—ति तः न्ति। सि थः थ। जिगाषा- मि वः मः।

२ जिगीषाम्बभू—व वतुः वुः। विथ वथुः व। व विव विम। जिगीषाञ्चकार,जिगीषामास इत्यादि।

३ जिगीषिता—रौ रः। सि स्थः स्थ। स्मि स्वः स्मः।

४ जिगीष्य—ति तः न्ति। सि थः थ। जिगीष्या—मि वः मः।

५ जिगीष—तु तात् ताम् न्तु। सि तात् तम् त। जिगीषा—णि व म।

६ अजिगीष—त् ताम् न्। : तम् त। म् अजिगीषा—व म।

७ जिगीषे—त् ताम् युः। तम् त। यम् व म।

८ जिगीष्या—त् स्ताम् सुः। : स्तम् स्त। सम् स्व स्म।

९ अजिगी—षीत् षिष्टाम् षिषुः। षीः षिष्टम् षिष्ट। षिषम् षिष्व षिष्म।

१० अजिगीष्य—त् ताम् न्। : तम् त। म् अजिगीष्या—व म।

यङि—जेजीयते। यङ्लुकि—जेजयीति-जेजेति। विजयते। पराजयते।

**कृत्सु**—जायकः[१]-यिका, जापकः[२]-पिका, जिगीषकः[३], जेजीयकः[४]-यिका, जेता[५]- त्री, जापयिता-त्री, जयन्[६]-न्ती, जापयन्-न्ती, जिगीषिष्यन्-न्ती-ती, विजयमानः[७], पराजयमानः, जापयमानः,[८] विजष्यमाणः,पराजयेष्यमाणः,इन्द्रजित्[९],प्रजित्,अभिजित्,शत्रुजित्-जिद्-जितौ-

१ 'अचो ञ्णिति' (७-२-११५) इति वृद्धौ आयादेशे च रूपम्। एवं णमुल्यपि।

२ ण्यन्ते 'क्रीड्जीनां णौ' (६-१-४८) इत्यात्वे, 'अतिह्रीव्लीरीक्नूयीक्ष्माय्यातां पुग् णौ' (७-३-३६) इति पुगागमे रूपम्। एवं ण्यन्ते सर्वत्र ज्ञेयम्।

३ 'सन्लिटोर्जेः' (७-३-५७) इत्यभ्यासादुत्तरस्य कुत्वेन गकारः। 'इको झल्' (१-२-९) इति सनः कित्वनिषेधात् गुणो न। एवं सन्नन्ते सर्वत्र ज्ञेयम्।

४ यङि, 'अकृत्सार्वधातुकयोः—' (७-४-२५) इति दीर्घः। एवं यङन्ते सर्वत्र ज्ञेयम्।

५ 'जेता यज्ञद्रुहां संख्ये धर्मसन्तानसुर्वने' (भ.का. ४-२७)।

६ सञ्चारनिष्ठ्यूतनखेन्दुचन्द्रिकं लोके जयन्तं सकलैकजीवनम्। (धा.का. १-७२)।

७ 'विपराभ्यां जेः' (१-३-१९) इति शानच्।

८ धातोरकर्मकत्वे 'अणावकर्मकात् चित्तवत्कर्तृकात्' (१-३-८८) इति ण्यन्तात् परस्मैपदमेव (सकर्मकत्वे तु ण्यान्ताच्छानजपि भवतीति ज्ञेयम्।

९ 'सत्सूद्विषद्रुहदुध्यजविदभिदच्छिदजिनीराजामुपसर्गेऽपि क्विप्' (३-२-६१) इति उपसर्गे, अनुपसर्गे वा उपपदे क्विप्।

जितः। जितम्-तः-जितवान्, जपितः, जयः, जित्वरः[१], जित्वा[२]-जित्वानौ-जित्वानः, कंसजित्वा, जित्वरी, जिष्णुः[३], धनञ्जयः[४] समितिञ्जयः, जयी,[५] जयिनी, जयकः[६], जयमानः[७], जापः, जिगीषुः, विजिगीषुः, जेज्यः, जेतव्यम्, जापयितव्यम्, जयनीयम्, जापनीयम्, जय्यम्[८]-जेयम्, जित्यः[९] (हलिः) जाप्यम्, जीयमानः, जाप्यमानः, जयः,[१०] जापः, जिगीषः, जेजीयः, जेतुम्, जापयितुम्, जितिः, जापना, जयनम्, उज्जयिनी,[११] जायनम्, जित्वा, जापयित्वा, विजित्य,[१२] विजाप्य, जैत्रम्[१३], जायुः[१४]।

(५६२) **जीव—प्राणधारणे**। (जीना)। **आ**—उदर निर्वाह के लिए कमाना, **उप**—उदर निमित के लिए पराधीन होना, नौकरी करना, **सम्-प्र**—सुख से रहना, सुखी होना। अक.। सेट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | जीवति | जीवतः | जीवन्ति | प्र. |
| | जीवसि | जिवथः | जीवथ | म. |
| | जीवामि | जीवावः | जीवामः | उ. |
| लिट् | जिजीव | जिजीवतुः | जिजीवुः | प्र. |
| | जिजीविथ | जिजीवथुः | जिजीव | म. |
| | जिजीव | जिजीविव | जिजीविम | उ. |

१ 'इण्नशिजिसर्तिभ्यःक्वरप्' (३-२-१६३) इति तच्छीलादिषु कर्तृषु क्वरप्। 'ह्रस्वस्य पिति—' (६-१-७१) इति तुक्।

२ 'अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते' (३-२-७५) इति क्वनिपि तुक्। कंसं जयति, जितवान् वा कंसजित्वा। स्त्रियां 'वनो र च' (४-१-७) इति ङीप् रेफश्च।

३ 'ग्लाजिस्थश्च ग्स्नुः' (३-२-१३९) इति तच्छीलादिषु कर्तृषु ग्स्नुः प्रत्ययः। 'ग्क्ङिति च' (१-१-५) इत्यत्र गकारस्यापि प्रश्लेषात् गुणो न भवति। 'आदेशप्रत्यययोः' (८-३-५९) इति षत्वम्।

४ 'संज्ञायां भृतृवृजिधारिसहितपिदमः' (३-२-४६) इति संज्ञायां खच् प्रत्यये, खित्यनव्ययस्य' (६-३-६६) इति पूर्वपदस्य नुमागमः।

५ 'जिदृक्षिविश्रीण्—' (३-२-१५७) इति तच्छीलादिषु कर्तृषु इनिप्रत्ययः।

६ 'आशिषि च' (३-१-१५०) इति वुन्। जयतात् जयकः।

७ 'ताच्छील्यवयोवचनशक्तिषु चानश्' (३-२-१२९) इति शक्तौ गम्यमानायां चानश् 'मध्ये विकरणप्रत्ययः शप्।

८ 'अचो यत्' (३-१-९७) इति यति गुणे, 'क्षय्यजय्यौ शक्यार्थे' (६-१-८१) इति अयादेशो निपातितः। जेतुं शक्यम् = जय्यम्। अन्यत्र जेयम्।

९ 'विपूयविनीयजित्या मुञ्जकल्कहलिषु' (३-१-११७) इति सूत्रेण हलौ = कृष्टसमीकरणार्थे स्थूलकाष्ठे वाच्ये क्यप् भवति। जित्यो हलिः = वलेन क्रष्टव्य इत्यर्थः।

१० 'एरच् (३-३-५६) इति भावादौ अप्। घञपवादः।

११ उज्जयन्ति अस्यां वसन्तः इति उज्जयिनी। 'करणाधिकरणयोश्च' (३-३-११७) इति ल्युट्। स्त्रियां टित्वान्ङीपि उज्जयिनी इति भवति। उज्जयिनी नगरविशेषः।

१२ ल्यपि 'ह्रस्वस्य—' (६-१-७१) इति तुक्।

१३ उणादयो बहुलम् (३-३-१) इति त्रण्प्रत्ययः। 'अचो ञ्णिति' (७-२-११५) इति वृद्धिः।

१४ 'कृवापाजिमि—' (द.उ. १-८६) इति उण् प्रत्यये वृद्धौ, आयादेशे जायुः। जयति अनेन रोगानिति जायुः = औषधम्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुट् | जीविता | जीवितारौ | जीवितारः | प्र. |
| | जीवितासि | जीवितास्थः | जीवितास्थ | म. |
| | जीवितास्मि | जीवितास्वः | जीवितास्मः | उ. |
| लृट् | जीविष्यति | जीविष्यतः | जीविष्यन्ति | प्र. |
| | जीविष्यसि | जीविष्यथः | जीविष्यथ | म. |
| | जीविष्यामि | जीविष्यावः | जीविष्यामः | उ. |
| लोट् | जीवतु-जीवतात् | जीवताम् | जीवन्तु | प्र. |
| | जीव-जीवतात् | जीवतम् | जीवत | म. |
| | जीवानि | जीवाव | जीवाम | उ. |
| लङ् | अजीवत् | अजीवताम् | अजीवन् | प्र. |
| | अजीवः | अजीवतम् | अजीवत | म. |
| | अजीवम् | अजीवाव | अजीवाम | उ. |
| वि. लि. | जीवेत् | जीवेताम् | जीवेयुः | प्र. |
| | जीवेः | जीवेतम् | जीवेत | म. |
| | जीवेयम् | जीवेव | जीवेम | उ. |
| आ. लि. | जीव्यात् | जीव्यास्ताम् | जीव्यासुः | प्र. |
| | जीव्याः | जीव्यास्तम् | जीव्यास्त | म. |
| | जीव्यासम् | जीव्यास्व | जीव्यास्म | उ. |
| लुङ् | अजीवीत् | अजीविष्टाम् | अजीविषुः | प्र. |
| | अजीवीः | अजीविष्टम् | अजीविष्ट | म. |
| | अजीषम् | अजीविष्व | अजीविष्म | उ. |
| लृङ् | अजीविष्यत् | अजीविष्यताम् | अजीविष्यन् | प्र. |
| | अजीविष्यः | अजीविष्यतम् | अजीविष्यत | म. |
| | अजीविष्यम् | अजीविष्याव | अजीविष्याम | उ. |

**भावे**—जीव्यते। **णिचि**—जीवयति। ९ अजिजीवत्-अजीजिवत्। **सनि**—जिजीविषति। **यङि**—जेजीव्यते। ऊठ्भाविवकारान्तत्वाद् यङ्लुङ् नास्ति। **कृत्सु**—जीवकः-विका, जीविता-त्री, जीवयिता, जीवन्-न्ती, माजीवन्[1], जीवयन्-न्ती, जीविष्यन्-न्ती-ती, जेजीव्यमानः, जेजीविष्यमाणः, प्रज्यूः[2]-प्रज्युवौ-प्रज्युवः, जीवितम्-तः, जीवः, उपजीवी[3]- अनुजीवी, जीवकः[4]-जीवका, जीवितव्यम्, जीवयितव्यम्, जीवनीयम्, जीव्यम्,

१ 'माङ्यकोश इति वक्तव्यम्' (वा. ३-२-१२४) इति शता। मा जीवन् यः परावज्ञा दुःखदग्धोऽपि जीवति' (शिशु. का. २-४५)

२ क्विपि, 'च्छ्वोः शूडनुनासिके च' (६-४-१९) इत्यूडादेशे, इकारस्य यणि रूपम्। एवं क्तिन् प्रत्ययेऽपि प्रक्रिया।

३ 'सुप्यजातौ–' (३-२-७८) इति ताच्छील्ये णिनिः।

४ 'आशिषि च' (३-१-१५०) इति वुन्। जीवात् जीवकः। स्त्रियाम्, 'प्रत्ययस्थात्–' (७-३-४४) इति प्राप्तस्येत्त्वस्य 'आशिषि वुनश्च' (वा. ७-३-४५) इति निषेधः।

ईषज्जीवः-दुर्जीवः-सुजीवः, जीव्यमानः, जीवितुम्, जीवयितुम्, ज्यूतिः, अजीवनिः[१] जीविका,[२] जीवना, जीवनम्, जीवित्वा, जीवयित्वा, सञ्जीव्य, भावज्जीवनम्,[३] जीवातुः,[४] जीमूतः,[५] जैवातृकः,[६] जीवन्तः[७]।

(५६३-५६६) **पीव-मीव-तीव-णीव—स्थौल्ये**। स्थौल्यम्-पीबरत्वम्। (मोटा होंना। स्थूल होना। पुष्ट होना)। अकर्म.। सेट्। पर.। पीवति। मीवति। तीवति। नीवति। पिपीव। मिमीव। तितीव। निनीव। इत्यादि– जीवति (५६२) वत्।

(५६७) **क्षीवु—निरसने**। (मुंह से थूक बाहर निकालना। थूकना। कै करना)। सक.। सेट्। पर.। उदित्। क्षीवति। चिक्षीव। 'क्रीडति' (३५०) वत्।

(५६८) **क्षेवु—निरसने**। (थूकना। कै करना)। सक.। सेट्। पर.। क्षेवति। चिक्षेव। 'गर्दति' (५७) वत्।

(५६९) **उर्वी—हिंसायाम्**। (मारना) सक.। सेट्। परस्मै.। ईदित्।

१ ऊर्वति। २ ऊर्वाञ्चकार। ३ ऊर्विता। ४ ऊर्विष्यति। ५ ऊर्वतु-ऊर्वतात्। ६ औंर्वत् और्वताम् और्वन्। ७ ऊर्वेत। ८ ऊर्व्यात्। ९ **प्र.** और्वीत् और्विष्टाम् और्विषुः। **म.** और्वीः औविष्टम् और्विष्ट। **उ.** और्विषम् और्विष्व और्विष्म। १० और्विष्यत्।

**णिचि**—ऊर्वयति। **सनि**—ऊर्विविषति। **कृत्सु**—ऊर्वनीयम्। ऊर्वितः। ऊर्वितुम्। ऊर्वित्वा। ऊर्णः, ऊर्णवान्, ऊः ऊरौ ऊरः।

(५७०-५७३) **तुर्वी-थुर्वी-दुर्वी-धुर्वी—हिंसायाम्**। मारना। सक.। सेट्। पर.। ईदित्। १ तूर्वति। २ तुतूर्व। ३ तूर्विता। ४ तूर्विष्यति। ५ तूर्वतु। ६ अतूर्वत्। ७ तूर्वेत्। ८ तूर्व्यात्। ९ अतूर्वीत्। १० अतूर्विष्यत्।

**णिचि**—तूर्वयति-ते। **सनि**—तुतूर्विषति। **यङि**—तोतूर्व्यते। **यङ्लुकि**—तोतूर्वीति-तोतूर्ति। **कृत्सु**—तूर्वितुम्। तूर्वित्वा। तूर्वनीयम्। तूर्वितः। एवं थुर्वति। दूर्वति। धूर्वति। इत्यादि।

(५७४) **गुर्वी (गुर्व्) उद्यमने**। (उद्यम करना)। अक.। सेट्। पर.। ईर्दित्। गूर्वति। जुगूर्व। इत्यादि। 'तूर्वति' (५७०) वत्।

---

१ 'आक्रोशे नञ्यनिः' (३-३-११२) इति अनिप्रत्ययः।
२ स्त्रियां भावादौ 'संज्ञायाम्' (३-३-१०९) इति ण्वुल्।
३ 'यावति विन्दजीवोः' (३-४-३०) इति णमुल्।
४ 'जीवेरातुः' (द.उ. १-१३२) इत्यातुप्रत्ययः। जीवन्ति प्राणिनोऽनेनेति जीवातुः = जीवनौषधम्, अन्नं च। 'जीवातुर्जीवनौषधम्।' इत्यमरः।
५ जीवनं = जलम्, मूतं = बद्धं येन स जीमूतः = मेघः। पृषोदरादित्वात् (६-३-१०९) जीवनशब्दस्य जीभावः।
६ 'जीवेरातृकन् वृद्धिश्च' (द.उ. ३-१) इत्यातृकन् प्रत्ययो वृद्धिश्च। जीवयतीति जैवातृकः = चन्द्रः।
७ रुहिनान्दिजीविप्राणिभ्यः षिदाशिषि' (द.उ. ६-१८) इति झच्प्रत्ययो भवत्याशिषि। जीवतात् जीवन्तः = आयुष्मान् ऋषिविशेषश्च। स्त्रियां षित्वात् ङीष्। जीवन्ती = औषधविशेषः।

**(५७५) मुर्वी (मुर्व्) बन्धने**। (बांधना। रोकना)। सक.। सेट्। पर.। ईदित्। मूर्वति। 'तूर्वति' (५७०) वत्।

**(५७६) पूर्व—पूरणे**। (पूर्ण करना)। भरना। सक.। सेट्। परस्मै.। १ पूर्वति। २ पुपूर्व। पुपूर्वतुः। ३ पूर्विता। ४ पूर्विष्यति। ८ पूर्व्यात्। ९ अपूर्वीत्। १० अपूर्विष्यत्।

**कर्मणि**—पूर्व्यते। **णिचि**—पूर्वयति-ते। **सनि**—पुपूर्विषति। **यङि**—पोपूर्व्यते। **यङ्लुकि**—पोपूर्वीति-पोपूर्वि। **कृत्सु**—पूर्वितव्यम्। पूर्वणीयम्। पूर्व्यम्। पूर्वितः। पूर्वन्। पूर्वितुम्। पूर्वित्वा। प्रपूर्व्य। पूर्वः। पूः। पुरी।

**(५७७-५७८) पर्व-मर्व—पूरणे**। (पूर्ण करना। भरना)। सक.। सेट्। पर.। पर्वति। मर्वति। 'नर्दति' (५६) वत्।

**(५७९) चर्व—अदने**। (खाना। चबाना)। सक.। सेट्। परस्मै.। चर्वति। चचर्व। चचर्वतुः। इत्यादि 'नर्दति' (५६) वत्।

**(५८०) भर्व—हिंसायाम्**। (मारना। हिंसा करना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। भर्वति। 'नर्दति' (५६) वत्।

**(५८१-५८३) कर्व-खर्व-गर्व—दर्पे**। (अहंकार करना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.। कर्वति। खर्वति। गर्वति। 'नर्दति' (५६) वत्।

**(५८४) अर्व—हिंसायाम्**। (हिंसा करना। मारना)। सक.। सेट्। परस्मै.। अर्वति। आनर्व। 'अर्चति' (२७४) वत्।

**(५८५-५८६) शर्व-सर्व—हिंसायाम्**। सक.। सेट्। परस्मै.। शर्वति। सर्वति। इत्यादि 'नर्दति' (५६) वत्।

**(५८७) इवि—व्याप्तौ**। (व्याप्त होना)। सक.। सेट्। परस्मै.। १ इन्वति। २ इन्वाञ्चकार। ३ इन्विता। ४ इन्विष्यति। ५ इन्वतु। ६ ऐन्वत्। ७ इन्वेत्। ८ इन्व्यात्। ९ ऐन्वीत्। ऐन्वीष्टाम्। १० ऐन्विष्यत्।

**कर्मणि**—इन्व्यते। ९ ऐन्वि। ऐन्विषाताम्। **णिचि**—इन्वयति-ते। **सनि**—इन्विविषति। **कृत्सु**—इन्वितव्यः। इन्वनीयः। इन्वयः। इन्वितः। इन्वित्वा। इन्वन्।

**(५८८-५९०) पिवि-मिवि-णिवि—सेचने**। (पवीत्येके) सेवन इति तरङ्गिण्याम्। (सींचना। गीला करना। सेवा करना)। सक.। सेट्। पर.। पीन्वति मिन्वति, निन्वति। पिपिन्व। मिमिन्व। निनिन्व। पिन्विता। पिन्विष्यति। इत्यादि।

**(५९१-५९२) हिवि-दिवि—प्रीणनार्थाः**। (तृप्त होना या करना। शान्त होना)। सक.। सेट्। पर.। हिन्वति, दिन्वति। इत्यादि।

**(५९३) धिवि—प्रीणने**। (तृप्त करना)। सक.। सेट्। परस्मै.। १ **प्र.** धिनोति। धिनुतः धिन्वति। **म.** धिनोषि। धिनुथः। धिनुथ। **उ.** धिनोमि धिनुवः धिन्वः। धिनुमः-धिन्मः।

२ **प्र.** दिधिन्व। दिधिन्वतुः। दिधिन्वुः। **म.** दिधिन्विथ। दिधिन्वथुः। दिधिन्व। **उ.** दिधिन्व। दिधिन्विव। दिधिन्विम। ३ **प्र.** धिन्विता। धिन्वितारौ। धिन्वितारः। **म.** धिन्वितासि धिन्वितास्थः। धिन्वितास्थ। **उ.** धिन्वितास्मि। धिधिन्वितास्वः। धिन्वितास्मः। ४ धिन्विष्यति। ५ धिनोतु-तात्। ६ अधिनोत्। ७ धिनुयात्। ८ धिन्व्यात्। ९ अधिन्वीत्। १० अधिन्विष्यत्।

**कर्मणि**—धिन्व्यते। **णिचि**—धिन्वयति-ते। **सनि**—दिधिन्विषति। **यङि**—देधिन्व्यते। **यङ्लुकि**—देधिन्वीति-देधिन्ति। **कृत्सु**—धिन्वितव्यः। धिन्विनीयः। धिन्व्यः। धिन्वितः। धिन्वितुम्। धिन्वन् न्धिन्वन्ती। धिन्वनम्। धिन्वित्वा। सन्धिन्वय।

**(५९४) जिवि—प्रीणने।** (सन्तुष्ट होना)। सक.। सेट्। पर.। १ जिन्वति। २ जिजिन्व। ३ जिन्विता। ५ जिन्वतु। ९ अजिन्वीत्। इत्यादि।

**(५९५) रिवि—गतौ।** (जाना)। सक.। सेट्। पर.। रिण्वति। शेषं 'जिवि' (५९४) धातु वत्।

**(५९६) रवि—गतौ।** (जाना)। सक.। सेट्। पर.। १ रण्वति। २ ररण्व। ३ रन्विता। ४ रण्विष्यति। ८ रण्व्यात्। ९ अरण्वीत्।

**(५९७) धवि—गतौ।** (जाना)। सक.। सेट्। पर.। धन्वति। दधन्व। 'रवि' (५९६) वत्।

**(५९८) कृवि—हिंसाकरणयोश्च।** चाद्गतौ। (मारना। सताना। दुख देना। जाना)। सक.। सेट्। पर.। इदित्।

१ **प्र.** कृणोति। कृणुतः। कृणन्ति। **म.** कृणोषि। कृणुथः। कृणुथ। **उ.** कृणोमि। कृणुवः-कृण्वः। कृणुमः-कृण्मः। २ **प्र.** चकृण्व। चकृण्वतुः। चकृण्वुः। **म.** चकृण्विथ। चकृण्वथुः। चकृण्व। **उ.** चकृण्व। चकृण्विव। चकृण्विम। ३ **प्र.** कृण्विता। कृण्वितारौ। कृण्वितारः। **म.** कृण्वितासि। कृण्वितास्थः। कृण्वितास्थ। **उ.** कृण्वितास्मि। कृण्वितास्वः। कृण्वितास्मः। ४ **प्र.** कृण्विष्यति। कृण्विष्यतः। कृण्विष्यन्ति। **म.** कृण्विष्यसि। कृण्विष्यथः। कृण्विष्यथ। **उ.** कृण्विष्यामि। कृण्विष्यावः। कृण्विष्यामः। ५ **प्र.** कृणोतु-तात्। कृण्वताम्। कृण्वन्तु। **म.** कृणु-तात्। कृणुतम्। कृणुत। **उ.** कृणवानि। कृणवाव। कृणवाम। ६ **प्र.** अकृण्वेत्। अकृणुताम्। अकृण्वन्। **म.** अकृणोः अकृणुतम्। अकृणुत। **उ.** अकृणवम्। अकृणुव-अकृण्व। अकृणुम-अकृण्म। ७ **प्र.** कृणुयात्। कृणुयाताम्। कृणुयुः। **म.** कृणुयाः। कृणुयातम्। कृणुयात्। **उ.** कृणुयाम्। कृणुयाव। कृणुयाम। ८ **प्र.** कृण्व्यात्। कृण्व्यास्ताम्। कृण्व्यासुः। **म.** कृण्व्याः। कृण्व्यास्तम्। कृण्व्यास्त। **उ.** कृण्व्यासम्। कृण्व्यास्व। कृण्व्यास्म। ९ **प्र.** अकृण्वीत्। अकृण्विष्टाम्। अकृण्विषुः। **म.** अकृण्वीः। अकृण्विष्टम्। अकृण्विष्ट। **उ.** अकृण्विषम्। अकृण्विष्व। अकृण्विष्म। १० **प्र.** अकृण्विष्यत्। अकृण्विष्यताम्। अकृण्विष्यन्। **म.** अकृण्विष्यः। अकृण्विष्यतम्। अकृण्विष्यत। **उ.** अकृण्विष्यम्। अकृण्विष्याव। अकृण्विष्याम।

**णिचि**—कृण्वयति-ते। **सनि**—चिकृण्विषति। **यङि**—चाकृण्वयते। **यङ्लुकि**—चाकृण्वीति-चाकृण्ति। **कृत्सु**—कृण्वितव्यः। कृण्वनीयः। कृण्व्यः। कृण्वितः। कृण्वित्वा। कृण्वितुम्। कृण्वनम्। कृण्वकः-ण्विका, कृण्विता-त्री, कृण्वन्-न्ती, कृण्वयन्-न्ती, कृण्विष्यन्-न्ती, कृण्वयमानः, कृण्वितम्, कृण्वः, कृण्वयितुम्, कृण्वा, कृण्वना, प्रकण्व्य।

**(५९९) मव—बन्धने**। (बांधना। रोकना)। सक.। सेट्। पर.। मवति। ममाव। 'रदति' (५३) वत्।

**(६००) अव—रक्षणगतिकान्तिप्रीतितृप्त्यवगमप्रवेशश्रवणस्वाम्यर्थयाचनक्रियेच्छा दीप्त्यवाप्त्यालिङ्गनहिंसादानभागवृद्धिषु**। (संरक्षण करना। जाना। कामना करना। प्रेम करना। सन्तुष्ट करना, आनन्दित करना। प्रवेश करना। सुनना, मालिक होना। आज्ञा करना। मांगना। कर्म करना। कान्तियुक्त होना। प्राप्त होना। आलिङ्गन करना। मार डालना या दुख होना। ग्रहण करना। होना बढना। शक्तिमान होना)। सक.। सेट्। पर.।

१ अवति। २ आव। ३ अविता। ४ अविष्यति। ५ अवतु-तात्। ६ आवत्। ७ अवेत्। ८ अव्यात्। ९ आवीत्। १० आविष्यत्।

**कर्मणि**—अव्यते। **णिचि**—आवयति। **सनि**—अविषिषति। **कृत्सु**—आवकः-विका, अविता-त्री, आवयिता-त्री, अवन्-न्ती, आवयन्-न्ती, अविष्यन्-न्ती-ती, आवयिष्यन्-न्ती-ती, आवयमानः, आवयिष्यमाणः, ऊः[१]-जनौ, जनावौ[२]-जनावः, आवितः-तम्-तवान्, आवितम्, अवः, आवः, अवितव्यम्, आवयितव्यम्, अवनीयम्, आवनीयम्, आव्यम्, अव्यमानः, आव्यमानः, ऊति,[३] आवना, अवितुम्, आवयितुम्, अवनम्, आवनम्, अवित्वा, आवयित्वा, समव्य, समाव्य, ओम्[४], अवनी[५]-अवनिः, ओतुः[६], (विडालः)

**(६०१) धावु—गतिशुद्ध्योः**। (जाना, दौड़ना, स्वच्छ करना) **अनु**—पीछे पीछे भागना, **अभि**—समीप आना, **आ**—नीचे उतरना, **परि**—जल्द भागना। सक.। गतावकर्मकः। सेट्। उभय.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | धावति | धावतः | धावन्ति | प्र. |
| | धावसि | धावथः | धावथ | म. |
| | धावामि | धावावः | धावामः | उ. |
| लिट् | दधाव | दधावतुः | दधावुः | प्र. |
| | दधाविथ | दधावथुः | दधाव | म. |
| | दधाव | दधाविव | दधाविम | उ. |

१ 'ज्वरत्वर—' (४-६-२०) इत्युपधावकारयोरूठ्।
२ 'एत्येधत्यूठ्सु' (६-१-८९) इति वृद्धि।
३ 'ऊतियूति—' (३-३-९७) इति क्तिनि उदात्तान्तो निपातितः।
४ औणादिके मन् प्रत्यये प्रत्ययस्य टिलोपे इडभावे ऊठि गुणे च रूपम्।
५ औणादिकेऽनिप्रत्यये 'कृदिकारात्—' (४-१-४५ ग.सू.) इति ङीषि रूपद्वयम्।
६ औणादिकः तुन् प्रत्ययः ऊट् गुणः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुट् | धाविता | धावितारौ | धावितारः | प्र. |
| | धावितासि | धावितास्थः | धावितास्थ | म. |
| | धावितास्मि | धावितास्वः | धावितास्मः | उ. |
| लृट् | धाविष्यति | धाविष्यतः | धाविष्यन्ति | प्र. |
| | धाविष्यसि | धाविष्यथः | धाविष्यथ | म. |
| | धाविष्यामि | धाविष्यावः | धाविष्यामः | उ. |
| लोट् | धावतु-धावतात् | धावताम् | धावन्तु | प्र. |
| | धाव-धावतात् | धावतम् | धावत | म. |
| | धावानि | धावाव | धावाम | उ. |
| लङ् | अधावत् | अधावताम् | अधावन् | प्र. |
| | अधावः | अधावतम् | अधावत | म. |
| | अधावम् | अधावाव | अधावाम | उ. |
| वि. लि. | धावेत् | धावेताम् | धावेयुः | प्र. |
| | धावेः | धावेतम् | धावेत | म. |
| | धावेयम् | धावेव | धावेम | उ. |
| आ. लि. | धाव्यात् | धाव्यास्ताम् | धाव्यासुः | प्र. |
| | धाव्याः | धाव्यास्तम् | धाव्यास्त | म. |
| | धाव्यासम् | धाव्यास्व | धाव्यास्म | उ. |
| लुङ् | अधावीत् | अधाविष्टाम् | अधाविषुः | प्र. |
| | अधावीः | अधाविष्टम् | अधाविष्ट | म. |
| | अधाविषम् | अधाविष्व | अधाविष्म | उ. |
| लृङ् | अधाविष्यत् | अधाविष्यताम् | अधाविष्यन् | प्र. |
| | अधाविष्यः | अधाविष्यतम् | अधाविष्यत | म. |
| | अधाविष्यम् | अधाविष्याव | अधाविष्याम | उ. |

**आत्मनेपदे**—१ धावते। २ दधावे। ३ धाविता। ४ धाविष्यते। ५ धावताम्। ६ अधावत। ७ धावेत। ८ धाविषीष्ट। ९ अधाविष्ट। १० अधाविष्यत।

**कर्मणि**—धाव्यते। ९ अधावि। **णिचि**—धावयति। **सनि**—दिधाविषति-ते। **यङि**—दाधाव्यते। लङ्लुक् नास्ति। **कृत्सु**—धावकः-विका, धाविता-त्री, धावयिता-त्री, धावन्-न्ती, धावयन्-न्ती-ती, धावमानः, धावयमानः, धाविष्यमाणः, धावयिष्यमाणः, धौः[1]-धावौ-धावः, धौतम्[2]-तवान्, उपधावितम्-तः-तवान्, धावितः, धावः, प्रधावी, धावितव्यम्, धावयितव्यम्, धावनीयम्, धाव्यम्, धाव्यमानः, धावितुम्, धावयितुम्, धावा,[3] धावना,

---

१ क्विपि, 'च्छ्वोः शूडनुनासिके च' (६-४-१९) इत्यूठ् वकारस्य। एत्येधत्यूठ्सु (६-१-८९) इति वृद्धौ।
२ क्त्वायामिड्विकल्पनात्, 'यस्य विभाषा' (७-२-१५) इति इण्निषेधे ऊठि, वृद्धौ च धौतमिति रूपम्। 'यस्य विभाषा' (७-२-१५) इति इण्निषेधस्य नित्यत्वपक्षे इटि धावितम् इत्याद्यपि भवति। तस्य सूत्रस्यानित्यत्वं तु कृन्तत्यादेरीदित्करणात्, 'द्वितीया श्रितातीतपतित–' (२-१-२४) इत्यत्र पतितग्रहणाच्च ज्ञाप्यते।
३ 'गुरोश्च हलः' (३-३-१०३) इति स्त्रियां भावादौ अकारप्रत्यय।

प्रणिधावनम्[1]-प्रनिधावनम्, धावनम्, धावित्वा,[2] धौत्वा, धावयित्वा।

( ६०२-६०३ ) **धुक्ष-धिक्ष—संदीपनक्लेशनजीवनेषु**। (जलाना, श्रान्त होना या थकना, जीना)। सक.। सेट्। आत्मने.। धुक्षते। धिक्षते। 'शिक्षति' (६०५) वत्।

( ६०४ ) **वृक्ष—वरणे**। (योजित करना, पसन्द करना, ढकना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। वृक्षते। ववृक्षे। 'शिक्षति' (६०५) वत्।

( ६०५ ) **शिक्ष—विद्योपादाने**। (विद्या प्राप्त करना, अभ्यास करना, अध्ययन करना, सीखना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | शिक्षते | शिक्षेते | शिक्षन्ते | प्र. |
| | शिक्षसे | शिक्षेथे | शिक्षध्वे | म. |
| | शिक्षे | शिक्षावहे | शिक्षामहे | उ. |
| लिट् | शिशिक्षे | शिशिक्षाते | शिशिक्षिरे | प्र. |
| | शिशिक्षिषे | शिशिक्षाथे | शिशिक्षिध्वे | म. |
| | शिशिक्षे | शिशिक्षिवहे | शिशिक्षिमहे | उ. |
| लुट् | शिक्षिता | शिक्षितारौ | शिक्षितारः | प्र. |
| | शिक्षितासे | शिक्षितासाथे | शिक्षिताध्वे | म. |
| | शिक्षिताहे | शिक्षितास्वहे | शिक्षितास्महे | उ. |
| लृट् | शिक्षिष्यते | शिक्षिष्येते | शिक्षिष्यन्ते | प्र. |
| | शिक्षिष्यसे | शिक्षिष्येथे | शिक्षिष्यध्वे | म. |
| | शिक्षिष्ये | शिक्षिष्यावहे | शिक्षिष्यामहे | उ. |
| लोट् | शिक्षताम् | शिक्षेताम् | शिक्षन्ताम् | प्र. |
| | शिक्षस्व | शिक्षेथाम् | शिक्षध्वम् | म. |
| | शिक्षै | शिक्षावहै | शिक्षामहै | उ. |
| लङ् | अशिक्षत | अशिक्षेताम् | अशिक्षन्त | प्र. |
| | अशिक्षथाः | अशिक्षेथाम् | अशिक्षध्वम् | म. |
| | अशिक्षे | अशिक्षावहि | अशिक्षामहि | उ. |
| वि. लि. | शिक्षेत | शिक्षेयाताम् | शिक्षेरन् | प्र. |
| | शिक्षेथाः | शिक्षेयाथाम् | शिक्षेध्वम् | म. |
| | शिक्षेय | शिक्षेवहि | शिक्षेमहि | उ. |
| आ. लि. | शिक्षिषीष्ट | शिक्षिषीयास्ताम् | शिक्षिषीरन् | प्र. |
| | शिक्षिषीष्ठाः | शिक्षिषीयास्थाम् | शिक्षिषीध्वम् | म. |
| | शिक्षिषीय | शिक्षिषीवहि | शिक्षिषीमहि | उ. |

१ उपसर्गस्थान्निमित्तात् परस्य नेः 'शेषे विभाषाकऽखादावषान्त उपदेशे' (८-४-१८) इति णत्वविकल्पः।
२ 'उदितो वा' (७-२-५६) इति क्त्वायामिड् विकल्पः। इडभावपक्षे ऊडादिकं भवति।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुङ् | अशिक्षिष्ट | अशिक्षिषाताम् | अशिक्षिषत | प्र. |
| | अशिक्षिष्ठाः | अशिक्षिषाथाम् | अशिक्षिड्ढ्वम्-ध्वम् | म. |
| | अशिक्षिषि | अशिक्षिष्वहि | अशिक्षिष्महि | उ. |
| लृङ | अशिक्षिष्यत | अशिक्षिष्येताम् | अशिक्षिष्यन्त | प्र. |
| | अशिक्षिष्यथाः | अशिक्षिष्येथाम् | अशिक्षिष्यध्वम् | म. |
| | अशिक्षिष्ये | अशिक्षिष्यावहि | अशिक्षिष्यामहि | उ. |

**कर्मणि**—शिक्ष्यते। **णिचि**—शिक्षयति-ते। **सनि**—शिशिक्षिषते। **यङि**—शेशिक्ष्यते। **यङ्लुकि**—शेशीक्षीति-शेशिष्टि। **कृत्सु**—शिक्षकः, शिक्षिका, शिक्षिता-त्री, शिक्षयिता-त्री, शिक्षयन्-न्ती, शिक्षमाणः, शिक्षयमाणः, शिक्षितम्-तः-तवान्, शिक्षः, शिक्षितव्यम्, शिक्षयितव्यम्, शिक्षणीयम्, शिक्ष्यम्, शिक्ष्यमाणः, शिक्षितुम्, शिक्षयितुम, शिक्षा,[1] शिक्षणम्, शिक्षित्वा, शिक्षयित्वा, प्रशिक्ष्य।

**( ६०६ ) भिक्ष—भिक्षायामलाभे लाभे च।** (याचना करना, मांगना, प्राप्त करना, प्राप्त न होना)। सक.। सेट्। आत्म.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | भिक्षते | भिक्षेते | भिक्षन्ते | प्र. |
| | भिक्षसे | भिक्षेथे | भिक्षध्वे | म. |
| | भिक्षे | भिक्षावहे | भिक्षामहे | उ. |
| लिट् | बिभिक्षे | बिभिक्षाते | बिभिक्षिरे | प्र. |
| | बिभिक्षिषे | बिभिक्षाथे | बिभिक्षिध्वे | म. |
| | बिभिक्षे | बिभिक्षावहे | बिभिक्षामहे | उ. |
| लुट् | भिक्षिता | भिक्षितारौ | भिक्षितारः | प्र. |
| | भिक्षितासे | भिक्षितासाथे | भिक्षिताध्वे | म. |
| | भिक्षिताहे | भिक्षितास्वहे | भिक्षितास्महे | उ. |
| लृट् | भिक्षिष्यते | भिक्षिंष्येते | भिक्षिष्यन्ते | प्र. |
| | भिक्षिष्यसे | भिक्षिष्येथे | भिक्षिष्यध्वे | म. |
| | भिक्षिष्ये | भिक्षिष्यावहे | भिक्षिष्यामहे | उ. |
| लोट् | भिक्षताम् | भिक्षेताम् | भिक्षन्ताम् | प्र. |
| | भिक्षस्व | भिक्षेथाम् | भिक्षध्वम् | म. |
| | भिक्षै | भिक्षावहै | भिक्षामहै | उ. |
| लङ् | अभिक्षत | अभिक्षेताम् | अभिक्षन्त | प्र. |
| | अभिक्षथाः | अभिक्षेथाम् | अभिक्षध्वम् | म. |
| | अभिक्षे | अभिक्षावहि | अभिक्षामहि | उ. |
| वि. लि. | भिक्षेत | भिक्षेयाताम् | भिक्षेरन् | प्र. |
| | भिक्षेथाः | भिक्षेयाथाम् | भिक्षेध्वम् | म. |
| | भिक्षेय | भिक्षेव | भिक्षेम | उ. |

१ 'गुरोश्च हलः' (३-३-१०३) इत्यकार प्रत्ययः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आ. लि. | भिक्षिषीष्ट | भिक्षिषीयास्ताम् | भिक्षिषीरन् | प्र. |
| | भिक्षिषीष्ठाः | भिक्षिषीयास्थाम् | भिक्षिषीध्वम् | म. |
| | भिक्षिषीय | भिक्षिषीवहि | भिक्षिषीमहि | इ. |
| लुङ् | अभिक्षिष्ट | अभिक्षिषाताम् | अभिक्षिषत | प्र. |
| | अभिक्षिष्ठाः | अभिक्षिषाथाम् | अभिक्षिड्ढ्वम्-ध्वम् | म. |
| | अभिक्षिषि | अभिक्षिष्वहि | अभिक्षिष्महि | उ. |
| लृङ् | अभिक्षिष्यत | अभिक्षिष्येताम् | अभिक्षिष्यन्त | इत्यादि। |

**कृत्सु**—भिक्षकः-क्षिका, भिक्षिता-त्री, भिक्षयिता-त्री, भिक्षयन्-न्ती, भिक्षयिष्यन्-न्ती-ती, भिक्षमाणः, भिक्षयमाणः, भिक्षयिष्यमाणः, भिक्षितम्-त-तवान्। भिक्षः, भिक्षितव्यम्, भिक्षयितव्यम्, भिक्षणीयम्, भिक्षणम्, भिक्षयमाणः, भिक्षितुम्, भिक्षयितुम्, भिक्षा, भिक्षणम्, भिक्षित्वा, भिक्षयित्वा, प्रभिक्ष्य। भिक्षाकः,[1] भिक्षुः,[2] तण्डुलभिक्षः[3]।

**( ६०७ ) क्लेश—अव्यक्तायां वाचि।** वाधन इति दुर्गः। (अस्पष्ट शब्द करना, दुख देना, सताना)। सक.। सेट्। आत्मने.। क्लेशते। चिक्लेशे। 'वेष्टति' (२५५) वत्।

**( ६०८ ) दक्ष—वृद्धौ शीघ्रार्थे च।** (समृद्ध होना, शीघ्र कार्य करना, चतुर होना)। अकर्म.। सेट्। आत्मने.। दक्षते। ददक्षे। इत्यादि 'कत्थति' (३६) वत्।

**( ६०९ ) दीक्ष—मौण्डेज्योपनयननियमव्रतादेशेषु।** (मुण्डन करना, यज्ञ करना, दीक्षा देना, उपनयन करना, आत्मनिग्रह करना, धर्म सिखाना, आदेश देना)। अकर्म.। सेट्। आत्मने.। दीक्षते। इत्यादि 'शिक्षति' (६०५) वत्।

**( ६१० ) ईक्ष—दर्शने।** (देखना, अवलोकन करना)। **अप**—प्रतीक्षा करना, अपेक्षा करना, चाहना, **अभि**- टक लगाना, टकटकी बांधना। **अव**—देखना, निहारना। **उत्**—ऊपर देखना। **उप**—उपेक्षा करना, छोड़ना, त्यागना। **निर्**—देखना, देखभाल करना। **परि**—परीक्षा करना, जांचना। **प्र**—देखना, निहारना। **वि**—देखना, ताकना। **प्रति**—मार्ग देखना, प्रतीक्षा करना, बाट जोहना। **प्रत्युत्**—दूसरे के देखने पर आप भी उसकी ओर टकटकी लगा के निहारना। **सम्**—तुलना करना, बराबरी करना, समीक्षा करना। अकर्म.। सेट्। आत्मने.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | ईक्षते | ईक्षेते | ईक्षन्ते | प्र. |
| | ईक्षसे | ईक्षेथे | ईक्षध्वे | म. |
| | ईक्षे | ईक्षावहे | ईक्षामहे | उ. |
| लिट् | ईक्षाञ्चक्रे | ईक्षाञ्चक्राते | ईक्षाञ्चक्रिरे | इत्यादि। |

१ 'जल्पभिक्ष–' (३-२-१५५) इत्यनेन तच्छीलादिषु कर्तृषु षाकन् प्रत्यये रूपमेवम्। षित्वात् स्त्रियां ङीषि भिक्षाकी इति भवति। 'अनुदात्तेतश्च– (३-२-१४९) इति प्राप्तस्य युचोऽपवादोऽयम्।

२ तच्छीलादिषु कर्तृषु। 'सनाशंसभिक्ष उः' (३-२-१६८) इति उप्रत्ययः। ताच्छीलिकेषु वासरूपविधिर्नास्ति। इति, अत्रैव सूत्रे (३-२-१६८) भिक्षधातोः। ताच्छीलिकप्रत्यय विधायकस्थले पुनरुपादानात् ज्ञाप्यते इति बोध्यम्।

३ 'कर्मण्यण्' (३-२-१) इति कर्मण्युपपदे अण् प्रत्ययः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुट् | ईक्षिता | ईक्षितारौ | ईक्षितारः | प्र. |
| | ईक्षितासि | ईक्षितास्थः | ईक्षितास्थ | म. |
| | ईक्षितास्मि | ईक्षितास्वः | ईक्षितास्मः | उ. |
| लृट् | ईक्षिष्यते | ईक्षिष्येते | ईक्षिष्यन्ते | प्र. |
| | ईक्षिष्यसे | ईक्षिष्येथे | ईक्षिष्यध्वे | म. |
| | ईक्षिष्ये | ईक्षिष्यावहे | ईक्षिष्यामहे | उ. |
| लोट् | ईक्षताम् | ईक्षेताम् | ईक्षन्ताम् | प्र. |
| | ईक्षस्व | ईक्षेथाम् | ईक्षध्वम् | म. |
| | ईक्षै | ईक्षावहै | ईक्षामहै | उ. |
| लङ् | ऐक्षत | ऐक्षेताम् | ऐक्षन्त | प्र. |
| | ऐक्षथाः | ऐक्षेथाम् | ऐक्षेध्वम् | म. |
| | ऐक्षे | ऐक्षावहे | ऐक्षामहै | उ. |
| वि. लि. | ईक्षेत | ईक्षेयाताम् | ईक्षेरन् | प्र. |
| | ईक्षेथाः | ईक्षेयाथाम् | ईक्षेध्वम् | म. |
| | ईक्षेय | ईक्षेवहि | ईक्षेमहि | उ. |
| आ. लि. | ईक्षिषीष्ट | ईक्षिषीयास्ताम् | ईक्षिषीरन् | प्र. |
| | ईक्षिषीष्ठाः | ईक्षिषीयास्थाम् | ईक्षिषीध्वम् | म. |
| | ईक्षिषीय | ईक्षिषीवहि | ईक्षिषीमहि | उ. |
| लुङ् | ऐक्षिष्ट | ऐक्षिषाताम् | ऐक्षिषत | प्र. |
| | ऐक्षिष्ठाः | ऐक्षिषाथाम् | ऐक्षिड्ढ्वम्-ध्वम् | म. |
| | ऐक्षिषि | ऐक्षिष्वहि | ऐक्षिष्महि | उ. |
| लृङ् | ऐक्षिष्यत | ऐक्षिष्येताम् | ऐक्षिष्यन्त | प्र. |
| | ऐक्षिष्यथाः | ऐक्षिष्येथाम् | ऐक्षिष्यध्वम् | म. |
| | ऐक्षिष्ये | ऐक्षिष्यावहि | ऐक्षिष्यामहि | उ. |

**कर्मणि**—ईक्ष्यते। ९ ऐक्षि। **णिचि**—ईक्षयति-ते। ९ ऐचिक्षत्-त। **सनि**—ईचिक्षिषते। **कृत्सु**—ईक्षकः-क्षिका, ईक्षिता-त्री, ईक्षयिता-त्री, ईक्षयन्-न्ती, ईक्षयिष्यन्-न्ती, कृष्णाय ईक्षमाणः[1], ईक्षयमाणः, ईक्षिष्यमाण, ईक्षयिष्यमाणः, ईट्[2]-ईक्षौ-ईक्षः, ईक्षितः-तम्-तवान्, ईक्षः, प्रतीक्षः, प्रेक्षी[3], भरतप्रतीक्षः[4]-क्षा, अवसरप्रतीक्षः, ईक्षितव्यम्, ईक्षयितव्यम्, ईक्षणीयम्, ईक्ष्यम्, ईक्ष्यमाणः, ईक्षः, व्यतीक्षा,[5] ईक्षितुम्, ईक्षा, परीक्षा, ईक्षणा, ईक्षणम्, ईक्षित्वा, ईक्षयित्वा, प्रेक्ष्य, परीक्ष्य, समीक्ष्य।

१ राधीक्ष्योर्यस्य विप्रश्नः' (१-४-३९) इति कृष्णस्य सम्प्रदानसंज्ञा। वीक्षमाणो मृगं रामः चित्रवृत्तिं विसिष्मये। (भ.का. ५-५१)

२ 'स्कोः' (८-२-२९) इति कलोपः।

३ 'सुप्यजातौ णिनिः—' (३-२-७८) इति ताच्छील्ये णिनिः।

४ 'ईक्षिक्षमिभ्यां च' (वा. ३-२-१) इति कर्मणि उपपदे णः। टाप्। 'ताः सान्त्वयन्ती भरतप्रतीक्षा तं बन्धुता न्यक्षिपदाशु तैले' (भ.का. ३-२३)

५ कर्मव्यतिहारे विवक्षितेऽपि अभिधानस्वाभाव्यात् अत्र णच् नेष्ट इति स्पष्टं भाष्ये (३-३-४३)।

**(६११) ईष—गति हिंसादर्शनेषु**। (जाना। मारना। देखना)। सक.। सेट्। आत्मने.। ईषते इत्यादि। ईक्षति (६१०) वत्।

**(६१२) भाष—व्यक्तायां वाचि**। (स्पष्ट बोलना)। सक.। सेट्। आत्मने.। भाषते। बभाषे।

**कृत्सु**—भाषकः-षिका, **णिचि**—भाषकः-षिका, विभाषिषकः-षिका, बाभाषकः-षिका, भाषिता-त्री, भाषयिता-त्री, भाषयन्-न्ती, भाषयिष्यन्-न्ती-ती, भाषमाणः, भाषिष्यमाणः, भाषितम्, भाषितव्यम्, भाषयितव्यम्, भाषणीयम्, भाष्यम्, भाष्यमाणः, भाषितुम्, भाषयितुम्, भाषणम्, भाषित्वा, भाषयित्वा, प्रभाष्य, व्याभाषकः[1]-सुभाषी[2], सुभाषितम्, भाषा, आत्मनेभाषा[3]-परस्मैभाषा। 'गाधति' (४) वत्।

**(६१३) वर्ष—स्नेहने**। (गीला होना। भीगना। चिकना होना)। अक.। सेट्। आत्मने.। वर्षते। ववर्षे। 'पर्दति' (२९) वत्।

**(६१४) गेषृ—अन्विच्छायाम्**। (ढूँढना। पता लगाना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। ऋदित्। गेषते। जिगेषे। 'देवति' (५००) वत्।

**(६१५) पेषृ—प्रयत्ने**। (कोशिश करना)। सकर्म.। सेट्। आत्म.। पेषते 'देवति' (५०:) वत्। **एषृ**—इत्येके। **येषृ**—इत्यन्ये। एषते। एषांचक्रे। 'एधति' (२) वत्। **येष**—इत्यन्ये। अक.। सेट्। आत्म.। येषते। यियेषे।

**(६१६-६१७) जेषृ-णेषृ—गतौ**। (जाना)। सक.। सेट्। आत्मने.। ऋदित्। जेषते। नेषते। जिजेषे। निनेषे। इत्यादि 'देवति' (५०) वत्।

**(६१८) एषृ—गतौ**। (जाना)। सक.। सेट्। आत्म.। एषते। एषांचक्रे। इत्यादि 'एधति' (२) वत्।

**(६१९) प्रेषृ—गतौ**। (जाना)। सक.। सेट्। आत्मने.। प्रेषते। 'देवति' (५०) वत्।

**(६२०-६२२) रेषृ-हेषृ-ह्लेषृ—अव्यक्ते शब्दे**। (अस्पष्ट शब्द करना। हिनहिनाना)। अकर्म.। सेट्। आत्मने.। रेषते। हेषते। ह्लेषते। इत्यादि 'देवति' (५०) वत्।

**(६२३) कासृ—शब्दकुत्सायाम्**। (खांसना। खंखारना)। अक.। सेट्। आत्मने.। १ कासते। २ कासाञ्चक्रे। ३ कासिता। ४ कासिष्यते। ५ कासताम्। ६ अकासत। ७ कासेत। ८ कासिषीष्ट। ९ अकासिष्ट। १० अकासिष्यत।

---

१ 'निन्दहिंसाक्लिशखादविनाशपरिक्षिपपरिरटपरिवादिव्याभाषासूयो वुञ्' (३-२-१४५) इत्यादिना तच्छीलादिषु कर्तृषु वुञ् प्रत्यये रूपमेवम्।

२ 'सुप्यजातौ–' (३-२-७८) इति ताच्छील्ये णिनिः।

३ स्त्रियाम् 'गुरोश्च हलः' (३-३-१०३) इत्यकारप्रत्यये भाषा इति सिद्ध्यति। आत्मनेभाषा, परस्मैभाषा इत्यत्र 'वैयाकरणाख्यायां चतुर्थ्याः' (६-३-७) 'परस्य च' (६-३-८) इत्यलुक्। आत्मनेभाषा = आत्मनेपदम्। परस्मैभाषा = परस्मैपदम्। धातुपाठेषु वैयाकरणाख्यायामेते प्रसिद्धे। भाष्ये तु (६-३-७) प्रकृतस्थले आत्मनेभाषः, परस्मैभाषः इति घञन्त एवं प्रयुक्तो लक्ष्यते।

**कर्मणि**—कास्यते। **णिचि**—कासयति ते। **सनि**—चिकासिषते। **यङि**—चाकास्यते। **यङ्लुकि**—चाकासीति चाकाद्धि। **कृत्सु**—कासितव्यम्। कासनीयम्। कास्यम्। कासमानः। कासितुम्। कासित्वा। प्रकास्य। **कृत्सु**—कासकः-सिका, कासिता-त्री, कासयिता-त्री, कासयन्-न्ती, कास्ययिष्यन्-न्ती, कासमानः, कासयमानः, चिकासिषमाणः, चकास्यमानः, कासिष्यमाणः, कासयिष्यमाणः, प्रकाः-प्रकासौ-प्रकासः, कासितम्, कासः, कासयितव्यम्, कास्यम्, कासितुम्, कासा, कासना, निष्कासनम्, कासित्वा, कासयित्वा, विकास्य।

**( ६२४ ) भासृ—दीप्तौ।** (चमकना। प्रकाशित होना)। अकर्म.। सेट्। आत्मने.। भासते। बभासे। 'गाधति' (४) वत्।

**( ६२५-६२६ ) णासृ-रासृ—शब्दे।** (शब्द करना)। अक.। सेट्। आत्मने.। नासते। ननासे। रासते। ररासे। इत्यादि 'गाधति' (४) वत्।

**( ६२७ ) णस—कौटिल्ये।** (टेढा होना। वक्र होना। नम होना)। अक.। सेट्। आत्मने.। नसते नेसे। 'दधति' (८) वत्।

**( ६२८ ) भ्यस—भये।** (भय करना। डरना)। अक.। सेट्। आत्मने.। भ्यसते। बभ्यसे। 'स्वदति' (१८) वत्।

**( ६२९ ) आङःशसि—इच्छायाम्।** (इच्छा करना)। सक.। सेट्। आत्मने.। १ आशंसते। २ आशशंसे। आशशंसाते। इत्यादि 'कम्पति' (३७५) वत्।

**( ६३० ) ग्रसु—अदने।** (खाना। निकलना)। सक.। सेट्। आत्मने.।

१ **प्र.** ग्रसते। ग्रसेते। ग्रसन्ते। **म.** ग्रससे। ग्रसेथे। ग्रसध्वे। **उ.** ग्रसे। ग्रसावहे। ग्रसामहे। २ **प्र.** जग्रसे। जग्रसाते। जग्रसिरे। **म.** जग्रसिषे जग्रसाथे, जग्रसिध्वे। **उ.** जग्रसे। जग्रसिवहे, जग्रसिमहे। ३ **प्र.** गसिता, ग्रसितारौ, ग्रसितारः। **म.** ग्रसितासे, ग्रसितासाथे, ग्रसिताध्वे। **उ.** ग्रसिताहे ग्रसितस्वहे, ग्रसितास्महे। ४ **प्र.** ग्रसिष्यते। **म.** ग्रसिष्यसे। **उ.** ग्रसिष्ये। ५ **प्र.** ग्रसताम्। **म.** ग्रसस्व। **उ.** ग्रसे। ६ **प्र.** अग्रसत। अग्रसेताम्। अग्रसन्त। **म.** अग्रसथाः। अग्रसेथाम्। अग्रसध्वम्। **उ.** अग्रसे। अग्रसावहि अग्रसामहि। ७ **प्र.** ग्रसेत। ग्रसेयाताम् ग्रसेरन्। **म.** ग्रसेथाः। ग्रसेयाथाम्। ग्रसेध्वम्। **उ.** ग्रसेय। ग्रसेवहि। ग्रसेमहि। ८ **प्र.** ग्रसिषीष्ट। ग्रसिषीयास्ताम्। ग्रसिषीरन्। **म.** ग्रसिषीष्ठाः। ग्रसिषीयास्थाम्। ग्रसिषीध्वम्। **उ.** ग्रसिषीय। ग्रसिषीवहि। ग्रसिषीमहि। ९ **प्र.** अग्रसिष्ट। अग्रसिषाताम्। अग्रसिषत। **म.** अग्रसिष्ठाः। अग्रसिषाथाम्। अग्रसिड्ढ्वम्-ध्वम्। **उ.** अग्रसिषि। अग्रसिष्वहि। अग्रसिष्महि। १० **प्र.** अग्रसिष्यत। अग्रसिष्येताम्। अग्रसिष्यन्त। **म.** अग्रसिष्यथाः। अग्रसिष्येथाम्। अग्रसिष्यध्वम्। **उ.** अग्रसिष्ये। अग्रसिष्यावहि। अग्रसिष्यामहि।

**कर्मणि**—ग्रस्यते। **णिचि**—ग्रासयति। **सनि**—जिग्रसिषते। **यङि**—जाग्रस्यते। **यङ्लुकि**—जाग्रसीति-जाग्रस्ति। **कृत्सु**—ग्रसितव्यम्। ग्रसनीयम्। ग्रस्यम्। ग्रसित्वा-

ग्रस्त्वा । ग्रसितुम् । ग्रासः, ग्रहिष्णु । ग्रासकः-सिका, ग्रसिता-त्री, ग्रस्तः, ग्रासितः, ग्रसः, ग्रसनः, ग्रस्यमानः, ग्रास्यमानः, ग्रस्तिः, ग्रासना, ग्रसनम्, ग्रासनम् ।

**(६३१) ग्लसु—अदने ।** (खाना) । सक. । सेट् । आत्मने. । उदित् । ग्लसते । 'ग्रसति' (६३०) वत् ।

**(६३२) ईह—चेष्टायाम् ।** (प्रयत्न करना) । **सम्**—ईच्छा करना । (चाहना) । अक. । सेट् । आत्मने. ।

१ **प्र.** ईहते । ईहेते । ईहन्ते । **म.** ईहसे । ईहेथे । ईहध्वे । **उ.** ईहे । ईहावहे । ईहामहे । २ **प्र.** ईहाञ्चक्रे ईहाञ्चक्राते ईहाञ्चक्रिरे । **म.** ईहाञ्चकृषे । ईहाञ्चक्राथे ईहाञ्चकृढ्वे । **उ.** ईहाञ्चक्रे । ईहाञ्चकृवहे । ईहाञ्चकृमहे । ईहाम्बभूव । ईहामास । ३ **प्र.** ईहिता । ईहितारौ ईहितारः । **म.** ईहितासे । ईहितासाथे । ईहिताध्वे । **उ.** ईहिताहे ईहितास्वहे ईहितास्महे । ४ **प्र.** ईहिष्यते । ईहिष्येते । ईहिष्यन्ते । **म.** ईहिष्यसे । ईहिष्येथे । ईहिष्यध्वे । **उ.** ईहिष्ये । ईहिष्यावहे । ईहिष्यामहे । ५ **प्र.** ईहताम् । ईहेताम् । ईहन्ताम् । **म.** ईहस्व । ईहेथाम् । ईहध्वम् । **उ.** ईहै ईहावहै ईहामहै । ६ **प्र.** ऐहत । ऐहेताम् । ऐहन्त । **म.** ऐहथा । ऐहेथाम् । ऐहध्वम् । **उ.** ऐहे । ऐहावहि । ऐहामहि । ७ **प्र.** ईहेत । ईहेयाताम् । ईहेरन् । **म.** ईहेथाः । ईहेयाथाम् । ईहेध्वम् । **उ.** ईहेय । ईहेवहि । ईहेमहि । ८ **प्र.** ईहिषीष्ट । ईहिषीयास्ताम् । ईहिषीरन् । **म.** ईहिषीष्ठाः । ईहिषीयास्थाम् । ईहिषीध्वम् । **उ.** ईहिषीय । ईहिषीवहि । ईहिषीमहि । ९ **प्र.** ऐहिष्ट । ऐहिषाताम् । ऐहिषत । **म.** ऐहिष्ठाः । ऐहिषाथाम् । ऐहिड्ढ्वम्-ध्वम् । **उ.** ऐहिषि । ऐहिष्वहि । ऐहिष्महि । १० **प्र.** ऐहिष्यत । ऐहिष्येताम् । ऐहिष्यन्त । **म.** ऐहिष्यथाः । ऐहिष्येथाम् । ऐहिष्यध्वम् । **उ.** ऐहिष्ये । ऐहिष्यावहि । ऐहिष्यामहि ।

**कर्मणि**—ईह्यते । **णिचि**—ईहयति-ते । **सनि**—ईजिहिषते । **कृत्सु**—ईहितव्यम् । ईहणीयम् । ईहितः । ईहमानः । ईहितुम् । ईहित्वा । समीह्य ।

**(६३३-६३४) वहि-महि—वृद्धौ ।** (बढ़ना) । अकर्म. । सेट् । आत्मने. । वंहते । ववंहे । वंहिता । मंहते । ममंहे । मंहिता । अमंहिष्ट । इत्यादि 'शङ्कति' (८६) वत् ।

**(६३५) अहि—गतौ ।** (जाना) । सक. । सेट् । आत्म. । इदित् । अंहते । आनंहे । 'अङ्कति' (८७) वत् ।

**(६३६) गर्ह—कुत्सायाम् ।** (निन्दा करना, दोष लगाना) । सक. । सेट् । आत्मने. ।

१ **प्र.** गर्हते । गर्हेते । गर्हन्ते । **म.** गर्हसे । गर्हेथे । गर्हध्वे । **उ.** गर्हे । गर्हावहे । गर्हामहे । २ **प्र.** जगर्हे । जगर्हाते । जगर्हिरे । **म.** जगर्हिषे । जगर्हाथे । जगर्हिढ्वे । **उ.** जगर्हे । जगर्हिवहे । जगर्हिमहे । ३ **प्र.** गर्हिता । गर्हितारौ । गर्हितारः । **म.** गर्हितासे । गर्हितासाथे । गर्हिताध्वे । **उ.** गर्हिताहे । गर्हितास्वहे । गर्हितास्महे । ४ **प्र.** गर्हिष्यते । गर्हिष्येते । गर्हिष्यन्ते । **म.** गर्हिष्यसे । गर्हिष्येथे । गर्हिष्यध्वे । **उ.** गर्हिष्ये । गर्हिष्यावहे । गर्हिष्यामहे । ५ **प्र.** गर्हताम् । गर्हेताम् । गर्हन्ताम् । **म.** गर्हस्व । गर्हेथाम् । गर्हध्वम् । **उ.** गर्है । गर्हावहै । गर्हामहै । ६

प्र. अगर्हत। अगर्हेताम्। अगर्हन्त। म. अगर्हथाः। अगर्हेथाम्। अगर्हध्वम्। उ. अगर्हे। अगर्हावहि। अगर्हामहि। ७ प्र. गर्हेत। गर्हेयाताम्। गर्हेरन्। म. गर्हेथाः। गर्हेयाथाम्। गर्हेध्वम्। उ. गर्हेय। गर्हेवहि। गर्हेमहि। ८ प्र. गर्हिषीष्ट। गर्हिषीयास्ताम्। गर्हिषीरन्। म. गर्हिषीष्ठाः। गर्हिषीयास्थाम्। गर्हिषीध्वम्। उ. गर्हिषीय। गर्हिषीवहि। गर्हिषीमहि। ९ प्र. अगर्हिष्ट। अगर्हिषाताम्। अगर्हिषत। म. अगर्हिष्ठाः। अगर्हिषाथाम्। अगर्हिड्ढ्वम्-ध्वम्। उ. अगर्हिषि। अगर्हिष्वहि। अगर्हिष्महि। १० प्र. अगर्हिष्यत। अगर्हिष्येताम्। अगर्हिष्यन्त। म. अगर्हिष्यथाः। अगर्हिष्येथाम्। अगर्हिष्ध्वम्। उ. अगर्हिष्ये। अगर्हिष्यावहि। अगर्हिष्यामहि।

**भावे**—गर्ह्यते। **णिचि**—गर्हयति-ते। **सनि**—जिजर्हिषते। **यङि**—जागर्ह्यते। **यङ्लुकि**—जागर्हीति जागर्द्धि। **कृत्सु**—गर्हितव्यम्। गर्हनीयम्। गर्ह्यम्। गर्हितः। गर्हितुम्। गर्हित्वा। गर्हकः-र्हिका, गर्हिता-त्री, गर्हयिता-त्री, गर्हमाणः, गर्हयमाणः, गर्हयन्-न्ती, गर्हयिष्यन्-न्ती-ती, गर्हिष्यमाणः, गर्हयिष्यमाणः, घर्ट-ड्-गर्हौ-गर्हः, गर्हितम्, गर्हः, गर्हणः, गर्ह्यम्, गर्ह्यमाणः, गर्हा, गर्हनम्।

(६३७) **गल्ह—कुत्सायाम्**। (निन्दा करना)। सक.। सेट्। आत्मने.। गल्हते। जगल्हे। इत्यादि- 'गर्हति' (६३६) वत्।

(६३८-६३९) **बर्ह-बल्ह—प्राधान्ये**। (श्रेष्ठ होना)। सक.। सेट्। आत्मने.। बर्हते। बबर्हे। बल्हते। बबल्हे। 'कत्थति' (३७) वत्।

(६४०-६४१) **वर्ह-वल्ह—परिभाषणहिंसाच्छनेषु**। (बोलना। मारना या दुख देना। आच्छादित करना। ढकना)। अर्थानुगुण्येन सकर्मकोऽकर्मश्च। सेट्। आत्मने। वर्हते। वल्हते। 'कत्थति' (३७) वत्।

(६४२) **प्लिह—गतौ**। (जाना)। सक.। सेट्। आत्मने.। १ प्लेहते। २ पिप्लेहे। ३ प्लेहिता। ४ प्लेहिष्यते। ५ प्लेहताम्। ६ अप्लेहत। ७ प्लेहेत। ८ प्लेहिषीष्ट। ९ अप्लेहिष्ट। १० अप्लेहिष्यत। शेषं क्ष्विदाधातुवत्।

(६४३) **बेह (बेह) प्रयत्ने**। (कोशिश करना)। अक.। सेट्। आत्म.। १ बेहते। २ बिबेहे। 'देवति' (५००) वत्।

(६४४) **जेह—प्रयत्ने गतौ च**। (कोशिश करना। जाना)। सक.। सेट्। आत्मने.। जेहते जिजेहे। 'देवति' (५०:) वत्।

(६४५) **बाह—(बाह) प्रयत्ने**। (कोशिश करना)। अक.। सेट्। आत्मने.। बाहते। बाधति (५) वत्।

(६४६) **द्राह—निद्राक्षये**। (जगना। जागृत रहना)। अक.। सेट्। आत्मने.। १ द्राहते। २ दद्राहे। 'गाधति' (४) वत्।

**( ६४७ ) काशृ—दीप्तौ।** (चमकना) अक.। सेट्। आत्मने.। काशते। चकाशे। इत्यादि 'गाधति' (४) वत्।

**कृत्सु**—काशकः-शिका, काशिता-त्री, काशयिता-त्री, काशयन्-न्ती, काशयिष्यन्-न्ती-ती, काशमानः, काशयमानः, काशयिष्टामाणः, काट्-ड्-काशौ-काशः, काशितम्, काशः, काशी, प्रकाशी, नीकाशः, वीकाशः, प्रकाशमानः, काशयितव्यम्, काशनीयम्, प्रकाश्यम्, ईषत्काशः, काश्यमानः, काशितुम्, काशित्वा, कासयित्वा, प्रकाश्य।

**( ६४८ ) ऊह—वितर्के।** (तर्क करना। कल्पना करना)। सक.। सेट्। आत्मने.।

१ **प्र.** ऊहते। ऊहेते। ऊहन्ते। **म.** ऊहसे। ऊहेथे। ऊहध्वे। **उ.** ऊहे। ऊहावहे। ऊहामहे। २ **प्र.** ऊहाञ्चक्रे। ऊहाञ्चक्राते। ऊहाञ्चक्रिरे। **म.** ऊहाञ्चकृषे। ऊहाञ्चक्राथे। ऊहाञ्चकृढ्वे। **उ.** ऊहाञ्चक्रे। ऊहाञ्चकृवहे। ऊहाचकृमहे। ३ **प्र.** ऊहिता। ऊहितारौ। ऊहितारः। **म.** ऊहितासे। ऊहितासाथे। ऊहिताध्वे। **उ.** ऊहिताहे। ऊहितास्वहे। ऊहितास्महे। ४ **प्र.** ऊहिष्यते। ऊहिष्येते। ऊहिष्यन्ते। **म.** ऊहिष्यसे। ऊहिष्येथे। ऊहिष्यध्वे। **उ.** ऊहिष्ये। ऊहिष्यावहे। ऊहिष्यामहे। ५ **प्र.** ऊहताम्। ऊहेताम्। ऊहन्ताम्। **म.** ऊहस्व ऊहेथाम्। ऊहध्वम्। **उ.** ऊहै। ऊहावहै। ऊहामहै। ६ **प्र.** औहत। औहेताम्। औहन्त। **म.** औहथाः। औहेथाम्। औहध्वम्। **उ.** औहे। औहावहि। औहामहि। ७ **प्र.** ऊहेत। ऊहेताम्। ऊहेरन्। **म.** ऊहेथाः। ऊहेथाम्। ऊहेध्वम्। **उ.** ऊहेय। ऊहेवहि। ऊहेमहि। ८ **प्र.** ऊहिषीष्ट। ऊहिषीयास्ताम्। ऊहिषीरन्। **म.** ऊहिष्ठाः। ऊहिषीयास्थाम्। ऊहिढ्वम्। **उ.** ऊहिषीय। ऊहिषीवहि। ऊहिषीमहि। ९ **प्र.** औहिष्ट। औहिषाताम्। औहिषत। **म.** औहिष्ठाः। औहिषाथाम्। औहिढ्वम्। **उ.** औहिषि। औहिष्वहि। औहिष्महि। १० **प्र.** औहिष्यत। औहिष्येताम्। औहिष्यन्त। **म.** औहिष्यथाः औहिष्येथाम्। औहिष्यध्वम्। **उ.** औहिष्ये। औहिष्यावहि। औहिष्यामहि।

**णिचि**—ऊहयते। **सनि**—ऊजिहिषते। **कृत्सु**—ऊहितव्यम्। ऊहनीयम्। ऊह्यम्। ऊहितः। ऊहित्वा। समूह्य। ऊहकः-हिका, ऊहकः-हिका, ऊजिहिषकः-षिका, ऊहिता-त्री, ऊहयिता-त्री, समूहन-न्ती, ऊहयन्-न्ती, समूहिष्यन-न्ती-ती, ऊहयिष्यन्-न्ती-ती, ऊहमानः, ऊहयमानः, ऊहिष्यमाणः, ऊहयिष्यमाणः, ऊट्-ऊहौ-ऊहः, ऊहितम्, ऊहितः, ऊहः, ऊहितव्यम्, ऊहयितव्यम्, ऊहनीयम्, ऊह्यम्, समूह्योऽग्निः, ऊह्यमानः, निरुह्यमानः, प्रौहः, ऊहितुम्, ऊहयितुम्, ऊहा, ऊहना, ऊहनम्, प्रोहनम्, ऊहित्वा, ऊहयित्वा, समूह्य।

**( ६४९ ) गाहू—विलोडने। विलोडनम्**—प्रतिघातः। (नष्ट करना। मर्म भेद करना)। **अव**—स्नान करना। अवगाहन करना। **वि**—स्नान करना। कांपना। सक.। सेट्। आत्मने.।

१ **प्र.** गाहते। गाहेते। गाहन्ते। **म.** गाहसे। गाहेथे। गाहध्वे। **उ.** गाहे। गाहावहे। गाहामहे। २ **प्र.** जगाहे। जगाहाते। जगाहिरे। **म.** जगाहिषे-जघाक्षे। जगाहाथे। जगाहिड्वे-ध्वे-जघाढ्वे। **उ.** जगाहे। जगाहिवहे। जगाह्वहे। जगाहिमहे जगाह्महे। ३

**प्र.** गहिता-गाढा। गहितारौ-गाढारौ। गाहितारः-गाढारः। **म.** गाहितासे-गाढासे। गाहितासाथे-गाढासाथे। गाहिताध्वे-गाढाध्वे। **उ.** गाहिताहे-गाढाहे। गाहितास्वहे-गाढास्वहे। गाहितास्महे-गाढास्महे। ४ **प्र.** गाहिष्यते-घाक्ष्यते। गाहिष्येते-घाक्ष्येते। गाहिष्यन्ते-घाक्ष्यन्ते। **म.** गाहिष्यसे। घाक्ष्यसे। गाहिष्येथे-घाक्ष्येथे। गाहिष्यध्वे-घाक्ष्यध्वे। **उ.** गाहिष्ये-घाक्ष्ये। गाहिष्यावहे-घाक्ष्यावहे। गाहिष्यामहे-घाक्ष्यामहे। ५ **प्र.** गाहताम्। गाहेताम्। गाहन्ताम्। **म.** गाहस्व। गाहेथाम्। गाहध्वम्। **उ.** गाहै। गाहावहै। गाहामहै। ६ **प्र.** अगाहत। अगाहेताम्। अगाहन्त। **म.** अगाहथाः। अगाहेथाम्। अगाहध्वम्। **उ.** अगाहे। अगाहावहे। अगाहामहे। ७ **प्र.** गाहेत। गाहेयाताम्। गाहेरन्। **म.** गाहेथाः। गाहेयाथाम्। गाहेध्वम्। **उ.** गाहेय। गाहेवहि। गाहेमहि। ८ **प्र.** गाहिषीष्ट-घाक्षीष्ट। गाहिषीयास्ताम्-घाक्षीयास्ताम्। गाहिषीरन्-घाक्षीरन्। **म.** गाहिषीष्टाः-घाक्षीष्टाः। गाहिषीयास्ताम्-घाक्षीयास्ताम्। गाहिषीध्वम्-घाक्षीध्वम्। **उ.** गाहिषीय-घाक्षीय। गाहिषीवहि-घाक्षीवहि। गाहिषीमहि-घाक्षीमहि। ९ **प्र.** अगाहिष्ट-अगाढ। अगाहिषाताम्-आघाक्षाताम्। अगाहिषत-अघाक्षत। **म.** अगाहिष्टाः-अगाढाः। अगाहिषाताम्-अघाक्षाम्। अगाहिध्वम्-अघाध्वम्। **उ.** अगाहिषि-अघाक्षि। अगाहिष्वहि-अघाक्ष्वहि। अगाहिष्महि-अघाक्ष्महि। १० **प्र.** अगाहिष्यत-अघाक्ष्यत। अगाहिष्येताम्-अघाक्ष्येताम्। अगाहिष्यन्त-अघाक्ष्यन्त। **म.** अगाहिष्यथाः-अघाक्ष्यथाः। अगाहिष्येथाम्-अघाक्ष्येथाम्। अगाहिष्यध्वम्-अघाक्ष्यध्वम्। **उ.** अगाहिष्ये-अघाक्ष्ये। अगाहिष्यावहि-अघाक्षावहि। अगाहिष्यामहि-अघाक्ष्यामहि।

**कर्मणि**—गाह्यते। **णिचि**—गाहयति-ते। **सनि**—जिगाहिषते-जिघाक्षते। **यङि**—जागाह्यते। **यङ्लुकि**—जागाहीति-जागाढि। **कृत्सु**—गाहितव्यम्-गाढव्यम्। गाहनीयम्। गाढ्यम्। गाढः। गाहितुम्-गाढुम्। गाहित्वा-गाढ्वा गाहमानः। गाहकः-हिका, गाहिता-त्री, विगूढा-ढ्री, गाहयिता-त्री, गाहयन्-न्ती, गाहयिष्यन्-न्ती, गाहयमानः, जिगाहिषमाणः, जिघाक्षमाणः, जागाह्यमानः, गाहिष्यमाणः, घाक्ष्यमाणः, गाहयिष्यमाणः, सुघाट्-ड्-सुगाहौ-सुगाहः, गाढम्-ढः-ढवान्, गाहितः, गहः, गहा, गाहः, गोही, गाहनः, अवगाही, गाहयितव्यम्, अवगाह्यमानः, जिगाहिष्यमाणः, जिघाक्ष्यमाणः, जागाह्यमानः, गाहनम्, गहनम्।

( ६५० ) **गृहू—ग्रहणे**। (लेना स्वीकार करना)। सक.। सेट्। आत्मने.।

१ गर्हते। २ **प्र.** जगृहे। जगृहाते। जगृहिरे। **म.** जगृहिषे-जघृक्षे। जगृहाथे। जगृहिढ्वे-ध्वे-जघृढ्वे। **उ.** जगृहे। जगृहिवहे-जगृह्वहे। जगृहिमहे-जगृह्महे। ३ गर्हिता-गर्ढा। ४ गर्हिष्यते-घर्क्ष्यते। ८ गर्हिषीष्ट-घृक्षीष्ट। ९ अगर्हिष्ट-अघृक्षत। १० अगर्हिष्यत-अघर्क्ष्यत।

**कर्मणि**—गृह्यते। **णिचि**—गर्हयति-ते। **सनि**—जिगर्हिषते-जिघृक्षते। **यङि**—जरीगृह्यते। **यङ्लुकि**—जर्गहीति-जरीगृहीति-जर्गर्ढि इत्यादि। **कृत्सु**—गर्हितव्यः, गर्ढव्यः। गर्हणीयः। गृह्यः। गर्हमाणः। गर्हित्वा-गृढ्वा। गृढः। विगृह्य। गर्हितुम्-गर्ढुम्। गर्हकः-र्हिका, गर्हिता-त्री, गर्ढा-ढ्री, गर्हयिता-त्री, गर्हयन्-न्ती, गर्हयिष्यन्-न्ती-ती, गर्हयमाणः, गर्हिष्यमाणः,

घर्क्ष्यमाणः, गर्हयिष्यमाणः, संघृट्-ड्-संगृहौ-संगृहः, गृढवान्, गर्हितः, गृहम्, गर्हणः, दोषगर्ही, जिगर्हिषु-जिघृक्षुः, जरीगृहः, गर्हयितव्यम्, गृह्यमाणः, गर्हयमाणः, गर्हः, गृढिः, गर्हणा, प्रगृह्य।

**(६५१) ग्लह—ग्रहणे**। (लेना)। सक.। वेट्। आत्मने.। ग्लहते। 'गर्हति' (६५०) वत्।

**(६५२) घुषि—कान्तिकरणे**। **घष**—इति केचित् (स्वच्छ करना। चमकाना। साफ करना)। सक.। सेट्। आत्मने.। १ घुंषते। २ जुघुंषे। ९ अघुषिष्ट। **घुष**—१ घोषते। २ जुघुषे। 'रोचति' वत्।

**(६५३) घुषिर्—अविशब्दने**। शब्द इत्यन्ये। (मन में विचार कर कहना। प्रशंसा करना। तरह-तरह के शब्द करना)। **आ**—मिलकर रोना। ढिंढोरा पीटना। सक.। सेट्। परस्मै.।

१ घोषति। २ जुघोष। ३ घोषिता। ४ घोषिष्यति। ५ घोषतु। ६ अघोषत्। ७ घोषेत्। ८ घुष्यात्। घुष्यास्ताम्। ९ अघुषत्। अघुषताम्। अघोषीत्। अघोषिष्टाम्। १० अघोषिष्यत्।

**कर्मणि**—घुष्यते। **णिचि**—घोषयति। ९ अजूघुषत्। **सनि**—जुघुषिषति-जुघोषिषति। **यङि**—जोघुष्यते। **यङ्लुकि**—जोघोष्टि-जोघुषीति। **कृत्सु**—घोषितव्यम्। घोषणीयम्। घोष्यम्। घोषन्। घुषितम्। घुषित्वा। घोषित्वा। घोषितुम्। घोषकः-षिका, घोषिता-त्री, घोषयिता-त्री, घोषन्-न्ती, घोषयन्-न्ती, घोषिष्यन्-न्ती-ती, घोषयिष्यन्-न्ती-ती, घोषयमानः, घोषयिष्यमाणः,संघुट्-ड्-सुङ्घुषौ-सङ्घुषः,घुष्टम्,सङ्घुषितम्,घोषितः,घुषः,घोषणः,घोषः,घोष्यम्, घुष्यमाणः, घोष्यमाणः, जुघुष्यमाणः, घुष्टिः, घोषणा, घोषणम्।

**(६५४) अक्षू—व्याप्तौ**। (व्याप्त होना)। सक.। सेट्। परस्मै.।

१ **प्र.** अक्ष्णोति। अक्ष्णुतः। अक्ष्णुवन्ति। **म.** अक्ष्णोषि। अक्ष्णुथः। अक्ष्णुथ। **उ.** अक्ष्णोमि। अक्ष्णुवः। अक्ष्णुमः। श्नुप्रत्ययाभावपक्षे शपि– १ **प्र.** अक्षति। अक्षतः। अक्षन्ति। **म.** अक्षसि। अक्षथः। अक्षथ। **उ.** अक्षामि। अक्षावः। अक्षामः। २ **प्र.** आनक्ष। आनक्षतुः। आनक्षुः। **म.** आनक्षिथ-आनष्ट। आनक्षथुः। आनक्ष। **उ.** आनक्ष। आनक्षिव-आनक्ष्व। आनक्षिम-आनक्ष्म। ३ **प्र.** आक्षिता-अष्टा। अक्षितारौ-अष्टारौ। अक्षितारः-अष्टारः। **म.** अक्षितासि-अष्टासि। अक्षितास्थः-अष्टास्थः। अक्षितास्थ-अष्टास्थ। **उ.** अक्षितास्मि-अष्टास्मि। अक्षितास्वः। अष्टास्वः। आक्षितास्मः-अष्टास्मः। ४ **प्र.** अक्षिष्यति। अक्षिष्यतः। अक्षिष्यन्ति। **म.** अक्षिष्यसि। अक्षिष्यथः। अक्षिष्यथ। **उ.** अक्षिष्यामि। अक्षिष्यावः। अक्षिष्यामः। पक्षे—**प्र.** अक्ष्यति। **म.** अक्ष्यसि। **उ.** अक्ष्यामि। ५ **प्र.** अक्ष्णोतु-तात्। अक्ष्णुताम्। अक्ष्णुवन्तु। **म.** अक्ष्णुहि-तात्। अक्ष्णुतम्। अक्ष्णुत। **उ.** अक्ष्णवानि। अक्ष्णवाव। अक्ष्णवाम। पक्षे– **प्र.** अक्षतु-तात्। अक्षताम्। अक्ष्न्तु। **म.** अक्ष-तात्। अक्षतम्। अक्षत। **उ.** अक्षाणि। अक्षाव। अक्षाम। ६ आक्ष्णोत्। आक्ष्णुताम्। आक्ष्णुवन्। आक्ष्णोः।

आक्ष्णुतम् । आक्ष्णुत । आक्ष्णवम् । आक्ष्णुव । आक्ष्णुम । पक्षे– आक्षत् । आक्षः । आक्षम । ७ प्र. अक्ष्णुयात् । अक्ष्णुयाताम् । अक्ष्णुयुः । म. अक्ष्णुयाः । अक्ष्णुयातम् । अक्ष्णुयात । उ. अक्ष्णुयाम् । आक्ष्णुयाव । अक्ष्णुयाम । पक्षे—प्र. अक्षेत् । अक्षेताम् । अक्षेयुः । म. अक्षेः । अक्षेतम् । अक्षेत । उ. अक्षेयम् । अक्षेव । अक्षेम । ८ प्र. अक्ष्यात् । अक्ष्यास्ताम् । अक्ष्यासुः । म. अक्ष्याः । अक्ष्यास्तम् । अक्ष्यास्त । उ. अक्ष्यासम् । अक्ष्यास्व । अक्ष्यास्म् । ९ प्र. आक्षीत् । आक्षिष्टाम्-आष्टाम् । आक्षिषुः-आक्षुः । म. आक्षीः । आक्षिष्टम्-आष्टम् । आक्षिष्ट-आष्ट । उ. आक्षिषम्-आक्षम् । आक्षिष्व-आक्ष्व । आक्षिष्म- आक्ष्म । १० प्र. आक्षिष्यत्-आक्ष्यत् । आक्षिष्यताम्-आक्ष्यताम् । आक्षिष्यन्-आक्ष्यन् । म. आक्षिष्यः-आक्ष्य । आक्षिष्यतम्-आक्ष्यतम् । आक्षिष्यत-आक्ष्यत । उ. आक्षिष्यम्-आक्ष्यम् । आक्षिष्याव-आक्ष्याव । आक्षिष्याम-आक्ष्याम ।

**कर्मणि**—अक्ष्यते । **णिचि**—अक्षयति । **सनि**—अचिक्षिषति-अचिक्षति । **कृत्सु**—अक्षकः-क्षिका, अचिक्षिषकः-षिका, अक्षिता[1]-त्री, अक्षयिता-त्री, अष्टा-ष्ट्री, अक्षन्-न्ती, अक्षयन्-न्ती, अक्ष्णुवन्[2]-वती, अक्षिष्यन्, अक्ष्यन्-न्ती-ती, अक्षयिष्यन्-न्ती-ती, अट्[3] अक्षौ-अक्षः, अक्[4], अक्षौ-अक्षः, अष्ट[5], ष्टम्, ष्टवान्, अक्षितः, अचिक्षिषितम्-तः-तवान्, अक्षः, कटाक्षः,[6] (ज्वलनः), अचिक्षिषुः, अचिक्षयिषुः, अक्षितव्यम्, अष्टव्यम्, अक्षयितव्यम्, अक्षणीयम्, अक्ष्यम्, अक्ष्यमाणः, अक्षितुम्-अष्टुम, अक्षयितुम्, अष्टिः, अक्षणा, अचिक्षिषा, अक्षणम्, अक्षित्वा, अष्ट्वा, अक्षयित्वा, समक्ष्य, अक्षि[7] ।

( ६५५ ) **तक्षु—तनूकरणे**। तनूकरनम्-तीक्ष्णकरणम् । (तेज करना । छीलना)। अनु—धार लगाना । सम्—टुकड़े करना । सक. । वेट् । परस्मै. ।

१ प्र. तक्षति । तक्षतः । तक्षन्ति । म. तक्षसि । तक्षथः । तक्षथ । उ. तक्षामि । तक्षावः । तक्षामः । पक्षे—तक्ष्णोति । २ प्र. ततक्ष । ततक्षतुः । ततक्षुः । म. ततक्षिथ-ततष्ट । ततक्षथुः । ततक्ष । उ. ततक्ष । ततक्षिव-ततक्ष्व । ततक्षिम-ततक्ष्म । ३ प्र. तक्षिता-तष्टा । तक्षितारौ-तष्टारौ । तक्षितारः-तष्टारः । म. तक्षितासि-तष्टासि । तक्षितास्थः-तष्टास्थः । तक्षितास्थ-तष्टास्थ । उ. तक्षितास्मि-तष्टास्मि । तक्षितास्वः-तष्टास्वः । तक्षितास्मः-तष्टास्मः । ४ प्र. तक्षिष्यति-तक्ष्यति । म. तक्षिष्यसि-तक्ष्यसि । उ. तक्षिष्यामि-तक्ष्यामि । ५ प्र. तक्षतु-तक्षतात् । म. तक्ष-तक्षतात् । उ. तक्षाणि । ६ प्र. अतक्षत् । म. अतक्षः । उ. अतक्षम् । ७ प्र. तक्षेत् । म. तक्षेः । उ. तक्षेयम् । ८ प्र. तक्ष्यात् । म. तक्ष्याः । उ. तक्ष्यासम् । ९ प्र. अतक्षीत्-अताक्षीत् । अतक्षिष्टाम् ।

१ 'स्वरतिसूति– ' (७-२-४४) इतीड्विकल्पः ।
२ 'अक्षोऽन्यतरस्याम्' (३-१-७५) इति वा श्नुः । उवङ् ।
३ 'स्कोः–' (८-३-२९) इति कलोपः ।
४ 'संयोगान्तस्य लोपः' (८-२-२५) ।
५ ऊदित्वात्, 'यस्य विभाषा' (७-२-१५) इतीण्णिषेधः । ककारलोपः ।
६ 'कर्मण्यण्' (३-२-१) इत्यण् ।
७ औणादिके इन् प्रत्ययः ।

अताष्टाम्। अतक्षिषु:-अताक्षुः। **म.** अतक्षीः-अताक्षीः। अतक्षिष्टम्-अताष्टम्। अतक्षिष्ट-अताष्ट। **उ.** अतक्षिषम्-अताक्षम्। अताक्षिष्व-अताक्ष्व। अतक्षिष्म-अताक्ष्म। १० **प्र.** अतक्षिष्यत्-अतक्ष्यत्। **म.** अतक्षिष्यः- अतक्ष्यः। **उ.** अतक्षिष्यम्-अतक्ष्यम्।

**कर्मणि**—तक्ष्यते। **णिचि**—तक्षयति-तक्षयते। **सनि**—तितिक्षिषति-तितक्षति। **यङि**—तातक्ष्यते। **यङ्लुकि**—तातक्षीति-तातष्टि। **कृत्सु**—तक्षितव्यम्-तष्टव्यम्।

**( ६५६ ) त्वक्षु—तनूकरणे**। (छोटा करना)। सक.। वेट्। पर.। त्वक्षति त्वक्ष्णोति। सर्वं तक्षति वत् (६५५)

**( ६५७ ) उक्ष—सेचने**। (सींचना। गीला करना)। सक.। सेट्। परस्मै.।

१ प्र. उक्षति। २ उक्षाञ्चकार। ३ उक्षिता। ४ उक्षिष्यति। ५ उक्षतु-उक्षात्। ६ औक्षत्। ७ उक्षेत्। ८ उक्ष्यात्। ९ औक्षीत्। १० औक्षिष्यत्।

**कर्मणि**—उक्ष्यते। **णिचि**—उक्षयति-ते। **सनि**—उचिक्षिषति। **कृत्सु**—उक्षितव्यम्। उक्षणीयम्। उक्षितः। उक्षन्। उक्षितुम्। उक्षणम्। उक्षित्वा। प्रोक्ष्य। उक्षा। जातोक्षः। महोक्षः। वृक्षोक्षः।

**( ६५८ ) रक्ष—पालने**। (पालन करना)। सक.। सेट्। परस्मै.।

१ रक्षति। २ ररक्ष। इत्यादि 'नर्दति' (५६) वत्।

**कृत्सु**—रक्षकः-क्षिका, रिरक्षिषकः-षिका, रारक्षकः-क्षिका, रक्षिता-त्री, रक्षयिता-त्री, रक्षन्-न्ती, रक्षयन्-न्ती, रक्षिष्यन्-न्ती-ती, रक्षयिष्यन्-न्ती-ती, रक्ष्यमाणः, रक्षयिष्यमाणः, रक्षितः, रक्षः, रक्षितव्यम्, रक्षयितव्यम्, रक्षणीयम्, रक्ष्यंम्, रक्ष्यमाणः, रक्षितुम्, रक्षयितुम्, रक्षा, रक्षणम्, रक्षित्वा, रक्षयित्वा, निरक्षी,[1] प्रतिहाररक्षी,[2] रक्षणः[3], रक्षण[4]-राक्षसः, रक्षिता[5], रट्[6]-रक्षौ-रक्षः, गोरक्-ग्-गोरक्षौ-गोरक्षः।

**( ६५९ ) णिक्ष—चुम्बने**। (चुम्बन लेना)। चूमना। सक.। सेट्। पर.। निक्षति। निनिक्ष। 'क्रिन्दति' (७२) वत्।

**( ६६०-६६१ ) त्रक्ष-ष्ट्रक्ष (तृक्ष ष्टृक्ष) गतौ**। जाना। सक.। सेट्। पर.। १ तृक्षति। २ ततृक्ष। १ स्तृक्षति। २ तस्तृक्ष। शेषं सर्वं 'नर्दति' (५६) वत्।

---

१ 'रक्षश्रुवसवपशां नौ' (ग.सू. ३-१-१३४) इति ग्रह्यादिषु वचनात् कर्तरि निपूर्वकादस्माण्णिनिः।

२ प्रतिहारं = गृहाङ्कदेशविशेषं रक्षतीति प्रतिहाररक्षी। 'कर्मण्यण्' (३-२-१) इत्यण् प्रत्यये स्त्रियाम् अणन्तलक्षणे ङीपि रूपमेवम्।

३ 'यजयाचयतविच्छप्रच्छरक्षो नङ्' (३-३-९०) इति भावे नङ्प्रत्ययः। 'नेड् वशि कृति' (७-२-८) इतीण्णिषेधः।

४ 'असुन्' (द.उ. ७-४९) इत्युन् प्रत्यये रूपम्। रक्ष एव राक्षसः। प्रज्ञादित्वात् स्वार्थेऽण् प्रत्ययः।

५ ताच्छील्ये 'तृन्' (३-२-१३५) इति तृन्।

६ शुद्धाद्धातोः क्विपि संयोगान्तलोपे रूपमेवम्। ण्यन्तात् क्विपि तु संयोगान्तलोपे गोरक् इति रूपमिति विशेषः।

**(६६२) णक्ष (नक्ष) गतौ।** जाना। सक.। सेट्। पर.। १ नक्षति। २ ननक्ष। 'नर्दति' (५६) वत्।

**(६६३) वक्ष—रोषे।** संघात इत्येके। (क्रोध करना। बटोरना। ढेर करना)। अक.। सेट्। परस्मै.। १ वक्षति। २ ववक्ष। ३ वक्षिता। ४ वक्षिष्यति। ५ ववक्षतु-वक्षतात्। ६ अवक्षत्। ७ वक्षेत्। ८ वक्ष्यात्। ९ अवक्षीत्। १० अवक्षिष्यत् शेषं 'नर्दति' (५६) वत्।

**(६६४) मृच्छ—संघाते। भ्रक्ष—इत्येके।** एकत्र करना। बटोरना। अक.। सेट्। पर.। १ मृच्छति। २ ममृक्ष। १ भ्रक्षति। २ भम्रक्ष। 'नर्दति' (५६) वत्।

**(६६५) तक्ष—त्वचने। पक्ष—परिग्रह इत्येके।** (आच्छादित करना। ग्रहण करना। एक ओर होना)। अक.। सेट्। पर.। १ तक्षति। २ ततक्ष। सक.। सेट्। पर.। १ पक्षति। २ पपक्ष। 'नर्दति' (५६) वत्।

**(६६६) सूर्क्ष—आदरे। षूर्क्ष—इति केचित्।** (आदर करना। सन्मान करना)। सक.। सेट्। परस्मै.। १ सूर्क्षति। २ सुसूर्क्ष। ३ सूर्क्षिता।

**(६६७-६६९) कक्षि-वाक्षि-माक्षि—(काङ्क्ष-वाङ्क्ष-माङ्क्ष) काङ्क्षायाम्।** (चाहना, इच्छा करना)। सक.। सेट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | काङ्क्षति | काङ्क्षतः | काङ्क्षन्ति | प्र. |
| | काङ्क्षसि | काङ्क्षथः | काङ्क्षथ | म. |
| | काङ्क्षामि | काङ्क्षावः | काङ्क्षामः | उ. |
| लिट् | चकाङ्क्ष | चकाङ्क्षतुः | चकाङ्क्षुः | प्र. |
| | चकाङ्क्षिथ | चकाङ्क्षथुः | चकाङ्क्ष | म. |
| | चकाङ्क्ष | चकाङ्क्षिव | चकाक्षिम | उ. |
| लुट् | काङ्क्षिता | काङ्क्षितारौ | काङ्क्षितारः | प्र. |
| | काङ्क्षितासि | काङ्क्षितास्थः | काङ्क्षितास्थ | म. |
| | काङ्क्षितास्मि | काङ्क्षितास्वः | काङ्क्षितास्मः | उ. |
| लृट् | काङ्क्षिष्यति | कांक्षिष्यतः | काङ्क्षिष्यन्ति | प्र. |
| | काङ्क्षिष्यसि | काङ्क्षिष्यथः | कांक्षिष्यथ | म. |
| | काङ्क्षिष्यामि | काङ्क्षिष्यावः | काङ्क्षिष्यामः | उ. |
| लोट् | काङ्क्षतु-काङ्क्षतात् | काङ्क्षताम् | काङ्क्षन्तु | प्र. |
| | काङ्क्ष-काङ्क्षतात् | काङ्क्षतम् | काङ्क्षत | म. |
| | काङ्क्षाणि | काङ्क्षाव | काङ्क्षाम | उ. |
| लङ् | अकाङ्क्षत् | अकाङ्क्षताम् | अकाङ्क्षन् | प्र. |
| | अकाङ्क्षः | अकाङ्क्षतम् | अकाङ्क्षत | म. |
| | अकाङ्क्षम् | अकाङ्क्षाव | अकाङ्क्षाम | उ. |

| वि. लि. | काङ्क्षेत् | काङ्क्षेताम् | काङ्क्षेयुः | प्र. |
|---|---|---|---|---|
| | काङ्क्षेः | काङ्क्षेतम् | काङ्क्षेत | म. |
| | काङ्क्षेयम् | काङ्क्षेव | काङ्क्षेम | उ. |
| आ. लि. | काङ्क्ष्यात् | काङ्क्ष्यास्ताम् | काङ्क्ष्यासुः | प्र. |
| | काङ्क्ष्याः | काङ्क्ष्यास्तम् | काङ्क्ष्यास्त | म. |
| | काङ्क्ष्यासम् | काङ्क्ष्यास्व | काङ्क्ष्यास्म | उ. |
| लुङ् | अकाङ्क्षीत् | अकाङ्क्षिष्टाम् | अकाङ्क्षिषुः | प्र. |
| | अकाङ्क्षीः | अकाङ्क्षिष्टम् | अकाङ्क्षिष्ट | म. |
| | अकांक्षिषम् | अकाङ्क्षिष्व | अकाङ्क्षिष्म | उ. |
| लृङ् | अकाङ्क्षिष्यत् | अकाङ्क्षिष्यताम् | अकाङ्क्षिष्यन् | प्र. |
| | अकाङ्क्षिष्यः | अकाङ्क्षिष्यतम् | अकांक्षिष्यत | म. |
| | अकाङ्क्षिष्यम् | अकाङ्क्षिष्याव | अकाङ्क्षिष्याम | उ. |

**कर्मणि**—काङ्क्ष्यते। **णिचि**—काङ्क्षयति-ते। **सनि**—चिकाङ्क्षिषति। **यङि**—चाकाङ्क्ष्यते। **यङ्लुकि**—चाकाङ्क्षीति-चाकांष्टि। **कृत्सु**—काङ्क्षकः-क्षिका, कांक्षिता-त्री, काङ्क्षयिता-त्री, काङ्क्षन्-न्ती, काङ्क्षयन्-न्ती, काङ्क्षिष्यन्-न्ती-ती, काङ्क्षयिष्यन्-न्ती-ती, काङ्क्षमाणः,[1] काङ्क्षयमाणः, काङ्क्षयिष्यमाणः, कान्[2]-काङ्क्षौ-काङ्क्षः, काङ्क्षितम्-तः-तवान्, काङ्क्षः, आकाङ्क्षी,[3] काङ्क्षितव्यम्, काङ्क्षयितव्यम्, काङ्क्षणीयम्, काङ्क्ष्यम्, काङ्क्ष्यमाणः, काङ्क्षितुम्, अभिकांक्षा, आकाङ्क्षा, काङ्क्षणा, काङ्क्षणम्, काङ्क्षित्वा, काङ्क्षयित्वा, अभिकाङ्क्ष्य। एवं वाङ्क्षति, माङ्क्षति। इत्यादि।

**( ६७०-६७२ ) द्राक्षि-ध्राक्षि-ध्वाक्षि—(द्राङ्क्ष-ध्वाङ्क्ष-ध्वाङ्क्ष) घोरवासिते आकाङ्क्षायाम् च**। कांव-कांव करना, इच्छा करना, चाहना)। अक.। सेट्। पर.। द्राङ्क्षति। ध्राङ्क्षति। ध्वाङ्क्षति.। इत्यादि 'काङ्क्षति' (६६४) वत्।

**( ६७३ ) चूष—पाने**। (चूसना) सक.। सेट्। परस्मै.।

१ चूषति। २ **प्र.** चुचूष चुचूषतुः चुचूषुः। **म.** चुचूषिथ चुचूषथुः चुचूष। **उ.** चुचूष चुचूषिव चुचूषिम। ३ चूषिता। ४ चूषिष्यति। ५ चूषतु-चूषतात्। ६ अचूषत। ७ चूषेत्। ८ चूष्यात्। ९ **प्र.** अचूषीत् अचूषिष्टाम् अचूषिषुः। **म.** अचूषीः अचूषिष्टम् अचूषिष्ट। **उ.** अचूषिषम् अचूषिष्व अचूषिष्म। १० अचूषिष्यत्।

**कर्मणि**—चूष्यते। **णिचि**– चूष्यति। **सनि**—चुचूषिषति। **यङि**—चोचूष्यते। **यङ्लुकि**– चोचूषीति-चोचूष्टि। **कृत्सु**—चूषकः-षिका, चूषिता-त्री, चूषयिता-त्री, चूषन्-न्ती, चूषयन्-न्ती-चूषिष्यन्-न्ती-ती, चूषयिष्यन्-न्ती-ती, चूषयमाणः, चूषयिष्यमाणः, चूट्[4]-चूड्-चूषौ-चूषः,

१ 'ताच्छील्यवयोवचनशक्तिषु चानश्' (३-२-१२९) इति ताच्छील्ये चानश्।
२ 'स्कोः संयोगाद्योः–' (८-२-२९) इति कलोपः। 'संयोगान्तस्य–' (८-२-२३) इति षकारस्य लोपः।
३ 'सुप्यजातौ–' (३-२-७८) इति णिनिः।
४ 'झलां जशोन्ते' (८-२-३९) इति जश्त्वेन डकारः।

चूषितम्[1]-तः-तवान्, चूषः, चूषितव्यम्, चूषयितव्यम्, चूषणीयम्, चूष्यम्,[2] चोष्यम्, चूष्यमाणः, चूषितुम्, चूषयितुम्, चूषा, चूषणा, चूषणम्, चूषित्वा, चूषयित्वा, प्रचूष्य।

**(६७४) तूष—तुष्टौ।** (तृप्त होना)। अक.। सेट्। परस्मै.। १ तूषति। २ तुतूष।

**णिचि**—तूषयति-ते। **सनि**—तुतूषिषति। **यङि**—तोतुष्यते। **यङ्लुकि**—तोतूषीति-तोतूष्टि। **कृत्सु**—तूषकः-षिका, तूषिता-त्री, तूषयिता-त्री, तूषन्-न्ती, तूषयन्-न्ती, तूषितव्यम्, तूषयितव्यम्, तूषिष्यन्-न्ती-ती, तूषयिष्यन्-न्ती-ती, तूष्यमाणः, तूषयिष्यमाणः, तूषितम्, तूषः, तूषितव्यम्, तूषयितव्यम्, तूषणीयम्, तूषितुम्, तूषणम्, तूषित्वा, तूषयित्वा, प्रतूष्य। इत्यादि 'कूजति' (१८४) वत्।

**(६७५) पूष—वृद्धौ।** (बढ़ना। पालन करना)। अक.। सेट्। पर.। १ पूषति। २ पुपूष।

**कर्मणि**—पूष्यते। **णिचि**—पूषयति-ते। **सनि**—पुपूषीषति। **यङि**—पोपुष्यते। **यङ्लुकि**—पोपूषीति-पोपुष्टि।

**(६७६) मूष—स्तेये।** (चोरी करना)। सक.। सेट्। परस्मै.। मूषति। 'कूजति' (१८४) वत्।

**(६७७-६७८) लूष-रूष—भूषायाम्।** (श्रृङ्गार करना। सुशोभित करना)। सक.। सेट्। पर.। १ लूषति, रूषति। २ लुलूष, रुरूष। इत्यादि 'कूजति' (१८४) वत्।

**(६७९) शूष—प्रसवे।** (उत्पन्न करना। प्रसूत करना)। सक.। सेट्। पर.। १ शूषति। २ शुशूष। 'कूजति' (१८४) वत्।

**(६८०) यूष—हिंसायाम्।** (हिंसा करना। मारना)। सक.। सेट्। पर.। १ यूषति। २ युयूष। 'कूजति' (१८४) वत्।

**(६८१) जूष—हिंसायाम्।** (मारना। हिंसा करना)। सक.। सेट्। पर.। १ जूषति। २ जुजूष।

**कर्मणि**—जूष्यते। **णिचि**—जूषयति-ते। **सनि**—जुजूषीषति। **यङि**—जोजूष्यते। **यङ्लुकि**—जोजूषीति-जोजूष्टि। इत्यादि 'कूजति' (१८४) वत्।

**(६८२) भूष—अलङ्कारे।** (अलङ्कृत करना, सजाना)। सक.। सेट्. परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | भूषति | भूषतः | भूषन्ति | प्र. |
| | भूषसि | भूषथः | भूषथ | म. |
| | भूषामि | भूषावः | भूषामः | उ. |

१ 'सूर्ध्य त्वदीक्षा चिरकाङ्क्षिता नो वाङ्क्षाभ्यमाङ्क्ष्यान्न तु नीचलोकान्। यद्राक्षां जनो वाञ्छति, नो कलानि ध्राङ्क्षद् बहुध्वाङ्क्षविचूषितानि।

२ पृषोदरादित्वेन (६-३-१०९) गुणे चोष्यमित्यपि साधुः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लिट् | बुभूष | बुभूषतुः | बुभूषुः | प्र. |
| | बुभूषिथ | बुभूषथुः | बुभूष | म. |
| | बुभूष | बुभूषिव | बुभूषिम | उ. |
| लुट् | भूषिता | भूषितारौ | भूषितारः | प्र. |
| | भूषितासि | भूषितास्थः | भूषितास्थ | म. |
| | भूषितास्मि | भूषितास्वः | भूषितास्मः | उ. |
| लृट् | भूषिष्यति | भूषिष्यतः | भूषिष्यन्ति | प्र. |
| | भूषिष्यसि | भूषिष्यथः | भूषिष्यथ | म. |
| | भूषिष्यामि | भूषिष्यावः | भूषिष्यामः | उ. |
| लोट् | भूषतु-भूषतात् | भूषताम् | भूषन्तु | प्र. |
| | भूष-भूषतात् | भूषतम् | भूषत | म. |
| | भूषाणि | भूषाव | भूषाम | उ. |
| लङ् | अभूषत् | अभूषताम् | अभूषन् | प्र. |
| | अभूषः | अभूषतम् | अभूषत | म. |
| | अभूषम् | अभूषाव | अभूषाम | उ. |
| वि. लि. | भूषेत् | भूषेताम् | भूषेयुः | प्र. |
| | भूषेः | भूषेतम् | भूषेत | म. |
| | भूषेयम् | भूषेव | भूषेम | उ. |
| आ. लि. | भूष्यात् | भूष्यास्ताम् | भूष्यासुः | प्र. |
| | भूष्याः | भूष्यास्तम् | भूष्यास्त | म. |
| | भूष्यासम् | भूष्यास्व | भूष्यास्म | उ. |
| लुङ् | अभूषीत् | अभूषिष्टाम् | अभूषिषुः | प्र. |
| | अभूषीः | अभूषिष्टम् | अभूषिष्ट | म. |
| | अभूषिषम् | अभूषिषाव | अभूषिषाम | उ. |
| लृङ् | अभूषिष्यत् | अभूषिष्याताम् | अभूषिष्यन् | प्र. |
| | अभूषिष्यः | अभूषिष्यतम् | अभूषिष्यत | म. |
| | अभूषिष्यम् | अभूषिष्याव | अभूषिष्याम | उ. |

**कर्मणि**—भूष्यते। **णिचि**—भूषयति-ते। **सनि**—बुभूषिषति। **यङि**—बोभूष्यते। **यङ्लुकि**—बोभूषीति-बोभूष्टि। **कृत्सु**—भूषकः-षिका, भूषिता-त्री, भूषयिता-त्री, भूषन्-न्ती, भूषयन्-न्ती, भूषिष्यन्-न्ती, भूषयिष्यन्-न्ती-ती, भूषयमाणः, भूषयिष्यमाणः, भूषितम्, भूषितव्यम्, भूषयित्वा, भूषणीयम्, भूष्यम्, भूषणम्, भूषित्वा, भूषयित्वा, विभूष्य।

**( ६८३ ) ऊष—रुजायाम्**। (रोगी होना। बीमार होना)। सक.। सेट्.। पर.।

१ **प्र.** ऊषति। ऊषतः ऊषन्ति। **म.** ऊषसि। ऊषथः। उषथ। **उ.** ऊषामि। ऊषावः। ऊषामः। २ **प्र.** ऊषाञ्चकार ऊषाञ्चक्रतुः। उषाञ्चक्रुः। **म.** ऊषाचकर्थ। ऊषाञ्चक्रथुः। ऊषाञ्चक्र।

उ. ऊषाञ्चकार। ऊषाञ्चकृव। ऊषाञ्चकृम। ३ प्र. ऊषिता। ऊषितारौ। ऊषितारः। म. ऊषितासि। ऊषितास्थः। ऊषितास्थ। उ. ऊषितास्मि। ऊषितास्वः। ऊषितास्मः। ४ प्र. ऊषिष्यति। ऊषिष्यतः। ऊषिष्यन्ति। म. ऊषिष्यसि। ऊषिष्यथः। ऊषिष्यथ। उ. ऊषिष्यामि। ऊषिष्यावः। ऊषिष्यामः। ५ प्र. ऊषतु-तात्। ऊषताम्। ऊषन्तु। म. ऊष-उषतात्। ऊषतम्। ऊषत। उ. ऊषणि। ऊषाव। ऊषाम। ६ प्र. औषत्। औषताम्। औषन्। म. औषः। औषतम्। औषत। उ. औषम्। औषाव। औषाम। ७ प्र. ऊषेत्। ऊषेताम्। ऊषेयुः। म. ऊषेः। ऊषेतम्। ऊषेत। उ. ऊषेयम्। उषेव। ऊषेम। ८ प्र. ऊष्यात्। ऊष्यास्ताम्। ऊष्यासुः। म. ऊष्याः। ऊष्यास्तम्। ऊष्यास्त। उ. ऊष्यासम्। ऊष्यास्व। ऊष्यास्म। ९ प्र. औषीत्। औषीष्टाम्। औषिषुः। म. औषीः। औषीष्टम्। औषीष्ट। उ. औषिषम्। औषिष्व। औषिष्म। १० प्र. औषिष्यत्। औषिष्यताम्। औषिष्यन्। म. औषिष्यः। औषिष्यतम्। औषिष्यत। उ. औषिष्यम्। औषिष्याव। औषिष्याम।

**कर्मणि**—ऊष्यते। **णिचि**—ऊषयति। **सनि**—उषिषिषति। **कृत्सु**—ऊषितव्यम्। ऊषनीयम्। ऊषित्वा। ऊषितः। ऊष्यम्। ऊष्मा, ऊषणम्, ऊषः, ऊषकः-षिका, ऊषिता-त्री, ऊषन्-न्ती।

**( ६८४ ) ईष—उञ्छे।** उञ्छः—कणश आदानं कणिशाद्यर्जनं शिलम्। (एक एक दाना उठाना। बीनना।) सक.। सेट्। परस्मै.।

१ प्र. ईषति। ईषतः। ईषन्ति। म. ईषसि ईषथः। ईषथ। उ. ईषामि। ईषावः। ईषामः। २ प्र. ईषाञ्चकार। ईषाञ्चक्रतुः। ईषाञ्चक्रुः। म. ईषाञ्चकर्थ। ईषाञ्चक्रथुः। ईषाञ्चक्र। उ. ईषाञ्चकार। ईषाञ्चकृव। ईषाञ्चकृम। ३ प्र. ईषिता। ईषितारौ। ईषितारः। म. ईषितासि। ईषितास्थः। ईषितास्थ। उ. ईषितास्मि। ईषितास्वः। ईषितास्मः। ४ प्र. ईषिष्यति। ईषिष्यतः। ईषिष्यन्ति। म. ईषिष्यसि। ईषिष्यथः। ईषिष्यथ। उ. ईषिष्यामि। ईषिष्यावः। ईषिष्यामः। ५ प्र. ईषतु-तात्। ईषताम्। ईषन्तु। म. ईष-तात्। ईषतम्। ईषत। उ. ईषाणि। ईषाव। ईषाम। ६ प्र. ऐषत्। ऐषताम्। ऐषन्। म. ऐषः। ऐषतम्। ऐषत। उ. ऐषम्। ऐषाव। ऐषाम। ७ प्र. ईषेत्। ईषेताम्। ईषेयुः। म. ईषेः। ईषेतम्। ईषेत। उ. ईषेयम्। ईषेव। ईषेम। ८ प्र. ईष्यात्। ईष्यास्ताम्। ईष्यासुः। म. ईष्याः। ईष्यास्तम्। ईष्यास्त। उ. ईष्यसिम्। ईष्यास्व। ईष्यास्म। ९ प्र. ऐषीत्। ऐषिष्टाम्। ऐषिषुः। म. ऐषीः। ऐषिष्टम्। ऐषिष्ट। उ. ऐषिषम्। ऐषिष्व। ऐषिष्म। १० प्र. ऐषिष्यत्। ऐषिष्यताम्। ऐषिष्यन्। म. ऐषिष्यः। ऐषिष्यतम्। ऐषिष्यत। उ. ऐषिष्यम्। ऐषिष्याव। ऐषिष्याम।

**कर्मणि**—ईष्यते। **णिचि**—१ ईषयति-ईषयते। २ ईषयाञ्चकार। ३ ईषयिता। ४ ईषयिष्यति। ५ ईषयतु-तात्। ६ ऐषयत्। ७ ईषयेत्। ८ ईष्यात्। ९ ऐषिषत्। १० ऐषिष्यत्। **सनि**—९ ईषिषिषति। ९ ऐषिषिषीत्। १० ऐषिषिष्यत्। **कृत्सु**—ईषितव्यम्। ईषणीयम्। ईष्यम्। ईष्यतः। ईष्यन्। ईष्यतुम्। ईषित्वा। समीष्य।

**( ६८५-६८६ ) कष-खष—हिंसायाम्।** (मारना। हिंसा करना)। सक.। सेट्। पर.। कषति। खषति। 'गदति' (५२) वत्।

**( ६८७ ) शिष—हिंसायाम्।** (मारना। हिंसा करना)। सक.। अनिट्। पर.। १ शषति। २ शिशेष। 'चेटति' (३१५) वत्।

**( ६८८-६९२ ) जष-झष-शष-वष-मष—हिंसायाम्।** (मारना। हिंसा करना)। सक.। सेट्। परस्मै.। जषति, शषति, वषति, मषति। 'गदति' (५२) वत्।

**( ६९३-६९४ ) रुष-रिष—हिंसायाम्।** (हिंसा करना। मारना)। सक.। सेट्। परस्मै.। रोषति। रेषति। 'चेटति' (३१५) वत्। **तीषसेति**—तादावार्धधातुके वेट्।

**कृत्सु**—रोषिता-रोष्टा। रेषितव्यः-रेष्टव्यः। रिष्टः-रिष्टवान्। रेषितुम्-रेष्टुम्। रिषित्वा-रेषित्वा-रिष्ट्वा। **रलोव्युपधादिति**—कित्वविकल्पः। रिष्टम्-असुभम्।

**( ६९५ ) भष—भर्त्सने।** भर्त्सनं, श्वरर्थः। (भोंकना। कुत्ते के समान शब्द करना)। अक.। सेट्। पर.।

भषति। **णिचि**—भाषयति-ते। **सनि**—बिभाषिषति. **यङि**—बाभष्यते। **यङ्लुकि**—बाभषीति-बाभष्टि। 'गदति' (५२) वत्। **कृत्सु**—भाषकः-षिका, विभाषिषकः-षिका, बाभषकः-षिका, भषः[1]-भषी भषकः[2]-भषिका, भषन् इत्यादि भौवादिक कषति धातुवत्।

**( ६९६ ) उष—दाहे।** (जलना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। लघूपधा गुणः। ओषति। ओषाञ्चकार उवोष। **उषविदजागृभ्योऽन्यतरस्याम्**। एभ्यो लिट्याम्वा स्यात्। इति विकल्पेन आम्। आमभावपक्षे लिटिधातो रिति द्विर्वचनादि। इत्यादि 'ओखति' (१२८) वत्।

**णिचि**—ओषयति-ते। **सनि**—ओषिषिषति।

**( ६९७-६९९ ) जिषु-विषु-मिषु—सेचने।** (प्रोक्षण करना। सींचना।) सक.। सेट्। परस्मै.। जेषति। वेषति। मेषति। इत्यादि 'चेटति' (३१५) वत्।

**कृत्सु**—जेषित्वा-जिष्ट्वा। इत्यादि।

**( ७०० ) पुष—पुष्टौ।** (पालन करना। पोषण करना)। सक.। सेट्। परस्मै.। लट्—पोषति।

**णिचि**—पोषयति-ते। **सनि**—पुपोषिषति पुपुषिषति। **यङि**—पोपुष्यते। **यङ्लुकि**—पोपुषीति-पोपोष्टि। इत्यादि 'शोचति' (१८३) वत्। **कृत्सु**—पोषकः-षिका, पुपोषिषकः-पुपुषिषकः, पोपुषकः-षिका, पोषिता-त्री, पोषयिता-त्री, प्रपोषन्-न्ती-ती, पोषयन्-न्ती,

१ पचादिषु (३-१-१३४) भषट् इति पाठात् टित्वेन स्त्रियां 'टिड्ढाणञ्—' (४-१-१५) इति ङीपि, भषी इति रूपम्।

२ 'क्वुन् शिल्पिसंज्ञयोः—' (द.उ. ३-५) इति क्वुन्। स्त्रियां टापि, 'प्रत्ययस्थात्—' (७-३-४४) इतीत्वम्।

पोषिष्यन्-न्ती-ती, पोष्यमाणः, पोषयिष्यमाणः, प्रपुट्-ड्-पुषौ-पुषः, पोषितम्-पुषितम्-तः, पुषः, पोषणः,प्रपोषी-धनपोषी,पोषितव्यम्,पोषयितव्यम्,पोषणीयम्,पोष्यम्,पुष्यमाणः,पोष्यमाणः, पोषः, पोषितुम्, पोषयितुम्, पुष्टिः, पोषणा, पोषित्वा-पिषित्वा, पोषयित्वा, प्रपुष्य, प्रपोष्य, पोषयित्नुः,[1] पुष्करम्,[2] पुष्कलम्[3] ।

( ७०१-७०२ ) **श्रिषु-श्लिषु—दाहे** । (जलाना । दग्ध करना) । सक. । सेट् । परस्मै. । श्रेषति । श्लेषति । 'चेटति' (३१५) वत् ।

( ७०३-७०४ ) **प्रुषु-प्लुषु—दाहे** । (जलाना) । सक. । सेट् । परस्मै. । प्रोषति । प्लोषति । इत्यादि 'चेटति' (३१५) वत् ।

( ७०५ ) **पृषु—सेचनहिंसासंक्लेशनेषु** । (हिंसा करना, सींचना कष्ट देना) । सक. । सेट् । परस्मै. । १ पर्षति ।

**कर्मणि**—पर्ष्यते । **णिचि**—पर्षयति-ते । **सनि**—पिपर्षिषति । **यङि**—परिपृष्यते । **यङ्लुकि**—पर्पृषीति-परिपृषीति-परीपृषीति-पर्पृषितति-परिपृष्टि-परीपृष्टि । इत्यादि 'वर्णति' वत् ।

( ७०६ ) **वृषु—सेचनहिंसाक्लेशनेषु** । (सींचना, मारना, कष्ट देना) । सक. । सेट् । परस्मै. ।

१ **प्र.** वर्षति वर्षतः वर्षन्ति । **म.** वर्षसि वर्षथः वर्षथ । **उ.** वर्षामि वर्षावः वर्षामः । २ **प्र.** ववर्ष ववृषतुः ववृषुः । **म.** ववर्षिथ ववृषथुः ववृष । **उ.** ववर्ष ववृषिव ववृषिम । ३ **प्र.** वर्षिता वर्षितारौ वर्षितारः । इत्यादि । ४ वर्षिष्यति वर्षिष्यतः वर्षिष्यन्ति । इत्यादि । ५ **प्र.** वर्षतु-वर्षतात् वर्षताम् वर्षन्तु । **म.** वर्षः वर्षतम् वर्षत । **उ.** वर्षाणि वर्षाव वर्षाम । ६ **प्र.** अवर्षत् अवर्षताम् अवर्षन् । **म.** अवर्षः अवर्षतम् अवर्षत । **उ.** अवर्षम् अवर्षाव अवर्षाम । ७ **प्र.** वर्षेत् वर्षेताम् वर्षेयुः । **म.** वर्षेः वर्षेतम् वर्षेत । **उ.** वर्षेयम् वर्षेव वर्षेम । ८ **प्र.** वृष्यात् वृष्यास्ताम् वृष्यासुः । **म.** वृष्याः वृष्यास्तम् वृष्यास्त । **उ.** वृष्यासम् वृष्यास्व वृष्यास्म । ९ **प्र.** अवर्षीत् अवर्षिष्टाम् अवर्षिषुः । **म.** अवर्षीः अवर्षिष्टम् अवर्षिष्ट । **उ.** अवर्षिषम् अवर्षिष्व अवर्षिष्म । १० अवर्षिष्यत् अवर्षिष्यताम् अवर्षिष्यन् इत्यादि ।

**कर्मणि**—वृष्यते । **णिचि**—वर्षयति-ते । **सनि**—विवर्षिषति । **यङि**—वरीवृष्यते । **यङ्लुकि**—वर्वृषीति-वरिवृषीति-वरीवृषीति । **कृत्सु**—वर्षितव्यम्, वर्षणीयम्, वृष्यम्[4]-

१ ण्यन्तात् 'स्तनिहृषिपुषि—' (द.उ. १-१४०) इतीत्नुच् प्रत्ययः । 'अयामन्ताल्वाय्येत्न्विष्णुषु' (६-४-५५) इति णेरयादेशः । पोषयित्नुः = पोषणकर्ता ।

२ 'पुषः कित्' (द.उ. ८-७१) इति करन् प्रत्यये तस्य कित्वेन, बाहुलकात् प्रत्ययादेः ककारस्येत्संज्ञाभावे च रूपम् ।

३ 'पुषः कलन् किच्च' (द.उ. ८-११८) इति कलन् प्रत्यये रूपम् । अत्रापि बाहुलकात् प्रत्ययककारस्य न लोप इति ज्ञेयम् ।

४ ऋदुपधत्वान्नित्ये क्यपि प्राप्ते, 'विभाषा कृवृषोः' (३-१-१२०) इति विकल्पेन क्यप्प्रत्ययः । तेन रूपद्वयं बोध्यम् । वृषाय हितम् इत्येतस्मिन् तद्धितार्थे 'खलयवमाषतिलवृषब्रह्मणश्च' (५-१-७) इति यत् प्रत्ययः ।

वर्ष्यम्, वर्षकः-र्षिका, विवर्षिषकः-र्षिका, वर्षिता-त्री, वर्षयिता-त्री, वर्षन्-न्ती, वर्षयन्-न्ती, वर्षयमाणः, वर्षयिष्यमाणः, वर्षितुम्, वर्षयितुम्, वर्षयम्, वर्णम्,[१] वर्षः,[२] प्रवर्षुकः,[३] प्रावृट्[४]-उपावृट्-वृषौ-वृंषः, वृष्ट्वा-वर्षित्वा, वृष्टिः,[५] वृषणः,[६] वृष्णिः,[७] वृषा[८]।

**(७०७) मृषु—सेचने सहने च।** (सींचना। सहन करना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। उदित्। १ मर्षति। २ ममर्ष। 'वर्षति (७०६) वत्। मर्षित्वा-मृष्वा। मृष्टम्।

**(७०८) घृषु—संघर्षे।** (लड़ाई करना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। घर्षते। जघर्ष। इत्यादि 'वर्षति' (७०६) वत्।

**(७०९) हृषु—अलीके।** (झूठ बोलना। मिथ्या बोलना)। अक.। सेट्। परस्मै.। हर्षति। जहर्ष। जहृषतुः। हृष्ट्वा हर्षित्वा। हृष्टः। वर्षति (७०६) वत्।

**(७१०) तुस—शब्दे।** (शब्द करना)। अक.। सेट्। परस्मै.। तोसति। 'शोचति' (१८३) वत्।

**(७११-७१३) ह्रस-ह्लस-रस—शब्दे।** (शब्द करना)। अक.। सेट्। परस्मै.। ह्रसति। ह्लसति। रसति। 'गदति' (५२) वत्।

**(७१४) लस—श्लेषणक्रीडनयोः।** (आलिङ्गन करना। गले लगाना। खेलना। रमण करना)। **उत्**—चमकना। आनन्दित होना। **वि**—विलास करना। रमण करना। अक.। सेट्। परस्मै.। लसति 'गदति' (५२) वत्।

**(७१५) घस्लृ—अदने।** (खाना)। अक.। अनिट्। परस्मै.। १ **प्र.** घसति। **म.** घससि। **उ.** घसामि। २ **प्र.** जघास। जक्षतुः। जक्षुः। **म.** जघसिथ-जघस्थ। जक्षतुः। जक्ष। **उ.** जघास-जघस। जक्षिव। जक्षिम। ३ घस्ता। ४ घस्यति। ५ घसतु। ६ अघसत्। ७ घसेत्। ८ अस्यप्रयोगो नास्ति। ९ अघसत्। १० अघत्स्यत्।

**णिचि**—घासयति-ते। **सनि**—जिघत्सति। **यङि**—जाघत्स्यते। **यङ्लुकि**—जाघसीति। जाघस्ति। **कृत्सु**—घस्तव्यम्। घस्तम्। घसन्। घस्तुम्। घस्त्वा। निघस्य। घस्मरः।

१ वर्षतीति = वर्षम्। 'अज्विधौ भयादीनामुपसंख्यानं नपुंसके क्तादिनिवृत्त्यर्थम्' (वा. ३-३-३६) इति अच् प्रत्ययः। वर्षा = ऋतुः। "अजन्तस्य पुंस्त्वं प्रायिकम्। 'वर्षोऽस्त्री' इति दर्शनाद् घञपि" इति प्र. सर्वस्वे।
२ 'इगुपधज्ञा—' (३-१-१३५) इति कर्तरि कप्रत्ययः।
३ 'लषपतपदस्थाभूवृष—' (३-२-१५४) इति तच्छीलादिषु कर्तृषु उकञ् प्रत्यये रूपमेवम्। प्रवर्षुकः = पर्जन्यः।
४ सम्पदादित्वात् स्त्रियां क्विप् प्रत्यये संहितायां विषये 'नहिवृतिवृषि—' (६-३-११६) इति उपसर्गस्य दीर्घः।
५ 'तितुत्र—' (७-२-९) इति निषेधात् इडागमो न भवति।
६ बाहुलकाद् औणादिके क्युन् प्रत्यये णत्वे च रूपमेवम्।
७ सवृषिभ्यां कित् (द.उ. १-१९) इति निप्रत्ययः किच्च भवति। तेन रूपमेवम्। वर्षतीति वृष्णिः = वसुदेववंशः मेघो वा।
८ 'कनिन् युवृषि—' द.उ. ५-५१) इति कनिन् प्रत्यये रूपमेवम्। वृषा = महेन्द्रः वृषभश्च। महेन्द्रादिः, नभश्च इति केचित्।

**( ७१६-७१८ ) जर्ज-चर्च-झर्झ—परिभाषणहिंसा-सातनेषु।** (बोलना। हिंसा करना। तोड़ना करना)। सक.। सेट्। परस्मै.। लट्—जर्जति।

**णिचि**—जर्जयति-ते। **सनि**—जिजर्जिषति। **यङि**—जाजर्ज्यते। **यङ्लुकि**—जाजर्जीति-जाजर्क्ति। इत्यादि 'नर्दति' (५६) वत्। एवं चर्चति। झर्झति इत्यादि 'नर्दति' (५६) वत्।

**( ७१९ ) पिसृ (पिस्) गतौ।** (जाना)। सक.। सेट्। पर.। पेसति। पिपेस। पिपिसतुः। इत्यादि चोटति (३१५) वत्।

**( ७२० ) पेसृ—गतौ।** (जाना)। सक.। सेट्। परस्मै.। पेसति। 'खेलति' (५३८) वत्।

**( ७२१ ) हसे—हसने।** (हंसना)। अक.। सेट्। परस्मै.। १ हसति। २ जहास। लृदित्वादङ्—जहसतुः। जहसुः। ३ हसिता। ४ हसिष्यति। ५ हसतु। ६ अहसत्। ७ हसेत्। ८ हस्यात्। ९ अहसीत्। **एदित्वात् ह्यन्तक्षणे**—ति न वृद्धि। १० अहसिष्यत्। इत्यादि 'गदति' (५२) वत्।

**( ७२२ ) णिश (निश) —समाधौ।** (शान्ति से विचार करना। मनन करना। ध्यान लगाना)। अक.। सेट्। परस्मै.। नेशति। निनेश निनिशतु। 'चेटति' (३१५) वत्।

**( ७२३ ) मिश—शब्दे, रोषकृते, बन्धने गतौ च।** (शब्द करना, क्रोध करना, बंधना, जाना)। सक.। सेट्। परस्मै.। मेशति। मिमेश मिमिशतुः। 'चेटति' (३१५) वत्।

**( ७२४ ) मश—शब्दे, रोषकृते गतौ च।** (शब्द करना, क्रोध करना, जाना)। अक.। सेट्। परस्मै.। मशति। 'रदति' (५३) वत्।

**( ७२५ ) शव—गतौ।** (जाना)। सकर्म.। सेट्। पर.। शवति। 'रदति' (५३) वत्।

**( ७२६ ) शश—प्लुतगतौ।** (कूदते हुए जाना, फुदकते हुए जाना)। अक.। सेट्। पर.। शशति। शशाश शेशतुः। 'रदति' (५३) वत्।

**( ७२७ ) शसु—हिंसायाम्।** (हिंसा करना, मारना)। सक.। सेट्। पर.। शशति। शशास शशसतुः। **नशसददवादिगुणानाम्।** 'गदति' (५२) वत्।

**( ७२८ ) शंसु—स्तुतौ।** दुर्गताविति दुर्गः। (स्तुति करना, प्रशंसा करना)। **अभि**—मिथ्यापवाद लगाना। **आ**—चाहना, बोलना, **प्र**—प्रशंसा करना, स्तुति करना। सक.। सेट्। पर.।

१ **प्र.** शंसति शंशतः शंसन्ति। **म.** शंससि शंसथः शंसथ। **उ.** शंसामि शंसावः शंसामः। २ **प्र.** शशंस शशंसतुः शशंसुः। **म.** शशंसिव शशंसथुः शशंस। **उ.** शशंस शशंसिव शशंसिम। ३ **प्र.** शंसिता शंसितारौ शंसितारः। २ **प्र.** शंसितासि शंसितास्थः शंसितास्थ। ३ शंसितास्मि शंसितास्वः शंसिदास्मः। ४ शंसिष्यति। ५ **प्र.** शंसतु-शंशतात् शंसताम्

शंसन्तु । **म.** शंस-तात् शंसतम् शंसत । **उ.** शंसानि शंसाव शंसाम । ६ **प्र.** अशंसत् अशंसताम् अशंसन् । **म.** अशंसः अशंसतम् अशंसत । **उ.** अशंसम् अशंसाव अशंसाम । ७ **प्र.** शंसेत् शंसेताम् शंसेयुः । **म.** शंसेः शंसेतम् शंसेत । **उ.** शंसेयम् शंसेव शंसेम । ८ **प्र.** शस्यात् शस्यास्ताम् शश्यासुः । **म.** शस्याः शस्यस्तम् शस्यास्त । **उ.** शस्यासम् शस्यास्व शस्यास्म । ९ **प्र.** अशंसीत् अशंसिष्टाम् अशंसिषुः । **म.** अशंसीः । अशंसिष्टम् अशंसिष्ट । **उ.** अशंसिषम् अशंसिष्व अशंसिष्म । १० अशंसिष्यत् ।

**कर्मणि**—शंश्यते । **णिचि**—शंसयति-ते । **सनि**—शिशंसिषति । **यङि**—शाशंस्यते । **यङ्लुकि**—शाशंसीति-शाशंस्ति । **कृत्सु**—शंशकः-सिका, शांसिता-त्री, शंसयिता-त्री, शंसन्-न्ती, शंसयन्-न्ती, शंसयिष्यन्ः, शंसमानः, शंसयमानः, शंसः, शंसितुम्, शंसितव्यम्, शंसयितव्यम्, शंसनीयम्, शंस्यमानः, प्रशंस्य । शस्यम्[१]-शंस्यम्, शंसित्वा[२]-शस्त्वा, शंसयित्वा, शस्तम्,[३] नृशंसः,[४] नराशंसः,[५] ब्राह्मणाच्छंसी,[६] प्रशस्तिं[७] विन्दन्ति, प्रशंसा,[८] आशंसा, आशंसुः[९] ।

. **(७२९) चह—परिकल्कने** । परिकल्कनं = दम्भः शाठ्यञ्च । (गर्वीला होना, ठगना, दुष्कर्मी होना) । अक. । सेट् । परस्मै. । चहति । चचाह चेहतुः चेहुः ।

**कर्मणि**—चेह्यते । **णिचि**—चाहयति-ते । **सनि**— चिचहिषति । **यङि**—चाचह्यते । **यङ्लुकि**—चाचहीति-चाचढि । इत्यादि 'रदति' (५३) वत् । **कृत्सु**—चाहकः-हिका, चहिता-त्री, चाहयिता-त्री, चहन्-न्ती, चाहयन्-न्ती, चहिष्यन्-न्ती-ती, प्रचट्-प्रचड्-प्रचहौ-प्रचहः,

---

१ 'शंसिदुहिगुहिभ्यो वा' (काशिका ३-१-१०९) इति वचनात् क्यब्विकल्पः । क्यप्पक्षे प्रत्ययस्य कित्त्वेनोपधानकारलोपः । अनुस्वारोपधत्वेऽपि, उपदेशे 'नकारजावनुस्वारपञ्चमौ झलि धातुषु' इत्यमियुक्त-वचनात् नोपधः । क्यबभाव पक्षे ण्यति शंस्यम् इति भवति । 'प्रशस्यस्य श्रः' (५-३-६०) इति निर्देशबलात् क्यब्विकल्पपक्षः सिद्ध इति बोध्यम् ।

२ उदित्वेन क्त्वायामिट् विकल्पः । इडभावपक्षे उपधानकारलोपः । इट्पक्षे 'न क्त्वा सेट्' (१-२-१८) नियमात् न कित्त्वम् । तेन उपधानकारलोपः ।

३ 'यस्य विभाषा' (७-२-१५) इति निष्ठायामिटनिषेधः ।

४ नृन् शंसतीति = नृशंसः = क्रूरः । 'कर्मण्यण्' (३-२-१) इत्यण् । अत्र दुर्गोक्त रीत्या हिंसैव धात्वर्थः ।

५ नरा एनं शंसन्ति इति नराः अस्मिन् आसीनाः शंसन्ति वा नराशंसः = अग्निः, देशविशेषो वा । 'हलश्च' (३-३-१२१) इति संज्ञायां घञ् । अत्र पूर्वपदस्य वनस्पत्यादिषु (६-२-१४०) पाठात् दीर्घ इति माधवः । काशिकायां तु (६-२-१४०) 'अन्येषामपि—' (६-२-१३६) इति दीर्घ उक्तः ।

६ अत्र ब्राह्मण ददाय शंसति इति वृत्तिपक्षे 'साधुकारिण्युपसंख्यानम्' (वा. ३-२-७८) इति णिनिः । माधवस्तु 'सुप्यजातौ—' (३-२-७८) इति णिनिमाह । तत्तु रूढिशब्देष्व सङ्गतमिति बोध्यम्' 'ब्राह्मणाच्छंसिन उपसंख्यानम्' (वा. ६-३-२) इति पञ्चम्या अलुक् । यदा तु ब्राह्मणानि शंसति इति वृत्तिः, तदा 'बहुलमभीक्ष्ण्ये' (३-२-८१) इति णिनिः । द्वितीयाः पञ्चमी निपातनादेव । पच्चम्या अलुक् तु 'तत्पुरुषे कृति—' (६-३-१४) इति । उभयथाऽपि ब्राह्मणाच्छंसी कश्चन् ऋत्विग् विशेषः ।

७ स्त्रियां क्तिनि नलोपे रूपमेवम् ।

८ 'प्रशंसा वचनैश्च' (२-१-६६) इति निर्देशात् क्तिन पक्षे बाधित्वा अकार प्रत्ययोऽपि भवतीति बोध्यम् । तेन प्रशंसा, प्रशंस्ति, इत्युभयमपि साधु ।

९ 'सनाशंसभिक्ष उः' (३-२-१६८) इति तच्छीलतद्धर्मतत्साधुकारिष्वर्थेषु उप्रत्ययः ।

चहितम्, चहः, चहितव्यम्, चाहयितव्यम्, चहनीयम्, चाहनीयम्, चाह्यम्, चाह्यमानः, चाहः, चहितुम्, चाहयितुम्, चाढिः, चहनम्, चाहनम्, चहित्वा, चाहयित्वा, प्रह्य ।

( ७३० ) **मह—पूजायाम्** । (पूजा करना)। सक.। सेट्। परस्मै.। १ महति। २ ममाह मेहतुः। मेहुः। इत्यादि। 'गदति' वत्।

**कृत्सु**—माहकः-हिका, महिता-त्री, माहयिता-त्री, महन्-न्ती, माहयन्-न्ती, महिष्यन्-न्ती-ती, महितम्-तः-तवान्, महितव्यम्, माहयितव्यम्, महनीयम्, माहनीयम्, माह्यम्, माह्यमानः, महितुम्, माहयितुम्, महनम्, माहनम्, महित्वा, माहयित्वा, प्रमह्य, मही,[1] महिषः[2]-महिषी, महिष्मान्, महत्[3]-महान्-महान्तौ-महान्तः, माहिनम्-[4]महिनम्, महिमा ।

( ७३१ ) **रह—त्यागे** । (त्यागना, छोड़ना) **वि**—अलग होना, भिन्न होना । सकर्म.। सेट्। परस्मै.। रहति। रहाह रिहतुः रेहुः। इत्यादि। 'रदति' (५३) वत्।

**कृत्सु**—रहकः[5]-हिका, रहिता-त्री, रहितुम्, रह्यमानः, रहितव्यम्, रहनीयम्, रहित्वाः, क्विपि-प्ररट्[6]-ड्-प्ररहौ-प्ररहः, ल्यपि प्ररहय्य,[7] णमुलि, रहम्, राहम्।

( ७३२ ) **रहि—गतौ**– (जाना) सकर्म.। सेट्। पर.। रंहति। 'क्रन्दति' (७१) वत्।

( ७३३ ) **दृह—वृद्धौ** । (बढ़ना, बुद्धि होना)। अकर्म.। सेट्। पर.। दर्हति। 'वर्षति' (७०६) वत्।

( ७३४ ) **दृहि—वृद्धौ** । (बढ़ना) अकर्म.। सेट्। परस्मै.। दृंहति। 'वृंहति' (७३६) वत्।

( ७३५ ) **बह—वृद्धौ** । (बढ़ना, बृद्धि होना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.। बर्हति। बबर्ह। **णिचि**—बर्हयति-ते। **सनि**—बिबर्हति। **यङि**—बरीबृह्यते-बरबृह्यते। **यङ्लुकि**—बरिबृहीसि– बरीवृहीति। 'वर्षति' (७०६) वत्।

( ७३६ ) **बृहि—**बृद्धौ शब्दे च। (बढ़ना, शब्द करना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.।

१ पचाद्यजन्तात् महशब्दात् गौरादित्वात् (४-१-४१) स्त्रियां ङीषि रूपमेवम्।
२ अविमह्योष्टिषच् (द.उ. ९-३) इति टिषच् प्रत्यये महिषः इति रूपम्। टित्वात् स्त्रियां महिषी इति भवति। महिषा अस्मिन् सन्तीति महिष्मान्=देशः। महिषाच्चेति वक्तव्यम्। (.ा. ४-२-८७) इति 'तदस्मिन्नस्तीति देशे तन्नाम्नि' (४-२-६७) इति विषये ड्मनुप् प्रत्यये डित्वाट्टिलोपे च रूपमेवम्।
३ 'वर्तमाने पृषद्बृहन् महद–'(द.उ. ६-५) इति वर्तमानकाले कतिप्रत्यये शतृवदित्यतिदेशान्नुमि, सान्तमहतः संयोगस्य' (६-४-१०) इत्यसम्बुद्धौ सर्वनामस्थाने परतः उपधायाः दीर्घे च महान् इति रूपं भवति।
४ 'मेहरिणन् च' (द.उ. ५-१९) इति इनण् प्रत्यये माहिनम् इति, चकारात् इनन् प्रत्यये महिनम् इति च रूपम्। महिनम् = इज्यम्।
५ ज्ञपादिषु अस्यधातोः पाठात् मित्त्वेन मितां ह्रस्वः। (६-४-९२) इति णौ उपधायाः ह्रस्वः।
६ 'हो ढः' (८-२-३१) इति ढत्वे, अवसाने चर्त्वविकल्पे च रूपम्।
७ 'ल्यपि, 'ल्यपि लघु पूर्वात्' (६-४-५६) इति णेरयादेशे रूपमेवम्।

१. वृंहति बृंहतः बृंहन्ति **प्र.** बृंहसि बृंहथः बृंहथ **म.** बृंहामि बृंहावः बृंहामः **उ.** २ बबृंह बबृंहतु बबृंहुः। ३ बृंहिता। ४ बृंहिष्यति। ५ बृंहतु। ६ अबृंहत्। ७ बृंहेत्। ८ बृंह्यात्। **अनिदितामित्युक्तत्वान्नलोपो जातः**। ९ अबृंहीत्। १० अबृंहिष्यत्।

**भावे**—बृंह्यते। **णिचि**—वृंहयति-ते। **सनि**—बिबृंहिषति। **यङि**—बरीबृंह्यते। **यङ्लुकि**—बरीबृंहीति-बबृंहीति-बरीबृण्ढि। इत्यादि।

**कृत्सु**—बृंहितव्यम्, बृंहणीयम्, बृंह्यम्। बृंहितः। बृंहितम्। बृंहितुम्। बृंहित्वा। प्रबृंह्य। परिबृढः।

**(७३७-७३८) तुहिर्-दुहिर्—अर्दने।** (पीडा करना, दुख देना, हिंसा करना)। तोहती। दोहति। इत्यादि। 'ज्योतति' (४०) वत्।

**(७३९) उहिर्—अर्दने।** (पीडा करना)। इरित्। सक.। सेट्। पर.।

१ **प्र.** ओहति। ओहतः। ओहन्ति। **म.** ओहसि। ओहथः। ओहथ। **उ.** ओहामि। ओहावः। ओहामः। २ **प्र.** उवोह। ऊहतुः। ऊहुः। **म.** उवोहिथ। ऊहथुः। ऊह। **उ.** उवोह। ऊहिव। ऊहिम। ३ **प्र.** ओहिता। ओहितारौ औहितारः। **म.** ओहितासि। ओहितास्थः। ओहितास्थ। **उ.** ओहितास्मि। ओहितास्वः। ओहितास्मः। ४ **प्र.** ओहिष्यति। ओहिष्यतः। ओहिष्यन्ति। **म.** ओहिष्यसि। ओहिष्यथः। ओहिष्यथ। **उ.** ओहिष्यामि। ओहिष्यावः। ओहिष्यामः। ५ **प्र.** ओहतु-तात्। ओहताम्। ओहन्तु। **म.** ओह-ओहतात्। ओहतम्। ओहत। **उ.** ओहानि। ओहाव। ओहाम। ६ **प्र.** औहत्। औहताम्। औहन्। **म.** औहः। औहतम्। औहत। **उ.** औहम्। औहाव। औहाम। ७ **प्र.** ओहेत्। ओहेताम्। ओहेयुः। **म.** ओहेः। ओहेतम्। ओहेत। **उ.** ओहेयम्। ओहेव। ओहेम। ८ **प्र.** उह्यात्। उह्यास्ताम्। उह्यासुः। **म.** उह्याः। उह्यास्तम्। उह्यास्त। **उ.** उह्यासम्। उह्यास्व। उह्यास्म। ९ **प्र.** औहीत्-औहत्। औहिष्टाम्। औहताम्। औहिषुः-औहन्। **म.** औहीः-औहः। औहिष्टम्-औहतम्। औहिष्ट-औहत। **उ.** औहिषम्- औहम्। औहिष्व-औहाव। औहिष्म-औहाम। १० **प्र.** औहिष्यत। औहिष्यताम्। औहिष्यन्। **म.** औहिष्यः। औहिष्यतम्। औहिष्यत। **उ.** औहिष्यम्। औहिष्याव। औहिष्याम।

**णिचि**—ओहयति-ते। **सनि**—ओजिहिषति। **कृत्सु**—ओहितव्यम्। ओहनीयम्। ओह्यम्। उहितः। ओहन्। ओहितुम्। ओहित्वा। प्रोह्य।

**(७४०) अर्ह—पूजायाम्।** पूजा करना। सक.। सेट्। परस्मै.।

१ **प्र.** अर्हति। अर्हतः। अर्हन्ति। **म.** अर्हसि। अर्हथः। अर्हथ। **उ.** अर्हामि। अर्हावः। अर्हामः। २ **प्र.** आनर्ह। आनर्हतुः। आनर्हुः। **म.** आनर्हिथ। आनर्हथुः। आनर्ह। **उ.** आनर्ह। आनर्हिव। आनर्हिम। ३ **प्र.** अर्हिता। अर्हितारौ। अर्हितारः। **म.** अर्हितासि। अर्हितास्थः। अर्हितास्थ। **उ.** अर्हितास्मि। अर्हितास्वः। अर्हितास्मः। ४ **प्र.** अर्हिष्यति।

अर्हिष्यतः। अर्हिष्यन्ति। **म.** अर्हिष्यसि। अर्हिष्यथः। अर्हिष्यथ। **उ.** अर्हिष्यामि। अर्हिष्यावः। अर्हिष्यामः। ५ अर्हतु। ६ **प्र.** आर्हत्। आर्हताम्। आर्हन्तु। **म.** आर्हः। आर्हेतम्। आर्हेत। **उ.** आर्हाम्। आर्हाव। आर्हाम। ७ **प्र.** अर्हेत्। अर्हेताम्। अर्हेयुः। **म.** अर्हेः। अर्हेतम्। अर्हेत। **उ.** अर्हेयम्। अर्हेव। अर्हेम। ८ **प्र.** अर्ह्यात्। अर्ह्यास्ताम्। अर्ह्यासुः। **म.** अर्ह्याः। अर्ह्यास्तम्। अर्ह्यास्ति। **उ.** अर्ह्यासम्। अर्ह्यास्व। अर्ह्यास्म। ९ **प्र.** आर्हीत्। आर्हिष्टाम्। आर्हिषुः। **म.** आर्हीः। आर्हिष्टम्। आर्हिष्ट। **उ.** आर्हिषम्। आर्हिष्व। आर्हिष्म। १० **प्र.** आर्हिष्यत्। आर्हिष्यताम्। आर्हिष्यन्। **म.** आर्हिष्यः। आर्हिष्यतम्। आर्हिष्यत। **उ.** आर्हिष्यम्। आर्हिष्याव। आर्हिष्याम।

**कर्मणि**—अर्ह्यते। **णिचि**—१ अर्हयति। २ अर्हयामासअर्हयाम्बभूव- अर्हयाञ्चकार। ३ अर्हयिता। अर्हयिष्यति। ५ अर्हयतु-तात्। ६ अर्हयत्। ७ अर्हयेत्। ८ अर्हयात्। ९ आर्जिहत्। १० आर्हयिष्यत्। **सनि**—१ अर्जिहिषति। ९ आर्जिहीषीत्। १० आर्जिहिषिष्यत्। **कृत्सु**—अर्हकः-र्हिका, अर्जिहिषकः-षिका, अर्हिता-त्री, अर्हयिता-त्री, अर्हन्-न्ती, अर्हयन्-न्ती, अर्हिष्यन्-न्ती-ती, अर्हयिष्य्-न्ती-ती, अर्ट-ड्-अर्हौ-अर्हः, अर्हः, पूजार्हः-पूजार्हा, अर्हितव्यम्, अर्हयितव्यम्, अर्हणीयम्, अर्हयम्, अर्ह्यमाणः, अर्हः, अर्घः,[1] अर्हितुम्, अर्हयितुम्, अर्हा, अर्हणा, अर्हणम्, अर्हित्वा, अर्हयित्वा, समर्ह्य।

**(७४१) द्युत—दीप्तौ**। प्रायेणायं विपूर्वकः। (चमकना, प्रकाशित होना)। **वि**—अत्यन्त प्रकाशित होना। अकर्म.।सेट्। आत्मने.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | द्योतते | द्योतेते | द्योतन्ते | प्र. |
| | द्योतसे | द्योतेथे | द्योतध्वे | म. |
| | द्योते | द्योतावहे | द्योतामहे | उ. |
| लिट् | दिद्युते[2] | दिद्युताते | दिद्युतिरे | प्र. |
| | दिद्युतिषे | दिद्युताथे | दिद्युदिध्वे | म. |
| | दिद्युते | दिद्युतिवहे | दिद्युतिमहे | उ. |
| लुट् | द्योतिता | द्योतितारौ | द्योतितारः | प्र. |
| | द्योतितासे | द्योतितासाथे | द्योतिताध्वे | म. |
| | द्योतिताहे | द्योतितास्वहे | द्योतितास्महे | उ. |
| लृट् | द्योतिष्यते | द्योतिष्येते | द्योतिष्यन्ते | प्र. |
| | द्योतिष्यसे | द्योतिष्येथे | द्योतिष्यध्वे | म. |
| | द्योतिष्ये | द्योतिष्यावहे | द्योतिष्यामहे | उ. |
| लोट् | द्योतताम् | द्योतेताम् | द्योतन्ताम् | प्र. |
| | द्योतस्व | द्योतेथाम् | द्योतध्वम् | म. |
| | द्योते | द्योतावहे | द्योतामहे | उ. |

१ 'न्यङ्क्वादीनां च' (७-३-५३) इति कुत्वम्। 'मूल्ये पूजाविधावर्घः–' इत्यमरः।

२ 'द्युतिस्वाप्योः संप्रसारणम्' (७-४-६७) अनयोरभ्यासस्य संप्रसारणं स्यात्। 'इयणः सम्प्रसारणम्' (१-१-४५) यणः स्थाने प्रयुज्यमानो य इक् स सम्प्रसारणसंज्ञः स्यात्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लङ् | अद्योतत | अद्योतेताम् | अद्योतन्त | प्र. |
| | अद्योतथाः | अद्योतेथाम् | अद्योतध्वम् | म. |
| | अद्योते | अद्योतावहि | अद्योतामहि | उ. |
| वि. लि. | द्योतेत | द्योतेयाताम् | द्योतेरन् | प्र. |
| | द्योतेथाः | द्योतेयाथाम् | द्योतध्वम् | म. |
| | द्योतेय | द्योतेवहि | द्योतेमहि | उ. |
| आ. लि. | द्योतिषीष्ट | द्योतिषीयास्ताम् | द्योतिषीरन् | प्र. |
| | द्योतिषीष्ठाः | द्योतिषीयास्थाम् | द्योतिषीध्वम् | म. |
| | द्योतिषीय | द्योतिषीवहि | द्योतिषीमहि | उ. |
| लुङ् | अद्योतिष्ट | अद्योतिषाताम् | अद्योतिषत | प्र. |
| | अद्योतिष्ठाः | अद्योतिषाथाम् | अद्योतिड्ढ्वम्-ध्वम् | म. |
| | अद्योतिषि | अद्योतिष्वहि | अद्योतिष्महि | उ. |

पक्षे—**प्र.** अद्युतत्[1] अद्युतताम् अद्युतन्। **म.** अद्युतः अद्युततम् अद्युतत। **उ.** अद्युतम् अद्युताव अद्युताम।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृङ् | अद्योतिष्यत | अद्योतिष्येताम् | अद्योतिष्यन्त | प्र. |
| | अद्योतिष्यः | अद्योतिष्येथाम् | अद्योतिष्यध्वम् | म. |
| | अद्योतिष्ये | अद्योतिष्यावहि | अद्योतिष्यामहि | उ. |

**भावे**—द्युत्यते। ९ अद्योति। **णिचि**—द्योतयति-ते। **सनि**—दिद्युतिषते[2]-दिद्योतिषते। **यङि**—देद्युत्यते। **यङ्लुकि**—देद्युतीति-देद्योत्ति।

**कृत्सु**—द्योतकः-तिका, दिद्युतिषकः[3]-दिद्योतिषकः-षिका, देद्युतकः-[4]तिका, द्योतिता-त्री, द्योतयिता-त्री, द्योतयन्-न्ती, द्योतयिष्यन्-न्ती-ती, द्योतमानः, द्योतयमानः, द्योतिष्यमाणः, द्योतयिष्यमाणः, दिद्युत्[5]-दिद्युतौ-दिद्युतः, द्युतितम्[6]-द्योतितम्-तः, द्योतः,[7] खद्योतः,[8]

१ 'द्युद्भ्यो लुङि' (१-३-९१) द्युतादिभ्यः परस्मैपदं वा स्याल्लुङि। इति वा परस्मैपदम्। परस्मैपदपक्षे—पुषादिद्युतादिति च्लेरङ्। द्वितीयो लुङ्।

२ 'रलोव्युपधात्—' (१-२-२६) इति सनि क्त्वा च वा द्वित्वम्। कित्वाभावपक्षे गुणः, कित्वपक्षे गुणाभावः।

३ सनन्ताण्ण्वुलि 'रलो व्युपधाद्धलादेः संश्च' (१-२-२६) इति सेटः सनः क्त्वायाश्च कित्त्वविकल्पनात्, कित्त्वपक्षे गुणप्रतिषेधः, कित्त्वाभावपक्षे गुण इति रूपद्वयम्। 'द्युतिस्वाप्योः सम्प्रसारणम्' (७-४-६७) इति अभ्यासे हलादिशेषं बाधित्वा यकारस्य सम्प्रसारणम् इकारः। सन्नन्ते सर्वत्रैषा प्रक्रिया ज्ञेया। क्त्वायामप्येवमेव कित्त्वविकल्पः।

४ यङन्तात् ण्वुलि, 'द्युतिस्वाप्योः—' (७-७-६७) इति प्रथमं हलादिशेषं बाधित्वा सम्प्रसारणे, अनन्तरम्। 'गुणो यङ्लुकोः' (७-४-८२) इति गुणः। एवं यङन्ते सर्वत्र ज्ञेयम्।

५ कर्तरि, क्विपि, 'द्युतिगमिजुहोतीनां द्वे च' (वा. ३-२-१७८) इति द्वित्वे, अभ्यासे सम्प्रसारणे, रूपमेवम्।

६ उदुपधाद्भादिकर्मणोरन्यतरस्याम्' (१-२-२१) इति निष्ठायाः कित्त्वविकल्पः। एतच्च भावे आदिकर्मणि च या निष्ठा, तत्रैवेति। तेन रूपद्वयम्।

७ इगुपधलक्षणं कप्रत्ययं बाधित्वा पचादिषु (१-३-१३४) पाठात् कर्तर्यच् प्रत्ययः।

८ खं द्योतयतीति खद्योतः = क्रिमिविशेषः। अन्तर्भावितण्यन्तादस्मात्। 'कर्मण्यण्' (३-२-१) इत्यण् प्रत्यये रूपम्।

प्रद्योतनः,[१] उद्द्योती,[२] विदिद्युतिवान्,[३] द्योतितव्यम्, द्योतयितव्यम्, द्योतनीयम्, द्योत्यम्, द्युत्यमानः, द्योत्यमानः, प्रद्योतः, द्योतितुम्, द्योतयितुम्, विद्युत्[४], द्युतिः,[५] द्योतना, द्योतनम्, द्युतित्वा-द्योतित्वा, द्योतयित्वा, प्रद्युत्य, प्रद्योत्य ज्योतिः[६] ।

**(७४२) श्विता-(श्वित्) —वर्णे।** (सफेद होना, शुभ्र होना)। अक.। सेट्। आत्मने.। आदित्। द्युतादिः। श्वेतते। श्वेतत्वेन प्रकाशते इत्यर्थः। शिश्विते। 'स्वेदति' वत्।

**(७४३) ञिमिदा—स्नेहने।** (स्नेह करना, स्निग्ध होना, पिघलना, पोतना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। द्युतादिः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | मेदते | मेदेते | मेदन्ते | प्र. |
| | मेदसे | मेदेथे | मेदध्वे | म. |
| | मेदे | मेदावहे | मदामहे | उ. |
| लिट् | मिमिदे | मिमिदाते | मिमिदिरे | प्र. |
| | मिमिदिषे | मिमिदाथे | मिमिदिध्वे | म. |
| | मिमिदे | मिमिदिवहे | मिमिदिमहे | उ. |
| लुट् | मेदिता | मेदितारौ | मेदितारः | प्र. |
| | मेदितासे | मेदितासाथे | मेदिताध्वे | म. |
| | मेदिताहे | मेदितास्वहे | मेदितास्महे | उ. |
| लृट् | मेदिष्यते | मेदिष्येते | मेदिष्यन्ते | इत्यादि। |
| लोट् | मेदताम् | मेदेताम् | मेदन्ताम् | प्र. |
| | मेदस्व | मेदेथाम् | मेदध्वम् | म. |
| | मेदै | मेदावहै | मेदामहै | उ. |
| लङ् | अमेदत | अमेदताम् | अमेदन्त | प्र. |
| | अमेदथाः | अमेदथाम् | अमेदध्वम् | म. |
| | अमेदे | अमेदावहि | अमेदामहि | उ. |
| वि. लि. | मेदेत | मेदेयाताम् | मेदेरन् | प्र. |
| | मेदेथाः | मेदेयाथाम् | मेदेध्वम् | म. |
| | मेदेय | मेदेवहि | मेदेमहि | उ. |

१ तच्छीलादि कर्तृषु 'अनुदात्तेतश्च हलादेः' (३-२-१४९) इति युच्।

२ 'सुप्यजातौ–' (३-२-७८) इति ताच्छील्ये णिनिः।

३ लिटः क्वसौ, 'वस्वेकाजाद्घसाम्' (७-२-६७) इतीडागमे अभ्यासे सम्प्रसारणे च रूपम्।

४ स्त्रियाम्, भावादौ, 'सम्पदादिभ्यः–' (वा. ३-३-९४) इति क्विप्। क्तिनोऽपवादः।

५ 'इक् कृष्यादिभ्यः' (वा. ३-३-१०८) इति इक् प्रत्ययः।

६ 'द्युतेरिसिन् आदेशश्च जः' (दि.उ. ९-३२) इतीसिन् प्रत्यये, आदेश्च जकारादेशः। ज्योतिः = ग्रहनक्षत्रादिः। केचित्तु—अमरटीकायाम्, क्षीरस्वामिना 'ज्योतते ज्योतिः।' इत्युक्तम्। वस्तुतस्तु द्युतिरिव ज्योतिरपि स्वतन्त्रो धातुः। तस्य कात्यायनश्रौतसूत्रे 'तृणेनावज्योत्यासिच्याप: पुनरवज्योत्य निधायं त्रिरुद्वासयत्युदक्।(४-१४-५) इति ल्यबन्तः प्रयोगोऽप्युपलभ्यते।' इत्याहुः। 'अवज्योतषम् दुष्टार्थम्' इति कर्कभाष्येऽपि लुङन्तः प्रयोगोऽप्युपलभ्यते।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आ. लि. | मेदिषीष्ट | मेदिषीयास्ताम् | मेदिषीरन् | प्र. |
| | मेदिषीष्ठाः | मेदिषीयास्थाम् | मेदिषीध्वम् | म. |
| | मेदिषीय | मेदिषीवहि | मेदिषीमहि | उ. |
| लुङ् | अमेदिष्ट | अमेदिषाताम् | अमेदिषत | प्र. |
| | अमेदिष्ठाः | अमेषाथाम् | अमेदिड्ढ्वम्-ध्वम् | म. |
| | अमेदिषि | अमेदिष्वहि | अमेदिष्महि | उ. |

पक्षे—**प्र.** अमिदत् अमिदताम् अमिदन्। **म.** अमिदः अमिदतम् अमिदत। **उ.** अमिदम् अमिदाव अमिदाम।

| | | | |
|---|---|---|---|
| लृङ् | अमेदिष्यत | अमेदिष्येताम् | अमेदिष्यन्त इत्यादि। |

**कर्मणि**—मिद्यते। **णिचि**—मेदयति-ते। **सनि**—मिमिदिषते-मिमेदिषते। **यङि**—मेमिद्यते। **यङ्लुकि**—मेमिदीति-मेमेत्ति। **कृत्सु**—मेदकः-दिका, मेदिता-त्री, मेदयिता-त्री, मेदितुम्, मेदमानः, मेदनम्, मेदित्वा, मेदयित्वा, मेदन्-न्ती, मेदयन्-न्ती, मेदिष्यन्, मेदयिष्यन्-न्ती-ती, मेदितव्यम्, मेदयितव्यम्, मिन्नः,[१] प्रमेदितम्,[२] प्रमिन्नम्, प्रमिन्नः, प्रमेदितः, मेदुरः[३], मेदः[४], मेदिनी,[५] मित्रम्[६], मित्राः, मेदः,[७] मेदिष्यमाणः।

**(७४४) ञिष्विदा—स्नेहनमोचनयोः।** (चिकना करना, त्यागना) सकर्म.। सेट्। आत्मने.। स्वेदति। सिष्विदे। इत्यादि 'मेदति' (७४३) वत्। **द्युद्‌भ्यो लुङि।** इति वा परस्मैपदम् अङ् च।

**कर्मणि**—स्विद्यते। **णिचि**—स्वेदयति। **सनि**—सिस्विदिषते-सिस्वेदिषते। **यङि**—सेस्विद्यते। **यङ्लुकि**—सेष्वेत्ति।

**(७४५) रुच—दीप्तौ अभिप्रीतौ च।** (चमकना, प्रकाशित होना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, उत्साह करना, रुचना)। अकर्म.। सेट्। आत्मने.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | रोचते | रोचेते | रोचन्ते | प्र. |
| | रोचसे | रोचेथे | रोचध्वे | म. |
| | रोचे | रोचावहे | रोचामहे | उ. |

---

१ 'ञीतः क्तः (३-२-१८७) इति वर्तमाने कर्तरि क्तप्रत्यये, 'ओदितश्च' (७-२-१६) इति इण्निषेधेच, 'रदाभ्यां निष्ठातो नः, पूर्वस्य च दः' (८-२-४२) इति निष्ठातकारधातुदकारयोर्नत्वे च रूपम्।

२ अस्यैव धातोर्निष्टायां भावे आदिकर्मणि च, 'विभाषा भावादिकर्मणोः' (७-२-१७) इतीड्विकल्पे, इट्पक्षे निष्ठा शीङ्स्विदिमिदिक्ष्विदिधृषः' (१-२-१९) इति सेटो निष्ठायाः कित्वनिषेधात् गुणनिषेधाद् गुणे प्रमेदितम् प्रमेदितः इति भवतः। इडभावपक्षे तु कर्त्रर्थकक्तप्रत्ययान्तवत् प्रक्रिया ज्ञेया।

३ भञ्जभासभिदो घुरच् (३-२-१६) इती ताच्छीलादिषु कर्तृषु घुरच् प्रत्यये गुणे च रूपमेतवम्। मेदुरः = वसाविशेषवान् पश्वादिः।

४ कर्तरि पचाद्यचि गुणे च रूपमेतत्। मेदः असुरविशेषः।

५ प्रह्यादित्वात् (३-१-१३४) कर्तरि णिनिप्रत्यये स्त्रियाम्, ऋन्नेभ्यः–' (४-१-५) इति ङीपि रूपमेवम्। मेदिनी = भूमिः।

६ 'अमिचिमिदिशसिभ्यः क्त्रः' (द.उ. ८-८६) इति क्त्रप्रत्यये रूपम्। मेदतीति मित्रम् = सुहृत्। सुहृदि अभिधेये नपुंसकलिङ्गम्, सूर्ये तु पुल्लिङ्गता, गन्धद्रव्ये तु पुंल्लिङ्गमस्यैव पदस्येति ज्ञेयम्।

७ 'असुन्' (द.उ. ३-४९) इत्यस्मादसुन् प्रत्यये गुणे च रूपम्। मेदः = वसा।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लिट् | रुरुचे | रुरुचाते | रुरुचिरे | प्र. |
| | रुरुचिषे | रुरुचाथे | रुरुचिध्वे | म. |
| | रुरुचे | रुरुचिवहे | रुरुचिमहे | उ. |
| लुट् | रोचिता | रोचितारौ | रोचितारः | प्र. |
| | रोचितासे | रोचितासाथे | रोचिताध्वे | म. |
| | रोचिताहे | रोचितास्वहे | रोचितास्मे | उ. |
| लृट् | रोचिष्यते | रोचिष्येते | रोचिष्यन्ते | प्र. |
| | रोचिष्यसे | रोचिष्येथे | रोचिष्यध्वे | म. |
| | रोचिष्ये | रोचिष्यावहे | रोचिष्यामहे | उ. |
| लोट् | रोचताम् | रोचेताम् | रोचन्ताम् | प्र. |
| | रोचस्व | रोचेथाम् | रोचध्वम् | म. |
| | रोचै | रोचावहै | रोचामहै | उ. |
| लङ् | अरोचत | अरोचेताम् | अरोचन्त | प्र. |
| | अरोचथाः | अरोचेथाम् | अरोचध्वम् | म. |
| | अरोचे | अरोचावहि | अरोचामहि | उ. |
| वि. लि. | रोचेत | रोचेयाताम् | रोचेरन् | प्र. |
| | रोचेथाः | रोचेयाथाम् | रोचेध्वम् | म. |
| | रोचेय | रोचेयावहि | रोचेयामहि | उ. |
| आ. लि. | रोचिषीष्ट | रोचिषीयास्ताम् | रोचिषीरन् | प्र. |
| | रोचिषीष्ठाः | रोचिषीयास्थाम् | रोचिषीध्वम् | म. |
| | रोचिषीय | रोचिषीवहि | रोचिषीमहि | उ. |
| लुङ् | अरोचिष्ट | अरोचिषाताम् | अरोचिषत | प्र. |
| | अरोचिष्ठाः | अरोचिषाथाम् | अरोचिड्ढ्वम्-ध्वम् | म. |
| | अरोचिषि | अरोचिष्वहि | अरोचिष्महि | उ. |

पक्षे—**प्र.** अरुचत् अरुचताम् अरुचन्। **म.** अरुचः अरुचतम् अरुचत। **उ.** अरुचम् अरुचाव अरुचाम।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृङ् | अरोचिष्यत | अरोचिष्येताम् | अरोचिष्यन्त | प्र. |
| | अरोचिष्यथाः | अरोचिष्येथाम् | अरोचिष्यध्वम् | म. |
| | अरोचिष्ये | अरोचिष्यावहि | अरोचिष्यामहि | उ. |

**कर्मणि**—रुच्यते। **णिचि**—रोचयते[1]। **सनि**—रुरुचिषते रुरोचिषते। अस्य[2] यङ्

१ 'न पादम्याङ्–' (१-३-८९) एभ्यो ण्यन्तेभ्यः परस्मैपदं न।

२ 'भृशं रोचते' इत्यत्रैवायं यङ्निषेधः। पौनः पुन्येन तु रोरुच्यते इति स्यादेव। 'रोरुचीति रोरोक्ति' यङ्लुगन्तरूपं 'भृशं रोचते' इत्यर्थे इष्यत इति वृत्यादौ।

यङ्लुकौ न स्तः। **कृत्सु**—रोचकः-चिका, रोचिता-त्री, रोचयिता-त्री, रोचन्-न्ती, रोचयन्[१]-न्ती, रोचिष्यन्-न्ती-ती, रोचयमानः, रोचयिष्यमाणः, रोचितम्-तः-तवान्, रोचितव्यम्, रोचयितव्यम्, रोचनीयम्, रोच्यम्, रुच्यमानः, रोच्यमानः, रोचितुम्, रोचयितुम्, रुचित्वा-रोचित्वा, रोचयित्वा, संरुच्य, देवदत्ताय, रोचमानो[२] मोदकः, रोचन[३]-रोचना, विरोचनः, रोचनी,[४] रुच्यः,[५] रोच्यम्,[६] रोचिष्णुः,[७] रुचिः[८]-रुचिरम्, नीरुक्[९]-अभीरुक्, रोकः[१०], अरोचकः,[११] रुचकः,[१२] रुक्मम्,[१३] रुचिष्यम्[१४], वसुरोचिः[१५]-रोचिः।

**(७४६) घुट्—परिवर्तने।** (लोटना, पीछे आना, बदलना)। सक.। सेट्। आत्मने.। घोटते। जुघुटे। इत्यादि 'रोचति' (७४५) वत्।

**(७४७-७४९) रुट्-लुट्-लुठ्—प्रतिघाते।** (प्रतिबन्ध करना, रोकना, ढकेलना, धक्का मारना) सक.। सेट्। आत्मने.। रोटते। लोटते। लोठते। इत्यादि 'रोचति' (७४५) वत्।

---

१ धातोरस्याकर्मकत्वात् अभिप्रीतिरूपार्थे चित्तवत्कर्तृकत्वादपि, 'अनावकर्मकात्—' (१-३-१८८) इति कर्त्रभिप्राये प्राप्तस्य परस्मैपदस्य 'न पादभ्याङ्—' (१-३-८९) इति निषेधात्, 'णिचश्च' (१-३-७४) इति यथा सम्भवम्मुभयपदित्वमिति बोध्यम्। तेन शतृशानजन्तावुभावपि साधू इति बोध्यम्।

२ 'रुच्यार्थानां प्रियमाणः' (१-३-३३) इति प्रियमानस्य संप्रदानसंज्ञायाम्, 'चतुर्थी सम्प्रदाने' (२-३-१३) इति चतुर्थी।

३ 'नन्द्यादिषु' (३-१-१३४) 'नन्दिवासिदमिद्विषिसाधिबर्द्धिशोभिरोचिभ्यो ण्यन्तेभ्यः संज्ञायाम् (ग.सू.) इति वचनात् कर्तरि ल्युः। गुणः। रोचनः = कूटशाल्मलिः। 'स्त्रियामचादिषु' (४-१-४) पाठात् टाप्।

४ रोचनी इत्यत्र ल्युटि, टित्त्वेन स्त्रियां ङीपि रूपम्।

५ 'राजसूयसूर्यमृषोद्यरुच्य—' (३-१-११४) इत्यादिना निपातनात् क्यप्। 'सूर्यरुच्यावथ्याः कर्तरि' (वा. ३-१-११४) इति वचनात् कर्तरि निष्पन्नोऽयम्। रोचतेऽसौ रुच्यः।

६ भावे ण्यति, 'यजयाचरुच—' (७-३-६६) इति निषेधात् कुत्वं न। क्वाद्यजिव्रजि—' (वा. ७-३-५९) इति वार्तिकपक्षे तु रोक्यम् इति कुत्वेनैव भाव्यम्, 'यथोत्तरं मुनीनां प्रामाण्यम्' इति संकेतात्। यदितु रोच्यम् इति प्रयोगो दृश्यते; तदानीं पृषोदरादित्वात् (६-३-१०९) कुत्वाभाव इति बोध्यम्।

७ 'अलङ्कृञ्निरा—' (३-२-१३६) इत्यादिना तच्छीलादिषु कर्तृषु इष्णुच् प्रत्ययः।

८ स्त्रियाम् 'इक् कृष्यादिभ्यः' (वा. ३-३-१०८) इति भावे इक् प्रत्ययः। रुचिशब्दात् मत्वर्थीयो रप्रत्ययो बाहुलकात् प्रयोगदर्शनात् द्रष्टव्यः। रुचिरः = रुचिमान् इति यावत्।

९ क्विपि, 'चोः कुः' (८-२-३०) इति कुत्वे, 'नहिवृतिवृषिव्यधिरुचि—' (६-३-११६) इति पूर्वपदस्य दीर्घः। निरोचणम् = नीरुक् इति न्यासे विवरणात् बाहुलकात् करणे भावार्थे वा क्विबत्रेति ज्ञायते।

१० 'चोः कुः घिण्ण्यतोः' (७-३-५२) इति कुत्वम्, इति न्यासः (५-४-१४४)। परं तु निष्ठायामनिटो धातोरेव। 'चजोः—' (७-३-५२) इति कुत्वमित्याश्रयितृणां वार्तिककारभाष्यकारादीनां मते तु 'विभाषा श्यावारोकाभ्याम्' (५-४-१४४) इत्यत्र अरोक इति निपातनादेवात्र कुत्वम् इति।

११ अरोचकः इत्यत्र रोगाख्यायां ण्वुल् बहुलम्' (३-३-१०८) इति ण्वुल्। अरोचकः = अरुचिव्याधिः। अत्र बहुलग्रहणात् स्त्र्यधिकारविहितत्वेऽपि स्त्रीत्वं नेति प्रक्रियासर्वस्म्।

१२ 'क्वुन् शिल्पिसंज्ञयोः—' इति क्वुन्। कित्त्वान्न गुणः।

१३ 'युजिरुचितिजां कुश्च' (द.उ. ७-३३) इति मक् प्रत्ययः, कवर्गश्चान्तादेशः। प्रत्ययस्य कित्त्वान्न गुणः। रोजतेऽतिशयेन तदिति रुक्मम् = सुवर्णम्।

१४ रुचिभुजिम्यां किष्यन् इति किष्यन् प्रत्ययः। रुचिष्यम् = भोज्यम्।

१५ 'वसौ रुचेः संज्ञायाम्' (द.उ. ९-३३) इति इसिन् प्रत्ययः। वसुभ्यो रोचते, वसवः अस्मिन् रोचन्ते इति वा वसुरोचिः = क्रतुः। बाहुलकात् 'वसु' इत्युपपदाभावेऽपि केवलाद्धातोः इसिन् प्रत्यये रोचिः = ज्वाला।

( ७५० ) **शुभ—दीप्तौ।** (प्रकाशित होना, शोभा पाना)। अक.। सेट्। आत्मने.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | शोभते | शोभेते | शोभन्ते | प्र. |
| | शोभसे | शोभेथे | शोभध्वे | म. |
| | शोभे | शोभावहे | शोभामहे | उ. |
| लिट् | शुशुभे | शुशुभाते | शुशुभिरे | प्र. |
| | शुशुभिषे | शुशुभाथे | शुशुभिध्वे | म. |
| | शुशुभे | शुशुभिवहे | शुशुभिमहे | उ. |
| लुट् | शोभिता | शोभितारौ | शोभितारः | प्र. |
| | शोभितासे | शोभितासाथे | शोभिताध्वे | म. |
| | शोभिताहे | शोभितास्वहे | शोभितास्महे | उ. |
| लृट् | शोभिष्यते | शोभिष्येते | शोभिष्यन्ते | प्र. |
| | शोभिष्यसे | शोभिष्येथे | शोभिष्यध्वे | म. |
| | शोभिष्ये | शोभिष्यावहे | शोभिष्यामहे | उ. |
| लोट् | शोभताम् | शोभेताम् | शोभन्ताम् | प्र. |
| | शोभस्व | शोभेथाम् | शोभध्वम् | म. |
| | शोभै | शोभावहै | शोभामहै | उ. |
| लङ् | अशोभत | अशोभेताम् | अशोभन्त | प्र. |
| | अशोभथाः | अशोभेथाम् | अशोभध्वम् | म. |
| | अशोभे | अशोभावहि | अशोभामहि | उ. |
| वि. लि. | शोभेत | शोभेयाताम् | शोभेरन् | प्र. |
| | शोभेयाः | शोभेयाथाम् | शोभेध्वम् | म. |
| | शोभेय | शोभेवहि | शोभेमहि | उ. |
| आ. लि. | शोभिषीष्ट | शोभिषीयास्ताम् | शोभिषीरन् | प्र. |
| | शोभिषीष्ठाः | शोभिषीयास्थाम् | शोभिषीध्वम् | म. |
| | शोभिषीय | शोभिषीवहि | शोभिषीमहि | उ. |
| लुङ् | अशोभिष्ट | अशोभिषाताम् | अशोभिषत | प्र. |
| | अशोभिष्ठाः | अशोभिषाथाम् | अशोभिढ्वम् | म. |
| | अशोभिषि | अशोभिष्वहि | अशोभिष्महि | उ. |
| लृङ् | अशोभिष्यत | अशोभिष्यताम् | अशोभिष्यन्त | इत्यादि। |

**कृत्सु**—शोभकः-भिका, शोभिता, शोभयिता-त्री, शोभन्-न्ती, शोभयन्-न्ती, शोभिष्यन्-न्ती, शोभयिष्यन्-न्ती-ती, शोभमानः, शोभयमानः, शोभयिष्यमाणः, शोभितः-तम्, शोभितव्यम्, शोभयितव्यम्, शोभनीयम्, शोभा, शोभना, शोभितुम्, शोभयितुम्, शोभित्वा, शोभयित्वा, प्रशुभ्य, प्रशोभ्य। शुभम्, शोभनः, शोभनम्।

( ७५१ ) **क्षुभ—संचलने।** (मथना, घबड़ाना, क्रोध करना, क्षुब्ध होना)। सक.। सेट्। आत्मने.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | क्षोभते | क्षोभेते | क्षोभन्ते | प्र. |
| | क्षोभसे | क्षोभेथे | क्षोभध्वे | म. |
| | क्षोभे | क्षोभावहे | क्षोभामहे | उ. |
| लिट् | चुक्षुभे | चुक्षुभाते | चुक्षुभिरे | प्र. |
| | चुक्षुभिषे | चुक्षुभाथे | चुक्षुभिध्वे | म. |
| | चुक्षुभे | चुक्षुभिवहे | चुक्षुभिमहे | उ. |
| लुट् | क्षोभिता | क्षोभितारौ | क्षोभितारः | प्र. |
| | क्षोभितासे | क्षोभितासाथे | क्षोभिताध्वे | म. |
| | क्षोभिताहे | क्षोभितास्वहे | क्षोभितास्महे | उ. |
| लृट् | क्षोभिष्यते | क्षोभिष्येते | क्षोभिष्यन्ते | प्र. |
| | क्षोभिष्यसे | क्षोभिष्येथे | क्षोभिष्यध्वे | म. |
| | क्षोभिष्ये | क्षोभिष्यावहे | क्षोभिष्यामहे | उ. |
| लोट् | क्षोभताम् | क्षोभेताम् | क्षोभन्ताम् | प्र. |
| | क्षोभस्व | क्षोभेथाम् | क्षोभध्वम् | म. |
| | क्षौभै | क्षोभावहै | क्षोभामहै | उ. |
| लङ् | अक्षोभत | अक्षोभेताम् | अक्षोभन्त | प्र. |
| | अक्षोभथाः | अक्षोभेथाम् | अक्षोभध्वम् | म. |
| | अक्षोभे | अक्षोभावहि | अक्षोभामहि | उ. |
| वि. लि. | क्षोभेत | क्षोभेयाताम् | क्षोभेरन् | प्र. |
| | क्षोभेथाः | क्षोभेयाथाम् | क्षोभेध्वम् | म. |
| | क्षोभेय | क्षोवेवहि | क्षोभेमहि | उ. |
| आ. लि. | क्षोभिषीष्ट | क्षोभिषीयास्ताम् | क्षोभिषीरन् | प्र. |
| | क्षोभिषीष्ठाः | क्षोभिषीयास्थाम् | क्षोभिषीध्वम् | म. |
| | क्षोभिषीय | क्षोभिषीवहि | क्षोभिषीमहि | उ. |
| लुङ् | अक्षोभिष्ट | अक्षोभिषाताम् | अक्षोभिषत | प्र. |
| | अक्षोभिष्ठाः | अक्षोभिषाथाम् | अक्षोभिढ्वम् | म. |
| | अक्षोभिषि | अक्षोभिष्वहि | अक्षोभिष्महि | उ. |

'**द्युद्भ्यो लुङि**'। इति विकल्पपक्षे–

पक्षे—**प्र.** अक्षुभत् अक्षुभताम् अक्षुभवन्। **म.** अक्षुभः अक्षुभतम् अक्षुभत। **उ.** अक्षुभम् अक्षुभाव अक्षुभाम।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृङ् | अक्षोभिष्यत | अक्षोभिष्येताम् | अक्षोभिष्यन्त | प्र. |
| | अक्षोभिष्यथाः | अक्षोभिष्येथाम् | अक्षोभिष्यध्वम् | म. |
| | अक्षोभिष्ये | अक्षोभिष्यावहि | अक्षेभिष्यामहि | उ. |

**कर्मणि**—क्षुभ्यते। **णिचि**—क्षोभयति। चलनार्थत्वात् परस्मैपदमेव। **सनि**—चुक्षुभिषते। **कृत्सु**—क्षोभनीयम्, क्षोभनम्, क्षोभणः, क्षोभः, क्षुब्धिः, क्षोभितुम्, क्षुभित्वा, संक्षुभ्य,

क्षोभितुम्, क्षोभकः-भिका, क्षोभिता-त्री, क्षोभयिता-त्री, क्षोभयन्-न्ती, क्षोभयिष्यन्-न्ती-ती, क्षोभमाणः, क्षोभयिष्यमाणः, क्षोभिष्यमाणः, प्रक्षुप्-प्रक्षुब्-प्रक्षुभौ-प्रक्षुभः, क्षुब्धः, क्षोभितम्, क्षुभः, प्रक्षोभी, क्षोभितव्यम्, क्षोभयितव्यम्, क्षोभ्यम्, क्षुभ्यमाणः, क्षोभ्यमाणः।

(७५२) **णभ—हिंसायाम्**। (मारना)। सकर्म.। सेट्। आत्म.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | नभते | नभेते | नभन्ते | प्र. |
| | नभसे | नभेथे | नभध्वे | म. |
| | नभे | नभावहे | नभामहे | उ. |
| लिट् | नेभे | नेभाते | नेभिरे | प्र. |
| | नेभिषे | नेभाथे | नेभिध्वे | म. |
| | नेभे | नेभिवहे | नेभिमहे | उ. |
| लुट् | नभिता | नभितारौ | नभितारः | प्र. |
| | नभितासे | नभितासाथे | नभिताध्वे | म. |
| | नभिताहे | नभितास्वहे | नभितास्महे | उ. |
| लृट् | नभिष्यते | नभिष्येते | नभिष्यन्ते | प्र. |
| | नभिष्यसे | नभिष्येथे | नभिष्यध्वे | म. |
| | नभिष्ये | नभिष्यावहे | नभिष्यामहे | उ. |
| लोट् | नभताम् | नभेताम् | नभन्ताम् | प्र. |
| | नभस्व | नभेथाम् | नभध्वम् | म. |
| | नभै | नभावहै | नभामहै | उ. |
| लङ् | अनभत | अनभेताम् | अनभन्त | प्र. |
| | अनभथाः | अनभेथाम् | अनभध्वम् | म. |
| | अनभे | अनभावहि | अनभामहि | उ. |
| वि.लि. | नभेत | नभेयाताम् | नभेरन् | प्र. |
| | नभेथाः | नभेयाथाम् | नभेध्वम् | म. |
| | नभेय | नभेवहि | नभेमहि | उ. |
| आ.लि. | नभिषीष्ट | नभिषीयास्ताम् | नभिषीरन् | प्र. |
| | नभिषीष्ठाः | नभिषीयास्थाम् | नभिषीध्वम् | म. |
| | नभिषीय | नभिषीवहि | नभिषीमहि | उ. |
| लुङ् | अनभिष्ट | अनभिषाताम् | अनभिषत | प्र. |
| | अनभिष्ठाः | अनभिषाथाम् | अनभिढ्वम् | म. |
| | अनभिषि | अनभिष्वहि | अनभिष्महि | उ. |

**द्युद्भ्यो लुङि** इति विकल्पपक्षे—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | अनभत् | अनभताम् | अनभन् | प्र. |
| | अनभः | अनभतम् | अनभत | म. |
| | अनभम् | अनभाव | अनभाम | उ. |
| लृङ् | अनभिष्यत | अनभिष्येताम् | अनभिष्यन्त | इत्यादि। |

**कृत्सु**—नभकः-भिका, नभिता-त्री, नाभयिता-त्री, नाभयन्-न्ती, नभमानः, प्रणिनभमानः, प्रनिनभमानः,प्रणभमानः,नाभयमानः,नभिष्यमाणः,नाभयिष्यमाणः,प्रणप्-प्रणब्-प्रणभौ-प्रणभः, नभितः-तम्, नभितः, नभः, नाभः, नभितव्यम्, नाभयितव्यम्, नभनीयम्, नाभनीयम्, नभ्यम्, नाभ्यम्, ईषन्नभः-दुर्नभः, सुनभः, नभ्यमानः, नाभ्यमानः, नभितुम्, नाभयितुम, नब्धिः, नभनम्, नभित्वा, नाभयित्वा, प्रणभ्य, प्रणाभ्य।

**( ७५३ ) तुभ—हिंसायाम्**। (मारना)। सकर्म.। सेट्। आत्म.। द्युतादिः।

१ तोभते। २ तुतुभे तुतुभाते तुतुभिरे। ३ तोभिता। ४ तोभिष्यते। ५ तोभताम्। ६ अतोभत। ७ तोभेत। ८ तोभिषीष्ट। ९ अतोभिष्ट। पक्षे- अतुभत्। १० अतोभिष्यत। इत्यादि 'रोचति' (७४५) वत्।

**( ७५४ ) स्रंस—अवस्रंसने**। (गिरना। खिसना, अधः पतन होना)। अकर्म.। सेट्। आत्मने.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | स्रंसते | स्रंसेते | स्रंसन्ते | प्र. |
| | स्रंससे | स्रंसेथे | स्रंसध्वे | म. |
| | स्रंसे | स्रंसावहे | स्रंस्रामहे | उ. |
| लिट् | सस्रंसे | सस्रंसाते | सस्रंसिरे | प्र. |
| | संस्रंसिषे | सस्रंसाथे | सस्रांसिध्वे | म. |
| | सस्रंसे | सस्रंसिवहे | सस्रसिमहे | उ. |
| लुट् | स्रंसिता | स्रंसितारौ | स्रंसितारः | प्र. |
| | स्रंसितासे | स्रंसितासाथे | स्रंसिताध्वे | म. |
| | स्रंसिताहे | स्रंसितास्वहे | स्रंसितास्महे | उ. |
| लृट् | स्रंसिष्यते | स्रंसिष्येते | स्रंसिष्यन्ते | प्र. |
| | स्रंसिष्यथे | स्रंसिष्येथे | स्रंसिष्यध्वे | म. |
| | स्रंसिष्ये | स्रांसिष्यावहे | स्रंसिष्यामहे | उ. |
| लोट् | स्रंसताम् | स्रंसेताम् | स्रंसन्ताम् | प्र. |
| | स्रंसस्व | स्रंसेथाम् | स्रंसध्वम् | म. |
| | स्रंसै | स्रंसावहै | स्रंसामहै | उ. |
| लङ् | अस्रंसत | अस्रंसेताम् | अस्रंसन्त | प्र. |
| | अस्रंसथाः | अस्रसेथाम् | अस्रंसध्वम् | म. |
| | अस्रंसे | अस्रंसेवहि | अस्रंसेमहि | उ. |
| वि. लि. | स्रंसेत | स्रंसेयाताम् | स्रंसेरन् | प्र. |
| | स्रंसेथाः | स्रंसेयाथाम् | स्रंसेध्वम् | म. |
| | स्रंसेय | स्रंसेवहि | स्रंसेमहि | उ. |
| आ. लि. | स्रंसिषीष्ट | स्रंसिषीयास्ताम् | स्रंसिषीरन् | प्र. |
| | स्रंसिषीष्ठाः | स्रंसिषीयास्थाम् | स्रंसिषीध्वम् | म. |
| | स्रंसिषीय | स्रंसिषीवहि | स्रंसिषीमहि | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुङ् | अस्रंसिष्ट | अस्रंसिषाताम् | असंसिषत | प्र. |
| | अस्रंसिष्ठाः | अस्रांसिषाथाम् | अस्रंसिध्वम् | म. |
| | अस्रंसिषि | अस्रंसिष्वहि | अस्रंसिष्महि | उ. |

**'द्युदभ्यो लुङि'** इति विकल्पे–

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | अस्रंसत् | अस्रंसताम् | अस्रंसन् | प्र. |
| | अस्रंसः | अस्रंसतम् | अस्रंसत | म. |
| | अस्रंसम् | अस्रंसाव | अस्रंसाम | उ. |
| लृङ् | अस्रंसिष्यत | अस्रंसिष्येताम् | अस्रंसिष्यन्त | प्र. |
| | अस्रंसिष्यथाः | अस्रंसिष्येथाम् | अस्रंसिष्यध्वम् | म. |
| | अस्रंसिष्ये | अस्रंसिष्यावहि | अस्रंसिष्यामहि | उ. |

**कर्मणि**—स्रस्यते। **णिचि**—स्रंसयति। **सनि**—सिस्रंसिषते। **यङि**—सनीस्रस्यते। **नीग्वञ्चुस्रंसुध्वंसुभ्रंसुकसपतपदस्कन्दाम्**। इत्यभ्यासस्य नीक्। **यङ्लुकि**—सनीस्रंसीति-सनीस्रंस्ति। **कृत्सु**—स्रंसितव्यः, स्रंसनीयः, स्रंसमानः, स्रंसितुम्, स्रंसित्वा,[१] स्रस्त्वा विस्रस्य, स्रस्तः, स्रंसितुम्, स्रंसकः-सिका, स्रंसिता-त्री, स्रंसन्-न्ती, स्रंसयन्-न्ती, स्रंसिष्यन्-न्ती-ती, स्रंसयिष्यन्-न्ती-ती, सनीस्रंसकः,[२] क्विपि-उखास्रत्[३], स्रस्तिः[४]-विस्रसा[५]।

**(७५५-७५६) ध्वंसु-भ्रंसु—अवस्रंसने**। ध्वंसु गतौ च। **भ्रंसु**—इत्यपि केचित्। अक.। सेट्. आत्मने.। ध्वंसते। भ्रंसते। 'स्रंसति' (७५४) वत्। **यङि**—दनीध्वस्यते। **यङ्लुकि**—दनीध्वंसीति दनीध्वंस्ति।

**(७५७) स्रम्भु—विश्वासे**। प्रायेणायं विपूर्वः। (विश्वास करना)।अकर्म.। सेट्। आत्मने.। विस्रम्भते। 'संसति' (७५४) वत्।

**(७५८) वृतु—वर्तने**। (रहना)। **अति**—जीतना, अतिक्रमण करना, लांघना, **अनु**—अनुसरण करना, **आ**—चक्राकार घूमना, परिक्रमा करना, पुनः पुनः करना, **अप**—लौटना, **नि**—लौटना, **निर्**—पूरा करना, **परि**—बदलना, परिवर्तन करना, **प्र**—काम में लगना, प्रवृत्त होना, **प्रति**—जाना, **वि**—लौटना, चक्राकार घूमना, **विनि**—पीछे लौटना, **विपरि**—मन में भ्रम होना, **समभि**—कूद कर जाना, उड़ जाना। अक.। सेट्। आत्मने.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | वर्तते | वर्तेते | वर्तन्ते | प्र. |
| | वर्तसे | वर्तेथे | वर्तध्वे | म. |
| | वर्ते | वर्तावहे | वर्तामहे | उ. |

---

१ उदित्वादिड्विकल्पः। इट्पक्षे कित्वाभावात् नलोपः।

२ यङन्ते सर्वत्र 'नीग्वञ्चुसुंसु–' (७-४-८४) इत्यादिना अभ्यासे नीगागमो बोध्यः।

३ उखायाः स्रंसते इति 'क्विप् च' (३-२-७६) इति क्विप्। उपधानकारलोपः। 'वसुस्रंसु–' इति पदान्तसकारस्य दकारः।

४ 'क्तिन् आस्वादिभ्यः। (वा. ३-३-९४) इति क्तिन्।

५ 'विपूर्वकादस्मात् भिदादेः' (३-३-१०४) आकृतिगणत्वात् अङि न लोपे विस्रसा—जरा' । इति प्रक्रियासर्वस्वम्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लिट् | ववृते | ववृताते | ववृतिरे | प्र. |
| | ववृतिषे | ववृताथे | ववृतिध्वे | म. |
| | ववृते | ववृतिवहे | ववृतिमहे | उ. |
| लुट् | वर्तिता | वर्तितारौ | वर्तितारः | प्र. |
| | वर्तितासे | वर्तितासाथे | वर्तिताध्वे | म. |
| | वर्तिताहे | वर्तितास्वहे | वर्तितास्महे | उ. |
| लृट् | वर्त्स्यति | वर्त्स्यतः | वर्त्स्यन्ति | प्र. |
| | वर्त्स्यसि | वर्त्स्यथः | वर्त्स्यथ | म. |
| | वर्त्स्यामि | वर्त्स्यावः | वर्त्स्यामः | उ. |

**'वृद्भ्यः स्यसनोः'** इति परस्मैपविकल्पपक्षे–

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | वर्तिष्यते | वर्तिष्येते | वर्तिष्यन्ते | प्र. |
| | वर्तिष्यसे | वर्तिष्येथे | वर्तिष्यध्वे | म. |
| | वर्तिष्ये | वर्तिष्यावहे | वर्तिष्यामहे | उ. |
| लोट् | वर्तताम् | वर्तेताम् | वर्तन्ताम् | प्र. |
| | वर्तस्व | वर्तेथाम् | वर्तध्वम् | म. |
| | वर्ते | वर्तावहै | वर्तामहै | उ. |
| लङ् | अवर्तत | अवर्तेताम् | अवर्तन्त | प्र. |
| | अवर्तथाः | अवर्तेथाम् | अवर्तध्वम् | म. |
| | अवर्ते | अवर्तावहि | अवर्तामहि | उ. |
| वि. लि. | वर्तेत | वर्तेयाताम् | वर्तेरन् | प्र. |
| | वर्तेथाः | वर्तेयाथाम् | वर्तेध्वम् | म. |
| | वर्तेय | वर्तेवहि | वर्तेमहि | उ. |
| आ. लि. | वर्तिषीष्ट | वर्तिषीयास्ताम् | वर्तिषीरन् | प्र. |
| | वर्तिषीष्टाः | वर्तिषीयास्थाम् | वर्तिषीध्वम् | म. |
| | वर्तिषीय | वर्तिषीवहि | वर्तिषीमहि | उ. |
| लुङ् | अवृतत् | अवृतताम् | अवृतन् | प्र. |
| | अवृतः | अवृततम् | अवृतत | म. |
| | अवृतम् | अवृताव | अवृताम | उ. |

पक्षे—**प्र.** अवर्तिष्ट अवर्तिषाताम् अवर्तिषत। **म.** अवर्तिष्ठाः अवर्तिषाथाम् अवर्तिढ्वम्। **उ.** अवर्तिषि अवर्तिष्वहि अवर्तिष्महि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृङ् | अवर्त्स्यत् | अवर्त्स्यताम् | अवर्त्स्यन् | प्र. |
| | अवर्त्स्यः | अवर्त्स्येतम् | अवर्त्सयेत | म. |
| | अवर्त्स्यम् | अवर्त्स्याव | अवर्त्स्याम | उ. |

पक्षे—**प्र.** अवर्तिष्यत अवर्तिष्येताम् अवर्तिष्यन्त। **म.** अवर्तिष्यथाः अवर्तिष्येथाम् अवर्तिष्यध्वम्। **उ.** अवर्तिष्ये अवर्तिष्यावहि अवर्तिष्यामहि।

**भावे**—वृत्यते ।४ वर्तिष्यते। **णिचि**—वर्तयति-ते। **सनि**—विवृत्सति-विवर्तिषते। **यङि**—वरीवृत्यते। **'रीगुपधस्य च'** इति रीगागमः। **यङ्लुकि**—वर्वृतीति-वरिवृतीति वरीवृतीति। ववर्ति इत्यादि। **कृत्सु**—वर्तितव्यम्। वर्तनीयम्। वर्त्यम्। वर्तमानः, वर्तितुम्, वर्तित्वा, वृत्त्वा[१], आवृत्य, वर्तकः, वर्तिता-त्री, वृत्यन्-न्ती, वर्तयन्-ती, वर्तिष्यन्-न्ती-ती, वत्सर्यन्, निवत्र्स्यन्[२]-न्ती-ती, वर्तयमाणः, वर्तयिष्यमाणः, वृत्यमाणः, वर्तणम्, वर्तयित्वा, वृत्तम्[३]-तः, वर्तितम्-तः, नीवृत्[४]-उपावृत्, वर्तिष्यमाणः, वर्तिष्णुः,[५] वनवर्ती,[६] व्यावर्वर्ती,[७] वृत्यम्,[८] वार्तः, समावर्तनीयः[९], आर्यावर्तः,[१०] हस्तवर्तं,[११] वर्तिः,[१२] वर्तनिः,[१३] वर्तनी, वर्तिका,[१४] वर्त्म,[१५] वृत्रः[१६]।

## (७५९) वृधु—वृद्धौ। (बढ़ना, अधिक होना)। अकर्म.। सेट्। आत्मने.।

१ 'उदितो वा' (७-२-५६) क्त्वायामिड्विकल्पः (तेन रूपंद्वयम्)।

२ 'वृद्भ्य स्यसनोः' (१-३-९२) इति स्यप्रत्यये विवक्षिते वा परस्मैपदम्। तेन रूपद्वयम्।

३ 'णेरध्ययने वृत्तम्' (७-२-२६) इति ण्यन्तस्य निष्ठायाम् अध्यनार्थ इडभावो णिलुक् च निपात्यते। तेन वृत्तो गुणो देवदत्तेन, वृतं पारायणं देवदत्तेन। अन्यत्र वर्तितमिति। वृतिरयमकर्मकः, स ण्यर्थे वर्तमानः सकर्मको भवति। 'तेन निर्वृत्तं' (४-२-६८, ५-१-७९) इति हि प्रकृतेरेव कर्मणि क्तप्रत्ययो दृश्यते। तद्- वदिहापि ण्यर्थवृत्तेरेव च वृत्तेः 'वृत्तो गुणो देवदत्तेन' इति भविष्यति, निपातनमनर्थकम्? तत्क्रियते-यदापि णिचैव ण्यर्थोऽभिधीयते, तदा-वर्तितमित्यध्ययने मा भूरिति केचित्। अपरे तु वर्तितो गुणो देवदत्तेन इत्यपि इच्छन्ति'। इति काशिकावृत्तिः (७-२-६) शुद्धे तु धातोः उदित्वादस्य क्त्वायां वेट्कत्वात् 'यस्य विभाषा' (७-२-१५) इतीट्प्रतिषेधः।

४ क्विपि संहितायां विषये 'नहिवृति—' (७-३-११६) इति पूर्वपदस्य दीर्घो भवति। नीवृत् = जनपदः, उपावृत् = उपावृत्तिः।

५ 'अलंकृञ्निराकृञ्प्रजनोत्पचोत्पनोन्मदरुच्यपत्रपवृतु—' (३-२-१३६) इति तच्छीलादिषु कर्तृषु इष्णुच् प्रत्ययः।

६ वने वर्तन्त इति, 'व्रते' (३-२-८०) इति णिनि प्रत्ययः।

७ 'कर्मव्यातीहारे णच् स्त्रियाम्' (३-३-४३) इति णच् प्रत्ययः। तदन्तात् 'णचः स्त्रियामञ्' (५-४-१४) इत्यञ्। तदन्तात् 'टिड्ढाणञ्—' (४-१-१५) इति ङीप्। 'वार्ता प्रवृत्तिवृतान्तः' इत्यमरः।

८ 'ऋदुपधात्—' (३-१-११०) इति क्यप् प्रत्ययः। वृत्तिरस्त्यस्याम् इत्यर्थे 'वृत्तेश्च' (वा. ५-२-१०१) इति ण प्रत्ययः।

९ समावृत्त्यतेऽस्मादिति समावर्तनीयः = गुरुः। बाहुलकात् अपादाने अनियर् इति प्रक्रियासर्वस्वे।

१० आर्याः वर्तन्ते यत्रेति अधिकरणे घञ् प्रत्ययः। आर्यावर्तः = पुण्यभूभिः।

११ ण्यन्तादस्मात्। 'हस्तेवर्तिग्रहोः' (३-४-३९) इति हस्तवाचिनि करणे उपपदे णवुल्। हस्तिवर्तं वर्तयन्, हस्तेन वर्तयन्। एवं करवर्तम्, इत्यादि च।

१२ 'हृपिशिरुहिवृत्ति—' (द. १-४७) इति इन् प्रत्ययः। वर्तते वृत्यते वा वर्तिः द्रव्यम्। चेलवेष्टनं दीपाङ्गं च।

१३ 'वृत्तेः' (द.उ. १-६) इति अनिप्रत्यये रूपमेवम्। वर्तन्तेऽनेनेति वर्तनिः = मार्गः। 'स्तोत्रे वर्तनिः' उच्छादित्वात् (६-१-१६०) अन्तोदात्तः' इति श्वेतवनवासी। वर्तनी इति तु ल्युडन्तात् स्त्रियां टित्वेन ङीपि बोध्यम्। वर्तनी एकपदी।

१४ 'वृतेस्तिकन्' (द.उ. ३-२८) इति तिकन् प्रत्ययः। वर्तिका = पक्षिजातिः। 'वर्तिका = व्याख्याग्रन्थविशेषः शकुनिविशेषश्च' इति श्वेतवनवासी वर्तिकैव वर्तिकम्।

१५ औणादिके (द.उ. ६-७३) मनिन् प्रत्यये रूपमेवम्। भूतेऽपि दृश्यन्ते (३-३-२) इति भूतेऽयं प्रत्ययः। वृत्तं तत् इति वर्त्म = पन्थाः, इति वृत्तं च।

१६ औणादिके (द.उ. ८-३१) इति रक् प्रत्यये रूपमेवम्। वृत्रः = दानवः, वायुश्च।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | वर्धते | वर्धेते | वर्धन्ते | प्र. |
| | वर्धसे | वर्धेथे | वर्धध्वे | म. |
| | वर्धे | वर्धावहे | वर्धामहे | उ. |
| लिट् | ववृधे | ववृधाते | ववृधिरे | प्र. |
| | ववृधिषे | ववृधाथे | ववृधिध्वे | म. |
| | ववृधे | ववृधिवहे | ववृधिमहे | उ. |
| लुट् | वर्धिता | वर्धितारौ | वर्धितारः | प्र. |
| | वर्धितासे | वर्धितासाथे | वर्धिताध्वे | म. |
| | वर्धिताहे | वर्धितास्वहे | वर्धितास्महे | उ. |
| लृट् | वर्धिष्यते | वर्धिष्येते | वर्धिष्यन्ते | इत्यादि। |

पक्षे—वत्सर्यति वत्सर्यतः वत्स्यन्ति इत्यादि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लोट् | वर्धताम् | वर्धेताम् | वर्धन्ताम् | प्र. |
| | वर्धस्व | वर्धेथाम् | वर्धध्वम् | म. |
| | वर्धै | वर्धावहै | वर्धामहै | उ. |
| लङ् | अवर्धत | अवर्धताम् | अवर्धन्त | प्र. |
| | अवर्धथाः | अवर्धथाम् | अवर्धध्वम् | म. |
| | अवर्धे | अवर्धावहि | अवर्धामहि | उ. |
| वि. लि. | वर्धेत | वर्धेयाताम् | वर्धेरन् | प्र. |
| | वर्धेथाः | वर्धेयाथाम् | वर्धेध्वम् | म. |
| | वर्धेय | वर्धेवहि | वर्धेमहि | उ. |
| आ. लि. | वर्धिषीष्ट | वर्धिषीयास्ताम् | वर्धिषीरन् | प्र. |
| | वर्धिषीष्ठाः | वर्धिषीयास्थाम् | वर्धिषीध्वम् | म. |
| | वर्धिषीय | वर्धिषीवहि | वर्धिषीमहि | उ. |
| लुङ् | अवर्धिष्ट | अवर्धिषाताम् | अवर्धिषत | प्र. |
| | अवर्धिष्ठाः | अवर्धिषाथाम् | अवर्धिड्ढ्वम्-ध्वम् | म. |
| | अवर्धिषि | अवर्धिष्वहि | अवर्धिष्महि | उ. |

पक्षे—**प्र.** अवृधत् अवृधताम् अवृधन्। **म.** अवृधः अवृधतम् अवृधत। **उ.** अवृधम् अवृधाव अवृधाम।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृङ् | अवर्धिष्यत् | अवर्धिष्येताम् | अवर्धिष्यन्त | इत्यादि |

पक्षे—**प्र.** अवत्स्यर्त् अवत्स्यर्ताम् अवत्स्यर्न्। **म.** अवत्स्यर्ः अवत्स्यर्तम् अवत्स्यर्त। **उ.** अवत्स्यर्म् अवत्स्यार्व अवत्स्यार्म।

**कृत्सु**—वर्धकः-र्धिका, वर्धिता-त्री, वर्धयिता-त्री, वर्धयन्-न्ती, वर्धन्-न्ती, वर्धिष्यन्-न्ती, वर्धयमाणः, वर्धयिष्यमाणः, वर्धित्वा, सम्वृध्य, वर्धितुम्, वर्धनम्, वर्धितव्यम्, वर्धयितव्यम्,

वर्धनः,[1] वर्धिष्णुः,[2] वृद्धः, वर्षिष्ठः, वर्षीयान्, वृद्धिः,[3] वार्धुषिकः, वर्धमानः,[4] वृधसानः[5], वर्धम्[6]।

**(७६०) शृधु—शब्दकुत्सायाम्**। (अधोवायु छोड़ना) अक.। सेट्। आत्मने.। द्युतादिः वृतादिश्च। १ शर्धते। २ शशृधे। ४ शर्धिष्यते-शर्त्स्यति। ९ अशृधत्-अशर्धिष्ट। १० अशर्धिष्यत-अशर्त्स्यत्। इत्यादि 'वर्तति' (७५८) वत्।

**(७६१) स्यन्दू—प्रस्रवणे**। (टपकना। झरना)। चूना। **अनु**—टपकना। चूना। **निस्**—निकलना। झरना। अक.। सेट्। आत्मने.।

१ स्यन्दते। २ **प्र.** सस्यन्दे सस्यन्दाते सस्यन्दिरे। **म.** सस्यन्दिषे-सस्यन्त्से सस्यन्दाथे सस्यन्दिध्वे-सस्यन्ध्वे। **उ.** सस्यन्दे सस्यन्दिवहे सस्यन्द्वहे सस्यन्दिमहे सस्यन्द्महे। ३ स्यन्दिता-स्यन्ता। ४ सन्दिष्यते-सन्स्यते स्यन्त्यति। 'वृद्भ्यः स्यसनोः' इति परस्मैपदे कृते ऊदिल्लक्षणमन्तरङ्गमपि विकल्पं वाधित्वा चतुर्ग्रहणसामर्थ्यान्नवृदभ्यः चतुर्भ्यः' इति निषेधः। ५ स्यन्दताम्। ६ अस्यन्दत। ७ स्यन्देत। ८ स्यन्दिषीष्ट स्यन्त्सीष्ट। ९ अस्यन्दिष्ट-अस्यन्दत-अस्यन्दत्। १० अस्यन्दिष्यत अस्यन्त्स्यत अस्यन्त्स्यत्।

**भावे**—स्यद्यते। **णिचि**—स्यन्दयति-ते। **सनि**—सिस्यन्दिषते- सिस्यन्त्स्यते-सिस्यन्त्सीति। **यङि**—सास्यद्यते। **यङ्लुकि**—सास्यन्दीति सास्यन्ति। **कृत्सु**—सन्दितव्यम्, स्यन्तव्यम्, स्यन्दनीयम्, स्यन्द्यम्, स्यन्नः, स्यन्दमानः, स्यन्दितुम्, स्यन्तुम्, स्यन्दित्वा-स्त्यन्त्वा, प्रस्यद्य, स्यदः, स्यन्दः, सिन्धुः, स्यन्दनः, अनुष्यन्दनः-अनुस्यन्दनः। '**अनुविपर्यभिनिभ्यः स्यन्दतेरप्राणिषु**' इति विभाषाषत्वम्। निष्यन्दः इत्यादि।

**(७६२) कृपू—सामर्थ्ये**। (शक्तिमान् होना। समर्थ होना)। अक.। सेट्। आत्मने.। (लुङि, लुटि, लृटि, लृङि च उभय.) **कृपारोलः**। कृपो यो रेफस्तस्य लः स्यात्। इति लः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | कल्पते | कल्पेते | कल्पन्ते | प्र. |
| | कल्पसे | कल्पेथे | कल्पध्वे | म. |
| | कल्पे | कल्पावहे | कल्पामहे | उ. |

१ 'नन्दिग्रहिपचादिभ्यः—' (३-१-१३४) इति नन्द्यादित्वात् संज्ञायां कर्तरि ल्युः। एवम् आनन्दवर्धनः इत्यत्रापि कर्मण्यणं बाधित्वा ल्युरेव।

२ तच्छीलादिषु कर्तृषु 'अलंकृञ्निराकृञ् जननोत्पचोपतोन्मदरुच्यपत्रपवृतुवृधु—' (३-२-१३६) इष्णुच् प्रत्ययः।

३ वृद्धिनिमित्तं द्रव्यं वृद्धिः तादर्थ्यात् ताच्छब्द्यम्। 'क्तच् क्तौ च' (३-३-७४) इति संज्ञायां क्तिच्। यद्वा क्तिन्। 'वृद्धिरादैच्' (१-१-१) इत्यत्र वृद्धिशब्दस्तु संज्ञात्वेऽपि क्तिन्नन्त एव, न क्तिजन्त इति पस्पशायां भाष्ये प्रतिपादितत्वात् स्पष्टम्।

४ 'ताच्छील्यवयोवचनशक्तिषु—' (३-३-१२९) इत्यादिना यथासम्भवमर्थत्रयेऽपि चानश् प्रत्ययः। वर्धमानः त्रिविक्रमः। 'रूढिशब्दप्रकाराः ताच्छीलिकाः' भाष्यम् (३-२-५६) इति वचनात् रूढोऽयम्।

५ वर्धते इति वृधसानः गर्भः। 'ऋञ्जिवृधि—' (द.उ. ५-३०) इत्यसानच् प्रत्ययः। प्रत्ययस्य कित्वान्न गुणः।

६ वर्धतेऽम्भसा स्पृष्टम् इति वर्धम् चर्मच्छेदः। 'वृधिवपिभ्यां रन्' (द.उ.८-४५) इति रन् प्रत्ययः।

| लिट् | चक्लृपे | चक्लृपाते | चक्लृपिरे | प्र. |
|---|---|---|---|---|
| | चक्लृप्से-पिषे | चक्लृपाथे-ढ्वे | चक्लृपिध्वे-ब्ध्वे | म. |
| | चक्लृपे | चक्लृपिवहे-प्वहे | चक्लृपिमहे-प्महे | उ. |

३ **प्र.** कल्प्ता। लुटि च क्लृपः। **लुटि स्यसनोश्च क्लृपेः** परस्मैपदं वा स्यात्। **तासि च क्लृपः**। क्लृपेः परस्य तासेः सकारादेरार्धधातुकस्य चेण्न स्यात् तङानयोरभावे। **म.** कल्प्तासि। **उ.** क्लप्तास्मि। **प्र.** कल्प्ता-कल्पिता। **म.** कल्प्तासे कल्पितासे। ऊदित्वात् आत्मनेपदे वेट्। **उ.** कल्प्ताहे-कल्पिताहे। ४ **प्र.** कल्पिष्यते-कल्पस्यते। कल्पिष्येते-कल्प्स्येते कल्पिष्यन्ते-कल्पस्यन्ते। **म.** कल्पिष्यसे कल्प्स्यसे। कल्पिष्येथे कलस्येथे कल्पिष्यध्वे कल्पस्यध्वे। **उ.** कल्पिष्ये कलप्स्ये कल्पिष्यावहे कल्पस्यावहे कल्पिष्यामहे कल्प्स्यामहे। परस्मपदे– कल्प्स्यतीत्यादि– ५ **प्र.** कल्पताम् कल्पेताम् कल्पन्ताम्। **म.** कल्पस्व कल्पेथाम् कल्पध्वम्। **उ.** कल्पे कल्पावहै कल्पामहै। ६ **प्र.** अकल्पत अकल्पेताम् अकल्पन्त। **म.** अकल्पथाः अकल्पेथाम् अकल्पेध्वम्। **उ.** अकल्पे अकल्पावहि अकल्पामहि। ७ **प्र.** कल्पेत कल्पेयाताम् कल्पेरन्। **म.** कल्पेथाः कल्पेयाथाम् कल्पेध्वम्। **उ.** कल्पेय कल्पेवहि कल्पेमहि। ८ **प्र.** कल्पिषीष्ट क्लप्सीष्ट कल्पिषीयास्ताम् क्लप्सीयास्ताम् कल्पिषीरन् क्लप्सीरन्। **म.** कल्पिषीष्ठाः क्लप्सीष्ठाः कल्पिषीयास्थाम् कल्प्सीयास्थाम् कल्पिषीध्वम् क्लप्सीध्वम्। **उ.** कल्पिषीय क्लप्सीय कल्पिषीवहि कल्प्सीवहि कल्पिषीमहि क्लप्सीमहि। ९ **प्र.** अकल्पिष्ट-अक्लप्त। अकल्पिषाताम् अक्लप्साताम् अकल्पिषत अक्लप्सत। **म.** अकल्पिष्ठाः अक्लप्सथाः अकल्पिषाथाम् अक्लप्साथाम् अकल्पिध्वम् अक्लप्ध्वम्। **उ.** अकल्पिषि अक्लप्सि। अकल्पिष्वहि अक्लप्स्वहि अकल्पिष्महि अक्लप्समहि। १० **प्र.** अकल्पिष्यत अक्लप्स्यत अकल्पिष्येताम् अक्लप्स्येताम् अकल्पिष्यन्त-अक्लप्सयन्त। **म.** अकल्पिष्यथाः-अक्लप्स्यथाः अकल्पिष्येथाम्-अक्लप्सयेथाम् अकल्पिष्यध्वम् अक्लप्स्यध्वम्। **उ.** अकल्पिष्ये अक्लप्स्ये अकल्पिष्यावहि अक्लप्स्यावहि अकल्पिष्यामहि अक्लप्स्यामहि। परस्मैपदे—अक्लप्स्यत् इत्यादि।

**भावे**—क्लृप्यते। **णिचि**—कल्पयति-ते। **सनि**—चिक्लिप्सति-चिक्लृप्स्यते चिकल्पिषते। **यङि**—चलीक्लृप्यते। **यङ्लुकि**—चल्क्लृपीति-चलिक्लृपीति चलीक्लृपीति। **कृत्सु**—कल्पितव्यम्, कल्प्तव्यम्, कल्पनीयम्, कल्प्यम्, क्लृप्तः, कल्पमानः, कल्पितुम्, कल्पनम्, कल्पित्वा, परिक्लृप्य, कल्पकः-ल्पिका, कल्पिता-त्री, कल्पयिता-त्री, कल्पयन्-न्ती, कल्पमानः, कल्पयमानः, कल्पिष्यमाणः, कल्पयिष्यमाणः, सुक्लृप् सुक्लृपौ-सुक्लृपः, क्लृप्तम्, क्लृप्तवान्, कल्पितः, कल्पः, विकल्पः, क्लृप्तिः, कल्पना, प्रकल्प्य, कृपणः।

(७६३) **घट—चेष्टायाम्**। (होना, रचना करना, चेष्टा करना)। अकर्म.। सेट्। आत्मने.। १ घटते। २ जघटे। ३ घटिता। ९ अघटिष्ट इत्यादि। 'कलति' (४९७) वत्।

**णिचि**—घटयति-ते। **सनि**—जिघटिषते। **यङि**—जाघट्यते। **यङ्लुकि**—जाघटीति-जाघट्टि। **कृत्सु**—घाटकः-टिका, घटिता-त्री, घटयिता-त्री, घटयन्-न्ती, घटमानः, घटयमानः, घटिष्यमाणः, घटयिष्यमाणः, घट्-घटौ-घटः, घटितम्-तः, घटनः, जिघटिषुः, जाघटः, घटितव्यम्, घटयित्वयम्, घटनीयम्, घाट्यम्, घट्यम्, घटितुम्, घटयितुम्, घटा, घटना, घटित्वा, घटयित्वा, विघट्य।

**(७६४) व्यथ—भयसञ्चलनयोः**। (डरना, क्षुब्ध होना, दुख भोगना)। अक.। सेट्। आत्मने.।

१ व्यथते। २ विव्यथे। **व्यथो लिटि**। व्यथोभ्यासस्य सम्प्रसारणं स्यात् लिटि। विव्यथाते। विव्यथिरे। ३ व्यथिता। ४ व्यथिष्यते। ८ व्यथिषीष्ट। ९ अव्यथिष्ट। इत्यादि 'स्वदति' (१८) वत्।

**कृत्सु**—व्यथा, विधुरः, विथुरः, व्यथनीयम्, व्यतनम्, व्याथः, व्याथकः, व्याथी, व्यथिता, व्यथितः, व्यथितुम्, व्यथितव्यम्, व्यथित्वा, संव्यथ्य, व्याथ्यम्, व्यथमानः, व्यथिष्यमानः।

**(७६५) प्रथ—प्रख्याने**। (प्रसिद्ध होना, जाहिर होना, विस्तार होना)। अक.। सेट्। आत्मने.। मित्। १ प्रथते। २ पप्रथे। इत्यादि 'त्रपति' (३७४) वत्।

**णिचि**—प्रथयति-ते। **कृत्सु**—प्रथनीयम्, प्रथनम्, प्राथः, प्रथकः[1]-थिका, प्रथकः-थिका, प्रथिता, प्रथितः, प्रथितुम्, प्रथितव्यम्, प्रथयितव्यम्, प्रथित्वा, सम्प्रथ्य, प्राथ्यम्, प्रथमानः, प्रथ्यमानः, प्रथा[2], पृथुः, पृथु, प्रथमः, पृथिवी।

**(७६६) प्रस—विस्तारे**। (विस्तार करना)। सक.। सेट्। आत्मने.। घटादिः। षित्। प्रसते। इत्यादि 'प्रथति' (७६५) वत्।

**(७६७) म्रद—मर्दने**। (मर्दन करना, कूटना, पीसना)। सक.। सेट्। आत्मने.। म्रदते। मम्रदे। 'स्वदति' (१८) वत्। मृदुः। म्रदिमा। मृद्वीका।

**(७६८) स्खद—स्खदने**। (जीतना, कतरना, स्थिर करना, दुख देना)। सक.। सेट्। आत्मने.। घटादिः। षित्। स्खदते। चस्खदे। 'प्रथति' (७६५) वत्।

**(७६९) क्षजि—गतिदानयोः**। (जाना, दान देना)। सक.। सेट्। आत्मने.। घटादिः। षित्। इदित्। १ क्षञ्जते। २ चक्षञ्जे। ३ क्षञ्जिता। ९ अक्षञ्जिष्ट।

**सनि**—चिक्षञ्जिषते। **कृत्सु**—क्षञ्जितुम्। क्षञ्जित्वा, क्षञ्जनम्, क्षञ्जितः।

**(७७०) दक्ष—गतिहिंसनयोः**। (जाना। मारना)। सक.। सेट्। आत्मने.। घटादिः। षित्। १ दक्षते। २ ददक्षे। ४ दक्षिष्यते।

१ ण्यन्ते सर्वत्र 'घटादयो मितः' (गण सूत्र भ्वादौ) इति मित् संज्ञायाम्, 'मितां ह्रस्वः' (६-४-९२) इति उपधाह्रस्वे रूपम्।

२ 'घटादयः षितः' (ग.सूत्र भ्वादौ) इति षित्वात् स्त्रियाम्, 'षिद्भिदादिभ्यः—' (३-३-१०४) इत्यङि रूपमेवम्।

**( ७७१ ) क्रप—कृपायां गतौ च।** (दया करना, जाना)। सक.। सेट्। आत्मने.। घटादिः। षित्। १ क्रपते। २ चक्रपे। 'कलति' (५९७) वत्।

**कृत्सु**—क्रापकः-पिका, क्रपकः-पिका, क्रपिता-त्री, क्रपयिता-त्री, क्रापयन्-न्ती, क्रपयिष्यन्-न्ती-ती, क्रपमाणः, क्रपिष्यमाणः, क्रपयमाणः, क्रपिष्यमाणः, क्रपयिष्यमाणः, क्रप्-क्रपौ-क्रपः, क्रपितम्, क्रपः, क्रपणः, क्रपितव्यम्, क्रपयितव्यम्, क्रपणीयम्, क्रप्यम्, क्रप्यमाणः, क्रापः, क्रपितुम्, क्रपयितुम्, कृपा, क्रपणा, क्रपणम्, क्रपयित्वा, प्रक्रप्य।

**( ७७२-७७३ ) कदि-क्रदि—वैकल्ये वैक्लव्ये।** (घबड़ाना, दुखी होना)। अक.। सेट्। आत्मने.। घटादिः। क्रन्दते। क्रन्देते। 'वन्दति' (११) वत्।

**( ७७४ ) क्लदि—वैक्लव्ये वैकल्ये इत्येके।** घबड़ाना, दुखी होना। अक.। सेट्। आत्मने.। क्लन्दते। चक्लन्दे। इत्यादि- 'वन्दति' (११) वत्।

**( ७७५ ) ञित्वरा—सम्भ्रमे।** सम्भ्रमः = आशुकारिता। (जल्दी करना, जल्दी जाना)। अक.। सेट्। आत्मने.। १ त्वरते। २ तत्वरे। ३ त्वरिता। ८ त्वरिषीष्ट। ९ अत्वरिष्ट।

**भावे**—त्वर्यते। **णिचि**—त्वरयति-ते। लुङ्—अतत्वरत्-त। **यङि**— तात्वर्यते। **यङ्लुकि**—तात्वरीति-तातूर्ति। **सनि**—तित्वरिषते। **कृत्सु**—त्वरितव्यम्। त्वरणीयम्, त्वार्यम्, त्वर्यम्, त्वारकः-रिका, त्वरकः[१]-रिका, त्वरिता-त्री, त्वरयिता-त्री, त्वरयन्[२]-न्ती, त्वरमाणः, त्वरिष्यमाणः, तूः[३]-तूरौ-तूरः, तूर्णम्,[४] (अनेन[५]), तूर्णः[६]-तूर्णवान्-त्वरितम्-तः, त्वरः, त्वरयितव्यम्, त्वर्यमाणः, त्वारः, त्वरितम्, त्वरयितुम्, त्वरा,[७] तूर्तिः, त्वरणा, त्वरणम्, त्वरित्वा, त्वरयित्वा, सन्त्वर्य, प्रत्वरय्य[८]।

---

१ 'घटादयो मितः' (ग.सू. भ्वादौ) इति वचनात् मित्त्वम्। तेन ण्यन्ते, 'मितां ह्रस्वः' (६-४-९२) इति उपधा ह्रस्वः। एवं ण्यन्ते सर्वत्र ज्ञेयम्।

२ 'अणावकर्मकात् चित्तवत्कर्तृकात्' (१-२-८८) इति ण्यन्तात् परस्मैपदम्।

३ क्विपि, 'ज्वरत्वरस्रिव्यविमवामुपधायाश्च' (६-४-२०) उपधावकारयोरूठ्। सवर्णदीर्घः, विसर्गश्च।

४ 'आदितश्च' (७-२-१६) इति सूत्रेण निष्ठायमिण्णिषेधे प्राप्ते, रुष्यमत्वरसंघुषाऽऽस्वनाम्' (७-२-२८) इति निषेधविकल्पः। तेन इड् विकल्पः। इडभावपक्षे 'ज्वरत्वर–' (६-४-२०) इति उपधावकारयोरूढि दीर्घे, 'रदाभ्यां निष्ठातो नः–' (८-२-४२) इति निष्ठानत्वे, णत्वे च तूर्णम् इत्यादिरूपम्। इट्पक्षे त्वरितम् इत्यादि भवति। एतच्च निष्ठायाः भावार्थे बोध्यम्।

५ भावकर्मार्थयोस्तु, 'विभाषा भावादिकर्मणोः' (७-२-१७) इतीण्णिणेधविकल्पः तूर्णमनेन, त्वरितमनेन इति प्रयोगो भवति।

६ 'ञीतः क्तः' (३-२-१८७) इति कर्तरि क्तप्रत्ययः। कर्त्रर्थेऽपि 'रुष्यमत्वर–' (७-२-२८) इति इण्णिषेधविकल्पः। 'अस्य (धातोः) आदित्वम्, सूत्रस्य (७-२-२८) भावादिकर्मणोरप्रवृत्तिज्ञापनार्थम्। तथा च विकल्पप्रवृत्त्या तच्चरितार्थम्। तेनान्येषां तयोर्विकल्पो न' इति वृहच्छब्देन्दुशेखरे व्याख्यातम्।

७ धातोरस्य षित्वात्। 'त्वरत्यन्ता घटादयस्त्रयोदश षितः' (सि.कौ. भ्वादि) इति वचनात्, 'षिद् भिदादिभ्योऽङ्' (३-३-१०४) इति स्त्रियां भावादावङ्। प्रयोगबाहुल्यात् क्तिनि, ऊठि तूर्तिरित्यपि भवति। प्रक्रियाकौमुद्यां तु स्त्रियां भावादौ निप्रत्यये तूर्णिः इति रूपमित्युक्तम्। 'बाहुलकात् ऊठ्' इति तद्व्याख्याने।

८ ण्यन्ताल्ल्यपि 'ल्यपि लघुपूर्वात्' (६-४-५६) इति णेरयादेशः।

**(७७६) ज्वर—रोगे।** (बुखार होना, ज्वर होना, बीमार होना)। अक.। सेट्। परस्मै.। मित्। १ ज्वरति। २ जज्वार जज्वरतुः जज्वरुः। ३ ज्वरिता। इत्यादि 'व्रजति' (२५३) वत्।

**णिचि**—ज्वरयति-ते। ९ अजिज्वरत्-त। **सनि**—जिज्वरिषति। **यङि**—जाज्वर्यते। **यङ्लुकि**—जाज्वरीति-जाज्वर्ति। **कृत्सु**—ज्वारकः[1]-रिका, ज्वरकः[2]-रिका, जिज्वरिषकः-षिका, जाज्वरकः[3]-रिका, ज्वरिता-त्री, ज्वरयिता-त्री, ज्वरन्-न्ती, संज्वरन्ती, ज्वरयन्-न्ती, ज्वरिष्यन्-न्ती-ती, ज्वरयमाणः, ज्वरयिष्यमाणः, जूः[4]-जूरौ-जूरः, ज्वरितम्-तः-तवान्, ज्वरः, सञ्ज्वारी,[5] ज्वरितव्यम्, ज्वरयितव्यम्, ज्वरणीयम्, ज्वार्यम्, ज्वर्यम्, ज्वर्यमाणः, ज्वारः, ज्वरितुम्, ज्वरयितुम्, जूर्तिः,[6] ज्वरणा, ज्वरणम्, ज्वरित्वा, ज्वरयित्वा, प्रज्वर्य, प्रज्वरय्य,[7] जूर्णिः[8]।

**(७७७) गड—सेचने।** (सींचना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.। घटादिः। गडति। 'गदति' (५२) वत्।

**(७७८) हेड—वेष्टने।** (लपेटना)। सक.। सेट्। पर.। घटादिः। हेडति। जिहेड। 'खेलति' (५३८) वत्।

**(७७९-७८०) वट-भट—परिभाषणे।** (वकना, वकवाद करना)। सकर्म.। सेट्। पर.। वटति। भटति। इत्यादि 'गदति' (५२) वत्।

**(७८१) णट—(नट) नृत्तौ।** नतौ इत्येके। गतावित्यन्ये। अक.। सेट्। पर.। १ नटति। २ **प्र.** ननाट नेटतुः नेटुः। **म.** नेटिथ नेटथुः नेट। **उ.** ननाट-ननट नेटिव नेटिम। ३ नटिता। ४ नटिष्यति। ५ नटतु। ६ अनटत्। ७ नटेत्। ८ नट्यात्। ९ **प्र.** अनाटीत् अनाटिष्टाम् अनाटिषुः। **म.** अनाटीः अनाटिष्टम् अनाटिष्ट। **उ.** अनटिषम् अनटिष्व अनाटिष्म। पक्षे—अनटीत् अनटिष्टाम् अनटिषुः। इत्यादि। १० अनटिष्यत।

**कृत्सु**—नाटकः-टिका, प्रणटकः-प्रनाटकः-टिका, नटिता-त्री, प्रणटयिता-प्रनाटयिता-त्री, नटन्-न्ती, प्रणटयन्-नटयन्, प्रनाटयन्-न्ती, नटिष्यन्-न्ती-ती, प्रणटिष्यन्, प्रनाटयिष्यन्, व्यतिनटमानः, व्यतिनटिष्यमाणः, नटितम्-तः, नटः, नटी[9], नटः-नाटः, निनटिषुः, नानटः, नटितव्यम्,

---

१ 'अत उपधायाः' (७-२-११६) इत्युपधाकारस्य वृद्धिः। एवं ण्यन्तादिषु ज्ञेयम्।

२ अस्य धातोः घटादिपाठेन मित्वात्, णौ परतः उपधावृद्धौ सत्याम् 'मितां ह्रस्वः' (६-४-९२) इति ह्रस्वो भवति। एवं ण्यन्ते सर्वत्र ज्ञेयम्।

३ यङि द्वित्वादिके कृते, अभ्यासे, 'दीर्घोऽकितः' (७-४-८३) इति दीर्घः। एवं यङन्ते सर्वत्र ज्ञेयम्।

४ 'ज्वरत्वर—' (६-४-२०) इति, उपधावकारयो र्द्वौ ऊठौ। अनन्तरं सवर्णदीर्घः। 'खरवसानयोः—' (८-३-१५) इति वसर्गः। जूः = पिशाचः।

५ 'सम्पृचानु—' (३-२-१४२) इत्यादिना तच्छीलादिषु कर्तृषु घिनुण् प्रत्ययो भवति। उपधावृद्धिः।

६ 'तितुत्र—' (७-२-९) इति इण्णिषेधः। 'ज्वरत्वर—' (६-४-२०) इत्युपधावकारयोरूठौ भवतः।

७ 'ल्यपि लघुपूर्वात्' (६-४-५६) इति णेरयादेशः।

८ 'वीज्याज्वरिभ्यो निः' (द.उ. १-१८) इति निप्रत्ययः। ज्वरति, ज्वरणं वा जूर्णिः = रोगः। अत्र धातोः सम्प्रसारणोठादयो यथासम्भवमुह्याः।

९ पचाद्यचि गौरादिपाठात् (४-१-१४) स्त्रियां ङीष्।

नटनीयम्-नाटनीयम्, नाट्यम्, नट्यम्, नट्यमानः, नाट्यमानः, नाटः, नटितुम्, नटयितुम्, नाटयितुम्, नट्टिः,[1] नटना, नाटना, नटनम्, नाटनम्, नटित्वा, नटयित्वा, नाटयित्वा, प्रणट्य, प्रणटय्य-प्रणाट्य, प्रणटय्य, प्रनाट्य।

(७८२) **ष्टक—(स्तक) प्रतिघाते**। (रोकना, हरकत करना)। सक.। सेट्। पर.। घटादिः। स्तकति। तस्तक। 'गदति' (५२) वत्।

(७८३) **चक—तृप्तौ**। (सन्तुष्ट होना)। अक.। सेट्। पर.। मित्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | चकति | चकतः | चकन्ति | प्र. |
| | चकसि | चकथः | चकथ | म. |
| | चकामि | चकावः | चकामः | उ. |
| लिट् | चचाक | चेकतुः | चेकुः | प्र. |
| | चेकिथ | चेकथुः | चेक | म. |
| | चचाक-चचक | चेकिव | चेकिम | उ. |
| लुट् | चकिता | चकितारौ | चकितारः | प्र. |
| | चकितासि | चकितास्थः | चकितास्थ | म. |
| | चकितास्मि | चकितास्वः | चकितास्मः | उ. |
| लृट् | चकिष्यति | चकिष्यतः | चकिष्यन्ति | प्र. |
| | चकिष्यसि | चकिष्यथः | चकिष्यथ | म. |
| | चकिष्यामि | चकिष्यावः | चकिष्यामः | उ. |
| लोट् | चकतु-तात् | चकताम् | चकन्तु | प्र. |
| | चक | चकतम् | चकत | म. |
| | चकानि | चकाव | चकाम | उ. |
| लङ् | अचकत् | अचकताम् | अचकन् | प्र. |
| | अचकः | अचकतम् | अचकत | म. |
| | अचकम् | अचकाव | अचकाम | उ. |
| विलि. | चकेत् | चकेताम् | चकेयुः | प्र. |
| | चकेः | चकेतम् | चकेत | म. |
| | चकेयम् | चकेव | चकेम | उ. |
| आलि. | चक्यात् | चक्यास्ताम् | चक्यासुः | प्र. |
| | चक्याः | चक्यास्तम् | चक्यास्त | म. |
| | चक्यासम् | चक्यास्व | चक्यास्म | उ. |
| लुङ् | अचाकीत् | अचाकिष्टाम् | अचाकिषुः | प्र. |
| | अचाकीः | अचाकिष्टम् | अचाकिष्ट | म. |
| | अचाकिषम् | अचाकिष्व | अचाकिष्म | उ. |
| लृङ् | अचकिष्यत् | अचकिष्यताम् | अचकिष्यन् | प्र. |
| | अचकिष्यः | अचकिष्यतम् | अचकिष्यत | म. |
| | अचकिष्यम् | अचकिष्याव | अचकिष्याम | उ. |

१ 'तितुत्र–' (७-२-९) इतीण्णिषेधे, 'ष्टुना ष्टुः' (८-४-४१) इति ष्टुत्वम्।

**णिचि**—चकयति-ते। **सनि**—चिचकिषतिय़ **यङि**—चाचक्यते। **यङ्लुकि**—चाचकीति। **कृत्सु**—चकन्-न्ती, चकिष्यन्-न्ती, चककः-किका, चकयिता-त्री, चकयमानः, चकयिष्यमाणः, चकम्, चाकम्, चकित्वा, चकयित्वा, चकोरः, चकमानः, चकितम्, चकः, चाकः, चकितव्यम्, चाकयितव्यम्, चकनीयम्, चाकनीयम्, चाक्यम्, चकितुम्, चाकयितुम्, चकनम्, चाकनम्, चकित्वा, चाकयित्वा, प्रचक्य, प्रचाक्य।

**(७८४) कखे—हसने**।(हंसना)।सक.।सेट्।पर.।एदित्।कखति।२ चकाख। ९ अकखीत्। 'चकति' (७८३) वत्।

**(७८५) रगे—शंकायाम्**। (सन्देह करना। शंका करना)। सक.। सेट्। पर.। एदित्। रगति। २ रराग। रेगतुः। रेगुः। इत्यादि 'चकति' (७८५) वत्।

**(७८६) लगे—सङ्गे**। (संयोग होना, मिलाप होना, स्पर्श होना, छूना)। सक.। सेट्। परस्मै.। मित्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | लगति | लगतः | लगन्ति | प्र. |
| | लगसि | लगथः | लगथ | म. |
| | लगामि | लगावः | लगामः | उ. |
| लिट् | ललाग | लेगतुः | लेगुः | प्र. |
| | लेगिथ | लेगथुः | लेग | म. |
| | ललाग-ललग | लेगिव | लेगिम | उ. |
| लुट् | लगिता | लगितारौ | लगितारः | प्र. |
| | लगितासि | लगितास्थः | लगितास्थ | म. |
| | लगितास्मि | लगितास्वः | लगितास्मः | उ. |
| लृट् | लगिष्यति | लगिष्यतः | लगिष्यन्ति | प्र. |
| | लगिष्यसि | लगिष्यथः | लगिष्यथ | म. |
| | लगिष्यामि | लगिष्यावः | लगिष्यामः | उ. |
| लोट् | लगतु-तात् | लगताम् | लगन्तु | प्र. |
| | लग-तात् | लगतम् | लगत | म. |
| | लगानि | लगाव | लगाम | उ. |
| लङ् | अलगत् | अलगताम् | अलगन् | प्र. |
| | अलगः | अलगतम् | अलगत | म. |
| | अलगम् | अलगाव | अलगाम | उ. |
| वि. लि. | लगेत् | लगेताम् | लगेयुः | प्र. |
| | लगेः | लगेतम् | लगेत | म. |
| | लगेयम् | लगेव | लगेम | उ. |
| आ. लि. | लग्यात् | लग्यास्ताम् | लग्यासुः | प्र. |
| | लग्याः | लग्यास्तम् | लग्यास्त | म. |
| | लग्यासम् | लग्यास्व | लग्यास्म | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुङ् | अलगीत् | अलगिष्टाम् | अलगिषुः | प्र. |
| | अलगीः | अलगिष्टम् | अलगिष्ट | म. |
| | अलगिषम् | अलगिष्व | अलगिष्म | उ. |
| लृङ् | अलगिष्यत् | अलगिष्यताम् | अलगिष्यन् | प्र. |
| | अलगिष्यः | अलगिष्यतम् | अलगिष्यत | म. |
| | अलगिष्यम् | अलगिष्याव | अलगिष्याम | उ. |

**णिचि**—लगयति। **कृत्सु**—लगितुम्। लग्नम्। '**क्षुब्धस्वान्ते**' ति सक्तार्थे अनिट्त्वनत्वे निपात्यते।

**(७८७-७८८) ह्लगे-ह्लगे—संवरणे**। (आच्छादित करना, ढकना)। सक.। सेट्। परस्मै। ह्लगति। जह्लाग। ह्लगति। जह्लाग। इत्यादि। 'गदति' (५२) वत्।

**(७८९) षगे (सगे) —संवरणे,** (ढकना)। सक.। सेट्। पर.। एदित्।

सगति। धात्वादेः षः सः। **लिट्**—ससाग सेगतुः सेगुः। ९ असगीत्। 'ह्यन्ते' ति न वृद्धिः। 'चरति' (५५९) वत्।

**(७९०) ष्ठगे (स्थगे) —संवरणे**।(ढकना)। सक.। सेट्। पर.। घटादिः,एदित्। १ स्तगति। २ तस्थाग तस्थगतुः तस्थगुः। ३ स्थगिता। 'गदति' (५२) वत्।

**(७९१) कगे—**(कग्) **नोच्यते। अस्यायमर्थ इते नोच्यत इत्यर्थः**। अनेकार्थोऽयम्, क्रियासामान्यार्थो वा। सक.। सेट्। पर.। एदित्। कगति। चकाग। ९ अकमीत्। 'गदति' (५२) वत्।

**(७९२-७९३) अक-अग—कुटिलायां गतौ**।(टेढा चलना)। अक.। सेट्। पर.। १ अकति। २ आक। ३ अकिता। ९ आकीत्। 'अर्हति' (७४०) वत्। एवं १ अगति। २ आग। ३ अगिता। ९ आगीत्। इत्यादि।

**(७९४-७९५) कण-रण—गतौ शब्दे च**। (जाना, शब्द करना)। अक.। सकर्मकश्च। सेट्। पर.। कणति। २ चकाण। रणति। २ रराण। इत्यादि। 'गदति' (५२) वत्।

**(७९६-७९८) चण-शण-श्रण—दाने गतौ च**। (दान देना, जाना)। सक.। सेट्। पर.। चणति। शणति। श्रणति। इत्यादि 'रदति' (५३) वत्।

**(७९९-८०२) श्रथ-क्नथ-क्रथ-क्लथ—हिंसार्थाः**। (मारना)। सक.। सेट्। परस्मै.। श्रथति क्नथति। क्रथति। क्लथति। 'गदति' (५२) वत्।

**(८०३) वन—सम्भक्तौ शब्दे च। वनु**—क्रिया सामान्यार्थे अनेकक्रियार्थे इत्यर्थः। (सेवा करना, भक्ति करना, शब्द करना)। सक.। सेट्। पर.। वनति। ववान ववनतुः ववनुः। इत्यादि 'गदति' (५२) वत्। वनित्वा 'वा ल्यपि' इत्यस्य व्यवस्थितविभाषात्वात् नान्तानिटां नित्यमेवानुनासिकलोपः। प्रवत्यः। वन्ति = अपानम्। वनं = काननम्।

(८०४) **ज्वल—दीप्तौ**। (प्रकाशित होना या करना, जलना या जलाना)। अक.। सेट्। परस्मै.। मित्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | ज्वलति | ज्वलतः | ज्वलन्ति | प्र. |
| | ज्वलसि | ज्वलथः | ज्वलथ | म. |
| | ज्वलामि | ज्वलावः | ज्वलामः | उ. |
| लिट् | जज्वाल | जज्वलतुः | जज्वलुः | प्र. |
| | जज्वलिथ | जज्वलथुः | जज्वल | म. |
| | जज्वाल-जज्वल | जज्वलिव | जज्वलिम | उ. |
| लुट् | ज्वलिता | ज्वलितारौ | ज्वलितारः | प्र. |
| | ज्वलितासि | ज्वलितास्थः | ज्वलितास्थ | म. |
| | ज्वलितास्मि | ज्वलितास्वः | ज्वलितास्मः | उ. |
| लृट् | ज्वलिष्यति | ज्वलिष्यतः | ज्वलिष्यन्ति | प्र. |
| | ज्वलिष्यसि | ज्वलिष्यथः | ज्वलिष्यथ | म. |
| | ज्वलिष्यामि | ज्वलिष्यावः | ज्वलिष्यामः | उ. |
| लोट् | ज्वलतु-तात् | ज्वलताम् | ज्वलन्तु | प्र. |
| | ज्वल-तात् | ज्वलतम् | ज्वलत | म. |
| | ज्वलानि | ज्वलाव | ज्वलाम | उ. |
| लङ् | अज्वलत् | अज्वलताम् | अज्वलन् | प्र. |
| | अज्वलः | अज्वलतम् | अज्वलत | म. |
| | अज्वलम् | अज्वलाव | अज्वलाम | उ. |
| वि. लि. | ज्वलेत् | ज्वलेताम् | ज्वलेयुः | प्र. |
| | ज्वलेः | ज्वलेतम् | ज्वलेत | म. |
| | ज्वलेयम् | ज्वलेव | ज्वलेम | उ. |
| आ. लि. | ज्वल्यात् | ज्वल्यास्ताम् | ज्वल्यासुः | प्र. |
| | ज्वल्याः | ज्वल्यास्तम् | ज्वल्यास्त | म. |
| | ज्वल्यासम् | ज्वल्यास्व | ज्वल्यास्म | उ. |
| लुङ् | अज्वालीत् | अज्वालिष्टाम् | अज्वालिषुः | प्र. |
| | अज्वालीः | अज्वालिष्टम् | अज्वालिष्ट | म. |
| | अज्वालिषम् | अज्वालिष्व | अज्वालिष्म | उ. |
| लृङ् | अज्वलिष्यत् | अज्वलिष्यताम् | अज्वलिष्यन् इत्यादि। | |

**कर्मणि**—ज्वल्यते। **णिचि**—ज्वलयति-ते। ज्वालयति-ते। **सनि**—जिज्वालिषति। **यङि**—जाज्वल्यते। **यङ्लुकि**—जाज्वलीति-जाज्वल्ति। **कृत्सु**—ज्वालकः-लिका,

ज्वलक:[१]-ज्वालक:, प्रज्वलक:[२]-लिका, ज्वलिता-त्री, ज्वलयिता-त्री, ज्वालयिता-प्रज्वलयिता-त्री, ज्वलन्-न्ती, ज्वलयन्-ज्वालयन्-प्रज्वलयन्-न्ती, ज्वलिष्यन्-न्ती-ती, ज्वलयिष्यन्-ज्वालयिष्यन्, प्रज्वलयिष्यन्-न्ती-ती, ज्वलयमान:, ज्वालयमान:, प्रज्वल्यमान:, जाज्वल्यमान:, ज्वलयिष्यमाण:, ज्वालयिष्यमाण:-प्रज्वलयिष्यमाण:-जाज्वलिष्यमाण:, ज्वल्[३]-ज्वलौ-ज्वल:, ज्वलितम्-त:, ज्वलित:-ज्वालित:-प्रज्वलित:, ज्वाल:,[४] ज्वाला, ज्वल:, ज्वलन:[५], प्रज्वाली[६], ज्वलितव्यम्, ज्वलयितव्यम्, ज्वालयितव्यम्, प्रज्वलयितव्यम्, ज्वलनीयम्, ज्वालनीयम्, ज्वाल्यम्, ज्वल्यम्, प्रज्वल्यम्, जाज्वल्यम्, ज्वल्यमान:, ज्वाल्यमान:, प्रज्वल्यमान:, जाज्वल्यमान:, ज्वलितुम्, ज्वलयितुम्, ज्वालयितुम्-प्रज्वलयितुम्, जाज्वलितुम्, ज्वलिति:[७], ज्वलना-ज्वालना, प्रज्वालना, जिज्वलिषा-जाज्वला, ज्वलनम्, ज्वालनम्, प्रज्वलनम्, ज्वलित्वा, ज्वलयित्वा, ज्वालयित्वा, प्रज्वल्य, संज्वलय्य[८] प्रज्वल्य्य।

**(८०५-८०६) ह्वल-ह्मल—चलने** (चलना)। अक.। सेट्। पर.। ह्वलति। ह्मलति। जह्वाल। जह्माल। 'गदति' (५२) वत्।

**(८०७) स्मृ—आध्याने**। (स्मरण करना। याद करना)। **वि**—भूलना, विस्मृत होना। सक.। अनि.। पर.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | स्मरति | स्मरत: | स्मरन्ति | प्र. |
| | स्मरसि | स्मरथ: | स्मरथ | म. |
| | स्मरामि | स्मराव: | स्मराम: | उ. |
| लिट् | सस्मार | सस्मरतु: | सस्मरु: | प्र. |
| | सस्मर्थ | सस्मथु: | सस्मर | म. |
| | सस्मार-सस्मर | सस्मरिव | सस्मरिम | उ. |
| लुट् | स्मर्ता | स्मर्तारौ | स्मर्तार: | प्र. |
| | स्मर्तासि | स्मत्तास्थ: | स्मर्तास्थ | म. |
| | स्मर्तास्मि | स्मर्तास्व: | स्मर्तास्म: | उ. |

१ 'ज्वलह्वलह्मलनमामनुपसर्गाद्वा' (गणसूत्रं घटादौ) इति अनुपसृष्टे मितसंज्ञा विकल्पिता। मित्वपक्षे, 'मितां ह्रस्व:' (६-४-९२) इति ह्रस्व:। मित्वाभावपक्षे उपधावृद्धि:। एवम् अनुपसृष्टे ण्यन्ते सर्वत्र रूपद्वयम्।

२ उपसर्गसमभिव्याहारे तु घटादिषु पाठान्नित्यं मित्संज्ञा। तदानीं प्रज्वलक:, सञ्ज्वलक: इत्यादीनि रूपाणि ण्यन्ताद्भवन्ति। एवं सोपसर्गाण्यन्ते सर्वत्र मित्कार्यं ज्ञेयम्।

३ 'न पादान्ता: परे ण:' इति पक्षो भाष्यसम्मत:। अतोऽत्र पदान्ते लकारश्रवणं न दोषाय।

४ 'ज्वलितिकसन्तेभ्यो ण:' (३-१-१४०) इति कर्तरि वा णप्रत्ययो भवति। स्त्रियाम् 'अजाद्यतष्टाप्' (४-१-४) इति टाप् णप्रत्ययाभावपक्षे तु पचाद्यचि (३-१-१३४) 'ज्वल:' इत्यपि भवति।

५ 'जुचङ्क्रम्यदन्द्रम्यसृगृधिज्वलशुचलषपतपद:' (३-२-१५०) इति ताच्छीलिको युच्। अनादेश:। ज्वलन: = अग्नि:।

६ 'सुप्यजातौ–' (३-२-७८) इति ताच्छील्ये णिनि:।

७ 'तितुत्रेष्वग्रहादीनामिति वक्तव्यम्' (वा. ७-२-९) इति पर्युदासात् भणिति: इत्यत्रेव इडागमो भवति।

८ 'ल्यपि लघुपूर्वात्' (६-४-५६) इति णेरयादेश:।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृट् | स्मरिष्यति | स्मरिष्यतः | स्मरिष्यन्ति | प्र. |
| | स्मरिष्यसि | स्मरिष्यथः | स्मरिष्यथ | म. |
| | स्मरिष्यामि | स्मरिष्यावः | स्मिरष्यामः | उ. |
| लोट् | स्मरतु-तात् | स्मरताम् | स्मरन्तु | प्र. |
| | स्मर | स्मरतम् | स्मरत | म. |
| | स्मराणि | स्मराव | स्मराम | उ. |
| लङ् | अस्मरत् | अस्मरताम् | अस्मरन् | प्र. |
| | अस्मरः | अस्मरतम् | अस्मरत | म. |
| | अस्मरम् | अस्मराव | अस्मराम | उ. |
| वि. लि. | स्मरेत् | स्मरेताम् | स्मरेयुः | प्र. |
| | स्मरेः | स्मरेतम् | स्मरेत | म. |
| | स्मरेयम् | स्मरेव | स्मरेम | उ. |
| आ. लि. | स्मर्यात् | स्मर्यास्ताम् | स्मर्यासुः | प्र. |
| | स्मर्याः | स्मर्यास्तम् | स्मर्यास्त | म. |
| | स्मर्यासम् | स्मर्यास्व | स्मर्यास्म | उ. |
| लुङ् | अस्मार्षीत् | अस्मार्ष्टाम् | अस्मार्षुः | प्र. |
| | अस्मार्षीः | अस्मार्ष्टम् | अस्मार्ष्ट | म. |
| | अस्मार्षम् | अस्मार्ष्व | अस्मार्ष्म | उ. |
| लृङ् | अस्मरिष्यत् | अस्मरिष्यताम् | अस्मरिष्यन् | प्र. |
| | अस्मरिष्यः | अस्मिरष्यतम् | अस्मरिष्यत | म. |
| | अस्मरिष्यम् | अस्मरिष्याव | अस्मरिष्याम | उ. |

**कर्मणि**—स्मर्यते। **णिचि**—स्मरयति-ते। आध्यानार्थकत्वे घटादित्वान्मित्वम्। मित्वादह्रस्वः। स्मारयति-ते। चिन्तार्थकत्वे वृद्धिः। **सनि**—सूस्मूर्षते। 'ज्ञाश्रुस्मृदृशां सनः' इति सनि आत्मनेपदम्। **यङि**—सास्मर्यते। **'यङि च'** इति गुणः। **यङ्लुकि**—सर्स्मरीति-सरिस्मरीति सरीस्मर्ति इत्यादि। **कृत्सु**—स्मर्तव्यः, स्मरणीयः, स्मार्यः, स्मृतः, स्मृतिः, स्मरन्, स्मर्ता, स्मर्तुम्, स्मरणम्, स्मरः, स्मर्ता, स्मर्तुम्, स्मरः, स्मारकः, विस्मृत्य।

**(८०८) दॄ—भये।** (डरना, भय करना)। अकर्म.। सेट्। पर.। दरति। **णिचि**—दारयति-ते। **सनि**—दिदीर्षति। **यङि**—दादीर्यते। **यङ्लुकि**—दादरीति- दादर्ति।

**(८०९) नॄ—नये।** (ले जाना)। अकर्म.। सेट्। पर.। नरति। णिचि—नारयति-ते। इत्यादि।

**(८१०) श्रा—पाके** (पकाना)। सकर्म.। अनिट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | श्राति | श्रातः | श्रान्ति | प्र. |
| | श्रासि | श्राथः | श्राथ | म. |
| | श्रामि | श्रावः | श्रामः | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लिट् | शश्रौ | शश्रतुः | शश्रुः | प्र. |
| | शश्रिथ-शश्राथ | शश्रथुः | शश्र | म. |
| | शश्रौ | शश्रिव | शश्रिम | उ. |
| लुट् | श्राता | श्रातारौ | श्रातारः | प्र. |
| | श्रातासि | श्रातास्थः | श्रातास्थ | म. |
| | श्रातास्मि | श्रातास्वः | श्रातास्मः | उ. |
| लृट् | श्रास्यति | श्रास्यतः | श्रास्यन्ति | प्र. |
| | श्रास्यसि | श्रास्यथः | श्रास्यथ | म. |
| | श्रास्यामि | श्रास्यावः | श्रास्यामः | उ. |
| लोट् | श्रातु-श्रातात् | श्राताम् | श्रान्तु | प्र. |
| | श्राहि: | श्रातम् | श्रात | म. |
| | श्राणि | श्राव | श्राम | उ. |
| लङ् | अश्रात् | अश्राताम् | अश्रुः-अश्रान् | प्र. |
| | अश्राः | अश्रातम् | अश्रात | म. |
| | अश्राम् | अश्राव | अश्राम | उ. |
| वि. लि. | श्रायात् | श्रायाताम् | श्रायुः | प्र. |
| | श्रायाः | श्रायातम् | श्रायात | म. |
| | श्रायाम् | श्रायाव | श्रायाम | उ. |
| आ. लि. | श्रायात् | श्रायास्ताम् | श्रायासुः | प्र. |
| | श्रायाः | श्रायास्तम् | श्रायास्त | म. |
| | श्रायासम् | श्रायास्व | श्रायास्म | उ. |

एत्वे—**प्र.** श्रेयात् श्रेयास्ताम् श्रेयासुः। **म.** श्रेयाः श्रेयास्तम् श्रेयास्त। **उ.** श्रेयासम् श्रेयास्व श्रेयास्म।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुङ् | अश्रासीत् | अश्रासिष्टाम् | अश्रासिषुः | प्र. |
| | अश्रासीः | अश्रासिष्टम् | अश्रासिष्ट | म. |
| | अश्रासिषम् | अश्रासिष्व | अश्रासिष्म | उ. |
| लृङ् | अश्रास्यत् | अश्रास्यताम् | अश्रास्यन् | इत्यादि। |

**(८११) ज्ञा—मारणतोरणनिशामनेषु**। अदादौ क्र्यादौ चावलोकनयीम्।

**(८१२) चल—कम्पने**। (कांपना, हिलना)। अक.। सेट्। पर.। मित्। चलति। चचाल। चेलतुः। **अत एक हल्मध्ये**—इति एत्वाभ्यासलोपौ। चेलुः। इत्यादि– 'चरति' (५५८) वत्।

**णिचि**—चलयति। चालयति। **सनि**—चिचलिषति। **यङि**—चाचल्यते। **यङ्लुकि**—चाचलीति-चाचल्ति। **कृत्सु**—चलितव्यम्। चलनीयम्। चलितः। चाल्यम्। चलितुम्। चलित्वा। सञ्चल्य। चलः। चालः। चलाचलः। चलनः।

**(८१३) छदिर्—ऊर्जने।** (वलवान् होना या करना)। अक.। सेट्। परस्मै.। घटादिः। इरित्। छदति। **णिचि**—छदयति-छदयते। **सनि**—चिछदिषति। **यङि**—चाछ्द्यते। **यङ्लुकि**—चाछदीति-चाछत्ति।

**(८१४) लड—विलासे।** (क्रीडा करना। मौज करना)। अक.। सेट्। पर.। लडति 'रदति' (५३) वत्। जिह्वोन्मथने लडि मित्। लाडयति जिह्वया।

**(८१५) मदी—हर्षग्लेपनयोः।** (हर्षित होना। थकना। श्रान्त होना)। अक.। सेट्। पर.। मदति। 'रदति' वत्।

**(८१६) ध्वन—शब्दे।** (शब्द करना, आवाज करना)। अक.। सेट्। पर.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | ध्वनति | ध्वनतः | ध्वनन्ति | प्र. |
| | ध्वनसि | ध्वनथः | ध्वनथ | म. |
| | ध्वनामि | ध्वनावः | ध्वनामः | उ. |
| लिट् | दध्वान | दध्वनतुः | दध्वनुः | प्र. |
| | दध्वनिथ | दध्वनथुः | दध्वन | म. |
| | दध्वान-दध्वन | दध्वनिव | दध्वनिम | उ. |
| लुट् | ध्वनिता | ध्वनितारौ | ध्वनितारः | प्र. |
| | ध्वनितासि | ध्वनितास्थः | ध्वनितास्थ | म. |
| | ध्वनितास्मि | ध्वनितास्वः | ध्वनितास्मः | उ. |
| लृट् | ध्वनिष्यति | ध्वनिष्यतः | ध्वनिष्यन्ति | प्र. |
| | ध्वनिष्यसि | ध्वनिष्यथः | ध्वनिष्यथ | म. |
| | ध्वनिष्यामि | ध्वनिष्यावः | ध्वनिष्यामः | उ. |
| लोट् | ध्वनतु-ध्वनतात् | ध्वनताम् | ध्वनन्तु | प्र. |
| | ध्वन-ध्वनतात् | ध्वनतम् | ध्वनत | म. |
| | ध्वनानि | ध्वनाव | ध्वनाम | उ. |
| लङ् | अध्वनत् | अध्वनताम् | अध्वनन् | प्र. |
| | अध्वनः | अध्वनतम् | अध्वनत | म. |
| | अध्वनम् | अध्वनाव | अध्वनाम | उ. |
| वि. लि. | ध्वनेत् | ध्वनेताम् | ध्वनेयुः | प्र. |
| | ध्वनेः | ध्वनेतम् | ध्वनेत | म. |
| | ध्वनेयम् | ध्वनेव | ध्वनेम | उ. |
| आ. लि. | ध्वन्यात् | ध्वन्यास्ताम् | ध्वन्यासुः | प्र. |
| | ध्वन्याः | ध्वन्यास्तम् | ध्वन्यास्त | म. |
| | ध्वन्यासम् | ध्वन्यास्व | ध्वन्यास्म | उ. |
| लुङ् | अध्वानीत् | अध्वानिष्टाम् | अध्वानिषुः | प्र. |
| | अध्वानीः | अध्वानिष्टम् | अध्वामिष्ट | म. |
| | अध्वानिषम् | अध्वानिष्व | अध्वानिष्म | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुङ् | अध्वनीत् | अध्वनिष्टाम् | अध्वनिषुः | प्र. |
| | अध्वनीः | अध्वनिष्टम् | अध्वनिष्ट | म. |
| | अध्वनिषम् | अध्वनिष्व | अध्वनिष्म | उ. |
| लृङ् | अध्वनिष्यत् | अध्वनिष्यताम् | अध्वनिष्यन् | प्र. |
| | अध्वनिष्यः | अध्वनिष्यतम् | अध्वनिष्यत | म. |
| | अध्वनिष्यम् | अध्वनिष्याव | अध्यनिष्याम | उ. |

**णिचि**—ध्वनयति ध्वानयति। **भावे**—ध्वन्यते। **कृत्सु**—ध्वानकः-निका, ध्वनकः[१]-निका, ध्वनिता-त्री, ध्वनयिता-ध्वानयिता-त्री, ध्वनन्-न्ती, ध्वनयन्, ध्वानयन्-न्ती, ध्वनिष्यन्-न्ती-ती, ध्वनयिष्यन्, ध्वानयिष्यन्-न्ती-ती, व्यतिध्वनमानः,[२] ध्वनयमानः,[३] ध्वानयमानः, व्यतिध्वनिष्यमाणः, ध्वानयिष्यमाणः, सुध्वान्[४]-सुध्वानौ-सुध्वानः, ध्वनितम्-तः-तवान्, ध्वान्तः,[५] ध्वनितः-ध्वानितः, ध्वनः, ध्वननः[६], ध्वनः-ध्वानः, ध्वनितव्यम्, ध्वनयितव्यम्, ध्वानयितव्यम्, ध्वननीयम्, ध्वाननीयम्, ध्वान्यम्, ध्वन्यम्-ध्वान्यम्, ईषदध्वनः-दुर्ध्वनः-सुध्वनः, ध्वन्यमानः, ध्वान्यमानः, ध्वनितुम्, ध्वनयितुम्-ध्वानयितुम्, ध्वान्तिः[७], ध्वनना-ध्वानना, ध्वनम्, ध्वानम्, ध्वनित्वा, ध्वनयित्वा-ध्वानयित्वा, प्रध्वन्य, प्रध्वनय्य[८]-प्रध्वान्य, ध्वनिः[९]।

**(८१७) स्वन—अवतंसने।** (सजाना, सुशोभित करना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | स्वनति | स्वनतः | स्वनन्ति | प्र. |
| | स्वनसि | स्वनथः | स्वनथ | म. |
| | स्वनामि | स्वनावः | स्वनामः | उ. |
| लिट् | सस्वान | सस्वनतुः | सस्वनुः | प्र. |
| | सस्वनिथ | सस्वनथुः | सस्वन | म. |
| | सस्वान-सस्वन | सस्वनिव | सस्वनिम | उ. |

पक्षे—**प्र.** सस्वान स्वेनतुः स्वेनुः। **म.** स्वेनिथ स्वेनथुः स्वेन। **उ.** सस्वान-सस्वन स्वेनिव स्वेनिम।

---

१ शब्दार्थकस्य धातोः घटादिषु पाठान्मित्त्वेन णौ, 'मितां ह्रस्वः' (६-४-९२) इति ह्रस्वः। व्यक्तध्वनिः, अव्यक्तध्वनिः, इति द्विविधः शब्दः। व्यक्तध्वनिविषये घटादिरयम्। 'ध्वनयति घण्टाम्' स्पष्टं वादयतीत्यर्थः। 'ध्वानयति देवदत्तः' अस्पष्टाक्षरमुच्चारयतीत्यर्थः।

२ 'कर्तरि कर्मव्यतीहारे' (१-३-१४) इति शानच्।

३ 'अणावकर्मकात् चित्तवत् कर्तृकात्' (१-३-३८) इति ण्यन्तात् परस्मैपदमेव। यदा तु अचित्तवत् कर्तृकत्वविवक्षा, तदानीं निर्दिष्टप्रकारेण शानजपि भवतीति विशेषः।

४ क्विपि, 'अनुनासिकस्य क्विझलोः क्ङिति' (६-४-१५) इति दीर्घः।

५ 'क्षुब्धस्वान्तध्वान्तलग्नम्लिष्टविरिब्धफाण्टबाढानि मन्थमनस्तमः सक्ताविस्पष्टस्वरानायासमृशेषु' (७-२-१८) इत्यनेन तमसि वाच्ये ध्वान्तम् इति भवति। 'ध्वनितो मृदङ्गः' इत्यत्र तु न, तमोऽकर्मकत्वाभावात्।

६ चलनशब्दार्थादकर्मकाद् युच् (३-२-१४८) इति तच्छीलादिषु कर्तृषु युच्प्रत्ययः।

७ क्तिनि, 'तितुत्रतथ–' (७-२-९) इत्यादिना इण्निषधे, दीर्घे च रूपम्।

८ मित्त्वपक्षे ण्यन्ताल्ल्यपि ह्रस्वे, 'ल्यपि लघुपूर्वात्' (६-४-५६) इति णेरयादेशः।

९ खनिकष्यज्यसिवसिवनिसनिध्वनिग्रन्थिचलिभ्यश्च' (द.उ. १-६८) इत्यादिना इप्रत्यये रूपम्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुट् | स्वनिता | स्वनितारौ | स्वनितारः | प्र. |
| | स्वनितासि | स्वमितास्थः | स्वनितास्थ | म. |
| | स्वनितास्मि | स्वनितास्वः | स्नितास्मः | उ. |
| लृट् | स्वनिष्यति | स्वनिष्यतः | स्वनिष्यन्ति | प्र. |
| | स्वनिष्यसि | स्वनिष्यथः | स्वनिष्यथ | म. |
| | स्वनिष्यामि | स्वनिष्यावः | स्वनिष्यामः | उ. |
| लोट् | स्वनतु-तात् | स्वनताम् | स्वनन्तु | प्र. |
| | स्वन-तात् | स्नतम् | स्वनत | म. |
| | स्वनानि | स्वनाव | स्वनाम | उ. |
| लङ् | अस्वनत् | अस्वनताम् | अस्वनन् | प्र. |
| | अस्वनः | अस्वनतम् | अस्वनत | म. |
| | अस्वनम् | अस्वनाव | अस्वनाम | उ. |
| वि. लि. | स्वनेत् | स्वनेताम् | स्वनेयुः | प्र. |
| | स्वनेः | स्वनेतम् | स्वनेत | म. |
| | स्वनेयम् | स्वनेव | स्वनेम | उ. |
| आ. लि. | स्वन्यात् | स्वन्यास्ताम् | स्वन्यासुः | प्र. |
| | स्वन्याः | स्वन्यास्तम् | स्वन्यास्त | म. |
| | स्वन्यासम् | स्वन्यास्व | स्वन्यास्म | उ. |
| लुङ् | अस्वानीत् | अस्वानीष्टाम् | अस्वानिषुः | प्र. |
| | अस्वानीः | अस्वानिष्टम् | अस्वानिष्ट | म. |
| | अस्वानिषम् | अस्वानिष्व | अस्वानिष्म | उ. |

पक्षे—अस्वनीत् अस्वनिष्टाम् इत्यादि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृङ् | अस्वनिष्यत् | अस्वनिष्यताम् | अस्वनिष्यन् | प्र. |
| | अस्वनिष्यः | अस्वनिष्यतम् | अस्वनिष्यत | म. |
| | अस्वनिष्यम् | अस्वनिष्याव | अस्वनिष्याम | उ. |

**कृत्सु**—सर्वाणि रूपाणि 'ध्वनति' (८१६) वत्।

**(८१८) शमो—दर्शने**। (देखना)। सक.। सेट्। परस्मै.। शमति। 'रदति' (५३) वत्।

**(८१९) यमो—अपरिवेषणे**।अपरिवेषणम् = अभोजनम्। सक.। सेट्। परस्मै.। यमति। 'रदति' (५३) वत्।

**(८२०) स्खदिर्—विद्रावणे**। विदारण इत्येके। सक.। सेट्। आत्म.। स्खदते। चस्खदे अस्खदत। स्खदयति-ते। **अव-परिभ्यां च**। भिन्न। अवस्खादयति-ते। स्खादनम्।

**(८२१) फण—गतौ**। (जाना, तेजोहीन करना)। सक.। सेट्। पर.। फणादिः घटादिश्च।

१ फणति। २ पफाण फेणतुः फेणुः। ३ फणिता। ४ फणिष्यति। ५ फणतु। ६ अफणत्। ७ फणेत्। ८ फण्यात्। ९ अफाणीत्। १० अफणिष्यत्।

**कृत्सु**—फाणकः-णिका, **णिचि**—फणक[1]:-फाणकः-णिका, फणिता-त्री, फणितुम्, फणयितुम्, फाण्टः[2], फणितिः[3], फेणिवान्, पेफणिवान्, फणितः। अन्यत् सर्वं 'कणति' धातुवत् बोध्यम्।

**(८२२) राजृ—दीप्तौ।** (चमकना, सुशोभित होना)। **निर् (नी)** —आरती करना, **वि**—शोभित होना, प्रकाशित होना। अकर्म.। सेट्। उभय.। फणादिः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | राजति | राजतः | राजन्ति | प्र. |
| | राजसि | राजथः | राजथ | म. |
| | राजामि | राजावः | राजामः | उ. |
| लिट् | रराज | रेजतुः-रराजतुः | रेजुः-रराजुः | प्र. |
| | रराजिथ-रेजिथ | रेजथुः-रराजथुः | रराज:-रेज | म. |
| | रराज | रराजिव-रेजिव | रराजिम-रेजिम | उ. |
| लुट् | राजिता | राजितारौ | राजितारः | प्र. |
| | राजितासि | राजितास्थः | राजितास्थ | म. |
| | राजितास्मि | राजितास्वः | राजितास्मः | उ. |
| लृट् | राजिष्यति | राजिष्यतः | राजिष्यन्ति | प्र. |
| | राजिष्यसि | राजिष्यथः | राजिष्यथ | म. |
| | राजिष्यामि | राजिष्यावः | राजिष्यामः | उ. |
| लोट् | राजतु-तात् | राजताम् | राजन्तु | प्र. |
| | राज-तात् | राजतम् | राजत | म. |
| | राजनि | राजाव | राजाम | उ. |
| लङ् | अराजत् | अराजताम् | अराजन् | प्र. |
| | अराजः | अराजतम् | अराजत | म. |
| | अराजम् | अराजाव | अराजाम | उ. |
| वि. लि. | राजेत् | राजेताम् | राजेयुः | प्र. |
| | राजेः | राजेतम् | राजेत | म. |
| | राजेयम् | राजेव | राजेम | उ. |

१ घटादित्वेन मित्वात् णौ, 'मितां ह्रस्वः' (६-४-९२) उपधाह्रस्वे रूपमेवम्।

२ क्षुब्धस्वान्तध्वान्तलग्नम्लिष्टविरिब्धफाण्टबाढानि मन्थमनस्तम– (७-२-१८) इत्यनेनास्य धातोर्निष्ठायाम्, अनायाससाध्यकषायविशेषश्चेत् प्रकृतिप्रत्ययसमुदायेनोच्यते तदानीमिडभावो निपात्यते। 'अनुनासिकस्य क्विझलोः क्ङिति (६-४-१५) इति दीर्घः। पश्चात् 'ष्टुना ष्टुः' (८-४-४१) इति ष्टुत्वेन निष्ठातकारस्य टकारः। अन्यत्र फणितमित्येव। 'उष्णाम्बुन्यौषधं क्षुण्णं क्षिप्त्वा सद्योऽमिपुत्य च। पीयते य कषायोऽसौ फाण्टोऽनायाससाधितः। इति प्र. सर्वस्वे।

३ क्तिनि, 'तितुत्रेष्वग्रहादीनाम्–' (वा. ७-२-९) इति वचनात् इडिति ज्ञेयम्। धातूनामनेकार्थकत्वाद् अत्र शब्दार्थकत्वमित्यपि ज्ञेयम्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आ. लि. | राज्यात् | राज्यास्ताम् | राज्यासुः | प्र. |
| | राज्याः | राज्यस्तम् | राज्यास्त | म. |
| | राज्यासम् | राज्यास्व | राज्यास्म | उ. |
| लुङ् | अराजीत् | अराजिष्टाम् | अराजिषुः | प्र. |
| | अराजीः | अराजिष्टम् | अराजिष्ट | म. |
| | अराजिषम् | अराजिष्व | अराजिष्म | उ. |
| लृङ् | अराजिष्यत् | अराजिष्यताम् | अराजिष्यन् | प्र. |
| | अराजिष्यः | अराजिष्यतम् | अराजिष्यत | म. |
| | अराजिष्यम् | अराजिष्याव | अराजिष्याम | उ. |

आत्मनेपदे

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | राजते | राजेते | राजन्ते | प्र. |
| | राजसे | राजेथे | राजध्वे | म. |
| | राजे | राजावहे | राजामहे | उ. |
| लिट् | रेजे | रेजाते | रेजिरे | प्र. |
| | रेजिषे | रेजाथे | रेजिध्वे | म. |
| | रेजे | रेजिवहे | रेजिमहे | उ. |

पक्षे—**प्र.** रराजे रराजाते रराजिरे। **म.** रराजिषे रराजाथे रराजिध्वे। **उ.** रराजे रराजिवहे रराजिमहे।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुट् | राजिता | राजितारौ | राजितारः | प्र. |
| | राजितासे | राजितासाथे | राजिताध्वे | म. |
| | राजिताहे | राजितास्वहे | राजितास्महे | उ. |
| लृट् | राजिष्यते | राजिष्येते | राजिष्यन्ते | प्र. |
| | राजिष्यसे | राजिष्येथे | राजिष्यध्वे | म. |
| | राजिष्ये | राजिष्यावहे | राजिष्यामहे | उ. |
| लोट् | राजताम् | राजेताम् | राजन्ताम् | प्र. |
| | राजस्व | राजेथाम् | राजध्वम् | म. |
| | राजै | राजवहै | राजामहै | उ. |
| लङ् | अराजत | अराजेताम् | अराजन्त | प्र. |
| | अराजथाः | अराजेथाम् | अराजध्वम् | म. |
| | अराजे | अराजावहि | अराजामहि | उ. |
| वि. लि. | राजेत | राजेयाताम् | राजेरन् | प्र. |
| | राजेथाः | राजेयाथाम् | राजेध्वम् | म. |
| | राजेय | राजेवहि | राजेमहि | उ. |
| आ. लि. | राजिषीष्ट | राजिषीयास्ताम् | राजिषीरन् | प्र. |
| | राजिषीष्ठाः | राजिषीयास्थाम् | राजिषीध्वम् | म. |
| | राजिषीय | राजिषीवहि | राजिषीमहि | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुङ् | अराजिष्ट | अराजिषाताम् | अराजिषत | म. |
| | अराजषिष्ठाः | अराजिषाथाम् | अराजिड्ढ्वम्-ध्वम् | म. |
| | आराजिषि | अराजिष्वहि | अराजिष्महि | उ. |
| लृङ् | अराजिष्यत | अराजिष्येताम् | अराजिष्यन्त | इत्यादि। |

**भावे**—राज्यते। **णिचि**—राजयति-ते। **सनि**—रिराजिषति-ते। **यङि**—राराज्यते। **यङ्लुकि**—राराजीति-राराष्टि। **कृत्सु**—राजकः-जिका, राजिता-त्री, राजयिता-त्री, राजयन्-न्ती, राजयिष्यन्-न्ती-ती, राजमानः, राजयमानः, राजयिष्यमाणः, राजितुम्-तः-राजः, राजितव्यम्, राजयितव्यम्, राजनीयम्, राज्यमानः, राजितुम्, राजित्वा, राजयित्वा, प्रराज्य, रराजिवान्[१], रेजिवान्, सम्राट्,[२] विश्वाराट्[३]-राड्, चेदिराष्ट्र, राष्टिः,[४] राजिः[५], राजानकः,[६] राजा,[७] राष्ट्रम्[८]-राष्ट्री। नीराजनीयम्, नीराजनम्, आधेको राजा = अधिराजः, दन्तानां राजा = राजदन्तः, शोभनो राजा सुराजा, कुत्सितो राजा किंराजा, राजते इति राट्, राज्ञां समूहो राजकम्।

**(८२३) टुभ्राजृ—(भ्राज्) दीप्तौ।** (चमकना, सुशोभित होना)। अकर्म.। सेट्। आत्मने.। फणादि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | भ्राजते | भ्राजेते | भ्राजन्ते | प्र. |
| | भ्राजसे | भ्राजेथे | भ्राजध्वे | म. |
| | भ्राजे | भ्राजावहे | भ्राजावहे | उ. |
| लिट् | बभ्राजे | बभ्राजाते | बभ्राजिरे | प्र. |
| | बभ्राजिषे | बभ्राजाथे | बभ्राजिध्वे | म. |
| | बभ्राजे | बभ्राजिवहे | बभ्राजिमहे | उ. |

१ कर्तरि लिटः क्वसौ 'फणां च सप्तानाम्' (६-४-१२५) इत्येत्वाभ्यासलोपविकल्पः। 'वस्वेकाजाद्घसाम्' (७-२-६७) इतीडागमः।

२ सत्सूद्विषद्रुहयुजविदभिदच्छिदजिनीराजामुपसर्गेऽपि क्विप्' (३-२-६१) इति 'सम्' इत्युपसर्गपूर्वकादस्मात् क्विप्। 'मोऽनुस्वारः' (८-३-२३) इत्यपवादतया, 'मो राजि समः क्वौ' (८-२-२५) इति प्रतिपदविहितो मकारः।

३ 'विश्वाराट्' इत्यत्र 'अन्येभ्योऽपि दृश्यते' (३-२-१७८) इति क्विप्। 'विश्वस्य वसुराटोः' (६-३-१२८) इति दीर्घः।

४ 'क्तिन् आबादिभ्यः—' (वा. ३-३-९४) इति बाहुलकात् क्तिन्। हलन्तलक्षणाकाराजभ्राजच्छशां षः' (८-२-३६) इति झलि परतो जकारस्य षकारः।

५ 'इक् कृष्यादिभ्यः' (वा. ३-३-१०८) इतीक् प्रत्यये रूपम्। राजते इति राजिः।

६ बाहुलकात् 'आनकः शीङ्भयः' (द.उ. ३-२६) इत्यानक् प्रत्ययेरूपम्। अत्यर्थ राजते इति राजानकः। अत्र सूत्रे राजधातोरसंग्रहेऽपि, 'प्राक् प्रत्ययनिर्देशः' (दशपाद्युणादिवृत्तिः १०-२) इत्यसकृदुक्तत्वादत्रापि राजते रानकप्रत्यय इति बोध्यम्।

७ 'कनिन् युवृषितक्षिराजि—' (द.उ. ६-५१) इकि कनिन्प्रत्ययः। 'सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ' (६-४-८) इति दीर्घे, 'न लोपः प्रतिपादिकान्तस्य' (८-२-७) इति नकारलोपः।

८ ष्ट्रन् प्रत्यये रूपम्। 'तितुत्र—' (७-२-९) इतीण्णिषेधे षत्वम्। स्त्रियां षित्वात् ङीष्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुट् | भ्राजिता | भ्राजितारौ | भ्राजितारः | प्र. |
| | भ्राजितासे | भ्राजितासाथे | भ्राजिताध्वे | म. |
| | भ्राजिताहे | भ्राजितास्वहे | भ्राजितास्महे | उ. |
| लृट् | भ्राजिष्यते | भ्राजिष्येते | भ्राजिष्यन्ते | प्र. |
| | भ्राजिष्यसे | भ्राजिष्येथे | भ्राजिष्यध्वे | म. |
| | भ्राजिष्ये | भ्राजिष्यावहे | भ्राजिष्यामहे | उ. |
| लोट् | भ्राजताम् | भ्राजेताम् | भ्राजन्ताम् | प्र. |
| | भ्राजस्व | भ्राजेथाम् | भ्राजध्वम् | म. |
| | भ्राजै | भ्राजावहै | भ्राजामहै | उ. |
| लङ् | अभ्राजत | अभ्राजेताम् | अभ्राजन्त | प्र. |
| | अभ्राजथाः | अभ्राजेथाम् | अभ्राजध्वम् | म. |
| | अभ्राजे | अभ्राजावहि | अभ्राजामहि | उ. |
| वि. लि. | भ्राजेत | भ्राजेयाताम् | भ्राजेरन् | प्र. |
| | भ्राजेथाः | भ्राजेयाथाम् | भ्राजेध्वम् | म. |
| | भ्राजेय | भ्राजेवहि | भ्राजेमहि | उ. |
| आ. लि. | भ्राजिषीष्ट | भ्राजिषीयास्ताम् | भ्राजिषीरन् | प्र. |
| | भ्राजिषीष्ठाः | भ्राजिषीयास्थाम् | भ्राजिषीध्वम् | म. |
| | भ्राजिषीय | भ्राजिषीवहि | भ्राजिषीमहि | उ. |
| लुङ् | अभ्राजिष्ट | अभ्राजिषाताम् | अभ्राजिषत | प्र. |
| | अभ्राजिष्ठाः | अभ्राजिषाथाम् | अभ्राजिड्ढ्वम्-ध्वम् | म. |
| | अभ्राजिषि | अभ्राजिष्वहि | अभ्राजिष्महि | उ. |
| लृङ् | अभ्राजिष्यत | अभ्राजिष्येताम् | अभ्राजिष्यन्त | प्र. |
| | अभ्राजिष्यथाः | अभ्राजिष्येथाम् | अभ्राजिध्वम् | म. |
| | अभ्राजिष्ये | अभ्राजिष्यावहि | अभ्राजिष्यामहि | उ. |

**कृत्सु**—भ्राजकः-जिका, भ्रजिता-त्री, भ्राजयिता-त्री, भ्राजयन्-न्ती, भ्राजयिष्यन्-न्ती-ती, भ्राजमानः, भ्राजयमानः, भ्राजयिष्यमाणः, भ्राजिष्यमाणः, भ्राजितव्यम्, भ्राजयितव्यम्, भ्राजितम्, भ्राजितव्यम्, भ्राजयितव्म्यः, भ्राजनीयम्, प्रभ्राज्यम्, भ्राजनम्, भ्राजित्वा, भ्राजयित्वा, विभ्राज्य, विभ्राक्[१]-ग्-विभ्राजौ-विभ्राजः, भ्राजिष्णुः,[२] विभ्राट्[३]-विभ्राजौ-विभ्राजः,

---

१ 'भ्राजभासधुर्वि–' इत्यादिनां तच्छीलादिषु कर्तृषु क्विप् प्रत्ययः । 'चोः कुः' (८-२-३०) इति पदान्ते कुत्वम् । एतच्च घटादिष्वपठितस्य भ्राजृ दीप्तौ इति भौवादिकस्य भ्राजतेः क्विपि रूपम् इति ज्ञेयम् ।

२ 'भुवश्च (३-२-१३८) इत्यत्र चकारेणास्मादपि धातोः इण्णुच् प्रत्ययः इति काशिकादिषूच्यते । अत्रापि भ्राजिष्णुरिति द्विविधस्यापि भ्राजतेः सम्पद्यते इति बहवः । धातुकाव्यव्याख्याने तु (२-२०) घटादिकस्य 'टुभ्राजृ–' इति धातोः इष्णुच् प्रत्यय इति प्रतिपादितम् ।

३ 'टु भ्राजृ–' इत्यस्य ताच्छीलिके क्विपि 'व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राज–' (८-३-३६) इत्यनेन षत्वे, जश्त्वचर्त्वयोश्च रूपमेवम् । क्विब्विधायके सूत्रे काशिकायम् (३-२-१७७) विभ्राट् इत्युदाहृतत्वेऽपि, सूत्रे घटादिपठितयोः तदितरयोरुभयोरपि भ्राजधात्वोर्ग्रहणमेव, षत्वं तु 'व्रश्चभ्रस्ज–' (८-२-३६) इत्यत्र राजधातुसाहचर्यात् फणादि (घटादि) भ्राजतेरेव इत्यादिकं प्रकृतस्थले मा.धा. वृत्तौ स्फुटम् ।

भ्राजथुः[1], बभ्राजिवान्[2]-भ्रेजिवान्, भ्राता,[3] नभ्राट्,[4] भ्राष्टिः।

**(८२४) टुभ्राशृ—दीप्तौ।** (चमकना)। अक.। सेट्। आत्मने.। फणादिः। '**वाभ्राशम्लाशे**' ति वा श्यन्। १ भ्राश्यते-भ्राशते। २ भ्रेशे भ्रेशाते। ५ भ्राश्यताम्-भ्राशताम्। ६ अभ्राश्यत-अभ्राशत। ७ भ्राश्येत-भ्राशेत। शेषं भ्राजति (८३२) वत्।

**(८२५) टुभ्लाशृ—दीप्तौ।** (चमकना)। अक.। सेट्। आत्म.। फणादिः। भ्लाश्यते-भ्लाशते। भ्राशृ धातुवत्।

**(८२६) स्यमु—शब्दे।** (शब्द करना)। अक.। सेट्। पर.। उदित्। फणादिः। घटदिश्च। १ स्यमति। २ सस्याम सस्यामतुः। स्येमतुः। सस्यमुः-स्येमुः। मान्तत्वात् ह्ययन्तेति न वृद्धिः। ९ अस्यमीत्। स्यमित्वा-स्यान्त्वा। अनुनासिकस्य क्विझलो क्ङिति क्तौ झलादौ च दीर्धः। स्यान्तः, स्यमन्तकः, सेसिभ्यते **स्वपिस्यमि**– इति सम्प्रसारणम्।

**(८२७-८२८) स्वन-ध्वन—शब्दे।** (शब्द करना)। अक.। सेट्। पर.। १ स्वनति। २ सस्वान सस्वनतुः स्वेनतुः। सस्वनुः स्वेनुः। सस्वनिथ-स्वेनिथ सस्वनथुः-स्वेनथुः सस्वन-स्वेन। सस्वान-सस्वन सस्वनिव-स्वेनिव सस्वनिम-स्वेनिम। शेषं 'गदति' (५२) वत्। विष्णणति। **वेश्चस्वनो भोजने**। व्यवाभ्यां स्वनतेः सस्य षः स्याद् भोजने। स्वन्तम् स्वनितम्। स्वनः, स्वानः, निश्वनः-निश्वानः। ध्वनति। दध्वान दध्वानतुः। इत्यादि 'गदति' (५२) वत्।

**(८२९-८३०) षम-ष्टम—(सम-स्तम) अवैकल्ये।** (नहीं घबड़ाना, एक समान रहना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.। समति २ ससाम सेमतुः सेमुः। इत्यादि 'रदति' (५२) वत्।

**कृत्सु**—समकः-मिका, समिता-त्री, समित्वा, प्रसम्य, समन्-न्ती, समिष्यन्-न्ती-ती, समितः, समः,[5] समितव्यम्, समनयीम्, सममानः, समिष्यमाणः, सुषमः,[6] विषमः, निःषमः-दुःषमः।

**(८३१) ज्वल—दीप्तौ।** (चमकना, सुशोभित होना)। अक.। सेट्। पर.। मित्। ज्वलति। (८०४) वत्।

**(८३२) चल—कम्पने।** (हिलना, चलना, कांपना)। अक.। सेट्। पर.। मित्। चलति। (८१२) वत्।

---

१ 'ट्वितोऽथुच्' (३-३-८९) इति भावे युच्प्रत्यये रूपमेवम्।

२ कर्तरि लिटः क्वसौ घटादेरन्यत्र पठितस्य भ्राजते रूपमेवम्। घाटादिकस्य क्वसौ तु, 'फणां च सप्तनाम्' (६-४-१२५) इत्येत्वाभ्यासलोपविकल्पः। तेन रूपद्वयमिति।

३ 'भ्राजते इति भ्राता' इति रूपं क्षीरतरङ्गिण्यां दशपाद्युणादिवृत्तौ च (द.उ. २-३) भ्राजतेस्तृनि, तृचि वा, 'पृषोदरादित्वात् (६-३-१०९) जकारलोपे च साधितम्। भाष्ये (१-२-६८) तु 'यदि तावद् विभर्तीति भ्राता' इत्युक्तत्वात् विभ्रतेर्धातोरेव भ्रातृशब्दनिष्पादनं न्याय्यमिति प्रतिभाति।

४ न भ्राजते इति नभ्राट्। नञ्समासे, 'न भ्राण्नपात्–' (६-३-६५) इत्यादिना नञः प्रकृतिभावः।

५ पचाद्यचि रूपमेवम्। यदा तु भावकर्मकत्वं, तदा संज्ञायं घ प्रत्यये रूपमेवम्।

६ 'सुविनिर्दुर्भ्यः सुपिसूतिसमाः' (८-३-८८) इति षत्वम्।

**( ८३३ ) जल—घातने**। घातनं = तैक्ष्ण्यम् । (तीक्ष्ण होना, तेजस्वी होना, पैना होना)। जलति । 'जपति' (३९७) वत् । जालकः-लिका, जलिता-त्री, जालयिता-त्री, जलः, प्रजलः, जालः ।

**( ८३४ ) टल—वैकल्ये**। (विह्वल होना, दुखित होना, हृद्रोगी होना)। अकर्म.। सेट्। पर.। टलति। टेलतुः टेलुः। 'रदति' (५३) वत्।

**( ८३५ ) ट्वल—वैकल्ये**। (व्याकुल होना)। अक.। (सेट्। पर.। ट्वलति। टट्वाल। 'ज्वलति' (८०४) वत्।

**( ८३६ ) ष्ठल—स्थाने**। (स्थिर होना, थमना, स्तब्ध होना, खड़ा होना)। अक.। सेट्। पर.। स्थलति। तस्थाल। 'गदति' (५२) वत्।

**कृत्सु**—स्थालकः-लिका, स्थलिता-त्री, स्थलन्-न्ती, स्थालयन्-न्ती, स्थलिष्यन्-न्ती-ती, स्थालयिष्यन्-न्ती-ती, स्थलयिष्यन्, स्थलितम्, स्थलितव्यम्, स्थलयितव्यम्, स्थालयितव्यम्, स्थलनीयम्, स्थालनीयम्, स्थाल्यम्, स्थल्यमानः, स्थलितुम्, स्थलनम्, स्थलित्वा, स्थालयित्वा, स्थालः[१]-स्थलः, स्थलम्[२], कपिष्ठल,[३] कपिस्थलम्, स्थली[४], स्थला, स्थाली[५], विष्ठलम्,[६] कुष्ठलम् शमिष्ठलम्, परिष्ठलम्।

**( ८३७ ) हल—विलेखने**। विलेखनम् = कर्षणम्। ज्वलादिः। (जोतना, हल चलाना)। सक.। सेट्। परस्मै.। हलति। जहाल, इत्यादि 'गदति' (५२) वत्।

**कृत्सु**—हालकः-लिका, हलिता-त्री, हालः-ज्वलित्यादित्वात् कर्तरि ण प्रत्ययः। सम्यक् लिखन् यस्स उच्यते। संज्ञायां घप्रत्यये हलः = सीरः। हलिकः-हलं वहति यः सः। हलिः-औणादिक इन् प्रत्यये सिद्धम्। हलानां समूहः-हल्या।

**( ८३८ ) णल—गन्धे**। बन्धमित्येके। गन्धः = हिंसनं वासना च। (सूंघना, बास आना, बांधना, हिंसा करना)। सकर्म.। सेट्। पर.। १ नलति। २ ननाल नेलतुः नेलुः। 'जपति' (३९७) वत्।

**कृत्सु**—नालकः-लिका, नलिता-त्री, नलः[७], नडः, नलिनम्, नालः,[८] नलः,[९] नाली, प्रणाली, नालम्, नलितुम्, नलना।

---

१ 'ज्वलितिकसन्तेभ्यः–' (३-१-१४०) इति कर्तरि णप्रत्ययविकल्पः। पक्षे पचाद्यचि स्थलः इति साधुः।

२ अधिकरणे घप्रत्ययो बाहुलकात्। बाहुलकादेव घान्तस्य क्लीबत्वम्।

३ 'कपिष्ठलो गोत्रे' (८-३-९१) इति निपातनात् षत्वम्। कपिष्ठलः = गोत्रप्रवर्तको ऋषिः। अन्यत्र कपीनां स्थलम् कपिस्थलम् इत्येव।

४ जानपदकुण्डगोणस्थल–' (४-१-४२) इत्यादिना अकृत्रिमार्थे (स्वाभाविके स्थले विवक्षिते) ङीष्। स्थली = अकृत्रिमा भूमिः। स्थला = कृत्रिमा सौधादिषु भूः।

५ संज्ञायां 'हलश्च' (३-३-१२१) इति घञ्। घञन्तात् स्थालशब्दात् गौरादिषु (४-१-४१) पाठात् ङीष्। स्थाली = पात्रविशेषः।

६ 'विकुशमिपरिभ्यः स्थलम्' (८-३-९६) इति षत्वमत्र।

७ शत्रून् नलति = बाध्नातीति नलः = नृपतिविशेष। कर्तरि पचाद्यच्।

८ 'हलश्च' (३-३-१२१) इति संज्ञयां घञ्। नालः = बिसतन्तुः।

९ नल्यते इति नलः = गन्धविशेषः। निलदम् = लाभजनकनम्।

**(८३९) पल—गतौ।** (जाना)। सक.। सेट्। पर.। १ पलति। २ पपाल पेलतुः पेलुः। 'चलति' (८३२) वत्। पपालम्, पपलम्।

**(८४०) बल—प्राणने।** धान्यावरो धने च। (बल युक्त होना, जीना, धान्य संचय करना, द्रव्य को रोकना)। अक. सेट्। पर.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | बलति | बलतः | बलन्ति | प्र. |
| | बलसि | बलथः | बलथ | म. |
| | बलामि | बलावः | बलामः | उ. |
| लिट् | बबाल | बेलतुः | बेलुः | प्र. |
| | बेलिथ | बेलथुः | बेल | म. |
| | बबाल-बबल | बेलिव | बेलिम | उ. |
| लुट् | बलिता | बलितारौ | बलितारः | प्र. |
| | बलितासि | बलितास्थः | बलितास्थ | म. |
| | बलितास्मि | बलितास्वः | बलितास्मः | उ. |
| लृट् | बलिष्यति | बलिष्यतः | बलिष्यन्ति | प्र. |
| | बलिष्यसि | बलिष्यथः | बलिष्यथ | म. |
| | बलिष्यामि | बलिष्यावः | बलिष्यामः | उ. |
| लोट् | बलतु-तात् | बलताम् | बलन्तु | प्र. |
| | बल-तात् | बलतम् | बलत | म. |
| | बलानि | बलाव | बलाम | उ. |
| लङ् | अबलत् | अबलताम् | अबलन् | प्र. |
| | अबलः | अबलतम् | अबलत | म. |
| | अबलम् | अबलाव | अबलाम | उ. |
| वि. लि. | बलेत् | बलेताम् | बलेयुः | प्र. |
| | बलेः | बलेतम् | बलेत | म. |
| | बलेयम् | बलेव | बलेम | उ. |
| आ. लि. | बल्यात् | बल्यास्ताम् | बल्यासुः | प्र. |
| | बल्याः | बल्यास्तम् | बल्यास्त | म. |
| | बल्यासम् | बल्यास्व | बल्यास्म | उ. |
| लुङ् | अबालीत् | अबालिष्टाम् | अबालिषुः | प्र. |
| | अबालीः | अबालिष्टम् | अबालिष्ट | म. |
| | अबालिषम् | अबालिष्व | अबालिष्म | उ. |
| लृङ् | अबलिष्यत् | अबलिष्यताम् | अबलिष्यन् | प्र. |
| | अबलिष्यः | अबलिष्यतम् | अबलिष्यत | म. |
| | अबलिष्यम् | अबलिष्याव | अबलिष्याम | उ. |

कृत्सु—बालकः-लिका, बलिता-त्री, बालयिता-त्री, बालयन्-न्ती, बालयिष्यन्-न्ती-ती, बलमानः, बालयमानः, बालिष्यमाणः, बालयिष्यमाणः, बलितम्, बालितम्, बलितव्यम्,

बालयितव्यम्, बाल्यम्, बल्यमानः, बाल्यमानः, बलितुम्, बालयितुम्, बलनम्, बालनम्, बलित्वा, बालयित्वा, संबल्य। बालः[1]-बलः, बाला,[2] बाहुबली[3]-ऊरुबली, सर्वबली, बलिः,[4] बलवान्,[5] बली, बलूलः[6]।

(८४१) **पुल—महत्वे**। (राशि होना, ढेर होना, बढ़ना, ऊँचा होना)। अकर्म.। सेट्। पर.। पोलति। पुपोल। इत्यादि 'शोचति' (१८३) वत्। पुलिनम् पुलाकः।

(८४२) **कुल—संस्त्याने बन्धुषु च**। संस्त्यानं = संघातः। बन्धुः = बन्धुताकूलव्यापारः। (बटोरना। अपने के समान वर्तना, सजातीयता से रहना)। **आ**—तत्पर होना, व्याकुल होना। अक.। सेट्। परस्मै.। कोलति। 'शोचति' (१८३) वत्। कुलीनः, कुल्यः, कौलीनः, कौलेयकः।

(८४३) **शल—गतौ**। (जाना)। सकर्म.। सेट्। पर.। शलति। 'रदति' (५३) वत्।

(८४४) **हुल—गतौ**। हिंसायां संवरणे च। (जाना, मारना)। सकर्म.। सेट्। पर.। होलति। 'शोचति' (१८३) वत्।

(८४५) **पत्लृ—(पत्) गतौ**। (नीचे जाना या गिरना या उतरना, अमानवी पराक्रम करना)। **अति**—जीतना, श्रेष्ठ होना, **अभि-अव**—उतरना, **आ**—जाना, प्राप्त होना, उपस्थित होना, **उत्**—ऊपर चढ़ना, **नि**—नीचे गिरना, **निर्**—भाग जाना, छिपना, **परि**—जल्दी जाना, **प्रनि**—साष्टाङ्ग नमस्कार करना, **विनि**—पीछे लौटना, **सम्**—साथ जाना, मिलना, प्राप्त होना, **समा**—शुद्ध करना, स्वच्छ करना, **समुत्**—भाग जाना, उड़ जाना, **सन्नि**—आगे या बाहर जाना। अकर्म.। सेट्। पर.।

१ पतति। २ **प्र.** पपात पेततुः पेतुः। **म.** पेतिथ पेतथुः पेत। **उ.** पपात-पपत पेतिव पेतिम। ३ पतिता पतितारौ पतितारः। ४ पतिष्यति। ५ पततु-पततात्। ६ अपतत्। ७ पतेत्। ८ **प्र.** पत्यात् पत्यास्ताम् पत्यासुः। **म.** पत्याः पत्यास्तम् पत्यास्त। **उ.** पत्यासम् पत्यास्व पत्यास्म। ९ **प्र.** अपप्तत् अपप्तताम् अपप्तन्। **म.** अपप्तः अप्ततम् अपप्तत। **उ.** अपप्तम् अपप्ताव अपप्ताम। **'पतः पुम्'** इति पुमागमः। १० अपतिष्यत्।

**भावे**—पत्यते। ९ अपाति। **णिचि**—पातयति-ते। ९ अपीपत्। **सनि**—पित्सति-पिपतिषति। **यङि**—पनीपत्यते। **यङ्लुकि**—पनीपतीति-पनीपत्ति। **कृत्सु**—पातकः-तिका,

१ 'ज्वलितिकसन्तेभ्यो णः' (३-१-१४०) इति कर्तरि वा णप्रत्ययः। तदभावपक्षे पचाद्यचि बलः इति रूपम्।
२ 'बालशब्दस्याजादिषु' (४-१-४) पाठात्। 'वयसि प्रथमे' (४-१-२०) इति ङीष् न, टाबेव भवति।
३ 'बलाद् बाहूरुपूर्वपदात् सर्वादेश्च' (वा. ५-२-१३५) इति वचनात् मत्वर्थीय इनि प्रत्यये रूपाण्येतानि साधूनि।
४ 'इन्' (द.उ. १-४६) इतीन् प्रत्यये रूपम्।
५ मत्वर्थीये इनि प्रत्यये, मतुपि मतोर्वकारे च एते रूपे भवतः।
६ 'वातदन्तबलललाटानामूङ् च' (ग.सू. ५-२-९७) इति सिध्मादिषु पाठात् मत्वर्थीये लच् प्रत्यये ऊङागमे च रूपमेवम्।

पिपतिषकः-षिका, पित्सकः-सिका, पनीपतकः-तिका, पतिता-त्री, पातयिता-त्री, पिपतिषिता-पित्सिता-त्री, पनीपतिता-त्री, प्रणिपतन्[१]-न्ती, पातयन्-न्ती, पिपतिषन्[२]-पित्सन्-न्ती, उत्पतिष्यन्-न्ती-ती, पातयिष्यन, पिपेतिषिष्यन्, पित्सिष्यन्-न्ती-ती, पतमानः,[३] पातयमानः, पिपतिषमाणः[४], प्रपित्समानः, पनीपत्यमानः, पतिष्यमाणः, पातयिष्यमाणः, प्रतिपत्-सुपत्-सुपतौ-सुपतः, पत्तम्[५]-पतः-पतवान्, पतितम्-तः-तवान्, पातितः, पतः[६]-पातः[७] पतापतः[८], आपात्यः[९], उत्पतिष्णुः[१०], पतयालुः,[११] प्रपातुकः,[१२] पतनः,[१३] निपेतिवान्[१४], दूरपाती[१५] पक्षपाती, पापतिः,[१६] पातः-पिपतिषुः-प्रपित्सुः, पनीपतः, पतितव्यम्, पातयितव्यम्, पतनीयम् पातनीयम्, पात्यम्, अपत्यम्,[१७] पात्यम्, पत्यमानः, पात्यमानः, पातः[१८]- सन्निपातः-उत्पातः, प्रणिपातः, प्रपातः[१९], पत्रम्,[२०] पतितुम्, पातयितुम्, प्रतिपत्,[२१] निपत्या,[२२] पत्तिः,[२३] पातना,

१ 'नेर्गदनदपत–' (८-४-१७) इत्यादिना नेर्णत्वम्।
२ 'आशङ्कायामुपसंख्यानम्' (वा. ३-१-७) इति सनि रूपमेवम्। इच्छासन्नन्तादपि, एवमेव।
३ 'ताच्छील्यवयोवचनशक्तिषु चानश्' (३-२-१२९) इति ताच्छील्ये, शक्तौ वा चानश् प्रत्ययः, न तु शानच्।
४ 'पूर्ववत् सनः' (१-३-६२) इति ताच्छील्यार्थे चानश्।
५ सनि धातोरस्य विकल्पितेट्कत्वात् निष्ठायाम् 'यस्य विभाषा' (७-२-१५) इति इण्निषेधे प्राप्ते, 'द्वितीयाश्रितातीत–'(२-१-२४) इति पतित इति निपातनाद् इड् भवतीति सिद्धान्तः। 'बाधकान्येव निपातनानि' (परि. १२०) इति न्यायाश्रयेन पतित इत्येव निष्ठायां साधुः। 'अबाधकान्यपि निपातनानि' (परि. १२१) इति न्यायाश्रयणे तु पत्तम्-पत्तः इत्यादीन्यपि रूपाण्यत्र साधून्येवेति प्रतिभाति।
६ णप्रत्ययाभावपक्षे पचाद्यचि रूपमेवम्।
७ 'ज्वलितिकसन्तेभ्यो णः' (३-१-१४०) इति कर्तरि वा णप्रत्ययः।
८ 'चरिचलिपति–' (वा. ६-१-१२) इति द्वित्वम्। अभ्यासे हलादिशेषाभावः। यङन्तत्वाभावात् आगागमविधानाच्च नीगभावश्च।
९ 'भव्यगेय–' (वा. ३-४-६८) इति कर्तरि ण्यत् प्रत्ययान्तो निपातितः।
१० 'अलंकृञ् निराकृ–' (३-२-१३६) इति तच्छीलादिषु कर्तृषु इष्णुच् प्रत्ययः।
११ 'स्पृहिगृहिपतिदयि–' (३-२-१५८) इति ण्यन्तात् आलुच् प्रत्ययः। ताच्छीलादिकोऽयं प्रत्ययः। णिचि उपधाह्रस्वो निपातनात्। 'अयामन्ता–' (६-४-५५) इति णेरयादेशः।
१२ ताच्छीलिकः 'लषपतपद–' (३-२-१५४) इत्यादिना उकञ् प्रत्ययः।
१३ 'जुचङ्क्रम्य–' (३-२-१५०) इत्यादिना ताच्छीलिके युच् प्रत्यये, अनादेशे च रूपम्।
१४ कर्तरि लिटः क्वसौ द्वित्वे, 'अत एकहलमध्ये–' (६-४-१२०) इति एत्वाभ्यासलोपयोः 'वस्वेकाजाद् घसाम्' (७-२-६७) इतीडागमे च रूपम्।
१५ 'सुप्यजातौ–' (३-२-७८) इति ताच्छील्ये णिनिप्रत्ययः।
१६ 'सासहिवा–' (वा. ३-२-१७१) इत्यनेन कर्तरि किः किन् वा प्रत्ययः। यङन्तात् निपातनमिदम्। निपातनादेव नीगागमोऽभ्यासस्य नेति भाष्यमातम्।
१७ न पतन्त्येनेनेति अपत्यम्। हलन्तात् करणे यत्। कृत्यल्युटो बहुलम्' (३-३-११३) इत्यनेनात्र साधुत्वं ज्ञेयम्।
१८ 'हलश्च' (३-३-१२१) इति संज्ञायां घञ्। पातः = राहुः।
१९ प्रपततीति प्रपातः = जलस्याधोदेशगमनम्।
२० 'दाम्नीश–' (३-२-१८२) इति करणे ष्ट्रन् प्रत्ययः। पत्त्रम् = वाहनम्।
२१ स्त्रियां भावादौ, 'सम्पदादिभ्यः–' (वा. ३-३-९४) इति क्विप्। प्रतिपत् = ज्ञानम्। 'क्तिन्नपीष्यते' (वा. ३-३-९४) इति वचनात् प्रतिपत्तिः = इत्यपि साधुः।
२२ संज्ञायां समजनिषदनिपत–' (३-३-९९) इत्यादिना क्यप् संज्ञायाम्। निपात्या = पिच्छिला भूमिः।
२३ 'क्तिच् क्तौ च संज्ञायाम्' (३-३-१७४) इति संज्ञायां क्तिच्। पत्तिः = पदातिः। पुल्लिङ्गशब्दोऽयम्।

पतनम्, प्रपातनम्, पतित्वा, पातयित्वा, प्रणिपत्य, प्रपात्य, लतानुपातम्,[1] गेहानुपातम्, गेहानुपातमास्ते, गेहं गेहम् अनुपातम्, पताका,[2] पतङ्गः[3], पतनम्,[4] पतत्रम्,[5] पातालम्,[6] पन्थाः, उत्पातः, अनुपतति, निपसति।

**(८४६) क्वथे—निष्पाके।** (उबालना, पकाना, काढ़ा बनाना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.।

क्वथति। २ चक्वाथ चक्वथतुः चक्वथुः। ९ अक्वथीत्। **एदित्वात् ह्म्यमन्तलक्षणेति** न वृद्धिः। इत्यादि 'क्वणति' (४५०) वत्।

**(८४७) पथे—गतौ।** (जाना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। एदित्। १ पथति। २ पपाथ पेथतुः पेथुः। ९ अपथीत्। 'गदति' (५२) वत्।

**(८४८) मथे—विलोडने।** (मथना, विचार करना, मनन करना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। १ मथति। २ ममाथ मेथतुः मेथुः। ९ अमथीत्। 'रदति' (५३) वत्।

**कृत्सु**—माथकः-थिका, मिमथिषकः-षिका, मामन्थकः, मन्मथः[7], मथः[8]-माथः, दण्डमाथः[9], प्रमाथी,[10] मथुरा,[11] मथिता-त्री, माथयिता-त्री, मथन्-न्ती, माथयन्-न्ती, मथिष्यन्-न्ती, मथितम्-तः, मथितव्यम्, माथयितव्यम्, मथनीयम्, माथनीयम्, माथ्यम्, मथ्यमानः, माथ्यमानः, मथितुम्, माथयितुम्, मथनम्, माथनम्, मथित्वा, माथयित्वा, प्रमथ्य प्रमाथ्य।

**(८४९) टुवम्—(वम्) उद्गिरणे।** (कै होना, वमन होना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.।

१ वमति। २ **प्र.** ववाम वेमतुः ववमतु[12]: वेमुः-ववमुः। **म.** ववमिथ-वेमिथ, ववमथुः-वेमथुः वेम-ववम। **उ.** ववाम-ववम ववमिव-वेमिव ववमिम-वेमिम। ३ वमिता। ४ वमिष्यति। ५ वमतु-तात्। ६ अवमत्। ७ वमेत्। ८ वम्यात्। ९ **प्र.** अवमीत्[13] अवमिष्टाम् अवमिषुः। **म.** अवमीः अवमिष्टम् अवमिष्ट। **उ.** अवमिषम् अवमिषाव अवमिषाम। १० अवमिष्यत्।

---

१ 'विशिपति–' (३-४-५६) इति द्वितीयान्ते णमुल्।
२ बलाकादित्वात् (द.उ. ३-३२) आकप्रत्ययो भवति। पताका = ध्वजपटः।
३ 'पतेरङ्गच् पक्षिणि' (द.उ. ३-५९) इत्यङ्गच् प्रत्ययः पक्षिण्यभिधेये। पतत्यत्यर्थमिति पतङ्गः = पक्षी आदित्यश्च।
४ 'विपतिभ्यां तनन्' (द.उ. ६-५६) इति तनन्प्रत्ययः। पतन्त्यस्मिन् इति पत्तनम्।
५ 'अमिमनक्षियजिवधिपतिभ्योऽत्रन्' (द.उ. ८-५६) इत्यत्रन् प्रत्ययः। पतत्रम् = वाहनम्।
६ 'पतिचण्डिभ्यामालन्' (द.उ. ८-११९) इत्यालन् प्रत्ययः।
७ मनो मथतीति मन्मथः। पचादिषु पाठात् बाहुलकेन अत्राच् प्रत्ययः। कर्मण्यणोऽपवादः।
८ 'ज्वलितिकसन्तेभ्यो णः' (१-३-१४०) इति कर्तरि विकल्पेन णप्रत्ययः। पक्षे पचाद्यच्। तेन रूपद्वयम्।
९ मथ्यतेऽनेन इति माथः = पन्थाः। दण्डभावो माथः दण्डमाथः = ऋजुः पन्थाः।
१० 'प्रे लपसृद्रुमथवदवसः' (३-२-१४५) इत्यनेन तच्छीलतद्धर्मतत्साधुकारिष्वर्थेषु घिनुण् प्रत्ययः।
११ 'मन्दिवाशिमथि–' (द.उ. ८-२१) इत्युरच् प्रत्यये रूपमेवम्। मथ्यतेऽसौ जनैरिति मथुरा। माथितावस्यां मधुलवणाविति मथुरा इत्यपि क्वचिद् व्युत्पादितम्।
१२ 'न शशददे–' ति वादित्वान्न एत्वाभ्यासलोपौ।
१३ मान्तत्वात् 'ह्म्यन्तलक्षणे–' ति न वृद्धिः।

**कर्मणि**—वम्यते। **णिचि**—वमयति[१]-वामयति-ते। उद्वमयति। **सनि**—विवमिषति। **यङि**—ववम्यते[२]। **यङ्लुकि**—ववमीति-वंवन्ति। **कृत्सु**—वामकः[३]-मिका, वमकः[४]-वामकः, वमिता-त्री, वामयिता-त्री, वमन्-न्ती, वामयन्-वमयन्-न्ती, वमिष्यन्-न्ती-ती, वामयिष्यन्-न्ती-ती, वामयमानः-वमयमानः, वमितम्-तः-तवान्, वान्तम्[५]-वान्तः-वान्तवान्, वमितः, वमः-वामः[६], वमी[७], वमथुः,[८] वामी, वामनः[९], विवमिषुः, वंवमः, वम्यम्[१०], वान्ति, वमित्वा[११]-वान्त्वा, वमितुम्, वमितव्यम्।

(८५०) **भ्रमु—चलने**। (चलना, घूमना, भ्रमण करना)। अक.। सेट्। पर.। उदित्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | भ्रम्यति[१२]-भ्रमति | भ्रम्यतः-भ्रमतः | भ्रम्यन्ति-भ्रमन्ति | प्र. |
| | भ्रम्यसि-भ्रमसि | भ्रम्यथः-भ्रमथः | भ्रम्यथ-भ्रमथ | म. |
| | भ्रम्यामि-भ्रमामि | भ्रम्यावः-भ्रमावः | भ्रम्यामः-भ्रमामः | उ. |
| लिट् | बभ्राम[१३] | भ्रेमतुः | भ्रेमुः | प्र. |
| | भ्रेमिथ | भ्रेमथुः | भ्रेम | म. |
| | बभ्राम-बभ्रम | भ्रेमिव | भ्रेमिम | उ. |

पक्षे— बभ्राम बभ्रमतुः बभ्रमुः **प्र.** बभ्रमिथ बभ्रमथुः बभ्रम **म.** बभ्राम बभ्रमिव बभ्रमिम उ.

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुट् | भ्रमिता | भ्रमितारौ | भ्रमितारः | प्र. |
| | भ्रमितासि | भ्रमितास्थः | भ्रमितास्थ | म. |
| | भ्रमितास्मि | भ्रमितास्वः | भ्रमितास्मः | उ. |
| लृट् | भ्रमिष्यति | भ्रमिष्यतः | भ्रमिष्यन्ति | प्र. |
| | भ्रमिष्यसि | भ्रमिष्यथः | भ्रमिष्यथ | म. |
| | भ्रमिष्यामि | भ्रमिष्यावः | भ्रमिष्यामः | उ. |

१ 'ग्लास्नावनुवमामनुपसर्गाद् वा' इति मित्वविकल्पः।
२ 'नुगतोऽनुनासिकान्तस्य' (७-४-२५) अनुनासिकान्तस्याङ्गस्य योऽभ्यासोऽदन्तस्तस्य नुक् स्यात्।
३ 'नोपदात्तोपदेशस्य मान्तस्य (७-३-३४) इत्यादिना वृद्धि निषेधे प्राप्ते 'अनावमिकमिवमीनाम्—' (वा. ७-३-३४) इति वार्तिकात् वृद्धिनिषेधो न। तेन ण्वुलि वामक इति रूपम्।
४ 'ग्लास्नावमुवमाम्—' (ग.सू. भ्वादि) इति अनुपसृष्टस्य धातोः मित्वं विकल्पेन भवति। ततः 'मितां ह्रस्वः' (६-४-९२) इति ह्रस्वः, तेन ण्यन्ते सर्वत्र रूपद्वयं भवति।
५ 'आदितश्च' (७-२-१६) इति चकारस्यानुक्तसमुच्चयार्थकत्वात् निष्ठायामनिट्त्वम् इति काशिकादौ। 'धारानिपातैः सह किन्तु वान्तः चन्द्रोऽयमित्यार्ततरं रसासे इति पाणिनिः।' इति प्रक्रियासर्वस्वटीकायाम् (प्र. २६)। 'वम् जप व्याश्वसो निष्ठायाः इड्वा इति केचित्' इत्युक्त्वा वमितः वान्तः इति प्रक्रियाकौमुदी।
६ कर्तरि 'ज्वलितिकसन्तेभ्यो णः' (३-१-१४०) इति विकल्पेन णप्रत्ययः। अचोऽपवादः। तेनरूपद्वयम्।
७ 'जिदृक्षिविश्रीण्वम—' इत्यादिना तच्छीलादिषु कर्तृषु इनिप्रत्यये रूपमेवम्।
८ भवादौ ट्वितो धातोः 'ट्वितोऽथुच्' (३-३-८९) इति अथुच् प्रत्यये रूपमेवम्। 'पुमांस्तु वमथुः समाः। इत्यमरः।
९ वृद्धिपक्षे ण्यन्तात् नन्द्यादित्वात्। (३-१-१३४) कर्तरि ल्युः। वामनः = लघुपरिमाणो विष्णोरवतारः।
१० 'पोरदुपधात्' (३-१-९८) इति यत् प्रत्यये रूपम्। ण्यतोऽपवादः।
११ उदित्पक्षे क्त्वायाम् 'उदितो वा' (७-२-५६) इति इड्विकल्पः। इडभावपक्षे 'अनुनासिकस्य—' (६-४-१५) इति दीर्घे वान्त्वा इति रूपम्। तेन रूपद्वयं ज्ञेयम्।
१२ 'वा भ्राशे—' ( ) ति वा श्यनि रूपाणि।
१३ वाजॄभ्रमुत्रसाम्—' एषामेत्वाभ्यासलोपो वा स्तः किति लिटि सेटि थालि च।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लोट् | भ्रम्यतु-भ्रम्यतात् | भ्रम्यताम् | भ्रम्यन्तु | प्र. |
| | भ्रम्य-भ्रम्यतात् | भ्रम्यतम् | भ्रम्यत | म. |
| | भ्रम्याणि | भ्रम्याव | भ्रम्याम | उ. |

पक्षे—**प्र.** भ्रमतु-भ्रमतात् भ्रमताम् भ्रमन्तु । **म.** भ्रम-भ्रमतात् भ्रमतम् भ्रमत । **उ.** भ्रमाणि भ्रमाव भ्रमाम ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लङ् | अभ्रम्यत् | अभ्रम्यताम् | अभ्रम्यन् | प्र. |
| | अभ्रम्यः | अभ्रम्यतम् | अभ्रम्यत | म. |
| | अभ्रम्यम् | अभ्रम्याव | अभ्रम्याम | उ. |

पक्षे—**प्र.** अभ्रमत् अभ्रमताम् अभ्रमन् । **म.** अभ्रमः अभ्रमतम् अभ्रमत । **उ.** अभ्रमम् अभ्रमाव अभ्रमाम ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| वि. लि. | भ्रम्येत्-भ्रमेत् | भ्रम्येताम्-भ्रमेताम् | भ्रम्येयुः-भ्रमेयुः | प्र. |
| | भ्रम्येः-भ्रमेः | भ्रम्येतम्-भ्रमेतम् | भ्रम्येत-भ्रमेत | म. |
| | भ्रम्येयम्-भ्रमेयम् | भ्रम्येव-भ्रमेव | भ्रम्येम-भ्रमेम | उ. |
| आ. लि. | भ्रम्यात् | भ्रम्यास्ताम् | भ्रम्यासुः | प्र. |
| | भ्रम्याः | भ्रम्यास्तम् | भ्रम्यास्त | म. |
| | भ्रम्यासम् | भ्रम्यास्व | भ्रम्यास्म | उ. |
| लुङ् | अभ्रमीत्[१] | अभ्रमिष्टाम् | अभ्रमिषुः | प्र. |
| | अभ्रमीः | अभ्रमिष्टम् | अभ्रमिष्ट | म. |
| | अभ्रमिषम् | अभ्रमिष्व | अभ्रमिष्म | उ. |
| लृङ् | अभ्रमिष्यत् | अभ्रमिष्यताम् | अभ्रमिष्यन् | प्र. |
| | अभ्रमिष्यः | अभ्रमिष्यतम् | अभ्रमिष्यत | म. |
| | अभ्रमिष्यम् | अभ्रमिष्याव | अभ्रमिष्याम | उ. |

**भावे**—भ्रम्यते । **णिचि**—भ्रमयति, अमन्तत्वान्मित्वम् । चलनार्थत्वात् परस्मैपदमेव । **सनि**—विभ्रमिषति । **यङि**—बम्भ्रम्यते । **यङ्लुकि**—बम्भ्रमीति-ब्रम्भ्रन्ति । **कृत्सु**—भ्रमित्वा[२] -भ्रान्त्वा, भ्रान्तः, भ्रमकः[३]-मिका, भ्रमन्[४]-भ्रम्यन्, भ्रमः[५], युचि-भ्रमणः,[६] क्विपि- अग्रेभूः[७]-

१ 'ह्म्यन्त' (७-२-५) न वृद्धिः ।

२ उदित्वाद् वेट् ।

३ 'नोदात्तोपदेशस्य मान्तस्यानाचमेः' (७-३-३४) इति वृद्धिनिषेधः ।

४ शतरि 'वा भ्राशभ्लाशभ्रमु–' (३-१-७०) इत्यनेन वा श्यन् । तेन रूपद्वयम् ।

५ 'ज्वलितिकसन्तेभ्यो णः' (३-१-१४०) इति कर्तरि वा णप्रत्ययः । पक्षेऽच् प्रत्ययश्च णप्रत्ययपक्षेऽपि,' नोदात्तोपदेश–'(७-३-३४) इति वृद्धि निषेधः, क्षीरस्वामी तु 'णे भ्रामः । भ्रमः इति दुर्गः । इति रूपे प्रदर्शितवान् । निषेधाश्च बलीयांसः' (परिभाषा १२२) इति न्यायेन वृद्धिनिषेध एवात्र ण प्रत्ययपक्षेऽपि न्याय्य इति प्रतिभाति ।

६ 'चलन शब्दार्थाद्–' (३-२-१४८) इति तच्छीलादिषु कर्तृषु युच् । णत्वम् ।

७ क्विपि, 'ऊङ् च गमनादीनामिति वक्तव्यम्' (वा. ६-४-४०) इति वचनेन अनुनासिकलोपे, धात्वकारस्य ऊकारादेशे च रूपमेवम् । काशिकादिषु अग्रेभ्रूः इत्युदाहृतम् । भाष्ये तु प्रकृतसूत्रे (६-४-४०) भ्रूः इत्येवोदाहृतम् ।

सुभ्रूः-सुभ्रुवौ-सुभ्रुवः, भ्रमिः[१], उरभ्रः[२], भृमिः[३], भ्रमरः,[४] भ्रमिता-त्री, भ्रमयिता-त्री, भ्राम्यन्-भ्रमयन्-न्ती, भ्रमिष्यन्-न्ती-ती, भ्रमयिष्यन-न्ती-ती, भ्रान्तम्, भ्रमनीयम्-भ्रम्यम्, भ्रान्तिः, भ्रमयित्वा, सम्भ्रम्य ।

(८५१) **क्षर—सञ्चलने** । (टपकना, चूना, झरना), **सम्**—बहना । अकर्म.। सेट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | क्षरति | क्षरतः | क्षरन्ति | प्र. |
| | क्षरसि | क्षरथः | क्षरथ | म. |
| | क्षरामि | क्षरावः | क्षरामः | उ. |
| लिट् | चक्षार | चक्षरतुः | चक्षरुः | प्र. |
| | चक्षरिथ | चक्षरथुः | चक्षर | म. |
| | चक्षार-चक्षर | चक्षरिव | चक्षरिम | उ. |
| लुट् | क्षरिता | क्षरितारौ | क्षरितारः | प्र. |
| | क्षरितासि | क्षरितास्थः | क्षरितास्थ | म. |
| | क्षरितास्मि | क्षरितास्वः | क्षरितास्मः | उ. |
| लृट् | क्षरिष्यति | क्षरिष्यतः | क्षरिष्यन्ति | प्र. |
| | क्षरिष्यसि | क्षरिष्यथः | क्षरिष्यथ | म. |
| | क्षरिष्यामि | क्षरिष्यावः | क्षरिष्यामः | उ. |
| लोट् | क्षरतु-क्षरतात् | क्षरताम् | क्षरन्तु | प्र. |
| | क्षर-क्षरतात् | क्षरतम् | क्षरत | म. |
| | क्षराणि | क्षराव | क्षराम | उ. |
| लङ् | अक्षरत् | अक्षरताम् | अक्षरन् | प्र. |
| | अक्षरः | अक्षरतम् | अक्षरत | म. |
| | अक्षरम् | अक्षराव | अक्षराम | उ. |
| वि. लि. | क्षरेत् | क्षरेताम् | क्षरेयुः | प्र. |
| | क्षरेः | क्षरेतम् | क्षरेत | म. |
| | क्षरेयम् | क्षरेव | क्षरेम | उ. |
| आ. लि. | क्षर्यात् | क्षर्यास्ताम् | क्षर्यासुः | प्र. |
| | क्षर्याः | क्षर्यास्तम् | क्षर्यास्त | म. |
| | क्षर्यासम् | क्षर्यास्व | क्षर्यास्म | उ. |

१ 'इक् कृष्यादिभ्यः' (वा. ३-३-१०८) इति भावे स्त्रियामिक् प्रत्ययः ।

२ उरसा भ्रमतीति उरभ्रः = मेषः । 'अन्येष्वपि दृश्यते' (३-२-१०१) इति डप्रत्यये पृषोदरादित्वात् (६-३-१०९) उरसशब्दसकारस्य लोपे च रूपमेवम् ।

३ 'भ्रमेः सम्प्रसारणं च' (द.उ. १-४९) इतीन् प्रत्यये, प्रत्ययस्य कित्वेन सम्प्रसारणे च रूपमेवम् । भृमिः = वायुः ।

४ 'अर्तिकमिभ्रमि–' (द.उ. ८-६२) इत्यरन् प्रत्यये रूपमेवम् । भ्रमरः = अलिः ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुङ् | अक्षारीत् | अक्षारिष्टाम् | अक्षारिषुः | प्र. |
| | अक्षारीः | अक्षारिष्टम् | अक्षारिष्ट | म. |
| | अक्षारिषम् | अक्षारिष्व | अक्षारिष्म | उ. |
| लृङ् | अक्षरिष्यत् | अक्षरिष्यताम् | अक्षरिष्यन् | प्र. |
| | अक्षरिष्यः | अक्षरिष्यतम् | अक्षरिष्यत | म. |
| | अक्षरिष्यम् | अक्षरिष्याव | अक्षरिष्याम | उ. |

**भावे**—क्षर्यते। **णिचि**—क्षरयति। **सनि**—चिक्षरिषति। **यङि**—चाक्षर्यते। **यङ्लुकि**—चाक्षरीति-चाक्षर्ति। **कृत्सु**—क्षारकः-रिका, क्षरिता-त्री, क्षारयिता-त्री, क्षरन्-न्ती, क्षरिष्यन्-न्ती-ती, चिक्षरिषन्-न्ती, क्षारयन्-क्षारयिष्यन्-न्ती-ती, क्षारयमाणः-क्षारयिष्यमाणः, विक्षः-विक्षरौ-विक्षरः, क्षरितम्-तः, क्षारितम्, क्षरः, क्षारः, क्षारी-क्षरणः, अक्षरम्, क्षरितव्यम्, क्षारयितव्यम्, क्षरणीयम्, क्षारणीयम्, क्षार्यम्, ईषत्क्षरः-दुःक्षरः-सुक्षरः, क्षर्यमाणः, क्षार्यमाणः, क्षरितुम्, क्षारयितुम्, क्षर्तिः, क्षारणा, क्षरणम्, क्षारणम्, क्षरित्वा, क्षारयित्वा, विक्षर्य विक्षार्य।

**(८५२) षह—(सह) मर्षणे**। (क्षमा करना, सहन करना)। सक.। सेट्। आत्मने.।

१ सहते '**धात्वादेः षः सः**' इति षस्य सः। २ सेहे सहाते सेहिरे। ३ **प्र.** सहिता-सोढा '**तीषसहलुभरुषरिषः**' इच्छत्यादेः परस्य तासेरार्धधातुकस्य इड्वा स्यात्। **म.** सहितासे-सोढासे। ४ सहिष्यते। ५ सहताम्। ६ असहत। ७ सहेत। ८ सहिषीष्ट। ९ असहिष्ट।

**कर्मणि**—सह्यते। **णिचि**—साहयति-ते। **सनि**—सिसहिषते। **यङि**—सासह्यते। **यङ्लुकि**—सासहीति-सासोढि। परिसोढि। **कृत्सु**—साहकः-हिका, सिसहिषकः[१]-षिका, सासहकः-हिका, सोढा-सोढ्री[२]-सहिता-त्री, साहयिता-त्री, परिषहमाणः[३]-निषहमाणः-विषहमाणः, विसहनेकृत्य,[४] साह्वान्[५], सह्यम्[६], पृतनाषाट्[७]-ऋताषाट्-तुराषाट्,

१ अत्र उत्तरखण्डस्य षत्वं क्षीरतरङ्गिणीटिप्पणकार अभिप्रैति। तत्र निदानं न पश्यामः। प्रत्युत 'स्तौतिण्योरेव—' (८-३-६१) इति नियमात् षत्वनिषेध एवं प्रामाणिकः।

२ तासेरार्धधातुकस्य 'तीषसह—' (७-२-४८) इती विकल्पः। इट्पक्षे सहिता। इडभावपक्षे। 'सहिवहोरोद् अर्वस्य' (६-३-१२) इत्योकारः। 'हो ढः' (८-२-३१) इति ढत्वम्। तकारस्य धत्वम्, तस्य ष्टुत्वेन ढकारः। 'ढो ढे लोंपः (८-३-१३) इति पूर्वढकारस्य लोपः। पर्जन्यवल्लक्षणं प्रवर्तते (परि. १२०) इति न्यायेन ओकारस्य 'ढ्रलोपे—' (६-३-१११) इति दीर्घः। एवं तव्यदादिष्वपि ज्ञेयम्।

३ 'परिनिविभ्यः सेवसितसयसिवुसह—' (८-३-७०) इति षत्वम्।

४ 'विसहने' इति साक्षात्प्रभृतिषु (१-४-७४) पाठात् विपूर्वकत्वेऽपि 'परिनिविभ्यः—' (८-३-७०) इति षत्वं न। विपूर्वकात् सहतेः ल्युटि साक्षात् प्रमृतिषु पाठात् कृञो योगे गतिसंज्ञायाम्, 'समासेऽनञ्पूर्वे—' (७-१-३६) इति क्त्वाप्रत्ययस्य ल्यबादेशे, गणे निपातनादेव एदन्तत्वम्। सिहनेकृत्य = क्षान्त्वा इत्यर्थः।

५ दाश्वान् साह्वान् मीढ्वांश्च' (६-१-१२) इत्यत्र निपातनाद् छन्दसि लोके च सहतेः क्वसौ परस्मैपदम्, उपधादीर्घत्वम्, अद्विर्वचनम्, अनिट्त्वं च। 'साह्वान् = वलाहकः' इति काशिका।

६ 'शकिसहोश्च' (३-१-९९) इति यत्। ण्यतोऽपवादः।

७ 'छन्दसि सहः' (३-२-६३) इति ण्विप्रत्ययः। णित्वादुपधावृद्धिः। प्रत्ययः सर्वलोपी। 'अन्येपामपि दृश्यते' (६-३-१३६) इति पूर्वपदस्य दीर्घः। 'सहेः साढः सः (८-३-५६) इति मूर्धन्यादेशः। द्वितीयादिषु तु 'सहेः पूर्वपतनाभ्यां च' (८-३-१०९) इति षत्वम्। एलं जलापाट् इत्यादिषु चेति बोध्यम्।

सहन,[१] सहमानः,[२] सहिष्णुः,[३] साहयः,[४] सर्वसहः[५]- शत्रुंसहः, सर्वसहा,[६] भोक्तुं सहमानः[७], सासहिः[८], साहः-,[९] सहः, उत्साही,[१०] सहित्रम्[११], सिसाहयिषुः[१२], षट्[१३], सहसान,[१४] साहयित्वा, सहितुम्, साहयितुम्, सहन्-न्ती, विसह्य, सह्यमानः, सह्यम्, सोढुम्, सोढ्वा।

(८५३) **रमु—क्रीडायाम्।** (रमन करना, क्रीडा करना, खेलना)। **आ**—(पर.) **उप**—(उभय.) **वि**—(पर.) विराम करना, स्थिर रहना, आराम करना)। अकर्म.। अनिट्। आत्मने.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | रमते | रमेते | रमन्ते | प्र. |
| | रमसे | रमेथे | रमध्वे | म. |
| | रमे | रमावहे | रमामहे | उ. |
| लिट् | रेमे | रेमाते | रेमिरे | प्र. |
| | रेमिषे | रेमाथे | रेमिध्वे | म. |
| | रेमे | रेमिवहे | रेमिमहे | उ. |
| लुट् | रन्ता | रन्तारौ | रन्तारः | प्र. |
| | रन्तासे | रन्तासाथे | रन्ताध्वे | म. |
| | रन्ताहे | रन्तास्वहे | रन्तास्महे | उ. |
| लृट् | रंस्यते | रंस्येते | रंस्यन्ते | प्र. |
| | रंस्यसे | रंस्येथे | रंस्यध्वे | म. |
| | रंस्ये | रंस्यावहे | रंस्यामहे | उ. |

१ 'अनुदात्तेतश्च हलादेः' (३-२-१४९) इति ताच्छीलिको युच्।
२ सोढुं शक्नोतीत्यर्थे, 'ताच्छील्यवयोवचनशक्तिषु–' (३-२-१२९) इती चानश्।
३ तच्छीलादुषु कर्तृषु 'अलंकृञ्–' सहचर इष्णुच्' (३-२-१३६) इतीष्णुच् प्रत्ययः।
४ ण्यन्तात् कर्तरि 'अनुपसर्गात् सहिभ्यश्च' (३-१-१३८) इति श प्रत्ययः। प्रत्ययस्य शित्वात् 'कर्तरिशप्' (३-१-६८) इति शप्। साहयतीति साहयः।
५ सर्वं सहते इति सर्वसहः। 'संज्ञायां भृतृवृजिधारिसहि–' (३-२-४६) इति खच् प्रत्ययः। 'अरुर्द्विषत्–' (६-३-६७) इति पूर्वपदस्य मुमागमः। सर्वसहः = अतीव सूक्ष्मबुद्धिः। एवं शत्रुंसह इत्याद्यपि।
६ 'पूः सर्वयोर्दारिसहोः' (३-२-४१) इति खच्। 'पूर्ववत् नुम्। सर्वसहा = वसुमती। संज्ञाऽत्र।
७ 'शकधृषज्ञाग्लाघटरभलभक्रमसह–' (३-४-६५) इति सहधातौ उपपदे धातोस्तुमुन्।
८ 'सहिवहिचलिपतिवदिभ्यो यङन्तेभ्यः–' (वा. ३-२-१७१) इति किः किन् वा प्रत्ययः। प्रत्ययस्य लिड्वद् भावात् द्विर्वचनादिकम् इति केचित्। वस्तुतो यङन्तादेव विधानात् 'सन्यङो' (६-१-९) इति द्विर्वचमिति न्याय्यम्।
९ ज्वलादित्वात् (३-१-१४०) कर्तरि ण प्रत्ययः। तस्य वैकल्पिकत्वात् पक्षे पचाद्यच्।
१० उत्पूर्वकादस्माद् ग्रह्यादि (३-१-१३४) पाठात् कर्तरि णिनिः।
११ 'अर्तिलूधूसूखनसह–' (३-२-१८४) इति करणे इत्र प्रत्ययः।
१२ ण्यन्तात् सनि उप्रत्यये रूपमेंवम्। उत्तरखण्डे 'सः स्विदिस्वदिसहीनां च' (८-३-६२) इति सत्वम्, 'स्तौति–' (८-३-६१) इति नियमस्य बाधकोऽयम्।
१३ सहेः षष् लुक् च' (द.उ. ९-७) इति धातोः षषादेशः, कनिन्प्रत्ययस्य लुक् च। षट् = संख्याविशेषः।
१४ औणादिके (द.उ. ५-३०) असानच् प्रत्यये रूपम्। सहसानः = क्षमावान्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लोट् | रमताम् | रमेताम् | रमन्ताम् | प्र. |
| | रमस्व | रमेथाम् | रमध्वम् | म. |
| | रमै | रमावहै | रमामहै | उ. |
| लङ् | अरमत | अरमेताम् | अरमन्त | प्र. |
| | अरमथाः | अरमेथाम् | अरमध्वम् | म. |
| | अरमे | अरमावहि | अरमामहि | उ. |
| वि. लि. | रमेत | रमेयाताम् | रमेरन् | प्र. |
| | रमेथाः | रमेयाथाम् | रमेध्वम् | म. |
| | रमेय | रमेवहि | रमेमहि | उ. |
| आ. लि. | रंसीष्ट | रंसीयास्ताम् | रंसीरन् | प्र. |
| | रंसीष्ठाः | रंसीयास्थाम् | रंसीध्वम् | म. |
| | रंसीय | रंसीवहि | रंसीमहि | उ. |
| लुङ् | अरंस्त | अरंसाताम् | अरंसत | प्र. |
| | अरंसथाः | अरंसाथाम् | अरन्ध्वम्-अरन्द्ध्वम् | म. |
| | अरंसि | अरंस्वहि | अरंस्महि | उ. |
| लृङ् | अरंस्यत | अरंस्यताम् | अरंस्यत | प्र. |
| | अरंस्यथाः | अरंस्येथाम् | अरंस्यध्वम् | म. |
| | अरंस्ये | अरंस्यावहि | अरंस्यामहि | उ. |

**कर्मणि**—रम्यते। **णिचि**—रमयति-ते। अरीरमत्-त। **सनि**—रिरंसते। **यङि**—रंरम्यते। **यङ्लुकि**—रंरन्ति रंरमीति। **कृत्सु**—रामकः[1]-मिका, रमकः[2]-मिका, रिरंसकः[3]-सिका, रंरमकः[4]-मिका, रन्ता[5]-रन्त्री, रमयिता-त्री, रिरंसिता-त्री, रंरमिता-त्री, विरमन्[6]-आरमन्-परिरमन्-न्ती, देवदत्तम्[7] उपरमन्, यावद्भुत्तम्[8] उपरमन्, रमयन्-न्ती,

१ उदात्तोपदेशाभावात् वृद्धिनिषेधो नात्र प्रवर्तते। एवमेव बुद्धियोग्येषु धञादिषु सर्वत्र बोध्यम्।

२ अमन्तत्वेन 'अनीजृषक्नसुरञ्जोऽमन्ताश्च' (ग.सू. भ्वादिषु) इति मित्संज्ञायाम्, 'मितां ह्रस्वः' (६-४-९२) इति णौ उपधाया ह्रस्वः। एवं ण्यन्ते सर्वत्र बोध्यम्।

३ 'यमिर्त्रमन्तेष्वनिडेक इष्यते रमिश्च' (व्याघ्रभूतिकारिका (७-२-१०) इति वचनात् अनिट्त्वम्। सनि परतो मकारस्यानुस्वारे रूपमेवं सर्वत्रेति बोध्यम्।

४ यङन्ते सर्वत्र 'नुगतोऽनुनासिकान्तस्य' (७-४-८५) नुमागमः।

५ धातोरनिड्त्वात् धातुमकारस्यानुस्वारे परसवर्णे च रूपमेवम्।

६ 'व्याङ्परिभ्यो रमः' (१-३-८३) इति वचनात् वि, आङ् परिपूर्वकादस्माच्छता।

७ 'उपाच्च' (१-३-८४) इति परस्मैपदं शता। न च उपपूर्वकस्य रमेरकर्मकत्वात् कथं 'देवदत्तमुपरमन्' इति सकर्मकप्रयोगोपपत्तिरिति वाच्यम्। 'अन्त' भावितण्यर्थोऽत्र सकर्मकः।' इति क्षीरतरङ्गिण्याद्युक्तेः देवदत्तमुपरमयन् इत्यर्थकत्वादिति ज्ञेयम्। 'अन्तर्भावितः = बुध्याऽनु प्रवेशितो ण्यर्थः = प्रयोज्यप्रयोजकभावो यस्य स तथोक्तः। एवं विधस्य तस्य प्रयोज्येन कर्मणा सकर्मकत्वमुपपद्यत एव।' इति न्यासोक्तिरहप्यवधार्या।

८ 'विभाषाऽकर्मकात्' (१-३-८५) इति परस्मैपदं, शता। मोजनाद् भोजनान्निवर्तते इत्यर्थः। पक्षे यथाप्राप्तमात्मनेपदमपि साधु।

विरिरंसन्[१]-आरिरंसन्-परिरंसन्- देवदतम् उपरिरंसन्-न्ती, विरंस्यन्-न्ती-ती, आरंस्यन्, परिरंस्यन्, देवदत्तम् उपरंस्यम्, रमयिष्यन्-न्ती-ती, रममाणः, यावद्भुक्तमुपरममाणः, रमयमाणः, रिरंसमानः, रंरम्यमाणः, रंस्यमानः, उपरंस्यमानः, रमयिष्यमाणः, रिरंसिष्यमाणः, रंरमिष्यमाणः, सुरत्[२]-सुरतौ-सुरतः, रतम्[३]-रतः-रतवान्, रमितः, रिरंसितः, रंरमितः-तवान्, रमः[४]-रमा, रामः-रामा, रामः[५], रम्यः,[६] रमणीयः, रेमिः,[७] रन्तिः,[८] रतिः, रमणः,[९] स्तम्बेरमः,[१०] मनोरमा[११], रिरंसुः-रिरमयिषुः, रंरमः, रन्तव्यम्, रमयितव्यम्, रिरंसितव्यम्, रंरमितव्यम्, रमणीयम्, रिरंसनीयम्, रंरमणीयम्, रम्यम्, रिरंस्यम्, रंरम्यम्, ईषद्रमः, दुरमः-सुरमः, रम्यमाणः, रिरंस्यमानः, रंरम्यमाणः, उपरमम्ः[१२], आरामः[१३], रिरंसः, रंरमः, रन्तुम्, रमयितुम्, रिरंसितुम्, रंरमितुम्, रतिः, रमणा, रिरंसा-रिरमयिषा, रंरमा, रमणम्, रिरंसनम्, रंरमणम्, रत्वा[१४], रमयित्वा, रिरंसित्वा,

१ 'पूर्ववत् सनः' (१-३-६२) इति सन्नन्ताच्छतुरुपपत्तिर्ज्ञेया ।

२ 'गमादीनामिति वक्तव्यम्' (६-४-४०) इति वचनात् क्विपि अनुनासिकलोपः । तुक् च भवति ।

३ निष्ठायाम्, 'अनुदात्तोपदेशवनतितनोत्यादीनाम् अनुनासिकलोपो झलि क्ङिति' (६-४-३७) इत्यनुनासिकलोपः । एवमेव क्त्वाक्तिन् प्रभृतिष्वपीति ज्ञेयम् ।

४ 'ज्वलितिकसन्तेभ्यो णः' (३-१-१४०) इति कर्तरि णप्रत्ययो विकल्पेन । णप्रत्ययपक्षे रामः इति भवति । पक्षे पचादित्वादौत्सर्गिकेऽच् प्रत्यये रमः इति भवति । स्त्रियां टापि रमा, रामा इति भवति ।

५ 'हलश्च' (३-३-१२१) इति संज्ञायं घञि रूपमिति केचित् । अन्ये तु 'रमन्ते योगिनो यास्मन् चिदानन्दे परमात्मनि ।' इत्यादिवचनानुसारेणाधिकरणे, 'अकर्तरि च कारके संज्ञायाम्' (३-३-१९) इति घञ् इति साधयन्ति ।

६ 'पोरदुपधात्' (३-१-९८) ण्यदपवादो यत्प्रत्ययः । अयं च बाहुलकात् कर्तरि भवति । एवमेव रमणीयः इत्यत्रापि बाहुलकादेवानीयरिति प्रक्रियासर्वस्वम् ।

७ 'उत्सर्गश्छन्दसि सदादिभ्यो दर्शनात्' (वा. ३-३-१७१) इति वचनात् कि प्रत्ययोऽथवा किन् प्रत्ययः । छन्दसि विषये 'सेदिः, मेनिः, 'रेमिः–' इत्यादीनां किकिन्नन्तानां बहूनां शब्दानां दर्शनात् 'आदृगमहनजनः किकिनौ लिट् च' (३-२-१७१) इत्यत्र परिगणनं मास्तु । किं तु औत्सर्गित्वं किकिनोः इति प्रकृतवार्तिकार्थः । किकिनोः प्रत्यययोर्लिड्वद् भावातिदेशात् द्विर्वचनम् । एत्वाभ्यासलोपौ च भवतः ।

८ 'क्तिच्क्तौ च संज्ञायाम्' (३-३-१७४) इति क्तिच् । 'न क्तिचि दीर्घश्च' (६-४-३९) इति दीर्घानुनासिकलोपनिषेधः ।

९ रतिरिति मन्मथपत्न्युच्यते । अत्र बाहुलकात् 'स्त्रियां क्तिन्' (३-३-९४) इति संज्ञायां क्तिन् । अनुनासिकलोपः । 'अकर्तरि च कारके संज्ञायाम्' (३-३-१९) इत्यतोऽत्र (३-३-९४) 'संज्ञायाम्' इत्यनुवर्तने । 'संज्ञायाम्' (३-३-१०९) इति प्राप्तस्य ण्वुलोऽपवादः । नन्द्यादित्वात् (३-१-१३४) ण्यन्तात् कर्तरि ल्युः । रमणी इति तु गौरादि (४-१-४१) पाठात् ङीषि साधुः ।

१० 'स्तम्बकर्णयो रमिजपोः' (३-२-१३) इति स्तम्बरूपे सुबन्ते उपपदे रमेरच् प्रत्ययः । स च 'हस्तिसूचकयोरिति वक्तव्यम्' (वा. ३-२-१३) इति नियमात् गजविषय एव । स्तम्बे रमत इति स्तम्बेरमः = हस्ती । 'हलदन्तात् सप्तम्याः संज्ञायाम्' (६-३-९) इति, 'तत्पुरुषे कृति बहुलम्' (६-३-१४) इति वा सप्तम्या अलुक् ।

११ मनांसि रमयतीति 'मनोरमा' ण्यन्तात् कर्मण्यणि, बाहुलकत्वेन अजादिषु (४-१-४) पाठात् ङीपं बाधित्वा टाप् । प्रौढमनोरमा, बालमनोरमा इत्याद्यभिधानमेव टाबन्ते, तत्रापि बाहुलकाश्रयणे बीजमिति ज्ञेयम् । 'अभिधानलक्षणाः कृत्तद्धितसमासान्ताः' इति भाष्ये सकृदुक्तमिहावधेयम् ।

१२ 'यम उपरमे' इति धातुकोशेषु निर्देशात् बाहुलकात् भावेऽप् प्रत्ययोऽत्र घञपवाद इति ज्ञेयम् ।

१३ आरमन्त्यस्मिन् इत्यारामः = उपवनम् । 'अकर्तरि च कारके–' (३-३-१९) इति संज्ञायाम् घञ् ।

१४ ये तु 'रमु–' इति धातुममुं पठन्ति, तेषां, 'उदितो वा' (७-२-५६) इति क्त्वायामिड्विकल्पे रमित्वा-रत्वा इति रूपद्वयं भवति । परं तु 'तत्' (=उदित्वम्) महान्तो न सहन्ते । इति माधावाद्युक्तेः उदित्त्वमस्यापाणिनीयमिति ज्ञेयम् ।

रंमित्वा, विरम्य-विरत्य, विरमय्य,[1] विरिरंत्य, विरंरम्य, रमतिः,[2] रण्डा,[3] रत्नम्,[4] सुरतः-सूरतः,[5] रथः,[6] रमण्यम्,[7] रहः[8]।

**(८५४) षद्लृ—विशरणगत्यवसादनेषु**। (जाना, चलना, शक्तिहीन होना, म्लान होना, सूखना, मुर्झाना, नष्ट करना)। **अव**—थकना, बलहीन होना। **समा**—प्राप्त होना। **उत्**—ऊपर चढ़ना। **उप**—पास जाना। **प्र**—सुखी होना। **वि**—अशान्त चित्त होना, दुखी होना, श्रान्त होना। **सम्**—इच्छितार्थ की प्राप्ति होना। गतौ सकर्म.। अनिट्। परस्मै.।

**पाघ्राध्मास्थाम्नादाण्दृश्यर्तिसर्तिशदसदां-पिबजिघ्रधमतिष्ठमनयच्छपश्यर्च्छ-धौशीयसीदाः**। पादीनां पिबादयःस्युःइत्संज्ञक शकारादौ प्रत्यये परे।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | सीदति | सीदतः | सीदन्ति | प्र. |
| | सीदसि | सीदथः | सीदथ | म. |
| | सीदामि | सीदावः | सीदामः | उ. |
| लिट् | ससाद | सेदतुः | सेदुः | प्र. |
| | सेदिथ-ससत्थ | सेदुथः | सेद | म. |
| | ससाद-ससद | सेदिव | सेदिम | उ. |

इत्संज्ञकशकारादिप्रत्ययाभावात् न सीदादेशः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुट् | सत्ता | सत्तारौ | सत्तारः | प्र. |
| | सत्तासि | सत्तास्थः | सत्तास्थ | म. |
| | सत्तास्मि | सत्तास्वः | सत्तास्मः | उ. |
| लृट् | सत्स्यति | सत्स्यतः | सत्स्यन्ति | प्र. |
| | सत्स्यसि | सत्स्यथः | सत्स्यथ | म. |
| | सत्स्यामि | सत्स्यावः | सत्स्यामः | उ. |
| लोट् | सीदतु-सीदतात् | सीदताम् | सीदन्तु | प्र. |
| | सीद-सीदतात् | सीदतम् | सीदत | म. |
| | सीदानि | सीदाव | सीदाम | उ. |

---

१ 'वा ल्यपि' (६-४-३८) इति अनुनासिकलोपविकल्पः। तत्र 'वाऽमः' (वा. ६-४-३७) इति वचनात् अमन्तानाम-नुदात्तोपदेशानां धातूनां विकल्पेनानुनासिकलोप इति विज्ञायते। एतदेव व्यवस्थितविभाषात्वेन तत्र तत्रोच्यते।

२ 'रमेर्नित्' (द.उ. १-३२) इत्यतिप्रत्यये रूपम्। रमन्यस्यामिति रमतिः = क्रीडा। यद्यपि 'इक्श्तिपौ धातुनिर्देशे' (वा. ३-३-१०८) इति श्तिपि, शित्वाच्छपि रमतिः इति सिद्ध्यति, तथापि तत्र भावार्थकत्वात् अधिकरणार्थत्वलाभाय दशपाद्युणादिषु पाठ इति बोध्यम्।

३ 'ममन्ताड्डः' (द.उ. ५-७), इति डप्रत्ययः। बाहुलकात् 'चुटू' (१-३-७) इति डकारस्येत्संज्ञा न। 'ञम्' इति 'ञमङणनम्' इत्यस्य प्रत्याहारः उणादिषु दृश्यते।

४ 'रमेस्त च' (द.उ. ५-४६) इति न प्रत्ययः, तकारश्चान्तादेशः। रमन्तेस्मिन् इति रत्नम् = वैडुर्यादिः।

५ 'सो रमे क्तो दमे पूर्वपदस्य च दीर्घः' (द.उ. ६-२३) इति क्तप्रत्यये पाक्षिके पूर्वपददीर्घे च सुरतः-सूरतः इति सिध्यतः। सूरतः = बुधः।

६ 'हनिकुषिनीरमि–' (द.उ. ६-२७) इत्यादिना क्थन्- प्रत्ययः। उपधानकारलोपश्च।

७ 'शृरम्योश्चः। (द.उ. ८-८) इति अन्य प्रत्ययः। रमण्यम् = शोभनम्।

८ 'रमेदेशे हश्च' (द.उ. ९-७४) इति असुन् प्रत्ययो देशे गम्यमाने हकारश्चान्तादेशः। रमन्ते स्मिन् इति रहः = विविक्तदेशः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लङ् | असीदत् | असीदताम् | असीदन् | प्र. |
| | असीदः | असीदतम् | असीदत | म. |
| | असीदम् | असीदाव | असीदाम | उ. |
| वि. लि. | सीदेत् | सीदेताम् | सीदेयुः | प्र. |
| | सीदेः | सीदेतम् | सीदेत | म. |
| | सीदेयम् | सीदेव | सीदेम | उ. |
| आ. लि. | सद्यात् | सद्यास्ताम् | सद्यासुः | प्र. |
| | सद्याः | सद्यास्तम् | सद्यास्त | म. |
| | सद्यासम् | सद्यास्व | सद्यास्म | उ. |
| लुङ् | असदत् | असदताम् | असदन् | प्र. |
| | असदः | असदतम् | असदत | म. |
| | असदम् | असदाव | असदाम | उ. |
| लृङ् | असत्स्यत् | असत्स्यताम् | असत्स्यन् | प्र. |
| | असत्स्यः | असत्स्यतम् | असत्स्यत | म. |
| | असत्स्यम् | असत्स्याव | असत्स्याम | उ. |

**कर्मणि**—सद्यते। **णिचि**—सादयति-ते। **सनि**—निषिषत्सति। **यङि**—सासद्यते। **यङ्लुकि**—सासदीति-सासत्ति। **कृत्सु**—सदनीयम्, सदनम्, सादकः-दिका, सन्नः-सन्नवान्, सत्तिः, सत्तव्यम्, सत्तुम्, सत्त्वा, प्रसद्य, साद्याम्, सीदन्, सत्स्यन्, सद्यमानः, सत्स्यमानः, मनिनि-सद्म, प्रसन्नः, अवसन्नः, अवसादः, उत्सन्नः, उत्सादः, आसन्नः, आसत्तिः, सत्ता[१]-सत्री, सादयिता-त्री, सिषत्सिता-त्री, सासदिता-त्री, निषीदन्-प्रतिसीदन्[२]-न्ती, निषादः[३], सादः-सदः, प्रासाद[४]:, उपनिषत्[५]-परिषत्-शुचिषत्-द्युसत्-दिविषत्, बृसी[६], विषण्णः[७]-विषण्णवान्, निषिषत्सुः,[८]

---

१ धातोरनिट्त्वम्। दकारस्य चर्त्वेन तकारः। एवं तव्यदादिष्वपि।

२ शर्तरि 'पाघ्राध्मा–' (७-३-७८) इति सीद इति सर्वादेशः। 'सदिरप्रतेः' (८-३-६६) इति इणन्तादुपसर्गात् परस्य सदिसकारस्य षत्वे रूपमेवम्। 'अप्रतेः' इत्युक्तत्वात् प्रतिसीदन् इत्यत्र न षत्वम्। उपसर्गप्रकरणात् 'नि' इति कर्मप्रवचनीयस्य न षत्वम्।

३ 'ज्वलितिकसन्तेभ्यः–' (३-१-१४०) इति कर्तरि णः। निषादः = वन्यजातिविशेषः।

४ 'अकर्तरि च कारके संज्ञायाम्' (३-३-१९) इत्यधिकरणे घञ्। प्रसीदन्ति धनिनोऽस्मिन् इति प्रासादः = धनिनां वासः। 'उपसर्गस्य घञि–' (६-३-१२२) इति 'प्र' इत्यस्य दीर्घः। संज्ञायामेव मनुष्यभिन्नेऽपि स्थले दीर्घः, अन्यत्र न, ततश्च 'प्रसादः' इत्यत्र न।

५ उप निषीदन्ति, उप निषादयन्ति वा इति उपनिषत्। स्त्रियां सम्पदादित्वात् (वा. ३-३-१०८) क्विपि षत्वे च रूपमेवम्।

६ बुवन्तः सीदन्त्यस्यामिति बृसी = मुनीमासनम्। पृषोदरादित्वात् बुवच्छब्दस्य 'बृ' इत्यादेशः। सदेरधिकरणे डट्प्रत्ययः। टित्वात् स्त्रियां ङीप्।

७ 'रदाभ्यां–' (८-२-४२) इति निष्ठातकारस्य धातुदकारस्य च नकारः। षत्वम् णत्वञ्च।

८ सन्नन्तादुप्रत्ययः। 'स्थादिष्वभ्यासेन–' (८-३-६४) इति पूर्वोत्तरखण्डयोः षत्वम्।

सेदिवान्,[1] सद्रुः,[2] निषद्या[3], सादी,[4] सेदिः[5], सदः,[6] निषिद्वरः,[7] सादिः,[8] सत्रम्[9]।

(८५५) **शद्लृ—शातने**। (जीर्ण होना। धीरे-धीरे कम होना, मुरझाना, गिरना, नीचे फेंकना)। अक.। अनिट्। परस्मै.। पाघ्राध्मेति शीयादेशः। '**शदेःशितः**' इत्यात्मनेपदम्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | शीयते | शीयेते | शीयन्ते | प्र. |
| | शीयसे | शीयेथे | शीयध्वे | म. |
| | शीये | शीयावहे | शीयामहे | उ. |
| लिट् | शशाद | शेदतुः | शेदुः | प्र. |
| | शेदिथ-शसत्थ | शेदथुः | शेद | म. |
| | शशाद-शशद | शेदिव | शेदिम | उ. |
| लुट् | शत्ता | शत्तारौ | शत्तारः | प्र. |
| | शत्तासि | शत्तास्थः | शत्तास्थ | म. |
| | शत्तास्मि | शत्तास्वः | शत्तास्मः | उ. |
| लृट् | शत्स्यति | शत्स्यतः | शत्स्यन्ति | प्र. |
| | शत्स्यसि | शत्स्यथः | शत्स्यथ | म. |
| | शत्स्यामि | शत्स्यावः | शत्स्यामः | उ. |
| लोट् | शीयताम् | शीयेताम् | शीयन्ताम् | प्र. |
| | शीयस्व | शीयेथाम् | शीयध्वम् | म. |
| | शीयै | शीयावहै | शीयामहै | उ. |
| लङ् | अशीयत | अशीयेताम् | अशीयन्त | प्र. |
| | अशीयथाः | अशीयेथाम् | अशीयध्वम् | म. |
| | अशीये | अशीयावहि | अशीयामहि | उ. |
| वि. लि. | शीयेत | शीयेयाताम् | शीयेरन् | प्र. |
| | शीयेथाः | शीयेयाथाम् | शीयेध्वम् | म. |
| | शीयेय | शीयेवहि | शीयेमहि | उ. |
| आ. लि. | शद्यात् | शद्यास्ताम् | शद्यासुः | प्र. |
| | शद्याः | शद्यास्तम् | शद्यास्त | म. |
| | शद्यासम् | शद्यास्व | शद्यास्म | उ. |

१ लिटः 'भाषायां सदवस–' (३-२-१०८) इति क्वसुप्रत्ययः, एत्वाभ्यासलोपः। 'वस्वेकाच्–' (७-२-६८) इतीडागमः।

२ 'दाघेट्–' (३-२-१५९) इति तच्छीलादिषु कर्तृषु रुप्रत्ययः।

३ स्त्रियां 'संज्ञायां समजनिषद–' (३-३-९९) इत्यादिना अकर्तरि क्यप्प्रत्ययः। निषद्या = वासस्थानम्।

४ साधुकारिणि णिनिप्रत्ययः। सादी = अश्वोपरि स्थित्वा युध्यमानः।

५ 'सदादिभ्यो दर्शनात्' (वा. ३-२-१७१) इति वचनात् भाषायां किप्रत्ययः। छन्दस्येवायम्। प्रत्ययस्य लिङ्वद् भावाद् एत्वाभ्यासलोपौ।

६ औणादिकेऽसुन् प्रत्यये रूपम्। सदः = सभा।

७ 'नौ सदेः' (द.उ. ८-४८) इति वरच्प्रत्ययः। निषद्वरः = कामः, कर्दमश्च।

८ 'इण् अजादिभ्यः' (वा. ३-३-१०८) इति इण्। सादिः = अश्वस्थो योद्धा।

९ औणादिके (द.उ. ८-८९) त्र प्रत्यये रूपम्। धातुदकारस्य चर्त्वेन तकारः। सत्त्रम् = यागविशेषः, अन्नशाला च।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुङ् | अशदत | अशदताम् | अशदन् | प्र. |
| | अशदः | अशदतम् | अशदत | म. |
| | अशदम् | अशदाव | अशदाम् | उ. |
| लृङ् | अशत्स्यत | अशत्स्यताम् | अशत्स्यन् | प्र. |
| | अशत्स्यः | अशत्स्यतम् | अशत्स्यत | म. |
| | अशत्स्यम् | अशत्स्याव | अशत्स्याम | उ. |

**भावे**—शद्यते। **णिचि**—शादयति-शातयति- **'शदेरगतौ तः'** (७-३-४२) शदेर्णौ तोऽन्तादेशः स्यान्नतु गतौ। शायति =नाशयतीत्यर्थः। शादयति गमयतील्यर्थः। **सनि**—शिशत्सति। **यङि**—शाशद्यते। **यङ्लुकि**—शाशत्ति-शाशदीति। **कृत्सु**—शादकः-दिका, शता-शत्री, शादयिता-त्री, शत्तव्यम्, शदनीयम्, शाद्यम्, शन्नः, शीयमानः,[१] शत्तुम्, शदनम्, शत्त्वा, विशद्य, शदन्-न्ती, शादयन्-न्ती, शदिष्यन्-न्ती, शादयिष्यन्-न्ती-ती, शदमानः, शादयमानः, शदिष्यमाणः, शादयिष्यमाणः, शादः[२], शदः, शाद्वलम्, शद्रुः, शत्रुः[३]।

**(८५६) क्रुश—आह्वाने रोदने च।** (पुकारना। रोना)। **अनु**—दया करना। **आ**—निन्दा करना। गाली देना। **उप**—दाग लगाना, दोष देना। **प्र**—जोर से पुकारना आद्ये सकर्म.। अनिट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | क्रोशति | क्रोशतः | क्रोशन्ति | प्र. |
| | क्रोशसि | क्रोशथः | क्रोशथ | म. |
| | क्रोशामि | क्रोशावः | क्रोशामः | उ. |
| लिट् | चुक्रोश | चुक्रुशतुः | चुक्रुशुः | प्र. |
| | चुक्रोशिथ | चुक्रुशथुः | चुक्रुश | म. |
| | चुक्रोश | चुक्रुशिव | चुक्रुशिम | उ. |
| लुट् | क्रोष्टा | क्रोष्टारौ | क्रोष्टारः | प्र. |
| | क्रोष्टासि | क्रोष्टास्थः | क्रोष्टास्थ | म. |
| | क्रोष्टास्मि | क्रोष्टास्वः | क्रोष्टास्म | उ. |
| लृट् | क्रोक्ष्यति | क्रोक्ष्यतः | क्रोक्ष्यति | प्र. |
| | क्रोक्ष्यसि | क्रोक्ष्यथः | क्रोक्ष्यथ | म. |
| | क्रोक्ष्यामि | क्रोक्ष्यावः | क्रोक्ष्यामः | उ. |
| लोट् | क्रोशतु-तात् | क्रोशताम् | क्रोशन्तु | प्र. |
| | क्रोश-तात् | क्रोशतम् | क्रोशत | म. |
| | क्रोशानि | क्रोशाव | क्रोशाम | उ. |

१ 'शदेः शितः' (१-३-६०) इति आत्मनेपदम्। शिद्भावी यः शदिधातुः स तङं लभते इति निष्कृष्टोऽर्थः। विस्तरस्तु न्यासपदमञ्जर्यो र्दृष्टव्यः। 'पाघ्राध्मास्थाम्नादाण् दृश्यर्तिशदसदां पिबजिघ्रधमतिष्ठमनयच्छ-पश्यर्च्छधौशीयसीदाः' (७-३-७८) इति शिति प्रत्यये परे प्रकृतेः 'शीय' इति सर्वादेशः। एवञ्चास्य धातोः शता नेति अवधेयम्।

२ संज्ञायाम् घञ्। शादः = तृणविशेषः।

३ शातयतीति शत्रुः = अरिः। णिजन्तात् गतिभिन्नार्थे तकारान्तात् धातोः। 'रुशदिभ्यां त्रुन् (द.उ. १-१५९) इति त्रुन् प्रत्ययः। बाहुलकात् णेर्लोपः, वृद्ध्यभावश्च। प्रत्ययलक्षणेन णिजाश्रिता वृद्धिः। इत्यादिकमुह्यम्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लङ् | अक्रोशत् | अक्रोशताम् | अक्रोशन् | प्र. |
| | अक्रोशः | अक्रोशतम् | अक्रोशत | म. |
| | अक्रोशम् | अक्रोशाव | अक्रोशाम | उ. |
| वि. लि. | क्रोशेत् | क्रोशेताम् | क्रोशेयुः | प्र. |
| | क्रोशेः | क्रोशेतम् | क्रोशेत | म. |
| | क्रोशेयम् | क्रोशेव | क्रोशेम | उ. |
| आ. लि. | क्रुश्यात् | क्रुश्यास्ताम् | क्रुश्यासुः | प्र. |
| | क्रुश्याः | क्रुश्यास्तम् | क्रुश्यास्त | म. |
| | क्रुश्यासम् | क्रुश्यास्व | क्रुस्यास्म | उ. |
| लुङ् | अक्रुक्षत् | अक्रुक्षताम् | अक्रुक्षन् | प्र. |
| | अक्रुक्षः | अक्रुक्षतम् | अक्रुक्षत | म. |
| | अक्रुक्षम् | अक्रुक्षाव | अक्रुक्षाम | उ. |
| लृङ् | अक्रोक्ष्यत् | अक्रोक्ष्यताम् | अक्रोक्ष्यन् | प्र. |
| | अक्रोक्ष्यः | अक्रोक्ष्यतम् | अक्रोक्ष्यत | म. |
| | अक्रोक्ष्यम् | अक्रोक्ष्याव | अक्रोक्ष्याम | उ. |
| | अनुक्रोशति | आक्रोशति | उपक्रोशति | |

**कर्मणि**—क्रुश्यते। **णिचि**—क्रोशयति-ते। **सनि**—चुक्रुक्षति। **यङि**—चोक्रुश्यते। **यङ्लुकि**—चोक्रुशीति चोक्रोष्टि। **कृत्सु**—क्रोशकः-शिका, चुक्रुक्षकः-क्षिका, चोक्रुशकः-शिका, क्रोष्टा-ष्ट्री, क्रोशयिता-त्री, क्रोशन्-न्ती, क्रोशयन्-न्ती, चुक्रुक्षन्-न्ती, क्रोक्ष्यन्-न्ती-ती, क्रोशयिष्यन्-न्ती-ती, चुक्रुक्षिष्यन्-न्ती-ती, व्यतिक्रोशमानः, क्रोशयमानः, चोक्रुश्यमानः, व्यतिक्रोक्ष्यमाणः,क्रोशयिष्यमाणः,चोक्रुशिष्यमाणः,क्रुट्-ड्-क्रुशौ-क्रुशः,क्रुष्टम्-क्रुष्टः,क्रुष्टवान्, क्रोशितः, चुक्रुक्षितः, चोक्रुशितः-तवान्, क्रुशः, क्रोशः, बान्धवक्रोशी, आक्रोशकः, उष्ट्रक्रोशी, क्रोष्टव्यम्, क्रोशयितव्यम्, चुक्रुक्षितव्यम्, चोक्रुशितव्यम्, क्रोश्यम्, क्रुश्यमानः, क्रोश्यमानः, चुक्रुक्ष्यमाणः, चोक्रुश्यमाणः, क्रोष्टुम्, क्रोशयितुम्, चुक्रुक्षितुम्, चोक्रुक्षितुम्, आक्रुष्टिः, क्रोशनम्, चुक्रुक्षणम्, चोक्रुशनम्, क्रुष्ट्वा, क्रोशयित्वा, चोक्रुक्षित्वा, चोक्रुशित्वा। क्रोशनीयम्, क्रोश्यः, क्रुष्टः, क्रोशनम्, क्रोष्टुम्, उपक्रुश्य, आक्रुश्य, उपक्रोशः।

**(८५७) कुच—सम्पर्चनकौटिल्यप्रतिष्टम्भविलेखनेषु**। (सम्पर्क करना, स्वच्छ करना, स्पर्श करना, टेढा होना, लिखना, रेखा खींचना)। **सम्**—संकुचित होना। सक.। सेट्। पर.। कोचति २ चुकोच। ३ कोचिता। इत्यादि 'शोचति' (१८२) वत्।

**कृत्सु**—कोचकः-चिका, कोचिता-त्री, कोचयिता-त्री, कोचन्-न्ती, कोचयन्-न्ती, कोचिष्यन्-न्ती-ती, कोचयिष्यन्-न्ती-ती, कोचयमानः, कोचयिष्यमाणः, चोकुच्यमाणः, चोकुचिष्यमाणः, कुचितम्-कोचितम्, कुचः-कोचः, कोचितव्यम्, कोचयितव्यम्, कोचनीयम्, कोच्यम्, कुच्यमानः, कोच्यमानः, सङ्कोचः, कोचितुम्, कोचयितुम्, कुक्तिः, कोचना, कोचनम्, कुचित्वा-कोचित्वा, कोचयित्वा।

(८५८) **बुध—अवगमने**। (जानना, समझना)। **प्रति**—किसी को जगाना, जागना, **सम्**—अच्छी प्रकार से जानना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | बोधति | बोधतः | बोधन्ति | प्र. |
| | बोधसि | बोधथः | बोधथ | म. |
| | बोधामि | बोधावः | बोधामः | उ. |
| लिट् | बुबोध | बुबुधतुः | बुबुधुः | प्र. |
| | बुबोधिथ | बुबुधथुः | बुबुध | म. |
| | बुबोध | बुबुधिव | बुबुधिम | उ. |
| लुट् | बोधिता | बोधितारौ | बोधितारः | प्र. |
| | बोधितासि | बोधितास्थः | बोधितास्थ | म. |
| | बोधितास्मि | बोधितास्वः | बोधितास्म | उ. |
| लृट् | बोधिष्यति | बोधिष्यतः | बोधिष्यन्ति | प्र. |
| | बोधिष्यसि | बोधिष्यथः | बोधिष्यथ | म. |
| | बोधिष्यामि | बोधिष्यावः | बोधिष्यामः | उ. |
| लोट् | बोधतु-तात् | बोधताम् | बोधन्तु | प्र. |
| | बोध-तात् | बोधतम् | बोधत | म. |
| | बोधानि | बोधाव | बोधाम | उ. |
| लङ् | अबोधत् | अबोधताम् | अबोधन् | प्र. |
| | अबोधः | अबोदतम् | अबोधत | म. |
| | अबोधम् | अबोधाव | अबोधाम | उ. |
| वि. लि. | बोधेत् | बोधेताम् | बोधेयुः | प्र. |
| | बोधेः | बोधेतम् | बोधेत | म. |
| | बोधेयम् | बोधेव | बोधेम | उ. |
| आ. लि. | बुध्यात् | बुध्यास्ताम् | बुध्यासुः | प्र. |
| | बुध्याः | बुध्यास्तम् | बुध्यास्त | म. |
| | बुध्यासम् | बुध्यास्व | बुध्यास्म | उ. |
| लुङ् | अबोधीत् | अबोधिष्टाम् | अबोधिषुः | प्र. |
| | अबोधीः | अबोधिष्टम् | अबोधिष्ट | म. |
| | अबोधिषम् | अबोधिष्व | अबोधिष्म | उ. |
| लृङ् | अबोधिष्यत् | अबोधिष्यताम् | अबोधिष्यन् | प्र. |
| | अबोधिष्यः | अबोधिष्यतम् | अबोधिष्यत | म. |
| | अबोधिष्यम् | अबोधिष्याव | अबोधिष्याम | उ. |

**कर्मणि**—बुध्यते। **णिचि**—बोधयति। **सनि**—बुबुधिषति-बुबोधिषति। **यङि**—बोबुध्यते। **यङ्लुकि**—बोबुधीति-बोबोद्धि। **कृत्सु**—बुधितम्-तः, बोधितम्, बोधितव्यम्, बोधयित्वयम्, बोधनीयम्, बोध्यम्, बुध्यमानः, बोध्यमानः, बोधितुम्, बोधयितुम्, बोधनम्,

बुधित्वा, बोधित्वा, प्रबुध्य, बोधकः-धिका, बोधिता-त्री, बोधयिता-त्री, बुबोधिषकः बुबुधिषकः-षिका, बोबुधकः-धिका। बोधयन् शिष्यं धर्मम्। प्रबोधी-प्रतिबोधी, राज्ञां बोधितः-बुधितो वा, विबुधः-बोधः, अबिबोधयन्।

(८५९) **रुह—बीजजन्मनि = प्रादुर्भावे च**। (बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, जन्म होना, जन्म लेना)। **अति**—ऊपर चढ़ना, चढ़ना, **अव**—उतरना, नीचे आना, **आ**—आरूढ़ होना, ऊपर बैठना, ऊपर चढ़ना, **प्र**—ऊगना, अङ्कुर उत्पन्न होना। अक.। अनिट्। पर.। ज्वलादिः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | रोहति | रोहतः | रोहन्ति | प्र. |
| | रोहसि | रोहथः | रोहथ | म. |
| | रोहामि | रोहावः | रोहामः | उ. |
| लिट् | रुरोह | रुरुहतुः | रुरुहुः | प्र. |
| | रुरोहिथ | रुरुहथुः | रुरुह | म. |
| | रुरोह | रुरुहिव | रुरुहिम | उ. |
| लुट् | रोढा | रोढारौ | रोढारः | प्र. |
| | रोढासि | रोढास्थः | रोढास्थ | म. |
| | रोढास्मि | रोढास्वः | रोढास्म | उ. |
| लृट् | रोक्ष्यति | रोक्ष्यतः | रोक्ष्यन्ति | प्र. |
| | रोक्ष्यसि | रोक्ष्यथः | रोक्ष्यथ | म. |
| | रोक्ष्यामि | रोक्ष्यावः | रोक्ष्यामः | उ. |
| लोट् | रोहतु-तात् | रोहताम् | रोहन्तु | प्र. |
| | रोह-तात् | रोहतम् | रोहत | म. |
| | रोहाणि | रोहाव | रोहाव | उ. |
| लङ् | अरोहत् | अरोहताम् | अरोहन् | प्र. |
| | अरोहः | अरोहतम् | अरोहत | म. |
| | अरोहम् | अरोहाव | अरोहाम | उ. |
| वि. लि. | रोहेत् | रोहेताम् | रोहेयुः | प्र. |
| | रोहेः | रोहेतम् | रोहेत | म. |
| | रोहेयम् | रोहेव | रोहेम | उ. |
| आ. लि. | रुह्यात् | रुह्यास्ताम् | रुह्यासुः | प्र. |
| | रुह्याः | रुह्यास्तम् | रुह्यास्त | म. |
| | रुह्यासम् | रुह्यास्व | रुह्यास्म | उ. |
| लुङ् | अरुक्षत् | अरुक्षताम् | अरुक्षन् | प्र. |
| | अरुक्षः | अरुक्षतम् | अरुक्षत | म. |
| | अरुक्षम् | अरुक्षाव | अरुक्षाम | उ. |
| लृङ् | अरोक्ष्यत् | अरोक्ष्यताम् | अरोक्ष्यन् | प्र. |
| | अरोक्ष्यः | अरोक्ष्यतम् | अरोक्ष्यत | म. |
| | अरोक्ष्यम् | अरोक्ष्याव | अरोक्ष्याम | उ. |

**भावे**—रुह्यते। **णिचि**—रोहयति[१]-रोपयति। रुहः पोऽन्यतरस्याम्। **सनि**—रुरुक्षति। **यङि**—रोरुह्यते। **यङ्लुकि**—रोरोढि-रोरुहीति। **कृत्सु**—रोहकः-हिका, रोपकः[२]-पिका, रुरुक्षकः-क्षिका, रोरुहकः-हिका, रोढा-रोढ्री, रोपयिता-रोहयिता-त्री, रुरुक्षिता-त्री, रोरुहिता-त्री, रोहन्-न्ती, रोपयन्-रोहयन्-न्ती, रुरुक्षन्-न्ती, रोक्ष्यन्-न्ती-ती, रोपयिष्यन्-रोहयिष्यन्-न्ती-ती, रुरुक्षिष्यन्-न्ती-ती, रोपयमाणः-रोहमाणः, रोरुह्यमाणः, रोपयिष्यमाणः-रोहयिष्यमाणः, रोरुहिष्यमाणः, अम्बुरुट्-रुड्-रुहौ-रुहः, रुढम्-रुढः-रुढवान्, आरुढो वृक्षम्-आरुढो वृक्षः, रुढः, रोपितः-रोहितः, रोहितः, लोहितः-लोहिताया, रोहितकः, रोहितकं मुखम्, रुरुक्षितः, रोरुहितः-तवान् रुहः-रोहः, प्ररुह-प्ररोहः, पाणिरुहः-भूरुहः-उर्बीरुहः-शिरोरुहः-सरोरुहम्, न्यग्रोधः,[३] वीरुत्[४], विरोही[५]-रोहिणी, रोहणः,[६] रोपः-रोहः धान्यरोपी[७]-रुरुक्षुः-रोरोहः, रोढव्यम्, रोपयितव्यम्-रोहयितव्यम्, रुरुक्षितव्यम्, रोरुहितव्यम्, रोहणीयम्, रोपणीयम्, रोहणीयम्, रुरुक्षणीयम्, रोरुहणीयम्, रोह्यम्, रोप्यम्-रोह्यम्, रुरुक्ष्यम्, रोरुह्यम्, रुह्यमाणः, रोप्यमाणः-रोह्यमाणः, रुरुक्ष्यमाणः, रोरुह्यमाणः, रोहः, आरोपः-रोहः, रुरुक्षः, रोरुहः, रोढुम्, रोपयितुम्, रोहयितुम्, रुरुक्षितुम्, रोरुहितुम्, रुढिः,[८] बीजरुहा-कुर्वन्, प्राजरुहाकुर्वन्, रोपणा-रोहणा, आरुरुक्षा, रोरुहा, रोहणम्, रोपणम्-रोहणम्, रुरुक्षणम्, रोरुहणम्, रुढ्वा, रोपयित्वा-रोहयित्वा, रुरुक्षित्वा, रोरुहित्वा, आरुह्य, आरोप्य-आरोह्य, आरुरुक्ष्य, आरोरुह्य, रोहिः,[९] रोहित्,[१०] रोहितः[११]-लोहितः, रौहिषः[१२]।

**(८६०) कस—गतौ।** **(जाना)**। सक.। सेट्। परस्मै.। कसति। 'गदति' (५२) वत्।

**(८६१) हिक्क—अव्यक्ते शब्दे।** (अस्पष्ट बोलना, हिचकी आना)। अकर्म.। सेट्। उभय.।

---

१ 'रुहः पोऽन्यतरस्याम्' (७-३-४३) इति विकल्पेन हकारस्य पकारः।
२ ण्यन्ते सर्वत्र 'रुहः पोऽन्यतरस्याम्' (७-३-४३) इति विकल्पेन हकारस्य पकारः। तेन रूपद्वयम्।
३ न्यक् रोहतीति न्यग्रोधः = वटवृक्षः। बाहुलकात् कर्तरि घञ्। न्यङ्क्वादिषु (७-३-५३) पाठात् धातुहकारस्य धकारः।
४ विविधं रोहतीति वीरुत् = लता। 'अन्येभ्योऽपि दृश्यते' (३-२-१७८) इति क्विपि, न्यङ्क्वादित्वात् (७-३-५३) हकारस्य धकारः। अन्येषामपि दृश्यते' (६-३-१३६) इति दीर्घः।
५ विशेषेण रोहतीति विरोही तृणादयः। तद्धर्मिणि णिनिः। केवलाण्णिनिप्रत्ययेऽपि रोही इति भवति। तदन्तात् स्त्रियां नान्तत्वेन ङीषि रोहिणी इति।
६ नन्द्यादित्वात् (३-१-१३४) कर्तरि ल्युः। रोहणः = रत्नपर्वतः।
७ धान्यानि रोपयातीति धान्यरोपी। ण्यन्तात् णिनिः।
८ संज्ञायां क्तिच्। ढत्वष्टुत्वढलोपदीर्घाः यथालक्षणमिह बोध्याः।
९ 'तृपिशिरुहि—' (द.उ. १-४७) इतीन् प्रत्ययः रोहतीति रोहिः = जन्म।
१० 'हृसृरुहि—' (द.उ. ६-३) इतीतिप्रत्ययः। रोहित् = वीरुत्प्रकारः, सूर्योऽग्निश्च।
११ 'रुहे रश्च लो वा' (द.उ. ६-१३) इतीतन् प्रत्ययः रेफस्य लकारश्च वा भवति।
१२ 'रुहे वृद्धिश्च' (द.उ. ९-४) इति टिषच् प्रत्यये धातोर्वृद्धौ च रोहिषः इति भवति। रौहिषः = तृणजातिः, स्त्रियां षित्वात् ङीषि रोहिषी = दुर्वा।

१ हिक्कति-ते। २ जिहिक्क-जिहिक्के। ३ हिक्किता। ४ हिक्किष्यति-ते। ५ हिक्कतु-हिक्कताम्। ६ अहिक्कत्। ७ हिक्केत्-त। ८ हिक्क्यात्-हिक्किषीष्ट। ९ अहिक्कीत्-अहिक्किष्ट। १० अहिक्किष्यत्-त। सर्वं 'शिक्षति' (६०५) तथा 'रक्षति' (६५८) वत्।

**कृत्सु**—हिक्ककः-क्किका, हिक्किता-त्री, हिक्कयिता-त्री, हिक्कन्-न्ती, हिक्कयन्-न्ती, हिक्किष्यन्-न्ती-ती, हिक्कयिष्यन्-न्ती-ती, हिक्कयमानः, हिक्कयिष्यमाणः, हिक्कितम्-तः, हिक्कितव्यम्, हिक्कयितव्यम्, हिक्कयमानः, हिक्कितुम्, हिक्कयितुम्, हिक्कनम्, हिक्कित्वा, हिक्कयित्वा, प्रहिक्कय, हिक्का—**गुरोश्च हलः** (३-३-१०३) इति अप्रत्ययः स्त्रियाम्। वायोः बलात्कारेण मुखात् निस्सारणम् इति हिक्का।

**(८६२) अञ्चु—गतौ, याचने च।** (जाना, मांगना)। सक.। सेट्। उभय.। **परस्मैपदे**—अञ्चतीत्यादि (१८८) वत्। **आत्मनेपदे**—अञ्चते– इत्यादि 'अङ्कति' (८६) वत्। **सनि**—अञ्चिचिषति-ते।

**(८६३) टुयाचृ—याञ्चायाम्।** (याचना करना, मांगना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | याचति | याचतः | याचन्ति | प्र. |
| | याचसि | याचथः | याचथ | म. |
| | याचामि | याचावः | याचामः | उ. |
| लिट् | ययाच | ययाचतुः | ययाचुः | प्र. |
| | ययाचिथ | ययाचथुः | ययाच | म. |
| | ययाच | ययाचिव | ययाचिम | उ. |
| लुट् | याचिता | याचितारौ | याचितारः | प्र. |
| | याचितासि | यचितास्थः | यचितास्थ | म. |
| | याचितास्मि | याचितास्वः | याचितास्म | उ. |
| लृट् | याचिष्यति | याचिष्यतः | याचिष्यन्ति | प्र. |
| | याचिष्यसि | याचिष्यथः | याचिष्यथ | म. |
| | याचिष्यामि | याचिष्यावः | याचिष्यामः | उ. |
| लोट् | याचतु-तात् | याचताम् | याचन्तु | प्र. |
| | याच-तात् | याचतम् | याचत | म. |
| | याचानि | याचाव | याचाम | उ. |
| लङ् | अयाचत् | अयाचताम् | अयाचन् | प्र. |
| | अयाचः | अयातम् | अयाचत | म. |
| | अयाचम् | अयाचाव | अयाचाम | उ. |
| वि. लि. | याचेत् | याचेताम् | याचेयु: | प्र. |
| | याचेः | याचेतम् | याचेत | म. |
| | याचेयम् | याचेव | याचेम | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आ. लि. | याच्यात् | याच्यास्ताम् | याच्यासुः | प्र. |
| | याच्याः | याच्यास्तम् | याच्यास्त | म. |
| | याच्यासम् | याच्यास्व | याच्यास्म | उ. |
| लुङ् | अयाचीत् | अयाचिष्टाम् | अयाचिषुः | प्र. |
| | अयाचीः | अयाचिष्टम् | अयाचिष्ट | म. |
| | अयाचिषम् | अयाचिष्व | अयाचिष्म | उ. |
| लृङ् | अयाचिष्यत् | अयाचिष्यताम् | अयाचिष्यन् | प्र. |
| | अयाचिष्यः | अयाचिष्यतम् | अयाचिष्यत | म. |
| | अयाचिष्यम् | अयाचिष्याव | अयाचिष्याम | उ. |

**आत्मनेपदे**—१ याचते। २ ययाचे, ययाचाते, ययाचिरे। ३ याचिता। ४ याचिष्यते। ५ याचताम्। ६ अयाचत। ७ याचेत। ८ याचिषीष्ट। ९ अयाचिष्ट। १० अयाचिष्यत। **कर्मणि**—याच्यते। **णिचि**—याचयति-ते। **सनि**—यियाचिषति। **यङि**—यायाच्यते।

**कृत्सु**—याचकः-चिका, यियाचिषकः-षिका, यायाचकः-चिका, याचिता-त्री, याचयिता-त्री, यियाचिषिता-त्री, यायचिता-त्री, याचन्-न्ती, याचमानः, याचितव्यम्, याचयितव्यम्, याचनीयम्, याचनम्, याची, याचितः, याचितुम्, याचित्वा-याचयित्वा, उपयाच्य, याच्यमानः, याचयिष्यन्-ष्यमाणः, याचथुः, ड्वित्-याचित्रम्, याचित्रिमम्, याच्ञा, अयाची, याच्यम्, याचितम्-याचितकम्, याचा।

(८६४) **रेटृ—परिभाषणे**। परिभाषणं श्वरवः। (पक्षियों का बोलना)। सक.। सेट्। उभय.। रेटति-ते। रिरेट-रिरेटे। इत्यादि। 'केलति' वत्।

**कृत्सु**—रेटकः-टिका, रिरेटिषकः-षिका, रेरेटकः-टिका, रेटिता-त्री, रेटयिता-त्री, रिरेटिषिता-त्री, रेरेटिता-त्री, शतरि-रेटन्। इत्यादि।

(८६५-८६६) **चते-चदे—याचने**। (मांगना)। सक.। सेट्। उभ.। एदित्। चतति-ते। चदति-ते। इत्यादि परस्मैपदे 'चरति' (५५९) वत्। **आत्मनेपदे**- 'कलति' (४९७) वत्।

(८६७) **प्रोथृ—पर्याप्तौ**। (शक्तिमान् होना, योग्य होना, पूर्ण होना)। अकर्म.। सेट्। उभय.। ऋदित्।

१ प्रोथति-ते। २ पुप्रोथ-पुप्रोथे। ३ प्रोथिता। ४ प्रोथिष्यति-ते। ५ प्रोथतु-प्रोथताम्। ६ अप्रोथत्-त। ७ प्रोथेत्-त। ८ प्रोथ्यात्-प्रोथिषीष्ट। ९ अप्रोथीत्-अप्रोथिष्ट। १० अप्राथिष्यत्-त।

**कृत्सु**—प्रोथकः-थिका, पुप्रोथिषकः-पुप्रुथिषकः-षिका, पोप्रुथकः-थिका, प्रोथः-अश्वादीनां नासारज्जुः (**'हलश्च'** (३-३-१२१) इति संज्ञायां करणे घञ)। प्रोथिता-त्री, प्रोथयिता-त्री, प्रोथयन्-न्ती, प्रोथयिष्यन्-न्ती-ती, प्रोथमानः, प्रोथिष्यमाणः, प्रोथितम्, प्रोथितव्यम्, प्रोथनीयम्, प्रोथयितव्यम्, प्रोथ्यम्, प्रोथ्यमानः, प्रोथित्वा, प्रोथयित्वा, आप्रोथ्य।

**(८६८) मिदृ—मेधाहिंसनयोः** । (समझना, जानना, पीडा देना, दुःख देना, हानि करना)। हिंसने सकर्म.। सेट्। उभय.। मेदति-ते। इत्यादि।

**कृत्सु**—मेदकः-दिका, मिमेदिषकः-मिमिदिषकः-षिका, मेमिदकः-दिका, मेदिता-त्री, मेदयिता-त्री, मिमेदिषिता- मिमिदिषिता-त्री, मेमिदिता-त्री, इत्यादि 'केटति' वत्।

**(८६९) मेदृ—मेधा-हिंसनयोः** । (समझना, हिंसा करना)। हिंसने सकर्म.। सेट्। उभय.। मेदति-ते। २ मिमेद इत्यादि।

**(८७०) मेधृ—मेधाहिंसनयोः सङ्गमे च** । (इकट्ठा करना, संगति करना, मेल करना, समझना, मारना, दुख देना)। अकर्म.। सेट्। उभय.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | मेधति | मेधतः | मेधन्ति | प्र. |
| | मेधसि | मेधथः | मेधथ | म. |
| | मेधामि | मेधावः | मेधामः | उ. |
| लिट् | मिमेध | मिमेधतुः | मिमेधुः | प्र. |
| | मिमेधिथ | मिमेधथुः | मिमेध | म. |
| | मिमेध | मिमेधिव | मिमेधिम | उ. |
| लुट् | मेधिता | मेधितारौ | मेधितारः | प्र. |
| | मेधितासि | मेधितास्थः | मेधितास्थ | म. |
| | मेधितास्मि | मेधितास्वः | मेधितास्मः | उ. |
| लृट् | मेधिष्यति | मेधिष्यतः | मेधिष्यन्ति | प्र. |
| | मेधिष्यसि | मेधिष्यथः | मेधिष्यथ | म. |
| | मेधिष्यामि | मेधिष्यावः | मेधिष्यामः | उ. |
| लोट् | मेधतु-मेधतात् | मेधताम् | मेधन्तु | प्र. |
| | मेध-मेधतात् | मेधतम् | मेधत | म. |
| | मेधानि | मेधाव | मेधाम | उ. |
| लङ् | अमेधत् | अमेधताम् | अमेधन् | प्र. |
| | अमेधः | अमेधतम् | अमेधत | म. |
| | अमेधम् | अमेधाव | अमेधाम | उ. |
| वि.लि. | मेधेत् | मेधेताम् | मेधेयुः | प्र. |
| | मेधेः | मेधेतम् | मेधेत | म. |
| | मेधेयम् | मेधेव | मेधेम | उ. |
| आ.लि. | मेध्यात् | मेध्यास्ताम् | मेध्यासुः | प्र. |
| | मेध्याः | मेध्यास्तम् | मेध्यास्त | म. |
| | मेध्यासम् | मेध्यास्व | मेध्यास्म | उ. |
| लुङ् | अमेधीत् | अमेधिष्टाम् | अमेधिषुः | प्र. |
| | अमेधीः | अमेधिष्टम् | अमेधिष्ट | म. |
| | अमेधिषम् | अमेधिष्व | अमेधिष्म | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृङ् | अमेधिष्यत् | अमेधिष्यताम् | अमेधिष्यन् | प्र. |
| | अमेधिष्यः | अमेधिष्यतम् | अमेधिष्यत | म. |
| | अमेधिष्यम् | अमेधिष्याव | अमेधिष्याम | उ. |

**आत्मनेपदे**—१ मेधते। २ मिमेधे। ३ मेधिता। ४ मेधिष्यते। ५ मेधताम्। ६ अमेधत। ७ मेधेत। ८ मेधिषीष्ट। ९ अमेधिष्ट। १० अमेधिष्यत।

**भावे**—मेध्यते। **णिचि**—मेधयति-ते। **कृत्सु**—मेधकः-धिका, मिमेधिषकः-षिका, मेमेधकः-धिका, मेधिता-त्री, मेधयिता-त्री, मिमेधिषिता-त्री, मेमेधिता-त्री, मेध्यः = पशुः, मेधयन्-न्ती, मेधयिष्यन्, मेधितम्, मेधः, मेधितव्यम्, मेधयितव्यम्, मेधनीयम्, मेध्यम्, मेध्यमानः, मेधितुम्, मेधित्वा, मेधयित्वा, प्रमेध्य, मेधा, गृहमेधी, अश्वमेधः, मेधिः, प्रमेधितः-तम्-तवान्।

**(८७१-८७२) णिदृ-णेदृ—कुत्सासन्निकर्षयोः**। (दोष लगाना। निन्दा करना। समीप जाना या आना)। सक.। सेट्। उभय.। **लट्**—नेदति-ते। **लिट्**—निनेद, निनिदतुः निनिदे, निनिदाते। **लृट्**—नेदिष्यति-ते। **वि.लिङ्**—निद्यात्। निद्यास्ताम्। नेदिषीष्ट नेदिषीयास्ताम्। **लुङ्**—अनेदीत्-अनेदिष्ट। इत्यादि।

**(८७३-८७४) शृधु-मृधु—उन्दने**। (मार डालना या दुख देना. आर्द्र करना, गीला करना या होना)। अक.। सेट्। उभयपदी.। उदित्। मर्धति। शर्धति। मर्धते। शर्धते। ममर्ध-शशर्ध। इत्यादि 'वर्षति' (७०६) वत्।

**(८७५) बुधिर्—बोधने**। (जानना, समझना)। **प्रति**—किसी को जानना, जागना, बाट जोहना, **सम्**—अच्छी तरह से जानना, **अव**—जानना। सक.। सेट्. उभय.। बोधति इत्यादि 'शोधति' (१८३) वत्। **आत्मनेपदे**—'द्योतति' (७४१) वत्।

**(८७६) उबुन्दिर्—(बुन्द्) निशामने**। (जानना, समझना, सूक्ष्मदृष्टि से जानना)। सक.। सेट्। उभय.।

१ बुन्दति। २ **प्र.** बुबुन्द बुबुन्दतुः बुबुन्दुः। **म.** बुबुन्दिथ बुबुन्दथुः बुबुन्द। **उ.** बुबुन्द बुबुन्दिव बुबुन्दिम। ३ बुन्दिता। ४ बुन्दिष्यति। ५ बुन्दतु-बुन्दतात्। ६ अबुन्दत्। ७ बुन्देत्। ८ बुद्यात् बुद्यास्ताम् बुद्यासुः। ८ **प्र.** अबुन्दीत् अबुन्दिष्टाम् अबुन्दिषुः। **म.** अबुन्दीः अबुन्दिष्टम् अबुन्दिष्ट। **उ.** अबुन्दिषम् अबुन्दिष्व अबुन्दिष्म। पक्षे—**प्र.** अबुदत् अबुदताम् अबुदन्। **म.** अबुदः अबुदतम् अबुदत। **उ.** अबुदम् अबुदाव अबुदाम। १० अबुन्दिष्यत्। **आत्मनेपदे**—१ बुन्दते। २ बुबुन्दे। ३ बुन्दिता। ४ बुन्दिष्यते। ५ बुन्दताम्। ६ अबुन्दत। ७ बुन्देत। ८ बुन्दिषीष्ट। ९ **प्र.** अबुन्दिष्ट अबुन्दिषाताम् अबुन्दिषत। **म.** अबुन्दिष्ठाः अबुन्दिषाथाम् अबुन्दिड्ढ्वम्-ध्वम्। **उ.** अबुन्दिषि अबुन्दिष्वहि अबुन्दिष्महि। १० अबुन्दिष्यत।

**कृत्सु**—बुन्दकः-दिका, बुबुन्दिषकः-षिका, बोबुदकः-दिका, बुन्दिता-त्री, बुन्दयिता-त्री, बुन्दन्-न्ती, बुन्दयन्-न्ती, बुन्दिष्यन्-न्ती-ती, बुन्दयिष्यन्-न्ती-ती, बुन्दमानः, बुन्दयिष्यमाणः, बुन्दितव्यम्, बुन्दयितव्यम्, बुन्दनीयम्, बुन्द्यम्, बुन्द्यमानः, बुन्दितुम्, बुन्नम्-बुन्नः-बुन्नवान्, बुन्दित्वा-बुत्त्वा, बुद्बुदः, प्रबुन्द्यः।

**( ८७७ ) वेणृ—गतिज्ञानचिन्तानिशामनवादित्रग्रहणेषु**। (जाना, समझना, जानना, स्मरण करना, याद करना, विचार करना, तारतम्य देखना, वाद्ययन्त्र बजाना, वाद्ययन्त्र हाथ में लेना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। वेणति-ते। इत्यादि। 'णेदृ' (८७२) धातुवत्।

**कृत्सु**—वेणकः-णिका, विवेणिषकः-षिका, वेवेणकः-णिका, वेणिता-त्री, वेणयिता-त्री, विवेणिषिता-त्री, वेवेणिता-त्री, वेणितुम्, वेणयितुम्, वेणिका, वेणिः, वेणी, वीणा। इत्यादि 'केलति' वत्।

**( ८७८ ) खनु—अवदारणे**। (खोदना)। सक.। सेट्.। उभय.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | खनति | खनतः | खनन्ति | प्र. |
| | खनसि | खनथः | खनथ | म. |
| | खनामि | खनावः | खनामः | उ. |
| लिट् | चखान | चख्नतुः | चख्नुः | प्र. |
| | चखनिथ | चख्नथुः | चख्न | म. |
| | चखान-चखन | चखनिव | चखनिम | उ. |
| लुट् | खनिता | खनितारौ | खनितारः | प्र. |
| | खनितासि | खनितास्थः | खनितास्थ | म. |
| | खनितास्मि | खनितास्वः | खनितास्म | उ. |
| लृट् | खनिष्यति | खनिष्यतः | खनिष्यन्ति | प्र. |
| | खनिष्यसि | खनिष्यथः | खनिष्यथ | म. |
| | खनिष्यामि | खनिष्यावः | खनिष्यामः | उ. |
| लोट् | खनतु-खनतात् | खनताम् | खनन्तु | प्र. |
| | खन-खनतात् | खनतम् | खनत | म. |
| | खनानि | खनाव | खनाम | उ. |
| लङ् | अखनत् | अखनताम् | अखनन् | प्र. |
| | अखनः | अखनतम् | अखनत | म. |
| | अखनम् | अखनाव | अखनाम | उ. |
| वि. लि. | खनेत् | खनेताम् | खनेयुः | प्र. |
| | खनेः | खनेतम् | खनेत | म. |
| | खनेयम् | खनेव | खनेम | उ. |
| आ. लि. | खन्यात् | खन्यास्ताम् | खन्यासुः | प्र. |
| | खन्याः | खन्यास्तम् | खन्यास्त | म. |
| | खन्यासम् | खन्यास्व | खन्यास्म | उ. |
| लुङ् | अखानीत् | अखानिष्टाम् | अखानिषुः | प्र. |
| | अखानीः | अखानिष्टम् | अखानिष्ट | म. |
| | अखानिषम् | अखानिष्व | अखानिष्म | उ. |

पक्षे—अखनीत् अखनिष्टाम् अखनिषुः इत्यादि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृङ् | अखनिष्यत् | अखनिष्यताम् | अखनिष्यन् | प्र. |
| | अखनिष्यः | अखनिष्यतम् | अखनिष्यत | म. |
| | अखनिष्यम् | अखनिष्याव | अखनिष्याम | उ. |

**आत्मनेपदे**—१ खनते। २ **प्र.** चखने चख्नाते चख्निरे। **म.** चख्निषे चख्नाथे चख्निध्वे। उ. चख्ने चख्निवहे चख्निमहे। ३ खनिता। ४ खनिष्यते। ५ खनताम्। ६ अखनत। ७ खनेत। ८ **प्र.** खनिषीष्ट खनिषीयास्ताम् खनिषीरन्। **म.** खनिषीष्ठाः खनिषीयास्थाम् खनिषीध्वम्। उ. खनिषीय खनिषीवहि खनिषीमहि। ९ अखनिष्ट अखनिषाताम् अखनिषत। १० अखनिष्यत।

**कर्मणि**—खायते-खन्यते। **णिचि**—खानयति। **सनि**—चिखनिषति। **यङि**—चङ्खन्यते चाखयते। **यङ्लुकि**—चङ्खनीति-चाङ्खन्ति। **कृत्सु**—खानकः-निका, खनिता-त्री, खानयिता-त्री, खनन्-न्ती, खानयन्-न्ती, प्रनिखनमानः, खानयमानः, प्रनिखनिष्यमाणः, खानयिष्यमाणः, चिखनिष्यमाणः, चाखयिष्यमाणः, चङ्खनिष्यमाणः, सुखा-सुखौ-सुखाः, खातम्-खातः, खातवान्, खनितः, चिखनिषितः, चाखयितः, चङ्खनितः-तवान्, खनः, खनित्रम्, परिखा, खम्, कूपखानः, खनकः, खनिकी, खानः, चिखनिषुः, चङ्खानः, खनितव्यम्, खानयितव्यम्, चिखनिषितव्यम्, खननीयम्, खाननीयम्, खेयम्, खान्यम्, चिखनिष्यम्, खायमानः, खन्यमानः, खान्यमानः, आखानः, आखः-आखरः, आखनिकः, खनितुम्, खानयितुम्, खाजिः, खानना, खननम्, खानम्, खनित्वा-खात्वा, खानयित्वा, प्रखाय, प्रखन्य, प्रखान्य, आखुः, मुखम्, खानः।

**(८७९) चीवृ—आदानसंवरणयोः**। (लेना, पहना, पकड़ना)। सक.। सेट्। उभय.। ऋदित्। चीवति-ते। चिचीव-वे। 'जीवति' (५६२) वत्।

**(८८०) चायृ—पूजानिशामनयोः**। (पूजा करना, जानना समझना)। सक.। सेंट्। उभय.। ऋदित्। चायति। चचाय। 'खादति' ९४९) वत्। **आत्मनेपदे**—चायते। चचाये। 'गाधति' (४) वत्।

**(८८१) व्यय—गतौ**। (जाना, खर्च करना)। सकर्म.। सेट्। पर.। अयं वित्तत्यागे नित्यमात्मनेपदी।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | व्ययते | व्ययेते | व्ययन्ते | प्र. |
| | व्ययसे | व्ययेथे | व्ययध्वे | म. |
| | व्यये | व्ययावहे | व्ययामहे | उ. |
| लिट् | वव्यये | वव्ययाते | वव्ययिरे | प्र. |
| | वव्ययिषे | वव्ययाथे | वव्ययिध्वे | म. |
| | वव्यये | वव्ययिवहे | वव्ययिमहे | उ. |
| लुट् | व्ययिता | व्ययितारौ | व्ययितारः | प्र. |
| | व्ययितासे | व्ययितासाथे | व्ययिताध्वे | म. |
| | व्ययिताहे | व्ययिस्वहे | व्ययितास्महे | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृट् | व्ययिष्यते | व्ययिष्येते | व्ययिष्यन्ते | प्र. |
| | व्ययिष्यसे | व्ययिष्येथे | व्ययिष्यध्वे | म. |
| | व्ययिष्ये | व्ययिष्यावहे | व्ययिष्यामहे | उ. |
| लोट् | व्ययताम् | व्ययेताम् | व्ययन्ताम् | प्र. |
| | व्ययस्व | व्ययेथाम् | व्ययध्वम् | म. |
| | व्ययै | व्यावहै | व्ययामहै | उ. |
| लङ् | अव्ययत | अव्ययेताम् | अव्ययन्त | प्र. |
| | अव्ययथाः | अव्ययेथाम् | अव्ययध्वम् | म. |
| | अव्यये | अव्ययावहि | अव्ययामहि | उ. |
| वि. लि. | व्ययेत | व्ययेयाताम् | व्ययेरन् | प्र. |
| | व्ययेथाः | व्ययेयाथाम् | व्ययेध्वम् | म. |
| | व्ययेय | व्ययेवहि | व्ययेमहि | उ. |
| आ. लि. | व्ययिषीष्ट | व्ययिषीयास्ताम् | व्ययिषीरन् | प्र. |
| | व्ययिषीष्ठाः | व्ययिषीस्थाम् | व्ययिषीध्वम्-ध्वम् | म. |
| | व्ययिषीय | व्ययिषीवहि | व्ययिषीमहि | उ. |
| लुङ् | अव्ययिष्ट | अव्ययिषाताम् | अव्ययिषत | प्र. |
| | अव्ययिष्ठाः | अव्ययिषाथाम् | अव्ययिड्ढ्वम्-ध्वम् | म. |
| | अव्ययिषि | अव्ययिष्वहि | अव्ययिष्महि | उ. |
| लृङ् | अव्ययिष्यत | अव्ययिष्येताम् | अव्ययिष्यन्त | प्र. |
| | अव्ययिष्यथाः | अव्ययिष्येथाम् | अव्ययिष्यध्वम् | म. |
| | अव्ययिष्ये | अव्ययिष्यावहि | अव्यामहि | उ. |

**परस्मैपदे**—१ व्ययति। २ वव्याय। ३ व्ययिता। ४ व्ययिष्यति। ५ व्ययतु। ६ अव्ययत्। ७ व्ययेत्। ८ व्यय्यात्। ९ अव्ययीत्। १० अव्ययिष्यत्।

**कर्मणि**—व्यय्यते। **णिचि**—व्याययति-ते। **यङि**—वाव्यय्यते। **यङ्लुकि**—वाव्ययीत्-वाव्यति। **लोपोव्यो**—इति य लोपः। **कृत्सु**—व्यायकः-यिका, विव्ययिषिकः-षिका, वाव्ययकः-यिका, व्ययिता-त्री, व्याययिता-त्री, विव्ययिषिता-त्री, वाव्ययिता-त्री, व्ययन्-न्ती, व्यायन्-न्ती, विव्यमिषन्-न्ती, वाव्ययन्-न्ती, व्ययिष्यन्-न्ती-ती, व्यायायिष्यन्-न्ती-ती, विव्ययिषिष्यन्, व्ययमानः, व्यायमानः, विव्ययिषमाणः, वाव्यय्यमानः, व्ययिष्यमाणः, व्याययिष्यमाणः, व्यत्-व्ययौ-व्ययः, व्ययितम्-तः, व्यायितम्-तः, व्ययः, प्रव्ययी, विव्ययिषुः, वाव्ययः, व्ययितव्यम्, व्याययितव्यम्, व्ययनीयम्, व्याय्यम्, व्यय्यमानः, व्याय्यमानः, विव्ययिष्यमाणः, वाव्यय्यमाणः, व्ययितुम्, व्याययितुम्, विव्ययिषितुम्, वाव्ययितुम्, व्यतिः, व्यायना, व्ययनम्, व्यायनम्, व्ययित्वा, व्याययित्वा।

**(८८२) दाशृ—दाने**। (देना, आहुति देना)। सक.। सेट्। उभय.। ऋदित्। दाशति-ते। ददाश-शे। इत्यादि 'काशति' (६२३) वत्।

**(८८३) भेषृ—भये**। गतावित्येके। (डरना। जाना)। अक.। सेट्। उभय.। भेषति। भेषते। सर्वं णेदृ धातुवत्।

**(८८४-८८५) भ्रेषृ-भ्लेषृ—गतौ**। (जाना)। अक.। सेट्। उभय.। ऋदित्। भ्रेषति। भ्लेषति। णेदृधातु वत्।

**(८८६) अस—गतिदीप्त्यादानेषु**। **अष** इत्येके। (जाना, चमकना, लेना)। दीप्तावकर्म.। सेट्। उभय.। परस्मै.-असति-अषति। इत्यादि 'अटति' (२९५) वत्। **आत्मनेपदे**—असते-अषते। इत्यादि 'अयति' (४७४) वत्।

**(८८७) स्पश—बाधनस्पर्शनयोः**। (अवरोध करना, रोकना, एकत्र करना, स्पर्श करना, छूना)। सक.। सेट्। उभय.। स्पशति-स्पशते इत्यादि।

**(८८८) लष—कान्तौ**। कान्तिरिच्छा। (इच्छा करना, चाहना)। अक.। सेट्।उ.।

१ लष्यति[१]-ते, लषति-ते। २ ललाष लेषतुः। ५ लष्यतु-लषतु-तात्। ६ अलष्यत्-त। अलषत्-त। ७ लषेत्-त।

**कृत्सु**—लषकः-षिका, लषिता-त्री, लाषयिता-त्री, लष्यन्[२]-लषन्-न्ती, लाषयन्-न्ती, लिलषिषन्-न्ती, लषिष्यन्-न्ती-ती, लाषयिष्यन्-न्ती-ती, लषमाणः, लष्यमाणः, लाषयमाणः, लषिष्यमाणः, लाषयिष्यमाणः, अभिलाषुकः,[३] लषणः,[४] विलाषी,[५] अपलाषिणः[६], लशुनम्[७], लिष्वः[८]।

**(८८९) चण—भक्षणे**। (खाना, स्वाद लेना)। सक.। सेट्। उभय.। चषति-ते। २ चचाष-षे। ३ चषिता। ४ चषिष्यति-ते। ५ चषतु-तात्, चषताम्। ६ अचषत्-त। ९ अचाषीत्-अचषीत्। इत्यादि 'रदति' (५३) वत्। **आत्मनेपदे**– दधति (८) वत्।

**कृत्सु**—चाषकः-षिका, चषिता-त्री, चाषयिता-त्री, चषन्-न्ती, चाषयन्-न्ती, चिचाषिषन्-न्ती, चाषिष्यन्-न्ती-ती, चषमाणः, चषिष्यमाणः, सञ्चट्-सञ्चाषौ-सञ्चषः, चषितम्-तः, चाषः, चषितव्यम्, चाषयितव्यम्, चष्यमाणः, चाष्यमाणः, चषितुम्, चाषयितुम्, चष्टिः, चाषणः, चषणम्, चाषणम्, चषित्वा, चाषयित्वा, विचष्य, विचाष्य।

**(८९०) छष—हिंसायाम्**। (मारना)। सक.। सेट्। उभय.। छषति-ते। चच्छष-चच्छषे। इत्यादि 'चषति' वत्।

---

१ 'वा भ्राशभ्लाशभ्रमुक्लमुत्रसि त्रुटि लषः। इति वा श्यन्।
२ शतरि 'वा भ्राशभ्लाश–' (३-१-७०) इति श्यन् विकल्पेन भवति। तेन रूपद्वयम्।
३ 'लषपतपद–' (३-२-१५४) इत्यादिनां तच्छीलादुषि कर्तृषु उकञ्प्रत्यये एवं रूपम्।
४ 'जुचङ्क्रम्य–' (३-२-१५०) इति तच्छीलादिषु कर्तृषु युच् प्रत्यये रूपमेवम्।
५ 'वि, अप' इत्युपसर्गयोः उपपदयोः 'अपे च लषः' (३-२-१४४) इति घिनुण् प्रत्यये रूपमेवम्।
६ 'प्रलापिनो भविष्यन्ति कदान्वेतेऽपलाषिणः।' (भ.का. ७-१२)।
७ 'लषेः श च' (द.उ. ५-५४) इति उनन् प्रत्ययो भवति। शश्चान्तादेशः। लशुनम् = पलाण्डुजातिः।
८ औणादिके (द.उ. ८-१२) वन् प्रत्यये, उपधाया इत्वं निपात्यतेऽगुणत्वं च। तेन लिष्वः इति रूपम्। कान्तिरित्यर्थः।

**( ८९१ ) झष—आदानसंवरणयोः** । (ग्रहण करना, लेना, वस्त्रादि धारण करना, वस्त्र पहनना)। सक.। सेट्। उभय.। झषति-ते। इत्यादि। 'जपति' (३९७) वत्।

**( ८९२-८९३ ) भ्रक्ष-भ्लक्ष—अदने** । (खाना)। भक्ष इति मैत्रेयः। सक.। सेट्। उभय.।

१ भ्रक्षति-ते। २ बभ्रक्ष-बभ्रक्षे। ३ भ्रक्षिता। ४ भ्रक्षिष्यति-ते। ५ भ्रक्षतु-ताम्। ६ अभ्रक्षत्-त। ८ भ्रक्ष्यात्-भ्रक्षिषीष्ट। ९ अभ्रक्षीत्- अभ्रक्षिष्ट। १० अभ्रक्षिष्यत्-त। एवं भ्लक्षति-ते इत्यादि।

**( ८९४ ) दासृ—दाने** । (देना, सौंपना)। सक.। सेट्। उभय.। १ दासति-ते। २ ददास-से। ३ दासिता। ९ अदासीत्-अदासिष्ट। **कर्मणि**—दास्यते। अन्यत्सर्वं 'काशति' (६४७) वत्।

**( ८९५ ) माहृ—माने** । (नापना, गिनना, तौलना)। सक.। सेट्। उभय.। माहति-ते। ममाह-हे। चातृधातुवत्।

**( ८९६ ) गुहू—संवराणे** । इह-संवरणं गोपनम्, आच्छादनम् अपह्नवः। (छिपाना। वस्त्रादि से ढँकना)। सक.। सेट्। उभय.।

**उदुपधाया गोहः**—ग्रह उपधाया ऊत्स्यात् गुणहेतावजादौ प्रत्यये परे।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | गूहति | गूहतः | गूहन्ति | प्र. |
| | गूहसि | गूहथः | गूहथ | म. |
| | गूहामि | गूहावः | गूहामः | उ. |
| लिट् | जुगूह | जुगुहतुः | जुगुहुः | प्र. |
| | जुगूहिथ | जुगुहथुः | जुगुह | म. |
| | जुगूह | जुगुहिव | जुगुहिम | उ. |
| लुट् | गूहिता | गूहितारौ | गूहितारः | प्र. |
| | गूहितासि | गूहितास्थः | गूहितास्थ | म. |
| | गूहितास्मि | गूहितास्वः | गूहितास्मः | उ. |

पक्षे—**प्र.** गोढा गोढारौ गोढारः। **म.** गोढासि गोढास्थः गोढास्थ। **उ.** गोढास्मि गोढास्व गोढास्मः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृट् | गूहिष्यति | गूहिष्यतः | गूहिष्यन्ति | प्र. |
| | गूहिष्यसि | गूहिष्यथः | गूहिष्यथ | म. |
| | गूहिष्यामि | गूहिष्यावः | गूहिष्यामः | उ. |

पक्षे—**प्र.** घोक्ष्यति घोक्ष्यतः घोक्ष्यन्ति। **म.** घोक्ष्यसि घोक्ष्यथः घोक्ष्यथ। **उ.** घोक्ष्यामि घोक्ष्यावः घोक्ष्यामः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लोट् | गूहतु-गूहतात् | गूहताम् | गूहन्तु | प्र. |
| | गूह-गूहतात् | गूहतम् | गूहत | म. |
| | गूहानि | गूहाव | गूहाम | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लङ् | अगूहत् | अगूहताम् | अगूहन् | प्र. |
| | अगूहः | अगूहतम् | अगूहत | म. |
| | अगूहम् | अगूहाव | अगूहाम | उ. |
| वि. लि. | गूहेत् | गूहेताम् | गूहेयुः | प्र. |
| | गूहेः | गूहेतम् | गूहेत | म. |
| | गूहेयम् | गूहेव | गूहेम | उ. |
| आ. लि. | गुह्यात् | गुह्यास्ताम् | गूह्यासुः | प्र. |
| | गुह्याः | गुह्यास्तम् | गुह्यास्त | म. |
| | गुह्यासम् | गुह्यास्व | गुह्यास्म | उ. |
| लुङ् | अगूहीत् | अगूहिष्टाम् | अगूहिषुः | प्र. |
| | अगूहीः | अगूहिष्टम् | अगूहिष्ट | म. |
| | अगूहिषम् | अगूहिष्व | अगूहिष्म | उ. |

पक्षे—**प्र.** अघुक्षत् अघुक्षताम् अघुक्षन्। **म.** अघुक्षः अघुक्षतम् अघुक्षत। **उ.** अघुक्षम् अघुक्षाव अघुक्षाम।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृङ् | अगूहिष्यत् | अगूहिष्यताम् | अगूहिष्यन् | प्र. |
| | अगूहिष्यः | अगूहिष्यतम् | अगूहिष्यत | म. |
| | अगूहिष्यम् | अगूहिष्याव | अगूहिष्याम | उ. |

पक्षे—**प्र.** अघोक्ष्यत् अघोक्ष्यताम् अघोक्ष्यन्। **म.** अघोक्ष्यः अघोक्ष्यतम् अघोक्ष्यत। **उ.** अघोक्ष्यम् अघोक्ष्याव अघोक्ष्याम।

**आत्मनेपदे**—१ गूहते। २ जुगुहे। जुगुहाते। जुगुहिरे। ३ गूहिता-गोढा। ४ गूहिष्यते। घोक्ष्यते। ५ गूहताम्। ६ अगूहत्। ७ गूहेत। ८ गूहिषीष्ट। ९ अगूहिष्ट अगूढ। **लुग्वा दुहदिहलिहगुहामात्मनेपदे दन्त्ये**। एषां क्सस्य लुग्वा वा स्यात् दन्त्ये तङि। १० अगूहिष्यत-अघोक्ष्यत। **कर्मणि**—गुह्यते। **णिचि**—गूहयति-ते। **सनि**—जुघुक्षति-ते। **हलन्ताच्च**। इक्समीपाद्धलः परो झलादिः सन् कित्स्यात्। **यङि**—जोगुह्यते। **यङ्लुकि**—जोगुहीति-जोगोढि।

**कृत्सु**—गूढम्-गूढः-गूढवान्, गूहितः, जुगुक्षितः, जोगुहितः-तवान्, गुह्यम्, गूह्यम्, जुगुक्ष्यम्, जोगुह्यम्, गूहितव्यम्, गोढव्यम्, गूहयितव्यम्, जुगुक्षितव्यम्, जोगुहितव्यम्, गूहनीयम्, जुगुक्षणीयम्, जोगुहनीयम्, गुहः, काकगुहाः, निगूही, गूहः, संगुघुक्ष, जोगुहः, गूहकः-हिका, गूहिता-त्री, गोढा-ढ्री, गूहयिता-त्री, जुगुक्षिता-त्री, जोगुहिता-त्री, गूहन्-न्ती, गूहयन्-न्ती, जुगुक्षन्-न्ती, गूहिष्यन्-घोक्ष्यन्-न्ती-ती, गूहयिष्यन्-न्ती-ती, जुगुक्षिष्यन्-न्ती-ती, गूहमानः, गूह्यमानः, जुघुक्षमाणः, जोगुह्यमानः, गूहिष्यमाणः, घोक्ष्यमाणः, जुघुक्षिष्यमाणः, जोगुहिष्यमाणः, घुट्-ड्-गुहौ-गुहः, जोघुक्ष्यमाणः, जोगुह्यमानः, जुघुक्षः, जोगुहः, गूहितुम्-गोढुम्, गूहयितुम्, जुघुक्षितुम्, जोगुहितुम्, गूहा-गूढिः, गूहना, जुघुक्षा, जोगुहा, गूहनम्, जुगुक्षणम्, जोगुहनम्, गूहित्वा, गूढ्वा, गूहयित्वा, जुघुक्षित्वा, जोगुहित्वा, विगूह्य।

**(८९७) श्रिञ्—सेवायाम्** । (सेवा करना) । **अपा**—छोड़ना । **आ**—आश्रय करना । समीप जाना या रहना । **व्यपा**—विश्वास करना, भरोसा रखना, साष्टाङ्ग नमस्कार करना, जमीन पर गिरना । सक. । सेट् । उभय. ।

**सार्वधातुकार्धधातुकयोः**—इति गुणे अयोदेशे च ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | श्रयति | श्रयतः | श्रयन्ति | प्र. |
| | श्रयसि | श्रयथः | श्रयथ | म. |
| | श्रयामि | श्रयावः | श्रयामः | उ. |
| आ. | श्रयते | श्रयेते | श्रयन्ते | प्र. |
| | श्रयसे | श्रयेथे | श्रयध्वे | म. |
| | श्रये | श्रयावहे | श्रयामहे | उ. |
| लिट् | शिश्राय | शिश्रियतुः | शिश्रियुः | प्र. |
| | शिश्रयिथ | शिश्रियथुः | शिश्रिय | म. |
| | शिश्राय-शिश्रय | शिश्रियिव | शिश्रियिम | उ. |
| आ. | शिश्रिये | शिश्रियाते | शिश्रियिरे | प्र. |
| | शिश्रियिषे | शिश्रियाथे | शिश्रियिध्वे-ढ्वे | म. |
| | शिश्रिये | शिश्रियिवहे | शिश्रियिमहे | उ. |
| लुट् | श्रयिता | श्रयितारौ | श्रयितारः | प्र. |
| | श्रयितासि | श्रयितास्थः | श्रयितास्थ | म. |
| | श्रयितास्मि | श्रयितास्वः | श्रयितास्मः | उ. |
| आ. | श्रयिता | श्रयितारौ | श्रयितारः | प्र. |
| | श्रयितासे | श्रयितासाथे | श्रयिताध्वे | म. |
| | श्रयिताहे | श्रयितास्वहे | श्रयितास्महे | उ. |
| लृट् | श्रयिष्यति | श्रयिष्यतः | श्रयिष्यन्ति | प्र. |
| | श्रयिष्यसि | श्रयिष्यथः | श्रयिष्यथ | म. |
| | श्रयिष्यामि | श्रयिष्यावः | श्रयिष्यामः | उ. |
| आ. | श्रयिष्यते | श्रयिष्येते | श्रयिष्यन्ते | प्र. |
| | श्रयिष्यसे | श्रयिष्येथे | श्रयिष्यध्वे | म. |
| | श्रयिष्ये | श्रयिष्यावहे | श्रयिष्यामहे | उ. |
| लोट् | श्रयतु-तात् | श्रयताम् | श्रयन्तु | प्र. |
| | श्रय-तात् | श्रयतम् | श्रयत | म. |
| | श्रयाणि | श्रयाव | श्रयाम | उ. |
| आ. | श्रयताम् | श्रयेताम् | श्रयन्ताम् | प्र. |
| | श्रयस्व | श्रयेथाम् | श्रयध्वम् | म. |
| | श्रयै | श्रयावहै | श्रयामहै | उ. |
| लङ् | अश्रयत् | अश्रयताम् | अश्रयन् | प्र. |
| | अश्रयः | अश्रयतम् | अश्रयत | म. |
| | अश्रयम् | अश्रयाव | अश्रयाम | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आ. | अश्रयत | अश्रयेताम् | अश्रयन्त | प्र. |
| | अश्रयथाः | अश्रयेथाम् | अश्रयध्वम् | म. |
| | अश्रये | अश्रयावहि | अश्रयामहि | उ. |
| वि. लि. | श्रयेत् | श्रयेताम् | श्रयेयुः | प्र. |
| | श्रयेः | श्रयेतम् | श्रयेत | म. |
| | श्रयेयम् | श्रयेव | श्रयेम | उ. |
| आ. | श्रयेत | श्रयेताम् | श्रयेरन् | प्र. |
| | श्रयेथाः | श्रयेयाथाम् | श्रयेध्वम् | म. |
| | श्रयेय | श्रयेवहि | श्रयेमहि | उ. |
| आ. लि. | श्रीयात् | श्रीयास्ताम् | श्रीयासुः | प्र. |
| | श्रीयाः | श्रीयास्तम् | श्रीयास्त | म. |
| | श्रीयासम् | श्रीयास्व | श्रीयास्म | उ. |
| आ. | श्रयिषीष्ट | श्रयिषीयास्ताम् | श्रयिषीरन् | प्र. |
| | श्रयिषीष्ठाः | श्रयिषीयास्थाम् | श्रयिषीध्वं-ध्वम् | म. |
| | श्रयिषीय | श्रयिषीवहि | श्रयिषीमहि | उ. |
| लुङ् | अशिश्रियत् | अशिश्रियताम् | अशिश्रियन् | प्र. |
| | अशिश्रियः | अशिश्रियतम् | अशिश्रियत | म. |
| | अशिश्रियम् | अशिश्रियाव | अशिश्रियाम | उ. |
| आ. | अशिश्रियत | अशिश्रियेताम् | अशिश्रियन्त | प्र. |
| | अशिश्रियथाः | अशिश्रियेथाम् | अशिश्रियध्वम् | म. |
| | अशिश्रिये | अशिश्रियावहि | अशिश्रियामहि | उ. |
| लृङ् | अश्रयिष्यत् | अश्रयिष्यताम् | अश्रयिष्यन् | प्र. |
| | अश्रयिष्यः | अश्रयिष्यतम् | अश्रयिष्यत | म. |
| | अश्रयिष्यम् | अश्रयिष्याव | अश्रयिष्याम | उ. |
| आ. | अश्रयिष्यत | अश्रयिष्येताम् | अश्रयिष्यन्त | प्र. |
| | अश्रयिष्यथाः | अश्रयिष्येथाम् | अश्रयिष्यध्वम् | म. |
| | अश्रयिष्ये | अश्रयिष्यावहि | अश्रयिष्यामहि | उ. |

**कर्मणि**—श्रीयते। **णिचि**—श्राययति-ते। **सनि**—शिश्रयिषति-ते। शिश्रीषति-ते। **यङि**—शेश्रीयते। **यङ्लुकि**—शेश्रयीति-शेश्रेति। **कृत्सु**—श्रायकः-यिका, शिश्रयिषकः-शिश्रीषक-षिका, शेश्रीयकः-यिका, श्रेता-त्री, श्राययिता-त्री, शिश्रयिषिता-शिश्रीषिता-त्री, शेश्रीयिता-त्री, श्रयितुम्, श्रयणीयम्, श्रयित्वा, श्रयितम्, उच्छ्रायः,[१] श्रायः[२],

१ एरचोऽपवादभूतः 'उदिश्रयति–' (३-३-४९) इति घञ्। कथं 'पतनान्ताः समुच्छ्रयाः' इति अजन्तत्वम्। 'कृत्यलुटो बहुलम्' (३-३-११३) इति बहुलग्रहणात् 'क्वचिदपवादविषयेऽपि उत्सर्गोऽभिनिविशते' (परि॰ ६०) इति बोध्यम्। वक्ष्यमाणविभाषाग्रहणानुवृत्ते'समुच्छ्रयः इत्यपि साधुरिति प्रक्रियाकौमुदीव्याख्या (३-३-४९)।

२ 'श्रिणीभुवोनुऽपसर्गे' (३-३-२४) इति घञ्।

शिश्रिवान्,[1] विश्रयी,[2] श्रित्वा,[3] श्रितः, कष्टश्रितः,[4] श्रीः,[5] श्रेणिः[6]-श्रेणी, श्मश्रु[7], श्रयितव्यः, श्रयः, श्रयन्-श्रयमानः, श्रयितुम्, श्रयणम्, श्रित्वा, आश्रित्य ।

**(८९८) भृञ्—भरणे** । (पूर्ण करना, भरण-पोषण करना, भरना) । सक. । अनिट् । उभय. ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | भरति | भरतः | भरन्ति | प्र. |
| | भरसि | भरथः | भरथ | म. |
| | भरामि | भरावः | भरामः | उ. |
| आ. | भरते | भरेते | भरन्ते | प्र. |
| | भरसे | भरेथे | भरध्वे | म. |
| | भरे | भरावहे | भरामहे | उ. |
| लिट् | बभार | बभ्रतुः | बभ्रुः | प्र. |
| | बभर्थ | बभ्रथुः | बभ्र | म. |
| | बभार-बभर | बभृव | बभृम | उ. |
| आ. | बभ्रे | बभ्राते | बभ्रिरे | प्र. |
| | बभृषे | बभ्राथे | बभृढ्वे | म. |
| | बभ्रे | बभृवहे | बभृमहे | उ. |
| लुट् | भर्ता | भर्तारौ | भर्तारः | प्र. |
| | भर्तासि | भर्तास्थः | भर्तास्थ | म. |
| | भर्तास्मि | भर्तास्वः | भर्तास्मः | उ. |
| आ. | भर्ता | भर्तारौ | भर्तारः | प्र. |
| | भर्तासे | भर्तासाथे | भर्ताध्वे | म. |
| | भर्ताहे | भर्तास्वहे | भर्तास्महे | उ. |
| लृट् | भरिष्यति | भरिष्यतः | भरिष्यन्ति | प्र. |
| | भरिष्यसि | भरिष्यथः | भरिष्यथ | म. |
| | भरिष्यामि | भरिष्यावः | भरिष्यामः | उ. |
| आ. | भरिष्यते | भरिष्येते | भरिष्यन्ते | प्र. |
| | भरिष्यसे | भरिष्येथे | भरिष्यध्वे | म. |
| | भरिष्ये | भरिष्यावहे | भरिष्यामहे | उ. |

१ लिटः क्वसौ द्विर्वचनादि केषु कृतेषु रूपमेवम् । काशिकायाम् (७-२-६७) उदाहृतम् ।

२ विपूर्वकादस्मात् 'जिदृक्षिविश्रीण्–' (३-२-१५७) इत्यादिना इनिप्रत्ययस्ताच्छीलिकः ।

३ 'श्र्युकः क्किति' (७-२-११) इतीण्निषेधः । एवं निष्ठाक्तिन्नादिष्वपि ज्ञेयम् ।

४ कष्टं श्रितः कष्टश्रितः । 'द्वितीया श्रित–' (२-१-२४) इत्यादिना समासः

५ 'क्विब् वचिप्रच्छ्याय–' (वा. ३-२-१७८) इति ताच्छीलिकः क्विप् प्रत्ययः, तत्सन्नियोगेन धातोर्दीर्घः सम्प्रसारणाभावश्च । श्रयते भगवन्तं नित्यमिति श्रीः = लक्ष्मीः ।

६ 'वहिश्रि–' (द.उ. १-२१) इत्यादिना निप्रत्ययः । श्रेणिः = आलिः । श्रेणीः अत्र कृदिकारात् अक्तिनः (ग.सू. ४-१-४) इति ङीष् ।

७ 'श्मनि श्रयते ड्रुन्' (द.उ. १-१६७) इति ड्रुन् प्रत्यये टिलोपे च रूपमेवम् ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लोट् | भरतु-तात् | भरताम् | भरन्तु | प्र. |
| | भर-तात् | भरतम् | भरत | म. |
| | भराणि | भराव | भराम | उ. |
| आ. | भरताम् | भरेताम् | भरन्ताम् | प्र. |
| | भरस्व | भरेथाम् | भरध्वम् | म. |
| | भरै | भरावहै | भरामहै | उ. |
| लङ् | अभरत् | अभरताम् | अभरन् | प्र. |
| | अभरः | अभरतम् | अभरत | म. |
| | अभरम् | अभराव | अभराम | उ. |
| आ. | अभरत | अभरेताम् | अभरन्त | प्र. |
| | अभरथाः | अभरेथाम् | अभरध्वम् | म. |
| | अभरे | अभरावहि | अभरामहि | उ. |
| वि. लि. | भरेत् | भरेताम् | भरेयुः | प्र. |
| | भरेः | भरेतम् | भरेत | म. |
| | भरेयम् | भरेव | भरेम | उ. |
| आ. | भरेत | भरेयाताम् | भरेरन् | प्र. |
| | भरेथाः | भरेयाथाम् | भरेध्वम् | म. |
| | भरेय | भरेवहि | भरेमहि | उ. |
| आ. लि. | भ्रियात् | भ्रियस्ताम् | भ्रियासुः | प्र. |
| | भ्रियाः | भ्रियास्तम् | भ्रियास्त | म. |
| | भ्रियासम् | भ्रियास्व | भ्रियास्म | उ. |
| आ. | भृषीष्ट | भृषीयास्ताम् | भृषीरन् | प्र. |
| | भृषीष्ठाः | भृषीयास्थाम् | भृषीढ्वम् | म. |
| | भृषीय | भृषीवहि | भृषीमहि | उ. |
| लुङ् | अभार्षीत् | अभार्ष्टाम् | अभार्षुः | प्र. |
| | अभार्षीः | अभार्ष्टम् | अभार्ष्ट | म. |
| | अभार्षम् | अभार्ष्व | अभार्ष्म | उ. |
| आ. | अभृत | अभृषाताम् | अभृषत | प्र. |
| | अभृथाः | अभृषाथाम् | अभृढ्वम् | म. |
| | अभृषि | अभृष्वहि | अभृष्महि | उ. |
| लृङ् | अभरिष्यत् | अभरिष्याताम् | अभरिष्यन् | प्र. |
| | अभरिष्यः | अभरिष्यतम् | अभरिष्यत | म. |
| | अभरिष्यम् | अभरिष्याव | अभरिष्याम | उ. |
| आ. | अभरिष्यत | अभरिष्येताम् | अभरिष्यन्त | प्र. |
| | अभरिष्यथाः | अभरिष्येथाम् | अभरिष्यध्वम् | म. |
| | अभरिष्ये | अभरिष्यावहि | अभरिष्यामहि | उ. |

**कर्मणि**—भ्रियते। **णिचि**—भारयति-ते। **सनि**—बिभरिषति-ते। '**सनिवन्तर्धे**' ति वेट्। बुभूर्षति-ते '**इको झल्** इति कित्वे, अज्झनगमामिति दीर्घे, भृ इति जाते, '**उदोष्ठ्यपूर्वस्य**' इति उत्वे, रपरत्वे, '**हलिचेति**' दीर्घे। **यङि**—बेभ्रीयते। **यङ्लुकि**—बिभर्ति-बर्भरीति-बरीभरीति-भरिंभरीति। **कृत्सु**—भारकः-रिका, बिभरिषकः[१]-बुभूर्षकः-षिका, बेभ्रीयकः[२]-यिका, भर्ता-त्री, भारयिता-त्री, बिभरिषिता, बुभूर्षिता-त्री, बेभ्रीयिता-त्री, भरन्-न्ती, भारयन्-न्ती, बिभरिषन्-बुभूर्षन्-न्ती, भरिष्यन्[३]-न्ती-ती, भारयिष्यन्-न्ती-ती, बिभरिष्यन्-बुभूर्षिष्यन्- न्ती-ती, भरमाणः, भारयमाणः, बिभरिषमाणः-बुभूर्षमाणः, बेभ्रीयमाणः, भरिष्यमाणः, भारयिष्यमाणः, बिभरिष्यमाणः-बुभूर्षिष्यमाणः, बेभ्रीयिष्यमाणः, मेदिनीभृत्[४]-भृतौ-भृतः, भृतम्-तवान्, भृतकी, भारितः, बिभरिषितः-बुभूर्षितः, बेभ्रीयितः-तवान्, जारभरः[५], उदकभारः,[६] बंशभारः, आत्मम्भरिः,[७] कुक्षिम्भरिः,[८] उदरम्भरिः, मालभारी[९]-उत्पलमालभारी, विश्वम्भरः[१०]-विश्वम्भरा, ग्रामभर्ता,[११] बभ्रिः,[१२] भारः, बिभरिषुः-बुभूर्षुः, बेभ्रियः[१३], भर्तव्यम्, भारयितव्यम्, बिभरिषितव्यम्-बुभूर्षितव्यम्, बेभ्रीयितव्यम्, भरणीयम्, भारणीयम्, बिभरिषणीयम्-बुभूर्षणीयम्, बेभ्रीयणीयम्, भृत्यः,[१४] भार्या (क्षत्रियाः)

---

१ 'सनीवन्तर्ध–' (७-२-४९) इत्यनेन सन्नन्ते इड्विकल्पः। इट्पक्षे रूपमेवम्। इडभावपक्षे सनो झलादित्वात् 'इको झल्' (१-२-९) इति कित्वे, 'अजझनगमां सनि' (६-४-१६) इति दीर्घे, 'उदोष्ठ्यपूर्वस्य' (७-१-१०२) इत्युत्वरपरत्वयोः, हलि च' (८-२-७७) इति दीर्घे च बुभूर्षकः इति रूपम्। एवं सन्नान्ते सर्वत्र रूपद्वयस्य निष्पत्तिः।

२ यङि द्विर्वचनात् पूर्व, परत्वेन 'रीङ् ऋतः' (७-४-२७) इति 'भृ' इत्यत्र ऋकारस्य रीङादेशे, द्विर्वचनादिषु कृतेषु अभ्यासे गुणे च रूपम्। एवं यङन्ते सर्वत्र ज्ञेयम्।

३ 'ऋद्धनोः स्ये' (७-२-७०) इतीडागमे:। एवं शानजन्तेऽपि।

४ 'क्विप् च' (३-२-७६) इति कर्मणि उपपदे क्विप्। 'ह्रस्वस्य–' (६-१-७१) इति तुक्।

५ जारं भरतीति जारभरः। स्त्रियां जारभरा = कुलटा। पचादिषु 'जारभरा' इति पाठात् कर्मोपपदे अणपवादोऽच् प्रत्ययः। चारभरा इति कुत्रचिद् दृष्टः पाठः। सचाप्रामाणिकः।

६ उदकं भरतीति उदकभारः। 'कर्मण्यण्' (३-२-१-) इत्यण्। 'मन्थौदन–' (६-३-६०) इत्यनेन उदकशब्दस्य उदादेशो विकल्पेन भवति।

७ 'फलेग्रहिरात्मम्भरिश्च' (३-२-२६) इत्यनेन आत्मानं भरतीत्यर्थे आत्मनशब्दस्योपपदस्य मुमागम इनप्रत्ययस्यश्च भृञो निपात्यते। आत्मगम्भरिः = उदरैकपरायणः।

८ 'भृञः कुक्ष्यात्मनोर्मुम्' (वा. ३-२-२६) इति वर्तिकात् कुक्षिम्भरिः इत्याद्यपि साधुः।

९ 'सुप्यजातौ–' (३-२-७८) इति णिनिः। 'इष्टकेषीकामालानां–' (६-३-६५) इति पूर्वपदस्य ह्रस्वः। 'पदाङ्गाधिकारे तस्य च तदुत्तरपदस्य च (परि. ३०) इत्यनेन तदुत्तरपदस्य च ह्रस्वः। तेन 'उत्पलमालभारी' इत्यपि साधुः।

१० 'संज्ञायां भृतृ–' (३-२-४६) इति खच्। 'खित्यनव्ययस्य' (६-३-६६) इति वर्तमाने, 'अरुर्दिषदजन्तस्य–' इति मुम्। विश्वम्भरः = विष्णुः। स्त्रियां टापि विश्वम्भरा = भूमिः।

११ 'तृन्' (३-२-१३५) इति ताच्छील्ये तृन्। याजकादित्वात् (२-२-९) समासः।

१२ तच्छीलादिषु कर्तृषु 'आदृगमहनजनः किकिनौ लिट् च' (३-२-१७१) इत्यनेन किः किन् प्रत्ययः। तस्य च लिड्वद् भावेन द्विर्वचनादिके कृते, यणादेशः बभ्रिः = आयुधविशेषाणां भरणशाली।

१३ यङन्तात् पचाद्यचि, यङो लुकि संयोगपूर्वकत्वात् यणं बाधित्वा, इयङादेशे रूपमेवम्।

१४ 'भृञोऽसंज्ञायाम्' (३-१-११२) इत्यत्र 'असंज्ञायाम्' इत्युक्तेः, संज्ञायां क्यपि तुकि भृत्यः = कर्मकरः। असंज्ञायां तु भार्यः इत्येव। भार्याः नाम क्षत्रियाः।

संभृत्य[१]-संभार्य, सम्भर्यम्[२], भार्यम्, बिभरिष्यम्-बुभूर्ष्यम्, बेभ्रीय्यम्, ईषद्भरः-दुर्भरः-सुभरः, भ्रियमाणः,[३] भार्यमाणः, बिभरिष्यमाणः-बुभूष्यमाणः, बेभ्रीय्यमाणः, भारः,[४] बिभरिषः-बुभूर्षः, बेभ्रीयः, भर्तुम्, भारयितुम्, बिभरिषितुम्-बुभूर्षितुम्, बेभ्रीयितुम्, भृतिः-सम्भृतिः, उपभृत्,[५] भृत्या[६]-भार्या, पङ्क्भारिका,[७] भारणा, बिभरिषा-बुभूर्षा, बेभ्रीया, भरणम्-आभरणम्[८], भारणम्, बिभरिषणम्-बुभूर्षणम्, बेभ्रीयणम्, भृत्वा, भारयित्वा, बिभरिषित्वा-बुभूर्षित्वा, बेभ्रीयित्वा, सम्भृत्य, सम्भार्य, प्रबिभरिष्य-प्रबुभूष्य, प्रबेभ्रीष्य, अग्रेभारं ब्रजति,[९] अग्रे भृत्वा ब्रजति, भरुः[१०], बभ्रुः[११], भरतः,[१२] अबभृथः,[१३] भर्म[१४]। शाकम्भरी,[१५] अभ्रम्[१६]।

**(८९९) हृञ्—हरणे**। (ले जाना, हरण करना, चोरी करना, **अनु**—अनुसरण करना, अनुगमन करना, **अप**—बलात् ले जाना, अपहरण करना, चोरी करना, **अभि**—हल्ला करना, मार पीट करना, **अभ्या**—तर्क वितर्क करना, वाद-विवाद करना, शुद्धाशुद्ध का विचार करना, **अभ्युत्**—देना, अर्पण करना, **अभिव्या**—उच्चारण करना, **अव**—पुनः सम्पादन करना, फिर प्राप्त करना, शासन करना, दण्ड देना, **उत्**—ऊपर लेना, उद्धार करना, **उदा**—कहना, उदाहरण देना, **उप**—भेंट देना, समीप लाना, **उपसम्**—सिकोड़ना, समेटना, समाप्त करना, **नि**—ठिठुरना, जमना, **निर्**—अपमान करना, **निरा**—उपवास करना, भूखा रहना, **परि**—गाली देना, त्यागना, **प्र**—प्रहार करना, मारना, **प्रति**—नजर लगाना, **प्रत्या**—इन्द्रिय दमन पूर्वक ध्यान करना, **प्रतिसम्**—छोड़ना, त्यागना, अप्रतिष्ठा करना, **वि**—क्रीड़ा करना, विलास करना,

---

१ 'संपूर्वाद्वा' (वा. ३-१-११२) इत्यनेन वा क्यप्। पक्षे ण्यत्।

२ अत्र बाहुलकात् यत् प्रत्यये गुणः। सम्भर्यम् गवायनरूपः सत्रविशेषः। क्वचित् सम्भार्यम् इत्येव गवामयनस्य नाम दृष्टम्।

३ यकि, 'रिङ् शयग् लिङ्क्षु' (७-४-२८) इति रिङादेशः।

४ धातोरस्य ह्रस्व ऋकारान्तत्वात् घञेव न्याय्यः। क्षीरस्वामी तु 'ऋदोरप्' (३-३-५७) भरः।' इत्युक्तवान्। तच्चिन्त्यम्।

५ उप भ्रियतेऽनेनेत्यर्थे 'सम्पदादिभ्यः–' (वा. ३-३-१०८) इति भावे क्विप् भवति। अश्वत्थकाष्ठनिर्मितः दर्शपूर्णमासिको यज्ञपात्रविशेषुः = उपभृत्।

६ संज्ञायां 'समजनि–' (३-३-९९) इति क्यप् स्त्रियां भवति तुक् च। असंज्ञायां तु भार्या इत्येव।

७ 'पर्यायार्हणोत्पत्तिषु ण्वुच्' (३-३-१११) इति अर्हणार्थे ण्वुच् प्रत्ययो भवति। पङ्क्भरिकामर्हति गौः।

८ आ = समन्तात् भ्रियते इत्याभरणम्। 'कृत्यल्युटो बहुलम्' (३-३-११३) इत्यत्र बहुलग्रहणात् कर्मणिल्युटि।

९ 'विभाषाऽग्रेप्रथमपूर्वेषु' (३-४-२४) इति वा णमुल्। पक्षे क्त्वाऽपि। एवं प्रथमं भारं-प्रथमं भृत्वा पूर्वम्भारं पूर्वं भृत्वा इत्यपि बोध्यम्।

१० 'भृमृ–' (द.उ. १-९२) इति उप्रत्ययः। प्राणिनो भरतीति भरुः = समुद्रः।

११ 'कुर्भ्रश्च' (द.उ. १-१०७) इति कुप्रत्ययः, चकारात् द्वित्वं च। बभ्रुः = कपिलो वर्णः, नकुलो वा।

१२ 'भृदृ–' (द.उ. ६-१४) इत्यतच् प्रत्यये रूपमेवम्।

१३ 'अवे भृञः' (द.उ. ६-२८) इति अवोपपदादस्मात् क्थन् प्रत्ययः। अवभृथः = यज्ञान्तस्नानम्।

१४ 'मनिन्' (द.उ. ६-७३) इति मनिन् प्रत्ययः। भर्म = भरणम्।

१५ शाकं भरतीति शाकम्भरी = पार्वती। भृञः कुक्ष्यात्मनोर्मुम् च' (वा. ३-३-२६) इत्यत्र चकरात् मुम् इन् च भवति। स्त्रियां 'कृदिकारादक्तिनः' (ग.सू. ४-१-४५) इति ङीष्।

१६ अपो भरतीति अभ्रम् कर्मण्युपपदे 'मूलविमुजादिभ्यः उपसंख्यानम्' (वा. ३-२-५) इति कप्रत्ययः। 'इको यणचि' (६-१-७७) इति यण्।

विहार करना, खेलना, **व्या**—बोलना, कहना, **व्यव**—उद्योग करना, **सम्**—मार डालना, संहार करना, **समा**—एकत्र करना, **सभिव्या**—योजना करना, या रचना, युक्ति निकालना, संयोजन करना, **समुदा**—कथन करना, कहना, **समुप**—एकत्र करना, देना, **सम्प्र**—(आ.) शुद्ध करना, लड़ाई करना, **अनु**—परम्परागत व्यवहार का सेवन करना)। सकर्म.। अनिट्। उभय.

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | हरति | हरतः | हरन्ति | प्र. |
| | हरसि | हरथः | हरथ | म. |
| | हरामि | हरावः | हरामः | उ. |
| लिट् | जहार | जह्रतुः | जह्रुः | प्र. |
| | जहर्थ | जह्रथुः | जह्र | म. |
| | जहार-जहर | जह्रिव | जह्रिम | उ. |
| लुट् | हर्ता | हर्तारौ | हर्तारः | प्र. |
| | हर्तासि | हर्तास्थः | हर्तास्थ | म. |
| | हर्तास्मि | हर्तास्वः | हर्तास्मः | उ. |
| लृट् | हरिष्यति | हरिष्यतः | हरिष्यन्ति | प्र. |
| | हरिष्यसि | हरिष्यथः | हरिष्यत | म. |
| | हरिष्यामि | हरिष्यावः | हरिष्यामः | उ. |
| लोट् | हरतु-तात् | हरताम् | हरन्तु | प्र. |
| | हर-तात् | हरतम् | हरत | म. |
| | हराणि | हराव | हराम | उ. |
| लङ् | अहरत् | अहरताम् | अहरन् | प्र. |
| | अहरः | अहरतम् | अहरत | म. |
| | अहरम् | अहराव | अहराम | उ. |
| वि. लि. | हरेत् | हरेताम् | हरेयुः | प्र. |
| | हरेः | हरेतम् | हरेत | म. |
| | हरेयम् | हरेव | हरेम | उ. |
| आ. लि. | ह्रियात् | ह्रियास्ताम् | ह्रियासुः | प्र. |
| | ह्रियाः | ह्रियास्तम् | ह्रियास्त | म. |
| | ह्रियासम् | ह्रियास्व | ह्रियास्म | उ. |
| लुङ् | अहार्षीत् | अहार्ष्टाम् | अहार्षुः | प्र. |
| | अहार्षीः | अहार्ष्टम् | अहार्ष्ट | म. |
| | अहार्षम् | अहार्ष्व | अहार्ष्म | उ. |
| लृङ् | अहरिष्यत् | अहरिष्यताम् | अहरिष्यन् | प्र. |
| | अहरिष्यः | अहरिष्यतम् | अहरिष्यत | म. |
| | अहरिष्यम् | अहरिष्याव | अहरिष्याम | उ. |

**आत्मनेपदे**—१ हरते। २ **प्र.** जह्रे जह्राते जह्रिरे। **म.** जह्रषे जह्राथे जह्रिढ्वे-ध्वे।

**उ.** जह्रिवहे जह्रिमहे। ३ हर्ता। **म.** हर्तासे। ४ हरिष्यते। ५ हरताम्। ६ अहरत। ७ हरेत। ८ **प्र.** हृषीष्ट हृषीयास्ताम् हृषीरन्। **म.** हृषीष्ठाः हृषीयास्थाम् हृषीढ्वम्। **उ.** हृषीय हृषीवहि हृषीमहि। ९ **प्र.** अहृत अहृषाताम् अहृषत। **म.** अहृथाः अहृषाथाम् अहृड्ढ्वम्-ध्वम्। **उ.** अहृषि अहृष्वहि अहृष्महि। १० अहरिष्यत।

**कर्मणि**—ह्रियते। ९ अहारि, अहारिषाताम्-अहृषाताम्। **णिचि**—हारयति-ते। ९ अजीहरत्-त। **सनि**—जहीर्षति-ते। **यङि**—जेह्रीयते। **कृत्सु**—हरणीयम्, हरणम्, हारकः-रिका, हर्ता-त्री, हर्तव्यम्, हर्तुम्, हृत्वा, प्रहृत्य, हार्य्यम्, हरन्-माणः, हरिष्यन्-ष्यमाणः, **कर्मणि**— ह्रियमाणः, हारिष्यमाणः, हरिष्यमाणः, प्रहारः, प्रहरणम्, अपहृतः, अपहरणम्, संहृतः, संहारः, अनुहरणम्, विहारः, व्याहरः, निर्हारः, अंशहरः[1], भारहरः,[2] कवचहरः,[3] पुष्पाहरः,[4] अनुहरमाणाः, प्रतिहर्ता, हारयन्[5] भारं देवदत्तं यज्ञदत्तो गच्छति, संप्रहरमाणा[6] राजानः, ततः सम्प्रहरिष्यन्तौ[7] दृष्ट्वा कर्णधनञ्जयौ, पैतृकमश्वाः, शतस्य[8] व्यवहरन्-न्ती, हरिष्यन्[9]-न्ती, हरिष्यमाणः, अवहारः,[10] दृतिहरः[11]-नाथहरिर्वा पशुः, संहारः[12], हारः[13], हारा,[14] आहारः[15],

१ अशं हरतीति अंशहरः। 'हरतेरनुद्यमनेऽच्' (३-२-९) इति अच्प्रत्ययः।
२ शारीरक उद्यमे विवक्षितं तु 'कर्मण्यण्' (३-२-१) इति अत्र अण् प्रत्ययः। उपपदसमासः। वृद्धिः।
३ 'वयसि च' (३-२-१०) इति कर्मोपपदादस्मात् वयसि गम्ये हरतेरच् प्रत्ययः। कवचहरः = कवचधारण योग्यवयोविशिष्ट इत्यर्थः।
४ आङुपसृष्टात् कर्मोपपदात् अस्मात् ताच्छील्ये गम्ये 'आङि ताच्छील्ये' (३-२-११) इति अच् 'पुष्पाहरः = यः पुष्पविक्रयादिभिः, मालाग्रथनादिश्च पुष्पैकजीवी, स उच्यते। एवं तृणाहरः दर्भाहरः, शाकाहरः इत्याद्युदाहार्यम्।
५ 'हृक्रोरन्यतरस्याम्' (१-४-५३) इति अणौ कर्तुः णौ कर्मसंज्ञा, तेन देवदत्तशब्दात् द्वितीया।
६ हरतेर्हिंसार्थत्वेऽपि 'न गति हिंसार्थेभ्यः' (१-३-१५) इति आत्मनेपदनिषेधो न भवति। 'हृवह्योरप्रतिषेधः' (वा. १-३-१५) इति वचनात्।
७ अत्र युद्धाभिमुख्यमात्रमर्थः न तु कर्मव्यतीहारः तेन परस्मैपदम्।
८ कर्मणः 'व्यवहृपणोः समर्थयोः' (२-३-५७) इति शेषे षष्ठी 'शतस्य' इति।
९ धातोरनिट्त्वेऽपि स्ये 'ऋद्धनोः स्ये' (७-२-७०) इतीडागमः।
१० अवहरतीति अवहारः = ग्राहः ग्रहो वा। 'श्याद्व्यधास्रुसंस्रवतीणवसवहृ—' (३-१-१४१) इति कर्तरि णप्रत्ययः।
११ इतिशब्दे नाथशब्दे च कर्मभूते उपपदे सति पशौ विशेष्ये, हरते र्दृतिनाथयोः पशौ' (३-२-२५) इतीन् प्रत्ययः। दृतिं = चर्मभरिस्त्रकां हरति इति दृतिहरः = श्वा। नाथं = नाशारज्जुं हरतीति नाथहरिः = पशुः।
१२ संह्रियन्तेऽनेन, अत्र इति वा संहारः = युद्धम् प्रलयश्च। 'अध्यायन्यायोद्यावसंहाराश्च' (३-३-१२२) इति निपातनात् घञ्' सूत्रे चकारस्यानुक्तसमुच्चयार्थकत्वात् अवहारः इत्यपीति काशिका। अवहारः = चोरः। घापवादो घञ्। उपसर्गेण धातोरर्थाः भिद्यन्तेः, तथा चोक्तं पूर्वैः—

'उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते।
विहाराहारसंहारप्रहारपरिहारवत्। इति।

१३ 'अकर्तरि च कारके संज्ञायाम्' (३-३-१९) इति घञ्। ह्रियते पश्यतां मनोऽनेनेति हारः = मुक्तादिसरः।
१४ भिदादि (३-३-१०४) पाठात् स्त्रियामङि, ऋदृशोऽङि—' (७-४-१६) इति गुणे, गणादिपाठादेव दीर्घे च रूपम्। हरणं हारा।
१५ आह्रियन्तेऽस्मात् रसाः इति आहारः = भोजनम्। एवम् अभ्यवहारः इत्यपि। अत्र 'अकर्तरि च—' (३-३-१९) इति घञ्।

हरः,[1] पश्यतोहरः, हरिः[2]-हरिणी, हरितः, हृदयम्, हरिमाणः, हरीमा, प्रहिः, हरेणुः।

**(९००) धृञ्—धारणे।** (धारण करना, उद्धार करना)। **उत्**—उद्धार करना, **अव-निर्**—सत्य करके दिखाना। सकर्म.। अनिट्। उभय.।

१ धरति-ते। २ दधार-दध्रे। ३ धर्ता। ४ धरिष्यति-ते। ५ धरतु-धरतात् धरताम्। ६ अधरत्-त। ७ धरेत्-त। ८ ध्रियात्-धृषीष्ट। ९ अधार्षीत्-अधृत। १० अधरिष्यत्-त। हरति (८९९) वत्।

**कृत्सु**—धारकः-रिका, धर्ता-त्री, धारयिता-त्री, धारयन्-न्ती, धारयिष्यन्-न्ती-ती, धरमाणः, धारयमाणः, धरिष्यमाणः, धारयिष्यमाणः, धृतः-तम्-तवान्, धारितः, धरः, धरणः, धारः, दिधीर्षुः, देध्रीयः, धर्तव्यम्, धारयितव्यम्, धरणीयम्, धारणीयम्, धार्यम्, ध्रियमाणः, धार्यमाणः, धरणम्, धारणम्, धृत्वा, धारयित्वा, प्रधृत्य, प्रधार्य, युगन्धरः-जलन्धरः-पुरन्धरः-श्रुतधरः-वसुन्धरा, धनुर्धरा, महीध्रः, कर्णधारः, आधारः, धारा, धारयः, धारयन्, धुरन्धरः, धर्मः। धरन्-न्ती, धरिष्यन्-न्ती-ती।

**(९०१) णीञ्—प्रापणे।** (प्राप्त होना, ले जाना, पाना)। **अनु**—याचना करना, मांगना, कृपा करना, **अप**—ले जाना, हरण करना, **अभि**—अभिनय करना, **आ**—लाना, **उप**—(आ.) समीप में लाना, उपनयन संस्कार करना, **उत्**—(आत्म) ऊपर करना, ऊपर उठाना, **दुर्**—बुरा व्यवहार करना, बुरी रीति से वर्तना, **निर्**—निश्चय करना, **परि**—विवाह करना, ढूढ़ना, **प्र**—शिक्षा करना, प्रीति करना, **वि**—नम्र होना, प्रार्थना करना, **व्यप**—विरल होना, फैलाना, **विनिर्**—न्याय से विचार करना, न्याय करना, **सम्**—एकत्र करना, बटोरना, **समनु**—प्रार्थना करना, **समा**—एकत्र करना, बटोरना। सकर्म.। अनिट्। उभय.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | नयति | नयतः | नयन्ति | प्र. |
| | नयसि | नयथः | नयथ | म. |
| | नयामि | नयावः | नयामः | उ. |
| लिट् | निनाय | निन्यतुः | निन्युः | प्र. |
| | निनयिथ-निनेथ | निन्यथुः | निन्य | म. |
| | निनाय-निनय | निन्यिव | निन्यिम | उ. |
| लुट् | नेता | नेतारौ | नेतारः | प्र. |
| | नेतासि | नेतास्थः | नेतास्थ | म. |
| | नेतास्मि | नेतास्वः | नेतास्मः | उ. |

१ हरति पापादिकमिति हरः = शिवः। पचाद्यच्। प्रणतार्तिं हरतीति प्रणतार्तिहरः। अत्र 'हरतेरनुद्यमने—(३-२-९) इति अच्। पश्यन्तम् अनादृत्य हरतीति पश्यतोहरः = कस्यचित् संज्ञा। 'षष्ठी चानादरे' (२-३-३८) इति षष्ठी। 'षष्ठ्या आक्रोशे' (६-३-२१) इति षठ्या अलुक्।

२ हरति नतानां क्लेशादीन् इति हरिः = विष्णुः। अत्र 'हरतेर्दृतिनाथयोः पशौ' (३-२-२५) इत्यत्र योगविभागेन इन् प्रत्ययः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृट् | नेष्यति | नेष्यतः | नेष्यन्ति | प्र. |
| | नेष्यसि | नेष्यथः | नेष्यथ | म. |
| | नेष्यामि | नेष्यावः | नेष्यामः | उ. |
| लोट् | नयतु-नयतात् | नयताम् | नयन्तु | प्र. |
| | नय-नयतात् | नयतम् | नयत | म. |
| | नयानि | नयाव | नयाम | उ. |
| लङ् | अनयत् | अनयताम् | अनयन् | प्र. |
| | अनयः | अनयतम् | अनयत | म. |
| | अनयम् | अनयाव | अनयाम | उ. |
| वि. लि. | नयेत् | नयेताम् | नयेयुः | प्र. |
| | नयेः | नयेतम् | नयेत | म. |
| | नेयम् | नयेव | नयेम | उ. |
| आ. लि. | नीयात् | नीयास्ताम् | नीयासुः | प्र. |
| | नीयाः | नीयास्तम् | नीयास्त | म. |
| | नीयासम् | नीयास्व | नीयास्म | उ. |
| लुङ् | अनैषीत् | अनैष्टाम् | अनैषुः | प्र. |
| | अनैषीः | अनैष्टम् | अनैष्ट | म. |
| | अनैषम् | अनैष्व | अनैष्म | उ. |
| लृङ् | अनेष्यत् | अनेष्यताम् | अनेष्यन् | प्र. |
| | अनेष्यः | अनेष्यतम् | अनेष्यत | म. |
| | अनेष्यम् | अनेष्याव | अनेष्याम | उ. |

आत्मनेपदे

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | नयते | नयेते | नयन्ते | प्र. |
| | नयसे | नयेथे | नयध्वे | म. |
| | नये | नयावहे | नयामहे | उ. |
| लिट् | निन्ये | निन्याते | निन्यिरे | प्र. |
| | निन्यिषे | निन्याथे | निन्यिध्वे-ढ्वे | म. |
| | निन्ये | निन्यिवहे | निन्यिमहे | उ. |
| लुट् | नेता | नेतारौ | नेतारः | प्र. |
| | नेतासे | नेतासाथे | नेताध्वे | म. |
| | नेताहे | नेतास्वहे | नेतास्महे | उ. |
| लृट् | नेष्यते | नेष्येते | नेष्यन्ते | प्र. |
| | नेष्यसे | नेष्येथे | नेष्यध्वे | म. |
| | नेष्ये | नेष्यावहे | नेष्यामहे | उ. |
| लोट् | नयताम् | नयेताम् | नयन्ताम् | प्र. |
| | नयस्व | नयेथाम् | नयध्वम् | म. |
| | नयै | नयावहै | नयामहै | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लङ् | अनयत | अनयेताम् | अनयन्त | प्र. |
| | अनयथाः | अनयेथाम् | अनयध्वम् | म. |
| | अनये | अनयावहि | अनयामहि | उ. |
| वि. लि. | नयेत | नयेयाताम् | नयेरन् | प्र. |
| | नयेथाः | नयेयाथाम् | नयेध्वम् | म. |
| | नयेय | नयेवहि | नयेमहि | उ. |
| आ. लि. | नेषीष्ट | नेषीयास्ताम् | नेषीरन् | प्र. |
| | नेषीष्ठाः | नेषीयास्थाम् | नेषीढ्वम् | म. |
| | नेषीय | नेषीवहि | नेषीमहि | उ. |
| लुङ् | अनेष्ट | अनेषाताम् | अनेषत | प्र. |
| | अनेष्ठाः | अनेषाथाम् | अनेढ्वम्-ध्वम् | म. |
| | अनेषि | अनेष्वहि | अनेष्महि | उ. |
| लृङ् | अनेष्यत | अनेष्येताम् | अनेष्यन्त | प्र. |
| | अनेष्यथाः | अनेष्येथाम् | अनेष्यध्वम् | म. |
| | अनेष्ये | अनेष्यावहि | अनेष्यामहि | उ. |

**कर्मणि**—नीयते। **णिचि**—नाययति-ते। **सनि**—निनीषति-ते। **यङि**—नेनीयते। **यङ्लुकि**—नेनयीति-नेनेति। **कृत्सु**—नायकः-परिणायकः[१]-यिका, नीनीषकः[२]-षिका, नेनीयकः-यिका, नेता-त्री, नाययिता, निनीषिता-त्री, अनुनयन्-न्ती, विनयन्, नाययन्-न्ती, निनीषन्-न्ती, नेष्यन्-न्ती-ती, नाययिष्यन्-न्ती-ती, निनीषिष्यन्-न्ती-ती, (अजां ग्रामां) नयमानः,[३] (शास्त्रे) नयमानः, (दण्डम्) उन्नयमानः, (माणवकम्) उपनयमानः, (तत्वं) नयमानः, (कर्मकरान्) उपनयमानः, (करं) विनयमानः, (शतं) विनयमानः, (क्रोधं) विनयमानः[४], नाययमानः, निनीषमाणः, नेनीयमाणः, नेष्यमाणः, नाययिष्यमाणः, नेनीयिष्यमाणः, अग्रणीः[५], ग्रामणीः-ग्रामण्यौ-ग्रामण्यः, तिथिप्रणीः,[६] सेनानीः,[७] नीतः-नीतम्-नीतवान्, नायितः, निनीषितः, नेनीयितः-तवान्, नायः,[८]

---

१ 'अनुदेहभागतवतः प्रतिमां परिणायकस्य गुरुमुद्वहता।'

२ धातोरस्यानुदात्तत्वात् 'एकाच उपदेशेऽनुदात्तात्' (७-२-१०) इतीण्णिषेधे, 'इको झल्' (१-२-९) इति सनः कित्वात् न गुणः। 'अज्झनगमां सनि' (६-४-१६) इति दीर्घः। एवं सन्नन्ते सर्वत्र ज्ञेयम्।

३ नीङ्धातोः संयोगानुकूलव्यापारानुकूलव्यापारार्थकत्वेन 'कर्तुरीप्सिततमं कर्म' (१-४-४९) इत्यनेनाजायाः प्रधानकर्मकत्वम्। ग्रामस्य तु अप्रधानकर्मकत्वमिति द्वितीया प्रयोगः सङ्गच्छते। यद्वा 'अकथितं च' (१-४-५१) इत्यनेनाधारस्य ग्रामस्य तत्वविक्षायां कर्मसंज्ञा भवति, इति बोध्यम्।

४ 'कर्तृस्थे चाशरीरे कर्मणि' (१-३-३७) इति शानच्। क्रोधम् अपगमयन् इत्यर्थः।

५ 'सत्सूद्विषद्रुह–' (३-२-६१) इति क्विप्। 'अग्रग्रामाभ्यां नयतेर्णो वाच्यः' इति वचनेन णत्वम्। नयतेरित्युक्तेः 'ग्रामणायः' इति कर्मण्यण्यपि णत्वं भवति। स्पष्टमिदं 'वाऽसरुपोऽस्त्रियाम्' (३-१-९४) इत्यत्र भाष्ये।

६ 'सायन्तनीं तिथिप्रणयः पङ्कजानां दिवातनीम्'। (भ.का. ५-६५)

७ सार्धं कुमारसेनान्या शून्यश्चासीत् को नयः (भ.का. ५-७)

८ 'दुन्योरनुपसर्गे' (३-१-१४२) इति कर्तरि णप्रत्ययः। उपसृष्टात्तु पचाद्यजेव। केवलात् नीधातोः कर्तरि नय इति प्रयोगस्तु बाहुलकात् बोध्यः।

अनुनयः-नयः, उष्ट्रप्रणायः,[१] नेष्टा[२], नेता, नेत्रम्[३], अनुनायकः[४], अनुनायिका, निनीषुः, अनुनिनीषु, नेन्यः[५], नेतव्यः, नाययितव्यः, निनीषितव्यः, नेनीयितव्यः, नयनीयः, नायनीयः, निनीषणीयः, नेनीयनीयः, नेयमविनीयः[६] (कल्कः) विनेयः, आनाय्यः[७] (दक्षिणाग्निः) आग्नेयः (घटः), प्रणाय्यः[८] (चोरः, विरक्तश्च), प्रणेयः, सान्नाय्यम्[९] (हविः) नाय्यम्, निनीष्यम्, नेनीय्यम्, ईषन्नयः-दुर्नयः-सुनयः, नीयमानः, नाय्यमानः, निनीष्यमाणः, नेनीय्यमानः, नायः, निर्णयः-दुर्णय-प्रणयः-सुनयः-अनुनयः-विनयः-उपनयः, नयः, उन्नयः, अवनायः-उन्नायः, परिणायः-परिणयः, आनायः-(जालम्), निनीषः, नेनीयः, नेतुम्, नाययितुम्, निनीषितुम्, नेनीयितुम्, नीतिः, नायना, निनीषा, नेनीया, नयनम्, नायनम्, निनीषणम्, नेनीयनम्, नीत्वा, नाययित्वा, निनीषित्वा, नेनीयित्वा, प्रणीय, प्रणाय्य, प्रणिनीष्य, प्रणेनीय्य, ना[१०], नेमः[११], नीरम्[१२]।

**(९०२) धेट्—पाने।** (प्राशन करना, पीना)। सकर्म.। अनि.। परस्मै.।

१ धयति। २ प्र. दधौ[१३] दधतुः[१४] दधुः। म. दधिथ[१५]-दधाथ[१६] दधथुः दधु। उ. दधौ दधिव दधिम। ३ धाता। ४ धास्यति। ५ धयतु। ६ अधयत्। ७ धयेत्। ८ धेयात्[१७] धेयास्ताम्। ९ प्र. अदधत्[१८] अदधताम् अदधन्. म. अदधः अदधतम् अदधत। उ. अदधम्

१ 'कर्मण्यण्' (३-२-१) इति प्रपूर्वकनीधातोरणि 'उपसर्गादसमासे (८-४-१४) इति णत्वे रूपम्।
२ 'तृन्' (३-२-१३२) इति ताच्छीलिके तृनि, 'नयतेः षुक् च' (वा. ३-२-१३५) इति षुगागमे च रूपम्। नेष्टा = ऋत्विग्विशेषाः।
३ 'दाम्नीश—' (३-२-१८२) इत्यादिना करणे ष्ट्रन् प्रत्ययः। नेत्रम् = चक्षुरिन्द्रियम्।
४ 'तुमुन्ण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम्' (३-३-१०) इति क्रियार्थायां क्रियायां सत्यां भविष्यति ण्वुल् स्त्रियाम् 'प्रत्ययस्थात्—' (७-३-४४) इतीत्वम्।
५ यङन्तात् पचाद्यचि (३-१-१३४) अङ्गस्यानेकाच्त्वात् 'एरनेकाचः—' (६-४-८२) इति यणादेशः।
६ 'विपूयविनीय जित्या मुञ्जकल्कहलिषु' (३-१-११७) इति सूत्रेण विपूर्वकादस्मात् क्यपि रूपं निपातितम्। विनीयः = कल्कः।
७ 'आनाय्योऽनित्ये' (३-१-१२७) इत्यनेन आङ्पूर्वादस्माण्ण्यति, आयादेशो निपात्यते। आनीयते इत्यानाय्यः = दक्षिणाग्निविशेषः। 'सहि गहिपत्यादानीयते, अनित्यश्च सततमप्रज्वलनात्। आनाय्यः = गोधुक्।' इति क्षीरस्वामी।
८ 'प्रणाय्योऽसम्मतौ' (३-१-१२८) इति प्रपूर्वकादस्मात् ण्यदायादेशे निपात्यते असम्मतावर्थे। सम्मतिः = प्रीतिविषयी भवत् भोगेष्वादरश्च। तद्भिन्नोऽर्थो सम्मतिः। चोरः प्रणाय्यः = प्रीत्यनर्हः। शिष्यः प्रणाय्यः = विरक्तः।
९ 'पाय्यसान्नाय्य—' (३-१-१२९) इत्यादिना ण्यदायादेशयो रूपमेवम्। सान्नाय्यम् = दीधिपयसी।
१० 'नयतेडिच्च' (द.उ. २-८) इति ऋप्रत्ययः, स च डिद्वद् भवति। नयतीति ना = मनुष्यः।
११ औणादिके (द.उ. ७-२६) मन् प्रत्यये गुणः। नेमः = अर्धम्।
१२ औणादिके (द.उ. ८-३१) रक् प्रत्यये रूपम्। नीरम् = जलम्।
१३ 'आदेच्च उपदेशे' (६-१-४५) इति आत्वे, 'आत औ' (७-१-३४) इति औकारादेशे।
१४ 'आतो लोपः इटि च' (६-४-६४) इति आतो लोपे।
१५ इट् पक्षे आतो लोपः।
१६ इडभावपक्षे आत्वे दधा + थ = दधाथ।
१७ 'दाधाघ्वदाप्' (१-२-२०) इति घुसंज्ञा, 'एर्लिङि' (६-४-६७) इति एत्वे।
१८ 'विभाषा घेट्श्व्योः' (३-१-४०) तृतीयो लुङ्।

अदधाव अदधाम। पक्षे—**प्र.** अधात्[1] अधाताम् अधुः। **म.** अधाः अधातम् अधात। **उ.** अधाम् अधाव अधाम। पक्षे—**प्र.** अधासीत्[2] अधासिष्टाम् अधासिषुः। **म.** अधासीः अधासिष्टम् अधासिष्ट। **उ.** अधासिषम् अधासिष्व अधासिष्म। १० अधास्यत्।

**कर्मणि**—धीयते[3]। ९ अधायि। **णिचि**—धापयति-[4]ते। **सनि**—दिधित्सति[5]। **यङि**—देधीयते। **यङ्लुकि**—दाधेति-दाधन्ति। **कर्मव्यतिहारे**—व्यतिधयते। **कृत्सु**—धायकः[6]-यिका, धापकः[7]-पिका, धित्सकः[8]-त्सिका, देधीयकः-यिका, प्रणिधाता-त्री, धापयिता-त्री, दिधित्सिता-त्री, देधीयिता-त्री, प्रणिधयन्-न्ती, धापयन्-न्ती, धित्सन्-न्ती, प्रणिधास्यन्-न्ती-ती, धापयिष्यन्-न्ती-ती, धित्सिष्यन्-न्ती-ती, धापयमानः, धापयिष्यमाणः, देधीयमानः, देधीयिष्यमाणः, धाः-धौ-धाः, धीतम्-तः-तवान्, धपितः, धित्सितः, देधीयितः-तवान्, उद्धयः-धयः, नासिकन्धयः-स्तन्धयः, स्तन्धयी, नाडिन्धयः। मुष्टिन्धयः, सुनिन्धयः, घटिन्धयः-खारिन्धयः-खारिन्धयः-वातन्धयः, धारुः, धात्री, पुष्पन्धयः, क्षीरधाः, धातव्यम्, धापयितव्यम्, प्रणिधानीयम्, धापनीयम्, धित्सनीयम्, देधीयनीयम्, प्रणिधेयम्, धाप्यम्, धित्स्यम्, देधीय्यम्, धायः, सन्धिः, धापः, धित्सः, देधीयः, धातुम्, धापयितुम्, धित्सितुम्, देधीयितुम्, धीतिः, सुधा, धापना, धित्सा, देधीया, धयनम्, धापनम्, धित्सनम्, देधीयनम्, धीत्वा, धापयित्वा, धित्सित्वा, देधीयित्वा, प्रधाय, प्रधाप्य, प्रधित्स्य, प्रदेधीय्य। धेनुः।

**(९०३) ग्लै—हर्षक्षये।** (म्लान होना, ग्लानियुक्त होना, जम्हाई लेना)। अक.। अनिट्। पर.।

१ ग्लायति। २ **प्र.** जग्लौ जग्लतुः जग्लुः। **म.** जग्लिथ-जग्लाथ जग्लथुः जग्ल। **उ.** जग्लौ जग्लिव जग्लिम। ३ ग्लाता। ४ ग्लास्यति। ५ ग्लायतु। ६ अग्लायत्। ७ ग्लायेत्। ८ ग्लायात्-ग्लेयात्[9] ग्लायास्ताम्-ग्लेयास्ताम्। ९ अग्लासीत्। १० अग्लास्यत्।

**भावे**—ग्लायते। **णिचि**—ग्लापयति[10]-ते-ग्लपयति-ते। प्रग्लापयति। **सनि**—जिग्लासति। **यङि**—जाग्लायते। **यङ्लुकि**—जाग्लेति-जाग्लाति। **कृत्सु**—ग्लातव्यम्,

---

१ चङभाव पक्षे 'विभाषा घ्राधेट् शाच्छासः' (२-४-७८) इति सिचो लुग् वा। लुङि प्रथमा विधा।
२ सिज्लुगभावपक्षे 'यमरमनमाता—' (७-२-७३) इति सक्। चतुर्थो लुङ्।
३ 'घुमास्थागा—' एषामात ईत् स्यात् हलादौ क्ङित्यार्धधातुके।
४ आत्वे 'अर्तिह्रीब्ली' (७-३-३६) इति पुक्।
५ 'सनिमीमाधुरभमलभश—' एषामच इस् स्यात् सादौ सनि।
६ 'आदेच उपदेशेऽशिति' (६-१-४५) इत्यात्वे, 'आतो युक् चिण्कृतोः' (७-३-३३) इति युगागमः। एवं घञि ण्वुल्यपि ज्ञेयम्।
७ ण्यन्ते सर्वत्र आत्वे, आदन्तलक्षणः पुगागमो ज्ञेयः।
८ धारूपत्वेनास्य घुसंज्ञकत्वात् 'सनि मीमाघु—' (७-४-५४) इत्यादिना इस्। 'अत्र लोपोऽभ्यासस्य' (७-४-५८) इत्यभ्यासलोपः। 'सः स्यार्धधातुके' (७-४-४९) इति तकारः। एवं सन्नन्ते सर्वत्र प्रक्रिया।
९ 'वान्यस्य संयोगादेः' (६-३-६८) घुमास्थादेरन्यस्य संयोगादेर्धातोरात एत्वं वा स्यादार्धधातुके किति लिटि। इत्येवं वा।
१० 'ग्लास्नावनुवमां च' इति अनुपसृष्टस्य वा मित्वम्।

ग्लानीयम्, ग्लेयम्, ग्लानः,[१] ग्लायन्, ग्लातुम्, ग्लात्वा, प्रग्लाय। ग्लास्नुः ग्लौः सुग्लः।

**(९०४) म्लै—हर्षक्षये।** (ग्लान होना, ग्लानि युक्त होना, जम्हाई लेना)। अक.। अनिट्। परस्मै.। सर्वं 'ग्लायति' (९०३) वत्।

**(९०५) द्यै—न्यक्करणे।** (धिक्कार करना, तिरस्कार करना)। सक.। अनिट्। परस्मै.। ऐकारान्तः। द्यायति। 'ध्यायति' (९०८) वत्। कृत्सु—निष्ठायाम्-द्यानम्[२]-द्यानः-द्यानवान्।

**(९०६) द्रै—स्वप्ने।** (सोना, नींद लेना)। अक.। अनिट्। पर.। ऐकारान्तः। द्रायति। दद्रौ। हानिदद्रौ निदद्रौ। इति चम्पू भारतम्। 'ध्यायति' (९०८) वत्। द्रायकः-यिका, द्रापकः-पिका, दिद्रासकः-सिका, दाद्रायकः-यिका, शतरि-निद्रायन्[३]-न्ती, निद्रा[४], निद्रालुः, तन्द्रालुः,[५] निद्रः[६]।

**(९०७) ध्रै—तृप्तौ।** (तृप्त होना, सन्तुष्ट होना)। सक.। अनि.। परस्मै.। ऐकारान्तः। ध्रायति। 'ध्यायति' (९०८) वत्। **कृत्सु**—ध्रायकः-यिका, ध्रापकः-पिका, दिध्रासकः-सिका, दाध्रायकः-यिका, ध्राणः, ध्रातः।

**(९०८) ध्यै—चिन्तायाम्।** (ध्यान करना, चिन्तन करना, मनन करना, विचार करना, **नि**—शोधना, ढूंढना)। सकर्म.। अनि.। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | ध्यायति | ध्यायतः | ध्यायन्ति | प्र. |
| | ध्यायसि | ध्यायथः | ध्यायथ | म. |
| | ध्यायामि | ध्यायावः | ध्यायामः | उ. |
| लिट् | दध्यौ | दध्यतुः | दध्युः | प्र. |
| | दध्याथ-दध्यिथ | दध्यथुः | दध्य | म. |
| | दध्यौ | दध्यिव | दध्यिम | उ. |
| लुट् | ध्याता | ध्यातारौ | ध्यातारः | प्र. |
| | ध्यातासि | ध्यातास्थः | ध्यातास्थ | म. |
| | ध्यातास्मि | ध्यातास्वः | ध्यातास्मः | उ. |
| लृट् | ध्यास्यति | ध्यास्यतः | ध्यास्यन्ति | प्र. |
| | ध्यास्यसि | ध्यास्यथः | ध्यास्यथ | म. |
| | ध्यास्यामि | ध्यास्यावः | ध्यास्यामः | उ. |

१ 'संयोगदेरातो धातोर्यण्वतः' (८-२-४३) निष्ठातस्य नः स्यात्।

२ 'संयोगारातो धातोर्यण्वतः' (८-२-४३) इति निष्ठानत्वम्। 'धयन् दृशा ग्लानरुचिं स कृष्णं ग्लानि त्यजन् द्यानमले जलान्ते।' (धा.का. १-६०)।

३ शतरि, आयादेशे, रूपम्। स्त्रियां नुम्।

४ निपूर्वकादस्मात् 'आतश्चोपसर्गे' (३-३-१०६) इत्यङ्।

५ निपूर्वकात्, तत्पूर्वकादस्मात् 'स्पृहिगृहिपतिदयिनिद्रातन्द्रा–' (३-२-१५८) इत्यादिना तच्छीलादिषु कर्तृषु आलुच् प्रत्ययः। तच्छब्दे दकारस्य नकारः, सूत्रे तन्द्रा इति निर्देशात्।

६ निद्रातीति निद्रः। कर्तरि, 'आतश्चोपसर्गे' (३-१-१३६) इति क प्रत्ययः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लोट् | ध्यायतु-ध्यायतात् | ध्यायताम् | ध्यायन्तु | प्र. |
| | ध्याय-ध्यायतात् | ध्यायतम् | ध्यायत | म. |
| | ध्यायानि | ध्यायाव | ध्यायाम | उ. |
| लङ् | अध्यायत् | अध्यायताम् | अध्यायन् | प्र. |
| | अध्यायः | अध्यायतम् | अध्यायत | म. |
| | अध्यायम् | अध्यायाव | अध्यायाम | उ. |
| वि. लि. | ध्यायेत् | ध्यायेताम् | ध्यायेयुः | प्र. |
| | ध्यायेः | ध्यायेतम् | ध्यायेत | म. |
| | ध्यायेयम् | ध्यायेव | ध्यायेम | उ. |
| आ. लि. | ध्येयात् | ध्येयास्ताम् | ध्येयासुः | प्र. |
| | ध्येयाः | ध्येयास्तम् | ध्येयास्त | म. |
| | ध्येयासम् | ध्येयास्व | ध्येयास्म | उ. |

पक्षे—**प्र.** ध्यायात् ध्यायास्ताम् ध्यायासुः। **म.** ध्यायाः ध्यायास्तम् ध्यायास्त। **उ.** ध्यायसम् ध्यायास्व ध्यायास्म।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुङ् | अध्यासीत् | अध्यासिष्टाम् | अध्यासिषुः | प्र. |
| | अध्यासीः | अध्यासिष्टम् | अध्यासिष्ट | म. |
| | अध्यासिषम् | अध्यासिष्व | अध्यासिष्म | उ. |
| लृङ् | अध्यास्यत् | अध्यास्यताम् | अध्यास्यन् | प्र. |
| | अध्यास्यः | अध्यास्यतम् | अध्यास्यत | म. |
| | अध्यास्यम् | अध्यास्याव | अध्यास्याम | उ. |

**कर्मणि**—ध्यायते। **णिचि**—ध्यापयति-ते। **सनि**—दिध्यासति। **यङि**—दाध्यायते। **यङ्लुकि**—दाध्येति-दाध्याति। **कृत्सु**—ध्यायकः-यिका, ध्यापकः-पिका, दिध्यासकः-सिका, दाध्यापकः-यिका, ध्याता-त्री, ध्यापयिता-त्री, दिध्यासिता-त्री, दाध्यायिता-त्री, ध्यायन्-न्ती, ध्यापयन्-न्ती, दिध्यासन्-न्ती, ध्यास्यन्-न्ती-ती, ध्यापयिष्यन्-न्ती-ती, दिध्यसिष्यन्-न्ती-ती, ध्यापयमानः, ध्यापयिमाणः, दाध्यायमानः, दाध्ययिष्यमाणः, सुधीः[१]-सुधियौ-सुधियः, ध्यातम्[२]-तः, ध्यापितः, दिध्यासितः, दाध्यायितः-तवान्, दूढ्यः,[३] मध्यः, धीवा[४]-धीवरी,

१ 'ध्यायते सम्पसारणं च' (वा. ३-२-१७८) इति तच्छीलादिषु कर्तृषु क्विप् प्रत्ययः, सम्प्रसारणम्, पूर्वरूपादिकं च। द्विवचनादिषु 'न भूसुधियोः' (६-४-८५) इति यणो निषेधात् 'अचि श्नुधातु—' (६-४-७७) इति इयङ्।

२ 'संयोगादेरातो धातोर्यण्वतः' (४-२-४३) इति निष्ठानत्वे प्राप्ते 'न ध्याख्यापृ—' (८-२-५६) इति तस्य निषेधः।

३ दुष्टं ध्यायतीति दूढ्यः। 'आतोऽनुपसर्गे—' (३-२-३) इति कः। पृषोदरादिषु 'दुरोदाशनाशदमध्येषु—' (वा. ६-३-१०९) इति वचनात् ढत्वमुत्वं च। 'मां ध्यायतीति मध्यः इत्यत्राऽप्येवमेव क प्रत्ययः।' इति क्षीरस्वामी। अत्र अस्मच्छब्दप्रकृतेः 'म' इति कथमादेश इति न ज्ञायते।

४ 'अन्येभ्योऽपि दृश्यते' (३-२-७५) इति क्वनिपि सम्प्रसारणे रूपम्। स्त्रियाम् 'वनो र च' (४-१-७) ङीब्रेफौ।

आढ्यः,[१] ध्यापः, दिध्यासुः, दाध्यः, ध्यातव्यम्, ध्यापयितव्यम्, दिध्यासितव्यम्, दाध्यापितव्यम्, ध्यानीयम्, ध्यापनीयम्, दिध्यासनीयम्, दाध्यायनीयम्, ध्येयम्[२], ध्याप्यम्, दिध्यास्यम्, दाध्याय्यम्, ईषद्ध्यानः[३]-दुर्ध्यानः-सुध्यानः, ध्यायमानः, ध्याप्यमानः, दिध्यास्यमानः, दाध्याय्यमानः, ध्यायः, ध्यापः, दिध्यासः, दाध्यायः, ध्यातुम्, ध्यापयितुम्, दिध्यासितुम्, दाध्यायितुम्, ध्यातिः, सन्ध्या, ध्यापना, दिध्यासा, दाध्याया, ध्यानम्, ध्यापनम्, दिध्यासनम्, दाध्यायनम्, ध्यात्वा[४], ध्यापयित्वा, दिध्यासित्वा, दाध्यायित्वा, आध्याय, अभिध्याप्य, आदिध्यास्य, आदाध्याय्य ।

**(९०९) रै—शब्दे** । (शब्द करना) । अकर्म. । अनि. । परस्मै. । १ रायति । २ ररौ । 'ध्यायति' (९०८) वत् ।

**कृत्सु**—रायकः-यिका, रापकः-पिका, रिरासकः-सिका, रारायकः-यिका, राता-रात्री, रापयिता-त्री, रिरासिता-त्री, रारायिता-त्री, रायन्-न्ती, कीरः[५] ।

**(९१०) स्त्यै—शब्दसंघातयोः** । (शब्द करना, आवाज करना, भीड़ होना, घेरना, फैलना) । अक. । अनि. । पर. । ऐकारान्तः । १ स्त्यायति । २ तस्त्यौ । इत्यादि 'ग्लायति' (९०३) वत् । स्त्यायते संहन्यतेऽस्यां गर्भ इति स्त्री, स्त्येनः[६], स्त्यानम्, प्रसंस्तीतः ।

**(९११) ष्ट्यै—शब्दसंघातयोः** । (शब्द करना, भीड़ होना) । अकर्म. । अनिट् । परस्मै. । स्त्यायति । इत्यादि 'स्त्यायति' (९१०) वत् । षोपदेशस्य फलं तिष्ट्यासति । अतिष्ट्यपत् । इत्यत्र षत्वम् । प्रस्तीमः[७]-प्रस्तीतः, प्रस्तीमवान्-प्रस्तीतवान्, प्रसंस्तीतः[८], स्त्यातः[९]-संस्त्यानः, स्त्रीः[१०] ।

१ आध्यायन्त्येनमिति आढ्यः । 'आतश्चोपसर्गे' (३-१-१३६) इति क प्रत्ययः । पृषोदरादित्वान्मूर्धन्यः ।
२ 'अचो यत्' (३-१-९७) इति यत् प्रत्यये, 'ईद् यति' (६-४-६५) इतीकारे गुणे च रूपम् ।
३ 'आतो युच्' (३-३-१२८) इति ईषदाद्युपपदेषु खलपवादो युच् ।
४ 'प्रस्कन्दिकामिव प्राप्तो ध्यात्वा ब्रूते स्म जाम्बवान् ।' (भ.का. ७-७४) ।
५ 'की' इति रायति = शब्दायते सावििति कीरः = शुकः, शारिका वा । 'सुपि स्थः' (३-२-४) इत्यत्र 'सुपि' इति योगविभागात् कर्तरि कप्रत्यये, 'आतो लोप इटि च' (६-४-६४) इत्याकारलोपे च रूपमेवम् ।
६ औणादिके (द.उ. ५-१२) इनच् प्रत्यये रूपमेवम् ।
७ प्रपूर्वकस्यास्य निष्ठायाम्, 'स्त्यः प्रपूर्वस्य' (६-१-२३) इति यकारस्य सम्प्रसारणे, पूर्वरूपे, दीर्घे च, प्रस्त्योऽन्यतरस्याम्' (८-२-५४) इति निष्ठातकारस्य मकारान्तादेश विकल्पः । मकारान्तादेशाभावपक्षे 'संयोगादेरातो धातोर्यण्वतः' (८-२-४३) इति निष्ठानत्वं न भवति, सम्प्रसारणस्य नित्यत्वात्, सम्प्रसारणे कर्तव्ये निष्ठानत्वस्यासिद्धत्वात् ।
८ 'प्रस्त्यः' इत्येव वक्तव्ये 'स्त्यः प्रपूर्वस्य' (६-१-२३) इति वचनम् प्रशब्दो यस्मात् धातूपसर्ग- समुदायात् पूर्वः । तस्मादपि सम्प्रसारणं भवति इति ज्ञापनार्थम् । तेन प्रसंस्तीतः इत्यत्रापि सम्प्रसारणा- दिकम् ।
९ प्रभिन्नार्थोपपदस्य शुद्धस्य च धातोः न सम्प्रसारणादिकम् । अत्र 'संयोगादेरातो धातोर्यण्वतः । (८-२-४३) इति निष्ठानत्वम् । अत्र सर्वत्रापि स्त्या धातुग्रहणेषु 'ष्ट्यै' इत्यस्य 'स्त्यै' इत्यस्य च ग्रहणं सर्वसम्मतम् । यदाह वामनः 'सम्प्रसारणविधौ शोपदेशोऽप्ययं स्त्यारूपो गृह्यते' (६-१-२३) इति ।
१० 'स्त्यायते ड्रट्' (उ. ४-१६५) इति ड्रट्प्रत्यये डित्वाट्टिलोपे वलिलोपे, टित्वात् ङीपि च 'स्त्री' इति सम्पद्यते ।

**(९१२) खै—खदने।** खदनं स्थिरत्वं हिंसा च। (खोदना, सताना, दुख देना, स्थिर रहना)। सकर्म.। अनिट्। परस्मै.। ऐकारान्तः। खायति। चखौ। 'गायति' (९१७) वत्।

**(९१३-१५) क्षै-जै-षै—क्षये।** (नष्ट होना, ह्रास होना, कम होना, म्लान होना)। अकर्म.। अनि.। परस्मै.। ऐदित्। क्षायति। चक्षौ। जायति। जजौ। सायति। ससौ। इत्यादि। गायति (९१७) वत्।

**कृत्सु**—जायकः[१]-यिका, जापकः[२]-पिका, जिजासकः[३]-सिका, जाजायकः[४]-यिका, जाता-त्री, जापयिता-त्री, जिजासिता-त्री, जाजायिता-त्री, जायन्[५]-न्ती, जापयन्-न्ती, जिजासन्-न्ती, जास्यन्-न्ती-ती, जापयिष्यन्-न्ती-ती, जापयमानः, जापयिष्यमाणः, प्रजाः,[६] प्रजौ:-प्रजाः, जातम्-तः, जापितः, प्रजः[७], जायः[८], जापः, जिजासुः, जाजः, ज्ञातव्यम्, जापयितव्यम्, जानीयम्, जापनीयम्, जेयम्,[९] जाप्यम्, ईषज्जानः[१०]-दुर्जानः-सुजानः, जापमानः, जाप्यमानः, जातुम्, जापयितुम्, जातिः, प्रजा,[११] जापना, जिजासा, जाजाया, जानम्, जापनम्, जात्वा, जापयित्वा, प्रजाय, प्रजाप्य।

**(९१६) कै—शब्दे।** (शब्द करना)। अकर्म.। अनिट्। परस्मै.। ऐकारान्तः। कायति। चकौ। 'गायति' (९१७) वत्।

**(९१७) गै—शब्दे।** (शब्द करना, गाना, **उत्-प्र**—जोर से गाना या जोर से कहना, **वि**—निश्चय पूर्वक कहना, निन्दा करन **अव**—निन्दा करना। अक.। अनिट्। पर.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | गायति | गायतः | गायन्ति | प्र. |
| | गायसि | गायथः | गायथ | म. |
| | गायामि | गायावः | गायामः | उ. |
| लिट् | जगौ | जगतुः | जगुः | प्र. |
| | जगिथ-जगाथ | जगथुः | जग | म. |
| | जगौ | जगिव | जगिम | उ. |
| लुट् | गाता | गातारौ | गातारः | प्र. |
| | गातासि | गातास्थः | गातास्थ | म. |
| | गातास्मि | गातास्वः | गातास्मः | उ. |

१ 'आदेच उपदेशेऽशिति' (६-१-४५) इत्यनैमित्तिके आत्वे, 'आतो युक् चिण्कृतोः' (७-३-३८) इति युगागमः। एवं धञि णमुल्यपि ज्ञेयम्।
२ आत्वे, आदन्तलक्षणः पुगागमः। एवं ण्यन्ते सर्वत्र ज्ञेयम्।
३ द्वित्वे, 'सन्यतः' (७-४-७९) इतीत्वम्। एवं सन्नन्ते सर्वत्र ज्ञेयम्।
४ यङि, द्वित्वे, अभ्यासस्य 'दीर्घोऽकितः' (७-४-४६) इति दीर्घः एवं एङन्ते सर्वत्र ज्ञेयम्।
५ '—अशिति' (६-४-४५) इति प्रतिषेधात् पूर्वमायादेशे रूपम्।
६ क्विपि, सोः रुत्वविसर्गे आकारान्तोऽयं शब्दः।
७ 'आतोपसर्गे' (३-१-१३६) इति कप्रत्ययः। 'आतोलोपः—' (६-४-६४) इत्याकारलोपः।
८ 'श्याद् व्यधास्रु—' (३-१-१४१) इति णप्रत्ययः।
९ यति, आत्वे, 'ईद् यति' (६-४-४५) इतीत्वे गुणः।
१० 'आतो युच्' (३-३-१२८) इति खलपवादो युच्।
११ 'आतश्चोपसर्गे' (३-३-१०६) इत्यङ्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृट् | गास्यति | गास्यतः | गास्यन्ति | प्र. |
| | गास्यसि | गास्यथः | गास्यथ | म. |
| | गास्यामि | गास्यावः | गास्यामः | उ. |
| लोट् | गायतु-गायतात् | गायताम् | गायन्तु | प्र. |
| | गाय | गायतम् | गायत | म. |
| | गायानि | गायाव | गायाम | उ. |
| लङ् | अगायत् | अगायताम् | अगायन् | प्र. |
| | अगायः | अगायतम् | अगायत | म. |
| | अगायम् | अगायाव | अगायाम | उ. |
| वि. लि. | गायेत् | गायेताम् | गायेयुः | प्र. |
| | गायेः | गायेतम् | गायेत | म. |
| | गायेयम् | गायेव | गायेम | उ. |
| आ. लि. | गेयात् | गेयास्ताम् | गेयासुः | प्र. |
| | गेयाः | गेयास्तम् | गेयास्त | म. |
| | गेयासम् | गेयास्व | गेयास्म | उ. |
| लुङ् | अगासीत् | अगासिष्टाम् | अगासिषुः | प्र. |
| | अगासीः | अगासिष्टम् | अगासिष्ट | म. |
| | अगासिषम् | अगासिष्व | अगासिष्म | उ. |
| लृङ् | अगास्यत् | अगास्यताम् | अगास्यन् | प्र. |
| | अगास्यः | अगास्यतम् | अगास्यत | म. |
| | अगास्यम् | अगास्याव | अगास्याम | उ. |

**कर्मणि**—गीयते। गापयति। जिगासति। जेगीयते। जागेति-जागाति। **कृत्सु**—गायकः-यिका, गानम्, गायनः, गाता-त्री, गीतम्, गीतिः, गाथकः, गाथा, सङ्गीय, गेयम्, कर्तरि-गेयः,गायन्-गास्यन्,**कर्मणि**—गीयमानः,गास्यमानः,गातव्यम्,गानीयम्,गातुम्,गीत्वा, प्रगाय, गायन्ः, गायनी, अवगायति, विगायति, उद्गायति = उच्चैर्गायतीत्यर्थः।

(९१८) **शै—पाके**। (पकना, पकाना)। सकर्म.। अनिट्। पर.। ऐकारान्तः। शायति। शशौ। 'गायति' (९१८) वत्।

(९१९) **श्रै—पाके**। (पकना, पकाना)। सक.। अनिट्। पर.। श्रायति। शश्रौ। शश्रिथ-शश्राथ। शश्रौ शश्रिव शश्रिम। श्राता। इत्यादि 'ग्लायति' (९०३) वत्। शृतं क्षीरम्, श्राणा यवागू।

(९२०) **पै—शोषणे**। (सूखना, कुम्हलाना)। अक.। अनि.। पर.। ऐकारान्तः। पायति। 'गायति' (९१७) वत्।

पायकः[१]-यिका, पायकः[२]-यिका, पिपासकः-सिका, पापायकः[३]-यिका, पाता-पात्री, पाययिता-त्री, पायन्[४]-न्ती, पायन्-न्ती, पिपासन्, पास्यन्-न्ती-ती, पाययिष्यन्-न्ती-ती, पाः-पौ-पः, पातम्-तः, पायितः, पायः, सुपः, पातव्यम्, पाययितव्यम्, पानीयम्, पेयम्, पाय्यम्, पायमानः,पाय्यमानः,पातुम्,पाययितुम्,पातिः,सुपा,पायना,पानम्,पायनम्,पात्वा,पाययित्वा, प्रपाय, प्रपाय्य।

**(९२१) ओवै—शोषणे**। (सुखना, सुखाना, शुष्क होना)। अक.। अनिट्। पर.। १ वायति। २ ववौ। **म.** वविथ-ववाथ। ३ वाता। ४ वास्यति। ५ वायतु। ६ अवायत्। ७ वायेत्। ८ वायात्। ९ अवासीत्। **भावे**—वायते। **णिचि**—वायति-ते। **सनि**—विवासति। **यङि**—वावायते। **यङ्लुकि**—वावेति-वावाति। **कृत्सु**—वातव्यम्, वेयम्, ल्युट्-वानम्, निष्ठावानम्, वातुम्, वात्वा।

**(९२२) ष्टै—वेष्टने**। शोभायाञ्चेत्येके। (घेरना, लपेटना, वेष्टित करना, सुशोभित होना)। सक.। अनिट्। पर.। ऐकारान्तः। १ स्तायति। २ तस्तौ। ३ स्ताता। 'ध्यायति' (९०८) वत्। स्तायूनां[५] पतये नमः (तै. सं. ४-५-७)।

**(९२३) ष्णै—वेष्टने**। शोभायाञ्चेत्येके। (घेरना, इकट्ठा करना, शोभित होना)। सक.। अनिट्। पर.। ऐकारान्तः, स्नायति। 'ध्यायति' (९०८) वत्।

**(९२४) दैप्—शोधने**। (शुद्ध करना)। सकर्म.। अनि.। परस्मै.। ऐकारान्तः। दायति 'ध्यायति' (९०८) वत्। अस्य घुसंज्ञा नास्ति। तस्मादेत्वसिज्लुकौ न स्तः। ८ दायात्। ९ अदासीत्।

**(९२५) पा—पाने**। (पीना)। सकर्म। अनिट् परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | पिबति | पिबतः | पिबन्ति | प्र. |
| | पिबसि | पिबथः | पिबथ | म. |
| | पिबामि | पिबावः | पिबामः | उ. |
| लिट् | पपौ | पपतुः | पपुः | प्र. |
| | पपिथ-पपाथ | पपथुः | पप | म. |
| | पपौ | पपिव | पपिम | उ. |
| लुट् | पाता | पातारौ | पातारः | प्र. |
| | पातासि | पातास्थः | पातास्थ | म. |
| | पातास्मि | पातास्वः | पातास्मः | उ. |

१ 'आतो युक् चिण्कृतोः' (७-३-३३) इति युगागमः। एवं घञ् प्रत्यये, णमुलि च युगागमो ज्ञेयः।
२ 'शाच्छासाह्वाव्यावेपां युक्' (७-३-३६) इति ण्यन्ते सर्वत्र युगागमः। आदन्तलक्षणयुगामस्यापवादः।
३ 'गापोर्ग्रहणे इण् पिबत्योर्ग्रहणम्' (वा. २-४-७७) इति वचनात् ईत्वविधायके सूत्रे यङन्ते, नास्य ग्रहणमिति वत्तप्रत्ययादिषु च ईत्वमस्य धातो र्नेति ज्ञेयम् तेनैवं रूपम्।
४ '—आशिति' (६-४-४५) इत्युक्त्वादात्वं न। तेन शतरि आयादेशे रूपमेवम्।
५ बाहुलकात् औणादिके उण् प्रत्यये 'आतो युक्—' (७-३-३३) इति युगागमे च रूपम्। 'छद्मना ये वस्त्रादीनपहरन्ति ते 'स्तायवः' इति भट्टभास्करः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृट् | पास्यति | पास्यतः | पास्यन्ति | प्र. |
| | पास्यसि | पास्यथः | पास्यथ | म. |
| | पास्यामि | पास्यावः | पास्यामः | उ. |
| लोट् | पिबतु-पिबतात् | पिबताम् | पिबन्तु | प्र. |
| | पिब | पिबतम् | पिबत | म. |
| | पिबानि | पिबाव | पिबाम | उ. |
| लङ् | अपिबत् | अपिबताम् | अपिबन् | प्र. |
| | अपिबः | अपिबतम् | अपिबत | म. |
| | अपिबम् | अपिबाव | अपिबाम | उ. |
| वि. लि. | पिबेत् | पिबेताम् | पिबेयुः | प्र. |
| | पिबेः | पिबेतम् | पिबेत | म. |
| | पिबेयम् | पिबेव | पिबेम | उ. |
| आ. लि. | पेयात् | पेयास्ताम् | पियासुः | प्र. |
| | पेयाः | पेयास्तम् | पेयास्त | म. |
| | पेयासम् | पेयास्व | पेयास्म | उ. |
| लुङ् | अपात् | अपाताम् | अपुः | प्र. |
| | अपाः | अपातम् | अपात | म. |
| | अपाम् | अपाव | अपाम | उ. |
| लृङ् | अपास्यत् | अपास्यताम् | अपास्यन् | प्र. |
| | अपास्यः | अपास्यतम् | अपास्यत | म. |
| | अपास्यम् | अपास्याव | अपास्याम | उ. |

**कर्मणि**—पीयते। **णिचि**—पाययते। ९ अपीप्यत्। **सनि**—पिपासति। **यङि**—पेपीयते। **यङ्लुकि**—पापेति-पापाति। **कृत्सु**—पायकः[१]-यिका, पायकः[२]-यिका, पिपासकः-सिका, पेपीयकः[३]-यिका, पाता-त्री, पाययिता-त्री, पिपासिता-त्री, पेपीयिता-त्री, पिबन्[४]-न्ती, पाययिता-त्री, पिपासिता-त्री, पेपीयिता-त्री, पिबन्-न्ती, पाययन्-न्ती, पिपासन्-न्ती, पास्यन्-न्ती-ती, पाययिष्यन्-न्ती-ती, पिपासिष्यन्-न्ती-ती, व्यतिपिबमानः,[५] पाययमानः[६], व्यतिपिपासमानः, पेपीयमानः, व्यतिपास्यमानः, पाययिष्यमाणः,

---

१ 'आतो युक् चिण्कृतोः' (७-३-३३) इति युगागमः। एवं णमुलादिष्वपि यथासम्भवं युक् ज्ञेयः।

२ ण्यन्तात् सर्वत्र 'शाच्छासाह्वाव्यावेपां युक्' (७-३-३७) इति युगागमो ज्ञेयः आदन्तलक्षणपुगागमस्य बाधकोऽयम्।

३ ण्यन्ते सर्वत्र, 'घुमास्था—' (६-४-६६) इती ईत्वम्। अभ्यासे गुणः।

४ शतरि, पाघ्राध्मास्थाम्नादाण् दृश्यर्तिसर्तिशदसदां पिबजिघ्र—'(७-३-७८) इत्यादिना पिबादेशोऽङ्गस्य भवति। आदेशस्यादन्तत्वाद् गुणाभावः इति वृत्तिः। 'पिबतेर्गुणप्रतिषेधः' (वा. ७-३-७८) इतिं वचनमत्र प्रमाणम्। 'लोपः पिबतेः—' (७-४-४) इत्यत्र पिबतेः' इति निर्देशात् गुणो न' इति वर्धमानः।

५ 'कर्तरि कर्मव्यतिहारे' (१-३-१४) इति शानच्। सन्नन्ते तु 'पूर्ववत् सनः' (१-३-६२) इति शानजिति।

६ धातोरस्य निगरणार्थत्वेऽपि 'न पादमि—' (१-३-८९) इति परस्मैपदनिषेधात् ण्यन्तात् 'णिचश्च' (१-३-७४) इति शानज् भवत्येव।

दधिपीः[१]-दधिप्यौ-दधिप्यः, पीतम्पीतः[२]-पीतवान्, पायितः, पिपासितः, पेपीयितः-तवान्, उत्पिबः[३]-विपिब-पिबः,रुधिरपायी,[४] मधुपायी,[५] क्षीरपायी,[६] सुरापः[७]-शीधुपः-सुरापी, शीधुपी, मधुपः[८], पादपः, क्षीरपा (ब्राह्मणी) द्विपः[९], कच्छपः, कुण्डपाय्यः,[१०] (क्रतुः) क्षीरपीवा[११]-क्षीरपीवरी, धृतपावा[१२], कीलालपाः,[१३] पीवा, गजपायी[१४], पपिः,[१५] पपिवान्[१६], पामा,[१७] दधिपायः,[१८] पायः, पिपासुः, पेय्यः, पातव्यम्, पाययितव्यम्, पिपासितव्यम्, पेपीयितव्यम्, प्रपानीयम्[१९], प्रपाणीयम्, पायनीयम्, पिपासनीयम्, पेपीयनीयम्, पेयम्, पाय्यम्, पिपास्यम्, पेपीय्यम्,ईषत्पानः[२०]-दुष्पानः-सुपानः,पीयमानः,पाय्यमानः,पिपास्यमानः,पेपीय्यमानः,प्रपा,[२१] पायः, पिपासः, पेपीयः, पातुम्, पाययितुम्, पिपासितुम्, पेपीयितुम्, सम्पीतिः, सपीतिः[२२],

१ क्विपि, 'घुमास्थागापा—' (६-४-६६) इत्यादिना ईत्वे रूपमेवम्।

२ निष्ठायाम्, ईत्वे रूपमेवम्।

३ पाघ्राध्माधेट्दृशः शः (३-१-१३७) इति कर्तरि शप्रत्ययः। तस्य शित्वात् 'पाघ्रा—' (७-३-७८) इति पिबादेशे, पररूपे च रूपम्।

४ 'सुप्यजातौ णिनिस्ताच्छील्ये (३-२-७८) इत्यनेन णिनि प्रत्ययः। रुधिरपायी = राक्षसादिः।

५ 'बहुलमाभीक्ष्ण्ये' (३-२-८१) इति णिनि प्रत्ययः। आभीक्ष्ण्यम् = पौनः पुन्यम्।

६ 'व्रते' (३-२-८०) इति णिनिप्रत्ययः। क्षीरपानं व्रतं यस्य स क्षीरपायी।

७ 'गापोष्टक्' (३-२-८) इति कर्मण्युपपदे टक्प्रत्ययः। तत्र 'पिबतेः सुराशीध्वोरिति वक्तव्यम्' (वा. ३-२-८) इति वचनात् उपपदनियमः। स्त्रियां टित्वात् ङीप् भवति सुरापी-शीधुपी इति। अन्योपपदेषु तु 'आतोऽनुपसर्गे कः' (३-२-३) इति क प्रत्यये टापि क्षीरपः इत्यादिकं भवतीति विशेषः।

८ 'व्रीडजाड्यममजन् मधुपा सा स्वां मदात् प्रकृतिमेति हि सर्वः। (शि.व. १०-१८)।

९ 'सुपि स्थः' (३-२-४) इत्यत्र 'सुपि' इति योगविभागात् कप्रत्ययः। द्वाभ्यां पिबतीति द्वीपः = गजः।

१० 'क्रतौ कुण्डपाय्य सञ्चाय्यौ' (३-२-१३०) इत्यनेन ण्यति, आयादेशश्च निपातितः। कुण्डेन पीयतेऽस्मिन् सोम इति क्रतुविशेषेऽभिधेये कुण्डपाय्य शब्दः साधुः।

११ 'आतो मनिन् क्वनिब् वनिपश्च' (३-२-७४) इत्यनेन क्वनिपि इत्वे क्षीरपीवा इति रूपम्। स्त्रियाम्, 'वनो र च' (४-१-७) ङीप् रेफश्च भवति।

१२ 'आतो मनिन्—' (३-२-७४) इत्यनेन वनिपि रूपमेवम्।

१३ 'अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते' (३-२-७५) इति विच् प्रत्यये रूपम्।

१४ 'कर्तर्युपमाने' (३-२-७९) इति णिनिप्रत्ययः। गज इव पिबतीति गजपायी।

१५ 'आद् ऋगमहन—' (३-२-१७१) इति तच्छीलादिषु किः किन् वा प्रत्ययः तस्य लिड्वद् भाति देशात् द्विर्वचनम्। 'आतो लोप इटि च' (६-४-६४) इति आकारलोपः। अभ्यासे ह्रस्वः।

१६ 'विभाषा पूर्वाह्णापराह्णाभ्याम्' (४-३-२४) इत्यत्र भाष्ये 'पपुष आगतम् पपिवद्रूप्यम्' इति प्रयुक्तत्वात् छान्दसोऽपि क्वसुः क्वचिद् भाषायामपि भवतीति ज्ञायते। क्वसौ, द्विर्वचने, 'वस्वेकाजाद्घसाम्' (७-२-६७) इतीडागमे च रूपमेवम्।

१७ 'आतो मनिन्—' (३-२-७४) इति मनिन् प्रत्यये रूपम्।

१८ 'अण् कर्मणि च' (३-३-१२) इति क्रियार्थक्रियायामण्। कप्रत्ययापवादः।

१९ 'शेषे विभाषाऽकखादावषान्त उपदेशे' (८-४-१८) इति णत्वविकल्पः।

२० 'आतो युच्' (३-३-१२८) इति ईषदाद्युपदेषु खलपवादो युच् प्रत्ययः। 'दुष्पानः' इत्यत्र 'षात् पदान्तात्' (८-४-३५) निषेधाण्णत्वं न।

२१ 'घञर्थे कविधानम्—' (३-३-५८) इति घञर्थे कप्रत्ययः। प्रपिबन्त्यस्यामिति प्रपा = पानीयशाला।

२२ 'स्थागापापचो भावे' (३-३-९५) इति स्त्रियां सोपसर्गादपि क्तिन् प्रत्ययः। समानापीतिः इति विशेषणसमासे 'समानस्य च्छन्दसि—' (६-३-८४) इत्यत्र 'समानस्य' इति योगविभागात् सभावः। सपीतिः = सहपानम्।

क्षीरपायिका[१], पायना, पिपासा, पेपीया, क्षीरपाणाः[२], सुरापाणाः, सौवीरपाणाः, कषायपाणाः (वा उशीनरादयः), मधुपानम्,[३] क्षीरपाणम्[४]-क्षीरपानम्, सुरापाणः-सुरापानः, पयःपानम्[५], (सुखम्), पाय़नम्, पिपासनम्, पेनीयनम्, पीत्वा, पाययित्वा, पिपासित्वा, पेपीयित्वा, निपीय[६], प्रपाय्य, प्रपिपास्य, प्रपेपीय्य, पायुः[७], पाकः,[८] पीथः[९], पम्पा,[१०] पात्रम्[११], पयः[१२], पेरुः[१३]।

**(९२६) घ्रा—गन्धोपादाने**। (सूंखना)। सकर्म.। अनिट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | जिघ्रति | जिघ्रतः | जिघ्रन्ति | प्र. |
| | जिघ्रसि | जिघ्रथः | जिघ्रथ | म. |
| | जिघ्रामि | जिघ्रावः | जिघ्रामः | उ. |
| लिट् | जघ्रौ | जघ्रतुः | जघ्रुः | प्र. |
| | जघ्राथ-जघ्रिथ | जघ्रिथुः | जघ्र | म. |
| | जघ्रौ | जघ्रिव | जघ्रिम | उ. |
| लुट् | घ्राता | घ्रातारौ | घ्रातारः | प्र. |
| | घ्रातासि | घ्रातास्थः | घ्रातास्थ | म. |
| | घ्रातास्मि | घ्रातास्वः | घ्रातास्मः | उ. |
| लृट् | घ्रास्यति | घ्राष्यतः | घ्रास्यन्ति | इत्यादि। |
| लोट् | जिघ्रतु-जिघ्रतात् | जिघ्रताम् | जिघ्रन्तु | प्र. |
| | जिघ्र-जिघ्रतात् | जिघ्रतम् | जिघ्रत | म. |
| | जिघ्राणि | जिघ्राव | जिघ्राम | उ. |

१ 'पर्यायार्हणोत्पत्तिषु ण्वुच्' (३-३-१११) इति अर्हार्थे ण्वुच्। 'शायिकाद्य तव प्रापद्, अर्हसि क्षीरपायिकाम्' इति प्र. सर्वस्वे।

२ 'पाने देशे' (८-४-९) इति णत्वम्। अत्र क्षीरं पानं येषां ते क्षीरपाणाः इति वृत्तिः। क्षीरपाणादयः शब्दाः देशविशेषवाचकाः। क्षीरपाणा उशीनराः। सुरापाणः प्राच्याः। सौवीरपाणा वाहीकाः। कषायपाणा गन्धाराः।

३ देशविशेषाभिधानाभावादत्र णत्वं न।

४ 'वा भावकरणयोः' (८-४-१०) इति णत्वविकल्पः। भावार्थे— क्षीरपाणम्-क्षीरपानम् इति, करणार्थे— सुरापाणः-सुरापानः इति चोदाहरणमिति ज्ञेयम्।

५ 'कर्मणि च येन संस्पर्शात् कर्तुः शरीरसुखम्' (३-३-११६) इति ल्युट्। अत्र पयः पानेन पयः पानकर्तुः शरीरसुखसद्भावादीदृशस्थलेषु ल्युट् इति ज्ञेयम्।

६ 'न ल्यपि' (६-४-६९) इति ईत्वनिषेधः।'निपीय—' नैषधे (१-१) इत्यादयः प्रयोगाः 'पीङ् पाने' इत्यस्माल्ल्यपि साधव इति ज्ञेयम्॥

७ कृवापा (द.उ. १-८६) इत्यादिना उण्प्रत्यये रूपम्।

८ 'इण्भीकापा—' (द.उ. ३-२१) इत्यादिना कन् प्रत्ययः। पाकः = असुर विशेषः, अर्भकश्च।

९ 'पातृ—' (द.उ. ६-३२) इत्यादिना थक् प्रत्यये, ईत्वे च रूपम्। पिबति तेजांसि इति पीथः = आदित्यः मकरश्च।

१० औणादिके (द.उ. ७-७) पप्रत्यये बाहुलकात् ह्रस्वनुमागमयोः निपातितयो रूपमेवम्। पिबन्त्यस्यामिति पम्पा = सरोविशेषः।

११ औणादिके त्रप्रत्यये (द.उ. ८-९०) रूपम्। पिबन्त्यनेनेति पात्रम् = भाजनम्।

१२ 'पिबतेरि च' (द.उ. ९-५०) इत्यसुन्प्रत्यये इकारश्चान्तादेशः। पयः = जलं क्षीरं च।

१३ औणादिके रुप्रत्यये, धात्वन्तस्य एकारे च रूपम्। पेरुः = आदित्यः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लङ् | अजिघ्रत् | अजिघ्रताम् | अजिघ्रन् | प्र. |
| | अजिघ्रः | अजिघ्रतम् | अजिघ्रत | म. |
| | अजिघ्रम् | अजिघ्राव | अजिघ्राम | उ. |
| वि. लि. | जिघ्रेत् | जिघ्रेताम् | जिघ्रेयुः | प्र. |
| | जिघ्रेः | जिघ्रेतम् | जिघ्रेत | म. |
| | जिघ्रेयम् | जिघ्रेव | जिघ्रेम | उ. |
| आ. लि. | घ्रेयात् | घ्रेयास्ताम् | घ्रेयासुः | प्र. |
| | घ्रेयाः | घ्रेयास्तम् | घ्रेयास्त | म. |
| | घ्रेयासम् | घ्रेयास्व | घ्रेयास्म | उ. |

पक्षे—घ्रायात् घ्रायास्ताम् घ्रायासुः इत्यादि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुङ् | अघ्रात् | अघ्राताम् | अघ्रुः | प्र. |
| | अघ्राः | अघ्रातम् | अघ्रात | म. |
| | अघ्राम् | अघ्राव | अघ्राम | उ. |

पक्षे—**प्र.** अघ्रासीत् अघ्रासिष्टाम् अघ्रासिषुः। **म.** अघ्रासीः अघ्रासिष्टम् अघ्रासिष्ट। **उ.** अघ्रासिषम् अघ्रासिष्व अघ्रासिष्म।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृङ् | अघ्रास्यत् | अघ्रास्यताम् | अघ्रास्यन् | प्र. |
| | अघ्रास्यः | अघ्रास्यतम् | अघ्रास्यत | म. |
| | अघ्रास्यम् | अघ्रास्याव | अघ्रास्याम | उ. |

**कर्मणि**—घ्रायते। **णिचि**—घ्रापयति-ते। ९ अजिघ्रिपत्-अजिघ्रपत्। **सनि**—जिघ्रासति। **यङि**—जेघ्रीयते। **यङ्लुकि**—जाघ्रेति-जाघ्राति। **कृत्सु**—घ्रातव्यम्, घ्राणीयम्, घ्रेयम्, घ्रातः-घ्राणः, जिघ्रन्, घ्रातुम्, घ्रात्वा, आघ्राय, घ्रातिः, घ्रेयः, घ्राणम्, जिघ्रः, वि + आ जिघ्रतीति व्याघ्रः, घ्रायकः, घ्रायी, घ्राता-त्री, घ्रास्यन्।

**(९२७) ध्मा—शब्दाग्निसंयोगयोः।** अग्निसंयोगो नाम मुखवायुनाग्निसंयोगः। (फूंकना, आग सुलगाना, प्रदीप्त करना, जलाना, मुंह से बंशी आदि वाद्य बजाना)।सकर्म.। अनि.। परस्मै.।

१ धमति। २ **प्र.** दध्मौ दध्मतुः दध्मुः। **म.** दध्माथ-दध्मिथ पध्मथुः दध्म। **उ.** दध्मौ दध्मिव दध्मिम। ३ ध्माता। ४ ध्मास्यति। ५ धमतु। ६ अधमत्। ७ धमेत्। ८ ध्मेयात्-ध्मायात्। ९ अध्मासीत्। १० अध्मास्यत्। सर्वं 'जिघ्रति' (९२६) वत्।

**कृत्सु**—ध्मायकः-यिका, ध्मापकः-पिका, दिध्मासकः-सिका, देध्मीयकः-यिका, ध्माता-त्री, ध्मापयिता-त्री, धमन्-न्ती, ध्मापयन्-न्ती, ध्मास्यन्-न्ती-ती, ध्मापयिष्यन्-न्ती-ती, व्यतिधममानः, ध्मापयमानः, व्यतिध्मास्यमानः, ध्मापयिष्यमाणः, शङ्खध्मा-ध्मौ-ध्मः, ध्मातम्-तः-तवान्, ध्मापितः, उद्धमः[1]-धमः, नासिकन्धमः[2],

१ 'पाघ्राध्माधेट्दृशः शः' (३-१-१३७) इति उपसृष्टान्निरुपसृष्टादपि शप्रत्यये धमादेशे च रूपम्।

२ 'नासिकास्तनयोर्ध्माधेटोः' (३-२-२९) इति खश् प्रत्ययः। 'खित्यनव्ययस्य' (६-३-६६) इति मुम्। शूत्कारैः नासिकां शब्दयतीति नासिकान्धमः वराहः।

नाडिन्धमः[१]-मुष्टिन्धमः, पाणिन्धमः,[२] शुनिन्धमः,[३] करन्धमः[४]-घटिन्धमः-खारिन्धमः-खरिन्धमः, ध्मापः, दिध्मासुः, दीध्माः, ध्मातव्यम्, ध्मापयित्वयम्, ध्मानीयम्, ध्मापनीयम्, ध्मेयम्, ध्माप्यम्, ध्मायमानः, ध्माप्यमानः, ध्मायः, ध्मापः, ध्मातुम्, ध्मापयितुम्, ध्मातिः, आध्मा,[५] ध्मानम्, ध्मात्वा, आध्माय, धमकः[६], धमनिः[७]।

**(९२८) ष्ठा—गतिनिवृत्तौ।** (स्थिर होना, ठहरना), **अधि**—पदारुढ़ होना, अधिकारारुढ होना, ऊपर रहना, ऊपर बैठना, **अनु**—यथा शास्त्र वर्तना, उपयोग में लाना, सटे रहना, लटकना, चिपक रहना, **अव**—सेवा करना, थमना, स्थिर रहना, **आ**—(आ.) अधिरुढ होना, ऊपर बैठना, **उत्**—खड़ा होना, आसन से उठना, (आ.) **उप**—(आ.) प्राप्ति की इच्छा करना, पास से जाना, समीप में रहना, **नि**—रखना, स्थापित करना, **पर्यव**—अचल होना, स्थिर होना, **प्र**—जाना, आगे जाना, स्थापित करना, **प्रोत्**—आसन पर से उठना, खड़ा रहना, **प्रति**—देव के समान हाथ जोड़ कर खड़ा होना, परमेश्वरार्पित होना, **वि**—अलग खड़ा होना, दूर खड़ा रहना, बाट जोहना, **व्यव**—आज्ञा मानना, **सम्**—(आ.) अच्छा होना, पास होना, पूर्ण होना, एकमत होना, **समा**—करना, आचरण करना, वर्तना, **सम्प्र**—प्रवास करना, परदेश जाना, आगे जाना। अक.। अनि.। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | तिष्ठति | तिष्ठतः | तिष्ठन्ति | प्र. |
| | तिष्ठसि | तिष्ठथः | तिष्ठथ | म. |
| | तिष्ठामि | तिष्ठावः | तिष्ठामः | उ. |
| लुट् | अधितष्ठौ तस्थौ | तस्थतुः | तस्थुः | प्र. |
| | तस्थाथ-तस्थिथ | तस्थथुः | तस्थ | म. |
| | तस्थौ | तस्थिव | तस्थिम | उ. |
| लुट् | स्थाता | स्थातारौ | स्थातारः | प्र. |
| | स्थातासि | स्थातास्थः | स्थातास्थ | म. |
| | स्थातास्मि | स्थातास्वः | स्थातास्मः | उ. |
| लृट् | स्थास्यति | स्थास्यतः | स्थास्यन्ति | प्र. |
| | स्थास्यसि | स्थाष्यथः | स्थाष्यथ | म. |
| | स्थास्यामि | स्थास्याव | स्थास्यामः | उ. |

१ 'नाडीमुष्ट्योश्च' (३-२-३०) इति खश्, ह्रस्वः, मुम्। नाडिन्धमः = स्वर्णकारः।
२ 'उग्रम्पश्येरम्मदपाणिन्धमाश्च' (३-३-३७) इति सूत्रेण निपातनात् साधुः। पाणयः ध्मायन्ते एषु इति पाणिन्धमः = पन्थाः।
३ 'नाडीमुष्ट्योश्च' (३-२-३०) इत्यत्र चकारात् अत्रापि खश्। एवं घटिन्धमः, खारिन्धमः, खरिन्धमः, वातन्धमः इत्यादिष्वपि खश् ज्ञेयः। वातन्धमः = पर्वतः। घटिन्धमः = आमः।
४ 'उग्रम्पश्य—' (३-३-३७) इत्यत्र पाणिपदेन पर्यायस्यपि ग्रहणमिति प्रक्रियाकौमुद्याशयात् तन्मते करन्धमः इत्यपि साधुः।
५ स्त्रियाम्, 'आतश्चोपसर्गे' (३-३-१०६) इत्यङ।
६ 'ध्मो धम च' (द.उ. ३०७) क्वुन् प्रत्यये धमादेशे च रूपम्। धमतीति धमकः = अग्निशामकः।
७ '[illegible]' (द.उ. [illegible]-२) इति अनिप्रत्यये बाहुलकात् धमादेशे च धमनिः = नाडी।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लोट् | तिष्ठतु-तिष्ठतात् | तिष्ठताम् | तिष्ठन्तु | प्र. |
| | तिष्ठ-तिष्ठतात् | तिष्ठतम् | तिष्ठत | म. |
| | तिष्ठानि | तिष्ठाव | तिष्ठाम | उ. |
| लङ् | अतिष्ठत् | अतिष्ठताम् | अतिष्ठन् | प्र. |
| | अतिष्ठः | अतिष्ठातम् | अतिष्ठत | उ. |
| | अतिष्ठम् | अतिष्ठाव | अतिष्ठाम | उ. |
| वि. लि. | तिष्ठेत् | तिष्ठेताम् | तिष्ठेयुः | प्र. |
| | तिष्ठेः | तिष्ठेतम् | तिष्ठेत | म. |
| | तिष्ठेयम् | तिष्ठेव | तिष्ठेम | उ. |
| आ. लि. | स्थेयात् | स्थेयास्ताम् | स्थेयासुः | प्र. |
| | स्थेयाः | स्थेयास्तम् | स्थेयास्त | म. |
| | स्थेयासम् | स्थेयास्व | स्थेयास्म | उ. |
| लुङ् | अध्यष्ठात् | अध्यष्ठाताम् | अध्यष्ठुः | प्र. |
| | अध्यष्ठाः | अध्यष्ठातम् | अध्याष्ठात | म. |
| | अध्यष्ठाम् | अध्याष्ठाव | अध्याष्ठाम | उ. |

पक्षे—**प्र.** अस्थात् अस्थाताम् अस्थुः । **म.** अस्थाः अस्थातम् अस्थात । **उ.** अस्थाम् अस्थाव अस्थाम ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृङ् | अस्थास्यत् | अस्थास्यताम् | अस्थास्यन् | प्र. |
| | अस्थास्यः | अस्थास्यतम् | अस्थास्यत | म. |
| | अस्थास्यम् | अस्थास्याव | अस्थास्याम | उ. |

१ संतिष्ठते[1] । २ संतस्थे । ३ संस्थाता । ४ संस्थास्यते । ५ संतिष्ठताम् । ६ समतिष्ठत । ७ संतिष्ठेत । ८ संस्थासीष्ट । ९ समस्थित । १० समस्थास्यत । एवं अवतिष्ठते । प्रतिष्ठते । वितिष्ठते । अतिष्ठते[2] । तिष्ठते[3] कन्या छात्रेभ्यः, उपतिष्ठते[4] सूर्यम् । उत्तिष्ठते[5] ।

**भावे**—स्थीयते । **णिचि**—स्थापयति-ते । ९ अतिष्ठिपत्[6] । **सनि**—तिष्ठासति । **यङि**—तेष्ठीयते । **यङ्लुकि**—तास्थेति-तास्थाति । **कृत्सु**—स्थायकः[7]-यिका, स्थापकः[8]-पिका,

१ 'समवप्रविभ्यः स्थः' (१-३-२२) इत्यात्मनेपदम् ।
२ आङः 'प्रतिज्ञायामुपसंख्यानम्' । इत्यात्मनेपदम् ।
३ 'प्रकाशनस्थेयाख्ययोश्च' (१-३-२४) इत्यात्मनेपदम् ।
४ उपान्मन्त्रकरणे ।
५ 'उदोनूर्ध्वकर्मणि' (१-३-२४) कुटुम्बे उत्तिष्ठते तदर्थं घटत इत्यर्थ ।
६ निष्ठतेरित् ।
७ 'धात्वादेः षः सः' (६-१-६४) इति सकारादेशः सर्वत्र । 'आतो युक् चिण्कृतोः' (७-३-३३) इति युगागमः । एवं णिनिप्रत्यये, णमुल्यपि ज्ञेयम् ।
८ 'अर्तिहीब्ली–' (७-३-३६) इत्यङ्गस्य पुगागमः । एवं ण्यन्ते सर्वत्र ज्ञेयम् ।

तिष्ठासकः[१]-सिका, तेष्ठीयकः[२]-यिका, स्थाता[३]-त्री, उत्थाता:, (वैकुण्ठस्य) अतिष्ठाता[४]-त्री, स्थापयिता-त्री, तिष्ठासिता-त्री, तेष्ठीयिता-त्री, तिष्टन्[५]-अधितिष्ठन्[६] (वैकुण्ठं) न्ती, (ग्रामात्[७] शतं) उत्तिष्ठत्, (आसनात्) उत्तिष्ठन्[८], (यौवनेन भर्तारं[९]) उपतिष्ठन्, (याचकः प्रभुं) उपतिष्ठन्[१०], स्थापयन्-न्ती, तिष्ठासन्-न्ती, स्थास्यन्-अतिष्ठास्यन्[११]-न्ती-ती, स्थापयिष्यन्-न्ती-ती, तिष्ठासिष्यन्-न्ती-ती, सन्तिष्ठमान[१२]:-अवतिष्ठमानः-प्रतिष्ठमानः, वितिष्ठमानः[१३], (शब्दं नित्यं) आतिष्ठमानः[१४], (गोपी कृष्णाय) तिष्ठमाना[१५], धर्माध्यक्षे तिष्ठमानः[१६], (मुक्तौ) उत्तिष्ठमानः[१७], (ऐन्द्र्या गार्हपत्यं) उपतिष्ठमानः,[१८] (आदित्यं) उपतिष्ठमानः[१९], (गङ्गा यमुनां) उपतिष्ठमाना, (रथिकान्), उपतिष्ठमानः, (याचकः प्रभुं) उपतिष्ठमानः,[२०] (यावद्भुक्तं) उपतिष्ठमानः[२१], स्थापयमानः, सन्तिष्ठासमानः[२२]-अवतिष्ठासमानः,

---

१ धातोनुदात्तत्वात् सन इण्णिषेधे, द्वित्वे, अभ्यासे, शर्पूर्वाः खयः' (७-४-६१) इति खयः शेषः। अभ्यासस्य 'सन्यतः' (७-४-७९) इतीत्वम्, 'आदेशप्रत्यययोः' (८-३-५९) इत्युत्तरखण्डे षत्वम्। ष्टुत्वम्। एवं सन्नन्ते सर्वत्र ज्ञेयम्।
२ 'घुमास्था–' (६-४-६६) इति इत्वे, द्वित्वे, अभ्यासस्य गुणः।
३ उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य (८-४०-६१) इति सकारस्य पूर्वसवर्णः थकारो भवति। तस्य 'झरो झरि सवर्णे' (८-४-६५) इति पाक्षिको लोपः। लोपाभावपक्षे चकारस्यैव श्रवणम्, न तु 'खरि च' (८-४-५५) इति चर्त्वम्। पूर्वसर्वस्यासिद्धत्वात्।
४ अधिपूर्वकस्य स्थाधातोः प्रयोगे 'अधिशीङ्स्थाऽऽसां कर्म' (१-४-४६) इति कर्मसंज्ञायाम् कर्तृकर्मणोः कृति' (२-३-६५) इति षष्ठी। उपसर्गात् 'सुनोतिसुर्वात–' (८-३-६५) इति षत्वम्।
५ 'पाघ्राध्मास्था–' (७-३-७८) इति तिष्ठादेशः शिति प्रत्यये परे।
६ 'अधिशीङ्स्थासां कर्म' (१-४-४६) इति वैकुण्ठस्य कर्मसंज्ञायां द्वितीया।
७ 'इहायामेव' (वा. १-३-२४) इति, 'उदोऽनूर्ध्वकर्मणि' (१-३-२४) इत्यत्रोक्तत्वात् न शानच्। किन्तु शत्रादेशः। शतस्य विशेष्यत्वात् उत्तिष्ठत् इत्यत्र क्लीवत्वम्।
८ '–अनूर्ध्वकर्मणि' (१-३-२४) इति निषेधात् अत्र शानच्।
९ 'उपान्मन्त्रकरणे' (१-३-२५) इत्यत्र 'मन्त्रकरणे' इति विशेषणात् अत्र न शानच्।
१० 'वा लिप्सायाम्' (वा. १-३-२५) इति आत्मनेपदविकल्पनात् पक्षे शता।
११ 'संग्रामे तानधिष्ठास्यन् निषद्य पुरतोरणम्।' (भ.का. ९-७२)।
१२ समवप्रविभ्यः स्थः (१-३-२२) समादिपूर्वकेषु क्रमेण शानच्।
१३ 'सहस्रसंख्यैर्गगनं शिरोभिः पादैर्भुवं व्याप्य वितिष्ठमानम्। शिशु. ४-४।
१४ 'आङः प्रतिज्ञायाम्। (वा. १-३-२२) इति वार्तिकात् शानच्।
१५ 'प्रकाशनस्थेयाख्ययोश्च' (१-३-२३) इति प्रकाशने शानच्। 'श्लाघह्नु–' (१-४-३४) इति कृष्णशब्दात् चतुर्थी।
१६ 'प्रकाशनस्थेयाख्ययोश्च' (१-३-२३) इत्यनेन स्थेयाख्यायाम् शानच्। स्थेयः = विवादपदनिर्णेता। धर्माध्यक्षं निर्णेतृत्वेनोपसर्पतीत्यर्थः।
१७ 'उदात्तोऽनूर्ध्वकर्मणि' (१-३-२४) इति शानच्।
१८ 'उपामन्त्रकरणे' (१-३-२५) इति शानच्।
१९ 'उपाद् देवपूजा सङ्गतिकरणमित्रकरणपथिषु (वा. १-३-२५) इत्यनेन क्रमेण चतुर्ष्वर्थेषु गम्यमानेषु शानच् भवति। आदित्यमुपतिष्ठमानः = स्तुवन् इत्यर्थः। गङ्गा यमुनामुपतिष्ठमाना = उपाश्लिष्यमाणा इत्यर्थः। रथिकान् उपतिष्ठमानः = मित्रीकरोति इत्यर्थः। पन्थाः स्रुघ्नमुपतिष्ठमानः = प्राप्नोतीत्यर्थः।
२० 'वा लिप्सासायाम्' (वा. १-३-२५) इत्यात्मनेपदविकल्पः।
२१ 'अकर्मकाच्च' (१-३-२६) इति शानच्। भोजने भोजने उपतिष्ठत इत्यर्थः।
२२ 'पूर्ववत् सनः' (१-३-६२) इत्यात्मनेपदम्।

तेष्ठीयमानः, संस्थास्यमानः,[१] अवस्थास्यमानः- प्रस्थास्यमानः[२]-विष्ठास्यमानः, स्थापायिष्यमाणः, सन्तिष्ठासिष्यमाणः, तेष्ठीयिष्यमाणः, संस्था[३]-संस्थौ-संस्थाः, सव्येष्ठाः[४], उपस्थितः[५]-स्थितम्[६]-स्थितवान्, समुत्थितवती[७], स्थापितः, तिष्ठासितः, तेष्ठीयितः-तवान्, स्थायी,[८] दुःस्थः[९], ककुत्स्थः,[१०] तपस्स्थः[११], प्रस्थः-प्रष्ठः,[१२] समस्थः[१३]-विषमस्थः, अम्बष्ठः[१४]-आम्बष्ठः, गोष्ठः[१५] भूमिष्ठः[१६]-सव्येष्ठः[१७]-अपष्ठः[१८]-द्विष्ठः-त्रिष्ठः-कुशेष्ठः-कुष्ठः-सङ्कुष्ठः-अङ्गुष्ठः- मञ्जिष्ठः-पुञ्जिष्ठः-परमेष्ठः-वर्हिष्ठः-दिविष्ठः[१९]-अग्निष्ठः, आखूत्थः[२०]-शलमोत्थः, अश्वत्थामा[२१], शंस्थः,[२२] शंस्था, चिरस्थायी[२३], स्थास्नु,[२४] स्थायुकः,[२५] स्थावरः[२६], तस्थिवान्ः[२७],

१ आत्मनेपदनिमित्तेषु सत्सु लृडादेशः । शानच् सर्वत्र बोध्यः ।
२ 'प्रस्थास्यमानावुपसेदुषस्तौ शोशुच्यमानानिदमूचतुस्तान्' (भ.का. ३-१२)।
३ क्विपि, 'घुमास्थागापा–' (६-४-६६) इतीत्वं भाष्यकारप्रयोगात् न । न च प्रत्ययलक्षणाभावः शङ्क्यः, तस्य निषेधस्य वर्णप्राधान्यविषयत्वात् । अत्र च प्रत्ययप्राधान्यात् ।
४ 'स्थास्थि– (वा. ८-३-९७) इति षत्वम् ।
५ 'गत्यर्थाकर्मक–' (३-४-७२) इति कर्तरि क्तप्रत्ययः । 'द्यतिस्यतिमास्थामित्ति किति' (७-४-४०) इति इत्वम् ।
६ 'आशितम्भवमुत्क्रुष्टं वल्गितं शयितं स्थितम् । (भ.का. ६-१०७)
७ 'भूयः समुत्थितवती घृतपुण्डरीका भोगाय सागरगृहाद् भुवनैकयूनः ।' (यादवाभ्युदये १९-७०)
८ ग्रह्यादिपाठात् (१-३-१३४) इति कर्तरि णिनिः । युगागमः ।
९ 'आतश्चोपसर्गे' (३-१-१३६) इति कर्तरि कप्रत्ययः । 'आतो लोप इटि च' (६-४-६४) इत्याकारलोपः ।
१० 'वह्वमन्यत काकुत्स्थः कपीनां स्वेच्छया कृतम् ।' (भ.का. ६-१०७)
११ 'स्थे च भाषायाम्' (६-३-२०) इति सप्तम्या अलुक्निषेधः । 'हलदन्तात्–' (६-३-९) इत्यस्यापवादः ।
१२ कर्तरि कप्रत्यये, 'प्रष्ठोऽग्रगामिनी' (८-३-९२) इति षत्वं निपात्यते ।
१३ 'सुपि स्थः' (३-२-४) इति कर्तरि कप्रत्ययेः ।
१४ 'अम्बाम्ब–' (८-३-९७) इति षत्वम् । एवं अग्निष्ठः इति पर्यन्तं षत्वमनेन सूत्रेण ज्ञेयम् । अम्बेब तिष्ठतीति अम्बष्ठः । 'ङ्यापोः संज्ञाच्छन्दसो र्बहुलम्' (६-३-६३) इति पूर्वपदस्य ह्रस्वः । रूढशब्दश्चायम् ।
१५ गावः तिष्ठन्त्यत्रेत्यकरणे क प्रत्ययः ।
१६ 'युवजानिधनुष्पाणिभूमिष्ठः खाविचारिणः' (भ.का. ५-१३)।
१७ सूत्रे (८-३-९७) कुशे, सव्ये, परमे, दिवि इति चतुर्षु स्थलेषु निपातनात् सप्तम्या अलुक् ।
१८ 'अपाष्ठः इति क्वचिद् दृश्यते तदानीं' 'अन्येषामपि–' (६-३-१३७) इति पूर्वपदस्य दीर्घः- इति न्यासे" इति माधवधातुवृत्तौ ।
१९ 'शयानां कुष्ठले तारां दिविष्ठामिव निर्मलाम् ।' (भ.का. ९-८४)।
२० आदन्तत्वादेव कप्रत्यये सिद्धे पुनः 'सुपि स्थः' (३-२-४) इति सूत्रारम्भसामथर्यात् भावेऽपि कप्रत्ययो भवति । आखूनामुत्थानम् = आखूत्थः । पृष्टोदणदित्वात् सकारस्य थकारः ।
२१ 'अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते' (३-२-७५) इति मनिन् प्रत्ययः । पृषोदरादित्वात् आदेः सकारस्य थकादेशः । अश्वस्येव स्थाम = बलं यस्य, सोऽश्वत्थामा । उपपदसमासे स्वभावात् इवार्थो लभ्यते ।
२२ 'स्थः क च' (३-२-७७) कर्तरि कः । चकारात् क्विवपि । 'शमिधातोः संज्ञायाम्' (३-२-१४) इत्यचोऽपवादः ।
२३ सुप्यजातौ णिनिस्ताच्छील्ये (३-२-७८) इति णिनिः । युगागमः ।
२४ 'ग्लाजिस्थश्चग्स्नुः' इति ग्स्नुप्रत्ययः ताच्छीलिक 'वस्नोः शित्वाननस्थ ईकारः किडितोरीत्वशासनात् । गुणाभावस्त्रिषु स्मार्थः, श्र्युकोऽनिट्त्वं गकोरितोः ।' इति भाष्यम् (३-३-१३९)
२५ 'लखपतपदस्था–' (३-२-१५४) इति ताच्छीलादिषु कर्तृषु उकञ् प्रत्ययः युगागमः ।
२६ 'स्थेशभप्सपिसको । वरच्' (३-२०-१७५) इति ताच्छीलिको वरच्प्रत्ययः ।
२७ 'छान्दसा अपि क्वचिद् भाषायाम्' इति न्यायेन लिटः क्वसुः । द्वित्वे, आकारलोपे, 'नेड् वशिकृति' (७-२-८) इतीण्निषेधे प्राप्ते, 'वस्वेकाजाद्घसाम्' (७-२-६७) इतीट् ।

प्रस्थात्री,[१] (चेत्रो गुरोः) उपस्थानीयः[२], स्थापः, प्रतिष्ठासुः,[३] तिष्ठापयिषुः, तेष्ठियः[४], स्थातव्यम्, स्थापयितव्यम्, तिष्ठासितव्यम्, तेष्ठीयितव्यम्, स्थानीयम्,[५] स्थापनीयम्, तिष्ठासनीयम्, तेष्ठीयनीयम्, स्थेय[६]:, स्थेयम्, स्थाप्यम्, तिष्ठास्यम्, तेष्ठीय्यम्, ईषत्स्थानः[७]-दुःस्थानः-दुरुपस्थानः[८]-सुस्थानः, उपस्थीयमानः,[९] स्थाप्यमानः, तिष्ठास्यमानः, तेष्ठीय्यमानः, प्रस्थः,[१०] माहिकप्रस्थः-इन्द्रप्रस्थः-मालाप्रस्थः, स्थापः, तिष्ठासः, तेष्ठीयः, स्थातुम्, उत्थातुम्, स्थापयितुम्, तिष्ठासितुम्, तेष्ठीयितुम्, प्रस्थितिः,[११] संस्था[१२]-आस्था-अन्यदास्था[१३]- अन्यास्था, व्यवस्था, स्थापना, तिष्ठासा, तिष्ठापयिषा, तेष्ठीया, स्थानम्, उत्थानम्, उधिष्ठानम्, भीरुष्ठानम्[१४], स्थापनम्, तिष्ठासनम्, तेष्ठीयनम्, स्थित्वा, स्थापयित्वा, तिष्ठासित्वा, तेष्ठीयित्वा, प्रस्थाय[१५]-उत्थाय, प्रस्थाप्य, उपतिष्ठास्य, प्रतेष्ठीय्य, शय्योत्थाय[१६] (धावति), स्थाणुः,[१७] स्थूणा,[१८] स्थविरः[१९],

---

१ 'भविष्यति गम्यादयः' (३-३-३) इति भविष्यदर्थे णिनिः। पुगागमः। 'गमी गामी तथाऽऽगामी प्रयायिप्रतियायिनौ। प्रबोधी प्रतिबोधी च भावी प्रस्थाय्यमी नव।' इति प्रक्रियासर्वस्वम्।

२ 'भव्यगेयप्रवचनीयोप्रस्थानीय–' (३-४-६८) इत्यनीयरन्तो विकल्पेन निपातितः। पक्षे भावकर्मणोरनीयर्। उपस्थानीयः = उपस्थानकर्ता, उपस्थानकर्मभूतश्च।

३ अभिचैद्यं प्रतिष्ठासुरासीत् कार्यद्वयाकुलः' (शुशुपालवधे २-१)।

४ 'यङोऽचि च' (२-४-७४) इति यङोलुकि, संयोगपूर्वकत्वात् 'अचिश्नुधातु–' (६-४-७७) इतीयङादेशः।

५ तिष्ठन्त्यस्मिन् इत्यधिकरणे 'कृत्यल्युटो बहुलम्' (३-३-११३) इति बाहुलकात् अनियर्। स्थानीयम् = नगरम्।

६ 'ईद्यति' (७-४-६५) इतीत्वे गुणः। स्थेयः = विवादपदनिर्णेता। 'प्रकाानस्थेयाख्ययोश्च' (१-३-२३) इति सूत्रे निपातनात् बाहुलकात् अधिकरणे यत्।

७ 'आतो युच्' (३-३-१२८) इति युच्। अङपवादः।

८ 'के यूयं दुरुपस्थाने मनसाप्यद्रिमूर्धनि।' (भ.का. ७-८५)।

९ यकि, घुमास्था– (६-४-६६) इति ईत्वम्।

१० घञर्थे कविधानम्– स्थास्नापाहनिव्यधियुध्यर्थम्' (वा. ३-३-५८) इति कः। 'आतो लोप इटि च' (६-४-६४) इत्याकारलोपः। प्रतिष्ठतेऽस्मिन् इति प्रस्थः = सानुः। माहिकप्रस्थः - इन्द्रप्रस्थः - मालाप्रस्थः - एते देशविशेषः।

११ 'स्थागापापचो भावे' (३-२-९५) इति अङपवादः क्तिन्। 'द्यतिस्यतिमास्थामित् ति किति' (७-४-४०) इति इत्वम्।

१२ बाहुलकात् '–व्यवस्थायामसंज्ञायम्' (१-१-६१) इति निर्देशात् वा अङपि साधुः। एवं यत्रापवादेषु सङ्करो दृश्यते क्तिनः।

१३ अन्या च सा आस्था च अन्यदास्था। 'अषष्ठ्यतृतीयास्थस्या–' (६-३-९९) इति दुगागमः।

१४ 'समासे भीरोः स्थानम्' (८-३-८१) इति षत्वम्।

१५ 'न ल्यपि' (६-४-६९) इति ईत्वनिषेधः।

१६ 'अपादाने परीप्सायाम्' (३-४-५२) इति णमुल्। परीप्सा = त्वरा। 'एवं नाम त्वरते यदवश्यं कर्तव्यमपि नापक्षते, शय्योत्थानमात्रमाद्रियते' इति काशिका (३-४-५२)।

१७ 'स्थो णुः' (द.उ. १-१४७) इति णुप्रत्ययः। तिष्ठतीति स्थाणुः = ईश्वरः अचलद्रव्यं च।

१८ 'रास्नासास्नास्थूणावीणाः,(द.उ.५-५७) इति सूत्रेण धातोरूकारादेशः, न प्रत्ययः, णत्वम्, गुणाभावश्च निपात्यते। स्थूणा = स्तम्भः।

१९ 'अजिरशिशिरशिविलस्थिरस्फिरस्थविरखदिराः' (द.उ. ८-२७) इत्यनेन स्थाधातोः किरच् प्रत्ययः, ह्रस्वत्वम्, वुगागमश्च निपात्यते। स्थितो विश्रमात् = इति स्थविरः।

स्थिरम्[१]-गविष्ठिरः[२]-युधिष्ठिरः[३], स्थाली[४], स्थूरः[५], परमेष्ठी[६]।

**(९२९) म्ना—अभ्यासे**। (विचार करना, मनन करना)। सकर्म.। अनिट्। परस्मै.। **'पाघ्राध्मास्थाम्ना–'** (७-३-७८) इति मनादेशः। १ मेनति मेनतः। २ मम्नौ। ५ मनतु। ६ अमनत्। ७ मनेत्। इत्यादि 'ग्लायति' (९०३) वत्।

**कृत्सु**—म्नायकः-यिका, म्नापकः-पिका, मिम्नासकः-सिका, माम्नायकः-यिका, म्नाता-त्री, म्नायतिता-त्री, आमनन्[७]-न्ती, व्यत्यासनमानः,[८] निम्नम्,[९] द्युम्नम्,[१०] सुम्नम्,[११] आम्नायः[१२]। इत्यादि।

**(९३०) दाण्—दाने**। (देना)। **आ**—लेना, अङ्गीकार करना, **परि**—देना, सौंपना, **प्र**—देना, **व्या**—उघारना, खोलना, **समा**—पसन्द करके लेना।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | यच्छति | यच्छतः | यच्छन्ति | प्र. |
| | यच्छसि | यच्छथः | यच्छथ | म. |
| | यच्छामि | यच्छावः | यच्छामः | उ. |
| लिट् | ददौ | ददतुः | ददुः | म. |
| | ददाथ-ददिथ | ददथुः | दद | म. |
| | ददौ | ददिव | ददिम | उ. |
| लुट् | दाता | दातारौ | दातारः | प्र. |
| | दातासि | दातास्थः | दातास्थ | म. |
| | दातास्मि | दातास्वः | दातास्मः | उ. |
| लृट् | दास्यति | दास्यतः | दास्यन्ति | प्र. |
| | दास्यसि | दास्यथः | दास्यथ | म. |
| | दास्यामि | दास्यावः | दास्यामः | उ. |

१ 'अजिरशि–' (द.उ. ८-२७) इति किरचि, आकारलोपश्च निपात्यते। तिष्ठतीति स्थिरम् = दृढम्।

२ 'गवियुधिभ्यां स्थिरः' (८-३-९५) इति षत्वम्।

३ 'त्रिदण्डकाषायकमण्डलूज्ज्वलो जपस्फुरदन्तपुटो युधिष्ठिरः।' (चम्पूभारते ६-६)।

४ 'स्थावतिभृजे–' (द.उ. १०-१) इति आलप्रत्ययः तिष्ठत्योदनादिकम् इति स्थालम् = भाजनविशेषः। स्थाली, 'गौरादिषु–' (४-१-४१) पाठात् स्त्रियां ङीप्।

५ 'स्थश्च' (द.उ. ८-३५) इति रक् प्रत्यये, ऊकारान्तादेशः। स्थूरः = उच्चः।

६ 'परमेकित्' (द.उ. ६-६१) इति स्थातोः इनि प्रत्ययः, स च कित्। कित्वादाकारलोपः। 'तत्पुरुषे कृति बहुलम्।' (६-३-१४) इत्यलुक्।' स्थास्थिन्स्थृणामिति वक्तव्यम् (८-३-९७) इति षत्वम्।

७ शतरि, शपि, 'पाघ्राध्मा–' (७-३-७८) इत्यादिना मनादेशे पररूपे च रूपमेवम्।

८ 'कर्तरि कर्मव्यतिहारे च' (१-३-१४) इति शानचि, शपि, मनादेशे च रूपमेवम्।

९ नीचभावमभ्यस्तीति निम्नम्। 'सुपि–' (३-२-४) इति योगविभागात्, 'आतश्चोपसर्गे' (३-१-१३९) इति वा कप्रत्यये, 'आतो लोप इटि च' (६-४-६४) इत्याकारलोपे रूपमेवम्।

१० दिने आम्नायते इति द्युम्नन्। द्युशब्दो दिनवचनः। अत्रापि कप्रत्यये रूपम्।

११ सुतरामाम्नायते इति सुम्नम् = सुखम्। 'घञर्थे कविधानम्–' (वा. ३-३-५८) इति घञर्थे कप्रत्यये रूपम्।

१२ आ = समन्तात् म्नायते इति आम्नायः = वेदः। घञि 'आतो युक्–' (७-३-३३) इति युगागमे च रूपमेवम्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लोट् | यच्छतु-यच्छतात् | यच्छताम् | यच्छन्तु | प्र. |
| | यच्छ | यच्छतम् | यच्छत | म. |
| | यच्छानि | यच्छाव | यच्छाम | उ. |
| लङ् | अयच्छत् | अयच्छताम् | अयच्छन् | प्र. |
| | अयच्छः | अयच्छतम् | अयच्छत | म. |
| | अयच्छम् | अयच्छाव | अयच्छाम | उ. |
| वि. लि. | यच्छेत् | यच्छेताम् | यच्छेयुः | प्र. |
| | यच्छेः | यच्छेतम् | यच्छेत | म. |
| | यच्छेयम् | यच्छेव | यच्छेम | उ. |
| आ. लि. | देयात् | देयास्ताम् | देयासुः | प्र. |
| | देयाः | देयास्तम् | देयास्त | म. |
| | देयासम् | देयास्व | देयास्म | उ. |
| लुङ् | अदात्[१] | अदाताम् | अदुः | प्र. |
| | अदाः | अदातम् | अदात | म. |
| | अदाम् | अदाव | अदाम | उ. |
| लृङ् | अदास्यत् | अदास्यताम् | अदास्यन् | प्र. |
| | अदास्यः | अदास्यतम् | अदास्यत | म. |
| | अदास्यम् | अदास्याव | अदास्याम | उ. |

**कर्मणि**—दीयते। **णिचि**—दापयति। **सनि**—दित्सति। **यङि**—देदीयते। **यङ्लुकि**—दादाति-दादेति। **कृत्सु**—दायकः-यिका, दापकः-पिका, दित्सिकः-त्सिका, देदीयकः-यिका, दाता-त्री, दापयिता-त्री, दित्सिता-त्री, देदीयिता-त्री, प्रणियच्छन्[२]-न्ती, (प्राणिना) सम्प्रयच्छन्, (ब्राह्मणीभ्यः) सम्प्रयच्छन्, दापयन्-दित्सन्-न्ती, दास्यन्-न्ती-ती, दापयिष्यन्-न्ती-ती, दित्सिष्यन्-न्ती-ती, (दास्यामालां) संयच्छमानः[३]-सम्प्रयच्छमानः, दापयमानः, (दास्या मालां) सन्दित्समानः[४], देदीयमानः, संदास्यमानः, दापयिष्यमाणः, संदीत्सिष्यमाणः, देदीयिष्यमाणः, धनदः-धनदौ-धनदाः, दत्तम्-दत्तः-दत्तवान्, मनसादत्ता, व्याप्तम्,[५] प्रत्तम्-नीत्तम्, सूत्तम्-मरुतः, अवदत्तम्-प्रदत्तम्-विदत्तम्-सुदत्तम्, अनुदत्तम्-अवदत्तम्-अनूत्तम्, दापितः, दित्सितः, देदीयितः-तवान्, प्रदः, दायः, इष्टदः[६]-नर्मदा, अब्दः, (गवां गोषु वा)

१ 'गातिस्था—' इति सिचो लुक्।

२ शतरि, 'पाघ्राध्मा—' (७-३-७८) इत्यादिना यथासम्भवं शिति प्रत्यये परतः यच्छादेशे, 'नेर्गदनदपतपदघुमा—' (८-४-१७) इत्यादिना णत्वे, च रूपम्।

३ 'दाणश्च सा चेत् चतुर्थ्यर्थे' (१-३-५५) इति शानच्। अनेनैव सूत्रेण चतुर्थ्यन्तस्य 'दास्या' इत्यस्य तृतीया च भवति। अत्र च, 'अशिष्टव्यवहार इति वक्तव्यम्' (वा. १-३-५५) इति वचनात् अशिष्टव्यवहार एवैवं भवति। अशिष्टव्यवहारः = शिष्टसम्मतो यो न भवति, सः।

४ 'पूर्ववत् सनः।' (१-३-६२) इति सन्नन्ताच्छानश्।

५ 'ध्वान्तेऽपि व्यात्तवक्त्रज्वलदनलशिखाजजैर्व्यक्तकर्मा।' (अनर्घराघवे २-५४)।

६ 'तिष्ठान्निहाम्नायगमिष्टदं तमस्तौत् स्फुटेनाहृतधीः स्वरेण।' (धा.का. २-३३)

दायाद:[1], विश्वाप्रद:,[2] उपदा:, सुदामा, सुदीवा, गोदावरी, शर्मदा, शप्पदायी[3], साधुदायी, कर्णदायी, मोक्षदायी, ददिवान्, दाता, दारु:, दायको (व्रजति), भयदाय:,[4] कम्बलदाय:, गोदायो (वाव्रजति), दानीय:, (ब्राह्मण:) दाता, अवश्यंदायी, सहस्रंदायी, प्रदायी, यज्ञदत्त:, अन्तर्दि:, दापदित्सु:, देद्य:, दातव्यम्, दापयितव्यम्, दित्सितव्यम्, देदीयितव्यम्, दानीयम्, दथेलिमम्,[5] दापनीयम्, दित्सनीयम्, देदीयनीयम्, देयम्, दाप्यम्, दित्स्यम्, देदीय्यम्, दीपमान:, दाप्यमान:, दित्स्यमान:, देदीय्यमान:, दाय:, दाप:, दित्स:, देदीय:, दातुम्, दापयितुम्, दित्सितुम्, देदीयितुम्, दत्ति:, प्रदा, दापना, दित्सा, देदेया, प्रणिदानम्, दापनम्, दित्सनम्, देदीयनम्, दत्वा, दापयित्वा, दित्सित्वा, देदीयित्वा, प्रदाय, प्रदाप्य, प्रदित्स्य,प्रदेदीय्य।

**( ९३१ ) ह्वृ—कौटिल्ये।** (वक्र होना, टेढा होना)। अक.। अनिट्। परस्मै.। ह्वरति। जह्वार। 'स्वरति' वत्।

**( ९३२ ) स्वृ—शब्दोपतापयो:।** (शब्द करना, रोगी होना, दुख देना, सताना)। **सम्**—अच्छा शब्द करना। अकर्म.। वेट्[6]। परस्मै.। ऋकारान्त:।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | स्वरति | स्वरत: | स्वरन्ति | प्र. |
| | स्वरसि | स्वरथ: | स्वरथ: | म. |
| | स्वरामि | स्वराव: | स्वराम: | उ. |
| लिट् | सस्वार | सस्वरतु:[7] | सस्वरु: | प्र. |
| | सस्वरिथ | सस्वरथु: | सस्वर | म. |
| | सस्वार-संस्वर | सस्वरिव[8] | सस्वरिम | उ. |
| लुट् | स्वर्ता | स्वतारौ | स्वर्तार: | इत्यादि। |

पक्षे—स्वरिता स्वरितारौ स्वरितार: इत्यादि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृट् | स्वरिष्यति[9] | स्वरिष्यत: | स्वरिष्यन्ति | इत्यादि। |
| लोट् | स्वरतु-तात् | स्वरताम् | स्वरन्तु | इत्यादि। |
| लङ् | अस्वरत् | अस्वरताम् | अस्वरन् | इत्यादि। |

१ 'स्तिथ: प्राप्तस्य दायादै: भ्रातुर्ज्येष्ठस्य शासने।' (किरातार्जुनीय ११-४५)
२ 'विश्वासप्रदवेषोऽसौ पथिप्रज्ञ: समाहित:।' (भ.का. ६-९०)
३ 'कैलासशैलचलनागसि शापदायी नन्दीश्वर: स्वयमुपागत इत्यमंस्त।' (चम्पूरामायणे ५-४७)।
४ 'पूरयन्त: समाजग्मुर्भयदाया दिशो दश' (भ.का. ७-३०)।
५ 'केलिमर उपसंख्यानम्' (वा. ३-१-९६) इति केलिमर् प्रत्यय:। केलिमर् प्रत्ययस्य कित्वात् घुसंज्ञकस्यास्य धातो: 'दो दद्घो:' (७-४-४६) इति 'दथ्' इत्यादेश:। तत्र च 'सान्ते दोषो दीर्घत्वम् स्यात्, दान्ते दोषो निष्ठानत्वम्। धान्ते दोषो धत्वप्राप्ति: निर्दोषत्वात् थान्तो ग्राह्य:।' (भाष्यम् ७-४-४६) इत्युक्तत्वात् थकारान्त आदेश इति ज्ञेयम्।
६ 'स्वरतिसूती–' (७-२-४४) ति वेट्।
७ 'ऋतश्च संयोगादेर्गुण:' ऋदन्तस्य संयोगादेरङ्गस्य गुण: स्याल्लिटि।
८ 'श्र्युक: किति (७-२-११) इति नित्यमनिटं 'स्वरतिसूती–' (७-२-४४) ति वैकल्पिकमिटं च बाधित्वा क्रादिनीयमान्नित्यमिट्।
९ ऋद्धनो: स्ये' (७-२-७०) इति नित्यमिट्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| वि. लि. | स्वरेत् | स्वरेताम् | स्वरेयुः | इत्यादि। |
| आ. लि. | स्वर्यात्[१] | स्वर्यास्ताम् | स्वर्यासुः | इत्यादि। |
| लुङ् | अस्वारीत् | अस्वारिष्टाम् | अस्वारिषुः | प्र. |
| | अस्वारीः | अस्वारिष्टम् | अस्वारिष्ट | म. |
| | अस्वारिषम् | अस्वारिष्व | अस्वारिष्म | उ. |

पक्षे—**प्र.** अस्वार्षीत् अस्वार्ष्टाम् अस्वार्षुः। **म.** अस्वार्षीः अस्वार्ष्टम् अस्वार्ष्ट। **उ.** अस्वार्षम् अस्वार्ष्व अस्वार्ष्व।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृङ् | अस्वरिष्यत् | अस्वरिष्यताम् | अस्वरिष्यन् | प्र. |
| | अस्वरिष्यः | अस्वरिष्यतम् | अस्वरिष्यत | म. |
| | अस्वरिष्यम् | अस्वरिष्याव | अस्वरिष्याम | उ. |

**भावे**—स्वर्यते। **णिचि**—स्वारयति। **सनि**—सिस्वरिषति-सुसूर्षति। **यङि**—सास्वर्यते[२]। **यङ्लुकि**—सस्वरीति-सरिस्वरीति-सरीस्वरीति। संपूर्वः आत्मनेपदी-संस्वरते। २ संस्वरे। इत्यादि। **कृत्सु**—स्वारकः-रिका, सिस्वरिषकः-सुस्वूर्षकः-र्षिका, सेस्वीयकः-यिका, स्वरिता[३]-स्वर्ता-त्री, स्वारयिता-त्री, सिस्वरिषिता-त्री, सुस्वूर्षिता-त्री, सेस्वीयिता-त्री, स्वृतः-स्वृतम्, निस्वृत्, स्वरितव्यम्, स्वर्तव्यम्, निस्वारी, स्वरः,[४] अनुस्वारः,[५] स्वरितुम्-स्वर्तुम्, स्वरणः,[६] स्वरमाणः,[७] सिस्वरिषुः,[८] सूस्वूर्षुः, स्वरिष्यन्,[९] संस्वरमाणः,[१०] स्वरुः[११]।

**(९३३) स्मृ—चिन्तायाम्**। (स्मरण करना, याद करना), **वि**—भूलना, विस्मृत होना। सकर्म.। अनिट्। परस्मै.।

१ स्मरति। २ **प्र.** सस्मार सस्मरतुः, सस्मरुः। **म.** सस्मर्थः सस्मरथुः सस्मर। **उ.** सस्मार सस्मर सस्मरिव सस्मरिम। ३ स्मर्ता। ४ स्मरिष्यति। ५ स्मरतु। ६ अस्मरत्। ७ स्मरेत्। ८ स्मर्यात्। ९ अस्मार्षीत् अस्मार्ष्टाम् अस्मार्षुः। १० अस्मरिष्यत्।

**कर्मणि**—स्मर्यते। **णिचि**—स्मरयति-ते। **सनि**—सुस्मूर्षते। **यङि**—सास्मर्यते। **यङ्लुकि**—सस्मरीति-सरिस्मरीति-सरीस्मरीति। **कृत्सु**—स्मर्तव्यः, स्मरणीयः, स्मार्यः, स्मृतः,

१ 'गुणोर्तिसंयोगाद्योः' इति गुणः।
२ 'यङि च' (७-४-३०) अर्तेः संयोगादेश्च ऋतो गुणः स्याद्यङि।
३ 'स्वरतिसूतिसूयति—' (७-२-४४) इतीड्विकल्पे रूपद्वयम्।
४ 'क्षुब्धस्वान्त—' (७-२-१८) इति सूत्रे 'स्वर' इति निर्देशात् अचि रूपमेवम्। (धातु.का. व्या. २-२३)
५ अनूपूर्वकात् अस्मात् घञ्प्रत्यये रूपम्।
६ 'चलनशब्दार्थात्—' (३-२-१४८) इति युचि रूपमेवम्।
७ 'ताच्छील्यवयोवचनशक्तिषु—' (३-२-१७८) इति यथासम्भवं चानश् प्रत्ययः।
८ 'सनीवन्तर्धभ्रस्जदम्भुश्रिस्वृ—' (७-२-४९) इतीड्विकल्पे रूपमेवम्।
९ 'स्वरतिसूति—' (७-२-४४) इति वैकल्पिकमिटं बाधित्वा, 'ऋद्धनोः स्ये' (७-२-७०) इति नित्यमिडागमोऽत्र। एवं सम्पूर्वकादात्मनेपदेऽपि संस्वरिष्यभाणः इति नित्यमिडागमः।
१० 'विदिप्रच्छिस्वरतीनामुपसंख्यानम्' (वा. १-३-२९) इति सम्पूर्वकादात्मनेपदम्।
११ औणादिके (द.उ. १-९५) उप्रत्यये रूपमेवम्। स्वरुः = यूपे छिद्यमाने प्रथमं पतितः शकलः।

स्मृतिः, स्मरन्, स्मर्ता, स्मर्तुम्, स्मरणम्, स्मरः, स्मारकः-रिका, स्मृत्वा, विस्मृत्य। अपस्मारः = रोग। विशेषः, सस्मरिवान्, इत्यत्र **'ऋतश्च संयोगादेः'** (७-४-१०) इति गुणः। विस्मृतिः।

**( ९३४ ) ह्वृ—संवरणे**। सर्वं 'ह्वरति' (९३१) वत्।

**( ९३५ ) सृ—गतौ**। (जाना, सरकना)। **अनु**—पश्चात् गमन करना, पीछे-पीछे जाना, दूसरे को देखकर वैसा करना, **अप**—लौटना, पीछे जाना, **अभि**—चारों ओर फैलना, सहगमन करना, साथ जाना, **उप**—पास जाना, **प्र**—आगे जाना, फैलना, **वि**—आना, अलग-अलग जाना, **निस्**—निकलना, **उत्**—दूर होना। सकर्म.। अनिट्। परस्मै.।

१ सरति। २ **प्र.** ससार सस्रतुः सस्रुः। **म.** ससर्थ सस्रथुः सस्र। **उ.** ससार-ससर ससृव ससृम। ३ सर्ता। ४ सरिष्यति। ५ सरतु। ६ असरत्। ७ सरेत्। ८ स्रियात्। ९ असार्षीत्। १० असरिष्यत्।

**कृत्सु**—सरणीयम्, सरणम्, सरः, सारकः-रिका, सारी, सर्ता-त्री, सृतः, सृतिः, सर्तव्यम्, सर्तुम्, सृत्वा, उपसृत्य, सार्य्यम्, सरन्-न्ती, सरिष्यन्-न्ती, स्रियमाणः, सरिष्यमाणः, सिसीर्षकः[१]-र्षिका, सेस्रीयकः[२]-यिका, सरयिता-त्री, सिसीर्षिता-त्री, सेस्रीयिता-त्री, धावन्[३]-सरन्, सरकः,[४] सूर्यः,[५] पुरःसरः[६]-अग्रेसरः,[७] पूर्वसरः,[८] परिसारी,[९] विसारी,[१०] अनुसारी, प्रसारी,[११] उदासारी,[१२] प्रत्यासारी, सरणः,[१३] सृमरः,[१४] सारणा, सारणी, सृत्वरः[१५]-सृत्वरी, चन्दनसारः,[१६] अतीसारः,

१ 'सनन्ते' अज्झनगवां सनि (६-४-१६) इति दीर्घे, 'सन्यतः' (७-४-७९) इतीत्वे, रपरत्वे 'हलि च' (८-२-७७) इति दीर्घे, द्विर्वचने च रूपमेवम्।
२ यङन्ते 'रीङ् ऋतः' (७-४-२७) इति रीङादेशे रूपमेवम्।
३ शतरि 'पाघ्राध्मा—' (७-३-७८) इत्यादिना प्रकृते धावादेशे धावन् इति भवति।
४ 'सृल्वः समभिहारे वुन्' (३-१-१४९) इति वुन् प्रत्यये रूपमेवम्। साधु सरतीति सरकः। सरकः पानपात्रमिति केचित्।
५ 'राजसूयसूर्य—' (३-१-११४) इति क्यपि उत्वे च रूपम्। अथवा सुवते रुडागमे रूपमेवम्।
६ पुरः सरतीति 'पुरोऽग्रतोऽग्रेषु सर्तेः' (३-२-१८) इति टप्रत्यये रूपम्। एवं अग्रतः सरः, अग्रेसरः इत्यादौ। 'तत्पुरुषे कृति—' (६-३-१४) इति सप्तम्या अलुक्।
७ 'अग्रेसरो जघन्यानां मा भूः पूर्वसरो मम।' (भ.का. ५-९७)।
८ पूर्वः सरतीति कतृवाचिनी पूर्वशब्दे उपपदे 'पूर्वे कर्तरि' (३-२-१९) इति टप्रत्ययो भवति। पूर्वं देशं सरतीति पूर्वसरः। अत्र कर्तृभिन्नार्थे अण्।
९ 'संपृचानुरुध—सृ—' (३-२-१४२) इत्यदिना तच्छीलादिषु कर्तृषु घिनुण् प्रत्ययो भवति। तेन रूपमेवम्।
१० विसरतीति-विसारी। णिनि प्रत्ययः। 'विसारिणो मत्स्ये' (५-४-१६) इति स्वार्थेऽण् प्रत्यये रूपम्। अणन्तस्यैव प्रयोगः।
११ प्रशब्द उपपदे। 'प्रे लपसृ—' (३-२-१४५) इति धिनुण् प्रत्ययः।
१२ 'उत्प्रतिभ्यामाङि सर्तेः—' (वा. ३-२-७८) इति णिनि प्रत्यये रूपमेवम्। एवं प्रत्यासारी इत्यादावपि।
१३ 'जुचङ्क्रम्यदन्द्रम्यसृ—' (३-२-१५०) इति तच्छीलादिषु कर्तृषु युच् प्रत्ययः।
१४ 'सृघस्यदः क्मरच्' (३-२-१६०) इति तच्छीलादिषु कर्तृषु क्मरच् प्रत्यये रूपमेवम्।
१५ 'इण् नशिजिसर्तिभ्यः—' (३-२-१६३) इति तच्छीलादिषु कर्तृषु क्वरप् प्रत्ययः।
१६ 'सृ स्थिरे' (३-३-१७) इति स्थिरे कर्तरि घञ् प्रत्ययः। 'स्थिर इति कालान्तरस्थायी पदार्थ उच्यते। स चिरं तिष्ठन् कालान्तरं सरतीति धात्वर्थस्य कर्ता' इति काशिकायाम् (३-३-१७) इति घञ्। 'उपसर्गस्य घञि—' (६-३-१२२) इति दीर्घश्च। अतिसारः = व्याधि। विविधं सरतीति विसारो = मत्स्यः। सारो बलम्। खतिरं सारयतीति खदिसारः, अन्तर्भावितण्यर्थोऽत्रायम् धातुः इति भाष्ये (३-३-१७) स्पष्टम्।

विसारः, उपसरो[१] गवाम्, उपसर्या[२] गौ, आसार,[३] सारः,[४] प्रसारः, संसारः, परिसर्या,[५] सस्रिः,[६] सारथिः,[७] सृकः,[८] सरण्डः,[९] सृणीकः,[१०] सृमाकुः,[११] सरीमा,[१२] अपसरसः,[१३] सरित्,[१४] सरणिः,[१५] सरट्,[१६] सरटः, सरयुः[१७]-सरयू।

**(९३६) ऋ—गति प्रापणयोः।** (जाना, सम्पादन करना, प्राप्त करना, मिलाना पहुंचाना)। सकर्म.। अनिट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | ऋच्छति[१८] | ऋच्छतः | ऋच्छन्ति | प्र. |
| | ऋच्छसि | ऋच्छतः | ऋच्छथ | म. |
| | ऋच्छामि | ऋच्छावः | ऋच्छामः | उ. |
| लिट् | आर | आरतुः | आरुः | प्र. |
| | आरिथ[१९] | आरथुः | आर | म. |
| | आर | आरिव[२०] | आरिम | उ. |
| लुट् | अर्ता | अर्तारौ | अर्तारः | प्र. |
| | अर्तासि | अर्तास्थः | अर्तास्थ | म. |
| | अर्तास्मि | अर्तास्वः | अर्तास्मः | उ. |
| लृट् | अरिष्यति | अरिष्यतः | अरिष्यन्ति | इत्यादि। |
| लोट् | ऋच्छतु-ऋच्छतात् | ऋछताम् | ऋच्छन्तु | इत्यादि। |

१ 'प्रजने सर्तेः' (३-३-७१) इत्यप्प्रत्ययः। उपसरो गवाम् = प्रथमं स्त्रीगविषु पुंगवानां गर्भाधानाय नियोजनम् उपसरणमुच्यते।
२ 'उपसर्या काल्या प्रजने' (३-१-१०४) इत्युपपूर्वात् यत्प्रत्ययान्तो निपात्यते।
३ 'पुंसि संज्ञायां घः प्रायेण' (३-३-११८) इति करणाधिकरणयोर्घप्रत्ययः।
४ 'भावे' (३-३-१८), 'अकर्तरि च कारके संज्ञायाम्' (३-३-१९) इति भावे वाच्ये कर्मवर्जिते कारके संज्ञायां विषये च घञ् प्रत्यये रूपम्।
५ परितः सरणः परिसर्या। 'इच्छा' (३-३०१०१) इत्यत्र परिचर्या परिसर्या–' (वा. ३-३-१०१) इति स्त्रियां भावे शे यकि टापि च रूपमेवम्। गुणोऽपि निपात्यते।
६ 'भाषाया धाञ् कृञ्सृ–' (वा. ३-३-१७१) इति तच्छीलादिषु कर्तृषु किकिनौ, लिड्वद्भावात् द्विवचनं च।
७ औणादिके (द.उ. १-४३) णथिन् प्रत्यये रूपमेवम्। णित्वाद् उपधावृद्धिः।
८ 'सृवृ–' (द.उ. ३-१९) इति कप्रत्ययः। किञ्च भवति। सृकः = वायुः।
९ औणादिके (द.उ. ५९) इति अण्डन् प्रत्यये रूपमेवम्। सरण्डः = वायुः भूतसंघातश्च।
१० औणादिके (द.उ. ३-४२) ईकन् प्रत्यये नुगागमे च रूपमेवम्। किञ्च भवति। सृणीकः = वायुः।
११ औणादिके (द.उ. १-१५१) काकुप्रत्यये मुमागमे च रूपमेवम्। सृमाकुः = मृगजातिः।
१२ 'हृमृघृसृ–' (द.उ. ६-७६) इति ईमनिन् प्रत्ययः च्छन्दसि विषये। सरीमा = कालः।
१३ अप्छब्द उपपदे धातोः असुन् प्रत्यये (द.उ. ९-१०१) रूपमेवम्। अद्भ्यः सृता इत्यप्सरसः = देवयोषितः।
१४ 'हृसृ–' (द.उ. ६-३) इति इति प्रत्यये रूपम्।
१५ 'अर्तिसृ–' (द.उ. १-२) इत्यनि प्रत्यये णत्वे च रूपमेवम्। सरणिः = ईषद्गतिः पन्थाः।
१६ औणादिके (द.उ. ५-१०) अडिप्रत्यये रूपम्।
१७ औणादिके (द.उ. १-१३६) अयुप्रत्यये रूपम्, सरति सिसर्ति वा सरयुः = नदी वायुर्वा। सरयूः = इति दीर्घान्तोऽपि।
१८ 'पाघ्राध्मा–' (३-१-१३७) इत्यादिना अच्छादेशः।
१९ 'इडत्यर्तिव्ययतीनाम्' (७-२-६६) इति नित्यमिट्।
२० क्रादिनियमान्नित्यमिट्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लङ् | आर्च्छत् | आर्च्छताम् | अर्च्छन् | प्र. |
| | आर्च्छः | आर्च्छतम् | आर्च्छत | म. |
| | आर्च्छम् | आर्च्छाव | आर्च्छाव | उ. |
| वि. लि. | ऋच्छेत् | ऋच्छेताम् | ऋच्छेयुः | प्र. |
| | ऋछेः | ऋच्छेतम् | ऋच्छेत | म. |
| | ऋच्छेयम् | इच्छेव | ऋच्छेम | उ. |
| आ. लि. | अर्यात् | अर्यास्ताम् | अर्यासुः | प्र. |
| | अर्याः | अर्यास्तम् | अर्यास्त | म. |
| | अर्यासम् | अर्यास्व | अर्यास्म | उ. |
| लुङ् | आर्षीत् | आर्ष्टाम् | आर्षुः | प्र. |
| | आर्षीः | आर्ष्टम् | आर्ष्ट | म. |
| | आर्षम् | आर्ष्व | आर्ष्म | उ. |
| लृङ् | आरिष्यत् | आरिष्यताम् | आरिष्यन् | प्र. |
| | आरिष्यः | आरिष्यतम् | आरिष्यत | म. |
| | आरिष्यम् | आरिष्याव | आरिष्याम | उ. |

समृच्छते[1]। **कर्मणि**—अर्यते। २ आरे। ९ आरि। **णिचि**—अर्पयति[2]-ते। २ अपर्याञ्चक्रे। ९ आर्पिपत्। **सनि**—आरिरिषति[3]। **यङि**—अरार्यते। **यङ्लुकि**—अररीति-अरर्ति-अरियर्ति। इत्यादि। कृत्सु—आरकः[4]-रिका, अर्पकः[5]-र्पिका, अरिरिषकः[6]-षिका, अरारकः[7]-रिका, अर्ता-त्री, अर्पयिता-त्री, ऋच्छन्[8]-न्ती, अर्पयन्-न्ती, अरिरिषन्-न्ती, अरिष्यन्[9]-न्ती-ती, अर्पयिष्यन्-न्ती-ती, समृच्छमानः[10], अर्पयमानः, समरिष्यमाणः, अर्पयिष्यमाणः, समृत्[11]-समृतौ-समृतः, ऋतम्-ऋतः[12]-ऋतवान्,

१ 'समो गम्यृच्छि' (१-३-२९) इत्यात्मनेपदम्।
२ 'अर्तिह्रीब्ली–' (७-३-३६) इत्यादिना पुक्।
३ 'स्मिपूङ्रञ्ज्वशां सनि' (७-३-७४) इति इटि रिस् शब्दस्य द्वित्वे हलादिशेषे षत्वे च रूपम्।
४ 'अचो ञ्णिति' (७-२-११५) इति वृद्धौ, 'उरण् रपरः' (१-१-५१) रपरत्वे रूपम्।
५ 'अर्तिह्रीब्ली–' (७-३-३६) इति णौ पुगागमः। 'पुगन्तलघूपदस्य च' (७-१-८६) इति गुणे रूपम्। एवं सर्वत्र ण्यन्ते ज्ञेयम्।
६ 'स्मिपूङ्रञ्जवशां सनि' (७-२-७४) इति सन इडागमः। गुणः। 'अजादेर्द्वितीयस्य' (६-१-२) इति 'रिस्' इत्यस्य द्वित्वम्। एवं सर्वत्र सन्नन्ते बोध्यम्।
७ 'सूचिसूत्रिमूत्र्यट्यर्त्यशूर्णोतिभ्यो यङ् वाच्यः' (वा. ३-१-२२) इति यङ्। 'यङि च' (७-४-३०) इति गुणे, द्वितीयस्यैकाचः 'र्य' इत्यस्य 'सन्यङोः' (६-१-९) इति द्वित्वे 'हलादिः शेषे' (७-४-६०), 'दीर्घोऽकितः' (७-४-८३) इत्यभ्यासस्य दीर्घे च रूपम्। 'न न्द्राः–' (६-१-३) इति रेफस्य द्वित्वनिषेधस्तु न भवति– 'अरार्यते' इति भाष्योदाहरणात्। एवं सर्वत्र यङन्ते बोध्यम्।
८ शपि, 'पाघ्राध्मा–' (७-३-७८) इत्यादिना ऋच्छादेशः।
९ 'ऋद्धनोः स्ये' (७-२-२०) इति स्यप्रत्ययस्येडागमः।
१० अस्याकर्मकत्वे 'समो गम्यृच्छिभ्याम्' (१-३-२९) इति शानच् प्रत्ययो भवति।
११ 'ह्रस्वस्य पिति कृति–' (६-१-६९) इति तुगागमः।
१२ धातोर्गत्यर्थकत्वात् 'गत्यर्थाकर्मक–' (३-४-७२) इति, 'क्तोऽधिकरणे च–' (३-४-७६) इति च कर्तरि अधिकरणे कर्मणि च क्तप्रत्ययः।

सुखार्तः,[१] ऋणम्,[२] प्रार्णम्[३]-वत्सतरार्णम्-कम्बलार्णम्-वत्सनार्णम्-दशार्णः (देशः) दशार्णा (नदी) ऋणार्णम्, उत्तमर्णः-अधमर्णः, अर्पितम्-तः, अरः, आरिवान्ः,[४] अर्वा,[५] अरित्रम्,[६] अर्पः, अर्तव्यम्, अर्पयितव्यम्, अरणीयम्, अर्पणीयम्, अरिरिषणीयम्, अरारणीयम्, अर्यः[७]-अर्यी-अर्या-अर्याणी, आर्यः-आर्या, अर्प्यम्, अर्यमाणः,[८] अर्प्यमाणः आरः, अर्पः, अरिरिषः, अरारः, अर्तुम्, अर्पयितुम्, ऋतिः, आर्तिः,[९] आरा,[१०] अर्पणा, अरिरिषा, अरणम्, अर्पणम्, ऋत्वा, अर्पयित्वा, समृत्य, समर्प्य, अरुः,[११] अरणिः,[१२] अरुणः,[१३] अरण्यम्,[१४] अर्थः,[१५] अर्भकः,[१६] इरिणम्,[१७] ऋतुः[१८]।

**(९३७) गृ—सेचने**। (सींचना, गीला करना)। सकर्म.। अनिट्। परस्मै.। ऋकारान्तः। गरति। जगार जग्रतुः। गर्ता। 'सरति' (९३५) वत्।

**(९३८) घृ—सेचने**। (सींचना, गीला करना)। सक.। अनि.। पर.। अभिघरति। इत्यादि 'सरति' (९३५) वत्।

**(९३९) ध्वृ—हूर्च्छने**। (टेढा करना, नवाना, वक्र करना)। अकर्म.। अनिट्। परस्मै.। ऋकारान्तः, ध्वरति। 'स्मरति' (९३५) वत्।

---

१ 'ऋते च तृतीया समासे' (वा. ६-१-८९) इति वृद्धिः।

२ 'ऋणमाधमर्ण्ये' (८-२-६०) इति निष्ठातकारस्य नत्वम् आधमर्ण्यव्यवहारे निपात्यते' ऋणं नाम अन्यदीयं द्रव्यं गृहीतं इयता कालेन इयत्या वृद्ध प्रतिदीयते— इति संविद्रपम्।' इति वालमनोरमा। अन्यत्र ऋतम्। सत्यमित्यर्थः।

३ 'प्रवत्सतरकम्बलवसनदशार्णानाम् ऋणे' (वा. ६-१-८९) इति वृद्धौ साधुः। एवं वत्सतरार्णमित्यादिकम्।

४ लिटः क्वस्वादेशे द्वित्वे 'वस्वेकाजाद्घसाम्' (७-२-६७) इति इडागमे च रूपम्।

५ 'अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते' (३-२-७५) इति वनिप्। अर्वा = सूर्योऽश्वश्च।

६ 'अर्तिलूधू—' (३-२-१८४) इत्यनेन करणे इत्रप्रत्ययः। 'अनित्रं केनिपातकः' इत्यमरः। ऋच्छत्यनेनेत्यरित्रम् = नौकाचालनदण्डविशेषः।

७ 'अर्यः स्वामिवैश्ययोः' (३-१-१०३) इति ण्यपवादे यत् प्रत्ययः। 'अर्यक्षत्रियाभ्यां वा स्वार्थे' (वा. ४-१-४०) इति आनुक् ङीषा सह विकल्पितः। तदानीं अर्याणी अर्या इति रूपद्वयम्। अर्यी इति तु प्रयोगे ज्ञेयम्। स्वामिवैश्याभ्यामन्यत्र आर्यः इति भवति। पूज्य इत्यर्थः। अर्याणी स्वयमर्यास्यात् स्यादर्यी क्षत्रियी तथा' इत्यमरः।

८ 'गुणोऽर्ति संयोगाद्योः (७-४-२९) इति यकि गुणः।

९ आङः ऋतिशब्देन समासः 'उपसर्गादृतिधातोः' (६-४-९१) इति वृद्धिः।

१० 'आरा शस्त्रायाम्' (गणसूत्रं मिदादौ ३-३-१०४) इति पाठात् वृद्धि अङ् च।

११ औणादिके (द.उ. ९-३९) उसि प्रत्यये गुणः। अरुः = प्राणः आदित्यो वा।

१२ औणादिके (द.उ. १-२) अनिप्रत्यये गुणः। अरणिः = अग्नियोनिः काष्ठविशेषः।

१३ औणादिके (द.उ. ५-५९) उनन् प्रत्ययः। अरुणः = वैणतेयः अनूरुः सूर्यसारथिः।

१४ कर्मणि औणादिकः (द.उ. ८-६) अन्य प्रत्ययः। अरण्यम् = निर्जनस्थानम्।

१५ औणादिकः (द.उ. ६-२९) थन् प्रत्ययः। 'अर्थोऽभिधेयरैवस्तुप्रयोजननिवृत्तिषु' इत्यमरः।

१६ औणादिके (द.उ. ३-५०) अक प्रत्यये भुगागमः वयसि वाच्ये। अर्भकः = बालः।

१७ औणिदिकः (द.उ. ५-१७) इनन् प्रत्ययः। तत्सन्नियोगेन प्रकृतेः इः आदेशः। 'उरण् रपरः' (१-१-५१) इति रपरत्वम्। इरिणम् = अल्पोदकतृणस्थानम्।

१८ औणादिकः (द.उ. १-१२४) तु प्रत्ययः। अस्य च कित्त्वम्। तेन न गुणः। ऋतुः = वसन्तादिः कालविशेषः, स्त्रीणां पुष्पकालः।

**(९४०) स्रु—गतौ।** (जाना, टपकना, झरना, चूना, बहना)। अकर्म.। अनिट्। पर.।

१ स्रवति स्रवतः स्रवन्ति। २ **प्र.** सुस्राव सुस्रुवतुः सुस्रुवुः। **म.** सुस्रोथ-सुस्रुवथुः सुस्रुव। **उ.** सुस्राव-सुस्रव सुस्रुव सुस्रुम। ३ **प्र.** स्रोता स्रोतारौ स्रोतारः। **म.** स्रोतासि स्रोतास्थः स्रोतास्थ। **उ.** स्रोतास्मि स्रोतास्वः स्रोतास्मः। ४ स्रोष्यति स्रोष्यतः स्रोष्यन्ति। ५ **प्र.** स्रवतु-स्रवतात् स्रवताम् स्रवन्तु। **म.** स्रव-स्रवतात् स्रवतम् स्रवत। **उ.** स्रवाणि स्रवाव स्रवाम। ६ **प्र.** अस्रवत् अस्रवताम् अस्रवन्। **म.** अस्रवः अस्रवतम् अस्रवत। **उ.** अस्रवम् अस्रवाव अस्रवाम। ७ **प्र.** स्रवेत् स्रवेताम् स्रवेयुः। **म.** स्रवेः स्रवेतम् स्रवेत। **उ.** स्रवेयम् स्रवेव स्रवेम। ८ **प्र.** स्रूयात् स्रूयास्ताम् स्रूयासुः। **म.** स्रूयाः स्रूयास्तम् स्रूयास्त। **उ.** स्रूयासम् स्रूयास्व स्रूयास्म। ९ **प्र.** असुस्रुवत्, असुस्रुवताम् असुस्रुवन्। **म.** असुस्रुवः असुस्रुवतम् असुस्रवत। **उ.** असुस्रुवम् असुस्रुवाव असुस्रुवाम। १० **प्र.** अस्रोष्यत् अस्रोष्यताम् अस्रोष्यन्। **म.** अस्रोष्यः अस्रोष्यतम् अस्रोष्यत। **उ.** अस्रोष्यम् अस्रोष्याव अस्रोष्याम।

**भावे**—स्रूयते। **णिचि**—स्रावयति। ९ असिस्रवत्-असुस्रवत्। **सनि**—सुस्रूषति। **यङि**—सोस्रूयते। **यङ्लुकि**—सोस्रोति-सोस्रवीति। **कृत्सु**—स्रावकः-विका, सुस्रूषकः-षिका, सोस्रूयकः-यिका, स्रोता-त्री, स्रावयिता-त्री, सुस्रूषिता-त्री, सोस्रूयिता-त्री, स्रवन्-न्ती, स्रावयन्-न्ती, स्रोष्यन्-न्ती, स्रावयिष्यन्-न्ती-ती, सोस्रूयमाणः, स्रुतम्-तः-तवान्, स्रवः, स्रोतव्यम्, स्रावयितव्यम्, स्रवणीयम्, स्रावणीयम्, स्रव्यम्, स्राव्यम्, स्रोतुम्, स्रावयितुम्, स्रुत्वा, स्रावयित्वा, स्रवणम्, प्रस्रुत्य, स्रूः, स्रवः, आस्रावः, संस्रावः, प्रस्रावी, स्रुत्, स्रुतिः, परिस्रुत्, सुस्रावयिषुः-सिस्रावयिषुः, स्रुक्-स्रुवः, स्रोतः।

**(९४१) षु—प्रसवैश्वर्ययोः।** (उत्पन्न करना, पैदा करना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, **प्र**—उत्पन्न करना, प्रसूत होना, जनना, गर्भ धारण करना)। आद्ये सकर्म.। द्वितीये त्वकर्मकः। अनिट् परस्मै.।

१ सवति सवतः सवन्ति। पक्षे–**प्र.** सौति सुतः सुवन्ति। **म.** सौषि सुथः सुथ। **उ.** सौमि सुवः सुमः। २ **प्र.** सुषाव सुषवतुः सुषुवुः। **म.** सुषुविथ सुषोथ सुषुवथुः सुषुव। **उ.** सुषाव-सुषव सुषुविव सुषुविम। ३ सोता। ४ सोष्यति। ५ सौतु-सुतात्। ६ **प्र** असौत् असूताम् असुवन्। **म.** असौः असुतम् असुत। **उ.** असवम् असुव असुम। ७ **प्र** सूयात् सूयाताम् सुयुः। **म.** सूयाः सूयातम् सुयात। **उ.** सुयाम् सुयाव सुयाम। ८ **प्र.** सूयात् सूयास्ताम् सूयासुः। **म.** सूयाः सूयास्तम् सूयास्त। **उ.** सूयासम् सूयास्व सूयास्म। ९ **प्र.** आसावीत् असाविष्टाम् असाविषुः। **म.** असावीः असाविष्टम् असाविष्ट। **उ.** असाविषम् असाविष्म असाविष्म। पक्षे—असौषीत् असौष्टाम् असौषुः। १० असौष्यत् असोष्यताम् असोष्यन्।

**कर्मणि**—सूयते। **णिचि**—सावयति-ते। **सनि**—सुसूषति। **यङि**—सोषूयते। **यङ्लुकि**—सोषोति-सोषवीति। **कृत्सु**— सोतव्यम्, सवनीयम्, साव्यः-सव्यः, सुतः, सवन्, सोतुम्, सवनम्, सुत्वा, अभिषुत्य।

**( ९४२ ) श्रु—श्रवणे**। (सुनना, श्रवण करना)। प्रतिसंश्रृणुते– कबूल करना, मान्य करना, विशृणोति– कीर्तिमान् होना, प्रख्यात होना)। सकर्म.। अनिट्।परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | शृणोति | शृणुतः | शृण्वन्ति | प्र. |
| | शृणोषि | शृणुथः | शृणुथ | म. |
| | शृणोमि | शृणुवः-ण्वः | शृणुम-शृण्मः | उ. |
| लिट् | शुश्राव | शुश्रुवतुः | शुश्रुवुः | प्र. |
| | शुश्रोथ | शुश्रवथुः | शुश्रुव | म. |
| | शुश्राव-शुश्रव | शुश्रुव | शुश्रुम | उ. |
| लुट् | श्रोता | श्रोतारौ | श्रोतारः | प्र. |
| | श्रोतासि | श्रोतास्थः | श्रोतास्थ | म. |
| | श्रोतास्मि | श्रोतास्वः | श्रोतास्मः | उ. |
| लृट् | श्रोष्यति | श्रोष्यतः | श्रोष्यन्ति | प्र. |
| | श्रोष्यसि | श्रोष्यथः | श्रोष्यथ | म. |
| | श्रोष्यामि | श्रोष्यावः | श्रोष्यामः | उ. |
| लोट् | शृणोतु-शृणुतात् | शृणुताम् | शृण्वन्तु | प्र. |
| | शृणु-शृणुतात् | शृणुतम् | शृणुत | म. |
| | शृणवानि | शृणवाव | शृणवाम | उ. |
| लङ् | अशृणोत् | अशृणुताम् | अशृण्वन् | प्र. |
| | अशृणोः | अशृणुतम् | अशृणुत | म. |
| | अशृणवम् | अशृणुव-ण्व | अशृणुम-ण्म | उ. |
| वि. लि. | शृणुयात् | शृणुयाताम् | शृणुयुः | प्र. |
| | शृणुयाः | शृणुयातम् | शृणुयात | म. |
| | शृणुयाम् | शृणुयाव | शृणुयाम | उ. |
| आ. लि. | श्रूयात् | श्रूयास्ताम् | श्रूयासुः | प्र. |
| | श्रूयाः | श्रूयास्तम् | श्रूयास्त | म. |
| | श्रूयासम् | श्रूयास्व | श्रूयास्म | उ. |
| लुङ् | अश्रौषीत् | अश्रौष्टाम् | अश्रौषुः | प्र. |
| | अश्रौषीः | अश्रौष्टम् | अश्रौष्ट | म. |
| | अश्रौषम् | अश्रौष्व | अश्रौष्म | उ. |
| लृङ् | अश्रोष्यत् | अश्रोष्यताम् | अश्रोष्यन् | प्र. |
| | अश्रोष्यः | अश्रोष्यतम् | अश्रोष्यत | म. |
| | अश्रोष्यम् | अश्रोष्याव | अश्रोष्याम | उ. |

**कर्मणि**—श्रूयते। २ शुश्रुवे। ९ अश्रावि। **णिचि**—श्रावयति-ते। ९ अशुश्रवत्-अशिश्रवत्। **सनि**—शुश्रूषते। **यङि**—शोश्रूयते। **यङ्लुकि**—शोश्रवीति-शोश्रोति। **कृत्सु**—श्रावकः-विका, शुश्रूषकः-षिका, शोश्रूयकः-यिका, श्रोता-त्री, श्रावयिता-त्री, शुश्रूषिता-त्री,

शोश्रूयिता-त्री, श्रावयन्-न्ती, श्रोष्यन्-न्ती-ती, श्रुतम्-तः-तवान्, श्रोतव्यम्- श्रावयितव्यम्, श्रवणीयम्, श्रावणीयम्, श्रव्यम्, श्राव्यम्, श्रूयमाणः, श्राव्यमाणः, श्रोतुम्, श्रावयितुम्, श्रवणम्,[१] श्रावणम्, श्रुत्वा, श्रावयित्वा, विश्रुत्य, विश्राव्य, शृण्वन्[२]-न्ती, संशृण्वानः,[३] शुश्रुषमाणः,[४] प्रतिशुश्रुषन्[५]-आशुश्रूषन्, देवतं[६] प्रतिशुश्रूषमाणः, शुश्रुवान्,[७] देवदत्ताय[८] गां प्रतिशृण्वन्-आंशृण्वन् वा, निश्रावी,[९] विश्रावः[१०], प्रतिश्रुत्,[११] श्रुतिः,[१२] सुश्रुतः,[१३] शिश्रावयिषुः[१४]-शुश्रावयिषुः, श्रवणः,[१५] श्रोत्रम्,[१६] श्रवः[१७]-विश्रवः-वैश्रवणः-रावणः, श्रोणिः[१८]।

(९४३) **ध्रु—स्थैर्ये**। (अचल होना, स्थिर होना)। अकर्म.। अनिट्। पर.। ध्रवति। २ दुध्राव। म. दुध्रविथ-दुध्रोथ। दुध्रिविव। 'स्रवति' (९४०) वत्।

(९४४) **दु—गतौ**। (जाना) सक.। अनिट्। पर.। उकारान्तः। १ दवति। २ **प्र.** दुदाव। **म.** दुदोथ-दुदविथ। ३ दोता। ४ दोष्यति। ८ दूयात्। ९ अदोषीत्। दवः, दूतः दूत्यम्।

(९४५) **द्रु—गतौ**। (जाना)। सकर्म.। अनिट्। पर.। उकारान्तः। द्रवति। इत्यादि 'स्रवति' (९४०) वत्। **वि**—विद्रवे, पलायने च = विद्रवति। **उप**—उपद्रवे—उपद्रवति।

---

१ श्रूयतेऽनेनेति संज्ञायां ल्युटि श्रवणम् = श्रोत्रम् वेदो वा।

२ शतरि 'श्रुवः श्रृ च' (३-१-७४) इति श्नु प्रत्ययः, तत्सन्नियोगेन 'श्रृ' इति प्रकृतेरादेशश्च। 'सविधातुकमपित्' (१-२-४) इति श्नुप्रत्ययस्य ङिद्वद्भावात् 'क्ङिति च' (१-१-५) इति गुणनिषेधः। अत्र वदन्ति— भ्वादिषु पठितत्वादस्य धातोः, श्रवति इत्यनेकत्र ऋग्वेदादिषु प्रयोगश्रवणात् च पूर्वं श्रु धातुः श्रवति इत्याद्याकारेण भौवादिकरूपेणापि युक्त इत्यूह्यते, इति। विद्वान्सः प्रमाणमत्र।

३ 'अर्तिश्रुदृशिभ्यश्च' (वा. १-३-२९) इत्यनेन समुपसृष्टादस्मात् आत्मनेपदम्।

४ 'ज्ञाश्रुस्मृदृशां सनः' (१-३-५४) इति सन्नन्तात् नित्यमात्मनेपदम्।

५ 'प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः–' (१-३-५९) इति आत्मनेपदनिषेधात् यथा सम्भवं परस्मैपदमत्रेति बोध्यम्।

६ 'प्रत्याङ्भ्यां–' (१-३-५९) इत्यत्र उपसर्गयोरेव ग्रहणम्, प्रकरणात्। अतश्च कर्मप्रवचनीययोः प्रत्याङोग्रहणे तु आत्मनेपदमपि भवति।

७ 'भाषायां सदवसश्रुवः' (३-२-१०८) इति लिटः क्वसुः। द्विर्वचनादिकम्।

८ 'प्रत्याङ्भ्या श्रुवः पूर्वस्य कर्ता' (१-३-५९) इति प्रत्याङ्भ्यामुसृष्टस्य शृणोतेः प्रयोगे देवदत्तस्य सम्प्रदानत्वात् चतुर्थी इति बोध्यम्।

९ 'रक्षश्रुवसवपसां नौ' (ग.सू. ३-१-१३४) इति ग्रह्यादिपाठात् णिनिप्रत्ययः।

१० 'वौ शुश्रुवः' (३-३-२५) इति घञ्। उवर्णान्तत्वलक्षणापोऽपवादः।

११ प्रतिश्रूयते इति प्रतिश्रुत् = प्रतिध्वनिः। स्त्रियां भावे सम्पदादित्वात् (वा. ३-३-१०८) क्विप्। तुक्।

१२ श्रूयतेऽनया इति श्रुतिः = वेदः, श्रोत्रम् वा। 'श्रुयजीषिस्तुभ्यः करणे' (वा. ३-३-९४) इति स्त्रियां ल्युडपवादः क्तिन्।

१३ 'क्तिच्क्तौ च संज्ञायाम्' (३-३-१७४) इति संज्ञायां कर्तरि क्तः। सुश्रुतः = वैधशास्त्रप्रवर्तकः ऋषिविशेषः।

१४ ण्यन्तात् सनि, 'सनाशंसभिक्ष उः' (३-२-१६८) इति ताच्छीलिके उप्रत्यये, 'स्रवतिशृणोति–' (७-४-८१) इत्यादिना अवर्णपरकत्वात् अभ्यासस्येकारविकल्पः।

१५ नन्द्यादित्वात् (ग.सू. ३-१-१३४) कर्तरिल्युः। श्रवणः = नक्षत्रविशेषः। बहुश्रुतः अश्वत्थवृक्षो वा।

१६ औणादिके (द.उ. ९-८४) ष्ट्रन् प्रत्यये रूपमेवम्। श्रूयतनेनेति श्रोत्रम् = श्रवणम्।

१७ औणादिके (द. उ. ९-४९) असुन् प्रत्यये रूपमेवम्। विपूर्वकादस्मात् अप्रत्ययार्थे 'विश्रवसोविश्रवणरवणौ' (ग.सू. ४-१-११२) इति शिवदिपाठात् प्रकृते विश्रवणरवणादेशौ 'तौ च यक्षराजे रक्षोविशेषे च व्यवस्थितौ। तेन वैश्रवणः कुवेरः। रावणः = रक्षोविशेषः लङ्काधिपतिः।

१८ 'वहिश्रियुश्रु–' (द.उ. १-२१) इत्यादिना निप्रत्ययः। श्रोणिः = कटिपश्चाद्भागः।

**(९४६) जि—अभिनवे, जये च।** अभिनवो न्यूनीकरणं भवनं वा (नवीनीकरण होना। सर्वोत्कर्ष से रहना, सबसे बढ़ कर होना, जीतना, पराभव करना)। **वि**—(आ) जीतना, **परा**—पराजित होना, पराजय करना। अकर्म.। अनि.। परस्मै.। जयति। जिगाय। 'जयति' (५६१) वत्।

**(९४७) ज्रि—अभिभवे च।** आद्ये कर्मकः। द्वितीयःसकर्म.। अनि.। पर.। ज्रयति। इत्यादि 'जयति' (५६१) वत्।

**(९४८) ष्मिङ्—इषद्धसने।** (मुसकराना, मन्द हास्य करना)। **वि**—आश्चर्य करना। अकर्म.। अनिट्। आत्मने.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | स्मयते | स्मयेते | स्मयन्ते | प्र. |
| | स्मयसे | स्मयेथे | स्मयध्वे | म. |
| | स्मये | स्मयावहे | स्मयामहे | उ. |
| लिट् | सिस्मये | सिस्मियाते | सिस्मियिरे | प्र. |
| | सिस्मियिषे | सिस्मियाथे | सिस्मियिढ्वे-ध्वे | म. |
| | सिस्मियिये | सिस्मियिवहे | सिस्मियिमहे | उ. |
| लुङ् | स्मेता | स्मेतारौ | स्मेतारः | प्र. |
| | स्मेतासे | स्मेतासाथे | स्मेताध्वे | म. |
| | स्मेताहे | स्मेतास्वहे | स्मेतास्महे | उ. |
| लृट् | स्मेष्यते | स्मेष्येते | स्मेष्यन्ते | प्र. |
| | स्मेष्यसे | स्मेष्येथे | स्मेष्यध्वे | म. |
| | स्मेष्ये | स्मेष्यावहे | स्मेष्यामहे | उ. |
| लोट् | स्मयताम् | समयेताम् | स्मयन्ताम् | प्र. |
| | स्मयस्व | स्मयेथाम् | स्मयध्वम् | म. |
| | स्मयै | स्मयावहै | स्मयामहै | उ. |
| लङ् | अस्मयत | अस्मयेताम् | अस्मयन्त | प्र. |
| | अस्मयथाः | अस्मयेथाम् | अस्मयध्वम् | म. |
| | अस्मये | असम्यावहि | अस्मयामहि | उ. |
| वि. लि. | स्मयेत | स्मयेयाताम् | स्मयेरन् | प्र. |
| | स्मयेथाः | स्मेयाथाम् | स्मेयेध्वम् | म. |
| | स्मयेय | स्मयेवहि | स्मयेमहि | उ. |
| आ. लि. | स्मेषीष्ट | स्मेषीयास्ताम् | स्मेषीरन् | प्र. |
| | स्मेषीष्ठाः | स्मेषीयास्थाम् | स्मेषीढ्वम् | म. |
| | स्मेषीय | स्मेषीवहि | स्मेषीमहि | उ. |
| लुङ् | अस्मेष्ट | अस्मेषाताम् | अस्मेषत | प्र. |
| | अस्मेष्ठाः | अस्मेषाथाम् | अस्मेड्ढ्वम्-ढ्वम् | म. |
| | अस्मेषि | अस्मेष्वहि | अस्मेष्महि | उ. |

| लृङ् | अस्मेष्यत | अस्मेष्येताम् | अस्मेष्यन्त | प्र. |
|---|---|---|---|---|
| | अस्मेष्यथा: | अस्मेष्येथाम् | अस्मेष्यध्वम् | म. |
| | अस्मेष्ये | अस्मेष्यावहि | अस्मेष्यामहि | उ. |

**भावे**—स्मीयते । २ सिष्मिष्ये । ९ अस्मायि । **णिचि**—विस्मापयते[१] । कुञ्चिकयैनं विस्मापयति[२] । **सनि**—विसिस्मयिषते । यङि यङ्लुकि कृत्सु च- 'क्षयति' वत् । स्मयनीयम्, स्मयनम्, स्मय:,[३] स्मायक:-यिका, स्मयी, विस्मयी, स्मेता, स्मित:, स्मिति:, स्मेतव्यम्, स्मित्वा, विस्मित्य, स्मेयम्, स्मेष्यमाण:, सिस्मयिषक:[४]-षिका, विस्मापयमान:,[५] स्मयमानो,[६] विवक्षति, स्मेर:,[७] स्मितम् ।

( ९४९ ) **गुङ्—अव्यक्ते शब्दे** । (अस्पष्ट बोलना) । अक. । अनि. । आत्मने. । उकारान्त: । ङित् । गवते । जुगुवे इत्यादि 'कुवति' वत् ।

( ९५० ) **गाङ्—गतौ** । (जाना) । सक. । अनि. । आत्मने. । १ **प्र.** गाते[८] गाते[९] गाते[१०] । **म.** गासे गाथे गाध्वे । **उ.** गै[११] गावहै गामहै । २ **प्र.** जगे जगाते जगिरे । **म.** जगिषे जगाथे जगिध्वे । **उ.** जगे जगिवहे जगिमहे । ३ गाता । ४ गास्यते । ५ **प्र.** गाताम् गाताम् गाताम् । **म.** गास्व गाथाम् गाध्वम् । **उ.** गै[१२] गावेहे गामेहे । ६ **प्र.** अगात अगाताम् अगात । **म.** अगाथा: अगाथाम् अगाध्वम् । **उ.** अगे अगावहि अगामहि । ७ **प्र.** गेत गेयाताम् गेरन् । **म.** गेथा: गेयाथाम् गेध्वम् । **उ.** गेय गेवहि गेमहि । ८ **प्र.** गासीष्ट गासीयास्ताम् गासीरन् । **म.** गासीष्ठा: गासीयास्थाम् गासीध्वम् । **उ.** गासीय गासीवहि गासीमहि । ९ **प्र.** अगास्त अगासाताम् अगासत । **म.** अगास्था: अगासाथाम् अगाढ्ध्वम्-ध्वम् । **उ.** अगासि अगास्वहि अगास्महि । १० अगास्यत ।

**सनि**—जिगासते । अन्यत् सर्वं 'गायति' (९१७) वत् ।

( ९५१ ) **कुङ्—शब्दे** (शब्द करना) । अक. । अनि. । आत्म. । उकारान्त: ।

१ 'भीस्म्योर्हेतुभये' (१-३-६८) आभ्या ण्यन्ताभ्यामात्मनेपद स्याद्धेतुत एव चेद् भयस्मयौ । राम विस्मापयेत क: (भट्टि: ५-१८) ।

२ ततोऽन्यत्र परस्मैपदम् ।

३ 'अज्विधौ भयादीनामुपसख्यानम्' (वा. ३-३-५६) इति अच् । अत्र ल्युडपवादोऽप्यमिति केचित् । स्मयनम् इत्यपि लक्ष्येस्ति इति केचित् ।

४ 'स्मिपुङ् रञ्ज्वशां सनि' (७-२-७४) इति सन्नन्ते इडागम: । 'सनि ग्रहगुहोश्च' (७-२-१२) इत्यस्यापवाद: ।

५ 'भीस्म्योहेतुभये' (१-३-६२) इति आत्मनेपदम् । 'नित्यं स्मयते:' (६-४-५७) इति णिजन्ते सर्वत्र आकार: प्रकृते: । आत्वे कृते पुगागमोऽपि भवति ।

६ 'लक्षणहेत्वो: क्रियाया:' (३-४-१२६) इति लक्षणे शानच् ।

७ 'नमिकम्पिस्म्यजसकमहिसदीपो र' इति ताच्छीलिको र प्रत्यय: ।

८ गा + अ + ते = गाते ।

९ गा + अ + आते = गाते ।

१० गा + अ + अते = गाते ।

११ गा + अ + इ = आद् गुण: = गा + ए = वृद्धि: = गै ।

१२ गा + आ + ऐ = वृद्धिरेचि = गै ।

१ कबते। २ चुकुषे। ३ कोता। ४ कोष्यते। ५ कवताम्। ६ अकवत्। ७ कवेत। ८ कोषीष्ट। ९ अकोष्ट। १० अकोष्यत।

**भावे**—कूयते। **णिचि**—कावयति। **सनि**—चूकूषते। **यङि**—कोकूयते। **यङ्लुकि**—चोकवीति-चोकोति। **कृत्सु**—कोतव्यम्, कवनीयम्, कोतुम्, कवनम्, कुत्वा, प्रकुत्य।

**(९५२) घुङ्—शब्दे**। (शब्द करना)। अक.। अनि.। आत्म.। उकारान्तः। घवते। जुघुवे। इत्यादि 'कुङ्' धातु (९५१) वत्

**(९५३) उङ्—शब्दे**। (शब्द करना)। अक.। अनि.। आ.।१ अवते।२ **प्र.** ऊवे ऊवाते। **म.** ऊविषे ऊवाथे ऊविध्वे-ढ्वे। **उ.** ऊवे ऊविवहे ऊविमहे। ३ ओता। ४ ओष्यते। ५ अवताम्। ६ आवत। ७ आवेत। ८ ओषीष्ट। ९ ओष्ट औषाताम्। १० औष्यत।

**भावे**—ऊयते। **णिचि**—आवयति-ते। **सनि**—ऊविषते। **कृत्सु**—ओतव्यम्, अवनीयम्, आव्यम्, अव्यम्, उतम्, उत्वा, प्रोत्य, अवमानः, ओतुम्।

**(९५४) ङुङ्—शब्दे**। अक.। अनि.। आत्म.। ङवसे। इत्यादि 'कवति' (९५१) वत्। खुङ्-गुङ्-शब्दे इत्यन्ये। खवते। गवते। इत्यादि 'कवति' (९५१) वत्।

**(९५५-९५८) च्युङ्-ज्युङ्-प्लुङ्—गतौ**। (जाना) क्लुङ् इत्यन्ये। सक.। अनि.। आत्मने.। च्यवते। ज्यवते। प्लवते। क्लवते। इत्यादि 'कवति' (९५१) वत्।

**(९५९) रुङ्—गतिरेषणयोः**। (जाना, चलना, मारना, दुख देना, क्रोध करना)। गतौ सकर्म.। अनि.। आत्मने.। रवते। रुरुवे। रोता इत्यादि 'कवति' (९५१) वत्।

**(९६०) धृङ्—अवध्वंसने**। (गिर पड़ना, नष्ट होना)। अक.। अनि.। आत्मने.। ऋकारान्तः। ङित्। १ धरते। २ दध्रे। ३ धर्ता। ४ धरिष्यते। ५ धरताम्। ६ अधरत्। ७ धरेत। ८ धृषीष्ट। ९ अधृत अधृषाताम्। १० अधरिष्यत। अन्यत् सर्वम् आत्मनेपदे 'धरति' (९०:) वत्।

**(९६१) मेङ्—प्रणिदाने**। प्रणिदानम् = विनिमयः प्रत्यर्पणञ्च। सक.। अनि.। आत्मने.। एकारान्तः। १ मयते। प्रणिमयते। २ ममे। म. ममिषे। ३ माता। ४ मास्यते। ८ मासीष्ट। ९ अमास्त अमासाताम्।

**कृत्सु**—मायकः-यिका, मापकः-पिका, मित्सकः-त्सिका, मेमीयकः-यिका, माता-मात्री, माययिता-त्री, मित्सिता-त्री, मेमीयिता-त्री, मितः, मातव्यः, मेयः, मानम्, मित्वा, मातुम्, शानचि-मयमानः,[1] प्रणिमयमानः, अपमित्य,[2] अपमाय वा याचते। याचित्वा अपमयते,

१ शानचि, शपि अयादेशे च रूपमेवम्। '—अशिति' (६-१-४५) इत्युक्तत्वात् आत्वं नेति ज्ञेयम्। प्रणिमयमानः इत्यत्र 'नेर्गदनदपतपदघुमा—' (८-४-१७) इत्यादिना नेर्णत्वम्।

२ अपपूर्वकादस्मात् 'उदीचां माङो व्यतिहारे' (३-४-१९) इति क्त्वाप्रत्यये, तस्य सामासिके ल्यपि, 'मयतेरिदन्यतरस्याम्' (६-४-७०) इति इकारेऽन्तादेशे च। अपमित्य इति रूपम्। पक्षे अपमाय इति च। अपूर्वकालार्थवचनमिदम्। अत्र (३-४-१९) 'उदीचाम्' इत्युक्तत्वात्, प्राचां मते तु, याचित्वाऽपमयते' इत्यपि प्रयोगः साधुः। 'उदीयाम्—' (३-४-१९) इति सूत्रे 'माङ्' इति, मेङः कृतात्वस्य निदेशः इति 'दाधा घ्वदाप्' (१-१-२०) सूत्रे भाष्ये स्पष्टम्।

धान्यमात्रः[1] ।

(९६२) **देङ्—रक्षणे**। (रक्षा करना, पोषण करना)। सक.। अनि.। आत्मने.। दयते। **दिग्ये—दयतेर्दिगिलिटि, दाता**। इत्यादि 'मयति' (९६१) वत्।

(९६३) **श्यैङ्—गतौ**। (जाना)। सक.। अनि.। आत्मने.। ऐकारान्तः। श्यायते। शश्ये। 'त्रायति' (९६४) वत्।

(९६४) **प्यैङ्—वृद्धौ**। (बढ़ना, उन्नति होना)। अक.। अनि.। आ.। प्यायते। पप्ये। 'त्रायति' (९६५) वत्।

(९६५) **त्रेङ्—पालने**। (पालन करना, रक्षा करना)। सक.। अनि.। आ.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | त्रायते | त्रायेते | त्रायन्ते | प्र. |
| | त्रायसे | त्रायेथे | त्रायध्वे | म. |
| | त्राये | त्रायावहे | त्रायामहे | उ. |
| लिट् | तत्रे | तत्राते | तत्रिरे | प्र. |
| | तत्रिषे | तत्राथे | तत्रिध्वे | म. |
| | तत्रे | तत्रिवहे | तत्रिमहे | उ. |
| लुट् | त्राता | त्रातारौ | त्रातारः | प्र. |
| | त्रातासे | त्रातासाथे | त्राताध्वे | म. |
| | त्राहे | त्रातास्वहे | त्रातास्महे | उ. |
| लृट् | त्रास्यते | त्रास्येते | त्रास्यन्ते | प्र. |
| | त्रास्यसे | त्रास्येथे | त्रास्यध्वे | म. |
| | त्रास्ये | त्रास्यावहे | त्रास्यामहे | उ. |
| लोट् | त्रायताम् | त्रायेताम् | त्रायन्ताम् | प्र. |
| | त्रायस्व | त्रायेथाम् | त्रायध्वम् | म. |
| | त्रायै | त्रायावहै | त्रायामहै | उ. |
| लङ् | अत्रायत | अत्रायेताम् | अत्रायन्त | प्र. |
| | अत्रायथाः | अत्रायेथाम् | अत्रायध्वम् | म. |
| | अत्राये | अत्रायावहि | अत्रायामहि | उ. |
| वि. लि. | त्रायेत | त्रायेयाताम् | त्रायेरन् | प्र. |
| | त्रायेथाः | त्रायेयाथाम् | त्रायेध्वम् | म. |
| | त्रायै | त्रायावहै | त्रायामहै | उ. |

१ कर्मणि उपपदे आदन्तलक्षणं कप्रत्ययं बाधित्वा 'ह्वावामश्च' (३-२-२) इत्यण्। आत्वे कृते, 'आतो युक् चिण्कृतोः' (७-३-१०३) इति युगागमः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आ. लि. | त्रासीष्ट | त्रासीयास्ताम् | त्रासीरन् | प्र. |
| | त्रासीष्ठाः | त्रासीयास्थाम् | त्रासीध्वम् | म. |
| | त्रासीय | त्रासीवहि | त्रासीमहि | उ. |
| लुङ् | अत्रास्त | अत्रासाताम् | अत्रासत | प्र. |
| | अत्रास्थाः | अत्रासाथाम् | अत्राध्वम् अत्राद्ध्वम् | म. |
| | अत्रासि | अत्रास्वहि | अत्रास्महि | उ. |
| लृङ् | अत्रास्यत | अत्रास्येताम् | अत्रास्यन्त | प्र. |
| | अत्रास्यथाः | अत्रास्येथाम् | अत्रास्यध्वम् | म. |
| | अत्रास्ये | अत्रास्यावहि | अत्रास्यामहि | उ. |

कर्मणि प्रभृतिषु 'गलायति' (९०३) वत्।

**कृत्सु**—त्रायकः[१]-यिका, त्रापकः[२]-पिका, तित्रासकः-सिका, तात्रायकः-यिका, त्राता-त्री, त्रापयिता-त्री, तित्रासिता-त्री, तात्रायिता-त्री, त्रापयन्-न्ती, त्रापयिष्यन्-न्ती-ती, त्रायमाणः,[३] (चोरात्[४]) त्रायमाणः, त्रापयमाणः, तित्रासमानः, तात्राय्यमाणः, त्रास्यमाणः, त्रापयिष्यमाणः, तित्रासिष्यमाणः, तात्रयिष्यमाणः, सुत्राः-सुत्रौ-सुत्राः, त्रातम्[५]-त्राणम्-त्रातः-त्राणः-त्रातवान्-त्राणवान्, देवत्रातः[६]-भवत्त्रातः, त्रापितः, तित्रसितः, तात्रायितः-तवान्, गोत्रः,[७] सुत्रः,[८] आतपत्रम्, अङ्गुलित्रम्,[९] सुत्रायी,[१०] त्रायः,[११] सुत्रामा,[१२] त्रापः, तित्रासुः, तात्रः, त्रातव्यम्, त्रापयितव्यम्, त्राणीयम्, त्रापणीयम्, त्रेयम्,[१३] त्राप्यम्, ईषत्त्राणः,[१४] दुस्त्राणः-सुत्राणः, त्रायमाणः, त्राप्यमाणः, तित्रास्यमाणः, तात्रायमाणः, त्रायः, त्रापः, तित्रासः, तात्रायः, त्रातुम्, त्रापयितुम्, त्रातिः, सुत्रा,[१५] त्रापणा, त्राणम्, त्रापणम्, त्रात्वा, त्रापयित्वा, प्रत्राय, प्रत्राप्य।

---

१ 'आदेच्च उपदेशे शिति' (६-१-४५) इत्यात्वे, 'आतो युक् चिण्कृतोः' (७-३-३३) इति युगागमः। एवमात्वं सर्वत्र, युगागमस्तु घञादिषु च इति ज्ञेयम्।

२ 'आदन्तलक्षणः युगागमो ण्यन्ते सर्वत्र ज्ञेयः।

३ शानचि, आत्वाभावे, आयादेशे च रूपम्।

४ 'भीत्रार्थानां भयहेतुः' (१-४-२५) इति अपादानसंज्ञा चोरस्य।

५ 'नुदविदोन्दत्राघ्राह्रीभ्योऽन्यतरस्याम्' (८-२-५६) इति निष्ठानत्वविकल्पः।

६ 'क्तिच्क्तौ च संज्ञायाम्' (३-३-१७४) इति संज्ञायां क्तप्रत्ययः। 'देवत्रातो गलो ग्राह इति योगे च सद्विदः। मिथस्ते न विभाष्यन्ते गवाक्षः संशितव्रतः।(भाष्यम् (७-४-४१) इति व्यवस्थित विभाषश्रयणाद् अत्र निष्ठानत्वं न। देवत्रात इत्युपलक्षणम्, संज्ञायामन्योपपदेऽपि भवतीति ज्ञापनाय भवत्रात इत्यप्युक्तम्।

७ 'आतोऽनुपसर्गे कः' (३-२-३) इति कर्मण्युपपदेऽणपवादः कप्रत्ययः। 'आतो लोप इटि च' (६-४-६४) इत्याकारलोपः। एवम्, पार्ष्णित्रम्, तनुत्रम्, आतपत्रम् इत्यादिकमपि बोध्यम्।

८ 'आतश्चोपसर्गे' (३-१-१३६) इति कर्तरि क प्रत्ययः।

९ व्रजति पुरतरुण्यो बद्धचित्राङ्गुलित्रे कथमपि गुरुशोकान् मा रुदन् माङ्गलिक्यः। (भ.का. १-२६)

१० ताच्छील्ये णिनिप्रत्ययः। युगागमः।

११ 'श्याऽऽद्व्यध–' (३-१-१४१) इति कर्तरि ण प्रत्यये रूपमेवम्।

१२ 'आतो मनिन्–' (३-२-७४) इति मनिन् प्रत्ययः। सुत्रामा = इन्द्रः।

१३ 'अचो यत्' (३-१-९७) इति यत्। 'ईद् यति' (६-४-६५) इति ईत्वे गुणे च रूपम्।

१४ ईषदाद्युपपदेषु खलपवादः 'आतो युच्' (३-३-१२८) इति युच्।

१५ 'आतश्चोपसर्गे' (३-३-१०६) इति स्त्रियां भावादावङ्।

**( ९६६ ) पूङ्—पवने।** (पवित्र कनरा या होना)। सक.। सेट्। आत्म.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | पवते | पवेते | पवन्ते | प्र. |
| | पवसे | पवेथे | पवध्वे | म. |
| | पवे | पवावहे | पवामहे | उ. |
| लिट् | पुपुवे | पुपुवाते | पुवुवुरे | प्र. |
| | पुपुविषे | पुपुवाथे | पुपुविढ्वे-ध्वे | म. |
| | पुपुवे | पुपुविवहे | पुपुविमहे | उ. |
| लुट् | पविता | पवितारौ | पवितारः | प्र. |
| | पवितासे | पवितासाथे | पविताध्वे | म. |
| | पविताहे | पवितास्वहे | पवितास्महे | उ. |
| लृट् | पविष्यते | पविष्येते | पविष्यन्ते | प्र. |
| | पविष्यसे | पविष्येथे | पविष्यध्वे | म. |
| | पविष्ये | पविष्यावहे | पविष्यामहे | उ. |
| लोट् | पवताम् | पवेताम् | पवन्ताम् | प्र. |
| | पवस्व | पवेथाम् | पवध्वम् | म. |
| | पवै | पवावहै | पवामहै | उ. |
| लङ् | अपवत | अपवेताम् | अपवन्त | प्र. |
| | अपवथाः | अपवेथाम् | अपवध्वम् | म. |
| | अपवे | अपवावहि | अपवामहि | उ. |
| वि. लि. | पवेत | पवेताम् | पवेरन् | प्र. |
| | पवेथाः | पवेयाथाम् | पवेध्वम् | म. |
| | पवेय | पवेवहि | पवेमहि | उ. |
| आ. लि. | पविषीष्ट | पविषीयास्ताम् | पविषीरन् | प्र. |
| | पविषीष्ठाः | पविषीयास्थाम् | पविषीढ्वम्-ध्वम् | म. |
| | पविषीय | पविषीवहि | पविषीमहि | उ. |
| लुङ् | अपविष्ट | अपविषाताम् | अपविषत | प्र. |
| | अपविष्ठाः | अपविषाथाम् | अपविड्ढ्वम्-ध्वम् | म. |
| | अपविषि | अपविष्वहि | अपविष्महि | उ. |
| लृङ् | अपविष्यत | अपविष्यताम् | अविष्यन्त | प्र. |
| | अपविष्यः | अपविष्यतम् | अपविष्यत | म. |
| | अपविष्यम् | अपविष्याम | अपविष्याम | उ. |

**कृत्सु**—पावकः-विका, विपविषकः-षिका, पोपूयकः-यिका, पविता-त्री, पावयिता-त्री, पिपविषिता-त्री, पोपूयिता-त्री, पावयन्-न्ती, पावयिष्यन्-न्ती-ती, पवमानः, पावयमानः, पविष्यमाणः, पावयिष्यमाणः, पूः-पुवौ-पुवः, पूतम्[१]-पवितम्-तः-तवान्, पावितः, पिपविषितः,

१ 'पूङश्च' (७-२-५१) इति निष्ठाया इड्विकल्पः। 'पूङ्क्त्वा च' (१-२-२२) इति निष्ठायाः कित्वनिषेधात् गुणावादेशौ। क्त्वायामपि रूपद्वयम्।

पोपूयितः-तवान्, पवः, पवमानः,[१] पवनः,[२] पवित्रम्,[३] (अग्निः देवता वा) पोता,[४] पावः, पिपविषुः-पिपावयिषुः पोपुवः, पवितव्यम्, पावयितव्यम्, प्रपवणीयम्,[५] प्रपवनीयम्, प्रपावणीयम्[६]-प्रपावनीयम्, विपूयः[७]-पव्यम्, अवश्यपाव्यम्,[८] पूयमानः, पाव्यमानः, पवः,[९] निष्पावः,[१०] उत्पावः,[११] पोत्रम्,[१२] वनपोत्रः, पवित्रम्,[१३] पिपविषः, पोपूयः, पवितुम्, पावयितुम्, पूतिः, पावना, पवनम्, पावनम्, पूत्वा-पवित्वा, पावयित्वा, प्रपूय, प्रपाव्य।

**(९६७) मूङ्—बन्धने।** (बांधना, अकड़ना)। सक.। सेट्। आत्मने.। मवते। मुमुवे। मविता। इत्यादि 'पवति' (९६६) वत्।

**(९६८) डीङ्—विहायसा गतौ।** (आकाश में उड़ना), **अव**—आकाश से उतरना, **उत्**—ऊपर उड़ना, **परि**—चक्राकार उड़ना, **प्र**—चपलता से उतरना, **सम्**—समूह के साथ उड़ना, **समुत्**—ठहर-ठहर के उड़ना या धरे-धीरे उड़ना। सकर्म.। सेट्। आत्मन.।

१ डयते। २ **प्र.** डिड्ये। म. डिड्यिषे। **उ.** डिड्ये डिड्यिवहे डिड्यिमहे। ३ **प्र.** डयिता। ४ डयिष्यते। ५ डयताम्। ६ अडयत। ७ डयेत। ९ डयिषीष्ट। ९ अडयिष्ट। १० अडयिष्यत।

**भावे**—डीयते। ९ अडायि। **णिचि**—डाययति-ते। **सनि**—डिडयिषते। **यङि**—डेडीयते। **यङ्लुकि**—डेडयीति-डेडेति। **कृत्सु**—डायकः[१४]-यिका, डाययिता-त्री,

१ कर्तरि 'पूङ्यजोः शानच्' (३-२-१२८) इति शानच् प्रत्ययः। शपि, 'आने मुक्' (७-२-८२) इति मुगागमः।
२ नन्द्यादित्वात् (३-१-१३४) कर्तरि ल्युप्रत्यये, अनादेशे च रूपम्। पवनः = वायुः।
३ 'कर्तरि चर्षिदेवतयोः' (३-२-१८६) इति कर्तरि ऋषौ, देवतायां वा अभिधेये सति इत्र प्रत्ययः। ऋषिः = अग्निः। 'अग्निः पवित्रम्, स मा पुनातु' (आप श्रौ. सू. १२-१९-६) वायुः सोमः सूर्यइन्द्रः पवित्रम् ते मा पुनन्तु (आप. श्रौ. सू. १२-९-६) इत्यादिषु यथा। ऋषौ करणे, देवतायां कर्तरि चायं प्रत्ययो ज्ञेयः।
४ 'तृन्' (३-२-१३५) इति तच्छीलादिषु कर्तृषु तृन् प्रत्ययः। बाहुलकात् इडागमाभावः।
५ 'न भाभूपू—' (८-४-३४) इत्यत्र 'पू' इत्यनेन 'पूञ्' एव ग्रहणम्, न तु पूङः इति काशिकादिषु दृश्यते। तेनात्र णत्वं भवत्येव। क्षीरस्वामी तु अविशेषेण पूङोऽपि प्रकृतसूत्रे ग्रहणं मन्यमानः प्रपवनीयम् इति णत्वाभावघटितं रूपमुदाजहार।
६ 'ण्यन्तभादीनामुपसंख्यानम्' (वा. ८-४-३४) इति णत्वनिषेधोऽपि नास्य धातोरिति पक्षे रूपमेवम्। क्षीरस्वामीमते तु पूर्ववदत्रापि णत्वनिषेधः।
७ विपूयविनीयजित्या मुञ्जकल्पहलिपु (३-१-११६) इत्यनेन मुञ्जेऽभिधेये विपूर्वकादस्मात् क्यपि रूपमेवम्। अन्यत्रार्थे तु 'अचो यत्' (३-१-९७) इति यति, अवादेशे च पव्यम् इति रूपम्।
८ 'ओरावश्यके (३-१-१२५) इति ण्यत्। आवादेशे, अवश्यमो मकारस्य 'लुम्पेदवश्यमः कृत्ये' (काशिका ६-३-१०९) इति लोपः।
९ 'ऋदोरप्' (३-३-५७) इति भावेऽप् प्रत्ययः। घञपवादः।
१० 'निरभ्योः पूल्वोः' (३-३-२८) इति निष्पूर्वकादस्मात् घञ्। निष्पावः = धान्यविशेषः। 'परिमाणाख्यायां सर्वेभ्यः'। इति घञ्यपि पूर्वमेवमेव। तदानीं निष्पावः = परिमाणविशेषः।
११ 'उदि श्रयतियौतिपूद्रुवः' (३-३-४९) इति घञ्।
१२ 'हलसूकरयोः पुवः' (३-२-१८३) इति करणे ष्ट्रन् प्रत्यये रूपम्। पोत्रम् = सूकरस्य, हलस्य वा मुखम्।
१३ 'पुवः संज्ञायाम्' (३-२-१८५) इति करणे इत्र प्रत्ययः। पवित्रम्— दर्भः, चक्रायुधश्च।
१४ 'अचो ञ्णिति' (७-२-११५) इति वृद्धौ आयादेशः।

डाययन्-न्ती, डयमानः, डायमानः, डयिष्यमाणः, डाययिष्यमाणः, उड्डीः[1]-उड्ड्यौ-उड्डयः, डयितः,[2] डियितः-तम्, डायितः, डयः,[3] डायः, डयितव्यम्, डाययितव्यम्, डयनीयम्, डायनीयम्, डाय्यम्, डीयमानः, डाय्यमानः, डायितुम्, डयितुम्, डीतिः[4]-सुडीतिः, डायना, डयनम्, डायनम्, डयित्वा, डाययित्वा, उड्डीय, उड्डाय्य ।

**(९६९) तॄ—प्लवनतरणयोः** । (पार जाना, तैरना, **अव**—उतरना, **आ**– भारा देकर नाव पर चढ़ जाना । **उत्**—ऊपर से जाना, उत्तर देना, जबाव देना, **दुस्**—संकट से छुटकारा पाना, **निस्**—दुःख से तैर जाना, मुक्ति पाना, **प्र**—जीतना, **वि**—बांटना । सकर्म. । सेट् । परस्मै. ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | तरति | तरतः | तरन्ति | प्र. |
| | तरसि | तरथः | तरथ | म. |
| | तरामि | तरावः | तरामः | उ. |
| लिट् | ततार | तेरतुः | तेरुः | प्र. |
| | तेरिथ | तेरथुः | तेर | म. |
| | ततार-ततर | तेरिव | तेरिम | उ. |
| लुट् | तरीता-तरिता | तरीतारौ-तरितारौ | तरीतारः-तरितारः | प्र. |
| | तरीतासि-तरितासि | तरीतास्थः-तरितास्थः | तरीतास्थ-तरितास्थ | म. |
| | तरीतास्मि-तरितास्मि | तरीतास्वः-तरितास्वः | तरीतास्मः-तरितास्मः | |
| लृट् | तरिष्यति | तरिष्यतः | तरिष्यन्ति | प्र. |
| | तरिष्यसि | तरिष्यथः | तरिष्यथ | म. |
| | तरिष्यामि | तरिष्यावः | तरिष्यामः | उ. |

पक्षे—तरीष्यति तरीष्यतः तरीष्यन्ति इत्यादि ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लोट् | तरतु-तात् | तरताम् | तरन्तु | इत्यादि । |
| लङ् | अतरत् | अतरताम् | अतरन् | इत्यादि । |
| वि. लि. | तरेत् | तरेताम् | तरेयुः | प्र. |
| | तरेः | तरेतम् | तरेत | म. |
| | तरेयम् | तरेव | तरेम | उ. |
| आ. लि. | तीर्यात् | तीर्यास्ताम् | तीर्यासुः | प्र. |
| | तीर्याः | तीर्यास्तम् | तीर्यास्त | म. |
| | तीर्यासम् | तीर्यास्व | तीर्यास्म | उ. |

१ क्विपि, द्विवचने, 'एरनेकाचः–' (६-४-८२) इति यणादेशः ।

२ 'निष्ठाशीङ्–' (१-२-१९) इत्यत्र 'निष्ठा' इति योगविभागमभ्युगम्य, अन्यत्रापि क्वचित् सेटो निष्ठायाः कित्वनिषेधात् गुणायादेशयोः सतो' डयतिः - डयितवान् इति रूपं पारायणिका साधयन्ति । योगविभागानभ्युपगमे, 'अचिश्नुधातु–' (६-४-७७) इतीयाङादेशे डियितः - डियिततवान् इति रूपं केचित् साधयन्ति ।

३ 'एरच्' (३-३-५६) इति भावे घञपवादेऽच् प्रत्ययः ।

४ 'तितुत्र–' (७-३-९) इतीण्णिषेधः ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुङ् | अतारीत् | अतारीष्टाम् | अतरिष्ट | प्र. |
| | अतारीः | अतारिष्टम् | अतारिष्ट | म. |
| | अतारिषम् | अतारिष्व | अतारिष्म | उ. |
| लृङ् | अतरिष्यत् | अतरिष्यताम् | अतरिष्यन् | इत्यादि । |

**कर्मणि**—तीर्यते। २ तेरे। ९ अतारि। **णिचि**—तारयति-ते। **सनि**—तितीर्षति-तितरीषति-तितरिषति। **यङि**—तेतीर्यते। **यङ्लुकि**—तातरीति-तातर्ति। **कृत्सु**—तारकः-रिका, तारका-तारकः-रिका, तितरिषक, तितरीषकः-तितीर्षकः- र्षिका, तेतिरकः-रिका, तरिता-तरीता-त्री, तारयिता-त्री, तरन्[१]-समुत्तरन्-न्ती, तारयन्-न्ती, तितरिषन्-तितरीषन्, तितीर्षन्-न्ती, तरिष्यन्-तरीष्यन्-न्ती-ती, तारयिष्यन्-न्ती-ती, व्यतितरमाणः,[२] तारयमाणः, तारयिष्यमाणः, तेतीर्यमाणः, तेतिरिष्यमाणः, तीः[३]-तिरौ-तिरः, उत्तीर्णम्[४]-तीर्णः-तीर्णवान्, तरितः, तरः, तेरिवान्, सुतर्मा,[५] रथन्तरं (साम), तारः-तितरिषुः-तितरीषुः, तितीर्षुः-तेतिरः, तरितव्यम्-तरीतव्यम्, तारयितव्यम्, तरणीयम्, तारणीयम्, तार्यम्,[६] तीर्यमाणः, तरः,[७] अवतारः,[८] तारः, तरितुम्,-अवतरीतुम्, तारयितुम्, तीर्णिः,[९] तारा,[१०] तारणा, तरणम्, तारणम्, तीर्त्वा, तारयित्वा, वितीर्य, वितार्य, तरणिः,[११] तरुः,[१२] तरीः[१३], तरुणः[१४]।

**( ९७० ) गुप—गोपने**।(बचाना, संरक्षण करना, छिपाना, दोष लगाना, निन्दा करना)। सक.। सेट्। आत्मने.। अयं '**गुप्तिज्किद्भ्यः सन्**' (३-१-५) इति निन्दार्थे नित्यसन्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | जुगुप्सते | जुगुप्सते | जुगुप्सन्ते | प्र. |
| | जुगुप्ससे | जुगुप्सेथे | जुगुप्सध्वे | म. |
| | जुगुप्से | जुगुप्सावहे | जुगुप्सामहे | उ. |
| लिट् | जुगुप्साञ्चक्रे | जुगुप्साञ्चक्राते | जुगुप्साञ्चक्रिरे | प्र. |
| | जुगुप्साञ्चकृषे | जुगुप्साञ्चक्राथे | जुगुप्साञ्चकृढ्वे | म. |
| | जुगुप्साञ्चक्रे | जुगुप्साञ्चकृवहे | जुगुप्साञ्चकृमहे | उ. |

१ शतरि 'कर्तरि शप्' (३-१-६८) इति शपि, शतुः सार्वधातुकत्वेन ङिद्भावात् धातोरित्वे प्राप्ते, 'इत्वोत्वाभ्यां—' (वा. ७-१-१०२) इति गुणे रूपम्।

२ 'कर्तरि कर्मव्यतिहारे' (१-३-१४) इति शानचि, णत्वम्।

३ क्विपि, इत्वे रपरत्वे, 'र्वोरुपधाया दीर्घ इकः' (८-२-७६) इति दीर्घे विसर्गः।

४ सनि विकल्पितेट्कत्वात् निष्ठायाम् 'यस्य विभाषा (७-२-१५) इतीण्णिषेधे, इत्वे रपरत्वे, दीर्घे, निष्ठानत्वे, 'रषाभ्यां नो णः—' (८-४-१) इति णत्वे च रूपम्।

५ 'अन्येभ्योऽपि दृश्यते' (३-२-७५) इति मनिन् प्रत्ययः। नेट् वशि कृति (७-२-८) इतीण्णिषेधः, गुणः।

६ 'ऋहलोर्ण्यत्' (३-१-१२४) इति ण्यत्।

७ 'ऋदोरप्' (३-३-५७) इति भावेऽप् प्रत्ययः। घञोऽपवादः।

८ 'अवे तृस्त्रोर्घञ्' (३-३-१२०) इति करणाधिकरणयोर्घञ्।

९ क्तिनि, इत्वरपरत्वयोः, 'ऋल्वादिभ्यः क्तिन् निष्ठावद् वाच्यः' (वा. ८-२-४४) इति क्तिनस्तकारस्य नकारणत्वम्।

१० भिदादिषु (३-३-१०४) तारा इति पाठात् ज्योतिषि वाच्ये वृद्धिर्भवति। न तु इत्वामिति ज्ञेयम्।

११ 'अशावतृभ्योऽनिः' (द.उ. १-१) इत्यनिप्रत्यये गुणः। तरणिः = सूर्यः।

१२ 'भृमृशीतृ—' (द.उ. १-९२) इत्युप्रत्ययः। छायापुष्पफलार्थिनोऽमु तरन्तीति तरुः = वृक्षः।

१३ 'अवितृ—' (द.उ. १-८२) इति ईप्रत्ययः। तरीः = प्लवो वायुश्च।

१४ 'कृवृदारिभ्य उनन्' (द.उ. ५-५२) इत्युनन् प्रत्ययः। तरुणः = वायुर्युवा च।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुट् | जुगुप्सिता | जुगुप्सितारौ | जुगुप्सितारः | प्र. |
| | जुगुप्सितासे | जुगुप्सितासाथे | जुगुप्सिताध्वे | म. |
| | जुगुप्सिताहे | जुगुप्सितास्वहे | जुगुप्सितास्महे | उ. |
| लृट् | जुगुप्सिष्यते | जुगुप्सिष्येते | जुगुप्सिष्यन्ते | प्र. |
| | जुगुप्सिष्यसे | जुगुप्सिष्येथे | जुगुप्सिष्यध्वे | म. |
| | जुगुप्सिष्ये | जुगुप्सिष्यावहे | जुगुप्सिष्यामहे | उ. |
| लोट् | जुगुप्सताम् | जुगुप्सेताम् | जुगुप्सन्ताम् | प्र. |
| | जुगुप्सस्व | जुगुप्सेथाम् | जुगुप्सध्वम् | म. |
| | जुगुप्सै | जुगुप्सावहै | जुगुप्सामहै | उ. |
| लङ् | अजुप्सत | अजुप्सेताम् | अजुगुप्सन्त | प्र. |
| | अजुगुप्सथाः | अजुगुप्सेथाम् | अजुगुप्सध्वम् | म. |
| | अजुगुप्से | अजुगुप्सावहि | अजुगुप्सामहि | उ. |
| वि. लि. | जुगुप्सेत | जुगुप्सेयाताम् | जुगुप्सेरन् | प्र. |
| | जुगुप्सेथाः | जुगुप्सेयाथाम् | जुगुप्सेध्वम् | म. |
| | जुगुप्सेय | जुगुप्सेवहि | जुगुप्सेमहि | उ. |
| आ. लि. | जुगुप्सिषीष्ट | जुगुप्सिषीयास्ताम् | जुगुप्सिषीरन् | प्र. |
| | जुगुप्सिषीष्ठाः | जुगुसिषीयास्ताम् | जुगुप्सिषीरन् | प्र. |
| | जुगुप्सिषीय | जुगुप्सिषीवहि | जुगुप्सिषीमहि | इ. |
| लुङ् | अजुगुप्सिष्ट | अजुगुप्सिषाताम् | अजुगुप्सिषत | प्र. |
| | अजुगुप्सिष्ठाः | अजुगुप्सिषाथाम् | अजुगुप्सिड्ढ्वम्-ध्वम् | म. |
| | अजुगुप्सिषि | अजुगुप्सिष्वहि | अजुगुप्सिष्महि | उ. |
| लृङ् | अजुगुप्सिष्यत् | अजुगुप्सिष्येताम् | अजुगुप्सिष्यन्त | प्र. |
| | अजुगुप्सिष्यथाः | अजुगुप्सिष्येथाम् | अजुगुप्सिष्यध्वम् | म. |
| | अजुगुप्सिष्ये | अजुगुप्सिष्यावहि | अजुगुप्सिष्यामहि | उ. |

गर्हाया अन्यत्र सनोभावे अर्थान्तरेऽपि प्रायेण गोपते इत्येव भवति। **कर्मणि**—जुगुप्स्यते। **णिचि**—जुगुप्सयति-ते। **सनि**—जुगुप्सिषते। अनेकाच्त्वाद्यङ्लुकौ न स्तः। **कृत्सु**—जुगुप्सितव्यम्, जुगुप्सनीयम्, जुगुप्स्यम्, जुगुप्सितः, जुगुप्समानः, जुगुप्सितुम्, जुगुप्सित्वा, संजुगुप्स्य, जुगुप्सा (जुगुप्सुः)।

**( ९७१ ) तिज—निशाने**। क्षमायाञ्च। (तीक्ष्ण करना, धार लगाना, चमकाना, क्षमा करना, सहना)। सक.। सेट्। आत्मने.। तिजि क्षमायां नित्यसन्। तितिक्षते। तितिक्षाञ्चक्रे। इत्यादि जिगुप्सति (९७०) वत्। अन्यत्र १ तेजते। २ तितिजे। इत्यादि।

**( ९७२ ) मान—पूजायाम्**। (ज्ञान प्राप्ति की इच्छा करना)। सक.। सेट्। आत्मने.। मान्वधदान्शान्भ्यो दीर्घश्चाभ्यासस्य। एभ्यः सन् स्यात् अभ्यासेकारस्य दीर्घश्च। इति मानेर्जिज्ञायां नित्यसन्। मीमांसते। मीमांसाञ्चक्रे। इत्यादि 'जुगुप्सति' (९७०) वत्।

**( ९७३ ) वध—बन्धने**। निन्दायाञ्च। बांधना, निन्दा करना, द्वेष करना। सक.। सेट्। आत्मने.। निन्दायां नित्यसन्। १ बीभत्सते। २ बीभत्साञ्चक्रे-बभूव-आस।

**कर्मणि**—बीभत्स्यते। **णिचि**—बीभत्सयति-ते। निन्दाभिन्नार्थे तु बधते। बबधे। इत्यादि। **कृत्सु**—बीभत्सनीयम्, बीभत्सनम्, बीभत्सकः, बीभत्सिता, बिभत्सितः, बिभत्सा, बीभत्सुः, बीभत्सितुम्, बीभत्सितव्यम्, बीभत्सित्वा, अबीभत्स्य, बीभत्स्यम्, बीभत्समानः, बीभत्स्यमानः, बीभत्स्यमानः। इत्यादि– 'जुगुप्सति' (९७०) वत्।

**( ९७४ ) रभ—राभस्ये**। (आनन्द करना, प्रसन्न होना, **आ**—आरम्भ करना, शुरूह करना)। प्रायेणयमाङ्पूर्वकः। सक.। अनि.। आत्मने.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | आरभते | आरभेते | आरभन्ते | प्र. |
| | अरभसे | आरभेथे | आरभध्वे | म. |
| | आरभे | आरभावहे | आरभामहे | उ. |
| लिट् | आरेभे | आरेभाते | आरेभिरे | प्र. |
| | आरेभिषे | आरेभाथे | आरेभिध्वे | म. |
| | आरेभे | आरेभिवहे | आरेभिमहे | उ. |
| लुट् | आरब्धा | आरब्धारौ | आरब्धारः | प्र. |
| | आरब्धासे | आरब्धासाथे | आरब्धाध्वे | म. |
| | आरब्धाहे | आरब्धास्वहे | आरब्धास्महे | उ. |
| लृट् | आरप्स्यते | आरप्स्येते | आरप्स्यन्ते | प्र. |
| | आरप्स्यसे | आरप्स्येथे | आरप्स्यध्वे | म. |
| | आरप्स्ये | आरप्स्यावहे | आरप्स्यामहे | उ. |
| लोट् | आरभताम् | आरभेताम् | आरभन्ताम् | प्र. |
| | आरभस्व | आरभेथाम् | आरभध्वम् | म. |
| | आरभै | आरभावहै | आरभामहै | उ. |
| लङ् | आरभत | आरभेताम् | आरभन्त | प्र. |
| | आरभथाः | आरभेथाम् | आरभध्वम् | म. |
| | आरभे | आरभावहि | आरभामहि | उ. |
| वि. लि. | आरभेत | आरभेयाताम् | आरभेरन् | प्र. |
| | आरभेथाः | आरभेयाथाम् | आरभेध्वम् | म. |
| | आरभेय | आरभेवहि | आरभेमहि | उ. |
| आ. लि. | आरप्सीष्ट | आरप्सीयास्ताम् | आरप्सीरन् | प्र. |
| | आरप्सीष्ठाः | आरप्सीयास्थाम् | आरप्सीध्वम् | म. |
| | आरप्सीय | आरप्सीवहि | आरप्सीमहि | उ. |
| लुङ् | आरब्ध | आरप्साताम् | आरप्सत | प्र. |
| | आरब्धाः | आरप्साथाम् | आरब्धम्-आरब्द्-ध्वम् | म. |
| | आरप्सि | आरप्सवहि | आरप्समहि | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृङ् | आरप्सयत | आरप्स्येताम् | आरप्स्यन्त | प्र. |
| | आरप्स्यथाः | आरप्स्येथाम् | आरप्स्यध्वम् | म. |
| | आरप्स्ये | आरप्स्यावहि | आरप्स्यामहि | उ. |

**कर्मणि**—आरभ्यते। **णिचि**—आरम्भयति। **सनि**—आरिप्सते। **यङि**—अरारभ्यते। **यङ्लुकि**—आरारंभीति-आरारब्धि। **कृत्सु**—आरम्भकः[१]-म्भिका, रम्भकः[२]-म्भिका, रिप्सकः-प्सिका, रारभक-भिका, आरब्धा-ध्री, रम्भयिता-त्री, रिप्सिता-त्री, रारभिता-त्री, रम्भयन्-न्ती, रम्भयिष्यन्-न्ती-ती, आरभमाणः, (भोक्तुम्) आरभमाणः, रम्भयमाणः, रिप्समानः, रारभ्यमाणः, रप्स्यमाणः, रम्भयिष्यमाणः, रिप्सिष्यमाणः, रारभिष्यमाणः, सुरप्-सुरभ्-सुरभौ-सुरभः, आरब्धम्-ब्धः, रम्भितम्-तः, रिप्सितम्, रारभितम्-तः-तवान्, रम्भः[३]-रम्भाः, साध्वारम्भी,[४] रम्भः, रिप्सुः, रारम्भः,[५] आरब्धव्यम्, आरम्भयितव्यम्, रिप्सितव्यम्, रारभितव्यम्, आरम्भणीयम्, रिप्सनीयम्, रारभणीयम्, आरभ्यम्,[६] आरम्भ्यम्, रिप्स्यम्, रारभ्यम्, आरभ्यमाणः, आरम्भ्यमाणः, रिप्स्यमानः, रारभ्यमाणः, आरम्भः, रिप्सः, रारभः, आरब्धुम्, आरम्भयितुम्, रिप्सितुम्, रारभितुम्, रब्धिः, आरम्भणा, रिप्सा, रारभा, आरम्भणम्, रिप्सनम्, रारभणम्, रब्ध्वा, रम्भयित्वा, रिप्सित्वा, रारभित्वा, आरभ्य, आरम्भ्य, आरिप्स्य, आरारभ्य, रभसः[७]।

**(९७५) डुलभष्—प्राप्तौ**। प्राप्त होना, मिलना, **आ**—स्पर्श करना। (हृदयमालभते गृह्यसूत्रम्)। सक.। अनि.। आत्मने.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | लभते | लभेते | लभन्ते | प्र. |
| | लभसे | लभेथे | लभध्वे | म. |
| | लभे | लभावहे | लभामहे | उ. |
| लिट् | लेभे | लेभाते | लेभिरे | प्र. |
| | लेभिषे | लभाथे | लेभिध्वे | म. |
| | लेभे | लेभिवहे | लेभिमहे | उ. |
| लुट् | लब्धा | लब्धारौ | लब्धारः | प्र. |
| | लब्धासे | लब्धासाथे | लब्धाध्वे | म. |
| | लब्धाहे | लब्धास्वहे | लब्धास्महे | उ. |
| लृट् | लप्स्यते | लप्स्येते | लप्स्यन्ते | प्र. |
| | लप्स्यसे | लप्स्येथे | लप्स्यध्वे | म. |
| | लप्स्ये | लप्स्यावहे | लप्स्यामहे | उ. |

१ 'रभेरशब्लिटोः' (७-१-६३) इति अजादिषु प्रत्ययेषु शब्लिड्वर्जं नुमागमः। एवमेव घञादिष्वपि ज्ञेयम्।
२ णयन्ते ण्वुलि 'अत उपधायाः' (७-२-११६) इति प्राप्तां परामपि वृद्धिं बाधित्वा, रभेरशब्लिटोः' (७-१-६३) इति नुम् नित्यत्वाद् भवति।
३ पचाद्यचि नुमि रम्भः। स्त्रियां टापि रम्भा = अप्सरो विशेषः, कदली च।
४ 'साधुकारिण्युपसंख्यानम्' (वा. ३-२-७८) इति णिनिः।
५ यङन्तात् पचाद्यचि यङो लुकि नुमागमे च रूपमेवम्।
६ 'पोरदुपधात्' (३-१-९८) इति यत् प्रत्ययः। हलन्तलक्षणण्यतोऽपवादः।
७ 'अत्यविचमितमिरभि–' (द.उ. ९-४४) इत्यसच् प्रत्यये रूपम्। बाहुलकात् 'राभस्ये' इति निर्देशाद् वा नुम् न।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लोट् | लभताम् | लभेताम् | लभन्ताम् | प्र. |
| | लभस्व | लभेथाम् | लभध्वम् | म. |
| | लभै | लभावहै | लभामहै | उ. |
| लङ् | अलभत | अलभेताम् | अलभन्त | प्र. |
| | अलभथाः | अलभेथाम् | अलभध्वम् | म. |
| | अलभे | अलभावहि | अलभामहि | उ. |
| वि. लि. | लभेत | लभेयाताम् | रभेरन् | प्र. |
| | लभेथाः | लभेयाथाम् | लभेध्वम् | म. |
| | लभेय | लभेवहि | लभेमहि | उ. |
| आ. लि. | लप्सीष्ट | लप्सीयास्ताम् | लप्सीरन् | प्र. |
| | लप्सीष्ठाः | लप्सीयास्थाम् | लप्सीध्वम् | म. |
| | लप्सीय | लप्सीवहि | लप्सीमहि | उ. |
| लुङ् | अलब्ध | अलप्साताम् | अलप्सत | प्र. |
| | अलब्धाः | अलप्साथाम् | अलब्ध्वम् | म. |
| | अलप्सि | अलप्स्वहि | अलप्स्महि | उ. |
| लृङ् | अलप्स्यत | अलप्स्येताम् | अलप्स्यन् | प्र. |
| | अलप्स्यथाः | अलप्स्येथाम् | अलप्स्यध्वम् | म. |
| | अलप्स्ये | अलप्स्यावहि | अलप्स्यामहि | उ. |

**कर्मणि**—लभ्यते। **णिचि**—लम्भयति। इत्यादि 'रभति' (९७४) वत्। **आ**—आलभने (स्पर्शने घातने च)। आलभते। **वि + प्र**—विप्रलम्भे (विसंवादे) विप्रलभते। **उप + आ**—उपालम्भे (निन्दापूर्वकदुष्टोक्तो) उपालभते। **कृत्सु**—लम्भकः[1]-म्भिका, लम्भकः-म्भिका, लिप्सकः[2]-प्सिका, लालभकः-भिका, लब्धा-ब्धी, लम्भयिता-त्री, लिप्सिता-त्री, लालभिता-त्री, लभनीयम्, लभनम्, लाभः, आलम्भः, विप्रलम्भः, विप्रलब्धः, उपालम्भः, उपालब्धः, लाभी, लब्धा, लब्धम्, लब्धव्यम्, लब्धिः, लब्धिमम्,[3] लब्ध्वा, आलभ्य, लभ्यम्, आरलभ्यः, दुर्लभः, सुलभः, लभमानः, लभ्यमानः, लप्स्यमानः, षित्-लभा, सन्-लिप्सा, लिप्सुः, आलभ्या गौः, उपालभ्या विद्या, उपलभ्यमस्मान्नीचात्, ईषत्प्रलम्भः-दुष्प्रलम्भः-सुप्रलम्भः, ईषल्लाभः, सुलम्भः।

**( ९७६ ) ष्वञ्ज—परिष्वङ्गे।** (आलिङ्गन करना, गले लगाना)। सक.। अनिट्। आत्मने.। दश सञ्जरस्वञ्जां शपि। एषां शपि न लोपः। इति न लोपः।

१ 'लभेश्च' (७-१-६४) इति अजादौ प्रत्यये (शपं लिटं च वर्जयित्वा) नुमागमः सर्वत्र ज्ञेयम्।

२ 'सनिमीमाघुरभलभ—' (७-४-५४) इत्यादिना अच् इस्। 'स्को—' (८-२-२९) इति सलोपः। 'अत्र लोपोऽभ्यासस्य' (७-४-५८) इत्यभ्यासलोपः।

३ लाभेन निवृत्त लब्धिमम्। 'ड्वितः क्त्रिः' (३-३-८८) इति क्त्रिप्रत्यये, तस्य 'क्त्रेर्मप्—' (४-४-२०) इति नित्य मप् प्रत्ययः।

१ स्वजते २ **प्र.** सस्वजे सस्वञ्जे सस्वजाथे सस्वञ्जाथे सस्वजिरे सस्वञ्जिरे **म.** सस्वजिषे सस्वञ्जिषे इत्यादि। **श्रन्थिग्रन्थिदंभिस्वञ्जीनां लिटः कित्वं वा।** इति कित्वविकल्पात्पक्षे ऽनुनासिकलोपः। ३ स्वङ्क्ता। ४ स्वङ्क्ष्यते। ५ स्वजताम्। ६ अस्वजत। ७ स्वजेत। ८ स्वङ्क्षीष्ट। ९ **प्र.** अस्वङ्क्त अस्वङ्क्षताम् अस्वङ्क्षत। **म.** अस्वङ्थाः अस्वङ्क्षाथाम् अस्वङ्ध्वम्। **उ.** अस्वङ्क्षि अस्वङ्क्ष्वहि अस्वङ्क्ष्महि। १० अस्वङ्क्ष्यत।

**कर्मणि**—स्वज्यते। **णिचि**—स्वञ्जयति-ते। **सनि**—सिस्वङ्क्षते। **यङि**—सास्वज्यते। **यङ्लुकि**—सास्वञ्जीति-सास्वङ्क्ति। **कृत्सु**—स्वङ्क्तव्यम्, स्वञ्जनीयम्, स्वङ्ग्यम्, स्वक्तः, स्वजमानः, स्वङ्क्तुम्, स्वङ्क्त्वा, स्वक्त्वा, परिष्वज्य, प्रायः, परिपूर्व, एवं प्रयुज्यते, यथा-परिष्वजे।

**(९७७) हद—पुरीषोत्सर्गे।** (मल त्याग करना)। अक.। अनि.। आत्म.। १ हदते। २ जहदे। ३ हत्ता। ४ हत्स्यते। ५ हदताम्। ६ अहदत। ७ हदेत। ८ हत्सीष्ट. ९ अहत्त। १० अहत्स्यत।

**णिचि**—१ हादयते। २ हादयाञ्चक्रे। ९ अजीहदत। **सनि**—१ जिहत्सते। २ जिहत्साञ्चक्रे। ९ अजिहत्सिष्ट। **यङि**—जाहद्यते। **यङ्लुकि**—जाहदीति-जाहत्ति।

**(९७८) ञिष्विदा—(स्विद्) अव्यक्ते शब्दे।** (अस्पष्ट शब्द करना)। अक.। सेट्। पर.। स्वेदति। सिष्वेद 'ञिक्षविदा' धातोः पाठान्तरम्। मीत्, आदिच्।

**(९७९) स्कन्दिर्—गतिशोषणयोः।** (जाना, शोषण करना)। सक.। अनि.। पर.। १ स्कन्दति। २ **प्र.** चस्कन्द। **म.** चस्कन्दिथ चस्कन्थ। ३ स्कन्ता। ४ स्कन्त्स्यति। ५ स्कन्दतु। ६ अस्कन्दत। ७ स्कन्देत। ८ स्कद्यात्। ९ अस्कदत् अस्कान्त्सीत्। १० अस्कन्त्स्यत्।

**कृत्सु**—स्कन्नः, स्कन्तुम्, स्कन्त्वा, प्रस्कत्य, विष्कन्ता।

**(९८०) यभ—मैथुने।** (मैथुन करना)। अक.। अनि.। पर.। यभति। ययाभ। येभतुः। इत्यादि 'रदति' (५३) वत्।

**(९८१) णम—(नम) प्रह्वत्वे शब्दे च।** (नमस्कार कनरा, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना, शब्द करना)। **अव**—नमस्कार करना, खड़ा करना, जाना, नमाना, झुकाना। सक.। अनि.। पर.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | नमति | नमतः | नमन्ति | प्र. |
| | नमसि | नमथः | नमथ | म. |
| | नमामि | नमावः | नमामः | उ. |
| लिट् | ननाम | नेमतुः | नेमुः | प्र. |
| | नेमिथ-ननन्थ | नेमथुः | नेम | म. |
| | ननाम-ननम | नेमिव | नेमिम | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुट् | नन्ता | नन्तारौ | नन्तारः | प्र. |
| | नन्तासि | नन्तास्थः | नन्तास्थ | म. |
| | नन्तास्मि | नन्तास्वः | नन्तास्मः | उ. |
| लृट् | नंस्यति | नंस्यतः | नंस्यन्ति | प्र. |
| | नंस्यसि | नंस्यथः | नंस्यथ | म. |
| | नंस्यामि | नंस्यावः | नंस्यामः | उ. |
| लोट् | नमतु-नमतात् | नमताम् | नमन्तु | प्र. |
| | नम-नमतात् | नमतम् | नमत | म. |
| | नमानि | नमाव | नमाम | उ. |
| लङ् | अवनत् | अनमताम् | अनमन् | प्र. |
| | अनमः | अनमतम् | अनमत | म. |
| | अनमम् | अमनाव | अनमाम | उ. |
| वि. लि. | नमेत् | नमेताम् | नमेयुः | प्र. |
| | नमेः | नमेतम् | नमेत | म. |
| | नमेयम् | नमेव | नमेम | उ. |
| आ. लि. | नम्यात् | नम्यास्ताम् | नम्यासुः | प्र. |
| | नम्याः | नम्यास्तम् | नम्यास्त | म. |
| | नम्यासम् | नम्यास्व | नम्यास्म | उ. |
| लुङ् | अनंसीत् | अनंसिष्टाम् | अनंसिषुः | प्र. |
| | अनंसीः | अनंसिष्टम् | अनंसिष्ट | म. |
| | अनंसिषम् | अनंसीष्व . | अनंसिष्म | उ. |
| लृङ् | अनंस्यत् | अनंस्यताम् | अनंस्यन् | प्र. |
| | अनंस्यः | अनंस्यतम् | अनंस्यत | म. |
| | अनंस्यम् | अनंस्याव | अनंस्याम | उ. |

**नमो वरिवश्चित्रङः क्यच्**। नमस्यति।

**कर्मणि**—नम्यते। **णिचि**—नमयति। नामयति। **ज्वलह्वलह्मलनमामनुपसर्गाद्वा**। इति मित्वविकल्पः। **सनि**—निनंसति। **यङि**—नंनम्यते। **यङ्लुकि**—नंनमीति-नंनन्ति। **कृत्सु**—नामकः-मिका, नमकः[१]-नामकः-प्रणमकः[२]-मिका, निनंसकः[३]-सिका, ननमकः,[४] नन्नमकः-मिका,

१ 'ज्वलह्वलह्मलनमामनुपसर्गाद्वा' (गण सू-घटादौ) इति उपसर्गसमभिव्याहाराभावे मित्संज्ञा विकल्प्यते, मित्वपक्षे उपधाह्रस्वः। एवं ण्यन्ते सर्वत्र उपसर्गसमभिव्याहाराभावे रूपद्वय ज्ञेयम्।

२ उपसर्गसमभिव्याहारे तु जनीजॄष्क्नसुरञ्जोऽमन्ताश्च (ग.सू. घटादौ) इत्यनेनामन्तत्वात् नित्यं मित्त्वम्। तेन णौ उपधाह्रस्वः। उपसर्गादसमासेऽपि 'णोपदेशस्य' (८-४-१४) इति णत्वम्। एवम् उपसर्गसमभिव्याहारे सर्वत्र ज्ञेयम्।

३ सन्नन्तात् ण्वुलि, 'नश्चापदान्तस्य झलि' (८-३-२४) इति अनुस्वारः। एवं सन्नन्ते सर्वत्र ज्ञेयम्।

४ 'नुगतोऽनुनासिकान्तस्य' (७-४-८५) इति नुगागमः अनुकाऽनुस्वारो लक्ष्यते' इति भाष्ये उक्तम्। 'सच पदान्तस्य वाच्यः (वा. ७-४-८५) इति वचनात् पक्षे 'वा पदान्तस्य' (४५५-५९) इति परसवर्णविकल्पः। एवं यङन्ते सर्वत्र रूपद्वयम्।

नन्ता[१]-त्री, नमयन्-नामयन्-प्रणमयन्-न्ती, उन्नामयन्[२] निनंसन्-न्ती, नंस्यन्-न्ती-ती, नमयिष्यन्-नामयिष्यन्, प्रणमयिष्यन्-न्ती-ती, निनंसिष्यन्-न्ती-ती, नमयमाणः-नामयमाणः-प्रणमयमानः, नंनम्यमानः, नमयिष्यमाणः, नामयिष्यमाणः, प्रणान्[३]-प्रणामौ-प्रणामः, नतम्[४]-नतः, नतवान्, नमितः-नामितः-प्रणमितः-निनंसितः, नंनमितः, तवान्, नमः, नृनमः,[५] प्रणामी,[६] नप्ता,[७] नेमिः,[८] नमम:,[९] नम्रः,[१०] प्रणम्रः, नमः-नामः-प्रणमः, निनंसुः, नंनमः, नन्तव्यम्, नमयितव्यम्, नामयितव्यम्, प्रणमयितव्यम्, निनंसितव्यम्, नंनमितव्यम्, नंमनीयम्, नामनीयम्, प्रणमनीयम्, नम्यम्,[११] नम्यम्-नाम्यम्-, प्रणम्यम्, निनंस्यम्, नंनम्यम्। इषन्नमः[१२]-दुर्नमः-सुनमः, नम्यमानः, नम्यमानः-नाम्यमानः, प्रणम्यमानः, निनंस्यमानः, नंनम्यमानः,[१३] उन्नामः-प्रणामः, नामः, नमः-नामः-प्रणमः, निनंसः, नंनमः, नमनम्, नमयितुम्, नमयितुं-नामयितुम्-प्रणमयितुम्, नमितिः, नमना, नामना-प्रणमना, नमनम्, नृनमनम्, नमनम्-नामनम्, प्रणनमन्, नत्वा, नमयित्वा-नामयित्वा, प्रणत्य[१४]-प्रणम्य, प्रणमय्य,[१५] प्रणिनंस्य, प्रणंनम्य।

(९८२) **गम्लृ—गतौ**। जाना, **अनु**—अनुसरण करना, पीछे-पीछे जाना, **आ**—आना, **अधि**—मिलना, प्राप्त होना, त्यागना, **अप**—लौट जाना, **अव**—जानना, **उत्**—निकलना, ऊपर उठना, **उप**—नजदीक जाना, अनुमोदन करना, **उपा**—नजदीक जाना या आना, **दुर्**—दुःख से जाना, **नि**—ज्ञान प्राप्ति करना, **निर्**—आगे जाना, बाहर जाना,

---

१ अस्य धातोरनुदात्तत्वात् 'एकाच उपदेशेऽनुदात्तात्' (७-२-८५) इतीण्णिषेधः। वलाद्यार्धधातुके सर्वत्र एवं बोध्यम्।

२ उपसर्गसमभिव्याहारे नित्यं मित्वात्, उन्नामयन् इत्यस्य साधुत्वाय घञन्तादुन्नामशब्दात् 'तत्करोति तदाचष्टे' (वा. ३-१-२६) इति णिजन्तात् शता कल्पनीय इति (सि.कौ.)

३ क्विपि, 'अनुनासिकस्य क्विझलोः—' (६-४-१५) इति उपधादीर्घे, 'मो नो धातोः' (८-२-६४) इति नत्वे, णत्वे च रूपम्।

४ 'अनुदात्तोपदेशवनतितनोत्यादीनाम्—' (६-४-३७) इत्यनुनासिकलोपः। एवं नतिः नत्वा इत्यत्रापि न लोपो बोध्यः।

५ नृन् नमयतीति नृनमः। ण्यन्तात्, अन्तर्भावितण्यन्तात् शुद्धाद्वा धातोः पचाद्यच्। 'क्षुभ्नादिषु च' (८-४-३९) इत्यत्र पाठात् णत्वं न। एवं नृनमनमित्यत्रापि ज्ञेयम्।

६ ताच्छील्ये णिनिः। णत्वम्।

७ 'तृन्' (३-२-१३५) इति ताच्छीलिके तृनि; 'अप्तृन्तृच्—।(६-४-११) इति सूत्रे निपातनात् मकारस्य पकारः इति माधवधातुवृत्तिः। संज्ञाशब्दत्वान्नावयवार्थेऽभिनिवेशः कार्यः। पौत्रस्य अपत्यम् = नप्ता।

८ 'भाषायां धाञ् कृञ् सृजनिगमिनमिभ्यः—' (वा. ३-२-११) इति किः किन् वा प्रत्ययः। तस्य लिड्वद् भावातिदेशात् द्वित्वे, एत्वाभ्यासलोपयो रूपम्। नेमिः = रथनाभिः।

९ शब्दार्थकत्वात् अस्य 'चलनशब्दार्थादकर्मकात्—इति ताच्छीलिको युच्।

१० 'नमिकम्पि—' (३-२-१६७) इति ताच्छीलिको रप्रत्ययः।

११ 'पोरदुपधात्' (३-१-९८) इति यत्।

१२ 'दुरः षत्वणत्वयोरुपसर्गत्वप्रतिषेधः—' (वा. १-४-६०) इति वचनान्न णत्वम्।

१३ 'नंनम्यमानाः फलदित्सयेव चकाशिरे तत्र लता विलोलाः।' (भ.का. २-२५)

१४ 'वा ल्यपि' (६-४-३८) इति अनुनासिकलोपविकल्पः। अनुनासिकलोपपक्षे '**ह्रस्वस्य पिति—**' (६-१-७१) इति तुक्।

१५ 'ल्यपि लघुपूर्वात्' (६-४-५६) इति णेरयादेशः।

**पर्युत्**—ऊपर उठाना, **पारि**—घेर लेना, बाहर जाना, **प्रत्या**—लौट जाना, **वि**—शत्रु की ओर चढ़ जाना, **समा**—मिलना, एकत्र होना, **समुप**—स्वीकार करना, मान्य करना, **सु**—आनन्द से या खुशी से जाना, सम्—(आ) साथ जाना, मिलना, एकत्र होना, जाना। सकर्म.। अनि.। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | गच्छति[१] | गच्छतः | गच्छन्ति | प्र. |
| | गच्छसि | गच्छथः | गच्छथ | म. |
| | गच्छामि | गच्छावः | गच्छामः | उ. |
| लिट् | जगाम | जग्मतुः | जग्मुः | प्र. |
| | जगमिथ-जगन्थ | जगमथुः | जग्म | म. |
| | जगाम-जगम | जग्मिव | जग्मिम | उ. |
| लुट् | गन्ता | गन्तारौ | गन्तारः | प्र. |
| | गन्तासि | गन्तास्थः | गन्तास्थ | म. |
| | गन्तास्मि | गन्तास्वः | गन्तास्मः | उ. |
| लृट् | गमिष्यति | गमिष्यतः | गमिष्यन्ति | प्र. |
| | गमिष्यसि | गमिष्यथः | गमिष्यथ | म. |
| | गमिष्यामि | गमिष्यावः | गमिष्यामः | उ. |
| लोट् | गच्छतु-तात् | गच्छताम् | गच्छन्तु | प्र. |
| | गच्छ-तात् | गच्छतम् | गच्छत | म. |
| | गच्छानि | गच्छाव | गच्छाम | उ. |
| लङ् | अगच्छत् | अगच्छताम् | अगच्छन् | प्र. |
| | अगच्छः | अगच्छतम् | अगच्छत | म. |
| | अगच्छम् | अगच्छाव | अगच्छाम | उ. |
| वि. लि. | गच्छेत् | गच्छेताम् | गच्छेयुः | प्र. |
| | गच्छेः | गच्छेतम् | गच्छेत | म. |
| | गच्छेयम् | गच्छेव | गच्छेम | उ. |
| आ. लि. | गम्यात् | गम्यास्ताम् | गम्यासुः | प्र. |
| | गम्याः | गम्यास्तम् | गम्यास्त | म. |
| | गम्यासम् | गम्यास्व | गम्यास्म | उ. |
| लुङ् | अगमत् | अगमताम् | अगमन् | प्र. |
| | अगमः | अगमतम् | अगमत | म. |
| | अगमम् | अगमाव | अगमाम | उ. |
| लृङ् | अगमिष्यत् | अगमिष्यताम् | अगमिष्यन् | प्र. |
| | अगमिष्यः | अगमिष्यतम् | अगमिष्यत | म. |
| | अगमिष्यम् | अगमिष्याव | अगमिष्याम | उ. |

१ 'इषुगमियमां छः' (७-३-७७) इति छकारः।

**कर्मणि**—गम्यते। ९ अगामि। **णिचि**—गमयति-ते। ९ अजीगमत्-त। **सनि**—जिगमिषति। **यङि**—जङ्गम्यते। **यङ्लुकि**—जङ्गमीति-जङ्गन्ति। **कृत्सु**—गन्तव्यम्, गमनीयम्, गम्यम्, गतः, गतवान्, गच्छन्, गन्तुम्, गमनम्, गत्वा, संगत्य, सँगम्य, गज्वरः, जगत्, पन्नगः, सर्वत्रगः, गमः, हृदयङ्गमः, विहङ्गमः, भुजङ्गमः, भुजगः, विहगः, पुरोगः, अन्तगः, गमः, गामी, गन्ता, गतिः, गम्यमानः, गमिष्यन्, गंस्यमानः।

**(९८३) सृप्लृ—गतौ**। (जाना)। **अप**—हटना, **उत्**—उल्लङ्घन करना, **उप**—समीप आना)। सकर्म.। अनिट्। परस्मै.।

१ सर्पति। २ **प्र.** ससर्प ससृपतुः ससृपुः। **म.** ससर्पिथ-ससृपिथ ससृपथुः ससृप। **उ.** ससर्प ससृपिव ससृपिम। ३ सर्प्ता-स्रप्ता। ४ सप्सर्यति स्रप्स्यति। ५ सर्पतु। ६ असर्पत्। ७ सर्पेत्। ८ सृप्यात् सृप्यास्ताम् सृप्यासुः। ९ **प्र.** असृपत् असृपताम् असृपन्। **म.** असृपः असृपतम् असृपत। **उ.** असृपम् असृपाव असृपाम। १० असप्र्स्यत्-अस्रप्स्यत्।

**कर्मणि**—सृप्यते। **णिचि**—सर्पयति-ते। **सनि**—सिसृप्सति। **यङि**—सरीसृप्यते। **यङ्लुकि**—सरीसृपीति-सर्सृपीति-सरिसृपीति। **कृत्सु**—सर्पकः-र्पिका, सिसृप्सकः-प्सिका, सरीसृपकः-पिका, सर्प्ता-त्री, स्रप्ता-प्त्री, सर्पयिता-त्री, सर्प्तव्यम्, स्रप्तव्यम्, सृप्तः, सर्पणम्, स्रप्तुम्-सर्प्तुम्, सृप्त्वा, संसृप्य, सृप्यम्, सर्पन्, स्रप्स्यन्-सर्प्स्यन्, सृप्यमानः, स्रप्स्यमानः-सर्प्स्यमानः, सरीसृपः,[1] सृप्यः,[2] सर्पः,[3] पीठसर्पी,[4] सर्पिः,[5] प्रियसर्पिष्कः, सृपः[6]।

**(९८४) यम—उपरमे**। (प्रतिबन्ध करना, रोकना)। **नि**—नियम में बांधना, **उत्**—ऊपर चढ़ना, यत्न करना, **व्या**—कष्ट करना, व्यवहार करना, मेहनत करना, **सम्**—एकत्र करना, मेल करना, **उप**—विवाह करना)। अकर्म.। अनि.। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | यच्छति | यच्छतः | यच्छन्ति | प्र. |
| | यच्छसि | यच्छथः | यच्छथ | म. |
| | यच्छामि | यच्छावः | यच्छामः | उ. |
| लिट् | ययाम | येमतुः | येमुः | प्र. |
| | येमिथ-ययन्थ | येमथुः | येम | म. |
| | ययाम-ययम | येमिव | येमिम | उ. |
| लुट् | यन्ता | यन्तारौ | यन्तारः | प्र. |
| | यन्तासि | यन्तास्थः | यन्तास्थ | म. |
| | यन्तास्मि | यन्तास्वः | यन्तास्मः | उ |

१ 'यङोऽचि च' (२-४-७४) इति यङो लुकि, 'न धातुलोपः—' (१-१-४) इति निषेधात् लघूपधगुणाभावः
२ 'ऋदुपधाच्च—' (३-१-११०) इति क्यपि रूपमेवम्।
३ सर्पतीति सर्पः। पचाद्यचि रूपमेवम्।
४ पीठेन स्रप्तं शीलमस्येति 'सुप्यजातौ णिनिः—' (३-२-७८) इति ताच्छील्ये णिनिप्रत्यये रूपमेवम्।
५ औणादिके (द.उ. ९-३०) इसि प्रत्यये रूपमेवम्। सर्पिः = घृतम्।
६ 'ऋज्रेन्द्र—' (द.उ. ९-३१) इत्यादिना रक् प्रत्यये रूपमेवम्। सृप्रम् = मधु। सृपा = नदी।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृट् | यंस्यति | यंस्यतः | यंस्यन्ति | प्र. |
| | यंस्यसि | यंस्यथः | यंस्यथ | म. |
| | यंस्यामि | यंस्यावः | यंस्यामः | उ. |
| लोट् | यच्छतु-तात् | यच्छताम् | यच्छन्तु | प्र. |
| | यच्छ-तात् | यच्छतम् | यच्छत | म. |
| | यच्छानि | यच्छाव | यच्छाम | उ. |
| लङ् | अयच्छत् | अयच्छताम् | अयच्छन् | प्र. |
| | अयच्छः | अयच्छतम् | अयच्छत | म. |
| | अयच्छम् | अयच्छाव | अयच्छाम | उ. |
| वि. लि. | यच्छेत् | यच्छेताम् | यच्छेयुः | प्र. |
| | यच्छेः | यच्छेतम् | यच्छेत | म. |
| | यच्छेयम् | यच्छेव | यच्छेम | उ. |
| आ. लि. | यम्यात् | यम्यास्ताम् | यम्यासुः | प्र. |
| | यम्याः | यम्यास्तम् | यम्यास्त | म. |
| | यम्यासम् | यम्यास्व | यम्यास्म | उ. |
| लुङ् | अयंसीत् | अयंसिष्टाम् | अयंसिषुः | प्र. |
| | अयंसीः | अयंसिष्टम् | अयंसिष्ट | म. |
| | अयंसिषम् | अयंसिष्व | अयंसिष्म | उ. |
| लृङ् | अयंस्यत् | अयंस्यताम् | अयंस्यन् | इत्यादि । |

**भावे**—यम्यते । **णिचि**—यमयति, आयामयति । **सनि**—यियंसति । **यङि**—यंयम्यते । **यङ्लुकि**—यंयमीति-यंयन्ति । **कृत्सु**—यामकः-मिका, यमकः-मिका, आयामकः-मिका, यियंसकः[१]-सिका, यंयमकः[२]-यंयय्यमकः-मिका, यन्ता[३]-यन्त्री, यमयिता-आयामायिता-त्री, यच्छन्[४]-न्ती, नियमयन्-यामयन्-न्ती, यियंसन्, यंस्यमन्-न्ती-ती, नियमयिष्यन्-यामयिष्यन्-न्ती-ती, आयच्छमानः,[५] उपयच्छमानः, यमयमानः, आयंस्यमानः, आयामयिष्यमाणः, रिपुयत्[६]-रिपुयतौ-रिपुयतः, वियत्[७]-वियतौ-वियतः, यतम्-यतः-यतवान्, नियमितः- आयामितः, यमः,[८]

१ सन्नन्तात् द्वित्वादिके मकारस्य नत्वे, 'नश्चापदान्तस्य' (८-३-२४) इति अनुस्वारे च रूपम् ।

२ यङन्तात् 'नुगतोऽनुनासिकान्तस्य' (७-४-८५) इति नुगागमः तस्य पदान्तवद् भावेन परसवर्णविकल्पः ।

३ तुजादिषु 'यमिर्जमन्तेष्वनिडेक इष्यते' (व्याघ्रभूतिकारिका, भाष्ये ७-२-१०) इतिवचनात् धातोरनिट्त्वम् । मकारस्यानुसारे परसवर्णे चैव रूपम् ।

४ शतरि 'इषगमियमां छः' (७-३-७७) इति छकारेऽन्तादेशे तुकि, तस्य श्चुत्वेन चकारे च रूपमेवम् । एवं शानजन्तेष्वपि प्रक्रियोह्या ।

५ 'आङो यमहनः' (१-३-२८) इति अकर्मकादस्मादाङ्पूर्वकादात्मनेपदं शानच् । अकर्मकादित्युक्तत्वात् आयच्छन् कूपाद् रज्जुम् इत्यत्र शतैव ।

६ रिपून् यच्छति = उपरतं करोति इत्यर्थे कर्मण्युपपदे, 'क्विप् च' (३-२-७६) इति क्विप् । 'गमादीनाम्—' (वा. ६-४-४०) इति वचनादनुनासिकलोपे तुकि रूपमेवम् ।

७ 'अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते' (३-२-७५) इति क्विपि रूपमेवम् । वियत् = विष्णुपदम् ।

८ यच्छतीति यमः । कर्तरि पचाद्यच् ।

वाचंयमः,[१] यतिः,[२] आयामी,[३] वाग्यामः,[४] यमः, नियमः आयामः, संयमनः,[५] यन्तव्यम्, यमयितव्यम्, आयामयितव्यम्, यमनीयम्, यमनीयम्-यामनीयम्, यम्यम्,[६] अनियम्यम्[७]-विनियम्यम्, नियाम्यम्, यम्यमानः, यम्यमानः-आयाम्यमानः, आयामः, उद्यमः,[८] संयामः,[९] उपयमः, उपयामः, नियमः-नियामः, यन्तुम्, यमनियुतम्, आयामयितुम्, यतिः,[१०] संयुत्,[११] यमना-आयामना, यत्वा,[१२] यमयित्वा-यामयित्वा, प्रयत्य[१३]-प्रयम्य, प्रयमय्य[१४]-प्रयाम्य, यमनम्, यमनम्-आयामनम्, यमुना,[१५] यन्त्रम्,[१६] यमकम्[१७]।

(९८५) **तप—संतापे**। (संताप्त होना, जलना, जलाना, तप्त करना, मन में या शरीर में जलना)। **अनु**—पश्चात्ताप करना, **परि**—**सम्**—पश्चात्ताम करना। अक.। अनि.। पर.।

१ तपति। २ **प्र.** तताप तेपतुः तेपुः। **म.** तेपिथ-ततप्थ तेपथुः तेप। **उ.** तताप-ततप तेपिव तेपिम। ३ तप्ता। ४ तप्स्यति। ५ तपतु-तपतात्। ६ अतपत्। ७ तपेत्। ८ तप्यात्।

१ 'वाचि यमो व्रते' (३-२-४०) इति वाग् रूपे कर्मण्युपपदे खच् प्रत्ययः। 'वाचंयमपुरन्दरौ च' (६-३-६९) इत्यनेनामन्तत्वं निपात्यते। निपातनाद् द्वितीयायाः अलुक्। वाचयमः = मौनव्रती।
२ 'क्तिच् क्तौ च संज्ञायाम्' (३-३-१७४) इति कर्तरि संज्ञायां क्तिच् प्रत्यय, बाहुलकात् 'न क्तिचि दीर्घश्च' (६-४-३९) इति प्रवर्तते। नितरां मन आदिकं यच्छतीति यतिः। अनुनासिकलोपोऽपि बाहुलकादेवेति ज्ञेयम्। केचित्तु 'स्त्रियां क्तिन्' (३-३-९४) इति क्तिन्, बाहुलकात् पुंल्लिङ्गत्वमिति वदन्ति।
३ तच्छीलादिषु कर्तृषु, 'सम्पृचानुरुधाङ्यमः—' (३-२-१४२) इत्यादिना, आङ्पूर्वकादस्माद् घिनुण्प्रत्यये रूपमेवम्।
४ व्रतभिन्नार्थे विवक्षिते, वाच यच्छतीत्यर्थे 'कर्मण्यण्' (३-२-१) इत्यण् प्रत्यये रूपमेवम्।
५ ण्यन्तात्, नन्द्यादित्वात् (३-१-१३४) कर्तरि ल्युप्रत्यये अनादेशे च रूपम्।
६ 'गदमदचरयमश्चानुपसर्गे' (३-१-१००) इति हलन्तलक्षणण्यदपवादतया यत् प्रत्ययः।
७ '—अनुपसर्गे' (३-१-१००) इत्युक्तत्वात्, कथमत्र सोपसर्गस्थले यत् प्रत्ययस्योपपत्तिरिति शङ्कित्वा, 'तेन न तत्र भवेद् विनियम्यम्।' इति व्याघ्रभूतिकारिकायां 'विनियम्यम्' इत्युक्तत्वात्, विपूर्वकात्, निपूर्वकाच्च यदेवेति व्याख्यातारः समर्थयन्ति।
८ उत्पूर्वकादस्माद् घञि, यद्यपि वृद्धौ सत्याम्—उद्यामः इति न्याय्यम्; तथापि 'अड उद्यमे' (भ्वादिः अक. सेट्) इत्यादि निर्देशबलादत्र भावेऽबेवेति व्याख्यानेषु समर्थितम्।
९ 'यमः समुपनिविषु च' (३-३-६३) इति वैकल्पिकोऽप्प्रत्ययः। पक्षे घञ्।
१० स्त्रियां भावादौ क्तिन् प्रत्ययेऽनुनासिकलोपे च रूपमेवम्। यतिः = वृत्तेषु विच्छित्ति विशेषद्योतकोऽवसान विशेषः।
११ 'सम्पदादिभ्यः—' (वा. ३-३-१०८) इति भावे स्त्रियां क्विपि, गमादीनामिति वक्तव्यम्' (वा. ६-४-४०) इत्यनुनासिकलोपे तुकि च रूपमेवम्। बाहुलकादत्र क्विबिति ज्ञेयम्। संयत् = युद्धम्। सुरूपिणी कन्या च।
१२ क्त्वायामनुनासिकलोपे रूपमेवम्। 'उदिदिति श्रीभोजः। यत्वा, यमित्वा' इति क्षीरस्वामी। तन्मते धातोरस्य वलाद्यार्धधातुकेषु सर्वत्र यमिता यन्ता इत्यादिकानि रूपाणि ज्ञेयानि।
१३ 'वा ल्यपि' (६-४-३८) इत्यत्र व्यवस्थितविभाषा श्रयणात् मकारान्तानामनिटां विकल्पेनानुनासिकलोपः। तेनानु नासिक लोपपक्षे तुकि, तदभावपक्षे च रूपद्वयमत्रेति ज्ञेयम्।
१४ ण्यन्ताल्ल्यपि, मित्वपक्षे उपधाह्रस्वे, 'ल्यपि लघुपूर्वात्' (६-४-५६) इति णेरयादेशः।
१५ अजियमिशीङ्भ्यश्च' (द.उ. ५-६१) इत्युनन् प्रत्ययः। यमुना = नदीविशेषः।
१६ 'गृधृवीपचिवचियमि—' (द.उ. ८-८९) इति त्र प्रत्ययः। यन्त्रम् = शरीरसाधनम्, पीडनञ्च।
१७ 'क्वुन् शिल्पिसंज्ञयोः—' (द.उ. ३-५) इति संज्ञायां क्वुनि रूपमेवम्। यमकम् = शब्दालङ्कारविशेषः।

९ **प्र.** अताप्सीत् अताप्ताम् अताप्सुः। **म.** अताप्सीः अताप्तम् अताप्त। **उ.** अताप्तम् अताप्स्व अताप्स्म। १० अतप्स्यत्।

**कर्मणि**—तप्यते। २ तेपे। **णिचि**—तापयति-तापयते। **सनि**—तितप्सति। **यङि**—तातप्यते। **यङ्लुकि**—तातपीति-तातप्ति। **कृत्सु**—तापकः-पिका, तितप्सकः[१]-प्सिका, तातपकः-पिका, तप्ता[२]-निष्टप्ता-निस्तप्ता-त्री, तापयिता-त्री, तितप्सिता-त्री, तातपिता-त्री, उत्तपन्[३]-निष्टपन् (वा सुवर्णम्) न्ती, तापयन्-न्ती, तितप्सन्-न्ती, तप्स्यन्-न्ती-ती, तापयिष्यन्-न्ती-ती, उत्तपमानः[४]-वितपमानः, उत्तपमानः,[५] (पृष्ठम्) तापयमानः, तातप्यमानः, उत्तप्स्यमानः-वितप्स्यमानः, तापयिष्यमाणः, तातपिष्यमाणः, संतप्-संतापौ-संतापः, तप्तः-सन्तप्तः, तप्तम्, तापितः, तिताप्सितः, तातपितः-तवान्, तपनः,[६] ललाटन्तपः[७] (आदित्यः) द्विषतापः,[८] द्विषतीतापः, परन्तपः, शत्रुन्तपः,[९] अभितापी,[१०] तापः, तितप्सुः, तातपः, तप्तव्यम्, निष्टप्तव्यम्, तापयितव्यम्, तितप्सितव्यम्, तापयितव्यम्, तपनीयम्, तापनीयम्, तिप्सनीयम्, तातपनीयम्, तप्यम्,[११] ताप्यम्, तितप्स्यम्, तातप्यम्, ईषत्तपः-दुस्तपः, सुतपः, तप्यमानः, ताप्यमानः, तितप्स्यमानः, तातप्यमानः, तापः-संतापः, आतपः,[१२] तितप्सः, तातपः, तप्तुम्, तापयितुम्, तिताप्सितुम्, तातपितुम्, तप्तिः-तपस्या,[१३] तपना, तितप्सा, तातपा, तपनम्, तापनम्, तितप्सनम्, तातपनम्, तप्त्वा, तापयित्वा, तितप्सित्वा, तातपित्वा, सन्तप्य, सन्ताप्य, संतितप्स्य, संतातप्य, संतापी,[१४] द्विषन्तपः[१५]।

१ 'हलन्ताच्च' (१-२-१०) इति सनः कित्वात् न गुणः। एवं सन्नन्ते सर्वत्र ज्ञेयम्।

२ 'निसस्तपतावनासेवने' (८-३-१०२) इति षत्वम्। आसेवनम् = पुनः पुनः करणम्। 'निष्टप्तं रक्षो निष्टप्ता आरातयः।' इत्यत्र सदस्यासेवने न विवक्ष्यते। छान्दसे वा वर्णविकारः।' इति काशिका (८-३-१०२) आसेवने तु निस्तप्ता इत्येव।

३ 'उद्विभ्यां तपः' (१-३-२७) इत्यत्र 'अकर्मकाच्च' (१-३-२६) इत्यनुवृत्तेः सकर्मकात् परस्मैपदमेव।

४ 'उद् विभ्यां तपः' (१-३-२७) इति शानच्।

५ 'स्वाङ्गकर्मकाच्चेति वक्तव्यम्' (वा. १-३-२७) इत्युक्तेरत्रापि शानच्।

६ 'सहितपिदमेः संज्ञायाम्' (ग.सू. ३-१-१३४) इति नन्द्यादिषु पाठात् कर्तरि ल्युः। तपनः = सूर्यः।

७ 'असूर्यललाटयो दृशि तपोः' (३-२-३६) इति खश्। 'अरुर्द्विषयजन्तस्य—' (६-३-६७) इति मुम्। ललाटं तपतीति ललाटन्तपः = सूर्यः।

८ असंज्ञायां द्विषन्तं तपतीति विग्रहे शुद्धाद्धातोः 'कर्मण्यण्' (३-२-१) इत्यणि रूपम्।

९ 'संज्ञायां भृतॄवृजिधारिसहितपिदमः' (३-२-४६) इति खच् प्रत्ययः संज्ञायाम्। शत्रून् तापयतीति विग्रहे, खचि, मुमागमे, णिलोपे, खचि ह्रस्वः' (६-४-९४) इति उपधायाः ह्रस्वे रूपम्।

१० 'बहुलमाभीक्ष्ण्ये' (३-२-८१) इति णिनिः। असकृत् अभितपतीत्यर्थः।

११ 'पोरदुपधात्' (३-१-९८) इति यत् प्रत्ययः।

१२ आः समन्तात् तपतीति आतपः = सूर्य प्रभा। 'पुंसि संज्ञायां घः प्रायेण' (३-३-११८) इति घः। यद्वा, पचाद्यच्।

१३ 'असुन्' (द.उ. ९-४९) इत्यसुन् प्रत्यये। तपः = तपति शरीरमिति कायक्लेशात्मकः शुद्धाचारः। 'कर्मणो रोमन्थतपोभ्यां वर्तिचरोः' (३-१-१५) इति क्यङ्। 'सनाद्यन्ता धातवः' (३-१-३२) इति धातुसंज्ञा। 'अ प्रत्ययात्' (३-३-१०२) इति स्त्रियां भावादौ अकारप्रत्ययः। टाप्। तपस्या = तपः।

१४ सम्यक् तप्तु शीलमस्येति सन्तापी। ताच्छील्ये णिनिः।

१५ द्विषन्तं तापयतीति विग्रहे 'द्विषत्परयोस्तापेः' (३-२-३९) इति खच् प्रत्ययः। खचि 'णेरनिटि' (६-४-५१) णिलोपे, 'खचि ह्रस्वः' (६-४-९४) इति उपधायाः ह्रस्वः। द्विषतस्तकारस्य मुमि संयोगान्तलोपः। एवं परं तापयतीति विग्रहे परन्तपः इति भवति।

(९८६) **त्यज—हानौ।** हानिः उत्सर्ग इति बालमनोरमा। त्यागः इति क्षीरस्वामी। (छोड़ना, त्यागना, देना, दान करना)। सक.। अनि.। पर.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | त्यजति | त्यजतः | त्यजन्ति | प्र. |
| | त्यजसि | त्यजथः | त्यजथ | म. |
| | त्यजामि | त्यजावः | त्यजामः | उ. |
| लिट् | तत्याज | तत्यजतुः | तत्यजुः | प्र. |
| | तत्यजिथ-तत्यक्थ | तत्यजथुः | तत्यज | म. |
| | तत्याज-तत्यज | तत्यजिव | तत्यजिम | उ. |
| लुट् | त्यजिता | त्यजितारौ | त्यजितारः | प्र. |
| | त्यजितासि | त्यजितास्थः | त्यजितास्थ | म. |
| | त्यजितास्मि | त्यजितास्वः | त्यजितास्मः | उ. |
| लृट् | त्यजिष्यति | त्यजिष्यतः | त्यजिष्यन्ति | प्र. |
| | त्यजिष्यसि | त्यजिष्यथः | त्यजिष्यथ | म. |
| | त्यजिष्यामि | त्यजिष्यावः | त्यजिष्यामः | उ. |
| लोट् | त्यजतु-त्यजतात् | त्यजताम् | त्यजन्तु | प्र. |
| | त्यज-त्यजतात् | त्यजतम् | त्यजत | म. |
| | त्यजानि | त्यजाव | त्यजाम | उ. |
| लङ् | अत्यजत् | अत्यजताम् | अत्यजन् | प्र. |
| | अत्यजः | अत्यजतम् | अत्यजत | म. |
| | अत्यजम् | अत्यजाव | अत्यजाम | उ. |
| वि. लि. | त्यजेत् | त्यजेताम् | त्यजेयुः | प्र. |
| | त्यजेः | त्यजेतम् | त्यजेत | म. |
| | त्यजेयम् | त्यजेव | त्यजेम | उ. |
| आ. लि. | त्यज्यात् | त्यज्यास्ताम् | त्यज्यासुः | प्र. |
| | त्यज्याः | त्यज्यास्तम् | त्यज्यास्त | म. |
| | त्यज्यासम् | त्यज्यास्व | त्यज्यास्म | उ. |
| लुङ् | अत्याक्षीत् | अत्याक्ताम् | अत्याक्षुः | प्र. |
| | अत्याक्षीः | अत्याक्तम् | अत्याक्त | म. |
| | अत्याक्षम् | अत्याक्ष्व | अत्याक्ष्म | उ. |
| लृङ् | अत्यजिष्यत् | अत्यजिष्यताम् | अत्यजिष्यन् | इत्यादि। |

**कर्मणि**—त्यज्यते। **णिचि**—त्याजयित-ते। **सनि**—तित्यक्षति। **यङि**—तात्यज्यते। **यङ्लुकि**—तात्यजीति-तात्यक्ति। **कृत्सु**—त्याजकः-जिका, णिचि—त्याजकः-जिका, तित्यक्षकः-क्षिका, तात्यजकः-जिका, त्यक्ता-त्री, त्याजिता-त्री, तित्यक्षिता-त्री, तात्यजिता-त्री, त्यजन्-न्ती, त्याजयन्-न्ती, तित्यक्षन्-न्ती, त्यक्ष्यन्-न्ती-ती, त्याजयिष्यन्-न्ती-ती, तित्यक्षिष्यन्-न्ती-ती, व्यतित्यजमानः, त्याजयमानः, त्याजयिष्यमाणः, त्यक्-त्यग्-त्यजौ-त्यजः, व्यक्तम्-क्तः-क्तवान्, त्याजितः, तित्यक्षितः, तात्यजितः-तवान्, त्यजः, त्यागी, संत्याजी, त्याजः,

तित्यक्षुः, तात्यजः, त्यक्तव्यम्, त्याजयितव्यम्, तित्यक्षितव्यम्, तात्यजितव्यम्, त्याजनीयम्, णिचि—त्याजनीयम्, त्याज्यम्, णिचि- त्याज्यम्, त्यज्यमानः, त्याज्यमानः, त्यागः, त्याजः, तित्यक्षः,तात्यजः,त्यक्तुम्,त्याजयितुम्,त्यक्तिः,त्याजना,तित्यक्षा,तात्यजा,व्यजनम्,त्याजनम्, त्यक्त्वा, त्याजयित्वा, परित्यज्य, प्रत्याजयिष्यः।

**(९८७) षञ्ज—संगे।** (आलिङ्गन करना, गले लगाना, सटे रहना, चिपके रहना)। **अव**—लटकना, हिलना, **आ**—अनुरक्त होना, आसक्त होना, **व्या**—झगड़ना, हाथापाई करना। सक.। अनि.। पर.।

१ सजति। **दंशसञ्जस्वञ्जां शपि**—इति न लोपः। २ **प्र.** ससञ्ज। ससञ्जतुः। ससञ्जुः। **म.** ससञ्जिथ ससङ्थ। ३ सङ्क्ता। ४ सङ्क्ष्यति। ५ सजतु-सजतात्। ६ असजत्। ७ सजेत्। ८ सज्यात्। ९ असाक्षीत्। **वदव्रजेति**—वृद्धिः। १० असक्ष्यत्।

**कर्मणि**—सज्यते। **णिचि**—सञ्जयति-ते। **सनि**—सिसङ्क्षति। **यङि**—सासज्यते। **यङ्लुकि**—सासञ्जीति-सासङ्क्ति। **कृत्सु**—सङ्क्तव्यम्, सञ्जनीयम्, सक्तम्, सञ्जनम्, सङ्क्त्वा, सक्त्वा। **जान्तनशां विभाषा।** जान्तानां नशेश्च न लोपो वा स्यात् क्त्वपरे। संसज्य। अवसजति। अनुषजति। अभिषजति।

**(९८८) दृशिर्—प्रेक्षणे।** देखना। सक.। अनि.। परस्मै.। **पाघ्राध्मा**—इति सूत्रेण पश्यादेशः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | पश्यति | पश्यतः | पश्यन्ति | प्र. |
| | पश्यसि | पश्यथः | पश्यथ | म. |
| | पश्यामि | पश्यावः | पश्यामः | उ. |
| लिट् | ददर्श | ददृशतुः | ददृशुः | प्र. |
| | दद्रष्ठ-ददर्शिथ | ददृशथुः | ददृश | म. |
| | ददर्श | ददृशिव | ददृशिम | उ. |
| लुट् | द्रष्टा | द्राष्टारौ | द्रष्टारः | प्र. |
| | द्रष्टासि | द्रष्टास्थः | द्रष्टास्थ | म. |
| | द्रष्टास्मि | द्रष्टास्वः | द्रष्टास्मः | उ. |
| लृट् | द्रक्ष्यति | द्रक्ष्यतः | द्रक्ष्यति | प्र. |
| | द्रक्ष्यसि | द्रक्ष्यथः | द्रक्ष्यथ | म. |
| | द्रक्ष्यामि | द्रक्ष्यावः | द्रक्ष्यामः | उ. |
| लोट् | पश्यतु-तात् | पश्यताम् | पश्यन्तु | प्र. |
| | पश्य-तात् | पश्यतम् | पश्यत | म. |
| | पश्यानि | पश्याव | पश्याम | उ. |
| लङ् | अपश्यत् | अपश्यताम् | अपश्यन् | प्र. |
| | अपश्यः | अपश्यतम् | अपश्यत | म. |
| | अपश्यम् | अपश्याव | अपश्याम | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| वि. लि. | पश्येत् | पश्येताम् | पश्येयुः | प्र. |
| | पश्येः | पश्येतम् | पश्येत | म. |
| | पश्येयम् | पश्येव | पश्येम | उ. |
| आ. लि. | दृश्यात् | दृश्यास्ताम् | दृश्यासुः | प्र. |
| | दृश्याः | दृश्यास्तम् | दृश्यास्त | म. |
| | दृश्यासम् | दृश्यास्व | दृश्यास्म | उ. |
| लुङ् | अदर्शत् | अदर्शताम् | अदर्शन् | प्र. |
| | अदर्शः | अदर्शतम् | अदर्शत | म. |
| | अदर्शम् | अदर्शव | अदर्शम | उ. |

**इरितो वा**—इति विकल्पेन अङ्पक्षे रूपम् । **ऋदृशोऽङि गुणः** । ऋवर्णान्तानां दृशेश्च गुणः स्यादङि ।

पक्षे—**प्र.** अद्राक्षीत् अद्राष्टाम् अद्राक्षुः । **म.** अद्राक्षीः अद्राक्षिष्टम् अद्राक्षिष्ट । उ. अद्राक्षम् अद्राक्ष्व अद्राक्ष्म ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृङ् | अद्रक्ष्यत् | अद्रक्ष्यताम् | अद्रक्ष्यन् | प्र. |
| | अद्रक्ष्यः | अद्रक्ष्यतम् | अद्रक्ष्यत | म. |
| | अद्रक्ष्यम् | अद्रक्ष्याव | अद्रक्ष्याम | उ. |

**कर्मणि**—दृश्यते । ५ ददृशे । ९ अदर्शि । **णिचि**—दर्शयति-ते । **सनि**—दिदृक्षते । **यङि**—दरीदृश्यते । **यङ्लुकि**—दरीदृशीति-दरिदृशीति **कृत्सु**—दर्शकः-र्दिका, **णिचि**—दर्शकः-दर्शिका, दिदृक्षकः[१]-क्षिका, दरीदृशकः[२]-शिका, द्रष्टा[३]-द्रष्टी, दर्शयिता-त्री, दिदृक्षिता-त्री, दरीदृशिता-त्री, पश्यन्[४]-न्ती, दर्शयन्-न्ती, सन्दिदृक्षन्[५]-न्ती, द्रक्ष्यन्-न्ती-ती, दर्शयिष्यन्-न्ती, सन्दिदृक्षिष्यन्-न्ती-ती, संपश्यमानः[६] दर्शयमानः, दिदृक्षमाणः[७] दरीदृश्यमानः, सन्द्रक्ष्यमाणः, दर्शयिष्यमाणः, दिदृक्षिष्यमाणः, दरीदृशिष्यमाणः, तादृक्-तादृशौ[८]-तादृशः, दृष्टम्-दृष्टः-दृष्टवान्, दर्शितः, दिदृक्षितः, दरीदृशितः-तवान्, पश्यः[९] उत्पश्यः, तादृशः,[१०] यादृशः,

१ सन्नन्तान् ण्वुलि, सनो झलादित्वेन् 'हलन्ताच्च' (१-२-१०) इति कित्वेन्, अमभावे, द्वित्वादिषु कृतेषु 'व्रश्च—' (८-२-३६) इत्यादिना धातुशकारस्य पकारे, 'षढोः कः सि' (८-२-४१) इति तस्य ककारे, षत्वे च रूपमेवम् । एवं सन्नन्ते सर्वत्र ज्ञेयम् ।

२ यङन्ते सर्वत्र 'रीगृदुपधस्य च' (७-४-९०) इत्यभ्यासे रीगागमः ।

३ तृचि, सृजिदृशो झल्यमकिति' (६-१-५८) इति अमागमे, यणादेशे च रूपमेवम् । एवं तव्यदादिष्वपि ज्ञेयम् ।

४ शतरि, शपि, 'पाध्रा—' (७-३-७८) इति पश्यादेशे, पररूपे च रूपमेवम् । एवं शानजन्तेऽपि ज्ञेयम् ।

५ 'दृशेश्च—' (वा. १-३-२९) इत्यत्र 'अकर्मकात्' इत्युक्त्या, सकर्मकादस्मात् सम्पूर्वकात् तु यथा प्राप्तं परस्मैपदमेव भवतीति, तदन्तादस्मात् सनि परस्मैपदमेव, नात्मनेपदमिति बोध्यम् ।

६ सम्पूर्वकादस्मात् 'दृशेश्चेति वक्तव्यम्' (वा. १-३-२९) इति शानच् ।

७ 'शाश्रुस्मृदृशां सनः' (१-३-५७) इति सन्नन्तात् आत्मनेपदमेव ।

८ 'त्यदादिषु दृशोऽनालोचने कञ् च' (३-२-६०) इत्यनेन किन् कञ् इत्युभौ प्रत्ययौ भवतः । तत्र क्विनि, 'त्यदादीनाम्' दीनाम् उपपदभूतानां 'आ सर्वनाम्नः' (६-३-९१) इत्यनेन दृग् दृशवतुषु परेषु आत्वे, 'क्विन् प्रत्ययस्य कुः' (८-२-६२) इति कुत्वे च रूपम् । एवं तादृक्, ईदृक् इत्यादयोऽपि ज्ञेयम् ।

९ कर्तरि, 'पाध्राध्माधेट्दृशः शः' (३-१-१३७) इति शप्रत्यये, शपि, 'पाध्राध्मा—' (७-३-७८) इत्यादिना पश्यादेशे, पररूपे पश्यः इति भवति ।

१० 'त्यदादिषु दृशोऽनालोचने कश्च' (३-२-६०) इत्यनेन कनि प्रत्यये सर्वनाम्नो दृग् दृश् वस्तुषु दीर्घे रूपम् । स्त्रियाम्, 'टिड्ढाणञ्—' (४-१-१५) इत्यादिना ङीप् ।

सदृक्[१]-सदृशः, अन्यादृक्-अन्यादृशः, ईदृक्-कीदृक्-ईदृशः- किदृशः-ईदृक्षः-कीदृक्षः, तादृक्षः, यादृक्षः, सदृक्षः, अन्यादृक्षः, सदृशी, तादृशी, पापदृष्वा,[२] पारदृश्वरी, विवेकदृश्वा, यमास्यदृश्वरी,[३] असूयम्पश्याः[४] (राजदाराः), उग्रम्पश्यः,[५] कश्यपः,[६] सुदर्शनः,[७] ददृशिवान्[८]-ददृश्वान्, मार्गदर्शी, दर्शः, दिदृक्षुः,[९] सन्दिदर्शयिषुः,[१०] दरीदर्शः, द्रष्टव्यम्, दर्शयितव्यम्, दिदृक्षितव्यम्, दरीदृशितव्यम्, दर्शनीयम्, **णिचि**—दर्शनीयम्, दिदृक्षणीयम्, दरीदृशनीयम्, दृश्यम्, दर्श्यम्, दिदृक्ष्यम्, दरीदृश्यम्, दृश्यमानः, दर्श्यमानः, दिदृक्ष्यमाणः, दरीदृश्यमानः, दर्शः, आदर्शः,[११] दिदृक्षः, दरीदृशः, द्रष्टुम्,[१२] द्रष्टुम्, दर्शयितुम्, दिदृक्षितुम्, दरीदृशितुम्, दृक्,[१३] दृष्टिः,[१४] दर्शना, दिदृक्षा, दरीदृशा, पश्यः,[१५] दर्शनम्, दिदृक्षणम्, दरीदृशनम्, दृष्ट्वा, दर्शयित्वा, दिदृक्षित्वा, दरीदृशित्वा, सन्दृश्य, प्रदर्श्य, प्रदिदृक्ष्य, प्रदरीदृश्य, कन्यादर्शः[१६] (वरयति), मांसशोणितसन्दर्शः,[१७] विप्रदर्शनम्, पशुः[१८]।

**(९८९) दंश—दशने**। (काटना, डसना, दंश मारना)। सकर्म.। अनिट्। परस्मै.।

१ दशति '**दंशसञ्जस्वञ्जां शपि**' ( ) इति न लोपः। २ **प्र.** ददंश दशंशतुः ददंशुः।

---

१ 'समानान्ययोश्च' (वा. ३-२-६०) इति क्विन् क्वञौ प्रत्ययौ भवतः। तत्र 'दृग्दृशवतुषु' (६-३-८९) इत्यनेन समानशब्दस्य सभावे सदृक् सदृशः सदृक्षः इति भवति। ईदृक् इत्यादिषु क्विन् क्वञोः प्रत्ययोः 'इदं किमोरीश्की' (६-३-९०) इत्यनेन प्रकृतेः ई की इत्येतौ आदेशौ भवत इति विशेषः।

२ 'दृशेः क्वसश्च वक्तव्यः' (३-२-६०) इति क्वसप्रत्यये रूपम्।

३ 'यमास्यदृश्वरी तस्य ताटका वेत्ति विक्रमम्।' (भ.का. ५-३४)

४ 'असूर्यललाटयोर्दृशितपोः'(३-२-३६)इति खश्। शित्वात् पश्यादेशः। खित्वात् नुम्। असूर्य इति निपातनात् नञोऽसमर्थसमासः।

५ 'उग्रमाश्येरम्मदपाणिन्धमाश्च' (३-२-३७) इत्यनेन खश् प्रत्ययान्तो निपातितः। उग्रमिति क्रियाविशेषणम्। 'उग्रपश्यः क्रूरदृष्टिरुग्रं पापं विदन्नपि' इति प्र. सर्वस्वे।

६ पश्यतीति पश्यः। स एव पश्यकः—स्वार्थे कन्। 'पश्यकः कश्यपोऽभवत्' इति पौराणिकवचनात् पृषोदरादित्वात् कल्पशम्-कश्मलम् इत्यादेष्विव वर्णप्रत्ययः।

७ सुष्ठु दर्शयतीति सुदर्शनः। नन्द्यादित्वात् (३-१-१३४) कर्तरिल्युः।

८ क्वसौः, 'दृशेश्चेति वक्तव्यम्' (वा. ७-२-६८) इति इड्विकल्पे रूपद्वयम्।

९ संकथेच्छुरभिधातुमनीशा सम्मुखी न च बभूव दिदृक्षुः। (शि.व. १०-४१)

१० सन्दिदर्शयिषुः साम निजुह्नुषुः क्षपाटताम्। (भ.का. ५-६४)

११ करणेऽधिकरणे चार्थे पुंसि संज्ञायां घः—' (३-३-११४) इति घप्रत्ययः। आदर्शः = दर्पणम्।

१२ 'तुमुन् ण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम्' (३-३-१०) इति क्रियार्थक्रियायां तुमुन्।

१३ स्त्रियाम्, सम्पदादित्वात् (वा. ३-३-९४) भावे क्विप्। 'क्तिन्नपीष्यते' (वा. ३-३-९४) इत्युक्त्या दृष्टि रित्यपि साधुः।

१४ क्तिच् क्तौ च संज्ञायाम् (३-३-१७४) इति संज्ञायां क्तिच्। दृष्टिः = नेत्रम्।

१५ यद्यपि 'पश्यार्थैश्चानालोचने' (८-१-२५) इत्यत्र निर्देशवलात् दर्शनम् = पश्यः, भावे शप्रत्ययोऽयम्। ल्युडपवादोऽयमिति प्रतीयते, तथापि 'अदर्शनं लोपः' (१-१-६०) इति ल्युडन्तस्यापि सूत्रकारनिर्देशात् ल्युडपि भवति।

१६ कर्मण्युपपदे 'कर्मणिदृशिविदोः साकल्ये' (३-४-२९) इति णमुल्। यां यां कन्यां पश्यति तास्सर्वा अपि वरयतीति भावः।

१७ 'मांसशोणितसन्दर्शं तुण्डवातमयुध्यत। (भ.का. ५-१०१)

१८ 'अर्जिदृशि—' (द.उ. १-११२) इति कुप्रत्यये, यथाक्रमं पश्वादेशे च रूपम्। पशुः = मन्त्रबाह्यो जनः।

**म.** ददंशिथ-ददंष्ट ददंशथुः ददंश। **उ.** ददंश ददंशिव ददंशिम। ३ **प्र.** दंष्टा। दंष्टारौ दंष्टारः। **म.** दंष्टासि दंष्टास्थः दंष्टास्थ। **उ.** दंष्टास्मि दंष्टास्वः दंष्टास्मः। ४ **प्र.** दङ्क्ष्यति दङ्क्ष्यतः दङ्क्ष्यन्ति। ५ दशतु-तात् दशताम् दशन्तु। ६ अदशत् अदशताम् अदशन्। **म.** अदशः **उ.** अदशम्। ७ दशेत् दशेताम् दशेयुः। **म.** दशेः दशेतम् दशेत। **उ.** दशेयम् दशेव ददेम। ८ **प्र.** दश्यात् दश्यास्ताम् दश्यासुः। ९ **प्र.** अदाङ्क्षीत् अदाष्टाम् अदाङ्क्षुः। **म.** अदाङ्क्षीः अदांष्टम् अदांष्ट। **उ.** अदाङ्क्षम् अदाङाक्ष्व अदाङ्क्ष्म। १० अदङ्क्ष्यत् अदङ्क्ष्यताम् अदङ्क्ष्यन् इत्यादि।

**कर्मणि**—दश्यते। **णिचि**—दंशयति-ते। **सनि**—दिदङ्क्षति। **यङि**—दंदश्यते। **यङ्लुकि**—दंदशीति-दंदष्टि। **कृत्सु**—दंशकः[१]-शिका, दिदङ्क्षकः[२]-क्षिका, ददंशकः[३]-दन्दशकः-शिका, दंष्टा[४]-दंष्ट्री, दंशयिता-त्री, दंशन्[५]-न्ती, दंशयन्-न्ती, दङ्क्ष्यन्-न्ती-ती, दंशयिष्यन्, दंशयमानः, दंशयिष्यमाणः, दष्टम्-दष्टः-दष्टवान्, दंशितः, दंशः, दशनः,[६] वृषदंशः,[७] दंदशः,[८] दन्दशूकः,[९] दंष्टव्यम्, दंशयितव्यम्, दंशनयीम्, दंश्यम्, दश्यमानः, दंश्यमानः, दंष्टुम्, दंशयितुम्, दशा[१०]-दष्टिः, दशना, दंशनम्,[११] दशनम्, दंष्ट्रः-दंष्ट्रा, दष्ट्वा, दंशयित्वा, विदश्य, विदंश्य, मूलकोपदंशम्।

**( ९९० ) कृष—विलेखने।** विलेखनम् = आकर्षणम्। (कृषिकर्म करना, जोतना, हल चलाना)। **अप**—बहना, **आ**—आकर्षण करना, खींचना, **उत्**—उठाना, **सम्**—आकुञ्चित करना, समेटना, **सन्नि**—खैंचकर समीप में लाना। सक.। अनिट्। परस्मै.।

१ 'नकारजावनुस्वारपञ्चमौ झलि धातुषु।' इति रचनात् नोपधोऽयं धातुः। नकारस्य 'नश्चापदान्तस्य झलि' (८-३-२४) इत्यनुस्वारः। एवं सर्वत्र ज्ञेयम्।

२ सनि 'व्रश्चभ्रश्च—' (८-२-३६) इत्यादिना शकारस्य षकारे, 'षढोः कः सि' (८-२-४१) इति षकारस्य ककारे, षत्वे, अनुस्वारे च रूपमेवम्। एवं सन्नन्ते सर्वत्र ज्ञेयम्।

३ लुप सदचरजपजभदहदशगृभ्यो भावगर्हायाम्'(३-१-२४) इति भावगर्हायां यङ्। 'अनिदिताम्—'(६-४-२४) इति नकारलोपः। 'जपजभ—'(७-४-८६) इति अभ्यासस्य नुगागमः। 'स च पदान्तवद्वाच्यः'(वा. ७-४-८५) इत्यनेन पदान्तवद् भावः। 'वा पदान्तस्य' (८-४-५९) इति परसवर्णविकल्पः। एवं यङन्ते सर्वत्र रूपद्वयम्।

४ तृचि, शकारस्य 'व्रश्च—' (८-२-३६) इत्यादिना षत्वे नकारस्यानुस्वारे, ष्टुत्वे च रूपम्। एवं तव्यदादिष्वपि ज्ञेयम्।

५ शपि, 'दशसञ्जस्वजां शपि' (६-४-२५) इत्युपधानकारस्य लोपः।

६ 'कृत्यल्युटो बहुलम्'(३-३-११३) इति बाहुलकात् कर्तरि ल्युट्। यद्वा, नन्द्यादेराकृतिगणत्वात्। (३-१-१३४) कर्तरि ल्युः।

७ वृषं दशतीति वृषदंशः = मार्जारः। कर्मण्यण्' (३-२-१) इत्यण्।

८ यङन्तात् पचाद्यचि, यङो लुकि, उपधानकारलोपाभावे रूपमेवम्।

९ 'वाऽसरूपोऽस्त्रियाम्' (३-१-९४) इत्यनेन असरूपापवादप्रत्ययत्वात् उत्सर्गस्य वा बाधकः, यङन्तात् 'यजजपदशां यङः' (३-२-१६६) इत्युक प्रत्ययः। दन्दशूकः = सर्पः।

१० भिदादेराकृतिगणत्वेन, तत्र (३-३-१०४) पाठादङि, उपधानकारलोपे दशा इति क्षीरतरङ्गिणी। दशा = वर्तिरवस्था वस्त्रान्तावयवश्च। भिदादिष्वस्यादर्शनात् क्तिनि = दृष्टि रिति रूपमिति।

११ करणे ल्युटि, 'दंश दशने' इति धातुपाठबलात् नकारलोपे रूपमेवम् दंशेः करणे ल्युटि नलोपो वाच्यः, इति न लोपः। इति धा. का. व्याख्याने (२-४०) दृश्यते।

१ कर्षति। २ प्र. चकर्ष चकृषतुः चकृषुः। म. चकर्षिथ चकृषथुः चकृष। उ. चकर्ष चकृषिव चकृषिम। ३ प्र. कर्ष्टा कर्ष्टारौ कर्ष्टारः। पक्षे—क्रष्टा[1] क्रष्टारौ क्रष्टारः इत्यादि। ४ प्र. कर्क्ष्यति कर्क्ष्यतः कर्क्ष्यन्ति। पक्षे—क्रक्ष्यति क्रक्ष्यतः क्रक्ष्यन्ति इत्यादि। ५ कर्षतु-कर्षतात्। उ. कर्षाणि। ६ प्र. अकर्षत्। म. अकर्षः। उ. अकर्षम्। ७ प्र. कर्षेत् कर्षेताम् कर्षेयुः। म. कर्षेः कर्षेतम् कर्षेत। उ. कर्षेयम् कर्षेव कर्षेम। ८ प्र. कृष्यात् कृष्यास्ताम् कृष्यासुः। म. कृष्याः कृष्यास्तम् कृष्यास्त। उ. कृष्यासम् कृष्यास्व कृष्यास्म। ९ प्र. अकृक्षत्[2] अकृक्षताम् अकृक्षन्। म. अकृक्षः अकृक्षतम् अकृक्षत। उ. अकृक्षम् अकृक्षाव अकृक्षाम। पक्षे– अक्राक्षीत्[3] अक्राष्टाम् अक्राक्षुः। म. अक्राक्षीः अक्राष्टम् अक्राष्ट। उ. अक्राक्षम् अक्राक्ष्व अक्राक्ष्म। पक्षे– प्र. अकार्क्षीत्[4] अकार्ष्टाम् अकार्क्षुः। म. अकार्क्षीः अकार्ष्टम् अकार्ष्ट। उ. अकार्क्षम् अकार्क्ष्व अकार्क्ष्म। १० प्र. अक्रक्ष्यत् अक्रक्ष्यताम् अक्रक्ष्यन्। अकर्क्ष्यत् अकर्क्ष्यताम् अकर्क्ष्यन इत्यादि।

**कर्मणि**—कृष्यते। **णिचि**—कर्षयति-ते। **सनि**—चिकृक्षति। **यङि**—चरीकृष्यते। **यङ्लुकि**—चरीकृषीति-चर्कृषीति चर्कष्टि। **कृत्सु**—क्रष्टव्यः-कर्ष्टव्यः, कर्षनीयः, कृष्यः, कृष्टः, कर्षन्, क्रक्ष्यन्-कर्क्ष्यन्-न्ती-ती, कर्ष्टुम्-क्रष्टुम्, कृष्ट्वा, विकृश्य, सङ्कर्षणः, कृषिः, प्रकर्षः, निष्कर्षः।

**(९९१) दह—भस्मीकरणे।** (जलाना, नष्ट करना, दुख देना)। **परि**—पूरी तरह जला देना। सक.। अनि.। परस्मै.।

१ दहति। २ प्र. ददाह देहतुः देहुः। म. देहिथ-ददग्ध **अकारत्वात् भारद्वाजनियमात्थलि विकल्पेन इति रूपम्।** अनिट् पक्षे **दादेर्धातोर्घः।** उपदेशे दादेर्धातोर्हस्य घः स्याज्झलि पदान्ते च। इति ददघ् थ इति जाते **झषस्तथो**—रिति थस्य धकारे, घस्य जश्त्वेन गकारे च रूपम्। उ. ददाह-ददह देहिव देहिम। ३ दग्धा। ४ धक्ष्यति। ५ दहतु। ६ अदहत्। ७ दहेत्। ८ दह्यात्। ९ प्र. अधाक्षीत् अदाग्धाम् अधाक्षुः। म. अधाक्षीः अदाग्धम् अदाग्ध। उ. अधाक्षम् अधाक्ष्व अधाक्ष्म। १० प्र. अधक्ष्यत् म. अधक्ष्यः उ. अधक्ष्यम्।

**कर्मणि**—दह्यते। २ देहे। **णिचि**—दाहयति-ते। **सनि**—दिधक्षति। **यङि**—दंदह्यते। **यङ्लुकि**—दंदग्धि-दंदहीति। **कृत्सु**—दाहकः-हिका, **णिचि**—दाहकः-हिका, दिधक्षकः-क्षिका, दन्दहकः-दंदहकः-हिका, दग्धा[5]-दग्ध्री, दाहयिता-त्री, दिधक्षिता-त्री, दन्दहिता-त्री, दहन्-न्ती, दाहयन्-न्ती, दिधक्षन्-न्ती, दिधक्षयन्, धक्ष्यन्[6]-न्ती-ती, दाहयिष्यन्-न्ती-ती,

१ कृष + ता इति स्थिते 'अनुदात्तस्य चर्दुपधस्य' (६-१-५९) इति कृ + अ + ष + ता इति जाते 'इको यणचि' इति यणि कृष् ता इति जाते, ष्टुत्वेन क्रष्टा इति रूपम्। अमागमाभावे लघूपगुणे कर्ष्टा इति रूपम्।
२ शल इगुपधादनिटः। (३-१-४५) इति क्सादेशे पञ्चमो लुङ्।
३ 'स्पृशमृशकृषतृपदृपां च्लेः सिज्वा वाच्यः' इति सिचि, अनुनासिकस्येत्यमागमे रूपम्।
४ अमागमाभावे रूपम्। 'धनुर्व्यकार्क्षीदगुरुबाणगर्भम्' (भट्टिः २।५३)
५ तृचि, घत्वधत्वजश्त्वानि भवन्ति। एवमेव तव्यदादिष्वपि प्रक्रियोह्या।
६ भत्वचर्त्वभष्भावषत्वेषु रूपम्।

दिधक्षिष्यन्-न्ती-ती, व्यतिदहमानः, दाहयमानः, दन्दह्यमानः, व्यतिधक्ष्यमाणः, दाहयिष्यमाणः, दन्दहिष्यमाणः, प्रधक्[1]-प्रधग्-प्रदहौ-प्रदहः, दग्धम्, दग्धः, दग्धवान्, दाहितः, दिधक्षितः, दन्दहित-तवान् दहनः[2]। परिदाही,[3] दाहः, दिधक्षु, दन्दहः, दग्धव्यम्, दाहयितव्यम्, दिधक्षितव्यम्, दन्दहितव्यम्, दहनीयम्, दहेलिमः,[4] दाहनीयम्, दिधक्षणीयम्, दन्दहनीयम्, दाह्यम्, **णिचि**– दाह्यम्, दिधक्ष्यम्, दन्दह्यम्, दह्यमानः, दाह्यमानः, दिधक्ष्यमाणः, दन्दह्यमानः, निदाघः,[5] अवदाघः, दिधक्षः, दन्दहः, दग्धुम्, दाहयितुम्, दिधक्षितुम्, दन्दहितुम्, दन्धिः, दाहना, दिधक्षा, दन्दहा, दहनम्, दाहनम्, दिधक्षणम्, दन्दहनम्, दग्ध्वा, दाहयित्वा, दिधक्षित्वा, दन्दहित्वा, प्रदह्य, प्रदाह्य, प्रदिधक्ष्य, प्रदन्दह्य, दह्रः[6]।

(९९२) **मिह–सेचने**। (सींचना, गीला करना, प्रोक्षण करना, पेशाब करना)। सकर्म.। अनिट्। परस्मै.।

१ मेहति। २ **प्र.** मिमेह मिमिहतुः। **म.** मिमेहिथ। **उ.** मिमिहिव। ३ मेढा मेह्ता इति स्थिते। **होढः** इति ढत्वे धकारे ष्टुत्वे ढलोपे च रूपम्। ४ मेक्ष्यति। हस्य ढत्वे तस्य। **षढो**–रिति कत्वे धकारे ष्टुत्वे च रूपम्। ८ मिह्यात् मिह्यास्ताम्। ९ अमिक्षत् अमिक्षताम्। १० अमेक्ष्यत्।

**कर्मणि**–मिह्यते। **णिचि**–मेहयति। **सनि**–मिमिक्षति। **यङि**–मेमिह्यते। **यङ्लुकि**–मेमिहीति-मेमेढि। **कृत्सु**–मेढव्यम्, मेहनीयम्, मेह्यम्, मीढः, मेहन्, मेढुम्, मीढम्, मेहनम्, मेढुम्, मीढ्वा, अवमिह्य, मेघः, मिहिरः = सूर्यः।

(९९३) **कित–निवासे रोगापनयने च**। (निवास करना। रोग का प्रतिकार करना, चिकित्सा करना)। सक.। सेट्। पर.। '**गुप्तिज्किद्भ्यः**' इति नित्यसन्। १ चिकित्सति। २ चिकित्साञ्चकार। ३ चिकित्सिता। ४ चिकित्सिष्यति। ५ चिकित्सतु-तात्। ६ अचिकित्सत्। ७ चिकित्सेत्। ८ चिकित्स्यात्। ९ अचिकित्सीत्। १० अचिकित्सिष्यत्। निवासे तु केतयति।

**कर्मणि**–चिकित्स्यते। **णिचि**–चिकित्सयति-ते। **सनि**–चिकित्सिषति। अनेकाच्त्वात् न यङ्लुकौ। **कृत्सु**–चिकित्सितव्यम्, चिकित्सनीयम्, चिकित्स्यम्, चिकित्सितः, चिकित्सकः, चिकित्सितुम्, चिकित्सित्वा, विचिकित्स्य, चिकित्सा, विचिकित्सा-संशयः।

(९९४) **दान–खण्डने**। (खण्डन करना, तोड़ना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

---

१ क्विपि धत्वभष्भावचर्त्वजश्त्वेषु रूपम्।

२ नन्द्यादेः (३-१-१३४) आकृतिगणत्वात् कर्तरि ल्युः। दहनः = अग्निः।

३ 'सम्पृचानुरुधा–' (३-२-१४२) इत्यादिना तच्छीलादिषु कर्तृधिनुण् प्रत्ययो भवति।

४ केलिमर उपसंख्यानम्' (वा. ३-१-९६) इति भावकर्मणोः केलिमर प्रत्ययः।

५ नितरां दहतीति निदाघः। घञि न्यङ्क्वादिषु (७-३-५३) 'संज्ञायां मेघनिदाघावदाघार्घाः' (ग.सू. ७-३-५३) इति वचनात् कुत्वम्। निदाघः = ग्रीष्मः। अवदाघः = भक्ष्यविशेषः। असंज्ञायां तु निदाहः, अवदाहः इत्येव भवति।

६ 'स्फायितञ्चि–' (द.उ. ८-३१) इत्यादिना रक्प्रत्ययः। दह्रः = अग्निः सूर्यो वा।

नित्यसन्नन्तः। दीदांसति-ते। 'मीमांसति' (९७२) वत्।

( ९९५ ) **शान—तेजने**। (तेज करना, तीक्ष्ण करना, पैना करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। '**मान्बधदान्शान्भ्यः**' इति नित्यं सन् अभ्यासस्य दीर्घश्च। १ शीशांसति-ते। २ शीशांसाञ्चकार चक्रे। ३ शीशांसिता। ४ शीशांसिष्यति-ते। ५ शीशांसतु-ताम्। ६ अशीशांसत्-त। ७ शीशांसेत्-त। ८ शीशांस्यात्-शीशासिषीष्ट। ९ असीशांसीत्-अशीशांसीष्ट। शेषं (९७२) वत्।

( ९९६ ) **डुपचष्—पाके**। (पकाना)। सक.। अनि.। उभय.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | पचति | पचतः | पचन्ति | प्र. |
| | पचसि | पचथः | पचथ | म. |
| | पचामि | पचावः | पचामः | उ. |
| आत्म | पचते | पचेते | पचन्ते | प्र. |
| | पचसे | पचेते | पचध्वे | म. |
| | पचे | पचावहे | पचामहे | उ. |
| लिट् | पपाच | पेचतुः | पेचुः | प्र. |
| | पेचिथ-पपक्थ | पेचथुः | पेच | म. |
| | पपाच-पपच | पेचिव | पेचिम | उ. |
| आत्मने. | पेचे | पेचाते | पेचिरे | प्र. |
| | पेचिषे | पेचाथे | पेचिध्वे | म. |
| | पेचे | पेचिवहे | पेचिमहे | उ. |
| लुट् | पक्ता | पक्तारौ | पक्तारः | प्र. |
| | पक्तासि | पक्तास्थः | पक्तास्थ | म. |
| | पक्तास्मि | पक्तास्वः | पक्तास्मः | उ. |
| आत्मने. | पक्ता | पक्तारौ | पक्तारः | प्र. |
| | पक्तासे | पक्तासाथे | पक्ताध्वे | म. |
| | पक्ताहे | पक्तास्वहे | पक्तास्महे | उ. |
| लृट् | पक्ष्यति | पक्ष्यतः | पक्ष्यन्ति | प्र. |
| | पक्ष्यसि | पक्ष्यथः | पक्ष्यथ | म. |
| | पक्ष्यामि | पक्ष्यावः | पक्ष्यामः | उ. |
| आत्मने. | पक्ष्यते | पक्ष्येते | पक्ष्यन्ते | प्र. |
| | पक्ष्यसे | पक्ष्येथे | पक्ष्यध्वे | म. |
| | पक्ष्ये | पक्ष्यावहे | पक्ष्यामहे | उ. |
| लोट् | पचतु-तात् | पचताम् | पचन्तु | प्र. |
| | पच-तात् | पचतम् | पचत | म. |
| | पचानि | पचाव | पचाम | उ. |
| आत्मने. | पचताम् | पचेताम् | पचन्ताम् | प्र. |
| | पचस्व | पचेथाम् | पचध्वम् | म. |
| | पचै | पचावहै | पचामहै | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लङ् | अपचत् | अपचताम् | अपचन् | प्र. |
| | अपच: | अपचतम् | अपचत | म. |
| | अपचम् | अपचाव | अपचाम | उ. |
| आत्मने. | अपचत | अपेताम् | अपचन्त | प्र. |
| | अपचथा: | अपेथाम् | अपचध्वम् | म. |
| | अपचे | अपचावहि | अपचामहि | उ. |
| वि. लि. | पचेत् | पचेताम् | पचेयु: | प्र. |
| | पचे: | पचेतम् | पचेत | म. |
| | पचेयम् | पचेव | पचेम | उ. |
| आत्मने. | पचेत | पचेयाताम् | पचेरन् | प्र. |
| | पचेथा: | पचेयाथाम् | पचेध्वम् | म. |
| | पचेय | पचेवहि | पचेमहि | उ. |
| आ. लि. | पच्यात् | पच्यास्ताम् | पच्यासु: | प्र. |
| | पच्या: | पच्यास्तम् | पच्यास्त | म. |
| | पच्यासम् | पच्यास्व | पच्यास्म | उ. |
| आत्मने. | पक्षीष्ट | पक्षीयास्ताम् | पक्षीरन् | प्र. |
| | पक्षीष्ठा: | पक्षीयास्थाम् | पक्षीध्वम् | म. |
| | पक्षीय | पक्षीवहि | पक्षीमहि | उ. |
| लुङ् | अपाक्षीत् | अपाक्ताम् | अपाक्षु: | प्र. |
| | अपाक्षी: | अपाक्तम् | अपाक्त | म. |
| | अपाक्षम् | अपाक्ष्व | अपाक्ष्म | उ. |
| आत्मने. | अपक्त | अपक्षाताम् | अपक्षत | प्र. |
| | अपक्था: | अपक्षाथाम् | अपग्ध्वम् | म. |
| | अपक्षि | अपक्ष्वहि | अपक्ष्महि | उ. |
| लृङ् | अपक्ष्यत् | अपक्ष्यताम् | अपक्ष्यन् | प्र. |
| | अपक्ष्य: | अपक्ष्यतम् | अपक्ष्यत | म. |
| | अपक्ष्यम् | अपक्ष्याव | अपक्ष्याम | उ. |
| आत्मने. | अपक्ष्यत | अपक्ष्येताम् | अपक्ष्यन्त | प्र. |
| | अपक्ष्यथा: | अपक्ष्येथाम् | अपक्ष्यध्वम् | म. |
| | अपक्ष्ये | अपक्ष्यावहि | अपक्षयामहि | उ. |

**कर्मणि**—पच्यते। **णिचि**—पाचयति-ते। **सनि**—पिपक्षति-ते। **यङि**—पाचच्यते। **यङ्लुकि**—पापक्ति-पापचीति। **कृत्सु**—पाचक:-चिका, **णिचि**—पाचक:-चिका, पिपक्षक:[1]-क्षिका, पापचक:[2]-चिका, पक्ता[3]-त्री, पाचयिता-त्री, पिपक्षिता-त्री, पापचिता-त्री, पचन्-न्ती, पाचयन्-न्ती, पिपक्षन्-न्ती, प्रणिपक्ष्यन्[4]-प्रनिपक्ष्यन्-न्ती-ती, पाचयिष्यन्-न्ती-ती, पिपक्षिष्यन्-

१ सन्नन्ताण्ण्वुलि, 'चो: कु:' (८-२-३०) इति कुत्वे, षत्वे, च रूपम्। एवं सन्नन्ते सर्वत्र ज्ञेयम्।

२ यङन्ते सर्वत्र, 'दीर्घोऽकित:' (७-४-८३) इत्यभ्यासदीर्घ:।

३ तृचादिषु सर्णत्र 'चो: कु:' (८-२-३०) इति कुत्वं ज्ञेयम्।

४ 'लृट् शेषे च' (३-३-१३) इति लृडत्र भविष्यति काले 'पक्ष्यामीति व्रजति' इत्यर्थ:। शेषे विभाषा (८-४-१८) इति नेर्णत्वविकल्प:।

न्ती-ती, पचमानः, पाचयमानः, पिपक्षमाणः, पापच्यमानः, पक्ष्यमाणः, पाचयिष्यमाणः, ओदनपक्[१]-पचौ-पचः, पक्वम्[२]-पक्वः-पक्वान्, प्रपक्वानि[३] (फलानि), पाचितः, पिपक्षितः, पापचितः-तवान्, पचः,[४] श्वपचः,[५] श्वपाकः[६]-मांसपाकः, ओदनपाचः, कपोतपाकः, दूरेपाकः[७]-अक्षेपाकः-फलेपाकः, क्षणेपाकः-का, दूरेपाकुः[८]-फलेपाकुः, उत्पचिष्णुः[९], पचेलिमाः,[१०] (शालयः), किम्पचानः,[११] पेचिवान्,[१२] पाचः, पिपक्षुः, पापचः, पक्तव्यम्, पाचयितव्यम्, पिपक्षितव्यम्, पापचितव्यम्, पचनीयम्, पाचनीयम्, पिपक्षणीयम्, पापचनीयम्, पाक्यम्,[१३] कृष्टपच्यम्, कृष्टपाक्यम्,[१४] अवश्यपाक्यम्,[१५] पाच्यम्, पच्यमानः, पाकयमानः, पिपक्ष्यमाणः, पापच्यमाणः, पाकः,[१६] पक्त्रिमम्,[१७] पाचः, पिपक्षः, पापचः, पक्तुम्, पाचयितुम्, पिपक्षितुम्, पाचितुम्, पचा,[१८] पक्तिः,[१९] पाचिका,[२०] पाचना, पिपक्षा, पापचा, पचनम्, पाचनम्, पक्त्वा, पाचयित्वा, पिपक्षित्वा, पापचित्वा, विपच्य, प्रापच्य।

---

१ आदेनं पचतीति ओदनपक्। 'क्विप् च' (३-२-७६) इति कर्मण्युपपदे क्विप्। 'अनुनासिकस्य क्विझलोः—' (६-४-१६) इत्यत्र काशिकायामुदाहृतमेवम्

२ 'पचो वः' (८-२-५२) इति निष्ठातकारस्य ककारः। वकारस्यासिद्धत्वात् झल्परत्वम्। तेन, 'चोः कुः' (८-२-३०) इति कुत्वं भवतीति ज्ञेयम्।

३ 'प्रपक्वानि' इत्यत्र 'कुमति च' (८-४-१३) इति प्राप्तं णत्वम्, युवादीनां प्रतिषेधः' (वा. ८-४-११) इत्यनेन न भवति।

४ 'नन्दिग्रहिपचादिभ्यः—' (३-१-१३४) इतिं अच् प्रत्ययः।

५ पचादिषु (३-१-१३४) पाठादत्र कर्मण्यण बाधित्वा कर्तरि अच् प्रत्ययः।

६ 'अणपीष्यते' इति क्षीरतरङ्गिण्यलुक्तः। तदानीमत्र कुत्वं न्यङ्क्वादित्वात् ज्ञेयम्।

७ अत्र सर्वत्र, पचादिषु पाठादचि, वृद्धौ तथा न्यङ्क्वादिषु (७-३-५३) पाठात् कुत्वे च रूपम्।

८ न्यङ्क्वादिषु (७-३-५३) पाठात् कुत्वम्, पचादिष्वेव पाठादुप्रत्ययश्च।

९ 'अलङ्कृञ् निराकृञ्प्रजनोत्पच—' (३-२-१३६) इत्यादिना तच्छीलादिषु कर्तृषु इष्णुच् प्रत्ययः।

१० 'केलिमर उपसंख्यानम्' (वा. ३-१-९६) इति केलिमर् प्रत्यये रूपम्। कर्मकर्तर्येवार्यप्रत्यय इति वृत्तिकारादयः। अविशेषात् भावकर्मणोरेवेति दीक्षितादयः।

११ किम्शब्दे उपपदे, 'ताच्छील्यवयोवचनशक्तिषु चानश्' (३-२-१२९) इति चानशि, बाहुलकात् मुमागमाभाव इति अमरव्याख्यायां भानुजीदीक्षितः।

१२ कर्तरि लिटः क्वसौ, 'वस्वेकाजाद् घसाम्' (७-२-६७) इतीडागमे, 'अत एकहल्मध्येऽनादेशादेर्लिटि' (६-४-१२०) इत्येत्वाभ्यासलोपयो रूपम्।

१३ निष्ठायामस्य धातोरनिट्त्वेन ण्यति, 'चजोः कु घिण्ण्यतोः (७-३-५२) इत्यनेन कुत्वम्।

१४ 'राजसूर्यमृषोद्यरुच्यकृष्टपच्याव्यथ्याः' (३-१-११४) इत्यनेन यत्प्रत्यये कर्मकर्तरि कृष्टपच्यः इति निपात्यते। कृष्टे ये स्वयमेव पच्यन्ते केचन व्राहिविशेषाः ते कृष्टपच्याः। अन्यत्र कृष्टपाक्यः इत्येव।

१५ 'ण्य आवश्यके' (७-३-६५) इति निषेधात् आवश्यकार्ये तु ण्यत्प्रत्यये कुत्वं न भवति।

१६ घञि, 'चजोः कु—' (७-३-५२) इति कुत्वम्।

१७ 'ड्वितः क्त्रिः' (३-३-८८) इति क्त्रि प्रत्यये 'तेन' इत्यधिके निकृतार्थे। 'क्त्रेर्मम्नित्यम्' (४-४-२०) इति नित्यं मप् प्रत्यये रूपम्।

१८ षित्वात् 'षिद् भिदादिभ्यः—' (३-३-१०४) इत्यङ् भवति।

१९ 'स्थागापापचो भावे' (३-३-९५) इति वचनात् पक्षे क्तिन्नपि भावे भवति।

२० 'पर्यायार्हर्णोत्पत्तिषु ण्वुच्' (३-३-१११) इति ऋणे ण्वुच्। शायिकाऽद्य तव प्रापदर्हसि क्षीरपायिकाम्। पाचिका मे त्वया देया प्रोत्पन्ना मेऽन्नभोजिका। इति (प्र. सर्वस्वे)।

**( ९९७ ) षच (सच)** —समवाये। (अच्छी तरह समझना, सम्बन्धी होना, संसर्गी होना)। सकर्म.। अनिट्। उभय.। सचति-ते। 'पचति' (९९६) वत्।

**( ९९८ ) भज—सेवायाम्।** (भजना, भजन करना)। सक.। अनिट्। उभय.।

१ भजति-ते। २ **प्र.** बभाज भेजतुः भेजुः। **म.** भेजिथ-बभक्थ भेजथुः भेज। **उ.** बभाज-बभज भेजिव भेजिम। **आ.प्र.** भेजे भेजाते भेजिरे। ३ भक्ता। ४ भक्ष्यति-ते। ५ भजतु-तात् भजताम्। ६ अभजत-त। ७ भजेत्-त। ८ भज्यात्। **आ.-प्र.** भक्षीष्ट भक्षीयास्ताम् भक्षीरन्। **म.** भक्षीष्ठाः भक्षीयास्थाम् भक्षीध्वम्। **उ.** भक्षीय भक्षीवहि भक्षीमहि। ९ **प्र.** अभाक्षीत् अभाक्ताम् अभाक्षुः। **म.** अभाक्षीः अभाक्तम् अभाक्त। **उ.** अभाक्षम् अभाक्ष्व अभाक्ष्म। **आ.-प्र.** अभक्त अभक्षाताम् अभक्षत। **म.** अभक्थाः अभक्षाथाम् अभग्ध्वम्। **उ.** अभक्षि अभक्ष्वहि अभक्ष्महि। १० अभक्ष्यत्-त।

**कर्मणि**—भज्यते। **णिचि**—भाजयति-ते। **सनि**—बिभक्षति-ते। **यङि**—बाभज्यते। **यङ्लुकि**—बाभजीति-बाभक्ति। **कृत्सु**—भाजकः-जिका, बिभक्षकः[१]-क्षिका, बाभजकः[२]-जिका, भक्ता[३]-भक्त्री, भाजयिता-त्री, बिभक्षिता-त्री, बाभजिता-त्री, भजन्-न्ती, भाजयन्-न्ती, बिभक्षन्-न्ती, भक्ष्यन्-न्ती, भाजयिष्यन्-न्ती-ती, भजमान, भाजयमानः, बिभक्षमाणः, बाभज्यमानः, भक्ष्यमाणः, भाजयिष्यमाणः, देहभाक्[४]-देहभाग्-देहभाजौ- देहभाजः, विभक्तम्, भक्तवान्, भाजितः, विभक्षितः, बाभजितः-तवान्, भजः, भागी,[५] भक्तम्-[६] भक्तः, राज्यभाक्[७]-प्रभाक्, भेजिवान्[८], भ्राता,[९] धनभाजी,[१०] विभक्तिः,[११] भजमानः,[१२]

१ सन्नन्ताण्वुलि, धातोरनिट्त्वादिडागमाभावे, चत्वषत्वयोश्च रूपम्। एवं सन्नन्ते सर्वत्र प्रक्रिया ज्ञेया।
२ यङन्ते सर्वत्र, अभ्यासे दीर्घः, जश्त्वं चेति ज्ञेयम्।
३ धातोरनिट्त्वात् चत्वे रूपमेवम्। एवं तव्यदादिष्वदि ज्ञेयम्।
४ 'भजो ण्विः' (३-२-६२) इति कर्तरि ण्विप्रत्ययः। प्रत्ययस्य णित्वादुपधावृद्धिः। क्विबादिवदयं प्रत्ययः सर्वलोपी। कर्तरि क्विपोऽपवादोऽयम्।
५ तच्छीलादिषु कर्तृषु, 'सम्पृचानु—' (३-२-१४२) इत्यादिना घिनुण् प्रत्ययः। णित्वादुपधावृद्धिः। घित्वात् 'चजोः कु घिण्ण्यतोः' (७-३-५२) इति कुत्वमिति च ज्ञेयम्।
६ 'आशीरर्थे, क्तिच् क्तौ च संज्ञायाम्' (३-३-१७४) इति संज्ञायां क्तप्रत्ययः। भक्तम् = अन्नम्। भजतीति भक्तम् = उपासकः।
७ 'भजो ण्विः' (३-२-६२) इत्यत्र उपसर्गे सुपि च उपपदे प्रत्ययविधानाश्रयणादत्र, प्रभाक् इत्यत्र च कर्तरि ण्विप्रत्यय इति ज्ञेयम्।
८ कर्तरि भूतसामान्ये लिटः क्वसौ, 'तृफलभजत्रपश्च' (६-४-१२२) इति एत्वाभ्यासलोपयोः 'वस्वेकाजाद्घसाम्' (७-२-६७) इतीडागमे च रूपमेवम्।
९ 'तृन्' (३-२-१३५) इति ताच्छीलिके तृन् प्रत्यये नप्तृनेष्टृ—' (द.उ. २-३) इतिवन्निपातनात् भ्रादेशे च भ्राता इति सिद्धयति मा.धा. वृत्तावुक्तम्।
१० ताच्छीलिके णिनि प्रत्यये रूपमेवम्।
११ 'क्तिच् क्तौ च—' (३-३-१७४) इत्यनेन संज्ञायां क्तिचि रूपम्। विभक्तिः = प्रथमाद्या विभक्तिः। अत्र सूत्रे (३-३-१७४) आशिषि गम्यमान एवं प्रत्यय इत्युक्तम्, अविवक्षितमिति केचित्।
१२ 'ताच्छील्यवयोवचनशक्तिषु—' (३-२-१२९) इत्यनेन ताच्छील्ये गम्ये चानश् प्रत्ययः शित्वाच्छबादिकं भवति।

भाजः, विभक्षुः, बाभजः, भक्तव्यम्, भाजयितव्यम्, भजनीयम्, भाजनीयम्, विभज्यम्,[१] विभाग्यम्,[२] भाज्यम्, विभक्ष्यम्, बाभज्यम्, भज्यमानः, भाज्यमानः, बिभक्ष्यमाणः, बाभज्यमानः, भागः, भगः,[३] भाजः, बिभक्षः, बाभजः, भक्तुम्, भक्तिः,[४] दृढ़भक्तिः, भाजना, विभक्षा, बाभजा, भजनम्[५], भाजनम्, बिभक्षणम्, बाभजनम्, भक्त्वा, भाजयित्वा, विभज्य, विभाज्य।

**(९९९) रञ्ज—रागे**। (रंग देना। रंगना)। **अनु**—किसी वस्तु में अनुरक्त होना, मोहित होना, **वि-अप**—विरक्त होना, तिरस्कार करना। अक.। अनि.। उभय.।

रञ्जेश्च। इति शपि नकार लोपः। १ रजति-ते। २ **प्र.** ररञ्ज ररञ्जतुः ररञ्जुः। **म.** ररञ्जिथ-ररङ्क्थ। **उ.** ररञ्जिव। **आ. प्र.** ररञ्जे। **म.** ररञ्जिषे। **उ.** ररञ्जिवहे। ४ रङ्क्ता। ४ रङ्क्ष्यति-ते।५ रजतु-तात्।६ अरजत्-त।७ रजेत्-त।८ रज्यात्-रङ्क्षीष्ट।९ **प्र.** अराङ्क्षीत् अराङ्क्ताम् अराङ्क्षुः। **आ.** अरङ्क्त दशमो लुङ्। **झलो झलि**। इति सलोपः। अरङ्क्षाताम् अरङ्क्षत। १० अरङ्क्ष्यत्-त।

**भावे**—रज्यते। **णिचि**—रञ्जयति रजयति। '**रञ्जेर्णौ मृगरमणे**' इति न लोपः। **सनि**—रिरङ्क्षति-ते। **यङि**—रारज्यते। **यङ्लुकि**—रारञ्जीति-रारङ्क्ति। **कृत्सु**—रञ्जकः[६]-ज्जिका, **णिचि**—रञ्जकः-रञ्जिका, रजकः-जिका, रिरङ्क्षकः[७]क्षिका, रारजकः[८]-जिका, रङ्क्ता-रङ्क्त्री, रञ्जयिता-रजयिता-त्री, रजन्[९]-रञ्जयन्-न्ती, रञ्जयिष्यन्-रजयिष्यन्-न्ती-ती, रजमानः, रञ्जयमानः, रजयमानः, रिरङ्क्षमाणः, रारज्यमाणः, रङ्क्ष्यमाणः, रञ्जयिष्यमाणः, रजयिष्यमाणः, अनुरक्[१०]-अनुरग्-अनुरजौ-अनुरजः, रक्तम्-रक्तः-रक्तवान्, विरक्तः,[११]

---

१ 'द्विवचनविभज्योपपदे—' (३-३-५७) इति सूत्रे विभज्य इतिं निर्देशात् हलन्तलक्षणण्यपवादो यत् प्रत्ययोऽत्रेति ज्ञेयम्।

२ 'अवाधकान्यपि निपातनानि' (परिभाषा १२०) इति दर्शने ण्यत् प्रत्यये कुत्वे च रूपमेवम्। विभाज्यम् इति कुत्वाभावरूपं तु सर्वथा अप्रमाणिकमेव। स्पष्टमिदं प्रकृतसूत्रे (५-३-५७) पदमञ्जर्याम् उद्योते च।

३ 'खनो घ च' (३-३-१२५) इत्यत्र चकाराद् धात्वन्तेभ्योऽपि घप्रत्ययो भवतीत्यतोऽत्र घप्रत्यये, घित्वेन कुत्वे च रूपमेवम्। 'तृद्भग—' (७-३-१९) इत्यत्र 'भग—' इति निर्देश एवात्र निदानम्।

४ भजनम् = भक्तिः। भावे क्तिन्। दृढभक्तिरित्यत्र दृढा भक्तिरस्येति विग्रहे 'स्त्रियाः पुंवत्—' (६-३-३४) इति पूर्वपदस्यं पुंवद् भावे रूपमेवम्। प्रियादिषु (६-३-३४) कर्मसाधनस्यैव भक्तिशब्दस्य पाठः, न तु भावसाधनस्य। अतः पुंवद्भावः कथमत्रेति न शङ्क्यम्।

५ ल्युटि, अनादेशे रूपमवेम्। स्त्रियां टित्वेन ङीपि भजनी इत्येव भवति। भजना इति टाबन्तप्रयोगे लोके दृश्यते। तस्य शास्त्रं मृग्यमेव। ण्यन्तात् स्त्र्यधिकारीये युच् प्रत्ययेऽपि भाजना इत्येव स्यात्, न तु भजना इति।

६ 'नकारजावनुस्वारपञ्चमौ झलि धातुषु।' इत्यभियुक्ते यं धातुरुपदेशे नकारोपधः। सन्धिवशाच्चकार इति बोध्यम्।

७ सन्नन्ते सर्वत्र धातुजकारस्य कुत्वेन गकारे, उपधानकारस्यानुस्वारपरसवर्णयोः, सनः सकारस्य षकारे, चर्त्वे च रूपमेवम्।

८ यङ्निमित्तक उपधानकारलोपे, अभ्यासे दीर्घे च रूपमेवम्।

९ शतरि शपि, 'रञ्जेश्च' (६-४-२६) इत्युपधानकारलोपः।

१० क्विपि, उपधानकारलोपे कुत्वे चर्त्वविकल्पे च रूपमेवम्।

११ विरक्तः, रक्तम् इत्यत्र 'क्तिच्क्तौ च संज्ञायाम्' (३-३-१७४) इति संज्ञायां क्तः।

रञ्जितः-रजितः, रञ्जः, रागी, रञ्जनः, मनोऽनुरञ्जनः, रजकः[१]-रजकी, रज्यन्[२]-न्ती-ती, रज्यमानः, रञ्ज-रजः, रिरङ्क्षुः, रिरञ्जयिषुः-रिरजयिषुः, रारञ्जनः, रक्तव्यम्, रञ्जयितव्यम्, रजयितव्यम्, रञ्जनीयम्, रञ्जनीयम्-रजनीयम्, रङ्ग्यम्[३], रञ्ज्यम्-रज्यम्, रज्यमानः[४], रञ्जयमानः-रज्यमानः, विरागः[५]-वैरङ्गिकः-आश्चर्योरागः,[६] रङ्गः,[७] रञ्जः-रजः, रङ्क्तुम्, रञ्जयितुम्-रजयितुम्, विरक्तिः, रञ्जना-रजना, रिरङ्क्षा, रिरञ्जयिषा-रिरजयिषा, रारजा, रञ्जनम्, रञ्जनम्-रञ्जनी, रजनम्-रजनी, रक्त्वा, रञ्जयित्वा-रजयित्वा, विरज्य, विरञ्ज्य-विरजय्य,[८] रजकः[९]-रजकी, रजनः[१०]-रजनी, रजतम्,[११] रजः[१२]।

**( १००० ) शप—आक्रोशे**। (शपथ करना, सौगन्ध खाना, प्रतिज्ञा करना, श्राप देना, गाली देना)। सक.। अनि.। उभय.।

१ शपति-ते। २ **प्र.** शशाप शेपतुः शेपुः। **म.** शेपिथ शशप्थ। **उ.** शशाप-शशप, शेपिव, शेपमिम। शप्ता। शप्स्यति-ते। शेपिभ। **आ.**—शेपे शेपाते। ३ शप्ता। ४ शप्स्यति-ते। ५ शप्यतु-तात्। शप्यताम्। ६ अशप्यत्-त। ७ शप्येत्-त। ८ शप्यात् शप्यस्ताम्-शप्सीष्ट शप्सीयास्ताम्। अशाप्सीत् अशाप्ताम् अशाप्सुः। अशप्त अशप्साताम् अशप्सत।

**कर्मणि**—शप्यते। **णिचि**—शापयति-ते। **सनि**—शिशप्सति-ते। **यङि**—शाशप्यते। **यङ्लुकि**—शाशपीति-शाशप्ति। **कृत्सु**—शप्तव्यम्, शपनीयम्, शाप्यम्, शप्तः, शप्तवान्,

१ 'शिल्पिनि ष्वुन्' (३-१-१४५) इत्यत्र, 'नृपतिखनिरञ्जिभ्य इति वक्तव्यम्' इति भाष्यात् कर्तरि ष्वुन्।

२ कुषिरचोः प्राचां श्यन् परस्मैपदं च' (३-१-९०) इति कर्मकर्तरि विकल्पेन श्यन् प्रत्ययः परस्मैपदं च। यगात्मनेपदयोरपवादौ। एतच्च व्यवस्थिता विभाषेति काशिकादिषु स्पष्टम्। श्यनः अपित् सार्वधातुकत्वेन ङिद् वद् भावः तेन 'अनिदिताम्—' (६-४-२४) इति उपधानकारलोपः स्त्रियाम् 'आच्छीनद्योर्नुम्' (७-१-८०) इति नुम् विकल्पः।

३ 'निष्ठयाम् अनिट्त्वात् ण्यति', चजोः कु घिण्ण्यतोः (७-३-५२) इति कुत्वे रूपमेवम्।

४ रगात्मनेपदयोरपवादत्वेन श्यन् परस्मैपदयोर्विहितयोरपि, 'कुषि रजोः प्राचाम्—' (३-१-९०) इत्यत्र 'प्राचां' ग्रहणात् पक्षे यगात्मनेपदे भवत इति रूपस्यापि साधुत्वं बोध्यम्।

५ विपूर्वकादस्माद् भावे घञि, 'घञि च भावकरणयोः' (६-४-२७) इति उपधानकारलोपे, 'अत उपधायाः' (७-२-११६) इत्युधाभूताकारस्य वृद्धौ, 'चजोः—' (७-३-५२) इति कुत्वे च विरागः इति जायते।

६ रज्यतेऽनेनेति रागः करणे घञि 'घञि च भावकरणयोः' (६-४-२७) इत्युधानकारलोपे, उपधाभूताकारस्य वृद्धौ कुत्वे च रूपमेवम्।

७ रञ्जयति प्रेक्षकाणां मनांस्यत्रेत्यर्थेऽन्तर्भावितण्यर्थाद्धातोरधिकरणे घञि कुत्वे रूपमेवम्। रङ्ग = नाटकादीनां प्रेक्षणस्थानम्।

८ ण्यन्तात् क्त्वो ल्यपि मृगरमणार्थे नकारलोपे, मित्वसंज्ञकत्वात् उपधाह्रस्वे च 'ल्यपि लघुपूर्वात्' (६-४-५६) इति णेरयादेशे रूपमेवम्।

९ 'क्वुन् शिल्पिसंज्ञयोरपूर्वस्यापि' (द.उ. ३-५) इति क्वुन् प्रत्ययः। प्रत्ययस्य कित्वादुपधानकारस्य लोपः।

१० 'रजः क्युन्' (द.उ. ५-२४) इति क्युन् प्रत्ययः। रजति रज्यतेऽवा नैनेति रजनः = रजकः रागश्च। 'स च बाहुलकात् टिद् द्रष्टव्यः इति कैयटोक्तेः (६-४-२४) स्त्रियां ङीपि रजनी रात्रिः हरिद्रा च।

११ पृषिरञ्जिभ्यां कित् (द.उ. ६-१५) इति अतच् प्रत्यये कित्वेनानुनासिकं च रूपम्। रजन्तेऽस्मिन् जना इति रजतम् = लोहविशेषः।

१२ 'भूरञ्जिभ्यां कित्' (द.उ. ९-७६) इत्यसुन् प्रत्ययः. स च किच्च भवति। रजः = अशुमम्, रेणुश्च।

शपन्, शपमानः, शप्तुम्, शपनम्, शापः, अभिशापः, शप्त्वा, संशाप्य, शपथार्थोयमात्मनेपदी। शपते। शापकः-पिका, शिशप्सकः-सिका, शाशपः-पिका, शप्ता-त्री, शापयिता-त्री, शिशप्सिता-त्री, शाशपिता-त्री, शप्यन्-न्ती, शापयन-न्ती, शिशप्सन्-त्री, शापयन्-न्ती, शापयिष्यन्-न्ती-ती, शाप्यम्[१] शपथः[२] शब्दः[३], शबलः[४] शप्वः[५]।

**(१००१) त्विष—दीप्तौ**। (प्रकाशित होना, चमकना) अक.। अनिट्। उभय.। त्वेषति-ते। २ तित्वेष-तित्विषे। ३ त्वेष्टा। ४ त्वेक्ष्यति-ते। ८ विष्यात्-त्विक्षीष्ट। ९ अत्विक्षत्-त।

**(१००२) यज—देवपूजासङ्गतिकरणदानेषु**। (यज्ञ करना, हवन करना, देवपूजा करना, संगति करना, देना)। सक.। अनि.। उभय.।

१ यजति-ते। २ **प्र.** इयाज ईजतुः ईजुः। **म.** इयजिथ-इयष्ठ ईजथुः ईज। **उ.** इयाज-इयज ईजिव ईजिम। **आ. प्र.** इजे इजाते ईजिरे। **म.** ईजिषे ईजाथे ईजिध्वे। **उ.** ईजे ईजिवहे ईजिमहे। ३ **प्र.** यष्टा यष्टारौ यष्टारः। ४ यक्ष्यति-ते यक्ष्यतः यक्ष्यन्ति। ५ यजतु-तात् यजताम्। ६ अयजत्-त। ७ यजेत्-त। ८ इज्यात् इज्यास्ताम् इज्यासुः। **आ. प्र.** यक्षीष्ट यक्षीयास्ताम् यक्षीरन्। **म.** यक्षीष्ठाः यक्षीयास्थाम् यक्षीध्वम्। **उ.** यक्षीय यक्षीवहि यक्षीमहि। ९ **प्र.** अयाक्षीत् अयाष्टाम् अयाक्षुः। **म.** अयाक्षीः अयाष्टम् अयाष्ट। **उ.** अयाक्षम् अयाक्ष्व अयाक्ष्म। **आ. प्र.** अयष्ट अयक्षताम् अयक्षत। **म.** अयष्ठाः अयक्षाथाम् अयड्ढ्वम्। **उ.** अयक्षि अयक्ष्वहि अयक्ष्महि। १० अयक्षत्-त।

**कर्मणि**—इज्यते। **णिचि**—याजयति-ते। **सनि**—यियक्षति-ते। **यङि**—यायज्यते। **यङ्लुकि**—यायाजीति यायाष्टि। **कृत्सु**—याजकः-जिका, **णिचि**—याजकः-जिका, यियक्षकः[६] -क्षिका, यायजकः-जिका, याष्ट्रा[७]-याष्ट्री, याजयिता-त्री, यियक्षिता-त्री, यायजिता-त्री, यजन्-न्ती, याजयन्-न्ती, यियक्षन्-न्ती, यक्ष्यन्-न्ती-ती, याजयिष्यन्-न्ती-ती, यजमानः, याजयमानः, यियक्षमाणः, यायज्यमाणः, यक्ष्यमाणः, याजयिष्यमाणः, देवेट्[८]-देवेड्- देवेजौ-देवेजः, इष्टम्[९]-

१ 'पोरदुपधात्' (३-१-९८) इति ण्यदपवादो यत् प्रत्ययः।
२ 'शीङ्शपि–' (द.उ. ६-३८) इत्यथप्रत्ययः। शपथः = प्रतिज्ञा।
३ 'शाशपिभ्यां–' (द.उ. ६-४८) इति दन् प्रत्ययः। 'शब्दवैर–' (३-१-१७) इति निपातनात् पकारस्य दकारः।
४ 'शपेर्वश्च' (द.उ. ८-१०८) इति कलप्रत्ययः पकारस्य वकारश्च।
५ 'शपेर्वन्' (द.उ. ८-१३१) इति वन् प्रत्ययः। शप्यते इति शप्वः = आक्रोशः।
६ सनन्ते सर्वत्र, 'व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयज–' (८-२-३६) इति षत्वे, 'षढोः कः सि' (८-२-४१) इति ककारे, षत्वे च रूपमेवम्।
७ तृजादिषु, 'व्रश्च–' (८-२-३६) इति षत्वे, ष्टुत्वे च रूपम्। एवं तव्यदादिष्वपि प्रक्रिया ज्ञेया।
८ देवान् यजतीति देवेट्। कर्मण्युपपदे, 'क्विप्' (३-२-७६) इति 'वचिस्वपियजादीनां किति' (६-१-१५) इति यकारस्य सम्प्रसारणे, 'सम्प्रसारणाच्च' (६-१-१०८) इति पूर्वरूपे, जश्त्वे च रूपमेवम्।
९ निष्ठायाम् यजादित्वेन सम्प्रसारणे पूर्वरूपे, षत्वे ष्टुत्वे च रूपमेवम्। 'इष्टादिभ्यश्च' इतीन् प्रत्यये इष्टी इति रूपम्। एवमेव क्त्वाप्रभृतीष्वपि प्रक्रिया ज्ञेया।

इष्टः, इष्टवान्-इष्टी, याजितः, याजः, सोमयाजी[१]-हविर्याजी, यज्वा[२], यजमानः[३] ऋत्विक्,[४] उपयट्,[५] साधुयाजी,[६] याजः, यियक्षुः, यायजूकः,[७] यायजः, यष्टव्यम्, याजयितव्यम्, यजनीयम्, याजनीयम्, याज्यम्,[८] देवयज्या,[९] याज्या, याज्यम्, इज्यमानः,[१०] याज्यमानः, यागः,[११] अनुयागः-प्रयागः, प्रयाजः[१२]-अनुयाजः, उपांशुयाजः[१३]-पत्नीसंयाजः, यज्ञः,[१४] याजः, यष्टुम्, यष्टुं,[१५] याजको। (वा याति) याजयितुम्, इष्टिः[१६]-इज्या,[१७] यष्टिः,[१८] याजना, यजनम्, याजनम्, इष्ट्वा, याजयित्वा, अन्विज्य, प्रयाज्य, यजेणुः,[१९] यज्युः,[२०] यजत्रम्,[२१] यजुः[२२]।

**(१००३) डुवप्**—बीजसन्ताने। छेदनेऽपि। (बीज बोना, बोना, अन्नादि काटना, केश काटना)। सक.। अनि.। उभय.।

---

१ 'भूते' (३-२-८४) इत्यधिकारे 'करणे यजः' (३-२-८५) इति णिनिप्रत्यये रूपमेवम्। सोमेन इष्टवान् सोमयाजी। एवमेव अग्निष्टोमयाजी इत्यादिसिद्धिर्ज्ञेया।

२ भूतार्थे सुयजो ङ्वनिप् (३-२-१०३) इति ङ्वनिप् प्रत्यये प्रथमेकवचने उपधादीर्घे नकार लोपे च यज्वा इति रूपम्।

३ तच्छीलादिषु कर्तृषु 'पूङ् यजोः शानच्' (३-२-१२८) इति शानच् प्रत्ययः शित्वात् शपि, 'आने मुक्' (७-२-८२) इति मुगागमे, यजमानः इति रूपम्।

४ ऋतौ यजते, ऋतुं यजते, ऋतु प्रयुक्तो व यजतीत्यर्थे धातोरस्मात् ऋतुशब्द उपपदे, 'ऋत्विक्-' (३-२-५९) इत्यादिना क्विन्। सम्प्रसारणे, पूर्वरूपे च कृते, निपातनात्, व्रश्चादिषत्वापवादतया 'क्विन् प्रत्ययस्य कुः' (८-२-६२) इति कुत्वे च 'ऋत्विक्' इति रूपम्।

५ 'विजुपे छन्दसि' (३-२-७३) इति छन्दसि विषये उपेपपदे धातोरस्य विच् प्रत्यये षत्वे जश्त्वे च रूपमेवम्।

६ 'साधुकारिण्युपसंख्यानम्' (वा. ३-२-७८) इति णिनिप्रत्यये रूपमेवम्।

७ 'यजजपदशां यङ्' (३-२-१६६) इति यङन्तादूक् प्रत्यये, 'दीर्घोऽकितः' (७-४-८३) इत्यभ्यासदीर्घे च रूपम्।

८ ण्यति, 'यजयाचरुच–' (७-३-६६) इति कुत्व निषेधः।

९ देवशब्द उपपदे छन्दसि विषये कर्मणि यत् प्रत्यये रूपमेवम्। निपातनात् स्त्रीलिङ्गत्वम्।

१० कर्मणि, यगन्ताच्छानचि सम्प्रसारणे पूर्वरूपे च रूपम्।

११ 'हलश्च' (३-३-१२१) इति संज्ञायां घञि, 'चजोः कु घिण्ण्यतोः' (७-३-५२) इति कुत्वे च रूपमेवम् अनुयागः = भोजनम्, उपसर्गवशाद्धातोरर्थान्तरे वृत्तिः। प्रयागः = क्षेत्रविशेषः। अत्र सङ्गतिकरणं धातोरर्थः। नदीत्रयसङ्गतिकरणं ह्यत्र देशे वदन्ति।

१२ घञि, 'प्रयाजानुयाजौ यज्ञाङ्गे' (७-३-६२) इति निपानात् यज्ञाङ्गविषये कुत्वं न। पञ्च प्रयाजाः। त्रयोऽनुयाजा। 'उपसर्गस्य घञि–' (६-३-१२२) इति दीर्घे अनुयाज इत्यपि भवति।

१३ प्रयाजानुयाजग्रहणं प्रदर्शनार्थम् अन्यत्रापि एवं प्रकारे कुत्वं न भवति। 'एकादश उपयाजाः' उपांशुयाजमन्तरा यजति' 'अष्टौ पत्नीसंयाजा भवन्ति' 'ऋतुयाजैश्चरन्ति' इत्येवमादि सिद्ध भवति।'

१४ भावे 'यजयाच–' (३-३-९०) इत्यादिना नङ् प्रत्यये, जकारस्य श्चुत्वे च रूपमेवम्।

१५ तुमुन्ण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम्' (३-३-१०) इति क्रियार्थक्रियायां तुमुन् ण्वुल् च भवतः। यष्टुं याति = यगाय यातीत्यर्थः।

१६ 'श्रुयजीषिस्तुभ्यः–' (वा. ३-३-९५) इति करणे क्तिन् प्रत्यये सम्प्रसारणादिके च रूपम्।

१७ 'व्रजयजोर्भावे क्यप्' (३-३-९८) इति स्त्रियां भावे क्यपि, कित्वेन सम्प्रसारणादिकेषु चैव रूपम्।

१८ बाहुलकात् औणादिके (द.उ. १-७४) ति प्रत्यये रूपमेवमिति क्षीरतरङ्गिणी।

१९ बाहुलकादौणादिके (द.उ. (१-१३३) एणुप्रत्यये रूपम्। यजेणुः = याजकः, ऋत्विक्।

२० 'यजिमनि–' (द.उ. १-१३४) इति युच् प्रत्यये, प्रत्ययस्यानुनासिकत्वेनानादेशाभावे च रूपम्। यज्युः = अध्वर्युः।

२१ 'अभिनक्षियजि–' (द.उ. ८-५६) इत्यत्रन् प्रत्ययः। इज्यन्तेऽस्मिन् देवता इति यजत्रम् = यज्ञस्थानम्। अग्निहोत्रमिति केचित्।

२२ 'अर्तिपृवपियजि–' (द.उ. ९-३९) इत्युसि प्रत्ययः। यजुः = वेदः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | वपति | वपतः | वपन्ति | प्र. |
| | वपसि | वपथः | वपथ | म. |
| | वपामि | वपावः | वपामः | उ. |
| लिट् | उवाप | ऊपतुः | ऊपुः | प्र. |
| | उवपिथ-उवाथ | ऊपथुः | ऊप | म. |
| | उवाप-उवप | ऊपिव | ऊपिम | उ. |
| लुट् | वप्ता | वप्तारौ | वप्तारः | प्र. |
| | वप्तासि | वप्तास्थः | वप्तास्थ | म. |
| | वप्तास्मि | वप्तास्वः | वप्तास्मः | उ. |
| लृट् | वप्स्यति | वप्स्यतः | वप्स्यन्ति | प्र. |
| | वप्स्यसि | वप्स्यथः | वप्स्यथ | म. |
| | वप्स्यामि | वप्स्यावः | वप्स्यामः | उ. |
| लोट् | वपतु-वपतात् | वपताम् | वपन्तु | प्र. |
| | वप-वपतात् | वपतम् | वपत | म. |
| | वपानि | वपाव | वपाम | उ. |
| लङ् | अवपत् | अवपताम् | अवपन् | प्र. |
| | अवपः | अवपतम् | अवपत | म. |
| | अवपम् | अवपाव | अवपाम | उ. |
| वि.लि. | वपेत् | वपेताम् | वपेयुः | प्र. |
| | वपेः | वपेतम् | वपेत | म. |
| | वपेयम् | वपेव | वपेम | उ. |
| आ.लि. | उप्यात् | उप्यास्ताम् | उप्यासुः | प्र. |
| | उप्याः | उप्यास्तम् | उप्यास्त | म. |
| | उप्यासम् | उप्यास्व | उप्यास्म | उ. |
| लुङ् | अवाप्सीत् | अवाप्ताम् | अवाप्सुः | प्र. |
| | अवाप्सीः | अवाप्तम् | अपाप्त | म. |
| | अपाप्सम् | अपाप्स्व | अवाप्स्म | उ. |
| लृङ् | अवाप्स्यत् | अवप्स्यताम् | अवप्स्यन् | प्र. |
| | अवप्स्यः | अवप्स्यतम् | अवप्स्यत | म. |
| | अवप्स्यम् | अवप्स्याव | अवप्स्याम | उ. |

**आत्मनेपदे**—१ वपते। २ **प्र.** ऊपे ऊपाते ऊपिरे। **म.** ऊपिषे ऊपाथे ऊपिध्वे। **उ.** ऊपे ऊपिवहे ऊपिमहे। ३ वप्ता। **म.** वप्तासे। ४ वप्स्येत। ५ वपताम्। ६ अवपत। ७ वपेत। ८ **प्र.** वप्सीष्ट वप्सीयास्ताम् वप्सीरन्। **म.** वप्सीष्ठाः वप्सीयास्थाम् वप्सीध्वम्। उ.वप्सीय वप्सीवहि वप्सीमहि। ९ **प्र.** अवप्त अवप्साताम् अवप्सत। **म.** अवप्थाः अवप्साथाम् अवब्ध्वम्-ब्द् ध्वम्। **उ.** अवप्सि अवप्स्वहि अवप्स्महि। १० अपप्स्यत।

**कर्मणि**—उप्यते। **णिचि**—वापयति-ते। **सनि**—विवप्सति-ते। **यङि**—वावप्यते। **यङ्लुकि**—वावपीति-वावप्ति। **कृत्सु**—प्रणिवापकः-पिका, **णिचि**—वापकः-पिका, विवप्सकः-सिका, वावपकः-पिका, प्रणिवप्ता-त्री, प्रणिवयन्-आवपन्-न्ती, वापयन्-न्ती, विवप्सन्-न्ती, वस्यन्-न्ती, वापयिष्यन्-न्ती-ती, विवप्सिष्यन्-न्ती-ती, वपमानः, वापयमानः, वप्स्यमानः, वापयिष्यमाणः, यवोप्,[१] यवोब्-यवोपौ-यवोपः, उप्तम्[२]-उप्तः-उप्तवान्, वापितः, विवप्सितः, वावपितः-तवान्, वपः, वपन्,[३] प्रवापी,[४] धान्यवापी, वापः, विवाप्सुः, वावपः, प्रणिवप्तव्यम्, वापयितव्यम्, प्रणिवपनीयम्, वापनीयम्, वाप्यम्,[५] उप्यमानः, वाप्यमानः, उप्त्रिमम्,[६] वप्तुम्, वापयितुम्, उप्तिः, वपा,[७] वापना, प्रणिवपनम्, वापनम्, उप्त्वा, वापयित्वा, प्रवोप्य, प्रवाप्य, वप्रिः,[८] वपिः,[९] वप्रः,[१०] वपुः[११]।

**(१००४) वह—प्रापणे**। प्रापणे = धारणे। (बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)। सकर्म.। अनि.। उभय.।

१ वहति-ते। २ **प्र.** उवाह ऊहतुः ऊहुः। **म.** उवहिथ-उवोढ। थलि भारद्वाजनियमादिडभावपक्षे ढत्वधत्वष्टुत्वढलोपाः। **सहिवहो** इति ओत्वं च। ऊहथुः। ऊह। **उ.** उवाह उवह ऊहिव ऊहिम। **आत्म.** ऊहे ऊहाते ऊहिरे। ३ वोढा। **साहिवहो**—रिति ओत्वम्। वोढासि-से। **म.** वोढास्मि-वोढाहे। ४ वक्ष्यति-ते। ५ वहतु-ताम्। ६ अवहत्-त। ७ वहेत्-त। ८ उह्यात् उह्यास्ताम्। वक्षीष्ट वक्षीयास्ताम्। ९ **प्र.** अवाक्षीत् अवोढाम् अवाक्षुः। **म.** अवाक्षीः अवोढम्। अवोढ। **उ.** अवाक्षम् अवाक्ष्व अवाक्ष्म। आत्म.। अवोढ अवक्षताम् अवक्षत। **म.** अवोढाः अवक्षाथाम् अवोढ्वम्। **उ.** अवक्षि अवक्ष्वहि अवक्ष्महि। १० अवक्ष्यत्-त।

**कर्मणि**—उह्यते। **णिचि**—वाहयति। **सनि**—विवक्षति-ते। **यङि**—वावह्यते। **यङ्लुकि**—वावहीति-वावोढि। **कृत्सु**—वाहकः-हिका, **णिचि**—वाहकः-हिका,

१ यवान् वपतीत्यर्थः। 'वपोदेस्तु यवोब् विश्वोट् दोषवीश्च पटोत् तुकि।' इति प्रक्रिया सर्वस्वे।
२ निष्ठायां यजादित्वात् 'वचिस्वपि—' (६-१-१५) इति सम्प्रसारणे रूपमेवम् एवं यक्क्त्वाक्तिन्नादिष्वपि।
३ नन्द्यादिषु (३-१-१३४) पाठात् कर्तरि ल्युप्रत्ययः इति केचित्।
४ 'रक्षश्रुवपीनाम्' (वा. ३-१-१३४) इति ग्रहादिपाठाण्णिनिप्रत्ययः।
५ 'आसुयुवपि—' (३-१-१२६) इति ण्यत् प्रत्ययः। पोरदुपधात्' (३-१-९८) इति यतोऽपवादः।
६ ड्वितः क्त्रिः (३-३-८८) इति क्त्रिप्रत्यये 'क्त्रेर्मन्नित्यम्' (४-४-२०) इति नित्यं मप् प्रत्यये च रूपम्।
७ भिदादि (३-३-१०४) पाठात् स्त्रियाम् अङि रूपमेवम्। वपा = नाभे श्वेतं मांसम्।
८ 'वङ् क्रयादयश्च' (द.उ. १-३५) इति क्रिन् प्रत्यये रूपम्। वप्रिः = क्षेत्रम्।
९ वसिवपिवदि— (द.उ. १-५३) इति इञ् प्रत्यये वृद्धौ च रूपमेवम्। वपति अस्यामिति वापिः = पुष्करिणी। कृतसोनकः कूपः।
१० 'वृभिवपिभ्यां रन्' (द.उ. ८-४५) इति रन् प्रत्यये रूपमेवम्। उप्यते स्मिन् बीजमिति वप्रम् = क्षेत्रम् प्राकारजातिर्वा। 'वप्रो स्त्रीसानुमानयोः' इति कोशः।
११ 'अर्तिपृवपियजि—' (द.उ. ९-३९) इति उसि प्रत्ययः। उप्यते प्राक्कर्मभिरिति वपुः = शरीरं तेजश्च।

विवक्षकः-क्षिका, वावहकः-हिका, वोढा[१]-ढ्री, वाहयिता-त्री, विवक्षिता-त्री, वावहिता-त्री, परिवहन्, उद्वहन्-न्ती, व्यतिवहन्-न्ती, वाहयन् भारं देवदत्तेन, वाहयन् यवान् वलिवर्दान्, विवक्षन्-न्ती, वक्ष्यन्-न्ती-ती, वाहयिष्यन्-न्ती-ती, विवक्षिष्यन्-न्ती-ती, वहमानः, वाहयमानः, विवक्षमाणः, वावह्यमानः, वक्ष्यमाणः, वाहयिष्यमाणः, विवक्षिष्यमाणः, वावहिष्यमाणः विश्वोट्,[२] अनड्वान्,[३] अनड्वाहौ-अनड्वाहः। ऊढम्[४]-कल्पनापोढः-प्रौढः[५]-ऊढवान्, वहितः विवक्षितः, वहः[६]-वहनः-वाहः, कूलमुद्वहः,[७] भारवाही,[८] प्रवाहणः, ऋषीवहः,[९] वावहिः, विवक्षुः, वावहः, प्रणिवोढव्यम्, वाहयितव्यम्, प्रणिवहनीयम्,[१०] वाहनीयम्, वह्यम्,[११] (शकटम्), वाह्यम्, उह्यमानः, वाह्यमानः, वहः,[१२] वाहः, परिवाहः, परीवाहः, प्रणिवोढुम्, वाहयितव्यम्, प्रौढिः,[१३] वहा, वाहना, विवक्षा, वावहा, वहनम्, इक्षुवाहणम्,[१४] वाहनम्, उढ्वा, वाहयित्वा, प्रवह्य, प्रवाह्य, पुरुषवाहं[१५] (वहति) वह्निः,[१६] वधूः[१७]।

**(१००५) वस**—निवासे। (निवास करना, टिकना)। सकर्म.। अनि.। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | वसति | वसतः | वसन्ति | प्र. |
| | वससि | वसथः | वसथ | म. |
| | वसामि | वसावः | वसामः | उ. |

१ तृचि, 'वहिवहोरोद् अवर्णस्य' (६-३-११२) इत्युपधाकारस्य ओकारे ढत्वष्टुत्वढलोपदीर्घेषु रूपमवेम्। एव तव्यदादिष्वपि ज्ञेयम्।

२ विश्वं वहतीत्यर्थे क्विपि सम्प्रसारणपूर्वरूपगुणढत्वादिकेषु रूपमेवम्।

३ अनः वहतीत्यर्थे 'अनसि वहेः' इति क्विपि, 'डश्चानसः' (द.उ. ९-१०९) इति अनश्शब्दान्त्यवर्णस्य उकारे रूपमेवम्। 'सावनडुहः' (७-१-८२) इति नुम्।

४ क्तप्रत्यये सम्प्रसारणढत्वष्टुत्वढलोपदीर्घादिषु रूपमेवम्। एवं क्त्वाक्तिन् प्रभृतिषु।

५ 'प्रादूहोढोढ्येषैष्येषु' वा. (६-१-८९) इति वृद्धिः। एवं प्रौढिः इति क्तिन् नन्तेऽपि ज्ञेयम्।

६ वह इत्यत्र पचाद्यच्। वहनः इति तु सारथ्यादिवाचकं पदं 'कृत्यल्युटो बहुलम्' (३-३-११३) इति बहुलग्रहणात् कर्तरि ल्युटि बोध्यम्।

७ कुलमुद् वहतीति वृत्तौ उत्पूर्वात् वहेः 'उदि कूले रुजिवहोः' (३-३-३१) इति खश्। खित्वात् नुम्। शित्वात् शपि तस्य 'अतो गुणे' (६-१-९६) इति पररूपम्।

८ भारं वहतीति भारवाही। णिनि प्रत्ययान्तमिदम्।

९ 'इको वहेऽपीलोः' (६-३-१२१) इति इगन्तस्य पूर्वपदस्य पीलुवर्जितस्य वहे उत्तरपदे दीर्घो भवति।

१० 'नेर्गदनदपत—' (८-४-१७) इत्यादिना उपसर्गस्थात् नेः णत्वं बोध्यम्।

११ वहत्यनेनेति करणार्थे शकटादिके विवक्षिते 'वह्यं करणम्' (३-१-१०२) इति निपातनात् यत्प्रत्ययान्ता। ण्यतोऽपवादः। करणभिन्नयोः भावकर्मणोरर्थयोः विवक्षितयोस्तु वाह्यम् इति ण्यदन्तत्वमेव।

१२ वहन्त्यनेन वलीवर्दादयः भारमिति वहः = स्कन्धः। करणे 'गोचरसञ्चरवह—' (३-३-११९) इति घप्रत्ययान्तो निपातितः। हलन्तलक्षणघञोऽपवादः। वाहः = अश्वः। अत्र तु वहतीति वाहः इति वा, उह्यतेऽनेनेति वा वृत्तिर्बोध्यम्।

१३ प्रौढिरित्यत्र 'प्रादुहोढोढ्येषैष्येषु' (वा. ६-१-८९) इति वृद्धिः। इयं क्तिनन्त एव; क्तिजन्ते नेत्याहुः।

१४ अत्र 'वाहनम् आहितात्' (८-४-८) इति णत्वम्। वाहने यत् आरोपितं तत् आहितम्, उपरि निपतितेक्षुकं वाहनमित्यर्थः। दाक्षिवाहनम् इन्द्रवाहनम् इत्यादिषु तु आहितार्थकत्वाभावात् न णत्वम्।

१५ 'कत्रोर्जीवपुरुषयोर्नशिवहोः' इति कर्तृवाचिनि पुरुषशब्दे उपपदे वहेः णमुल्। पुरुषप्रेष्यो भूत्वा वहतीत्यर्थः।

१६ 'वहिश्रि—' (द.उ. १-२१) इति निप्रत्ययः। वहति उह्यते वा वह्निः = अग्निः।

१७ 'वहेर्धश्च' (द.उ. १-१६६) इति ऊप्रत्ययः, धात्वन्तस्य धकारादेशश्च। वहति गृह्यकार्यमिति वधूः = स्नुषा।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लिट् | उवास | ऊषतुः[१] | ऊषुः | प्र. |
| | उवस्थ-उवसिथ | ऊषथुः | ऊष | म. |
| | उवास-उवस | ऊषिव | ऊषिम | उ. |
| लुट् | वस्ता | वस्तारौ | वस्तारः | प्र. |
| | वस्तासि | वस्तास्थः | वस्तास्थ | म. |
| | वस्तास्मि | वस्तास्वः | वस्तास्मः | उ. |
| लृट् | वत्स्यति[२] | वत्स्यतः | वत्स्यन्ति | प्र. |
| | वत्स्यसि | वत्स्यथः | वत्स्यथ | म. |
| | वत्स्यामि | वत्स्यावः | वत्स्यामः | उ. |
| लोट् | वसतु-वसतात् | वसताम् | वसन्तु | प्र. |
| | वस-वसतात् | वसतम् | वसत | म. |
| | वसानि | वसाव | वसाम | उ. |
| लङ् | अवसत् | अवसताम् | अवसन् | प्र. |
| | अवसः | अवसतम् | अवसत | म. |
| | अवसम् | अवसाव | अवसाम | उ. |
| विलि. | वसेत् | वसेताम् | वसेयुः | प्र. |
| | वसेः | वसेतम् | वसेत | म. |
| | वसेयम् | वसेव | वसेम | उ. |
| आलि. | उष्यात् | उष्यास्ताम् | उष्यासुः | प्र. |
| | उष्याः | उष्यास्तम् | उष्यास्त | म. |
| | उष्यासम् | उष्यास्व | उष्यास्म | उ. |
| लुङ् | अवात्सीत् | अवात्ताम्[३] | अवात्सुः | प्र. |
| | अवात्सीः | अवात्तम् | अवात्त | म. |
| | अवात्सम् | अवात्स्व | अवात्स्म | उ. |
| लृङ् | अवत्स्यत् | अवत्स्यताम् | अवत्स्यन् | प्र. |
| | अवत्स्यः | अवत्स्यतम् | अवत्स्यत | म. |
| | अवत्स्यम् | अवत्स्याव | अवत्स्याम | उ. |

**भावे**—उष्यते। **णिचि**—वासयते। **सनि**—विवत्सति। **यङि**—वावस्यते। **यङ्लुकि**—वावसीति-वावस्ति। **कृत्सु**—वसकः-सिका, विवसयिषकः-षिका, वसयिता-त्री, विवसयिषिता-त्री, निर्वसितम्-त्तः, वस्तव्यम्, वसनीयम्, वास्यम्, उषितः, वसन्, उषित्वा, व्युष्य, ऊषिवान्, वसनम्, वासः, वासी, वासिता, वस्ता, उष्टिः, वसितुम्-वस्तुम्, वसितव्यम्, वसितुम्, वस्तुम्, अनूष्यमाणः, वत्स्यन्, अनुवत्स्यमामः। **अनु, अधि-उप, आङ्पूर्वोऽयं सकर्मकः।** अनुवसति गृहम् इत्यादि। **प्र**—विदेशगमने प्रवसति। **नि**—निर्वासनम्।

१ 'शासिवसिघसीनां च' (८-३-६०) इणकुभ्यां परस्यैषां सस्य षः स्यात्। इति षत्वम्।

२ 'सः स्यार्धधातुके' सस्य तः

३ अवा स् ताम् इति स्थिते वृद्धौ 'झलो झलि' इति सिचः सकारस्य लोपे अवस् ताम् इति जाते प्रत्ययलक्षणमाश्रित्य 'सः स्यार्धधातुके' (८-४-७९) इति सस्य तः।

(१००६) **वेञ्**—तन्तुसन्ताने। (बुनना, बटना)। सकर्म.। अनिट्। उभय.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | वयति | वयतः | वयन्ति | प्र. |
| | वयसि | वयथः | वयथ | म. |
| | वयामि | वयावः | वयामः | उ. |
| लिट् | उवाय | ऊवयतुः | ऊयुः | प्र. |
| | उवयिथ | ऊयथुः | ऊय | म. |
| | उवाय-उवय | ऊवयिव | ऊवयिम | उ. |

पक्षे—**प्र.** ववौ ऊवतुः ऊवुः। **म.** ववथ-ववाथ ऊवथुः ऊव। **उ.** ववौ ऊविव ऊविम।
पक्षे—**प्र.** ववौ ववतुः ववुः। **म.** ववथ-ववाथ ववथुः वव। **उ.** ववौ वविव वविम।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुट् | वाता | वातारौ | वातारः | प्र. |
| | वातासि | वातास्थः | वातास्थ | म. |
| | वातास्मि | वातास्वः | वातास्मः | उ. |
| लृट् | वात्स्यति | वात्स्यतः | वात्स्यन्ति | प्र. |
| | वात्स्यसि | वात्स्यथः | वात्स्यथ | म. |
| | वात्स्यामि | वात्स्त्यावः | वात्स्यामः | उ. |
| लोट् | वयतु-वयतात् | वयताम् | वयन्तु | प्र. |
| | वय-वयतात् | वयतम् | वयत | म. |
| | वयानि | वयाव | वयाम | उ. |
| लङ् | अवयत् | अवयताम् | अवयन् | प्र. |
| | अवयः | अवयतम् | अवयत | म. |
| | अवयम् | अवयाव | अवयाम | उ. |
| वि॰लि. | वयेत् | वयेताम् | वयेयुः | प्र. |
| | वयेः | वयेतम् | वयेत | म. |
| | वयेयम् | वयेव | वयेम | उ. |
| आ॰लि. | ऊयात् | ऊयास्ताम् | ऊयासुः | प्र. |
| | ऊयाः | ऊयास्तम् | ऊयास्त | म. |
| | ऊयासम् | ऊयास्व | ऊयास्म | उ. |
| लुङ् | अवासीत् | अवासिष्टाम् | अवासिषुः | प्र. |
| | अवासीः | अवासिष्टम् | अवासिष्ट | म. |
| | अवासिषम् | अवासिष्व | अवासिष्म | उ. |
| लृङ् | अवास्यत् | अवास्यताम् | अवास्यन् इत्यादि। | |

**आत्मनेपदे**—१ वयते। २ **प्र.** ऊये ऊयाते ऊयिरे। **म.** ऊयिषे ऊयाथे ऊयिध्वे-ढ्वे। **उ.** ऊये ऊयिवहे ऊयिमहे। पक्षे—**प्र.** ववे ववाते वविरे। **म.** वविषे ववाथे वविध्वे-ढ्वे। **उ.** ववे वविवहे वविमहे। पक्षे—**प्र.** ऊवे ऊवाते ऊविरे। **म.** ऊविषे ऊवाथे ऊविध्वे-ढ्वे। **उ.** ऊवे ऊविवहे ऊविमहे। ३ वाता। ४ वात्स्यते। ५ वयताम् वयेताम् वयन्ताम्। ६ अवयत। ७ वयेत। ९ **प्र.** वासीष्ट वासीयास्ताम् वासीरन्। **म.** वासीष्ठाः वासीयास्थाम्

वासीध्वम् । **उ.** वासीय वासीवहि वासीमहि । ८ **प्र.** अवास्त अवासाताम् अवासत । **म.** अवास्थाः अवासाथाम् अवाद्ध्वम्-ध्वम् । **उ.** अवासि अवास्वहि अवास्महि । १० अवास्यत ।

**कर्मणि**—ऊयते । २ ऊये-ऊवे । **णिचि**—वाययति-ते । **सनि**—विवासति-ते । **यङि**—वावायते । **यङ्लुकि**—वावाति-वावेति । **कृत्सु**—वातव्यम्, वानीयम्, वेयम्, वयन्, वातुम्, वायनम्, वायः, वयमानः, वायकः[१]-यिका, णिचि—वायकः[२]-यिका, विवासकः[३]-सिका, वावायकः[४]-यिका, वाता-त्री, वाययिता-त्री, विवासिता-त्री, वावायिता-त्री, वयन्[५]-न्ती, वायन्-न्ती, विवासन्-न्ती, तन्तुवायः,[६] प्रवाणी[७]-निष्प्रवाणिः, उतम्-[८]उतः-उतवान्, प्रोतः, प्रवयणम्,[९] उत्वा, प्रवाय,[१०] ऊतिः,[११] विः[१२] = पक्षी, वेमा, आवायः,[१३] पटोत्[१४] ।

**(१००७) वेञ्—संवरणे** । (आच्छादन करना, ढकना, सीना) । सकर्म. । अनिट् । उभय. ।

१ व्ययति-ते । २ **प्र.** विव्याय विव्यतुः विव्युः । **म.** विव्ययिथ विव्ययथुः विव्य । **उ.** विव्याय-विव्यय विव्यिव विव्यिम । ३ व्याता । ४ व्यास्यति । ५ व्ययतु-तात् । ६ अव्ययत् । ७ व्ययेत् । ८ वीयात् वीयास्ताम् वीयासुः । ९ **प्र.** अव्यासीत् । अव्यासिष्टाम् अव्यासिषुः । **म.** अव्यासीः अव्यासिष्टम् अव्यासिष्ट । **उ.** अव्यसिषम् अव्यासिष्व अव्यसिष्म । १० अव्यस्यत् । **आत्मनेपदे**—१ व्ययते । २ **प्र.** विव्ये विव्याते विव्यिरे । **म.** विव्यिषे विव्याथे विव्यिध्वे-ढ्वे । **उ.** विव्ये विव्यिवहे विव्यिमहे । ३ व्याता । ४ व्यास्यते । ५ व्ययताम् ।

---

१ 'आदेच्च च उपदेशे–' (६-१-४५) इत्याकारः । 'आतोयुक्–' (७-३-३३) इति युगागमः ।

२ ण्यन्ते सर्वत्रादन्तलक्षणयुगपवादः 'शाच्छासाह्वावेपां युक्' (७-७-३६) इति युगागमः ।

३ धातोरनिट्त्वात् रूपाण्येवम् । सन्नन्तेऽभ्यासस्येकारः ।

४ यङन्ते सर्वत्र औपदेशिकस्य एकारस्य आकार इति विशेषः ।

५ '–अशिति' (६-१-४५) इत्युक्तत्वात् शतरि न आकारः । अयादेशः ।

६ तन्तून् वयति इति तन्तुवायः । 'ह्वावामश्च' (३-२-२) इति कर्मणि उपपदे अण् प्रत्ययः । 'आतोऽनुपसर्गे कः' (३-२-३) इत्यस्यापवादः । 'आत्वभाविन एजन्तात् आकारान्तनिमित्तकः । प्रत्ययो ज्ञायते सर्वो 'ह्वावामश्चे' त्यणा पुनः ।' इति पदमञ्जरी (६-१-४५)

७ नवं वासः प्रवयन्त्यस्यामिति प्रवाणी तन्तुवायशलाका । 'ल्युट् च' (३-३-११५) इति अधिकरणे ल्युट् । टित्वात् स्त्रियां ङीप् ।

८ निष्ठायां 'वचिस्वपियजादीनाम् किति' (६-१-१५) इति सम्प्रसारणे, पूर्वरूपे च रूपमेवम् । एवं क्त्वाप्रभृतिष्वपि ज्ञेयम् ।

९ प्रवयणम् इत्यत्र ल्युट् । 'कृत्यचः' (८-४-२९) इति णत्वम् ।

१० 'न ल्यपि' (६-१-४९) इति सम्प्रसारणनिषेधः ।

११ 'ऊतियूति–' (३-३-९७) इति क्तिन्नन्तो निपातितः । ऊतिः = वयनम् इति क्षीरस्वामी । काशिकादिषु तु अवतेरूठि स्वरार्थनिपातन इत्युक्तम् ।

१२ 'वेञो डित्' (द.उ. १-६२) इति इण् प्रत्ययः । प्रत्ययस्य डित्वात् टिलोपः । नीडं वयतीति विः = पक्षी, तन्तुवायो वा ।

१३ 'अवहाराधारावायानामुपंसख्यानम्' (वा. ३-३-१२२) इति आङ् पूर्वात् अस्मात् घापवादो घञ् । आवयन्ति अस्मिन् इति आवायः = तन्तुवायवाटिका ।

१४ पटं वयतीति पटोत् । 'क्विप् च' (३-२-७६) इति क्विप् । सम्प्रसारणे पूर्वरूपे च 'ह्रस्वस्यपितिकृति–' इति तुक् । इति प्रक्रियासर्वस्वम् ।

९ अव्ययत। ७ व्ययेत। ८ व्यसीष्ट व्यासीयास्ताम् व्यासीरन्। **म.** व्यासीष्ठाः। **उ.** व्यासीय। ९**प्र.** अव्यास्त अव्यासाताम् अव्यासत। **म.** अव्यास्थाः अव्यासाथाम् अव्याद् ध्वम्-ध्वम्। **उ.** अव्यासि अव्यास्वहि अव्यास्महि। १० अव्यास्यत।

**कर्मणि**—वीयते। **णिचि**—व्याययति-ते। **सनि**—विव्यासति-ते। **यङि**—वेवीयते। **यङ्लुकि**—व्याव्येति-वाव्याति। **कृत्सु**—व्यातव्यम्, व्यानीयम्, व्येयम्, वातम्, व्ययन्, व्ययमानः, व्यातुम्, व्यानम्, वीत्वा, संव्याय, परिवीय-परिवाय, नीविः, नीवी।

**(१००८) ह्वेञ्—स्पर्धायां शब्दे च**। (स्पर्धा करना, बड़ावरी करना, बुलाना, पुकारना, **आ**—बुलाना, **उप-वि-सम्**—(आ) युद्ध के लिए बुलाना। शब्दार्थे सकर्म.। अन्यत्राऽकर्मकः अनिट् उभय.।

१ ह्वयति-ते। २ **प्र.** जुहाव जुहुवतुः जुहुवुः। **म.** जुहविथ-जुहाथे जुहुवथुः जुहुव। **उ.** जुहाव-जुहव जुहुविव जुहुविम। **आत्म. प्र.** जुहुवे जुहुवाते जुहुविरे। म. जुहुविषे जुहुवाथे जुहुविढ्वे-ध्वे। **उ.** जुहुवे जुहुविवहे जुहुविमहे। ३ ह्वाता। ४ ह्वास्यति-ते। ५ ह्वयतु-तात्-ह्वयताम्। ६ अह्वयत्-त। ७ ह्वयेत्-त। ८ हूयात्-ह्वासीष्ट। ९ अह्वत् अह्वताम् अह्वन्। **आत्म.** अह्वत अह्वेताम् अह्वन्त। पक्षे—अह्वास्त अह्वासाताम् अह्वासत। १० अह्वास्यत्-त।

**कर्मणि भावे च**—हूयते। **णिचि**—ह्वाययति-ते। **सनि**—जुहूषति-ते। **यङि**—जोहूयते। **यङ्लुकि**—जोहवीति जोहोति। **कृत्सु**—ह्वातव्यः, ह्वानीयः, ह्वेयः, हूतः, हूतिः, ह्वयन्, ह्वयमानः, ह्वानम्, हूत्वा, आहूय, ह्वायकः-यिका, णिचि—ह्वायकः[१]-यिका, जुहूषकः[२]-षिका, जोहूयकः-[३] यिका, ह्वाता-ह्वात्री, ह्वाययिता-त्री, जुहूषिता-त्री, जोहूयिता-त्री, जुहावयिषुः,[४] निह्वयमानः,[५] सह्वमानः-उपह्वयमानः-विह्वयमानः, आह्वयमानो[६] मल्लो मल्लम्, आह्वः[७]-प्रह्वः, आहूयमानः,[८]

१ 'आदेचः—' (६-१-४५) इत्यात्वे, 'शाच्छासाह्वा—' (७-३-३७) इति णिजन्ते सर्वत्र युगागमः। आदन्तलक्षणपुकोऽपवादः।

२ 'अभ्यस्तस्य च'(६-३-३३) इति सम्प्रसारणम् पूर्वरूपम् 'हलः'(६-४-२) इति दीर्घः। आतोरधुना उकारान्तत्वात् 'इको झल्' (१-२-९) इति सनः। कित्वम् तेन गुणो न। एवमेव सन्नन्ते सर्वत्र प्रक्रिया।

३ यङन्तेऽपि 'अभ्यस्तस्य च' (६-३-३३) इति सम्प्रसारणादिकं बोध्यम्। उत्तरखण्डे 'अकृत् सार्वधातुकयोः—(७-४-२५) इति दीर्घः।

४ ण्यन्तात् सनि उप्रत्यये 'ह्वः सम्प्रसारणम्' (६-१-३२) इति सम्प्रसारणे च रूपमेवम्।

५ निसमुपविभ्यो ह्वः (१-३-३०) इत्यात्मनेपदम्।

६ 'स्पर्धायामाङः'(१-३-३१) इत्यात्मनेपदम्। स्पर्धमनि आह्वानं करोतीत्यर्थः। 'अत्र स्पर्धा धात्वर्थस्य शब्दनस्य हेतुतया विषय' इति काशिकादिषु स्पष्टम्।

७ 'सर्वत्र प्रसारणिभ्यो डः' (वा. ३-२-४८) इति वचनात् कर्तरि आदन्तत्वलक्षणकप्रत्यापवादो डप्रत्ययः। डित्वात् टिलोपः। भाष्ये तु आतोऽनुपसर्गे कः (३-२-३) इत्यत्र कप्रत्यये सम्प्रसारणे, यणि आह्वः इत्यादि साधितम्।

८ यङन्ताच्छानचि 'वचिस्वपियजादीनां किति'(६-१-१५) इति सम्प्रसारणे 'हलः'(६-४-२) इति दीर्घे च रूपम्। एवं क्त्वा-ल्यप्-क्तादिष्वपि प्रक्रिया ज्ञेया।

आहूतः-आहूतवान्, स्वर्गाह्वायः,[1] आह्वायः, निहवः[2]-अभिहवः-विहवः, आहवः,[3] हवः,[4] आहावः,[5] आह्वा,[6] आहूतिः[7]-संहूतिः।

( १००९ ) **वद—व्यक्तायां वाचि**। (कहना, स्पष्ट बोलना)। **अनु**—पीछे से बोलना। **अप**—निन्दा करना। अपकार कारक भाषण करना। **अभि**—सत्कार पूर्वक अभिनन्द करना। **परि**—विरूद्ध बोलना। **प्रति**—ऊत्तर देना। **वि**—वाद विवाद करना। **विप्र**—बकवाद करना। सक.। सेट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | वदति | वदतः | वदन्ति | प्र. |
| | वदसि | वदथः | वदथ | म. |
| | वदामि | वदावः | वदामः | उ. |
| लिट् | उवाद | ऊदतुः | ऊदुः | प्र. |
| | उवदिथ | ऊदथुः | ऊद | म. |
| | उवाद-उवद | ऊदिव | ऊदिम | उ. |
| लुट् | वदिता | वदितारौ | वदितारः | प्र. |
| | वदितासि | वदितास्थः | वदितास्थ | म. |
| | वदितास्मि | वदितास्वः | वदितास्मः | उ. |
| लृट् | वदिष्यति | वदिष्यतः | वदिष्यन्ति | प्र. |
| | वदिष्यसि | वदिष्यथः | वदिष्यथ | म. |
| | वदिष्यामि | वदिष्यावः | वदिष्यामः | उ. |
| लोट् | वदतु-तात् | वदताम् | वदन्तु | प्र. |
| | वद-तात् | वदतम् | वदत | म. |
| | वदानि | वदाव | वदाम | उ. |
| लङ् | अवदत् | अवदताम् | अवदन् | प्र. |
| | वदतः | अवदतम् | अवदत | म. |
| | अवदम् | अवदाव | अवदाम | उ. |
| वि.लि. | वदेत् | वदेताम् | वदेयुः | प्र. |
| | वदेः | वदेतम् | वदेत | म. |
| | वदेयम् | वदेव | वदेम | उ. |

१ 'ह्वावामश्च' (३-२-२) इति कर्मण्युपपदेऽण् प्रत्ययः। आदन्तलक्षणकप्रत्ययापवादः।
२ 'ह्वः सम्प्रसारणं च न्युभ्युपविषु' (३-३-७२) इति भावेऽप्रत्यये सम्प्रसारणादिकम्।
३ अप् प्रत्यये, 'आङि युद्धे' (३-३-७३) इति सम्प्रसारणम्। आहवः = युद्धः।
४ 'भावेऽनुपसर्गस्य' (३-३-७५) इति सम्प्रसारणम्। अप्।
५ 'निपानमाहावः' (३-३-७४) निपातनात् साधुः। उपकूपं जलाशये विवाक्षते भावेऽप् प्रत्यये सम्प्रसारणवृद्धौ निपातनात्। आहावः = यत्र गावो जलाशये पानार्थमाहूयन्ते स प्रदेशः।
६ 'आतश्चोपसर्गे' (३-३-१०६) इत्यङि 'आतो लोप इटि च' (६-४-६४) इत्याकारलोपः। आह्वा नाम।
७ अत्र बाहुलकात् स्त्रियां क्तिन्। 'आतश्चोपसर्गे' (३-३-१०६) इत्यडोपवादः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आ. लि. | उद्यात् | उद्यास्ताम् | उद्यासुः | प्र. |
| | उद्याः | उद्यास्तम् | उद्यास्त | म |
| | उद्यासम् | उद्यास्व | उद्यास्म | उ. |
| लुङ् | अवादीत् | अवादिष्टाम् | अवादिषुः | प्र. |
| | अवादीः | अवादीष्टम् | अवादिष्ट | म. |
| | अवादिषम् | अवादिष्व | अवादिष्म | उ. |
| लृङ् | अवादिष्यत् | अवादिष्यताम् | अवदिष्यन् | प्र. |
| | अवदिष्यः | अवदिष्यतम् | अवदिष्यत | म. |
| | अवदिष्यम् | अवदिष्याव | अवदिष्याम | उ. |

**कर्मणि**—उद्यते। **णिचि**—वादयते। **सनि**—विवदिषति। **यङि**—वावद्यते। **यङ्लुकि**—वावदीति-वावत्ति। **कृत्सु**—वादकः-दिका, **णिचि**—वादकः-परिवादकः-दिका, विवदिषकः-षिका, वावदकः-दिका, वदिता-त्री, वादयिता-त्री, विवदिषिता-त्री, वावदिता-त्री, वदन्-न्ती, वादयन्-न्ती, विवदिषन्-न्ती, वदिष्यन्-न्ती-ती, वादयिष्यन्-न्ती-ती, विवदिषिष्यन्-न्ती-ती, शास्त्रे वदमानः, कर्मकरान् उपवदमानः, न्यायम् अववदमानः,[१] गेहे विवदमानः,वादयमानः,वदिष्यमाणः,वादयिष्यमाणः,उदितम्[२]-तः-तवान्,वादितः,विवदिषितः, वावदितः-तवान्, वदः,[३] अवादी, वदावदः, वावदूकः,[४] प्रवावदूकः, कद्वदः,[५] साधुवादी, परिवादिनी,[६] प्रियंवदः[७]-प्रियंवदा, वशंवदः, प्रवादी,[८] ब्रह्मवादी,[९] परिवादकः,[१०] वादः, विवदिषुः, वावदः, वदितव्यम्, वादयितव्यम्, वदनीयम्, वादनीयम्, अवद्यम्,[११] ब्रह्मोद्यम्[१२]-ब्रह्मवद्यम्, मृषोद्यम्, सत्यवद्यः, अनृतोद्यम्, वाद्यम्[१३]-प्रवाद्यम्, विवदिष्यम्, वावद्यम्,उद्यमानः,वाद्यमानः,विविदिष्यमाणः,वावद्यमानः,वादः,विवदिषः,वदितुम्,वादयितुम्,

१ 'अपाद् वदः' (१-३-७३) इति तङ्। एतदपि व्यक्तवाग् विषयकमेव।
२ निष्ठायाम् 'वचिस्वपियजादीनाम्' (६-१-१५) इति सम्प्रसारणम्। तेन पूर्वरूपम्।
३ 'याचिव्याहृवजवदवसां प्रतिषिद्धानाम्' (ग.सू. ३-१-१३४) इति नञि उपपदे ग्रह्यादित्वात् कर्तरिणिनिः।
४ चरिचलिपतिवदीनां द्वित्वम् अचि आक् च अभ्यासस्य' (वा. ६-१-१२) इति वचनेन पचाद्यचि द्वित्वम् अभ्यासस्य आक् च भवतः
५ पचाद्यचि 'रथवदयोश्च' (६-३-१०२) इति वदशब्दे कोः क्त् आदेशः।
६ 'सुप्यजातौ णिनिः—' (३-२-७८) इति णिनिः तद्धर्मेऽयं प्रत्ययः। सप्तभिः 'परिवादिनी' इति वीणाविशेषः।
७ 'प्रियवशे वदः खच्' (३-२-३८) इति खच्। खित्वात् नुम्।
८ 'तच्छीलादिषु कर्तृषु प्रे लपसृद्रुमथवदवसः' (३-२-१४५) इति घिनुण् प्रत्ययः।
९ 'ब्रह्मणि वदः' (वा. ३-२-७८) इति णिनि प्रत्ययः। अताच्छीलिकोऽयम्।
१० तच्छीलादिषु कर्तृषु 'निन्दहिस—' (३-२-१४६) इत्यादिना वुञ् प्रत्ययः।
११ गर्ह्यामित्यर्थे 'अवद्यपण्यवर्याः' (३-१-१०१) इत्यनेन वदतेः क्यप्। कित्वात् सम्प्रसारणम्।
१२ 'वदः सुपि क्यप् च' (३-१-१०६) इति अनुपसर्गे सुपि उपपदे क्यब्विकल्पः। पक्षे यत्। क्यपि ब्रह्मोद्यम्। यति ब्रह्मवद्यम्।
१३ 'वदः सुपि—' (३-१-१०६) इत्यत्र। 'सुपि' इत्युक्तत्वात् सोपसर्गात् निरुपसृष्टाच्च ण्यदेव। तेन वाद्यम् प्रवाद्यम् इति सिध्यतः।

विवदिषितुम्, वावदितुम्, उदिति[1] उत्तिः, वादना, विवदिषा, वावदा, वदनम्, वादनम्, उदित्वा,[2] वादयित्वा, प्रोद्य, अच्छोद्य, अनुवाद्य, वादिः,[3] वदान्य,[4] वादित्रम्,[5] वत्सः[6] ।

**( १०१० ) टु ओश्वि**—गतिवृद्धयोः । (जाना, बढ़ना, सफेद होना) । अक. । सेट् । परस्मै. ।

१ श्वयति । २ **प्र.** शुशावं शुशुवतुः शुशुवुः । **म.** शुशविथ शुशुवथुः शुशुव । **उ.** शुशाव शुशुव शुशुविव शुशुविम । **सम्प्रसारणभावपक्षे**—**प्र.** शिश्वाय शिश्वियतुः शिश्वियुः । **म.** शिश्वयिथ शिश्वियथुः शिश्विय । **उ.** शिश्वाय-शिश्वय शिश्वियिव शिश्वियिम । ३ श्वयिता । ४ श्वयिष्यति । ५ श्वयतु । ६ अश्वयत् । ७ श्वयेत् । ८ शूयात् । ९ अश्वत्, अश्वताम्, अश्वन्, अशिश्वियत्-अश्वयीत् । १० अश्वयिष्यत् ।

**भावे**—शूयते । **णिचि**—श्वाययति-ते । **सनि**—शिश्वयिषति । **यङि**—शेश्वीयते-शोशूयते । **यङ्लुकि**—शेश्वयीति-शेश्वेति । **कृत्सु**—श्वयितव्यम्, श्वयनीयम्, श्वेयम्, शूनः, श्वयितुम्, श्वयनम्, श्वयित्वा, उच्छूय, श्वयथुः, व्ययन्, उदाश्वित्, श्वा, मातरिश्वा ।

इति भ्वादयः ॥ १ ॥

---

१ स्त्रिया क्तिनि 'तितुत्रेष्वग्रहादीनाम्–' (वा. ७-२-९) इति वचनादिटि उदिति । क्षीरस्वामी तु उत्तिः इतीडागमाभावपक्षे मुख्यं रूपं साधयित्वा 'इडपीष्यते उदितिः इत्याह ।

२ 'मृडमृदगुधकुषक्लिशवदवसः क्त्वा' इति सेटः क्त्वायाः कित्वात् सम्प्रसारणम् ।

३ 'वसिवपिवदि–' (द.उ. १-५३) इतीत्रप्रत्ययः । वदति तस्यामिति वादिः = वीणा ।

४ 'वदेरान्यः' (द. उ. ८-९) इत्यान्यप्रत्ययः । वदान्यो दाता । वदान्योनान्योऽस्ति त्रिजति समो 'रुद्रनृपतेः–' प्रतापरुद्रिये १७ श्लो. ।

५ 'भूवादि–' (द.उ. ८-९१) इति णिजन्तात् णित्रन् प्रत्ययः । वाद्यते इति वादित्रम् = मृदङ्गपणवादिकम् ।

६ 'वृतृवदि–'(द.उ. ९-२१) इति सप्रत्ययः । 'तितुत्रस–'(७-२-९) इतीण्निषेधः । वत्सः = कुमारः, गोबालश्च ।

# अथ अदादय: ( २ )

**( १०११ ) अद**—**भक्षणे**। (खाना)। **अव**—तृप्त होना, मुंह बन्द हो जाना, खाना छोड़ देना, **आ**—खाना, **प्र**—खाना, **सम्**—खाना, **वि**—काटना, कतर देना, चबाना। सक.। अनि.। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | अत्ति | अत्तः | अदन्ति | प्र. |
| | अत्सि | अत्थः | अत्थ | म. |
| | अद्मि | अद्वः | अद्मः | उ. |
| लिट् | जघास | जक्षतुः | जक्षुः | प्र. |
| | जघसिथ | जक्षथुः | जक्ष | म. |
| | जघास-जघस | जक्षिव | जक्षिम | उ. |
| पक्षे– | आद | आदतुः | आदुः | प्र. |
| | आदिथ | आदथुः | आद | म. |
| | आद | आदिव | आदिम | उ. |
| लुट् | अत्ता | अत्तारौ | अत्तारः | प्र. |
| | अत्तासि | अत्तास्थः | अत्तास्थ | म. |
| | अत्तास्मि | अत्तास्वः | अत्तास्मः | उ. |
| लृट् | अत्स्यति | अत्स्यतः | अत्स्यन्ति | प्र. |
| | अत्स्यसि | अत्स्यथः | अत्स्यथ | म. |
| | अत्स्यामि | अत्स्यावः | अत्स्यामः | उ. |
| लोट् | अत्तु-अत्तात् | अत्ताम् | अदन्तु | प्र. |
| | अद्धि-अत्तात् | अत्तम् | अत्त | म. |
| | अदानि | अदाव | अदाम | उ. |
| लङ् | आदत् | आत्ताम् | आदन् | प्र. |
| | आदः | आत्तम् | आत्त | म. |
| | आदम् | आद्व | आद्म | उ. |
| वि. लि. | अद्यात् | अद्यास्ताम् | अद्युः | प्र. |
| | अद्याः | अद्यास्तम् | अद्यास्त | म. |
| | अद्यासम् | अद्यास्व | अद्यास्म | उ. |
| लुङ् | अघसत् | अघसताम् | अघसन् | प्र. |
| | अघसः | अघसतम् | अघसत | म. |
| | अघसम् | अघसाव | अघसाम | उ. |
| लृङ् | आत्स्यत् | आत्स्यताम् | आत्स्यन् | प्र. |
| | आत्स्यः | आत्स्यतम् | आत्स्यत | म. |
| | आत्स्यम् | आत्स्याव | आत्स्याम | उ. |

**कर्मणि**—अद्यते। २ आदे। **पक्षे**—जक्षे। अघासि अघत्सताम्। **णिचि**—आदयते[१] -आदयति[२]। ९ आदिदत्-त। **सनि**—जिघत्सति। **कृत्सु**—आदकः-दिका, **णिचि**—आदकः-दिका, जिघत्सकः-त्सिका, अत्ता[३]-त्री, आदयिता-त्री, जिघत्सिता-त्री, अदन्-न्ती, आदयन्-न्ती, जिघत्सन्-न्ती, अत्स्यन्-न्ती-ती, आदयिष्यन्-न्ती-ती, जिघत्सिष्यन्-न्ती-ती, अदयमानः, आदयिष्यमाणः, सस्यात्[४], आमात्, क्रव्यात्[५], क्रव्यादः,[६] प्राणात्, अभिषादः, जग्धम्[७]-ग्धः-ग्धवान्, अन्नम्[८]-न्नवान्, आदितम्-तः, जिघत्सितम्-तः-तवान्, घसः[९], अन्नादी,[१०] पुत्रादिनी, आदिवान्, जक्षिवान्[११], अद्‌भरः,[१२] जिघत्सुः, अत्तव्यम्, आदितव्यम्, जिघत्सितव्यम्, अदनीयम्, आदनीयम्, जिघत्सनीयम्, आद्यम्, जिघत्स्यम्, अद्यमानः, आद्यमानः, जिघत्स्यमानः, घासः,[१३] घसः, न्यादः[१४], निघसः, आदः, संघसः[१५], प्रधसः, जिघसः, अत्तुम्[१६], आदयितुम्, जिघत्सितुम्, अदनम्, आदनम्, जिघत्सन्, जग्धिः, आदना, जिघत्सा, जिघत्सयिषा, जग्ध्वा, आदयित्वा, जिघत्सित्वा, प्रजग्ध्य, समाद्य, प्रजित्स्यः। अत्रिः[१७], अद्रिः[१८]।

**(१०१२) हन**—**हिंसागत्योः**। (मार डालना, जाना)। **अभि**—मुख से बजाना, **नि-परि**—समूल नष्ट करना, **प्र**—ऊपर रखना, प्रहार करना, मारना, **प्रति**—विरुद्ध पक्ष का खण्डन करना, **व्या**—प्रतिबन्ध करना, रोकना, **सम्**—हिंसा करना, मारना, एकत्र करना, **आ**—(आ) ठोकना, मारना। सक.। अनिट्। वधादेशे सेट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | हन्ति | हतः | घ्नन्ति | प्र. |
| | हंसि | हथः | हथ | म. |
| | हन्मि | हन्वः | हन्मः | उ. |

१ 'निगरणचलने–' (१-३-८७) ति प्राप्तस्य परस्मैपदस्य 'अदेः प्रतिषेधः' इति निषेधात् आत्मनेपदम्।
२ अकर्तभिप्राये 'शेषात्कर्तरि परस्मैपदम्' (१-३-७८) इति परस्मैपदमपि।
३ 'एकाच उपदेशे–' (७-२-१०) इतीण्णिषेधः।
४ 'अदोनन्ने' (३-२-६८) इति विट्।
५ 'क्रव्ये च' (३-२-६९) इति विट्।
६ 'वाऽसरूपो–' (३-१-९४) इति न्यायेनाणपि।
७ 'अदो जग्धिल्यप् तिकिति' (२-४-३६) इति जग्ध्यादेशः।
८ 'बहुलं तणि, अन्नवधक–' (२-४-५४) इति वार्तिकात् प्रयोगोऽयमपि साधुः। 'अन्नण्णः' (४-४-८५) इति निर्देशाच्च।
९ 'अच्युपसंख्यानम्' (वा. २-४-३७) इति घस्लृ।
१० 'सुप्यजातौ–' (३-२-७८) इति णिनिः।
११ 'लिट्यन्यतरस्याम्' (२-४-४०) इति घस्लृ विकल्पेन। 'वस्वेकाज्–' (७-२-६७) इति इट्।
१२ 'सृघस्यदः क्मरच्' (३-२-१६०) इति तच्छीलादिषु कर्तृषु क्मरच् प्रत्ययः।
१३ 'घञपोश्च' (२-४-३८) इति घस्लृ।
१४ 'नौ ण च' (३-३-६०) इति णा अप्।
१५ 'उपसर्गे अदः' (३-३-५९) इत्यप्।
१६ 'तुमुन् ण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम्' (३-३-१०) इति तुमुण् ण्वुलौ।
१७ औणादिकः त्रिन् प्रत्ययः (दउ. १-३७) ऋषिः।
१८ औणादिकः (दउ. १-३४) क्रिन् प्रत्ययः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लिट् | जघान | जघ्नतुः | जघ्नुः | प्र. |
| | जघनिथ-जघन्थ | जघ्नथुः | जघ्न | म. |
| | जघान-जघन | जघ्निव | जघ्निम | उ. |
| लुट् | हन्ता | हन्तारौ | हन्तारः | प्र. |
| | हन्तासि | हन्तास्थः | हन्तास्थ | म. |
| | हन्तास्मि | हन्तास्वः | हन्तास्मः | उ. |
| लृट् | हनिष्यति | हनिष्यतः | हनिष्यन्ति | प्र. |
| | हनिष्यसि | हनिष्यथः | हनिष्यथ | म. |
| | हनिष्यामि | हनिष्यावः | हनिष्यामः | उ. |
| लोट् | हन्तु-हतात् | हताम् | घ्नन्तु | प्र. |
| | जहि-हतात् | हतम् | हत | म. |
| | हनानि | हनाव | हनाम | उ. |
| लङ् | अहन् | अहताम् | अघ्नन् | प्र. |
| | अहन् | अहतम् | अहत | म. |
| | अहनम् | अहनाव | अहनाम | उ. |
| वि. लि. | हन्यात् | हन्याताम् | हन्युः | प्र. |
| | हन्याः | हन्यातम् | हन्यात | म. |
| | हन्याम् | हन्याव | हन्याम | उ. |
| आ. लि. | वध्यात् | वध्यास्ताम् | वध्यासुः | प्र. |
| | वध्याः | वध्यास्तम् | वध्यास्त | म. |
| | वध्यासम् | वध्यास्व | वध्यास्म | उ. |
| लुङ् | अवधीत् | अवधिष्टाम् | अवधिषुः | प्र. |
| | अवधीः | अवधिष्टम् | अवधिष्ट | म. |
| | अवधिषम् | अवधिष्व | अवधिष्म | उ. |
| लृङ् | अहनिष्यत् | अहनिष्यताम् | अहनिष्यन् | प्र. |
| | अहनिष्यः | अहनिष्यतम् | अहनिष्यत | म. |
| | अहनिष्यम् | अहनिष्याव | अहनिष्याम | उ. |

आत्मनेपदे– १ **प्र.** आहते[1] आघ्नाते आघ्नते[2]। **म.** आहसे आघ्नाथे आहध्वे। **उ.** आघ्ने आहन्वहे आहन्महे। २ **प्र.** आजघ्ने आजघ्नाते आजघ्निरे। **म.** आजघ्निषे आजघ्नाथे आजघ्निध्वे। **उ.** आजघ्ने आजघ्निवहे आजघ्निमहे। ३ **प्र.** आहन्ता। **म.** आहन्तासे। **उ.** आहन्ताहे। ४ आहनिष्यते। ५ **प्र.** अहताम् आघ्नाताम् आघ्नताम्। **म.** आहस्व आघ्नाथाम् आहध्वम्। **उ.** आहनै आहनावहै आहनामहै। ६ आहत आघ्नातम् आघ्नत। **म.** आहथाः आघ्नाथाम् आहध्वम्। **उ.** आघ्नि आहन्वहि आहन्महि। ७ **प्र.** आघ्नीत आघ्नीयाताम् आघ्नीरन्। **म.** आघ्नीथाः आघ्नीयाथाम् आघ्नीध्वम्। **उ.** आघ्नीय आघ्नीवहि आघ्नीमहि।

१ 'आङो यमहनः' (१-३-२८) आङः परयोर्यमहनोरात्मनेपदं स्यात्।
२ 'आत्मनेपदेष्वनतः' (७-१-५) इति झस्य अत इत्यादेशः स्यात्।

८ **प्र.** अवधिषीष्ट। **म.** आवधिषीष्ठाः। **उ.** आवधीषीय। ९ आवधिष्ट आवधिषाताम् आवधिषत। **म.** आवधिष्ठाः। **उ.** आवधिषी। पक्षे—**प्र.** आहत[१] आहसाताम् आहसत। **म.** आहथाः आहसाथाम् आहध्वम्। **उ.** आहसि आहन्वहि आहन्महि। १० आहनिष्यत।

**कर्मणि**—हन्यते। २ जघ्ने। ९ अघानि अघानिषाताम्-अहसाताम्। **पक्षे**—अवधि अवधिषाताम्। **णिचि**—घातयति-ते। ९ अजीघतत्-त। **सनि**—आजिघांसते जिघांसति। **यङि**—जघ्नीयते। जङ्घन्यते। **यङ्लुकि**—जङ्घनीति-जङ्घन्ति। **कृत्सु**—घातकः[२]-तिका, **णिचि**—घातकः[३]-तिका, जिघांसकः[४]सिका, जेघ्नीयकः[५]-यिका, जङ्घनकः[६]-निका, हन्ता-त्री, घातयिता-त्री, जिघांसिता-त्री, जेघ्नीयता-जङ्घनिता-त्री, हन्तव्यः, हननीयः, हननम्, वधः, घातः, हतः, हतिः, हन्तव्यम्, हन्तुम्, हत्वा[७], प्रहत्य, घात्यम्, हनन्, शत्रुं निघ्नानः, हनिष्यन्[८], हन्यमानः, हनिष्यमानः, क्वसुः-जघ्निवान्-जघन्वान्। आहनिष्यमाणः, प्राणिघ्नन्[९]-व्यतिघ्नन्[१०]- आघ्नन्-चौरस्य, निप्रघ्नन्[११]-न्ती, पद्धतिः[१२], पदोत्पहतः, पुत्त्रहतः[१३]-पुत्रहतः, कुमारिहता,[१४] स्त्रीहता[१५]- स्त्रिहता-ब्रह्मबन्धूहता-ब्रह्मबन्धुहता, लक्ष्मीहता[१६], महद्घता[१७],

१ 'आत्मनेपदेष्वन्यतरस्याम्' (३-१-५४) इति वधादेशो वा। 'हनः सिच्' (१-२-१४) कित् स्यादिति सिचः। कित्वात् 'अनुदात्तोपदेशे' (६-४-३७) ति नकारलोपः। 'स्को–' (८-२-२९) इति सकार लोपः।

२ 'ण्वुलतृचौ' (३-१-१२३) इति ण्वुल्। 'हो हन्तेर्ञ्णिन्नेषु (७-३-५४) इति हन्तेर्हकारस्य कुत्वेन घकारः। 'हनस्तोऽचिण्णलोः' (७-३-३२) इति धातुनकारस्य तकारः।

३ णिजन्तेऽपि सर्वत्र हन्ते र्हकारस्य कुत्वं धकारः नकारस्य तकारश्च पूर्ववत् बोध्यः।

४ सन्नन्ते 'अज् झनगमां सनि' (६-४-१६) इति दीर्घः द्विर्वचनादिकम्, अभ्यासे 'कुहोश्चुः' (७-४-६२) इति चुत्वेन जकारः, 'अभ्यासाश्च' (७-३-५५) इति उत्तरखण्डे कुत्वम्। नकारस्यानुस्वारः। एव सन्नन्ते सर्वत्र प्रक्रिया ज्ञेया।

५ 'हन्ते हिंसायां यङि घ्नीभावो वक्तव्यः (वा. ७-१-३०) इति वचनात् यङि विवक्षिते सति हिंसार्थेऽस्य घ्नीभावः, द्विर्वचनादिकम्। हलादिशेषः। 'अभ्यासे चर्च' (८-४-५४) इति अभ्यासे जकारः। 'गुणो यङ्लुकोः' (७-४-८२) इति गुणः।

६ गत्यर्थत्वे तु धातोः 'नुगतोऽनुनासिकान्तस्य' (७-४-८५) इति नुगागमः। नुकः 'पदान्तवत्' इत्यतिदेशात् अनुस्वारः उपलक्ष्यते। 'अभ्यासाच्च' (७-३-५५) इयुक्तरखण्डेऽपि हकारस्य कुत्वेन घकारः।

७ 'अनुदात्तोपदेश–' (६-४-३७) इत्यादिना झलादिषु क्ङित् प्रत्ययेषु क्त्वा-क्तिन्क्तक्तवतुप्रभृतिषु अनुनासिकलोपः।

८ 'ऋद्धनोः स्ये' (७-२-७०) इतीडागमः स्यप्रत्यये परे।

९ शतरि शपोलुकि, शतुः सार्वधातुकत्वेन ङिद्वद्भावात् 'गमहनजनखनघसा लोपः क्ङिति अनङि' (६-४-९८) इति हन्तेरुपधाकारस्य लोपः। 'हो हन्तेः–' (७-३-५४) इति कुत्वेन घकार। 'नेर्गद–' (८-४-१७) इति उपसर्गस्थान्निमित्तादुत्तरस्य नेः णत्वम्।

१० 'न गतिहिंसार्थेभ्यः' (१-३-१५) इति कर्म व्यतिहारात्मनेपदनिषेधः धातोः हिंसार्थकत्वात् गत्यार्थकत्वाच्च।

११ 'जासिनिप्रहण–' (२-३-५६) इति चोरस्य षष्ठी।

१२ पादाभ्यां हन्यते = गम्यते इति पद्धतिः। अत्र धातोर्गत्यर्थकम्। क्तिन्। 'हिमकापि हतिषु च' (६-३-५४) इति पादशब्दस्य पद्भावः। 'वाह्वादित्वात् (४-१-९६) ङीषि पद्धती इत्यपीति माधवः।

१३ 'वा हतजग्धपरेषु' (वा. ८-४-४८) इति पुत्रतकारस्य हतशब्दे परे वा द्वित्वम्।

१४ कुमारी चासौ हता चेति कर्मधारये 'घरूपकल्पप्चेलड्–' (६-३-४३) इति कुमारीशब्दस्यय ह्रस्वः। कुमार्या हता इति समासे तु न ह्रस्वः कुमारीहता इत्येव।

१५ 'नद्याः शेषस्यान्यतरस्याम्' (६-३-४४) इति ह्रस्वविकल्पः।

१६ 'कृन्नपाः प्रतिशेधः' (वा. ६-३-४४) इति प्रतिषेधान्न ह्रस्वः।

१७ महच्छब्दस्यापि पुवद्भावोऽत्र आत्रेयेणोक्त इति माधवः।

अन्तर्हत्य,[१] कणेहत्य-मनोहत्य, घात्यः[२]-वध्यः, ब्रह्महत्या-असिहत्या, अश्वहत्या, हत्याशतं पानसहस्रम्, घनाधनः, शत्रुहः, दार्वाघाटः-दार्वाघातः, वर्णसङ्घाटः-वर्णसङ्घातः, क्लेशापहः-तमोऽपहः, ज्वरापहा, जघ्निवान्-जघन्वान्, तिमिहः[३]-अरातिहः, वराहः-पटहः-कलहः, अभ्याघाती, कुमारघाती- शीर्षघाती, ज्यायाघ्नः, पतिघ्नी, आखुघातः[४], कृतघ्नः[५], गोघ्नः[६], हस्तिघ्नः[७]-कपाघ्नः-कवाट-घ्नः, पणिघः[८]-ताडघः, पितृव्यघाती[९], ब्रह्महा[१०]-भ्रूणहा-वृत्रहा, वृत्रघ्नः[११]-वृत्रघ्णः, घातुकः[१२]-घातुकी, वधकः[१३], वधः, विघ्नः[१४], अभ्रघनः,[१५] अन्तर्घनः-अन्तर्घणः, प्रघणः-प्रघाणः, उद्घनः, अपघनः, अयोघनः, विघनः, द्रुघनः-द्रुघणः, परिघः-पलिघः, प्रतिघः, पर्वतोपघ्नः, उपघ्नः, सङ्घः-उद्घः, सङ्घाथः[१६], हेतिः[१७],

१ 'अन्तरपरिग्रहे' (१-४-६५) इति 'अन्तर्' इत्यस्य गतित्वम्। 'कुगतिप्रादयः' (२-२-१८) इति समासे ल्यपि 'वा ल्यपि' (६-४-३८) इति व्यवस्थितविभाषाविज्ञानात् नान्तानिटोऽस्यः धातोर्नकारलोपो नित्यः। अन्तर्हत्य = मध्ये हत्वा इत्यर्थः। परिग्रहार्थे तु 'अन्तर्हत्वा मूषिकां गतः श्येनः। इत्यत्र न गतित्वम्। तेन न ल्यप्। स्वभावादयं योगः हन्तिविषयकः।

२ 'हनो वा वध च' (वा. ३-१-९७) इति कर्मणि यत् प्रकृते र्वधादेशश्च। वध्यः = वधकर्मीभूतः। पक्षे ण्यति, कुत्वे तकारे च घात्यः। दिगादित्वात् (४-३-५४) यतैव सिद्धिमिति कात्यायनः

३ 'अन्येभ्योऽपि–' इति डप्रत्यये क्षीरस्वामी एतान् साधयति। तादृशं वचनं न दृश्यते। गमेर्डप्रत्ययविधायकं वचनस्य विवक्षितमिति भाति। वरं आहन्तीति वराहः। पटे हन्यते इति पटहः। कलं = माधुर्यं हन्तीति कलहः।

४ आखुं हन्तीत्यर्थे 'कर्मण्यत्' (३-२-१) इत्यण् घत्वे तत्वे च।

५ अत्र 'कप्रकरणे मूल विभुजादिभ्यः–' (वा. ३-२-५) इति कप्रत्यये, उपधाकारलोपे, घत्वे च रूपमिति केचित्। माधुवस्तु कृतं हन्तीत्यर्थे 'कृत्यल्युटो बहुलम्' (३-३-११३) इति बहुलग्रहणात् टक्प्रत्ययमावादीत्। एवमेव क्रियमाणहनः, करिष्यमाणघ्नः, शत्रुघ्नः ठकि कृतघ्नी इति, के कृतघ्ना इति च स्त्रियां भवेत्।

६ गोर्हन्ते स्मै इति गोघ्नः = अतिथिः। दाशगोघ्नौ सम्प्रदाने' (३-४-७३) इति सूत्रे निपातनादेव सम्प्रदाने टक् प्रत्ययः। अन्तोऽयमिति प्रक्रियासर्वस्वम्।

७ हन्तिहनने शक्त एवमुच्यते। 'शक्तौ हस्तिकपाटयोः' (३-२-५४) इति हन्तेष्टक्। हस्तिघ्नः = भटः। कराटघ्नः = चोरः। अशक्तौ यो विषादिमिर्हस्तिं हन्ति सः हस्तिघातः एवम्-यः कुठारादिभिर्बहुभिः साधनैः कपाटं हन्ति स उच्यते कपाटघातः इति। अन्यत्र 'कर्मण्यत्' (३-२-१) इत्यण्।

८ 'पाणिघताडघौ शिल्पिनि' (३-२-५५) इति निपातनात् हन्तेष्टकि टिलोपे, घत्वे च रूपम्। पाणिं हन्तीति पाणिघः हस्तेनैव तालवाद्यप्रावीण्यप्रदर्शयिता। ताडं = हनुं हन्तीति ताडघः मुखेनैव वाद्यविशेषवादयिता।

९ पितृव्यं हतवान् पितृव्यघाती। 'कर्मणि हनः' (३-२-८६) इति हन्तेर्भूते णिनिः।

१० हन्ते 'ब्रह्मभ्रूणवृत्रेषु क्विप्' (३-२-८७) इति क्विप्। ब्रह्म हतवान् ब्रह्महा। भ्रूणं = गर्भं हतवान् भ्रूणहा। वृतं हतवान् वृत्रहा इन्द्रः। 'सौच' (६-४-१३) इति दीर्घः।

११ द्वितीयाबहुवचनान्तमिदम्। अत्र प्रतिपादिकान्त नुम्विभक्तिषु च' (८-२-१५४) इति णत्वविकल्पः।

१२ लषपतपदस्थाभूवृषहन– (३-२-१५४) इति उकञ् ताच्छीलिकः। घत्वतत्वे। स्त्रियां धातुकी।

१३ 'बहुलं तव्यन्नवधक–' (वा. २-४-५४) इति वचनात् ण्वुलि प्रकृतेः वधादेशः सोऽयमकारान्तादेशः। यद् वा हलन्तवेऽपि 'जनिवध्योश्च' (७-३-१५) इति वृद्धिनिषेधः।

१४ 'घत्रर्थे कविधानं स्थास्नापाव्यधिहनियुध्यर्थम्' (वा. ३-३-५८) इति कप्रत्ययः। विशेषेण हन्तीति विघ्नः।

१५ मूर्तौ घनः (३-३-७७) इति हन्तेरप् प्रत्यये प्रकृतेर्घनादेशः, काठिन्ये गम्ये। मूर्तिः—काठिन्यम्। अभ्रघ्नः—अभ्रस्य काठिन्यमित्यर्थः। घनं दधि।

१६ संपूर्वकात् अस्मात् घञि धात्वतत्वयोः संघातशब्दः साधुः। घ-घञोः प्रत्यययोरपवादोऽत्रेति मन्वान आत्रेयः 'हन्त्यर्थाश्च' (ग.सू. चुरादिपाठात् णिजन्तात् संघातशब्दनिष्पत्तिमाहेति माधवः।

१७ हन्तीति हेतिः। हन्यतेऽनेनेति वा 'ऊतियूतिजूतिसातिहेति–' (३-३-९७) इति निपातनात् नलोपे, प्रकृत्यकारस्येकारे च हेतिः इति माधवः।

निघ:,[१] निघ्न:,[२] समूलघातं[३] हन्ति, पाणिघातं[४] वेदिंहन्ति, दण्डोपघातं[५] गा: शातयति, प्रहणम्[६], घङ्गा, जघनम्, रिघातन:, हनु (नू) मान्, हनू:, हिमम्, हेमन्त:, अंहति:, घाति:, अहि:, अनेहा, घोर:, हंस:।

( १०१३ ) **द्विष**—अप्रीतौ। (द्वेष करना, शत्रुता करना)।सकर्म.। अनि.। उभय.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | द्वेष्टि | द्विष्ट: | द्विषन्ति | प्र. |
| | द्वेक्षि | द्विष्ठ: | द्विष्ठ | म. |
| | द्वेष्मि | द्विष्व: | द्विष्म: | उ. |
| लिट् | दिद्वेष | दिद्विषतु: | दिद्विषु: | प्र. |
| | दिद्वेषिथ | दिद्विषथु: | दिद्विष | म. |
| | दिद्वेष | दिद्विषिव | दिद्विषिम | उ. |
| लुट् | द्वेष्टा | द्वेष्टारौ | द्वेष्टार: | प्र. |
| | द्वेष्टासि | द्वेष्टास्थ: | द्वेष्टास्थ | म. |
| | द्वेष्टास्मि | द्वेष्टास्व: | द्वेष्टास्म: | उ. |
| लृट् | द्वेक्ष्यति | द्वेक्ष्यत: | द्वेक्ष्यन्ति | प्र. |
| | द्वेक्ष्यसि | द्वेक्ष्यथ: | द्वेक्ष्यथ | म. |
| | द्वेक्ष्यामि | द्वेक्ष्याव: | द्वेक्ष्याम: | उ. |
| लोट् | द्वेष्टु-द्विष्टात् | द्विष्टाम् | द्विषन्तु | प्र. |
| | द्विड्ढि-द्विष्टात् | द्विष्टम् | द्विष्ट | म. |
| | द्वेषाणि | द्वेषाव | द्वेषाम | उ. |
| लङ् | अद्वेट्-ड् | अद्विष्टाम् | अद्विषु:-अद्विषन् | प्र. |
| | अद्वेट्-ड् | अद्विष्टम् | अद्विष्ट | म. |
| | अद्वेषम् | अद्विष्व | अद्विष्म | उ. |
| वि. लि. | द्विष्यात् | द्विष्याताम् | द्विष्यु: | प्र. |
| | द्विष्या: | द्विष्यातम् | द्विष्यात | म. |
| | द्विष्याम् | द्विष्याव | द्विष्याम | उ. |
| आ. लि. | द्विष्यात् | द्विष्यास्ताम् | द्विष्यासु: | प्र. |
| | द्विष्या: | द्विष्यस्तम् | द्विष्यास्त | म. |
| | द्विष्यासम् | द्विष्यास्व | द्विष्यास्म | उ. |

१ 'निघो निमित्तम्' (३-३-८७) इति निपातनात् निपूर्वकादस्मात् अप्प्रत्यये साधु:। निमितम् = समन्तात् मितम् समारोहपरिणाहमित्यर्थ:। निर्विशेषं हन्यन्ते इति निघा: = वृक्षा: शालयश्च।

२ निघ्न: आयत्त:, अधीन:। निपूर्वकादस्मात्, बाहुलकात्, 'घञर्थे कविधानम्–' (वा. ३-३-५८) इति वा कप्रत्यय:।

३ 'समूलाकृतजीवेषु हन्–' (३-४-३६) इति यथासंख्यं समूले उपपदे ण्मुल्। 'कषादिषु यथाविधि–' (३-४-४६) इति वचनात् ण्मुल्प्रयोजकस्येव हन्तेरनुप्रयोग:। 'कृन्मेजन्त:' (१-१-३९) णमुलन्तमव्ययम् इति।

४ 'करणे हन:' (३-४-३६) इति णमुल्। पाणिना हन्तीत्यर्थ:। कषादित्वात् (३-४-४६) पूर्वप्रयुक्तस्यैवानुप्रयोग:।

५ 'हिंसार्थानां च समानकर्मकाणाम्' (३-४-४८) इति णमुल्।

६ 'हन्तेरत्पूर्वस्य' (८-४-२२) इति णत्वम्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुङ् | अद्विषत् | अद्विक्षताम् | अद्विक्षन् | प्र. |
| | अद्विक्षः | अद्विक्षतम् | अद्विक्षत | म. |
| | अद्विक्षम् | अद्विक्षाव | अद्विक्षाम | उ. |
| लृङ् | अद्वेक्ष्यत् | अद्वेक्ष्यताम् | अद्वेक्ष्यन् | प्र. |
| | अद्वेक्ष्यः | अद्वेक्ष्यतम् | अद्वेक्ष्यत | म. |
| | अद्वेक्ष्यम् | अद्वेक्ष्याव | अद्वेक्ष्याम | उ. |

आत्मनेपदे—१ **प्र.** द्विष्टे द्विषाते द्विषते। **म.** द्विक्षे द्विषाथे द्विड्ढ्वे। **उ.** द्विषे द्विष्वहे द्विष्महे। २ **प्र.** दिद्विषे दिद्विषाते दिद्विषिरे। **म.** दिद्विषिषे दिद्विषाथे दिद्विषिध्वे। **उ.** दिद्विषे दिद्विषिवहे दिद्विषिमहे। द्वेष्टा। द्वेक्ष्यते। ५ **प्र.** द्विष्टाम् द्विषाताम् द्विषताम्। **म.** द्विक्ष्व द्विषाथाम् द्विड्ढ्वम्। **उ.** द्वेषै द्वेषावहै द्वेषामहै। ६ **प्र.** अद्विष्ट अद्विषाताम् अद्विषत। **म.** अद्विष्ठाः अद्विषाथाम् अद्विड्ढ्वम्। **उ.** अद्विषि अद्विष्वहि अद्विष्महि। ७ **प्र.** द्विषीत द्विषीयाताम् द्विषीरन्। **म.** द्विषीथाः द्विषीयाथाम् द्विषीध्वम्। **उ.** द्विषीय द्विषीवहि द्विषीमहि। ८ **प्र.** द्विक्षीष्ट द्विक्षीयास्ताम् द्विक्षीरन्। **म.** द्विक्षीष्ठाः द्विक्षीयास्थाम् द्विक्षीध्वम्। **उ.** द्विक्षीये द्विक्षीवहि द्विक्षीमहि। ९ **प्र.** अद्विक्षत अद्विक्षाताम् अद्विक्षन्त। **म.** अद्विक्षथाः अद्विक्षाथाम् अद्विक्षध्वम्। **उ.** अद्विक्षि अद्विक्षावहि अद्विक्षामहि। १० अद्वेक्ष्यत।

**णिचि**—द्वेषयति-ते। **सनि**—दिद्विक्षति-ते। **यङि**—देद्विष्यते। **यङ्लुकि**—देद्विषीति-देद्वेष्टि। **कृत्सु**—द्वेषकः-षिका, **णिचि**—द्वेषकः-षिका, दिद्विक्षकः-क्षिका, देद्विषकः-षिका, द्वेष्टा-ष्ट्री, द्वेषयिता-त्री, द्विषन्-न्ती, द्वेषयन्-न्ती, दिद्विक्षन्-न्ती, द्वेक्ष्यन्-न्ती-ती, द्वेषयिष्यन्-न्ती-ती, दिद्विक्षिष्यन्-न्ती-ती, द्विषाणः, द्वेषयमाणः, द्वेक्ष्यमाणः, द्वेषयिष्यमाणः, विप्रद्विट्-मित्रद्विट्, मधुद्विट्, प्रद्विट्, ब्रह्मद्विट्-द्विषौ-द्विषः, द्विष्टम्-द्विष्टः-ष्टवान्, द्वेषितः, द्विषः, द्वेषी, द्वेषणः, द्विषन्, दिद्विक्षुः, द्वेष्टव्यम्, द्वेषयितव्यम्, द्वेषणीयम्, द्वेष्यम्, द्विष्यमाणः, द्वेष्यमाणः, द्वेषः, द्वेष्टुम्, द्वेषयितुम्, द्विष्टिः, द्वेषणा, द्वेषणम्, द्विष्ट्वा, द्वेषयित्वा, प्रद्विष्य, प्रद्वेष्य।

**(१०१४) दुह—प्रपूरणे**। प्रपूरणम् = दोहनम्। (दूध निकालना, दोहना)। सकर्म.। अनि.। उभय.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | दोग्धि | दुग्धः | दुहन्ति | प्र. |
| | दोक्षि | दुग्धः | दुग्ध | म. |
| | दोह्मि | दुह्वः | दुह्मः | उ. |
| लिट् | दुदोह | दुदुहतुः | दुदुहुः | प्र. |
| | दुदोहिथ | दुदुहथुः | दुदुह | म. |
| | दुदोह | दुदुहिव | दुदुहिम | उ. |
| लुट् | दोग्धा | दोग्धारौ | दोग्धारः | प्र. |
| | दोग्धासि | दोग्धास्थः | दोग्धास्थ | म. |
| | दोग्धास्मि | दोग्धास्वः | दोग्धास्मः | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृट् | धोक्ष्यति | धोक्ष्यत: | धोक्ष्यन्ति | प्र. |
| | धोक्ष्यसि | धोक्ष्यथ: | धोक्ष्यथ | म. |
| | दोक्ष्यामि | धोक्ष्याव: | धोक्ष्याम: | उ. |
| लोट् | दोग्दु-दुग्धात् | दुग्धाम् | दुहन्तु | प्र. |
| | दुग्धि-दुग्धात् | दुग्धम् | दुग्ध | म. |
| | दोहानि | दोहाव | दोहाम | उ. |
| लङ् | अधोक्-अधोग् | अदुग्धाम् | अदुहन् | प्र. |
| | अधोक्-अधोग् | अदुग्धम् | अदुग्ध | म. |
| | अदोहम् | अदुह्व | अदुह्म | उ. |
| वि. लि. | दुह्यात् | दुह्याताम् | दुह्यु: | प्र. |
| | दुह्या: | दुह्यातम् | दुह्यात | म. |
| | दुह्याम् | दुह्याव | दुह्याम | उ. |
| आ. लि. | दुह्यात् | दुह्यास्ताम् | दुह्यासु: | प्र. |
| | दुह्या: | दुह्यास्तम् | दुह्यास्त | म. |
| | दुह्यासम् | दुह्यास्व | दुह्यास्म | उ. |
| लुङ् | अधुक्षत् | अधुक्षताम् | अधुक्षन् | प्र. |
| | अधुक्ष: | अधुक्षतम् | अधुक्षत | म. |
| | अधुक्षम् | अधुक्षाम | अधुक्षाम | उ. |
| लृङ् | अधोक्ष्यत् | अधोक्ष्यताम् | अधोक्ष्यन् | प्र. |
| | अधोक्ष्य: | अधोक्ष्यतम् | अधोक्ष्यत | म. |
| | अधोक्ष्यम् | अधोक्ष्याव | अधोक्ष्याम | उ. |

अत्मनेपदे

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | दुग्धे | दुहाते | दुहते | प्र. |
| | धुक्षे | दुहाथे | दुग्ध्वे | म. |
| | दुहे | दुह्वहे | दुह्महे | उ. |
| लिट् | दुदुहे | दुदुहाते | दुदुहिरे | प्र. |
| | दुदुहिषे | दुदुहाथे | दुदुहिध्वे-ढ्वे | म. |
| | दुदुहे | दुदुहिवहे | दुदुहिमहे | उ. |
| लुट् | दोग्धा | दोग्धारौ | दोग्धार: | प्र. |
| | दोग्धासे | देग्धासाथे | दोग्धाध्वे | म. |
| | दोग्धाहे | दोग्धास्वहे | दोग्धास्महे | उ. |
| लृट् | धोक्ष्यते | धोक्ष्येते | धोक्ष्यन्ते | प्र. |
| | धोक्ष्यसे | धोक्ष्येथे | धोक्ष्यध्वे | म. |
| | धोक्ष्ये | धोक्ष्यावहे | धोक्ष्यामहे | उ. |
| लोट् | दुग्धाम् | दुहाताम् | दुहताम् | प्र. |
| | धुक्ष्व | दुहाथाम् | धुग्ध्वम् | म. |
| | दोहै | दोहावहै | दोहामहै | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लङ् | अदुग्ध | अदुहाताम् | अदुहत | प्र. |
| | अदुग्धाः | अदुहाथाम् | अदुग्ध्वम् | म. |
| | अदुहि | अदुह्वहि | अदुह्महि | उ. |
| वि. लि. | दुहीत | दुहीयाताम् | दुहीरन् | प्र. |
| | दुहीथाः | दुहीयाथाम् | दुहीध्वम् | म. |
| | दुहीय | दुहीवहि | दुहीमहि | उ. |
| आ. लि. | धुक्षीष्ट | धुक्षीयास्ताम् | धुक्षीरन् | प्र. |
| | धुक्षीष्ठाः | धुक्षीयास्थाम् | धुक्षीध्वम् | म. |
| | धुक्षीय | धुक्षीवहि | धुक्षीमहि | उ. |
| लुङ् | अदुग्ध-अधुक्षत | अधुक्षाताम् | अधुक्षन्त | प्र. |
| | अदुग्धाः-अधुक्षथाः | अधुक्षाथाम् | अधुग्ध्वम्-अधुक्षध्वम् | म. |
| | अधुक्षि | अदुह्वहि-अधुक्षावहि | अदुह्महि-अदुक्षामहि | उ. |
| लृङ् | अधोक्ष्यत | अधोक्ष्येताम् | अधोक्ष्यन्त | प्र. |
| | अधोक्ष्यथाः | अधोक्ष्येथाम् | अधोक्ष्यध्वम् | म. |
| | अधोक्ष्ये | अधोक्ष्यावहि | अधोक्ष्यामहि | उ. |

**कर्मणि**—दुह्यते। **णिचि**—दोहयति-ते। २ दोहयाञ्चकार-चक्रे। ९ अदूदुहत्-त। **सनि**—दुधुक्षति-ते। **यङि**—दोहुह्यते। **यङ्लुकि**—दोहुहीति दोदोग्धि। **कृत्सु**—दोहकः-हिका, णिचि—दोहकः-दोहिका, दुधुक्षकः-क्षिका, दोदुहकः-हिका, दुग्ध्वा, संदुह्य, दोग्धुम्, दोग्धव्यम्, दोहनीयम्, दुह्यम्, दोह्यम्, दुग्धम्, दुहन्, दुहन्ती, दुहानः, धोक्ष्यम्-न्ती-ती, गोधुक्, दुहिता, कामदुधा गौ, दुधुक्षा, दुधुक्षुः, दुधुक्षन्, दोदुह्यमानः, दोही, गोदोहनी, ईषद्दोहनः -दुर्दोहनः-सुदोहनः,

**( १०१५ ) दिह—उपचये**। (बढ़ना, जमाना, लीपटना, पोतना)। सक.। अनिट्.। उभय.।

१ प्र. दोग्धि। म. धोक्षि। उ. देह्मि। २ दिदेह। ३ देग्धा। ४ धेक्ष्यति। ५ देग्धु। ६ अधेक्-ग्। ७ दिह्यात्। ८ दिह्यात्। ९ अधिक्षत्। १० अधेक्ष्यत्। **आत्मने.** १ दिग्धे। २ दिदिहे। ३ देग्धा। ४ धेक्ष्यते। ५ दिग्धाम्। ६ अदिग्ध। ७ दिहीत। ८ धिक्षीष्ट। ९ अदिग्ध-अधिक्षत। १० अधेक्ष्यत। इत्यादि सर्वं "दोग्धि" (१०१४) वत्। देही। देहः।

**( १०१६ ) लिह्—आस्वादने**। (चाटना। चरवाना)। सक.। अनिट्। उभय.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | लेढि | लीढः | लिहन्ति | प्र. |
| | लेक्षि | लीढः | लीढ | म. |
| | लेह्मि | लिह्वः | लिह्मः | उ. |
| लिट् | लिलेह | लिलिहतुः | लिलिहुः | प्र. |
| | लिलेहिथ | लिलिहथुः | लिलिह | म. |
| | लिलेह | लिलिहिव | लिलिहिम | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुट् | लेढा | लेढारौ | लेढारः | प्र. |
| | लेढासि | लेढास्थः | लेढास्थ | म. |
| | लेढास्मि | लेढास्वः | लेढास्मः | उ. |
| लृट् | लेक्ष्यति | लेक्ष्यतः | लेक्ष्यन्ति | प्र. |
| | लेक्ष्यसि | लेक्ष्यथः | लेक्ष्यथ | म. |
| | लेक्ष्यामि | लेक्ष्यावः | लेक्ष्यामः | उ. |
| लोट् | लेढु-लीढात् | लीढाम् | लिहन्तु | प्र. |
| | लीढि-लीढात् | लीढम् | लीढ | म. |
| | लेहानि | लेहाव | लेहाम | उ. |
| लङ् | अलेट्-ड् | अलीढाम् | अलिहन् | प्र. |
| | अलेट्-ड् | अलीढम् | अलीढ | म. |
| | अलेहम् | अलिह्व | अलिह्म | उ. |
| वि. लि. | लिह्यात् | लिह्याताम् | लिह्युः | प्र. |
| | लिह्याः | लिह्यातम् | लिह्यात | म. |
| | लिह्याम् | लिह्याव | लिह्याम | उ. |
| आ. लि. | लिह्यात् | लिह्यास्ताम् | लिह्यासुः | प्र. |
| | लिह्याः | लिह्यास्तम् | लिह्यास्त | म. |
| | लिह्यासम् | लिह्यास्व | लिह्यास्म | उ. |
| लुङ् | अलिक्षत् | अलिक्षताम् | अलिक्षन् | प्र. |
| | अलिक्षः | अलिक्षतम् | अलिक्षत | म. |
| | अलिक्षम् | अलिक्षाव | अलिक्षाम | उ. |
| लृङ् | अलेक्ष्यत् | अलेक्ष्यताम् | अलेक्ष्यन् | प्र. |
| | अलेक्ष्यः | अलेक्ष्यतम् | अलेक्ष्यत | म. |
| | अलेक्ष्यम् | अलेक्ष्याव | अलेक्ष्याम | उ. |

आत्मनेपदपक्षे

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | लीढे | लिहाते | लिहते | प्र. |
| | लिक्षे | लिहाथे | लीढ्वे | म. |
| | लिहे | लिह्वहे | लिह्महे | उ. |
| लिट् | लिलिहे | लिलिहाते | लिलिहिरे | प्र. |
| | लिलिहिषे | लिलिहाथे | लिलिहिध्वे-ढ्वे | म. |
| | लिलिहे | लिलिहिवहे | लिलिहिमहे | उ. |
| लुट् | लेढा | लेढारौ | लेढारः | प्र. |
| | लेढासे | लिढासाथे | लेढाध्वे | म. |
| | लेढाहे | लेढास्वहे | लेढास्महे | उ. |
| लृट् | लेक्ष्यते | लेक्ष्येते | लेक्ष्यन्ते | प्र. |
| | लेक्ष्यसे | लेक्ष्येथे | लेक्ष्यध्वे | म. |
| | लेक्ष्ये | लेक्ष्यावहे | लेक्ष्यामहे | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लोट् | लीढाम् | लीहाताम् | लीहताम् | प्र. |
| | लिक्ष्व | लिहाथाम् | लीढ्वम् | म. |
| | लेहै | लेहावहै | लेहामहै | उ. |
| लङ् | अलीढ | अलिहाताम् | अलिहत | प्र. |
| | अलीढाः | अलिहाथाम् | अलीढ्वम् | म. |
| | अलिहि | अलिह्वहि | अलिह्महि | उ. |
| वि. लि. | लिहीत | लिहीयाताम् | लिहीरन् | प्र. |
| | लिहीथाः | लिहीयाथाम् | लिहीध्वम् | म. |
| | लिहीय | लिहीवहि | लिहीमहि | उ. |
| आ. लि. | लिक्षीष्ट | लिक्षीयास्ताम् | लिक्षीरन् | प्र. |
| | लिक्षीष्ठाः | लिक्षीयास्थाम् | लिक्षीध्वम् | म. |
| | लिक्षीय | लिक्षीवहि | लिक्षीमहि | उ. |
| लुङ् | अलीढ-अलिक्षत | अलिक्षाताम् | अलिक्षन्त | प्र. |
| | अलीढाः-अलिक्षथाः | अलिक्षाथाम् | अलीढ्वम्-अलिक्षध्वम् | म. |
| | अलिक्षि | अलिह्वहि-अलिक्षावहि | अलिह्महि-अलिक्षामहि | उ. |
| लृङ् | अलेक्ष्यत | अलेक्ष्येताम् | अलेक्ष्यन्त | प्र. |
| | अलेक्ष्यथाः | अलेक्ष्येथाम् | अलेक्ष्यध्वम् | म. |
| | अलेक्ष्ये | अलेक्ष्यावहि | अलेक्ष्यामहि | उ. |

**कर्मणि**—लिह्यते। **णिचि**—लेहयति-ते। **सनि**—लिलिक्षति-ते। **यङि**—लेलिह्यते। **यङ्लुकि**—लेलिहीति-लेलेढि। **कृत्सु**—लेहकः-हिका, लिलिक्षकः-क्षिका, लेलिहकः-हिका, लेढा[१]-ढ्री, लेहयिता-त्री, लिहन्-न्ती, लेहयन्-न्ती, लिलिक्षन्-न्ती, लेक्ष्यन्-न्ती-ती, लेहयिष्यन्-न्ती-ती, लिहानः, लेहयमानः, लेक्ष्यमाणः, लेहयिष्यमाणः, लिट्-लिहौ-लिहः, लीढम्[२]-ढः-ढवान्, लेहितः-तम्, लेहः[३], लेहनः[४], मधुलेही[५], वहंलिहः[६]-अभ्रंलिहः, लेलिहानः[७], लेढव्यम्, लेहितव्यम्, लेहनीयम्, लेह्यम्, लिह्यमानः, लेह्यमानः, लेहः, मधुलेहः, लिलिक्षः, लेढुम्, लेहयितुम्, लीढिः, लेहना, लेहनम्, लीढ्वा, लेहयित्वा, संलिह्य, संलेह्य।

**(१०१७) चक्षिङ्—व्यक्तायां वाचि**। (स्पष्ट बोलना) सकर्म.। सेट्। ख्यात्रादेशे त्वनिट्। आत्मने.। प्रायेणायमाङ्पूर्वः।

१ धातुहकारस्य ढत्वे, 'झषस्तथोः–' (८-२-४०) इति धत्वे, 'ष्टुना ष्टुः' (८-४-४१) इति ष्टुत्वेन धकारस्य ढकारे, 'ढो ढे लोपः' (८-३-१३) इति धातुस्थढकारस्य लोपे रूपमेवम्। एवमेव तुमुनादिषु प्रक्रिया ज्ञेया।

२ अत्रापि ढत्वधत्वष्टुढलोपः। प्रत्ययस्य कित्वान्न प्रकृतेर्गुणः।

३ इगुपधलक्षणकप्रत्यापवादे 'श्याद् व्यध–' (३-१-१४१) इति णप्रत्यये गुणे च रूपमेवम्।

४ बाहुलकान्नन्द्यादित्वेन कर्तरि ल्युप्रत्यये नादेशे च रूपमेवम्।

५ मधु लेढीति मधुलेही। 'सुप्यजातौ–' (३-२-७८) इति णिनिः।

६ वहं = स्कन्धं लेढीति वहंलिहः = वत्सः। अभ्रं लेढीति अभ्रंलिहः = वायुः सौधो वा। 'वहाभ्रे लिहः' (३-२-३२) इति खश्। 'कर्तरि शप्' (३-२-६८) इति शप्। तस्य 'अदिप्रभृतिभ्यः–' (३-४-७२) इति लुक्। खित्वात् 'अरुर्द्विषदजन्तस्य–' (६-३-६७) इति पूर्वपदस्य मुमागमः प्रत्ययस्य शित्वेन सार्वधातुकत्वम्, तेन सार्वधातुकमपित्।

७ यङन्तात् चानश् प्रत्यये रूपमेवम्। अन्यथा लेलिह्यमान इत्येव शानचि भवेत्।

१ चष्टे चक्षाते चक्षते। म. चक्षे चक्षाथे चढ्वे। उ. चक्षे चक्ष्वहे चक्ष्महे। २ प्र. चचक्षे चचक्षाते चचक्षिरे। म. चचक्षिषे चचक्षाथे चचक्षिध्वे। उ. चचक्षे चचक्षिवहे चचक्षिमहे। **ख्याञादेशपक्षे**– २ प्र. चख्ये चख्याते चख्यिरे। म. चख्यिषे चख्याथे चख्यिध्वे। उ. चख्ये चख्यिवहे चख्यिमहे। **ख्यञो ञित्वात्परस्मैपदपक्षे**– २ प्र. चख्यौ चख्यतुः चख्युः। म. चख्यिथ-चख्याथ चख्यथुः चख्य। उ. चख्यौ चख्यिव चख्यिम। ३ ख्याता। म. ख्यातासे-सि। उ. ख्याताहे-स्मि। ४ ख्यास्यते-ति। ५ चष्टाम् चक्षाताम् चक्षताम्। म. चक्ष्व चक्षाथाम् चढ्वम्। उ. चक्षै चक्षावहै चक्षामहै। ६ प्र. अचष्ट अचक्षाताम् अचक्षत। म. अचष्ठाः अचक्षाथाम् अचढ्वम्। उ. अचक्षि अचक्ष्वहि अचक्ष्महि। ७ चक्षीत चक्षीयाताम् चक्षीरन्। म. चक्षीथाः चक्षीयाथाम् चक्षीध्वम्। उ. चक्षीय चक्षीवहि चक्षीमहि। ८ प्र. ख्यासीष्ट ख्यासीयास्ताम्। म. ख्यासीष्ठाः। उ. ख्यासीय। परस्मैपदे– प्र. ख्यायात् ख्यायास्ताम्। पक्षे– ख्येयात् ख्येयास्ताम्। ९ प्र. अख्यत अख्येताम् अख्यन्त। म. अख्यथाः अख्येथाम् अख्यध्वम्। उ. अख्ये अख्यावहि अख्यामहि। **परस्मै**– प्र. अख्यत्। म. अख्यः। उ. अख्यम्। १० अख्यास्यत-अख्यास्यत्। **वर्जने ख्याञ् नेष्टः**, इति वार्तिकेन 'समचक्षिष्ट'। इत्यादि। **सर्वत्र ख्याञादेशस्थलेषु क्शाञादेश इति पक्षे**– २ चक्शे-चक्शौ। ३ क्शाता। ४ क्शास्यते-ति। ८ क्शासीष्ट-क्शायात्-क्शेयात्। ९ अक्शास्त-अक्शासीत्। १० अक्शास्यत अक्शास्यत्।

**कर्मणि**—ख्यायते-क्शायते। **णिचि**– ख्यापयति-ते-क्शापयति-ते। **सनि**– चिख्यासते-चिख्यासति-चिक्शासते-चिक्शासति। **यङि**—चाख्यायते-चाक्शायते। **यङ्लुकि**—चाचक्षीति-चाचष्टि। **कृत्सु**—ख्यातव्यः-क्शातव्यः, ख्यानीयः-क्शानीयः, ख्येयः-क्शेयः, ख्यातः-क्शातः-चक्षाणः, ख्यास्यन्-क्शास्यन्, ख्यास्यती-न्ती, क्शास्यन्ती-ती, ख्यातुम्-क्शातुम्, चक्षणम्-ख्यानम्-क्शानम्, ख्यात्वा-क्शात्वा, आख्याय-आक्शाय, आख्या, व्याख्या, चक्षुः। विचक्षणः, वि + आ = विवरणे - व्याचष्टे।

**( १०१८ ) ईर—गतौ कम्पने च**। (जाना, कांपना)। सक.। सेट्। आत्मने.।

१ प्र. ईर्ते ईराते ईरते। म. ईर्षे इराथे ईर्ध्वे। उ. ईरे ईर्वहे इर्महे। २ ईराञ्चक्रे, ईरामास, ईराम्बभूव। इत्यादि। 'एधति' वत्। ३ ईरिता। ४ ईरिष्यते। ५ ईर्ताम्। ६ ऐर्त। ७ ईरीत। ८ ईरिषीष्ट। ९ एरिष्ट। १० ऐरिष्यत।

**कर्मणि**—ईर्यते। २ ईराञ्चक्रे। ९ ऐरि। **णिचि**—ईरयति। **सनि**—ईरिरिषते। **कृत्सु**—ईरितव्यम्, ईरणीयम्, ईर्यम्, ईरितः, ईरितुम्, ईरणम्, ईरित्वा, उदीये, समीरणः, ईर्मम्, स्वैरी, स्वैरिणी।

**( १०१९ ) ईड—स्तुतौ**। (प्रार्थना करना)। सक.। सेट्। आत्मने.।

१ प्र. ईडे, ईडाते, ईडते। म. ईडिषे, ईडाथे, ईडिध्वे। उ. ईडे, ईड्वहे, ईड्महे। २ ईडाञ्चक्रे इत्यादि 'एधाञ्चक्रे' वत्। ३ ईडिता, इडितासे। ४ ईडिष्यते ५ प्र. ईडाम्, ईडाताम्,

ईडताम्। म. ईडिष्व, ईडाथाम्, ईडिध्वम्। उ. ईडै, ईडावहै, ईडामहै। ६ ऐट्ट, ऐडाताम्, ऐडत। म. ऐट्ठा, ऐडाथाम् ऐड्ध्वम्। उ. ऐडि, ऐड्वहि, ऐड्महि। ७ प्र. ईडीत, ईडीयाताम् ईडीरन्। म. ईडीथाः, ईडीयाथाम्, ईडीध्वम्। उ. ईडीय, ईडीवहि, ईडीमहि। ८ ईडिषीष्ट। ९ ऐडिष्ट। १० ऐडिष्यत। शेषं ईरति (१०१८) वत्।

**(१०२०) ईश—ऐश्वर्ये।** (अधिकार होना, मनानुसार काम करने की शक्ति रखना)। अक.। सेट्। आत्मने.।

१ प्र. ईष्टे, ईशाते, ईशते। म. ईशिषे, ईशाथे, ईशिध्वे। उ. ईशे, ईश्वहे, ईश्महे। २ ईशाञ्चक्रे। ३ ईशिता। ४ ईशिष्यते। ५ ईष्टाम्। ६ ऐष्ट। ७ ईशीत। ८ ईशिषीष्ट। ९ ऐशिष्ट। १० ऐशिष्यत। इत्यादि 'इडति' (१०१९) वत्।

**(१०२१) आस—उपवेशने।** (बैठना)। **अधि**– वास करना, रहना, **अभि**—अध्ययान करना, **उप**—उपासना करना, **निर्**—बाहर निकलना या निकाल देना। अक.। सेट्। आत्मने.।

१ प्र. आस्ते आसाते आसते। म. आस्से आसाथे आध्वे। उ. आसे आस्वहे आस्महे। २ आसाञ्चक्रे। ३ प्र. आसिता आसितारौ आसितारः। म. आसितासे आसिताथे आसिताध्वे। उ. आसिताहे आसिस्वहे आसितास्महे। ४ आसिष्यते। ५ प्र. आस्ताम् आसाताम् आसताम्। म. आस्व आसाथाम् आध्वम्। उ. आसै आसावहै आसामहै। ६ प्र. आस्त आसाताम् आसत। म. आस्थाः आसाथाम् आध्वम्। उ. आसि आस्वहि आस्महि। ७ प्र. आसीत् आसीयात्ताम् आसीरन्। म. आसीथाः आशीयाथाम् आसीध्वम्। उ. आसीय आसीवहि आसीमहि। ८ प्र. आसिषीष्ट आसिषीयास्ताम् आसिषीरन्। म. आसिषीष्ठाः आसिषीयास्थाम् आसिषीध्वम्। उ. आसिषीय आसिषीवहि आसिषीमहि। ९ प्र. आसिष्ट आसिषाताम् आसिषत। म. आसिष्ठाः आसिषाथाम् आसिड्ढ्वम्-ध्वम्। उ. आसिषि आसिष्वहि आसिष्महि। १० प्र. आसिष्यत आसिष्येताम् आसिष्यन्त। म. आसिष्यथाः आसिष्येथाम् आसिष्यध्वम्। उ. आसिष्ये आसिष्यावहि आसिष्यामहि।

**भावे**– आस्यते। **णिचि**—आसयति-ते। **सनि**—आसिसिषते। **कृत्सु**—आसकः-सिका, आसिसिषकः-षिका, दुरासिका[1], आसिता-त्री, आसयिता-त्री, आसिसिषिता-त्री, अध्यासयन्[2], आसयन्[3]-न्ती, आसयिष्यन्-न्ती-ती, आसीनः,[4] आः-आसौ-आसः, आसितम्-तः-तवान्, आसः, आसितव्यम्, आसयितव्यम्, आसनीयम्, आस्यम्, उपास्यमानः, आसः, कैलासः,[5] आसिसिष,

१ 'संज्ञायाम्' (३-३-१०९) इति ण्वुल्। 'दुरीश्चरद्वारबहिर्वितर्दिकादुरासिकायै रचितोऽयमञ्जलिः। इति वैराग्यपञ्चके (३)।

२ त्रिवर्गपारीणमसौ भवन्तम् अध्यासयन् आसनमेकमिन्द्रः। (भ.का. २-४६)

३ 'अणावकर्मकात् चित्तवत्कर्तृकात्' (१-३-८८) इति ण्यन्तात् शतैव।

४ 'ईदासः' (७-२-८३) इति आनस्यादेरीकारः।

५ 'केलिः प्रयोजनस्य = कैलः 'चूडादिभ्य उपसंख्यानम्' (वा. ५-१-११०) इत्यण्। आस्यतेऽस्मिन् इत्यासः। 'हलश्च' (३-३-१२१) इत्यधिकरणे घञ्। कैलश्चासावासश्चेति 'विशेषणं विशेष्येण–' (२-१-५७) इति संज्ञात्वात् लोहितशाल्यादित्वत् समासो नित्यम्।' इति मा.धा. वृत्तिः।

आसितुम्, आसयितुम्, आसना[1], उपासना[2], उपास्तिः[3], आस्या[4], आसिसिषा, आसनम्, आसित्वा, आसयित्वा, उपास्य, समास्य । उपासजे । अध्यास्ते ।

**(१०२२) आङः शासु—इच्छायाम्** । (भला करना, आशा करना, इच्छा करना) । सक. । सेट् । आत्मने. ।

१ **प्र.** आशास्ते । **म.** आशास्से । **उ.** आशासे । २ **प्र.** आशशासे आशशासाथे आशशासिरे । **म.** आशशासिषे आशशासाथे आशशासिध्वे । **उ.** आशशासे आशशासिवहे आशशासिमहे । ३ **प्र.** आशसिता । **म.** आशासितासे । **उ.** आशासिताहे । ४.आशासिष्यते । ५ **प्र.** आशास्ताम् आशासाताम् आशासताम् । **म.** आशास्स्व आशासाथाम् आशाध्वम् । **उ.** आशासै आशासावहै आशासामहै । ६ **प्र.** आशास्त आशासाताम् आशासत । **म.** आशास्थाः आशासाथाम् आशाध्वम् । **उ.** आशासि आशास्वहि आशास्महि । ७ **प्र.** आसासीत् आशासीयाताम् आशासीरन् । **म.** आशासीथाः आशासीयाथाम् आशासीध्वम् । **उ.** आशासीय आशासीवहि आशासीमहि । ८ आशासिषीष्ट । ९ आशासिष्ट । १० आशासिष्यत ।

**कर्मणि**—आशास्यते । **णिचि**—आशासयति-ते । **सनि**—आशिशासिषते । **यङि**—आशाशास्यते । **यङ्लुकि**—आशाशासीति आशाशास्ति । **कृत्सु**—आशासितव्यम्, आशासनीयम्, आशास्यम्[5], आशासितः[6], आशासानः[7], आशासितुम्, आशासनम्, आशास्यः, आशीः[8], आशा, आशिषा,[9] अन्यदाशीः[10]-अन्याशीः,

१ 'ण्यासश्रन्थो युच्' (३-३-१०७) इति शुद्धादेव धातोः युच् ।

२ 'प्रायोपासनया शान्तिं मन्वानो वालिसम्भवः । युक्त्वा योगं स्थितः शैले विवृण्वंश्चित्तवेदनम् ।' (भ.का. ७-७३) ।

३ 'बाहुलकात् क्तिन्—' इति मा.धा. वृत्तिः ।

४ 'वाऽसरूप—' (३-१-९४) इति न्यायेन ण्यादपि भावे इति मा.धा. वृत्ति ।

५ 'एतिस्तुशास्वृ—' (३-१-१०९) इत्यत्र उदितो निर्देशात् न अस्मात् क्यः प्रसङ्ग इति आशास्यम् इति ण्यदेव इति माधवः ।

६ 'आङ् शास' इति दुर्गसम्मतपाठे निष्ठायामिटि एवं रूपम् । उदित्पक्षपातिनौ आत्रेयमैत्रेयौ तु आशास्तः, आशास्तवान् इति निष्ठायां रूपमाहुतिरिति माधवीये स्पष्टम् । अयं भावः— उदित् पक्षे क्त्वायामिड्विकल्पनात् निष्ठायाम् 'यस्य विभाषा' (७-२-१५) इतीण्निषेधः, इति तेषां मतम् ।

७ तच्छीलादिषु कर्तृषु 'अनुदात्तेतश्च हलादेः' (३-२-१४९) इति युच् प्रत्ययः ।

८ 'आङ शासः क्वौ' (वा. ६-४-३४) इति आङ् पूर्वकादस्मात् क्विपि, उपधाया इत्वम् । 'आशिषि लिङ् लोटौ' (३-३-१३७) शियाशीः—' (८-२-१०४) इत्यादिनिर्देशाद्वा उपधाया इकारः । धातुसकारस्य 'र्वोरुपधाया दीर्घ इकः' (८-२-७६) इति दीर्घः । मित्रशीः आर्यशीः इत्यादि तु नास्माद्धातोः किन्तु 'शासु अनुशिष्टौ' इत्यस्मादिति न्यासपदमञ्जर्यादिषु स्पष्टम् ।

९ 'आपं चैव हलन्तानाम्—' इति वचनात् क्विबन्तात् टाप् । क्विबन्तात् धातोः इत्वे, 'शासिवसि—' (८-३-६०) इत्यादिना षत्वे च एवं सम्पद्यते ।

१० अन्याः आशीः अन्यदाशीः । 'अषष्ठ्यतृतीयास्थस्यान्यस्य दुग् आशीराशा—' (६-३-९९) इत्यादिना दुगागमः । षष्ठीतृतीयान्तत्वे तु अन्याशीः इत्येव ।

आशासा[१]-आशास्ति:, आशाशित्वा[२]-आशास्त्वा, आशासकः-सिका, आशासिता-त्री, आशासयिता-त्री।

**(१०२३) वस—आच्छादने।** (ढकना, वस्त्र पहनना, ओढ़ना, पोशाक धारण करना)। सक.। सेट्। आत्म.।

१ **प्र.** वस्ते वसाते वसते। **म.** वस्से वसाथे वध्वे[३]। **उ.** वसे वस्वहे वस्महे। २ **प्र.** ववसे ववसाते ववसिरे। **म.** ववसिषे ववसाथे ववसिध्वे। **उ.** ववसे ववसिवहे ववसिमहे। ३. वसिता। ४. वसिष्यते। ५ **प्र.** वस्ताम् वसाताम् वसताम्। **म.** वस्स्व वसाथाम् वध्वम्। **उ.** वसै वसावहै वसामहै। ६ **प्र.** अवस्त अवसाताम् अवसत। **म.** अवस्थाः अवसाथाम् अवध्वम्। **उ.** अवसि अवस्वहि अवस्महि। ७ **प्र.** वसीत वसीयाताम् वसीरन्। **म.** वसीथाः वसीयाथाम् वसीध्वम्। **उ.** वसीय वसीवहि वसीमहि। ८ **प्र.** वसिषीष्ट वसिषीयास्ताम् वसिषीरन्। **म.** वसिषीष्ठाः वसिषीयास्थाम् वसिषीध्वम्। **उ.** वसिषीय वसिषीवहि वसिषीमहि। ९ **प्र.** अवसिष्ट अवसिषाताम् अवसिषत। **म.** अवसिष्ठाः अवसिषाथाम् अवसिढ्वम्-ध्वम्। **उ.** अवसिषि अवसिस्वहि अवसिस्महि। १० अवसिष्यत।

**कर्मणि**—वस्यते। ९ अवासि। **णिचि**—वासयति-ते। **सनि**—विवसिषते। **यङि**—वावस्यते। **यङ्लुकि**—वावसीति-वावस्ति। **कृत्सु**—वासकः-सिका, **णिचि**- वासकः-सिका, विवसिषकः-षिका, वावसकः-षिका, वासिता-त्री, वासयिता-त्री, वासयन्-न्ती, वसानः,[४] वासयमानः, विवसिषमाणः, वावस्यमानः, वसिष्यमाणः, वासयिष्यमाणः, चर्मवसः[५]-चर्मवसौ-चर्मवसः, वसितम्-त्तः, वासितम्, वसः, वसा[६], सुवासी, वसन,[७] वसिता[८], वासः,विवसिषुः,वावसः,वसितव्यम्,वासयितव्यम्,वसनीयम्,वासनीयम्,वास्यम्,वस्यमानः, वास्यमानः,वासः,आवासः,कृत्तिवासाः,[९] वसितुम्,वासयितुम्,वस्तिः,वसा,[१०] वासना,वसनम्,

१ 'गुरोश्च हलः' (३-३-१०३) इति स्त्रियामकारप्रत्यये रूपमेवम्। एतच्च माधवमतेनोक्तम्। क्षीरस्वामी तु 'आशास्तिः 'गुरोश्च हलः'(३-३-१०३) इति नास्ति। निष्ठायां सेटोऽकारवचनात्। द्रष्टव्यम्(वा. ३-३-९४)' इत्याह। अत्र प्रयोगः प्रमाणम्।

२ 'क्त्वाऽपि च्छन्दसि' (७-१-३८) इति ल्यपोऽपवादे क्त्वादेशे आशास्त्वा आशासित्वा इतीड्विकल्पः' इति आत्रेयमैत्रेयावाहतुरिति माधवः। छन्दसि एवं सम्भवेऽपि लोके 'समासेऽनञ् पूर्वे' (७-१-३७) इति क्त्वाप्रत्ययस्य ल्यबादेशे आशास्य इत्येव न्याय्यमिति बोध्यम्।

३ 'धि च' (८-२-२५) धादौ प्रत्यये परे सस्य लोपः। इति सकारलोपः।

४ 'पिशाङ्गमौञ्जीयुजमर्जुनच्छवि वसानमेणाजिनमञ्जद्युतिः। (शि.व. १-६)

५ चर्म वस्ते इति चर्मवः इति क्विप् प्रत्यये रूपमेवम्। अत्वसन्तस्य चाधातोः' (६-४-१४) इत्यत्र काशिकायां प्रत्युदाहरणत्वेन प्रदर्शितम्।

६ पचाद्यजन्तात् स्त्रियां टाप्। वसा = शरीरान्तर्गतस्नेहद्रव्यम्।

७ वस्ते आच्छादयति इत्यर्थे 'अनुदात्तेतश्च–' (३-२-१४९) इति युचि रूपमेवम्।

८ 'तृन्' (३-२-१३५) इति तच्छीलादिषु कर्तृषु तृन् प्रत्यये रूपम्। 'वसिता वस्त्रमित्येवं साधुकारिणि कर्तरि' इति 'तृन्' सूत्रे प्रक्रियासर्वस्वश्लोकः।

९ औणादिकेऽसुन् प्रत्यये वासश्शब्दः। कृत्तिर्वासोऽस्येति 'अत्वसन्तस्य–' (६-४-१४) इति असम्बुद्धौ सौ परतः दीर्घो भवति। तेन रूपमेवम्।

१० भिदादिपाठात् (३-३-१०४) अङ् प्रत्ययः।

वासनम्, वासित्वा, वासयित्वा, प्रवस्य, प्रवास्य, वसु[१], वस्नम्[२], संवत्सरः[३], वस्त्रम्[४]।

(१०२४) **कसि—गतिशासनयोः**। (जाना, दण्ड देना, शासन करना)। सक.। सेट्। आत्मने.।

१ **प्र.** कंस्ते कंसाते कंसते। **म.** कंस्से कंसाथे कन्ध्वे। २ चकंसे चकंसाते चकन्सिरे। ३ कंसिता। ४ कंसिष्यते। ५ कंस्ताम् कंसाताम्। ६ अकंस्त। ७ कंसीत। ८ कंसिषीष्ट। ९ अकंसिष्ट १० अकंसिष्यत।

(१०२५) **णिसि—चुम्बने**। (चुम्बन लेना, चूमना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.।

१ **प्र.** निंस्ते निंसाते निंसते। **म.** निंस्से निंसाथे निन्ध्वे। २ निनिंस्से। ३. निंसिता। ५. निंस्ताम्। निंसै। ९ अनिंसिष्ट।

**कृत्सु**—निंसितः, निंसितुम्, निसित्वा, प्रनिंस्य-प्रणिस्य।

(१०२६) **णिजि—शुद्धौ**। (स्वच्छ करना, निर्मल करना)। सक.। सेट्। आत्मने.।

१ **प्र.** निङ्क्ते निञ्जाते निञ्जते। २. निनिञ्जे। **म.** निनिञ्जिषे। **उ.** निनिञ्जे। ३. निञ्जिता। ४. निञ्जिष्यते। ५. निङ्क्ताम् निञ्जाताम् निञ्जताम्। ६. अनिङ्क्त अनिञ्जाताम् अनिञ्जत। ७. निञ्जीत निञ्जीयाताम् निञ्जीरन्। ८. निञ्जिषीष्ट। ९. अनिञ्जिष्ट। १०. अनिञ्जिष्यत।

**कृत्सु**—निञ्जानः, निञ्जितम् निञ्जित्वा।

(१०२७) **शिजि—अव्यक्ते शब्दे**। (अस्पष्ट शब्द बोलना)। अक.। सेट्। आत्मने.। शिङ्क्ते। णिजि—(१०२६) वत्।

(१०२८) **णिजि—वर्णे। सम्पर्चने, अवयवे, अव्यक्ते, शब्दे च**। (रंगना, चमकीला करना, धुंधुरुओं का शब्द होना, टुकड़े-टुकड़े करना, अस्पष्ट शब्द होना)। सकर्मकोऽकर्मकश्च। सेट्। आत्म.।

पिङ्क्ते। 'णिजि' (१०२६) वत्। पिङ्गलः, पिञ्जरः, शानचि-पिञ्जानः। इत्यादि।

(१०२९) **वृजी—वर्जने**। (छोड़ना, वर्जित करना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। (इदित् पक्षे)

१ वृङ्क्ते (अनिदित् पक्षे) वृक्ते वृजाते वृजते। **म.** वृक्षे वृजाथे वृग्ध्वे। **उ.** वृजे वृज्वहे वृज्महे। २ **प्र.** ववृजे ववृजाते ववृजिरे। **म.** ववृजिषे ववृजाथे ववृजिध्वे। **उ.** ववृजे ववृजिवहे ववृजिमहे। ३. वर्जिता। **म.** वर्जितासे। ४. वर्जिष्यते। ५ **प्र.** वृक्ताम् वृजाताम् वृजताम्।

१ 'शॄस्वृस्निहित्रप्यसिवसि—' (द.उ. १-९५) इति उप्रत्यये रूपम्। वस्ते भाग्यवतो जनानिति वसु = धनम्।

२ औणादिके (द.उ. ५-३९) नप्रत्यये रूपम्। वस्तेऽनेनोति वस्नम् वासः।

३ संपूर्वात् वसधातोः औणादिकः (द.उ. ८-५२) सरन् प्रत्ययः। संवत्सरः = क्षणलवमुहूर्ताहोरात्रपक्षमासायनानि च इत्यर्थः। एवं परिवत्सरः, विवत्सरः, उद्वत्सरः, इडावत्सरः, इद्वत्सरः इत्यादिषु बोध्यम्। वस्त्रेण समाच्छादयति इत्यर्थे संवस्त्रयन् इत्यत्र 'मुण्डमिश्र—'(३-१-२१) इत्यादिना णिच्। 'वस्त्रात्समाच्छादने' इति काशिकावृत्तिः।

४ औणादिके (द.उ. ८-७९) ष्ट्रन् प्रत्यये वस्त्रमिति रूपम्। वस्ते शरीरमिति वस्त्रम्। 'वैतानवेदिजनितं पवमानबन्धुं वस्त्रेण बद्धुमविनीत कथं यतेथाः।' (चम्पूरामायणे ५-४८)

**म.** वृक्ष्व वृजाथाम् वृग्ध्वम् । **उ.** वर्जै वर्जावहै वर्जामहै । ६ **प्र.** अवृक्त अवृजाताम् अवृजत । **म.** अवृक्थाः अवृजाथाम् अवृग्ध्वम् । **उ.** अवृजि अवृज्वहि अवृज्महि । ७ **प्र.** वृजीत वृजीयाताम् वृजीरन् । **म.** वृजीथाः वृजीयाथाम् वृजीध्वम् । **उ.** वृजीय वृजीवहि वृजीमहि । ८ **प्र.** वर्जिषीष्ट वर्जिषीयास्ताम् वर्जिषीरन् । **म.** वर्जिषीष्ठाः वर्जिषीयास्थाम् वर्जिषीध्वम् । **उ.** वर्जिषीय वर्जिषीवहि वर्जिषीमहि । ९ **प्र.** अवर्जिष्ट अवर्जिषाताम् अवर्जिषत । **म.** अवर्जिष्ठाः अवर्जिषाथाम् अवर्जिड्ढ्वम्-ढ्वम्-ध्वम् । **उ.** अवर्जिषि अवर्जिष्वहि अवर्जिष्महि । १० अवर्जिष्यत ।

**कर्मणि**—वृज्यते । **णिचि**—वर्जयति-ते । **सनि**—विवर्जिषति । **यङि**—वरीवृज्यते । **कृत्सु**—वर्जकः-र्जिका, **णिचि**—वर्चकः-र्जिका, विवर्जिषकः-षिका, वरीवृजकः[1]-जिका, वर्जिता-त्री, वर्जयिता-त्री, वर्जयन्-न्ती, वर्जयिष्यन्-न्ती-ती, वर्जमानः, वर्जयमानः, वर्जिष्यमाणः, वर्जयिष्यमाणः, वृक्-ग्-वृजौ वृजः, वृक्तम्[2]-क्तः-तवान्, वर्जितम्-तः, वर्जः, प्रवर्जी, विवर्जिषुः, वरीवृजः, वर्जितव्यम्, वर्जनीयम्, वर्जित्वा, परिवर्ज्य, वर्जितुम्, वृज्यः,[3] वृजयः,[4] वृजिकः, वर्गः[5], वर्ग्यः, कवर्गीयः, वासुदेववर्ग्यः-वासुदेववर्गीणः, वासुदेववर्गीयः, एकवर्जम्[6], वृजिनम्[7], वृजनम्[8] ।

**(१०३०) पृजी—सम्पर्चने** । (कुलतता करना) । सक. । सेट् । आत्म. । पृङ्क्ते पृञ्जाते पृञ्जते । 'णिजि (१०२६) वत् ।

**(१०३१) षूञ्—प्राणिगर्भविमोचने** । (उत्पन्न करना, प्रसव करना, जनना) । सक. । वेट् । आत्मने. ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | सूते | सूवाते | सुवते | प्र. |
| | सूषे | सुवाथे | सूध्वे | म. |
| | सुवे | सूवहे | सूमहे | उ. |
| लिट् | सुषुवे | सुषुवाते | सुषुविरे | प्र. |
| | सुषुविषे | सुषुवाथे | सुषुविध्वे-ढ्वे | म. |
| | सुषुवे | सुषुविवहे | सुषुविवहे | उ. |

१ ऋदुपधस्याङ्गस्य 'रीगृदुपधस्य च' (७-४-९०) इति अभ्यासे रीगागमः । एवं यङन्ते सर्वत्र बोध्यम् ।

२ निष्ठायाम् 'श्वीदितो निष्ठायाम्' (७-२-१४) इति अनिट्त्वम्, ततश्च 'चोः कुः' (८-२-३०) इति कुत्वे रूपमेवम् ।

३ 'ऋदुपधाच्च—' (३-१-११०) इति क्यप् प्रत्यये रूपमेवम् ।

४ 'इक् कृष्यादिभ्यः' (वा. ३-३-१०८) इति इक् । वृजयो जनपदाः ।

५ घञि 'चजोः कु—' (७-३-५२) इति कुत्वम् ।

६ 'द्वितीयाश्च' (३-४-५३) इति द्वितीयान्त उपपदे परीप्सायां गम्यमानायां ण्मुल्प्रत्यये रूपमेवम् । परीप्सा = त्वरा । अत्र निदानं तु 'अनुदात्तं पदमेकवर्जम्' (६-१-१५८) इति निर्देश एव परीप्सायामिति नानुवर्ततेऽत्र इति हरदत्तः ।

७ 'वृजेः किच्च' (द.उ. ५-५३) इति इनच् प्रत्ययः किच्च भवति । वृजिनम् = पापम् । कित्वान्न गुणः ।

८ 'कृपॄवृजि—' (द.उ. ५-२६) इति छन्दसि विषये क्यु प्रत्यय अनादेशे च रूपमेवम् । वृजनम् = निवारणम् ...नियं च ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुट् | सविता | सवितारौ | सवितारः | प्र. |
| | सवितासे | सवितासाथे | सविताध्वे | म. |
| | सविताहे | सवितास्वहे | सवितास्महे | उ. |

पक्षे—सोता सोतारौ सोतारः इत्यादि।

लृट् सविष्यते सविष्येते सविष्यन्ते इत्यादि।

पक्षे—सोष्यते सोष्येते सोष्यन्ते इत्यादि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लोट् | सूताम् | सुवाताम् | सुवताम् | प्र. |
| | सूष्व | सुवाथाम् | सूध्वम् | म. |
| | सुवै | सुवावहै | सुवामहै | उ. |
| लङ् | असूत | असुवाताम् | असुवत | प्र. |
| | असूथाः | असुवाथाम् | असूध्वम् | म. |
| | असुवि | असूवहि | असूमहि | उ. |
| वि. लि. | सुवीत | सुवीयाताम् | सुवीरन् | प्र. |
| | सुवीथाः | सुवीयाथाम् | सुवीध्वम् | म. |
| | सुवीय | सुवीवहि | सुवीमहि | उ. |
| आ. लि. | सविषीष्ट | सविषीयास्ताम् | सविषीरन् | प्र. |
| | सविषीष्ठाः | सविषीयास्थाम् | सविषीध्वम् | म. |
| | सविषीय | सविषीवहि | सविषीमहि | उ. |

पक्षे—सोषीष्ट सोषीयास्ताम् सोषीरन् इत्यादि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुङ् | असविष्ट | असविषाताम् | असविषत | प्र. |
| | असविष्ठाः | असविषाथाम् | असविड्ढ्वम्-ध्वम् | म. |
| | असविषि | असविष्वहि | असविष्महि | उ. |

पक्षे—असोष्ट असोषाताम् असोषत इत्यादि।

लृङ् असविष्यत असविष्येताम् असविष्यन्त इत्यादि।

पक्षे—असोष्यत असोष्यताम् असोष्यन्त इत्यादि।

**कर्मणि**—सूयते। **णिचि**—सावयति। **सनि**—सुसूषते। **यङि**—सोषूयते। **यङ्लुकि**—सोषूति-सोसवीति। **कृत्सु**—सोतव्यम्-सवितव्यम्, सवनीयम्, सव्यम्- अवश्यसाव्यम्, सूतः, सुवानः, सविष्यमाणः, सोतुम्-सवितुम्, सवित्वा-सूत्वा, प्रसूय, पुत्रसूः, सुषूतिः[1]-विषूतिः-निःषूतिः-दुःषूतिः, प्रसूनम्[2], प्रसूतम्, सुषवी, प्रसवी[3], प्रसवः,[4] सन्तानसूः[5],

१ पुरस्तात् प्रतिषेधकाण्डारम्भसामर्थ्यात् 'श्रयुकः क्किति' (७-२-११) इतीण्निषेधः। 'सुविनिर्दुर्भ्यः सुपिसूतिसमाः' (८-३-८८) इति षत्वम्।

२ 'स्वादय ओदितः' (ग.सू. ८-२-४५) इत्यातिदेशिकमोदित्वम्। तेन 'ओदितश्च' (८-२-४५) इति निष्ठानत्वम्। एतच्च पाक्षिकमिति केचित्। तेषां मते प्रसूत इत्यपि।

३ 'जिदृक्षि— प्रसूभ्यश्च' (३-२-१५७) इति इनिप्रत्ययः। प्रसवी = प्रसवशीलः।

४ 'ऋदोरप्' (३-३-५७) इत्यप् प्रत्ययः। प्रसवः = सन्तानः, पुष्पं च।

५ सन्तानं सूते इति सन्तानसूः। 'सत्सू—' -२-६१) इत्यादिना क्विप्।

सुनुः[1], सूतकम्, सूतका-सूतिका।

(१०३२) **शीङ्—स्वप्ने**। (सोना, शयन कनरा)। **अति**—अतिशय होना, अधिक होना, **अधि**—निवास करना, **सम्-वि**—शंका करना, सन्देह करना। अक.। सेट्। आत्मने.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | शेते | शयाते | शेरते | प्र. |
| | शेषे | शयाथे | शेध्वे | म. |
| | शये | शेवहे | शेमहे | उ. |
| लिट् | शिश्ये | शिश्याते | शिश्यिरे | प्र. |
| | शिश्यिषे | शिश्याथे | शिश्यिध्वे-ढ्वे | म. |
| | शिश्ये | शिश्यिवहे | शिश्यिमहे | उ. |
| लुट् | शयिता | शयितारौ | शयितारः | प्र. |
| | शयितासे | शयितासाथे | शयिताध्वे | म. |
| | शयिताहे | शयितास्वहे | शयितास्महे | उ. |
| लृट् | शयिष्यते | शयिष्येते | शयिष्यन्ते | प्र. |
| | शयिष्यसे | शयिष्येथे | शयिष्यध्वे | म. |
| | शयिष्ये | शयिष्यावहे | शयिष्यामहे | उ. |
| लोट् | शेताम् | शयाताम् | शेरताम् | प्र. |
| | शेष्व | शयाथाम् | शेध्वम् | म. |
| | शयै | शयावहै | शयामहै | उ. |
| लङ् | अशेत | अशेयाताम् | अशेरत | प्र. |
| | अशेथाः | अशेयाथाम् | अशेध्वम् | म. |
| | अशेयि | अशेवहि | अशेमहि | उ. |
| वि. लि. | शयीत | शयीयाताम् | शयीरन् | प्र. |
| | शयीथाः | शयीयाथाम् | शयीध्वम् | म. |
| | शयीय | शयीवहि | शयीमहि | उ. |
| आ. लि. | शयिषीष्ट | शयिषीयास्ताम् | शयिषीरन् | प्र. |
| | शयिषीष्ठाः | शयिषीयास्थाम् | शयिषीढ्वम्-ध्वम् | म. |
| | शयिषीय | शयिषीवहि | शयिषीमहि | उ. |
| लुङ् | असयिष्ट | असयिषाताम् | असयिषत | प्र. |
| | अशयिष्ठाः | अशयिषाथाम् | अशयिध्वम्-ढ्वम् | म. |
| | अशयिषि | अशयिष्वहि | अशयिष्महि | उ. |
| लृङ् | अशयिष्यत | अशयिष्येताम् | अशयिष्यन्त | प्र. |
| | अशयिष्यथाः | अशयिष्येथाम् | अशयिष्यध्वम् | म. |
| | अशयिष्ये | अशयिष्यावहि | अशयिष्यामहि | उ. |

१ औणादिके (द.उ. १-१४६) नुप्रत्यये रूपम्। प्रत्ययस्य कित्वान्न गुणः।

**भावे**– शय्यते । **णिचि**– शाययति । **सनि**– शिशयिषते । **यङि**– शाशय्यते । **यङ्लुकि**– शेशयीति-शेशीति । **कृत्सु**– शायकः-यिका, **णिचि**– शायकः-यिका, शिशयिषकः[१]-षिका, शाशय्यकः[२]-य्यिका, शयिता[३]-त्री, शाययिता-त्री, शिशयिषिता-त्री, शाशय्यिता-त्री, शाययन्-न्ती, शाययिष्यन्-न्ती-ती, शयानः[४], शाययमानः[५], शिशयिषमाणः, शाशय्यमानः, शयिष्यमाणः, शाययिष्यमाणः, सुखशीः[६]-सुखश्यौ-सुखश्यः, शयितम्[७]-तः- तवान्, शायितः, शयः[८], विशयी,[९] खेशयः[१०]-खशयः, विलेशयः, उत्तानशयः,[११] गिरिशः[१२], शयालुः,[१३] शयितः[१४], ग्रामन् अधिशयानः,[१५] शेषशायी[१६]-अब्दिशायी, रङ्गशायी, शयानो[१७] भुङ्क्ते यवनः, शायः, शिशयिषुः-शिशाशयिषुः । शाशयः, शयितव्यम्, शायितव्यम्, शयनीयम्[१८]

---

१ सन्नन्तात् द्विर्वचनादिकेषु सर्वत्र रूपमेवं ज्ञेयम् ।

२ यङन्ते प्रत्ययस्य ङित्वात् 'अयङ् यि क्ङिति' (७-४-२२) इत्ययङ् सर्वत्र बोध्यम् ।

३ 'इवर्णेष्वथ शीङ्श्रिआवपि' (व्याघ्रभूतिकारिका, काशिका ७-२-१०) इति वचनाद धातोः इड् भवतीति बोध्यम् ।

४ शानच् प्रत्ययस्य 'सार्वधातुकमपित्' (१-२-४) इति ङिद्वद् भावेन यद्यपि 'क्ङिति च' (१-१-५) इति गुणनिषेधोऽत्र प्राप्तः तथापि 'शीङः सार्वधातुके गुणः' (७-४-२१) इति विशेषविधानाद् गुणो भवतीति बोध्यम् । 'शयाना भुञ्जते यवनाः' इत्यत्र 'लक्षणहेत्वोः क्रियायाः' (३-२-१२६) इति शानच् इति बोध्यम् ।

५ अचित्तवत् कर्तृकत्वे एवं शानजपि ण्यन्तात् भवतीति माधवः । चित्तवत्कर्तृकत्वे तु 'अणावकर्मकात् चित्तवत् कर्तृकात्' (१-३-८८) इति नित्यं परस्मैपदमेव ।

६ सुखं शेते इति सुखशीः । द्विवचनादौ 'एरनेकाचोऽसंयोगपूर्वस्य' (६-४-८२) इति यणि सुखश्यौ सुखश्यः इत्यादीनि बोध्यानि ।

७ 'निष्ठा शीङ्–' (१-२-१९) इति वचनात् धातोरत्र निष्ठया अकित्वम् । तेन गुणः ।

८ पचादिपाठादच् प्रत्ययः । गुणायादेशौ ।

९ 'विशयी देशे' (ग.सू. ३-१-१३४) इति ग्रह्यादिपाठात् विपूर्वकात् णिनिप्रत्ययः । निपातनात् देशविशेष-वाचकत्वे वृद्ध्यभावः । अन्यत्र विशायी इत्येव ।

१० खे शेते इति खेशयः-खशयः । 'अधिकरणे शेतेः' (३-२-१५) इति अच् प्रत्ययः । 'शयवासवासिष्व-कालात्' (६-३-१८) इति पाक्षिकः सप्तम्या अलुक् । एवं रङ्गेशयः अद्रिशयः विलेशयः कुशेशयम् इत्यादयो बोध्याः ।

११ उत्तानः शेते उत्तानशयः । अवमूर्धा शेते अवमूर्धशयः । अत्र 'उत्तानादिषु कर्तृषु' (वा. ३-२-१५) इति अच् प्रत्ययः ।

१२ 'गिरौ डश्छन्दसि' (वा. ३-२-१५) इति गिरावुपपदे शेतेर्डप्रत्ययः । प्रत्ययस्य डित्वेन टेर्लोपः । गिरिरस्यास्तीत्यर्थे लोमादित्वात् (५-२-१००) शप्रत्ययेन प्रसाध्य भाष्ये वार्तिकमिदं प्रत्याख्यातम् । निमित्तावधिसंकरत उभयमपि प्रमाणमद्यत्वे इति सिद्धान्तः ।

१३ 'आलुचिशीङो ग्रहणम्' (वा. ३-२-१५८) इत्यालुच् ताच्छीलिकः । शयनशीलः शयालुः ।

१४ 'मतिबुद्धि–' (३-२-१८८) इत्यत्र चकारस्यानुक्तसमुच्चयार्थत्वात् अस्मादपि धातोः वर्तमाने क्तप्रत्ययः ।

१५ अत्र 'अधिशीङ्स्थाऽऽसां कर्म' (१-४-४६) इत्याधारस्य कर्मत्वम् ।

१६ 'सुप्यजातौ–' (३-२-७८) इति णिनिः ।

१७ 'लक्षणहेत्वोः क्रियायाः' (३-२-१२६) इति लक्षणार्थे शानच् । शयानानामेव सतां भोजनकरणं यवनलक्षणमिति समुदितार्थः ।

१८ अधिकारणेऽप्यनीयर् प्रत्ययो भवति, बाहुलकात् । शेरतेऽस्मिन् इति शयनीयम् ।

शायनीयम्, शेयम्, शाय्यम्, शय्यमानः[१], शाय्यमानः, शयः[२], तव उपशायः[३]-विशायः, संशयः[४]-सांशयिकः, अतिशयः[५]-अतिशायिकः-आतिशयिकः, शयितुम्, शाययितुम्, संशीतिः[६], शय्या[७], सुखशायिका[८], सुखशयिका[९], शायना, शयनम्, सुख- शयनम्[१०]-सौखशायिकः, श्मशानम्[११], अतिशायनम्[१२]-अतिशयनम्- आतिशायनिकम्, शायनम्, शयित्वा[१३], शाययित्वा, शिशयिषित्वा, शाशय्यित्वा। उपशय्य, विशाय्य, शयुः[१४], शयानकः[१५], शीधुः[१६]-शीलम्-शैवालम्-शेवलः, शेवः[१७], शेपः, शिखा[१८], शिनि[१९], निशीथः[२०]। अधिशेते, संशेते।

(१०३३) **यु—मिश्रणे**। अमिश्रणे चेति केचित्। (मिश्रित करना, मिलाना, मिलाप करना, पृथक्-पृथक् करना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.।

---

१ यकि, 'अयङ् यि क्ङिति' (७-४-२२) इति अयङ् आदेशः। आदेशस्य अनेकालत्वेऽपि 'ङिच्च' (१-१-५३) इत्यन्त्यस्येकारस्यादेशः।
२ 'एरच्' (३-३-५६) इति भावेऽच् प्रत्ययः।
३ पर्यायार्थे गम्यमाने, वि, उप इत्युपसर्गाभ्यां परस्यास्य 'व्युपयोः शेतेः पर्याये' (३-३-३९) इति घञ् प्रत्ययः इवर्णान्तत्वलक्षणाच् प्रत्ययस्यापवादः। तव विशायः। मम राजोपशायः, राजानमुपशयितुं पर्याय इत्यर्थः। पर्यायभिन्नार्थे तु उपशयः, विशयः इत्यजेव।
४ संशय्यते इति संशयः = सन्देहः। संशयम् आपन्नोऽर्थः सांशयिकः। 'संशयमापन्नः' (५-१-७३) इति ठञ्। सांशयिकः स्थाणुः। स्थाणुः संशयं = पुरुष इति सन्देहमापन्न इत्यर्थः।
५ अतिशेते इत्यतिशयः। उपसर्गवशाद्धातोरर्थान्तरे वृत्तिः। अतिशये भवः आतिशायिकः, अध्यात्मादित्वात् (५-४-४४) ठञ्। अनुशतिकादित्वात् (७-३-२०) उभयपदवृद्धिः। 'व्याप्तमातिशयिकेन रसेन' (माघः १०-२३) इत्यत्र तु विनयादित्वात् (५-४-३४) ठक्।
६ भावे क्तिन्। संशीतिः = संशयः। 'तितुत्र–' (७-२-९) इतीण्निषेधः।
७ संज्ञायां समजनिषदनिपतमनविदषुञ् शीङ्भृञिणः' (३-३-९९) इति संज्ञायां गम्यमानायां स्त्रियां भावादौ क्यप् प्रत्ययः। शेरतेऽस्यामिति शय्या। कित्वादयङ्।
८ सुखशयनं सुखसायिका। धात्वर्थनिर्देशे स्त्रियां ण्वुल्।
९ शोभनः शयोऽस्याः सुशयिका। 'प्रत्ययस्थात् कात्–' (७-३-४४) इतीकारः।
१० सुखेन शयनम् – सुखशयनम्। सुखशयनं पृच्छतीति सौखशायनिकः। पृच्छतौ सुस्नातादिभ्यः–' (वा. ४-४-१) इति ठक्। 'भृग्वादीन् अनुगृह्णन्तं सौखशायनिकान् ऋषीन्।' (रघुवंशः १०/१४)
११ शवानां शयनम् = श्मशानम्। पृषोदरादित्वात् (६-३-१०९) शवशब्दस्य श्मादेशः, शयनशब्दस्य 'शान' इत्यादेशः। काशिका (६-३-९) द्रष्टव्या।
१२ अतिशयनम् एव अतिशायनम्। 'अतिशायने तमबिष्ठनौ' (५-३-५५) 'नित्ययोगेऽतिशायने' (वा. ५-२-९४) इति सूत्रवर्तिकनिर्देशात् ल्युडन्ते दीर्घः पाक्षिकः, तेन अतिशयनम् अतिशायनम् इत्युभयमपि साधु।
१३ 'न क्त्वा सेट्' (१-२-१८) इति सेटः क्त्वायाः कित्वनिषेधात् गुणोऽत्र।
१४ अत्यर्थं शेरते इति शयुः = अजगरः। औणादिकः (द.उ. १-९२) उ प्रत्ययः।
१५ औणादिके (द.उ. २६) आकप्रत्यये शयानकः इति भवति।
१६ 'शीङो धुक्लग्वलन् वालनः' (द.उ. १०-९) इति क्रमेण धुगादिप्रत्ययेषु रूपाणीमानि सिद्धानि। शीधुः = मदिरा। केचित् शीयुः इति पठन्ति। शीलम् = स्वभावः। शेवल-शैवालो जललता विशेषवाचकौ।
१७ औणादिके (द.उ. ८-१२६) वन् प्रत्यये रूपम्। शेवः = सर्पः। शेवा इति केचित्। औणादिके (द.उ. ६-६९) इति क्वनिप् प्रत्यये तु शीवा इति भवति।
१८ औणादिके (द.उ. ३-५५) ख प्रत्यये शिखा = केशबन्धः।
१९ औणादिके निप्रत्यये धातो र्ह्रस्वे च रूपम्। शिनिः क्षणियविशेष इति माधवः।
२० नितरां शेरतेऽस्मिन् प्राणिन इति निशीथः = अर्धरात्रम्। औणादिकस्थक् प्रत्ययोऽत्र।

१ प्र. यौति[1] युतः युवन्ति[2]। म. यौषि युथः युथ। उ. यौमि युवः युमः। २ प्र. युयाव युयुवतुः युयुवुः। म. युयुविथ युयुवथु युयुव। उ. युयाव-युयव युयुविव युयुविम। ३ यविता। ४ यविष्यति। ५ प्र. यौतु-तात् युताम् युवन्तु। म. युहि-तात् युतम् युत। उ. यवनि यवाव यवाम। ६ प्र. अयौत् अयुताम् अयुवन्। म. अयौः अयुतम् अयुत। उ. अयवम् अयुव अयुम। ७ प्र. युयात्[3] युयाताम् युयुः। म. यूयाः यूयातम् युयात। उ. युयाम् युयाव युयाम। ८ प्र. यूयात् यूयाताम् यूयासुः। म. यूयाः यूयास्तम् यूयास्त। उ. यूयासम् यूयास्व यूयास्म। ९ प्र. अयावीत् अयाविष्टाम् अयाविषुः। म. अयावीः अयाविष्टम् अयाविष्ट। उ. अयाविषम् अयाविष्व अयाविष्म। १० प्र. अयविष्यत् अयविष्यताम् अयविष्यन्। म. अयविष्यः अयविष्यतम् अयविष्यत। उ. अयविष्यम् अयविष्याव अयविष्याम।

**कर्मणि**—यूयते। **णिचि**—यावयति। **सनि**—यियविषति-युयूषति। **यङि**—योयूयते। **यङ्लुकि**—योयवीति योयोति। **कृत्सु**—यावकः-विका। **णिचि**—यावकः-विका, यियविषकः[4]-युयूषकः-षिका, योयूयकः[5]-यिका, यविता-त्री, यावयिता-त्री, यियविषिता-युयूषिता-त्री, योयूयिता-त्री, युवन्-न्ती, यावयन्-न्ती, यविष्यन्-न्ती-ती, यावयिष्यन्-न्ती-ती, यावयमानः, यावयिष्यमाणः, नियुत्-नियुतौ-नियुतः, युतम्[6]-युतः-युतवान्, यावितः, यवः[7]-यवानी, यवनः[8]-यवनानी, यवनी, यवकः[9], यावः, यावकः, यावकम्[10], यियविषुः-युयूषुः

१ 'उतो वृद्धिर्लुकि हलि' (७-३-८९) इति उकारस्य वृद्धिः।

२ 'अचि श्नुधातुभ्रुवाम्' (६-४-७७) इति उवङ्।

३ 'यासुट् परस्मैपदेषूदात्तो ङिच्च' (३-४-१०३) इति ङित्वस्य विशेषविहितत्वात् भाष्ये 'ङिच्च पिन्न' पिच्च ङिन्न' इति पित्वस्य निषिद्धत्वात् उतो वृद्धिर्न।

४ इमांस्तु सेटः प्रवदन्ति तद् विदः —तथोर्णोतिमथो युणुक्ष्णवः।' (भाष्ये ७-२-१०) इति व्याघ्रभूतिकारिकायामुपात्तत्वादस्य सेट्त्वम्। सन्नन्ते तु 'सनीवन्तर्धभ्रस्जदम्भुश्रिस्वृयूर्णुभर—' (७-२-४९) इति इड्विकल्पः। इट् पक्षे, 'ओः पुयण्ज्यपरे' (७-४-८०) इत्यभ्यासस्येकारः। इडभावपक्षे झलादित्वात् सनः कित्वे, 'अजझनगमां सनि' (६-४-१६) इति दीर्घः। एवं सन्नन्ते सर्वत्र रूपद्वयम्।

५ यङन्ते सर्वत्रोत्तरखण्डे, 'अकृत्सार्वधातुकयोः—' (७-४-२५) इति दीर्घः। पूर्वखण्डे गुणः।

६ 'यस्य विभाषा' (७-२-१५) इति निष्ठायामिण्निषेधः। क्त्वा-क्तिन्-प्रभृतिषु तु 'श्र्युकः क्किति' (७-२-११) इतीण्निषेध इति विशेषः।

७ पचादित्वात् (३-१-१३४) अच् प्रत्ययः स्त्रियाम् 'इन्द्रवरुणभवशर्व-' (४-१-४९) इत्यादिना आनुगागमे ङीषि च यवानी इतिं सम्पद्यते। एतच्च 'यवाद् दोषे' (वा. ४-१-४९) इति वचनाद् दुष्टे यवे स्त्रीत्वेन विवक्षित एवेति ज्ञेयम्। अन्यत्र तु टापि यवा इति।

८ नन्द्यादित्वात् (३-१-१३४) कर्तरि ल्युः। स्त्रियाम् 'इन्द्रवरुणभवशर्वरुद्रमृडहिमारण्ययवयवन—' (४-१-४९) इत्यादिना। 'यवनाल्लिप्याम्' (वा. ४-१-४९) इति वचनेन वचनलिप्यां विवक्षितायामानुगागमो ङीष् च भवतः। पुंयोगलक्षणे ङीषि तु यवनी इति सम्पद्यते।

९ यव एव यवकः, स्वार्थे कन्। प्रज्ञादित्वात् स्वार्थे ण् प्रत्यये यावः।

१० 'संज्ञायाम्' (३-३-१०९) इति ण्वुलि रूपमेव। यावकम् = रञ्जनसाधनीभूतो रसविशेषः। अत्र ण्वुलः स्त्र्यधिकारविहितत्वेऽपि लिङ्गविवक्षितं लोकाश्रितत्वाल्लिङ्गस्य इति न्यायेन नपुंसकलिङ्गमिति ज्ञेयम्।

यियावयिषुः[१], यवितव्यम्, यावयितव्यम्, प्रयवणीयम्, प्रणियवनीयम्,[२] प्रणियवनीयम्, प्रनियवनीयम्, प्रयावनीयम्[३]-प्रयावणीयम्, याव्यम्,[४] यूयमानः,[५] याव्यमानः, प्रयवः[६], संयावः[७], उद्यावः[८], उद्यावः,[९] यवः,[१०] योत्रम्[११], यौत्रम्[१२], यवितुम्, यावयितुम्, यूतिः[१३], यावना, यवनम्, यावनम्, युत्वा, यावयित्वा, प्रयुत्य, प्रयूय[१४], प्रयाव्य, योनिः[१५], यूकः[१६]-यूका, यूथः[१७], युवा-युवतिः,[१८] यूपः,[१९] यूषः[२०], योषा[२१], यवागूः[२२]।

**(१०३४) रु—शब्दे।** (शब्द करना, आवाज कना)। अक.। सेट्। परस्मै.।

**तुरुस्तुशम्यमः सार्वधद्यातुके।** एभ्यः परस्य सार्वधातुकस्य हलादेस्तिङ ईड्वा स्यात्। ईडभावपक्षे वृद्धि। १ प्र. रौति-रवीति रुतः-रुवीतः रुवन्ति। म. रौषि-रवीषि रुथः-रुवीथः

१ ण्यन्तात् सनि, 'ओः पुयण्ज्यपरे' (७-४-८०) इति अभ्यासेकारः।

२ 'कृत्यचः' (८-४-२९) इति णत्वम्। प्रणियवनीयम् प्रनियवनीयम् इत्यत्र तु 'शेषे विभाषा' (८-४-३०) इति णत्वविकल्पः।

३ 'णेर्विभाषा' (८-४-३०) इति णत्वविकल्पः।

४ 'आसुयुवपि-' (३-१-१२६) इति ण्यत्। अजन्तलक्षणयतोऽपवादः। धातोस्तन्निमित्तस्यैव (६-१-८०) इत्यावादेशः। आवश्यकार्थेऽपि, 'ओरावश्यके' (३-१-१२५) इति ण्यति एवमेव रूपम्।

५ यकि, अकृत्सार्वधातुकयोः—' (७-४-२५) इति दीर्घः।

६ 'ऋदोरप्' (३-३-५७) इत्यप् प्रत्ययः भावे।

७ समि युद्रुदुवः (३-३-२३) इति सम्युपपदे करणे घञ्। संयावः = पिष्टविकारो पूपविशेषः।

८ 'उदि श्रयतियौतिपूद्रुवः' (३-३-४९) इति घञ्।

९ 'अध्यायन्यायोद्यावसंहाराश्च' (३-३-१२२) इत संज्ञायां करणाधिकरणयोर्धत्रि निपात्यते। उद्यावः = भक्ष्यविशेषः।

१० यौति अत्र रसादिकमिति यवः = धान्यविशेषः। 'पुंसि संज्ञायां घः—' (३-३-११८) इति संज्ञायां घप्रत्ययः।

११ 'दाम्नीशसयुयुज-' (३-३-१८२) इति करणे ष्ट्रन् प्रत्ययः। यूयतेऽनेनेति योत्रम् = गोपालकानां करे स्थितो दण्डविशेषः।

१२ 'उणादयो बहुलम्' (३-३-१) इति ष्ट्रन् प्रत्यये, 'अचो ञ्णिति' (७-२-११५) इति वृद्धिरिति काशिका (७-२-११५)

१३ स्त्रियां क्तिनि, 'श्र्युकः क्किति' (७-२-११) इति इण्निषेधे, 'ऊतियूतिजूतिसातिहेति कीर्तयश्च' (३-३-९७) इति निपातनात् दीर्घः, अन्तोदात्तत्वं च। युतिः = संघः, एकत्र समेषां समागमः। गव्यूतिः = कोशयुगम्।

१४ छन्दसि विषये ल्यपि, 'युप्लुवोर्धीर्घः—' (६-४-५८) इति दीर्घ इति ज्ञेयम्। लोके तु तुकि प्रयुत्य इति भवति।

१५ 'वहिश्रियु—' (द.उ. १-१२१) इति निप्रत्ययः। युवन्त्यस्यामिति योनिः।

१६ 'अजियुसु—' (द.उ. ३-२४) इति कन् प्रत्ययः, धातोः दीर्घश्च भवति। यूकः = क्षुद्र जन्तुः।

१७ 'तिथपृष्ठगूथयूथप्रोथाः' (द.उ. ६-३४) इति यक् प्रत्यये निपात्यते। निपातनादेव धातो दीर्घश्च। यूथः = गजादिसंघातः।

१८ 'कनिन् युवृषि—' (द.उ. ६-५१) इति कनिन् प्रत्ययः। यौति, यूयते वा इति युवा। स्त्रियाम्, 'यूनस्तिः' (४-१-७७) इति ति प्रत्यये युवतिः।

१९ 'कुसुयुभ्यश्च' (द.उ. ७-५) इति पप्रत्ययः दीर्घश्च। यूपः = यज्ञपशुबन्धनकाष्टः।

२० 'मूङ्य्व्योर्लोपश्च' (द.उ. ९-१७) इति ऊषन् प्रत्यये, धातूकारस्य लोपे च रूपम्। यूषः = व्यञ्जनम्। मण्डम् चेति केचित्।

२१ औणादिके (द.उ. ९-२१) सप्रत्यये रूपम्। योषा = योषित्।

२२ 'सृयु—' (द.उ. १०-४) इत्यागूच् प्रत्यये रूपम्। यवागूः = पेया।

रुथ-रुवीथ। उ. रौमि-रवीमि रुवः-रुवीवः रुमः-रुवीमः। **आर्धधातुके तु** 'यौति' (१०३३) वत्। २ रुराव। ३ रविता। ४ रविष्यति। ५ **प्र.** रौतु-रवीतु:-रुतात्-रुवीतात् रुताम्-रवीताम् रुवन्तु। **म.** रुहि-रुवीहि-रुतात्-रुवीतात् रुतम्-रुवीतम् रुत-रुवीत। **उ.** रवाणि रवाव रवाम। ६ **प्र.** अरौत्-अरवीत् अरुताम् अरुवीताम् अरुवन्। **म.** अरौः-अरवीः। अरुतम् अरुवीतम् अरुत-अरुवीत। **उ.** अरवम् अरुव-अरुवीव अरुम-अरुवीम। ७. रुयात्-रुवीयात्। ८. रूयात्। ९. अरावीत्। १०. अरविष्यत्।

**कृत्सु**—रावकः-यिका, **णिचि**—रावकः-विका, रुरूषकः-रिरावयिषकः-षिका, रोरूयकः-यिका, रविता-त्री, रावयिता-त्री, रुरूषिता-रिरावयिषिता-त्री, रवणः[1], संरावः[2], रव[3], रावः[4], अल्परावः, मञ्जुरावः, आरावः[5]-आरवः, मयूरः[6], रुरूषुः[7], ध्वाङ्क्षरावी,[8] मण्डुक-रावी[9], सांराविणम्[10], रोरूयः,[11] लोकरावणः[12], रविः,[13] रुरुः,[14] पुरुरवाः[15]।

**(१०३५) णु—स्तुतौ।** (स्तुति करना। प्रार्थना करना)। सक.। सेट्। पर.।

१. नौति। २. नुनाव। ३. नविता। ४. नविष्यति। ५. नौतु। ६. अनौत्। ७ नुयात्। ८ नूयात्। ९ अनावीत्। १० अनाविष्यत्। इत्यादि 'यौति' (१०३३) वत्। **आत्मनेपदे**—'**आङि नुप्रच्छयोपसंख्यानम्**' इति तङ्। १ आनुते। २ आनुनुवे। ३ आनविता। ४ आनविष्यते। ५ आनुताम्। ६ आनुत। ७. आनुवीत। ८. आनविषीष्ट। ९. आनविष्ट। १०. आनविष्यत। **सनि**—आनुनूषते। **यङि**—आनोनूयते इत्यादि। प्रणौति। प्रणवः।

१ तच्छीलादिषु कर्तृषु 'चलनशब्दार्थादकर्मकात्—' (३-२-१४८) इति युच् णत्वम्। क्षीरस्वामी तु औणादिके 'सुयुरुवृञो युच्' (द.उ. ५-२०) इती युच् प्रत्यये निष्पादितवान्।

२ 'उपसर्गे रुवः' (३-३-२२) इति घञ्। उवर्णान्तत्वप्रयुक्तापोऽपवादः।

३ अनुपसृष्टात् (शुद्धात्) 'ऋदोरप्' (३-३-५७) इति अप्प्रत्ययः।

४ बाहुलकाद् घञपि, इत्यात्रेयः। रावः। इति माधवधातुवृत्तिः।

५ 'विभाषाऽऽङि रुप्लुवोः' (३-३-५०) इति घञ्विकल्पः। तेन पक्षेऽप् प्रत्ययः।

६ मह्यां रौतीति मयूरः। 'अन्येष्वपि दृश्यते' (३-२-१०१) इति डप्रत्यये वृषोदरादिषु (६-३-१०९) पाठात् महीशब्दस्य 'मयू' इत्यादेशे च रूपमेवम्।

७ 'संजुधुक्षव आयुंषि ततः प्रतिरुरूषवः।' (भ.का. ९-१४)।

८ ध्वाङ्क्ष इव रौतीति ध्वाङ्क्षरावी। 'कर्तर्युपमाने' (३-२-७९) इति णिनिः।

९ 'मण्डुकराविणं सर्पं गोमुखं च मृगादिनम्।' (सुभाषितनीवी)।

१० संपूर्वकादस्मात् 'अभिविधौ भाव इनुण्' (३-३-४४) इति इनुण् प्रत्यये, अण् इनुणः' (५-४-१५) इति स्वार्थेऽण् प्रत्यये, 'इन् अण्यनपत्ये' (६-४-१६४) इति प्रकृतिभावे च सांराविणम् इति भवति।

११ 'उदन्तात् यङो लुङ् नेति केचित्' इति प्रक्रियाकौमुदी। तेनात्र यङन्तात् पचाद्यचि रूपमेवं तेषां मते। वस्तुतस्तु एवमङ्गीकरणे नियामकाभावात् यङोऽनैमित्तिकलुक एवं भाष्यादिषु 'यङोऽचि च' (२-४-७४) इत्यत्राभ्युपगतत्वात् चिन्त्यमिदमिति रोरुवः इत्येव न्याय्यमिति च बोध्यम्।

१२ लोकान् रावयतीति लोकरावणः। नन्द्यादित्वात् (३-१-१३४) ण्यन्तात् कर्तरि ल्युः। 'रावणो लोकरावण इत्यादयः रामायणप्रयोगाः अत्रानुसन्धेयाः।

१३ 'इन्' (द.उ. १-४६) इतीन्प्रत्ययः। रौतीति, रूयते इति वा रविः = भानुः।

१४ 'रुशातिभ्यां क्रुन्' (द.उ. १-१५९) इति क्रुन्प्रत्ययः। रुरुः = मृगः।

१५ 'पुरुरवाः' (द.उ. ९-९२) इत्यसिप्रत्यये निरुढः। पुरु रूयते स्वयशः सर्वत्रेति पुरूरवाः = राजविशेषः। पुरुशब्दस्य दीर्घोऽपि निपातनात्।

**(१०३६) टुक्षु (क्षु) —शब्दे**। (शब्द करना)। सक.। सेट्। पर.। १ क्षौति क्षुतः क्षुवन्ति। २ चुक्षाव। ३ क्षुविता। इत्यादि 'यौति' (१०३३) वत्।

**(१०३७) क्ष्णु—तेजने**। (तीक्ष्ण करना, तेज करना)। सक.। सेट्.। परस्मै.। १ क्ष्णौति २ चुक्ष्णाव चुक्ष्णुवतुः ३ क्ष्णविता इत्यादि- 'यौति' (१०३३) वत्। **समःक्ष्णुवः**। इत्यात्मनेपदे- संक्ष्णुते। संक्ष्णुवाते संक्ष्णुवते। इत्यादि 'आनुते' (१०३५) इति वत्।

**(१०३८) ष्णु (स्नु) —प्रस्रवणे**। (टपकना, झरना, चूना)। अक.। सेट्। परस्मै.। १ स्नौति स्नुतः स्नुवन्ति। २ सुष्णाव। ३. स्नविता। इत्यादि 'यौति' (१०३३) वत्।

**सनि**—सुस्नूषति। **णिचि**—स्नावयति। **यङि**—सोष्णूयते। **यङ्लुकि**—सोष्णवीति सोष्णोति।

**(१०३९) ऊर्णुञ्—आच्छादने**। (ढकना)। सक.। सेट्.। उभय.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | ऊर्णौति-ऊर्णोति | ऊर्णुतः | ऊर्णुवन्ति | प्र. |
| | ऊर्णौषि-ऊर्णोषि | ऊर्णुथः | ऊर्णुथ | म. |
| | ऊर्णौमि-ऊर्णोमि | ऊर्णुवः | ऊर्णुमः | उ. |
| लिट् | ऊर्णुनाव | ऊर्णुनुवतुः | ऊर्णुनुवुः | प्र. |
| | ऊर्णुनुविथ-ऊर्णुनविथ | ऊर्णुनुवथुः | ऊर्णुनुव | म. |
| | ऊर्णुनाव-ऊर्णुनव | ऊर्णुनुविव | ऊर्णुनुविम | उ. |
| लुट् | ऊर्णविता | ऊर्णवितारौ | ऊर्णवितारः | प्र. |
| | ऊर्णवितासि | ऊर्णवितास्थः | ऊर्णवितास्थ | म. |
| | ऊर्णवितास्मि | ऊर्णवितास्वः | ऊर्णवितास्मः | उ. |

पक्षे—ऊर्णुविता ऊर्णुवितारौ ऊर्णुवितारः इत्यादि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृट् | ऊर्णविष्यति | ऊर्णविष्यतः | ऊर्णविष्यन्ति | प्र. |
| | ऊर्णविष्यसि | ऊर्णविष्यथः | ऊर्णविष्यथ | म. |
| | ऊर्णविष्यामि | ऊर्णविष्यावः | ऊर्णविष्यामः | उ. |

पक्षे—ऊर्णुविष्यति ऊर्णुविष्यतः ऊर्णुविष्यन्ति इत्यादि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लोट् | ऊर्णौतु-ऊर्णोतु-तात् | ऊर्णुताम् | ऊर्णुवन्तु | प्र. |
| | ऊर्णुहि-तात् | ऊर्णुतम् | ऊर्णुत | म. |
| | ऊर्णवानि | ऊर्णवाव | ऊर्णवाम | उ. |
| लङ् | और्णोत् | और्णुताम् | और्णुवन् | प्र. |
| | और्णोः | और्णुतम् | और्णुत | म. |
| | और्णवम् | और्णुव | और्णुम | उ. |
| वि. लि. | ऊर्णुयात् | ऊर्णुयाताम् | ऊर्णुयुः | प्र. |
| | ऊर्णुयाः | ऊर्णुयातम् | ऊर्णुयात | म. |
| | ऊर्णुयाम | ऊर्णुयाव | ऊर्णुयाम | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आ. लि. | ऊर्णूयात् | ऊर्णूयास्ताम् | ऊर्णूयासुः | प्र. |
| | ऊर्णूयाः | ऊर्णूयास्तम् | ऊर्णूयास्त | म. |
| | ऊर्णूयासम् | ऊर्णूयास्व | ऊर्णूयास्म | उ. |
| लुङ् | और्णुवीत् | और्णुविष्टाम् | और्णुविषुः | प्र. |
| | और्णुवीः | और्णुविष्टम् | और्णुविष्ट | म. |
| | और्णुविषम् | और्णुविष्व | और्णुविष्म | उ. |

पक्षे—और्णावीत् और्णाविष्टाम् और्णाविषुः इत्यादि।

पक्षे—और्णवीत् और्णविष्टाम् और्णविषुः इत्यादि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृङ् | और्णविष्यत् | और्णविष्यताम् | और्णविष्यन् | प्र. |
| | और्णविष्यः | और्णविष्यतम् | और्णविष्यत | म. |
| | और्णविष्यम् | और्णविष्याव | और्णविष्याम | उ. |

पक्षे– और्णुविष्यत् और्णुविष्यताम् और्णुविष्यन्

आत्मनपेपद पक्षे

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | ऊर्णुते | ऊर्णवाते | ऊर्णुवते | प्र. |
| | ऊर्णुषे | ऊर्णुवाथे | ऊर्णुध्वे | म. |
| | ऊर्णुवे | ऊर्णुवहे | ऊर्णुमहे | उ. |
| लिट् | ऊर्णुनुवे | ऊर्णुनुवाते | ऊर्णुनुविरे | प्र. |
| | ऊर्णुनुविषे | ऊर्णुनुवाथे | ऊर्णुनुविध्वे | म. |
| | ऊर्णुनुवे | ऊर्णुनुविवहे | ऊर्णुविमहे | उ. |

३. ऊर्णविता-ऊर्णुविता। ४. ऊर्णविष्यते-ऊर्णुविष्यते। ५. ऊर्णुताम्। ६. और्णुत। ७. ऊर्णुवीत। ८. ऊर्णविषीष्ट ऊर्णुविषीष्ट। ९. और्णविष्ट-और्णुविष्ट। १०. और्णविष्यत और्णुविष्यत।

**कर्मणि**—ऊर्णूयते। **णिचि**—ऊर्णावयति-ते। **सनि**—ऊर्णुनूषति-ऊर्णुनुविषति-ऊर्णुनविषति-ते। **यङि**—ऊर्णोनूयते। **यङ्लुकि**– ऊर्णोनौति-ऊर्णोनवीति-ऊर्णोनोति **कृत्सु**– ऊर्णावकः-विका, ऊर्णनविषकः-ऊर्णुनुविषकः-ऊर्णुनषकः-ऊर्णुनूषकः-षिका, ऊर्णोनूयकः-यिका, ऊर्णविता-ऊर्णुविता-त्री, ऊर्णावयिता-त्री, ऊर्णुवन्-ती, ऊर्णावयन्-न्ती, ऊर्णुवानः ऊर्णावयमानः, ऊर्णविष्यमाणः, ऊर्णतम्-तः, ऊर्णावितम्-तः, ऊर्णवः-ऊर्णावः, ऊर्णवितव्यम्-ऊर्णुवितव्यम्, ऊर्णवनीयम्, ऊर्णावनीयम्, ऊर्णव्यम्-अवश्योर्णाव्यम्, ऊर्णाव्यम्, ऊर्णयमानः, ऊर्णाव्यमानः, ऊर्णवः, ऊर्णावः, ऊर्णवितुम्, ऊर्णुतिः, ऊर्णावना, ऊर्णवनम्, ऊर्णावनम्, ऊर्णुत्वा, ऊर्णावयित्वा, समूर्णुत्य, समूणर्यव्य, ऊर्णा ऊरुः, ऊर्णायुः।

**( १०४० ) द्यु—अभिगमने**। (शत्रु पर आक्रमण करना, आगे जाना, समीप जाना)। सकर्म.। अनि.। परस्मै.।

१. **प्र.** द्यौति द्युतः द्युवन्ति। **म.** द्यौषि। **उ.** द्यौमि। २ **प्र.** दुद्याव दुद्युवतुः दुद्युवुः। **म.** दुद्यविथ-दुद्योथे दुद्युवथुः दुद्युव। **उ.** दुद्याव-दुद्यव दुद्युविव दुद्युविम। ३. द्योता। ४. द्योष्यति।

५. द्योतु-द्युतात्। **म.** द्युहि। **उ.** द्यवानि। ६ **प्र.** अद्यौत्। म. अद्यौः। **उ.** अद्यवम्। ७. द्युयात्। ८. द्यूयात्। **अकृत्सार्वधातुकयो** रिति दीर्घः। ९. अद्यौषीत्। १०. अद्योष्यत्।

**कर्मणि**—द्यूयते। **णिचि**—द्यावयति। **सनि**—दुद्युषति। **यङि**—दोद्युयते। **यङ्लुकि**—दोद्योति- दोद्यवीति। **कृत्सु**—द्योतव्यम् द्यवनीयम् द्यव्यम् द्युतः द्युवन् द्योतुम् द्यवनम् द्युत्वा उद्द्युत्य।

**(१०४१) षु (सु) —प्रसवैश्वर्ययोः**। (उत्पन्न करना, पैदा करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्‌भुत सामर्थ्य होना)। सक.। अनिट्। परस्मै.। सौति सुतः सुवन्ति इत्यादि 'द्यौति' (१०४०) वत्।

**(१०४२) कु—शब्दे**। (शब्द करना)। अक.। अनिट्। परस्मै.। कौति कुतः कुवन्ति इत्यादि 'द्यौति' (१०४०) वत्।

**(१०४३) ष्टुञ्—(स्तु) स्तुतौ**। (प्रार्थना करना। स्तुति करना। प्रशंसा करना। भजन करना)। सक.। अनिट्। उभय.। **तुरुस्तुशम्यमः**– इति ईड्विकल्पः ईडभावपक्षे वृद्धिः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | स्तौति-स्तवीति | स्तुतः | स्तुवन्ति | प्र. |
| | स्तौषि-स्तवीषि | स्तुथः | स्तुथ | म. |
| | स्तौमि-स्तवीमि | स्तुवः | स्तुमः | उ. |
| लिट् | तुष्टाव | तुष्टुवतुः | तुष्टुवुः | प्र. |
| | तुष्टोथ | तुष्टुवथुः | तुष्टुव | म. |
| | तुष्टाव-तुष्टव | तुष्टुव | तुष्टुम | उ. |
| लुङ् | स्तोता | स्तोतारौ | स्तोतारः | प्र. |
| | स्तोतासि | स्तोतास्थः | स्तोतास्थ | म. |
| | स्तोतास्मि | स्तोतास्वः | स्तोतास्मः | उ. |
| लृट् | स्तोष्यति | स्तोष्यतः | स्तोष्यन्ति | प्र. |
| | स्तोष्यसि | स्तोष्यथः | स्तोष्यथ | म. |
| | स्तोष्यामि | स्तोष्यावः | स्तोष्यामः | उ. |
| लोट् | स्तौतु-स्तवीतु-तात् | स्तुताम्-स्तुवीताम् | स्तुवन्तु | प्र. |
| | स्तुहि-स्तुवीहि | स्तुतम्-स्तुवीतम् | स्तुत-स्तुवीत | म. |
| | स्तवानि | स्तवाव | स्तवाम | उ. |
| लङ् | अस्तौत् | अस्तुताम् | अस्तुवन् | प्र. |
| | अस्तौः-अस्तवीः | अस्तुतम् | अस्तुत | म. |
| | अस्तवम् | अस्तुव-अस्तुवीव | अस्तुम-अस्तवीम | उ. |

पक्षे—अस्तवीत् अस्तुवीताम् इत्यादि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| वि. लि. | स्तुयात् | स्युताताम् | स्तुयुः | प्र. |
| | स्तुयाः | स्तुयातम् | स्तुयात | म. |
| | स्तुयाम् | स्तुयाव | स्तुयाम | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आ. लि. | स्तूयात् | स्तूयास्ताम् | स्तूयासुः | प्र. |
| | स्तुयाः | स्तूयास्तम् | स्तूयास्त | म. |
| | स्तूयासम् | स्तूयास्व | स्तूयास्म | उ. |
| लुङ् | अस्तावीत् | अस्ताविष्टाम् | अस्ताविषुः | प्र. |
| | अस्तावीः | अस्ताविष्टम् | अस्ताविष्ट | म. |
| | अस्ताविषम् | अस्ताविष्व | अस्ताविष्म | उ. |
| लृङ् | अस्तोष्यत् | अस्तोष्यताम् | अस्तोष्यन् | प्र. |
| | अस्तोष्यः | अस्तोष्यतम् | अस्तोष्यत | म. |
| | अस्तोष्यम् | अस्तोष्याव | अस्तोष्याम | उ. |

**आत्मनेपदे**—१. **प्र.** स्तुते-स्तुवीते स्तुवाते स्तुवते। **म.** स्तुषे-स्तुवीषे स्तुवाथे स्तुध्वे-स्तुवीध्वे। **उ.** स्तुवे स्तुवहे-स्तुवीवहे स्तुमहे-स्तुवीमहे। २. **प्र.** तुष्टुवे। **म.** तुष्टुषे। उ. तुष्टुवे। ३. **प्र.** स्तोता। म. स्तोतासे। उ. स्तोताहे। ४. स्तोष्यते। ५. स्तुताम्-स्तुवीताम्। ६. अस्तुत-अस्तुवीत। ७. स्तुवीत स्तुवीयाताम् स्तुवीरन्। ८. स्तोषीष्ट। ९. अस्तोष्ट अस्तोषाताम्। १०. अस्तोष्यत।

**कर्मणि**—स्तूयते। **णिचि**—स्तावयति-ते। **सनि**—तुष्टूषति-ते। **यङि**—तोष्टूयते। **यङ्लुकि**—तोष्टवीति-तोष्टोति। **कृत्सु**—स्तोतव्यः, स्तवनीयः, स्तुत्यः, स्तव्यः, स्तुतः, स्तुवन्, स्तुवती, स्तुवान्, स्तोतुम्, स्तवनम्, स्तुत्वा, प्रस्तुत्य, स्तवः, स्तोता, अभिष्टुवन्[१], तुष्टूषन्[२]-तुष्टूषमाणः, अग्निष्टुत्[३]-पुरुष्टुत्, स्तुत्यः[४]-अवश्यस्तुत्यः, ग्रावस्तुत्[५], आयतस्तूः[६], स्तोत्रम्[७], प्रस्तावः[८], संस्तावः[९]-संस्तवः, स्तुतिः,[१०] प्रस्तोता[११], परिष्टुवन्[१२]-निष्टुवन्, विष्टुवन्,

१ शतरि उवङ्। अभिष्टुवन् इत्यत्र 'उपसर्गात् सुनोति सुवतिस्यतिस्तौति (८-३-६५) इत्यादिना षत्वम्।
२ सन्नन्तादुप्रत्यये रूपम्। अभ्यासे 'शर्पूर्वाः खयः' (७-४-६१) इति खयः शेषः। हलादिशेषापवादः। 'स्तौतिण्योरेव–' (८-३-६१) इति षत्वम्।
३ अग्निं स्तौतीति अग्निष्टुत् 'क्विप् च' (३-२-७६) इति कर्मण्युपपदे क्विप्। तुक्। 'अग्नेः स्तुत्–' (८-३-८२) इति षत्वम्। पुरु स्तौतीति पुरुष्टुत् = ऋत्विग्विशेषः। अत्र सुषमादित्वात् (८-३-९८) छान्दसत्वाद्वा षत्वम्।
४ 'एतिस्तु–' (३-१-१०९) इति क्यप्। प्रकृतसूत्रे 'क्यप्' इत्यनुवर्तमानेऽपि पुनः क्यब्ग्रहणं 'ओरावश्यके' (३-१-१२५) इति प्राप्तस्य ण्यतोऽप्यपवादार्थम्। अवश्यस्तुत्यः इत्यत्र मयूरव्यंसकादित्वात् समासः।
५ 'भ्राजभास-ग्रावस्तुवः क्विप्' (३-२-१७७) इति ग्रावशब्द उपपदे स्तौतेः क्विप् ताच्छीलिकः। तुक्। ग्रावस्तुत् = ऋत्विग्विशेषः।
६ आयतं स्तौति इति आयस्तूः। 'क्विब् वचिप्रच्छयायतस्तु–' (वा. ३-२-७६) इति क्विप् 'दीर्घश्च ह्रस्वाभावात् तुक् न।
७ 'दाम्नीशसयुयुजस्तु–' (३-२-१८२) इति करणे ष्ट्रन् प्रत्ययः।
८ प्रपूर्वकादस्मात् 'प्रे स्तुद्रुश्रुवः' (३-३-२७) इति घञ्। उवर्णान्तत्वलक्षणापोऽपवादः। अन्यत्र स्तवः इत्येव।
९ 'यज्ञे समि स्तुवः' (३-३-३१) इति सपूर्वकादस्माद् घञ्। यज्ञकर्मणि यत्र देशे छन्दोगाः समेत्य स्तुवन्ति स देशः संस्ताव इत्युच्यते। अन्यत्र संस्तवः परिचयः।
१० 'श्रुयजीषिस्तुभ्यः–' (वा. ३-३-९४) इति करणे क्तिन् प्रत्ययः। स्तूयतेऽनयेति स्तुतिः स्तोत्रम्।
११ प्रपूर्वकादस्मात् ताच्छीलिके 'तृन्' (३-२-१३५) इति तृन् प्रत्यये रूपमेवम्। प्रस्तोता = ऋत्विग्विशेषः।
१२ अत्र सर्वत्र 'परिनिविभ्यः सेवसितसयसिवुसहसुट्स्तु–' (८-३-७०) इति षत्वम्।

स्तोमः[१], अग्निष्टोमः[२], ज्योतिष्टोमः[३]-आयुःष्टोमः, परिष्टोमः, स्तोमः,[४] स्तवानः,[५] अन्यानि सर्वाणि रूपाणि आदादिकक्ष्णौति वत्।

**(१०४४) ब्रूञ्—व्यक्तायां वाचि**। (कहना, बोलना)। सक.। अनिट्। वच्यादेशे त्वनिट्। उभयपदी।

१ **प्र.** ब्रवीति-आह ब्रूतः-आहतुः ब्रुवन्ति-आहुः। **म.** ब्रवीषि-आत्थ ब्रुथः आहथुः ब्रूथ। **उ.** ब्रवीमि ब्रूवः ब्रूमः। २ **प्र.** उवाच ऊचतुः ऊचुः। **म.** उवचिथ-उवक्थ ऊचथुः ऊच। **उ.** उवाच-उवच ऊचिव ऊचिम। ३. **प्र.** वक्ता वक्तारौ वक्तारः। **म.** वक्तासि वक्तास्थः वक्तास्थ। **उ.** वक्तास्मि वक्तास्वः वक्तास्मः। ४. **प्र.** वक्ष्यति वक्यतः वक्ष्यन्ति। **म.** वक्ष्यसि वक्ष्यथः वक्ष्यथ। **उ.** वक्ष्यामि वक्ष्यावः वक्ष्यामः। ५. **प्र.** ब्रवीतु-ब्रूतात् ब्रूताम् ब्रुवन्तु। **म.** ब्रूहि-ब्रूतात् ब्रूतम् ब्रूत। **उ.** ब्रवाणि ब्रवाव ब्रबाम। ६. **प्र.** अब्रवीत् अब्रूताम् अब्रूवन्। **म.** अब्रवीः अब्रूतम् अब्रूत। **उ.** अब्रवम् अब्रूव अब्रूम। ७. **प्र.** ब्रूयात् ब्रूयाताम् ब्रूयुः। **म.** ब्रूयाः ब्रूयातम् ब्रूयात। **उ.** ब्रूयाम् ब्रूयाव ब्रूयाम। ८ **प्र.** उच्यात् उत्यास्ताम् उच्यासुः। **म.** उच्याः उच्यास्तम् उच्यास्त। **उ.** उच्यासम् उच्यास्व उच्यास्म। ९. **प्र.** अवोचत् अवोचताम् अवोचन्। **म.** अवोचः अवोचतम् अवोचत। **उ.** अवोचम् अवोचाव अवोचाम। १०. **प्र.** अवक्ष्यत् अवक्ष्यताम् अवक्ष्यन्। **म.** अवक्ष्यः अवक्ष्यतम् अवक्ष्यत। **उ.** अवक्ष्यम् अवक्ष्याव अवक्ष्याम।

**आत्मनेपदे**—१. **प्र.** ब्रूते ब्रूवाते ब्रुवते। **म.** ब्रूषे ब्रुवाथे ब्रूध्वे। **उ.** ब्रुवे ब्रूवहे ब्रूमहे। २. **प्र.** ऊचे ऊचाते ऊचिरे। **म.** ऊचिषे ऊचाथे ऊचिध्वे। **उ.** ऊचे ऊचिवहे ऊचिमहे। ३. **प्र.** वक्ता वक्तारौ वक्तारः। **म.** वक्तासे वक्तासाथे वक्ताध्वे। **उ.** वक्ताहे वक्तावहे वक्तामहे। ४. वक्ष्यते। ५. **प्र.** ब्रूताम् ब्रुवाताम् ब्रुवताम्। **म.** ब्रूष्व ब्रुवाथाम् ब्रूध्वम्। **उ.** ब्रवै ब्रवावहै ब्रवामहै। ६. **प्र.** अब्रूत अब्रुवाताम् अब्रुवत। **म.** अब्रूथाः अब्रुवाथाम् अब्रूध्वम्। **उ.** अब्रुवि अब्रूवहि अब्रूमहि। ७. **प्र.** ब्रुवीत ब्रुवीयाताम् ब्रुवीरन्। **म.** ब्रुवीथाः ब्रुवीयाथाम् ब्रुवीध्वम्। **उ.** ब्रुवीय ब्रुवीवहि ब्रुवीमहि। ८. **प्र.** वक्षीष्ट वक्षीयास्ताम् वक्षीरन्। **म.** वक्षीष्ठाः वक्षीयास्थाम् वक्षीध्वम्। **उ.** वक्षीय वक्षीवहि वक्षीमहि। ९. **प्र.** अवोचत अवोचेताम् अवोचन्त। **म.** अवोचथाः अवोचेथाम् अवोचध्वम्। **उ.** अवोचे अवोचावहि अवोचामहि। १०. अवक्ष्यत अवक्ष्येथाम् अवक्ष्यन्त।

**कर्मणि**—उच्यते। २ ऊचे। ९ अवचि अवाक्षाताम्। **णिचि**—वाचयति-ते। **सनि**—

---

१ औणादिके (द.उ. ७-२६) मन् प्रत्यये रूपमेवम्। स्तोमः स्तुतिव्यूहः। उपचारात् स्तोमः समूहार्थकः।

२ 'अग्नेः स्तुत् स्तोम–' (८-३-८२) इति षत्वम्।

३ 'ज्योतिरायुषः स्तोमः' (८-३-८३) इति षत्वम्। परिष्टोम इत्यत्र तु 'उपसर्गात् सुनोतिसुवतिस्यतिस्तौति–' (८-३-६५) इत्यादिना षत्वम्।

४ औणादिके भप्रत्यये रूपम्। स्तोमः = केवलस्तुतिप्रयोजको वर्णसमूहः।

५ औणादिके (द.उ. ५-३२) आनच् प्रत्यये रूपम्। लोकेऽपि प्रयोगार्होऽयं शब्दः।

विवक्षति-ते। यङि—वावच्यते। यङ्लुकि—बोब्रवीति-बोब्रोति। कृत्सु—वाचक:[१]-चिका, णिचि—वाचक:-चिका, विवक्षक:[२]-क्षिका, वावचक:-चिका, वक्ता-वक्त्री, वाचयिता-त्री, विवक्षिता-त्री, वावचिता-त्री, ब्रुवन्[३]-ती, वाचयन्-न्ती, विवक्षन्-न्ती, वक्ष्यन्-न्ती-ती, वाचयिष्यन्-न्ती-ती, विवक्षिष्यन्-न्ती-ती, ब्रुवाण:, वाचयमान:, विवक्षमाण:, वावच्यमान:, वक्ष्यमाण:, वाचयिष्यमाण:, विवक्षिष्यमाण:, वावचिष्यमाण:, सुवाक्[४]-ग्-सुवाचौ-सुवाच:, उक्तम्[५]-उक्त:-उक्तवान्, वाचितम्-त:, विवक्षित:, वावचित:-तवान्, ब्रूव:,[६] ब्राह्मणिब्रुवा, विदुषिब्रुवा[७]-विदुषीब्रुवा,विद्वद्ब्रुवा[८],वाक्[९]-वाचा,अनूचान:,[१०] वाग्मी[११],वाचाल:-वाचाट:, प्रवचनीय:[१२] (ब्राह्मण:, अनुवाको वा), गुणवचन:[१३], वाच:, विवक्षु:, वक्तव्यम्, वाचयितव्यम्, विवक्षितव्यम्, वावचितव्यम्, प्रवचनीयम्, वाचनीयम्, विवक्षणीयम्, वावचनीयम्, वाच्यम्[१४]-वाक्यम्, प्रवाच्यम्[१५], अविवाक्यम्, विवक्षणम्, उच्यमान:, वाच्यमान:,

---

१ आर्धधातुके विविक्षिते 'ब्रुवो वचि:' (२-४-५३) इति वच्यादेशे रूपमेवम्। एवमेव तृजादिषु सर्वत्र शुद्धे, ण्वुलादिषु ण्यन्ते च वच्यादेशे रूपं ज्ञेयम्।

२ सन्नन्ताण्ण्वुलि वच्यादेशे रूपम्। तत्र वच्यादेशस्य 'पचिवचि-' इत्यनिटकारिकासु भाष्ये (७-२-१०) वचनादनिट्त्वम्। कुत्वषत्वयो: रूपमेवम्। एवमेव सन्नन्ते सर्वत्र प्रक्रिया ज्ञेया।

३ शतरि, अदादित्वात् शपो लुकि, शतु: सार्वधातुकत्वेन ङित्वात्, 'अचि श्नुधातु-' (६-४-७७) इत्यादिनोवङि रूपमेवम्।

४ ताच्छीलिके क्विपि, 'क्विब् वचिप्रच्छि—' (वा. ३-२-१७८) इति दीर्घोऽसम्प्रसारणं च भवति।

५ निष्ठायाम्, 'वचिस्वपियजादीनां किति' (६-१-१५) इति वकारस्य संप्रसारणे, 'संप्रसारणाच्च' (६-१-१०८) इति पूर्वरूपे च रूपमेवम्। एवमेव क्तिनि, क्त्वायां च रूपनिष्पत्तिर्बोध्या।

६ ब्रवीति इति ब्रुव:। कर्तरि पचाद्यचि रूपम्। 'घरूपकल्पचेलट्ब्रुव—' इति सूत्रे 'ब्रुव' इति निपातनात् गुणाभावे, वच्यादेशाभावे च रूपम्। अनेनैव सूत्रेण भाषितपुंस्कात् परस्य ङीप् प्रत्ययान्तस्यानेकाचो ह्रस्व:।

७ 'उगितश्च' (६-३-४५) इति ब्रुवशब्दे परे ह्रस्वविकल्प:।

८ पुंवदभावेऽप्यत्र पक्षे वक्तव्य:' (काशिका ६-३-४५) इति वृत्तिकारवचनादत्र पुंवद्भावे विद्वद् ब्रुवा, श्रेयोब्रुवा इति रूपे भवत:। परन्तु भाष्ये नैतादृशं वचनं दृश्यते।

९ क्विबन्तात् स्त्रियां टापि रूपमेवम्। 'आपं चैव हन्तानां यथा वाचा निशा दिशा।' इति भागुरिवचनात् टाप् इति सि. कौमुदी। भाष्ये नैतादृशं वचनं दृश्यते।

१० 'उपेयिवाननाश्वाननूचानश्च' (३-२-१०९) इत्येनेन, अनु इत्युपसर्गपूर्वकादस्मात् लिट: कर्तरि कानचि, सम्प्रसारणे पूर्वरूपे द्वित्वे सवर्णदीर्घे च 'अनूचान:' इति सिद्ध्यति। अनूचान: = साङ्गवेदाध्येता।

११ वाक्छब्दात् 'वाचो ग्मिनि:' (५-२-१२४) इति मत्वर्थीये ग्मिनिप्रत्यये रूपमेवम्। प्रशस्तवाग्वति प्रत्ययोऽयम्। अत्रैव प्रकरणे 'आलजाटचौ बहुभाषिणि' (५-२-१२५) इति कुत्सितार्थे मत्वर्थीये आलच्-आटच् प्रत्ययो: वाचाल: वाचाट: इति रूपे इत्यपि ज्ञेयम्।

१२ 'भव्यगेयप्रवचनीय—' (३-४-६८) इत्यादिना अनियर् प्रत्यय:। प्रवचनीय: = ब्राह्मण:। अत्र कर्मण्येव प्रत्ययो निपात्यते इति मते तु प्रवचनीय: = अनुवाक:।

१३ गुणम् उक्तवान् इति गुणवचन:। 'कृत्यल्युटो बहुलम्' (३-३-११३) इति भूते कर्तरि ल्युट् प्रत्यय:। अत्र च निदानम्, 'गुणवचनब्राह्मणादिभ्य:—' (५-१-१२४) इत्यत्र 'गुणवचन—' इति निर्देश एवेति ज्ञेयम्।

१४ 'आर्धधातुके' (२-४-३५) इत्यत्र विषयसप्तमीत्वाश्रयणात् प्रत्ययोत्पत्ते: प्रागेव वाच्यादेशे हलन्तलक्षणे ण्यति 'वचो शब्दसंज्ञायाम्' (७-३-६७) इति कुत्वनिषेधे वाच्यम् इति रूपम्। शब्दसंज्ञायां तु कुत्वे वाक्यम् इत्येव।

१५ 'यजयाचरुचप्रवचर्चश्च' (७-३-६६) इत्यनेन कुत्वनिषेधे प्रवाच्यम् इति रूपम्। प्रावच्यम् = ग्रन्थिविशेष: इति वृत्यादिषु प्रोक्तम्।

विवक्ष्यमाणः,वावच्यमानः,वाचः,अनुवाकः[१]-प्राड्विपाकः,विवक्षः,वावचः,वक्तुम्,वाचयितुम्, विवक्षितुम्, वावचितुम्, उक्तिः, निरुक्तम्[२]-पुनरुक्तिः, वाचना, विवक्षा, वावचा, वचनम्, वाचनम्, विवक्षणम्, वावचनम्, उक्त्वा, वाचयित्वा, विवक्षित्वा, वावचित्वा, प्रोच्य, संवाच्यः, प्रविवक्ष्य, प्रवावच्य, कृकवाकुः[३], उक्थम्[४], वक्त्रम्[५], वचः,[६] वचक्नुः[७]।

**(१०४५) इण्—गतौ।** (जाना, **अति**—अतिक्रमण करना, समय बिताना, अधिक श्रेष्ठ होना, **अनु**—पीछे जाना, अनुसरण करना, अनुकरण करना, **अप**—निकल जाना, **अभि**—सामने आना, सर्वत्र जाना, **अभ्युत्**—ऐश्वर्यादिक से प्रसिद्ध होना, **अभ्युप्**—अङ्गीकार करना, स्वीकार करना, सम्मुख आना, सामने आना, **अव**—जानना, समझना, **उत्**—उदय होना, उगना, ऊपर जाना, **उप**—सहयाता करना, पास आना या जाना, **निर्**—निकल जाना, **परि**—चारों ओर घुमाना, प्रदक्षिणा करना, **परा**—पीछे लौटना, **सम्**—संगत होना, मिलना, **समुप**—सामने आना, **वि**—व्यय करना, विध्वंस करना, **प्रति**—स्पष्ट होना, विश्वास रखना)। सक.। अनिट्.। परस्मै.।

१. **प्र.** एति इतः यन्ति। **म.** एषि इथः इथ। **उ.** एमि इवः इमः। २ **प्र.** इयाय ईयतुः ईयुः। **म.** इययिथ-इयेथ ईयथुः ईय। **उ.** इयाय-इयय ईयिव ईयिम। ३. एता एतारौ एतारः। ४. एष्यति। ५. **प्र.** एतु-इतात् इताम् यन्तु। **म.** इहि-इतात् इतम् इत। **उ.** अयानि अयाव अयाम। ६. ऐत्। **म.** ऐः। **उ.** आयम्। ७. **प्र.** इयात्। **म.** इयाः। **उ.** इयाम्। ८. **प्र.** ईयात् ईयास्ताम् ईयासुः। **म.** ईयाः ईयास्तम् ईयास्त। **उ.** ईयासम् ईयास्व ईयास्म। ९. **प्र.** अगात्। **म.** अगाः। **उ.** अगाम्। १० **प्र.** ऐष्यत्। **म.** ऐष्यः। **उ.** एष्यम्।

**कर्मणि**—ईयते। **णिचि**—गमयति-प्रत्याययति। **'इणो गा लुङि'** इति गादेशे। **सनि—जिगमिषति**—प्रतीषिषति 'सनि च' इत्यवोधनार्थस्य गाम्यादेश। बोधने तु प्रत्याययति। **कृत्सु**—आयकः[८]-यिका, गमकः[९]-मिका, प्रत्यायकः[१०]-यिका,

---

१ शब्दसंज्ञात्वात् कुत्वमत्रेति ज्ञेयम्। अनुवाकः = श्रुतौ विभाग विशेषः। पृच्छतीति प्राट्। विशेषेण सूक्ष्मेक्षिकया न्यायादिकं ब्रवीति इति विपाकः। प्राट्चासौ विवाकश्च प्राड्विवाकः = नीतिस्थले न्यायवादी। अत्रापि 'हलश्च' (३-३-१२१) इति संज्ञायां घञि कुत्वमिति ज्ञेयम्।

२ पुनरुक्तिः, निरुक्तम् इत्यत्र 'क्तिच्क्तौ च संज्ञायाम्। (३-३-१७४) इत्यनेन क्तिच् क्तश्च संज्ञायां भवतः पुनरुक्तिरिति असकृदाम्नानस्य संज्ञा। एवं निरुक्तमिति ग्रन्थनिशेषस्य संज्ञा।

३ 'कृके वचः कश्च' (द.उ. १-९१) इति श्रुण् प्रत्यये ककारस्यान्तादेशे च रूपमेवम्। कृकेण = गलेन ब्रवीतीति कृकवाकुः = कुक्कुटः।

४ औणादिके (द.उ. ६-३२) वक् प्रत्यये सम्प्रसारणे च रूपमेवम्। उक्थम् = सामविशेषः।

५ 'गुवृवीपचिवचि—' (द.उ. ८-८९) इत्यादिना कर्तरि त्रप्रत्यये रूपम्। ब्रवीत्ययमिति वक्त्रम् = आस्यम्।

६ 'असुन्' (द.उ. ९-४९) इत्यनेनासुन् प्रत्यये वाच्यादेशे च रूपमेवम्।

७ 'सु यु वचिभ्योऽन्यज् आकूज् अक्नुचः' (द.उ. १०-४) इत्यनेन यथासंख्यमवनुच् प्रत्यये रूपमेवम्। ब्रवीति इति वचक्नुः = वाग्मी।

८ 'अचो ञ्णिति' (७-२-११५) इति वृद्धौ आयादेशे।

९ 'णौ गमिरबोधने' (२-४-४६) इति गमादेशः अमन्तत्वमित्वेन उपधाह्रस्वः।

१० इणो बोधनार्थकत्वात् 'अबोधने' (२-४-४६) इत्युक्त्या गमादेशाभावः।

जिगमिषकः[१]-षिक, प्रतिषिषकः[२]-षिका, एता-त्री, आययिता-त्री, गमयिता-त्री, यन्[३], निर्यन्, प्रत्यययान्-न्ती, गमयन्-न्ती, जिमिषन्-न्ती, एष्यन्[४]-न्ती-ती, प्रत्यययायिष्यन्-न्ती-ती, गमयिष्यन्-न्ती, जिगमिषिष्यन्-न्ती-ती, परीत्[५]-परीतौ-परीतः, इतम्-इतः-इतवान्, उपेतः[६], प्रत्यायितः, अवगमितः, जिगमिषितः, अयः, आयः, गमः, इत्वरः[७], उपेयिवान्[८] ईयिवान्, उपेयुषी[९], अत्ययी[१०], अत्यायः,[११] जिगमिषुः, जिगमयिषुः, परीषिषुः, एतव्यम्, उपैतव्यम्[१२], प्रत्यायितव्यम्, गमयितव्यम्, अयनीयम्, प्रत्यायनीयम्, गमनीयम्, इत्यम्[१३], अनभ्यासमित्यः[१४], प्रत्याय्यम्, अवगम्यम्, जिगमिष्यम्, ईयमानः[१५], प्रत्याय्यमानः, अवगम्यमानः, जिगांस्यमानः[१६], आयः, न्यायः[१७], पर्यायः[१८], अध्यायः[१९], समयः एतुम्[२०], प्रत्याययितुम्, गमयितुम्, जिगमिषितुम्, इत्या[२१], अपीतिः, समितिः[२२], इतिः, समित्[२३], प्रत्यायना, अवगमना, जिगमिषा, जिगमयिषा, अयनम्, अन्तरयणम्[२४], (वर्तते), प्रत्यायनम्,

१ 'सनि च' (२-४-४४) इति गमादेश। 'गमेरिट् परस्मैपदेषु' (७-२-५८) इत्यत्र 'परस्मैपदेषु' इत्यस्य तङानयोरभावे-इत्यर्थकतया अत्र सन इड् भवति।

२ 'सनि च' (२-४-४७) इत्यत्रापि 'अबोधने इत्यनुवृत्या गमादेशाभावे, अजादित्वाद् 'अजादेर्द्वितीयस्य' (६-१-२) इति द्वितीयस्यैकाचो द्वित्वे, 'अज्झनगमां सनि' (६-४-४६) इति दीर्घः।

३ 'इणो यण्' (६-४-८१) इति यणादेशः।

४ 'आच्छीनद्योर्नुम्' (७-१-८०) इति नुमागमस्य वैकल्पिकत्वात् रूपद्वयम्।

५ 'षत्वतुकोरसिद्धः' (६-१-८६) इत्यनेन एकादेशशास्त्रस्यासिद्धत्वात् तुक्।

६ आ + इतः एतः, उप + एत = इति स्थिते 'एत्येधत्यूठसु' (६-१-८९) इति वृद्धिं बाधित्वा, 'ओमाङोश्च' (६-१-९५) इति पररूपम्।

७ 'इण् नशिजिसर्तिभ्यः–' (३-२-१६३) इति तच्छीलादिषु क्वरप्। तुक्।

८ 'उपयिवाननाश्वान्–' (३-२-१०९) इति क्वसुप्रत्ययान्तो निपातितः। 'उप' इत्यस्याविवक्षितत्वात् समीयिवान् ईयिवान् इत्याद्यपि सिद्ध्यति। 'दीर्घ इणः किति' (७-४-६९) इति दीर्घः।

९ 'उगितश्च' (४-१-६) इति ङीष्। 'वसोः सम्प्रसारणम्' (६-४-१३१) इति सम्प्रसारणम्।

१० 'जिदृक्षिविश्रीण्–' (३-२-१५७) इत्यनेन तच्छीलादिषु इनिः।

११ 'श्याद्व्यधास्रुसंस्रतीण्–' (३-१-१४१) इति 'अति' इत्युपसृष्टादस्मात् कर्तरि णः प्रत्ययः।

१२ 'एत्येधत्यूठ्सु' (६-१-८९) इति वृद्धिः।

१३ 'एतिस्तुशास्–' (३-१-१०९) इति क्यपि तुक्।

१४ 'इत्येऽनभ्याशस्य' (वा. ६-३-७०) इति पूर्वपदस्य नुम्।

१५ 'अकृत्सार्वधातुकयोः–' (७-४-२५) इति दीर्घः।

१६ अज्झनगमां सनि (६-४-१६) इति दीर्घः। आत्मनेपदपरकत्वात् सनो नेट्।

१७ संज्ञायाम् 'अध्यायन्याय–' (३-३-१२२) इत्यादिना घापवादो घञ् निपातितः। न्याय इति शास्त्रस्य संज्ञा। न्येति – निश्चिनोति इति शास्त्रयुक्त्यादिरत्र न्यायः। न अभ्रेषः।

१८ 'परावनुपात्यय इणः' (३-३-३८) इति अजपवादो घञ् क्रमस्यानतिक्रमोऽनुपात्ययः।

१९ 'अध्यायन्याय–' (३-३-१२२) इत्यादिना घापवादो घञ् निपातितः संज्ञायाम्।

२० 'एरच्' (३-३-५६) इति भावेऽच्। एवं 'अभ्युदय' इति यावदच् प्रत्ययः।

२१ संज्ञायां 'समजनिषदनिपतमनविदषुञ्शीङ्भृञिणः' (३-३-९९) इति स्त्रियां भावे क्यप्।

२२ बाहुलकात् क्तिन्नपि इत्यात्रेयः। समितिः = सभा।

२३ 'सम्पदादित्वात्–' (३-३-९४) स्त्रियां भावादौ क्विप्। समित् = सभा।

२४ 'अयनं च' (८-४-२५) इत्यदेशे णत्वम्। देशविशेषे तु न – अन्तरयनो देशः। 'अन्तश्शब्दस्याङ्किविधिणत्वेषु उपसर्गत्वं वक्तव्यम्' (वा. १-४-५८) इति वचनात् उपसर्गत्वम्। 'कृत्यचः' (८-४-२९) इत्यनेनैव सिद्धे देशे णत्वाभावाय 'अयनं च' (८-४-२५) इति सत्रारम्भः।

इत्वा, आययित्वा, गमयित्वा, जिमिषित्वा, उपेत्य-परीत्य, प्रत्याय्य, अवगमय्य,[१] अवजिगमिष्य।

**(१०४६) इङ्**—अध्ययने नित्यमधिपूर्वः। (अध्ययन करना, अभ्यास करना, सीखना)। सकर्म.। अनिट्। आत्मने.।

१. **प्र.** अधीते अधीयाते अधीयते। **म.** अधीषे अधीयाथे अधीध्वे। **उ.** अधीये अधीवहे अधीमहे। २. **प्र.** अधिजगे अधिजगाते अधिजगिरे। **म.** अधिजगिषे अधिजगाथे अधिजगिध्वे। **उ.** अधिजगे अधिजगिवहे अधिजगिमहे। ३. **प्र.** अध्येता अध्येतारौ अध्येतारः। **म.** अध्येतासे अध्येतासाथे अध्येताध्वे। **उ.** अध्येताहे अध्येतास्वहे अध्येतास्महे। ४. **प्र.** अध्येष्यते अध्येष्येते अध्येष्यन्ते। **म.** अध्येष्यसे अध्येष्येथे अध्येष्यध्वे। **उ.** अध्येष्ये अध्येष्यावहे अध्येष्यामहे। ५. **प्र.** अधीताम् अधीयाताम् अधीयताम्। **म.** अधीष्व अधीयाथाम् अधीध्वम्। **उ.** अध्ययै अध्यावहै. अध्ययामहै। ६. **प्र.** अध्यैत अध्यैयाताम् अध्यैयत। **म.** अध्यैथाः अध्यैयाथाम् अध्यैध्वम्। **उ.** अध्यैयि अध्यैवहि अध्यैमहि। ७. **प्र.** अधीयीत अधीयीयाताम् अधीयीरन्। **म.** अधीयीथाः अधीयीयाथाम् अधीयीध्वम्। **उ.** अधीयीय अधीयीवहि अधीयीमहि। ८. **प्र.** अध्येषीष्ट अध्येषीयास्ताम् अध्येषीरन्। **म.** अध्येषीष्ठाः अध्येषीयास्थाम् अध्येषीढ्वम्। **उ.** अध्येषीय अध्येषीवहि अध्येषीमहि। ९. **प्र.** अध्यगीष्ट अध्यगीषाताम् अध्यगीषत। **म.** अध्यगीष्ठाः अध्यगीषाथाम् अध्यगीढ्वम्-ड्ढ्वम्। **उ.** अध्यगीषि अध्यगीष्वहि अध्यगीष्महि। पक्षे—**प्र.** अध्यैष्ट अध्यैषाताम् अध्यैषत। **म.** अध्यैष्ठाः अध्यैषाथाम् अध्यैढ्वम्-ड्ढ्वम्, **उ.** अध्यैषि अध्यैष्वहि अध्यैष्महि। १०. **प्र.** अध्यगीष्यत अध्यगीष्येताम् अध्यगीष्यन्त। **म.** अध्यगीष्यथाः अध्यगीष्येथाम् अध्यगीष्यध्वम्। **उ.** अध्यगीष्ये अध्यगीष्यावहि अध्यगीष्यामहि। **विकल्पपक्षे**—**प्र.** अध्यैष्यत अध्यैष्येताम् अध्यैष्यन्त। **म.** अध्यैष्यथाः अध्यैष्येथाम् अध्यैष्यध्वम्। **उ.** अध्यैष्ये अध्यैष्यावहि अध्यैष्यामहि।

**कर्मणि**—अधीयते। २. अधिजगे। ९. अध्यगायि-अध्यायि। **णिचि**—अध्यापयति। ९. अध्यजीगपत्-अध्यापिपत्। **सनि**—अधिजिगांसते। **कृत्सु**—अध्यापकः-पिका, अध्यापकः[२]-पिका, अधिजिगमिषकः[३]-षिका, अध्येता-त्री, अध्यापयिता-त्री, अधिजिगमिषिता-त्री, अधीयन्[४] पारायणम्, अधीयती[५], अध्यापयन्[६]-न्ती,

१ 'ल्यपि लघुपूर्वात्' (६-४-५६) इति णेरयादेशः।

२ 'क्रीङ्जीनां णौ' (६-१-४८) इती आत्वे, 'अर्तिही–' (७-३-३६) इति पुक्।

३ 'इङश्च' (२-४-४८) इति सनि गमिः। 'गमेरिट् परस्मैपदेषु' (७-२-५८) इति इट्। 'परस्मैपदेषु' इत्यस्य तङानयोरभावे' इत्यर्थः।

४ 'इङ्धार्योः शत्रकृच्छ्रिणि' (३-२-१३०) इति शता।

५ 'उगितश्च' (६-३-४५) इति स्त्रियां ङीप्। अधीयन् पारायणं अकृच्छ्रेणाधीयान इत्यर्थः।

६ 'बुधयुधनशजनेङ–' (१-३-८६) इति ण्यन्तात् परस्मैपदमेव।

अध्यापयिष्यन्-न्ती-ती, अधीयानः[१], अधिजिगासमानः[२], अध्येष्यमाणः, अजिगिजांसिष्यमाणः[३], अधीतः-तम्, अध्यापितः, अध्ययः, मन्त्राध्यायः[४], अध्यापः, अधिजिगमिषुः, अधिजिगापयिषुः-अध्यापिपयिषुः[५], अध्येतव्यम्, अध्यापयितव्यम्, अध्ययनीयम्, अध्यापनीयम्, अध्येयम्, अध्याप्यम्, अधीयमानः, अध्याप्यमानः, अधिजिंगास्यमानः, अध्यायः[६], उपाध्यायः, उपाध्याया, उपाध्यायी[७], उपाध्यायानी, अध्यापः, अधिजिगमिषः, अध्येतुम्, अध्यापयितुम्, अधिजिगमिषितुम्, अधीतिः, अध्यापना, अधिजिगमिषा, अध्ययनम्, अध्यापनम्, अधिगमिषणम्, अधीत्य, अध्याप्य, अधिजगमिष्य, अध्यायम्, अध्यापम् ।

**( १०४७ ) इक्—स्मरणे** । (स्मरण करना, याद करना, चिन्तन करना)। सकर्म.। अनिट् । परस्मै.। नित्यमधिपूर्वः।

१. **प्र.** अध्येति अधीतः अधियन्ति-अधीयन्ति । **म.** अध्येषि अधीथः अधीथ । **उ.** अध्येमि अधीवः अधीमः । २. **प्र.** अधीयाय अधीयतुः अधीयुः । **म.** अधीययिथ-अधीयेथ अधीयथुः अधीय । **उ.** अधीयाय-अदीयय अधीयिव अधीयिम । ३. **प्र.** अध्येता । **म.** अध्येतासि ४. अध्येष्यति । ५. **प्र.** अध्येतु-अधीतात् अधीताम् अधियन्तु-अधीयन्तु । **म.** अधीहि-अधीतात् अधीतम् अधीत । **उ.** अध्ययानि अध्ययाव अध्ययाम । ६. **प्र.** अध्यैत् अध्यैताम् अध्यैयन्-अध्यायन् । **म.** अध्यैः अध्यैतम् अध्यैत । **उ.** अध्यायम् अध्यैव अध्यैम । ७. **प्र.** अधीयात् अधीयाताम् अधीयुः । **म.** अधीयाः अधीयातम् अधीयात् । **उ.** अधीयाम् अधीयाव अधीयाम । ८. **प्र.** अधीयात् अधीयास्ताम् अधीयासुः । **म.** अधीयाः अधीयास्तम् अधीयास्त । **उ.** अधीयासम् अधीयास्व अधीयास्म । ९. **प्र.** अध्यगात् अध्यगाताम् अध्यगुः । **म.** अध्यगाः अध्यगातम् अध्यगात । **उ.** अध्यगाम् अध्यगाव अध्यगाम । १० अध्यैष्यत् ।

**कर्मणि**—अधीयते । २. अधीये अधीयाते अधीयिरे । ९ अध्यगायि । **णिचि**—अधिगमयति-ते । **सनि**—अधिजिगमिषति । **कृत्सु**—'अधीति' (१०४५) वत् ।

**( १०४८ ) वी—गतिव्याप्तिप्रजनकान्त्यसनखादनेषु** । प्रजनं = गर्भग्रहणम् । असनं = क्षेपणम् । (जाना, घेरना, आक्रमण करना, गर्भवती होना, गर्भाधारण करना, चमकना, फेंकना, खाना, भक्षण करना।) **सम्**—घेरना, घेर लेना, लपेटना । यथायथं सकर्मकोऽकर्मकश्च । अनिट् ।पर.।

१. **प्र.** वेति वीतः वियन्ति । **म.** वेषि वीथः वीथ । **उ.** वेमि वीवः वीमः । २. **प्र.** विवाय

१ इयङ्पूर्वम् । पश्चात् दीर्घः ।
२ 'इङश्च' (२-४-४८) इति गमादेशः । 'अज्झनगमां सनि' (६-४-१६) दीर्घः ।
३ 'आर्धधातुकस्येट्–' (७-२-३५) इतीट् ।
४ 'कर्मण्यण्' (३-२-१) इत्यण् ।
५ 'णौ च संश्चङोः' (२-४-५१) इति गादेशः वा, पक्षे आत्वे पुकि अध्यापिपयिषुः इति रूपम् ।
६ 'इङश्च' (३-३-२१) इति भावादौ घञ् असंज्ञायाम् । अध्ययनमध्यायः ।
७ अपादाने स्त्रियामुपसंख्यानं तदन्ताच्च वा ङीष् (वा. ३-३-२१) इती ङीष् वा ।

विव्यतुः विव्युः। **म.** विवयिथ-विवेथ विव्यथुः विव्य। **उ.** विवाय-विवय विव्यिव विव्यिम। ३. वेता। ४. वेष्यति। ५. **प्र.** वेतु-वीतात् वीताम् वियन्तु। **म.** वीहि-वीतात् वितम् वीत। **उ.** वयानि वयाव वयाम। ६. **प्र.** अवेत् अवीताम् अवियन्-अव्यन्। **म.** अवेः अवीतम् अवीत। **उ.** अव्यम् अवीव अवीम। ७. **प्र.** वीयात् वीयाताम् वीयुः। **म.** वीयाः वियातम् वीयात। **उ.** वीयाम् वीयाव वीयाम। ८. **प्र.** वीयात् वीयास्ताम् वीयासुः। **म.** वीयाः वीयास्तम् वीयास्त। **उ.** वियासम् वीयास्व वीयास्म। ९. **प्र.** अवैषीत् अवैष्टाम् अवैषुः। **म.** अवैषीः अवैष्टम् अवैष्ट। **उ.** अवैषम् अवैष्व अवैष्म। १०. अवेष्यत्।

**कर्मणि**—वीयते। २. विव्ये। **णिचि**—वाययति। प्रजनार्थे तु वाययति-वापयति। **सनि**—विवीषति। **यङि**—वेवीयते। **यङ्लुकि**—वेवेति-वेवयीति। **कृत्सु**—वीत्वा, वेतुम्, वयनम्, वियनम्, वेतव्यम्, वयनीयम्, वेयम्, वीतम्, प्रवीय, वायकः-यिका, वापकः[१]-पिका, विवीषकः[२]-षिका, वेवीयकः-यिका, वेता-त्री, वाययिता- वापयिता-त्री, वियन्[३]-न्ती, वाययन्-वापयन्-न्ती, वेष्यन्-न्ती-ती, वाययिष्यन्-वापयिष्यन्, वयः,[४] क्तिनि-वीतिः, वेणिः[५], वेणुः[६], वीणा[७], वेतनम्[८], वेत्रम्[९], वेतसः[१०] वयः।

**( १०४९ ) या—प्रापणे। प्रापणमिह गतिः।** (जाना)। **अनु**—अनुसरण करना, पीछे पीछे जाना। **अभि**—पहूंचना, पास जाना, **आ**—आना। **उप**—छोड़ना, त्यागना। **निर्**—बाहर जाना, निकल जाना। **प्र**—जाना। **प्रत्युत्**—सामने जाना। **समभि**—समीप जांना। **समा**—आना या पहुंचना। सक.। अनिट्। परस्मै.।

१. **प्र.** याति-प्रणियाति[११] यातः यान्ति। **म.** यासि याथः याथ। **उ.** यामि यावः यामः। २. **प्र.** ययौ ययतुः ययुः। **म.** ययिथ-ययाथ ययथुः-यय। **उ.** ययौ ययिव ययिम। ३. याता यातारौ यातारः। ४. यास्यति। ५. **प्र.** यातु-यातात् याताम् यान्तु। **म.** याहि-यातात् यातम् यात। **उ.** यानि याव याम। ६. **प्र.** अयात् अयाताम् अयुः-अयान्[१२]। **म.** अयाः अयातम् अयात। **उ.** अयाम् अयाव अयाम। ७. **प्र.** आयात् यायाताम् यायुः। **म.** यायाः यायातम्

१ 'प्रजने वायतेः' (६-१-५५) इति प्रजने वर्तमानस्य णौ विभाषा आत्वे, पुकि च रूपमेवम्।
२ सन्नन्तात् ण्वुलि 'इको झल्' (१-२-९) इति सनः कित्वान्न गुणः।
३ 'अदिप्रभृतिभ्यः शपः' (२-४-७२) इति शपो लुकि प्रकृतेः इयङादेशे च रूपमेवम्।
४ 'एरच्' (३-३-५६) इति भावे अकर्तरि च कारके संज्ञायामच् प्रत्यये रूपम्। घञोऽपवादः।
५ 'वीज्याज्वरिभ्यो निः' (द.उ. १-१८) इति निप्रत्ययः। बाहुलकात् णत्वम्। वेणिः = केशबन्धः।
६ औणादिके (द.उ. १-१४८) णु प्रत्यये रूपमेवम्। वेणुः = वंशः।
७ औणादिके (द.उ. ५-५७) न प्रत्ययो णत्वं गुणाभावश्च निपातनात्। तेन रूपमेवम्। वेति जायते स्वरोऽस्यामिति वीणा = वल्लकी। वीणा तु वल्लकी विपञ्ची इत्यमरः।
८ 'वीपतिभ्यां तनन्' (द.उ. ६-५६) इति तनन् प्रत्ययः। वेतनम् = भृतकदानम्। भृतकर्मकधनमिति केचित्।
९ 'गुधृवी—' (द.उ. ८-८९) इति त्र प्रत्यये रूपमेवम्। वेत्रम् = वीरुद्विशेषः।
१० 'वियस्तुट् च' (द.उ. ९-४५) इति अचस् प्रत्यये तुडागमे च रूपमेवम्। वेतसः = काष्ठजातिः।
११ 'नेर्गद' (८-४-१६) इति णत्वम्।
१२ 'लङ शाकटायनस्यैव' (३-४-१११ ) इति झेर्जुस् विकल्पः।

यायात । उ. यायाम् यायाव यायाम । ८. प्र. यायात् यायास्ताम् यायासुः । म. यायाः यायास्तम् यायास्त । उ. यायासम् यायास्व यायास्म । ९. प्र. अयासीत् अयासिष्टाम् अयासिषुः । म. अयासीः अयासिष्टम् अयासिष्ट । उ. अयासिषम् अयासिष्व अयासिष्म । १०. प्र. अयास्यत् अयास्यताम् अयास्यन् । म. अयास्यः अयास्यतम् अयास्यत । उ. अयास्यम् अयास्वाव अयास्याम ।

**कर्मणि**—यायते । २. याये । ९. अयायि । **णिचि**—यापयति । **सनि**—यियासति । **यङि**—यायायते । **यङ्लुकि**—यायेति-यायाति । **कृत्सु**—यात्वा, प्रयाय, यातम्, यातुम्, यातः, यान्, याती-यान्ती, यातव्यम्, यानीयम्, यायकः-यिका, यापकः-पिका, यियासकः-सिका, याता-त्री, यापयिता-त्री, यियासिता, यायायिता-त्री, प्रणियान्[१]-ती-न्ती, यानीयः,[२] येयः[३], अध्वङ्गतुरङ्गयायी[४], अनुयायी, प्रयायी[५]-प्रतियायी, सङ्ग्रामयायी[६], शुभंयाः[७], अभियाः, यायावरः[८], प्रयाणम्, प्रयापणम्[९], प्रयापनम्, अययः[१०], अप्रयाणिः[११], ययातिः[१२], याता,[१३] ययुः[१४], मृगयुः[१५], देवयुः-केवलयुः-ग्रहयुः-मित्रयुः-मन्त्रयुः-अध्वर्युः,

१ शतरि अदादित्वाच्छपोलुकि, 'नेर्गदनदपतपदधुमास्यतिहिन्तियाति–' (८-४-१७) इत्यादिना उपसर्गस्थान्निमित्तात् परस्य नेर्णत्वे रूपमेवम् । स्त्रियाम् 'आच्छीनद्योः' (७-१-८०) इति नुम्विकल्पः ।

२ 'कृत्यल्युटो बहुलम्' (३-३-११३) इति बाहुलकत्वाभ्यनुज्ञानादत्र करणेऽनीयर् प्रत्ययः । यान्त्यनेनेति यानीयः = अश्वः ।

३ कर्मणि यत्प्रत्यये, 'ईद् यति' (६-४-६५) इतीकारे गुणे च रूपमेवम् ।

४ अध्यवन्यतुरङ्गेन यातीति अध्वन्यतुरङ्गयायी । 'सुप्यजातौ–' (३-२-७८) इति ताच्छील्ये णिनिप्रत्ययः । 'आतो युक्–' इति युगागमः । एवम् अनुयायी इत्यत्रापि स्वनिष्पत्तिर्ज्ञेया । उपसर्गोपपदेऽप्यनेन णिनिरिति भाष्यादौ स्पष्टम् ।

५ 'भविष्यति गम्यादयः' (३-३-३) इत्यत्र गम्यादिगणे पाठात् औणादिके णिनि प्रत्यये युगागमे च रूपमेवम् । भविष्यत् कालेयं प्रत्यय इति ज्ञेयम् । आयायी इति काशिका (३-३-३) पाठः ।

६ 'आवश्यकाधर्ण्ययोर्णिनिः' (३-३-१७०) इत्यावश्यकार्थे णिनिप्रत्यये रूपमेवम् ।

७ शुभं यातीति शुभंयाः = शुभान्वितः । 'क्विप् च' (३-२-७६) इति क्विप् ।

८ यङन्तात् 'यश्च यङः' (३-२-१७६) इति ताच्छीलिके वरचि द्विर्वचनादिकेषु रूपमेवम् ।

९ 'णेर्विभाषा' (८-४-३०) इति णत्वविकल्पः । प्रयाणम् इत्यत्र तु 'कृत्यच' (८-४-२९) इति नित्यं णत्वमिति ।

१० अयः = शुभावहो विधिः, अयं यातीति अययः । 'आतोऽनुपसर्गे कः' (३-२-३) इति कर्तरि कप्रत्ययः ।

११ 'आक्रोशे नञ्यनिः' (३-३-११२) इति नञुपपदादस्माद् अनिप्रत्ययः । आक्रोशः = शापः ।

१२ "क्तिनि बाहुलकाद् द्विर्वचनम्" इत्यात्रेयः– इति मा. धा. वृत्तिः । स्त्रियामेव क्तिनो विधानात् क्तिचस्तु पुल्लिङ्गेपि सद् भावात् क्तिचि, बाहुलकादेव द्विर्वचनमिति ।

१३ ताच्छीलिके, औणादिके वा तृनि, रूपमेवम् । स्त्रियाम् 'न षट्स्वस्रादिभ्यः' (४-१-१०) इति ङीब्निषेधः । याता = देवरपत्नी ।

१४ 'यो द्वे च' (द.उ. १-१०६) इत्युप्रत्यये द्विर्वचने, ङिद्वद् भावेनाकारलोपे च रूपमेवम् । ययुः = अश्वमेधीयः स्वर्गमार्गश्च ।

१५ 'मृगय्वादयश्च' (द.उ. १-१२१) इति कुप्रत्यये, आकारलोपे च रूपाण्येतानि । अत्रैव गणे अध्वरशब्दस्यान्तलोपश्च निपातनादेवेति ज्ञेयम् । मृगयुः = व्यधाः, देवयुः = धार्मिकः । केवलयुः = मानी । ग्रहयुः = ग्रहपतिः । मित्रयुः = मित्रवत्सलः ऋषिविशेषश्च । मन्त्रयुः = मन्त्री । अध्वर्युः = ऋत्विग् विशेषः । मृगम् आत्मन इच्छतीत्यर्थे 'सुप आत्मनः क्यच्' (३-१-८) इति क्यच् प्रत्यये 'सनाद्यन्ता धातवः' (३-१-३२) इति धातुसंज्ञायाम् 'क्याच्छन्दसि' (३-२-१७०) इति उप्रत्यये रूपनिष्पत्तिरपीदृशस्थलेषु नानुप्रन्नेति ज्ञेयम् ।

यातुः,[१] यामः[२], यात्रा[३]।

**(१०५०) वा**—गतिगन्धयोः। (जाना, हवा की तरह तीव्र गति में चलना, वहना, गन्ध लगना।) अकर्म.। अनिट्। परस्मै.। वाति वातः वान्ति। इत्यादि 'याति' (१०४९) वत्।

**णिचि**—वाजयति-वापयति—'**वो विधूनने जुक्**' इति वातेर्जुक्। **कृत्सु**—वायकः-यिका, वाजकः-जिका, वापकः-पिका, विवासकः-सिका, वावायकः-यिका, वाता-त्री, वापयिता-त्री, वाजयिता-त्री, विवासिता-त्री, वावयिता-त्री, वान्-न्ती, वापयन्-वाजयन्-न्ती, विवासन्-न्ती, वास्यन्-न्ती-ती, वापयिष्यन्-वाजयिष्यन्-न्ती-ती, व्यतिवानः, वापयमानः, वाजयमानः, वापयिष्यमाणः-वाजयिष्यमाणः, वातम्-तः, निर्वाणः[४] (अग्निः भिक्षुर्वा), निर्वातो (वातः) वापितः, वाजितः, निवासितः, वातः, वानः[५], वापः, वाजः, वातूलः, प्रणिवातव्यम्[६], वापयितव्यम्-वाजयितव्यम्, वानीयम्, वापनीयम्, वाजनीयम्, वेयम्, वाप्यम्-वाज्यम्, वायमानः, वाप्यमानः-वाज्यमानः, वायः, वातुम्, वापयितुम्-वाजयितुम्, वातिः, वापना-वाजना, वानम्, वापनम्-वाजनम्, वात्वा, वापयित्वा-वाजयित्वा, प्रवाय, प्रवाप्य-प्रवाज्य, वातिः[७], वाजिकम्, वातकी, वात्या, वायुः[८], वातः[९], वामः[१०]।

**(१०५१) भा**—**दीप्तौ**।(चमकना, प्रकाशित होना, सुन्दर दीखना)। **वि-प्र**—विशेष प्रकाश करना। अकर्म.। अनिट्। परस्मै.।

१. **प्र.** भाति भातः भान्ति। **म.** भासि भाथः भाथ। **उ.** भामि भावः भामः। २. **प्र.** बभौ बभतुः बभुः। **म.** बभिथ-बभाथ बबथुः बभ। **उ.** बभौ बभिव बभिम। ३. भाता भातारौ भातारः। ४. भास्यति भास्यतः भास्यन्ति। ५. **प्र.** भातु-भातात् भाताम् भान्तु। **म.** भाहि-भातात् भातम् भात। **उ.** भानि भाव भाम। ६. **प्र.** अभात् अभाताम् अभुः-अभान्। **म.** अभाः अभातम् अभात। **उ.** अभाम् अभाव अभाम। ७. **प्र.** भायात् भायाताम् भायुः। **म.** मायाः भायातम् भायात। **उ.** भायाम् भायाव भायाम। ८. **प्र.** भायात् भायास्ताम् भायासुः। **म.** भायाः भायास्तम् भायास्तः। **उ.** भायासम् भायास्व भायास्म।

---

१ 'काममनिजनिगामापाया—' (द.उ. १-१२५) इति तु प्रत्यये रूपमेवम्। यातुः = पावकः, मनश्च। राक्षस इति क्षीरस्वामी।
२ औणादिके (द.उ. ७-२६) मन् प्रत्यये रूपम्। यामः = कालविशेषः।
३ 'हुयामा—' (द.उ. ८-८४) इति त्रन् प्रत्ययः। यात्रा = गमनम् आचारश्च। अभ्यवहार इति केचित्।
४ निष्ठायाम् 'निर्वाणोऽवाते' (८-२-३०) इति अवाताधिकरणत्वे निष्ठातकारस्य नकारादेशे, णत्वे च रूपमेवम्। वातार्थे तु निर्वातो = वायुः इति।
५ 'चलन शब्दार्थात्—' (३-२-१४८) इति युच् प्रत्ययः।
६ 'नेर्गदनद—' (८-४-१७) इति उपसर्गस्थान्निमित्तादुत्तरस्य नेर्नकारस्य णकारादेशो भवति।
७ 'वातेर्नित्' (द.उ. १-७८) इत्यतिप्रत्यये नित् संज्ञके च रूपमेवम्। वातीति वातिः = गन्धमिश्रपवनः।
८ 'कृवापा—' (द.उ. १-८६) इत्यादिना उण् प्रत्ययः। वाति वायति वा द्रव्याणि इति वायुः।
९ औणादिके (द.उ. ६-७) तन् प्रत्यये रूपमेवम्।
१० औणादिके (द.उ. ६-२६) मन् प्रत्यये वामः इति रूपम्।

९. प्र. अभासीत् अभासिष्टाम् अभासिषुः। म. अभासीः अभासिष्टम् अभासिष्ट। उ. अभासिषम् अभासिष्व अभासिष्म। १०. प्र. अभास्यत् अभास्यताम् अभास्यन्। म. अभास्यः अभास्यतम् अभास्यत। उ. अभास्यम् अभास्याव अभास्याम। शेषं सर्वं 'याति' (१०४९) वत्।

**(१०५२) ष्णा (स्ना) —शौचे।** (स्नान करना, नहाना, शुद्ध होना)। अक.। अनि.। परस्मै.।

१. प्र. स्नाति स्नातः स्नान्ति। म. स्नासि स्नाथः स्नाथ। उ. स्नामि स्नावः स्नामः। २. प्र. सस्नौ सस्नतुः सस्नुः। म. सस्निथ-सस्नाथ सस्नथुः सस्न। उ. सस्नौ सस्निव सस्निम। ३. प्र. स्नाता स्नातारौ। ४. स्नास्यति। ५. प्र. स्नातु-स्नातात् स्नाताम् स्नान्तु। म. स्नाहि स्नातम् स्नात। उ. स्नामि स्नाव स्नाम। ६. प्र. अस्नात् अस्नाताम् अस्नुः-अस्नान्। म. अस्नाः अस्नातम् अस्नात। उ. अस्नाम् अस्नाव अस्नाम। ७. प्र. स्नायात् स्नायाताम् स्नायुः। म. स्नायाः स्नायातम् स्नायात्। उ. स्नायाम् स्नायाव स्नायाम। ८. प्र. स्नेयात् स्नेयास्ताम् स्नेयासुः। म. स्नेयाः। स्नेयास्तम् स्नेयास्त। उ. स्नेयासम स्नेयास्व स्नेयास्म। एत्व विकल्पपक्षे– प्र. स्नायात् स्नायास्ताम् स्नायासुः। इत्यादि। ९. प्र. अस्नासीत् अस्नासिष्टाम् अस्नासिषुः। म. अस्नासीः अस्नासिष्टम् अस्नासिष्ट। उ. अस्नासिषम् अस्नासिष्व अस्नासिष्म। १०. प्र. अस्नास्यत् अस्नास्यताम् अस्नास्यन्। म. अस्नास्यः अस्नास्यतम् अस्नास्यत। उ. अस्नास्यम् अस्नास्याव अस्नास्याम।

**भावे**—स्नायते। **णिचि**—स्नापयति-ते। वा घटादित्वे स्नपयति-ते। **सनि**—सिष्णासति। **यङि**—सास्नायते। **कृत्सु**—स्नानीयम्, स्नानम्, स्नायः, स्नायकः[१]-यिका, स्नायी, स्नाता, स्नापकः[२]-स्नपकः-पिका सिष्णासकः[३]-सिका, सास्नासकः-सिका, स्नाता-त्री, स्नापयिता-स्नपयिता-त्री, सिष्णासिता-त्री, सास्नायिता-त्री, स्नातः, अभिस्नातः, स्नातिः, स्नातव्यम्, स्नातुम्, स्नात्वा, उपस्नाय, स्नेयम्, स्नान्, स्नास्यन्, प्रतिष्णातम्,[४] निष्णातः[५], नदीष्णः[६]-नदीष्णातः, सुस्नातम्[७], सौस्नातिकः,

१ ण्वुलि, 'आतो युक्—' (७-३-३३) इति युगागमः। धात्वादिषकारस्य सकारः।

२ ण्यन्ते सर्वत्र आदन्त लक्षणः पुगागमो बोध्यः। प्रगनन्तरम्, 'ग्लास्नावनुवमां च' (ग.सू. भ्वादिः) इति णिजन्ते मित्वविकल्पः। मित्वपक्षे स्नपकः इत्यादीनि ह्रस्वघटितानि रूपाणि। मित्वाभावपक्षे स्नापकः इत्यादीनि।

३ सन्नन्ते 'आदेशप्रत्ययोः' (८-३-५९) इत्युत्तरखण्डे षत्वम्। ष्टुत्वेन नकारस्य णकारः।

४ 'सूत्रं प्रतिष्णातम्' (८-३-९०) इति मूर्धन्यविशिष्टो निपातः। प्रतिष्णातम् = शुद्धं सूत्रमित्यर्थः। अन्यत्र प्रतिस्नातमित्येव।

५ नितरां स्नातः निष्णातः = कुशलः। 'निनदीभ्यां स्नाते कौशले' (८-३-८९) इति षत्वम्। निष्णातः कटकरणे निष्णातो रज्जुवर्तने। अत्र धात्वर्थस्य न विवक्षा।

६ नद्यां स्नाति नदीष्णः। 'सुपि स्थः' (३-२-४) इत्यत्र योगविभागात् क प्रत्ययः। षत्वे। नदीष्णः = नदीस्नाने कुशल इत्यर्थ। कौशलभिन्नार्थे तु नदीस्नातः।

७ अत्र 'सु' इत्यस्य कर्मप्रवचनीयत्वेन न षत्वम् इत केचित्। वस्तुतः षत्वस्य प्राप्त्यभावात् 'सात् पदाद्योः' (८-३-१११) इति निषधाच्च षत्वमेः। सुस्नातं पृच्छति सौस्नातिकः। पृच्छतौ सुस्नातादिभ्यः। (वा. ४-४-१) इति ठक्।

प्रस्नः[१], नानीयम्[२], नात्वाकालकः, स्नावा[३], स्नात्वी स्नायुः[४]।

**(१०५३) श्रा—पाके**। (पकाना, राधना, उबालना, पसीजना, पसीना निकालना)। सक.। अनि.। परस्मै.।

१. श्राति श्रातः श्रान्ति। २. शश्रौ। ३. श्राता। ४. श्रास्यति। ५. श्रातु-श्रातात्। ६. अश्रात्। ७. श्रायात् श्रायाताम्। ८. श्रायात् श्रायास्ताम्। एत्वे श्रेयात् श्रेयास्ताम्। ९. अश्रासीत्। १०. अश्रास्यत्। शेषं सर्वं 'याति' (१०४९) वत्।

**(१०५४) द्रा—कुत्सायां गतौ**। कुत्सितगतिः = पलायनम्, निद्रा च। स्वापे निपूर्वकोऽयम्। (बुरी चाल चलना, भागना, उड़ जाना, सोना)। अक.। अनिट्। परस्मै.।

१. **प्र.** द्राति-निद्राति-प्रणिद्राति द्रातः द्रान्ति। २. **प्र.** दद्रौ दद्रतुः दद्रुः। **म.** दद्रिथ-दद्राथ दद्रथुः दद्र। **उ.** दद्रौ दद्रिव दद्रिम। ३. द्राता। ४. द्रास्यति। ५. द्रातु-द्रातात्। ६. अद्रात्। ७. द्रायात् द्रायाताम्। ८. द्रयात् द्रायास्ताम्। एत्वे द्रेयात्। ९. अद्रासीत्। १०. अद्रास्यत्। इत्यादि 'याति' (१०४९) वत्।

**कृत्सु**—द्रायकः-यिका, द्रापकः-पिका, दिद्रासकः-सिका, दाद्रायकः-यिका, निद्रा, निद्रालुः[५]-तन्द्रालुः, तन्द्रा[६], द्राणम्[७]-द्राणः-द्राणवान्, प्रणिदाता[८]।

**(१०५५) प्सा—भक्षणे**। (खाना)। सक.। अनि.। परस्मै.।

१ प्साति प्सातः प्सान्ति। २ **प्र.** पप्सौ पप्सतुः पप्सुः। **म.** पप्सिथ-पप्साथ पप्सथुः पप्स। **उ.** पप्सौ पप्सिव पप्सिम। ३ प्साता। ४ प्सास्यति। ५ प्सातु प्सातात् ६ अप्सात्। ७ प्सायात् प्सायाताम्। ८ प्सायात् प्सायास्ताम् एत्वे प्सेयात्। ९ अप्सासीत्। १० अप्सास्यत् शेषं सर्वं 'याति' (१०४९) वत्।

**(१०५६) पा—रक्षणे**। (रक्षा करना, पालन करना)। सक.। अनि.। परस्मै.।

१. पाति पातः पान्ति। **म.** पासि पाथः पाथ। **उ.** पामि पावः पामः। २. **प्र.** पपौ पपतुः पपुः। **म.** पपिथ-पपाथ पपथुः पप। **उ.** पपौ पपिव पपिम। ३. पाता पातारौ पातारः। ४. पास्यति। ५. **प्र.** पातु-पातात् पाताम् पान्तु। **म.** पाहि-पातात् पातम् पात। **उ.** पानि पाव

१ 'घञर्थे कविधानं ग्लास्नापा—' (वा. ३-३-५८) इति क प्रत्ययः। प्रस्नात्यस्मिन् इति प्रस्नः = शैलेषु विद्यमानो जलाशयः। 'आतोलोप इटि च' (६-४-६४) इत्याकारलोपः।

२ बाहुलकात् करणेऽनीयर् प्रत्ययः स्नान्त्यनेनेति स्नानीयम् = स्नानसाधनभूतश्चूर्णविशेषः।

३ 'आतो मिनिन् क्वनिप्—' (३-२-७४) इति क्वनिप्।

४ औणादिके उण् प्रत्यये रूपम्। स्नायुः = शरीरस्थमज्जादिविशेषः।

५ तच्छीलादिषु कर्तृषु 'स्पृहिगृहि—' (३-२-१५८) इत्यनेन निपूर्वकात् तत्पूर्वकाच्चास्मात् आलुच्प्रत्यय। तदो दकारस्य प्रत्ययसन्नियोगेन नकारादेशोऽपि सूत्रकारनिर्देशात् भवति।

६ 'घञर्थे कविधानम्' (वा. ३-३-५८) इति कप्रत्यये, स्पृहिगृहिपतिदयनिद्रातन्द्रा—' (३-२-१५८) इति सूत्रे निर्देशात् तदो दकारस्य नकारे, अदन्तत्वेन टापि रूपमेवम्।

७ 'संयोगादेरातो धातोर्यण्वतः' (८-२-४३) इति निष्ठानत्वे णत्वे च रूपमेवम्।

८ तृचि, प्रपूर्वकात् नेः, 'नेर्गद—' (८-४-१७) इति णत्वम्।

पाम । ६. **प्र.** अपात् अपाताम् अपु:-अपान् । **म.** अपाः अपातम् अपात । **उ.** अपाम् अपाव अपाम । ७. **प्र.** पायात् पायाताम् पायुः । **म.** पायाः पायातम् पायात । **उ.** पायाम् पायाव पायाम । ८. **प्र.** पायात् पायास्ताम् पायासुः । **म.** पायाः पायास्तम् पायास्त । **उ.** पायासम् पायास्व पायास्म । ९. **प्र.** अपासीत् अपासिष्टाम् अपासिषुः । **म.** अपासीः अपासिष्टम् अपासिष्ट । **उ.** अपासिषम् अपासिष्व अपासिष्म । १०. अपास्यत् ।

**कर्मणि**—पायते । **णिचि**—पालयति-ते । **पातेर्णौलुग् वक्तव्यः** । इति णिचि लुगागमः । **कृत्सु**—पायकः[१]-यिका, पालकः[२]-गोपालकः[३]-लिका, पिपासकः-सिका, पापायकः[४]-यिका, पाता-पात्री, पालयिता-त्री, पिपासिता-त्री, पापायिता-त्री, पान्[५]-न्ती-ती, पालयन्-न्ती, पिपासन्-न्ती, पास्यन्-न्ती-ती, पालयिष्यन्-न्ती-ती, पिपासिष्यन्-न्ती-ती, व्यतिपानः[६], पालयमानः, व्यतिपिपासमानः,[७] पापायमानः, व्यतिपास्यमानः, पालयिष्यमाणः, नपात्[८]-नपातौ-नपातः, तनूनपात्, अपान्नपात्, अपोनपात्, पातम्-तः-तवान्, पालितः, पिपासितः, पापायितः-तवान्, विश्वपाः[९]-सुपाः, गोपः[१०]-नृपः, अधिपः[११], पायः[१२] गोपायी[१३], नगरपायी[१४], पाणिवान्[१५], पालः, गोपालः[१६], पिपासुः, पापाः, पातव्यम्, पालयितव्यम्, पिपासितव्यम्, पापायितव्यम्, प्रपाणीयम्,[१७] प्रपानीयम्, पालनीयम्, पिपासनीयम्,

१ 'आतो युक् चिण्कृतोः' (७-३-३३) इति युगागमः । एवं घञादिष्वपि ज्ञेयम् ।
२ 'पातेर्लुग् वक्तव्यः' (वा. ७-३-३७) इति ण्यन्ते सर्वत्र लुगागमः ।
३ गवां पालकः गोपालकः । 'नित्यं क्रीडाजीविकयोः' (२-२-१७) इत्यनेन जीविकार्थकस्य नित्यसमासः ।
४ 'गापोर्ग्रहणे इण् पिबत्योर्ग्रहणम्' (वा. २-४-७७) इति वचनादस्य लुग्विकरणत्वेन, 'लुग्विकरणालुग्विकरणयोरलुग्विकरणस्य' (परिभाषा ९१) इत्यनेन च घुमास्थागापा—' (६-४-६६) इत्यादिषु नास्य ग्रहणम् । तेन ईत्वादिकमस्य नेति ज्ञेयम् । तेन यङन्ताण्ण्वुलि द्वित्वे, अभ्यासह्रस्वे च, 'दीर्घोऽकितः' (७-४-८३) इत्यभ्यासस्य दीर्घः । एवं ण्यन्ते सर्वत्र ज्ञेयम् ।
५ शत्रन्तात् स्त्रियाम् 'आच्छीनद्योर्नुम्' (७-१-८०) इति नुम्विकल्पः ।
६ 'कर्तरि कर्मव्यतिहारे' (१-३-१४) इति कर्मव्यतिहारे शानच् ।
७ सन्नन्तात् 'पूर्ववत्सनः' (१-३-६२) इत्यनेन कर्मव्यतिहारे शानच् ।
८ न पातीति नपात् = नप्ता । 'नभ्राणनपात्—' (६-३-७५) इत्यत्र निपातनात् नञ् तत्पुरुषे नञः प्रकृतिभावः, क्विपि तुगागमश्च । तन्वा न पातीति तनूनपात् = अग्निरिन्द्रश्च । अपोनपात्, अपांनपात् इत्यपि देवता विशेषवाचके पदे । सर्वेऽप्येते क्विबन्ताः ।
९ विश्वं पातीति विश्वपाः । 'अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते' (३-२-७५) इति विचि रूपमेवम् । एवं सुपाः इत्यत्रापि ।
१० 'आतोऽनुपसर्गे कः' (३-२-३) इति कर्मण्युपपदे कर्तरि क प्रत्ययः । एवं नृपः इत्यादिष्वपि ज्ञेयम् ।
११ 'आतश्चोपसर्गे' (३-१-१३६) इति कर्तरि कप्रत्ययः ।
१२ 'श्याऽऽद्व्यध—' (३-१-१४१) इत्यादिना आदन्तलक्षणे कर्तरि णप्रत्यये रूपम् ।
१३ 'व्रते' (३-२-८०) इति णिनिप्रत्यये युगागमः ।
१४ 'सुप्यजातौ णिनिस्ताच्छील्ये' (३-२-७८) इति णिनि प्रत्ययः ।
१५ 'छान्दसोऽपि क्वसुरत्र धातो भवतीति 'विभाषा पूर्वाह्णापराह्णाभ्याम्' (४-३-२४) इत्यत्र भाष्ये 'पपुष आगतं पपिवद्रूप्यम्—' इति प्रयोगाज्ज्ञायते । तेन क्वसु प्रत्यये, लिड्वद् भावेन द्विर्वचने, 'आतोलोप इटि च' (६-४-६४) इत्याकारलोपे, 'वस्वेकाजाद्घसाम्' (७-२-६७) इतीडागमे च रूपम् ।
१६ गाः पालयतीति गोपालः । कर्मण्यण् (३-२-१) इति ण्यन्तादस्मादण् प्रत्ययः ।
१७ 'शेषे विभाषा—' (८-४-१८) इत्यनेन णत्वविकल्पः ।

पापायनीयम्, पेयम्, पाल्यम्, पिपास्यम्, पापाय्यम्, ईषत्पानः[१]-दुष्पानः-सुपानः। पायमानः, पालयमानः, पिपास्यमानः, पापय्यमानः, पायः, पालः, पिपासुः, पापायः, पातुम्, पालयितुम्, पिपासितुम्, पापायितुम्, पातिः, सम्पातिः,[२] पालना, पिपासा, पापाया, पात्वा, पालयित्वा, पिपासित्वा, पापायित्वा, प्रपाय, प्रणाल्य, प्रपिपास्य, प्रपापाय्यः, पतिः[३], पिता[४], पापम्[५], पुमान्[६], पाथः[७]।

(१०५७) **रा—दाने**। (देना, मिल जाना)। सकर्म.। अनिट्। पर.। राति रातः रान्ति। इत्यादि। 'याति' (१०४९) वत्।

**कृत्सु**—रायकः-यिका, रापकः-पिका, रिरासकः-सिका, रारायकः-यिका, राता-त्री, रापयिता-त्री, रान्-न्ती, रापयन्-न्ती, रिरासन्-न्ती, रास्यन्-न्ती-ती, रापयिष्यन्-न्ती-ती, व्यतिराणः, रापयमाणः, व्यतिरास्यमाणः, रापयिष्यमाणः, राः रौ राः, राप्-रापौ-रापा, रातम्-तः, रापितः, सुरः[८]-सुरा, धीरः[९], द्रव्यरः, गोरः, मुद्रः, शुभंरः, रातव्यम्, रापयितव्यम्, राणीयम्, रापणीयम्, रेयम्, राप्यम्, ईषद्राणः[१०]-दुराणः-सुराणः, रायमाणः, रापयमाणः, रायः, रापः, रातुम्, रापयितुम्, रतिः, प्ररा, रापणा, राणम्, रापणम्, रात्वा, रापयित्वा, प्रराय, प्रराप्य, राका,[११] रात्रिः[१२], रात्री, राः[१३]-रायौ-रायः।

(१०५८) **ला—आदाने**। (लेना, ग्रहण कनरा)। सक.। अनि.। परस्मै.।

१. लाति लातः लान्ति। २. **प्र.** ललौ ललतुः ललुः। **म.** ललिथ-ललाथ ललथुः लल। **उ.** ललौ ललिव ललिम। ३. लाता। ४. लास्यति। ५. लातु-लातात्। ६. अलात्। ७.

१ 'आतो युच्' (३-३-१२८) इति ईषदाद्युपपदेषु खलपवादो युच्।
२ 'क्तिच् क्तौ च संज्ञायाम्' (३-३-१७४) इति संज्ञायां क्तिच्। पुंल्लिङ्गोऽयम्। सम्पातिः = जटायुभ्राता।
३ 'पातेर्डतिः' (द.उ. १-२७) इति डति प्रत्ययः पातीति पतिः = नायकः, रक्षकश्च।
४ औणादिके (द.उ. २-३) तृन् प्रत्यये, तृच् प्रत्यये वा रूपम्। तत्र (द.उ. २-३) निपातनात् धातोरित्वम्। पातीति पिता = जनकः।
५ 'पानीविषिभ्यः पः' (द.उ. ७-२) इति पप्रत्यये रूपम्। दुर्जनैः पायते इति पापम् = कायवाङ् मनोदुश्चरितम्।
६ 'पातेर्डुम्सुन्' (द.उ. ९-४८) इति डुम्सुन् प्रत्यये, टिलोपे च रूपम्। पातीति पुमान् = नरः।
७ 'पातेर्बले जुट् च' उदके थुट् च, अन्ने च' (द.उ. ९-५३-५) इति बलेऽभिधेये जुडागमे पाजः = अग्निः, जलेऽभिधेये अन्ने च, थुडागमे पाथः = जलमन्नं च।
८ 'आतश्चोपसर्गे' (३-१-१३६) इति कर्तरि क प्रत्ययः। 'आतो लोप इटि च' (६-४-६४) इत्याकारलोपः। स्त्रियामदन्तलक्षणे टापि। सुरा = मद्य विशेषः।
९ धियं राति = आदत्ते इति धीरः। कर्मणि उपपदे, 'आतोऽनुपसर्गे कः' (३-२-३) इति कर्तरि कप्रत्ययः। एवमेव मुद्रः इत्यादिष्वपि ज्ञेयम्।
१० 'आतो युच्' (३-३-१२८) इति ईषदाद्युपदेषु खलपवादो युच्। णत्वम्।
११ 'कृतधारा–' (द.उ. ३-१८) इति कन् प्रत्ययः। राका = पूर्णिमारूपकालविशेषः।
१२ 'राशदिभ्यां त्रिप्' (द.उ. १-३६) इति त्रिप् प्रत्ययः। रात्री इति तु 'कृदिकारादक्तिनः' (ग.सू. ४-१-४५) इति ङीषि बोध्यम्।
१३ 'राते डैः' (द.उ. २-१०) इति डैप्रत्ययः। एजन्तेऽपि, कृन्मेजन्तः' (१-१-३९) इति नास्याव्ययत्वम्। 'च्विरव्ययम्' (द.उ. २-१३) इत्यनेन सूत्रेण च्विप्रत्ययान्तस्यैवाव्ययत्वमुणादिषु, नान्यस्येति नियमेन ज्ञापनात्।

लायात् लायाताम्। ८. लायात् लायास्ताम् लायासुः। ९. अलासीत्। १०. अलास्यत्। **णिचि**—विलालयति-ते-विलापयति-ते।

**कृत्सु**—लायकः[१]-यिका, लापकः[२]-पिका, लालकः[३] (घृतस्य) लिलासकः-सिका, लालायकः-यिका, लाता-त्री, लापयिता-त्री, विलालयिता-(घृतम्), लालः, लायः, लापः, कृपालुः[४], स्पर्धालुः,[५] व्यालः[६], छायालः, बहुलम्[७]। शेषं 'राति' (१०५६) वत्।

**(१०५९) दाप्—लवणे**। (काटना, कतराना)। सक.। अनि.। परस्मै.। दाति दातः दान्ति। इत्यादि 'याति' (१०४९) वत्।

**(१०६०) ख्या—प्रकथने**। (प्रख्यात करना, कहना, व्याख्यान करना)। **अभि**—चमकना, **आ**—कीर्तिमान होना, **वि**—प्रख्यात होना, **सु**—पसन्द होना, **प्रत्या**—खण्डन करना, **सम्**—गिनना, **समा**—संज्ञा देना, नाम रखना। सकर्म.। अनिट्। परस्मै.।

१. ख्याति ख्यातः ख्यान्ति। २. **प्र.** चख्यौ चख्यतुः चख्युः। **म.** चख्यिथ-चख्याथ चख्यथुः चख्य। **उ.** चख्यौ चख्यिव चख्यिम। ३. ख्याता ख्यातारौ ख्यातारः। ४. ख्यास्यति। ५. **प्र.** ख्यातु-ख्यातात् ख्याताम् ख्यान्तु। **म.** ख्याहि-ख्यातात् ख्यातम् ख्यात। **उ.** ख्यानि ख्याव ख्याम। ६. **प्र.** अख्यात् अख्याताम् अख्युः-अख्यान्। **म.** आख्यः अख्यातम् अख्यात। **उ.** अख्याम् अख्याव अख्याम। ७. **प्र.** ख्यायात् ख्यायाताम् ख्यायुः। **म.** ख्यायाः ख्यायातम् ख्यायात। **उ.** ख्यायाम् ख्यायाव ख्यायाम। ८. **प्र.** ख्येयात् ख्येयास्ताम् ख्येयासुः। **म.** ख्येयाः ख्येयास्तम् ख्येयास्त। **उ.** ख्येयासम् ख्येयास्व ख्येयास्म। पक्षे—ख्यायात् ख्यायास्ताम् इत्यादि। ९. **प्र.** अख्यत् अख्यताम् अख्यन्। **म.** अख्यः अख्यतम् अख्यत। **उ.** अख्यम् अख्याव अख्याम। १० **प्र.** अख्यास्यत् अख्यास्यताम् अख्यास्यन्। **म.** अख्यास्यः अख्यास्यतम् अख्यास्त। **उ.** अख्यास्यम् अख्यास्याव अख्यास्याम।

**कर्मणि**—ख्यायते। **णिचि**—ख्यापयति-ते। **सनि**—चिख्यासति। **यङि**—चाख्यायते। **यङ्लुकि**—चाख्यति-चाख्याति। **कृत्सु**—ख्यातुम्, ख्यानम्, ख्यात्वा, प्रख्याय, ख्यातव्यम्, ख्यानीयम्, ख्येयम्, ख्यातः, ख्यान्, ख्याती-ख्यान्ती।

**(१०६१) प्रा—पूरणे**। (भरना, तृप्त होना)। सक.। अनि.। परस्मै.। प्राति प्रातः

१ 'आतो युक् चिण्कृतोः' (७-३-३३) इति आकारान्तस्याङ्गस्य युगागमे रूपमेवम्। एवं घञ्णमुल्प्रभृतिष्वपि ज्ञेयम्।
२ 'अर्तिह्री–' (७-३-३६) इति पुगागमे रूपमेवम्। ण्यन्ते सर्वत्र एवमेव ऊह्यम्।
३ 'लीलोर्नुग्लुकावन्यतरस्यां स्नेहविपातने' (७-३-३९) इति णौ परतः स्नेहविपातनेऽर्थे पक्षे लुगागमे रूपमेवम्। स्नेहवितानादन्यत्र पुगेव। स्नेहविपातनं नाम घनीभूतस्य स्नेहपदार्थस्य विलापनम्।
४ 'कृपां लातीति वृत्तौ मितद्र्वादित्वात्' (वा. ३-२-१८०) डप्रत्यये रूपमेवम्। कृपालुः इति तु कृपधातोरालुचि निष्पन्नं शब्दान्तरम्।
५ 'स गान्दिनीभूरथ गोकुलैधितं स्पर्धालुधीगाधितकार्यबाधिनम्।' (धा.का. १-२)
६ 'आतश्चोपसर्गे' (३-१-१३६) इति वि आङ् इति उपसर्गयोः उपपदयोः कप्रत्ययः।
७ बहूनर्थान् लातीति बहुलम्। 'आतश्चोपसर्गे कः' (३-२-३) इति कर्मणि उपपदे कप्रत्ययः। अणोऽपवादः।

प्रान्ति। इत्यादि 'याति' (१०४९) वत्। प्रायः[१], प्रान्[२]-प्रान्तौ-प्रान्तः, प्राणः[३]-प्राणवान्।

**(१०६२) मा—माने**। (नापना, तौलना)। अनुमान से सिद्ध करना, अनु—उपमा देना, **परि**—नापना, तौलना, **प्र**—प्रमाण देना। अकर्म.। सेट्। परस्मै.।

१. माति मातः मन्ति। २. **प्र.** ममौ ममतुः ममुः। **म.** ममिथ-ममाथ ममथुः मम। **उ.** ममौ ममिव ममिम। ३. माता मातारौ मातारः। ४. मास्यति। ५. **प्र.** मातु-मातात् माताम् मान्तु। **म.** माहि-मातात् मातम् मात। **उ.** मानि माव माम। ६. **प्र.** अमात् अमाताम् अमान्-अमुः। **म.** अमाः अमातम् अमात। **उ.** अमाम् अमाव अमाम। ७. मायात्-मायातात् मायाताम् मायुः। ८. **प्र.** मेयात् मेयास्ताम् मेयासुः। **म.** मेयाः मेयास्तम् मेयास्त। **उ.** मेयासम् मेयास्व मेयास्म। पक्षे— मायात् मायास्ताम् इत्यादि। ९. **प्र.** अमासीत् अमासिष्टाम् अमासिषुः। **म.** अमासीः अमासिष्टम् अमासिष्ट। **उ.** अमासिषम् अमासिष्व अमासिष्म। १०. अमास्यत्।

**कृत्सु**—मायकः[४]-यिका, मापकः[५]-पिका, मित्सकः[६]-त्सिका, मेमीयकः[७]-यिका, माता-त्री, मापयिता-त्री, मित्सिता-त्री, मेमीयिता-त्री, निर्मान्[८]-न्ती-ती, मापयिष्यन्-न्ती-ती, मित्सिष्यन्-न्ती-ती, मापयमानः, मापयिष्यमाणः, प्रमी-प्रम्यौ-प्रम्यः, मितम्[९]-तः-तवान्, मापितः, मित्सितः, मेमीयितः-तवान्, प्रमः[१०], मायः[११], माया-मायावी-मायिकः-मायी, धान्यमायः[१२], मापः, मित्सुः, मेम्यः[१३], मातव्यम्, मापयितव्यम्, प्रनिमानीयम्[१४]-प्रणिमानीयम्, मापनीयम्,

१ 'श्याऽऽद्व्यध–' (३-१-१४१) इत्यादिना कर्तरि णप्रत्यये युगागमे रूपमेवम्।

२ शतरि, शपि, 'अदि प्रभृतिभ्यः–' (२-४-७२) इति शपो लुकि, 'पदान्तस्य' (८-४-३७) इति निषेधात् णत्वं नेति ज्ञेयम्।

३ 'संयोगादेरातो धातोर्यण्वतः' (८-२-४३) इति निष्ठानत्वे, णत्वे च रूपम्।

४ ण्वुलि 'आतो युक् चिण्कृतोः' (७-३-३३) इति युगागमः। एवं घञ्णमुलादिष्वपि ज्ञेयम्।

५ ण्यन्ते सर्वत्र 'अर्तिह्रीव्ली–' (७-३-३६) इति आदन्तलक्षणे युगागमे रूपमेवम्।

६ 'सनि मीमाघु–' (७-४-५४) इत्यादिना इस्भावे, 'अत्र लोपोऽभ्यासस्य' (७-४-५८) इत्यभ्यासलोपे 'सः स्यार्धधातुके' (७-४-४९) इति सकारस्य तकारे, 'हलन्ताच्च' (१-२-१०) इति सनः कित्वेन गुणाभावे च रूपमेवम्। एवं सन्नन्ते सर्वत्र ज्ञेयम्।

७ यङन्ते सर्वत्र, 'घुमास्था–' (६-४-६६) इतीकारे, 'गुणो यङ्लुकोः' (७-४-८२) इत्यभ्यासे गुणः।

८ शतरि, अदादित्वेन शपो लुकि, सवर्णदीर्घे, 'आच्छीनद्योर्नुम्' (७-१-८०) इति स्त्रियां नुम्विकल्पे च मिमान्ती-मिर्माती इति रूपद्वयम्।

९ 'द्यतिस्यतिमास्यथाम् इत् ति किति' (७-४-४०) इति क्तप्रत्यये परतः प्रकृतेः इकारः। गुणनिषेधः। एवं क्त्वाक्तिन् प्रभृतिष्वपीकारो बोध्यः।

१० 'आतश्चोपसर्गे' (३-१-१३६) इति कर्तरि कप्रत्ययः। 'आतोलोप इटि च' (६-४-६४) इत्याकारलोपः।

११ 'श्याऽऽद्व्यध–' (३-१-१४१) इत्यादिना कर्तरि आदन्तलक्षणे ण प्रत्ययः। 'आतो युक् चिण् कृतोः' (७-३-३३) इति युगागमः। स्त्रियां टापि माया इति सिद्ध्यति। माया शब्दात् मत्वर्थीये विनिप्रत्यये मायावी इति, व्रीह्यादित्वात् (५-२-११६) इनिन् प्रत्ययोश्च मायी मायिकः इति च रूपाणि सिद्ध्यन्ति।

१२ कर्मण्युपपदे कर्तरि, 'ह्वावामश्च' (३-२-२) इत्यण् प्रत्यये युगागमे च रूपमेवम्। 'आतोऽनुपसर्गे कः'। (३-२-३) इति प्राप्तस्य कप्रत्ययस्यापवादः।

१३ यङन्तात् पचाद्यचि (३-१-१३४), 'यङोऽचि च' (२-४-७४) इति यङो लुकि ईकारे, उत्तरखण्डे यणि च रूपमेवम्।

१४ 'शेषे विभाषा–' (८-४-१८) इति नेर्णत्वविकल्पः। 'नेर्गदनदपतदघुमा–' (८-४-१७) इत्यत्र नास्य धातोर्ग्रहणम्, अपि तु माङ्मेङोरेव ग्रहणम् इति बहवः।

मित्सनीयम्, मेमीयनीयम्, मेयम्[१], पाय्यम्[२] माप्यम्, मित्स्यम्, मीयमानः[३] माप्यमानः, मित्स्यमानः, मेमीय्यमानः, मायः, आमः[४] मापः, मित्सः, मेमीयः, मातुम्, मापयितुम्, मित्सितुम्, प्रमा[५]-उपमा-अनुमा, प्रमितिः, मापना, मित्सा, मेमीया, प्रमाणम्, मापनम्, मित्सनम्, मित्वा, मापयित्वा, प्रमाय[६], प्रमाप्य, मेरुः[७], मात्रा[८], मासः[९]।

**(१०६३) वच—परिभाषणे**। (बोलना, कहना)। द्विक.। अनि.। पर.।

१. **प्र.** वक्ति वक्तः अन्ति प्रयोगो न प्रयुज्यते। **म.** वक्षि वक्थः वक्थ। **उ.** वच्मि वच्वः वच्मः। २. **प्र.** उवाच ऊचतुः ऊचुः। **म.** उवचिथ-उवक्थ ऊचथुः ऊच। **उ.** उवाच-उवच ऊचिव ऊचिम। ३. वक्ता वक्तारौ वक्तारः। ४. वक्ष्यति। ५. **प्र.** वक्तु वक्तात् वक्ताम् वचन्तु। **म.** वग्धि-वक्तात् वक्तम् वक्त। **उ.** वचानि वचाव वचाम। ६. **प्र.** अवक्-ग् अवक्ताम् अवचन्। **म.** अवक्-ग् अवक्तम् अवक्त। **उ.** अवचम् अवच्व अवच्म। ७. **प्र.** वच्यात् वच्याताम् वच्युः। **म.** वच्याः वच्यातम् वच्यात। **उ.** वच्याम् वच्याव वच्याम। ८. **प्र.** उच्यात् उच्यास्ताम् उच्यासुः। **म.** उच्याः उच्यास्तम् उच्यास्त। **उ.** उच्यासम् उच्यास्व उच्यास्म। ९. **प्र.** अवोचत् अवोचताम् अवोचन्। **म.** अवोचः अवोचतम् अवोचत। **उ.** अवोचम् अवोचाव अवोचाम। १०. **प्र.** अवक्ष्यत् अवक्ष्यताम् अवक्ष्यन् इत्यादि।

**कर्मणि**—उच्यते। २. ऊचे। ९. अवाचि। **णिचि**—वाचयति-ते। **सनि**—विवक्षिति। **यङि**—वावच्यते। **यङ्लुकि**—वावचीति-वावक्ति। **कृत्सु**—वाचकः-चिका, णिचि—वाचकः-चिका, विवक्षकः-क्षिका, वावचकः-चिका, वक्ता-वक्त्री, वाचयिता-त्री, विवक्षिता-त्री, वावचिता-त्री, वचन्-न्ती, वाचयन्-न्ती, विवक्षन्-न्ती, वक्ष्यन्-न्ती-ती, वाचयिष्यन्-न्ती-ती, विवक्षिष्यन्-न्ती-ती। वाच्यमानः, वाचयिष्यमानः, विवक्षमाणः, विवक्षिष्यमाणः। उक्तः, उक्तिः, वक्तुम्, वक्तव्यम्, उक्त्वा, प्रोच्य, वाच्यम्, पदसमुदाये वाक्यम्, निरुक्तिः, वक्ष्यमाणः, वाक्, विवक्षा, विवक्षुः, विवक्षितः, निर्वचनम्, अनुवाकः, प्रत्युक्तः, प्रतिवाक्यम्।

---

१ यति परे 'ईद् यति' (६-४-६५) इति ईकारे गुणे च रूपमेवम्।

२ माने = परिमाणेऽभिधेये 'पाय्यसान्नाय्यनिकाय्यधाय्यमानहविर्निवाससामिधेनीषु' (३-१-१२९) इत्यनेन ण्यदायादेशौ आदेः पकारश्च निपात्यते।

३ यगन्ताच्छानशि ईकारे मीयमानः इति सिद्ध्यति।

४ आः समन्तात् मीयतेऽत्रेति आमः = अपक्कपदार्थः अधिकरणे 'घञर्थे कविधानम्—' (वा. ३-३-५८) इति कप्रत्यये आकारलोपे रूपमेवम्।

५ स्त्रियां भावादौ, 'आतश्चोपसर्गे' (३-३-१०६) इति क्तिन्नपवादोऽङ् प्रत्ययः। 'आतो लोप इटि च' (६-४-६४) इत्याकारलोपे अदन्तत्वेन टापि प्रमा, उपमा इत्यादिकं सिद्ध्यति। प्रमितिः, उपमितिः, अनुमितिः इत्यादयस्तु बाहुलकात् क्तिनि सिद्ध्यतीति ज्ञेयम्।

६ समासे क्त्वाप्रत्ययस्य ल्यबादेशे 'न ल्यपि' (६-४-६९) इत्याकालनिषेधः।

७ 'मापो रुरी च' (द.उ. १-५७) इति रुप्रत्यये ईकारे चान्तादेशे गुणे रूपमेवम्। मतिसूर्येन्दुभ्यामिति मेरुः = सुरगिरिः।

८ 'हयामा—' (द.उ. ८-८४) इति त्रन् प्रत्यये रूपमेमव्। मीयतेऽनेनेति मात्रा = अल्पपरिमाणम्।

९ मातीत्यर्थे 'मासश्च' (द.उ. ९-२७) इति सप्रत्ययो निपात्यते। मासः = त्रिंशद्दिनपरिच्छिन्नः कालविशेषः।

**(१०६४) विद**—ज्ञाने। (समझना, जानना, दुःखी होना, ध्यान करना, मनन करना)। (संविते)। सक.। सेट्। परस्मै.।

१. **प्र.** वेद विदतुः विदुः। **म.** वेत्थ विद्थुः विदुः। **उ.** वेद [illegible] विद्म। **'विदो लटो वा'** वेत्तेर्लटः परस्मैपदानां णलादयों वा स्युः। इति णलोऽभावपक्षे– **प्र.** वेत्ति वित्तः विदन्ति। **प्र.** वेत्सि वित्थः वित्थ। **उ.** वेद्मि विद्वः विद्मः। २ विदाञ्चकार विदाञ्चक्रतुः विदाञ्चक्रुः। इत्यादि **'उषविदजागृभ्योऽन्यतरस्याम्'** इति वा आम्। **इत्यामभावपक्षे**– २. **प्र.** विवेद विविदतुः विविदुः। **म.** विवेदिथ विविदथुः विविद। **उ.** विवेद विविदिव विविदिम। ३. **प्र.** वेदिता वेदितारौ वेदितारः। **म.** वेदितासि वेतास्थः वेदितास्थ। **उ.** वेदितास्मि वेदितास्वः वेदितास्मः। ४. वेदिष्यति। ५. **प्र.** विदाङ्करोतु विदाङ्कुरुताम् विदाङ्कुर्वन्तु इत्यादि। पक्षे– **प्र.** वेत्तु- वित्तात् वित्ताम् विदन्तु। **म.** विद्धि-वित्तात् वित्तम् वित्त। **उ.** वेदानि वेदाव वेदाम। ६. **प्र.** अवेत्-द् अवित्ताम् अविदुः। **म.** अवेः-अवेत् अवित्तम् अवित्त। **उ.** अवेदम् अविद्व अविद्म। ७. **प्र.** विद्यात् विद्याताम् विद्युः **म.** विद्याः विद्यातम् विद्यात। **उ.** विद्याम् विद्याव विद्याम। ८. **प्र.** विद्यात् विद्यास्ताम् विद्यासुः। **म.** विद्याः विद्यास्तम् विद्यास्त। **उ.** विद्यासम् विद्यास्व विद्यास्म। ९. **प्र.** अवेदीत् अवेदिष्टाम् अवेदिषुः। **म.** अवेदीः अवेदिष्टम् अवेदिष्ट। **उ.** अवेदिषम् अवेदिष्व अवेदिष्म। १०. **प्र.** अवेदिष्यत् अवेदिष्यताम् अवेदिष्यन्। **म.** अवेदिष्यः अवेदिष्यतम् अवेदिष्यत। **उ.** अवेदिष्यम् अवेदिष्याव अवेदिष्याम।

**सम्पूर्वः आत्मनेपदे**—१. **प्र.** संवित्ते संविदाते संविदते-संविद्रते। **म.** संवित्से। **उ.** संविदे। २. **प्र.** संविविदे संविविदाते संविदिरे। **म.** संविदिषे। **उ.** संविविदे संविदिवहे संविदिमहे। ३. संवेदिता। ४. संवेदिष्यते। ५. **प्र.** संवित्ताम् संविदाताम् संविदताम्- संविद्रताम्। **म.** संवित्स्व। **उ.** संविदै। ६. **प्र.** समवित्त समविदाताम् संविदत-समविद्रत। **म.** समवित्थाः। **उ.** समविदि। ७. **प्र.** संविदित संविदीयाताम् संविदीरन्। ८. संवेदिषीष्ट। ९. समवेदिष्ट। १०. समवेदिष्यत।

**कर्मणि**—विद्यते। २. विविदे। ९. अवेदि। **णिचि**—वेदयति। **सनि**—विविदिषति। **यङि**—वेविद्यते। **यङ्लुकि**—वेवेत्ति-वेविदीति। **कृत्सु**—आवेदकः-दिका, **णिचि**—वेदकः-दिका, विविदिषकः[1]-षिका, वेविदकः- दिका, वेदित्ता-त्री, वेदयिता-त्री, विविदिषिका-त्री, वेविदिता-त्री, विदन्[2]-न्ती, विद्वान्[3]-विदुषी, निवेदयन्[4]-न्ती, वेदयः[5], विविदिषन्-न्ती, वेदिष्यन्-न्ती-ती, वेदयिष्यन्-न्ती, संविदानः[6], वेदयमानः, संविविदिषमाणः, वेविद्यमानः,

१ सनि 'रलो व्युपधात्–' (१-२-२६) इत्यादिना कित्वविकल्पे प्राप्ते 'रुदविद–' (१-२-८) इति नित्यं कित्वं भवति। तेन सन्नन्ते सर्वत्र एकमेव रूपम्।

२ शतरि 'विदेः शतुर्वसुः' (७-१-३६) इति सूत्रात् शतुः वस्वादेशविकल्पः। वस्वादेशपक्षे विद्वान इति तदभावे विदन् इति च रूपम्। नित्यं वसुरित्यादेश इति केषाञ्चिन् मतम्। काशिकादिषु तु वैकल्पिकमिति स्पष्टम्।

३ 'विद्वान् उपनिष्ट च तान् स्वकाले यतिर्वशिष्ठो यमिनां वरिष्ठः।' (भ.का. १-१५)।

४ स्पष्टं बहिः स्थितिवतेऽपि निवेदयन्तः–' (शि.व. ५-९७)

५ ण्यन्तात् 'अनुपसर्गाल्लिम्पविन्द–' (३-१-१३८) इति शप्रत्यये शपि गुणायादेशौ। वेदयतीति वेदयः।

६ 'विदिप्रच्छिस्वरतीनाम्' (वा. १-३-२९) इति संपूर्वकात् विदेः आत्मनेपदं भवति।

संवेदिष्यमाणः, वेदयिष्यमाणः, मन्त्रवित्,[१] ब्रह्मवित्, शास्त्रवित्, वेदवित्, अनिर्विदा, विदितम्-तः-तवान्, वेदितः, विविदिषितः, वेविदितः-तवान्, विदः, विन्दुः,[२] विदुरः,[३] सार्ववेद्यः, चतुर्वेदः, विविदिवान्[४]-विविद्वान्-चतुर्वेदी, पराशयवेदी, धनुर्वेदी, वैदिकः, वेदः, वैदनः,[५] आवेदितव्यम्, वेदयितव्यम्, आवेदनीयम्, **णिचि**—वेदनीयम्, वेद्यम्, त्रैविद्यः, वेद्यमानः, वेदयमानः, विविदिषमाणः, वेविद्यमानः, वेदः,[६] विविदिषः, वेविदः, वेदितुम्, वेदयितुम्, वित्तिः,[७] विदा, विद्या,[८] वेदना,[९] विविद्विषा, वेदनम्, विदित्वा,[१०] वेदयित्वा, आवेद्य, प्रवेद्य, वेदिः,[११] विदथः,[१२] नवेदाः,[१३] निश्ववेदाः,[१४] ब्राह्मणवेदं[१५] (भोजयति)।

**(१०६५) अस—भुवि**। (होना, रहना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.।

१. **प्र.** अस्ति स्तः सन्ति। **म.** असि स्थः स्थ। **उ.** अस्मि स्वः स्मः। २. **प्र.** बभूव बभूवतुः बभूव इत्यादि। ३. भविता। ४. भविष्यति। ५. **प्र.** अस्तु-स्तात् स्ताम् सन्तु। **म.** एधि-स्तात् स्तम् स्त। **उ.** असानि असाव असाम। ६. **प्र.** आसीत् आस्ताम् आसन्। **म.** आसीः आस्तम् आस्त। **उ.** आसम् आस्व आस्म। ७. **प्र.** स्यात् स्याताम् स्युः। **म.** स्याः स्यातम् स्यात। ३. स्याम् स्याव स्याम। ८. **प्र.** भूयात् भूयास्ताम् भूयासुः। इत्यादि। ९. **प्र.** अभूत् अभूताम् अभूवन् इत्यादि। १०. अभविष्यत्। भावे, णिचि, सनि, यङि, यङ्लुकि च 'भवति' (१) वत्।

---

१ 'सत्सूद्विषद्रुहयुजविद—' (३-२-६१) इति क्विप् प्रत्यये रूपमेवम्।

२ 'विन्दुरिच्छुः' (३-२-१६९) इति तच्छीलादिषु कर्तृषु उप्रत्यये, निपातनात् नुमागमे च रूपमेवम्। वेदनशीलो विन्दुः। पवर्गीयस्तु 'विदि अवयवे' इति धातोः 'मृगय्वादिभ्यः' (द.उ. १-१२१) इति कौ बोध्यः इति बृहच्छन्देन्दुशेखरे।

३ 'विदिभिदिच्छिदेः कुरच्' (३-२-१६२) इति कुरच् प्रत्यये रूपमेवम्। 'ज्ञाता तु विदुरो विन्दुः' इत्यमरः। अत्र सूत्रे ज्ञानार्थ एव न्यासे गृहीतः।

४ क्वसु प्रत्यये, 'विभाषा गमहनविदविशाम्' (७-२-६८) इति विकल्पेन इडागमो भवति। विविदिवान् - विविद्वान् इति रूपद्वयम्।

५ विदन्नेव वैदनः, 'प्रज्ञादिभ्यश्च' (५-४-३८) इति स्वार्थेऽण्प्रत्ययः। एतेनापि विदेः शतुर्वसुः' (७-१-३६) इति वसुविकल्पः सिद्धः। अन्यथा अणः प्रकृतिभूतस्य विदन् इति शत्रन्तस्यासिद्धेरित्यवधेयम्।

६ वेत्ति अनेनेति 'हलश्च' (३-३-१२१) इति करणे घञ्।

७ 'मन्त्रे वृषेषपचमनविद—' (३-३-९६) इति स्त्रियां भावे क्तिन् प्रत्ययः।

८ त्रिदन्त्यनया इति विद्या, 'संज्ञायां समजनिषदनिपतमनविद—' (३-३-९९) इति स्त्रियां भावे क्यप्प्रत्ययः।

९ 'घटिवन्दिविदिभ्यश्च' (वा. ३-३-१०७) इति स्त्रियां युच् प्रत्ययः।

१० क्त्वायां 'रलो व्युपधात्—' (१-२-२६) इति वैकल्पिककित्वे प्राप्ते 'रुदविद—' (१-२-८) इत्यादिना नित्यं कित्वम्। तेन एकमेव रूपम् इति ज्ञेयम्।

११ 'हृपिशिरुहिवृतिविदि—' (द.उ. १-४७) इति इन् प्रत्ययः वेत्ति विन्दति विद्यते वा वेदिः = त्रेताग्न्यधिष्ठानम्।

१२ 'रुदिविदिभ्यां कित्' (द.उ. ६-४१) इति अथ प्रत्यये रूपमेवम्। वेत्तीति विदथः = ज्ञानी।

१३ 'नभ्राण्नपान्नवेदा—' (६-३-७१) इति निपातनात् न वेत्तीति नवेदाः इति असुन् प्रत्ययान्तोऽयम्।

१४ 'विदिभुजिभ्यां विश्वे' (द.उ. ९-९८) इति विश्वशब्द उपपदे असिप्रत्ययः। विश्ववेदाः = हुताशनः।

१५ 'कर्मणि दृशिविदोः साकल्ये' (३-४-२९) इति कर्मण्युपपदे साकल्यविशिष्टेऽर्थे धातोः णमुल्प्रत्ययो भवति। ब्राह्मणवेदं भोजयति इत्यस्य यं यं ब्राह्मणं = ब्राह्मणत्वेन जानाति लभते विचारयति वा तान् सर्वान् भोजयतीत्यर्थः।

**कृत्सु**—भावकः-विका, **णिचि**—भावकः-विका, वुभूषकः-षिका, विभाषयिषकः-षिका, बोभूयकः-यिका, भविता, भावयिता, बुभूषिता, विभावयिषिता-बोभूयिता-त्री, सन्-सती, भावयन्,बुभूषन्,विभावयिषन्-न्ती,भविष्यन्,भावयिष्यन्,बुभूषिष्यन्,बिभावयिष्यन्-न्ती-ती, व्यतिषाणः, भावयमानः, भावयिष्यमाणः, बोभूयमानः, बोभूयिष्यमाणः, भूः, भुवौ-भुवः। भूतः-तम्-तवान्, भावितः, बुभूषितः, भवः, भावः, बुभूषुः, विभावयिषुः, बोभूयः, भवितव्यम्, भावयितव्यम्, बुभूषितव्यम्, भवनीयम्-प्रभवनीयम्, प्रभावनीयम्, बुभूषणीयम्, भव्यम्, अवश्यभाव्यम्,भूयमानः,भाव्यमानः,बुबूष्यमाणः,भूतिः,भावना,बुभूषा,विभावयिषा,बोभूया। इत्यादि 'भवति' (१) वत्।

**(१०६६) मृजू—शुद्धौ**। (धोना, स्वच्छ करना, **अप-प्र**—सफा करना, झारना, बुहारना, स्वच्छ करना, पवित्र करना।) सकर्म.। वेट्। परस्मै.।

१. **प्र.** मार्ष्टि[1] मृष्टः मृजन्ति मार्जन्ति[2]। **म.** मार्क्षि मृष्ठः मृष्ठ। **उ.** मार्ज्मि मृज्वः मृज्मः। २. **प्र.** ममार्ज ममार्जतुः ममृजतुः ममार्जुः-ममृजुः। **म.** ममार्जिथ-ममार्ष्ठ ममार्जथुः-ममृजथुः ममार्ज-ममृज। **उ.** ममार्ज ममृजिव-ममार्जिव-ममृज्व ममृजिम-ममर्जिम-ममृज्म। ३. **प्र.** मार्जिता-मार्ष्टा। ४. मार्जिष्यति-मार्क्ष्यति। ५. **प्र.** मार्ष्टु-मृष्टात् मृष्टाम् मृजन्तु-मार्जन्तु। **म.** मृड्ढि-मृष्टात् मृष्टम् मृष्ट। **उ.** मार्जानि मार्जाव मार्जाम। ६. **प्र.** अमार्ट्-ड् अमृष्टाम् अमृजन्-अमार्जन्। **म.** अमार्ट्-ड् अमृष्टम् अमृष्ट। **उ.** अमार्जम् अमृज्व अमृज्म। ७. **प्र.** मृज्यात् मृज्याताम् मृज्युः। **म.** मृज्याः मृज्यातम् मृज्यात। **उ.** मृज्याम् मृज्याव मृज्याम। ८. **प्र.** मृज्यात् मृज्यास्ताम् मृज्यासुः। **म.** मृज्याः मृज्यास्तम् मृज्यास्त। **उ.** मृज्यासम् मृज्यास्व मृज्यास्म। ९. **प्र.** अमार्क्षीत् अमार्ष्टाम् अमार्क्षुः। **म.** अमार्क्षीः अमार्ष्टम्, अमार्ष्ट। **उ.** अमार्क्षम् अमार्क्ष्व अमार्क्ष्म। **पक्षे**—अमार्जीत् अमार्जिष्टाम् अमार्जिषुः। इत्यादि। १०. **प्र.** अमार्क्ष्यत् अमार्क्ष्यताम अमार्क्ष्यन् इत्यादि। **पक्षे**—अमार्जिष्यत् अमार्जिष्यताम् अमार्जिष्यन् इत्यादि।

**कर्मणि**—मृज्यते। २. ममृजे। ९. अमार्जि। **णिचि**—मार्जयति-ते। ९. अभीमृजत-अममर्जत्। **सनि**—मिमृक्षति-मिमार्जिषति। **यङि**—मरीमृज्यते। **यङ्लुकि**—मरीमार्जीति-मरीमार्ष्टि। **कृत्सु**—मार्जकः-जिका, **णिचि**—मार्जकः-र्जिका, मिमर्जिषकः-षिका, मिमृक्षकः-क्षिका, मरिमृजकः-जिका, मार्जिता[3]-मार्ष्टा-मार्ष्टी, मार्जयिता-त्री, मिमार्जिषिता-मिमृक्षिता-त्री, मरीमृजिता-त्री, मार्जन्-मृजन्-ती, मार्जयन्-न्ती, मिमार्जिषन्-मिमृक्षन्-न्ती, मार्जिष्यन्-मार्क्ष्यन्-न्ती-ती, व्यतिमार्जनः[4], व्यतिमृजानः, मार्जयमानः, मृक्षमाणः, मरीमृज्यमानः, मर्मृज्यमानासः, कंसपरिमृट्[5]-ड् कंसपरिमृजौ-कंसपरिपरिमृजः, मृष्टम्-मृष्टः-मृष्टवान्, मार्जितः,

१ 'मृजे र्वृद्धिः' मृजेरिको वृद्धिः स्यात् धातुप्रत्यये परे।

२ 'क्ङित्यजादौ वेष्यते' इति वृद्धिर्विकल्पः।

३ तृजादिष्वप्यूदित्वादिड् विकल्पः। इडभावपक्षे, इट्पक्षेऽपि लघूपघलक्षणं गुणं वाधित्वा, 'मृजेर्वृद्धिः' (७-२-११४) इति वृद्धिः। एवमेव तव्यदादिष्वपि ज्ञेयम्।

४ 'कर्तरि कर्मव्यतीहारे' (१-३-१४) इति शानच्। वृद्धि विकल्पः।

५ कंसं परिमार्ष्टि इत्यर्थे 'क्विप् च' (३-२-७६) इति कर्मणि उपपदे क्विप्। पदान्तनिमित्तके षत्वे जश्त्वे चर्त्वविकल्पे च रूपमेवम्।

परिमार्जः, तुन्दपरिमृजः, तुन्दपरिमार्जः, परिमाक्षणुः, मार्जनः, मार्जः, मिमार्जिषुः-मिमृक्षुः, मरीमार्जः-मृजः, मार्जितव्यम्, मार्ष्टव्यम्, मार्जयितव्यम्, मार्जनीयम्, मृज्यः[१]-मार्ग्यः, अवश्यमार्ज्यः, मार्ज्यम्, मृज्यमानः, मार्ज्यमानः, मार्गः अपामार्गः,[२] मार्जितुम्-मार्ष्टुम्, मार्जयितुम्, मृजा, मृष्टिः मार्जना, परिमार्जनम्, सम्मार्जनी,[३] मार्जित्वा-मृष्ट्वा, मार्जयित्वा, विमृज्य, विमार्ज्य, मर्जूः,[४] मार्जारः,[५] मार्जालीयः[६] ।

**(१०६७) रुधिर्—अश्रुविमोचने।** (रोना, उपा—रो-रोकर शान्त करना, दूसरे के लिए रोना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | रोदिति | रुदितः | रुदन्ति | प्र. |
| | रोदिषि | रुदिथः | रुदिथ | म. |
| | रोदिमि | रुदिवः | रुदिमः | उ. |
| लिट् | रुरोद | रुरुदतुः | रुरुदुः | प्र. |
| | रुरोदिथ | रुरुदथुः | रुरुद | म. |
| | रुरोद | रुरुदिव | रुरुदिम | उ. |
| लुट् | रोदिता | रोदितारौ | रोदितारः | प्र. |
| | रोदितासि | रोदितास्थः | रोदितास्थ | म. |
| | रोदितास्मि | रोदितास्वः | रोदितास्मः | उ. |
| लृट् | रोदिष्यति | रोदिष्यतः | रोदिष्यन्ति | प्र. |
| | रोदिष्यसि | रोदिष्यथः | रोदिष्यथ | म. |
| | रोदिष्यामि | रोदिष्यावः | रोदिष्यामः | उ. |
| लोट् | रोदितु-रुदितात् | रुदिताम् | रुदन्तु | प्र. |
| | रोदिहि-रुदितात् | रुदितम् | रुदित | म. |
| | रोदानि | रोदाव | रोदाम | उ. |
| लङ् | अरोदीत्-अरोदत् | अरुदिताम् | अरुदन् | प्र. |
| | अरोदीः-अरोदः | अरुदितम् | अरुदित | म. |
| | अरोदम् | अरुदिव | अरुदिम | उ. |
| वि. लि. | रुद्यात् | रुद्याताम् | रुद्युः | प्र. |
| | रुद्याः | रुद्यातम् | रुद्यात | म. |
| | रुद्याम् | रुद्याव | रुद्याम | उ. |

१ 'मृजेर्विभाषा' (३-१-११३) इति विभाषा क्यप्। पक्षे ण्यति निष्ठयामनिट्त्वात् 'चजोः कु घिण्ण्यतोः' (७-३-५२) इति कुत्वे वृद्धौ च मार्ग्यः इति रूपम्।

२ 'हलश्च' (३-३-१२१) इति संज्ञायां घञि, कुत्वे, उपसर्गस्य घञ्यमनुष्ये बहुलम्' (६-३-१२२) इति 'अप' इत्युपसर्गान्त्यकारस्य दीर्घे रूपमेवम्' अपमृज्यतेऽनेन व्याध्यादिभिरिति अपामार्गः = औषधविशेषः ।

३ सम्मार्जनी इति करणल्युडन्तात् स्त्रियां टित्वेन ङीपि रूपम्। सम्मार्जनी = शोधनसाधनी ।

४ 'मृजेर्गुणश्च' (द.उ. १-१६५) इत्यूप्रत्यये, वचनादेव वृद्ध्यपवादे गुणे च रूपम्। मर्जूः = शुद्धिः ।

५ 'कञ्जिमृजिभ्यां चित्' (द.उ. ८-६७) इत्यारन् प्रत्यये रूपसिद्धिः । मार्ष्टि भवनमिति मार्जारः = बिडालः ।

६ 'स्थाचतिमृजेः आलवालजालीयरः' (द.उ. १०-१) इत्यनेन यथासंख्यमालीयर् प्रत्यये रूपमेवम्। मार्ष्टि अशुभं रक्षांसि चेति मार्जालीयः = अग्निः ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आ. लि. | रुद्यात् | रुद्यास्ताम् | रुद्यासुः | प्र. |
| | रुद्याः | रुद्यास्तम् | रुद्यास्त | म. |
| | रुद्यासम् | रुद्यास्व | रुद्यास्म | उ. |
| लुङ् | अरुदत् | अरुदताम् | अरुदन् | प्र. |
| | अरुदः | अरुदतम् | अरुदत | म. |
| | अरुदम् | अरुदाव | अरुदाम | उ. |

**पक्षे—प्र.** अरोदीत् अरोदिष्टाम् अरोदिषुः। **म.** अरोदीः अरोदिष्टम् अरोदिष्ट। **उ.** अरोदिषम् अरोदिष्व अरोदिष्म।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृङ् | अरोदिष्यत् | अरोदिष्यताम् | अरोदिष्यन् | प्र. |
| | अरोदिष्यः | अरोदिष्यतम् | अरोदिष्यत | म. |
| | अरोदिष्यम् | अरोदिष्याव | अरोदिष्याम | उ. |

**भावे**—रुद्यते। २. रुरुदे। ९. अरोदि। **णिचि**—रोदयति-ते। **सनि**—रुरुदिषति। **यङि**—रोरुद्यते। **यङ्लुकि**—रोरुदीति रोरोत्ति। **कृत्सु**—रोदकः-दिका, **णिचि**—रोदकः-दिका, रुरुदिषकः-षिका, रोरुदकः-दिका, रोदिता-त्री, रोदयिता-त्री, रुरुदिषिता-त्री, रोरुदिता-त्री, रोदनीयम्, रोदनम्, रोदः, रोदी, रुदितः, रुप्तिः, रोदितव्यम्, रोदितुम्, रुदित्वा, विरुद्य, रोद्यम्, रुदन्, रोदिष्यन्, रुरुदिषा, रुरुदिषन्, रोरुद्यमानः, रोरुदा, रुद्रः, रुद्राणी, रुद्रा, रोदसी, शेषं भौवादिकतोहति वत्।

**(१०६८) ञिष्वप् (स्वप्)** —शये। (सोना, निद्रा लेना)।अकर्म.। अनिट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | स्वपिति | स्वपितः | स्वपन्ति | प्र. |
| | स्वपिषि | स्वपिथः | स्वपिथ | म. |
| | स्वपिमि | स्वपिव | स्वपिम | उ. |
| लिट् | सुष्वाप | सुषुपतुः | सुषुपुः | प्र. |
| | सुवपिथ-सुष्वप्थ | सुषुपथुः | सुष्वप | म. |
| | सुष्वाप-सुष्वप | सुषुपिव | सुषुपिम | उ. |
| लुट् | स्वप्ता | स्वप्तारौ | स्वप्तारः | प्र. |
| | स्वप्तासि | स्वप्तास्थः | स्वप्तास्थ | म. |
| | स्वप्तास्मि | स्वप्तास्वः | स्वप्तास्मः | उ. |
| लृट् | स्वप्स्यति | स्वप्स्यतः | स्वप्स्यन्ति | प्र. |
| | स्वप्स्यसि | स्वप्स्यथः | स्वप्स्यथ | म. |
| | स्वप्स्यामि | स्वप्स्यावः | स्वप्स्यामः | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लोट् | स्वपितु-स्वपतात् | स्वपिताम् | स्वपिन्तु | प्र. |
| | स्वपिहि-स्वपतात् | स्वपितम् | स्वपित | म. |
| | स्वपानि | स्वपाव | स्वपाम | उ. |
| लङ् | अस्वपत्-अस्वपीत् | अस्वपिताम् | अस्वपन् | प्र. |
| | अस्वपीः-अस्वपः | अस्वपितम् | अस्वपित | म. |
| | अस्वपम् | अस्वपिव | अस्वपिम | उ. |
| वि. लि. | स्वप्यात् | स्वप्याताम् | स्वप्युः | प्र. |
| | स्वप्याः | स्वप्यातम् | स्वप्यात | म. |
| | स्वप्याम् | स्वप्याव | स्वप्याम | उ. |
| आ. लि. | सुप्यात् | सुप्यास्ताम् | सुप्यासुः | प्र. |
| | सुप्याः | सुप्यास्तम् | सुप्यास्त | म. |
| | सुप्यासम् | सुप्यास्व | सुप्यास्म | उ. |
| लुङ् | अस्वाप्सीत्[१] | अस्वाप्ताम् | अस्वाप्सुः | प्र. |
| | अस्वाप्सीः | अस्वाप्तम् | अस्वाप्त | म. |
| | अस्वाप्सम् | अस्वाप्स्व | अस्वाप्स्म | उ. |
| लृङ् | अस्वाप्स्यत् | अस्वपस्यताम् | अस्वपस्यन् | प्र. |
| | अस्वपस्यः | अस्वपस्यतम् | अस्वपस्यत | म. |
| | अस्वपस्यम् | अस्वपस्याव | अस्वपस्याम | उ. |

**भावे**—सुप्यते। **णिचि**—स्वापयति-ते। **सनि**—सुषुप्सति[२]। **यङि**—सोषुप्यते[३]। **यङ्लुकि**—सास्वपीति-सास्वप्ति। **कृत्सु**—स्वप्तव्यम्, स्वपनीयम्, स्वाप्यम्, स्वपनम्, स्वापः, स्वापी, स्वप्ता, स्वप्तम्, स्वाप्यम्, स्वप्स्यन्-न्ती, स्वप्तुम्, सुप्त्वा, निषुप्य, स्वापकः-पिका, णिचि—स्वापकः-पिका, सुषुप्सकः[४]-प्सिका, सोषुपकः[५]-पिका, स्वाप्त्री, स्वापयिता-त्री, सोषुपिता-त्री, सुप्तः[६], सुप्त्वा-सुप्तिः, स्वप्नः,[७] स्वप्नक्,[८] सुषुप्तः[९]-विषुप्तः-निषुप्तः-दुःषुप्तः, सुषुप्सुः-सुस्वापयिषुः[१०]। इत्यादि भौवादिकवपतिवत्।

१ 'वदव्रजे–' (७-२-३) ति वृद्धिः। अनिट्कत्वान्न सिज् लोपः।
२ 'रुदविदमुषे–' (१-२-२८) ति कित्वम्।
३ 'स्वपिस्यमिव्येञां यङि' (६-१-१९) इति सम्प्रसारणादिः।
४ 'रुदविदमुषग्रहिस्वपिप्रच्छः संश्च' (१-२-८) इति सनः कित्वम्। तेन 'वचि स्वपियजादीनां किति' (६-१-१५) इति सम्प्रसारणम्। पूर्वरूपादिकम्। ततो द्विर्वचनम्। उत्तरखण्डे 'आदेशप्रत्यययोः' (८-३-५९) इति षत्वम्।
५ 'स्वपिस्यमिव्येञां यङि' (६-१-१९) इति यङन्ते सम्प्रसारणम्। पूर्ववत् अभ्यासकार्याणि।
६ 'ञीतः क्तः' (३-२-१८७) इति कर्तरि भावे च वर्तमाने क्तप्रत्ययः। निष्ठायाः कित्वात् सम्प्रसारणम्' एवं क्त्वाक्तिन्यक् प्रभृतिष्वपि बोध्यम्।
७ 'स्वपो नन्' (३-३-९१) इति भावे नन् प्रत्ययः।
८ 'सपि तृषोर्नजिङ्' (३-२-१७२) इति ताच्छीलिको नजिङि 'नज्' इत्येवावशिष्यते। जकारस्य पदान्तत्वप्रयुक्तः ककारः।
९ 'सुविनिर्दुर्भ्यः सुपिसूतिसमाः' (८-३-८८) इति षत्वम्। सूत्रे 'सुपि' इति कृतसम्प्रसारणनिर्देशः। तेन सम्प्रसारणयोग्यस्थलेषु यत्र 'सुप्' इति श्रवणं तत्र सर्वत्राऽपि षत्वं भवतीति बोध्यम्।
१० ण्यन्तात् सनि उप्रत्यये रूपमेतत्। अभ्यासस्य 'द्युतिस्वाप्योः–' (७-४-६७) इति सम्प्रसारणम्। स्तौतिण्योरेव षणि–' (८-३-६१) इत्युत्तरखण्डे षत्वम्।

**( १०६९ ) श्वस—प्राणने**। (सांस लेना, श्वासोच्छवास करना, जीना, जीते रहना)। **आ**—समाधान करना, आश्वासन करना, **उत्**—विवसित होना, प्रफुल्लित होना, खिलना, **निर्**—मरना, दम छोड़ना, सांस भरना, **वि**—विश्वास करना, भरोसा रखना। अक.। सेट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | श्वसिति | श्वसितः | श्वसन्ति | प्र. |
| | श्वसिषि | श्वसिथः | श्वसिथ | म. |
| | श्वसिमि | श्वसिवः | श्वसिमः | उ. |
| लिट् | शश्वास | शश्वसतुः | शश्वसुः | प्र. |
| | शश्वसिथ | शश्वसथुः | शश्वस | म. |
| | शश्वस-शश्वास | शश्वसिव | शश्वसिम | उ. |
| लुट् | श्वसिता | श्वसितारौ | श्वसितारः इत्यादि | |
| लृट् | श्वसिष्यति | श्वसिष्यतः | श्वसिष्यन्ति | प्र. |
| लोट् | श्वसितु-श्वसितात् | श्वसिताम् | श्वसन्तु | प्र. |
| | श्वसिहि-श्वसितात् | श्वसितम् | श्वसित | म. |
| | श्वसानि | श्वसाव | श्वसाम | उ. |
| लङ् | अश्वसत्-अश्वसीत् | अस्वसिताम् | अश्वसन् | प्र. |
| | अश्वसः-अश्वसीः | अश्वसितम् | अश्वसित | म. |
| | अश्वसम् | अश्वसिव | अश्वसिम | उ. |
| वि. लि. | श्वस्यात् | श्वस्याताम् | श्वस्युः | प्र. |
| | श्वस्याः | श्वस्यतम् | श्वस्यात | म. |
| | श्वस्याम् | श्वस्याव | श्वस्याम | उ. |
| आ. लि. | श्वस्यात् | श्वस्यास्ताम् | श्वस्यासुः | प्र. |
| | श्वस्याः | श्वस्यास्तम् | श्वस्यास्त | म. |
| | श्वस्यासम् | श्वस्यास्व | श्वस्यास्म | उ. |
| लुङ् | अश्वासीत् | अश्वासिष्टाम् | अश्वासिषुः | प्र. |
| | अश्वासीः | अश्वासिष्टम् | अश्वासिष्ट | म. |
| | अश्वासिषम् | अश्वासिष्व | अश्वासिष्म | उ. |
| लृङ् | अश्वसिष्यत् | अश्वसिष्यताम् | अश्वसिष्यन् इत्यादि। | |

**भावे**—श्वस्यते। २. शश्वसे। ९. अश्वसि। **णिचि**—श्वासयति। **सनि**—शिश्वसिषति। **यङि**—शाश्वस्यते। **यङ्लुकि**—शाश्वसीति-शाश्वस्ति। **कृत्सु**—श्वसनीयम्, श्वसनम्, श्वसनः, श्वासः, श्वासवः, श्वासी, श्वसिता-त्री, श्वसितः, श्वस्तिः, श्वसितव्यम्, श्वसितुम्, श्वसित्वा, विश्वास्य, श्वास्यम्, श्वसन्, श्वसिष्यन्, विश्वासितः, प्रश्वासः, निःश्वासः।

**( १०७० ) अन्**—प्राणने। (जीना, श्वासोच्छ्वास करना, समर्थ होना)। प्रायेण प्रपूर्वकोऽयम्। अकर्म.। सेट्। परस्मै.।

१. प्र. अनिति अनितः अनन्ति। म. अनिषि। उ. अनिमि। २. प्र. आन आनतुः आनुः। म. आनिथ आनथुः आन। उ. आन आनिव आनिम। ३. अनिता। ४. आनिष्यति। ५. प्र. अनितु-अनितात् अनिताम् अनन्तु। म. अनिहि-अनितात् अनितम् अनित। उ. अनानि अनाव अनाम। ६. प्र. आनत्-आनीत् आनिताम् आनत्। म. आनः-आनीः आनितम् आनित। उ. आनम् आनिव आनिम। ७. प्र. अन्यात् अन्याताम् अन्युः। म. अन्याः अन्यातम् अन्यात। उ. अन्याम् अन्याव अन्याम। ८. प्र. अन्यात् अन्यास्ताम् अन्यासुः। म. अन्याः अन्यास्तम् अन्यास्त। उ. अन्यासम् अन्यास्व अन्यास्म। ९. प्र. आनीत् आनिष्टाम् आनिषुः। म. आनीः आनिष्टम् आनिष्ट। उ. आनिषम् आनिष्व आनिष्म। १०. आनिष्यत्।

**भावे**—अन्यते। २ आने। ९ आनि। **णिचि**—प्राणयति। **सनि**—प्राणिणिषति। **कृत्सु**—आनकः-निका, **णिचि**—आनकः-निका, आनेनिषकः-षिका, अनिता-त्री, आनयिता-त्री, अनन्-ती, प्राणन्, आनयन्-न्ती, प्राणयन्, अनिनिषन्-न्ती, प्राणिष्यन्-न्ती-ती, प्राणयिष्यन्-न्ती-ती, प्राणयमानः, प्राणयिष्यमाणः, हे प्राण-प्राणौ-प्राणः, प्राणितम्-तः-तवान्, प्राणः, अनिनिषुः, प्राणिणिषुः, आनिनयिषुः, प्राणितव्यम्, प्राणयितव्यम्, प्राण्यम्, अन्यमानः, आन्यमानः, प्राणः, अपानः, व्यानः, उदानः, समानः, अनिनिषः, अनुतम्, आनयितुम्, आन्तिः, प्राणना, प्राणनम्, आननम्, अनित्वा, आनयित्वा, प्राण्य।

**( १०७१ ) जक्ष—भक्षहसनयोः।** (खाना, हंसना।) **भक्षणे सकर्मकाः।** अन्यात्राकर्मकः। परस्मै.।

१. प्र. जक्षिति जक्षितः जक्षति। म. जक्षिषि जक्षथः जक्षथ। उ. जक्षिमि जक्षिव जक्षिमः। २. जजक्ष जजक्षतुः। ३. जक्षिता। ४. जक्षिष्यति। ५. प्र. जक्षितु-जक्षितात् जक्षिताम् जक्षतु। म. जक्षिहि-जक्षितात्। उ. जक्षाणि। ६. प्र. अजक्षीत्-अजक्षत् अजक्षिताम् अजक्षुः। म. अजक्षीः-अजक्षः अजक्षितम् अजक्षित। उ. अजक्षम् अजक्षिव अजक्षिम। ७. प्र. जक्ष्यात् जक्ष्याताम्। ८. प्र. जक्ष्यात् जक्ष्यास्ताम्। ९. अजक्षीत् अजक्षिष्टाम्। १०. अजक्षिष्यत्।

**कर्मणि**—जक्ष्यते। २. जजक्ष। ९. अजक्षि। **णिचि**—जक्षयति। **सनि**—जिजक्षिषति। **यङ्**—जाजक्ष्यते। **यङ्लुकि**—जाजक्षीति-जाजष्टि। **कृत्सु**—जक्षकः-क्षिका, जिजक्षिषक-क्षिका, जाजक्षकः-क्षिका, जक्षिता-त्री, जक्षयिता-त्री, जक्षत्-ती, जक्षन्ति-जक्षति- (कुलानि), जक्षयन्-न्ती, जक्षिष्यन्-न्ती-ती, जक्षयिष्यन्-न्ती-ती, जट्-ड्-जक्षौ जक्षः, जक्षितम्-तः, जक्षः, जक्षितव्यम्, जक्षयितव्यम्, जक्षणीयम्, जक्ष्यम्, जक्ष्यमाणः, जक्षितुम्, जक्षयितुम्, जक्षा, जक्षणा, जक्षणम्, जक्षित्वा, प्रजक्ष्य।

**( १०७२ ) जागृ—निद्राक्षये।** (जागना, नींद न लेना)। अक.। सेट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | जागर्ति | जागृतः | जाग्रति | प्र. |
| | जागर्षि | जागृथः | जागृथ | म. |
| | जागर्मि | जागृवः | जागृमः | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लिट् | जजागार | जजागरतुः | जजागरुः | प्र. |
| | जजागरिथ | जजागरथुः | जजागर | म. |
| | जजागार-जजागर | जजागरिव | जजागरिम | उ. |

जागराञ्चकार जागराञ्चक्रतुः। जागरामास। जागराम्बभूव।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुट् | जागरिता | जागरितारौ | जागरितारः इत्यादि | |
| लृट् | जागरिष्यति | जागरिष्यतः | जागरिष्यन्ति इत्यादि। | |
| लोट् | जागर्तु-जागृतात् | जागृताम् | जाग्रतु | प्र. |
| | जागृहि-जागृतात् | जागृतम् | जागृत | म. |
| | जागराणि | जागराव | जागराम | उ. |
| लङ् | अजागः[१] | अजागृताम् | अजागरुः | प्र. |
| | अजागः | अजागृतम् | अजागृत | म. |
| | अजागरम् | अजागृव | अजागृम | उ. |
| वि. लि. | जागृयात् | जागृयाताम् | जागृयुः | प्र. |
| | जागृयाः | जागृयातम् | जागृयात | म. |
| | जागृयाम् | जाजृयाव | जागृयाम | उ. |
| आ. लि. | जागर्यात् | जागर्यास्ताम् | जागर्यासुः | प्र. |
| | जागर्याः | जागर्यास्तम् | जागर्यास्त | म. |
| | जगर्यासम् | जागर्यास्व | जागर्यास्म | उ. |
| लुङ् | अजागरीत् | अजागरिष्टाम् | अजागरिषुः | प्र. |
| | अजागरीः | अजागरिष्टम् | अजागरिष्ट | म. |
| | अजागरिषम् | अजागरिष्व | अजागरिष्म | उ. |
| लृङ् | अजागरिष्यत् | अजागरिष्यताम् | अजागरिष्यन् इत्यादि। | |

**कर्मणि**—जागर्यते। ९. अजागारि। **णिचि**—जागरयति। **सनि**—जिजागरिषति। अनेकाचत्वान्न यङ्लुकौ। **कृत्सु**—जागरकः[२]-रिका, **णिचि**—जागरकः[३]-रिका, जिजागरिषकः[४]-षिका, जागरिता[५]-त्री, जागरयिता-त्री, जिजागरिषिता-त्री, जाग्रत्-त्री, जाग्रत्-ती,[६] जागरयन्-न्ती,[७] जिजागरिषन्-न्ती, जागिरष्यन्-न्ती-ती, जागरयिष्यन्-न्ती-ती, जागः

१ हल्ङ्याभ्य इति अपृक्तस्य तकारस्य लोपः।

२ 'जाग्रोऽविचिण्णल्ङित्सु' (७-३-८५) इति वृद्ध्यपवादो गुणः। एवं घञन्ते णमुलन्ते च गुण एव।

३ वृद्ध्यपवादे 'जाग्रोवि–' (७-३-८५) इति गुणे कृते, 'अत उपधायाः' (७-२-११६) इति वृद्धिरपि न भवति, गुणविधानसामर्थ्यात्। अतएव चिण्णाल् प्रतिषेधः सार्थकः। एवं ण्यन्ते सर्वत्र ज्ञेयम्।

४ 'इको झल्' (१-२-९) इति सनः कित्वेऽपि 'जाग्रोऽविचिण्–' (७-३-८५) इति प्रतिषेधविषयत्वात् गुणो भवति। एवं सन्नन्ते सर्वत्र ज्ञेयम्।

५ अस्य धातोरुदात्तत्वात् 'आर्धधातुकस्येड् वलादेः' (७-२-३५) इतीडागमः। एवं तव्यदादिष्वपि ज्ञेयम्।

६ शतरि 'अदिप्रभृतिभ्यः शपः' (२-४-७२) इति शपो विकरणप्रत्ययस्य लुका अपहारे, शतुः ङित्वेन गुणाभावे, 'इको यणचि' (६-१-७७) इति यणि, 'नाभ्यस्ताच्छतुः' (७-१-७८) इति नुमभावे च रूपम्। 'जक्षित्यादयः षट्' (६-१-६) इत्यभ्याससंज्ञा भवति।

७ ण्यन्तात् 'अणावकर्मकात् चित्तवत्कर्तृकात्' (१-३-१८) इति नित्यं परस्मैपदमेव।

-जागरौ-जागरः, साधुजागरी,[१] जागरुकः,[२] जजागर्वान्[३]-जजागृवान्, जजाग्राणः,[४] जजागरणः, जिजागरिषुः, जागरितव्यम्, जागरयितव्यम्, जागरणीयम्, जागर्यम्,[५] जागर्यमाणः,[६] जारितुम्, जागरयितुम्, जागरणम्, जागर्या-जागरा, जागरणा, जागरित्वा, जागरयित्वा, सञ्जागर्य, सञ्जागरय्य,[७] जागृविः[८] ।

( १०७३ ) **दरिद्रा—दुर्गतौ** । (दरिद्र होना, दुःखित होना, गरीब होना, निर्धन होना) । अक. । सेट । पर. । आकारान्तोयम् ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | दरिद्राति | दरिद्रितः | दरिद्रति | प्र. |
| | दरिद्रासि | दरिद्रिथः | दरिद्रिथ | म. |
| | दरिद्रामि | दरिद्रिवः | दरिद्रिमः | उ. |
| लिट् | ददरिद्रौ | ददरिद्रतुः | ददरिद्रुः | प्र. |
| | ददरिद्रिथ | ददरिद्रथुः | ददरिद्र | म. |
| | ददरिद्रौ | ददरिद्रिव | ददरिद्रिम | उ. |

पक्षे—दरिद्राञ्चकार । दरिद्राम्बभूव । दरिद्रामास ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुट् | दरिद्रिता | दरिद्रितारौ | दरिद्रितारः | प्र. |
| | दरिद्रितासि | दरिद्रितास्थः | दरिद्रितास्थ | म. |
| | दरिद्रितास्मि | दरिद्रितास्वः | दरिद्रितास्मः | उ. |
| लृट् | दरिद्रिष्यति | दरिद्रिष्यतः | दरिद्रिष्यन्ति | प्र. |
| | दरिद्रिष्यसि | दरिद्रिष्यथः | दरिद्रिष्यथ | म. |
| | दरिद्रिष्यामि | दरिद्रिष्यावः | दरिद्रिष्यामः | उ. |
| लोट् | दरिद्रातु-दरिद्रितात् | दरिद्रिताम् | दरिद्रतु | प्र. |
| | दरिद्रिहि-दरिद्रितात् | दरिद्रितम् | दरिद्रित | |
| | दरिद्राणि | दरिद्राव | दरिद्राम | उ. |
| लङ् | अदरिद्रात् | अदरिद्रिताम् | अदरिद्रुः | प्र. |
| | अदरिद्राः | अदरिद्रितम् | अदरिद्रित | म. |
| | अदरिद्राम् | अदरिद्रिव | अदरिद्रिम | उ. |

१ 'साधुकारिण्युपसंख्यानम्' (वा. ३-२-७८) इति णिनिः गुणः ।
२ 'जागरुकः' (३-२-१६५) इति तच्छीलादिषु कर्तृषु ऊकप्रत्ययः ।
३ छान्दसोऽपि क्वसुः क्वचिद् भाषायामिति पक्षे, अस्माद्धातोः लिडादेशे क्वसुप्रत्यये द्वित्वे, 'नेड् वशि कृति' (७-२-८) इतीण्णिषेधे, 'जाग्रोऽवि—' (७-३-३५) इत्य क्विन एव ग्रहणम् इत्युभ्युपगमे जजागर्वान् इति रूपम् । वकारादि प्रत्यये गुणनिषेधपक्षे जजागृवान् इति रूपम् ।
४ 'लिटः कानज् वा' (३-२-१०६) इति कानच् ।
५ 'ऋहलोर्ण्यत्' (३-१-१२४) इति ण्यति गुणे रूपम् ।
६ 'जाग्रोऽवि—' (७-३-८५) इति विहितो गुणः 'रिङ् शयग्लिङक्षु' (७-४-२८) इति प्राप्तं रिङादेशं पूर्वविप्रतिषेधाद् बाधते ।
७ ण्यन्ताल्ल्यपि गुणे 'ल्यपि लघुपूर्वात्' (६-४-५६) इति णेरयादेशः ।
८ 'जॄशॄस्तृजागृभ्यः क्विन्' (द.उ. १-२४) इति क्विन् प्रत्ययः । जागर्तीति जागृविः = अग्निः राजा च । अत्र क्विन् इकारः प्रयोगघटकः । न तु उच्चारणार्थः ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| वि. लि. | दरिद्रियात् | दरिद्रियाताम् | दरिद्रियुः | प्र. |
| | दरिद्रियाः | दरिद्रियातम् | दरिद्रियात | म. |
| | दरिद्रियाम् | दरिद्रियाव | दरिद्रियाम | उ. |
| आ. लि. | दरिद्र्यात् | दरिद्र्यास्ताम् | दरिद्र्यासु | प्र. |
| | दरिद्र्याः | दरिद्र्यास्तम् | दरिद्र्यास्त | म. |
| | दरिद्र्यासम् | दरिद्र्यास्व | दरिद्र्यास्म | उ. |
| लुङ् | अदरिद्रीत् | अदरिद्रिष्टाम् | अदरिद्रिषुः | प्र. |
| | अदरिद्रीः | अदरिद्रिष्टम् | अदरिद्रिष्ट | म. |
| | अदरिद्रिषम् | अदरिद्रिष्व | अदरिद्रिष्म | उ. |

पक्षे—**प्र.** अदरिद्रासीत् अदरिद्रासिष्टाम् अदरिद्रासिषुः। **म.** अदरिद्रासीः अदरिद्रासिष्टम् अदरिद्रासिष्ट। **उ.** अदरिद्रासिषम् अदरिद्रासिष्व अदरिद्रासिष्म।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृङ् | अदरिद्रिष्यत् | अदरिद्रिष्यताम् | अदरिद्रिष्यन् | प्र. |
| | अदरिद्रिष्यः | अदरिद्रिष्यतम् | अदरिद्रिष्यत | म. |
| | अदरिद्रिष्यम् | अदरिद्रिष्याव | अदरिद्रिष्याम | उ. |

**भावे**—दरिद्र्यते। ९ **अदरिद्रि**—अदरिद्रयि। **णिचि**—दरिद्रयति-ते। **सनि**—दिदरिद्रासति-दिदरिद्रिषति। अनेकाचत्वान्न लङ्लुकौ। **कृत्सु**—दरिद्रायकः[१]-यिका, दरिद्रकः[२]- द्रिका, दिदरिद्रिषकः[३]-षिका, दिदरिद्रासकः-सिका, दरिद्रिता-त्री, दरिद्रयिता-त्री, दरिद्रत्[४]-दरिद्रतौ-दरिद्रतः, दरिद्रयन्-न्ती, दिदरिद्रिषन्, दिदरिद्रासन्-न्ती, दरिद्रिष्यन्-न्ती-ती, दरिद्रयिष्यन्-न्ती-ती, दरिद्रयमाणाः, दरिद्रयिष्यमाणः, दरिद्[५]-दरिद्रौ-दरिद्रः,[६] दरिद्रितम्-तः, दरिद्रः, ददरिद्रवान्, दिदरिद्रिषुः-दिदरिद्रासुः, दरिद्रितव्यम्, दरिद्रयितव्यम्, दरिद्रणीयम्, दरिद्र्यम्, दरिद्र्यमाणः, दरिद्रः, दरिद्रितुम्, दरिद्रयितुम्, दरिद्रा,[७] दरिद्रणा, दरिद्राणम्,[८] दरिद्रणम्,

---

१ दरिद्राजागृदीधीङाम् एकाचां च चिरेर्जिरेः। अदन्तोर्णोतिवेवीङां स्मर्यते नेत् तथा लङेः। 'इति प्राचीनैः स्मरणात् धात्वाकारस्येत्संज्ञा न। 'दरिद्रातेरार्धधातुके लोपो वाच्यः' (वा. ६-४-११४) इत्यत्र 'आर्धधातुके' इत्यस्य विषयसप्तमीत्वादत्रापि आकारस्य लोपे प्राप्ते, 'न दरिद्रायके लोपो दरिद्रायणे न चेष्यते।' (भाष्येष्टिः ६-४-११४) इति वचनात् ण्वुलि आकारलोपे न। 'आतो युक् चिण्कृतोः' (७-३-३३) इति युगागमे रूपमेवम्।

२ ण्यन्तात् ण्वुलि, णिचोऽप्यार्धधातुकत्वेन प्रत्ययोत्पत्तेः प्रागेव (णिज्विवक्षायामेव) आकालोपे रूपम्। एवं ण्यन्ते सर्वत्र आकारलोपो ज्ञेयः।

३ 'दिदरिद्रिषतीत्येके दिदरिद्रासतीति वा।' (भाष्येष्टिः ६-४-११४) इति वचनात् अस्माद्धातोः सनि इड्विकल्पो भवतीति ज्ञायते। इटपक्षे आकारलोपे, षत्वे च दिदरिद्रिषकः इति, इडभावपक्षे आकारलोपाभावे दिदरिद्रासकः इति च रूपम्। एवमेव सन्नन्ते सर्वत्र रूपद्वयोपपत्तिर्ज्ञेया।

४ शतरि, 'जक्षित्यादयः षट्' (६-१-६) इत्यभ्यस्तसंज्ञायाम्, 'श्नाभ्यस्तयोरातः' (६-४-११२) इत्याकारलोपे, 'नाभ्यस्ताच्छतुः' (७-१-७८) इति नुम्निषेधे रूपमेवम्।

५ क्विपि, रेफस्य संयोगान्तलोपे रूपमेवम्।

६ 'इद् दरिद्रस्य' (६-४-११४) इति निर्देशाद् औत्सर्गिके पचाद्यचि आलोपे च रूपमेवम्।

७ क्तिन् प्रत्ययविवक्षायामेवाकारलोपात् 'गुरोश्च हलः' (३-३-१०३) इत्यकारप्रत्ययः।

८ 'दरिद्राणे न चेष्यते।' इति भाष्येष्ट्या (६-४-११४) ल्युटि आकारलोपो न। अनादेशे सवर्णदीर्घे च णत्वम्।

दरिद्रित्वा, दरिद्रयित्वा, प्रदरिद्र्य, दर्द्रूः[1] ।

(१०७४) **चकासृ—दीप्तौ** । (चमकना, प्रकाशित होना) । अक. । सेट् । परस्मै. ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | चकास्ति | चकास्तः | चकासति | प्र. |
| | चकास्सि | चकास्थः | चकास्थ | म. |
| | चकास्मि | चकास्वः | चकास्मः | उ. |
| लिट् | चकासाञ्चकार | चकासाञ्चक्रतुः | चसाञ्चक्रुः इत्यादि | |

एवं—चकासामास, चकासाम्बभूव इत्यादि ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुट् | चकासिता | चकासितारौ | चकासितारः इत्यादि । | |
| लृट् | चकासिष्यति | चकासिष्यतः | चकासिष्यन्ति इत्यादि । | |
| लोट् | चकास्तु-तात् | चकास्ताम् | चकासतुः | प्र. |
| | चकाद्धि-चकाधि | चकास्तम् | चकास्त | म. |
| | चकासानि | चकासाव | चकासाम | उ. |
| लङ् | अचकात् | अचकास्ताम् | अचकासुः | प्र. |
| | अचकाः-अचकात् | अचकास्तम् | अचकास्त | म. |
| | अचकासम् | अचकास्व | अचकास्म | उ. |
| वि. लि. | चकास्यात् | चकास्याताम् | चकास्युः | प्र. |
| | चकास्याः | चकास्यातम् | चकास्यात | म. |
| | चकास्यम् | चकास्याव | चकास्याम | उ. |
| आ. लि. | चकास्यात् | चकास्यास्ताम् | चकास्यासुः | प्र. |
| | चकास्याः | चकास्यास्तम् | चकास्यास्त | म. |
| | चकास्यासम् | चकास्यास्व | चकास्यास्म | उ. |
| लुङ् | अचकासीत् | अचकासिष्टाम् | अचकासिषुः | प्र. |
| | अचकासीः | अचकासिष्टम् | अचकासिष्ट | म. |
| | अचकासिषम् | अचकासिष्व | अचकासिष्म | उ. |
| लृङ् | अचकासिष्यत् | अचकासिष्यताम् | अचकासिष्यन् | प्र. |

**भावे**—चकास्यते । ९. अचकासि । **णिचि**—चकासयति-ते । **सनि**—चिचकासति । **कृत्सु**—चकासितव्यम्, चकासनीयम्, चकास्यम्, चकासितः, चकासन्-न्ती-ती, चकासितुम्, चकासनम्, चकासित्वा, अभिचकास्य ।

(१०७५) **शासु—अनुशिष्टौ** । (आज्ञा करना, कहना, बोध करना, अधिकार करना, शासन करना, शासक होना) । द्विकर्म. । सेट् । परस्मै. ।

१. **प्र.** शास्ति शिष्टः शासति । **म.** शास्सि शिष्टः शिष्ट । **उ.** शास्मि शिष्वः शिष्मः । २. **प्र.** शशास शसासतुः शशासुः । **म.** शशासिथ शशासथुः शशास । **उ.** शशास शशासिव

१ 'दरिद्रातेर्यालोपश्च' (द.उ. ९-१७३) इत्यनेन ऊप्रत्यये, धात्विकारयोर्लोपे च रूपमेवम् । दरिद्रयते शरीरमनयेति दर्द्रूः = कुष्टविकारः ।

शशासिम। ३. प्र. शासिता शासितारौ शासितारः इत्यादि। ४. प्र. शासिष्यति शासिष्यतः शासिष्यन्ति। इत्यादि। ५. प्र. शास्तु-शिष्टात् शिष्टाम् शासतु। म. शाधि-शिष्टात् शिष्टम् शिष्ट। उ. शासनि शासाव शासाम। ६. प्र. अशात् अशिष्टाम् अशासुः। म. अशाः-त् असिष्टम् अशिष्ट। उ. अशासम् अशिष्व अशिष्म। ७. प्र. शिष्यात् शिष्याताम् शिष्युः। म. शिष्याः शिष्यतम् शिष्यात। उ. शिष्याम् शिष्याव शिष्याम। ८. प्र. शिष्यात् शिष्यास्ताम् शिष्यासुः। म. शिष्याः शिष्यास्तम् शिष्यास्त। उ. शिष्यासम् शिष्यास्व शिष्यास्म। ९. प्र. अशिषत् अशिषताम् अशिषन्। म. अशिषः अशिजतम् अशिषत। उ. अशिषम् अशिषाव अशिषाम। १०. प्र. अशासिष्यत् अशासिष्यताम् अशासिष्यन्। म. अशासिष्यः अशासिष्यतम् अशासिष्यत। उ. अशासिष्यम् अशासिष्याव अशासिष्याम।

**कर्मणि**—शिष्यते। ९. अशासि। **णिचि**—शासयति। **सनि**—शिशासिषति। **यङि**—शेशिष्यते। **यङ्लुकि**—शाशासीति-शाशास्ति। **कृत्सु**—शासितव्यम्, शासनीयम्, शासत्, शासर्ता, शासितुम्, शासनम्, शिष्ट्वा[१]-शासित्वा, अनुशिष्य, शिष्यः,[२] शास्यम्,[३] दुःशासनः[४]-दुश्शासः, आशीः,[५] शिष्टः,[६] शिष्टिः[७]-शास्तिः, शास्ता[८], प्रशास्ता, माणवकं शासत्,[९] मित्रशीः[१०]-आर्यशीः, संशिष्य, शासिष्यन्, कर्माणि-शिष्यमाणः, शासिष्यमाणः। शेषं अदादिक चकस्तिवत्।

**आ**—आशंसने आशीर्वादप्रार्थने। आत्मने.। सक.। प्र. आशास्ते आशासाते आशासते। म. आशास्से आशासाथे आशाध्वे। उ. आशासे आशास्वहे आशास्महे। **कर्मणि**—आशास्यते। ९. आशासि। **णिचि**—आशासयते। आशिशासत। **सनि**—आशशासिषते। **यङि**—आशाशास्यते।

---

१ 'उदितो वा' (७-२-५६) इति क्त्वायामिड्विकल्पः। इडभावपक्षे इत्वमुपधायाः, इट्पक्षे धात्वाकारस्य उपधात्वाभावाद् नेकार इति विशेषः। अतएव षत्वमपीकाराश्रयं न भवति।

२ 'एतिस्तुशास्–' (३-१-१०९) इति क्यप्। 'शास् इदङ्हलोः' (६-४-३४) इत्युपधाया इकारः। 'शासिवासि–' (८-३-६०) इत्यादीना षत्वम्।

३ शास्यम्– इति तु 'शसु हिंसायाम्' इति भौवादिक धातोः 'हन्त्यार्थाश्च' (ग.सू. चुरादिः) इति वचनाण्णिचि, णिजन्ताद् यति ज्ञेयम्।

४ 'भाषायां शासि–' (३-३-१३०) इत्यादिना खलपवादो युच् प्रत्ययः। तस्य वैकल्पिकत्वं प्रक्रियाकौमुद्यागुक्तम्' तेन दुश्शास इति खलपीति केचित्।

५ भावे सम्पदादित्वात् (वा. ३-३-९४) क्विपि 'आशासः क्वावुपधायाः–' (वा. ६-४-३४) इति उपधाया इकारः।

६ 'यस्य विभाषा' (७-२-१५) इति इण्निषेधात् एवमेव रूपं निष्ठायाम्।

७ शिष्टिः इत्यत्र 'तितुत्र–' (७-२-९) इतीण्निषेधः। शस्तिः इति तु अस्मादेव धातोः क्तिच् प्रत्यये यद्वा, धातुनिर्देशे श्तिप्प्रत्ययो वा ज्ञेयम्। णिजन्तात् शासना इति भवति। णिजन्तादेव शास्तिः इत्यपि माधवः।

८ 'तृन्' (३-२-१३५) इति ताच्छीलिकः तृन् प्रत्ययः। प्रशास्ता इत्यपि एवमेव। प्रशास्ता = ऋत्विग्विशेषः।

९ शतरि रूपमेवम्। 'जक्षित्यादयः षट्' (६-१-६) इत्यभ्यस्तसंज्ञायाम्, 'नाभ्यस्ताच्छतुः' (७-१-७८) इति नुमिषेधः।

१० मित्राणि शास्तीति मित्रशीः। आर्यान् शास्तीति आर्यशीः। कर्तरि 'क्विप् च' (३-२-७६) इति क्विप्। अत्रापि उपधाया इकार इति विशेषः।

**(१०७६) दीधीङ्—दीप्तिदेवनयोः।** (चमकना, प्रकाशित होना, खेलना, क्रीडा करना)। दीप्तौ सक्रम.। सेट्। आत्म.।

१. दीधीते दीध्याते दीध्यते। २. दिध्याञ्चक्रे। ३. दीधिता। ४. दीधिष्यते। ५. प्र. दीधीताम् दीध्याताम्। म. दीधीष्व। उ. दीध्यै। ६. अदीधीत। ७. दीधीत दीधीयाताम्। ८. दीधिषीष्ट दिधीषीयास्ताम्। ९. अदीधिष्ट। णिचि- दीधयति।

**कृत्सु**—दीध्यकः-ध्यिका, दिदीधिषकः, दीधिता-त्री, दीधयिता-त्री, दीधयन्-न्ती, दीधयिष्यन्-न्ती-ती, दीध्यानः, दीधयमानः, दीधिष्यमाणः, दीधितम्-तः-तवान्, दीध्यः, दीधितव्यम्, दीधयितव्यम्, दीध्यनीयम्, दीध्यम्, दीध्यमानः, दीधितुम्, दीधयितुम्, दीधितिः, दीध्यनम्, दीधित्वा, दीधयित्वा, आदीध्या।

**(१०७७) वेवीङ्—गतिव्याप्तिप्रजनकान्त्यसनस्वादनेषु।** (जाना, चलना, व्याप्त होना, गर्भवती होना, इच्छा करना, भेजना, खाना, स्वाद लेना।) यथायथं सक्रर्मकोऽकर्मकश्च। सेट्। आत्मने.। वेवीते वेव्याते वेव्यते। वेव्याञ्चक्रे इत्यादि। दीधीङ् (१०७६) वत्।

**(१०७८-७९) षस-षस्ति—स्वप्ने।** (सोना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.। छान्दसः। सस्ति सस्तः ससन्ति। संस्ति संस्तः संसन्ति इत्यादि।

**(१०८०) वश—कान्तौ।** (इच्छा करना, चाहना) सकर्म.। सेट्। परस्मै.।

१. **प्र.** वष्टि उष्टः उशन्ति। **म.** वक्षि उष्टः उष्ट। **उ.** वश्मि उश्वः उश्मः। २. **प्र.** उवाश उशतुः ऊशुः। **म.** उवशिथ ऊशथुः ऊश। **उ.** उवाश-उवश ऊशिव ऊशिम। ३. **प्र.** वशिता वशितारौ वशितारः। **म.** वशितासि वशितास्थः वशितास्थ। **उ.** वशितास्मि वशितास्वः वसिथास्मः। ४. वशिष्यति। ५. **प्र.** वष्टु-उष्टात् उष्टाम् उशन्तु। **म.** उड्ढि-उष्टात् उष्टम् उष्ट। ३. वशानि वशाव वशाम। ६. **प्र.** अवट्-ड् औष्टाम् औशन्। **म.** अवट्-ड् औष्टम् औष्ट। **उ.** अवशम् औश्व औश्म। ७. **प्र.** उश्यात् उश्याताम् उश्युः। **म.** उश्याः उश्यातम् उश्यात। **उ.** उश्याम् उश्याव उश्याम। ८. **प्र.** उश्यात् उश्यास्ताम् उश्यासुः। **म.** उश्या उश्यास्तम् उश्यास्त। **उ.** उश्यासम् उश्यास्व उश्यास्म। ९. **प्र.** अवाशीत् अवाशिष्टाम् अवाशिषुः। **म.** अवाशीः अवाशिष्टम् अवाशिष्ट। **उ.** अवाशिषम् अवाशिष्व अवाशिष्म। **पक्षे**—अवशीत् अवशिष्टाम् अवशिषुः इत्यादि। १०. अवशिष्यत् अवशिष्यताम् अवशिष्यन् इत्यादि।

**कर्मणि**—उश्यते। ९. ऊवाशि। **णिचि**—वाशयति-ते। **सनि**—विवशिषति। **यङि**—वावश्यते। **'न वशः'** इति यङि सम्प्रसारणनिषेधः। **यङ्लुकि**—वावशीति वावष्टि। **कृत्सु**—वाशकः-शिका, णिचि-वाशकः-शिका, विवशिषकः-षिका, वावशकः-शिका, वशिता-त्री, वाशयिता-त्री, उशन्[१]-न्ती, वाशयन्-न्ती, विवशिषन्, वशिष्यन्-न्ती-ती, वाशयिष्यन्-न्ती-ती, वाशयमानः, वाशयिष्यमाणः, वावश्यमानः, उट्-उशौ उशः,

१ शतरि 'ग्रहिज्यावयि–' (६-१-१६) इति किति, ङिति च प्रत्यये, परतः सम्प्रसारणं भवति तेनैवं रूपम्। एवं क्विप् निष्ठाक्तिनादिषु च ज्ञेयम्।

उशितम्-तः-तवान्, वाशितम्-तः, विवशिषतः, वावशितः-तवान्, वशः, वशाः,[१] गोवशा,[२] वशी, वाशनः,[३] विवशिषुः, वावशः, वशितव्यम्, वाशयितव्यम्, उश्यमानः, वाश्यमानः, वशः,[४] वाशः, वशितुम्, वाशयितुम्, उष्टिः, वाशना, वशनम्, वाशनम्, वशित्वा,[५] वासयित्वा, प्रोश्य, प्रवाश्य, उशिक्,[६] उशीरिम्[७], उशना[८]।

**(१०८१) चर्करीतं च-**

**(१०८२) ह्नुङ्—अपनयने।** प्रायेणायं निपूर्वकः, अपपूर्वकोऽपि। (छिपाना, लुकाना, चुराना, ले जाना)। आ-नि- छिपाना, लुकाना। सक.। अनिट्। आत्मने.।

१. ह्नुते ह्नुवाते ह्नुवते। २. जुह्नुवे। ३. ह्नोता। ४. ह्नोष्यते। ५. ह्नुताम्। ६. अह्नुत। ७. ह्नुवीत। ८. ह्नोषीष्ट। ९. अह्नोष्ट। १०. अह्नोष्यत।

**कृत्सु**—ह्नावकः-विका, ह्नोता-त्री, ह्नावयिता-त्री, इत्यादि- 'वनुञ्' धातुवत्।

इत्यदादयः ॥ २ ॥

---

१ पचाद्यचि, तदन्तात् टापि च रूपमेवम्। वशा = मांसम्।

२ अत्र 'पोटायुवतिस्तोककतिपयगृष्टिधेनुवशा–' (२-१-६५) इत्यादिना तत्पुरुषसमासः। गोवशा = वन्ध्यागौरित्यर्थः।

३ ण्यन्तात् 'नन्दिवशि–' (वा. ३-१-१३४) इत्यादिना संज्ञायां ल्युप्रत्यये रूपमेवम्।

४ 'वशिरण्योरुपसंख्यानम्' (वा. ३-३-५८) इति भावे घञपवादोऽप् प्रत्ययः।

५ क्त्वाप्रत्यये, 'न क्त्वा सेट्' (१-२-१८) इति कित्वनिषेधात् न सम्प्रसारणम्।

६ 'वशेः कित्' (दउ. ४-९) इति वातोरिजिप्रत्यये कित्वात् सम्प्रसारणम्। वष्टि उश्यतेऽसौ श्रेयोर्थिभिरिति उशिक् = अग्न्यादिः।

७ औणादिके (दउ. ८-७३) ईरन् प्रत्यये, कित्वात् सम्प्रसारणे च रूपमेवम्। उश्यते तदिति उशीरम् = गन्धद्रव्यम्। उशीनरम् इति तु वेशविशेषवाचकं शब्दान्तरम्।

८ 'वशेः कनसिः' (दउ. ९-९९) इति कनसि प्रत्यये, कित्वात् 'ग्रहिज्या–' (६-१-१६) इत्यादिना सम्प्रसारणे रूपमेवम्। उशना = शुक्रः।

# अथ जुहोत्यादयः ( ३ )

( १०८३ ) हु—दानादनयोः। आदाने चेत्येके। प्रीणनेऽप्रीति भाष्यम्। दानञ्च वैधेऽग्नौ हावेषः प्रक्षेपः। (देना, यज्ञ करना, खाना, लेना, भक्षण करना, ग्रहण करना)। तृप्त करना। सकर्म. अनिट्। परस्मै.। उकारान्तः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | जुहोति[1] | जुहुतः[2] | जुह्वति[3] | प्र. |
| | जुहोषि | जुहुथः | जुहुथ | म. |
| | जुहोमि | जुहुवः | जुहुमः | उ. |
| लिट् | जुहवाञ्चकार | जुहवाञ्चक्रतुः | जुहवाञ्चक्रुः | प्र. |
| | जुहवाञ्चकर्थ | जुहवाञ्चक्रथुः | जुहवाञ्चक्र | म. |
| | जुहवाञ्चकार-चकर | जुहवाञ्चकृव | जुहवाञ्चकृम | उ. |

पक्षे—प्र. जुहाव[4] जुहुवतुः[5] जुहुवुः। म. जुहुविथ[6]-जुहोथ जुहुवथुः जुहुव। उ. जुहाव-जुहुव जुहुविव जुहुविम।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुट् | होता | होतारौ | होतारः | प्र. |
| | होतासि | होतास्थः | होतास्थ | म. |
| | होतास्मि | होतास्वः | होतास्मः | उ. |
| लृट् | होष्यति | होष्यतः | होष्यन्ति | प्र. |
| | होष्यसि | होष्यथः | होष्यथ | भ. |
| | होष्यामि | होष्यावः | होष्यामः | उ. |
| लोट् | जुहोतु-जुहुतात् | जुहुताम् | जुहन्तु | प्र. |
| | जुहुधि-जुहुतात् | जुहुतम् | जुहुत | म. |
| | जुहवानि | जुहवाव | जुहवाम | उ. |
| लङ् | अजुहोत् | अजुहुताम् | अजुहवुः | प्र. |
| | अजुहोः | अजुहुतम् | अजुहुत | म. |
| | अजुहवम् | अजुहुव | अजुहुम | उ. |

१ 'जुहोत्यादिभ्यः श्लुः' (२-४-७५) शपः श्लुः स्यात्। लोप इत्यर्थः। 'श्लौ' (६-१-१०) इति द्वित्वे, हुहु इति जाते 'कुहोश्चुः' (७-४-६२) इति अभ्यासस्य जकारे जुहु + ति इति जाते, 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' (७-३-८४) इति गुणे 'जुहोति' इति।

२ जुहु + तः इति स्थिते 'सार्वधातुकमपित्' (१-२-४) इति ङित्वात् 'क्ङिति च' (१-१-५) इति गुणाभावः।

३ जुहु + झि इति स्थिते 'अदभ्यस्तात्' ( ) इति अदादेशे जुहु अति इति जाते 'हुश्नुवोः सार्वधातुके' (६-४-८७) इति यण्।

४ आमभावपक्षे— जुहु + णल इति स्थिते 'अचो ञ्णिति' (७-२-११५) इति वृद्धौ, आवादेशे च रूपमेवम्।

५ 'अचि श्नुधातु–' (६-४-७७) इति उवङ्।

६ थलि भारद्वाजनियमादिड्विकल्पः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| वि. लि. | जुहुयात् | जुहुयाताम् | जुहुयुः | प्र. |
| | जुहुयोः | जुहुयातम् | जुहयात | म. |
| | जुहुयाम् | जुहुयाव | जुहुयाम | उ. |
| आ. लि. | हूयात् | हूयास्ताम् | हूयासुः | प्र. |
| | हूयाः | हूयास्तम् | हयास्त | म. |
| | हुयासम् | हूयास्व | हूयस्म | उ. |
| लुङ् | अहौषीत्[1] | अहोष्टाम् | अहौषुः | प्र. |
| | अहौषीः | अहौष्टम् | अहौष्ट | म. |
| | अहौषम् | अहौष्व | अहौष्म | उ. |
| लृङ् | अहोष्यत् | अहोष्यताम् | अहोष्यन् | प्र. |
| | अहोष्यः | अहोष्यतम् | अहोष्यत | म. |
| | अहोष्यम् | अहोष्याव | अहोष्याम | उ. |

**कर्मणि**—हूयते । २. जुहवाञ्चक्रे । ९. अहावि अहाविषाताम्-अहोषाताम् । **णिचि**—हावयति-ते । ९. अजूहवत् । **सनि**—जुहूषति । **यङि**—जोहूयते । **यङ्लुकि**—जोहोति-जोहवीति । **कृत्सु**—होतव्यम्, हवनीयम्, हव्यम्, हाव्यम्,[2] हूतः, जुह्वत्,[3] जुह्वती, होष्यन्, होतुम्, हवनम्, हुत्वा, आहुत्य, होता[4]-त्री, हविष्यम्, जुहुः,[5] होमः,[6] होत्रम्[7]-अग्निहोत्रम्, होत्रा, हविः,[8] हूयमान ।

**(१०८४) ञिभी—भये ।** (भय करना, डरना)। अकर्म.। अनिट् । परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | बिभेति | बिभितः[9]-बिभीतः | बिभ्यति | प्र. |
| | बिभेषि | बिभिथः-बिभीथः | बिभिथ-बिभीथ | म. |
| | बिभेमि | बिभिवः-बिभीवः | बिभिमः-बिभीमः | उ. |
| लिट् | बिभयाञ्चकार | बिभयाञ्चक्रतुः | बिभयाञ्चक्रुः | प्र. |
| | बिभयाञ्चकर्थ | बिभयाञ्चक्रथुः | बिभयाञ्चक्रुः | म. |
| | बिभयाञ्चकार-चकर | बभयाञ्चकृव | बिभयाञ्चकृम | उ. |

एवं विभयाबभूव, बिभयामास इत्यादि ।

१ षष्ठो लुङ् । 'शेषाण्यहौषीत् सुतसम्पदे च' (भट्टि १/१२)।

२ 'ओरावश्यके' (३-१-१२५) इति ण्यत् । अवश्यं होतव्यं यत् देवार्हमेव हविः, तदुच्यते हाव्यम् इति । अजन्तत्वलक्षणयतोऽपवादः ।

३ शतरि, 'जुहोत्यादिभ्यः—' (२-४-७५) इति शपः श्लुः । 'श्लौ' (६-१-१०) इति द्विर्वचनम् । 'हुश्नुवोः सार्वधातुके' (६-४-८७) इत्याजादिक्ङित्प्रत्ययत्वे शतुः अत्रापि यण् । 'नाभ्यस्ताच्छतुः' (७-१-७८) इति नुम् निषेधः ।

४ 'ऋत्विक्षु चानुपसर्गस्य' (वा. ३-२-१३५) इति ताच्छीलिकस्तृन् । 'अपतृन्—' (६-४-११) इत्यादिना सर्वनामस्थाने दीर्घः । होता = ऋत्विग् विशेषः । क्षीरहोता इति तु याजकादित्वात् (२-२-९) समासे साधुः

५ 'द्युतिगमिजुहोतीनां द्वे च' (वा. ३-२-१६८) इति करणे क्विप्, द्वित्वं च । जुहन्ते अनयेति जुहुः = स्रुक् ।

६ औणादिके (द.उ. ७-२६) मन्प्रत्यये होमः = अग्नौ पूजितस्य द्रव्यस्य प्रक्षेपः ।

७ 'हुयामा—' (द.उ. ८-८४) इति त्रन् प्रत्ययः । ऋत्विग् वाचको होत्राशब्दस्तु स्वभावात् स्त्रीलिङ्गः इति 'होत्राभ्यश्छः' (५-१-१३५) इत्यत्र पदमञ्जरी ।

८ औणादिके इसिप्रत्यये रूपम् । हूयते इति हविः = देवतोद्येशेन मन्त्रसंस्कृतं दधिपय आज्यादिकं द्रव्यम् ।

९ 'भियोऽन्यतरस्याम्' (६-४-११५) इकारः स्याद्धालादौ क्ङिति सार्वधातुके ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| पक्षे— | बिभाय | बिभ्यतु:[१] | बिभ्यु: | प्र. |
| | बिभयिथ-बिभेथ | बिभ्यथु: | बिभ्य | म. |
| | बिभाय-बिभय | बिभ्यिव | बिभ्यिम | उ. |
| लुट् | भेता | भेतारौ | भेतार: | प्र. |
| | भेतासि | भेतास्थ: | भेतास्थ | म. |
| | भेतास्मि | भेतास्व: | भेतास्म | उ. |
| लृट् | भेष्यति | भेष्यत: | भेष्यन्तिच | प्र. |
| | भेष्यसि | भेष्यथ: | भेष्यथ | म. |
| | भेष्यामि | भेष्याव: | भेष्याम: | उ. |
| लोट् | बिभेतु-बिभितात् | बिभिताम् बिभीताम् | बिभ्यतु | प्र. |
| | बिभिहि-बिभितात् | बिभितम्-बिभीतम् | बिभित-विभीत | म. |
| | बिभ्यानि | बिभयाव | बिभयाम | उ. |
| लङ् | अबिभेत् | अबिभिताम्-अबिभीताम् | अबिभयु: | प्र. |
| | अबिभे: | अबिभितम्-अबिभीतम् | अबिभित-अबिभीत | म. |
| | अबिभयम् | अबिभिव-अबिभीव | अबिभिम-अबिभीम | उ. |
| वि. लि. | बिभियात् | बिभियाताम् | बिभियु: | प्र. |
| | बिभिया: | बिभियातम् | बिभियात | म. |
| | बिभियाम् | बिभियाव | बिभियाम | उ. |
| आ. लि. | भीयात् | भीयास्ताम् | भीयासु: | प्र. |
| | भीया: | भीयास्तम् | भीयास्त | म. |
| | भीयासम् | भीयास्व | भीयास्म | उ. |
| लुङ् | अभैषीत् | अभैष्टाम् | अभैषु: | प्र. |
| | अभैषी: | अभैष्टम् | अभैष्ट | म. |
| | अभैषम् | अभैष्व | अभैष्म | उ. |
| लृङ् | अभेष्यत् | अभेष्यताम् | अभेष्यन् | प्र. |
| | अभेष्य: | अभेष्यतम् | अभेष्यत | म. |
| | अभेष्यम् | अभेष्याव | अभेष्याम | उ. |

**भावे**—भीयते। ९. अभायि। **णिचि**—भापयते-भीषयते-भापयति-ते। **सनि**—बिभीषति। **यङि**—बेभीयते। **यङ्लुकि**—बेभयीति-बेभेति। **कृत्सु**—भायक:-यिका, भापक:[२]-भीषक:[३]-षिका, भायक:[४]-यिका, बिभीषक:[५]-षिका, बेभीयक:-यिका, भेता-भेत्री, भापयिता-भीषयिता-भाययिता-त्री, बिभीषिता-त्री, बेभीयिता-त्री, बिभ्यत्[६]-बिभ्यतौ-बिभ्यत:

१ 'एरनेकाच' (६-४-८२) इति यण्।
२ 'विभतेर्हेतुभये' (६-१-५६) इति विकल्पेन णावात्वे, आदन्तलक्षण: पुगागम:।
३ आत्वाभावपक्षे, 'भियो हेतुभये षुक्' (७-३-४०) इति षुगागम:।
४ अहेतुभये तु (करणादिजन्ये भये तु) णिन्निमित्तकवृद्धौ, आयादेशे च रूपमेवम्। एवमेव ण्यन्ते रूपत्रयम्।
५ सन्नन्तात् ण्वुलि, 'इको झल्' (१-२-९) इति सन: कित्वान् न गुण:। एवमुत्तरत्रापि सन्नन्तेषु ज्ञेयम्।
६ शतरि शपो जुहोत्यादित्वात् श्लौ, द्विर्वचने, अभ्यासह्रस्वे, उत्तरखण्डे यणि 'नाभ्यस्ताच्छतु:' (७-१-७८) इति नुमो निषेध:।

भाययन्[१]-न्ती, बिभीषन्-न्ती, भेष्यन्-न्ती-ती, भाययिष्यन्-न्ती-ती, बीभीषिष्यन्-न्ती-ती, भापयमानः,[२] भीषयमाणः,[३] बेभीयमानः, भापयिष्यमाणः, भीषयिष्यमाणः, बेभीयिष्यमाणः, भीः-भियौ-भियः, भीतः-भीतवान्, भापितः-भीषितः, भायितः, बिभीषितः, बेभीयितः-तवान्, भीतः,[४] वृकभीतः, भीरुः[५]-भीलुकः, भीरुकः,[६] बिभीषणः,[७] भापः-भीषः-भायः, बिभीषुः, बेभ्यः, भेतव्यम्, भापयितव्यम्-भीषयितव्यम्-भावयितव्यम्, प्रनिभयनीयम्[८]-प्रणिभयनीयम्-भापनीयम्- भीषणीयम्-भायनीयम्, बिभीषणीयम्, बेभीयनीम्, भेयम्, भाप्यम्-भीष्यम्-भाय्यम्, बिभीष्यम्, बेभीय्म, भायमानः, भाप्यमानः-भीष्यमाणः-भाय्यमानः, बिभीष्यमाणः, बेभीय्यमानः, ईषद्भयः-दुर्भयः-सुभयः, भयम्,[९] भापः-भीषः-भायः, बिभीषः, बेभीयः, भेतुम्, भापयितुम्-भीषयितुम्-भाययितुम्, बिभीषितुम्, बेभीयितुम्, भीतिः, भीः,[१०] भापना-भीषणा-भायना, भीषा[११]-जातभीषा, बिभीषा, बेभीया, भापनम्-भीषणम्, भायनम्, बिभीषणम्, बेभीयनम्, भीत्वा, भापयित्वा-भीषयित्वा-भाययित्वा, प्रभीय, प्रभाप्य-प्रभीष्य-प्रभाय्य, भेकः,[१२] भयानकः,[१३] भीमः[१४]-भीष्णः।

(१०८५) ह्री—लज्जायाम्। (लज्जित होना, शरमाना)। अकर्म.। अनिट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | जिह्रेति | जिह्रीतः | जिह्रियति | प्र. |
| | जिह्रेषि | जिह्रीथः | जिह्रीथ | म. |
| | जिह्रेमि | जिह्रीवः | जिह्रीमः | उ. |

१ हेतुमये एत्वात्मनेपदविधानादत्र च अहेतु (करण) भयत्वात् ण्यन्ताच्छतैव।
२ 'भीस्म्योर्हेतुभये' (१-३-६८) इति ण्यन्तादात्मनेपदम्।
३ शत्रून् भीषयमाणं तं रामं विस्मापयेत कः। (भ.का. ५-५८)
४ 'ञीतः क्तः' (३-२-१८७) इति वर्तमाने कर्तरि क्तप्रत्ययः। वृकभीत इत्यत्र 'भयभीतभीतिभीभिरिति वक्तव्यम्। (वा. २-१-३७) इति वचनात् समासो बोध्यः।
५ तच्छीलादिषु कर्तृषु 'भियः क्रुक् लुकनौ' (३-२-१७४) इति क्रुः क्लुकन् च प्रत्ययौ भवतः। क्रमेण भीरुः-भीलुकः इति रूपे सिद्ध्यतः।
६ 'क्रुकन्नपि वक्तव्यः' (वा. ३-२-१७४) इति वचनात् क्रुकन् प्रत्यये रूपमेवम्। अयमपि ताच्छीलिकप्रत्ययः।
७ विशेषेण भीषयत इति विभीषणः। ण्यन्तात् नन्द्यादित्वात् (३-१-१३४) कर्तरि ल्युः। षुगागमः।
८ 'शेषे विभाषाऽकखादावषान्त उपदेशे' (८-४-१८) इति उपसर्गस्थान्निमित्तात् परस्य नेः णत्वविकल्पः।
९ अज्विधौ भयादीनामुपसंख्यानम्, नपुंसके क्तादिनिवृत्त्यर्थम्' (वा. ३-३-५६) इति वचनादत्र 'एरच्' (३-३-५६) इति भावेऽच् प्रत्ययः। अच् प्रत्ययान्तस्य पुंल्लिङ्गत्वं तु प्रायिकम्। अतोऽत्र नपुंसकत्वम्। वार्तिकेऽत्र 'क्तादिनिवृत्त्यर्थम्' इत्युक्तत्वात् नपुंसके भावे विहितः ल्युट् प्रत्ययोऽप्यस्य धातो र्नेति ज्ञेयम्। वृकभयम् इत्यत्र 'पञ्चमी भयेन' (२-१-३७) इति समासः।
१० स्त्रियां भावे सम्पदादित्वात् (वा. ३-३-९४) क्विप्।
११ हेतुमण्ण्यन्तात् बाहुलकेन 'अ प्रत्ययात्' (३-३-१०२) इत्यकारप्रत्ययः, युजपवादः।
१२ 'इण्भीका–' (द.उ. ३-२१) इति कन् प्रत्यये रूपमेवम्। बिभेतीति भेकः।
१३ 'आनकः शीङ्भियः' (द.उ. ३-२६) इत्यानकप्रत्ययः। बिभेति तस्मादिति भयानकः = भीषणः। भीमादयो पादाने' (३-४-७४) इति अपादानेऽयं प्रत्ययः।
१४ 'भियः षुग् वा' (द.उ. ३-३५) इति मक् प्रत्ययः पक्षे षुगागमश्च। बिभेत्यस्माज्जन इति भीमः 'भीष्मो वा। भीमादयोऽपादाने' (३-४-७४) इत्यपादानेऽयं प्रत्ययः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लिट् | जिह्रयाञ्चकार | जिह्रयाञ्चक्रतुः | जिह्रयाञ्चक्रुः इत्यादि। | |

एवं जिह्रयाम्बभूव, जिह्रयामास इत्यादि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| पक्षे— | जिह्राय | जिह्रियतुः | जिह्रियुः | प्र. |
| | जिह्रियिथ-जिह्रेथ | जिह्रियथुः | जिह्रिय | म. |
| | जिह्राय-जिह्रय | जिह्रियिव | जिह्रियिम | उ. |
| लुट् | ह्रेता | ह्रेतारौ | ह्रतारः इत्यादि। | |
| लृट् | ह्रेष्यति | ह्रेष्यतः | ह्रेष्यन्ति इत्यादि। | |
| लोट् | जिह्रेतु-जिह्रीतात् | जिह्रीताम् | जिह्रियतु | प्र. |
| | जिह्रीहि-जिह्रीतात् | जिह्रीतम् | जिह्रीत | म. |
| | जिह्रयणि | जिह्रयाव | जिह्रयाम | उ. |
| लङ् | अजिह्रेत् | अजिह्रीताम् | अजिह्रयुः | प्र. |
| | अजिह्रेः | अजिह्रीतम् | अजिह्रीत | म. |
| | अजिह्रयम् | अजीह्रीव | अजिह्रीम | उ. |
| वि. लि. | जिह्रीयात् | जिह्रीयाताम् | जिह्रीयुः | प्र. |
| | जिह्रीयाः | जिह्रीयातम् | जिह्रीयात | म. |
| | जिह्रीयम् | जिह्रीयाव | जिह्रीयाम | उ. |
| आ. लि. | ह्रीयात् | ह्रीयास्ताम् | ह्रीयासुः | प्र. |
| | ह्रीयाः | ह्रीयास्तम् | ह्रीयास्त | म. |
| | ह्रीयासम् | ह्रीयास्व | ह्रीयास्म | उ. |
| लुङ् | अह्रैषीत् | अह्रैष्टाम् | अह्रैषुः | प्र. |
| | अह्रैषीः | अह्रैष्टम् | अह्रैष्ट | म. |
| | अह्रैषम् | अह्रैष्व | अह्रैष्म | उ. |
| लृङ् | अह्रेष्यत् | अह्रेष्यताम् | अह्रेष्यन् इत्यादि। | |

**भावे**—ह्रीयते। ९. अह्रायि। **णिचि**—ह्रेपयति-ते। **सनि**—जिह्रीषति। **यङि**—जेह्रीयते। **यङ्लुकि**—जेह्रयीति-जिह्रेति। **कृत्सु**—ह्रेतव्यम्, ह्रयणीयम्, ह्रेयम्, जिह्रियत्,[1] जिह्रियतौ, जिह्रितः, ह्रेतुम्, ह्रीत्वा, विजिर्ह्राय, ह्रीः,[2] ह्रीणवान्-ह्रीतवान्, ह्रेपकः[3]-पिका, ह्रीकः[4]-ह्रयणम्, ह्रयः, ह्रायकः, ह्रायी, ह्रेता, ह्रीतिः, प्रह्रीय, ह्रेष्यत्। इत्यादि 'डुक्रीञ्' धातुवत्। ह्रीणः[5]-ह्रीतः।

**( १०८६ ) पॄ—पालनपूरणयो।** (पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना)। सक.। सेट्। पर.। ऋकारान्तः।

१ शतरि श्लौ, द्विर्वचने, 'नाभ्यस्ताच्छतुः' (७-१-७८) इति नुम्निषेधे इयङादेशे च रूपम्।

२ क्विपि रूपम्।

३ णिजन्तात् ण्वुलि रूपमेवम्। 'अर्तिह्री–' (७-३-३६) इत्यादिना पुगागमः। 'पुगन्तलघूपदस्य च' (७-३-८६) इति गुणः। एवं ण्यन्तरूपेषु सर्वत्राप्यस्य धातोः प्रक्रिया ज्ञेया।

४ 'ह्रियः कन्' (कुग्) रश्च लो वा' (द.उ. १-१५३) इति कन् प्रत्ययः। बाहुलकात् कनः ककारस्य न इत् संज्ञा। पक्षे धातुरेफस्य लकारोऽपि। ह्रीकः = लज्जाविशिष्टः।

५ 'नुदविदोन्दत्राघ्राह्रीभ्योऽन्तरस्याम्' (८-२-५६) इति निष्ठानत्वविकल्पः। नत्वपक्षे णत्वम्।

१. प्र. पिपर्ति पिपूर्तः पिपुरति। म. पिपर्षि पिपूर्थः पिपूर्थ। उ. पिपर्मि पिपूर्वः पिपूर्मः। २. प्र. पपार पप्रतुः-पपरतुः पप्रः-पपरुः। म. पपरिथ पप्रथुः-पपरथुः पप्र-पपर। उ. पपार-पपर पपरिव-पप्रिव पपरिम-पप्रिम। ३. प्र. परिता परितारौ परितारः। म. परितासि परितास्थः परितास्थ। उ. परितास्मि परितास्वः परितास्मः। पक्षे—परीता परीतारौ परीतारः इत्यादि। ४. परिष्यति परिष्यतः परिष्यन्ति इत्यादि। पक्षे—परीष्यति परीष्यतः परीष्यन्ति इत्यादि। ५. प्र. पिपर्तु-पिपूर्तात् पिपूर्ताम् पिपुरतुः। म. पिपूर्हि-पिपूर्तात् पिपूर्तम् पिपूर्त। उ. पिपराणि पिपराव पिपराम। ६. प्र. अपिपः-अपिपूर्ताम् अपिपरुः। म. अपिपः अपिपूर्तम् अपिपूर्त। उ. अपिपरम् अपिपूर्व अपिपूर्म। ७. प्र. पिपूर्यात् पिपूर्याताम् पिपूर्युः। म. पिपूर्याः पिपूर्यातम् पिपूर्यात। उ. पिपूर्याम् पिपूर्याव पिपूर्याम। ८. प्र. पूर्यात् पूर्यास्ताम् पूर्यासुः। म. पूर्याः पूर्यास्तम् पूर्यास्त। उ. पूर्यासम् पूर्यास्व: पूर्यास्मः। ९. प्र. अपारीत् अपारिष्टाम् अपारिषुः। म. अपारीः अपारिष्टम् अपारिष्ट। उ. अपारिषम् अपारिष्व अपारिष्म। १०. प्र. अपरिष्यत् अपरिष्यताम् अपरिष्यन् इत्यादि। पक्षे—अपरीष्यत् अपरीष्यताम् इत्यादि।

**कर्मणि**—पूर्यते। ९. अपारि। **णिचि**—पारयति-ते। **सनि**—पिपरिषति- पिपरीषति- पुपूर्षति। **यङि**—पोपूर्यते। **यङ्लुकि**—पापर्ति-पापरीति। **कृत्सु**—पारकः[१]-रिका, **णिचि**—पारकः-रिका, पुपूर्षकः-पिपरिषकः-पिपरीषकः-षिका, पोपुरकः-रिका, परिता-परीता-त्री, पारयिता-त्री, पिपुरत्[२]-पिपुरतौ-पिपुरतः, पारयन्-न्ती, परिष्यन्- परीष्यन्-न्ती-ती, पारयिष्यन्-न्ती-ती, पारयमाणः, पारयिष्यमाणः, पूः-पुरौ-पुरः, पूर्तम्,[३] पूर्तवान्, पारितः परः-पूः,[४] पारयः,[५] पारयिष्णुः,[६] परितव्यम्, परीतव्यम्, पारयितव्यम्, परणीयम्, पारणीयम्, पार्यम्, पूर्यमाणः,[७] पार्यमाणः, परः, पारः, परितुम्, परीतुम्, पारयितुम्, पूर्तिः-पूर्णिः,[८] पारणा, परणम्, पारणम्, पूर्त्वा, पारयित्वा, प्रपूर्य, प्रपार्य, पुरुः,[९] पर्व,[१०] पुरीषम्,[११]

१ 'इत्वोत्वाभ्यां गुणवृद्धी भवतो विप्रतिषेधेन' (वा. ७-१-१०२) इति वचनेन वृद्धिरत्र ज्ञेया। एवं तव्यदादिषु गुणोऽपि ज्ञेयः।

२ शतरि, 'जुहोत्यादिभ्यः—' (२-४-७५) इति शपः श्लौ, 'श्लौ' (६-१-१०) इति द्विर्वचने, श्लोः शित्वेन सार्वधातुकत्वात् धातोरुत्वे रपरत्वे, 'अर्तिपिपर्त्योश्च' (७-४-७७) इत्यभ्यासेकारः।

३ 'श्र्युकः क्किति' (७-२-११) इति इण्निषेधे, उत्वादिकम्।

४ तच्छीलादिषु कर्तृषु। 'भ्राजभासधुर्विद्युतोर्जिपॄ—' (३-२-१७७) इति क्विपि उत्वादिषु प्रवृत्तेषु रेफस्य विसर्गे रूपम्।

५ ण्यन्तादस्मात् 'अनुपसर्गाल्लिम्पविन्दधारिपारि—' (३-१-१३८) इति कर्तरि शप्रत्यये तस्य शित्वेन सार्वधातुकत्वात् शपि, पररूपे, अयादेशे च रूपम्।

६ 'णेश्छन्दसि' (३-२-१३७) इति इष्णुच् प्रत्यये, 'अयामन्ताल्वाय्येत्न्विष्णुषु' (६-४-५५) इति णेरयादेशः।

७ यकः कित्वेन उत्वरपरत्वादिकं ज्ञेयम्।

८ 'ॠल्वादिभ्यः क्तिन् निष्ठावद् वाच्यः' (वा. ८-२-४४) इति नकारे, णत्वम्। एतच्च पाक्षिकमिति केचित्।

९ 'पॄभि—' (द.उ. १-१०८) इति कुप्रत्ययः। पृणाति, पूर्यते वा इति पुरुः = विस्तीर्णः लोकश्च।

१० 'स्नामदिपद्यर्तिपॄ—' (द.उ. ६-६८) इति वनिप् प्रत्ययः। पृणाति पूर्यते वा इति पर्वः अङ्गुल्यग्रम्, पुण्यतिथिश्च।

११ 'शॄपॄभ्यां कित्' (द.उ. ९-१०) इतीषन् प्रत्ययः तस्य कित्वं च। पृणाति, पूर्यते वा तेनोदरामिति पुरीषम्।

पुरुषः,[1] परुषः,[2] परुः[3] ।

(१०८७) डुभृञ्—धारणपोषणयोः । (धारण करना, पोषण करना)। सक.। अनिट् । उभयपदी । ऋकारान्तः ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | बिभर्ति[4] | बिभृतः | बिभ्रति | प्र. |
| | बिभर्षि | बिभृथः | बिभृथ | म. |
| | बिभर्मि | बिभृवः | बिभृमः | उ. |
| लिट् | बिभराञ्चकार | बिभराञ्चक्रतुः | बिभराचक्रुः | प्र. |
| | बिभराञ्चकार्थ | बिभराञ्चक्रथुः | बिभराञ्चक्र | म. |
| | बिभराञ्चकार-चकर | बिभराञ्चकृव | बिभराञ्चकृम | उ. |

पक्षे—बभार बभ्रतुः बभ्रुरित्यादि ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुट् | भर्ता | भर्तारौ | भर्तारः | प्र. |
| | भर्तासि | भर्तास्थः | भर्तास्थ | म. |
| | भर्तास्मि | भर्तास्वः | भर्तास्मः | उ. |
| लृट् | भरिष्यति | भरिष्यतः | भरिष्यन्ति | प्र. |
| | भरिष्यसि | भरिष्यथः | भरिष्यथ | म. |
| | भरिष्यामि | भरिष्यावः | भरिष्यामः | उ. |
| लोट् | बिभर्तु-बिभृतात् | बिभृताम् | बिभ्रतु | प्र. |
| | बिभृहि-बिभृतात् | बिभृतम् | बिभृत | म. |
| | बिभराणि | बिभराव | बिभराम | उ. |
| लङ् | अबिभः[5] | अबिभृताम् | अबिभरुः | प्र. |
| | अबिभः | अबिभृतम् | अबिभृत | म. |
| | अबिभरम् | अबिभृव | अबिभृम | उ. |
| वि. लि. | बिभृयात् | बिभृयाताम् | बिभृयुः | प्र. |
| | बिभृयाः | बिभृयातम् | बिभृयात | म. |
| | बिभृयाम् | बिभृयाव | बिभृयाम | उ. |
| आ. लि. | भ्रियात् | भ्रियास्ताम् | भ्रियासुः | प्र. |
| | भ्रियाः | भ्रियास्तम् | भ्रियास्त | म. |
| | भ्रियासम् | भ्रियास्व | भ्रियास्म | उ. |
| लुङ् | अभार्षीत् | अभार्ष्टाम् | अभार्षुः | प्र. |
| | अभार्षीः | अभार्ष्टम् | अभार्ष्ट | म. |
| | अभार्षम् | अभार्ष्व | अभार्ष्म | उ. |

१ 'पुरः कुषन्' (द.उ. ९-१४) इत्यनेन कुषन् प्रत्यये, उत्वादिकम् ।

२ 'पृकलिभ्यामुषच्' (द.उ. ९-१५) इत्युषच् प्रत्ययः । पृणाति, पिपर्ति इति वा परुषः = अमृदुः ।

३ 'अर्तिपृवपि—' (द.उ. ९-३७) इत्युसिप्रत्ययः । परुः = समुद्रः, राजा च ।

४ भृञामित् (७-४-७६) भृञ् माङ् ओहाङ् एषां त्रयाणामभ्यासस्य इत् स्यात् श्लौ ।

५ अबिभृ + त् इति स्थिते गुणे रपरत्वे हलङ्यादिति तकारलोपे रेफस्य विसर्गः ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृङ् | अभरिष्यत् | अभरिष्यताम् | अभरिष्यन् | प्र. |
| | अभरिष्यः | अभरिष्यतम् | अभरिष्यत | म. |
| | अभरिष्यम् | अभरिष्याव | अभरिष्याम | उ. |

आत्मनेपदपक्षे

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | बिभृते | बिभ्राते | बिभ्रते | प्र. |
| | बिभृषे | बिभ्राथे | बिभृध्वे | म. |
| | बिभ्रे | बिभृवहे | बिभृमहे | उ. |
| लिट् | बिभराञ्चक्रे | बिभराञ्चक्राते | बिभराञ्चक्रिरे | प्र. |
| | बिभराञ्चकृषे | बिभराञ्चक्राथे | बिभराञ्चकृढ्वे | म. |
| | बिभराञ्चक्रे | बिभराञ्चकृवहे | बिभराञ्चकृमहे | उ. |

पक्षे—प्र. बभ्रे बभाते बभ्रिरे। म. बभृषे बभ्राथे बभृध्वे-ढ्वे। उ. बभ्रे बभृवहे बभृमहे।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुट् | भर्ता | भर्तारौ | भर्तारः | प्र. |
| | भर्तासे | भर्तासाथे | भर्ताध्वे | म. |
| | भर्ताहे | भर्तास्वहे | भर्तास्महे | उ. |
| लृट् | भरिष्यते | भरिष्येते | भरिष्यन्ते इत्यादि।. | |
| लोट् | बिभृताम् | बिभ्राताम् | बिभ्रताम् | प्र. |
| | बिभृष्व | बिभ्राथाम् | बिभृध्वम् | म. |
| | बिभरै | बिभरावहै | बिभरामहै | उ. |
| लङ् | अबिभृत | अबिभ्राताम् | अबिभ्रत | प्र. |
| | अबिभृथाः | अबिभ्राथाम् | अबिभृध्वम् | म. |
| | अबिभ्रि | अबिभृवहि | अबिभृमहि | उ. |
| वि. लि. | बिभ्रीत | बिभ्रीयाताम् | बिभ्रीरन् | प्र. |
| | बिभ्रीथाः | बिभ्रीयाथाम् | बिभ्रीध्वम् | म. |
| | बिभ्रीय | बिभ्रीवहि | बिभ्रीमहि | उ. |
| आ. लि. | भृषीष्ट | भृषीयास्ताम् | भृषीरन् | प्र. |
| | भृषीष्ठाः | भृषीयास्थाम् | भृषीध्वम् | म. |
| | भृषीय | भृषीवहि | भृषीमहि | उ. |
| लुङ् | अभृत | अभृषाताम् | अभृषत | प्र. |
| | अभृथाः | अभृषाथाम् | अभृढ्वम् | म. |
| | अभृषि | अभृष्वहि | अभृष्महि | उ. |
| लृङ् | अभरिष्यत | अभरिष्येताम् | अभरिष्यन्त इत्यादि। | |

**कर्मणि**—भ्रियते। २. बभ्रे। ९. अभारि। **णिचि**—भारयति। ९. अबीभरत। **सनि**—बुभूर्षति-ते। **यङि**—बेभ्रीयते। **यङ्लुकि**—बर्भरीति-बरीभरीति-बर्भर्ति। **कृत्सु**—भारकः-रिका, **णिचि**—भारकः-रिका, बुभूर्षकः-र्षिका, बेभ्रीयकः-यिका, भर्ता-त्री, भारयिता-त्री, भरन्-न्ती, भारयन्-न्ती, भरिष्यन्-न्ती-ती, भारयिष्यन्-न्ती-ती, भरमाणः, भारयमाणः, भरिष्यमाणः,

भारयिष्यमाणः, भृतम्-तवान्, भर्तव्यम्, भारयितव्यम्, भरणीयम्, भारणीयम्, भर्तुम्, भारयितुम्, भरणम्, भारणम्, भृत्वा, भारयित्वा, सम्भृत्य, बिभ्रत्[१]-बिभ्रतौ-बिभ्रतः, बिभाणः, भृत्रिमम्,[२] भरथुः, (कवचं) बिभ्राणः,[३] विश्वम्भरः[४]-विश्वम्भरा, भार्यम्,[५] इषुभृत्[६]-देहभृत्, उदरंभरिः, भृतिः,[७] भृङ्गारः[८]। शेषं सर्वं भौवादिभरति वत्।

(१०८८) **माङ्—माने शब्दे च**। (नापना, तौलना, मेमियाना। **अप**—उपमा देना। अनु—तर्क से सिद्ध करना। **परि**—नापना, परिमाण करना। **प्र**—प्रमाण होना।) सकर्मकाकर्मकौ। अनिट्। आत्मने.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | मिमीते[९] | मिमाते | मिमते[१०] | प्र. |
| | मिमीषे | मिमाथे | मिमीध्वे | म. |
| | मिमे | मिमीवहे | मिमीमहे | उ. |
| लिट् | ममे | ममाते | ममिरे | प्र. |
| | ममिषे | ममाथे | ममिध्वे | म. |
| | ममे | ममिवहे | ममिमहे | उ. |
| लुट् | माता | मातारौ | मातारः | प्र. |
| | मातासे | मातासाथे | माताध्वे | म. |
| | माताहे | मातास्वहे | मातास्महे | उ. |
| लृट् | मास्यते | मास्येते | मास्यन्ते | प्र. |
| | मास्यसे | मास्येथे | मास्यध्वे | म. |
| | मास्ये | मास्यावहे | मास्यामहे | उ. |
| लोट् | मिमीताम् | मिमाताम् | मिमताम् | प्र. |
| | मिमीष्व | मिमाथाम् | मिमीध्वम् | म. |
| | मिमै | मिमावहै | मिमामहै | उ. |

१ शतरि शपः 'जुहोत्यादिभ्यः–' (२-४-७५) इति श्लुः। 'श्लौ' (६-१-१०) इति द्विर्वचनम्। 'भृञामित्' (७-४-७६) इत्यभ्यासस्येकारः उत्तरखण्डे यणादेशः। 'नभ्यास्ताच्छतुः' (७-१-७८) इति नुम्निषेधः। एवमेव शानजन्तेऽपि प्रक्रिया ज्ञेया।

२ भावे 'ड्वितः क्त्रिः' (३-३-८८) इति क्त्रिप्रत्ययः। तस्य 'तेन' इति वर्तमाने निर्वृतार्थे, 'क्त्रेमम्नित्यम्' (४-४-२०) इति नित्यं मप् तद्धितः।

३ 'ताच्छील्यवयोवचनशक्तिषु चानश्' (३-२-१२९) इत्यनेनात्र वयोवचने चानश् प्रत्ययः कवचधारणयोग्यं वयः प्राप्तवान् इत्यर्थः।

४ संज्ञायां 'भृतृ–' (३-२-४६) इत्यादिना खच् प्रत्ययः। विश्वं बिभर्तीति विश्वम्भरः = विष्णुः।

५ 'ऋहलोः' (३-१-१२४) इति कर्मणि ण्यत्।

६ 'क्विप् च' (३-२-७६) इति कर्मण्युपपदे क्विप्। तुगागमः।

७ 'क्तिच् क्तौ च संज्ञायाम्' (३-३-१७४) इति संज्ञायां क्तिच्। भृतिः = वेतनम्।

८ 'शृङ्गारभृङ्गारौ' (द.उ. ८-६६) इति आरन् प्रत्ययः, नुगागमः - गुगागमौ गुणभावश्च निपात्यन्ते बिभर्त्युदकं मङ्गलार्थिभिरिति भृङ्गारः = उदककलशः।

९ 'भृञामित्' (७-४-७६) इत्यभ्यासस्य इत्वम्। 'ईहल्यघोः' (६-४-११३) इति ईस्।

१० 'श्नाभ्यस्तयोरातः' (६-४-११२) इति आल्लोपः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लङ् | अमिमीत | अमिमाताम् | अमिमत | |
| | अमिमीथाः | अमिमाथाम् | अमिमीध्वम् | म. |
| | अमिमि | अमिमीवहि | अमिमीमहि | उ. |
| वि. लि. | मिमीत | मिमीयाताम् | मिमीरन् | प्र. |
| | मिमीथाः | मिमीयाथाम् | मिमीध्वम् | म. |
| | मिमीय | मिमीवहि | मिमीमहि | इ. |
| आ. लि. | मासीष्ट | मासीयास्ताम् | मासीरन् | प्र. |
| | मासीष्ठाः | मासीयास्थाम् | मासीध्वम् | म. |
| | मासीय | मासीवहि | मासीमहि | उ. |
| लुङ् | अमास्त[१] | अमासाताम् | अमासत | प्र. |
| | अमास्थाः | अमासाथाम् | अमाध्वम् | म. |
| | अमासि | अमास्वहि | अमास्महि | उ. |
| लृङ् | अमास्यत | अमास्येताम् | अमास्यन्त | प्र. |
| | अमास्यथाः | अमास्येथाम् | अमास्यध्वम् | म. |
| | अमास्ये | अमास्यावहि | अमास्यामहि | उ. |

**कर्मणि**—मीयते। ९. अमायि। **णिचि**—मापयति[२]-ते। **सनि**—मित्सते। **यङि**—मेमीयते[३]। **यङ्लुकि**—मामाति-मामेति। **कृत्सु**—मायकः-यिका, मापकः-पिका, मित्सकः-त्सिका, मेमीयकः-यिका, माता-त्री, मापयिता-त्री, मित्सिता-त्री, मेमीयिता-त्री, मिमानः,[४] वातप्रमीः[५]-वातप्रम्यौ-वातप्रम्यः, प्रणिमानम्[६]-प्रणिमापनम्, मेयम्, पाय्यम्, व्योममायः, चन्द्रमाः[७]। अस्य धातोः आत्मनेपदित्वात् शानचि- अनुमिमानः, मित्समानः, मास्यमानः, मित्स्यमानः, इति विशेषः। अन्यत् सर्वम् आदादिकमाति वत् (१०६२) बोध्यम्।

**(१०८९) ओहाङ्—गतौ**। (जाना)। सक.। अनि.। आत्म.। आकारान्तः। ओदित् ङिच्च।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | जिहीते | जिहाते | जिहते | प्र. |
| | जिहीषे | जिहाथे | जिहीध्वे | म. |
| | जिहे | जिहीवहे | जिहीमहे | उ. |

१ लुङि दशमी विधा।

२ 'अर्तिह्री–' (७-३-३६) ति पुक्।

३ 'सनि मीमा–' (७-४-६४) इत्यच इस्। 'घुमास्था–' (६-४-६६) इति ईत्वम्। द्विर्वचनेऽभ्यासस्य गुणः।

४ शानचि, 'जुहोत्यादिभ्यः–' (२-४-७५) इति शपः श्लुः 'श्लौ' (६-१-१०) इति द्विर्वचने, 'भृञामित्' (७-४-७६) इत्यभ्यासेकारः। 'श्नाभ्यस्तयोरातः' (६-४-११२) इत्याकारलोपः।

५ वातं प्रमिमीते इत्यर्थे 'क्विप् च' (३-२-७६) इति कर्मण्युपपदे क्विपि, 'घुमास्था–' (६-४-६६) इतीकारे रूपमेवम्। वातप्रमीः = शमीवृक्षः पक्षिविशेषश्च।

६ 'नेर्गदनद–' (८-४-१७) इत्यादिना नेर्णत्वम्।

७ 'चन्द्रे मो डित्' (द.उ. ९-८८) इत्यनेन चन्द्रशब्द उपपदे धातोरस्यासि प्रत्यये तस्य च डिद्भावेन टिलोपे च रूपमेवम्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लिट् | जहे | जहाते | जहिरे | प्र. |
| | जहिषे | जहाथे | जहिध्वे-ढ्वे | म. |
| | जहे | जहिवहे | जहिमहे | उ. |
| लुट् | हाता | हातारौ | हातारः। इत्यादि | |
| लृट् | हास्यते | हास्येते | हास्यन्ते। इत्यादि। | |
| लोट् | जिहीताम् | जिहाताम् | जिहताम् | प्र. |
| | जिहीष्व | जिहाथाम् | जिहीध्वम् | म. |
| | जिहै | जिहावहै | जिहामहै | उ. |
| लङ् | अजिहीत | अजिहाताम् | अजिहत। इत्यादि। | |
| वि. लि. | जिहीत | जिहीयाताम् | जिहीरन् | प्र. |
| | जिहीथाः | जिहीयाथाम् | जिहीध्वम् | म. |
| | जिहीय | जिहीवहि | जिहीमहि | उ. |
| आ. लि. | हासीष्ट | हासीयास्ताम् | हासीरन् | प्र. |
| | हासीष्ठाः | हासीयास्थाम् | हासीध्वम् | म. |
| | हासीय | हासीवहि | हासीमहि | उ. |
| लुङ् | अहास्त | अहासाताम् | अहासत | प्र. |
| | अहास्थाः | अहासाथाम् | अहाध्वम् | म. |
| | अहासि | अहास्वहि | अहास्महि | उ. |
| लृङ् | अहास्यत | अहास्येताम् | अहास्यन्त। इत्यादि। | |

**कर्मणि**—हायते। **णिचि**—हापयति-ते। ९. अजीहपत। **सनि**—जिहासते। **यङि**—जाहायते। **यङ्लुकि**—जाहति-जोहति। **सनि**—हानीयम्, हयम्, हातव्यम्, हानम्, जिहानः, हातुम्, हात्वा, विहाय, हायनः, हानिः।

(१०९०) **ओहाक्—त्यागे**। (त्यागना, छोड़ना, परित्याग करना)। सक.। अनिट्। परस्मै.। आकारान्त ओदित् किति च।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | जहाति | जहितः-जहीतः | जहति | प्र. |
| | जहासि | जहिथः-जहीथः | जहिथ-जहीथ | म. |
| | जहामि | जहिवः-जहीवः | जहिमः-जहीमः | उ. |
| लिट् | जहौ | जहतुः | जहुः | प्र. |
| | जहिथ-जहाथ | जहथुः | जह | म. |
| | जहौ | जहिव | जहिम | उ. |
| लुट् | हाता | हातारौ | हातारः इत्यादि। | |
| लृट् | हास्यति | हास्यतः | हास्यन्ति इत्यादि। | |
| लोट् | जहातु-हितात्-हीतात् | जहिताम्-जहीताम् | जहतु | प्र. |
| | जहाहि-हिहि-हीहि-हीतात् | जहितम्-जहीतम् | जहित-जहीत | म. |
| | जहानि | जहाव | जहाम | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लङ् | अजहात् | अजहिताम्-अजहीताम् | अजहुः | प्र. |
| | अजहाः | अजहितम्-अजहीतम् | अजहित-अजहीत | म. |
| | अजहाम् | अजहिव-अजहीव | अजहिम-अजहीम | उ. |
| वि. लि. | जह्यात् | जह्याताम् | जह्युः | प्र. |
| | जह्याः | जह्यातम् | जह्यात | म. |
| | जह्याम् | जह्याव | जह्याम | उ. |
| आ. लि. | हेयात् | हेयास्ताम् | हेयासुः | प्र. |
| | हेयाः | हेयास्तम् | हेयास्त | म. |
| | हेयासम् | हेयास्व | हेयास्म | उ. |
| लुङ् | अहासीत् | अहासिष्टाम् | अहासिषुः | प्र. |
| | अहासीः | अहासिष्टम् | अहासिष्ट | म. |
| | अहासिषम् | अहासिष्व | अहासिष्म | उ. |
| लृङ् | अहास्यत् | अहास्यताम् | अहास्यन् | प्र. |
| | अहास्यः | अहास्यतम् | अहास्यत | म. |
| | अहास्यम् | अहास्याव | अहास्याम | उ. |

**कर्मणि**—हीयते। २. जहे। ९. अहायि। **णिचि**—हापयति-ते। **सनि**—जिहासति। **यङि**—जेहीयते। **यङ्लुकि**—जाहाति-जाहेति। **कृत्सु**—हानीयम्, हानम्, प्रहाणम्, हायः, हायकः-यिका, हायी, हाता, हीनः,[१] हानिः,[२] हातव्यम्, हातुम्, हित्वा,[३] प्रहीय, हेयम्, जहत्,[४] हास्यन्, हीयमानः, हायिष्यमाण, हास्यमानः, हीनवान्, विहाय,[५] हायनावीहयः,[६] पूर्वापहाणा-अपरापहाणा, सम्प्रहाणा, जहकः,[७] अहः,[८] कलहः,[९] निहाका[१०]। अन्यत् सर्वं जौहत्यादिक 'ददाति' (१०९१) वत्।

**(१०९१) डुदाञ्—दाने**। देना, सौंपना। **आ**—लेना, देना, अङ्गीकार करना। **व्या**—उघारना, खोलना। **समा**—प्रसन्न करके लेना। **परि**—देना, सौंपना। सक.। अनिट्। उभयपदी। आकारन्तः। ङित् ञिच्च।

१ 'घुमास्था–' (६-४-६६) इति धात्वाकारस्य ईकारः। ओदित्वात् निष्ठानत्वम्। 'मन्त्रोहीनः स्वरतो वर्णतो वा' (पाणिनीय शिक्षा)।
२ 'ग्लाज्याहाभ्यो निः' (वा. ३-३-९५) इति निप्रत्ययः ईत्वं न। केचित्तु हानिः इत्येव वदन्ति।
३ 'जहातेश्च क्त्वि' (७-४-४३) इति 'हि' इति प्रकृतेरादेशः।
४ शतरि 'श्लौ' (६-१-१०) इति द्विर्वचनम्। धातोः कित्वात् अभ्यासे 'दीर्घोऽकितः' (७-४-८३) इति दीर्घ-निषेध इति केचित् इति क्षीरतरङ्गिणी। तन्न। तत्र सूत्रे 'अंकितः' इति न धातुककारो विवक्षितः, किन्तु प्रत्ययस्य कित्वमेवेत्यास्तां तावत्। 'नाभ्यस्ताच्छतुः' (७-१-७८) इति नुम् निषेधः।
५ 'न ल्यपि' (६-४-६९) इति ईकार निषेधः।
६ 'हश्च व्रीहिकालयोः' (३-२-१४८) इति ण्युट्। जहाति उदकमिति हायनः संवत्सराख्योव्रीहिविशेषः। जहाति जीर्णमिति हायनो = वत्सरः।
७ जहातीति जहकः त्यागी, कालपुरुषश्च। 'जहातेर्द्वे च' (द.उ. ३-६) इति क्वुन्, द्वित्वं च।
८ 'नाञि जहातेः' (द.उ. ६-५२) इति कनिन् प्रत्यये आकारलोपः। अहः = दिनम्।
९ कलं जहातीति कलहः। 'सुपि–' (३-२-५) इति कप्रत्ययः। आकारलोपः इति क्षीरस्वामी।
१० 'नी हः' (द.उ. ३-२२) इति कन्। निहाका = गोधा।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | ददाति | दत्तः | ददति | प्र. |
| | ददासि | दत्थः | दत्थ | म. |
| | ददामि | दद्वः | दद्मः | उ. |
| लिट् | ददौ | ददतुः | ददुः | प्र. |
| | ददिथ-ददाथ | ददथुः | दद | म. |
| | ददौ | ददिव | ददिम | उ. |
| लुट् | दाता | दातारौ | दातारः | प्र. |
| | दातासि | दातास्थः | दातास्थ | म. |
| | दातास्मि | दातास्वः | दातास्मः | उ. |
| लृट् | दास्यति | दास्यतः | दास्यन्ति | प्र. |
| | दास्यसि | दास्यथः | दास्यथ | म. |
| | दास्यामि | दास्यावः | दास्यामः | उ. |
| लोट् | ददातु-दत्तात् | दत्ताम् | ददतु | प्र. |
| | देहि-दत्तात् | दत्तम् | दत्त | म. |
| | ददानि | ददाव | ददाम | उ. |
| लङ् | अददात् | अदत्ताम् | अददुः | प्र. |
| | अददाः | अदत्तम् | अदत्त | म. |
| | अददाम् | अदद्व | अदद्म | उ. |
| वि. लि. | दद्यात् | दद्याताम् | दद्युः | प्र. |
| | दद्याः | दद्यातम् | दद्यात | म. |
| | दद्याम् | दद्याव | दद्याम | उ. |
| आ. लि. | देयात् | देयास्ताम् | देयासुः | प्र. |
| | देयाः | देयास्तम् | देयास्त | म. |
| | देयासम् | देयास्व | देयास्म | उ. |
| लुङ् | अदात् | अदाताम् | अदुः | प्र. |
| | अदाः | अदातम् | अदात | म. |
| | अदाम् | अदाव | अदाम | उ. |
| लृङ् | अदास्यत् | अदास्यताम् | अदास्यन् | प्र. |
| | अदास्यः | अदास्यतम् | अदास्यत | म. |
| | अदास्यम् | अदास्याव | अदास्याम | उ. |

आत्मनेपदपक्षे

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | दत्ते | ददाते | ददते | प्र. |
| | दत्से | ददाथे | दद्ध्वे | म. |
| | ददे | दद्वहे | दद्महे | उ. |
| लिट् | ददे | ददाते | ददिरे | प्र. |
| | ददिषे | ददाथे | ददिध्वे | म. |
| | ददे | ददिवहे | ददिमहे | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुट् | दाता | दातारौ | दातारः | प्र. |
| | दातासे | दातासाथे | दाताध्वे | म. |
| | दाताहे | दातास्वहे | दातास्महे | उ. |
| लृट् | दास्यते | दास्येते | दास्यन्ते | प्र. |
| | दास्यसे | दास्येथे | दास्यध्वे | म. |
| | दास्ये | दास्यावहे | दास्यामहे | उ. |
| लोट् | दत्ताम् | ददाताम् | ददताम् | प्र. |
| | दत्स्व | ददत्थाम् | ददध्वम् | म. |
| | ददै | ददावहै | ददामहै | उ. |
| लङ् | अदत्त | अददाताम् | अददत | प्र. |
| | अदत्थाः | अददाथाम् | अददध्वम् | म. |
| | अददि | अदद्वहि | अदद्महि | उ. |
| वि. लि. | ददीत | ददीयाताम् | ददीरन् | प्र. |
| | ददीथाः | ददीयाथाम् | ददीध्वम् | म. |
| | ददीय | ददीवहि | ददीमहि | उ. |
| आ. लि. | दासीष्ट | दासीयास्ताम् | दासीरन् | प्र. |
| | दसीष्ठाः | दासीयास्थाम् | दासीध्वम् | म. |
| | दासीय | दासीवहि | दासीमहि | उ. |
| लुङ् | अदित | अदिषाताम् | अदिषत | प्र. |
| | अदिथाः | अदिषाथाम् | अदिढ्वम् | म. |
| | अदिषि | अदिष्वहि | अदिष्महि | उ. |
| लृङ् | अदास्यत | अदास्येताम् | अदास्यन्त | प्र. |
| | अदास्यथाः | अदास्येथाम् | अदास्यध्वम् | म. |
| | अदास्ये | अदास्यावहि | अदास्यामहि | उ. |

**कर्मणि**—दीयते । २ ददे । ९ अदायि । **णिचि**—दापयति-ते । ९. अदीदपत्-त । **सनि**—दित्सति-ते । **यङि**—देदीयते । **यङ्लुकि**– दादेति-दादाति । **कृत्सु**—दायकः[१]-यिका, णिचि–दापकः[२]-पिका, दित्सकः[३]-त्सिका, देदीयकः[४]-यिका, दाता-त्री, दापयिता-त्री, दित्सिता-त्री, देदीयिता-त्री, ददत्[५]-ददतौ-ददतः (आस्यं) व्याददत्, दापयन्-न्ती, दित्सन्-न्ती, दास्यन्-न्ती-ती,

१ 'आतो युक् चिण्कृतोः' (७-३-३३) इति युगागमः । एवं घञादिष्वपि ज्ञेयम् ।

२ 'अतिह्रीव्ली–' (७-३-३६) इति ण्यन्ते सर्वत्र पुगागमः ।

३ 'दाधाघ्वदाप्' (१-२-२०) इति घुसंज्ञायाम्, 'सनिमीमाघु–' (७-४-५४) इति सन्नन्ते इस् । 'सः सार्वधातुके' (७-४-४९) इति तकारे, 'अत्र लोपोभ्यासस्य' (७-४-५८) इत्यभ्यासलोपः । एवं सन्नन्ते सर्वत्र ज्ञेयम् ।

४ 'घुमास्था–' (६-४-६६) इत्यादिना ईत्वम् । द्वित्वादिकम् । 'गुणो यङ्लुकोः' (७-४-८२) इति अभ्यासे गुणो भवति । एवं यङन्ते सर्वत्र ज्ञेयम् ।

५ शतरि 'जुहोत्यादिभ्यः श्लुः' (२-४-७५) इति शपः श्लौ, 'श्लौ' (६-१-१०) इति द्वित्वे, उत्तरखण्डे 'अभ्यस्तयोरातः' (६-४-११२) इत्याकारलोपे, 'नाभ्यस्ताच्छतुः' (७-१-७८) इति नुम्निषेधः । 'अनास्यविहरणे' (१-३-२०) इति पर्युदासात् 'आस्यं' व्याददत् इत्यत्र शतैव ।

दापयिष्यन्-न्ती-ती, दित्सिष्यन्-ती, ददानः, (विद्यां) आददानः,[१] दापयमानः, दित्समानः, (विधौ) आदिस्यमानः, देदीयमानः, दास्यमानः, आदास्यमानः, दापयिष्यमाणः, दित्सिष्यमाणः, देदीयिष्यमाणः, प्रदाः-प्रदौ-प्रदाः, दत्तम्[२]-तः-दत्तवान्, मनसादत्ता,[३] प्रत्तम्[४]-नीत्तम्[५]-सूत्तम्-मरुत्तः,[६] अवदत्तम्,[७] विदत्तम्-प्रदत्तम्-सुदत्तम्- अनुदत्तम्-निदत्तम्, अवदत्तम्, दापितः, दित्सितः, देदीयितः-तवान्। प्रदः,[८] ददः[९]-दायः, गोदः,[१०] (गवां गोषु वा) दायादः,[११] कम्बलप्रदः,[१२] उपदाः,[१३] सुदामा[१४]-सुदीवा-गोदावरी, ग्रामदायी,[१५] शापदायी,[१६] साधुदायी,[१७] कर्णदायी,[१८] विद्यादायी,[१९] देदिवान्,[२०] दाता,[२१] दारुः,[२२] ददिः[२३] (गाः),

१ 'आङो ढो नास्य विहरणे' (१-३-२०) इति परगामिनि क्रियाफले पि शानच्।

२ 'दो दद्घोः' (७-४-४६) इति तादौ किति प्रत्यये परतः 'दथ्' इत्यादेशः। थकारस्य चर्त्वेन तकारः। तथा 'चोक्तम्–' तान्ते दोषो दीर्घत्वं स्यात्, दान्ते दोषो निष्ठानत्वम्। धान्ते दोषो धत्वप्राप्तिः निर्दोषात्वात् थान्तो ग्राह्यः। 'भाष्यम्–' (७-४-४६) इति। एवं क्तिन् प्रभृतिष्वपि।

३ 'मनसः संज्ञायाम्' (६-३-४) इति तृतीयाया अलुक्।

४ निष्ठायाम् 'अच उपसर्गात् तः' (७-४-१७) इति धातो स्तकारे रूपमेवम्।

५ 'दस्ति' (६-३-१२४) इत्यनेनात्र निष्ठायां तकारादेशे इगन्तस्योपसर्गस्य दीर्घः।

६ 'मरुत उपसंख्यानम्' (वा. १-४-५९) इति मरुच्छब्दस्योपसर्गसंज्ञायां विधानसामर्थ्यात्, अजन्तत्वेपि 'अच उपसर्गात् तः' (७-४-४७) इति तकारादेशः।

७ 'अवदत्तं विदत्तं च प्रदत्तं चादिकर्मणि। सुदत्त मनुदत्तं च निदत्तमिति चेष्यते।' (भाष्यम् ७-४-४६) इति भाष्येष्ट्या न धातोस्तकारादेशः। अत्र चकारस्य समुच्चयार्थकत्वात् अवदत्तम् इत्यादयो पि यथासम्भवं साधवः।

८ 'आतश्चोपसर्गे' (३-१-१३६) इति कर्तरि कप्रत्ययः। 'आतो लोप इटि च' (६-४-६४) इत्यकारलोपः।

९ 'ददाति दधात्योर्विभाषा' (३-१-१३९) इति कर्तरि शप्रत्ययः। 'कर्तरिशप्' (३-१-६९) इति शपि, तस्य, 'जुहोत्यादिभ्यः–' (३-४-७५) इति श्लो, 'श्लौ' (६-१-१०) इति द्विर्वचने, 'अभ्यस्तयोरातः' (६-४-११२) इत्याकारलोपे च 'ददः' इति रूपम्। अस्य शप्रत्ययस्य वैकल्पिकत्वात् पक्षे, 'श्याऽऽद् व्यध–' (३-१-१४१) इति कर्तरि णप्रत्यये, युगागमे च दायः इति रूपम्।

१० 'आतोऽनुपसर्गे कः' (३-२-३) इति कर्मण्युपपदे णोपवादः कप्रत्ययः। आकारलोपः।

११ दायमादत्ते इति दायादः। 'मूलविभुजादिभ्य उपसंख्यानम्' (वा. ३-२-५) इति सोपसर्गात् धातोः कर्मण्युपपदे कप्रत्ययः। 'स्वामीश्वराधिपतिदायाद–' (२-३-३९) इति षष्ठीसप्तम्यौ।

१२ 'प्रे दाज्ञः' (३-२-६) इति प्रोपसृष्टादस्मात् कर्मण्युपपदे क प्रत्ययः।

१३ 'अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते' (३-२-७५) इति विचि रूपमेवम्।

१४ 'आतो मनिन्क्वनिब्वनिपश्च' (३-२-७४) इत्यनेन क्रमेण मनीनि, क्वनिणि, वनिपि च सुदामा सुदीवा-गोदावरी इति रूपाणि। तत्र सुदीवा इत्यत्र प्रत्ययस्य कित्वादीकारः प्रकृतेः। गोदावरी इत्यत्र 'वनो र च' (४-१-७) इत्यनेन स्त्रियां ङीष् रेफादेशौ भवतः इति विशेषः।

१५ 'क्विप् च' (३-२-७६) इत्यनेन कर्मोपपदादस्मात् क्विप् प्रत्ययः।

१६ 'सुप्यजातौ–' (३-२-७८) इति णिनिप्रत्ययः। युगागमः।

१७ 'साधुकारिण्युसंख्यानम्' (वा. ३-२-७८) इति णिनिः।

१८ 'कर्तर्युपमाने' (३-२-७९) इति णिनिः। कर्ण इव ददातीत्यर्थः।

१९ 'व्रते' (३-२-८०) इति णिनिः। यो विद्यादानं व्रतत्वे नाचति, स एवमुच्यते।

२० क्वसौ, द्विर्वचने, आकारलोपे, 'वस्वेकाजाद्घसाम्' (७-२-७६) इतीडागमे रूपम्।

२१ 'तृन्' (३-२-१३५) इति तच्छीलादिषु कर्तृषु तृन्। दानशील एवमुच्यते।

२२ 'दाधेट् सिशदसदो रुः' (३-२-१५९) इति तच्छीलाद्धर्मतत्साधुकारिषु रुः।

२३ 'आद् ऋगम–' (३-२-१७१) इति कि, किन् वा प्रत्ययः। तस्य लिड्वद्भावातिदेशात् द्वित्वादिकार्यम्।

दायको[१] (व्रजति),अश्वदाय:,[२] दानीय:[३] (ब्राह्मण:)दाता,[४] अवश्यंदायी,[५] शतंदायी,देवदत्त:,[६] आदि:,[७] अन्तर्दि:,[८] दाप:, दित्सु:, देध:,[९] दातव्यम्, दापयितव्यम्, दित्सितव्यम्, देदीयितव्यम्, दानीयम्, दापनीयम्, दित्सनीयम्, देदीयनीयम्, देयम्,[१०] दाप्यम्, दित्स्यन्, देदीय्यम्, ईषद्दान:[११]-दुर्दान:-सुदान:, दीयमान:, दाप्यमान:, दित्स्यमान:, देदीय्यमान:, दाय:, दाप:, दित्स:, देदीय:, दातुम्, दापयितुम्, दित्सितुम्, देदीयितुम्, दत्ति:, उपदा,[१२] दापना, दित्सा, देदीया, दानम्, दात्त्रिमम्,[१३] दापनम्, दित्सनम्, देदीयनम्, दत्वा, दापयित्वा, दित्सित्वा, देदीयित्वा, प्रणिदाय,[१४] प्रदाप्य, प्रदित्स्य, प्रदेदीप्य, दानु:,[१५] देष्ण:[१६] ।

**(१०९२) डुधाञ्—धारणपोषणयो:** । दान इत्येके । (धारण करना, पहनना, पालन करना, देना)। **अनुसम्**—अनुसंधान करना, **अभि**—प्रसिद्ध करना, प्रकट करना, दिखाना, कहना, **अभिसम्**—जीतना, पराजय करना, **सम्-अव**—सावधान रहना, ध्यान देना, **आ**—स्वीकार करना, स्थापित करना, **उप**—सहायता करना, **नि**—ऊपर लेना, बीच में या ऊपर स्थापन करना, उत्पन्न होना, धारण करना, **परि**—वस्त्रादि धारण करना, परिधान करना, **प्र**—मुख्य होना, प्रेरणा करना, भेज देना, **प्रणि**—धारण करना, स्वीकार करना, गुप्त रहना, **प्रतिवि**—प्रतिकार करना, **वि**—कहना, धर्म सम्बन्धी कार्य करना, पसन्द करना, आज्ञा करना, देना, **व्यव**—छिपाना, **सम्**—स्थापना करना, रखना, निशाना लगाना, **सम्प्र**—**प्र. तिसम्**—चर्चा करना, वाद विवाद करना, **समा**—समाधान करना, सिखाना, **सन्नि**—समीप रखना, समीप आना । सकर्म. । अनिट् । उभय. । आकारान्त: । ड्वित् । ञिच्च ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | दधाति | धत्त: | दधति | प्र. |
| | दधासि | धत्थ: | धत्थ | म. |
| | दधामि | दध्व: | दध्म: | उ. |

१ क्रियार्थायां क्रियायाम्, 'तुमुन् ण्वुलौ—' (३-३-१०) इति ण्वुलि युगागम: ।
२ 'अण् कर्मणि च' (३-३-१२) इति क्रियार्थायां क्रियायां कप्रत्ययापवादोऽण् प्रत्यय: ।
३ दीयतेऽस्मै, इति दानीयो विप्र: । सम्प्रदाने 'कृत्यल्युटो बहुलम्' (३-३-११३) इति अनियर् ।
४ 'अर्हे कृत्यतृचश्च' (३-३-१६९) इति अर्हार्थे तृच् । दातुमर्हो दाता ।
५ 'आवश्यकाधमणर्ययोर्णिनि:' (३-३-१७०) इति क्रमेणार्थद्वये णिनि प्रत्यय: ।
६ 'क्तिच् क्तौ च संज्ञायाम्' (३-३-१७४) इति क्त प्रत्यय: ।
७ 'उपसर्गे घो कि:' (३-३-९२) इति कि प्रत्यय: । आदीयते इत्यादि: कारणम् ।
८ 'अन्तश्शब्दस्य अङ्किविधिणत्वेषूपसर्गत्वं वाच्यम्' (वा. १-४-६५) इति वचनादुपसर्गत्वात् किप्रत्यय: ।
९ यङन्तात् पचाद्यति, यङो लुकि, 'एरनेकाच:—' (६-४-८२) इति यण् ।
१० 'इद् यति' (६-४-६५) इति धातोरीकारे गुणे च रूपम् ।
११ ईषदाद्युपपदेषु, 'आतो युच्' (३-३-१२८) इति युचि, अनादेश: ।
१२ 'आतश्चोपसर्गे' (३-३-१०६) इत्यङ्प्रत्यय: ।
१३ 'ड्वित: क्त्रि:' (३-३-८८) इति क्त्रिप्रत्यये, 'त्रेर्मप् नित्यम्' (४-४-२०) इति मप् नित्यम् । दद्भावश्च भवति ।
१४ 'न ल्यपि' (६-४-६९) इतीत्वनिषेद: । 'नेर्गदनदपत—' (८-४-१७) इति प्रोत्तरस्य नेर्णत्वम् ।
१५ 'दाभाभ्यां नु:' (द.उ. १-१४३) इति नुप्रत्यय: । दानु: = दक्षिणार्थं धनम् ।
१६ 'गादाभ्यां चेष्णक्' (द.उ. ५-४८) इति चेष्णक् प्रत्यय: । ददातीति देष्ण: = दानशील: । मा.धा. वृत्तौ तु देष्णु: इति रूपमौणादिके साधितम् ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लिट् | दधौ | दधतुः | दधुः | प्र. |
| | दधिथ-दधाथ | दधथुः | दध | म. |
| | दधौ | दधिव | दधिम | उ. |
| लुट् | धाता | धातारौ | धातारः इत्यादि | |
| लृट् | धास्यति | धास्यतः | धास्यन्ति इत्यादि | |
| लोट् | दधातु-धत्तात् | धत्ताम् | दधतु | प्र. |
| | धेहि-धत्तात् | धत्तम् | धत्त | म. |
| | दधानि | दधाव | दधाम | उ. |
| लङ् | अदधात् | अधत्ताम् | अदधुः | प्र. |
| | अदधाः | अधत्तम् | अधत्त | म. |
| | अदधाम् | अदध्व | अदध्म | उ. |
| वि. लि. | दध्यात् | दध्याताम् | दध्युः | प्र. |
| | दध्याः | दध्यातम् | दध्यात | म. |
| | दध्याम् | दध्याव | दध्याम | उ. |
| आ. लि. | धेयात् | धेयास्ताम् | धेयासुः | प्र. |
| | धेयाः | धेयास्तम् | धेयास्त | म. |
| | धेयासम् | धेयास्व | धेयास्म | उ. |
| लुङ् | अधात् | अधाताम् | अधुः | प्र. |
| | अधाः | अधातम् | अधात | म. |
| | अधाम् | अधाव | अधाम | उ. |
| लृङ् | अधास्यत् | अधास्यताम् | अधास्यन् इत्यादि | |

आत्मनेपदपक्षे

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | धत्ते | दधाते | दधते | प्र. |
| | धत्से | दधाथे | धद्ध्वे | म. |
| | दधे | दध्वहे | दध्महे | उ. |
| लिट् | दधे | दधाते | दधिरे | प्र. |
| | दधिषे | दधाथे | दधिध्वे | म. |
| | दधे | दधिवहे | दधिमहे | उ. |
| लुट् | धाता | धातारौ | धातारः। इत्यादि | |
| लृट् | धास्यते | धास्येते | धास्यन्ते। इत्यादि। | |
| लोट् | धत्ताम् | दधाताम् | दधताम् | प्र. |
| | धत्स्व | दधाथाम् | धदध्वम् | म. |
| | दधै | दधावहै | दधामहै | उ. |
| लङ् | अधत्त | अदधाताम् | अदधत | प्र. |
| | अधत्थाः | अदधाथाम् | अदध्वम् | म. |
| | अदधि | अदध्वहि | अदध्महि | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| वि. लि. | दधीत | दधीयाताम् | दधीरन् | प्र. |
| | दधीथाः | दधीयाथाम् | दधीध्वम् | म. |
| | दधीय | दधीवहि | दधीमहि | उ. |
| आ. लि. | धासीष्ट | धासीयास्ताम् | धासीरन् | प्र. |
| | धासीष्ठाः | धासीयास्थाम् | धासीध्वम् | म. |
| | धासीय | धासीवहि | धासीमहि | उ. |
| लुङ् | अधित | अधिषाताम् | अधिषत | प्र. |
| | अधिथाः | अधिषाथाम् | अधिड्ढ्वम् | म. |
| | अधिषि | अधिष्वहि | अधिष्महि | उ. |
| लृङ् | अधास्यत | अधास्येताम् | अधास्यन्त । इत्यादि । | |

शेषं सर्वं 'ददति' (१०९१) वत् ।

**कृत्सु**—धायकः-यिका, धापकः-पिका, धित्सकः-त्सिका, देधीयकः[१]-यिका, धाता-त्री, धापयिता, धित्सिता-त्री, देधीयिता-त्री, प्रणिदधत्[२]-दधती, धापयन्-न्ती, धित्सन्-न्ती, धास्यन्-न्ती-ती, धापयिष्यन्-न्ती-ती, धित्सिष्यन्-न्ती-ती, प्रणिदधानः, धापयमानः, हितम्ः[३] प्रणिहितः-हितवान्, धापितः, धित्सितः, देधीयितः-तवान्, प्रधः[४]-दधः,[५] धायः,[६] किष्किन्धा,[७] धामा,[८] धीवा[९]-धीवरी, शिरोधिः[१०]-विधिः, प्रणिधिः, वालधिः-उपाधिः, भूतधात्री,[११] श्रद्धालुः,[१२] विधेयः,[१३] विधाता,[१४] धापः, धित्सुः, दाधाः,[१५] धातव्यम्, धापयितव्यम्, प्रणिधानीयम्,

१ यङन्ताण्वुलि, 'घुमास्था–' (६-४-६६) इत्यादिना इत्वे द्विर्वचनादिकम् । अभ्यासे गुणः । यङन्ते सर्वत्रै वमेव ।

२ शतरि जुहोत्यादिभ्य–' (२-४-७५) इति शपः श्लुः । 'श्लौ' (६-१-१०) इति द्विर्वचनम् । 'श्नाभ्यस्तयोरातः' (६-४-११२) इत्याकारलोपः । 'नेर्गद–' (८-४-१७) इत्यादिना उपसर्गस्थान्निमित्तात् परस्य नेः णत्वम् । 'नाभ्यस्ताच्छतुः' इति नुम्निषेधः ।

३ निष्ठायाम्, 'दधातेर्हिः' (७-४-४२) इति प्रकृतेः हिः आदेशः । एवं तकारादौ किति प्रत्यये सर्वत्र ज्ञेयम् ।

४ 'आतश्चोपसर्गे' (३-१-१३६) इति कर्तरि कप्रत्ययः ।

५ 'ददातिदधात्योर्विभाषा' (३-१-१३९) इति शप्रत्यये, शित्वात् शपि तस्य श्लौ, द्विर्वचने, शप्रत्ययस्य सार्वधातुकत्वेन 'श्नाभ्यस्तयोः–' (६-४-११२) इत्याकारलोपे च दधः इति रूपम् ।

६ दधातेरस्य शप्रत्ययस्य विभाषितत्वात् पक्षे, 'श्याऽद्व्यध–' (३-१-१४१) इत्यादिना कर्तरि णप्रत्यये, युगागमे च धायः इति ।

७ किं किं दधातीत्यर्थे 'आतोऽनुपसर्गे कः' (३-२-३) इति कर्मण्युपपदे कर्तरि कप्रत्यये, 'प्रास्करप्रभृतीनि च' (६-१-१५७) इति सुडागमे, किमो मकारस्य लोपः षत्वं च भवति ।

८ 'अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते' (३-२-७५) इति निरुपपदादस्मात् मनिन्प्रत्यये रूपम् ।

९ 'अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते' (३-२-७५) इति निरुपपदादस्मात् क्वनिप् प्रत्यये, ईत्वे रूपम् । स्त्रियां 'वनो र च' (४-१-७) इति ङीब्रिकौ । बहुधीवा बहुधीवरी इत्यत्र तु 'अनो बहुव्रीहेः' (४-१-१२) इति निषेधात् ङीबभावः, 'डाबुभाभ्यामन्यतरस्याम्' (४-१-१३) इति पाक्षिक ङीप् रेफः डाप् च भवति ।

१० शिरो धत्ते इति शिरोधिः = ग्रीवा । बाहुलकात् कर्तरि कप्रत्यये आतो लोपः इटि च (६-४-६४) इत्याकारलोपः ।

११ भूतानि धत्ते इति भूतधात्री = पृथिवी । बाहुलकात् कर्तरि ष्ट्रन् प्रत्यये, स्त्रियां षित्वात् ङीष् ।

१२ तच्छीलादिषु कर्तृषु 'स्पृहिगृहि–' (३-२-१५८) इत्यालुच् प्रत्ययः ।

१३ 'अर्हे कृत्यतृचश्च' (३-३-१६९) इति कर्तरि यत् प्रत्ययः । 'ईद् यति' (६-४-६५) इति धातोरीत्वे गुणः ।

१४ विदधातीति विधाता = ब्रह्मा । 'तृन्' (३-२-१३५) तृन् प्रत्ययः ।

१५ यङन्तात् पचाद्यचि यङो लुकि ईत्वाभावे, अभ्यासे 'दीर्घोऽकितः' (७-४-८२) इति दीर्घः ।

धापनीयम्, धेयम्, धाय्या, धाप्यम्, धित्स्यम्, देधीय्यम्, धीयमानः,[१] धाप्यमानः, धित्स्यमानः, देधीय्यमानः, धात्री,[२] उपधिः[३]-निधिः, अन्तर्धिः, उदधिः,[४] सन्धि, सुषन्धिः-दुष्पन्धिः, दधि,[५] धायः, हित्रिमम्,[६] धापः, धित्सः, देधीयः, धातुम्, धापयितुम्, हितिः, अभिधा,[७] श्रद्धा,[८] उपधा,[९] धापना, धित्सा, देधीया, प्रणिधानम्-अपिधानम्, पिधानम्,[१०] धापनम्, धित्सनम्, देधीयनम्, हित्वा, धापयित्वा, प्रधायनिधाय, प्रधाप्य, धृतनिधाय, निहितं (जलम्) गोत्रभिधायम्, धातुः,[११] कर्कन्धूः[१२]-शकन्धूः दिधिषूः, धानकः[१३]-निधनम्[१४]-धनम्, धाना,[१५] धान्यम्,[१६] धीरः,[१७] वेधाः,[१८] वयोधाः[१९] -पुरोधाः।

**(१०९३) णिजिर्—शौचपोषणयोः।** (शुद्ध करना, स्वच्छ करना, पालन करना)। अक.। अनिट्। उभय.।

---

१ यङन्ताच्छानचि, 'घुमास्था–' (६-४-६६) इतीत्वम्।

२ दीयते = धीयते शिरसीति धात्री = आमलिकी। 'धः कर्मणि ष्ट्रन्' इति ष्ट्रन् प्रत्ययः। षित्वात् स्त्रियां ङीष्।

३ 'उपसर्गे घोः किः' (३-३-९२) इति किप्रत्यये आकारलोपे च। एवं निधिरित्यादिष्वपि ज्ञेयम्।

४ उदकं धीयतेऽत्रेति उदधिः = समुद्रः। 'कर्मण्यधिकरणे च' (३-३-९३) इति अधिकरणे किप्रत्ययः। 'उदकस्योदः संज्ञायाम्' (६-३-५७) इति उदक शब्दस्य उदभावः।

५ 'भाषायां धाञ्–' (वा. ३-२-१७१) इत्यादिना कि किन् वा प्रत्ययः। तस्य लिड्वद् भावतिदेशात् द्विर्वचनादिकं भवति।

६ 'ड्वितः क्त्रिः' (३-३-८८) इति क्त्रिप्रत्ये, तेन निवृत्तम् इत्यर्थे 'क्त्रेमम्नित्यम्' (४-४-२०) इति मप् प्रत्यये, हिभावे च रूपमेवम्।

७ 'आतश्चोपसर्गे' (३-३-१०६) इत्यङ्।

८ 'श्रदन्तरोरुपसर्गवद्वृत्तिः' (वा. १-४-५९) इति वचनादुपसर्गभावेऽङ्।

९ 'चिन्तावन्तः कथां चक्रुरुपधाबेदधीरवः।' (भ.का. ७-७४)।

१० अपिपूर्वकात् धाञो ल्युटि 'वष्टि भागुरिल्लोपमवाप्योरुपसर्गयोः।' इति वचनात् अपिघटिताकारस्य लोपे पिधानम् इति भवति। अन्येषां मते तु अपिधानम् इत्येव।

११ औणादिके (द.उ. १-१२२) तुन् प्रत्यये रूपम्। दधात्यर्थम्, धीयतेऽस्मिन्नर्थे इति वा धातुः = शब्दप्रकृतिः, पर्वतनिस्रावो वा।

१२ कर्क दधातीति कर्कन्धुः = बदरीवृक्षः। 'अन्दूदृम्भूजम्बूकफेलूकर्कन्धूदिधिषूः (द.उ. १-१७६) इति कूप्रत्ययान्तो निपातितः। एवं शकन्धूरपि।

१३ औणादिके (द.उ. ३-२७) आनक् प्रत्यये रूपम्। धानकः = सुवर्णपरिमाणम्।

१४ निपूर्वकादस्मात् औणादिके (द.उ. ५-२६) क्युप्रत्यये रूपम्। निधनम् = विनाशः। बाहुलकाद धनमित्यपि क्यू प्रत्यय एव बोध्यः।

१५ 'धापृ–' (द.उ. ५-३९) इति न प्रत्यये रूपम्। धीयन्ते यासां विकारैः इति धानाः = यवविकारः।

१६ 'दधातेर्यन् नुट् च' (द.उ. ८-१९) इति यन् प्रत्ये नुडागमो विधीयते।

१७ 'सुसूधा–' (द.उ. ८-४२) इति कन् प्रत्यये ईत्वे च रूपम्। दधाति आपत्सु चित्तमिति धीरः = सत्वान्।

१८ 'विधाञो वेध च' (द.उ. ९-८४) इति विपूर्वाद्धाञोऽसिप्रत्ययः। वेध इति इत्ययं चादेशः। विदधाति प्रजाः इति वेधाः = ब्रह्मा।

१९ 'वयसि धाञः' 'पयसि च' 'पुरसि च' (द.उ. ९-८९-९१) इत्येभिः असि प्रत्ययो विधीयते। ङिच्चायम्, तेन टेर्लोपिः। वयोधाः = प्राणी चन्द्रश्च। पयोधाः = समुद्रः। पुरोधाः = उपाध्यायः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | नेनेक्ति | नेनिक्तः | नेमिजति | प्र. |
| | नेनेक्षि | नेनिक्थः | नेनिक्थ | म. |
| | नेनेज्मि | नेनिज्वः | नेनिज्मः | उ. |
| लिट् | निनेज | निनिजतुः | निनिजुः | प्र. |
| | निनिजिथ | निनिजथुः | निनिज | म. |
| | निनेज | निनिजिव | निनिजिम | उ. |
| लुट् | नेक्ता | नेक्तारौ | नेक्तारः। इत्यादि। | |
| लृट् | नेक्ष्यति | नेक्ष्यतः | नेक्ष्यन्ति। इत्यादि। | |
| लोट् | नेनेक्तु-नेनिक्तात् | नेनिक्ताम् | नेनिजतुः | प्र. |
| | नेनिग्ध-नेनिक्तात् | नेनिक्तम् | नेनिक्त | म. |
| | नेनिजानि | नेनिजाव | नेनिजाम | उ. |
| लङ् | अनेनेक्-ग् | अनेनिक्ताम् | अनेनिजुः | प्र. |
| | अनेनेक्-ग् | अनेनिक्तम् | अनेनिक्त | म. |
| | अनेनिजम् | अनेनिज्व | अनेनिज्म | उ. |
| वि. लि. | नेनिज्यात् | नेनिज्याताम् | नेनिज्युः | प्र. |
| | नेनिज्याः | नेनिज्यातम् | नेनिज्यात | म. |
| | नेनिज्याम् | नेनिज्याव | नेनिज्याम | उ. |
| आ. लि. | निज्यात् | निज्यास्ताम् | निज्यासुः | प्र. |
| | निज्याः | निज्यास्तम् | निज्यास्त | म. |
| | निज्यासम् | निज्यास्व | निज्यास्म | उ. |
| लुङ् | अनिजत् | अनिजताम् | अनिजन् | प्र. |
| | अनिजः | अनिजतम् | अनिजत | म. |
| | अनिजम् | अनिजाव | अनिजाम | उ. |

**'इरितो वा'** (३-१-५७) इत्यङभावे—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | अनैक्षीत् | अनैक्ताम् | अनैक्षुः | प्र. |
| | अनैक्षीः | अनैक्तम् | अनैक्त | म. |
| | अनैक्षम् | अनैक्ष्व | अनैक्ष्म | उ. |
| लृङ् | अनेक्ष्यत् | अनेक्ष्यताम् | अनेक्ष्यन्। इत्यादि। | |

आत्मनेपपक्षे

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | नेनिक्ते | नेनिजाते | नेनिजिरे | प्र. |
| | नेनिक्षे | नेंनिजाथे | नेनिग्ध्वे | म. |
| | नेनिजे | नेनिज्वहे | नेनिज्महे | उ. |
| लिट् | निनिजे | निनिजाते | निनिजिरे | प्र. |
| | निनिजिषे | निनिजाथे | निनिजिध्वे | म. |
| | निनिजे | निनिजिवहे | निनिजिमहे | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुट् | नेक्ता | नेक्तारौ | नेक्तारः | प्र. |
| | नेक्तासे | नेक्तासाथे | नेक्ताध्वे | म. |
| | नेक्ताहे | नेक्तास्वहे | नेक्तास्महे | उ. |
| लृट् | नेक्ष्यते | नेक्ष्येते | नेक्ष्यन्ते | प्र. |
| | नेक्ष्यसे | नेक्ष्येथे | नेक्ष्यध्वे | म. |
| | नेक्ष्ये | नेक्ष्यावहे | नेक्ष्यामहे | उ. |
| लोट् | नेनिक्ताम् | नेनिजाताम् | नेनिजताम् | प्र. |
| | नेनिक्ष्व | नेनिजाथाम् | नेनिग्ध्वम् | म. |
| | नेनिजै | नेनिजावहै | नेनिजामहै | उ. |
| लङ् | अनेनिक्त | अनेनिजाताम् | अनेनिजत | प्र. |
| | अनेनिक्थाः | अनेनिजाथाम् | अनेनिग्ध्वम् | म. |
| | अनेनिजि | अनेनिज्वहि | अनेनिज्महि | उ. |
| वि. लि. | नेनिजीत | नेनिजीयाताम् | नेनिजीरन् | प्र. |
| | नेनिजीथाः | नेनिजीयाथाम् | नेनिजीध्वम् | म. |
| | नेनिजीय | नेनिजीवहि | नेनिजीमहि | उ. |
| आ. लि. | निक्षीष्ट | निक्षीयास्ताम् | निक्षीरन् | प्र. |
| | निक्षीष्ठाः | निक्षीयास्थाम् | निक्षीध्वम् | म. |
| | निक्षीय | निक्षीवहि | निक्षीमहि | उ. |
| लुङ् | अनिक्त | अनिक्षाताम् | अनिक्षत | प्र. |
| | अनिक्थाः | अनिक्षाथाम् | अनिग्ध्वम् | म. |
| | अनिक्षि | अनिक्ष्वहि | अनिक्ष्महि | उ. |
| लृङ् | अनेक्ष्यत | अनेक्ष्येताम् | अनेक्ष्यन्त | प्र. |
| | अनेक्ष्यथाः | अनेक्ष्येथाम् | अनेक्ष्यध्वम् | म. |
| | अनेक्ष्ये | अनेक्ष्यावहि | अनेक्ष्यामहि | उ. |

**कर्मणि**—निज्यते। **णिचि**—नेजयति-ते। **सनि**—निनिक्षति-ते। **यङि**—नेनिज्यते। **यङ्लुकि**—नेनिजीति नेनेक्ति। **कृत्सु**—नेजकः-निर्णेजकः-जिका, **णिचि**—नेजकः-जिका, निनिक्षकः-क्षिका, नेनिजकः-जिका, नेक्ता-त्री, नेजयिता-त्री, निनिक्षिता-त्री, नेनिजत्-ती, नेजयन्-न्ती, नेक्ष्यन्-न्ती-ती, नेजयिष्यन्-न्ती-ती, नेनिजानः, नेजयमानः, नेक्ष्यमाणः, नेजयिष्यमाणः, निक्तम्-क्तः-तवान्, नेजितः, निजः, नेजः, नेक्तव्यम्, नेजयितव्यम्, नेजनीयम्, नेग्यम्, नेज्यम्, निज्यमानः, नेज्यमानः, नेगः, नेजः, नेक्तुम्, नेजयितुम्, निक्तिः, नेजना, नेजनम्, निक्त्वा, नेजयित्वा, प्रणिज्य, प्रणेज्य।

( १०९४ ) **विजिर्—पृथग् भावे**। (पृथक् करना, अलग होना)। अकर्म.। अनिट्। उभय.। वेवेक्ति वेविक्तः वेविजति। वेविक्ते वेविजाते वेविजते। इत्यादि 'नेनेक्ति' (१०९३) वत्।

**( १०९५ ) विष्लृ—व्याप्तौ।** (फैलना, प्याप्त होना)। सकर्म.। अनिट्। उभय.। लृदित्।

१. **प्र.** वेवेष्टि वेवेष्टः वेविषति। **म.** वेवेक्षि वेविष्ठः वेविष्ठ। **उ.** वेवेष्मि वेविष्वः वेविष्मः। २. **प्र.** विवेष विविषतुः विविषुः। **म.** विवेषिथ विविषथुः विविष। **उ.** विवेष विविषिव विविषिम। ३. वेष्टा। ४. वेक्ष्यति। ५. **प्र.** वेवेष्टु-वेविष्टात् वेविष्टाम् वेविषतु। **म.** वेविड्ढि-वेविष्ठात् वेविष्टम् वेविष्ट। **उ.** वेविषाणि वेविषाव वेविषाम। ६. अवेवेट्। ७. वेविष्यात्। ८. विष्यात्। ९. अविषत्। १०. अवेक्ष्यत्।

**आत्मनेपदपक्षे**—१. **प्र.** वेविष्टे वेविषाते वेविषते। **म.** वेविक्षे वेविषाथे वेविड्ढ्वे। **उ.** वेविषे वेविष्वहे वेविष्महे। २. **प्र.** विविषे विविषाते विविषिरे। **म.** विविषिषे विविषाथे विविषिध्वे। **उ.** विविषे विविषिवहे विविषिमहे। ३. वेष्टा। ४. वेक्ष्यते। ५. वेविष्टाम्। ६. अवेविष्ट। ७. वेविषीत। ८. विक्षीष्ट। ९. अविक्षत अविक्षाताम् अविक्षन्त। १०. अवेक्ष्यत। 'नेनेक्ति' (१०९३) वत्।

**कृत्सु**—वेष्टव्यम्, वेषणीयम्, वेष्यम्, विष्टः, वेविषत्, वेविषणः, वेष्टुम्, वेष्णम्, विष्ट्वा, परिविष्य, वेषः, विषम्, विष्णुः, परिवेषः, परिवेषणम्। इत्यादि।

**( १०९६ ) घृ—क्षरणदीप्त्योः।** (छान्दसोऽयम्)। (टपकना, क्षरित होना, चमकना, प्रकाशित होना)। क्षरणे सक.। दीप्तावकः। अनिट्। परस्मै.। जिघर्ति। इत्यादि।

**( १०९७ ) हृ—प्रसह्य करणे।** (वलात्कार करना)। सक.। अनि.। पर.। छान्दसः। जिहर्ति जिहर्तः जिहर्ति। इत्यादि।

**( १०९८ ) ऋ—गतौ।** (जाना)। सक.। अनि.। पर.।

१. **प्र.** इयर्ति इयृतः इयृति। **म.** इयर्षि इयृथः इयृथ। **उ.** इयर्मि इयृवः इयृमः। २. **प्र.** आर आरतुः आरुः। **म.** आरिथ आरथुः आर। **उ.** आर आरिव आरिम। ५. इयर्तु। ६. **प्र.** ऐयः ऐयृताम् ऐयरुः। **म.** ऐयः। उ. ऐयरम्। ७. इयृयात्। ८. अर्यात् अर्यास्ताम् अर्यासुः। ९. आरत् आरताम् आरन्। **पक्षे**—आर्षीत् आर्ष्टाम् आर्षुः। १०. आरिष्यत्।

**( १०९९ ) सृ—गतौ।** (जाना)। सक.। अनिट्। पर.। छान्दोऽयम्। ऋकारान्तः। ससर्ति।

**( ११०० ) भस—भर्त्सनदीप्त्योः।** (भयभीत करना, दोष लगाना, चमकना)। भर्त्सने सकर्म.। दीप्तावकर्म.। सेट्। छान्दसोऽयम्।

१. बभस्ति बब्धः वप्सति। २. बभास बप्सतुः। ३. भसिता। ५. बभस्तु-बब्धात्। ६. अबभः अबब्धाम् अबप्सुः। ७. वप्स्यात् वप्स्याताम्। ८. भत्स्यात्। ९. अभसीत्-अभासीत्। इत्यादि।

**( ११०१ ) कि—ज्ञाने।** (जानना, समझना)। **नि**—निश्चय पूर्वक जानना। सक.। अनिट्। पर.। छान्दसः। चिकेति चिकितः चिक्यति। इत्यादि।

**( ११०२ ) तुर—त्वरणे** । (जल्दी करना) । सक. । अनि. । पर. । छान्दसः । तुतोर्ति । इत्यादि ।

**( ११०३ ) धिष—शब्दे** । (शब्द करना) । अकर्म. । सेट् । पर. । १. धिधेष्टि दिधिष्टः दिधिषति । २. दिधेष । ३. धेषिता । ९. अधेषीत् । इत्यादि ।

**( ११०४ ) धन—धान्ये** । (उत्पादन करना, पैदा करना) । अक. । सेट् । पर. । छान्दसोऽयम् । दधन्ति दधन्तः दधनति ।

**( ११०५ ) जन—जनने** । (उत्पन्न करना, पैदा करना) । अक. । सेट् । पर. । छान्दसः । १. जजन्ति जजातः जज्ञति । २. जजान जज्ञतुः । ३. जनिता । ५. जजन्तु । ६. अजजत् । ७. जिजायात् । ८. जन्यात्-जायात् । ९. अजानीत्-अजनीत् । इत्यादि ।

**( ११०६ ) गा—स्तुतौ** । (प्रशंसा करना, सराहना) । सक. । अनि. । परस्मै. । छान्दसोऽयम् । जगाति जिगीतः जिगति । इत्यादि ।

इति जुहोत्यादयः ॥ ३ ॥



# अथ दिवादयः ( ४ )

**( ११०७ ) दिवु—क्रीडाविजिगीषाव्यवहार-द्युति-स्तुतिमोदमद-स्वप्न-कान्तिगतिषु।** (खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यवहार करना, तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, प्रसन्न होना या करना, गर्व करना, सो जाना, चाहना, जाना)। अर्थानुसारेण सकर्मकोऽकर्मकश्च। सेट्। परस्मैपदी।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | दीव्यति[1] | दीव्यतः | दीव्यन्ति | प्र. |
| | दीव्यसि | दीव्यथः | दीव्यथ | म. |
| | दीव्यामि | दीव्यावः | दीव्यामः | उ. |
| लिट् | दिदेव[2] | दिदिवतुः | दिदिवुः | प्र. |
| | दिदेविथ | दिदिवथुः | दिदिव | म. |
| | दिदेव | दिदिविव | दिदिविम | उ. |
| लुट् | देविता | देवितारौ | देवितारः | प्र. |
| | देवितासि | देवितास्थः | देवितास्थ | म. |
| | देवितास्मि | देवितास्वः | देवितास्मः | उ. |
| लृट् | देविष्यति | देविष्यतः | देविष्यन्ति | प्र. |
| | देविष्यसि | देविष्यथः | देविष्यथ | म. |
| | देविष्यामि | देविष्यावः | देविष्यामः | उ. |
| लोट् | दिव्यतु-तात् | टीव्यताम् | दीव्यन्तु | प्र. |
| | दीव्य-तात् | दीव्यतम् | दीव्यत | म. |
| | दीव्यानि | दीव्याव | दीव्याम | उ. |
| लङ् | अदीव्यत् | अदीव्यताम् | अदीव्यन् | प्र. |
| | अदीव्यः | अदीव्यतम् | अदीव्यत | म. |
| | अदीव्यम् | अदीव्याव | अदीव्याम | उ. |
| वि. लि. | दीव्येत् | दीव्येताम् | दीव्येयुः | प्र. |
| | दीव्येः | दीव्येतम् | दीव्येत | म. |
| | दीव्येयम् | दीव्येव | दीव्येम | उ. |
| आ. लि. | दीव्यात् | दीव्यास्ताम् | दीव्यासुः | प्र. |
| | दीव्याः | दीव्यास्तम् | दीव्यास्त | म. |
| | दीव्यासम् | दीव्यास्व | दीव्यास्म | उ. |

१ 'दिवादिभ्यः श्यन्' (१-३-६९) इति श्यन्। शपोऽपवादः। शकारनकारावितौ। 'य' मात्रं शिष्यते। दिव् + य + ति इति स्थिते 'हलि च' (८-२-७७) इति उपाधाया इको दीर्घः। दीव्यति। प्रायोऽस्मिन् विकरणे शब्विकरण इव प्रक्रिया।

२ 'लिटि धातो–' (६-१-८) रिति द्वित्वम्। दिव् दिव्। हलादिशेषः। दिदिव्। 'पुगन्तलघूपदस्य च' (७-३-८६) इति गुणः। दिदेव।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुङ् | अदेवीत् | अदेविष्टाम् | अदेविषुः | प्र. |
| | अदेवीः | अदेविष्टम् | अदेविष्ट | म. |
| | अदेविषम् | अदेविष्व | अदेविष्म | उ. |
| लृङ् | अदेविष्यत् | अदेविष्यताम् | अदेविष्यन् | प्र. |
| | अदेविष्यः | अदेविष्यतम् | अदेविष्यत | म. |
| | अदेविष्यम् | अदेविष्याव | अदेविष्याम | उ. |

**भावकर्मणोः**—१ दीव्यते । २ दिदिवे । ९ अदेवि । **णिचि**—देवयति ९ अदीदिवत् । **सनि**—दिदेविषति । दिद्युषति । **यङि**—देदीव्यते **उठ्भावित्वाद्यङ्लुङ् नास्ति**। **कृत्सु**—देवकः-विका, **णिचि**—देवकः-विका, दिदेविषकः-दुद्यूषकः-षिका, देदिवकः-विका, देविता-त्री, देवयिता-त्री, दीव्यन्-न्ती-मानः, देवयमानः, आद्यूनः, द्यूतम्-द्यूतः-द्यूतवान्, देवितः, देवः-देवी, मनसादेवः, देवकः-देवकी, देवनः, दीव्यमानः, देवितव्यम्, देवयितव्यम्, देवनीयम्, देव्यम्, दिव्यमानः-देव्यमानः, दिवः[१]-त्रिदिवः, देवनम्, देवित्वा[२]-द्यूत्वा, देवयित्वा, प्रदीव्य, प्रदेव्य, किकिदिविः,[३] प्रतिदिवा,[४] द्यौ,[५] द्यौत्रम्[६], देवलः[७] ।

**(११०८) षिवु—(सिव्) तन्तुसन्ताने**। (सीना, सिलाई करना)। सक.। सेट्। पर.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | सीव्यति[८] | सीव्यतः | सीव्यन्ति | प्र. |
| | सीव्यसि | सीव्यथः | सीव्यथ | म. |
| | सीव्यामि | सीव्यावः | सीव्यामः | उ. |
| लिट् | सिषेव | सिषिवतुः | सिषिवुः | प्र. |
| | सिषेविथ | सिषिवथुः | सिषिव | म. |
| | सिषेव | सिषिविव | सिषिविम | उ. |
| लुट् | सेविता | सेवितारौ | सेवितारः | प्र. |
| | सेवितासि | सेवितास्थः | सेवितास्थ | म. |
| | सेवितास्मि | सेवितास्वः | सेवितास्मः | उ. |

१ 'घञर्थे कविधानम्—' (वा. ३-३-५८) इति घञर्थे अधिकरणार्थे कप्रत्ययः । कित्वेनोपधागुणनिषेधः । दिवः = द्युलोकः । त्रिदशाः दीव्यन्तीत्यधिकरणे कप्रत्यये पृषोदरादित्वेन । (६-३-१०९) दशशब्दस्य लोपे त्रिदिवः इति रूपम् । यद्वा, त्रयो देवाः = विष्णुब्रह्मेश्वराः दीव्यन्त्यत्रेति अधिकरणे कप्रत्ययो वा ।

२ 'उदितो वा' (७-२-५६) इति क्त्वायामिड् विकल्पः इट् पक्षे 'न क्त्वा सेट्' (१-२-१८) इति कित्वनिषेधात् गुणः । इडभावपक्षे ऊडादिषु द्यूत्वा इति रूपमिति च ज्ञेयम् ।

३ 'कृविघृष्विच्छविस्थविद किकिदीविः' (द. ३-१-२६) इत्यनेन किन् प्रत्ययान्तो दीर्घोपधश्च निपातितः । 'किकि' इति दीव्यतीति किकिदीविः = चाषः ।

४ औणादिके (द.उ. ६-५१) कनिन् प्रत्यये रूपम् । प्रतिदीव्यतेऽस्मिन् इत्यधिकरणे प्रत्ययः । प्रतिदिवा = दिवसः ।

५ ण्यन्तात् औणादिके (द.उ. ८-४०) क्विपि, णेर्लुकि, देवयतीति द्यौः = स्वर्गोऽन्तरिक्षं वा ।

६ 'दिवेर्द्यु च' (द.उ. ८-८१) इति ष्ट्रन् प्रत्यये 'द्यु' इति प्रकृतेरादेशे वृद्धौ च द्यौत्रम् इति भवति । दीव्यन्ति तस्मिन् सुकृतिनः इति द्यौत्रम् = त्रिदिवः विमानं वा ।

७ वृषादिभ्यश्चित् (द.उ. ८-१०९) इति कल प्रत्यये, बाहुलकात् गुणे च रूपम् । देवलः = ऋषिः ।

८ 'हलि च' (८-२-७७) इति दीर्घः ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृट् | सेविष्यति | सेविष्यतः | सेविष्यन्ति। इत्यादि। | |
| लोट् | सीव्यतु-तात् | सीव्यताम् | सीव्यन्तु | प्र. |
| | सीव्य-तात् | सीव्यतम् | सीव्यत | म. |
| | सीव्यानि | सीव्याव | सीव्याम | उ. |
| लङ् | असीव्यत् | असीव्यताम् | असीव्यन् | प्र. |
| | असीव्यः | असीव्यतम् | असीव्यत | म. |
| | असीव्यम् | असीव्याव | असीव्याम | उ. |
| वि. लि. | सीव्येत् | सीव्येताम् | सीव्येयुः | प्र. |
| | सीव्येः | सीव्येतम् | सीव्येत | म. |
| | सीव्येयम् | सीव्येव | सीव्येम | उ. |
| आ. लि. | सीव्यात् | सीव्यास्ताम् | सीव्यासुः | प्र. |
| | सीव्याः | सीव्यास्तम् | सीव्यास्त | म. |
| | सीव्यासम् | सीव्यास्व | सीव्यास्म | उ. |
| लुङ् | असेवीत् | असेविष्टाम् | असेविषुः | प्र. |
| | असेवीः | असेविष्टम् | असेविष्ट | म. |
| | असेविषम् | असेविष्व | असेविष्म | उ. |
| लृङ् | असेविष्यत् | असेविष्यताम् | असेविष्यन् | प्र. |
| | असेविष्यः | असेविष्यतम् | असेविष्यत | म. |
| | असेविष्यम् | असेविष्याव | असेविष्याम | उ. |

**कर्मणि**—सीव्यते। **णिचि**—सेवयति। **सनि**—सिसेविषति-सुस्यूषति। **यङि**—सेषीव्यते। यङ्लुङ् न। परिषीव्यति। निषीव्यति। विषीव्यति। **कृत्सु**—सेवितव्यम्, सेवनीयम्, सेव्यम्, स्यूतः,[१] स्यूतिः, सीव्यम्, सीव्यन्ती, सेवितुम्, सेवनम्,[२] सीवनम्, प्रसेवकः,[३] सेविष्यन्, सीव्यमानः, सेविष्यमानः, सेवित्वा-स्यूत्वा, निषीव्य, परिषीव्यन्-निषीव्यन्-विषीव्यन्, परिषिषेविषकः-परिषिस्यूषकः-षिका, अनुन्यूतिः, सूत्रम्,[४] सूची,[५] स्यूमः[६] सर्वं दैवादिकदीव्यति (११०७) वत्।

**( ११०९ ) स्रिवु—गतिशोषणयोः**। (जाना, शुष्क होना, सूखना)। सकर्म.। सेट्। पर.। स्रीव्यति। सिस्रेव सिस्रिवतुः। 'सीव्यति' (११०८) वत्।

---

१ क्त्वायाम् सनि च, इड्विकल्पात् निष्ठायामिण्निषेधः। ऊठ्यणादेशौ।

२ ल्युटि सेवनम्, इति रूपम्। 'चान्द्राः भोजीयाश्च लुटि बाहुलाकादुपधादीर्धमिच्छन्ति ष्ठिवुसिवुधात्वोः' इति माधवः तेन सीवनम् इत्यपि यथालक्ष्यं साधु।

३ प्रसीव्यन्ति तमिति प्रसेवः 'कर्तरि च कारके—' (३-३-१९) इति संज्ञायां घञ्। तदन्तात् संज्ञायां कन् प्रत्ययः। प्रसेवकः =वीणाप्रान्ते वक्रकाष्ठम्। इति माधवः।

४ 'सिविमुच्योः—' (द.उ. ८-८३) इति ष्ट्रन् प्रत्ययः, टेरूकारश्च। सूत्रम् = तन्तुः।

५ औणादिकोऽयं कर्तरि निष्पन्नः। सूची = शलाका।

६ औणादिके (द.उ. ७-४०) मन् प्रत्यये रूपमेवम्। स्यूमः = सूत्रतन्तुः।

(१११०) **ष्ठिवु**—**निरसने**। (थूकना, पानी, आदि को मुंह से फैंकना)। सक.। सेट्। परस्मै.।

१.ष्ठीव्यति। २ टिष्ठेव टिष्ठिवतुः। ३.ष्ठेविता। ५.ष्ठीवतु। ६.अष्ठीव्यत्। ७.ष्ठीव्येत्। ८.ष्ठीव्यात्। ९.अष्ठेवीत्। 'सुब्धातुष्ठिवु' इति सत्वनिषेधः। 'ष्ठिवुक्लमु–' (७-३-७५) दीर्घः। अन्यत् सर्वं 'सीव्यति' (११०८) वत्।

(११११) **ष्णुसु (स्नुस्)** —**अदने**। आदान-इत्येके। अदर्शन– इत्यपरे। (खाना, निगलना, ग्रहण करना, लेना, अदर्शन होना, नहीं दिखाई देना)। सक.। सेट्। परस्मै.।

१. स्नुस्यति। २. सुस्णोस सुष्णुसतुः। ३. स्नेसिता। ५. स्नुस्यतु। ६. अस्नुस्यत्। ७. स्नुस्येत्। ८. स्नुस्यात्। ९. अस्नोषीत्। इत्यादि।

(१११२) **ष्णसु (स्नस्)** —**निरसने**। सर्वं 'ष्णुसु' (११११) वत्।

(१११३) **क्नसु**—**ह्वरणदीप्त्योः**। (मन से या शरीर से वक्र होना, चमकना) अक.। सेट्। परस्मै.। उदित्।

१. क्नस्यति क्नस्यतः क्नस्यन्ति। २. चक्नाश चक्नसतुः चक्नसुः। ३. क्नसिता। ४. क्नसिष्यति। ५. क्नस्यतु-क्नस्यात्। ६. अक्नस्यत्। ७. क्नस्येत्। ८. क्नस्यात्। ९. अक्नासीत्। १०. अक्नासीष्यत्। शेषं सर्वं 'यस्' धातुवत्।

(१११४) **व्युष**—**दाहे विभागे च**। (जलना, जलाना, भूनना, दग्ध करना, अलग करना)। सक.। सेट्। परस्मै.।

१.व्युष्यति। २.वुव्योष। ३.व्योषिता। ८.व्युष्यात् दाहार्थे। ९.अव्योषीत्। विभागार्थे षुषादिः ९. अव्युषत्। इत्यादि।

(१११५) **प्लुष**—**दाहे**। (जलाना, जलना)। सक.। सेट्। पर.। प्लुष्यति। पुप्लोष। अप्लोषीत् कर्मादौ 'शोचति' (१८३) वत्।

(१११६) **नृती**—**गात्रविक्षेपे**। (नाचना, नृत्य करना)। अक.। सेट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | नृत्यति | नृत्यतः | नृत्यन्ति | प्र. |
| | नृत्यसि | नृत्यथः | नृत्यथ | म. |
| | नृत्यामि | नृत्यावः | नृत्यामः | उ. |
| लिट् | ननर्त | ननृततुः | ननृतुः | प्र. |
| | ननर्तिथ | ननृतथुः | ननृत | म. |
| | ननर्त | ननृतिव | ननृतिम | उ. |
| लुट् | नर्तिता | नर्तितारौ | नर्तितारः | प्र. |
| | नर्तितासि | नर्तितास्थः | नर्तितास्थ | म. |
| | नर्तितास्मि | नर्तितास्वः | नर्तितास्मः | उ. |
| लृट् | नर्तिष्यति | नर्तिष्यतः | नर्तिष्यन्ति | प्र. |
| | नर्तिष्यसि | नर्तिष्यथः | नर्तिष्यथ | म. |
| | नर्तिष्यामि | नर्तिष्यावः | नर्तिष्यामः | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| पक्षे– | नर्त्स्यति | नर्त्स्यतः | नर्त्स्यन्ति | प्र. |
| | नर्त्स्यसि | नर्त्स्यथः | नर्त्स्यथ | म. |
| | नर्त्स्यामि | नर्त्स्यावः | नर्त्स्यामः | उ. |
| लोट् | नृत्यतु-तात् | नृत्यताम् | नृत्यन्तु | प्र. |
| | नृत्य-तात् | नृत्यतम् | नृत्यत | म. |
| | नृत्यानि | नृत्याव | नृत्याम | उ. |
| लङ् | अनृत्यत् | अनृत्यताम् | अनृत्यन् | म. |
| | अनृत्यः | अनृत्यतम् | अनृत्यत | म. |
| | अनृत्यम् | अनृत्याव | अनृत्याम | उ. |
| वि. लि. | नृत्येत् | नृत्येताम् | नृत्येयुः | प्र. |
| | नृत्येः | नृत्येतम् | नृत्येत | म. |
| | नृत्येयम् | नृत्येव | नृत्येम | उ. |
| आ. लि. | नृत्यात् | नृत्यास्ताम् | नृत्यासुः | प्र. |
| | नृत्याः | नृत्यास्तम् | नृत्यास्त | म. |
| | नृत्यासम् | नृत्यास्व | नृत्यास्म | उ. |
| लुङ् | अनर्तीत् | अनर्तिष्टाम् | अनर्तिषुः | प्र. |
| | अनर्तीः | अनर्तिष्टम् | अनर्तिष्ट | म. |
| | अनर्तिषम् | अनर्तिष्व | अनर्तिष्म | उ. |
| लृङ् | अनर्तिष्यत् | अनर्तिष्यताम् | अनर्तिष्यन् | प्र. |
| | अनर्तिष्यः | अनर्तिष्यतम् | अनर्तिष्यत | म. |
| | अनर्तिष्यम् | अनर्तिष्याव | अतिष्याम | उ. |

पक्षे– अनर्त्स्यत् अनर्त्स्यताम् अनर्त्स्यन् इत्यादि।

**भावे**—नृत्यते। **णिचि**—नर्तयति-ते। **सनि**—निनर्तिषति-निनृत्सति। **यङि**—नरीनृत्यते। **यङ्लुकि**—नर्नर्ति-नरिनर्ति-नरीनर्ति। **कृत्सु**—नर्तकः-र्तिका, निनृत्सकः-निनर्तिषकः-षिका, नरीनृतकः[1]-तिका, नर्तनीयम्, नर्तितव्यम्, नृत्यम्, नृत्तम्, नृत्यन्,[2] नर्तिष्यन्-नत्सर्यन्[3]-न्ती, नर्तितुम्, नर्तनम्, नर्तित्वा, परिनृत्य, नर्तिता, नर्ती, नर्तकी,[4] नर्तयमानः, नर्तनः,[5] नृतूः[6]। इत्यादि तौदादिककृन्ततिवत्।

**(१११७) त्रसी— उद्वेगे**। उद्वेगः = भयम् इति क्षीरस्वामी। (डरना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.।

१ क्षुम्नादिषु (८-४-३९) 'नृत्यतेर्यङि' (ग.सू.) इति पाठात् णत्वनिषेधः।
२ शतरि 'दिवादिभ्यः' (३-१-६९) इति श्यन् प्रत्यये रूपम्।
३ वनं चकार कर्तिश्यन् नत्सर्यन् इव निरङ्कुशः। भ.का. ९-४२।
४ 'शिल्पिनि ष्वुन्' (३-१-१४५) इत्यत्र नृतिखनिरञ्जिभ्यः एव' (वा. ३-१-१४५) इति परिनणनादस्मात् ष्वुन् प्रत्यये रूम्। षित्वात् स्त्रियां ङीष्।
५ 'चलनशब्दार्थादकर्मकात्–' (३-२-१४८) इति तच्छीलादिषु कर्तृषु युच् भवति।
६ 'नृतिशृण्यो कूः' (द.उ. १-१७८) इति कू प्रत्यये रूपम्। नृतूः = दीर्घाकृतिः नर्तकः क्रिमिविशेषो वा।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | त्रस्यति | त्रस्यतः | त्रस्यन्ति | प्र. |
| | त्रस्यसि | त्रस्यथः | त्रस्यथ | म. |
| | त्रस्यामि | त्रस्यावः | त्रस्यामः | उ. |

पक्षे—**प्र.** त्रसति[१] त्रसतः त्रसन्ति। **म.** त्रससि त्रसथः त्रसथ। **उ.** त्रसामि त्रसावः त्रसामः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लिट् | तत्रास | त्रेसतुः-तत्रसतुः | त्रेसुः-तत्रसुः | प्र. |
| | त्रेसिथ-तत्रसिथ | त्रेसथुः-तत्रसथुः | त्रेस-तत्रस | म. |
| | तत्रास-तत्रस | त्रेसिव-तत्रसिव | त्रेसिम-तत्रसिम | उ. |
| लुट् | त्रसिता | त्रसितारौ | त्रसितारः | प्र. |
| | त्रसितासि | त्रसितास्थः | त्रसितास्थ | म. |
| | त्रसितास्मि | त्रसितास्वः | त्रसितास्म | उ. |
| लृट् | त्रसिष्यति | त्रसिष्यतः | त्रसिष्यन्ति इत्यादि। | |
| लोट् | त्रस्यतु-तात् | त्रस्यताम् | त्रस्यन्तु | प्र. |
| | त्रस्य-तात् | त्रस्यतम् | त्रस्यत | म. |
| | त्रस्यानि | त्रस्याव | त्रस्याम | उ. |

पक्षे—त्रसतु-तात् त्रसताम् त्रसन्तु। इत्यादि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लङ् | अत्रस्यत् | अत्रस्यताम् | अत्रस्यन् | प्र. |
| | अत्रस्यः | अत्रस्यतम् | अत्रस्यत | म. |
| | अत्रस्यम् | अत्रस्याव | अत्रस्याम | उ. |

पक्षे—अत्रसत् अत्रसताम् अत्रसन्। इत्यादि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| वि. लि. | त्रस्येत् | त्रस्येताम् | त्रस्येयुः | प्र. |
| | त्रस्येः | त्रस्येतम् | त्रस्येत | म. |
| | त्रस्येयम् | त्रस्येव | त्रस्येम | उ. |

पक्षे—त्रसेत् त्रसेताम् त्रसेयुः इत्यादि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आ. लि. | त्रस्यात् | त्रस्यास्ताम् | त्रस्यासुः | प्र. |
| | त्रस्याः | त्रस्यास्तम् | त्रस्यास्त | म. |
| | त्रस्यासम् | त्रस्यास्व | त्रस्यास्म | उ. |
| लुङ् | अत्रसीत् | अत्रसिष्टाम् | अत्रसिषुः | प्र. |
| | अत्रसीः | अत्रसिष्टम् | अत्रसिष्ट | म. |
| | अत्रसिषम् | अत्रसिष्व | अत्रसिष्म | उ. |
| लृङ् | अत्रसिष्यत् | अत्रसिष्यताम् | अत्रसिष्यन् इत्यादि। | |

**भावे**—त्रस्यते। **णिचि, सनि, यङि, यङ्लुकि** च 'गदति' (५२) वत्। **कृत्सु**—त्रासकः-सिका, **णिचि**—त्रासकः-सिका, तित्रासिषकः-षिका, तात्रसकः-सिका, त्रसिता-त्री, त्रासयिता-त्री, त्रस्यन्[२]-त्रसन्-न्ती, त्रासयन्-न्ती, त्रसिष्यन्-न्ती-ती,

१ 'वा भ्राशम्लाश–' (३-१-७०) इति श्यन् विकल्पेन रूपद्वयम्।

२ 'वा भ्राशम्लान–' (३-१-७०) इति श्यन्विसल्पः। तेन रूपद्वयम्। प्राप्तविभाषेयम्, तेन पक्षे शप् भवति।

त्रासयिष्यन्-न्ती-ती, त्रासयमानः, त्रासयिष्यमाणः, त्रस्तम्,[१] त्रासितः, त्रसः, वित्रासी, तत्रसिवान्-त्रेसिवान्, त्रस्नुः,[२] त्रासः,[३] त्रसितव्यम्-त्रासयितव्यम्, त्रसनीयम्, त्रासनीयम्, त्रास्यम्, त्रस्यमानः, त्रास्यमानः, त्रासः, त्रसितुम्, त्रासित्वा, त्रासयित्वा, प्रत्रस्य, प्रत्रेस्य।

(१११८) **कुथ—पूतीभावे**। पूतीभावः = दौर्गन्ध्यम्। (बदबू आना, दुर्गन्ध आना)। अक.। सेट्। परस्मै.।

१. कुथ्यति। २. **प्र.** चुकोथ चुकुथतुः चुकुथुः। **म.** चुकोथिथ चुकुथथुः चुकुथ। **उ.** चुकोथ चुकुथिव चुकुथिम। ३. कोथिता। ४. कोथिष्यति। ५. कुथ्यतु कुथ्यतात्। ६. अकुथ्यत्। ७. कुथ्येत्। ८. कुथ्यात्। ९. **प्र.** अकोथीत् अकोथिष्टाम् अकोथिषुः। **म.** अकोथीः अकोथिष्टम् अकोथिष्ट। **उ.** अकोथिषम् अकोथिष्व अकोथिष्म। १०. अकोथिष्यत्। शेषं 'कुप्यति' वत्।

(१११९) **पुथ—हिंसायाम्**। (दुख देना, मारना)। सक.। सेट्। परस्मै.। पुथ्यति पुथ्यतः पुथ्यन्ति इत्यादि। 'कुथ्यति' (१११८) वत्।

(११२०) **गुध—परिवेष्टने**। (घेरना)। सक.। सेट्। पर.। गुध्यति। जुगोध। 'कुथ्यति' (१११८) वत्। गुधित्वा, गोधा, गोधिका।

(११२१) **क्षिप—प्रेरणे**। (फेकना)। सक.। अनिट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | क्षिप्यति | क्षिप्यतः | क्षिप्यन्ति | प्र. |
| | क्षिप्यसि | क्षिप्यथः | क्षिप्यथ | म. |
| | क्षिप्यामि | क्षिप्यावः | क्षिप्यामः | उ. |
| लिट् | चिक्षेप | चिक्षिपतुः | चिक्षिपुः | प्र. |
| | चिक्षेपिथ | चिक्षिपथुः | चिक्षिप | म. |
| | चिक्षेप | चिक्षिपिव | चिक्षिपिम | उ. |
| लुट् | क्षेप्ता | क्षेप्तारौ | क्षेप्तारः | प्र. |
| | क्षेप्तासि | क्षेप्तास्थः | क्षेप्तास्थ | म |
| | क्षेप्तास्मि | क्षेप्तास्वः | क्षेप्तास्मः | उ. |
| लृट् | क्षेप्स्यति | क्षेप्स्यतः | क्षेप्स्यन्ति | प्र. |
| | क्षेप्स्यसि | क्षेप्स्यथः | क्षेप्स्यथ | म. |
| | क्षेप्स्यामि | क्षेप्स्यावः | क्षेप्स्यामः | उ. |
| लोट् | क्षिप्यतु-तात् | क्षिप्यताम् | क्षिप्यन्तु | प्र. |
| | क्षिप्य | क्षिप्यतम् | क्षिप्यत | म. |
| | क्षिप्याणि | क्षिप्याव | क्षिप्याम | उ. |

१ 'श्वीदितो निष्ठायाम्' (७-२-१४) इति इण्णिषेधः।
२ 'त्रसिगृधिक्षिपेः क्नुः' (३-२-१४०) इति ताच्छीलिकः क्नुप्रत्ययः। 'नेड् वशि कृति' (७-२-८) इतीण्णिषेधः।
३ 'हलश्च' (३-३-१२१) इति संज्ञायां घञ्। त्रासः = भयम् मणिदोषो वा।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लङ् | अक्षिप्यत् | अक्षिप्यताम् | अक्षिप्यन् | प्र. |
| | अक्षिप्यः | अक्षिप्यतम् | अक्षिप्यत | म. |
| | अक्षिप्यम् | अक्षिप्याव | अक्षिप्याम | उ. |
| वि. लि. | क्षिप्येत् | क्षिप्येताम् | क्षप्येयुः | प्र. |
| | क्षिप्येः | क्षिप्येतम् | क्षिप्येत | म. |
| | क्षिप्येयम् | क्षिप्येव | क्षिप्येम | उ. |
| आ. लि. | क्षिप्यात् | क्षिप्यास्ताम् | क्षिप्यासुः | प्र. |
| | क्षिप्याः | क्षिप्यास्तम् | क्षिप्यास्त | म. |
| | क्षिप्यासम् | क्षिप्यास्व | क्षिप्यास्म | उ. |
| लुङ् | अक्षैप्सीत् | अक्षैप्ताम् | अक्षैप्सुः | प्र. |
| | अक्षैप्सीः | अक्षैप्तम् | अक्षैप्त | म. |
| | अक्षैप्सम् | अक्षैप्स्व | अक्षैप्स्म | उ. |
| लृङ् | अक्षेप्स्यत् | अक्षेप्स्यताम् | अक्षेप्स्यन् | प्र. |
| | अक्षेप्स्यः | अक्षेप्स्यतम् | अक्षेप्स्यत | म. |
| | अक्षेप्स्यम् | अक्षेप्स्याव | अक्षेप्स्याम | उ. |

**कर्मणि**—क्षिप्यते। **णिचि**—क्षेपयति-ते। **सनि**—चिक्षिप्सति। **यङि**—चेक्षिप्यते। **यङ्लुकि**—चेक्षिपीति-चेक्षिप्ति। **कृत्सु**—क्षेप्तव्यम्, क्षेपनीयम्, क्षेप्यम्, क्षिप्तः, क्षिप्यन्, क्षेप्तुम्, क्षेपणम्, क्षित्वा, प्रक्षिप्य, क्षेपः, आक्षेपः, निक्षेपः।

**( ११२२ ) पुष्प—विकसने**। (पुष्प युक्त होना, फूलना, विकसित होना)। अक.। सेट्। परस्मै.।

१. पुष्यति। २. **प्र.** पुपुष्प पुपुष्पतुः पुपुष्पुः। **म.** पुपुष्पिथ पुपुष्पथुः पुपुष्प। **उ.** पुपुष्प पुपुष्पिव पुपुष्पिम। ३. पुष्पिता। ४ पुष्पिष्यति ५ पुष्पयतु-पुष्यतात् पुष्ताम् पुष्यन्तु। **म.** पुष्य-पुष्यतात् पुष्यतम् पुष्यत। **उ.** पुष्याणि पुष्याव पुष्याम। ६. प्र. अपुष्यत्। ७. पुष्येत् पुष्येताम् पुष्येयुः। ८. **प्र.** पुष्यात् पुष्यास्ताम् पुष्यासुः। **म.** पुष्याः पुष्यास्तम् पुष्यास्त। **उ.** पुष्यासम् पुष्यास्व पुष्यास्म। ८. **प्र.** अपुष्पीत् अपुष्पीष्टाम् अपुष्पिषुः **म.** अपुष्पीः अपुष्पिष्टम् अपुष्पिष्ट। **उ.** अपुष्पिषम् अपुष्पिष्व अपुष्पिष्म। १०. अपुष्पिष्यत्।

**भावे**—पुष्पयते। **णिचि**—पुष्पयति-ते। **सनि**—पुपुष्पिषति। **यङि**—पोपुष्यते। **कृत्सु**—पुष्पकः-ष्पिका, णिचि—पुष्पकः-ष्पिका, पुपुष्पिषकः-षिका, पोपुष्पकः-ष्पिका, पुष्पम्, शतरि-पुष्यन्-न्ती, पुष्पनीयम्, पुष्पितव्यम्, पुष्पणम्, पुष्पिता, पुष्पितः, पुष्पा, पुष्पितुम्, पुष्पित्वा, सम्पुष्य, पुष्यन्, पुष्पिष्यन्-न्ती-ती, इत्यादि भौवादिक 'जल्पति' वत्।

**( ११२३ ) तिम—आर्द्रीभावे**। (आर्द्र होना, गीला होना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.। तिम्यति तिम्यतः तिम्यन्ति इत्यादि 'क्षिप्यति' (११२१) वत्।

**( ११२४-२५ ) ष्टिम-ष्टीम—आर्द्रीभावे**। (गीला होना, भीगना)। अक.। सेट्। परस्मै.।

१.स्तिम्यति। २.तिष्टेम। ३.स्तेमिता। ८.स्तिम्यात्। ९.अस्तेमीत्। एवं १.स्तीम्यति। २. तिष्टीम। ३. स्तीमिता। ८. स्तीम्यात्। ९. अस्तीमीत्। इत्यादि।

( ११२६ ) **व्रीड—चोदने लज्जायाश्च**। चोदनं = लज्जा। प्रेरणे इत्येकः (लज्जित होना, शरमाना, प्रेरित करना)। चोदने सकर्म.। सेट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | व्रीड्यति | व्रीड्यतः | व्रीड्यन्ति | प्र. |
| | व्रीड्यसि | व्रीड्यथः | व्रीड्यथ | म. |
| | व्रीड्यामि | व्रीड्यावः | व्रीड्यामः | उ. |
| लिट् | विव्रीड | विव्रीडतुः | विव्रीडुः | प्र. |
| | विव्रीडिथ | विव्रीडथुः | विव्रीड | म. |
| | विव्रीड | विव्रीडिव | विव्रीडिम | उ. |
| लुट् | वीडिता | व्रीडितारौ | व्रीडितारः। इत्यादि। | |
| लृट् | व्रीडिष्यति | व्रीडिष्यतः | व्रीडिष्यन्ति। इत्यादि। | |
| लोट् | व्रीड्यतु-तात् | व्रीड्यताम् | व्रीड्यन्तु | प्र. |
| | व्रीड्य-तात् | व्रीड्यतम् | व्रीड्यत | म. |
| | व्रीड्यानि | व्रीड्याव | व्रीड्याम | उ. |
| लङ् | अव्रीड्यत् | अव्रीड्यताम् | अव्रीड्यन् | प्र. |
| | अव्रीड्यः | अव्रीड्यतम् | अव्रीड्यत | म. |
| | अव्रीड्यम् | अव्रीड्याव | अव्रीड्याम | उ. |
| वि. लि. | व्रीड्येत् | व्रीड्येताम् | व्रीड्येयुः | प्र. |
| | व्रीड्येः | व्रीड्येतम् | व्रीड्येत | म. |
| | व्रीड्येयम् | व्रीड्येव | व्रीड्येम | उ. |
| आ. लि. | व्रीड्यात् | व्रीड्यास्ताम् | व्रीड्यासुः | प्र. |
| | व्रीड्याः | व्रीड्यास्तम् | व्रीड्यास्त | म. |
| | व्रीड्यासम् | व्रीड्यास्व | व्रीड्यास्म | उ. |
| लुङ् | अव्रीडीत् | अव्रीडिष्टाम् | अव्रीडिषुः | प्र. |
| | अव्रीडीः | अव्रीडिष्टम् | अव्रीडिष्ट | म. |
| | अव्रीडिषम् | अव्रीडिष्व | अव्रीडिष्म | उ. |
| लृङ् | अव्रीडिष्यत् | अव्रीडिष्यताम् | अव्रीडिष्यन् इत्यादि। | |

**भावे**—व्रीड्यते। **कृत्सु**—व्रीडकः-डिका, विव्रीडिषकः-षिका, वेव्रीडकः-डिका, व्रीडिता-त्री, व्रीडयिता-त्री, विव्रीडिषिता-त्री, वेव्रीडिता-त्री, व्रीडः, आव्रीडः, व्रीडा। इत्यादि भौवादिक क्रीडति वत्।

( ११२७ ) **इष—गतौ**। (जाना)। सक.। सेट्। परस्मै.।

१. **प्र.** इष्यति। २. **प्र.** इयेष ईषतुः। **म.** इयेषिथ। **उ.** इयेष ईषिव ईषिम। ३. एषिता। ४. एषिष्यति। ५. इष्यतु। ६. ऐष्यत्। ७. इष्येत्। ८. इष्यात्। ९. ऐषीत्। १०. ऐषिष्यत्।

**कर्मणि**—इष्यते। **णिचि**—एषयति-ते। **सनि**—एषिषिषति। **कृत्सु**—एषितव्यम्, एषणीयम्, एष्यम् इषितः, इष्यन्-न्ती, एषितुम्, एषणम्, एषित्वा, प्रेष्य, पर्येषणा, अन्वेषणा, प्रैषः, प्रैष्यः, अन्वेषयति।

**(११२८) षह—चक्यर्थे**। चकर्थः = तृप्तौ प्रतिघाते च। (तृप्त होना, सहन करना, प्रतिरोध करना) अक.।सेट्। पर.।

१. सह्यति। २. **प्र.** ससाह सेहतुः सेहुः। **म.** सेहिथ सेहथुः सेह। **उ.** ससाह-ससह सेहिव सेहिम। ३. सहिता। ४. सहिष्यति। ५. सह्यतु-तात्। ६. असह्यत्। ७. सह्येत्। ८. सह्यात्। ९. असहीत्। १०. असहिष्यत्। कृत्सु सर्वाणि रूपाणि षह—मर्षणे (८५२) वत्।

**(११२९) षुह—चकर्थे**। (तृप्त होना, सहना, प्रतिरोध करना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.। सुह्यति। सुषोह। इत्यादि। 'कुच्' धातुवत्।

**(११३०) जॄष—वयोहानौ**। (जीर्ण होना, वृद्ध होना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | जीर्यति[१] | जीर्यतः | जीर्यन्ति | प्र. |
| | जीर्यसि | जीर्यतः | जीर्यथ | म. |
| | जीर्यामि | जीर्यावः | जीर्यामः | उ. |
| लिट् | जजार | जजरतुः-जेरतुः | जेरुः-जजरुः | प्र. |
| | जजरिथ-जेरिथ | जेरथुः-जजरथुः | जेर-जजर | म. |
| | जजार-जजर | जजरिव-जेरिव | जजरिम-जेरिम | उ. |
| लुट् | जरिता | जरितारौ | जरितारः | प्र. |
| | जरितासि | जरितास्थः | जरितास्थ | म. |
| | जरितास्मि | जरितास्वः | जरितास्मः | उ. |

पक्षे—जरीता जरीतारौ जरीतारः इत्यादि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृट् | जरिष्यति | जरिष्यतः | जरिष्यन्ति | प्र. |
| | जरिष्यसि | जरिष्यथः | जरिष्यथ | म. |
| | जरिष्यामि | जरिष्यावः | जरिष्यामः | उ. |

पक्षे—जरीष्यति जरीष्यतः जरीष्यन्ति इत्यादि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लोट् | जीर्यतु-जीर्यतात् | जीर्यताम् | जीर्यन्तु | प्र. |
| | जीर्य-जीर्यतात् | जीर्यतम् | जीर्यत | म. |
| | जीर्याणि | जीर्याव | जीर्याम | उ. |
| लङ् | अजीर्यत् | अजीर्यताम् | अजीर्यन् | प्र. |
| | अजीर्यः | अजीर्यतम् | अजीर्यत | म. |
| | अजीर्यम् | अर्जयाव | अजीर्याम | उ. |
| वि. लि. | जीर्येत् | जीर्येताम् | जीर्येयुः | प्र. |
| | जीर्येः | जीर्येतम् | जीर्येत | म. |
| | जीर्येयम् | जीर्येव | जीर्येम | उ. |

१ 'ऋत इद्धातोः' इति रपरत्वम् - जिर् 'हलि च' इति दीर्घः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आ. लि. | जीर्यात् | जीर्यास्ताम् | जीर्यासुः | प्र. |
| | जीर्याः | जीर्यास्तम् | जीर्यास्त | म. |
| | जीर्यासम् | जीर्यास्व | जीर्यास्म | उ. |
| लुङ् | अजरत् | अजरताम् | अजरन् | प्र. |
| | अजरः | अजरतम् | अजरत | म. |
| | अजरम् | अजराव | अजराम | उ. |

पक्षे—**प्र.** अजारीत् अजारिष्टाम् अजारिषुः। **म.** अजारीः अजारिष्टम् अजारिष्ट। **उ.** अजारिषम् अजारिष्व अजारिष्म।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृङ् | अजरिष्यत् | अजरिष्यताम् | अजरिष्यन् | प्र. |
| | अजरिष्यः | अजरिष्यतम् | अजरिष्यत | म. |
| | अजरिष्यम् | अजरिष्याव | अजरिष्याम | उ. |
| पक्षे— | अजरीष्यत् | अजरीष्यताम् | अजरीष्यन् इत्यादि। | |

**भावे**—जीर्यते। २. जेरे-जजरे। ९. अजारि। **णिचि**—जरयति-ते। **सनि**—जिजीर्षति जिजरिषति जिजरीषति। **यङि**—जेजीर्यते। **यङ्लुकि**—जाजरीति-जाजर्ति। **कृत्सु**—जारकः-रिका, जारकः[1]-रिका, जिजरीषकः-जिजरिषकः-जिजीर्षकः-र्षिका, जेजिरकः-रिका, जरीता-जरिता-त्री, जरयिता-त्री, जिजरीषिता-जिजरिषिता-जिजीर्षिता-त्री, जेजिरिता-त्री, जीर्यन्-न्ती, जरयन्-न्ती, जरीष्यन्-जरिष्यन्-न्ती-ती, जरयिष्यन्-न्ती-ती, जरयमाणः, जरीष्यमाणः, जीः[2]-जिरौ-जिरः, अनुजीर्णः, जीर्णः-जीर्णम्[3]-जीर्णवान्, जरितः-तवान्, जरः, जरन्, जरीतव्यम्-जरितव्यम्, जरयितव्यम्, जरणीयम्, अजर्यम्, जार्यम्, जर्यम्, ईषज्जरः-दुर्जरः-सुजरः, जीर्यमाणः, जर्यमाणः, जारः, जरीतुम्-जरितुम्, जरयितुम्, जरा, जरणा, जरणम्, जरीत्वा-जरित्वा, जरयित्वा, प्रजीर्य, प्रजरय्य।

**(११३१) झॄष**—वयोहानौ। (वृद्ध होना)। अक.। सेट्। परस्मै.। झीर्यति। 'जीर्यति' (११३०) वत्।

**(११३२) षूङ्**—प्राणिप्रसवे। (गर्भ धारण करना, जनना, उत्पन्न कना)। सक.। वेट्। आत्मने.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | सूयते | सूयेते | सूयन्ते | प्र. |
| | सूयसे | सूयेथे | सूयध्वे | म. |
| | सूये | सूयावहे | सूयामहे | उ. |

१ 'जनीजृष—' (ग.सू. भ्वादौ) इत्यत्र षित्करणेनास्य मित्— संज्ञाभावात् 'मितां ह्रस्वः' (६-४-९२) इत्युपधाह्रस्वो न। एवं ण्यन्ते सर्वत्र बोध्यम्।

२ क्विपि इत्वे रपरत्वे, 'र्वोरुपधाया दीर्घ इकः' (८-२-७६) इति दीर्घः।

३ 'श्र्युकः किति' (७-२-११) इति इण्णिषेधः। इत्वरपरत्वयोः, 'रदाभ्यां निष्ठातो नः पूर्वस्य च दः' (८-२-४२) इति निष्ठानत्वे, णत्वे च रूपम्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लिट् | सुषुवे | सुषुवाते | सुषुविरे | प्र. |
| | सुषुविषे | सुषुवाथे | सुषुविड्ढ्वे-ध्वे | म. |
| | सुषुवे | सुषुविवहे | सुषुविमहे | उ. |
| लुट् | सविता | सवितारौ | सवितारः इत्यादि। | |

पक्षे—सोता सोतारौ सोतारः इत्यादि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृट् | सविष्यते | सविष्येते | सविष्यन्ते | प्र. |
| | सविष्यसे | सविष्येथे | सविष्यध्वे | म. |
| | सविष्ये | सविष्यावहे | सविष्यामहे | उ. |

पक्षे—प्र. सोष्यते सोष्येते सोष्यन्ते। म. सोष्यसे सोष्येथे सोष्यध्वे। उ. सोष्ये सोष्यावहे सोष्यामहे।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लोट् | सूयताम् | सूयेताम् | सूयन्ताम् | प्र. |
| | सूयस्व | सूयेथाम् | सूयध्वम् | म. |
| | सूयै | सूयावहै | सूयामहै | उ. |
| लङ् | असूयत | असूयेताम् | असूयन्त | प्र. |
| | असूयथाः | असूयेथाम् | असूयध्वम् | म. |
| | असूये | असूयावहि | असूयामहि | उ. |
| वि. लि. | सूयेत | सूयेयाताम् | सूयेरन् | प्र. |
| | सूयेथाः | सूयेयाथाम् | सूयेध्वम् | म. |
| | सूयेय | सूयेवहि | सूयेमहि | उ. |
| आ. लि. | सविषीष्ट | सविषीयास्ताम् | सविषीरन् | प्र. |
| | सविषीष्ठाः | सविषीयास्थाम् | सविषीड्वम्-ध्वम् | म. |
| | सविषीय | सविषीवहि | सविषीमहि | उ. |

पक्षे—प्र. सोषीष्ट सोषीयास्ताम् सोषीरन्। म. सोषीष्टाः सोषीयास्थाम् सोषीढ्वम्। उ. सोषीय सोषीवहि सोषीमहि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुङ् | असविष्ट | असविषाताम् | असविषत | प्र. |
| | असविष्ठाः | असविषाथाम् | असविढ्वम्-ड्ढ्वम्-ध्वम् | म. |
| | असविषि | असविष्वहि | असविष्महि | उ. |

पक्षे—प्र. असोष्ट असोषाताम् असोषत। म. असोष्ठाः असोषाथाम् असोढ्वम्-ड्ढ्वम्-ध्वम्। उ. असोषि असोष्वहि असोष्महि।

| | | | |
|---|---|---|---|
| लृङ् | असविष्यत | असविष्येताम् | असविष्यन्त इत्यादि। |

पक्षे—असोष्यत असोष्येताम् असोष्यन्त इत्यादि।

**कर्मणि**—सूयते। णिजादिषु 'सवति' (९४१) वत्। **कृत्सु**—सवितव्यम्-सोतव्यम्, सवनीयम्, सव्यम्, साव्यम्, सूनः, सूयमानः, सवितुम्, सोतुम्, सवनम्, सवित्वा, सूत्वा, प्रसूय। इत्यादि दैवादिक कूङ् धातुवत्।

**(११३३) दूङ्—परितापे**। परितापः = दुःखम्। (दुःख देना)। अक.। सेट्। आत्मने.। दूयते। सर्वं 'सूयति' (११३२) वत्। किन्त्वयं नित्यं सेट्।

**(११३४) दीङ्—क्षये**। (ह्रास होना, झरना, नाश होना)। अकर्म.। अनिट्। आत्मने.।

१. दीयते। २. **प्र.** दिदीये दिदीयाते दिदीयिरे। **म.** दिदीयिषे दिदीयाथे दिदीयिध्वे-ढ्वे। **उ.** दिदीये दिदीयिवहे दिदीयिमहे। ३. दाता। ४. दास्यते। ५. दीयताम्। ६. अदीयत। ७. दीयत। ८. दासीष्ट। ९. **प्र.** अदास्त अदासाताम् अदासत। म. अदास्थाः अदासाथाम् अदाध्वम्। **उ.** अदासि अदास्वहि अदास्महि। १०. अदास्यत।

**कृत्सु**—दायकः-यिका, दापकः-पिका, दिदीषकः-दिदासकः-दित्सकः-त्सिका, दाता-त्री, दापयिता-त्री, दापयन्-न्ती, दापयिष्यन्-न्ती-ती, दीपमानः, दापयमानः, दास्यमानः, दीनः-दीनम्-दीनवान्, दापितः, उपदायः, प्रदः, दापः, दातव्यम्, प्रणिदानीयम्-प्रनिदानीयम्, दापनीयम्, देयम्, दाप्यम्, दीयमानः, दाप्यमानः, दातुम्, दापयितुम्, दातिः, दापना, दानम्, दापनम्, दत्वा, दापयित्वा, प्रदाय, प्रदाप्य।

**(११३५) डीङ्—विहायसा गतौ**। (आकाश में उड़ जाना, उड़ना। **उत्**—ऊपर उड़ना, **अव**—आकाश से उतरना, **परि**—चक्राकार उड़ना, **प्र**—चपलता से उड़ना, **सम्**—समूह के साथ उड़ना)। अक.। सेट्। आत्मने.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | डीयते | डीयेते | डियन्ते | प्र. |
| | डीयसे | डीयेथे | डीयध्वे | म. |
| | डीये | डीयावहे | डीयामहे | उ |
| लिट् | डिड्ये | डिड्याते | डिड्यिरे | प्र. |
| | डिड्यिषे | डिड्याथे | डिड्यिध्वे | म. |
| | डिड्ये | डिड्यिवहे | डिड्यिमहे | उ. |
| लुट् | डयिता | डयितारौ | डयितारः | प्र. |
| | डयितासे | डयितासाथे | डयिताध्वे | म. |
| | डयिताहे | डयितास्वहे | डयितास्महे | उ. |
| लृट् | डयिष्यते | डयिष्येते | डयिष्यन्ते | प्र. |
| | डयिष्यसे | डयिष्येथे | डयिष्यध्वे | म. |
| | डयिष्ये | डयिष्यावहे | डयिष्यामहे | उ. |
| लोट् | डीयताम् | डीयेताम् | डीयन्ताम् | प्र. |
| | डीयस्व | डीयेथाम् | डीयध्वम् | म. |
| | डीयै | डीयावहै | डीयामहै | उ. |
| लङ् | अडीयत | अडीयेताम् | अडीयन्त | प्र. |
| | अडीयथाः | अडीयेथाम् | अडीयध्वम् | म. |
| | अडीये | अडीयावहि | अडीयामहि | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| वि. लि. | डीयेत | डीयेयाताम् | डीयेरन् | प्र. |
| | डीयेथाः | डीयेयाथाम् | डीयेध्वम् | म. |
| | डीयेय | डीयेवहि | डीयेमहि | उ. |
| आ. लि. | डयिषीष्ट | डयिषीयास्ताम् | डयिषीरन् | प्र. |
| | डयिषीष्टाः | डयिषीयास्थाम् | डयिषीढ्वम्-ध्वम् | म |
| | डयिषीय | डयिषीवहि | डयिषीमहि | उ. |
| लुङ् | अडयिष्ट | अडयिषाताम् | अडयिषत | प्र. |
| | अडयिष्ठाः | अडयिषाथाम् | अडयिढ्वम्-ढ्वम् | म. |
| | अडयिषि | अडयिष्वहि | अडयिष्महि | उ. |
| लृङ् | अडयिष्यत | अडयिष्येताम् | अडयिष्यन्त इत्यादि । | |

**भावे**—डीयते अन्यत्सर्वं 'डयति' (९६८) वत् ।

**कृत्सु**—डायकः[१]-यिका, डायकः-यिका, डिडयिषकः-षिका, डेडीयकः-यिका, डयिता-त्री, डाययिता-त्री, डिडयिषिता-त्री, डेडीयिता-त्री, डाययन्-न्ती, डाययिष्यन्-न्ती-ती, डयमानः, डायमानः, डाययिष्यन्-न्ती-ती, डयमानः, डायमानः, डिडयिष्यमाणः, डेडीयमानः, डयिष्यमाणः, डाययिष्यमाणः, उड्डीः[२]-उड्ड्यौ-उड्ड्यः, डयितः-डियितः-तम्, डायितः,[३] डयः, डायः, डयितव्यम्, डाययितव्यम्, डयनीयम्, डायनीयम्, डेयम्, डाय्यम्, डीयमानः, डाय्यमानः, डयः[४] डायः, डिडयिषः, डेडीयः, डयितुम्, डाययुतम्, डीतिः,[५] सुडीतिः, डायना, डयनम्, डायनम्, डयित्वा, डाययित्वा, उड्डीय, उड्डाय्य ।

**(११३६) धीङ्—आधारे** । (धारण करना, आधारभूत होना । गुप्त होना, छिप जना) । सक. । अनिट् । आत्मने. । ईकारान्तः ।

१. **प्र.** धीयते धीयेते धीयन्ते । **म.** धीयसे धीयेथे धीयध्वे । **उ.** धीये धीयावहे धीयामहे । २. **प्र.** दीध्ये दीध्याते दिध्यिरे । **म.** दिध्यिषे दिध्याथे दिध्यिध्वे-ध्यिढ्वे । **उ.** दिध्ये दिध्यिवहे दिध्यिमहे । ३. धेता । ४. धेष्यते । ५. **प्र.** धीयताम् धीयेताम् धीयन्ताम् । **म.** धीयस्व धीयेथाम् धीयध्वम् । **उ.** धीयै धीयावहै धीयामहै । ६. **प्र.** अधीयत अधीयेताम् अधीयन्त । **म.** अधीयथाः अधीयेथाम् अधीयध्वम् । **उ.** अधीये अधीयावहि अधीयामहि । ७. **प्र.** धीयेत धीयेयाताम् धीयेरन् । **म.** धीयेथाः धीयेयाथाम् धीयेध्वम् । **उ.** धीयेय धीयेवहि धीयेमहि । ८. **प्र.** धेषीष्ट धेषीयास्ताम् धेषीरन् । **म.** धेषीष्ठाः धेषीयास्थाम् धेषीढ्वम् । **उ.** धेषीय धेषीवहि धेषीमहि ।

१ 'अचो ञ्णिति' (७-२-११५) इति वृद्धौ आयादेशः ।
२ क्विपि, द्विवचने, 'एरनेकाचः–' (६-२-८२) इति यणादेशः ।
३ 'निष्ठा शीङ्–' (१-२-१९) इत्यत्र 'निष्ठा' इति योगविभागमभ्युपगम्य, अन्यत्रापि क्वचित् सेटो निष्ठायाः कित्वनिषेधात् गुणायादेशयोः सतोः डयितः-डयितवान् इति रूपं पारायणिकाः साधयन्ति । योगविभागानभ्युपगमे । 'अचि श्नुधातु–' (६-४-७७) इति यङादेशे डियितः-डियितवान् इति रूपमिति केचिद् वर्णयन्ति ।
४ 'एरच्' (३-३-५६) इति भावे घञपवादोऽच् प्रत्ययः ।
५ 'तितुत्र–' (७-२-९) इतीण्णिषेधः ।

९.प्र. अधेष्ट अधेषाताम् अधेषत। म. अधेष्ठाः अधेषाथाम् अधेढ्वम्। उ. अधेषि अधेष्वहि अधेष्महि। १०. अधेष्यत।

कृत्सु—धायकः-यिका, धायकः-यिका, दिधीषकः-षिका, देधीयकः-यिका, धेता-त्री, धाययिता-त्री, दिधीषिता-त्री, देधीयिता-त्री, धाययन्-न्ती, धाययिष्यन्-न्ती-ती, धीयमानः, धाययमानः, दिधीषमाणः, देधीयमानः, धेष्यमाणः, धाययिष्यमाणः, देधीषिष्यमाणः, देधीयिष्यमाणः, प्रधीः-प्रध्यौ-प्रध्यः, धीनम्, धीनः-धीनवान्, अधीनः, धायितः, धिधीषितः, देधीयितः-तवान्, धयः, धायः, दिधीषुः देध्यः, धेतव्यम्, धाययितव्यम्, धयनीयम्, धायनीयम्, धेयम्, धाय्यम्, दिधीष्यम्, देधीय्यम्, धीयमानः, धाय्यमानः, दिधीष्यमाणः, देधीय्यमानः, धयः, धायः, दिधीषः, देधीयः, धेतुम्, धाययितुम्, धीतिः, धायना. धयनम्, धायनम्, दिधीषणम्, देधीयनम्, धीत्वा, धाययित्वा, प्रधीय, प्रधाय्य।

**(११३७) मीङ्—हिंसायाम्**। (मारना, देह त्याग करना)। **अनु**—अनुमान करना। अक.। अनिट्। आत्म.।

१.प्र. मीयते मीयेते मीयन्ते। म. मीयसे मीयेथे मीयध्वे। उ. मीये मीयावहे मीयामहे। २.प्र. मिम्ये मिम्याते मिम्यिरे। म. मिम्यिषे मिम्याथे मिम्यिढ्वे-ध्वे। उ. मिम्ये मिम्यिवहे मिम्यिमहे। ३. मेता मेतारौ मेतारः। ४. मेष्यते मेष्येते मेष्यन्ते। ५. प्र. मीयताम् मीयेताम् मीयन्ताम्। म. मीयस्व मीयेथाम् मीयध्वम्। उ. मीयै मीयावहै मीयामहै। ६. प्र. अमीयत अमीयेताम् अमीयन्त। म. अमीयथाः अमीयेथाम् अमीयध्वम्। उ. अमीये अमीयावहि अमीयामहि। ७. प्र. मीयेत मीयेयाताम् मीयेरन्। म. मीयेथाः मीयेयाथाम् मीयेध्वम्। उ. मीयेय मीयेवहि मीयेमहि। ८. प्र. मेषीष्ट मेषीयास्ताम् मेषीरन्। म. मेषीष्ठाः मेषीयास्थाम् मेषीढ्वम्। उ. मेषीय मेषीवहि मेषीमहि। ९. प्र. अमेष्ट अमेषाताम् अमेषत। म. अमेष्ठाः अमेषाथाम् अमेड्ढ्वम्-ध्वम्। उ. अमेषि अमेष्वहि अमेष्महि। १०. अमेष्यत अमेष्येताम् अमेष्यन्त। म. अमेष्यथाः अमेष्येथाम् अमेष्यध्वम्। उ. अमेष्ये अमेष्यावहि अमेष्यामहि।

**कर्मणि**—मीयते। **णिचि**—माययति। **सनि**—मिमीषते। **यङि**—मेमीयते। **कृत्सु**—मायकः-यिका, मिमीषकः-षिका, मित्सकः-त्सिका, मेमीयकः-यिका, मेता-त्री, माययिता-त्री, मिमीषिता-त्री, मित्सिता-त्री, मेमीयिता-त्री, शतरि-मीयन्-न्ती-ती, मीनः, मीत्वा, मेतुम्, इत्यादि 'क्षयति' वत्।

**(११३८) रीङ्—श्रवणे**। (सूनना)। सक.। अनिट्। आत्मने.। रीयते रीयेते रीयन्ते। इत्यादि 'दीयति' (११३४) वत्।

**(११३९) लींङ्—श्लेषणे**। (युक्त होना, मिलना)। **वि**—विलीन होना। अकर्म.। अनिट्। आत्मने.।

१. लीयते। २. प्र. लिल्ये लिल्याते लिल्यिरे। म. लिल्यिषे लिल्याथे लिल्यिड्ढ्वे-ध्वे। उ. लिल्ये लिल्यिवहे लिल्यिमहे। ३. लाता-लेता। ४. लेष्यते-लास्यते। ५. लीयताम् लीयेताम्

लीयन्ताम्। ६. अलीयत। ७. लीयेत लीयेयाताम् लीयेरन्। ८. प्र. लेषीष्ट लेषीयास्ताम् लेखीरन्। म. लेषीष्ठाः लेषीयास्ताम् लेषीड्ढ्वम्-ध्वम्। उ. लीषीय लेषीवहे लेषीमहि। पक्षे—लाषीष्ट लाषीयास्ताम् लाषीरन् इत्यादि। ९. अलेष्ट-अलास्त। १०. अलेष्यत।

**भावे**—लीयते। २. लिल्ये। ९. अलायि। **णिचि**—विलीनयति, विलापयति, विलालयति। **सनि**—लिलीषते। **यङि**—लेलीयते। **यङ्लुकि**—लेलयीति-लेलेति। **कृत्सु**—लायकः-यिका, लालकः-लीनकः-निका, लापकः-पिका, लिलीषकः-षिका, लेलीयकः-यिका, लेता-त्री, लालयिता-त्री, लीनयिता-लापव्यम्, लयनीयम्, लयनम्, लानम्, लीत्वा, विलीय-विलाय। क्रयादिक 'लिनाति' वत्।

**( ११४० ) व्रीङ्—वृणोत्यर्थे।** (पसन्द करना, ढूढ के निकालना, बीनना)। सक.। अनिट्। आत्मने.। व्रीयते। 'दीयते' (११३४) वत्।

**( ११४१ ) पीङ्—पाने।** (पीना)। सक.। अनि.। आत्मने.।

१. पीयते पीयेते पीयन्ते। २. प्र. पिप्ये पिप्याते पिप्यिरे। म. पिप्यिषे पिप्याथे पिप्यिढ्वे-ध्वे। उ. पिप्ये पिप्यिवहे पिप्यिमहे। ३. पेता। ४. पेष्यते। ५. पीयताम् पीयेताम् पीयन्ताम्। ६. अपीयत। ७. पीयेत पीयेयाताम् पीयेरन्। ८. पेषीष्ट पेषीयास्ताम् पेषीरन्। ९. प्र. अपेष्ट अपेषाताम् अपेषत। म. अपेष्ठाः अपेषाताम् अपेढ्वम्। उ. अपेषि अपेष्वहि अपेष्महि। १०. अपेष्यत। शेषं सर्वं 'डीयति' (११३५) वत्।

**कृत्सु**—पायकः-यिका, पिपीषकः-षिका, पेपीयकः-यिका, पीयमानः, पाययन्-न्ती, पीत्वा, आपीय। इत्यादि धीङ् धातुवत्।

**( ११४२ ) माङ्—माने।** (नापना, तौलना) **अनु**—तर्क से सिद्ध करना, **उप**—उपमा देना, तुलना करना। **परि**—नापना, परिमाण करना, **प्र**—प्रमाण होना। सक.। अनिट्। आत्मने.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | मायते | मायेते | मायन्ते | प्र. |
| | मायसे | मायेथे | मायध्वे | म. |
| | माये | मायावहे | मायामहे | उ. |
| लिट् | ममे | ममाते | ममिरे | प्र. |
| | ममिषे | ममाथे | ममिध्वे | म. |
| | ममे | ममिवहे | ममिमहे | उ |
| लुट् | माता | मातारौ | मातारः | प्र |
| | मातासे | मातासाथे | माताध्वे | म. |
| | माताहे | मातास्वहे | मातास्महे | उ. |
| लृट् | मास्यते | मास्येते | मास्यन्ते | प्र. |
| | मास्यसे | मास्येथे | मास्यध्वे | म. |
| | मास्ये | मास्यावहे | मास्यामहे | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लोट् | मायताम् | मायेताम् | मायन्ताम् | प्र. |
| | मायस्व | मायेथाम् | मायध्वम् | म. |
| | मायै | मायावहै | मायामहै | उ. |
| लङ् | अमायत | अमायेताम् | अमायन्त | प्र. |
| | अमायथाः | अमायेथाम् | अमायध्वम् | म. |
| | अमाये | अमायावहि | अमायामहि | उ. |
| वि. लि. | मायेत | मायेयाताम् | मायेरन् | प्र. |
| | मायेथाः | मायेयाथाम् | मायेध्वम् | म. |
| | मायेय | मायेवहि | मायेमहि | उ. |
| आ. लि. | मासीष्ट | मासीयास्ताम् | मासीरन् | प्र. |
| | मासीष्ठाः | मासीयास्थाम् | मासीध्वम् | म. |
| | मासीय | मासीवहि | मासीमहि | उ. |
| लुङ् | अमास्त | अमासाताम् | अमासत | प्र. |
| | अमास्थाः | अमासाथाम् | अमाध्वम् | म. |
| | अमासि | अमास्वहि | अमास्महि | उ. |
| लृङ् | अमास्यत | अमास्येताम् | अमास्यन्त । इत्यादि । | |

**कर्मणि**—मीयते। **णिचि**—मापयति-ते। **सनि**—मित्सति। **यङि**—मेमीयते। **कृत्सु**—मायकः-यिका, मापकः-पिका, मित्सकः-त्सिका, मेमीयकः-यिका, माता-त्री, मापयिता-त्री, मित्सिता-त्री, मेमीयिता-त्री, मायमानः, मानीयम्, मानम्, मायी, माता, मितः, मातुम्, मातव्यम्, मित्वा, सन्माय, मयः, मान्, मीयमानः, इत्यादि आदादिकमाति (१०६२) वत्।

**(११४३) इङ्—गतौ**। (जाना)। सकर्म.। अनिट्। आत्मने.। १. ईयते। २. अयाञ्चक्रे। ३. एता। ४. एष्यते। ५. ईयताम्। ६. ऐयत। ७. ईयेत। ८. एषीष्ट। ९. ऐष्ट। १०. ऐष्यत।

**कर्मणि**—ईयते। **णिचि**—आययति-ते। **सनि**—इषिषति। **कृत्सु**—एतव्यम्, अयनीयम्, एयम्, उपेयम्, ईतः, ईयमानः, एतुम्, अयनम्, ईत्वा, प्रेय, प्रतीय।

**(११४४) प्रीङ्—प्रीतौ**। (प्रीति करना)। अक.। अनिट्। आत्म.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | प्रीयते | प्रीयेते | प्रीयन्ते | प्र. |
| | प्रीयसे | प्रीयेथे | प्रीयध्वे | म. |
| | प्रीये | प्रीयावहे | प्रीयामहे | उ. |
| लिट् | पिप्रिये | पिप्रियाते | पिप्रियिरे | प्र. |
| | पिप्रियिषे | पिप्रियाथे | प्रिप्रियिड्ढ्वे-ध्वे | म. |
| | पिप्रिये | पिप्रियिवहे | पिप्रियिमहे | उ. |
| लुट् | प्रेता | प्रेतारौ | प्रेतारः | प्र. |
| | प्रेतासे | प्रेतासाथे | प्रेताध्वे | म. |
| | प्रेताहे | प्रेतास्वहे | प्रेतास्महे | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृट् | प्रेष्यते | प्रेष्येते | प्रेष्यन्ते | प्र. |
| | प्रष्यसे | प्रष्येथे | प्रेष्यध्वे | म. |
| | प्रेष्ये | प्रेष्यावहे | प्रेष्यामहे | उ. |
| लोट् | प्रीयताम् | प्रीयेताम् | प्रीयन्ताम् | प्र. |
| | प्रीयस्व | प्रीयेथाम् | प्रीयध्वम् | म. |
| | प्रीयै | प्रीयावहै | प्रीयामहै | उ. |
| लङ् | अप्रीयत | अप्रीयेताम् | अप्रीयन्त | प्र. |
| | अप्रीयथाः | अप्रीयेथाम् | अप्रीयध्वम् | म. |
| | अप्रीये | अप्रीयावहि | अप्रियामहि | इ. |
| वि. लि. | प्रीयेत | प्रीयेयाताम् | प्रीयेरन् | प्र. |
| | प्रीयेथाः | प्रीयेयाथाम् | प्रीयेध्वम् | म. |
| | प्रीयेय | प्रीयेवहि | प्रीयेमहि | उ. |
| आ. लि. | प्रेषीष्ट | प्रेषीयास्ताम् | प्रेषीरन् | प्र. |
| | प्रेषीष्ठाः | प्रेषीयास्थाम् | प्रेषीढ्वम् | म. |
| | प्रेषीय | प्रेषीवहि | प्रेषीमहि | उ. |
| लुङ् | अप्रेष्ट | अप्रेषाताम् | अप्रेषत | प्र. |
| | अप्रेष्ठाः | अप्रेषाथाम् | अप्रेढ्वम् | म. |
| | अप्रेषि | अप्रेष्वहि | अप्रेष्महि | उ. |
| लृङ् | अप्रेष्यत | अप्रेष्येताम् | अप्रेष्यन्त इत्यादि । | |

**भावे**—प्रीयते । ९. अप्रायि । **णिचि**—अप्राययति । **सनि**—पिप्रीषते । **यङि**—पेप्रीयते । **यङ्लुकि**—पेप्रयीति-पेप्रेति । **कृत्सु**—प्रेतव्यम्ः, प्रयणीयः, प्रेयः, प्रीतः, प्रीयमाणः, प्रियः,[1] प्रेतुम्, प्रयणम्, प्रीत्वा, विप्रीय, प्रेष्ठः, प्रेयान्, प्रेमा, प्रायकः-यिका, पिप्रीषकः-षिका, पेप्रीयिकः-यिका, इत्यादि । सर्वाणि रूपाणि दैवादिक धीङ् धातुवत् (११३६)।

**( ११४५ ) शो—तनूकरणे**। (तीक्ष्ण करना, शान धराना, पैना करना)। सक.। अनि.। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | श्यति[2] | श्यतः | श्यन्ति | प्र. |
| | श्यसि | श्यथः | श्यथ | म. |
| | श्यामि | श्यावः | श्यामः | उ. |
| लिट् | शशौ | शशतुः | शशुः | प्र. |
| | शशिथ-शशाथ | शशथुः | शश | म. |
| | शशौ | शशिव | शशिम | उ. |

१ 'इगुपधज्ञाप्रीकिरः' (३-१-१३५) इति कर्तरि कप्रत्ययः । एतच्च आत्रेयादीनां मतेनोक्तम् । काशिकायां तु प्रीणातीति प्रियः । इति क्रैयादिकस्यैव कप्रत्ययः प्रोक्तः ।

२ 'ओतः श्यनि' (७-३-७१) इति ओकरस्य लोपः श्यनि परे ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुट् | शाता | शातारौ | शातारः इत्यादि । | |
| लृट् | शास्यति | शास्यतः | शास्यन्ति इत्यादि । | |
| लोट् | श्यतु-तात् | श्यताम् | श्यन्तु इत्यादि । | |
| लङ् | अश्यत् | अश्यताम् | अश्यन् इत्यादि । | |
| वि. लि. | श्येत् | श्येताम् | श्येयुः इत्यादि । | |
| आ. लि. | शायात् | शायास्ताम् | शायासुः | प्र. |
| | शायाः | शायास्तम् | शायास्त | म. |
| | शायासम् | शायास्व | शायास्म | उ. |
| लुङ् | अशासीत् | अशासिष्टाम् | अशासिषुः | प्र. |
| | अशासीः | अशासिष्टम् | अशासिष्ट | म. |
| | अशासिषम् | अशासिष्व | अशासिष्म | उ. |

पक्षे—अशात्[१] अशाताम् अशुः **प्र.** अशाः अशातम् अशात **म.** अशाम अशाव अशाम उ.

| | | | |
|---|---|---|---|
| लृङ् | अशास्येत् | अशास्यताम् | अशास्यन् इत्यादि । |

**कर्मणि**—शायते। **णिचि**—शाययति। **सनि**—शिशासति। **यङि**—शाशायते। **यङ्लुकि**—शाशेति-शाशाति। **कृत्सु**—शायकः-यिका, शायकः[२]-यिका, शिशासकः-सिका, शाशायकः-यिका, शाता-त्री, शाययिता-त्री, शिशासिता-त्री, शाशायिता-त्री, शाययन्, निष्ठायाम्-निशितम्[३]-निशातम्-तः, संशितो ब्राह्मणः, संशितव्रतः, निशा, क्तिनि-निशितिः-निशातिः, ल्यपि प्रशाय क्त्वायाम्-शित्वा-शात्वा, शिशुः,[४] शादः,[५] शतरि-श्यन्। अन्यत् सर्वं 'छ्यति' (११४६) वत्।

**( ११४६ ) छो—छेदने** । (काटना,कतरना) । सक. । अनिट् । परस्मै. । छ्यति छ्यतः छ्यन्ति। इत्यादि 'श्यति' (११४५) वत्।

**कृत्सु**—छायकः[६]-यिका, छायकः[७]-यिका, त्रिच्छासकः-यिका, चाच्छायकः[८]-यिका,

१ 'विभाषा घ्राधेट्०' (२-४-७८) इति सिचो लुकि, अशात्। 'लुगभावे–' 'यमरमेति' (७-२-७३) इट्सकौ अशासीत्।

२ 'शाच्छासाह्वा–' (७-३-३७) इत्यादिना णिजन्ते युगागमः। आदन्तलक्षणपुकोऽपवादः।

३ 'शाच्छोः–' (७-४-४१) इति प्रकृतेरिकारः। एष व्यवस्थितविभाषया व्रतार्थे नित्यः। तनू करणार्थे तु न इति 'मिथस्ते न विभाष्यन्ते गवाक्षः संशितव्रतः॥' (भाष्यम् ७-४-४१) इति वचनाज् ज्ञेयम्। श्यतेरित्वं व्रते नित्यं। (वा. ७-४-४१) इति चात्र ज्ञेयम्।

४ औणादिके (द.उ. १-१०५) उप्रत्यये रूपमेवम्। श्यति मातुः स्तनं पीत्वेति शिशुः = बालः।

५ 'शाशपिभ्यां ददनौ' (द.उ. ६-४८) इति दप्रत्यये रूपमेवम्। शादः = मृदुः।

६ 'आदेच उपदेशेऽशिति' (६-१-४५) इत्यात्वे, 'आतोयुक् चिण्कृतोः' (७-३-३३) इति युगागमः। एवं णप्रत्यये घञि, णमुलि च बोध्यम्।

७ णौ परतः आत्वे, 'शाच्छासाह्वाव्यावेपां युक्' (७-३-३७) इति पुगपवादः युगागमः। एवं ण्यन्ते सर्वत्र ज्ञेयम्।

८ सनि, 'सन्यङोः' (६-१-९) इति द्वित्वे, 'अभ्यासविकारेषु बाध्यबाधकभावो नास्ति' (परि. ६८) इति वचनात् पूर्वं ह्रस्वः। अनन्तरं 'सन्यतः' (७-४-७९) इतीत्वे, तुकि, श्चुत्वे चिच्छासकः इति रूपम्। एवं सन्नन्ते सर्वत्र प्रक्रिया बोध्या।

छाता-त्री, छाययिता-त्री, चिच्छासिता-त्री, चाच्छायिता-त्री, छ्यन्[१]-न्ती, छाययन्-न्ती, चिच्छासन्-न्ती, छास्यन्-न्ती-ती, छाययिष्यन्-न्ती-ती, छाययमानः, छाययिष्यमाणः, काष्ठच्छाः[२]-काष्ठच्छौ-काष्ठच्छाः, छितम्,[३] छितः-छितवान्-छातम्-छातः-छातवान्, काष्ठच्छः,[४] छायः,[५] प्रच्छः,[६] चिच्छासुः, चाच्छः[७], छातव्यम्, छाययितव्यम्, छानीयम्, छायनीयम्[८], छेयम्,[९] छाय्यम्, छायमानः, छाय्यमानः, छातुम्, छाययितुम्, छातिः-छितिः, आच्छा[१०]-छायना, चिच्छासा, चाच्छाया, छानम्, छायनम्, छात्वा-छित्वा, छाययित्वा, प्रच्छाय,[११] प्रच्छाय्य, छाया,[१२] छागः[१३]।

(११४७) **षो (सो) —अन्तकर्मणी**। (विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, मग्न होना)। सक.। सेट्। परस्मै.। १ स्यति २ ससौ ३ स्यतु ४ अस्यत् ५ स्येत् इत्यादि 'श्यति' (११४५) वत्। **अव**—अवसाने। **प्रति + अव**- भोजने। **परि + अव**—परिणामे। **अधि + अव**- अध्यवसाने।

(११४८) **दो—अवखण्डने**। (कतरना, विभाग करना)। सक.। अनिट्। परस्मै.। द्यति ददौ इत्यादि 'श्यति' (११४५) वत्।

(११४९) **जनी—प्रादुर्भावे**। (उत्पन्न होना, पैदा होना)। **णिच्**—उत्पन्न होना। अक.। सेट्। आत्मने.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | जायते[१४] | जायेते | जायन्ते | प्र. |
| | जायसे | जायेथे | जायध्वे | म. |
| | जाये | जायावहे | जायामहे | उ. |

१ अत्रापि अभ्यासविकारेषु बाध्यबाधकभावाभावेन पूर्वमभ्यासह्रस्वे, 'दीर्घोऽकितः' (७-४-८३) इति दीर्घे, 'दीर्घात्' (६-१-७५) इति तुकि, श्चुत्वे चाच्छायकः इति रूपम्। एवं यङन्ते सर्वत्र ज्ञेयम्।
२ शतरि, आत्वाभावे, 'दिवादिभ्यः—' (३-१-६९) इति विकरणप्रत्यये श्यनि, 'ओतः श्यनि' (७-३-७१) इति ओकारस्य लोपे रूपम्। स्त्रियाम्, 'श्यप् श्यनोर्नित्यम्' (७-१-८१) इति नित्यं नुम्।
३ 'आत्वे, क्विप् च' (३-२-७६) इति कर्मण्युपपदे क्विपि रूपम्।
४ 'शाच्छोरन्यतरस्याम्' (७-४-४१) इति तकारादौ किति प्रत्यये परतः इत्वविकल्पः। तेन रूपद्वयम्, एवं क्तिनि, क्त्वाप्रत्यये च ज्ञेयम्।
५ 'आतोऽनुपसर्गे कः' (३-२-३) इति कर्मण्युपपदे कः। 'आतो लोप इटि च' (६-४-६४) इत्याकारलोपः।
६ 'श्याऽऽद्व्यधास्रु—' (३-१-१४१) इति कर्तरि णप्रत्यये युगागमः।
७ 'आतश्चोपसर्गे' (३-१-१३६) इति कर्तरि कप्रत्ययः। आकारलोपः।
८ यङन्तात् पचाद्यचि (३-१-१३४) 'न धातुलोप—' (१-१-४) इति सूत्रस्य प्रत्याख्यानपक्षे, अकारस्य पृथगल्लोपे 'यङोऽचि च' (२-४-७४) इति यकारमात्रस्य लुकि, अकारलोपस्य स्थानिवद् भावेन, अजाद्यार्धधातु-कङित्परकत्वात् 'आतो लोप इटि च' (६-४-६४) इति यति, 'ईद्यति' (६-४-६५) इति आकारलोपे रूपम्।
९ 'अचो यत्' (३-१-९७) इति यति, 'ईद्यति' (६-४-६५) इति आकारस्य ईकारे गुणः।
१० 'आतश्चोपसर्गे' (३-३-१०६) इति स्त्रियां भावादावङ्।
११ 'अन्तरङ्गानपि विधीन् बहिरङ्गो ल्यब् बाधते' (परि ५५) इति वचनात् पूर्वं ल्यबादेशः। तादिकित्प्रत्ययपरकत्वाभावात् वैकल्पिकमित्वं न प्रवर्तते।
१२ 'माच्छाससि सूभ्यो यः' (द.उ. ८-१२) इति य प्रत्ययः। छ्यति छायते वा इति छाया = प्रतिरूपम्।
१३ 'छापूञ्खडिभ्यो गक्' (द.उ. ३-६९) इति गक् प्रत्ययः। छ्यति इति छागः = अजः।
१४ 'ज्ञाजनोर्जा' (७-३-७९) अनयोर्जादिशः स्याच्छिति।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लिट् | जज्ञे[1] | जज्ञाते | जज्ञिरे | प्र. |
| | जज्ञिषे | जज्ञाथे | जज्ञिध्वे | म. |
| | जज्ञे | जज्ञिवहे | जज्ञिमहे | उ. |
| लुट् | जनिता | जनितारौ | जनितारः | प्र. |
| | जनितासे | जनितासाथे | जनिताध्वे | म. |
| | जनिताहे | जनितास्वहे | जनितास्महे | उ. |
| लृट् | जनिष्यते | जनिष्येते | जनिष्यन्ते | प्र. |
| | जनिष्यसे | जनिष्येथे | जनिष्यध्वे | म. |
| | जनिष्ये | जनिष्यावहे | जनिष्यामहे | उ. |
| लोट् | जायताम् | जायेताम् | जायन्ताम् | प्र. |
| | जायस्व | जायेथाम् | जायध्वम् | म. |
| | जायै | जायावहै | जायामहै | उ. |
| लङ् | अजायत | अजायेताम् | अजायन्त | प्र. |
| | अजायथाः | अजायेथाम् | अजायध्वम् | म. |
| | अजाये | अजायावहि | अजायामहि | उ. |
| वि. लि. | जायेत | जायेयाताम् | जायेरन् | प्र. |
| | जायेथाः | जायेयाथाम् | जायेध्वम् | म. |
| | जायेय | जायेवहि | जायेमहि | उ. |
| आ. लि. | जनिषीष्ट | जनिषीयास्ताम् | जनिषीरन् | प्र. |
| | जनिषीष्ठाः | जनिषीयास्थाम् | जनिषीध्वम् | म. |
| | जनिषीय | जनिषीवहि | जनिषीमहि | उ. |
| लुङ् | अजनि[2]-अजनिष्ट | अजनिषाताम् | अजनिषत | प्र. |
| | अजनिष्ठाः | अजनिषाथाम् | अजनिढ्वम् | म. |
| | अजनिषि | अजनिष्वहि | अनजिष्महि | उ. |
| लृङ् | अजनिष्यत् | अजनिष्येताम् | अजनिष्यन्त | प्र. |
| | अजनिष्यथाः | अजनिष्येथाम् | अजनिष्यध्वम् | म. |
| | अजनिष्ये | अजनिष्यावहि | अजनिष्यामहि | उ. |

**भावे**—जन्यते-जायते। **णिचि**—जनयति[3]। **सनि**—जिजनिषते। **यङि**— जञ्जन्यते-जाजायते। **यङ्लुकि**—जञ्जनीति-जञ्जन्ति। **कृत्सु**—जनकः[4]-निका, जनकः[5]-निका,

१ गमहनजन–' (६-४-९८) इत्युधालोपः।

२ 'दीपजन–' (३-१-६१) इति वा चिण्। 'चिणो लुक्'।

३ 'बुधयुधनशजनेङ्–' (१-३-८६) इति परस्मैपदम्। 'जनीजृष्–' (ग.सू.) इति कित्वात् ह्रस्वः।

४ 'जनिवध्योश्च' (७-३-३५) इति निषेधात् 'अत उपधायाः' (७-२-११६) इति वृद्धि र्न भवति। एवं घञि, णमुल्यपि ज्ञेयम्।

५ णिचि, 'अत उपधायाः' (७-२-११६) इति प्राप्ता वृद्धिः 'जनिवध्योश्च' (७-३-३५) इति निषिध्यते। न च वृद्धौ सत्यामपि, 'जनीजृष–' (ग.सू. भ्वादौ) इति वचनेन मित्वात्, 'मितां ह्रस्वः' (६-४-९२) इति ह्रस्वः इति शङ्क्यम्, मित्त्वविधानस्य, चिण्णमुल्परकणौ दीर्घविकल्पविधानेन जागरूकत्वाच्च। एवं ण्यन्ते सर्वत्र ज्ञेयम्।

जिजनिषकः[१]-षिका, जञ्जनकः[२]-जन्जनकः-निका, जाजायकः-यिका, जनिता-त्री, जनयिता-त्री, जनयन्[३]-न्ती, जनयिष्यन्-न्ती-ती, जायमानः[४], जिजनिषमाणः, जञ्जन्यमानः-जाजायमानः, जनिष्यमाणः, प्रजा[५]-प्रजानौ-प्रजानः, जातम्[६]-जातः-जातवान्, जनितः, जनः, प्रजनिष्णुः,[७] जज्ञिः,[८] विजावा[९]-विजावानौ-विजावानः, विजावरी, जन्यः,[१०] मन्दुरजः,[११] प्रावृषिजः[१२]-शरदिजः- कालेजः-दिविजः, सरसिजम्[१३]-सरोजम्, वर्षेजः[१४]-वर्षजः-क्षरेजः-क्षरजः-शरेजः- शरजः- वरेजः-वरजः, संस्कारजः[१५]-अदृष्टजः, प्रजा[१६]-अनुजः, बीजम्,[१७] पुमनुजा[१८]-रामानुजः, पुंसानुजः,[१९] अजः[२०]-द्विजः, ब्राह्मणजः, क्षत्रियजः-नगजः[२१]-वनजः,

१ 'जनसनखनां सञ्झलोः' (६-४-४२) इति सूत्रेण आत्वं तु नात्र प्रवर्तते। झलादौ सनि तद्विधानात्। अत्र चेडागम प्रवृत्या सनः झलादित्वाभावात्। एवं सन्नन्ते सर्वत्र ज्ञेयम्।

२ 'ये विभाषा' (६-४-४३) इत्यनेन आत्वविकल्पः।

३ 'बुधयुधनशजनेङ्–' इति ण्यन्तात् परस्मैपदमेव न तु शानच्।

४ 'दिवादिभ्यः–' (३-१-६९) इति श्यन् प्रत्ययः। 'ज्ञाजनोर्जा–' (७-३-७९) इति प्रकृतेः जादेशः।

५ क्विपि 'अनुनासिकस्य क्विझलोः 'क्ङिति' (६-४-१५) इति दीर्घः। 'न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य' (८-२-७) इति नकारलोपः।

६ ईदित्वेन् 'श्वीदितो निष्ठायाम्' (७-२-१४) इतीण्णिषेधः। 'जनसनखनां सञ् झलोः' (६-४-४२) इति नकारस्याकारः। सवर्णदीर्घः।

७ 'अलङ्कृञ्निराकृञ्प्रजनोत्पद–' (३-२-१३६) इत्यादिना तच्छीलादिषु कर्तृषु प्रोपसृष्टादस्मात् इष्णुच् प्रत्ययः।

८ 'भाषायां धाञ्–' (वा. ३-२-१७१) इति लिटः किः किन् वा आदेशः। लिड्वद्भावात् 'लिटि धातोरनभ्यासस्य' (६-१-८) इति द्विर्वचनम्। तच्छिलिकोऽयं प्रत्ययः। अभ्यासकार्यम्। 'गमहनजन–' (६-४-९८) इत्युपधालोपः। 'स्तोः श्नुचा श्चुः' (८-३-३०) इति श्चुत्वम्।

९ 'अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते' (३-२-७५) इति वनिप् प्रत्यये, 'विड्वनोरनुनासिकस्यात्' (६-४-४१) इत्यात्वे, सवर्णदीर्घे, 'नलोपः प्राति–' (८-२-७) इति नकारलोपे रूपम्। नकारान्तोऽयं शब्दः। स्त्रियां 'वनो र च' (४-१-७) इति ङीब्रेफौ भवतः।

१० 'भव्यगेय–' (३-४-६८) इति कर्तरि यत् प्रत्ययान्तो निपातितः। पक्षे भावेऽप्ययं प्रत्ययः।

११ 'सप्तम्यां जनेर्डः' (३-२-९७) इति डप्रत्ययः। 'ङ्यापोः संज्ञाच्छसोर्बहुलम्' (६-३-६३) इति पूर्वपदस्य ह्रस्वः।

१२ 'प्रावृट् शरत्कालदिवां जे' (६-३-१५) इति सप्तम्या अलुक्।

१३ 'तत्पुरुषे कृति बहुलम्' (६-३-१४) इति वा सप्तम्या अलुक्।

१४ 'विभाषा वर्षक्षरशरवरात्' (६-३-१६) इति विभाषाया सप्तम्या अलुक्।

१५ 'पञ्चम्यामजातौ' (३-२-९८) इति डप्रत्ययः।

१६ 'उपसर्गे च संज्ञायाम्' (३-२-९९) इति डप्रत्ययः।

१७ विशेषेण जायते इति बीजम्। 'उपसर्गे च संज्ञायाम्' (३-२-९९) इति डप्रत्ययः। 'कृञो द्वितीयतृतीय-शम्बबीजात् कृषौ' (५-४-५८) इत्यत्र 'बीज' इति निर्देशात् पृषोदरादित्वेन (६-३-१०९) 'वि' इत्युपसर्गस्य दीर्घः, वकारस्य बकारादेशः।

१८ 'अनौ कर्मणि' (३-२-१००) इति डप्रत्ययः।

१९ 'पुंसाऽनुजो जनुषाऽन्ध इति वक्तव्यम्' (वा. ६-३-३) इति तृतीया अलुक्।

२० 'अन्येभ्योऽपि दृश्यते' (३-२-१०१) इति डप्रत्यय। '–सप्तभ्याम्–' (३-२-९७) इत्युक्तम्; असप्तम्यामपि दृश्यते– न जायते इत्यजः। द्विर्जाताः द्विजाः। 'पञ्चम्यामजातौ' (३-२-९८) इत्युक्तम्, अजातावपि दृश्यते– 'ब्राह्मणजो धर्मः, क्षत्रियजं युद्धम्। 'उपसर्गे च संज्ञायाम्। असंज्ञायामपि दृश्यते अभिजाः परिजाः केशाः। 'अनौ कर्मणि' (३-२-१००) इत्युक्तम्, अकर्मण्यपि दृश्यते– अनुजातः = अनुजः। अपि शब्दः सर्वोपाधिव्यभिचारार्थः। तेन धात्वन्तरादपि भवति, कारकान्तरेऽपि– परितः खाता परिखा, आखा। इति काशिका (३-२-१०) अत्रानुसन्धेयः।

२१ 'न गजा नगजा दयिता दयिता विगतं विगतं वलितं वलितम्।' (भ.का. १०/९)

कौशल्याजः,[१] अभिज-परिजः(केशः)जनः,जिजनिषुः,जञ्जनः-जाजः,[२] जनितव्यम्,जनयितव्यम्, जननीयम्, जन्यम्,[३] जन्यमानः-जायमानः, प्रजनः, जनः, जिजनिषः, जञ्जनः-जाजायः, जनितुम्, जनयितुम्,जिजनिषितुम्,जञ्जनितुम्-जाजायितुम्,जातिः,[४] अजननिः,[५] जनना,जननम्,जनित्वा, जनयित्वा,प्रजन्य-प्रजाय,प्रजनय्य,[६] जन्तुः,[७] जनयित्नुः,[८] जनकः,[९] जन्म,[१०] जठरम्,[११] जनुः,[१२] जनानां समूहो जनता, जाया[१३] ।

( ११५० ) **दीपी—दीप्तौ** । (प्रकाशित होना, चमकना) । अकर्म. । सेट् । आत्मने. ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | दीप्यते | दीप्येते | दीप्यन्ते | प्र. |
| | दीप्यसे | दीप्येथे | दीप्यध्वे | म. |
| | दीप्ये | दीप्यावहे | दीप्यामहे | उ. |
| लिट् | दिदीपे | दिदीपाते | दिदीपिरे | प्र. |
| | दिदीपिषे | दिदीपाथे | दिदीपीध्वे | म. |
| | दिदीपे | दिदीपिवहे | दिदीपिमहे | उ. |
| लुट् | दीपिता | दीपितारौ | दीपितारः इत्यादि | |
| लृट् | दीपिष्यते | दीपिष्येते | दीपिष्यन्ते | प्र. |
| | दीपिष्यसे | दीपिष्येथे | दीपिष्यध्वे | म. |
| | दीपिष्ये | दीपिष्यावहे | दीपिष्यामहे | उ. |
| लोट् | दीप्यताम् | दीप्येताम् | दीप्यन्ताम् | प्र. |
| | दीप्यस्व | दीप्येथाम् | दीप्यध्वम् | म. |
| | दीप्यै | दीप्यावहै | दीप्यामहै | उ. |
| लङ् | अदीप्यत | अदीप्येताम् | अदीप्यन्त | प्र. |
| | अदीप्यथाः | अदीप्येथाम् | अदीप्यध्वम् | म. |
| | अदीप्ये | अदीप्यावहि | अदीप्यामहि | उ. |

१ 'कौशल्याज शशादीनां तेषां नैकोऽप्यह कपिः ॥ (म.का. ६/१३४)
२ यङन्तात् पचाद्यचि (३-१-१३४) पृथगलोपे, अकारस्य स्तानिवद्भावात् उत्तरखण्डाकारस्य लोपः ।
३ 'तकिशसिचतिजनिभ्यो यद्वाच्यः' (वा. ३-१-९७) इति ण्यदपवादो यत् ।
४ 'तितुत्र–' (७-२-९) इतीण्णिषेधे, 'जनसनखनां संज्झलोः' (६-४-४२) इति आत्वे, सवर्णदीर्घे रूपम् ।
५ स्त्रियां भावे 'आक्रोशे नञ्यनिः' (३-३-११२) इत्यनिप्रत्ययः ।
६ 'ल्यपि लघुपूर्वात्' (६-४-५६) इति णेरयादेशः ।
७ 'कमिमनिजनि–' (द.उ. १-१२५) इत्यादिना तुप्रत्ययः । जायते, जजन्ति इति वा जन्तुः = प्राणी ।
८ ण्यन्तादस्मात् औणादिके (द.उ. १-१४०) इत्यनुच् प्रत्यये जनयित्नुः = पिता । 'अयामन्ताल्वाय्येत्न्विष्णुषु च' (६-४-५५) इति णेरयादेशः ।
९ जनयतीति जनकः = पिता । 'क्वुन् शिल्पिसंज्ञयोः' (द.उ. ३-५) इति क्वुन् प्रत्ययः ।
१० 'मनिन्' (द.उ. ६-७३) इति मनिनि रूपम् । जायते जयन्ते वा जन्म ।
११ 'जनेरर ठः' (द.उ. ८-९८) इति अरप्रत्यय, इति । धातोश्च ठकारेऽन्तादेशे रूपम् ।
१२ 'जनेरुसिः' (द.उ. ९-३७) इत्युसिप्रत्ययः । जायते इति जनुः = जन्म ।
१३ 'जनेर्यक्' (द.उ. ८-१३) इति यक् प्रत्ययः । जायते जन्यते वा स्यापत्यमिति जाया = भार्या । 'ये विभाषा' (६-४-४३) इत्यात्वे, सवर्णदीर्घे च रूपम् ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| वि. लि. | दीप्येत | दीप्येयाताम् | दीप्येरन् | प्र. |
| | दीप्येथाः | दीप्येयाथाम् | दीप्येध्वम् | म. |
| | दीप्येय | दीप्येवहि | दीप्येमहि | उ. |
| आ. लि. | दीपिषीष्ट | दीपिषीयास्ताम् | दीपिषीरन् | प्र. |
| | दीपिषीष्ठाः | दीपिषीयास्थाम् | दीपिषीध्वम् | म. |
| | दीपिषीय | दीपिषीवहि | दीपिषीमहि | उ. |
| लुङ् | अदीपि-अदीपिष्ट | अदीपिषाताम् | अदीपिषत | प्र. |
| | अदीपिष्ठाः | अदीपिषाथाम् | अदीपिढ्वम् | म. |
| | अदीपिषि | अदीपिष्वहि | अदीपिष्महि | उ. |
| लृङ् | अदीपिष्यत | अदीपिष्येताम् | अदीपिष्यन्त इत्यादि। | |

**भावे**—दीप्यते। ९. अदीपि। **णिचि**—दीपयति-ते। **सनि**—दिदीपिषते। **यङि**—देदीप्यते। **यङ्लुकि**—देदीप्ति-देदीपीति। **कृत्सु**—दीपकः-पिका, दीपकः-पिका, दिदीपिषकः-षिका, देदीपकः-पिका, दीपिता-त्री, दीपयिता-त्री, दीपयन्-न्ती, दीपयिष्यन्-न्ती-ती, दीपमानः, दीपयमानः, दीपिष्यमाणः, दीपयिष्यमाणः, प्रदीप्-प्रदीपौ-प्रदीपः, दीप्तम्,[1] दीप्तः-तवान्, दीपितः, दीपः,[2] दीपिता, दीपनीयम्,[3] दीप्रः,[4] सन्दीपी, सन्दीपनः,[5] प्रदीपः, दिदीपिषुः, देदीपः। दीपितव्यम्, दीपयितव्यम्, प्रणिदीपनीयम्-प्रनिदीपनीयम्, दीप्यम्, दीप्यमानः, दीपितुम्, दीपयितुम्, दीप्तिः,[6] दीपना, दीपनम्, दीपित्वा, दीपयित्वा, सन्दीप्य, प्रदीप्य

**( ११५१ ) पूरी—आप्यायने**। (पूर्ण कनरा, भरना)। सक.। सेट्। आत्मने.। १. पूर्यते। २. पुपुरे। इत्यादि 'दीप्यति' (११५०) वत्।

**( ११५२ ) तूरी—गतित्वरणहिंसनयोः**। (जल्दी करना दुःख देना, सताना)। सक.। सेट्.। आत्मने.। १. तूर्यते। २. तुतूरे। इत्यादि 'दीप्यति' (११५०) वत्।

**( ११५३ ) धूरी—हिंसागत्योः**। (मारना, हिंसा करना, जाना)। हिंसायां सक.। सेट्। आत्मने.। १. धूर्यते। इत्यादि 'दीप्यति' (११५०) वत्। ९. अधूरिष्ट।

**( ११५४ ) गूरी—हिंसागत्योः**। (मारना, जाना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। ईदित्। १. गूर्यते। २. जुगूरे। ३. गूरिता। ८. गूरिषीष्ट। ९. अगूरिष्ट। 'दीप्यति' (११५०) वत्।

१ 'श्वीदितो निष्टायाम्' (७-२-१४) इति इण्णिषेधो निष्ठायाम्।

२ इगुपलक्षणः कप्रत्ययः कर्तरि भवति।

३ दीपयतीति दीपनीयम् औषधम्। बाहुलकात् कर्तर्यनीयर् इति प्र. सर्वस्वे।

४ 'तच्छील-तद्धर्म-तत्साधुकारिष्वर्थेषु' 'नमिकम्पि स्म्यजसकमर्हिंसदीपो रः' (३-२-१६७) इति रप्रत्यये: रूपम्। 'नेड् वशि कृति' (७-२-८) इतीण्णिषेधः।

५ सम्यक् दीपयतीति सन्दीपनः नन्द्यादित्वात् कर्तरि ल्युः तस्यापत्यमित्यर्थे 'अत इञ्' (४-१-९५) इतीञि सन्दीपिनिः इति भवति।

६ 'गुरोश्च हलः' (३-३-१०३) इति प्राप्तम् अकारप्रत्ययं बाधित्वा, 'क्तिन् आबादिभ्यः' (वा. ३-३-९४) इति क्तिन्। आबादयः = आप्लृधातुप्रकाराः दीर्घोपधाः, हलादयोऽजादयो वा धातवः येषां प्रयोगे क्तिन् जायते।

(११५५-५६) **घूरी-जूरी—हिंसावयोहान्योः**। ईदित्। (हिंसा करना, दुख देना, वृद्ध होना)। सक.। सेट्। आत्मने.। घूर्यते। जुघूरे। जूर्यते। इत्यादि 'दीप्यति' (११५०) वत्।

(११५७) **शूरी—हिंसातस्तवनयोः**। (मार डालना, दुःख देना, निश्चल होना)। सक.। सेट्। आत्मने.। शूर्यते शुशुरे। इत्यादि 'दीप्यति' (११५०) वत्। अशूरिष्ट इत्येव

(११५८) **चूरी—दाहे**। (जलाना, भस्म करना)। सक.। सेट्। आत्म.। ईदित्। चूर्यते। चुचुरे 'गुरी धातुवत्'।

(११५९) **तप—ऐश्वर्ये वा**। अयं धातुरैश्वर्ये वा तङ्श्यनौ। उत्पादयति। अक.। अनिट्। आत्मने.। १.तप्यते। २.**प्र.** तेपे। **म.** तेपिषे। ३.तप्ता। ४.तप्स्यते। ५.तप्यताम्। ६. अतप्यत। ७. तप्येत। ८. तपिषीष्ट। ९. अतप्त। १०. अतप्सयत।

**कृत्सु**—तापकः-पिका, तितप्सकः-प्सिका, तातपकः-पिका, तप्ता-त्री, तापयिता-त्री, तितप्सिता-त्री, इत्यादि सर्वाणि रूपाणि भौवादिक 'तपति' (९८५) वत्।

(११६०) **वृतु—वरणे**। (पसन्द करना, सेवा कना, नौकरी करना)। सक.। सेट्। आत्मने.।

१. वृत्यते। २. **प्र.** ववृते ववृताते ववृतिरे। **म.** ववृतिषे ववृताथे ववृतिध्वे। **उ.** ववृते ववृतिवहे ववृतिमहे। ३. वर्तिता। ४. वत्तिष्यते। ५. वृत्यताम्। ६. अवृत्यत। ७. वृत्येत। ८. **प्र.** वर्तिषीष्ट वर्तिषीयास्ताम् वर्तिषीरन्। **म.** वर्तिषीष्ठाः वर्तिषीयास्थाम् वर्तिषीध्वम्। **उ.** वतिषीय वर्तिषीवहि वर्तिषीमहि। ९. **प्र.** अवर्तिष्ट अवर्तिषाताम् अवर्तिषत। **म.** अवर्तिष्ठाः अवर्तिषाथाम् अवर्तिड्ढ्वम्-ध्वम्। **उ.** अवर्तिषि अवर्तिष्वहि अवर्तिष्महि। १०. अवर्तिष्यत।

**कृत्सु**—वर्तकः-र्तिका, विवर्तिषकः-षिका, वरीवृतकः-तिका, वर्तयिता-त्री, वर्यति-त्री, विवर्तिषिता-त्री, वरीवृतिता-त्री, वृत्तम्, निष्ठायाम्-वृत्तः-वृत्तवान, क्यपि-वृत्यम्, वृत्त्वा-वर्तित्वा, इत्यादि भौवदिक 'पर्षति' वत्।

(११६१) **क्लिश—उपतापे**। उपतापः = रोगः। (रोगी होना, दुःखी होना, दुःख सहन करना)। अक.। सेट्। आत्मने.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | क्लिश्यते | क्लिश्येते | क्लिश्यन्ते | प्र. |
| | क्लिश्यसे | क्लिश्येथे | क्लिश्यध्वे | म. |
| | क्लिश्ये | क्लिश्यावहे | क्लिश्यामहे | उ. |
| लिट् | चिक्लिशे | चिक्लिशाते | चिक्लिशिरे | प्र. |
| | चिक्लिसिषे | चिक्लिशाथे | चिक्लिशिध्वे | म. |
| | चिक्लिशे | चिक्लिशिवहे | चिक्लिशिमहे | उ. |
| लुट् | क्लेशिता | क्लेशितारौ | क्लेशितारः इत्यादि। | |
| लृट् | क्लेशिष्यते | क्लेशिष्येते | क्लेशिष्यन्ते इत्यादि। | |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लोट् | क्लिश्यताम् | क्लेश्येताम् | क्लिश्यन्ताम् | प्र. |
| | क्लिश्यस्व | क्लिश्येथाम् | क्लिश्यध्वम् | म. |
| | क्लिश्यै | क्लिश्यावहै | क्लिश्यामहै | उ. |
| लङ् | अक्लिश्यत | अक्लिश्येताम् | अक्लिश्यन्त | प्र. |
| | अक्लिश्यथाः | अक्लिश्येथाम् | अक्लिश्यध्वम् | म. |
| | अक्लिश्ये | अक्लिश्यावहि | अक्लिश्यामहि | उ. |
| वि. लि. | क्लिश्येत | क्लिश्येयाताम् | क्लिश्येरन् | प्र. |
| | क्लिश्येथाः | क्लिश्येयाथाम् | क्लिश्येध्वम् | म. |
| | क्लिश्येय | क्लिश्येवहि | क्लिश्येमहि | उ. |
| आ. लि. | क्लेशिषीष्ट | क्लेषीयास्ताम् | क्लेषिषीरन् | प्र. |
| | क्लेशिषीष्ठाः | क्लेशिषीयास्थाम् | क्लेशिषीध्वम् | म. |
| | क्लेशिषीय | क्लेशिषीवहि | क्लेशिषीमहि | उ. |
| लुङ् | अक्लेशिष्ट | अक्लेशिषाताम् | अक्लेशिषत | प्र. |
| | अक्लेशिष्ठाः | अक्लेशिषाथाम् | अक्लेशिड्ढ्वम्-ध्वम् | म. |
| | अक्लेशिषि | अक्लेशिष्वहि | अक्लेशिष्महि | उ. |
| लृङ् | अक्लेशिष्यत | अक्लेशिष्येताम् | अक्लेशिष्यन्त इत्यादि। | |

**भावे**—क्लिश्यते। ९. अक्लेशि। **णिचि**—क्लेशयति-ते। ९. अचिक्लिशत्-त। **सनि**—चिक्लेशिषते-चिक्लिशिषते। **यङि**—चेक्लिश्यते। **यङ्लुकि**—चेक्लेष्टि-चेक्लिशीति। **कृत्सु**—क्लेशनीयम्, क्लेशनम्, क्लेशकः-शिका, क्लेशी, क्लेशः, क्लेशिता-त्री, क्लिष्टः, क्लिष्टिः, क्लेशितुम्, क्लेशितव्यम्, क्लिष्ट्वा, संक्लिश्य, क्लेश्यम्, क्लिश्यन्, क्लेशिष्यन्।

**(११६२) काशृ—दीप्तौ**। (चमकना, निर्—निष्। निकाल देना)। अक.। सेट्। आत्मने.।

१. काश्यते। २. चकाशे। ५. काश्यताम्। ६. अकाश्यत। ७. काश्येत। इत्यादि 'गाधति' (४) वत्।

**(११६३) वाशृ—शब्दे**। (शब्द करना)। अक.। सेट्। आत्मने.। १ वाश्यते। २ ववाशे। ३ वाशिता। ४ वाशिष्यते। ५ अवाशिष्ट। इत्यादि।

**(११६४) मृष—तितिक्षायाम्**। (सहन करना, क्षमा करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | मृष्यति | मृष्यतः | मृष्यन्ति | प्र. |
| | मृष्यसि | मृष्यथः | मृष्यन्ति | म. |
| | मृष्यामि | मृष्यावः | मृष्यामः | उ. |
| लिट् | ममर्ष | ममृषतुः | ममृषुः | प्र. |
| | ममर्षिथ | ममृषथुः | ममृष | म. |
| | ममर्ष | ममृषिव | ममृषिम | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुट् | मर्षिता | मर्षितारौ | मर्षितारः | प्र. |
| | मर्षितासि | मर्षितास्थः | मर्षितास्थ | म. |
| | मर्षितास्मि | मर्षितास्वः | मर्षितास्मः | उ. |
| लृट् | मर्षिष्यति | मर्षिष्यतः | मर्षिष्यन्ति | प्र. |
| | मर्षिष्यसि | मर्षिष्यथः | मर्षिष्यथ | म. |
| | मर्षिष्यामि | मर्षिष्यावः | मर्षिष्यामः | उ. |
| लोट् | मृष्यतु-तात् | मृष्यताम् | मृष्यन्तु | प्र. |
| | मृष्य-तात् | मृष्यतम् | मृष्यत | म. |
| | मृष्याणि | मृष्याव | मृष्याम | उ. |
| लङ् | अमृष्यत् | अमृष्यताम् | अमृष्यन् | प्र. |
| | अमृष्यः | अमृष्यतम् | अमृष्यत | म. |
| | अमृष्यम् | अमृष्याव | अमृष्याम | उ. |
| वि. लि. | मृष्येत् | मृष्येताम् | मृष्येयुः | प्र. |
| | मृष्येः | मृष्यतम् | मृष्येत | म. |
| | मृष्येयम् | मृष्येव | मृष्येम | उ. |
| आ. लि. | मृष्यात् | मृष्यास्ताम् | मृष्यासुः | प्र. |
| | मृष्याः | मृष्यास्तम् | मृष्यास्त | म. |
| | मृष्यासम् | मृष्यास्व | मृष्यास्म | उ. |
| लुङ् | अमर्षीत् | अमर्षिष्टाम् | अमर्षिषुः | प्र. |
| | अमर्षीः | अमर्षिष्टम् | अमर्षिष्ट | म. |
| | अमर्षिषम् | अमर्षिष्व | अमर्षिष्म | उ. |
| लृङ् | अमर्षिष्यत् | अमर्षिष्यताम् | अमर्षिष्यन् | प्र. |
| | अमर्षिष्यः | अमर्षिष्यतम् | अमर्षिष्यत | म. |
| | अमर्षिष्यम् | अमर्षिष्याव | अमर्षिष्याम | उ. |

**आत्मनेपदपक्षे**—१. मृष्यते। २. **प्र.** ममृषे ममृषाते ममृषिरे। **म.** ममृषिषे ममृषाथे ममृषिध्वे। **उ.** ममृषे ममृषिवहे ममृषिमहे। ३. मर्षिता। ४. मर्षिष्यते। ५. मृष्यताम्। ६. अमृष्यत। ७. मृष्येत। ८. मर्षिषीष्ट। ९. अमर्षिष्ट। १०. अमर्षिष्यत।

**कर्मणि**— मृष्यते। **णिचि**— मर्षयति-ते। अममर्षत्-त-अमीमृषत्[१]-त। **सनि**— मिमर्षिषति ते। **यङि**—मरीमृष्यते। **यङ्लुकि**—ममृषीति-मर्मष्टि। **कृत्सु**[१]—मर्षकः-र्षिका, ममर्षिकः-र्षिका, मरीमृषकः-षिका, मर्षिता-त्री, मर्षयिता-त्री, मिमर्षिषिता-त्री, मरीमृषिता-त्री, मर्षणीयम्, मर्षणम्, मर्षः, मर्षी, मर्षितुम्, मृष्टः, मृष्टिः, मृष्यन्, मर्षिष्यन्, मर्षिष्यमाणः, परिमृष्यन्[२]-न्ती,

१ 'उर्त्रत्' (७-४-७) उपधायाः ऋवर्णस्य स्थाने ऋद्वा चङ् परे णौ।

२ 'परेर्मृषः' (१-३-८२) इति परिपूर्वकस्यास्य कर्तृगामिन्यपि क्रियाफले परस्मैपदं भवति। तेन शतरि श्यनि अङ्गस्य गुणनिषेधे च रूपमेवम्।

मर्षितः[१]-मर्षितवान्, अपमृषितम् (वाक्यम्) दुर्मर्षणः[२], मर्षित्वा[३]-मृषित्वा, मर्षणः,[४] मृष्यमाणः, इत्यादि दैवादिक 'तृष्यति' (१२२८) वत्।

(११६५) **शुचिर्—पूतीभावे**। (शुद्ध होना, स्नान करना, पवित्र होना)। अकर्म.। सेट्। उभय.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | शुच्यते | शुच्येते | शुच्यन्ते | प्र. |
| | शुच्यसे | शुच्येथे | सुच्यध्वे | म. |
| | शुच्ये | शुच्यावहे | शुच्यामहे | उ. |
| लिट् | शुशुचे | शुशुचाते | शुशुचिरे | प्र. |
| | शुशुचिषे | शुशुचाथे | शुशुचिध्वे | म. |
| | शुशुचे | शुशुचिवहे | शुशुचिमहे | उ. |
| लुट् | शोचिता | शोचितारौ | शोचितारः इत्यादि। | |
| लृट् | शोचिष्यते | शोचिष्येते | शोचिष्यन्ते इत्यादि। | |
| लोट् | शुच्यताम् | शुच्येताम् | शुच्यन्ताम् | प्र. |
| | शुच्यस्व | शुच्येथाम् | शुच्यध्वम् | म. |
| | शुच्यै | शुच्यावहै | शुच्यामहै | उ. |
| लङ् | अशुच्यत | अशुच्येताम् | अशुच्यन्त | प्र. |
| | अशुच्यथाः | अशुच्येथाम् | अशुच्यध्वम् | म. |
| | अशुच्ये | अशुच्यावहि | अशुच्यामहि | उ. |
| वि. लि. | शुच्येत | शुच्येयाताम् | शुच्येरन् | प्र. |
| | शुच्येथाः | शुच्येयाथाम् | शुच्येध्वम् | म. |
| | शुच्येय | शुच्येवहि | शुच्येमहि | उ. |
| आ. लि. | शोचिषीष्ट | शोचिषीयास्ताम् | शोचिषीरन् | प्र. |
| | शोचिषीष्ठाः | शोचिषीयास्थाम् | शोचिषीध्वम् | म. |
| | शोषिषीय | शोचिषीवहि | शोचिषीमहि | उ. |
| लुङ् | अशोचिष्ट | अशोचिषाताम् | अशोचिषत | प्र. |
| | अशोचिष्ठाः | अशोचिषाताम् | अशोचिड्ढ्वम्-ध्वम् | म. |
| | अशोचिषि | अशोचिषिष्वहि | अशोचिष्महि | उ. |
| लृङ् | अशोचिष्यत | अशोचिष्येताम् | अशोचिष्यन्त इत्यादि। | |

**परस्मैपदपक्षे**—१. शुच्यति। २. प्र. शुशोच शुशुचतुः शुशुचुः म. शुशोचिथ शुशुचथुः शुशुच। उ. शुशोच शुशुचिव शुशुचिम। ३. शोचिता। ४. शोचिष्यति। ५. प्र. शुच्यतु।

१ 'मृषस्तितिक्षायाम्' (१-२-२०) इति सेटों निष्ठयाः कित्त्वनिषेधात् गुणे रूपमेवम्।

२ ईषदाद्युपपदेषु 'भाषायां शसि युधि–' (वा. ३-३-१३०) इति खलपवादो युच्। 'वा इत्येके' इति प्रक्रियाकौमुदी। तन्मते ईषन्मर्षः - दुर्मर्षः - सुमर्षः इति रूपाण्यपि बोध्यानि।

३ क्त्वायाम् 'तृषिमृषिकृशेः काश्यपस्य' इति कित्वविकल्पः। तेन रूपद्वयम्।

४ 'नन्द्यादेः' (३-१-१३४) आकृतिगणत्वात्, बाहुलकाद् वा कर्तरि, ण्यन्तात्, शुद्धाद् वा ल्युप्रत्यये रूपमेवम्।

शुच्यतात् शुच्यताम् शुच्यन्तु। म. शुच्य-शुच्यतात् शुच्यतम् शुच्यत। उ. शुच्यानि शुच्याव शुच्याम। ६. प्र. अशुच्यत् अशुच्यताम् अशुच्यन्। म. अशुच्यः अशुच्यतम् अशुच्यत। उ. अशुच्यम् अशुच्याव अशुच्याम। ७. प्र. शुच्येत् शुच्येताम् शुच्येयुः। म. शुच्येः शुच्येतम् शुच्येत। उ. शुच्येयम् शुच्येव शुच्येम। ८. प्र. शूच्यात् शुच्यास्ताम् शुच्यासुः। म. शुच्याः शुच्यास्तम् शुच्यास्त। उ. शुच्यासम् शुच्यास्व शुच्यास्म। ९. प्र. अशोचीत् अशोचिष्टाम् अशोचिषुः। म. अशोचीः अशोचिष्टम् अशोचिष्ट। उ. अशोचिषम् अशोचिष्व अशोचिष्म। पक्षे—प्र. अशुचत् अशुचताम् अशुचन्। म. अशुचः अशुचतम् अशुचत। उ. अशुचम् अशुचाव अशुचाम। १०. अशोचिष्यत्।

**कृत्सु**—शुचित्वा-शोचित्वा, शुक्तम्, शुक्तिः, शुक्तिका। इतराणि सर्वाणि रूपाणि दैवादिक दीप्यति (११५०) वत्।

**( ११६६ ) णह (नह) —बन्धने**। (बांधना)। सकर्म.। अनिट्। उभय.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | नह्यति | नह्यतः | नह्यन्ति | प्र. |
| | नह्यसि | नह्यथः | नह्यथ | म. |
| | नह्यामि | नह्यावः | नह्यामः | उ. |
| लिट् | ननाह | नेहतुः | नेहुः | प्र. |
| | नेहिथ-ननद्ध | नेहथुः | नेह | म. |
| | ननाह-ननह | नेहिव | नेहिम | उ. |
| लुट् | नद्धा | नद्धारौ | नद्धारः इत्यादि। | |
| लृट् | नत्स्यति | नत्स्यतः | नत्स्यन्ति इत्यादि। | |
| लोट् | नह्यतु-तात् | नह्यताम् | नह्यन्तु | प्र. |
| | नह्य-तात् | नह्यतम् | नह्यत | म. |
| | नह्यामि | नह्याव | नह्याम | उ. |
| लङ् | अनह्यत् | अनह्यताम् | अनह्यन् | प्र. |
| | अनह्यः | अनह्यतम् | अनह्यत | म. |
| | अनह्यम् | अनह्याव | अनह्याम | उ. |
| वि. लि. | नह्येत् | नह्येताम् | नह्येयुः | प्र. |
| | नह्येः | नह्येतम् | नह्येत | म. |
| | नह्येयम् | नह्येव | नह्येम | उ. |
| आ. लि. | नह्यात् | नह्यास्ताम् | नह्यासुः | प्र. |
| | नह्याः | नह्यास्तम् | नह्यास्त | म. |
| | नह्यासम् | नह्यास्व | नह्यास्म | उ. |
| लुङ् | अनात्सीत् | अनाद्धाम् | अनात्सुः | प्र. |
| | अनात्सीः | अनाद्धम् | अनाद्ध | म. |
| | अनात्सम् | अनात्सव | अनात्सम | उ. |
| लृङ् | अनत्स्यत् | अनत्स्यताम् | अनत्स्यन् इत्यादि। | |

**आत्मनेपदपक्षे**—१. नह्यते। २. **प्र.** नेहे नेहाते नेहिरे। **म.** नेहिषे नेहाथे नेहिढ्वे-ध्वे। **उ.** नेहे नेहिवहे नेहिमहे। ३. नद्धा। ४. नेत्स्यते। ५. नह्यताम्। ६. अनह्यत। ७. नह्येत। ८. नत्सीष्ट। ९. अनद्ध। १०. अनत्स्यत।

**कर्मणी**—नह्यते। ९. अनाहि। **णिचि**—नाहयति-ते। **सनि**—निनत्सति-ते। **यङि**—नानह्यते। **यङ्लुकि**—नानहीति-नानद्धि। **सम्**—कवचधारणे, सन्नह्यति-ते। **परि**—विशालतायाम्, परिणह्यति। **कृत्सु**—नाहकः-हिका, णिचि—नाहकः-हिका, निनत्सकः-त्सिका, नानहकः-हिका, नद्धा[1]-दध्री, नाहयिता-त्री, निनत्सिता-त्री, नानहिता-त्री, नह्यन्[2]-न्ती-ती, नाहयन्-न्ती, निनत्सन्-न्ती, नत्स्यन्-न्ती-ती, नाहयिष्यन्-न्ती-ती, नह्यमानः, नाह्यमानः, नत्स्यमानः, नाहयिष्यमाणः, उपानत्[3]-उपानद्-उपानहौ-उपानहः, अपिनद्धम्-पिनद्धः-सुनद्धम्- नद्धवान्, नाहितः, नहः, प्रणाही, नाहः, निनत्सुः, नानहः, नद्धव्यम्, नाहयितव्यम्, नहनीयम्, नाहनीयम्, नाह्यम्, नह्यमानः, नाह्यमानः, नाहः, संनाहः-परिणाहः-परीणाहः,[4] नद्धुम्, नाहयितुम्, नद्धिः, नाहना, नहनम्, नद्ध्वा, नाहयित्वा, पिणह्य, पिनह्य,[5] प्रणह्य-प्रणाह्य।

**( ११६७ ) रञ्ज—रागे**। (रंगना, किसी वस्तु में अनुरक्त होना, मोहित होना)। अक.। अनि.। उभय.। रज्यति-ते। रज्यतु-ताम्। अरज्यत्-त। रज्येत्-त। सर्वं 'रजति' (९९९) वत्।

**( ११६८ ) शप—आक्रोशे**। (शपथ करना, श्राप देना)। सकर्म.। अनि.। उभय.।

१. शप्यति शप्यतः शप्यन्ति। २. **प्र.** शशाप शेपतुः शेपुः। **म.** शेपिथ-शशप्थ शेपथुः शेप। **उ.** शशाप-शशप शेपिव शेपिम। ३. शप्ता शप्तारौ शप्तारः। ४. शप्स्यति शप्स्यतः शप्स्यन्ति। **म.** शप्स्यसि शप्स्यथः शप्स्यथ। **उ.** शप्स्यामि शप्स्यावः शप्स्यामः। ५. **प्र.** शप्यतु-शप्यतात् शप्यताम् शप्यन्तु। **म.** शप्य-शप्यतात् शप्यतम् शप्यत। **उ.** शप्यानि शप्याव शप्याम। ६. **प्र.** अशप्यत् अशप्यताम् अशप्यन्। **म.** अशप्यः अशप्यतम् अशप्यत्। **उ.** अशप्यम् अशप्याव अशप्याम। ७. **प्र.** शप्येत् शप्येताम् शप्येयुः। **म.** शप्येः शप्येतम् शप्येत। **उ.** शप्येयम् शप्येव शप्येम। ८. **प्र.** शप्यात् शप्यास्ताम् शप्यासुः। **म.** शप्याः शप्यास्तम् शप्यास्त। **उ.** शप्यासम् शप्यास्व शप्यास्म। ९. **प्र.** अशाप्सीत् अशाप्ताम् अशाप्सुः। **म.** अशाप्सीः अशाप्तम् अशाप्त **उ.** अशाप्सम् अशाप्स्व अशाप्स्म। १०. अशाप्स्यत्।

**आत्मनेपदपक्षे**—१. शप्यते। २. **प्र.** शेपे शेपाते शेपिरे। **म.** शेपिषे शेपाथे शेपिध्वे। **उ.** शेपे शेपिवहे शेपिमहे। ३. शप्ता। ४. शप्स्यते। ५. शप्यताम्। ६. अशप्यत। ७.

---

१ 'एकाच् उपदेशेऽनुदात्तात्' (७-२-१०) इतीण्णिषेधे धत्वचर्त्वयोश्च रूपम्। एवं तव्यदादिष्वपि बोध्यम्।
२ 'दिवादिभ्यः—' (३-१-६९) इति श्यन् विकरणप्रत्ययः।
३ उपनह्यते = बध्यते इति उपानत् = पादुका, शिक्यविशेषश्च। 'नहिवृति—' (६-३-११६) इति क्विबन्ते परतः पूर्वपदस्य दीर्घो भवति। एवं प्राणत् इत्यत्रापि। णत्वं प्राणदित्यत्राधिकमिति विशेषः।
४ 'उपसर्गस्य घञ्यमनुष्ये बहुलम्' (६-३-१२२) इति पूर्वपदस्य दीर्घः। णत्वम्।
५ 'दृप्योर्णुवानान् ककुभो बलौघान् वितत्य शार्ङ्गं कवचं पिनह्य।' (भ.का. ३-४७)

शप्येत। ८. **प्र.** शप्सीष्ट शप्सीयास्ताम् शप्सीरन्। **म.** शप्सीष्ठाः शप्सीयास्थाम् शप्सीध्वम्। **उ.** शप्सीय शप्सीवहि शप्सीमहि। ९. **प्र.** अशप्त अशप्साताम् अशप्सत। **म.** अशप्थाः अशप्साथाम् अशब्ध्वम्। **उ.** अशप्सि अशप्सवहि अशप्समहि। १०. अशप्स्यत।

**कृत्सु**—शापकः-पिका, **णिचि**—शापकः-पिका, शिशप्सकः-प्सिका, शाशपकः-पिका, शप्ता-त्री, शापयति-त्री, शिशप्सिता-त्री, शाशपिता-त्री, शप्यन्-न्ती, शापयन्-न्ती, शिशप्सन्-न्ती। 'खपति' (९८५) वत्।

**(११६९) पद—गतौ**। (जाना)। **अनु**—अनुशरण करना, **आ**—प्राप्त होना, **प्रति**—स्वीकार करना, **वि**—दुःख का अनुभव करना, **व्या**—मार डारना, **सम्**—वृद्धि को प्राप्त होना, **उत्**—उत्पन्न होना। सकर्म.। अनि.। आत्मने.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | पद्यते | पद्येते | पद्यन्ते | प्र. |
| | पद्यसे | पद्येथे | पद्यध्वे | म. |
| | पद्ये | पद्यावहे | पद्यामहे | उ. |
| लिट् | पेदे | पेदाते | पेदिरे | प्र. |
| | पेदिषे | पेदाथे | पेदिध्वे | म. |
| | पेदे | पेदिवहे | पेदिमहे | उ. |
| लुट् | पत्ता | पत्तारौ | पत्तारः इत्यादि। | |
| लृट् | पत्स्यते | पत्स्येते | पत्स्यन्ते इत्यादि। | |
| लोट् | पद्यताम् | पद्येताम् | पद्यन्ताम् | प्र. |
| | पद्यस्व | पद्येथाम् | पद्येध्वम् | म. |
| | पद्यै | पद्यावहै | पद्यामहै | उ. |
| लङ् | अपद्यत | अपद्येताम् | अपद्यन्त | प्र. |
| | अपद्यथाः | अपद्येथाम् | अपद्यध्वम् | म. |
| | अपद्ये | अपद्यावहि | अपद्यामहि | उ. |
| वि. लि. | पद्येत | पद्येताम् | पद्येरन् | प्र. |
| | पद्येथाः | पद्येथाम् | पद्येध्वम् | म. |
| | पद्येय | पद्येवहि | पद्येमहि | उ. |
| आ. लि. | पत्सीष्ट | पत्सीयास्ताम् | पत्सीरन् | प्र. |
| | पत्सीष्ठाः | पत्सीयास्थाम् | पत्सीध्वम् | म. |
| | पत्सीय | पत्सीवहि | पत्सीमहि | उ. |
| लुङ् | अपादि | अपत्साताम् | अपत्सत | प्र. |
| | अपत्थाः | अपत्साथाम् | अपद्ध्वम् | म. |
| | अपत्सि | अपत्स्वहि | अपत्स्महि | उ. |

लृङ् अपत्स्यत अपत्सयेताम् अपत्स्यन्। इत्यादि।

**कर्मणि**—पद्यते। **णिचि**—पादयति। ९. अपीपदत्। **सनि**—पित्सते। **यङि**—पनीपद्यते। **यङ्लुकि**—पनीपदीति-पनीपत्ति। **कृत्सु**—पादकः-दिका, **णिचि**—पादकः-दिका, पित्सकः[१]-त्सिका, पनीपदकः[२]-दिका, पत्ता-पत्त्री, पादयिता-त्री, पित्सिता, पनीपदिता-त्री, पादयन्-न्ती, पादयिष्यन्-न्ती-ती, प्रणिपद्यमानः[३], पादयमानः, पित्समानः, पनीपद्यमानः, पत्स्यमानः, पादयिष्यमाणः, पत्[४]-पद्-पदौ-पदः, प्रपन्नः[५]-पन्नवान्, पादितः, पित्सितः, पदः, उत्पदिष्णुः,[६] पदनः,[७] पादुकः,[८] पादुका, पादः,[९] सम्पद्य,[१०] सम्पादी, प्रणिपेदिवान्,[११] पादः, पित्सुः, पनीपदः, पत्तव्यम्, पादयितव्यम्, पदनीयम्, पादनीयम्, पाद्यम्, पद्यमानः, पदम्,[१२] आस्पदम्,[१३] गोष्पदम्,[१४] पत्तुम्, पादयितुम्, पित्सितुम्, पनीपदितुम्, सम्पत्[१५]- सप्पत्तिः-विपत्-प्रतिपत्-अपत्, पद्या,[१६] पादना, पित्सा, पनीपदा, पदनम्, आपादनम्, पत्त्वा, पादयित्वा, प्रणिपद्य, सम्पाद्य, पादूः,[१७] पद्मम्,[१८] पद्मिनी

---

१ 'सनि मीमाधरभ–' (७-४-५४) इति सनन्ते सर्वत्र इस्। 'अत्र लोपाभ्यासस्य' (७-४-५८) इत्यभ्यासलोपः। 'स्कोः संयोगाद्योरन्ते च' (८-२-२९) इति सकारलोपः। 'इको झल्' (१-२-९) इति सनः कित्त्वम्। 'खरि च' (८-४-५५) इति दकारस्य चर्त्वं भवति।

२ यङन्ताण्ण्वुलि, 'नीग् वञ्चुस्रंसु–' (७-४-८४) इत्यभ्यासस्य नीगागमः। अभ्यासदीर्घापवादः। एवं यङन्ते सर्वत्र ज्ञेयम्।

३ 'नेर्गदनदपतपद–' (८-४-१७) इत्यादिना नेर्णत्वम्।

४ पद्यतेऽनेनेति पत् = पादः। क्विबन्ते चर्त्वविकल्पः।

५ 'रदाभ्यां निष्ठातो नः पूर्वस्य च दः' (८-२-४२) इति निष्ठातकारधातुदकारयोर्नत्वे रूपम्।

६ 'अलङ्कृञ् निराकृञ्–' (३-२-१३६) इत्यादिना इष्णुच् प्रत्ययः तच्छीलादिषु कर्तृषु भवति इति माधवः।

७ 'जुचङ्क्रम्य–' (३-२-१५०) इत्यादिना ताच्छीलिको युच् प्रत्ययः।

८ 'लषपतपद–' (३-२-१५४) इत्यादिना तच्छीलादिषु कर्तृषु उकञ् प्रत्ययः। अदन्तत्वात् स्त्रियां टाप्।

९ 'पदरुजविशस्पृशो घञ्' (३-३-१६) इति कर्तरि घञ्।

१० सम्पूर्वकादस्मात् कर्तरि शप्रत्यये, दिवादित्वात् श्यनि, पररूपे, रूपमेवम्। शप्रत्ययसद्भावे निदानं तु 'कृभ्वस्तियोगे सम्पद्यकर्तरि–' (५-४-५०) इति सूत्रे सम्पद्य इति निर्देश एव।

११ 'पपुष आगतं पपिवद्रूप्यम्' इति भाष्य (४-३-२४) प्रयोगात्, छान्दसोऽपि क्वसुः क्वचिद् भाषायां भवति इति ज्ञायते। तेन क्वसौ, एत्वाभ्यासलोपयोः, वस्वेकाजाद्धसाम्' (७-२-६७) इति इडागमे च रूपमेवम्।

१२ 'खनो घ च' (३-३-१२५) इत्यत्र चकारात् संज्ञायामन्यत्रापि घप्रत्ययो भवति इति ज्ञायते इत्याश्रयणेन घप्रत्यये रूपम्।

१३ आङ्पूर्वकादस्मात् संज्ञायां घप्रत्यये, 'आस्पदं प्रतिष्ठायाम्' (६-१-१४६) इत्यत्र निपातनात् सुडागमः।

१४ 'गोष्पदं सेवितासेवितप्रमाणेषु' (६-१-१४५) इत्यनेन सेविते असेविते प्रमाणे च विषये सुट् निपात्यते। षत्वं च भवति।

१५ 'सम्पदादिभ्यः–' (वा. ३-३-९४) इत्यनेन स्त्रियां भावादौ क्विप्। 'क्तिन्नपीष्यते' (भाष्येष्टि ३-३-९४) इति वचनात् क्तिनि सम्पत्तिः इत्यादिकमपि साध्वेव। प्रतिपत् = ज्ञानम् प्रथमतिथिश्च।

१६ 'संज्ञायां समजनिषद् निपत–' (३-३-९९) इत्यत्र 'निपद' इति क्षीरस्वामिपाठमाश्रित्यात्र क्यप् बोध्यः। पद्या = काव्यविशेषः 'एक प्रघट्टकं पद्या मुक्तकानां निबन्धनम्।' इति तल्लक्षणम्। अत्र पक्षे 'उपेयिवान्–' (३-२-१०९) इत्यत्र 'उप' इत्यस्येव अत्र 'नि' इत्यस्याविवक्षितत्वं ज्ञेयम्।

१७ 'णिच्च कसिपद्यर्तेः' (द.उ. १-१६८) इत्यूप्रत्ययः प्रत्ययस्य णित्वं च। पद्यते इति पादूः = पादुका। 'पादुका' इत्यत्र संज्ञायां कनि 'केऽणः' (७-४-१३) इति ह्रस्वो ज्ञेयः।

१८ औणादिके (द.उ. ७-२६) मनप्रत्ययेरूपम्। पद्यते मधुकरैरिति पद्मम् = कमलम्। अर्श आद्यजन्ते मत्वर्थीये पद्मा = लक्ष्मीः। मत्वर्थीय एव इनि प्रत्यये पद्मिनी इति च।

(११७०) **खिद—दैन्ये** (खिन्न होना, दुःख सहन करना, दीनता प्रकट करना)। अक.। अनि.। आत्मने.।

१. खिद्यते। २. **प्र.** चिखिदे चिखिदाते चिखिदिरे। **म.** चिखिदिषे चिखिदाथे चिखिदिध्वे। **उ.** चिखिदे चिखिदिवहे चिखिदिमहे। ३. खेता खेतारौ खेतारः। ४. खेत्स्यते खेत्स्येते खेत्स्यन्ते। ५. **प्र.** खिद्यताम् खिद्येताम् खिद्यन्ताम्। **म.** खिद्यस्व खिद्येथाम् खिद्यध्वम्। **उ.** खिद्यै खिद्यावहै खिद्यामहै। ६. **प्र.** अखिद्यत अखिद्येताम् अखिद्यन्त। **म.** अखिद्यथाः अखिद्येथाम् अखिद्यध्वम्। **उ.** अखिद्ये अखिद्यावहि अखिद्यामहि। ७. **प्र.** खिद्येत् खिद्येताम् खिद्यन्त। ८. **प्र.** खित्सीष्ट खित्सीयास्ताम् खित्सीरन्। **म.** खित्सीष्ठाः खीत्सीयास्थाम् खित्सीध्वम्। **उ.** खित्सीय खित्सीवहि खित्सीमहि। ९. **प्र.** अखित्त अखित्साताम् अखित्सत। **म.** अखित्थाः अखित्साथाम् अखिद्ध्वम्-द्ध्वम्। **उ.** अखित्सि अखित्स्वहि अखित्स्महि। १०. अखेत्स्यत।

**कर्मणि**—खिद्यते। **णिचि**—खेदयति-ते। **सनि**—चिकित्सते। **यङि**—चेखिद्यते। **यङ्लुकि**—चेखिदीति-चेखेत्ति। **कृत्सु**—खिन्नः, खेतुम्, खित्वा, प्रखिद्य, खेदः।

(११७१) **विद—सत्तायाम्**। (विद्यमान होना)। **निर्**—विरक्त होना। अक.। अनिट्। आत्मने.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | विद्यते | विद्येते | विद्यन्ते | प्र. |
| | विद्यसे | विद्येथे | विद्यध्वे | म. |
| | विद्ये | विद्यावहे | विद्यामहे | उ. |
| लिट् | विविदे | विविदाते | विविदिरे | प्र. |
| | विविदिषे | विविदाथे | विविदिध्वे | म. |
| | विविदे | विविदिवहे | विविदिमहे | उ. |
| लुट् | वेत्ता | वेत्तारौ | वेत्तारः इत्यादि। | |
| लृट् | वेत्स्यते | वेत्स्येते | वेत्स्यन्ते | प्र. |
| | वेत्स्यसे | वेत्स्येथे | वेत्स्यध्वे | म. |
| | वेत्स्ये | वेत्स्यावहे | वेत्स्यामहे | उ. |
| लोट् | विद्यताम् | विद्येताम् | विद्यन्ताम् | प्र. |
| | विद्यस्व | विद्येथाम् | विद्यध्वम् | म. |
| | विद्यै | विद्यावहै | विद्यामहै | उ. |
| लङ् | अविद्यत | अविद्येताम् | अविद्यन्त | प्र. |
| | अविद्यथाः | अविद्येथाम् | अविद्यध्वम् | म. |
| | अविद्ये | अविद्यावहि | अविद्यामहि | उ. |
| वि. लि. | विद्येत | विद्येयाताम् | विद्येरन् | प्र. |
| | विद्येथाः | विद्येयाथाम् | विद्येध्वम् | म. |
| | विद्येय | विद्येवहि | विद्येमहि | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आ. लि. | वित्सीष्ट | वित्सीयास्ताम् | वित्सीरन् | प्र. |
| | वित्सीष्ठाः | वित्सीयास्थाम् | वित्सीध्वम् | म. |
| | वित्सीय | वित्सीवहि | वित्सीमहि | उ. |
| लुङ् | अवित्त | अवित्साताम् | अवित्सत | प्र. |
| | अवित्थाः | अवित्साथाम् | अविद्ध्वम्-द्द्ध्वम् | म. |
| | अवित्सि | अवित्स्वहि | अवित्स्महि | उ. |
| लृङ् | अवित्स्यत | अवेत्स्याताम् | अवेत्स्यन्त इत्यादि । | |

**भावे**—विद्यते । ९. अवेदि । **णिचि**—वेदयति-ते । **सनि**—विवित्सते । **यङि**—वेविद्यते । **यङ्लुकि**—वेवेत्ति-वेविदीति । **कृत्सु**—वेदकः-दिका, **णिचि**—वेदकः-दिका, विवित्सकः-त्सिका, वेविदकः-दिका, वेदिता-त्री, वेदयिता-त्री, विवित्सिता-त्री, शानचि-विद्यमानः, णिनि प्रत्यये-वेदी, क्तिनि-वेत्तिः, वेत्तव्यम्, वेदनीयम्, वेद्यम्, विन्नम्-वित्तम्, वेत्तुम्, वेदनम्, वित्त्वा, संविद्य । इत्यादि दैवादिक 'खिद्यति' वत् ।

**(११७२) बुध—अवगमने**। (जानना)। **प्रति**—जागना, **सम्**—अच्छी तरह जानना । **अव**—जानना । सक. । अनि. । आत्मने. ।

१. **प्र.** बुध्यते[1] बुध्येते बुध्यन्ते । **म.** बुध्यसे बुध्येथे बुध्यध्वे । **उ.** बुध्ये बुध्यावहे बुध्यामहे । २. **प्र.** बुबुधे बुबुधाते बुबुधिरे । **म.** बुबुधिषे बुबुधाथे बुबुधिध्वे । **उ.** बुबुधे बुबुधिवहे बुबुधिमहे । ३. **प्र.** बोद्धा बोद्धारौ बोद्धारः । **म.** बोद्धासे बाद्धासाथे बोद्धाध्वे । **उ.** बोद्धाहे बोद्धास्वहे बोद्धास्महे । ४. **प्र.** भोत्स्यते[2] भोत्स्येते भोत्स्यन्ते । **म.** भोत्स्यथे भोत्स्येथे भोत्स्यध्वे । **उ.** भोत्स्ये भोत्स्यावहे भोत्स्यामहे । ५. **प्र.** बुध्यताम् बुध्येताम् बुध्यन्ताम् । **म.** बुध्यस्व बुध्येथाम् बुध्यध्वम् । **उ.** बुध्यै बुध्यावहै बुध्यामहै । ६. **प्र.** अबुध्यत अबुध्येताम् अबुध्यन्त । **म.** अबुध्यथाः अबुध्येथाम् अबुध्यध्वम् । **उ.** अबुध्ये अबुध्यावहि अबुध्यामहि । ७. **प्र.** बुध्येत बुध्येयाताम् बुध्येरन् । **म.** बुध्येथाः बुध्येयाथाम् बुध्येध्वम् । **उ.** बुध्येय बुध्येवहि बुध्येमहि । ८. **प्र.** भुत्सीष्ट बुत्सीयास्ताम् भुत्सीरन् । **म.** भुत्सीष्ठाः भुत्सीयास्थाम् भुत्सीध्वम् । **उ.** भुत्सीय भुत्सीवहि भुत्सीमहि । ९. **प्र.** अबुद्ध-अबोधि अभुत्साताम् अभुत्सत । **म.** अबुद्धाः अभुत्साताम् अबुद् ध्वम्-द् ध्वम् । **उ.** अभुत्सि अभुत्सावहि अभुत्सामहि । १०. **प्र.** अभोत्सयत अभोत्स्येताम् अभोत्स्यन्त । **म.** अभोत्स्यथाः अभोत्स्येथाम् अभोत्स्यध्वम् । **उ.** अभोत्स्ये अभोत्स्यावहि अभोत्स्यामहि ।

**कर्मणि**—बुध्यते । ९. अबोधि । **णिचि**—बोधयति[3] । **सनि**—बुभुत्सते । **यङि**—बोबुध्यते । **यङ्लुकि**—बोबुधीति-बोबोद्धि । **कृत्सु**—बोद्धव्यम्, बोधनीयम्, बोध्यम्, बुद्धः,[4] बुध्यमानः, बुबुध्यमानः, बोद्धुम्, बोदनम्, बुद्ध्वा, प्रबुद्धय, बोधकः-धिका,

१ यदि बुध्यते हरिशिशुस्तनन्धयः — इति जगन्नाथः ।
२ 'एकाचो बशो भष्—' (८-२-३७) इति भष् भावः ।
३ 'बुधयुधनश—' (१-३-८६) इति परस्मैपदम् । णिचश्चापवादः ।
४ 'क्तिच्क्तौ च संज्ञायम्' (३-३-१७४) इति संज्ञायाम् क्तप्रत्ययः बुध्यतीति बुद्धः = सिद्धार्थः ।

णिचि—बोधकः-धिका, बुभुत्सकः[१]-त्सिका, बोबुधकः-धिका, बुधानः,[२] बुबुधानः,[३] अन्यानि सर्वानि रूपाणि दैवादिक 'क्षुध्यति' (११९०) वत्।

**(११७३) युध—संप्रहारे।** (लड़ाई करना, युद्ध करना, संग्राम करना) अक.। अनिट्। आत्मने.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | युध्यते | युध्येते | युध्यन्ते | प्र. |
| | युध्यसे | युध्येथे | युध्यध्वे | म. |
| | युध्ये | युध्यावहे | युध्यामहे | उ. |
| लिट् | युयुधे | युयुधाते | युयुधिरे | प्र. |
| | युयुधिषे | युयुधाथे | युयुधिध्वे | म. |
| | युयुधे | युयुधिवहे | युयुधिमहे | उ. |
| लुट् | योद्धा | योद्धारौ | योद्धारः इत्यादि। | |
| लृट् | योत्स्यते | योत्स्येते | योत्स्यन्ते इत्यादि। | |
| लोट् | युध्यताम् | युध्येताम् | युध्यन्ताम् | प्र. |
| | युध्यस्व | युध्येथाम् | युध्यध्वम् | म. |
| | युध्यै | युध्यावहै | युध्यामहै | उ. |
| लङ् | अयुध्यत | अयुध्येताम् | अयुध्यन्त | प्र. |
| | अयुध्यथाः | अयुध्येथाम् | अयुध्यध्वम् | म. |
| | अयुध्ये | अयुध्यावहि | अयुध्यामहि | उ. |
| वि. लि. | युध्येत | युध्येयाताम् | युध्येरन् | प्र. |
| | युध्येथाः | युध्येयाथाम् | युध्येध्वम् | म. |
| | युध्येय | युध्येवहि | युध्येमहि | उ. |
| आ. लि. | युत्सीष्ट | सुत्सीयास्ताम् | युत्सीरन् | प्र. |
| | युत्सीष्ठाः | युत्सीयास्थाम् | युत्सीध्वम् | म. |
| | युत्सीय | युत्सीवहि | युत्सीमहि | उ. |
| लुङ् | अयुद्ध | अयुत्साताम् | अयुत्सत | प्र. |
| | अयुद्धाः | अयुत्साथाम् | अयुद्ध्वम् | म. |
| | अयुत्सि | अयुत्स्वहि | अयुत्स्महि | उ. |
| लृङ् | अयोत्स्यत | अयोत्स्येताम् | अयोत्स्यन्त | प्र. |
| | अयोत्स्यथाः | अयोत्स्येथाम् | अयोत्स्यध्वम् | म. |
| | अयोत्स्ये | अयोत्स्यावहि | अयोत्स्यामहि | उ. |

शेषं 'बुध्यति' (११७२) वत्।

१ सन्नन्ताण्णवुलि 'हलन्ताच्च' (१-२-१०) इति सनः कित्वे भष्भावे, चर्त्वे च रूपम्।

२ 'युधिबुधिदृशेः किच्च' (द.उ. ५-३३) इत्यानच् प्रत्ययः, किच्च। कित्वान्न गुणः। बुधानः = आचार्यः।

३ 'मुचिबुधिभ्यां सन्वच्च' इति मा.धा. वृत्युपात्तेन ओणादिक सूत्रेण आनच् प्रत्यये, तस्य सन्वद्भावात् द्वित्वे, कित्वे च रूपम्। बुबुधानः = बोद्धुमिच्छुः।

**कृत्सु**—योधकः-धिका, **णिचि**—योधकः-धिका, युयुत्सकः-त्सिका, योयुधकः-धिका, योद्धा-योद्‌ध्री, योधयिता-त्री, युयुत्सिता-त्री, योयुधिता-त्री, योधनीयम्, योधनम्, योधी, युद्धः, युद्धिः, योद्धव्यम्, योद्धुम्, युद्ध्वा, संयुध्य, योध्यः, युध्यमानः,[1] योत्स्यमानः, युयुत्सुः। राजयुध्वा,[2] सहयुध्वा,[3] चापयोधी,[4] प्रतियोधी[5], योधः[6]-यौधः, आयुधम्,[7] युद्धम्,[8] ईषद्योधनः[9], सुयोधनः, दुर्योधनः, युयुधानः,[10] योधयन्[11]-न्ती, युधानः,[12] युध्मः,[13] युयुत्सा,[14] आयोधनम्। इत्यादि 'दैवादिक बुध्यति' (११७२) वत्।

**( ११७४ ) रुध—कामे**। अनुपूर्वः। (कृपालु होना, दया करना, अनुमोदन देना, शोक करना, रोना, चाहना)। सक.। अनिट्। आत्मने.। अनुरुध्यते। अनुरुध्येते अनुरुध्यन्ते। अनुरुरुधे इत्यादि 'बुध्यति' (११७२) वत्।

**( ११७५ ) अण—प्राणने**। (जीना)। अक.। सेट्। आत्मने.। १. अण्यते। २. आणे। ३. अणिता। ४. अणिष्यते। ५. अण्यताम्। ६. आणयत। ७. अण्येत। ८. अणिषीष्ट। ९. अणिष्ट अणिषाताम्। १०. अणिष्यत।

**भावे**—अण्यते। **णिचि**—आणयति। **सनि**—अणिणिषते। **कृत्सु**—अणितव्यम्, अणनीयम्, आण्यम्, अणितम्, अण्यमानः, अणितुम्, प्राणनम्, अणित्वा, प्राण्य, प्राणः, प्राणी।

**( ११७६ ) मन—ज्ञाने**। (जानना, समझना)। **अनु**—अनुमोदन करना, अनुमान करना, **अव**—अपमान करना, भर्त्सना करना, **सम्**—अनुमोदन करना, कबूल करना,

---

१ शानचि दिवादित्वाच्छ्यनि रूपमेवम्। युध्यति इत्यादिप्रयोगानामुपपत्तिस्तु—'सुपः आत्मनः क्यच्' (३-१-८) इति क्यजन्तत्वेन, दिवादेरवृक्तृतत्वेनाकृति गणत्वाद्वा साधुत्वमिति बोध्यम्।

२ 'राजनि युधि कृञः' (३-२-९५) इति कर्मण्युपपदे क्वनिप्प्रत्ययः। राजानं योधितवान् राजयुध्वा। अत्रान्तर्भावितण्यर्थाद् धातोः सकर्मकत्वमिति बोध्यम्। 'भूते' (३-२-८४) इत्यधिकारे प्रत्ययस्यास्य विधानात् भूतेकालिकत्वम्। स्त्रियां 'वनो न हशः—' (वा. ४-१-७) इति निषेधात् ङीब्रेफौ न।

३ 'सहे च' (३-२-९६) इत्यनेन सह शब्द उपपदे धातोः क्वनिप्। सह योधितवान् सहयुध्वा।

४ 'बहुलमाभीक्ष्ण्ये' (३-२-८१) इति णिनिः। चापयोधी = किरातादिजातिविशेषः।

५ गम्यादिषु (३-३-३) पाठात् भविष्यत् काल औणादिके णिनिः। प्रतियोधी = यः प्रतिद्वन्द्वितया युद्धं करिष्यति स उच्यते।

६ प्रज्ञादिषु (५-४-३८) योधशब्दस्य पाठात् इगुपधलक्षणं कप्रत्ययं बाधित्वा पचादिपाठपरिकल्पनेनाच्। स्वार्थे तद्धितेऽणि विकल्पेन प्रवृत्ते तु योधः-यौधः इति रूपद्वयम्।

७ आदाय युध्यन्तेऽनेनेति आयुधम्। 'घञर्थे कविधानं स्थास्नापाव्यधिहनियुध्यर्थम्' (वा. ३-३-५८) इति वचनाद् घञर्थे करणे कप्रत्यये, कित्वेन गुणनिषेधे च रूपमेवम्।

८ 'क्तिच्क्तौ च संज्ञायाम्' (३-३-१७४) इति संज्ञायां क्तप्रत्यये घत्वजश्त्वयोश्च रूपम्।

९ ईषदाद्युपपदेषु, 'भाषायां शासियुधि—' (वा. ३-३-१३०) इति खलपवादो युच्प्रत्ययः। अत्रापि अन्तर्भावितण्यर्थाद्धातोः, विवक्षया वा सकर्मकत्वं बोध्यम्। कर्मणि प्रत्ययोऽयम्।

१० 'बाहुलकादानचि द्वित्वम्' इति मा.धा. वृत्तिः। बाहुलकादेव प्रत्ययस्य कित्वमपि बोध्यम्। तेन न गुणः।

११ 'बुधयुध—' (१-३-८६) इति कर्तृगामिन्यपि क्रियाफले ण्यन्तात् परस्मैपदमेव।

१२ 'युधिबुधिदृशिभ्यः किच्च' (द.उ. ५-३३) इत्यानच् प्रत्यये। तस्य कित्वेन गुणनिषेधे च युधानः इति। युधानः = रिपुः।

१३ 'इषियुधि—' (द.उ. ७-३१) इति मक्प्रत्ययः। युध्यतेऽस्मिन् राजेति युध्मः = शरत्कालः

१४ युयुत्सारहितो रामं ममापहरन् वने॥ (भ.का. ९/१२५)

**अभि**—अभिमान करना, इच्छा करना। सक.। अनि.। आत्मने.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | मन्यते | मन्येते | मन्यन्ते | प्र. |
| | मन्यसे | मन्येथे | मन्यध्वे | म. |
| | मन्ये | मन्यावहे | मन्यामहे | उ. |
| लिट् | मेने | मेनाते | मेनिरे | प्र. |
| | मेनिषे | मेनाथे | मेनिध्वे | म. |
| | मेने | मेनिवहे | मेनिमहे | उ. |
| लुट् | मन्ता | मन्तारौ | मन्तारः इत्यादि। | |
| लृट् | मंस्यते | मंस्येते | मंस्यन्ते इत्यादि। | |
| लोट् | मन्यताम् | मन्येताम् | मन्यन्ताम् | प्र. |
| | मन्यस्व | मन्येथाम् | मन्यध्वम् | म. |
| | मन्यै | मन्यावहै | मन्यामहै | उ. |
| लङ् | अमन्यत | अमन्येताम् | अमन्यन्त | प्र. |
| | अमन्यथाः | अमन्येथाम् | अमन्यध्वम् | म. |
| | अमन्ये | अमन्यावहे | अमन्यामहे | उ. |
| वि. लि. | मन्येत | मन्येताम् | मन्येरन् | प्र. |
| | मन्येथाः | मन्येयाथाम् | मन्येध्वम् | म. |
| | मन्येय | मन्येवहि | मन्येमहि | उ. |
| आ. लि. | मंसीष्ट | मंसीयास्ताम् | मंसीरन् | प्र. |
| | मंसीष्ठाः | मंसीयास्थाम् | मंसीध्वम् | म. |
| | मंसीय | मंसीवहि | मंसीमहि | उ. |
| लुङ् | अमंस्त | अमंसाताम् | अमंसत | प्र. |
| | अमंस्थाः | अमंसाथाम् | अमन्द्ध्वम्-ध्वम् | म. |
| | अमंसि | अमंस्वहि | अमंसमहि | उ. |
| लृङ् | अमंस्यत | अमंसयेताम् | अमंस्यन्त इतायदि। | |

**कर्मणि**—मन्यते। २. मेने। ९. अमानि। **णिचि**—मानयति। **सनि**—मिमंसते। **यङि**—मंमन्यते। **यङ्लुकि**—मंमनीति। **कृत्सु**—मानकः-निका, **णिचि**—मानकः-निका, मिमंसकः[१]-सिका, मन्मनकः[२]- मंमनकः-निका, मन्ता-त्री, मानयिता-त्री, मिमंसिता-त्री, मन्मनिता-मंमनिता-त्री, मानयन्-न्ती, मानयिष्यन्-न्ती-ती, मन्यमानः,[३] मानयमानः, मिमंसमानः, मंमन्यमानः, मंस्यमानः, मानयिष्यमाणः, सुमत्[४]-सुमतौ-सुमतः, हरिमत्, मतम्-राज्ञांमतः-मतवान्,

१ सन्नन्तात् ण्वुलि, द्विर्वचनादिकेषु कृतेषु 'नश्चापदान्तस्य झलि' (८-३-२४) इत्यनेन धातुनकारस्यानुस्वार रूपमेवम्। एवमेव सन्नन्ते सर्वत्र प्रक्रिया ज्ञेया।

२ यङन्ते सर्वत्र द्विर्वचनादिकेषु कृतेषु अभ्यासे 'नुगतोऽनुनासिकान्तस्य' (७-४-८५) इति नुगागमः, तस्य च पदान्तवदभाववचनात् परसवर्णविकल्पः तेन रूपद्वयम्।

३ शतरि दिवादित्वात् शपोऽपवादः श्यन्प्रत्ययोऽत्रेति ज्ञेयम्।

४ क्विपि, 'अनुदात्तोपदेशवनति–' (६-४-३७) इत्यनुनासिकलोपः। 'ह्रस्वस्य पिति कृति–' (६-१-७१) इति तुक्।

मानितः, मनः, दर्शनीयमानी, पण्डितम्मन्यः-पण्डितमानी, शूरमानी, कालिम्मन्या, दिवामन्या-दोषामन्यम्, गाम्मन्यः, स्त्रियम्मन्यः-स्त्रीम्मन्यः, नरम्मन्यः, भुवम्मन्यः, श्रिमन्यं (कुलम्) उपकुम्भमन्यः, श्रियम्मन्या, श्रीमन्मन्यः, रजनिम्मन्यः, साधुम्मन्यः, पटुमानिनी,[१] मेनकाः,[२] मानः, मिमंसुः, मन्मनः, मन्तव्यम्, मानयितव्यम्, मननीयम्, माननीयम्, मान्यम्, मन्यमानः, मन्तुम्, मानयितुम्, मन्या, सुमत्, मतिः, मन्तिः, अनुमतिः, मननम्, माननम्, मत्वा, मानयित्वा, अनुमत्य, अनुमान्य, मुनिः,[३] मनुः[४]-मनुष्यः-मनुषी, मन्तुः,[५] मन्युः,[६] मन्त्रः,[७] मठरः,[८] मांसम्,[९] मधु,[१०] मनः[११]।

**(११७७) युज—समाधौ**। समाधिश्चित्तवृत्तिनिरोधः। (चित्त स्थिर करना, मन को रोकना)। अकर्म.। अनिट्। आत्मने.।

१. युज्यते। २. **प्र.** युयुजे युयुजाते युयुजिरे। **म.** युयुजिषे युयुजाथे युयुजिध्वे। **उ.** युयुजे युयुजिवहे युयुजिमहे। ३. योक्ता। ४. योक्ष्यते योक्ष्येते योक्ष्यन्ते। ५. युज्यताम्। ६. अयुज्यत। ७. **प्र.** युज्येत युज्येताम् युज्येरन्। **म.** युज्येथाः युज्येयाथाम् युज्येध्वम्। **उ.** युज्येय युज्येवहि युज्येमहि। ८. **प्र.** युक्षीष्ट युक्षीयास्ताम् युक्षीरन्। **म.** युक्षीष्ठाः युक्षीयास्थाम् युक्षीध्वम्। **उ.** युक्षीय युक्षीवहि युक्षीमहि। ९. **प्र.** अयुक्त अयुक्षाताम् अयुक्षत। **म.** अयुक्थाः अयुक्षाथाम् अयुग्ध्वम्-अयुग्ढ्वम्। **उ.** अयुक्षि अयुक्ष्वहि अयुक्ष्महि। १०. अयोक्ष्यत।

**भावे**—युज्यते। ९. अयोजि। **णिचि**—योजयति। **सनि**—युयुक्षते। **यङि**—योयुज्यते। **यङ्लुकि**—योयुजीति-योयोक्ति। **कृत्सु**—योक्तव्यम्, योजनीयम्,

१ पट्वीमात्मानं मन्यते इत्यर्थे, पाक्षिके णिनि प्रत्यये। 'स्त्रियाः पुंवत्–' (६-३-३४) इति पुंवद्भावे रूपमेवम्। पक्षे पटुम्मन्या इत्यपि भवति।

२ 'आशिषि च' (३-१-१५०) इति वुन् प्रत्यये, 'प्रत्ययस्था–' (७-३-४४) इति प्राप्तस्येत्वस्य 'आशिषि वुनश्च न' (वा. ७-३-४५) इति निषेधः। 'आशीरर्थे के मनेः एवं वाच्यम्' इति वचनेन एकारः इति (प्र.कौ.) मेनका = अप्सरो विशेषः।

३ 'मनेरुच्च' (द.उ. १-५१) इति इन् प्रत्यये अकारस्य उकारादेशे च रूपमेवम्। मुनिः = ऋषिः।

४ औणादिके उप्रत्यये रूपमेवम् मन्यते मनुते वा मनुः। मनुशब्दात् मनोर्जाताव्यतौ षुक् च' (४-१-१६१) इति अञ् यत् इत्येतौ प्रत्ययौ भवतः, तत्सन्नियोगेन षुगागमश्च। मानुषः, मनुष्यः इति जातिशब्दौ एतौ। स्त्रियाम्, 'हयगवयमुकय–' (वा. ४-१-६३) इति प्रतिप्रसवेन ङीपि, 'हलस्तद्धितस्य' (६-४-१५०) इति यलोपे मनुषी इति रूपम्।

५ 'कमिमनि–' (द.उ. १-१२५) इति तुप्रत्यये रूपमेवम्। मन्तुः पुंस्यपराधेऽपि मनुष्येऽपि प्रजापतौ इति मेदिनी इति अमरकोशव्याख्याने (२-२६) वत्।

६ 'यजिमनि–' (द.उ. १-१३४) इति युच् प्रत्यये रूपमेवम्। मन्युः = दैन्यम्, यागः, अन्तर्गतः क्रोधश्च।

७ 'गुधृवीपचिवचियमिमनि–' (द.उ. ८-८९) इति त्रप्रत्यये रूपमेवम्। 'वेदभेदे गुह्यवादे मन्त्रः–' इति अमरः (३-१६७)।

८ 'वनिमनिभ्याम्–' (द.उ. ८-९९) इति अरप्रत्यये उकारे चान्तादेशे रूपमेवम्। मठरः = ज्ञानी गोत्रञ्च। मूढः - इति क्षीरस्वामी।

९ 'मनेदीर्घश्च' (द.उ. ९-२३) इति सप्रत्यये दीर्घे च रूपमेवम्। मन्यते तदिति मांसम् = पिशितम् इत्यर्थः।

१० 'फलिपाटिनमिमनि–' (द.उ. १-१०३) इति उप्रत्यये धकारादेशे च रूपम्। मन्यते तदतिशयेन इति मधु = माध्वी।

११ 'असुन्' (द.उ. ९-४९) इति असुन्प्रत्यये रूममेवम्।

योजकः-जिका, युयुक्षकः-क्षिका, योयुजकः-जिका, योक्ता-योक्ती, योजयिता-त्री, युयुक्षिता-त्री, प्रयुक्-प्रयुजौ-प्रयुजः, युक्,[१] योगी,[२] युक्तः,[३] युज्यमानः, योजयमानः, योगः[४]-परियोगः-पतियोगः, युगम्[५]-संयुगः,[६] युयुक्षमाणः, इत्यादि। शेषं रौधादिक मुनक्तिवत्।

**(११७८) सृज—विसर्गे।** (छोड़ना, विविध प्रकार से उत्पन्न करना, रचना करना)। **सम्**—मिलाप करना या होना, **उत्-वि-नि**—छोड़ देना। सक.। अनि.। आत्मने.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | सृज्यते | सृज्येते | सृज्यन्ते | प्र. |
| | सृज्यसे | सृज्येथे | सृज्यध्वे | म. |
| | सृज्ये | सृज्यावहे | सृज्यामहे | उ. |
| लिट् | ससृजे | ससृजाते | ससृजिरे | प्र. |
| | ससृजिषे | ससृजाथे | ससृजिध्वे | म. |
| | ससृजे | ससृजिवहे | ससृजिमहे | उ. |
| लुट् | स्रष्टा | स्रष्टारौ | स्रष्टारः | प्र. |
| | स्रष्टासे | स्रष्टासाथे | स्रष्टाध्वे | म. |
| | स्रष्टाहे | स्रष्टास्वहे | स्रष्टास्महे | उ. |
| लृट् | स्रक्ष्यते | स्रक्ष्येते | स्रक्ष्यन्ते | प्र. |
| | स्रक्ष्यसे | स्रक्ष्येथे | स्रक्ष्यध्वे | म. |
| | स्रक्ष्ये | स्रक्ष्यावहे | स्रक्ष्यामहे | उ. |
| लोट् | सृज्यताम् | सृज्येताम् | सृज्यन्ताम् | प्र. |
| | सृज्यस्व | सृज्येथाम् | सृज्यध्वम् | म. |
| | सृज्यै | सृज्यावहै | सृज्यामहै | उ. |
| लृङ् | असृज्यत | असृज्येताम् | असृजन्यन्त | प्र. |
| | असृज्यथाः | असृज्येथाम् | असृज्यध्वम् | म. |
| | असृज्ये | असृज्यावहि | असृज्यामहि | उ. |
| वि. लि. | सृज्येत | सृज्येयाथाम् | सृज्येरन् | प्र. |
| | सृज्येथाः | सृज्येयाथाम् | सृज्येध्वम् | म. |
| | सृज्येय | सृज्येवहि | सृज्येमहि | उ. |

१ स्त्रियां भावादौ सम्पदादित्वेन (वा. ३-३-१०८) क्विपि रूपम्। 'युजमापन्ना महर्षयः' इति धातुवृत्ता वुदाहृतम्। अत्र युजम् = गोमित्यर्थः।

२ 'सम्पृचानुरुधाङ्—' (३-२-१४२) इत्यादिना यथासम्भवं तच्छीलतद्धर्म तत्साधुकारिष्वर्थेषु घिनुण् प्रत्यये। 'चजोः कुघिण्ण्यतोः' (७-३-५२) इति कुत्वम्।

३ धातोरस्याकर्मकत्वात् 'क्तोऽधिकरणे च ध्रौव्य–' (३-३-७६) इति क्तप्रत्ययः।

४ 'हलश्च- (३-३-१२१) इति संज्ञायां घञि, कुत्वम्। योगः = चित्तवृत्तिनिरोधः। 'योगे च' (वा. ८-२-२२) इति वचनात्। 'परि' इति उपसर्गस्थस्य रेफस्य पाक्षिकलत्वम्।

५ 'संज्ञायाम् घञि, कुत्वे, उच्छादि (६-१-१६०) पाठाद् गुणो न। युगम् = चेतनाचेतनां समाधिः।

६ संज्ञायां घञि, कुत्वे, प्रतिजनादिषु (४-४-९९) पाठाद् गुणो न। संयुगः = समरः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आ. लि. | सृक्षीष्ट | सृक्षीयास्ताम् | सृक्षीरन् | प्र. |
| | सृक्षीष्ठाः | सृक्षीयास्थाम् | सृक्षीध्वम् | म. |
| | सृक्षीय | सृक्षीवहि | सृक्षीमहि | उ. |
| लुङ् | असृष्ट | असृक्षाताम् | असृक्षत | प्र. |
| | असृष्ठाः | असृक्षाथाम् | असृढ्वम् | म. |
| | असृक्षि | असृक्षवहि | असृक्ष्महि | उ. |
| लृङ् | अस्रक्ष्यत | अस्रक्ष्येताम् | अस्रक्ष्यन्त | प्र. |
| | अस्रक्ष्यथाः | अस्रक्ष्येथाम् | अस्रक्ष्यध्वम् | म. |
| | अस्रक्ष्ये | अस्रक्ष्यावहि | अस्रक्ष्यामहि | उ. |

**कृत्सु**—सर्जकः-जिका, स्रष्टा, पणिसर्ग्या रज्जुः, समवसर्ग्या, स्रक्, स्रज्वा, सिसृक्षकः, सरीसृजकः-जिका, इत्यादि मृजूधातु (१०६६) वत्।

**( ११७९ ) लिश—अल्पीभावे**। (कम करना)। सक.। अनि.। आत्म.। १. लिश्यते। २. लिलिशे। ३. लेष्टा। ४. लेक्ष्यते। ८. लिक्षीष्ट। ९. अलिक्षत। इत्यादि।

**( ११८० ) राध—वृद्धौ**। (बढ़ना)। अक.। अनि.। परस्मै.।

१. राध्यति। २. रराध रराधतुः रराधुः। ३. राद्धा। ४. रात्स्यति। ५. राध्यतु। ६. अराध्यत्। ७. राध्येत्। ८. राध्यात्। ९. अरात्सीत् अरासिद्धाम् अरात्सुः। अपराधयति, विराधयति = द्रुह्यति। आराधयति = अर्चति।

**( ११८१ ) व्यध**—ताडने। (मारना, पीटना, दुःख देना, चुभाना, छेदना)। सक.। अनि.। पर.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | विध्यति | विध्यतः | विध्यन्ति | प्र. |
| | विध्यसि | विध्यथः | विध्यथ | म. |
| | विध्यामि | विध्यावः | विध्यामः | उ. |
| लिट् | विव्याध | विविधतुः | विविधुः | प्र. |
| | विव्यधिथ-विव्यद्ध | विविधथुः | विविध | म. |
| | विव्याध-विव्यध | विविधिव | विविधिम | उ. |
| लुट् | व्यद्धा | व्यद्धारौ | व्यद्धारः | प्र. |
| | व्यद्धासि | व्यद्धास्थः | व्यद्धास्थ | म. |
| | व्यद्धास्मि | व्यद्धास्वः | व्यद्धास्मः | उ. |
| लृट् | व्यत्स्यति | व्यत्स्यतः | व्यत्स्यन्ति | प्र. |
| | व्यत्स्यसि | व्यत्स्यथः | व्यत्स्यथ | म. |
| | व्यत्स्यामि | व्यत्स्यावः | व्यत्स्यामः | उ. |
| लोट् | विध्यतु-तात् | विध्यताम् | विध्यन्तु | प्र. |
| | विध्य-तात् | विध्यतम् | विध्यत | म. |
| | विध्यानि | विध्याव | विध्याम | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लङ् | अविध्यत् | अविध्यताम् | अविध्यन् | प्र. |
| | अविध्यः | अविध्यतम् | अविध्यत | म. |
| | अविध्यम् | अविध्याव | अविध्याम | उ. |
| वि. लि. | विध्येत् | विध्येताम् | विध्येयुः | प्र. |
| | विध्येः | विध्येतम् | विध्येत | म. |
| | विध्येयम् | विध्येव | विध्येम | उ. |
| आ. लि. | विध्यात् | विध्यास्ताम् | विध्यासुः | प्र. |
| | विध्याः | विध्यास्तम् | विध्यास्त | म. |
| | विध्यासम् | विध्यास्व | विध्यास्म | उ. |
| लुङ् | अव्यात्सीत् | अव्याद्धाम् | अव्यात्सुः | प्र. |
| | अव्यत्सीः | अव्याद्धम् | अव्याद्ध | म. |
| | अव्यात्सम् | अव्यात्स्व | अव्यात्स्म | उ. |
| लृङ् | अव्यत्स्यत् | अव्यत्स्यताम् | अव्यत्स्यन् | प्र. |
| | अव्यत्स्यः | अव्यत्स्यतम् | अव्यत्स्यत | म. |
| | अव्यत्स्यम् | अव्यत्स्याव | अव्यत्स्याम | उ |

**कर्मणि**—विध्यते। २. विविधे। ९. अव्याधि। **णिचि**—व्याधयति। **सनि**—विव्यत्सति। **यङि**—वेविध्यते। **यङ्लुकि**—वाव्यद्धि-व्यावधीति। **कृत्सु**—व्याधकः-धिका, णिचि—व्याधकः-धिका, विव्यत्सक-सिका, वेविधकः-धिका, व्यद्धा-व्यद्ध्री, व्याधयिता-त्री, विव्यत्सिता-त्री, वेविधिता-त्री, व्यद्धव्यम्, व्यधनीयम्, व्याध्यम्, विद्धः, विध्यन्, व्यद्धुम्, विद्ध्वा, विविध्य, व्याधः, मृगावित्-मर्मावित्-दैत्यावित्-हृद्यावित्, व्यधः, अविधम्, विधुः, विधुरः, विध्यमानः, आविद्धम्-आविद्धः, आविद्धवान्, विद्धिः। इत्यादि प्लीधातुवत्।

**(११८२) पुष—पुष्टौ**। (पालन करना, पोषण करना)। सक.। अनिट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | पुष्यति | पुष्यतः | पुष्यन्ति | प्र. |
| | पुष्यसि | पुष्यथः | पुष्यथ | म. |
| | पुष्यामि | पुष्यावः | पुष्यामः | उ. |
| लिट् | पुपोष | पुपुषतुः | पुपुषुः | प्र. |
| | पुपोषिथ | पुपुषथुः | पुपुष | म. |
| | पुपोष | पुपुषिव | पुपुषम | उ. |
| लुट् | पोष्टा | पोष्टारौ | पोष्टारः | प्र. |
| | पोष्टासि | पोष्टास्थः | पोष्टास्थ | म. |
| | पोष्टास्मि | पोष्टास्वः | पोष्टास्मः | उ. |
| लृट् | पोक्ष्यति | पोक्ष्यतः | पोक्ष्यन्ति | प्र. |
| | पोक्ष्यसि | पोक्ष्यथः | पोक्ष्यथ | म. |
| | पोक्ष्यामि | पोक्ष्याव | पोक्ष्यामः | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लोट् | पुष्यतु-तात् | पुष्यताम् | पुष्यन्तु | प्र. |
| | पुष्य-तात् | पुष्यतम् | पुष्यत | म. |
| | पुष्याणि | पुष्याव | पुष्याम | उ. |
| लङ् | अपुष्यत् | अपुष्यताम् | अपुष्यन् | प्र. |
| | अपुष्यः | अपुष्यतम् | अपष्यत | म. |
| | अपुष्यम् | अपुष्याव | अपुष्याम | उ. |
| वि. लि. | पुष्येत् | पुष्येताम् | पुष्येयुः | प्र. |
| | पुष्येः | पुष्येतम् | पुष्येत | म. |
| | पुष्येयम् | पुष्येव | पुष्येम | उ. |
| आ. लि. | पुष्यात् | पुष्यास्ताम् | पुष्यासुः | प्र. |
| | पुष्याः | पुष्यास्तम् | पुष्यास्त | म. |
| | पुष्यासम् | पुष्यास्व | पुष्यास्म | उ. |
| लुङ् | अपुषत् | अपुषताम् | अपुषन् | प्र. |
| | अपुषः | अपुषतम् | अपुषत | म. |
| | अपुषम् | अपुषाव | अपुषाम | उ. |
| लृङ् | अपोक्ष्यत् | अपोक्ष्यताम् | अपोक्ष्यन् | प्र. |
| | अपोक्ष्यः | अपोक्ष्यतम् | अपोक्ष्यत | म. |
| | अपोक्ष्यम् | अपोक्ष्याव | अपोक्ष्याम | उ. |

**कर्मणि**—पुष्यते। ९. अपोषि। **णिचि**—पोषयति। **सनि**—पुपुक्षति। **यङि**—पोपुष्यते। **यङ्लुकि**—पोपुषीति-पोपोष्टि। **कृत्सु**—पोषकः-षिका, **णिचि**—पोषकः-षिका, पुपुक्षकः-क्षिका, पोपुषकः-षिका, पोष्टव्यम्, पोषणीयम्, पुष्यः, पोष्यम्, पुष्यम्, पोष्टुम्, पुष्टः, पुष्टिः, पोषणम्, पुष्ट्वा, परिपुष्य, स्वपोषन्, रैपोषम्, गोपोषम्, धान्यपोषम् वा पुष्यति। गोपोषी। इत्यादि दैवादिक 'तुष्यति' (११८४) वत्।

**(११८३) शुष—शोषणे**। (शुष्क होना, सूखना)। अक.। अनि.। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | शुष्यति | शुष्यतः | शुष्यन्ति | प्र. |
| | शुष्यसि | शुष्यथः | शुष्यथ | म. |
| | शुष्यामि | शुष्यावः | शुष्यामः | उ. |
| लिट् | शुशोष | शुशुषतुः | शुशुषुः | प्र. |
| | शुशोषिथ | शुशुषथुः | शुशुष | म. |
| | शुशोष | शुशुषिव | शुशुषिम | उ. |
| लुट् | शोष्टा | शोष्टारौ | शोष्टारः इत्यादि। | |
| लृट् | शोक्ष्यति | शोक्ष्यतः | शोक्ष्यन्ति | प्र. |
| | शोक्ष्यसि | शोक्ष्यथः | शोक्ष्यथ | म. |
| | शोक्ष्यामि | शोक्ष्यावः | शोक्ष्यामः | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लोट् | शुष्यतु-तात् | शुष्यताम् | शुष्यन्तु | प्र. |
| | शुष्य-तात् | शुष्यतम् | शुष्यत | म. |
| | शुष्याणि | शुष्याव | शुष्याम | उ. |
| लङ् | अशुष्यत् | अशुष्यताम् | अशुष्यन् | प्र. |
| | अशुष्यः | अशुष्यतम् | अशुष्यत | म. |
| | अशुष्यम् | अशुष्याव | अशुष्याम | उ. |
| वि. लि. | शुष्येत् | शुष्येताम् | शुष्येयुः | प्र. |
| | शुष्येः | शुष्येतम् | शुष्येत | म. |
| | शुष्येयम् | शुष्येव | शुष्येम | उ. |
| आ. लि. | शुष्यात् | शुष्यास्ताम् | शुष्यासुः | प्र. |
| | शुष्याः | शुष्यास्तम् | शुष्यास्तम | म. |
| | शुष्यासम् | शुष्यास्व | शुष्यास्म | उ. |
| लुङ् | अशुषत् | अशुषताम् | अशुषन् | प्र. |
| | अशुषः | अशुषतम् | अशुषत | म. |
| | अशुषम् | अशुषाव | अशुषाम | उ. |
| लृङ् | अशोक्ष्यत् | अशोक्ष्यताम् | अशोक्ष्यन् | प्र. |
| | अशोक्ष्यः | अशोक्ष्यतम् | अशोक्ष्यत | म. |
| | अशोक्ष्यम् | अशोक्ष्याव | अशोक्ष्याव | उ. |

अन्यत् सर्वं 'पुष्यति' (११८२) वत्।

**कृत्सु**—शोषकः-शिका, णिचि- शोषकः-षिका, शुशुक्षकः-क्षिका, शोशुषकः-षिका, शोष्टा-ष्ट्री, शोषयिता-त्री, शुशुक्षिता-त्री, शोशुषिता-त्री, शुष्यन्-न्ती, शोषयन्-न्ती, शोक्ष्यन्-न्ती-ती, शोषयिष्यन्-न्ती-ती, शोषयमाणः, शोषयिष्यमाणः, शोष्टव्यम्, शोषयितव्यम्, शोषणीयम्, शोष्यम्, शुष्यमाणः, शोष्टुम्, शोषयितुम्, शोषणम्, शुष्ट्वा, शोषयित्वा, संशुष्य, प्रशोष्य, शुष्कः,[१] शुष्कवान्, आतपशुष्कः,[२] ऊर्ध्वशोषं[३] शुष्यति। शुष्कम्,[४] शुष्णम्,[५] शुष्मं,[६] शुष्मा-बर्हि, शुषिरम्[७]।

**(११८४) तुष—प्रीतौ**। (सन्तुष होना, खुश होना)। अकर्म.। अनिट्। परस्मै.।

१ 'शुषः कः' (८-२-५१) इति निष्ठातकारस्य ककारः।
२ 'सिद्धशुष्कपक्वबन्धैश्च' (२-१-४१) इति सप्तमी समासः।
३ 'ऊर्ध्वे शुषिपूरोः' (३-४-४४) इत्यूर्ध्वे कर्तरि णमुल् प्रत्यये रूपमेवम्। उर्ध्वं शुष्यतीत्यर्थः। 'कषादिषु यथाविध्यनुप्रयोगः' (३-४-४६) इति ण्मुल् प्रयोजकस्यैव धातोरनुप्रयोगः।
४ शुष्यतीत्यर्थे औणादिके (द.उ. ३-३९) कप्रत्यये रूपमेवम्। शुष्कम् = निर्मांसम्।
५ औणादिक (द.उ. ५-४४) नप्रत्ययः किच्च भवति। शुष्णम् = अनुदकम्।
६ औणादिके (द.उ. ७-३०) मन् प्रत्यये रूपम्। शोषयति शुष्यते वा भयादिभिरिति शुष्मम्। 'शुष्मं तेजसि सूर्ये ना' इति मेदिनी।
७ औणादिके (द.उ. ८-२६) किरच्प्रत्यये रूपमेवम्। शुषिरम् = शुष्कम्। कुहरं शुषिरं विवरं विलम् इत्यमरः।

तुष्यति। तुतोष इत्यादि 'पुष्यति' (११८२) वत्।

**कृत्सु**—तोषकः-षिका, **णिचि**—तोषकः-षिका, तुतुक्षकः-क्षिका, तोतुषकः-षिका, तोष्टा-ष्ट्री, तोषयिता-त्री, तुतुक्षिता-त्री, तोतुषिता-त्री, तुष्यन्-न्ती, तोषयन्-न्ती, तुतुक्षन्-न्ती, तोक्ष्यन्-न्ती-ती, तोषयिष्यन्-न्ती-ती, तोषयमाणः, तोषयिष्यमाणः, तुट्-तुषौ-तुषः, तुष्टुम्-ष्टः-ष्टवान्, तोषितः, तुतुक्षितः, तोतुक्षितः-तवान्, तुषः, तोषः, तुतुक्षिषुः, तोतुषः, तोष्टव्यम्, तोषयितव्यम्, तोषणीयम्, तोष्यम्, तुष्यमाणः, तोष्यमाणः, संतोषः, तुतुक्षः, तोतुषः, तोष्टुम्, तोषयितुम्, संतुष्टिः, तोषणा, तोषणम्, तुष्ट्वा, तोषयित्वा, संतुष्य, संतोष्य।

**(११८५) दुष—वैकृत्ये**। वैकृत्यं विकृतिः। (दुःखित होना या करना, दूषित करना)। अक.। अनि.। पर.। प्रषादिः। दुष्यति। इत्यादि 'पुष्यति' (११८२) वत्। दोषयति दूषयति वा।

**कृत्सु**—दोषकः-षिका, दूषकः[१]-दोषक[२]-दूषकः-षिका, दुदुक्षकः-क्षिका, दोदूषकः-षिका, दोष्टा,[३] दोष्ट्री, दूषयिता-दोषयिता-त्री, दुदुक्षिता-त्री, दोदुषिता-त्री, दुष्यन्-न्ती, दूषयन्-दोषयन्-न्ती, दोक्ष्यन्-न्ती, दूषयिष्यन्-दोषयिष्यन्-न्ती-ती, व्यतिदुष्यमाणः, दूषयमाणः-दोषयमाणः, प्रदुट्[४]-ड्-प्रदुषौ-प्रदुषः, दुष्टम्-दुष्टः-दुष्टवान्, दूषितम्-तः, दोषितः, दोषः, दुषः, दोषी,[५] दूषणः,[६] दुदुक्षुः, दोदोषः, दोष्टव्यम्,-दोषनीयम्, दोष्यम्, दष्यम्-दोष्यम्, दुष्यमाणः, दूष्यमाणः-दोष्यमाणः, प्रदोषः,[७] दुषः-दोषः, दोष्टम्, दूषयितुम्-दोषयितुम्, दुष्टिः, दूषणा-दोषणा, दोषणम्, दूषणम्-दोषणम्, दुष्ट्वा, दूषयित्वा, दोषयित्वा, प्रदुष्य, प्रदुष्य-प्रदोष्य, दुषीका[८]।

**(११८६) श्लिष—आलिङ्गने**। (आलिङ्गन करना, गले लगाना, चिपके रहना)। सकर्म.। अनिट्। परस्मै.।

१. श्लिष्यति। २. **प्र.** शिश्लेष शश्लिषतुः शिश्लिषुः। **म.** शिश्लेषिथ शिश्लिषथुः शिश्लेष। **उ.** शिश्लेष शिश्लिषिव शिश्लिषिम। ३. श्लेष्टा। ४. श्लेक्ष्यति। ५. श्लिष्यतु। ६. अश्लिष्यत्। ७. श्लिष्येत्। ८. शिष्यात्। ९. अश्लिषत्-अश्लिक्षत्। १०. अश्लेक्ष्यत्।

**कर्मणि**—श्लिष्यते। **णिचि**—श्लेषयति-ते। **सनि**—शिश्लिक्षति। **यङि**—शेश्लिष्यते। **यङ्लुकि**—शेश्लिषीति शेश्लिष्टि। **कृत्सु**—श्लेष्टव्यम्, श्लेषनीयम्, श्लेष्यम्,

१ 'दोषो णौ' (६-४-९०) इति ण्यन्ते सर्वत्र उपधाया उदादेशः।

२ 'वा चित्तविरागे' (६-४-९१) इति चित्तस्याप्रीततायां गम्यमानायां-तु ऊदादेशविकल्पनात्, ऊदादेशाभावे लघूपधगुणे दोषकः-षिका इत्यादीनि रूपाणि ण्यन्त एव सर्वत्र भवन्ति।

३ तृचि, 'ष्टुना ष्टुः' (८-४-४१) इति तकारस्य ष्टुत्वेन टकारे रूपमेवम्। तव्यदादिष्वेवमेव प्रक्रिया ज्ञेया।

४ क्विपि, पदान्तनिमित्तके जशत्वे, चर्त्वे च रूपम्।

५ 'सम्पृचानुरुधाङ्—' (३-२-१४२) इत्यादिना इच्छीलादिषु कर्तृषु धिनुण् प्रत्यये रूपम्।

६ नन्द्यादित्वात् (३-१-१३४) ण्यन्तादस्मात् कर्तरि ल्युप्रत्ययेऽनादेशे च दूषणः इति रूपम्।

७ 'हलश्च' (३-३-१२१) इति संज्ञायां घञ्। नात्रावयवार्थादरः। प्रदोषः = रजनीमुखम्।

८ 'कषिदूषिभ्यामीकन्' (द.उ. ३-३५) इति ण्यन्तादस्मादीकन् प्रत्यये रूम्। दूषयन्ति नेत्रमित्ति दूषीका = नेत्रमलसंघातः।

शिलष्टः, आश्लिष्टः, श्लिष्यन्-न्ती, श्लेष्टुम्, श्लेषणम्, श्लिष्ट्वा, आश्लिष्य, उ. श्लेषः = नक्षत्रविशेषः, आलिङ्गनञ्च। संज्ञायां, करणे वा घञ् अत्र। आश्लेषी = णिनिः। श्लेषः = अलङ्कारविशेषः। आश्लिष्टः कन्यां देवदत्तः, गत्यर्थाकर्मक–' (३-४-७२) इत्यादिना कर्तरि क्तः। श्लेष्मा = औणादिकः (द.उ. ६-७३) मनिन् प्रत्ययः। रोगविशेषस्य, तज्जनकशारीरकपदार्थविशेषस्य च नाम। इतराणि सर्वाणि रूपाणि दैवादिक 'तुष्यति' (११८४) वत्।

**(११८७) शक—मर्षणे**। (सकना)। सक.। सेट्। उभय.। पुषादिः।

१. **प्र.** शक्यते शक्येते शक्यन्ते। **म.** शक्यसे शक्येथे शक्यध्वे। **उ.** शक्ये शक्यावहे शक्यामहे। २. **प्र.** शेके शेकाते शेकिरे। **म.** शेकिषे शेकाथे शेकिध्वे। **उ.** शेके शेकिवहे शेकिमहे। ३. शक्ता। ४. शक्ष्यते शक्ष्येते शक्ष्यन्ते। ५. **प्र.** शक्यताम् शक्येताम् शक्यन्ताम्। **म.** शक्यस्व शक्येथाम् शक्यध्वम्। **उ.** शक्यै शक्यावहै शक्यामहै। ६. **प्र.** अशक्यत अशक्येताम् अशक्यन्त। **म.** अशक्यथाः अशक्येथाम् अशक्यध्वम्। **उ.** अशक्ये अशक्यावहि अशक्यामहि। ७. **प्र.** शक्येत शक्येयाताम् शक्येरन्। **म.** शक्येथाः शक्येयाथाम् शक्येध्वम्। **उ.** शक्येय शक्येवहि शक्येमहि। ८. **प्र.** शक्षीष्ट शक्षीयास्ताम् शक्षीरन्। **म.** शक्षीष्ठाः शक्षीयास्थाम् शक्षीध्वम्। **उ.** शक्षीय शक्षीवहि शक्षीमहि। ९. **प्र.** अशक्त अशक्षाताम् अशक्षत। **म.** अशक्थाः अशक्षाथाम् अशग्ध्वम्. उ. अशक्षि अशक्ष्वहि अशक्ष्महि। १०. अशक्ष्यत।

**परस्मैपदपक्षे**—१. शक्यति। २. **प्र.** शशाक शेकतुः शेकुः। **म.** शेकिथ-शशक्थ शेकथुः शेक। **उ.** शशाक-शशक शेकिव शेकिम। ३. शक्ता। ४. शक्ष्यति। ५. शक्यतु-शक्यतात्। ६. **प्र.** अशक्यत् अशक्यताम् अशक्यन्। **म.** अशक्यः अशक्यतम् अशक्यत। **उ.** अशक्यम् अशक्याव अशक्याम। ७. शक्येत्। ८. शक्यात्। ९. **प्र.** अशाक्षीत् अशाक्ताम् अशाक्षुः। **म.** अशाक्षीः अशाक्तम् अशाक्त। **उ.** अशाक्षम् अशाक्ष्व अशाक्ष्म। १०. अशक्ष्यत।

**कर्मणि**—शक्यते। **णिचि**—शाकयति-ते। **सनि**—शिशकिषति-शिशक्षति-ते। **यङि**—शाशक्यते। **यङ्लुकि**—शाशक्ति-शाशकीति। **कृत्सु**—शकितव्यम्-शक्तव्यम्, शकनीयम्, शक्यम्, शक्तः-शकितः, शक्यन्[1]-शक्यमानः, शकनम्, शकित्वा, विशक्य, शकितुम्-शक्तुम्, शक्त्वा, शाकक-किका, **णिचि**—शाककः-किका, शिक्षकः[2]-क्षिका, शाशककः-किका, शक्ता[3]-त्री, शाकयिता-त्री, शिक्षिता-त्री, शाशकिता-त्री, भोक्तुं शक्यते,

१ 'विभाषितः' इत्यस्य तन्त्रान्तरप्रसिद्ध्या उभयपदित्वं क्षीरस्वामिशाकटायनदेवप्रभृतिभिरुक्तम्। तत्पक्षे शता श्यन्-च। एतत् पक्षखण्डकानां पुरुषकारधातुवृत्तिकारादीनां मते तु शक्यन् इति एकमेव परस्मैपदं रूपम्।

२ 'सनि मीमाधुरभलभशक–' (७-४-५४) इति अकारस्य इस्। 'स्कोः–' (८-२-२९) इति सकारलोपः। 'अत्र लोपोऽभ्यासस्य' (७-४-५८) इत्यभ्यासलोपः। षत्वम्। इक् समीपात् हलः परस्य झलादेः सनः कित्वान्न गुणः इति बोध्यम्। एवं सर्वत्र बोध्यम्।

३ धातोरनिट्त्वं सर्वसम्मतम्। तेनैव तृजादिषु रूपम्। क्षीरस्वामी तु 'विभाषितः' इत्यस्य इड् वा मतभेदः शकिता शक्ता। इत्याह।

शक्तो[१] घटः कर्तुम्, शकितो घटः कर्तुम्, शक्तिः,[२] शक्यम्,[३] शक्वा[४]-शक्वरी, शकलम्,[५] शक्रः,[६] शकुनः[७]-शकुन्तः-शकुन्ति-शकुनिः, शकृत्,[८] शकटः। इतराणि सर्वाणि रूपाणि 'नश्यति' (११९४) वत्।

**(११८८) ष्विदा (स्विदा)** —गात्र प्रक्षरणे। ञिष्विदा इत्येके। (पसीना, पसीना छूटना)। अक.। अनिट्। परस्मै.। पुषादिः।

१. स्विद्यति। २. प्र. सिष्वेद सिष्विदतुः सिष्विदुः। म. सिष्वेदिथ सिष्विदथुः सिष्विद। उ. सिष्वेद सिष्विदिव सिष्विदिम। ३. स्वेत्ता। ४. स्वेत्स्यति। ५. प्र. स्विद्यतु-तात् स्विद्यताम् स्विद्यन्तु। म. स्विद्य-स्विद्यतात् स्विद्यतम् स्विद्यत। उ. स्विद्यानि स्विद्याव स्विद्याम। ६. अस्विद्यत्। ७. स्विद्येत्। ८. स्विद्यात् स्विद्यास्ताम् स्विद्यासुः। ९. प्र. अस्विदत् अस्विदताम् अस्विदन्। म. अस्विदः अस्विदतम् अस्विदत। उ. अस्विदम् अस्विदाव अस्विदाम। १०. अस्वेत्स्यत्।

भावे—स्विद्यते। णिचि—स्वेदयति-ते। सनि—सिष्वित्सति। यङि—सेष्विद्यते। यङ्लुकि—सोस्विदीति-सोष्वेत्ति। कृत्सु—स्वेत्तव्यम्, स्वेदनीयम्, स्वेद्यम्, स्विन्नम्, स्विदितम्, स्वित्वा, प्रस्विद्य इत्यादि 'क्रुध्यति' (११८९) वत्।

**(११८९) क्रुध**—क्रोधे। (क्रोध करना)। अक.। सेट्। पर.। पुषादिः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | क्रुध्यति | क्रुध्यतः | क्रुध्यन्ति | प्र. |
| | क्रुध्यसि | क्रुध्यथः | क्रुध्यथ | म. |
| | क्रुध्यामि | क्रुध्यावः | क्रुध्यामः | उ. |
| लिट् | चुक्रोध | चुक्रुधतुः | चुक्रुधुः | प्र. |
| | चुक्रोधिथ | चुक्रुधथुः | चुक्रुध | म. |
| | चुक्रोध | चुक्रुधिव | चुक्रुधिम | उ. |
| लुट् | क्रोद्धा | क्रोद्धारौ | क्रोद्धारः | प्र. |
| | क्रोद्धासि | क्रोद्धास्थः | क्रोद्धास्थः | म. |
| | क्रोद्धास्मि | क्रोद्धास्वः | क्रोद्धास्मः | उ. |

१ 'शौनागाः कर्मणि निष्ठायां शकेरनिटमिच्छन्ति विकल्पेन काशिका (७-२-१७) इति वचनादत्रेड् विकल्पः। इति धातुवृत्तिः।

२ स्त्रियां क्तिनि शक्तिः। 'क्तिच् क्तौ च संज्ञायाम्' (३-३-१७४) इति क्तिचि शक्तिः = ऋषिविशेषस्य संज्ञा। पुलिङ्गोऽयं शब्दः शक्तिः = आयुधविशेषस्य संज्ञा।

३ 'शकिसहोश्च' (३-१-९९) इति ण्यदपवादो यत्प्रत्ययः।

४ 'अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते' (३-१-९९) इति वनिप् प्रत्यये रूपमेवम्। स्त्रियां तु 'वनो र च' (४-१-७) इति ङीप् तत् सन्नियोगेन रेफश्चान्तादेशः। तेन शक्वरी इति सिदध्यति। शक्वरी छन्दोविशेषः।

५ औणादिके (द.उ. ८-११२) कलप्रत्यये रूपमेवम्। 'भितं शकलम्' (८-२-५९) सारोऽपि।

६ औणादिके (द.उ. ८-३१) रक् प्रत्यये रूपम्। शक्रः = इन्द्रः।

७ 'शकेरुनोन्तोन्त्युनयः' (द.उ. १०/५) इति उनउन्त-उन्ति-उनिप्रत्ययः। पक्षिनामान्येतानि।

८ औणादिके (द.उ. ६-२६) ऋतिन्प्रत्यये रूपमेवम्। शकृत् = गोपुरीषम्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृट् | क्रोत्स्यति | क्रोत्स्यतः | क्रोत्स्यन्ति | प्र. |
| | क्रोत्स्यसि | क्रोत्स्यथः | क्रोत्स्यथ | म. |
| | क्रोत्स्यामि | क्रोत्स्यावः | क्रोत्स्यामः | उ. |
| लोट् | क्रुध्यतु-तात् | क्रुध्यताम् | क्रुध्यन्तु | प्र. |
| | क्रुध्य-तात् | क्रुध्यतम् | क्रुध्यत | म. |
| | क्रुध्यानि | क्रुध्याव | क्रुध्याम | उ. |
| लङ् | अक्रुध्यत् | अक्रुध्यताम् | अक्रुध्यन् | प्र. |
| | अक्रुध्यः | अक्रुध्यतम् | अक्रुध्यत | म. |
| | अक्रुध्यम् | अक्रुध्याव | अक्रुध्याम | उ. |
| वि. लि. | क्रुध्येत् | क्रुध्येताम् | क्रुध्येयुः | प्र. |
| | क्रुध्येः | क्रुध्येतम् | क्रुध्येत | म. |
| | क्रुध्येयम् | क्रुध्येव | क्रुध्येम | उ. |
| आ. लि. | क्रुध्यात् | क्रुध्यास्ताम् | क्रुध्यासुः | प्र. |
| | क्रुध्याः | कुध्यास्तम् | क्रुध्यास्त | म. |
| | क्रुध्यासम् | क्रुध्यास्व | क्रुध्यास्म | उ. |
| लुङ् | अक्रुधत् | अक्रुधताम् | अक्रुधन् | प्र. |
| | अक्रुधः | अक्रुधतम् | अक्रुधत | म. |
| | अक्रुधम् | अक्रुधाव | अक्रुधाम | उ. |
| लृङ् | अक्रोत्स्यत् | अक्रोत्स्यताम् | अक्रोत्स्यन् | प्र. |
| | अक्रोत्स्यः | अक्रोत्स्यतम् | अक्रोतस्यत | म. |
| | अक्रोत्स्यम् | अकोरत्स्याव | अक्रोत्स्याम | उ. |

**भावे**—क्रुध्यते। **णिचि**—क्रोधयति। ९. अचुक्रुधत्। **सनि**—चुक्रुत्सति। **यङि**—चोक्रुध्यते। **यङ्लुकि**—चोक्रुधीति-चोक्रोद्धि। **कृत्सु**—क्रोद्धव्यम्, क्रोधनीयम्, क्रोध्यम्, क्रुद्धः, क्रुध्यन्-न्ती, क्रोद्धुम्, क्रोधनम्, क्रुद्ध्वा, संक्रुध्य, क्रोधनः, क्रोधः।

**(११९०) क्षुध—बुभुक्षायम्**। (भूख लगना)। अक.। अनि.। परस्मै.। पुषादि। क्षुध्यति। इत्यादि 'क्रुध्यति' (११८९) वत्।

**(११९१) शुध—शौचे**। (शुद्ध होना, पवित्र होना)। अक.। अनि.। परस्मै.। पुषादिः। शुध्यति। शुशोध शुशुधतुः इत्यादि 'क्रुध्यति' (११८९) वत्।

**(११९२) षिधु (सिध्) —संराद्धौ**। (सिद्ध होना, जीत होना)। अक.। अनिट्। परस्मै.। पुषादि।

१. सिध्यति। २. **प्र.** सिषेध सिषिधतुः सिषिधुः। **म.** सिषेधिथ सिषिधथुः सिषिध। **उ.** सिषेध सिषिधिव सिषिधिम। ३. सेद्धा सेद्धारौ सेद्धारः। ४. सेत्स्यति सेत्स्यतः सेत्स्यन्ति। ५. **प्र.** सिध्यतु-तात् सिध्यताम् सिध्यन्तु। **म.** सिध्य-तात् सिध्यतम् सिध्यत। ५. सिध्यानि सिध्याव सिध्याम। ६. **प्र.** असिध्यत् असिध्यताम् असिध्यन्। **म.** असिध्यः असिध्यतम्

असिध्यत। उ. असिध्यम् असिध्याव असिध्याम। ७. प्र. सिध्येत् सिध्येताम् सिध्येयुः। म. सिध्येः सिध्येतम् सिध्येत। उ. सिध्येयम् सिध्येव सिध्येम। ८. प्र. सिध्यात् सिध्यास्ताम् सिध्यासुः। म. सिध्याः सिध्यास्तम् सिध्यास्त। उ. सिध्यासम् सिध्यास्व सिध्यास्म। ९. प्र. असिधत् असिधताम् असिधन्। म. असिधः असिधतम् असिधात। उ. असिधम् असिधाव असिधाम। १०. असेत्स्यत्। **णिचि**—साधयति-सेधयति।

**कृत्सु**—सिद्ध्यः, सिधित्वा-सेधित्वा-सिद्ध्वा, सिद्धः, साङ्काश्यसिद्धः, अन्नं साधयन्, तपः, सेधयन्। इत्यादि 'क्रुध्यति' (११८९) वत्।

**(११९३) रध—हिंसासंराध्योः**। (मार डालना, दुःख देना, पक्व होना या पकना)। हिंसायां सकर्म.। परस्मै.। पुषादिः।

१. रध्यति। २. प्र. ररन्ध ररन्धतुः ररन्धुः म. ररन्धिथ ररद्ध ररन्धथुः ररन्ध। उ. ररन्ध ररन्धिव ररन्धिम। पक्षे—रेध्व, रेध्म। ३. रधिता-रद्धा। ४. रधिष्यति-रत्स्यति। ५. रध्यतु। ६. अरध्यत्। ७. रध्येत्। ८. रध्यात्। ९. अरधत्।

**कृत्सु**—रन्धकः[1]-न्धिका, **णिचि**—रन्धकः-न्धिका, रिरधिषकः[2]-रिरत्सकः-त्सिका, रारधकः-धिका, रधिता[3]-रद्धा-रद्ध्री, रन्धयिता-त्री, रिरधिषिता-रिरात्सिता-त्री, रारधिता-त्री, रध्यन्[4]-न्ती, रन्धयन्-न्ती, रधिष्यन्[5]-न्ती-ती, रन्धयिष्यन्-न्ती-ती, व्यतिराध्यमानः, रन्धयमानः, सुरत्-सुरधौ-सुरधः, रद्धम्[6]-रद्धः-रद्धवान्, रन्धितम्-तः, रन्धः, रन्धनः,[7] साधुरन्धी,[8] रेधिवान्,[9] रिरधिषुः, रिरत्सुः, रारन्धः,[10] रधितव्यम्-रद्धव्यम्, रन्धयितव्यम्, रन्धनीयम्, राध्यम्, रन्ध्यम्, ईषद्रन्धः-दूरन्धः-सुरन्धः, रध्यमानः, रन्ध्यमानः, रधितुम्-रद्धुम्, रन्धयितुम्, रद्धिः, रन्धना, रन्धनम्, रधित्वा-रद्ध्वा, रन्धयित्वा, अनुरध्य, अनुरन्ध्य।

**(११९४) णश—(नश) अदर्शने**। (अदर्शन होना, नाश होना, दिखाई न देना)। अक.। वेट्। परस्मै.। पुषादिः। रधादिश्च।

१ 'रधिजभोरचि' (७-१-६१) इति अजादि प्रत्ययेषु सर्वत्र नुमागमः। ण्यन्तेषु च णिज्निमित्तको नुमागमः सर्वत्र बोध्यः।
२ 'रधादिभ्यश्च' (७-२-४५) इति इड्विकल्पः। इट्पक्षे 'नेट्यलिटि रधेः' (७-१-६२) इति नुम्निषेधः। इडभावपक्षे 'खरि च' (८-४-५५) इति चतर्वे रिरत्सकः इत्यादीनि रूपाणि सर्वत्र सन्नन्ते रूपद्वयं बोध्यम्।
३ तृचि, इडभावपक्षे 'झषस्तथोर्धोऽधः' (८-२-४०) इति धत्वे, जश्त्वे च रूपमेवम्।
४ शतरि दिवादित्वाच्छ्यनि रूपमेवम्। स्त्रियां नुम् विकल्पः।
५ स्यप्रत्ययेऽपि इडभावपक्षे धातुधकारस्य चर्त्वेन तकार इति ज्ञेयम्।
६ रराद्यष्टकान्तर्गतत्वेन धातोर्वैकल्पिकेट्कत्वात् 'यस्य विभाषा' (७-२-१५) इतीण्णिषेधः।
७ नन्द्यादित्वात् (३-१-१३४) कर्तरि ल्यु प्रत्यये नुमागमः।
८ 'साधुकारिण्युपसंख्यानम्' (वा. ३-२-७८) इति णिनिः। काशिका (७-१-६१)।
९ लिटः क्वसौ, 'अत एकहलमध्ये–' (६-४-१२०) इत्येत्वाभ्यासलोपयोः कृतयोः, 'वस्वेकाजाद्घसाम्' (७-२-६७) इतीडागमे, नुमागमे, संयोगान्तत्वेनं 'असंयोगाल्लिट् कित्' (१-२-५) इति कित्वाप्राप्तावपि औपदेशिकं क्वसुप्रत्ययगतं कित्वमाश्रित्योपधानकारलोपे रेधिवान् इति सम्पद्यते।
१० यङन्तात् पचाद्यचि (३-१-१३४) यङो लुकि, 'रधि जभोरचि' (७-१-६१) इति नुम्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | नश्यति | नश्यतः | नश्यन्ति | प्र. |
| | नश्यसि | नश्यथः | नश्यथ | म. |
| | नश्यामि | नश्यावः | नश्यामः | उ. |
| लिट् | ननाश | नेशतुः | नेशुः | प्र. |
| | नेशिथ-ननंष्ठ | नेशथुः | नेश | म. |
| | ननाश-ननश | नेशिव | नेशिम | उ. |
| लुट् | नशिता | नशितारौ | नशितारः | प्र. |
| | नशितासि | नशितास्थः | नशितास्थ | म. |
| | नशितास्मि | नशितास्वः | नशितास्मः | उ. |

पक्षे—नंष्टा नंष्टारौ नंष्टारः इत्यादि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृट् | नशिष्यति | नशिष्यतः | नशिष्यन्ति | प्र. |
| | नशिष्यसि | नशिष्यथः | नशिष्यथ | म. |
| | नशिष्यामि | नशिश्यावः | नशिष्यामः | उ. |

पक्षे—नंक्ष्यति नंक्ष्यतः नंक्ष्यन्ति इत्यादि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लोट् | नश्यतु-तात् | नश्यताम् | नश्यन्तु | प्र. |
| | नश्य-तात् | नश्यतम् | नश्यत | म. |
| | नश्यानि | नश्याव | नश्याम | उ. |
| लङ् | अनश्यत् | अनश्यताम् | अनश्यन् | प्र. |
| | अनश्यः | अनश्यतम् | अनश्यत | म. |
| | अनश्यम् | अनश्याव | अनश्याम | उ. |
| वि. लि. | नश्येत् | नश्येताम् | नश्येयुः | प्र. |
| | नश्येः | नश्येतम् | नश्येत | म. |
| | नस्येयम् | नश्येव | नश्येम | उ. |
| आ. लि. | नश्यात् | नस्यास्ताम् | नश्यासुः | प्र. |
| | नश्याः | नश्यास्तम् | नश्यास्त | म. |
| | नश्यासम् | नश्यास्व | नश्यास्म | उ. |
| लुङ् | अनशत् | अनशताम् | अनशन् | प्र. |
| | अनशः | अनशतम् | अनशत | म. |
| | अनशम् | अनशाव | अनशाम | उ. |
| लृङ् | अनशिष्यत् | अनशिष्यताम् | अनशिष्यन् | प्र. |
| | अनशिष्यः | अनशिष्यतम् | अनशिष्यत | म. |
| | अनशिष्यम् | अनशिष्याव | अनशिष्याम | उ. |

पक्षे—अनंक्ष्यन् अनंक्ष्यताम् अनंक्ष्यन् इत्यादि।

**भावे**—नश्यते। **णिचि**—नाशयति। **सनि**—निनशिषति-निनङ्क्षति। **यङि**—नानश्यते। **यङ्लुकि**—नानशीति-नानंष्टि। **कृत्सु**—नाशकः-शिका, **णिचि**—नाशकः-शिका,

निनशिषकः[१]-षिका, निनङ्क्षकः-क्षिका, नानशकः-शिका, नशिता[२]-त्री, प्रनंष्टा-ष्ट्री, नाशयिता-त्री, निनशिषिता-त्री-निनङ्क्षिता-त्री, नानशिता-त्री, नश्यन्-प्रणश्यन्-न्ती, नाशयन्[३]-न्ती, नशिष्यन्-प्रनङ्क्ष्यन्-न्ती-ती, नाशयिष्यन्-न्ती-ती, प्रनट्[४]-प्रनक्-प्रणशौ-प्रणशः, प्रनष्टम्[५]-प्रनष्टः-नष्टवान्, प्रणाशितः, नशः, विनाशी,[६] कृतनाशी, विनाशकः, नश्वरः[७]-नश्वरी, नाशः, चित्त विनाशनः, वित्तविनाशनः-निनङ्क्षुः, नाशितव्यम्-नाष्टव्यम्, नाशयितव्यम्, नशनीयम्, नाशनयीम्, नाश्यन्, दूणाशः,[८] नश्यमानः, नाश्यमानः, नशितुम-नेष्टुम्, नाशयितव्यम्, नष्टिः-जीवनक्,[९] नाशना, नशनम्, नाशनम्, नशित्वा,[१०] नंष्ट्वा-नष्ट्वा, नाशयित्वा, प्रणश्य, प्रणाश्य।

(११९५) **तृप—प्रीडने**। प्रीडनं = तृप्तिस्तर्पणञ्च। (तृप्त होना या करना, प्रसन्न होना या करना)। आद्येऽकर्मकः। द्वितीयः सकर्मकश्च। वेट्। परस्मै.। पुषादिः, रधादिश्च।

१. तृप्यति। २. प्र. ततर्प ततृपतुः ततृपुः। म. ततर्पिथ-ततर्प्थ-तत्रप्थ ततृपथुः ततृप। उ. ततर्प ततृपिव-ततृप्व ततृपिम-ततृप्म। ३. तर्पिता-तर्प्ता-त्रप्ता। ४. तर्पिष्यति-तर्पस्यति-त्रप्स्यति तृप्यात्। ९. अत्राप्सीत् अत्राप्ताम् अत्राप्सुः। पक्षे- अताप्र्सीत् आताप्र्ताम् अत्राप्सुः। पक्षे- अतर्पीत् अतर्पिष्टाम् अतर्पिषुः। पक्षे- अतृपत् अतृपताम् अतृपन्। १०. अतर्पिष्यत्-अत्रप्स्यत्-अतप्सर्यत्।

**कर्मणि**—तृप्यते। **णिचि**—तर्पयति-ते। **सनि**—तितर्पिषति-तितृप्सति। **यङि**—तरीतृप्यते। **यङ्लुकि**— तरीतृपीति-तरीतर्प्ति। **कृत्सु**— तर्पकः[११]-र्पिका, **णिचि**— तर्पकः-र्पिका,

---

१ 'रधादिभ्यश्च' (७-२-४५) इति वलादेरार्धधातुकस्येटो वैकल्पिकत्वात् इट्पक्षे रूपम्। एवम् इट्पक्षे सन्नन्ते सर्वत्र ज्ञेयम्।
२ रधादित्वादिड् विकल्पः। इडभावपक्षे, 'नशेः षान्तस्य' (८-४-३६) इति णत्वनिषेधः एवं तव्यतादिष्वपि।
३ 'बुधयुधनश–' (१-३-८६) इति ण्यन्तात् शतृप्रत्यय एव भवति। न त्वात्मनेपदं शानच्।
४ क्विपि, 'वश्च–' (८-२-३६) इति षत्वे, 'नशे र्वा' (८-२-६३) इति कुत्वविकल्पः। भूतपूर्वगत्या षकारान्तत्वात् णत्वं न।
५ वलादेरार्धतुकस्य। 'रधादिभ्यश्च' (७-२-४५) इतीड्विकल्पनात् निष्ठयाम्, 'यस्य विभाषा' (७-२-१५) इतीण्णिषेधः।
६ 'सुप्यजातौ–' (३-२-७८) इति ताच्छील्ये णिनिः।
७ 'इण् नशिजि–' (३-२-१६३) इति तच्छीलादिषु कर्तृषु क्वरप्। स्त्रियां 'टिड्ढा–' (४-१-१५) इति ङीप्।
८ दुःखेन नाशयितव्यम् = दूणाशः 'ईषत्–' (३-३-१२६) इत्यादिना ण्यन्तात् खल्। 'दुरो-दाशनाशदमध्येषु उत्वम्, उत्तरपदादेः ष्टुत्वं च' उत्तरपदादेः ष्टुत्वं च' (वा. ६-३-१०९) इति वचनेन उपसर्गान्त्यस्योत्वम्, सवर्णदीर्घः, उत्तरपदादेः ष्टुत्वञ्च।
९ जीवो नश्यतीति, जीवं नाशयति, इति वा जीवनक् = आहुतिविशेषः। बाहुलकादत्र स्त्रियाम् अर्थ विशेषे क्विप् उपपत्तिः।
१० 'रधादिभ्यश्च' (७-२-४५) इतीड्विकल्पः। इट्पक्षे नशित्वा इति रूपम्। इडभावपक्षे 'मस्जिनशो झलि' (७-१-६०) इति नुमि, नंष्ट्वा इति रूपम्। 'जान्तनशां विभाषा' (६-४-३२) इति क्त्वायां नकारस्य विकल्पेन लोपे नष्ट्वा इति रूपम्।
११ 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' (७-३-८४) इति गुणः। स च 'उरण् रपरः' (१-१-५१) इति रेफविशिष्टो भवति। एवमुत्तरत्रापि ज्ञेयम्।

तितर्पिषकः-षिका-तितृप्सक-प्सिका, तरीतृपक:[१]-पिका, तर्पिता-तर्प्ता-त्रप्ता-त्री, तर्पयिता-त्री, तृप्यन्[२]-न्ती, तर्पयन्-न्ती, तर्पिष्यन्-तर्प्स्यन्-त्रप्स्यन्[३]-न्ती-ती, तर्पयिष्यन्-न्ती-ती, व्यतितृप्यमाणः[४], तर्पयमाण, तृप्तम्-तृप्तः-तृप्तवान्, तर्पितः, तृपः, सन्तर्पी,[५] तर्पितव्यम्-तर्प्तव्यम्-त्रप्तव्यम्, तर्पयितव्यम्, तर्पणीयम्, तृप्यम्,[६] तर्प्यम्, तृप्यमाणः, तर्प्यमाणः, तर्पितुम्-तर्प्तुम्-त्रप्तुम्, तर्पयितुम्, तृप्तिः, तर्पणा, तर्पणम्, तर्पित्वा-तृप्त्वा, तर्पयित्वा, सन्तृप्य, सन्तार्प्य, तृप्रः,[७] तृपला[८]।

**(११९६) दृप—हर्षमोहनयोः**। मोहनं = गर्वः। (प्रसन्न होना, गर्व करना)। अक.। वेट्। परस्मै.। पुषादिः रधादिश्च। दृप्यति इत्यादि 'तृप्यति' (११९५) वत्।

**(११९७) द्रुह—जिघांसायाम्**। (द्वेष करना, मारने के लिये प्रयत्न करना)। सक.। सेट्। परस्मै.। पुषादिः रधादिश्च।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | द्रुह्यति | द्रुह्यतः | द्रुह्यन्ति | प्र. |
| | द्रुह्यसि | द्रुह्यथः | द्रुह्यथ | म. |
| | द्रुह्यामि | द्रुह्यावः | द्रुह्यामः | उ. |
| लिट् | दुद्रोह | दुद्रुहतुः | दुद्रुहुः | प्र. |
| | दुद्रोहिथ | दुद्रुहथुः | दुद्रुह | म. |
| | दुद्रोह | दुद्रुहिव | दुद्रुहिम | उ. |
| लुट् | द्रोहिता | द्रोहितारौ | द्रोहितारः इत्यादि। | |

पक्षे—द्रोग्धा द्रोग्धारौ द्रोग्धारः इत्यादि।
पक्षे—द्रोढा द्रोढारौ द्रोढारः इत्यादि।
लृट् द्रोहिष्यति द्रोहिष्यतः द्रोहिष्यन्ति इत्यादि।
पक्षे—ध्रोक्ष्यति ध्रोक्ष्यतः ध्रोक्ष्यन्ति इत्यादि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लोट् | द्रुह्यतु-द्रुह्यतात् | द्रुह्यताम् | द्रुह्यन्तु | प्र. |
| | द्रुह्य-द्रुह्यतात् | द्रुह्यतम् | द्रुह्यत | म. |
| | द्रुह्याणि | द्रुह्याव | द्रुह्याम | उ. |
| लङ् | अद्रुह्यत् | अद्रुह्यताम् | अद्रुह्यन् | प्र. |
| | अद्रुह्यः | अद्रुह्यतम् | अद्रुह्यत | म. |
| | अद्रुह्यम् | अद्रुह्याव | अद्रुह्याम | उ. |

१ 'रीगृदुपधस्य च' (७-४-९०) इति रीगागमः। एवं यङन्ते सर्वत्र ज्ञेयम्।
२ 'दिवादिभ्यः—' (३-१-६९) इति श्यन् विकरणप्रत्ययः तस्य सार्वधातुकत्वेन ङिद्वद्भावादङ्गस्य गुणो न।
३ स्यप्रत्ययेऽपि अकित्वात् अमागमो भवति। अमागमपक्षे रूपमेवम्।
४ 'कर्तरि कर्मव्यतिहारे' (१-३-१४) इति शानचि रूपम्।
५ ताच्छील्ये णिनिप्रत्ययः।
६ 'ऋदुपधाच्चाक्लृपिचृतेः' (३-१-११०) इति क्यपि रूपम्।
७ 'स्फायितञ्चि—' (द.उ. ८-३१) इति रक् प्रत्ययः। तृप्रः = पुरोडाशः।
८ 'कलस्तृपश्च' (द.उ. ८-१०७) इति कलप्रत्ययः। तृपला = लताविशेषः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| वि. लि. | द्रुह्येत् | द्रुह्येताम् | द्रुह्येयुः | प्र. |
| | द्रुह्येः | द्रुह्येतम् | द्रुह्येत | म. |
| | द्रुह्येयम् | द्रुह्येव | द्रुह्येम | उ. |
| आ. लि. | द्रुह्यात् | द्रुह्यास्ताम् | द्रुह्यासुः | प्र. |
| | द्रुह्याः | द्रुह्यास्तम् | द्रुह्यास्त | म. |
| | द्रुह्यासम् | द्रुह्यास्व | द्रुह्यास्म | उ. |
| लुङ् | अद्रुहत् | अद्रुहताम् | अद्रुहन् | प्र. |
| | अद्रुहः | अद्रुहतम् | अद्रुहत | म. |
| | अद्रुहम् | अद्रुहाव | अद्रुहाम | उ. |
| लृङ् | अद्रोहिष्यत् | अद्रोहिष्यताम् | अद्रोहिष्यन् इत्यादि। | |

पक्षे– अध्रोक्ष्यत् अध्रोक्ष्यताम् अध्रोक्ष्यन् इत्यादि।

**कर्मणि**—द्रुह्यते। २. दुद्रुहे। ९. अद्रोहि। **णिचि**—द्रोहयति-ते। **सनि**—दुद्रोहिषति दुद्रुहिषति दुध्रुक्षति। **यङि**—दोद्रुह्यते। **यङ्लुकि**—दोद्रुहीति-दोद्रोग्धि-दोद्रोढि। **कृत्सु**—द्रोहकः-हिका, णिचि—द्रोहकः-द्रोहिका, दुद्रुहिषकः-दुद्रोहिषकः-दुध्रुक्षकः-क्षिका, दोद्रुहकः-हिका, द्रोहिता-त्री-द्रोग्धा-ग्ध्री-द्रोढा-ढ्री, द्रोहयिता-त्री, (देवदत्ताय) द्रुह्यन्[१]-न्ती, द्रोहयन्-न्ती, द्रोहिष्यन्-ध्रोक्ष्यन्[२]-न्ती-ती, द्रोहयिष्यन्-न्ती-ती, द्रोहयमाणः, द्रोहयिष्यमाणः, मित्रध्रुक्[३]-ग्-मित्रध्रुट्-ड्-द्रुहौ-द्रुहः, यज्ञध्रुक्, अनध्रुक्, द्रुग्धम्[४]-द्रुग्धः-द्रुग्धवान्, द्रूढम्-द्रूढः-द्रूढवान्, द्रोहितः, द्रुहः, द्रोही[५], मित्रद्रोही[६], धनद्रोही, द्रोहितव्यम्, द्रोग्धव्यम्-द्रोढव्यम्, द्रोहयितव्यम्, द्रोहणीयम्, द्रोह्यम्, द्रुह्यमाणः, द्रोह्यमाणः, द्रोहः, द्रोहितुम्-द्रोग्धुम्-द्रोढुम्, द्रोहयितुम्, द्रुग्धिः-द्रूढिः, द्रोहणा, द्रोहणम्, द्रुहित्वा-द्रोहित्वा, द्रुग्ध्वा-द्रुढ्वा, द्रोहयित्वा, प्रद्रुह्य, प्रद्रोह्य।

**(११९८) मुह—वैचित्ये।** (पागल होना, बुद्धि भ्रष्ट होना)। अक.। वेट्। परस्मै.। पुषादिः रधादिश्च।

१. मुह्यति। २. **प्र.** मुमोह मुमुहतुः मुमुहुः। **म.** मुमोहिथ मुमुहथुः मुमुह। **उ.** मुमोह मुमुहिव मुमुहिम। ३. मोग्धा-मोढा। ४. मोहिष्यति-मोक्ष्यति। ५. **प्र.** मुह्यतु-मुह्यतात् मुह्यताम् मुह्यन्तु। **म.** मुह्य-तात् मुह्यतम् मुह्यत। **उ.** मुह्यानि मुह्याव मुह्याम। ६. **प्र.** अमुह्यत् अमुह्यताम्

१ शतरि, 'दिवादिभ्यः–' (३-१-६९) इति श्यन् प्रत्यये, 'क्रुधद्रुहेर्ष्या–' (१-४-३७) इति यं प्रतिकोपः तस्य सम्प्रदानसंज्ञा।

२ स्यप्रत्यये इडभावपक्षे, धत्वपक्षे, ढत्वपक्षेऽपि रूपं तुल्यमेव।

३ 'सत्सूद्विषद्रुहदुह–' (३-२-६१) इत्यादिना सुप्युपपदे उपसर्गे च क्विप्। पदान्ते यथासम्भवं घत्वे ढत्वे च रूपद्वयम्।

४ वलादेरार्धधातुकस्य रधादित्वेनेड् विकल्पनात् निष्ठायाम् 'यस्य विभाषा' (७-२-१५) इतीण्णिषेधः धत्वपक्षे द्रुग्धः इति ढत्वपक्षे द्रूढः इति च रूपमिति विशेषः। ढत्वपक्षे 'ढ्रलोपे पूर्वस्य–' (६-३-१११) इति दीर्घोऽत्र भवतीति विशेषः। एवं क्तिन्यपि ज्ञेयम्।

५ तच्छीलादिषु कर्तृषु 'सम्पृचानुरुधाङ्–' (३-२-१४२) इत्यादिना घिनुणि रूपम्।

६ 'सुप्यजातौ–' (३-२-७८) इति ताच्छील्ये णिनिप्रत्ययः।

अमुह्यन्। म. अमुह्यः अमुह्यतम् अमुह्यत। उ. अमुह्यम् अमुह्याव अमुह्याम। ७. प्र. मुह्येत् मुह्येताम् मुह्येयुः। म. मुह्येः मुह्येतम् मुह्येत। उ. मुह्येयम् मुह्येव मुह्येम। ८. प्र. मुह्यात् मुह्यास्ताम् मुह्यासुः। म. मुह्याः मुह्यास्तम् मुह्यास्त। उ. मुह्यासम् मुह्यास्व मुह्यास्म। ९. प्र. अमुहत् अमुहताम् अमुहन्। म. अमुहः अमुहतम् अमुहत। उ. अमुहम् अमुहाव अमुहाम। १०. अमोहिष्यत्-अमोक्ष्यत्।

**भावे**—मुह्यते। ९. अमोहि। **णिचि**—मोहयति। परिमोहयति-ते। **सनि**—मुमुहिषति-मुमोहिषति-मुमुक्षति। **यङि**—मोमुह्यते। **यङ्लुकि**—मोमुहीति-मोमोग्धि-मोमोढि। **कृत्सु**—मोहकः-हिका, **णिचि**—मोहकः-हिका, मुमुहिषकः-मुमोहिषकः[१]-मुमुक्षकः-क्षिका, मोमुहकः-हिका, मोहिता-त्री, मोग्धा-ध्री,[२] मोढा-ढ्री, मोहयिता-त्री, मुमोहिषिता-मुमुहिषिता-मुमुक्षिता-त्री, मोमुहिता-त्री, मुह्यन्-न्ती-मोहयन्[३]-परिमोहयन्-न्ती, परिमोहयमाणः, मोहितव्यम्-मोग्धव्यम्-मोढव्यम्, मोहनीयम्, मोह्यम्, मुग्धः-मूढः, मुह्यन्, मोक्ष्यन्-न्ती, मोहितुम्-मोग्धुम्-मोढुम्, मोहनम्, मुहित्वा-मोहित्वा-मुग्ध्वा-मूढ्वा, परिमुह्य, मूर्धो, परिमोही[४], क्विपि-उन्मुक्-उन्मुट्, मूर्खः[५]। इत्यादि 'द्रुह्यति' (११९७) वत्।

**(११९९) ष्णुह-(स्नुह) —उद् गिरणे।** (कै करना, वमन कनरा)। सक.। वेट्। परस्मै.। पुषादिः रधादिश्च। स्नुह्यति। सुष्णोह। सुष्णोहिथ-सुष्णोढ। इत्यादि 'मुह्यति' (११९८) वत्।

**(१२००) ष्णिह (स्निह) —प्रीतौ।** (स्नेह करना, प्रेम करना)। अकर्म.। वेट्। परस्मै.। पुषादिः रधादिश्च।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | स्निह्यति | स्निह्यतः | स्निह्यन्ति | प्र. |
| | स्निह्यसि | स्निह्यथः | स्निह्यथ | म. |
| | स्निह्यामि | स्निह्यावः | स्निह्यामः | उ. |
| लिट् | सिष्णेह | सिष्णिहतुः | सिष्णिहुः | प्र. |
| | सिष्णेहिथ | सिष्णिहथुः | सिष्णिह | म. |
| | सिष्णेह | सिष्णिहिव | सिष्णिहिम | उ. |

१ 'रधादिभ्यश्च' (७-२-४५) इति इड्विकल्पः। इट्पक्षे 'रलो व्युपधात्–' (१-२-२६) इति कित्त्वविकल्पः। इडभावपक्षे, 'वा द्रुहमुह–' (८-२-३३) इति घत्वपक्षे. चतर्वे षत्वे च मुमुक्षकः इति रूपम्। इडभावपक्षे एवं, ढत्वपक्षे, 'षढोः कः सि' (८-२-४१) इति कत्वेऽपि मुमुक्षक इति रूपं तु लक्ष्मेव। एवं सन्नन्ते सर्वत्र रूपत्रयं बोध्यम्।

२ रधादित्वादिड्विकल्पः। इडभावपक्षे घत्वविकल्पः तेन रूपत्रयं तृजादिषु सर्वत्र ज्ञेयम्।

३ मोहस्य चित्तवत् कर्तृकत्वात् महोयन् इत्यत्र, अमावकर्मकात् चित्तवत् कर्तृकात् (१-३-८८) ण्यन्ताच्छतैव। परिमोहयन् परिमोहयमाण. इत्यत्र तु 'न पाद्भ्याड्यमाड्यसपरिमुह–' (१-३-८९) इति परस्मैपदनिषेधात् 'चित्तवत्कर्तृकत्वे कर्मकत्वेऽपि णिचश्च' (१-३-७४) इति उभयपदं भवतीति ज्ञेयम्।

४ तच्छीतादिषु कर्तृषु 'सम्पृच–' (३-२-१४२) इत्यादिना धिनुण्प्रत्यये। रूपमेवम्।

५ 'मुहेर्खो मूर् च' (द.उ. ३-५२) इति खप्रत्यये, धातोः मूर् इत्यादेशे च रूपमेवम्।

लुट् स्नेहिता स्नेहितारौ स्नेहितारः इत्यादि।
पक्षे—स्नेग्धा स्नेग्धारौ स्नेग्धारः इत्यादि।
पक्षे—स्नेढा स्नेढारौ स्नेढारः इत्यादि।
लृट् स्नेहिष्यति स्नेहिष्यतः स्नेहिष्यन्ति इत्यादि।
पक्षे—स्नेक्ष्यति स्नेक्ष्यतः स्नेक्ष्यन्ति इत्यादि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लोट् | स्निह्यतु-तात् | स्निह्यताम् | स्निह्यन्तु | प्र. |
| | स्निह्य-तात् | स्निह्यतम् | स्निह्यत | म. |
| | स्निह्यामि | स्निह्याव | स्निह्याम | उ. |
| लङ् | अस्निह्यत् | अस्निह्यताम् | अस्निह्यन् | प्र. |
| | अस्निह्यः | अस्निह्यतम् | अस्निह्यत | म. |
| | अस्निह्यम् | अस्निह्याव | अस्निह्याम | उ. |
| वि. लि. | स्निह्येत् | स्निह्येताम् | स्निह्येयुः | प्र. |
| | स्निह्येः | स्निह्येतम् | स्निह्येत | म. |
| | स्निह्येयम् | स्निह्येव | स्निह्येम | उ. |
| आ. लि. | स्निह्यात् | स्निह्यास्ताम् | स्निह्यासुः | प्र. |
| | स्निह्याः | स्निह्यास्तम् | स्निह्यास्त | म. |
| | स्निह्यासम् | स्निह्यास्व | स्निह्यास्म | उ. |
| लुङ् | अस्निहत् | अस्निहताम् | अस्निहन् | प्र. |
| | अस्निहः | अस्निहतम् | अस्निहत | म. |
| | अस्निहम् | अस्निहाव | अस्निहाम | उ. |
| लृङ् | अस्नेहिष्यत् | अस्नेहिष्यताम् | अस्नेहिष्यन् | प्र. |
| | अस्नेहिष्यः | अस्नेहिष्यतम् | अस्नेहिष्यत | म. |
| | अस्नेहिष्यम् | अस्नेहिष्याव | अस्नेहिष्याम | उ. |

पक्षे- अस्नेक्ष्यत् अस्नेक्ष्यताम् अस्नेक्ष्यन् इत्यादि।

**भावे**—स्निह्यते। **णिचि**—स्नेहयति-ते। **सनि**—सिस्निहिषति- सिस्नेहिषति- सिस्निक्षति। यङि—सेष्णिह्यते। यङ्लुकि—सेष्णेग्धि-सेष्णिहीति-सेष्णेढि। **कृत्सु**—स्नेहनीयम्, स्नेहितव्यम्-स्नेढ्व्यम्-स्नेग्धव्यम्, स्नेहनम्, स्नेहः, स्नेही, स्नेहिता-स्नेढा, स्नेग्धा, स्नीढः-स्निग्धः, स्नीढ्वा-स्निग्ध्वा, स्निहित्वा, स्नेहत्वा, उष्णिक्-उष्णिहा, स्निहितिः, स्नेहुः। संस्निह्य, स्न्हेयम्, स्निह्यम्, स्नेहिष्यन्-स्नेक्ष्यन्। इतराणि रूपाणि 'द्रुह्यति' (११९७) वत्।

**(१२०१) शमु—उपशमे**। (शान्त होना, शमन करना, **उप**—शान्त करना, नि—सुनना, रोकना, **प्र**—शान्त होना)। अक.। सेट्। पर. पुषादिः शमादिश्च।

१. **प्र.** शाम्यति शाम्यतः शाम्यन्ति। **म.** शाम्यसि शाम्यथः शाम्यथ। **उ.** शाम्यामि शाम्यावः शाम्यामः। २. **प्र.** शशाम शेमतुः शेमुः। **म.** शेमिथ शेमथुः शेम। **उ.** शशाम-शशम शेमिव शेमिम। ३. **प्र.** शमिता शमितारौ शमितारः इत्यादि। ४. शमिष्यति। ५. **प्र.** शाम्यतु-शाम्यतात् शाम्यताम् शाम्यन्तु। **म.** शाम्य-तात् शाम्यतम् शाम्यत। **उ.** शाम्यानि शाम्याव शाम्याम। ६. **प्र.** अशाम्यत् अशाम्यताम् अशाम्यन्। **म.** अशाम्यः अशाम्यतम् अशाम्यत। **उ.** अशाम्यम् अशाम्याव अशाम्याम। ७. **प्र.** शाम्येत् शाम्येताम् शाम्येयुः।

**म.** शाम्यैः शाम्येतम् शाम्येत । **उ.** शाम्येयम् शाम्येव शाम्येम । ८. **प्र.** शम्यात् शम्यास्ताम् शम्यासुः । **म.** शम्याः शम्यास्तम् शम्यास्त । **उ.** शम्यासम् शम्यास्व शम्यास्म । ९. **प्र.** अशमत् अशमताम् अशमन् । **म.** अशमः अशमतम् अशमत । **उ.** अशमम् अशमाव अशमाम । १०. अशमिष्यत् ।

**भावे**—शम्यते । ९. अशमि । **णिचि**—शमयति-ते, शामयति-ते । **सनि**—शिशमिषति । **यङि**—शंशम्यते । **यङ्लुकि**—शंशमीति-शंशन्ति । **कृत्सु**—शमकः-शमिका, निशामकः-मिका, णिचि—शमकः-शमिका, शिशमिषकः-षिका, शंशमकः, शम्शमकः-मिका, शमिता-त्री, निशामयिता-निशमयिता, शिशमिषिता-त्री, शंशमिता-त्री, शमनीयम्, शमितव्यम्, शमनः,[1] शमः, शमी[2], शमितुम्, शम्यम्, शाम्यम्, शमिष्यन्-न्ती, उपशमः, शान्तः,[3] शान्तः[4]-शमितः, प्रशान्[5], शान्तिः[6], शमित्वा[7]-शान्त्वा, निशाम्य-निशम्य, शमं शमम्, शण्डः,[8] शमलम्[9], शम्बलम्[10], शङ्खः,[11] शम्बुः, णिजन्तात् ल्यपि-प्रशमय्य, इत्यादि 'दाम्यति' (१२०३) वत् ।

**( १२०२ ) तमु—कांक्षायाम् खेदे च** । (इच्छा करना, दुःखित होना) । अक. । सेट् । परस्मै. । ताम्यति । इत्यादि 'शाम्यति' (१२०१) वत् ।

**कृत्सु**—तमनीयम्, तमनम्, तमः, तमकः, तमी, तमिता, तमिस्रा, अवतमसम्, सन्तमसम्, अन्धतमसम् ।

**( १२०३ ) दमु—उपशमे** । (शान्त करना, दमन करना) । सकर्म. । सेट् । परस्मै. । पुषादिः शमादिश्च ।

१. दाम्यति दाम्यतः दाम्यन्ति । २. **प्र.** ददाम देमतुः देमुः । **म.** देमिथ देमथुः देम । **उ.** ददाम ददम देमिव देमिम । ३. दमिता । ४. दमिष्यति । ५. दाम्यतु-तात् । ६. अदाम्यत् । ७. दाम्येत् । ८. दम्यात् । ९. **प्र.** अदमत् अदमताम् अदमन् । **म.** अदमः अदमतम् अदमत । **उ.** अदमम् अदमाव अदमाम । १०. अदमिष्यत् ।

---

१ शमयतीति शमनः = यमः । बाहुलकात् नन्द्यादित्वात् कर्तरि ल्युप्रत्ययः ।

२ तच्छीलादिषु कर्तृषु 'शमित्यष्टाभ्यो घिनुण्' (३-२-१४१) घिनुण् प्रत्ययः । प्रत्ययस्य णित्वेऽपि धातोर्मान्तत्वात् न वृद्धिः ।

३ निष्ठायां 'यस्य विभाषा' (७-२-१५) इति इण्णिषेधः । 'अनुनासिकस्य क्विझलोः—' (६-४-१५) इति दीर्घः । अनुस्वारपरसवर्णे ।

४ ण्यन्तात् निष्ठायां 'वा दान्तशान्त—' (७-२-२७) इति सूत्रे निपातनात् णिलुक्, अनिट्त्वे च पक्षे भक्तः । 'निष्ठायां सेटि' (६-४-५२) इति णिलोपः । दीर्घोऽपि नित्यो निपातनादेव । पक्षे शमितः इति ।

५ प्रशाम्यतीति प्रशान् । क्विपि 'अनुनासिकस्य—' (६-४-१५) इति दीर्घः । 'मो नो धातोः' (८-२-६४) इति पदान्ते नकारः । स्वरादिषु पाठात् अव्ययत्वम् ।

६ क्तिचि, 'तितुत्र—' (७-२-९) इतीण्णिषेधः । दीर्घानुस्वारपरसवर्णाः ।

७ उदित्वात् क्त्वायामिड्विकल्पः । इडभावपक्षे दीर्घानुस्वारपरसवर्णादिकं यथाशास्त्रमूह्यम् ।

८ औणादिके (द.उ. ५-११) क प्रत्यये रूपमेवम् । शान्तमस्य स्पर्शनिन्द्रियमिति शण्डः = नपुंसकः ।

९ औणादिके (द.उ. ८-११२) कलप्रत्यये रूपमेवम् । शमयति शाम्यते वा तत् तत् प्रायश्चित्तादिभिरिति शमलम् = दुरतम् ।

१० औणादिके (द.उ. ८-११४) कलप्रत्यये रूपम् । अस्य नुगागमश्च निपातनात् । शाम्यते मार्गपरिश्रान्तोऽनेनेति शम्बलम् = पाथेयम् ।

११ औणादिके (द.उ. १०-१५) इति खप्रत्यये रूपमेवम् । शाम्यतीति शङ्खः = प्रसिद्धः ।

**कृत्सु**—दमकः-मिका, **णिचि**—दमकः-मिका, दिदमिषकः-षिका, दन्दमकः-दंदमकः-मिका, दमिता-त्री, दमयिता-त्री, दिदमिषिता-त्री, दन्दमिता-त्री, दाम्यन्-न्ती, दमयन्-दमयन्ती, दिदमिषन्-न्ती, दमिष्यन्-न्ती-ती, दमयिष्यन्-न्ती-ती, दमयमानः, दमयिष्यमाणः, दन्दम्यमानः, प्रदान्[१]-प्रदामौ-प्रदामः, दान्तम्[२]-तः, दान्तः[३]-दमितः, दमः, दमी[४], बलिन्दमः[५], अरिन्दमः, कुलदमनः[६], सर्वदमनः, दिदमिषुः, दन्दमः, दमितव्यम्, दमयितव्यम्, दमनीयम्-दमनीया, दम्यम्[७], दम्यमानः, दमितुम्, दमयितुम्, दान्तिः, दमना, दिदमिषा, दन्दमा, दमनम्, दमित्वा,[८] दान्त्वा, दमयित्वा, प्रदम्य, प्रदमय्य, दण्डः[९], दन्तः[१०], दमूनाः[११]।

**( १२०४ ) श्रमु—तमसि खेदे च**। (तपश्चर्या करना, व्रत करना, थकना। दुःखित होना)। सक.। सेट्। परस्मै.। शमादिः।

१. श्राम्यति श्राम्यतः श्राम्यन्ति। २. **प्र.** शश्राम शश्रमतुः शश्रमुः। **म.** शश्रमिथ शश्रमथुः शश्रम। **उ.** शश्राम-शश्रम शश्रमिव शश्रमिम। ३. श्रमिता। ४. श्रमिष्यति। ५. श्राम्यतु-तात्। ६. अश्राम्यत्। ७. श्राम्येत्। ८. श्रम्यात्। ९. अश्रमत्। १०. अश्रमिष्यत्। श्रान्त्वा, विश्रान्तिः, विश्रामः,[१२] श्रमणा[१३]।

**( १२०५ ) भ्रमु—अनवस्थाने**। अनवस्थानं = देशान्तरगमनम्। (अस्थिर होना, भ्रमण करना)। अक.। सेट्। परस्मै.। पुषादिः शमादिश्च।

१ क्विपि, 'अनुनासिकस्य क्विझलोः—' (६-४-१५) इति दीर्घे, पदान्ते 'मोनो धातोः' (८-२-६४) इति मकारस्य नकारः।

२ उदित्वेन क्त्वायमिड्विकल्पनात् निष्ठायाम्, 'यस्य विभाषा' (७-२-१५) इति इण्णिषेधः। दीर्घानुस्वारपरसवर्णा भवन्ति।

३ ण्यन्ते। 'वा दान्तशान्त—' (७-२-२७) इत्यनेन इडभावो णिलुक् च निपात्यते। अत्र व्यवस्थितविभाषामाश्रित्य, ब्रह्मचारि विषये दान्तः अन्यत्र दमितः इत्युक्तः क्षीरतरङ्गिण्याम्।

४ 'शमित्यष्टाभ्यो घिनुण्' (३-२-१४१) इति तच्छीलादिषु कर्तृषु घिनुण्।

५ 'संज्ञायां भृतृवृजिधारिसहितपिदमः' (३-२-४६) इति कर्तरि संज्ञायां खच्। खित्वात् नुम्। बलिं दाम्यतीति बलिन्दमः = विष्णुः। 'मतान्तरे तु अन्तर्भावितण्यर्थोऽत्र दमिः' इति सि. कौमुदी। तदानीं बलि दमयतीति बलिन्दमः इति सकर्मकः।

६ नन्द्यादिषु (३-१-१३४) पाठात् ण्यन्तादस्मात् कर्तरि ल्युः। कुलं दमयतीति कुलदमनः। शत्रुदमनः इत्यादिष्वेवमेव ज्ञेयम्।

७ 'पोरदुपधात्' (३-१-९८) इति भावे यत् प्रत्ययः। ण्यदपवादः।

८ 'उदितो वा' (७-२-५६) इति क्त्वायामिट् विकल्पः। तेन रूपद्वयम्।

९ 'ञमन्ताड्डः' (द.उ. ५-७) इति डप्रत्ययः। दम्यतेऽनेनोद्धता जनाः इति दण्डः। 'नेड् वशि कृति' (७-२-८) इतीण्णिषेधः।

१० 'हसिमृ—' (द.उ. ६-७) इति तन् प्रत्ययः। 'तितुत्र—' (७-२९) इतीण्णिषेधः।

११ 'दमेरुनसिः' (द.उ. ९-९५) इति उनसिप्रत्ययः। दमुनाः = देवः उपदेशः, अग्निश्च।

१२ घञि रूपमेवम्। 'नोदात्तोपदेशस्य—' (७-३-३४) इति वृद्धिनिषेधो नात्र, बाहुलकात्। 'वौ श्रमे' वचनं वृद्ध्यर्थं केचित् कल्पयन्ति। भाष्यवार्तिकवृत्तिकारादयस्तु विश्राम इति न पाणिनीयम्। इत्याहुः—' विश्रामस्यापशब्दत्वं वृत्युक्तं नाद्रियामहे। मुरारिभवमूत्यादीन् अप्रमाणी करोति कः? ॥ 'विश्रामशाखिनं वाचां' विश्रामो हृदयस्य च। 'विश्रामहेतोः' इत्यादि महान्तस्ते प्रयुञ्जते। इति प्रक्रियासर्वस्वम् अत्रावधेयम्।

१३ णिजन्तात् नन्द्यादित्वात् कर्तरि ल्युः। 'कुमारः श्रमणादिभिः' (२-१-७०) इति निर्देशोऽत्र लिङ्गम्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | भ्राम्यति | भ्राम्यतः | भ्राम्यन्ति | प्र. |
| | भ्राम्यसि | भ्राम्यथः | भ्राम्यथ | म. |
| | भ्राम्यामि | भ्राम्यावः | भ्राम्यामः | उ. |

पक्षे—भ्रमति[1] भ्रमतः भ्रमन्ति इत्यादि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लिट् | बभ्राम | बभ्रमतुः | बभ्रमुः | प्र. |
| | बभ्रामिथ | बभ्रमथुः | बभ्रम | म. |
| | बभ्राम | बभ्रमिव | बभ्रमिम | उ. |

पक्षे—बभ्राम भ्रेमतुः भ्रेमुः। इत्यादि।

| | | | |
|---|---|---|---|
| लुट् | भ्रमिता | भ्रमितारौ | भ्रमितारः इत्यादि। |
| लृट् | भ्रमिष्यति | भ्रमिष्यतः | भ्रमिष्यन्ति इत्यादि। |
| लोट् | भ्राम्यतु-तात् | भ्राम्यताम् | भ्राम्यन्तु इत्यादि। |

पक्षे—भ्रमतु-तात् भ्रमताम् भ्रमन्तु इत्यादि।

| | | | |
|---|---|---|---|
| लङ् | अभ्राम्यत् | अभ्राम्यताम् | अभ्राम्यन् इत्यादि। |

पक्षे—अभ्रमत् अभ्रमताम् अभ्रमन् इत्यादि।

| | | | |
|---|---|---|---|
| वि. लि. | भ्राम्येत् | भ्राम्येताम् | भ्रेम्येयुः इत्यादि। |

पक्षे—भ्रमेत् भ्रमेताम् भ्रमेयुः इत्यादि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आ. लि. | भ्रम्यात् | भ्रम्यास्ताम् | भ्रम्यासुः इत्यादि। | |
| लुङ् | अभ्रमत् | अभ्रमताम् | अभ्रमन् | प्र. |
| | अभ्रमः | अभ्रमतम् | अभ्रमत | म. |
| | अभ्रमम् | अभ्रमाव | अभ्रमाम | उ. |
| लृङ् | अभ्रमिष्यत् | अभ्रमिष्यताम् | अभ्रमिष्यन् इत्यादि। | |

अन्यत् सर्वं 'शाम्यति' (१२०१) वत्।

**कृत्सु**—भ्रमकः-मिका, भ्रमकः-मिका, बिभ्रमिषकः-षिका, बम्भ्रमकः-बभ्रमकः-मिका, भ्रमी, भ्रमन्-भ्राम्यन्-न्ती-ती, बिभ्रमिवान्-भ्रेमिवान्। इत्यादि 'शाम्यति' (१२०१) वत्।

**(१२०६) क्षमु—सहने**। (सहन करना, क्षमा करना)। सक.। वेट्। परस्मै.। पुषादिः शमादिश्च।

१. क्षाम्यति। २. **प्र.** चक्षाम चक्षमतुः चक्षमुः। **म.** चक्षमिथ-चक्षन्थ चक्षमथुः चक्षम। **उ.** चक्षाम-चक्षम चक्षमिव-चक्षण्व चक्षमिव-चक्षण्म। ३. क्षमिता-क्षन्ता। ४. क्षमिष्यति-क्षंस्यति। ५. क्षाम्यतु-तात्। ६. अक्षाम्यत्। ७. क्षाम्येत्। ८. क्षम्यात्। ९. अक्षमत्। १०. अक्षमिष्यत् अक्षंस्यत्। शेषं 'शाम्यति' (१२०१) वत्।

**(१२०७) क्लमु—ग्लानौ**। (श्रमित होना, थकना, कुम्हलाना)। अक.। सेट्। पर.। पुषादिः शमादिश्च।

१. क्लाम्यति। २. **प्र.** चक्लाम चक्लमतुः चक्लमुः। **म.** चक्लमिथ चक्लमथुः चक्लम। उ. चक्लाम चक्लमिव चक्लमिम। ३. क्लमिता। ४. क्लमिष्यति। ५. क्लाम्यतु-क्लाम्यतात्।

१ वा भ्राशे (३-१-७०) ति वा श्यन्। श्यनभावपक्षे शप्।

६. प्र. अक्लाम्यत् अक्लाम्यताम् अक्लाम्यन्। म. अक्लाम्यः अक्लाम्यतम् अक्लाम्यत। उ. अक्लाम्यम् अक्लाम्याव अक्लाम्याम। ७. क्लाम्येत्। ८. क्लम्यात्। ८. प्र. अक्लमत् अक्लमताम् अक्लमन्। म. अक्लमः अक्लमतम् अक्लमत। उ. अक्लमम् अक्लमाव अक्लमाम। १०. अक्लमिष्यत् इत्यादि। 'शाम्यति' (१२०१) वत्। वा भ्राशेति श्यन्विकल्पः पक्षे—१ क्लामति। ५ क्लामतु। ६ अक्लामत्। ७ क्लामेत्। इत्यादि।

(१२०८) **मदी—हर्षे ग्लेपने च**। ग्लेपनम् = दैन्यम्। (प्रसन्न होना, थकना, श्रान्त होना)। अक.। सेट्। पर. पुषादिः शमादिश्च।

१. माद्यति। २. प्र. ममाद मेदतुः मेदुः। म. मेदिथ। उ. ममाद-ममद मेदिव मेदिम। ३. मदिता। ४. मदिष्यति। ५. माद्यतु-तात्। ६. अमाद्यत्। ७. माद्येत्। ८. मद्यात्। ९. अमदत्। १०. अमदिष्यत्।

**भावे**—मद्यते। ९. अमादि। **णिचि**—मदयति-ते। **सनि**—मिमदीषति। **यङि**—मामद्यते। **यङ्लुकि**—मामदीति-मामत्ति। **कृत्सु**—मादकः-दिका, मदकः-निमादकः, मादकः-दिका, मिमदिषकः-षिका, मामदकः-दिका, मदिता-त्री, मदयिता-त्री, मिमदिषिता-त्री, मामदिता-त्री, माद्यन्[१]-न्ती, मदयन्-न्ती, मिमदिषन्-न्ती, मदिष्यन्-न्ती-ती, मदयिष्यन्-न्ती-ती, मदयमानः, मदयिष्यमाणः, सुमत्-द्-समुदौ-सुमदः, मत्तम्[२]-मत्तः-मत्तवान्, मदितः, मदः, प्रमदवरः[३], प्रमादी[४], इरम्मदः,[५] उन्मदिष्णुः,[६] मदनः[७], मिमदिषुः, मामदः, मदितव्यम्, मदयितव्यम्, मदनीयम्, माद्यम्[८]-मद्यम्, मद्यमानः, मादः, विद्यामदः[९]-धनमदः, कुलमदः, (कन्यानाम्) प्रमदः, (कोकिलानाम्) सम्मदः, प्रमादः-सम्मादः, उन्मादः, विमादः, मदितुम्, मदयितुम्, मतिः, मदना, मिमदिषा, मामदा, मदनम्, मदित्वा, मदयित्वा, प्रमद्य, प्रमदय्य, मदयित्नु[१०]ः, मदिरा,[११] मत्सरः,[१२] मत्स्यः,[१३] मत्सी।

१ श्यनि, 'शमामष्टानाम्–' (७-३-७४) इति दीर्घे रूपम्।
२ 'श्वीदितो निष्ठायाम्' (७-२-१४) इति निष्ठायामिण्णिषेधे 'न ध्याख्यापृमूर्च्छिमदाम्' (८-२-५७) इति निष्ठानत्वनिषेधे च रूपम्।
३ 'स्थेशभास–' (३-२-१७५) इत्यत्र प्रमद् वरोऽपि इति केचित्। इति प्रक्रियाकौमुदी।
४ 'शमित्यष्टाभ्यः–' (३-२-१४१) इति ताच्छील्ये घिनुण् प्रत्यये रूपम्।
५ इरया माद्यतीति इरम्मदः = मेघज्योतिः इरा = उदकम्। 'उग्रम्पश्येरम्मद पाणिन्धामाश्च' (३-२-३७) इति कर्तरि तृजाद्यपवादतया खश् निपात्यते। निपातनादेव श्यन् न। 'इरया = वारिणा माद्यम् वैद्युताग्निरिरम्मदः।' इति प्र. सर्वस्वे।
६ 'अलंकृञ्–' (३-२-१३६) इत्यादिना तच्छीलादिषु कर्तृषु इष्णुच् प्रत्ययः।
७ ण्यन्तात् 'नन्दिग्रहि–' (३-१-१३४) इति नन्द्यादित्वात् कर्तरि ल्युप्रत्यये रूपमेवम्। मदयतीति मदनः।
८ 'मदनसाधनम् = मद्यम्। बाहुलकात् करणे यत्।' इति प्र. सर्वस्वे।
९ 'मदोऽनुपसर्गे' (३-३-६७) इति अनुपसर्गेऽप्-प्रत्ययः। घञोऽपवादः। कुलमदः, धनमदः, इत्यादिषु चैवं ज्ञेयम्।
१० 'स्तनिहृषिपुषिगतिमदि–' (द.उ. १-१४०) इति ण्यन्तात् इत्नुच् प्रत्यये रूपमेवम्। मदयित्नुः = मदिरा।
११ 'इषिमदि–' (द.उ. ८-२६) इत्यादिना किरच् प्रत्यये रूपमेवम्। माद्यन्तेऽनयेति मदिरा = सुरा।
१२ 'कृधूमदिभ्यः कित्' (द.उ. ८-५३) इति सरन्-प्रत्ययेः तस्य च कित्त्वम्। माद्यत्यसौ परव्यसनैरिति मत्सरः = ईर्ष्या।
१३ 'तृतन्यञ्चि–' (द.उ. १०-१२) इत्यादिना स्यन्- प्रत्यये रूपमेवम्। माद्यत्युदकं प्राप्य इति मत्स्यः। स्त्रियां गौरादिपाठात् (४-१-४१) ङीष्। मत्स्यस्य ङ्याम्–' (वा. ६-४-१४९) इति यकारलोपः।

**( १२०९ ) असु—क्षेपणे**। (फेकना। निराश होना)। सक.। सेट्। पर. पुषादिः।

१. अस्यति। २. **प्र.** आस आसतुः आसुः। **म.** आसिथ आसथुः आस। **उ.** आस आसिव आसिम। ३. असिता। ४. असिष्यति। ५. अस्यतु-तात्। ६. **प्र.** आस्यत् आस्यताम् आस्यन्। **म.** आस्यः आस्यतम् आस्यत। **उ.** आस्यम् आस्याव आस्याम। ७. **प्र.** आस्येत् आस्येताम् आस्येयुः। **म.** अस्येः अस्येतम् अस्येत्। **उ.** अस्येयम् अस्येव अस्येम। ८. **प्र.** अस्यात् अस्यास्ताम् अस्यासुः। **म.** अस्याः अस्यास्तम् अस्यास्त। **उ.** अस्यासम् अस्यास्व अस्यास्म। ९. **प्र.** आस्थत्[१] आस्थताम् आस्थन्। **म.** आस्थः आस्थतम् आस्थत। **उ.** आस्थम् आस्थाव आस्थाम। १०. असिष्यत् असिष्यताम् असिष्यन्।

**कर्मणि**—अस्यते। **सनि**—असिसिषति। अजादित्वाद् यङ्लुकौ न स्तः। **कृत्सु**—आसकः-सिका, **णिचि**—आसकः-सिका, असिसिषकः-षिका, असिता-त्री, आसयिता-त्री, अस्यन्[२]-न्ती, निरस्यन्, आसयन्-न्ती, असिष्यन्-न्ती-ती, आसयिष्यन्-न्ती-ती, निरस्यमानः[३], निरस्यन्, आसयमानः, अः-असौ-असः, निरस्तम्[४]-स्तवान्, आसितः, असः, सन्नयासी, आसः, असिसिषुः, असितव्यम्, आसयितव्यम्, असनीयम्, आसनीयम्, आस्यम्, समस्या[५], अस्यमानः, आस्यमानः, निरासः, व्यासः, प्रासः,[६] इष्वासः[७], असितुम्, आसयितुम्, अस्तिः, उपास्तिः, निरसनम्, निरासनम्, असित्वा,[८] अस्त्वा, आसयित्वा, पर्यस्य-न्यस्य-निरस्य, निरास्य, असुरः[९], असिः[१०]।

**( १२१० ) यसु—प्रयत्ने**। (प्रयास करना)। अकर्म.। सेट्। पर. पुषादि।

१. यस्यति-यसति। २. **प्र.** ययास-येसतुः। **म.** येसिथ येसथुः। **उ.** ययास-ययस येसिव येसिम। ३. यसिता। ४. यसिष्यति। ५. यस्यतु-यसतु। ६. अयस्यत्-अयसत्। ७. यस्येत्-यसेत्। ८. यस्यात्। ९. अयसत्। १०. अयसिष्यत्। प्रयस्यति, सम्भिन्नोपसर्गपूर्वात्तु नित्यं श्यन्। **'संयसश्च'** वा श्यन्। संयस्यति, संयसति।

**भावे**—यस्यते। ९. अयासि। **णिचि**—यासयति। अणवकर्मकादिति परस्मैपदस्य 'न पाद् भ्याङि' त्यादिना निषेधः। आयासयते। **सनि**—यियासिषति। **यङि**—यायस्यते। **यङ्लुकि**—यायसीति-यायास्ति। **कृत्सु**—यसनीयम्, यसनम्, यासः, प्रयासः, प्रयासी, आयासः,

१ पुषादित्वादङ्। 'अस्यतेस्थुक्' अङि परे।
२ 'दिवादिभ्यः श्यन्' (३-१-६९) इति श्यन्।
३ 'उपसर्गादस्यत्यूह्योर्वा वचनम्' (वा. १-३-२९) इति शानजपि।
४ धातोरुदित्वात् 'यस्य विभाषा' (७-२-१५) इतीण्ण।
५ बाहुलकात् संज्ञायां क्यपि समस्या इति रूपं साधु।
६ प्रास्यते इति प्रासः। 'अकर्तरि च कारके संज्ञायाम्'। (३-३-१९) इति भावे घञ्।
७ इषवोऽस्यन्ते अनेन इति इष्वासः। 'हलश्च' (३-३-१२१) इति करणे घञ्। इष्वासो धन्वधन्विनोः इति हैमः। इति अमरसुधा।
८ 'उदितो वा' (७-२-५६) इतीड् वा।
९ 'असेरुरन्' (द.उ. ८-२४) इति उरन्।
१० अस्यतीति असिः। डः प्रत्ययः (द.उ. १-६८)

निर्यासः, यसिता, यस्तः, यस्तिः, यसितव्यम्, यसितुम्, यसित्वा-यस्त्वा, प्रयस्य, यास्यम्, यस्यन्-यसन्, संयस्यन्-संयसन्-न्ती, प्रयस्यन्, यसिष्यन्।

**(१२११) जसु—मोक्षणे**। (मुक्त करना, छोड़ देना)। सक.। सेट्। परस्मै.।

१. जस्यति। २. जजास। ३. जसिता। ४. जसिष्यति। ५. जस्यतु। ६. अजस्यत्। ७. जस्येत्। ८. जस्यात्। ९. अजसत्। १०. अजसिष्यत्। इत्यादि 'यस्यति' (१२१०) वत्।

**(१२१२) तसु—उपक्षये**। (फेंकना,उड़ा देना)। सक.। सेट्। परस्मै.। १.तस्यति। २.ततास। ३.तसिता। ४.तसिष्यति। ५.तस्यतु। ६.अतस्यत्। ७.तस्येत्। ८.तस्यात्। ९. अतसत्। १०. अतसिष्यत्। इत्यादि 'यस्यति' (१२१०) वत्।

**(१२१३) दसु—उपक्षये**। (फेंकना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। दस्यति दस्यतः दस्यन्ति। इत्यादि। तसुधातु (१२११) वत्।

**(१२१४) वसु—स्तम्भे**। भसु इति केचित्। (निश्चल होना,सीधा होना)। अक.। सेट्। परस्मै.। पुषादिः।

१. वस्यति। २. ववास वसतुः वसुः। ३. वसिता। ४. वसिष्यति। ५. वस्यतु। ६. अवश्यत्। ७. वस्येत्। ८. वस्यात्। ९. अवसत्। १०. अवसिष्यत्। इत्यादि 'यस्यति' (१२१०) वत्।

**(१२१५) व्युष—विभागे दाहे च**। व्युस इत्यन्ये। वुस इत्यपरे। (अलग करना, विभाग करना, जलाना, भूनना, दग्ध करना)। सक.। सेट्। परस्मै.।

१.व्युष्यति।२.वुव्योष।३.व्युषिता।४.व्युषिष्यति।५.व्युष्यतु-तात्।६.अव्युष्यत्। ७. व्युष्येत्। ८. व्युष्यात्। दाहार्थे। ९. अव्याषीत्। विभागार्थे पुषादिः। अव्युषत्। १०. अव्युषिष्यत्।

**(१२१६) प्लुष—दाहे**। (जलाना)। (१२१५) वत्।

**(१२१७) विस—प्रेरणे**। (प्रेरणा करना)। सक.। सेट्। परस्मै.।

१. विस्यति। २. विवेश। ३. वेसिता। ४. वेसिष्यति। ५. विस्यतु। ६. अवस्यत्। ७. विस्येत्। ८. विस्यात्। ९. अविसत्। १०. अविसिष्यत्। इत्यादि 'यस्यति' (१२१०) वत्।

**(१२१८) कुस—संश्लेषणे**। (मिलना)। सक.। सेट्। पर.। पुषादि। १ कुस्यति। २ चुक्रोस। ३ कोसिता। ४ कोसिष्यति। ५ कुस्यतु। ६ अकुस्यत्। ७ कुस्येत्। ८ कुस्यात्। ९ अकुसत्। १० अकुसिष्यत् इत्यादि 'यस्यति' (१२१०) वत्।

**(१२१९) बुस—उत्सर्गे**। (त्यागना) सक.। सेट्। परस्मै.।

१. बुस्यति। २. बुबोस। ३. बुसिता। ४. बुसिष्यति। ८. बुस्यात्। ९. अबुसत्। १०. अबुसिष्यत्। इत्यादि 'व्युष्यति' (१२१५) वत्।

**(१२२०) मुस—खण्डने।** (टुकड़े-टुकड़े करना)। सक.। सेट्। पर.। पुषादिः

१ मुस्यति। २ मुमोस। ३ मुसिता। ४ मुसिष्यति। ५ मुस्यतु-तात्। ६ अमुस्यत्। ७ मुस्येत्। ८ मुस्यात्। ९ अमुसत्। १० अमुसिष्यत् इत्यादि 'कुस्यति' (१२१८) वत्।

**(१२२१) मसी—परिणामे।** परिणामो विकल्पः। (रूपान्तर करना, आकार बदलना)। अक.। सेट्। पर.। ईदित्। पुषादिः।

१. मस्यति। २. ममास मेसतुः मेसुः। ३. मसिता। ४. मसिष्यति। ५. मस्यतु-तात्। ६. अमस्यत्। ७. मस्येत्। ८. मस्यात्। ९. अमसत्। १०. अमसिष्यत्। इत्यादि 'त्रस्यति' (१११७) वत्।

**(१२२२) लुट्—विलोडने।** (विलोडना, कांपना, हिलना)। अक.। सेट्। परस्मै.। पुषादिः

१.लुट्यति। २.लुलोट। ३.लोटिता। ४.लोटिष्यति। ५.लुट्यतु-तात्। ६.अलुट्यत्। ७. लुट्येत्। ८. लुट्यात्। ९. अलुटत्। १०. अलुटिष्यत्। इत्यादि 'कुस्यति' (१२१८) वत्।

**(१२२३) उच—समवाये।** (एकत्र होना, इकट्ठा करना या होना)। अक.। सेट्। पर.। पुषादिः।

१. उच्यति। २. **प्र.** उवोच ऊचतु ऊचुः। **म.** ऊवोचिथ। **उ.** ऊचिव। ४. ओचिता। ४. ओचिष्यति। ५. उच्यतु। ६. औच्यत्। ७. उच्येत्। ८. उच्यात्। ९. औचत्। १०. औचिष्यत्।

**कृत्सु**—ओचितव्यम्, ओचनीयम्, ओच्यम्, उचितः, ओचितुम्, ओचित्वा, प्रोच्य, औचित्यम्, औचती, ओकः, ओकसी इत्यादि।

**(१२२४) भृशु—अधः पतने।** (गिरना, भ्रष्ट होना)। अक.। सेट्। परस्मै.। पुषादिः।

१. भृश्यति भृश्यतः भृश्यन्ति। २. बभर्श बभृशतुः। ३. भर्शिता। ४. भर्शिष्यति। ५. भृश्यतु-भृश्यतात्। ६. अभृश्यत्। ७. भृश्येत्। ८. भृश्यात्। ९. अभृशत्। १०. अभर्शिष्यत्। इत्यादि।

**(१२२५) भ्रंशु—अधःपतने।** (गिरना, पतन होना)। अक.। सेट्। पर.। पुषादिः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | भ्रश्यति | भ्रश्यतः | भ्रश्यन्ति | प्र. |
| | भ्रश्यसि | भ्रश्यथः | भ्रश्यथ | म. |
| | भ्रश्यामि | भ्रश्यावः | भ्रश्यामः | उ. |
| लिट् | बभ्रंश | बभ्रंशतुः | बभ्रंशुः | प्र. |
| | बभ्रंशिथ | बभ्रंशथुः | बभ्रंश | म. |
| | बभ्रंश | बभ्रंशिव | बभ्रंशिम | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुट् | भ्रंशिता | भ्रंशितारौ | भ्रंशितारः | प्र. |
| | भ्रंशितासि | भ्रंशितास्थः | भ्रंशितास्थ | म. |
| | भ्रंशितास्मि | भ्रंशितास्वः | भ्रंशितास्मः | उ. |
| लृट् | भ्रंशिष्यति | भ्रंशिष्यतः | भ्रंशिश्यन्ति | प्र. |
| | भ्रंशिष्यसि | भ्रंशिष्यथः | भ्रंशिष्यथ | म. |
| | भ्रंशिष्यामि | भ्रंशिष्यावः | भ्रंशिष्यामः | उ. |
| लोट् | भ्रश्यतु-भ्रश्यतात् | भ्रश्याताम् | भ्रश्यन्तु | प्र. |
| | भ्रश्य-भ्रश्यतात् | भ्रश्यतम् | भ्रश्यत | म. |
| | भ्रश्यानि | भ्रश्याव | भ्रश्याम | उ. |
| लङ् | अभ्रश्यत् | अभ्रश्यताम् | अभ्रश्यन् | प्र. |
| | अभ्रश्यः | अभ्रश्यतम् | अभ्रश्यत | म. |
| | अभ्रश्यम् | अभ्रश्याव | अभ्रश्याम | उ. |
| वि. लि. | भ्रश्येत् | भ्रश्येताम् | भ्रश्येयुः | प्र. |
| | भ्रश्येः | भ्रश्येतम् | भ्रश्येत | म. |
| | भ्रश्येयम् | भ्रश्येव | भ्रश्येम | उ. |
| आ. लि. | भ्रश्यात् | भ्रश्यास्ताम् | भ्रश्यासुः | प्र. |
| | भ्रश्याः | भ्रश्यास्तम् | भ्रश्यास्त | म. |
| | भ्रश्यासम् | भ्रश्यास्व | भ्रश्यास्म | उ. |
| लुङ् | अभ्रशत् | अभ्रशताम् | अभ्रशन् | प्र. |
| | अभ्रशः | अभ्रशतम् | अभ्रशत | म. |
| | अभ्रशम् | अभ्रशाव | अभ्रशाम | उ. |
| लृङ् | अभ्रंशिष्यत् | अभ्रंशिष्यताम् | अभ्रंशिष्यन् | प्र. |
| | अभ्रंशिष्यः | अभ्रंशिष्यतम् | अभ्रंशिष्यत | म. |
| | अभ्रंशिष्यम् | अभ्रंशिष्याव | अभ्रंशिष्याम | उ. |

**भावे**– भ्रश्यते। **णिचि**– भ्रंसयति। **सनि**– बिभ्रंशिषति। **यङि**– बाभ्रश्यते। **यङ्लुकि**– बाभ्रंशीति-बाभ्रंष्टि। **कृत्सु**– भ्रंशकः-शिका, **णिचि**– भ्रंशक-शिका, बिभ्रंशिषकः-षिका, बाभ्रशकः-शिका, भ्रश्यन्[1]-न्ती, भ्रंशितव्यम्, भ्रंशनीयम्, भ्रंशितुम्, भ्रंशनम्, भ्रंशित्वा[2]-भ्रष्ट्वा, विभ्रश्य, वाहभ्रट्[3] वाहाभ्रट्, भ्रष्टम्[4], भ्रष्टः, भ्रष्टवान्, भ्रंशनः[5]। भौवादिक 'ध्वंसति' वत्।

**(१२२६) वृश—आवरणे**। (आच्छादन करना)। सक.। सेट्। पर.। पुषादिः।

१. वृश्यति। २. ववर्श। ३. वर्शिता। ४. वर्शिष्यति। ५. वृश्यतु-तात्। ६. अवृश्यत्। ७. वृश्येत्। ८. वृश्यात्। ९. अवृशत्। १०. अवर्शिष्यत्। इत्यादि।

---

१ 'दिवादिभ्यः श्यन्' (३-१-६९) इति श्यन् विकरणप्रत्ययः।

२ 'उदितो वा' (७-२-५६) इति क्त्वायामिट् विकल्पे रूपद्वयं ज्ञेयम्।

३ 'वाहोऽश्वः' तस्माद् भ्रंशते इत्यर्थे 'क्विप् च' (३-२-७६) इति क्विपि शकारस्य 'व्रश्च–' (८-२-३६) इत्यादिना षकारे, तस्य जश्त्वेन डकारे, चर्त्वविकल्पे 'अन्येषामपि दृश्यते' (६-३-१३७) इति पूर्वपदस्य दीर्घे च वाहाभ्रट् इति रूपम्। क्वचिद् वाहभ्रट् इति पाठो दृष्टः तदानीं दीर्घः पूर्वपदस्य नेति ज्ञेयम्।

४ क्त्वायामिड्विकल्पनान्निष्ठायामिण्णिषेधे, षत्वे ष्टुत्वे च रूपमेवम्।

५ तच्छीलादिषु कर्तृषु 'चलनशब्दार्थात्–' (३-२-१४८) इति युच्।

**(१२२७) कृश—तनू करणे**। (कृश होना, पतला होना)। सक.। सेट्। पर.। पुषादिः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | कृश्यति | कृश्यतः | कृश्यन्ति | प्र. |
| | कृश्यसि | कृश्यथः | कृश्यथ | म. |
| | कृश्यामि | कृश्यावः | कृश्यामः | उ. |
| लिट् | चकर्श | चकृशतुः | चकृशुः | प्र. |
| | चकर्शिथ | चकृशथुः | चकृश | म. |
| | चकर्श | चकृशिव | चकृशिम | उ. |
| लुट् | कर्शिता | कर्शितारौ | कर्शितारः इत्यादि। | |
| लृट् | कर्शिष्यति | कर्शिष्यतः | कर्शिष्यन्ति इत्यादि। | |
| लोट् | कृश्यतु-कृश्यात् | कृश्यताम् | कृश्यन्तु | प्र. |
| | कृश्य-कृश्यतात् | कृश्यतम् | कृश्यत | म. |
| | कृश्यानि | कृश्याव | कृश्याम | उ. |
| लङ् | अकृश्यत् | अकृश्यताम् | अकृश्यन् | प्र. |
| | अकृश्यः | अकृश्यतम् | अकृश्यत | म. |
| | अकृश्यम् | अकृश्याव | अकृश्याम | उ. |
| वि. लि. | कृश्येत् | कृश्येताम् | कृश्येयुः | प्र. |
| | कृश्येः | कृश्येतम् | कृश्येत | म. |
| | कृश्येयम् | कृश्येव | कृश्येम | उ. |
| आ. लि. | कृश्यात् | कृश्यास्ताम् | कृश्यासुः | प्र. |
| | कृश्याः | कृश्यास्तम् | कृश्यास्त | म. |
| | कृश्यासम् | कृश्यास्व | कृश्यास्म | उ. |
| लुङ् | अकृशत् | अकृशताम् | अकृशन् | प्र. |
| | अकृशः | अकृशतम् | अकृशत | म. |
| | अकृशम् | अकृशाव | अकृशाम | उ. |
| लृङ् | अकर्शिष्यत् | अकर्शिष्यताम् | अकर्शिष्यन् | प्र. |
| | अकर्शिष्यः | अकर्शिष्यतम् | अकर्शिष्यत | म. |
| | अकर्शिष्यम् | अकर्शिष्याव | अकर्शिष्याम | उ. |

**कर्मणि**—कृश्यते। ९. अकर्शि। **णिचि**—कर्शयति-ते। **सनि**—चिकृक्षते। **यङि**—चरीकृश्यते। **यङ्लुकि**—चर्कृशीति-चरीकृशीति-चरिकृशीति-चर्कष्टि-चरिकर्ष्टि-चरीर्ष्टि। **कृत्सु**—कर्शितव्यम्, कर्शनीयम्, कृश्यम्, कृशः, कृशितवान्, कृश्यन्, कर्षितुम्, कृशित्वा-कर्शित्वा, परिकृश्य, कृशानुः, क्रशिमा, क्रशिष्ठः, क्रशीयान्।

**(१२२८) ञितृषा—पिपाशायाम्**। (प्यास लगाना)। अक.। सेट्। परस्मै.। पुषादिः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | तृष्यति | तृष्यतः | तृष्यन्ति | प्र. |
| | तृष्यसि | तृष्यथः | तृष्यथ | म. |
| | तृष्यामि | तृष्यावः | तृष्यामः | उ. |
| लिट् | ततर्ष | ततृषतुः | ततृषुः | प्र. |
| | ततर्षिथ | ततृषथुः | ततृष | म. |
| | ततर्ष | ततृषिव | ततृषिम | उ. |
| लुट् | तर्षिता | तर्षितारौ | तर्षितारः इत्यादि। | |
| लृट् | तर्षिष्यति | तर्षिष्यतः | तर्षिष्यन्ति इत्यादि। | |
| लोट् | तृष्यतु-तात् | तृष्यताम् | तृष्यन्तु | प्र. |
| | तृष्य-तात् | तृष्यतम् | तृष्यत | म. |
| | तृष्याणि | तृष्याव | तृष्याम | उ. |
| लङ् | अतृष्यत् | अतृष्यताम् | अतृष्यन् | प्र. |
| | अतृष्यः | अतृष्यतम् | अतृष्यत | म. |
| | अतृष्यम् | अतृष्याव | अतृष्याम | उ. |
| वि. लि. | तृष्येत् | तृष्येताम् | तृष्येयुः | प्र. |
| | तृष्येः | तृष्येतम् | तृष्येत | म. |
| | तृष्येयम् | तृष्येव | तृष्येम | उ. |
| आ. लि. | तृष्यात् | तृष्यास्ताम् | तृष्यासुः | प्र. |
| | तृष्याः | तृष्यास्तम् | तृष्यास्त | म. |
| | तृष्यासम् | तृष्यास्व | तृष्यास्म | उ. |
| लुङ् | अतृषत् | अतृषताम् | अतृषन् | प्र. |
| | अतृषः | अतृषतम् | अतृषत | म. |
| | अतृषम् | अतृषाव | अतृषाम | उ. |
| लृङ् | अतर्षिष्यत् | अतर्षिष्यताम् | अतर्षिष्यन् | प्र. |
| | अतर्षिष्यः | अतर्षिष्यतम् | अतर्षिष्यत | म. |
| | अतर्षिष्यम् | अतर्षिष्याव | अतर्षिष्याम | उ. |

**कृत्सु**—तर्षकः-र्षिका, **णिचि**—तर्षकः-र्षिका, तितर्षिषकः-षिका, तरीतृषकः-षिका, तर्षिता-त्री, तर्षयिता-त्री, तितर्षिषिता-त्री, तरीतृषिता-त्री, तृष्यन्[1]-न्ती, तर्षयन्-न्ती, तितर्षिषन्-न्ती, तर्षिष्यन्-न्ती-ती, तर्षयिष्यन्-न्ती-ती, तर्षयमाणः, तर्षयिष्यमाणः, तृट्[2]-ड्-तृषौ तृषः। तृषितम्-तृषितः-तृषितवान्, तर्षितः, तृषः, तृष्णक्[3], प्रतर्षी, तितर्षिषुः, तरीतर्षः[4], तर्षितव्यम्, तर्षयितव्यम्, तर्षणीयम्, तृष्यम्[5], तर्ष्यम्, तृष्यमाणः, तर्ष्यमाणः, तर्षितुम्,

१ 'दिवादिभ्यः–' (३-१-६९) इति श्यन् विकरणप्रत्ययः। 'शप्श्यनोर्नित्यम्' (७-१-८१) इति नित्यं नुमागमः।
२ कर्तरि क्विपि, षकारस्य जश्त्वचर्त्वयो रूपमेवम्।
३ 'स्वपितृषोर्नजिङ्' (३-२-१७२) इति तच्छीलादिषु कर्तृषु नजिङ् प्रत्ययः। 'चोः कुः' (८-२-३०) इति कुत्वम्। 'रषाभ्यां नो णः समानपदे' (८-४-१) इति णत्वम्। प्रत्ययस्य ङित्वात् गुणनिषेधः।
४ 'यङोऽचि च' (२-४-७४) इति यङो लुकि गुणः।
५ 'ऋदुपधात्–' (३-१-११०) इति भावकर्मणोः क्यप्।

तर्षयितुम्, तृष्टिः[1], तृट्[2], तर्पणा, तितर्षिणा, तरीतृषा, तर्षणम्, तर्षित्वा[3]-तृषित्वा, तर्षयित्वा, प्रतृष्य, प्रतर्ष्य, तृष्णा[4]।

**(१२२९) हृष्—तुष्टौ**। (सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना)। अक.। सेट्। पर.। पुषादिः।

१. हृष्यति। २. प्र. जहर्ष जहृषतुः जहृषुः। म. जहर्षिथ जहृषथुः जहृष। उ. जहर्ष जहृषिव जहृषिम। ३. हर्षिता हर्षितारौ हर्षितारः। ४. हर्षिष्यति। हर्षिष्यतः हर्षिष्यन्ति। ५. प्र. हृष्यतु-तात् हृष्यताम् हृष्यन्तु। म. हृष्य-तात् हृष्यतम् हृष्यत। उ. हृष्याणि हृष्याव हृष्याम। ६. प्र. अहृष्यत् अहृष्यताम् अहृष्यन्। म. अहृष्यः अहृष्यतम् अहृष्यत। उ. अहृष्यम् अहृष्याव अहृष्याम। ७. प्र. हृष्येत् हृष्येताम् हृष्येयुः। म. हृष्येः हृष्येतम् हृष्येत। उ. हृष्येयम् हृष्येव हृष्येम। ८. प्र. हृष्यात् हृष्यास्ताम् हृष्यासुः। म. हृष्याः हृष्यास्तम् हृष्यास्त। उ. हृष्यासम् हृष्यास्व हृष्यास्म। ९. प्र. अहृषत् अहृषताम् अहृषन्। म. अहृषः अहृषतम् अहृषत। उ. अहृषम् अहृषाव अहृषाम। १० अहर्षिष्यत् अहर्षिष्यताम्। अहर्षिष्यन्। म. अहर्षिष्यः अहर्षिष्यतम् अहर्षिष्यत। उ. अहृर्षिष्यम् अहर्षिष्याव अहर्षिष्याम।

**(१२३०-१२३१) रुष-रिष—हिंसायाम्**। (मारना)। अक.। सेट्। पर.। पुषादिः।

१. रुष्यति। २. रुरुष रुरुषतुः। ३. रोषिता। ४. रोषिष्यति। ५. रुष्यतु-तात्। ६. अरुष्यत्। ७. रुष्येत्। ८. रुष्यात्। ९. अरुषत्। १०. अरोषिष्यत्।

**भावे**—रुष्यते। **णिचि**—रोषयति-ते। **सनि**—रुरुषिषति-रुरोषिषति। **यङि**—रोरुष्यते। **यङ्लुकि**—रोरुषीति-रोरोष्टि। **कृत्सु**—रोषितव्यम्-रोष्टव्यम्, रोषणीयम्, रोष्यम्, रुषितः-रुष्टः, **रुष्यमत्वर** इति इट्विकल्पः। रुष्यन्, रोषितुम्-रोष्टुम्, रोषणम्, रुषित्वा-रोषित्वा-रुष्ट्वा, प्ररुष्य। एवं रिष्यति रिष्यतः रिष्यन्ति। इत्यादि।

**(१२३२) डिप—क्षेपे**। (फेंकना, उड़ाना)। सक.। सेट्। पर.। कुटादिः। डिप्यति। डिडेप। इत्यादि 'कृश्यति' (१२२७) वत्।

**(१२३३) कुप—क्रोधे**। (क्रोध करना)। अक.। सेट्। पर.। पुषादिः।

१. प्र. कुप्यति कुप्यतः कुप्यन्ति। म. कुप्यसि कुप्यथः कुप्यथ। उ. कुप्यामि कुप्यावः कुप्यामः २. प्र. चुकोप चुकुपतुः चुकुपुः। म. चुकोपिथ चुकुपथुः चुकुप। उ. चुकोप चुकुपिव चुकुपिम। ३. कोपिता। ४. कोपिष्यति। ५. प्र. कुप्यतु-कुप्यतात् कुप्यताम् कुप्यन्तु। म. कुप्य-तात् कुप्यतम् कुप्यत। उ. कुप्यानि कुप्याव कुप्याम। ६. प्र. अकुप्यत् अकुप्यताम् अकुप्यन्। म. अकुप्यः अकुप्यतम् अकुप्यत। उ. अकुप्यम् अकुप्याव अकुप्याम। ७. प्र. कुप्येत् कुप्येताम् कुप्येयुः। म. कुप्येः कुप्येतम् कुप्येत। उ. कुप्येयम् कुप्येव कुप्येम। ८.

१ 'तितुत्र–' (७-२-९) इतीण्णिषेधे, 'ष्टुना ष्टुः' (८-४-४१) इति ष्टुत्वे च रूपम्।
२ स्त्रियां 'सम्पदादिभ्यः–' (३-३-९४) इति भावे क्विपि रूपम्।
३ 'तृषिमृषिकृशेः काश्यपस्य' (१-२-२५) इति क्त्वायां कित्वविकल्पः। कित्वपक्षे गुणनिषेधः।
४ 'तृषिशुषिरसिभ्यः कित्' (द.उ. ५-४४) इति नप्रत्ययो भवति किच्च। तृष्णा = पिपासा।

प्र. कुप्यात् कुप्यास्ताम् कुप्यासुः। म. कुप्याः कुप्यास्तम् कुप्यास्त। उ. कुप्यासम् कुप्यास्व कुप्यास्म। ९. प्र. अकुपत् अकुपताम् अकुपन्। म. अकुपः अकुपतम् अकुपत। उ. अकुपम् अकुपाव अकुपाम। १०. प्र. अकोपिष्यत् अकोपिष्यताम् अकोपिष्यन्। म. अकोपिष्यः अकोपिष्यतम् अकोपिष्यत। उ. अकोपिष्यम्, अकोपिष्याव अकोपिष्याम।

**कृत्सु**—कोपकः-पिका, **णिचि**—कोपकः-पिका, कुप्यन्-न्ती, कोपयन्-न्ती, चुकुपिषन्-चुकोपिषन्-न्ती, कुपिष्यन्-न्ती-ती, कोपयिष्यन्-ती, कुप्यमानः-कोपिष्यमाणः, कोपयिष्यमाणः, कुपितम्-तः,कोपितः,कोपनः,प्रकोपी,कोपितव्यम्,कोपयितव्यम्,प्रकोपनीयम्,कुप्यम्,कोप्यम्, कोप्यमानः,कोपः,कोपितुम्,कोपयितुम्,प्रकोपणम्-प्रकोपनम्,कुपित्वा-कोपित्वा,कोपयित्वा, प्रकुप्य, प्रकोप्य।

**(१२३४) गुप—व्याकुलत्वे**। (व्याकुल होना)। अक.। सेट्। परस्मै.। पुषादिः।

१. गुप्यति। २. जुगोप। ३. गोपिता। ४. गोपिष्यति। ५. गुप्यतु। ६. अगुप्यत्। ७. गुप्येत्। ८. गुप्यात्। ९. अगुपत्। १०. अगोपिष्यत्। इत्यादि 'कृश्यति' (१२२७) वत्।

**(१२३५-३७) युप-रुप-लुप—विमोहने**। (चित्त विकल होना, भ्रान्त होना, घवड़ा जाना)। सक.। सेट्। परस्मै.। युप्यति, रुप्यति, लुप्यति-इत्यादि 'कुस्यति' (१२१८) वत्।

**(१२३८) लुभ—गार्ध्ये**। गार्ध्यमाकांक्षा। (आशा करना, चाहना लोभ करना)। **प्र-सम्**—लुभाना, आकर्षण करना, अपने तरफ आकर्षित करना। सक.। सेट्। परस्मै.। पुषादिः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | लुभ्यति | लुभ्यतः | लुभ्यन्ति | प्र. |
| | लुभ्यसि | लुभ्यथः | लुभ्यथ | म. |
| | लुभ्यामि | लुभ्यावः | लुभ्यामः | उ. |
| लिट् | लुलोभ | लुलुभतुः | लुलुभुः | प्र. |
| | लुलुभिथ | लुलुभथुः | लुलुभ | म. |
| | लुलोभ | लुलुभिव | लुलुभिम | उ. |
| लुट् | लोभिता | लोभितारौ | लोभितारः | प्र. |
| | लोभितासि | लोभितास्थः | लोभितास्थ | म. |
| | लोभितास्मि | लोभितास्वः | लोभितास्मः | उ. |

पक्षे—लोब्धा लोब्धारौ लोब्धारः इत्यादि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृट् | लोभिष्यति | लोभिष्यतः | लोभिष्यन्ति इत्यादि। | |
| लोट् | लुभ्यतु-लुभ्यतात् | लुभ्यताम् | लुभ्यन्तु | प्र. |
| | लुभ्य-लुभ्यतात् | लुभ्यतम् | लुभ्यत | म. |
| | लुभ्यानि | लुभ्याव | लुभ्याम | उ. |
| लङ् | अलुभ्यत् | अलुभ्यताम् | अलुभ्यन् | प्र. |
| | अलुभ्यः | अलुभ्यतम् | अलुभ्यत | म. |
| | अलुभ्यम् | अलुभ्याव | अलुभ्याम | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| वि. लि. | लुभ्येत् | लुभ्येताम् | लुभ्येयुः | प्र. |
| | लुभ्येः | लुभ्येतम् | लुभ्येत | म. |
| | लुभ्येयम् | लुभ्येव | लुभ्येम | उ. |
| आ. लि. | लुभ्यात् | लुभ्यास्ताम् | लुभ्यासुः | प्र. |
| | लुभ्याः | लुभ्यास्तम् | लुभ्यास्त | म. |
| | लुभ्यासम् | लुभ्यास्व | लुभ्यास्म | उ. |
| लुङ् | अलुभत् | अलुभताम् | अलुभन् | प्र. |
| | अलुभः | अलुभतम् | अलुभत | म. |
| | अलुभम् | अलुभाव | अलुभाम | उ. |
| लृङ् | अलोभिष्यत् | अलोभिष्यताम् | अलोभिष्यन् इत्यादि। | |

**कृत्सु**—लोभकः-भिका, **णिचि**—लोभकः-भिका, लुलुभिषकः-लुलोभिषकः-षिका, लोलुभकः-भिका, लोभिता-लोब्धा-ब्ध्री, लोभयिता-त्री, लुभ्यन्-न्ती, लोभयन्-न्ती, लुलुभिषन्-लुलोभिषन्-न्ती, निष्ठायाम्-लुब्धम्-लुब्धः-लुब्धवान्, क्त्वायाम्-लुभित्वा-लोभित्वा-लुब्ध्वा, अन्यानि रूपाण दैवादिक कुप्यति वत् (१२३३) ज्ञेयानि।

**(१२३९) क्षुभ—सञ्चलने**। (मथना,क्रोध करना)। अक.। सेट्। परस्मै.। पुषादिः।

१. क्षुभ्यति। २. चुक्षोभ। ३. क्षेमिता। ४. क्षोभिष्यति। ५. क्षुभ्यतु-तात्। ६. अक्षुभ्यत्। ७. क्षुभ्येत्। ८. क्षुभ्यात्। ९. अक्षुभत्। १०. अक्षोभिष्यत्। इत्यादि 'कुप्यति' (१२३३) वत्। निष्ठायां क्षुब्धः, **स्वान्तध्वान्ते**-ति अनिट्। क्षुब्धो मन्थः। अन्यत्र तु क्षुभितः।

**(१२४०) णभ—हिंसायाम्**। (मारना, हिंसा करना)। सक.। सेट्। पर.। पुषादिः।

१. नभ्यति। २. ननाभ। ३. नभिता। ४. नभिष्यति। ५. नब्यतु-तात्। ६. अनभ्यत्। ७. नभ्येत्। ८. नभ्यात्। ९. अनभत्। १०. अनभिष्यत्। इत्यादि 'नश्यति' (११९४) वत्।

**(१२४१) तुभ—हिंसायाम्**। (मारना, हिंसा करना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। पुषादिः। तुभ्यति तुभ्यतः तुभ्यन्ति इत्यादि 'नश्यति' (११९४) वत्।

**(१२४२) क्लिदू—आर्द्रीभावे**। (आर्द होना, गीला होना) अक.। वेट्. परस्मै.। पुषादिः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | क्लिद्यति | क्लिद्यतः | क्लिद्यन्ति | प्र. |
| | क्लिद्यसि | क्लिद्यथः | क्लिद्यथ | म. |
| | क्लिद्यामि | क्लिद्यावः | क्लिद्यामः | उ. |
| लिट् | चिक्लेद | चिक्लिदतुः | चिक्लिदुः | प्र. |
| | चिक्लेदिथ | चिक्लिदथुः | चिक्लिद | म. |
| | चिक्लेद-चिक्लिद | चिक्लिदिव | चिक्लिदिम | उ. |
| लुट् | क्लेत्ता | क्लेत्तारौ | क्लेत्तारः | प्र. |
| | क्लेत्तासि | क्लेत्तास्थः | क्लेत्तास्थ | म. |
| | क्लेत्तास्मि | क्लेत्तास्वः | क्लेत्तास्मः | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृट् | क्लेत्स्यति | क्लेत्स्यत: | क्लेष्यन्ति | प्र. |
| | क्लेस्त्यसि | क्लेत्स्यथ: | क्लेत्स्यथ | म. |
| | क्लेत्स्यामि | क्लेत्याव: | क्लेत्स्याम: | उ. |

पक्षे—क्लेदिष्यति क्लेदिष्यत: क्लेदिष्यन्ति इत्यादि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लोट् | क्लिद्यतु-तात् | क्लिद्यताम् | क्लिद्यन्तु | प्र. |
| | क्लिद्य-तात् | क्लिद्यतम् | क्लिद्यत | म. |
| | क्लिद्यामि | क्लिद्याव | क्लिद्याम | उ. |
| लङ् | अक्लिद्यत् | अक्लिद्यताम् | अक्लिद्यन् | प्र. |
| | अक्लिद्य: | अक्लिद्यतम् | अक्लिद्यत | म. |
| | अक्लिद्यम् | अक्लिद्याव | अक्लिद्याम | उ. |
| वि. लि. | क्लिद्येत् | क्लिद्येताम् | क्लिद्येयु: | प्र. |
| | क्लिद्ये: | क्लिद्यतम् | क्लिद्यत | म. |
| | क्लिद्येयम् | क्लिद्येव | क्लिद्येम | उ. |
| आ. लि. | क्लिद्यात् | क्लिद्यास्ताम् | क्लिद्यासु: | प्र. |
| | क्लिद्या: | क्लिद्यास्तम् | क्लिद्यास्त | म. |
| | क्लिद्यासम् | क्लिद्यास्व | क्लिद्यास्म | उ. |
| लुङ् | अक्लिदत् | अक्लिदताम् | अक्लिदन् | प्र. |
| | अक्लिद: | अक्लिदतम् | अक्लिदत | म. |
| | अक्लिदम् | अक्लिदाव | अक्विदाम | उ. |
| लृङ् | अक्लेदिष्यत् | अक्लेदिष्यताम् | अक्लेदिष्यन् | प्र. |
| | अक्लेदिष्य: | अकलेदिष्यतम् | अकलेदिष्यत | म. |
| | अक्लेदिष्यम् | अक्लेदिष्याव | अक्लेदिष्याम | उ. |

पक्षे- अक्लेत्स्यत् अक्लेत्स्यताम् अक्लेत्स्यन् इत्यादि।

**भावे**—क्लिद्यते। **णिचि**—क्लेदयति। **सनि**—चिक्लिदिषति-चिक्लित्सति। **यङि**—चेक्लिद्यते। **यङ्लुकि**—चेक्लिदीति-चेक्लेत्ति। **कृत्सु**—क्लेदितव्यम्-क्लेत्तव्यम्, क्लेदनीयम्, क्लेद्यम्, क्लिन्न:, क्लिद्यन्, क्लेदितुम्-क्लेतुम्, क्लेदनम्, क्लिदित्वा-क्लेदित्वा-क्लित्वा, क्लिद्य, विक्लेदनम्, विक्लित्ति:।

(१२४३) **ञिमिदा—स्नेहने**। (पिघलना, मृदुल होना)। सक.। सेट्। परस्मै.।
ञीत् पुषादि: मिदेर्गुण:।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | मेद्यति | मेद्यत: | मेद्यन्ति | प्र. |
| | मेद्यसि | मेद्यथ: | मेद्यथ | म. |
| | मेद्यामि | मेद्याव: | मेद्याम: | उ. |
| लिट् | मिमेद | मिमिदतु: | मिमिदु: | प्र. |
| | मिमेदिथ | मिमिदथु: | मिमिद | म. |
| | मिमेद | मिमिदिव | मिमिदिम | उ. |
| लुट् | मेदिता | मेदितारौ | मेदितार: | प्र. |
| | मेदितासि | मेदितास्थ: | मेदितास्थ | म. |
| | मेदितास्मि | मेमिदास्व: | मेदितास्म: | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृट् | मेदिष्यति | मेदिष्यतः | मेदिष्यन्ति | प्र. |
| | मेदिष्यसि | मेदिष्यथः | मेदिष्यथ | म. |
| | मेदिष्यामि | मेदिष्यावः | मेदिष्यामः | उ. |
| लोट् | मेद्यतु-मेद्यतात् | मेद्यताम् | मेद्यन्तु | प्र. |
| | मेद्य-मेद्यतात् | मेद्यतम् | मेद्यत | म. |
| | मेद्यानि | मेद्याव | मेद्याम | उ. |
| लङ् | अमेद्यत् | अमेद्यताम् | अमेद्यन् | प्र. |
| | अमेद्यः | अमेद्यताम् | अमेद्यत | म. |
| | अमेद्यम् | अमेद्याव | अमेद्याम | उ. |
| वि. लि. | मेद्येत् | मेद्येताम् | मेद्येयुः | प्र. |
| | मेद्येः | मेद्येतम् | मेद्येत | म. |
| | मेद्येयम् | मेद्येव | मेद्येम | उ. |
| आ. लि. | मिद्यात् | मिद्यास्ताम् | मिद्यासुः | प्र. |
| | मिद्याः | मिद्यास्तम् | मिद्यास्त | म. |
| | मिद्यासम् | मिद्यास्व | मिद्यास्म | उ. |
| लुङ् | अमिदत् | अमिदताम् | अमिदन् | प्र. |
| | अमिदः | अमिदतम् | अमिदत | म. |
| | अमिदम् | अमिदाव | अमिदाम | उ. |
| लृङ् | अमेदिष्यत् | अमेदिष्यताम् | अमेदिष्यन् | प्र. |
| | अमेदिष्यः | अमेदिष्यतम् | अमेदिष्यत | म. |
| | अमेदिष्यम् | अमेदिष्याव | अमेदिष्याम | उ. |

शेषं सर्वं 'ञिक्ष्विदा' धातुवत्।

**कृत्सु**—मेदकः-दिका, **णिचि**—मेदकः-दिका, मिमेदिषकः-मिमिदिषकः-षिका, मेमिदकः-दिका, मेदिता-त्री, मेदयिता-त्री, मिमेदिषिता-मिमिदिषिता-त्री, मेमिदिता-त्री, प्रमेद्यन्-न्ती, मेदिष्यन्-न्ती-ती, शेषं सर्वं दैवादिकक्ष्विद्यतिवत्।

(१२४४) **ञिक्ष्विदा—स्नेहनमोचनयोः**। (तेल की मालिश करना, चुपड़ना, मुक्त करना)। अक.। सेट्। परस्मै.। पुषादिः। ञीत्। आदिच्च।

१. क्ष्विद्यति। २. चिक्ष्वेद। ३. क्ष्वेदिता। ४. क्ष्वेदिष्यति। ५. क्ष्विद्यतु। ६. अक्ष्विद्यत्। ७. क्ष्विद्येत्। ८. क्षिद्यात्। ९. अक्ष्विदत्। १०. अक्ष्वेदिष्यत्।

**कृत्सु**—क्ष्वेदितव्यम् 'क्ष्विण्ण' इत्यादि।

(१२४५) **ऋधु—वृद्धौ**। (बढ़ना, वृद्धि होना)। अक.। सेट्। परस्मै.। पुषादिः।

१. ऋध्यति। २. **प्र.** आनर्ध[१] आनृधतुः आनृधुः। **म.** आनर्धिथ आनृधथुः आनृध। **उ.** आनर्ध आनर्धिव आनर्धिम। ३. अर्धिता। ४. अर्धिष्यति। ५. **प्र.** ऋध्यतु-ऋध्यतात् ऋध्यताम् ऋध्यन्तु। **म.** ऋध्य-ऋध्यतात् ऋध्यतम् ऋध्यत। **उ.** ऋध्यानि ऋध्याव ऋध्याम। ६. **प्र.** आर्ध्यत् आर्ध्यताम् आर्ध्यन्। **म.** आर्ध्यः आर्ध्यतम् आर्ध्यत। **उ.** आर्ध्यम् आर्ध्याव

१ 'तस्मान्नुड् द्विहलः' इति नुट्। ऋकारैकदेशो रेफो हल्त्वेन गृह्यते इति द्विहल्त्वम्।

आर्ध्याम। ७. **प्र.** ऋध्येत् ऋध्येताम् ऋध्येयुः। **म.** ऋध्येः ऋध्येतम् ऋध्येत। **उ.** ऋध्येयम् ऋध्येव ऋध्येम। ८. **प्र.** ऋध्यात् ऋध्यास्ताम् ऋध्यासुः। **म.** ऋध्याः ऋध्यास्तम् ऋध्यास्त। **उ.** ऋध्यासम् ऋध्यास्व ऋध्यास्म। ९. **प्र.** आर्धत्[1] आर्धताम् आर्धन्। **म.** आर्धः आर्धतम् आर्धत। **उ.** आर्धम् आर्धाव आर्धाम। १०. अर्धिष्यत्।

**भावे**—ऋध्यते। **णिचि**—अर्धयति। ९. आर्दिधत्। **सनि**—अर्दिधिषति[2]-इर्त्स्यति[3]। कृत्सु—अर्धकः-र्धिका, णिचि—अर्धकः-र्धिका, अर्दिधिषकः-र्षिका, ईर्त्सकः-त्सिका, अर्धिता-त्री, अर्धयिता-त्री, अर्दिदिषिता-त्री, ईर्त्सिता-त्री, ऋध्यन्-न्ती, अर्धयन्-न्ती, अर्दिधिषन्-न्ती, ईर्त्सन्-न्ती, अर्धिष्यन्-न्ती-ती, अर्धयिष्यन्-न्ती-ती, अर्दिधिषिष्यन्-न्ती-ती, ईर्त्सिष्यन्-न्ती, अर्धयमानः[4], अर्धयिष्यमाणः, ऋत्-ऋध्-ऋधौ-ऋधः, ऋद्धम्-द्धः-द्धवान्, अर्धितः-तम्, अर्दिधिषतः-ईर्त्सितः-तवान्, ऋधः, अर्दिधिषुः[5], ईर्त्सुः, अर्दिधयिषुः, अर्धितव्यम्, अर्धयितव्यम्, अर्दिधिषितव्यम्, ईर्त्सितव्यम्, अर्धनीयम्, ऋद्धयम्[6], अर्ध्यम्, अर्दिधिष्यम्, ईर्त्स्यम्, ऋध्यमानः, अर्ध्यमानः, अर्धः, अर्धितुम्, अर्धयितुम्, अर्दिधिषितुम्, ईर्त्सितुम्, ऋद्धिः, अर्धना, अर्दिधिषा, ईर्त्सा, अर्दिधिषा, अर्धनम्, अर्धित्वा[7], ऋद्ध्वा, अर्धयित्वा, अमृद्धय, समर्ध्य, अमर्दिधिष्य, समीर्त्स्य।

**( १२८६ ) गृधु—अभिकांक्षायाम्**। (चाहना)। सक.। सेट्। पर.। पुषादिः।

१. गृध्यति। २. **प्र.** जगर्ध जगृधतुः जगृधुः। **म.** जगर्धिथ जगृधथुः जगृध। **उ.** जगर्ध जगृधिव जगृधिम। ३. गर्धिता। ४. गर्धिष्यति। ५. गृध्यतु। ६. **प्र.** अगृध्यत्। अगृध्यताम् अगृध्यन्। **म.** अगृध्यः अगृध्यतम् अगृध्यत। **उ.** अगृध्यम् अगृध्याव अगृध्याम। ७. **प्र.** गृध्येत् गृध्येताम् गृध्येयुः। **म.** गृध्येः गृध्येतम् गृध्येत। **उ.** गृध्येयम् गृध्येव गृध्येम। ८. **प्र.** गृध्यात् गृध्यास्ताम् गृध्यासुः। **म.** गृध्याः गृध्यास्तम् गृह्यास्त। **उ.** गृह्यासम् गृह्यास्व गृध्यास्म। ९. **प्र.** अगृधत् अगृधताम् अगृधन्। **म.** अगृधः अगृधतम् अगृधत। **उ.** अगृधम् अगृधाव अगृधाम। १०. अगर्धिष्यत्। इत्यादि 'कृश्यति' (१२२७) वत्। गर्धित्वा गृद्ध्वा गृद्धः।

इति दिवादयः ॥४॥



१ पुषादित्वादङ् 'आडजादीनाम्–' इत्याट्।
२ 'सनीवन्त–' इति इड्विकल्पः, तत्रेति गुणेऽजादित्वात् 'नन्द्राः संयोगादयः' इति रेफवर्जितस्य द्वितीयस्यैकाचो द्विर्वचनम्।
३ अनिटि तु आप्ज्ञपृधामीत् आप् ज्ञप् ऋध् एषाम् अचः ईत् स्यात्। इति ईत्वे रपरत्वे 'अत्र लोपोऽभ्यासस्य' इति अभ्यासलोपः। 'खरि चेति' धकारस्य चर्त्वम्।
४ 'इगुपधज्ञाप्रीकिरः कः' (३-१-१३५) इति कर्तरि कः।
५ अर्दिधिषुः यशः कीर्तिं ईर्त्सुं वृक्षैरताडयत्। भ.का. ९/ ३२।
६ 'ऋदुपधाच्चाक्लृपिचृतेः' (३-१-११०) इति क्यप्।
७ क्त्वायां 'उदितो वा' (७-३-५६) इतीड्विकल्पः। सेटः क्त्वायाः 'न क्त्वा सेट्' (१-२-१८) इति कित्वं न।

# अथ स्वादयः ( ५ )

**( १२४७ ) षुञ्—अभिषवे।** (स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, मथना, मद्य चुआना)। स्नानेऽकर्मकः अन्यत्र सकर्मकः। अनिट्। उभयपदी। ञित्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | सुनोति | सुनुतः | सुन्वन्ति | प्र. |
| | सुनोषि | सुनुथः | सुनुथ | म. |
| | सुनोमि | सुनुवः-सुन्वः | सुनुमः-सुन्मः | उ. |
| लिट् | सुषाव | सुषवतुः | सुषुवुः | प्र. |
| | सुषविथ | सुषुवथुः | सुषव | म. |
| | सुषाव-सुषव | सुषुविव | सुषुविम | उ. |
| लुट् | सोता | सोतारौ | सोतारः | प्र. |
| | सोतासि | सोतास्थः | सोतास्थ | म. |
| | सोतास्मि | सोतास्वः | सोतास्मः | उ. |
| लृट् | सोष्यति | सोष्यतः | सोष्यन्ति | प्र. |
| | सोष्यसि | सोष्यथः | सोष्यथ | म. |
| | सोष्यामि | सोष्यावः | सोष्यामः | उ. |
| लोट् | सुनोतु-सुनुतात् | सुनुताम् | सुन्वन्तु | प्र. |
| | सुनु-सुनुतात् | सुनुतम् | सुनुत | म. |
| | सुनवानि | सुनवाव | सुनवाम | उ. |
| लङ् | असुनोत् | असुनुताम् | असुन्वन् | प्र. |
| | असुनोः | असुनुतम् | असुनुत | म. |
| | असुनवम् | असुनुव-असुन्व | असुनुम-असुन्म | उ. |
| वि. लि. | सुनुयात् | सुनुयाताम् | सुनुयुः | प्र. |
| | सुनुयाः | सुनुयातम् | सुनुयात | म. |
| | सुनुयाम् | सुनुयाव | सुनुयाम | उ. |
| आ. लि. | सूयात् | सूयास्ताम् | सूयासुः | प्र. |
| | सूयाः | सूयास्तम् | सूयास्त | म. |
| | सूयासम | सूयास्व | सूयास्म | उ. |
| लुङ् | असावीत् | असाविष्टाम् | असाविषुः | प्र. |
| | असावीः | असाविष्टम् | असाविष्ट | म. |
| | असाविषम् | असाविष्व | असाविष्म | उ. |
| लृङ् | असोष्यत् | असोष्यताम् | असोष्यन् | प्र. |
| | असोष्यः | असोष्यतम् | अशोसोष्यत | म. |
| | असोष्यम् | असोष्याव | असोष्याम | उ. |

आत्मनेपदपक्षे

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | सुनुते | सुन्वाते | सुन्वते | प्र. |
| | सुनुषे | सुन्वाथे | सुनुध्वे | म. |
| | सुन्वे | सुनुवहे-सुन्वहे | सुनुमहे-सुन्महे | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लिट् | सुषुवे | सुषुवाते | सुषुविरे | प्र. |
| | सुषुविषे | सुषुवाथे | सुषुविढ्वे-ध्वे | म. |
| | सुषुवे | सुषुविवहे | सुषुविमहे | उ. |
| लुट् | सोता | सोतारौ | सोतारः | प्र. |
| | सोतासे | सोतासाथे | सोताध्वे | म. |
| | सोताहे | सोतास्वहे | सोतास्महे | उ. |
| लृट् | सोष्यते | सोष्येते | सोष्यन्ते | प्र. |
| | सोष्यसे | सोष्येथे | सोष्यध्वे | म. |
| | सोष्ये | सोष्यावहे | सोष्यामहे | उ. |
| लोट् | सुनुताम् | सुन्वाताम् | सुन्वताम् | प्र. |
| | सुनुष्व | सुन्वाथाम् | सुनुध्वम् | म. |
| | सुनवै | सुनवावहै | सुनवामहै | उ. |
| लङ् | असुनुत | असुन्वाताम् | असुन्वत | प्र. |
| | असुनुथाः | असुन्वाथाम् | असुनुध्वम् | म. |
| | असुन्वि | असुनुवहि-असुन्वहि | असुनुमहि-असुन्महि | |
| वि. लि. | सुन्वीत | सुन्वीयाताम् | सुन्वीरन् | प्र. |
| | सुन्वीथाः | सुन्वीयाथाम् | सुन्वीध्वम् | म. |
| | सुन्वीय | सुन्वीवहि | सुन्वीमहि | उ. |
| आ. लि. | सोषीष्ट | सोषीयास्ताम् | सोषीरन् | प्र. |
| | सोषीष्ठाः | सोषीयास्थाम् | सोषीध्वम् | म. |
| | सोषीय | सोषीवहि | सोषीमहि | उ. |
| लुङ् | असोष्ट | असोषाताम् | असोषत | प्र. |
| | असोष्ठाः | असोषाथाम् | असोढ्वम् | म. |
| | असोषि | असोष्वहि | असोष्महि | उ. |
| लृङ् | असोष्यत | असोष्येताम् | असोष्यन्त | प्र. |
| | असोष्यथाः | असोष्येथाम् | असोष्यध्वम् | म. |
| | असोष्ये | असोष्यावहि | असोष्यामहि | उ. |

कर्मण्यादिषु सर्वं 'सवति' (९४१) वत्।

**कृत्सु**—सोता-त्री, सावयिता-त्री, सावयन्-न्ती, सावयमानः, सावयिष्यमाणः, सोतव्यम्, सवनीयः, सव्यः-साव्यः, सुतः, सुन्वन्[1]-सुन्वानः, सुन्वन्ती, सोतुम्, सुत्वा, सुत्वा[2]-सुत्वरी,

---

१ 'सुञो यज्ञसंयोगे' (३-२-१३२) इति शता। लडादेशात् शतुरयं भिन्नः, यजमान उच्यते सुन्वन् इति। धातोरुभयपदित्वेन शतरि शानचि च 'अभिषुण्वन् - अभिषुण्वानः सोमम्' इत्यपि क्रमेण भवति।

२ 'भूते सुयजोः–' (३-२-१०३) इति ङ्वनिप्। प्रत्ययस्य ङित्वात् गुणनिषेधः। पित्वात् तुक्। सुत्वा– इष्टवान् यः, स एवमुच्यते। स्त्रियाम् 'वनो र च' (४-१-७) इति ङीप् रेफश्च।

अभिषुत्य[१], सवनम्[२], राजसूयः[३], सूत्या[४], आसाव्यम्[५], साव्यम्, सोमसुत्[६], अभिसोष्यन्[७]-न्ती-ती, अभिसुसूषुः, अभिषवः, आसुतीवलः,[८] सुरा[९], सुरकः,[१०] सोमः[११], शेषं सर्वं भौविदक 'दवति' वत् (९४४) बोध्यम्।

**(१२४८) षिञ्—बन्धने।** (बांधना, गूंथना)। सक.। अनिट्। उभय.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | सिनोति | सिनुतः | सिन्वन्ति | प्र. |
| | सिनोषि | सिनुथः | सिनुथ | म. |
| | सिनोमि | सिनुवः-सिन्वः | सिनुमः-सिन्मः | उ. |
| लिट् | सिषाय | सिष्यतुः | सिष्युः | प्र. |
| | सिषयिथ-सिषेथ | सिष्यथुः | सिष्य | म. |
| | सिषाय-सिषय | सिष्यिव | सिष्यिम | उ. |
| लुट् | सेता | सेतारौ | सेतारः | प्र. |
| | सेतासि | सेतास्थः | सेतास्थ | म. |
| | सेतास्मि | सेतास्वः | सेतास्मः | उ. |
| लृट् | सेष्यति | सेष्यतः | सेष्यन्ति | प्र. |
| | सेष्यसि | सेष्यथः | सेष्यथ | म. |
| | सेष्यामि | सेष्यावः | सेष्यामः | उ. |
| लोट् | सिनोतु-तात् | सिनुताम् | सिन्वन्तु | प्र. |
| | सिनु-तात् | सिनुतम् | सिनुत | म. |
| | सिनवानि | सिनवाव | सिनवाम | उ. |

१ ल्यपि तुक्। 'उपसर्गात सुनोति–' (८-३-६५) इति षत्वम्।

२ सवनम् = यज्ञः, प्रातर्मध्यसायङ्कालरूपकालत्रयञ्च ल्युटि रूपमेवम्।

३ राज्ञा सूयतेऽसौ इति, राजा वाऽसौ सूयते इत्यर्थे 'राजसूय–' (३-१-११४) इत्यनेन राजशब्दे उपपदे सुनोतेः क्यप् दीर्घश्च। राजसूयः = राज्ञैव साधनीय क्रतुविशेषः। अर्धर्चादित्वात् राजसूयम्-राजसूयः इत्युभयमपि साध्वेव।

४ 'संज्ञायां समजनिषदनिपतमनविदषुञ्–' (३-३-९९) इति स्त्रियां क्यपि, तुकि च रूपमेवम्। पुत्या = क्रतुविशेषः।

५ 'आसुयु–' (३-१-१२६) इति ण्यत् प्रत्ययः। अजन्तत्वलक्षणयतोऽपवादः आसाव्यम् = यज्ञियं सवनकर्म। अन्यत्र सव्यमित्येव।

६ भूते 'सोमे सुञः' (३-२-९०) इति क्विप्। सोमं = सोमयागं सुतवान् इष्टवान् सोमसुत्।

७ अत्र 'उपसर्गात् सुनोति–' (८-३-६५) इति प्राप्तस्य षत्वस्य 'सुनोतेः स्यसनोः' (८-३-११७) इति निषेधः। एवं सन्नन्तेषु सर्वत्र षत्वं न।

८ आङ्पूर्वकादस्मात् क्तिन्नन्तात् 'रजः कृष्यासुति–' (५-२-११२) इति मत्वर्थीये वलप्रत्यये 'वले' (६-३-११८) इति दीर्घः

९ औणादिके (द.उ. ८-४२) क्रन् प्रत्यये रूपम्। सुरा = मद्यविशेषः

१० सुरकः = अहिविशेषः, येन दष्टा माद्यन्ति। सुरा शब्दात् सुरा"इव सुरकः, इवार्थे कनि, 'केऽणः' (७-४-१३) इति ह्रस्वः।

११ औणादिके (द.उ. ६-७९) मनिन् प्रत्यये रूपम्। सोमः = लता विशेषः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लङ् | असिनोत् | असिनुताम् | असिन्वन् | प्र. |
| | असिनो: | असिनुतम् | असिनुत | म. |
| | असिनवम् | असिनुव-न्व | असिनुम-न्म | उ. |
| वि. लि. | सिनुयात् | सिनुयाताम् | सिनुयुः | प्र. |
| | सिनुयाः | सिनुयातम् | सिनुयात | म. |
| | सिनुयाम् | सिनुयाव | सिनुयाम | उ. |
| आ. लि. | सीयात् | सियास्ताम् | सियासुः | प्र. |
| | सीयाः | सियास्तम् | सियास्त | म. |
| | सीयासम् | सीयास्व | सियास्म | उ. |
| लुङ् | असैषीत् | असैष्टाम् | असैषुः | प्र. |
| | असैषीः | असैष्टम् | असैष्ट | म. |
| | असैषम् | असैष्व | असैष्म | उ. |
| लृङ् | असेष्यत् | असेष्यताम् | असेष्यन् | प्र. |
| | असेष्यः | असेष्यतम् | असेष्यत | म. |
| | असेष्यम् | असेष्याव | असेष्याम | उ. |

आत्मनेपदपक्षे

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | सिनुते | सिन्वाते | सिन्वते | प्र. |
| | सिनुषे | सिन्वाथे | सिनुध्वे | म. |
| | सिन्वे | सिनुवहे-न्वहे | सिनुमहे-न्महे | उ. |
| लिट् | सिष्ये | सिष्याते | सिष्यिरे | प्र. |
| | सिष्यिषे | सिष्याथे | सिष्यिढ्वे-ध्वे | म. |
| | सिष्ये | सिष्यिवहे | सिष्यिमहे | उ. |
| लुट् | सेता | सेतारौ | सेतारः इत्यादि। | |
| लृट् | सेष्यते | सेष्येते | सेष्यन्ते इत्यादि। | |
| लोट् | सिनुताम् | सिन्वाताम् | सिन्वताम् | प्र. |
| | सिनुष्व | सिन्वाथाम् | सिनुध्वम् | म. |
| | सिनवै | सिनवावहै | सिनवामहै | उ. |
| लङ् | असिनुत | असिन्वाताम् | असिन्वत | प्र. |
| | असिनुथाः | असिन्वाथाम् | असिनुध्वम् | म. |
| | असिन्वि | असिनुवहि-न्वहि | असिनुमहि-न्महि | उ. |
| वि. लि. | सिन्वीत | सिन्वीयाताम् | सिन्वीरन् | प्र. |
| | सिन्वीथाः | सिन्वीयाथाम् | सिन्वीध्वम् | म. |
| | सिन्वीय | सिन्वीवहि | सिन्वीमहि | उ. |
| आ. लि. | सेषीष्ट | सेषीयास्ताम् | सेषीरन् | प्र. |
| | सेषीष्ठाः | सेषीयास्थाम् | सेषीढ्वम् | म. |
| | सेषीय | सेषीवहि | सेषीमहि | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुङ् | असेष्ट | असेषाताम् | असेषत | प्र. |
| | असेष्ठाः | असेषाथाम् | असेड्ढ्वम्-ध्वम् | म. |
| | असेषि | असेष्वहि | असेष्महि | उ. |
| लृङ् | असेष्यत | असेष्येताम् | असेष्यन्त इत्यादि । | |

**कर्मणि**—सीयते । ९ असायि । **णिचि**—साययति । ९ असीषयत् । **सनि**—सिसीषति-ते । **यङि**—सेषीयते । **यङ्लुकि**—सेषयीति-सेषेति । **कृत्सु**—सेतव्यम्, सयनीयम्, सेयम्, सितः-सिनः, सिन्वन्-न्ती, सिन्वानः, सेतुम्, सयनम्, सित्वा, सेत्रम्[1], सेतुः[2], सिनो[3] ग्रासः स्वयमेव, केशेषु कैशैर्वा प्रसितः[4], सयः[5]-विषयः, परिषिण्वन्[6] निषिण्वन्-ती, सेरुः,[7] पुरुषः[8]-पूरुषः, सीरम्[9] ।

**( १२४९ ) शिञ्—निशाने** । (तीक्ष्ण करना, पैना, करना, पतला करना)। सक.। अनिट् । उभय.। इकारान्तः। शिनोति शिनुते । इत्यादि 'सिनोति' (१२४८) वत् ।

**( १२५० ) डुमिञ्—प्रक्षेपणे** । (फेंकना, फैलाना)। सक.। अनिट् । उभय.।

१ मिनोति । २ **प्र.** ममौ मिम्यतुः मिम्युः । **म.** मिमिथ-ममाथ मिम्यथुः मिम्य । **उ.** ममौ मिम्यिव मिम्यिम । ३ माता । ४ मास्यति । ५ **प्र.** मिनोतु-मिनुतात् मिनुताम् मिन्वन्तु । **म.** मिनु-मिनुतात् मिनुतम् मिनुत । **उ.** मिनवानि मिनवाव मिनवाम । ६ **प्र.** अमिनोत् अमिनुताम् अमिन्वन् । **म.** अमिनोः अमिनुतम् अमिनुत । **उ.** अमिनवम् अमिनुव-अमिन्व अमिनुम-अमिन्म । ७ **प्र.** मिनुयात् मिनुयाताम् मिनुयुः । **म.** मिनुयाः मिनुयातम् मिनुयात । **उ.** मिनुयाम् मिनुयाव मिनुयाम । ८. मीयात् मीयास्ताम् मीयासुः । ९ **प्र.** अमासीत् अमासिष्टाम् अमासिषुः । **म.** अमासीः अमासिष्टम् अमासिष्ट । **उ.** अमासिषम् अमासिष्व अमासिष्म । १० अमास्यत् अमास्यताम् अमास्यन् इत्यादि ।

**आत्मनेपदपक्षे**—१ **प्र.** मिनुते मिन्वाते मिन्वते । **म.** मिनुषे मिन्वाथे मिनुध्वे । उ. मिन्वे मिनुवहे-न्वहे मिनुमहे-न्महे । २ **प्र.** मिम्ये मिम्याते मिम्यिरे । **म.** मिम्यिषे मिम्याथे

१ 'दाम्नीशसयुयुजसि–' (३-२-१०२) इति करणे ष्ट्रन्-प्रत्ययः । सेत्रम् = जालम् ।

२ औणादिके (द.उ. १-१२२) तुन् प्रत्यये रूपम् । सेतुः = कूलान्तरप्रापकः पन्थाः । 'तितुत्र–' (७-२-९) इतीण्निषेधः ।

३ 'सिनोतेर्ग्रासकर्मकर्तृकस्य–' (वा. ८-२-४४) इति निष्ठानत्वम् । इदमत्र माधवोक्तं विवरणम्– 'यदा वध्यमानः पिण्डीक्रियमाणो ग्रासो दध्यादिवशेन तत्रानुकूल्यं प्रतिपद्यते तदा कर्मणः कर्तृत्वविवक्षायाम् अयं प्रयोगः, इति ।

४ 'प्रसितोत्सुकाभ्यां तृतीया च' (२-३-४४) इति तृतीयासप्तम्यौ ।

५ पचाद्यचि सयः । विशेषेण बध्नाति इति विषयः = शब्दादिः । 'परिनिविभ्यः–' (८-३-७०) इति षत्वम् ।

६ 'परिनिविभ्यः सेवसितसय–' (८-३-७०) इति षत्वम् ।

७ 'दाधेट्सि–' (३-२-१५९) इति तच्छीलादिषु कर्तृषु रूप्रत्ययः । धातोर्गुणः ।

८ पुरु सिनोतीति पुरुषः 'अन्येष्वपि–' (३-२-१०१) इति डप्रत्ययः । पुरुष एव पूरुषः । 'अन्येषामपि–' (६-३-१३७) इति दीर्घः ।

९ 'शुषिचिमिभ्यो दीर्घश्च' (द.उ. ८-४३) इति क्रन् प्रत्ययः । प्रकृतेः दीर्घश्च । सीरम् = हलः ।

मिम्यिढ्वे-ध्वे । उ. मिम्ये मिम्यिवहे मिम्यिमहे । ३ प्र. माता । म. मातासे । उ. माताहे । ४ मास्यते । ५ प्र. मिनुताम् मिन्वाताम् मिन्वताम् । म. मिनुष्व मिन्वाथाम् मिनुध्वम् । उ. मिनवै मिनवावहै मिनवामहै । ६ प्र. अमिनुत अमिन्वाताम् अमिन्वत । म. अमिनुथाः अमिन्वाथाम् अमिनुध्वम् । उ. अमिन्वि अमिनुवहि-न्वहि अमिनुमहि-न्महि । ७ प्र. मिन्वीत मिन्वीयाताम् मिन्वीरन् । म. मिन्वीथाः मिन्वीयाथाम् मिन्वीध्वम् । उ. मिन्वीय मिन्वीवहि मिन्वीमहि । ८ प्र. मासीष्ट मासीयास्ताम् मासीरन् । म. मासीष्ठाः मासीयास्थाम् मासीध्वम् । उ. मासीय मासीवहि मासीमहि । ९ प्र. अमास्त अमासाताम् अमासत । म. अमास्थाः अमासाथाम् अमाद् ध्वम्-ध्वम् । उ. अमासि अमास्वहि अमास्महि । १० अमास्यत ।

**कर्मणि**—मीयते । २. मिम्ये । ९. अमायि । **णिचि**—माययति-ते । **सनि**—मित्सति-ते । **यङि**—मेमीयते । **यङ्लुकि**—मेमेति । **कृत्सु**—मायकः[१]-यिका, मापकः[२]-पिका, मित्सकः[३]-त्सिका, मेमीयकः[४]-यिका, माता-त्री, मापयिता-त्री, मित्सिता-त्री, मेमीयिता-त्री, मिन्वन्[५]-न्ती, मापयन्-न्ती, मित्सन्-न्ती, मास्यन्-न्ती-ती, मापयिष्यन्-न्ती-ती, मित्सिष्यन्-न्ती-ती, मिन्वानः, मापयमानः, मित्समानः, मेमीयमानः, मास्यमानः, मापयिष्यमाणः, प्रमाः-प्रमौ-प्रमाः, मितम्[६]-तः-तवान्, मापितः, मित्सितः, मेमिसितः-तवान्, मयः[७], मायी[८], मापः, मित्सुः, मेम्यः[९], मातव्यम्, मापयित्वम्, प्रणिमानीयम्[१०], प्राणिमापनीयम्, मित्सनीयम्, मेमीयनीयम्, मेयम्[११], माप्यम्, मित्सयम्, मेमीय्यम्, ईषत्प्रमयः[१२]-दुष्प्रमयः-सुप्रमयः, मायमानः,

१ ण्वुलि वृद्धौ सत्यां एजन्तत्वेन 'मीनातिमिनोतिदीङाम्—' (६-१-५०) इत्यनेन आत्वे, 'आतो युक् चिण्कृतोः' (७-३-३३) इति युगागमः । एवं घञादिष्वपि बोध्यम् ।

२ णिच्प्रत्ययोत्पत्तेरनन्तरं वृद्धौ कृतायाम् एजन्तत्वात् आत्वे, आदन्तलक्षणे पुगागमे च रूपमेवम् । ण्यन्ते सर्वत्र एवमेव प्रक्रिया, ज्ञेया ।

३ 'इको झल्' (१-२-९) इति सनः कित्वे, 'अज् झनगमां सनि' (६-४-१६) इति दीर्घे, 'सनि मीमा—' (७-४-५४) इति इस् भावे 'सः स्यार्धधातुके' (७-४-४९) इति सकारस्य तत्वे, 'अत्र लोपोऽभ्यासस्य' (७-४-५८) इत्यासलोपे च रूपम् । एवं सन्नन्ते सर्वत्र बोध्यम् ।

४ यङन्ते 'अकृत्सर्वधातुकयोः—' (७-४-२५) इति दीर्घे द्विर्वचनादिकेषु च कृतेषु 'गुणो यङ्लुकोः' (७-४-८२) इति गुणः ।

५ 'शतरि स्वादिभ्यः—' (३-१-७३) इति श्नुप्रत्यये, 'हुश्नुवोः सार्वधातुके' (६-४-८७) इति यणि च रूपमेवम् । शानजन्तेऽप्येवमेव ।

६ निष्ठायामाकारो न प्रवर्तते; आकारविधायके सूत्रे (६-१-५०) 'आदेच उपदेशेऽशिति' (६-१-४५) इत्यतः 'एचः' इत्यनुवर्तमानात्, तस्य च गुणयोग प्रत्ययेष्वेव परेषु आत्वमिति ज्ञापनात् । अतश्च निष्ठाप्रत्ययस्य कित्वात् न गुणः तेंन रूपमेवम् । स्पष्टमिदं प्रकृतसूत्रे (६-१-५०) भाष्ये । एवमेव क्त्वाक्तिन् प्रभृतिष्वपि ज्ञेयम् ।

७ पचाद्यचि 'निमि मीलियां खलचोः प्रतिषेधः' (वा. ६-१-५०) इति आकारप्रतिषेधः । गुणेऽयादेशे च रूपमेवम् ।

८ नद्यादित्वात् कर्तरि णिनिप्रत्यये युगागमे च रूपमेवम् ।

९ यङन्तात् पचाद्यचि यङो लुकि 'एरनेकाचः—' (६-४-८२) इति यणि च रूपमेवम् ।

१० 'नेर्गदनदपतपदघुमा—' (८-४-१७) इति नेर्णत्वे रूपमेवम् ।

११ यत्प्रत्यये, अनैमित्तिक आववरे, 'ईद् यति' (६-४-६५) इतीकारे गुणे च रूपमेवम् ।

१२ धातोरस्य सकर्मकत्वात् कर्मणि खल् प्रत्यये, 'निमिमीलियां खलचोः प्रतिषेधः' (वा. ६-१-५०) इति आकारप्रतिषेधे गुणायादेशयो रूपमेनम् ।

माप्यमानः,मित्स्यमानः,मेमीय्यमानः,मयः,[१] मापः,मित्सः,मेमीयः,मातुम्,मापयितुम्,मित्सितुम्, मेमीयितुम्, मित्तिः, मापना, मित्सा, मेमीया, मानम्, मापनम्, मित्सनम्, मेमीयनम्, मित्वा, मापयित्वा,मित्सित्वा,मेमीयित्वा,प्रमाय,[२] प्रमाप्य,वातप्रमी[३],मायुः[४]-गोमायुः,मयुः[५],जामाता,[६] मीरः[७]।

**(१२५१) चिञ्—चयने**। (चुनना, बटोरना, एकत्र करना)। **अप**—नाश करना। **सम्**—संचय करना। **उप-सम्**—पाना, प्राप्त करना। **निर्**—निश्चय करना। **विनिर्**—ठीक निश्चय करना। सक.। अनिट्। उभय.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | चिनोति | चिनुतः | चिन्वन्ति | प्र. |
| | चिनोषि | चिनुथः | चिनुथ | म. |
| | चिनोमि | चिनुवः-चिन्वः | चिनुमः-चिन्मः | उ. |
| लिट् | चिकाय | चिक्यतुः | चिक्युः | प्र. |
| | चिकयिथ-चिकेथ | चिक्यथुः | चिक्य | म. |
| | चिकाय-चिकय | चिक्यिव | चिक्यिम | उ. |
| पक्षे | चिचाय | चिच्यतुः | चिच्युः | प्र. |
| | चिचयिथ-चिचेथ | चिच्युथः | चिच्य | म. |
| | चिचाय | चिचय | चिच्यिव चिच्यिम | उ. |
| लुट् | चेता | चेतारौ | चेतारः | प्र. |
| | चेतासि | चेतास्थः | चेतास्थ | म. |
| | चेतास्मि | चेतास्वः | चेतास्मः | उ. |
| लृट् | चेष्यति | चेष्यतः | चेष्यन्ति | प्र. |
| | चेष्यसि | चेष्यथः | चेष्यथ | म. |
| | चेष्यामि | चेष्यावः | चेष्यामः | उ. |
| लोट् | चिनोतु-तात् | चिनुताम् | चिन्वन्तु | प्र. |
| | चिनु-तात् | चिनुतम् | चिनुत | म. |
| | चिनवानि | चिनवाव | चिनवाम | उ. |

१ धातोरस्येवर्णान्तात्वत्, घञपवादतया 'एरच्' (३-३-५६) इति भावेऽच् प्रत्यये आकारप्रतिषेधे च रूपमेवम्।
२ ल्यपि 'मीनातिमिनोतिदीङां ल्यपि च' (६-१-५०) इति आकारे रूपमेवम्।
३ 'वातप्रमीः' (द.उ. १-८५) इति सूत्रेण प्रपूर्वकात् वातशब्दे उपपदे वातं प्रमिणोतीत्यर्थे ईप्रत्यये निष्पन्नोऽयं शब्दः। वातप्रमीः = शमीवृक्षः, पक्षी च।
४ 'कृवापाजिमि–' (द.उ. १-८६) इत्युण् प्रत्यये युगागमः। मीयतेऽनेनेति मायुः मानम्। गां मिनोति = हिनस्तीति गोमायुः = शृगालः।
५ 'मृमृशीतृचरिसरितमिमि–' (द.उ. १-९२) इत्युप्रत्यये बाहुलकादकाराभावे गुणद्यादादेशयोश्च रूपमेवम्।
६ 'नप्तृनेष्टृ–' (द.उ. २-३) इति तृन् प्रत्यये वा जायां मिनोतीत्यर्थे जाया शब्दस्य जादेशे च निपातितोऽयं शब्दः जामाता = दुहितुः पतिः।
७ 'शुषिचिमिभ्यो दीर्घश्च' (द.उ. ८-४३) इति कन्प्रत्यये प्रकृतेदीर्घे च रूपमेवम्। मिनोति इति मीरः = देश सीमा।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लङ् | अचिनोत् | अचिनुताम् | अचिन्वन् | प्र. |
| | अचिनोः | अचिनुतम् | अचिनुत | म. |
| | अचिनुवम् | अचिनुवः-अचिन्वः | अचिनुमःन्मः | उ. |
| वि. लि. | चिनुयात् | चिनुयाताम् | चिनुयुः | प्र. |
| | चिनुयाः | चिनुयातम् | चिनुयात | म. |
| | चिनुयाम् | चिनुयाव | चिनुयाम | उ. |
| आ. लि. | चीयात् | चीयास्ताम् | चीयासुः | प्र. |
| | चीयाः | चीयास्तम् | चीयास्त | म. |
| | चीयासम् | चीयास्व | चीयास्म | उ. |
| लुङ् | अचैषीत् | अचैष्टाम् | अचैषुः | प्र. |
| | अचैषीः | अचैष्टम् | अचैष्ट | म. |
| | अचैषम् | अचैष्व | अचैष्म | उ. |
| लृङ् | अचेष्यत् | अचेष्यताम् | अचेष्यन् | प्र. |
| | अचेष्यः | अचेष्यतम् | अचेष्यत | म. |
| | अचेष्यम् | अचेष्याव | अचेष्याम | उ. |

आत्मनेपदपक्षे

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | चिनुते | चिन्वाते | चिन्वते | प्र. |
| | चिनुषे | चिन्वाथे | चिनुध्वे | म. |
| | चिन्वे | चिनुवहे-न्वहे | चिनुमहे-न्महे | उ. |
| लिट् | चिक्ये | चिक्याते | चिक्यिरे | प्र. |
| | चिक्यिषे | चिक्याथे | चिक्यिढ्वे-ध्वे | म. |
| | चिक्ये | चिक्यिवहे | चिक्यिमहे | उ. |

पक्षे—चिच्ये चिच्याते चिच्यिरे। इत्यादि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुट् | चेता | चेतारौ | चेतारः | प्र. |
| | चेतासे | चेतासाथे | चेताध्वे | म. |
| | चेताहे | चेतास्वहे | चेतास्महे | उ. |
| लृट् | चेष्यते | चेष्येते | चेष्यन्ते इत्यादि। | |
| लोट् | चिनुताम् | चिन्वाताम् | चिन्वताम् | प्र. |
| | चिनुष्व | चिन्वाथाम् | चिनुध्वम् | म. |
| | चिनवै | चिनवावहै | चिनवामहै | उ. |
| लङ् | अचिनुत | अचिन्वाताम् | अचिन्वत | प्र. |
| | अचिनुथाः | अचिन्वाथाम् | अचिनुध्वम् | म. |
| | अचिन्वि | अचिनुवहि-अचिन्वहि | अचिनुमहि अचिन्महि | उ. |
| वि. लि. | चिन्वीत | चिन्वीयाताम् | चिन्वीरन् | प्र. |
| | चिन्वीथाः | चिन्वीयाथाम् | चिन्वीध्वम् | म. |
| | चिन्वीय | चिन्वीवहि | चिन्वीमहि | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आ. लि. | चेषीष्ट | चेषीयास्ताम् | चेषीरन् | प्र. |
| | चेषीष्ठाः | चेषीयास्थाम् | चेषीढ्वम् | म. |
| | चेषीय | चेषीवहि | चेषीमहि | उ. |
| लुङ् | अचेष्ट | अचेषाताम् | अचेषत | प्र. |
| | अचेष्ठाः | अचेषाथाम् | अचेढ्वम् | म. |
| | अचेषि | अचेष्वहि | अचेष्महि | उ. |
| लृङ् | अचेष्यत | अचेष्येताम् | अचेष्यन्त | प्र. |
| | अचेष्यथाः | अचेष्याथाम् | अचेष्यध्वम् | म. |
| | अचेष्ये | अचेष्यावहि | अचेष्यामहि | उ. |

**कर्मणि**—चीयते। **णिचि**—चाययति-चाययते चापयति-ते। **सनि**—चिचीषति-चिकीषति। **यङि**—चेचीयते। **यङ्लुकि**—चेचेति चेचयीति। **कृत्सु**—चेतव्यः, चयनीयः, चेयः, निकाय्य, सञ्चाय्यः, परिचाय्यः, उपचाय्यः, चित्यः, चितः, चिन्वन्, चिन्वानः, चेतुम्, चयनम्, चित्वा, विचित्य।

**( १२५२ ) स्तृञ्—आच्छादने**। (आच्छादित करना, ढकना। फैलाना, विस्तार होना, या करना, विछाना)। सक.। अनिट्। उभय.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | स्तृणोति | स्तृणुतः | स्तृण्वन्ति | प्र. |
| | स्तृणोसि | स्तृणुथः | स्तृणुथ | म. |
| | स्तृणोमि | स्तृणुवः-स्तृण्वः | स्तृणुमः-स्तृण्मः | उ. |
| लिट् | तस्तार | सस्तरतुः | तस्तरुः | प्र. |
| | तस्तर्थ | तस्तरथुः | तस्तर | म. |
| | तस्तार-तस्तर | तस्तरिव | तस्तरिम | उ. |
| लुट् | स्तर्ता | स्तर्तारौ | स्तर्तारः | प्र. |
| | स्तर्तासि | स्तर्तास्थः | स्तस्तास्थ | म. |
| | स्तर्तास्मि | स्तर्तास्वः | स्तर्तास्मः | उ. |
| लृट् | स्तरिष्यति | स्तरिष्यतः | स्तरिष्यन्ति इत्यादि। | |
| लोट | स्तृणोत्-स्तृणुतात् | स्तृणुताम् | स्तृण्वन्तु | प्र. |
| | स्तृणु-स्तृणुतात् | स्तृणुतम् | स्तृणुत | म. |
| | स्तृणवानि | स्तृणुवाव | स्तृणुवाम | उ. |
| लङ् | अस्तृणोत् | अस्तृणुताम् | अस्तृण्वन् | प्र. |
| | अस्तृणोः | अस्तृणुतम् | अस्तृणुत | म. |
| | अस्तृणवम् | अस्तृणुव-अस्तृण्व | अस्तृणुम-अस्तृण्म | उ. |
| वि. लि. | स्तृणुयात् | स्तृणुयाताम् | स्तृणुयुः | प्र. |
| | स्तृणुयाः | स्तृणुयातम् | स्तृणुयात | म. |
| | स्तृणुयाम् | स्तृणुयाव | स्तृणुयाम | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आ. लि. | स्तर्यात् | स्तर्यास्ताम् | स्तर्यासुः | प्र. |
| | स्तर्याः | स्तर्यास्तम् | स्तर्यास्त | म. |
| | स्तर्यासम् | स्तर्यास्व | स्तर्यास्म | उ. |
| लुङ् | अस्तार्षीत् | अस्तार्ष्टाम् | अस्तार्षुः | प्र. |
| | अस्तार्षीः | अस्तार्ष्टम् | अस्तार्ष्ट | म. |
| | अस्तार्षम् | अस्तार्ष्व | अस्तार्ष्म | उ. |
| लृङ् | अतरिष्यत् | अतरिष्यताम् | अतरिष्यन् | प्र. |
| | अतरिष्यः | अतरिष्यतम् | अतरिष्यत | म. |
| | अतरिष्यम् | अतरिष्याव | अतरिष्याम | उ. |

आत्मनेपदपक्षे

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | स्तृणुते | स्तृण्वाते | स्तृण्वते | प्र. |
| | स्तृणुषे | स्तृण्वाथे | स्तृणुध्वे | म. |
| | स्तृण्वे | स्तृणुवहे-स्तृण्वहे | स्तृणुमहे-स्तृण्महे | उ. |
| लिट् | तस्तरे | तस्तराते | तस्तरिरे | प्र. |
| | तस्तरिषे | तस्तराथे | तस्तरिध्वे-ढ्वे | म. |
| | तस्तरे | तस्तरिवहे | तस्तरिमहे | उ. |
| लुट् | स्तर्ता | स्तर्तारौ | स्तर्तारः | प्र. |
| | स्तर्तासे | स्तर्तासाथे | स्तर्ताध्वे | म. |
| | स्तर्ताहे | स्तर्तास्वहे | स्तर्तास्महे | उ. |
| लृट् | स्तरिष्यते | स्तरिष्येते | स्तरिष्यन्ते इत्यादि। | |
| लोट् | स्तृणुताम् | स्तृण्वाताम् | स्तृण्वताम् | प्र. |
| | स्तृणुष्व | स्तृण्वाथाम् | स्तृणुध्वम् | म. |
| | स्तृणवै | स्तृणवावहै | स्तृणवामहै | उ. |
| लङ् | अस्तृणुत | अस्तृण्वाताम् | अस्तृण्वत | प्र. |
| | अस्तृणुथाः | अस्तृण्वाथाम् | अस्तृणुध्वम् | म. |
| | अस्तृण्वि | अस्तृण्वहि-णुवहि | अस्तृण्महि-णुमहि | उ. |
| वि. लि. | स्तृण्वीत | स्तृण्वीयाताम् | स्तृण्वीरन् | प्र. |
| | स्तृण्वीथाः | स्तृण्वीयाथाम् | स्तृण्वीध्वम् | म. |
| | स्तृण्वीय | स्तृण्वीवहि | स्तृण्वमहि | उ. |
| आ. लि. | स्तरिषीष्ट | स्तरिषीयास्ताम् | स्तरिषीरन् | प्र. |
| | स्तरिष्ठाः | स्तरिषीयास्थाम् | स्तरिषीढ्वम् | म. |
| | स्तरिषीय | स्तरिषीवहि | स्तरिषीमहि | उ. |

पक्षे—**प्र.** स्तृषीष्ट स्तृषीयास्ताम् स्तृषीरन्। **म.** स्तृषीष्ठाः स्तृषीयास्थाम् स्तृषीढ्वम्। **उ.** स्तृषीय स्तृषीवहि स्तृषीमहि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुङ् | अस्तरिष्ट | अस्तरिषाताम् | अस्तरिषत | प्र. |
| | अस्तरिष्ठाः | अस्तरिषाथाम् | अस्तरिढ्वम्-ध्वम् | म. |
| | अस्तरिषि | अस्तरिष्वहि | अस्तरिष्महि | उ. |

पक्षे—**प्र.** अस्तृत अस्तृषाताम् अस्तृषत। **म.** अस्तृथाः अस्तृषाथाम् अस्तृढ्वम्। **उ.** अस्तृषि अस्तृष्वहि अस्तृष्महि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृङ् | अस्तरिष्यत् | अस्तरिष्येताम् | अस्तरिष्यन्त | प्र. |
| | अस्तरिष्थाः | अस्तरिष्येथाम् | अस्तरिष्यध्वम् | म. |
| | अस्तरिष्ये | अस्तरिष्यावहि | अस्तरिष्यामहि | उ. |

**कर्मणी**—स्तर्यते। **णिचि**—स्तारयति-ते। **सनि**—तिस्तीर्षति-ते। **यङि**—तास्तर्यते। **यङ्लुकि**—तास्तर्ति-तास्तरीति। **कृत्सु**—स्तर्तव्यम्, स्तरणीयम्, स्तार्यम्, स्तृतः स्तृण्वन्, स्तृण्वानः, स्तर्तुम्, स्तरणम्, स्तृत्वा, आस्तृत्य, आस्तरणम्, विस्तरः-शब्दसमूहे, अन्यत्र विस्तारः, स्तारकः, स्तीर्विः[१], स्तरीः[२], स्तरः, विष्टरः-आसने, संस्तरः, संस्तृतः, अवस्तरः, स्तरिष्यन्-ष्यमाणः, कर्मणि- स्तर्यमाणः, स्तरिष्यमाणः, स्तरीमा[३], इत्यादिकानि रूपाणि सर्वाणि कृण्वतिवत्।

**(१२५३) कृञ्—हिंसायाम्।** (मार डालना, दुःख देना, सताना)। सक.। अनि.। उभय.।

१ कृणोति। २ **प्र.** चकार चक्रतुः चक्रुः। **म.** चकर्थ चक्रथुः चक्र। **उ.** चकार-चकर चकृव चकृम। ३ कर्ता। ४ करिष्यति। ५ कृणोतु। ६ अकृणोत्। ७ कृणुयात्। ८ क्रियात् क्रियास्ताम्। ९ अकार्षीत् अकार्ष्टाम्। १० अकरिष्यत्।

**आत्मनेपदपक्षे**—१ कृणुते। २ **प्र.** चक्रे. चक्राते चक्रिरे। **म.** चकृषे चक्राथे चकृढ्वे। **उ.** चक्रे चकृवहे चकृमहे। ३ कर्ता, से, हे। ४ करिष्यते। ५ कृणुताम्। ६ अकृणुत। ७ कृण्वीत। ८ कृषीष्ट। ९ अकृत[४]। १० अकरिष्यत।

**कर्मणी**—क्रियते। **णिचि**—कारयति-ते। ९. अचीकरत्-त। **सनि**—चिकीर्षति-ते। **यङि**—चेक्रीयते। **यङ्लुकि**—चर्कर्ति-चर्करीति। **कृत्सु**—कर्तव्यम्, कृण्वन्, कृण्वती, कर्तुम्, करणम्, कृत्वा, उत्कृत्य।

**(१२५४) वृञ्—वरणे।** (पसन्द करना, नियोजित करना, नियमित करना)। **वि**—स्पष्ट करना या होना, **सम्**—छिपाना, **समा**—लपेटना, **परि**—घेरना, लपेटना, **नि-निर्**—पूरा करना, समाप्त करना, **आ**—घेरना, लपेटना, **अप**—संरक्षण करना। सक.। सेट्। उभय.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | वृणोति | वृणुतः | वृण्वन्ति | प्र. |
| | वृणोषि | वृणुथः | वृणुथ | म. |
| | वृणोमि | वृणुवः-ण्वः | वृणुमः-ण्मः | उ. |

१ औणादिके (द.उ. १-२४) क्विन् प्रत्यये रूपमेवम्। स्तीर्विः = अध्वर्युः, तृणजतिर्वा।

२ औणादिके (द.उ. १-८२) ईप्रत्यये रूपमेवम्। स्तरीः = मेघः, शय्या च।

३ औणादिके (द.उ. ६-७६) इमनिन् प्रत्यये रूपमेवम्। स्तरीमा = आच्छादनम्।

४ 'ह्रस्वादङ्गात्—' इति सिचो लोपः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लिट् | ववार | वव्रतुः | वव्रुः | प्र. |
| | ववरिथ | वव्रथुः | वव्र | म. |
| | ववार-ववर | ववृव | ववृम | उ. |
| लुट् | वरिता | वरितारौ | वरितारः | प्र. |
| | वरितासि | वरितास्थः | वरितास्थ | म. |
| | वरितास्मि | वरितास्वः | वरितास्मः | उ. |

पक्षे—वरीता वरितारौ वरितारः इत्यादि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृट् | वरिष्यति | वरिष्यतः | वरिष्यन्ति | प्र. |
| | वरिष्यसि | वरिष्यथः | वरिष्यथ | म. |
| | वरिष्यामि | वरिष्यावः | वरिष्यामः | उ. |

पक्षे—वरीष्यति वरीष्यतः वरीष्यन्ति इत्यादि

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लोट् | वृणोतु-वृणुतात् | वृणुताम् | वृण्वन्तु | प्र. |
| | वृणु-वृणुतात् | वृणुतम् | वृणुत | म. |
| | वृणवानि | वृणुवाव | वृणवाम | उ. |
| लङ् | अवृणोत् | अवृणुताम् | अवृण्वन् | प्र. |
| | अवृणोः | अवृणुतम् | अवृणुत | म. |
| | अवृणवम् | अवृणुव-ण्व | अवृणुम-ण्म | उ. |
| वि. लि. | वृणुयात् | वृणुयाताम् | वृणुयुः | प्र. |
| | वृणुयाः | वृणुयातम् | वृणुयात | म. |
| | वृणुयाम् | वृणुयाव | वृणुयाम | उ. |
| आ. लि. | व्रियात् | व्रियास्ताम् | व्रियासुः | प्र. |
| | व्रियाः | व्रियास्तम् | व्रियास्त | म. |
| | व्रियासम् | व्रियास्व | व्रियास्म | उ. |
| लुङ् | अवारीत् | अवारिष्टाम् | अवारिषुः | प्र. |
| | अवारीः | अवारिष्टम् | अवारिष्ट | म. |
| | अवारिषम् | अवारिष्व | अवारिष्म | उ. |
| लृङ् | अवरिष्यत् | अवरिष्यताम् | अवरिष्यन् | प्र. |
| | अवरिष्यः | अवरिष्यतम् | अवरिष्यत | म. |
| | अवरिष्यम् | अवरिष्याव | अवरिष्याम | उ. |

पक्षे—अवरीष्यत् अवरीष्यताम् अवरीष्यन् इत्यादि।

आत्मनेपदपक्षे

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | वृणुते | वृण्वाते | वृण्वते | प्र. |
| | वृणुषे | वृण्वाथे | वृणुध्वे | म. |
| | वृण्वे | वृणुवहे-ण्वहे | वृणुमहे-ण्महे | उ. |
| लिट् | वव्रे | वव्राते | वव्रिरे | प्र. |
| | ववृषे | वव्राथे | ववृढ्वे | म. |
| | वव्रे | ववृवहे | ववृमहे | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुट् | वरिता | वरितारौ | वरितारः | प्र. |
| | वरितासे | वरितासाथे | वरिताध्वे | म. |
| | वरिताहे | वरिस्वहे | वरितास्महे | उ. |

पक्षे—वरीता वरीतारौ वरीतारः इत्यादि ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृट् | वरिष्यते | वरिष्येते | वरिष्यन्ते | प्र. |
| | वरिष्यसे | वरिष्येथे | वरिष्यध्वे | म. |
| | वरिष्ये | वरिष्यावहे | वरिष्यामहे | उ. |

पक्षे—वरीष्यते वरीष्येते वरीष्यन्ते इत्यादि ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लोट् | वृणुताम् | वृण्वाताम् | वृण्वताम् | प्र. |
| | वृणुष्व | वृण्वाथाम् | वृणुध्वम् | म. |
| | वृणवै | वृणवावहै | वृणवामहै | उ. |
| लङ् | अवृणुत | अवृण्वाताम् | अवृण्वत | प्र. |
| | अवृणुथाः | अवृण्वाथाम् | अवृणुध्वम् | म. |
| | अवृण्वि | अवृणुवहि-ण्वहि | अवृणुमहि-ण्महि | उ. |
| वि. लि. | वृण्वीत | वृण्वीयाताम् | वृण्वीरन् | प्र. |
| | वृण्वीथाः | वृण्वीयाथाम् | वृण्वीध्वम् | म. |
| | वृण्वीय | वृण्वीवहि | वृण्वीमहि | उ. |
| आ. लि. | वरिषीष्ट | वरिषीयास्ताम् | वरिषीरन् | प्र. |
| | वरिषीष्ठाः | वरिषीयास्थाम् | वरिषीढ्वम्-ध्वम् | म. |
| | वरिषीय | वरिषीवहि | वरिषीमहि | उ. |

पक्षे— वृषीष्ट वृषीयास्ताम् वृषीरन् इत्यादि ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुङ् | अवृत | अवृषाताम् | अवृषत | प्र. |
| | अवृथाः | अवृषाथाम् | अवृड्ढ्वम्-ढ्वम् | म. |
| | अवृषि | अवृष्वहि | अवृष्महि | उ. |

पक्षे—अवरिष्ट अवरिषाताम् अवरिषत इत्यादि ।

पक्षे—अवरीष्ट अवरीषाताम् अवरीषत इत्यादि ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृङ् | अवरिष्यत | अवरिष्येताम् | अवरिष्यन्त | प्र. |
| | अवरिष्यथाः | अवरिष्येथाम् | अवरिष्यध्वम् | म. |
| | अवरिष्ये | अवरिष्यावहि | अवरिष्यामहि | उ. |

पक्षे—अवरीष्यत अवरीष्येताम् अवरीष्यन्त इत्यादि ।

**कर्मणि**—व्रियते । **णिचि**—वारयति-ते । **सनि**—विवरिषति-विवरीषति-ते । वुवूर्षति-ते । **यङि**–वेव्रीयते । **यङ्लुकि**–वरिवर्ति-वरीवर्ति-वर्वति । **कृत्सु**–वरितुम्-वरीतुम्, वरितव्यम्- वरीतव्यम्, वरणीयम्, वर्यम्, वृतः, वृण्वन्-न्ती-ती, वृण्वानः, वरणम्, वृत्वा, विवृत्य, वरेण्यः, वर्मा, वरुवानी, वारकः-रिका, णिचि– वारकः-रिका, विवरिषकः[१]-

१ मन्नन्ते 'इट् सनि वा' (७-२-४१) इति इडागमविकल्पः । तस्य च 'वृतो वा' (७-२-३८) इति वा दीर्घः । अनिट् पक्षे 'इको झल्' (१-२-९) इति मनः कित्वे 'अज्झनगमां सनि' (६-४-१९) इति दीर्घे, 'उदोष्ठ्यपूर्वस्य' (७-१-१०२) इति उत्वे, रपरत्वे च, 'हलि च' (८-२-७७) इति (उपधायाः) इकः दीर्घे च रूपमेवम् ।

विवरीषकः-वुवूर्षकः-र्षिका, वेव्रीयकः[१]-यिका, वरिता-वरीता-त्री, वारयिता-त्री, विवरिषिता-विवरीषिता-वुवूर्षिता-त्री, वेव्रीयिता-त्री, शतरि-विवृण्वन्[२]-ती, ण्यन्तात् क्विपि-वाः-वारौ-वारः (वारांनिधिः)[३] प्रावारः[४], प्रवरः, उत्तरासङ्गः, यवेभ्यो गां वारयन्ः[५], विवारी[६], परिवारः[७]-परीवारः, परिवारयमाणाः कण्टका वृक्षं स्वयमेव, वृत्यम्[८], वार्यम्[९], वर्यः, पतिंवरा[१०], वराकः[११], वराकी, वरः[१२], नीवारः[१३], वारम्, अश्ववाराः[१४], निवरः, वर्मा[१५]-वर्मी, वार्मि-कायणिः, संवर्मयिता, चाक्रवर्मणः, वरितुम्-आवरीतुम्[१६], आपहारवर्मणः, वर्णः[१७] वर्णी-ब्रह्मचारी, ब्राह्मणवर्णी, वरुण[१८]: वारुणी, वरुणानी, मैत्रावरुणः, वारि[१९], वर्णुः,[२०] वृकः,[२१] वर्गः,[२२] वरण्डः,[२३] वरणम्,[२४] वारणः, वरणा, वरसानः[२५], वरूथः[२६],

१ यङन्ते 'रीङ् ऋतः' (७-४-२७) इति रीङादेशे रूपमेवम्।
२ शतरि 'स्वादिभ्यः श्नुः' (३-१-७३) इति श्नुप्रत्ययः, यणादेशः।
३ ण्यन्तात् क्विपि वाः– वारांनिधिः इति क्षीरस्वामिना उक्तम्।
४ प्रोपसृष्टात् 'वृणोतेराच्छादने' (३-३-५) इति आच्छादनेऽर्थे घञ् प्रत्ययः। 'उपसर्गस्य घञि–' (६-३-१२२) इति दीर्घे प्रावारः। आच्छादनादन्यत्र प्रवरः – उत्तरासङ्ग इति अत्रैव। 'अन्यत्रापि बाहुलकात् क्तिन्विषये प्रवरा गौरिति अत्रैव भवति' इति हरदत्तः।
५ 'वारणार्थानामीप्सितः' (१-४-२७) इति वारणार्थे यवस्य अपादानसंज्ञा भवति। वारणं प्रवृत्तिविघात इत्यर्थः।
६ णिनिप्रत्यये रूपमेवम्।
७ 'द्वौ वारावद्य मे वारो गवां वारश्च सञ्चये। परिवारस्तु ण्यन्ताद् बाहुलकेन कर्तरि घञि॥' इति भोजः इति प्रक्रियासर्वस्वे। परिवारस्तु ण्यन्ताद् बाहुलकेन कर्तरि घञि। अन्यत्र परीवाराः = कपयः इति।
८ 'एतिस्तुशास्वृ–' (३-१-१०९) इति क्यप् प्रत्यये तुकि च रूपमेवम्।
९ 'ण्यदपीष्यते इति क्षीरस्वामी। अस्य मूलं मृग्यम्। तन्मते ण्यति रूपमेवम्। वर्यः इत्यत्र तु 'अवद्यपण्यवर्याः–' (३-१-१०१) इति निपात्यते अनिरोधेऽर्थे। वार्योऽन्यः। स्त्रियां वर्या।
१० 'संज्ञायां भृतृवृजि– (३-२-४६) इति खच्। 'अरुर्द्विषदजन्तस्य–' (६-३-६७) इति मुमागमे रूपमेवम्।
११ 'अल्पभिक्षकुट्टलुण्टवृञः–' (३-२-१५५) इति षाकन् प्रत्ययः। स्त्रियां ङीष् प्रत्यये वराकी स्त्रियां बाहुलकात् क्तिनं बाधित्वाऽयमेवऽभवति इति हरदत्तः।
१२ 'ग्रहवृदृ–' (३-३-५८) इत्यप् प्रत्ययः निवरः इत्यप्। निवरा कन्या। 'लिङ्गकारिकायामबन्तस्य पुंस्त्वानुशासनं प्रायिकम्' इति न्यासः (३-३-४८) इति धातुवृत्तिः।
१३ 'नौ वृ धान्ये' (३-३-४८) इति निशब्द उपपदे धान्यविशेषेऽभिधेये घञ् प्रत्ययः। अपोऽपवादः। 'उपसर्गस्य घञि–' (६-३-१२२) इति दीर्घः। अधान्ये निवरः।
१४ परस्परोत्पीडितजानुभागा दुःखेन निश्चक्रमुरश्ववाराः। (शि.व. ३-६६)
१५ औणादिके मिनिन् प्रत्यये रूपमेवम्। वर्मी–इत्यत्र वाह्यादित्वात् इनि प्रत्यये रूपमेवम्।
१६ वृतो वा (७-२-३८) इति दीर्घविकल्पः।
१७ 'कृवृ–' (द.उ. ५-४२) इति न प्रत्यये, गुणे रेफात्परस्य नकारस्य णत्वे च रूपमेवम्।
१८ 'कृवृ–' (द.उ. ५-५२) इत्यादिना उनन् प्रत्यये गुणणत्वयोश्च रूपमेवम्।
१९ णिजन्तात् औणादिके (द.उ. १-५३) इञ् प्रत्यये रूपम्। वार्यते तदिति वारि = जलम्।
२० औणादिके (द.उ. १-१४८) णुप्रत्यये रूपमेवम्। वृणोति वियते वा वर्णुः = नदविशेषः।
२१ 'सृवृभूशुषि–' (द.उ. ३-१९) इति कप्रत्ययो भवति किच्च। वृकः = श्वापदः क्षुद्रश्च।
२२ औणादिके (द.उ. ३-६२) गन् प्रत्ययः वर्गः = संघातः।
२३ औणादिके (द.उ. ५-९) अण्डन् प्रत्यये रूपमेवम् वृणोति वियते वा वरण्डः = काष्ठादिसंघातः।
२४ 'सृयुवृञो युच्' (द.उ. ५-२०) इति युच् प्रत्ययः। वरणम् = कन्याप्रदानम्।
२५ औणादिके (द.उ. ५-२९) आसानच् प्रत्यये रूपमेवम्। वरसानः = मनोरथः।
२६ औणादिकः (द.उ. ६-३१) ऊथन् प्रत्ययः। वरूथः = रथगुप्तिः।

वर्वरः[१]-वर्वरी, वरत्रा[२], वरुत्रम्[३], वरूषः[४] वृशः[५], सन्नन्तात् उप्रत्यये-विवरिषुः-विवरीषुः-वुवूर्षुः[६] ।

**(१२५५) धूञ्—कम्पने** । धुञ् इत्येके ।( कांपना, हिलना) । सक. । वेट् । उभय. ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | धूनोति | धूनुतः | धून्वन्ति | प्र. |
| | धूनोषि | धूनुथः | धुनुथ | म. |
| | धूनोमि | धूनुव-धून्वः | धूनुमः-धून्मः | उ. |
| लिट् | दुधाव | दुधुवतुः | दुधुवुः | प्र. |
| | दुधविथ-दुधोथ | दुधुवथुः | दुधुव | म. |
| | धुधाव-दुधव | दुधुविव | दुधुविम | उ. |
| लुट् | धविता | धवितारौ | धवितारः | प्र. |
| | धवितासि | धवितास्थः | धवितास्थ | म. |
| | धवितास्मि | धवितास्वः | धवितास्मः | उ. |

पक्षे—धोता धोतारौ धोतारः इत्यादि ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृट् | धविष्यति | धविष्यतः | धविष्यन्ति | प्र. |
| | धविष्यसि | धविष्यथः | धविष्यथ | म. |
| | धविष्यामि | धविष्यावः | धविष्यामः | उ. |

पक्षे—धोष्यति धोष्यतः धोष्यन्ति इत्यादि ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लोट् | धूनोतु-धूनुतात् | धूनुताम् | धून्वन्तु | प्र. |
| | धूनु-धूनुतात् | धूनुतम् | धूनुत | म. |
| | धूनवानि | धूनवाव | धूनवाम | उ. |
| लङ् | अधूनोत् | अधूनुताम् | अधून्वन् | प्र. |
| | अधूनोः | अधूनुतम् | अधूनुत | म. |
| | अधूनवम् | अधूनुव-अधून्व | अधूनुम-अधुन्म | उ. |
| वि. लि. | धूनूयात् | धूनुयाताम् | धूनुयुः | प्र. |
| | धूनुयाः | धूनुयातम् | धूनुयात | म. |
| | धूनुयाम् | धूनुयाव | धूनुयाम | उ. |
| आ. लि. | धूयात् | धूयास्ताम् | धूयासुः | प्र. |
| | धूयाः | धूयास्तम् | धूयास्त | म. |
| | धूयासम् | धूयास्व | धूयास्म | उ. |

१ 'कृगृशृवृञ् चतिभ्यः ष्वरच्' (द.उ. ८-४७) इति ष्वरच् प्रत्यये रूपमेवम् । वर्वरः = कामः । स्त्रियां तु ङीषि वर्वरी = नदी ।

२ 'वृञश्चित्' (द.उ. ८-५८) इति अत्रन् प्रत्ययो भवति । वरत्रा = चर्मरज्जुः ।

३ औणादिके (द.उ. ८-९३) उत्र प्रत्यये रूपमेवम् । वरुत्रम् = अभिप्रेतम् ।

४ औणादिके (द.उ. ९-१९) ऊषन् प्रत्यये रूपमेवम् । वरूषः = भोजनम् ।

५ औणादिके (द.उ. १०-१५) शक् प्रत्यये रूपमेवम् । वृशः = आर्दकम् ।

६ 'संवुवूर्षुः स्वमाकूतमाज्ञां विवरिषुर्द्रुतम्' । (भ.का. ९-२९)

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुङ् | अधावीत् | अधाविष्टाम् | अधाविषुः | प्र. |
| | अधावीः | अधाविष्टम् | अधाविष्ट | म. |
| | अधाविषम् | अधाविष्व | अधाविष्म | उ. |
| लृङ् | अधविष्यत् | अधविष्यताम् | अधविष्यन् | प्र. |
| | अधविष्यः | अधविष्यतम् | अधविष्यत | म. |
| | अधविष्यम् | अधविष्याव | अधविष्याम | उ. |

पक्षे—अधोष्यत् अधोष्यताम् अधोष्यन् इत्यादि।

आत्मनेपदपक्षे

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | धूनुते | धून्वाते | धून्वते | प्र. |
| | धूनुषे | धून्वाथे | धूनुध्वे | म. |
| | धून्वे | धूनुवहे-धून्वहे | धूनुमहे-धून्महे | उ. |
| लिट् | दुधुवे | दुधुवाते | दुधुविरे | प्र. |
| | दुधुविषे | दुधुवाथे | दुधुविढ्वे-ध्वे | म. |
| | दुधुवे | दुधुविवहे | दुधुविमहे | उ. |
| लुट् | धविता | धवितारौ | धवितारः | प्र. |
| | धवितासे | धवितासाथे | धविताध्वे | म. |
| | धविताहे | धवितास्वहे | धवितास्महे | उ. |

पक्षे—धोता धोतारौ धोतारः इत्यादि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृट् | धविष्यते | धविष्येते | धविष्यन्ते | प्र. |
| | धविष्यसे | धविष्येथे | धविष्यध्वे | म. |
| | धविष्ये | धविष्यावहे | धविष्यामहे | उ. |

पक्षे—धोष्यते धोष्यते धोष्यन्ते इत्यादि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लोट् | धूनुताम् | धून्वाताम् | धून्वताम् | प्र. |
| | धूनुष्व | धून्वाथाम् | धूनुध्वम् | म. |
| | धूनवै | धूनवावहै | धूनवामहै | उ. |
| लङ् | अधूनुत | अधून्वाताम् | अधून्वत | प्र. |
| | अधूनुथाः | अधून्वाथाम् | अधूनुध्वम् | म. |
| | अधून्वि | अधूनुवहि-अधून्वहि | अधूनुमहि | उ. |
| वि. लि. | धून्वीत | धून्वीयाताम् | धून्वीरन् | प्र. |
| | धून्वीथाः | धून्वीयाथाम् | धून्वीध्वम् | म. |
| | धून्वीय | धून्वीवहि | धून्वीमहि | उ. |
| आ. लि. | धाविषीष्ट | धाविषीयास्ताम् | धविषीरन् | प्र. |
| | धविषीष्ठाः | धविषीयास्थाम् | धविषीढ्वम्-ध्वम् | म. |
| | धविषीय | धविषीवहि | धविषीमहि | उ. |

पक्षे—धोषीष्ट धोषीयास्ताम् धोषीरन् इत्यादि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुङ् | अधविष्ट | अधविषाताम् | अधविषत | प्र. |
| | अधविष्ठाः | अधविषाथाम् | अधविढ्वम्-ध्वम् | म. |
| | अधविषि | अधविष्वहि | अधविष्महि | उ. |

पक्षे—अधोष्ट अधोषाताम् अधोषत इत्यादि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृङ् | अधविष्यत | अधविष्येताम् | अधविष्यन्त | प्र. |
| | अधविष्यथाः | अधविष्येथाम् | अधविष्याध्वम् | म. |
| | अधविष्ये | अधविष्यावहि | अधविष्यामहि | उ. |

पक्षे— अधोष्यत अधोष्येताम् अधोष्यन्त इत्यादि।

**कर्मणि**—धूयते। **णिचि**—धावयति-ते। **सनि**—दुधूषति-ते। **यङि**—दोधूयते। **यङ्लुकि**—दोधोति-दोधवीति। **कृत्सु**—धावकः-विका, धूनकः[१]-निका, दुधूषकः[२]-षिका, दोधूयकः-यिका, धोता[३]-धविता-त्री, धूनयिता-त्री, दुधूषिता-त्री, दोधूयिता-त्री, धून्वन्[४]-ती, धूनयन्[५]-न्ती,दुधूषन्-न्ती,धोष्यन्-धविष्यन्-न्ती-ती,दुधूषिष्यन्-न्ती-ती,धून्वानः,दुधूषयमाणः, दोधूयमानः, धविष्यमाणः, प्रधूः-प्रध्वौ-प्रध्वः, धूतम्[६]-धूतः-धूतवान्, धूनितः, दुधूषितः, दोधूयितिः-तवान्, धवः[७], धवनः[८], परिधोवी,[९] धूनः, दुधूषुः, दोधुवः, धोतव्यम्-धवितव्यम्, धूनयितव्यम्, दुधूषितव्यम्, दोधूयितव्यम्, धवनीयम्-अवश्यधाव्यम्, धून्यम्, दुधूष्यम्, दोधूय्यम्, धूयमानः, धून्यमानः, दुधूष्यमाणः, दोधूय्यमानः, धवः, धूनः, दुधूषः, दोधूयः, धोतुम्, विधवितुम्, दुधूषितुम्, दोधूयितुम्, धूतिः, धूनना, दुधूषा, दोधूया, धवनम्, धूननम्, दुधूषणम्, दोधूयनम्, धूत्वा, धूनयित्वा, दुधूषित्वा, दोधूयित्वा, विधूय, विधून्य, विदुधूष्य, विदोधूय्य।

**(१२५६) टुदु—उपतापे**। (दुःख देना, जलना, तप्त करना, जलाना)। सकर्म.। अनिट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | दुनोति | दुनुतः | दुन्वन्ति | प्र. |
| | दुनोषि | दुनुथः | दुनुथ | म. |
| | दुनोमि | दुनुवः-न्वः | दुनुमः-न्मः | उ. |
| लिट् | दुदाव | दुदुवतुः | दुदुवुः | प्र. |
| | दुदविव-दुदोव | दुदुवथुः | दुदुव | म. |
| | दुदाव-दुदव | दुदुविव | दुदुविम | उ. |

१ 'धूञ् प्रीञोर्नुग् वक्तव्यम्' (वा. ७-३-३७) इति ण्यन्ते सर्वत्र नुगागमः। लघूपधत्वाभावान्न गुणः।

२ पुरस्तात् प्रतिषेधकाण्डारम्भसामर्थ्यात् 'सनिग्रहगुहोश्च' (७-२-१२) इतीण्निषेधः। 'इको झल्' (१-२-९) इति कित्वान्न गुणः, एवं सन्नन्ते सर्वत्र ज्ञेयम्।

३ 'स्वरतिपूतिसूयतिधूञूदितो वा' (७-२-४४) इति क्लादेरार्धधातुकस्येड्विकल्पः। एव तव्यदादिष्वपि ज्ञेयम्।

४ शतरि 'स्वादिभ्यः—' (३-१-७३) इति श्नुप्रत्ययः 'हुश्नुवोः सार्वधातुके' (६-४-८७) इति यण्। एवं धून्वानः इत्यत्रापि प्रक्रिया ज्ञेया।

५ ण्यन्तात् 'निगरणचलनार्थेभ्यः—' (१-३-८७) इति नित्य शतैव। न शानच्।

६ निष्ठायाम् 'श्र्युकः क्किति' (७-२-११) इति नित्यमिण्निषेधः।

७ धूनयति = कम्पयति इत्यर्थेऽन्तर्भावितण्यन्तादस्मात् कर्तरि पचाद्यचि रूपमेवम्।

८ निमित्तभेदेनास्य धातोरकर्मकत्वे, 'चलनशब्दार्थादकर्मकाद् युच्' (३-२-१४८) इति तच्छीलादिषु कर्तृषु युच् प्रत्ययः।

९ ताच्छील्ये णिनि प्रत्यये रूपमेवम्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुट् | दोता | दोतारौ | दोतारः | प्र. |
| | दोतासि | दोतास्थः | दोतास्थ | म. |
| | दोतास्मि | दोतास्वः | दोतास्मः | उ. |
| लृट् | दोष्यति | दोष्यतः | दोष्यन्ति | प्र. |
| | दोष्यसि | दोष्यथः | दोष्यथ | म. |
| | दोष्यामि | दोष्यावः | दोष्यामः | उ. |
| लोट् | दुनोतु-दुनुतात् | दुनुताम् | दुन्वन्तु | प्र. |
| | दुनु-दुनुतात् | दुनुतम् | दुनुत | म. |
| | दुनवानि | दुनवाव | दुनवाम | उ. |
| लङ् | अदुनोत् | अदुनुताम् | अदुन्वन् | प्र. |
| | अदुनोः | अदुनुतम् | अदुनुत | म. |
| | अदुनवम् | अदुनव-न्व | अदुनम-न्म | उ. |
| वि. लि. | दुनुयात् | दुनुयाताम् | दुनुयुः | प्र. |
| | दुनुयाः | दुनुयातम् | दुनुत | म. |
| | दुनुयाम् | दुनुयाव | दुनुयाम | उ. |
| आ. लि. | दूयात् | दूयास्ताम् | दुयासुः | प्र. |
| | दूयाः | दूयास्तम् | दूयास्त | म. |
| | दूयासम् | दूयास्व | दूयास्म | उ. |
| लुङ् | अदौषीत् | अदौष्टाम् | अदौषुः | प्र. |
| | अदौषीः | अदौष्टम् | अदौष्ट | म. |
| | अदौषम् | अदौष्व | अदौष्म | उ. |
| लृङ् | अदोष्यत् | अदोष्यताम् | अदोष्यन् | प्र. |
| | अदोष्यः | अदोष्यतम् | अदोष्यत | म. |
| | अदोष्यम् | अदोष्याव | अदोष्याम | उ. |

**कर्मणि**—दूयते। २. दुदुवे। ९. अदावि। **णिचि**—दावयति-ते। **सनि**—दुदूषति। ९. अदुदूषीत्। **यङि**—दोदूयते। यङ्लुकि—दोदोति-दोदवीति। **कृत्सु**—दोतव्यम्, दवनीयम्, दव्यम्, दाव्यम्, दुतः, दवनम्, दुत्वा, विदुत्य, दोतुम्, दुन्वन्, दुन्वती, दावः, प्रदवः, दुतवान्, देवथुः, सन्दवः अन्यत् सर्वं भौवादिक दवतिवत् बोध्यम्।

**( १२५७ ) हि—गतौ, वृद्धौ च**। (जाना, बढ़ना)। अकर्म.। अनिट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | हिनोति | हिनुतः | हिन्वन्ति | प्र. |
| | हिनोसि | हिनुथः | हिनुथ | म. |
| | हिनोमि | हिनुवः-न्वः | हिनुमः-न्मः | उ. |
| लिट् | जिघाय | जिघ्यतुः | जिघ्युः | प्र. |
| | जिघयिथ-जिघेथ | जिघ्यथुः | जिघ्य | म. |
| | जिघाय-जिघ्य | जिघ्यिव | जिघ्यिम | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुट् | हेता | हेतारौ | हेतारः | प्र. |
| | हेतासि | हेतास्थः | हेतास्थ | म. |
| | हेतास्मि | हेतास्वः | हेतास्मः | उ. |
| लृट् | हेष्यति | हेष्यतः | हेष्यन्ति | प्र. |
| | हेष्यसि | हेष्यथः | हेष्यथ | म. |
| | हेष्यामि | हेष्यावः | हेष्यामः | उ. |
| लोट् | हिनोतु-हिनुतात् | हिनुताम् | हिन्वन्तु | प्र. |
| | हिनु-हिनुतात् | हिनुतम् | हिनुत | म. |
| | हिनवानि | हिनवाव | हिनवाम | उ. |
| लङ् | अहिनोत् | अहिनुताम् | अहिन्वन् | प्र. |
| | अहिनोः | अहिनुतम् | अहिनुत | म. |
| | अहिनवम् | अहिनुव-न्व | अहिनुम-न्म | उ. |
| वि. लि. | हिनुयात् | हिनुयाताम् | हिनुयुः | प्र. |
| | हिनुयाः | हिनुयातम् | हिनुयात | म. |
| | हिनुयाम् | हिनुयाव | हिनुयाम | उ. |
| आ. लि. | हीयात् | हीयास्ताम् | हीयासुः | प्र. |
| | हीयाः | हीयास्तम् | हीयास्त | म. |
| | हीयासम् | हीयास्व | हीयास्म | उ. |
| लुङ् | अहैषीत् | अहैष्टाम् | अहैषुः | प्र. |
| | अहैषीः | अहैष्टम् | अहैष्ट | म. |
| | अहैषम् | अहैष्व | अहैष्म | उ. |
| लृङ् | अहेष्यत् | अहेष्यताम् | अहेष्यन् | प्र. |
| | अहेष्यः | अहेष्यतम् | अहेष्यत | म. |
| | अहेष्यम् | अहेष्याव | अहेष्याम | उ. |

**भावे**– हीयते । २ जिघ्ये । **णिचि**– हाययति-ते । **सनि**—जिघीषति । **यङि**—जेघीयते । **यङ्लुकि**—जेघयीति-जेघेति । **कृत्सु**—हायकः-यिका, णिचि– हायकः-यिका, जिघीषकः[१]-षिका, जेघीयकः[२]-यिका, हेतव्यः, हयनीयः, हेयः, प्रहिन्वन्[३]-ती, प्रजिघाययिषन्[४]-न्ती, हेष्यन्, हेतुम्, हित्वा, प्रहित्य, संहितम्-सहितम्[५], संहिता, हयः,[६] हयी, हेतिः,[७] हेतुः[८] ।

१ सनि, 'अज्झनगमां सनि' (६-४-४६) इति दीर्घः । 'हेरचङि' (७-३-५६) इति अभ्यासादुत्तरस्य कुत्वेन घकारः एवं सन्नन्ते सर्वत्र ज्ञेयम् ।

२ यङन्तेऽपि 'हेरचङि' (७-३-५६) इति कुत्वं बोध्यम् ।

३ शतरि स्वादित्वात् श्नुप्रत्ययः गुणनिषेधः । 'हिनुमीना' (८-४-१५) इति णत्वम् ।

४ ण्यधिकरणस्यापि 'हेरचङि' (७-३-५६) इति कुत्वम् । अत्र णिजन्तात् सन् तदन्तात् शता ।

५ सम्पूर्वकात् अस्मात् निष्ठायाम् 'समो वा हिततयोः' (वा. ६-१-१४४) इति समो मकारस्य लोपविकल्पः । 'संहिता' इति तुक्तिचक्तौ च संज्ञायाम् । (३-३-७४) इति क्रान्तः वेदसंहिता वाचिका ।

६ पचाद्यचि हयः = अश्वः । अतिशयेन गच्छतीत्यर्थः हयी इति तु गौरादिङीषन्तः ।

७ 'ऊतियूतिजूतिसातिहेतिकीर्तयश्च' (३-३-९७) इति निपातनात् क्तिनि प्रकृतेर्गुणः । हेतिः = आयुधम् ।

८ औणादिके (द.उ. १-१२५) तुन् प्रत्यये रूपम् । हेतुः = कारणम् ।

(**१२५८**) **पृ—प्रीतौ**। (तृप्त करना, सन्तुष्ट करना)। सक.। अनिट्। परस्मै.।

१ पृणोति। २ **प्र.** पपार पप्रतुः पप्रुः। **म.** पपर्थ **उ.** पपार-पपर। ३ पर्ता। ४ परिष्यति। ५ पृणोतु। ६ अप्रणोत्। ७ पृणुयात्। ८ प्रियात् प्रियास्ताम्। ९ अपार्षीत्। १० अपरिष्यत्।

**कर्मणि**—प्रियते। **णिचि**—पारयति-ते। **सनि**—पुपूर्षति। **यङि**—पेप्रीयते। **यङ्लुकि**—पर्पर्ति-परिपर्ति-परीपर्ति। **कृत्सु**—पर्तव्यम्, परणीयम्, पार्यम्, पृतः, पृण्वन्-ती, पर्तुम्, परणम्, पृत्वा, सम्पृत्य।

(**१२५९**) **स्पृ—प्रीतिपालनयोः, प्रीतिचलनयोः इत्येके**। चलनं जीवनम्, इति स्वामी. स्मृ इत्येके। (सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना, पालन करना, जाना)। सक.। अनिट्। परस्मै.। स्पृणोति। इत्यादि पृणोति (१२५८) वत्।

(**१२६०**) **आप्लृ—व्याप्तौ**। (व्याप्त होना, व्यापना)। **अभिवि**—चारों ओर से व्यापना, **अव**—प्राप्त होना, पाना, **उपसम्**—समीप प्राप्त होना, पास आना, ग्रन्थादि की समाप्ति करना, **परि**—तृप्ति करना, पूर्ति करना, **परिवि**—चारों ओर से व्यापना, **प्र**—प्राप्त होना, पाना, **वि**—व्यापना, **संवि**—अच्छी तरह व्यापना। सक.। अनिट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | आप्नोति | आप्नुतः | आप्नुवन्ति | प्र. |
| | आप्नोषि | आप्नुथः | आप्नुथ | म. |
| | आप्नोमि | आप्नुवः | आप्नुमः | उ. |
| लिट् | आप | आपतुः | आपुः | प्र. |
| | आपिथ | आपथुः | आप | म. |
| | आप | आपिव | आपिम | उ. |
| लुट् | आप्ता | आप्तारौ | आप्तारः | प्र. |
| | आप्तासि | आप्तास्थः | आप्तास्थ | म. |
| | आप्तास्मि | आप्तास्वः | आप्तास्मः | उ. |
| लृट् | आप्स्यति | आप्स्यतः | आप्स्यन्ति | प्र. |
| | आप्स्यसि | आप्स्यथः | आप्स्यथ | म. |
| | आप्स्यामि | आप्स्यावः | आप्स्यामः | उ. |
| लोट् | आप्नोतु-आप्नुतात् | आप्नुताम् | आप्नुवन्तु | प्र. |
| | आप्नुहि-आप्नुतात् | आप्नुतम् | आप्नुत | म. |
| | आप्नवानि | आप्नवाव | आप्नवाम | उ. |
| लङ् | आप्नोत् | आप्नुताम् | आप्नुवन् | प्र. |
| | आप्नोः | आप्नुतम् | आप्नुत | म. |
| | आप्नवम् | आप्नुव | आप्नुम | उ. |
| वि. लि. | आप्नुयात् | आप्नुयाताम् | आप्नुयुः | प्र. |
| | आप्नुयाः | आप्नुयातम् | आप्नुयात | म. |
| | आप्नुयाम् | आप्नुयाव | आप्नुयाम | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आ. लि. | आप्यात् | आप्यास्ताम् | आप्यासुः | प्र. |
| | आप्याः | आप्यास्तम् | आप्यास्त | म. |
| | आप्यासम् | आप्यास्व | आप्यास्त | उ. |
| लुङ् | आपत् | आपताम् | आपन् | प्र. |
| | आपः | आपतम् | आपत | म. |
| | आपम् | आपाव | आपाम | उ. |
| लृङ् | आप्स्यत् | आप्स्यताम् | आप्स्यन् | प्र. |
| | आप्स्यः | आप्स्यतम् | आप्स्यत | म. |
| | आप्स्यम् | आप्स्याव | आप्स्याम | उ. |

**कर्मणि**—आप्यते । २ आपे । **णिचि**—आपयति-ते । **सनि**—ईप्सति । २. ईप्साञ्चकार । **कृत्सु**—आपकः-प्रापकः-पिका, **णिचि**—आपकः-पिका, ईप्सकः[१]-प्सिका, आप्ता-त्री, प्रापयिता-त्री, ईप्सिता-त्री, आप्नुवम्[२]-वती, प्रापयन्-न्ती, ईप्सन्-न्ती, आप्स्यन्-न्ती-ती, आपयिष्यन्-न्ती-ती, ईप्सिष्यन्-न्ती-ती, आपयिष्यन्-न्ती-ती, ईप्सिष्यन्-न्ती-ती, प्रापयमाणः, प्रापयिष्यमाणः, आपः,[३] आप्तः-संप्राप्तः-प्तम्-तवान्, प्रापितम्-ईप्सितः, तवान्, व्यापी-व्यापिनी, ईप्सुः, अपिपयिषुः, आप्तव्यम्, आपयितव्यम्, ईप्सितव्यम्, आपनीयम्, प्रापणीयम्, ईप्सनीयम्, संप्राप्य, आप्यम्, प्रोप्यम्, ईप्स्यम्, प्राप्यमानः, ईप्स्यमानः, ईप्सः, आप्तुम्, आपयितुम्, ईप्सितुम्, आप्तिः,[४] प्रापणा, ईप्सा, आपिपयिषा, प्रापणम्, आपनम्, ईप्सनम्, आप्त्वा, आपयित्वा, ईप्सित्वा, प्राप्य, प्रापय्य[५] = प्राप्य, प्रेप्स्य ।

( १२६१ ) **शक्लृ—शक्तौ** । (शक्तिवान् होना, समर्थ होना)। सकना । अक.। अनि.। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | शक्नोति | शक्नुतः | शक्नुवन्ति | प्र. |
| | शक्नोषि | शक्नुथः | शक्नुथ | म. |
| | शक्नोमि | शक्नुवः | शक्नुमः | उ. |
| लिट् | शशाक | शेकतुः | शेकुः | प्र. |
| | शेकिथ-शशक्थ | शेकथुः | शेक | म. |
| | शशाक-शशक | शेकिव | शेकिम | उ. |
| लुट् | शक्ता | शक्तारौ | शक्तारः | प्र. |
| | शक्तासि | शक्तास्थः | शक्तास्थ | म. |
| | शक्तास्मि | शक्तास्वः | शक्तास्मः | उ. |

१ सनि 'आप्ज्ञप्यृधामीत्' (७-४-५५) इतीत्वे द्वित्वे, 'अत्र लोपोऽभ्यासस्य' (७-४-५८) इत्यभ्यासलोपः ।
२ 'स्वादिभ्यः—' (३-१-७३) इति श्नुप्रत्यये उवङ् ।
३ 'आप्नोतेर्हस्वश्च' (द.उ. ७-१) इति क्विप्सन्नियोगेन ह्रस्वत्वे, 'अप्तृन्—' (६-४-११) इति सर्वनामस्थाने दीर्घः । 'आपः स्त्री भूम्नि वार्वारि' इति अमरकोशात् नित्यं बहुवचनम् ।
४ 'क्तिन् आवादिभ्यः निष्ठायामनिड्भ्यः' (वा. ३-३-९४) इति क्तिन् । 'गुरोश्च हलः' (३-३-१०३) इत्यस्यापवादः ।
५ 'विभाषाऽऽपः' (६-४-५७) इति णेरयादेशो वा ।

| लृट् | शक्ष्यति | शक्ष्यतः | शक्ष्यन्ति | प्र. |
|---|---|---|---|---|
| | शक्ष्यसि | शक्ष्यथः | शक्ष्यथ | म. |
| | शक्ष्यामि | शक्ष्याव | शक्ष्यामः | उ. |
| लोट् | शक्नोतु-शक्नुतात् | शक्नुताम् | शक्नुवन्तु | प्र. |
| | शक्नुहि-शक्नुतात् | शक्नुतम् | शक्नुत | म. |
| | शक्नवानि | शक्नवाव | शक्नवाम | उ. |
| लङ् | अशक्नोत् | अशक्नुताम् | अशक्नुवन् | प्र. |
| | अशक्नोः | अशक्नुतम् | अशक्नुत | म. |
| | अशक्नवम् | अशक्नुव | अशक्नुम | उ. |
| वि. लि. | शक्नुयात् | शक्नुयाताम् | शक्नुयुः | प्र. |
| | शक्नुयाः | शक्नुयातम् | शक्नुयात | म. |
| | शक्नुयाम् | शक्नुयाव | शक्नुयाम | उ. |
| आ. लि. | शक्यात् | शक्यास्ताम् | शक्यासुः | प्र. |
| | शक्याः | शक्यास्तम् | शक्यात | म. |
| | शक्यासम् | शक्यास्व | शक्यास्म | उ. |
| लुङ् | अशकत् | अशकताम् | अशकन् | प्र. |
| | अशकः | अशकतम् | अशकत | म. |
| | अशकम् | अशकाव | अशकाम | उ. |
| लृङ् | अशक्ष्यत् | अशक्ष्यताम् | अशक्ष्यन् | प्र. |
| | अशक्ष्यः | अशक्ष्यतम् | अशक्ष्यत | म. |
| | अशक्ष्यम् | अशक्ष्याव | अशक्ष्याम | उ. |

**भावे**—शक्यते। २. शेके। ९. अशाकि। **णिचि**—शाकयति-ते। ९. अशीशकत्। **सनि**—शिक्षति। **यङि**—शाशक्यते। **यङ्लुकि**—शाशकीति-शाशक्ति। **कृत्सु**—शाककः-किका, **णिचि**—शाककः-किका, शिशक्षकः-क्षिका, शाशककः-शिका, शक्ता-त्री, शकयिता-त्री, शिशक्षिता-त्री, शाशकिता-त्री, शक्नुवन्-ती, शाकयन्-न्ती, शाकयमानः, शिक्षमाणः[१], शाशक्यमानः, शक्तम्-क्तः, शक्तवान्, शकितः, हरिः, द्रष्टुं शकितः, शक्तो वा, शाकितः, शिक्षितः, शाशकितः-तवान्, शक्तव्यम्, शकनीयम्, शक्यम्, शक्ष्यन्, शक्तुम्, शकनम्, शक्त्वा, प्रशक्य, शक्नुवानः[२], शक्तिः, शका[३], शेकिवान्[४], शकः[५] (देशः),

१ 'शिक्षेजिज्ञासायाम्' (वा. ३-२-१) इति सन्नतात् जिज्ञासार्थे तङेव। 'पूर्ववत् सनः' (१-३-६२) इत्यस्यापवादः। अभ्यासलोपादिकं शकधातुवत्।

२ शतरि स्वादित्वात् श्नुप्रत्ययः। उवङादेशः।

३ स्त्रियां भिदादिपाठात् (३-३-१०४) अङ्।

४ लिटः क्वसुप्रत्यये, 'अत एकहलमध्ये—' (६-४-१२०) इति एत्वाभ्यासलोपयोः, 'वस्वेकाजाद्वसाम्' (३-२-६७) इतीडागमः। छान्दसोऽपि क्वसुः लोके बहुलं प्रयुज्यते इत्यसकृदधान्तात् प्रतिपादितम्। काशिकायाम् (७-२-६७) उदाहृतोऽयं शब्दः।

५ पचाद्यचि रूपमेवम्। शकः देशविशेषः, राजविशेषो वा।

शाकः,[1] शकटम्, शकृत्, शक्वा-शक्वरी, शक्या, शक्रः, शकलम्, शक्लम्, शकुनः-शकुनिः-शकुन्तः-शकुन्तिः, अन्यत् सर्वं रूपं दैवादिकशक्यतिवत् (११८७)।

**(१२६२) राध—संसिद्धौ**। (पूरा करना, सिद्ध करना)। **अप**—अपराध करना, **आ**—आराधना करना, उपासना करना, **सम्**—सिद्ध करना। अक.। अनिट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | राध्नोति | राध्नुतः | राध्नुवन्ति | प्र. |
| | राध्नोषि | राध्नुथः | राध्नुथ | म. |
| | राध्नोमि | राध्नुवः | राध्नुमः | उ. |
| लिट् | रराध | रराधतुः | रराधुः | प्र. |
| | रराधिथ | रराधथुः | रराध | म. |
| | रराध | रराधिव | रराधिव | उ. |
| हिसार्थे | अपरराध | अपरेधतुः | अपरेधुः | प्र. |
| | अपरेधिव | अपरेधथुः | अपरेध | म. |
| | अपरराध | अपरेधिव | अपरेधिम | उ. |
| लुट् | राद्धा | राद्धारौ | राद्धारः | प्र. |
| | राद्धासि | राद्धास्थः | राद्धास्थ | म. |
| | राद्धास्मि | राद्धास्वः | राद्धास्मः | उ. |
| लृट् | रात्स्यति | रात्स्यतः | रात्स्यन्ति | प्र. |
| | रात्स्यसि | रात्स्यथः | रात्स्यथ | म. |
| | रात्स्यामि | रात्स्यावः | रात्स्यामः | उ. |
| लोट् | राध्नोतु-राध्नुतात् | राध्नुताम् | राध्नुवन्तु | प्र. |
| | राध्नुहि-राध्नुतात् | राध्नुतम् | राध्नुत | म. |
| | राध्नवानि | राध्नवाव | राध्नवाम | उ. |
| लङ् | अराध्नोत् | अराध्नुताम् | अराध्नुवन् | प्र. |
| | अराध्नोः | अराध्नुतम् | अराध्नुत | म. |
| | अराध्नवम् | अराध्नुव | अराध्नुम | उ. |
| वि. लि. | राध्नुयात् | राध्नुयाताम् | राध्नुयुः | प्र. |
| | राध्नुयाः | राध्नुयातम् | राध्नुयात् | म. |
| | राध्नुयाम् | राध्नुयाव | राध्नुयाम | उ. |
| आ. लि. | राध्यात् | राध्यास्ताम् | राध्यासुः | प्र. |
| | राध्याः | राध्यास्तम् | राध्यास्त | म. |
| | राध्यासम् | राध्यास्व | राध्यास्म | उ. |
| लुङ् | अरात्सीत् | अराद्धाम् | अरात्सुः | प्र. |
| | अरात्सीः | अराद्धम् | अराद्ध | म. |
| | अरात्सम् | अरात्स्व | अरात्स्म | उ. |

१ 'हलश्च' (३-३-१२१) इति संज्ञायां छञ्। शाकः = वार्ताकादिः

| लृङ् | अरात्स्यत् | अरात्स्ताम् | अरात्स्यन् | प्र. |
|---|---|---|---|---|
| | अरात्स्यः | अरात्स्यतम् | अरात्स्यत | म. |
| | अरात्स्यम् | अरात्स्याव | अरात्स्याम | उ. |

**भावे**—राध्यते। २. रराधे। ९. अराधि। **णिचि**—राधयति-ते। **सनि**—रिरत्सति। **यङि**—राराध्यते। **यङ्लुकि**—राराधीति-रारात्ति। **कृत्सु**—राधकः-धिका, **णिचि**—राधकः-धिका, आरिरात्सकः[१]-प्रतिरिरत्सकः, राराधकः-धिका, राद्धा-राद्ध्री, राधयिता-त्री, आरिरात्सिता-त्री, राराधिता-त्री, राध्नुवन्[२]-ती, राधयन्-न्ती, आरिरात्सन्-प्रतिरिरत्सन्-न्ती, अपरेधिवान्[३], राद्धव्यम्, राधनीयम्, राध्यम्, राद्धत्वा, आराध्य। इत्यादीनि सर्वाणि रूपाणि दैवादिकं क्षुध्यति वत्।

**( १२६३ ) साध—संसिद्धौ**। (सिद्ध करना। जय पाना, साधना करना)। अकर्म.। अनि.। परस्मै.। साध्नोति – इत्यादि 'राध्नोति' (१२६२) वत्। **सनि**—सिषात्सति।

**( १२६४ ) अशू—व्याप्तौ संघाते च**। (फैलना, राशि करना, ढेर करना)। सक.। वेट्। आत्मने.।

| लट् | अश्नुते | अश्नुवाते | अश्नुवते | प्र. |
|---|---|---|---|---|
| | अश्नुषे | अश्नुवाथे | अश्नुध्वे | म. |
| | अश्नुवे | अश्नुवहे | अश्नुमहे | उ. |
| लिट् | आनशे | आनशाते | आनशिरे | प्र. |
| | आनशिषे | आनशाथे | आनशिध्वे | म. |
| | आनशे | आनशिवहे | आनशिमहे | उ. |
| लुट् | अष्टा | अष्टारौ | अष्टारः | प्र. |
| | अष्टासे | अष्टासाथे | अष्टाध्वे | म. |
| | अष्टाहे | अष्टास्वहे | अष्टास्महे | उ. |

पक्षे—आशिता आशितारौ आशितारः इत्यादि।

| लृट् | अशिष्यते | अशिष्येते | अशिष्यन्ते | प्र. |
|---|---|---|---|---|
| | अशिष्यसे | अशिष्येथे | अशिष्यध्वे | म. |
| | अशिष्ये | अशिष्यावहे | अशिष्यामहे | उ. |

पक्षे—अक्ष्यते अक्ष्येते अक्ष्यन्ते इत्यादि।

---

१ संसिद्ध्यर्थे रूपमेवम्। धातूनामनेकार्थत्वात् हिंसार्थे तु 'राधो हिंसायाम् सनीस् वाच्यः' (वा. ७-४-५४) इति सनि इस्। 'अत्र लोपोऽभ्यासस्य' (७-४-५३) इत्यासलोपः। 'स्कोः–' (८-२-२९) इति सकारस्य लोपः। इदमेव वार्तिकं (७-४-५४) धातोरस्य हिंसार्थत्वे ज्ञापकम्। हिंसार्थे सकर्मकोऽयं धातुः।

२ धातोः सकर्मकत्वे 'स्वादिभ्यः–' (३-१-७३) इति श्नुः। अकर्मकत्वे तु 'राधोऽकर्मकाद् वृद्धावेव' (ग.सू. दिवादौ) इति श्यनेव।

३ कर्तरि लिटः क्वसौ 'राधो हिंसायाम्' (६-४-१२३) इति एत्वाभ्यासलोपौ। अत्रापि धातोर्हिंसार्थत्वस्यानूद्यमानत्वात् धातोरनेकार्थत्वमिति ज्ञेयम्। हिंसाभिन्नार्थे तु रराधिवान् इति क्वसु प्रत्यये रूपमिति ज्ञेयम्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लोट् | अश्नुताम् | अश्नुवाताम् | अश्नुवताम् | प्र. |
| | अश्नुष्व | अश्नुवाथाम् | अश्नुध्वम् | म. |
| | अश्नवै | अश्नवावहै | अश्नवामहै | उ. |
| लङ् | आश्नुत | आश्नुवाताम् | आश्नुवत | प्र. |
| | आश्नुथाः | आश्नुवाथाम् | आश्नुध्वम् | म. |
| | आश्नुवि | आश्नुवहि | आश्नुमहि | उ. |
| वि. लि. | अश्नुवीत | अश्नुवीयाताम् | अश्नुवीरन् | प्र. |
| | अश्नुवीथाः | अश्नुवीयाथाम् | अश्नुवीध्वम् | म. |
| | अश्नुवीय | अश्नुवीवहि | अश्नुवीमहि | उ. |

पक्षे—आष्ट आक्षाताम् आक्षत इत्यादि ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आ. लि. | अशिषीष्ट | अशिषीयास्ताम् | अशिषीरन् | प्र. |
| | अशिषीष्ठाः | अशिषीयास्थाम् | अशिषीध्वम् | म. |
| | अशिषीय | अशिषीवहि | अशिषीमहि | उ. |

पक्षे—अक्षीष्ट अक्षीयास्ताम् अक्षीरन् इत्यादि ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुङ् | आशिष्ट | आशिषाताम् | आशिषत | प्र. |
| | आशिष्ठाः | आशिषाथाम् | आशिढ्वम्-ध्वम् | म. |
| | आशिषि | आशिष्वहि | आशिष्महि | उ. |
| लृङ् | आशिष्यत् | आशिष्येताम् | आशिष्यन्त | प्र. |
| | आशिष्यथाः | आशिष्येथाम् | अशीष्यध्वम् | म. |
| | आशिष्ये | आशिष्यावहि | आशिष्यामहि | उ. |

पक्षे—आक्ष्यत आक्ष्येताम् आक्ष्न्त इत्यादि ।

**कर्मणि**—अश्यते । **णिचि**—आशयति । **सनि**—अशिशिषते । **कृत्सु**—आशकः-शिका, **णिचि**—आशकः-शिका, अशिशिषकः[१]-षिका, अशाशकः[२]-शिका अष्टा[३]-ष्ट्री, अशिता-त्री, आशयिता-त्री, अशिशिषिता-त्री, अशाशिता-त्री, आशयन्-न्ती, आशयिष्यन्-न्ती-ती, अश्नुवानः[४]-आशयमानः, अशिशिषमाणः,[५] अशाश्यमानः, अशिष्यमाणः-अक्ष्यमाणः, आशयिष्यमाणः, अशिशिषिष्यमाणः, अशाशिष्यमाणः, अट्-अशौ-अशः, अष्टम्-ष्टः-ष्टवान्, आशितम्-तः, अशिशिषितः, अशाशितः-तवान्, अशः, आशः, अशिशिषुः, आशिशयिषुः, अशाशः, अशितव्यम्-अष्टव्यम्, आशयितव्यम्, आशिशिषितव्यम्, अशाशितव्यम्, अशनीयम्, आशनीयम्, अशिशिषणीयम्, अशाशनीयम्, आश्यम्, णिचि- आश्यम्, अशिशिष्यम्, अशाश्यम्, अश्यमानः, आश्यमानः,

१ 'स्मिपूरञ्ञ्वशां—' (७-२-७४) इति नित्यमिट् ।
२ 'सूचिसूत्रि—' (वा. ३-१-२२) इति यङ् । 'दीर्घोऽकितः' (७-४-८३) इत्यभ्यासस्य दीर्घः
३ 'स्वरतिसूति—' (७-२-४४) इति वा इट् ।
४ 'स्वादिभ्यः—' इति श्नुविकरणप्रत्ययः । 'अचि श्नुधातु—' (६-४-७७) इत्युवङ् ।
५ 'पूर्ववत् सनः' (१-३-६२) इति शानच् । ऊदित्वात् इड्विकल्पः 'यस्य विभाषा' (७-२-१५) इति इण्णिषेधः ।

आशिशिष्यमाण:, अशाश्यमान:, आश:, आश:, अशिशिष:, अशाश:, अशितुम् आष्टुम्, आशयितुम्, अशिशितुम्, अशाशितुम्, अष्टि:, आशना, अशिशिषा, आशिशयिषा, अशाशा[1], अशनम्, आशनम्, अशिशिषणम्, अशाशननम्, अशित्वा-अष्ट्वा, आशयित्वा, अशिशिषित्वा, अशाशित्वा, समश्य, प्राश्य, प्राशिशिष्य, समशाश्य, अश्व:,[2] अशनि:,[3] अश्मा,[4] अक्ष:,[5] अक्षरम्[6] अष्टन्, अक्षि:।

( १२६५ ) ष्टिघ—आस्कन्धने। (हल्ला करना, तिरस्कार करना, वध करना)। सक.। सेट्। आत्मने.। १. स्तिघ्नुते। २. तिष्टिघे। ३. स्तेघिता। इत्यादि।

( १२६६ ) तिक—आस्कन्दे गतौ च। (तिरस्कार करना, वध करना, जाना)। सक.। सेट्। परस्मै.। तिक्नोति। तितेक। तेकिता। अतेकीत्। इत्यादि।

( १२६७ ) तिग—आस्कन्दे गतौ च। (तिरस्कार करना, वध करना, जाना)। सक.। सेट्। परस्मै.। तिग्नोति। इत्यादि 'तिक्नोति' (१२६६) वत्।

( १२६८ ) षघ—हिंसायाम्। (मारना, हिंसा करना)। सक.। सेट्। परस्मै.।

१ सघ्नोति। २ ससाघ। ३ सघिता। ४ सघिष्यति। ८ सघ्यात्। ९ असाघीत्-असघीत्।

कृत्सु—सघितुम्, सघित:, सघित्वा, सघ्यम्, सेघिवान्, सघ्या, सघ:, इत्यादि।

( १२६९ ) ञिधृषा—प्रागल्भ्ये। (गर्व करना, अपने को बड़ा समझना)। सक.। सेट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | धृष्णोति | धृष्णुत: | धृष्णुवन्ति | प्र. |
| | धृष्णोषि | धृष्णुथ: | धृष्णुथ | म. |
| | धृष्णोमि | धृष्णुव: | धृष्णुम: | उ. |
| लिट् | दधर्ष | दधृषतु: | दधृषु: | प्र. |
| | दधर्षिथ | दधृषथु: | दधृष | म. |
| | दधर्ष | दधृषिव | दधृषिम | उ. |
| लुट् | धर्षिता | धर्षितारौ | धर्षितार: | प्र. |
| | धर्षितासि | धर्षितास्थ: | धर्षितास्थ | म. |
| | धर्षितास्मि | धर्षितास्व: | धर्षितास्म: | उ. |
| लृट् | धर्षिष्यति | धर्षिष्यत: | धर्षिष्यन्ति | प्र. |
| | धर्षिष्यसि | धर्षिष्यथ: | धर्षिष्यथ | प. |
| | धर्षिष्यामि | धर्षिष्याव: | धर्षिष्याम: | उ. |

१ 'अ प्रत्ययात्' (३-३-१०२) इति यङन्तात् अकारप्रत्यय:।
२ क्वन् प्रत्यय: (द.उ. ८-१२५)।
३ अनिप्रत्यय: (द.उ. १-१)
४ मनिन् (द.उ. ६-७५) प्रत्यय:।
५ स: प्रत्यय: (द.उ. ९-२४)।
६ 'अशे: सरन्' (द.उ. ८-५०) इति सरन् प्रत्यय:।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लोट् | धृष्णोतु-धृष्णुतात् | धृष्णुताम् | धृष्णुवन्तु | प्र. |
| | धृष्णुहि-धृष्णुतात् | दृष्णुतम् | धृष्णुत | म. |
| | दृष्णुवानि | धृष्णवाव | धृष्णवाम | उ. |
| लङ् | अधृष्णोत् | अधृष्णुताम् | अधृष्णुवन् | प्र. |
| | अधृष्णोः | अधृष्णुतम् | अधृष्णुत | म. |
| | अधृष्णवम् | अधृष्णुव | अधृष्णुम | उ. |
| वि. लि. | धृष्णुयात् | धृष्णुयाताम् | धृष्णुयुः | प्र. |
| | धृष्णुयाः | धृष्णुयातम् | धृष्णुयात | म. |
| | धृष्णुयाम् | धृष्णुयाव | धृष्णुयाम | उ. |
| आ. लि. | धृष्यात् | धृष्यास्ताम् | धृष्यासुः | प्र. |
| | धृष्याः | धृष्यास्तम् | धृष्यास्त | म. |
| | धृष्यासम् | धृष्यास्व | धृष्यास्म | उ. |
| लुङ् | अधर्षीत् | अधर्षिष्टाम् | अधर्षिषुः | प्र. |
| | अधर्षीः | अधर्षिष्टाम् | अधर्षिष्ट | म. |
| | अधर्षिषम् | अधर्षिष्व | अधर्षिष्म | उ. |
| लृङ् | अधर्षिष्यत् | अधर्षिष्यताम् | अधर्षिष्यन् | प्र. |
| | अधर्षिष्यः | अधर्षिष्यतम् | अधर्षिष्यत | म. |
| | अधर्षिष्यम् | अधर्षिष्याव | अधर्षिष्याम | उ. |

**भावे**—धृष्यते। **णिचि**—धर्षयति-ते। **सनि**—दिधर्षिषति। **यङि**—दरीधृष्यते। **यङ्लुकि**—दर्धर्षीति-दरीधृषीति-दरिधृषीति-दर्धर्ष्टि। इत्यादि। **कृत्सु**—धर्षितव्यम्, धर्षयितव्यम्, दिधर्षितव्यम्, दरीधृषितव्यम्, धर्षयितव्यम्, धृष्यम्, धर्ष्यम्, दिधर्षिष्यम्, दरीधृष्यम्, धृष्टः, धर्षितः, धृण्वन्, धृष्णुवती, धर्षितुम्, धर्षणम्, धर्षित्वा, प्रधृष्य, धृष्णुः, दधृक, धृष्णक्, धर्षणः, प्रधर्षी, धर्षः, दिधर्षिषुः, दरीधर्षः।

**(१२७०) दम्भु—दम्भने।** (ठगना, वञ्चना करना)। सक.। सेट्। परस्म.।

१ दभ्नोति। २ ददम्भ। ३ दम्भिता। ४ दम्भिष्यति। ५ दभ्नोतु। ६ अदम्भनोत्। ७ दभ्नुयात्। ८ दभ्यात्। ९ अदम्भीत्। १० अदम्भिष्यत्।

**कृत्सु**—दम्भकः-म्भिका, **णिचि**—दम्भकः-म्भिका, दिदम्भिषकः-षिका, धिप्सकः-धीप्सकः-त्सिका, दादभकः-भिका, दम्भिता-त्री, दम्भयिता-त्री, दिदम्भिषिता-धित्सिता-धीप्सिता-त्री, दादभिता-त्री, दभ्नुवन्[1]-दभ्नुवती, दम्भयन्-न्ती, दिदम्भिषन्-धिप्सन्-धीप्सन्-न्ती, दम्भिष्यन्-न्ती-ती, दम्भयिष्यन्-न्ती-ती, दिदम्भिषिष्यन्-धिप्सिष्यन्-धीप्सिष्यन्-न्ती-ती, व्यतिदभ्नुवानः[2], व्यतिदिदम्भिषमाणः[3]-व्यतिधिप्सिष्यमाणः-व्यतिधीप्सिष्यमाणः,

१ शतरि 'स्वादिभ्यः–' (३-१-७३) इति श्नुप्रत्यये, तस्य सार्वधातुकत्वेन ङित्वाद् उपधानकारलोपे, गुणनिषेधे च, 'अचि श्नुधातु–' (६-४-७७) इत्युवङि च रूपमेवम्। एवं शानचन्ते सर्वत्र ज्ञेयम्।

२ कर्तरि कर्मव्यतिहारे' (१-३-१४) इति शानच्। एवं सन् प्रत्ययेऽपि शानच्।

३ 'पूर्ववत् सनः' (१-३-६२) इति सन्नन्तेऽपि कर्मव्यतिहारे गम्ये शानच्।

दादभिष्यमाण:, सुधप्[१]-सुधब्-सुधवौ-सुधव:, दब्धम्[२], दब्ध:-दब्धवान्, दम्भित:, दिदम्भिषित:-धिप्सित:, धीप्सित:, दादभित:-तवान्, दम्भ:, सुदम्भी, देभिवान्, दम्भ:, दिदम्भिषु:[३], धिप्सु:, धीप्सु:, दादम्भ:, दम्भितव्यम्, दम्भयितव्यम्, दम्भनीयम्, दिदम्भिषणीयम्, धिप्सनीयम्-धीप्सनीयम्, दादभनीयम्, दम्भयम्[४], दिदम्भिष्यम्-धिप्स्यम्-धीप्स्यम्, दादभ्यम्, दभ्यमान:, दम्भितुम्, दम्भयितुम्, देब्धि:[५]-दम्भा, दम्भना, दम्भनम्, दम्भित्वा[६]-दब्ध्वा, दम्भयित्वा, प्रदभ्य, दभ्र:[७]।

**(१२७१) ऋधु—वृद्धौ।** (बढ़ना)। अक.। सेट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | ऋध्नोति | ऋध्नुत: | ऋध्नुवन्ति | प्र. |
| | ऋध्नोषि | ऋध्नुथ: | ऋध्नुथ | म. |
| | ऋध्नोमि | ऋध्नुव: | ऋध्नुम: | उ. |
| लिट् | आनर्ध | आनृधतु: | आनृधु: | प्र. |
| | आनर्धिथ | आनृधथु: | आनृध | म. |
| | आनर्ध | आनृधिव | आनृधिम | उ. |
| लुट् | अर्धिता | अर्धितारौ | अर्धितार: | प्र. |
| | अर्धितासि | अर्धितास्थ: | अर्धितास्थ | म. |
| | अर्धितास्मि | अर्धितास्व: | अर्धितास्म: | उ. |
| लृट् | अर्धिष्यति | अर्धिष्यत: | अर्धिष्यन्ति | प्र. |
| | अर्धिष्यसि | अर्धिष्यथ: | अर्धिष्यथ | म. |
| | अर्धिष्यामि | अर्धिष्याव: | अर्धिष्याम: | उ. |
| लोट् | ऋध्नोतु-ऋध्नुतात् | ऋध्नुताम् | ऋध्नुवन्तु | प्र. |
| | ऋध्नुहि-ऋध्नुतात् | ऋध्नुतम् | ऋध्नुत | म. |
| | ऋध्नवानि | ऋध्नवाव | ऋध्नवाम | उ. |
| लङ् | आर्ध्नोत् | आर्ध्नुताम् | आर्ध्नुवन् | प्र. |
| | आर्ध्नो: | आर्ध्नुतम् | आर्ध्नुत | म. |
| | आर्ध्नुवम् | आर्ध्नुव | आर्ध्नुम | उ. |

१ क्विपि, नकारलोपे, 'एकाचो वशो भष्— (८-२-३७) इति भष्भावे चर्त्वविकल्पे च रूपम्।
२ क्त्वायामिड्विकल्पनात् निष्ठायाम्, 'यस्य विभाषा' (७-२-१५) इतीण्णिषेध:। 'झषस्तथोर्धोऽध:' (८-२-४०) इति निष्ठातकारस्य धकार। 'झलां जश् झशि' (८-४-५३) इति भकारस्य बकार:।
३ 'भूयस्तं धुप्सुमाहूय राजपुत्रं दिदम्भिषु:' (भ.का. ९-३३)
४ 'आसुयुवपि—' (३-१-१२६) इत्यत्र चकारस्यानुक्तसमुच्चयार्थकत्वेन दम्भे: सङ्ग्रह: इति काशिकायामुक्तम्, तत्तु भाष्यविरुद्धम्। एवञ्च ण्यदेव।
५ भावादौ क्तिनि, 'तितुत्र—' (७-२-९) इति इण्णिषेधे, उपधानकारलोपे, धत्वजश्त्वयो रूपमेवम्।
६ 'उदितो वा' (७-२-५६) इति क्त्वायामिड् विकल्प:। इट्पक्षे 'न क्त्वा सेट्' (१-२-१८) इति कित्वनिषेधात् नकारलोपो न। इडभावपक्षे, नकारलोपे धत्वजश्त्वयो रूपम्।
७ 'स्फायितञ्चि—' (द.उ. ८-३१) इत्यादिना रक् प्रत्यय:। दभ्यते, दम्नोति वा दभ्र: = अल्पम्, सूर्याचन्द्रमसौ च।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| वि. लि. | ऋध्नुयात् | ऋध्नुयाताम् | ऋध्नुयुः | प्र. |
| | ऋध्नुयाः | ऋध्नुयातम् | ऋध्नुयात | म. |
| | ऋध्नुयाम् | ऋध्नुयाव | ऋध्नुयाम | उ. |
| आ. लि. | ऋध्यात् | ऋध्यास्ताम् | ऋध्यासुः | प्र. |
| | ऋध्याः | ऋध्यास्तम् | ऋध्यास्त | म. |
| | ऋध्यासम् | ऋध्यास्व | ऋध्यास्म | उ. |
| लुङ् | आर्धीत् | आर्धीष्टाम् | आर्धिषुः | प्र. |
| | आर्धीः | आर्धिष्टम् | आर्धिष्ट | म. |
| | आर्धिषम् | आर्धिष्व | आर्धिष्म | उ. |
| लृङ् | आर्धिष्यत् | आर्धिष्यताम् | आर्धिष्यन् | प्र. |
| | आर्धिष्यः | आर्धिष्यतम् | आर्धिष्यत | म. |
| | आर्धिष्यम् | आर्धिष्याव | आर्धिष्याम | उ. |

**भावे**—ऋध्यते। **णिचि**—अर्धयति। ९. अर्दिधत्। **सनि**—आर्दिधिषति-ईर्त्सति। ९. आर्दिधिषीत्। **कृत्सु**—अर्धितव्यम्, अर्धनीयम्, ऋध्यम्, ऋद्धः, ऋध्नुवन्, ऋध्नुवती, अर्धितुम्, अर्धनम्, अर्धित्वा-ऋद्ध्वा, समृद्ध्य, ऋद्धिः। इत्यादि सर्वाणि रूपाणि दैवादिक 'ऋधु' (१२४५) वत् ज्ञेयानि।

**( १२७२ ) अह—व्याप्तौ**। (फैलना, विस्तृत होना)। सक.। सेट्। पर.। छान्दसः। अह्नोति अह्नुतः अह्नुवन्ति। इत्यादि।

**( १२७३ ) दध—घातने पालने च**। (मारना, दुःख देना, संरक्षण करना, पोषण करना)। सक.। सेट्। परस्मै.। छान्दसः। दध्नोति दध्नुतः दध्नुवन्ति। इत्यादि। 'सध्नोति' (१२६८) वत्।

**( १२७४ ) चमू—भक्षणे**। (खाना)। सक.। सेट्। पर.। छान्दस चम्नोति। इत्यादि।

**कृत्सु**—चमकः-मिका, चमिता-त्री, चामयिता-त्री, चञ्चमिता-त्री, चमन्, आचामः, विचमः, सुचमः, चमितुम्, आचम्य।

**( १२७५ ) रि—हिंसायाम्**। (मारना, हिंसा करना)। सक.। सेट्। परस्मै.। छान्दसः। १ रिणोति। २ रिराय। ४ रेष्यति। ८ रीयात्। ९ अरैषीत्।

**कृत्सु**—रायकः, रेता, रिण्वन्, व्यतिरिण्वन्, रितम्, रितः, रेतव्येम्, रयणीयम्, रेयम्, रीयमानः, रेतुम्, रित्वा, प्ररित्य, रायम्।

**( १२७६-१२७७ ) क्षि-चिरि—हिंसायाम्**। (मारना, हिंसा करना)। सक.। सेट्। पर.। छान्दरसः। क्षिणोति। चिरिणोति। इत्यादि।

**( १२७८ ) जिरि—हिंसायाम्**। (मारना, हिंसा करना)। सक.। सेट्। परस्मै.। छान्दसः। रकारान्तः जिरिणोति। इत्यादि।

( १२७९ ) **दाश—हिंसायाम्**। (मारना, हिंसा करना)। सक.। सेट्। परस्मै.। छान्दसः। दाश्नोति इत्यादि।

**कृत्सु**—दाशकः-शिका, दशिता-त्री, दाशन्-दाशन्ती, दाशमानः, दाशयमानः, दाशिष्यमाणः, दाशः, दाशितव्यम्, दाशनीयम्, दाश्यम्, दाशितुम्, दाशित्वा, प्रदाश्य।

( १२८० ) **दॄ—हिंसायाम्**। (मारना, हिंसा करना)। सक.। अनिट्। परस्मै.। ॠकारान्तः। दृणोति। इत्यादि 'पृणोति' वत् (१२५८)।

इति स्वादयः ॥ ५ ॥



# अथ तुदादयः ( ६ )

उभय.। ( १२८१ ) **तुद—व्यथने**। (दुःख देना, पीडा करना, घाव करना)। सक.। अनिट्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | तुदति | तुदतः | तुदन्ति | प्र. |
| | तुदसि | तुदथः | तुदथ | म. |
| | तुदामि | तुदावः | तुदामः | उ. |
| लिट् | तुतोद | तुतुदतुः | तुतुदुः | प्र. |
| | तुतोदिथ | तुतुदथुः | तुतुद | म. |
| | तुतोद | तुतुदिव | तुतुदिम | उ. |
| लुट् | तोत्ता | तोत्तारौ | तोत्तारः | प्र. |
| | तोत्तासि | तोत्तास्थः | तोत्तास्थ | म. |
| | तोत्तास्मि | तोत्तास्वः | तोत्तास्मः | उ. |
| लृट् | तोत्स्यति | तोत्स्यतः | तोत्स्यन्ति | प्र. |
| | तोत्स्यसि | तोत्स्यथः | तोत्स्यथ | म. |
| | तोत्स्यामि | तोत्स्यावः | तोत्स्यामः | उ. |
| लोट् | तुदतु-तुदतात् | तुदताम् | तुदन्तु | प्र. |
| | तुद-तुदतात् | तुदतम् | तुदत | म. |
| | तुदानि | तुदाव | तुदाम | उ. |
| लङ् | अतुदत् | अतुदताम् | अतुदन् | प्र. |
| | अतुदः | अतुदतम् | अतुदत | म. |
| | अतुदम् | अतुदाव | अतुदाम | उ. |
| वि. लि. | तुदेत् | तुदेताम् | तुदेयुः | प्र. |
| | तुदेः | तुदेतम् | तुदेत | म. |
| | तुदेयम् | तुदेव | तुदेम | उ. |
| आ. लि. | तुद्यात् | तुद्यास्ताम् | तुद्यासुः | प्र. |
| | तुद्याः | तुद्यास्तम् | तुद्यास्त | म. |
| | तुद्यासम् | तुद्यास्व | तुद्यास्म | उ. |
| लुङ् | अतौत्सीत् | अतौत्ताम् | अतौत्सुः | प्र. |
| | अतौत्सीः | अतौत्तम् | अतौत्त | म. |
| | अतौत्सम् | अतौत्स्व | अतौत्स्म | उ. |
| लङ् | अतोत्स्यत् | अतोत्स्यताम् | अतोस्यन् | प्र. |
| | अतोत्स्यः | अतोत्स्यतम् | अतोत्स्यत | म. |
| | अतोत्स्यम् | अतोत्स्याव | अतोत्स्याम | उ. |

आत्मनेपदपक्षे

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | तुदते | तुदेते | तुदन्ते | प्र. |
| | तुदसे | तुदेथे | तुदध्वे | म. |
| | तुदे | तुदावहे | तुदामहे | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लिट् | तुतुदे | तुतुदाते | तुतुदिरे | प्र. |
| | तुतुदिषे | तुतुदाथे | तुतुदिध्वे | म. |
| | तुतुदे | तुतुदिवहे | तुतुदिमहे | उ. |
| लुट् | तोत्ता | तोत्तारौ | तोत्तारः | प्र. |
| | तोत्तासे | तोत्तासाथे | तोत्ताध्वे | म. |
| | तोत्ताहे | तोत्तास्वहे | तोत्तास्महे | उ. |
| लृट् | तोत्स्यते | तोत्स्येते | तोत्स्यन्ते | प्र. |
| | तोत्स्यसे | तोत्स्येथे | तोत्स्यध्वे | म. |
| | तोत्स्ये | तोत्स्यावहे | तोत्स्यमहे | उ. |
| लोट् | तुदताम् | तुदेताम् | तुदन्ताम् | प्र. |
| | तुदस्व | तुदेथाम् | तुदध्वम् | म. |
| | तुदै | तुदावहै | तुदामहै | उ. |
| लङ् | अतुदत | अतुदेताम् | अतुदन्त | प्र. |
| | अतुदथाः | अतुदेथाम् | अतुदध्वम् | म. |
| | अतुदे | अतुदावहि | अतुदामहि | उ. |
| वि. लि. | तुदेत | तुदेयाताम् | तुदेरन् | प्र. |
| | तुदेथाः | तुदेयाथाम् | तुदेध्वम् | उ. |
| | तुदेय | तुदेवहि | तुदेमहि | उ. |
| आ. लि. | तुत्सीष्ट | तुत्सीयास्ताम् | तुत्सीरन् | प्र. |
| | तुत्सीष्ठाः | तुत्सीयास्थाम् | तुत्सीध्वम् | म. |
| | तुत्सीय | तुत्सीवहि | तुत्सीमहि | उ. |
| लुङ् | अतुत्त | अतुत्साताम् | अतुत्सत | प्र. |
| | अतुत्थाः | अतुत्साथाम् | अतुद्ध्वम् | म. |
| | अतुत्सि | अतुत्स्वहि | अतुत्स्महि | उ. |
| लृङ् | अतोत्स्यत | अतोत्स्येताम् | अतोत्स्यन्त | प्र. |
| | अतोत्स्यथाः | अतोस्येथाम् | अतोत्स्यध्वम् | म. |
| | अतोत्स्ये | अतोत्स्यावहि | अतोत्स्यामहि | उ. |

**कर्मणि**—तुद्यते। **णिचि**—तोदयति-ते। **सनि**—तुतुत्सति-ते। **यङि**—तोतुद्यते। **यङ्लुकि**—तोतुदीति-तोतोत्ति। **कृत्सु**—तोदकः-दिका, **णिचि**—तोदकः-दिका, तुतुत्सकः[१]-त्सिका, तोतुदकः-दिका, तोत्ता-त्री, तोदयिता-त्री, तुतुत्सिता-त्री, तोतुदिता-त्री, तुदन्[२]-न्ती-ती, तोदयन्-न्ती, तुतुत्सन्-न्ती, तोत्स्यन्-न्ती-ती, तोदयिष्यन्-न्ती-ती, तुतुत्सिष्यन्-न्ती-ती, तुदमानः,

१ 'हलन्ताच्च' (१-२-१०) इति सनः कित्वम्, तेनाङ्गस्य गुणो न। एवं सन्नन्ते सर्वत्र ज्ञेयम्।

२ तुदन् कुचरितान् शुभे प्रणुदमान इष्टं दिशन्। (भा.का. २-७२)

तोदयमानः, तुतुत्समानः, तोतुद्यमानः, तोत्स्यमानः, तोदयिष्यमानः, तुतुत्सिष्यमाणः, तोतुदिष्यमाणः तुत्-तुद्-तुदौ-तुदः, तुन्नम्[१]-तुन्नः, तुन्नतुदः, विधुन्तुदः[२], अरुन्तुदः[३]-तिलन्तुदः[४], तोदः, तुतुत्सुः, तोतुदः, तोत्तव्यम्, तोदनीयम्, णिचि- तोदनीयम्, तुतुत्सनीयम्, तोतुदनीयम्, तोद्यम्, णिचि- तोद्यम्, तुतुत्स्यम्, तोतुद्यम्, तुद्यमानः, तोद्यमानः, तुतुत्स्यमानः, तोतुद्यमानः, प्रतोदः,[५] तोदः, तुतुत्सः, तोतुदः, तोत्तुम्, तोदयितुम्, तुतुत्सितुम्, तोतुदितुम्, तुत्तिः, तोदना, तुतुत्सा, तोतुदा, तोत्रम्[६]-तोत्त्री, तोदनम्-तुतुत्सनम्, तोतुदनम्, तुत्त्वा, तोदयित्वा, तुतुत्सित्वा, तोतुदित्वा, प्रतुद्य, प्रतोद्य, प्रतुतुत्स्य, प्रतोतुद्य।

(१२८२) **णुद्—प्रेरणे**। (प्रेरणा करना)। **अप**—दूर करना, **निर्**—बाहर फेकना, त्यागना, **वि**—प्रसन्न करना, **सम्**—हांकना, चलाना। सक.। अनिट्। उभय.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | नुदति | नुदतः | नुदन्ति | प्र. |
| | नुदसि | नुदथः | नुदथ | म. |
| | नुदामि | नुदावः | नुदामः | उ. |
| लिट् | नुनोद | नुनुदतुः | नुनुदुः | प्र. |
| | नुनोदिथ | नुनुदथुः | नुनुद | म. |
| | नुनोद | नुनुदिव | नुनुदिम | उ. |
| लुट् | नोत्ता | नोत्तारौ | नोत्तारः | प्र. |
| | नोत्तासि | नोत्तास्थः | नोत्तास्थ | म. |
| | नोत्तास्मि | नोत्तास्वः | नोत्तास्मः | उ. |
| लृट् | नोत्स्यति | नोत्स्यतः | नोत्स्यन्ति | प्र. |
| | नोत्स्यसि | नोत्स्यथः | नोत्स्यथ | म. |
| | नोत्स्यामि | नोत्स्यावः | नोत्स्यामः | उ. |
| लोट् | नुदतु-नुदतात् | नुदताम् | नुदन्तु | प्र. |
| | नुद-नुदतात् | नुदतम् | नुदत | म. |
| | नुदानि | नुदाव | नुदाम | उ. |
| लङ् | अनुदत् | अनुदताम् | अनुदन् | प्र. |
| | अनुदः | अनुदतम् | अनुदत | म. |
| | अनुदम् | अनुदाव | अनुदाम | उ. |

१ 'रदाभ्यां निष्ठातो नः पूर्वस्य च दः' (८-२-४२) इति निष्ठानत्वम्।

२ 'विध्वरुषोस्तुदः' (३-२-३५) इति खश् प्रत्ययः। 'अरुर्द्विषदजन्तस्य नुम्' (६-३-६७) इति नुम्, विधुन्तुदः राहुः। 'संयोगान्तस्य लोपः' (८-२-२३) इति अरुषः अकारस्य लोपः। अरुः = मर्म, तुदति = व्यथतीति अरुन्तुदः = मर्मावित्।

३ अरुन्तुदमिवालानमनिर्वाणस्य दन्तिनः॥ (रघुवंशे १/७१)

४ वातशुनीतिलशर्धेषु अजघेट्तुदजहातीनामुपसंख्यानम् (वा. ३-२-२८) इति खश् 'अरुर्द्विषदजन्तस्य– (६-३-६७) इति मुमागमः। तिलन्तुदः = वणिजां तैलनिष्पादकं दारु।

५ प्रतुद्यतेऽनयेति करणे 'हलश्च' (३-३-१२१) इति सञ्ज्ञायां घञ्।

६ दाम्नीशसयुयुजस्तुतुदसिसिचमिहपतदशनहः करणे (३-२-१८२) इति करणे ष्ट्रन् प्रत्ययो भवति। षित्वात् स्त्रियां ङीष्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| वि. लि. | नुदेत् | नुदेताम् | नुदेयुः | प्र. |
| | नुदेः | नुदेतम् | नुदेत | म. |
| | नुदेयम् | नुदेव | नुदेम | उ. |
| आ. लि. | नुद्यात् | नुद्यास्ताम् | नुद्यासुः | प्र. |
| | नुद्याः | नुद्यास्तम् | नुद्यास्त | म. |
| | नुद्यासम् | नुद्यास्व | नुद्यास्म | उ. |
| लुङ् | अनौत्सीत् | अनौत्ताम् | अनौत्सुः | प्र. |
| | अनौत्सीः | अनौत्तम् | अनौत्त | म. |
| | अनौत्सम् | अनौत्स्व | अनौत्स्म | उ. |
| लृङ् | अनौत्स्यत् | अनौत्स्यताम् | अनौत्स्यन् | प्र. |
| | अनौत्स्यः | अनौत्स्यतम् | अनौत्स्यत | म. |
| | अनौत्स्यम् | अनौत्स्याव | अनौत्स्याम | उ. |

आत्मनेपदपक्षे

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | नुदते | नुदेते | नुदन्ते | प्र. |
| | नुदसे | नुदेथे | नुदध्वे | म. |
| | नुदे | नुदावहे | नुदामहे | उ. |
| लिट् | नुनुदे | नुनुदाते | नुनुदिरे | प्र. |
| | नुनुदिषे | नुनुदाथे | नुनुदिध्वे | म. |
| | नुनुदे | नुनुदिवहे | नुनुदिमहे | उ. |
| लुट् | नोत्ता | नोत्तारौ | नोत्तारः | प्र. |
| | नोत्तासे | नोत्तासाथे | नोत्ताध्वे | म. |
| | नोत्ताहे | नोत्तास्वहे | नोत्तास्महे | उ. |
| लृट् | नोत्स्यते | नोत्स्येते | नोत्स्यन्ते | प्र. |
| | नोत्स्यसे | नोत्स्येथे | नोत्स्यध्वे | म. |
| | नोत्स्ये | नोत्स्यावहे | नोत्स्यामहे | उ. |
| लोट् | नुदताम् | नुदेताम् | नुदन्ताम् | प्र. |
| | नुदस्व | नुदेथाम् | नुदध्वम् | म. |
| | नुदै | नुदावहै | नुदामहै | उ. |
| लङ् | अनुदत | अनुदेताम् | अनुदन्त | प्र. |
| | अनुदथाः | अनुदेथाम् | अनुदध्वम् | म. |
| | अनुदे | अनुदावहे | अनुदामहे | उ. |
| वि. लि. | नुदेत | नुदेयाताम् | नुदेरन् | प्र. |
| | नुदेथाः | नुदेयाथाम् | नुदेध्वम् | म. |
| | नुदेय | नुदेवहि | नुदेमहि | उ. |
| आ. लि. | नुत्सीष्ट | नुत्सीयास्ताम् | नुत्सीरन् | प्र. |
| | नुत्सीष्ठाः | नुत्सीयास्थाम् | नुत्सीध्वम् | म. |
| | नुत्सीय | नुत्सीवहि | नुत्सीमहि | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुङ् | अनुत | अनुत्साताम् | अनुत्सत | म. |
| | अनुत्थाः | अनुत्सासाथाम् | अनुद्ध्वम् | म. |
| | अनुत्से | अनुत्स्वहि | अनुत्स्महि | उ. |
| लृङ् | अनोत्स्यत | अनोत्स्येताम् | अनोत्स्यन्त | प्र. |
| | अनोत्स्यथाः | अनोत्स्येथाम् | अनोत्स्यध्वम् | म. |
| | अनोत्स्ये | अनोत्स्यावहि | अनोत्स्यामहि | उ. |

**कर्मणि**—नुद्यते। **णिचि**—नोदयति। **सनि**—नुनुत्सति-ते। **यङि**—नोनुद्यते। **यङ्लुकि**—नोनुदीति-नोनोत्ति। **कृत्सु**—नोदकः-दिका, **णिचि**—नोदकः-दिका, नुनुत्सकः[१]-त्सिका, नोनुदकः-दिका, नोत्ता[२]-त्री, नोदयिता-त्री, नुनुत्सिता-त्री, नोनुदिता-त्री, नुदन्[३]-न्ती-ती, नोदयन्-न्ती, नुनुत्सन्-न्ती, नोत्स्यन्-न्ती-ती, नोदयिष्यन्-न्ती-ती, नुनुत्सिष्यन्-न्ती-ती, नुदमानः, प्रणुदमानः, नोदयमानः, नुनुत्समानः, नोनुद्यमानः, नोत्स्यमानः, नोदयिष्यमाणः, नुनुत्सिष्यमाणः, नोनुदिष्यमाणः, अपनुत्-अपनुद्-अपनुदौ-अपनुदः, नुन्नः[४]-नुत्तः, प्रणुन्नम्ः[५]-नुत्तम्-नुन्नम्-नुन्नवान्-नुत्तवान्, नोदितः, नुनुत्सितः, नोनुदितः-तवान्, नुदः,[६] शोकापनुदः[७], शोकापनोदः,[८] विनोदी, नोदः, नुनुत्सुः, नोनुदः, नोत्तव्यम्, नोदयितव्यम्, नुनुत्सितव्यम्, नोनुदितव्यम्, नोद्यम्, नोद्यम्, नुनुत्स्यम्, नोनुद्यम्, नुद्यमानः, नोद्यमानः, नुनुत्स्यमानः, नोनुद्यमानः, नोदः-विनोदः, काकुदः,[९] (तालुः) नुनुत्सः, नोनोदः, नोत्तुम्, नोदयितुम्, नुनुत्सितुम्, नोनुदितुम्, नुत्तिः, नौदना, नुनुत्सा, नोनुदा, नोदनम्, नुनुत्सनम्, नोनुदनम्, नुत्वा, नोदयित्वा, नुनुत्सित्वा, नोनुदित्वा, प्रणुद्य, प्रणोद्य, प्रणुनुत्स्य, प्रणोनुद्य, नौः[१०]।

(१२८३) **दिश**—**अतिसर्जने**। अतिसर्जनं = त्यागः, दानञ्च। (दान देना)। **आ**—आज्ञा देना। **उत्**—दिखाना, प्रकट कनरा। **उप**—उपदेश करना। **प्र**—नियत करना। **प्रतिसम्**—पीछे लौटाना। **व्यप**—वहाना करना। **विनिर्**—साफ-साफ कहना। **समा**— मान्य करना। **समुप**—दूर की वस्तु अँगुली से दिखाना, उपदेश करना। सक.। अनिट्। उभय.।

१ धातोरनुदात्तत्वेनेडभावे, 'हलन्ताच्च' (१-२-१०) इति सनः कित्वे, लघूपधगुणो न। एवं सन्नन्ते सर्वत्र ज्ञेयम्।
२ 'एकाच उपदेशेऽनुदात्तात्' (७-२-१०) इति इण्णिषेधे, 'पुगन्तलघूपदस्य च' (७-३-८६) इति गुणः। एवं तव्यदादिष्वपि ज्ञेयम्।
३ 'तुदादिभ्यः—' (३-१-७७) शः विकरणप्रत्ययः। शस्य ङिद्वद्भावदङ्गस्य गुणो न। स्त्रियाम् आच्छीनद्योर्नुम्' (७-१-८०) इति नुम् वा।
४ 'नुद विदोन्दत्राघ्राह्रीभ्योऽन्यतरस्याम्' (८-२-५६) इत्यनेन निष्ठा तकारस्य धातुदकारस्य च नत्वविकल्पः तेन रूपद्वयम्।
५ दायितावलोकविकसन्नयनप्रसरप्रणुन्नमिव वारिरुहम्। (शि. २.९/७९)
६ 'इगुपध—' (३-१-१३५) इति कर्तरि कप्रत्ययः।
७ 'तुन्दशोकयोः परिमृजापनुदोः' (३-२-५) इत्यत्र 'आलस्य सुखाहरणयोरिति वक्तव्यम्' (वा. ३-२-५) इति वचनात् शोकनिवृत्तिपूर्वकं सुखसम्पादके पुत्रादौ शोकापनुद इति कप्रत्ययो भवति। कर्मण्यणोऽपवादः।
८ केवलं शोकमात्रं यः अपनुदति, न तु सुखास्याहर्ता, तत्र 'कर्मण्यण्' ३-२-१) इत्यणेव।
९ काकुः = जिह्वा। सा यस्मिन् नुद्यते इति काकुदम् = तालु। 'घञर्थे कविधानम्'। 'पृषोदरादित्वात्—' (६-३-१०९) नुशब्दस्य लोपः।
१० 'ग्लानुदिभ्यां डौ' (द.उ. २-१२) इति डौप्रत्ययः। टिलोपः। नुदति, नुद्यते वा नौः = प्लवः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | दिशति | दिशतः | दिशन्ति | प्र. |
| | दिशसि | दिशथः | दिशथ | म. |
| | दिशामि | दिशावः | दिशामः | उ. |
| लिट् | दिदेश | दिदिशतुः | दिदिशुः | प्र. |
| | दिदेशिथ | दिदिशथुः | दिदिश | म. |
| | दिदेश | दिदिशिव | दिदिशम | उ. |
| लुट् | देष्टा | देष्टारौ | देष्टारः | प्र. |
| | देष्टासि | देष्टास्थः | देष्टास्थ | म. |
| | देष्टास्मि | देष्टास्वः | देष्टास्मः | उ. |
| लृट् | देक्ष्यति | देक्ष्यतः | देक्ष्यन्ति | प्र. |
| | देक्ष्यसि | देक्ष्यथः | देक्ष्यथ | म. |
| | देक्ष्यामि | देक्ष्यावः | देक्ष्यामः | उ. |
| लोट् | दिशतु-दिशतात् | दिशताम् | दिशन्तु | प्र. |
| | दिश-दिशतात् | दिशतम् | दिशत | म. |
| | दिशानि | दिशाव | दिशाम | उ. |
| लङ् | अदिशत् | अदिशताम् | अदिशन् | प्र. |
| | अदिशः | अदिशतम् | अदिशत | म. |
| | अदिशम् | अदिशाव | अदिशाम | उ. |
| वि. लि. | दिशेत् | दिशेताम् | दिशेयुः | प्र. |
| | दिशेः | दिशेतम् | दिशेत | म. |
| | दिशेयम् | दिशेव | दिशेम | उ. |
| आ. लि. | दिश्यात् | दिश्यास्ताम् | दिश्यासुः | प्र. |
| | दिश्याः | दिश्यास्तम् | दिश्यास्त | म. |
| | दिश्यासम् | दिश्यास्व | दिश्यास्म | उ. |
| लुङ् | अदिक्षत् | अदिक्षताम् | अदिक्षन् | प्र. |
| | अदिक्षः | अदिक्षतम् | अदिक्षत | म. |
| | अदिक्षम् | अदिक्षाव | अदिक्षाम | उ. |
| लृङ् | अदेक्ष्यत् | अदेक्ष्यताम् | अदेक्ष्यन् | प्र. |
| | अदेक्ष्यः | अदेक्ष्यतम् | अदेक्ष्यत | म. |
| | अदेक्ष्यम् | अदेक्ष्याव | अदेक्ष्याम | उ. |

आत्मनेपदपक्षे

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | दिशते | दिशेते | दिशन्ते | प्र. |
| | दिशसे | दिशेथे | दिशध्वे | म. |
| | दिशे | दिशावहे | दिशामहे | उ. |
| लिट् | दिदिशे | दिदिशाते | दिदिशिरे | प्र. |
| | दिदिशिषे | दिदिशाथे | दिदिशिध्वे | म. |
| | दिदिशे | दिदिशिवहे | दिदिशिमहे | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुट् | देष्टा | देष्टारौ | देष्टारः | प्र. |
| | देष्टासे | देष्टासाथे | देष्टाध्वे | म. |
| | देष्टाहे | देषास्वहे | देष्टास्महे | उ. |
| लृट् | देक्ष्यते | देक्ष्येते | देक्ष्यन्ते | प्र. |
| | देक्ष्यसे | देक्ष्येथे | देक्ष्यध्वे | म. |
| | देक्ष्ये | देक्ष्यावहे | देक्ष्यामहे | उ. |
| लोट् | दिशताम् | दिशेताम् | दिशन्ताम् | प्र. |
| | दिशस्व | दिशेथाम् | दिशध्वम् | म. |
| | दिशै | दिशावहै | दिशामहै | उ. |
| लङ् | अदिशत् | अदिशेताम् | अदिशन्त | प्र. |
| | अदिशथाः | अदिशेथाम् | अदिशध्वम् | म. |
| | अदिशे | अदिशावहि | अदिशामहि | उ. |
| वि. लि. | दिशेत | दिशेयाताम् | दिशेरन् | प्र. |
| | दिशेथाः | दिशेयाथाम् | दिशेध्वम् | म. |
| | दिशेय | दिशेवहि | दिशेमहि | उ. |
| आ. लि. | दिक्षीष्ट | दिक्षीयास्ताम् | दिक्षीरन् | प्र. |
| | दिक्षीष्ठाः | दिक्षीयास्ताम् | दिक्षीध्वम् | म. |
| | दिक्षीय | दिक्षीवहि | दिक्षीमहि | उ. |
| लुङ् | अदिक्षत | अदिक्षाताम् | अदिक्षन्त | प्र. |
| | अदिक्षथाः | अदिक्षाथाम् | अदिक्षध्वम् | म. |
| | अदिक्षि | अदिक्षावहि | अदिक्षामहि | उ. |
| लृङ् | अदेक्ष्यत | अदेक्ष्येताम् | अदेक्ष्यन्त | प्र. |
| | अदेक्ष्यथाः | अदेक्ष्येथाम् | अदेक्ष्यध्वम् | म. |
| | अदेक्ष्ये | अदेक्ष्यावहि | अदेक्ष्यामहि | उ. |

**कर्मणि**—दिश्यते। **णिचि**—देशयति-ते। **सनि**—दिदिक्षति-ते। **यङि**—देदिश्यते। **यङ्लुकि**—देदिक्षीति-देदेष्टि। **कृत्सु**—देशकः-शिका, णिचि—देशकः-शिका, दिदिक्षकः[1]-क्षिका, देदिशकः-शिका, उपदेष्टा[2]-ष्ट्री, देशयिता-त्री, दिदिक्षिता, देदिशिता-त्री, दिशन्[3]-न्ती-ती, देशयन्-न्ती, दिदिक्षन्-न्ती, देक्ष्यन्-न्ती-ती, देशयिष्यन्-न्ती-ती, दिदिक्षिष्यन्-न्ती-ती, दिशमानः,

१ सनन्तात् ण्वुलि, 'हलन्ताच्च' (१-२-१०) इति सनः कित्वे, 'व्रश्च–' (८-२-३६) इत्यादिना षत्वे, 'षढोः कः सि' (८-२-४१) इति तकारस्य ककारे च रूपमेवम्। एवं सनन्ते सर्वत्र ज्ञेयम्।

२ तृचि, 'व्रश्च–' (८-२-३६) इत्यादिना शकारस्य षकारे, तकारस्य 'ष्टुना ष्टुः' (८-४-४१) इति ष्टुत्वेन टकारे च रूपमेवम्। एवं तव्यदादिष्वपि ज्ञेयम्।

३ शतरि, 'तुदादिभ्यः–' (३-१-७७) इति शः विकरणप्रत्ययः। तस्य शित्वेन सार्वधातुकत्वाद् ङिद्वद्भावातिदेशाच्चाङ्गस्य गुणो न। एवं शानजन्तेऽपि ज्ञेयम्।

देशयमानः, दिदिक्षमानः, देदिश्यमानः, देक्ष्यमाणः, देदिश्यमाणः, दिदिक्षिष्यमाणः, देदिशिष्यमाणः, दिक्[१]-दिग्-दिशौ-दिशः, दिशा, दिष्टम्[२]-दिष्टः-दिष्टवान्, देशितः, दिदिक्षितः, देदिशितः-तवान्, दिशः[३], उपदेशी[४], प्रदेशिनी, देशः, दिदिक्षुः, देदिश, देष्टव्यम्, देशयितव्यम्, दिदिक्षितव्यम्, देदिशितव्यम्, देशनीयम्, णिचि- देशनीयम्, दिदिक्षणीयम्, देदिशनीयम्, देश्यम्, दिदिक्ष्यम्, देदिश्यम्, ईषद्देशः, दुर्देशः-सुदेशः, दिश्यमानः, देश्यमानः, दिदिक्ष्यमाणः, देदिश्यमानः, देशः[५], प्रादेशः[६] सन्देशः, उपदेशः, दिदिक्षः, देदिशः, देष्टुम्, देशयितुम्, दिदिक्षितुम्, देदिशितुम्, दिष्टिः[७], देशना, दिदिक्षा, देदिशा, देशनम्, दिदिक्षणम्, देदिशनम्, दिष्ट्वा, देशयित्वा, दिदिक्षित्वा, देदिशित्वा, अतिदिश्य, उपदेश्य, प्रदिदिक्ष्य, प्रदेदिश्य, नाम्यादेशं[८] नामादिश्य वा युध्यन्ते।

(१२८४) **भ्रस्ज—पाके**। (पकाना, भूजना)। सक.। अनिट्। उभय.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | भृज्जति | भृज्जतः | भृज्जन्ति | प्र. |
| | भृज्जसि | भृज्जथः | भृज्जथ | म. |
| | भृज्जामि | भृज्जावः | भृज्जामः | उ. |
| लिट् | बभर्ज | बभर्जतुः | बभर्जुः | प्र. |
| | बभर्जिथ-बभर्ष्ठ | बभर्जथुः | बभर्ज | म. |
| | बभर्ज | बभर्जिव | बभर्जिम | उ. |

पक्षे—प्र. बभ्रज्ज बभ्रज्जतुः बभ्रज्जुः। म. बभ्रज्जिथ-बभ्रष्ठ बभ्रज्जथुः बभ्रज्ज। उ. बभ्रज्ज बभ्रज्जिव बभ्रज्जिम।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुट् | भ्रष्टा | भर्ष्टारौ | भर्ष्टारः | प्र. |
| | भर्ष्टासि | भर्ष्टास्थः | भर्ष्टास्थ | म. |
| | भर्ष्टास्मि | भर्ष्टास्वः | भर्ष्टास्मः | उ. |

पक्षे—प्र. भ्रष्टा भ्रष्टारौ भ्रष्टारः। म. भ्रष्टासि भ्रष्टास्थः भ्रष्टास्थ। उ. भ्रष्टास्मि भ्रष्टास्वः भ्रष्टास्मः ।

१ 'ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिग्—' (३-२-५९) इत्यादिना क्विन्नन्तो निपातितः तेन, 'क्विन् प्रत्ययस्य कुः।' (८-२-६२) इति शकारस्य कुत्वम्। वश्चादिषत्वस्यापवादोऽयम्। चर्त्वविकल्पः। 'आपं चैव हलन्तानां यथा वाचानिशा दिशा॥' इति भागुरि वचनात् स्त्रियां टाब् भवति।

२ दिष्टं = दैवम्। 'दैवं दिष्टं भागधेयं भाग्य—' इत्यमरः। 'क्तिच्क्तौ च संज्ञायाम्' (३-३-१७४) इति संज्ञायां क्तप्रत्ययः।

३ 'इगुपधज्ञाप्रीकिरः कः' (३-१-१३५) इति कर्तरि कप्रत्ययः।

४ ताच्छील्ये, साधुकारिणि वा णिनिप्रत्ययान्तोऽयम्।

५ दिश्यतेऽनेनेति देशः = स्थलम्। 'अकर्तरि च कारके संज्ञायाम्' (३-३-१९) इति कर्मणि घञ्।

६ प्रदिश्यत इति प्रदेशः = अग्रभागः 'हलश्च' (३-३-१२१) इति संज्ञायां घञ्। 'उपसर्गस्य घञ्यमनुष्ये बहुलम्' (६-३-१२२) इति दीर्घः। तत्र 'बहुलम्' इत्युक्तेः प्रादेशः इत्यपि साधुः।

७ दिष्टिः = दैवम्। 'क्तिच्क्तौ च संज्ञायाम्' (३-३-१७४) इति संज्ञायां क्तिच्।

८ द्वितीयान्ते नामानि उपपदे, आङ्पूर्वकादस्मात् णमुल् भवति 'नाम्न्यादिशि ग्रहोः' (३-४-५८) इत्यनेन। 'तृतीया प्रभृतीन्यन्यतरस्याम्' (२-२-२१) इति समासविकल्पः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृट् | भर्क्ष्यति | भर्क्ष्यतः | भर्क्ष्यन्ति | प्र. |
| | भर्क्ष्यसि | भर्क्ष्यथः | भर्क्ष्यथ | म. |
| | भर्क्ष्यामि | भर्क्ष्यावः | भर्क्ष्यामः | उ. |

पक्षे—**प्र.** भ्रक्ष्यति भ्रक्ष्यतः भ्रक्ष्यन्ति । **म.** भ्रक्ष्यसि भ्रक्ष्यथः भ्रक्ष्यथ । **उ.** भ्रक्ष्यामि भ्रक्ष्यावः भ्रक्ष्यामः ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लोट् | भृज्जतु-तात् | भृज्जताम् | भृज्जन्तु | प्र. |
| | भृज्ज | भृज्जतम् | भृज्जत | म. |
| | भृज्जानि | भृज्जाव | भृज्जाम | उ. |
| लङ् | अभृज्जत् | अभृज्जताम् | अभृज्जन् | प्र. |
| | अभृज्जः | अभृज्जतम् | अभृज्जत | म. |
| | अभृज्जम् | अभृज्जाव | अभृज्जाम | उ. |
| वि. लि. | भृज्जेत् | भृज्जेताम् | भृज्जेयुः | प्र. |
| | भृज्जेः | भृज्जेतम् | भृज्जेत | म. |
| | भृज्जेयम् | भृज्जेव | भृज्जेम | उ. |
| आ. लि. | भृज्ज्यात् | भृज्ज्यास्ताम् | भृज्ज्यासुः | प्र. |
| | भृज्ज्याः | भृज्ज्यायस्तम् | भृज्ज्यास्त | म. |
| | भृज्ज्यासम् | भृज्ज्यास्व | भृज्ज्यास्म | उ. |
| लुङ् | अभार्क्षीत् | अभार्ष्टाम् | अभार्क्षुः | प्र. |
| | अभार्क्षीः | अभार्ष्टम् | अभार्ष्ट | म. |
| | अभार्क्षम् | अभार्क्ष्व | अभार्क्ष्म | उ. |

पक्षे—**प्र.** अभ्राक्षीत् अभ्राष्टाम् अभ्राक्षुः । **म.** अभ्राक्षीः अभ्राष्टम् अभ्राष्ट । **उ.** अभ्राक्षम् अभ्राक्ष्व अभ्राक्ष्म ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृङ् | अभर्क्ष्यत् | अभर्क्ष्यताम् | अभर्क्ष्यन् | प्र. |
| | अभर्क्ष्यः | अभर्क्ष्यतम् | अभर्क्ष्यत | म. |
| | अभर्क्ष्यम् | अभर्क्ष्याव | अभर्क्ष्याम | उ. |

पक्षे—**प्र.** अभ्रक्ष्यत् अभ्रक्ष्यताम् अभ्रक्ष्यन् । **म.** अभ्रक्ष्यः अभ्रक्ष्यतम् अभ्रक्ष्यत । **उ.** अभ्रक्ष्यम् अभ्रक्ष्याव अभ्रक्ष्याम ।

आत्मनेपदपक्षे

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | भृज्जते | भृज्जेते | भृज्जन्ते | प्र. |
| | भृज्जसे | भृज्जेथे | भृज्जध्वे | म. |
| | भृज्जे | भृज्जावहे | भृज्जामहे | उ. |
| लिट् | बभर्ज्जे | बभर्ज्जाते | बभर्जिरे | प्र. |
| | बभर्जिषे | बभर्ज्जाथे | बभर्जिरे | म. |
| | बभर्ज्जे | बभर्जिवहे | बभर्जिमहे | उ. |

पक्षे— **प्र.** बभ्रज्जे बभ्रज्जाते बभ्रज्जिरे। **म.** बभ्रज्जिषे बभ्रज्जाथे बभ्रज्जिवहे। **उ.** बभ्रज्जे बभ्रज्जिवहे बभ्रज्जिमहे।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुट् | भर्ष्टा | भर्ष्टारौ | भर्ष्टारः | प्र. |
| | भर्ष्टासे | भर्ष्टासाथे | भर्ष्टाध्वे | म. |
| | भर्ष्टाहे | भर्ष्टास्वहे | भर्ष्टास्महे | उ. |

पक्षे—**प्र.** भ्रष्टा भ्रष्टारौ भ्रष्टारः। **म.** भ्रष्टासे भ्रष्टासाथे भ्रष्टाध्वे। **उ.** भ्रष्टाहे भ्रष्टास्वहे भ्रष्टास्महे।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृट् | भर्क्ष्यते | भर्क्ष्यते | भर्क्ष्यन्ते | प्र. |
| | भर्क्ष्यसे | भर्क्ष्येथे | भर्क्ष्यध्वे | म. |
| | भर्क्ष्ये | भर्क्ष्यावहे | भर्क्ष्यामहे | उ. |

पक्षे—**प्र.** भ्रक्ष्यते भ्रक्ष्येते भ्रक्ष्यन्ते। **म.** भ्रक्ष्यसे भ्रक्ष्येथे भ्रक्ष्यध्वे। **उ.** भ्रक्ष्ये भ्रक्ष्यावहे भ्रक्ष्यामहे।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लोट् | भृज्जताम् | भृज्जेताम् | भृज्जन्ताम् | प्र. |
| | भृज्जस्व | भृज्जेथाम् | भृज्जध्वम् | म. |
| | भृज्जै | भृज्जावहै | भृज्जामहै | उ. |
| लङ् | अभृज्जत | अभृज्जेताम् | अभृज्जन्त | प्र. |
| | अभृज्जथाः | अभृज्जेथाम् | अभृज्जध्वम् | म. |
| | अभृज्जे | अभृज्जावहि | अभृज्जामहि | उ. |
| वि. लि. | भृज्जेत | भृज्जेयाताम् | भृज्जेरन् | प्र. |
| | भृज्जेथाः | भृज्जेयाथाम् | भृज्जेध्वम् | म. |
| | भृज्जेय | भृज्जेवहि | भृज्जेमहि | उ. |
| आ. लि. | भर्क्षीष्ट | भर्क्षीयास्ताम् | भक्षीरन् | प्र. |
| | भर्क्षीष्ठाः | भर्क्षीयास्थाम् | भर्क्षीध्वम् | म. |
| | भर्क्षीय | भर्क्षीवहि | भर्क्षीमहि | उ. |

पक्षे—**प्र.** भ्रक्षीष्ट भ्रक्षीयास्ताम् भ्रक्षीरन्। **म.** भ्रक्षीष्ठाः भ्रक्षीयास्थाम् भ्रक्षीध्वम्। **उ.** भ्रक्षीय भ्रक्षीवहि भ्रक्षीमहि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुङ् | अभर्ष्ट | अभर्क्षाताम् | अभर्क्षत | प्र. |
| | अभर्ष्ठाः | अभर्क्षाथाम् | अभर्द्वम् | म. |
| | अभर्क्षि | अभर्क्ष्वहि | अभर्क्ष्महि | उ. |

पक्षे—**प्र.** अभ्रष्ट अभ्रक्षाताम् अभ्रक्षत। **म.** अभ्रष्ठाः अभ्रक्षाताम् अभ्रद्वम्। **उ.** अभ्रक्षि अभ्रक्ष्वहि अभ्रक्ष्महि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृङ् | अभर्क्ष्यत | अभर्क्ष्येताम् | अभर्क्ष्यन्त | प्र. |
| | अभर्क्ष्यथा | अभर्क्ष्येथाम् | अभर्क्ष्येध्वम् | म. |
| | अभर्क्ष्ये | अभर्क्ष्यावहि | अभर्क्ष्यामहि | उ. |

पक्षे—**प्र.** अभ्रक्ष्यत अभ्रक्ष्येताम् अभ्रक्ष्यन्त। **म.** अभ्रक्ष्यथाः अभ्रक्ष्येथाम् अभ्रक्ष्यध्वम्। **उ.** अभ्रक्ष्ये अभ्रक्ष्यावहि अभ्रक्ष्यामहि।

**कर्मणि**—भृज्जते। ९ अभ्रज्जि-अभर्जि। **सनि**—बिभ्रजिषति-बिभर्जिषति। **पक्षे**—बिभ्रक्षति-ते-बिभर्क्षति-ते। **यङि**—बरीभृज्जते-वरिभृज्ज्यते इत्यादि। **यङ्लुकि**—बाभृज्जीति-बाभ्रष्टि। इत्यादि। **कृत्सु**—भर्जकः[1]-र्जिका, भ्रज्जकः-ज्जिका, **णिचि**—भ्रज्जकः-ज्जिका, भर्जकः-ज्जिका, बिभर्जिषकः[2]-बिभर्क्षकः-बिभ्रज्जिषकः- बिभ्रक्षकः-क्षिका, बरीभृज्जकः[3]-जिका, भर्ष्टा[4]-भर्ष्ट्री-भ्रष्टा-भ्रष्ट्री, भर्जयिता-भ्रज्जयिता-त्री, बिभर्जिषिता-बिभर्क्षिता-बिभ्रज्जिषिता-बिभ्रक्षिता-त्री, भृज्जन्[5]-न्ती-ती, भर्जयन्-भ्रज्जयन्-न्ती, बिभर्जिषन्-बिभर्क्षन्-बिभ्रज्जिषन्-बिभ्रक्षन्-न्ती, भर्क्ष्यन्-भ्रक्ष्यन्-न्ती-ती, भर्जयिष्यन्- भ्रज्जयिष्यन्-न्ती-ती, बिभर्जिषिष्यन्-बिभर्क्षिष्यन्-बिभ्रज्जिषिष्यन्- बिभ्रक्षिष्यन्-न्ती-ती, भृज्जमानः, भर्जयमानः-भ्रज्जयमानः, बिभर्जिषमाणः-बिभर्क्षमाणः, बिभ्रज्जिषमाणः-ब्रिभ्रक्षमाणः, बरीभृज्ज्यमानः। भर्क्ष्यमाणः-भ्रक्ष्यमाणः, भर्जयिष्यमाणः-भ्रज्जयिष्यमाणः, बिभर्जिषिष्यमाणः, बिभर्क्षिष्यमाणः, बिभर्ज्जिषिष्यमाणः-बिभ्रक्षिष्यमाणः, बरीभृज्जिष्यमाणः, धानाभृट्[6] प्रभृट्-ड्-प्रभृज्जौ-प्रभृज्जः, भृष्टम्[7]-भृष्टवान्, भर्जितः-भ्रज्जितः, बिभर्जिषितः-बिभर्क्षितः बिभर्ज्जिषितः-बिभ्रक्षितः, बरी-भृज्जितः-तवान्, भर्जः-भ्रज्जः, भर्जः-भ्रज्जः, बिभर्जिषुः-बिभर्क्षुः-बिभ्रज्जिषुः-बिभ्रक्षुः, बाभ्रज्जः[8],

१ ण्वुलि, 'भ्रस्जो रोपधयोरमन्यतरस्याम्' (६-४-४७) इति रेफोपधावर्णयोर्निवृत्तिः, रमागमश्च विकल्पेन भवतः। रमागमे रेफोत्तराकार उच्चारणार्थस्सन् इत्संज्ञं लब्ध्वा लुप्यति। रमागमाभावपक्षे, उपधाभूतस्य सकारस्य श्चुत्वेन शकारे, तस्यां 'झलां जश् झशि' (८-४-५३) इति जश्त्वेन जकारः। एवमेव रूपद्वयं तृजादिषु ण्यन्ते च ज्ञेयम्।

२ सन्नन्ते सर्वत्र, 'सनीवन्तर्द्धभ्रस्ज–' (७-२-४८) इत्यादिना इड्विकल्पः। इट्पक्षे इडभावपक्षे च रमागमस्य वैकल्पिकत्वम्। तेन सन्नन्ते चातूरूप्यं सर्वत्रेति ज्ञेयम्। इडभावपक्षे रमागमः रेफोपधानिवृत्तिपक्षे च, 'वश्चभ्रस्ज–' (८-२-३६) इत्यादिना धातुजकारस्य षकारे, 'षढोः कः सि' (८-२-४१) इति षकारस्य ककारे, सनः षत्वे च विभर्क्षकः इति रूपम्। इडभावपक्ष एव रेफोपधानिवृत्ति-रमागमाभावपक्षे, 'स्कोः संयोगाद्योरन्ते च' (८-२-२९) इत्यनेन झल्परकत्वेन सकारस्य निवृत्तिः, षत्वादिकं चेति ज्ञेयम्।

३ यङन्ते, भ्रस्जादेशात् सम्प्रसारणं (पूर्व) विप्रतिषेधेन' (वा. ६-४-४७) इति वचनात्, 'ग्रहिज्या–' (६-१-१६) इति सम्प्रसारणे पूर्वरूपे, द्विर्वचने, अभ्यासे 'उरत्' (७-४-६६) इत्यनेनाकारः, स च रपरः। 'रीग् ऋत्वत इति वक्तव्यम्' (वा. ७-४-९०) इति रीगागमः। उत्तरखण्डे सकारस्य जश्त्वेन दकारः, तस्य श्चुत्वेन जकार इति काशिका (६-१-१६) न च श्चुत्वे दत्वमसिद्धम्, '–भृज्जतीनाम्–' (६-१-१६) इति निर्देशात्'। इति व्याख्यातारोऽत्राहुः।

४ तृचि, रेफोपधानिवृत्तौ रमागमे च जकारस्य षकारे ष्टुत्वे भर्ष्टा इति रूपम्। रमभावपक्षे तु 'स्को–' (८-२-२९) इति सकारलोपे षत्वष्टुत्वयोश्च भर्ष्टा इति रूपम् इति ज्ञेयम्। एवं तव्यदादिष्वपि प्रक्रिया ज्ञेया।

५ शतरि, तुदादित्वेन कर्तरि शप्रत्यये, तस्य सार्वधातुकत्वेन 'सार्वधातुकमपित्' (१-२-४) इति ङिद्वद्भावः तेन सम्प्रसारणादिषु रूपमेवम्। एवं शानत्यपि प्रक्रिया ज्ञेया।

६ क्विपि, पदान्तनिमित्तके संयोगादिलोपे, सम्प्रसारणे, जकारस्य षत्वे जश्त्वचर्त्वयोश्च रूपमेवम्। धानाभृट् = भ्राष्ट्रम्। काशिकायाम् (८-३-३६) उदाहृतमेतत् पदम्।

७ निष्ठायाम्, सम्प्रसारणे पूर्वरूपे षत्वष्टुत्वयोश्च रूपम्। एवमेव क्त्वा क्तिन् प्रभृतिष्वपि प्रक्रिया ज्ञेया। भृष्टम् = पक्वम् भृष्टलुञ्चितम्।

८ यङन्तात् पचाद्यचि, 'यङो चि च' (२-४-७४) इति यङो लुकि, लुका लुप्ते स्थले स्थानिवत्वप्रतिषेधेन यङ्निमित्तकङित्वानाश्रयणात् सम्प्रसारणादिकं न भवति। आर्धधातुकपरत्वाभावत् रमागमरेफोपधा-निवृत्यादिकमपि न भवति। तेनात्र यथाशास्त्रम् अभ्यासे 'दीर्घोऽकितः' (७-४-८३) इति दीर्घः। उत्तरखण्डे सकारस्य श्चुत्वजश्त्वे च भवत इति ज्ञेयम्।

भष्टव्यम्-भ्रर्ष्टव्यम्, भर्जयितव्यम्-भ्रजयितव्यम्, बिभर्जिषितव्यम्, बिभर्क्षितव्यम्, बिभ्रज्जितव्यम्, बिभर्जिषितव्यम्, बिभर्क्षितव्यम्, बिभ्रज्जिषितव्यम्-बिभ्रक्षितव्यम्, बरीभृज्जितव्यम्, भर्जनीयम्, भ्रज्जनीयम्, बिभर्जिषणीयम्, बिभर्क्षणीयम्, विभर्ज्जिषणीयम्-बिभ्रक्षणीयम्, बरीभृज्जनीयम्, भर्ग्यः[1]-भ्रद्ग्यः, भर्ज्यम्-भ्रज्जयम्, विभर्जिष्यम्-विभक्ष्यम्-बिभ्रज्जिष्यम्-बिभ्रक्ष्यम्, बरीभृज्ज्यम्, भृज्ज्यमानः-भर्ज्यमाणः, भ्रज्ज्यमानः, बिभर्जिष्यमाणः विभक्ष्र्यमाणः, विभ्रज्जिष्यमाणः-बिभ्रक्ष्यमाणः, बरीभृज्ज्यमानः, भर्गः-भ्रद्गः, भर्जः-भ्रज्जः, बिभर्जिषः, विभर्क्षः, बिभ्रज्जिषः, बिभ्रक्षः, बरीभृजः, भर्ष्टुम्-भ्रष्टुम्, भर्जयितुम्-भ्रज्जयितुम्, बिभर्जियितुम्, बिभर्क्षितुम्, बिभ्रज्जिषितुम्, बिभ्रक्षितुम्, बरीभृज्जितुम्, भृष्टिः-भर्जना, भ्रज्जना, बिभर्ज्जिषा-बिभर्क्षा-बिभ्रज्जिषा-बिभ्रक्षा, बरीभृज्जा, भर्जनम्-भ्रज्जनम्, भर्जनम्, भ्रज्जनम्, बिभर्जिषणम्-बिभर्क्षणम्-बिभ्रज्जिषणम्-बिभ्रक्षणम्, बरीभृज्जनम्, भृष्ट्वा, भर्जयित्वा-भ्रज्जयित्वा, बिभर्जिषित्वा-बिभर्क्षित्वा-बिभ्रज्जिषित्वा- बिभ्रक्षित्वा, बरीभृज्जित्वा, प्रभृज्ज्य[2], प्रभर्ज्य-प्रभ्रज्ज्य, प्रबिभर्जिष्य-प्रबिभर्क्ष्य, प्रबिभ्रज्जिष्य-प्रबिभ्रक्ष्य, प्रबरीभृज्ज्य, भृगुः[3], भृज्जनम्[4], भ्राष्ट्रम्[5]।

( १२८५ ) **क्षिप**—प्रेरणे। (भेजना, फेंकना, उड़ाना)। **अधि**—दोष लगाना, आरोप लगाना। **अव**—नीचे फेंकना। **आ**—उपहास करना, ठट्ठा करना, आकर्षण करना, खींचना। **उत्**—उठाना, उठा लेना। **नि**—रखना। **पर्या**—बांधना। **प्र**—जोर से फेंकना। **वि**—फैलाना। **विनि**—देना, छोड़ना। **समा**—भेजना। **सम्**—संक्षेप करना, नष्ट करना, आकर्षण करना, खींचना। सकर्म.। अनिट्। उभय.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | क्षिपति | क्षिपतः | क्षिपन्ति | प्र. |
| | क्षिपसि | क्षिपथः | क्षिपथ | म. |
| | क्षिपामि | क्षिपावः | क्षिपामः | उ. |
| लिट् | चिक्षेप | चिक्षिपतुः | चिक्षिपुः | प्र. |
| | चिक्षेपिथ | चिक्षिपथुः | चिक्षिप | म. |
| | चिक्षेप | चिक्षिपिव | चिक्षिपिम | उ. |

१ धातोरस्य निष्ठायामनिट्त्वेन, ण्यति, रोपधनिवृत्तिरमागमपक्षे 'चजोः कु घिण् ण्यतोः (७-३-५२) इति जकारस्य कुत्वे भर्ग्यम् इति रूपम्। रमागमाद्यभावपक्षे तु, 'पूर्वत्रासिद्धम्' (८-२-१) इति शास्त्राद् जशत्वात् पूर्वं 'चजोः—' (७-३-५२) इति कुत्वे, पश्चात् सकारस्य जशत्वेन दकारे च भ्रद्ग्यम् इति रूपम् इति ज्ञेयम्। एवमेव घञ्यपि रूपद्वयस्य निष्पत्तौ निदानं ज्ञेयम्।

२ ल्यपः स्थानिवत्त्वेन कित्त्वात् सम्प्रसारणे, सकारस्य श्चुत्वे च रूपमेवम्।

३ 'प्रथिम्रदिभ्रस्जां सम्प्रसारणं सलोपश्च' (द.उ. १-११३) इत्यनेन कुप्रत्यये सम्प्रसारणे सकारलोपे, न्यङ्क्वादित्वादित्वात् (७-३-५३) कुत्वे च रूपमेवम्। भृज्जति = परिपक्वविज्ञानो भवतीति भृगुः = महर्षिविशेषः।

४ 'भूसूभूभ्रस्जिभ्यश्छन्दसि' (द.उ. ५-२५) इति क्युन्प्रत्यये सम्प्रसारणे च रूपम्। बाहुलकात् लोकेऽपि प्रयोगः

५ 'भ्रस्जिगमि–' (द.उ. ८-८०) इत्यादिना ष्ट्रन्-प्रत्ययेः वृद्धिश्च बाहुलकात् रमागमो न। उपधासकारस्य लोपस्तु भवत्येव। धातुजकारस्य षत्वे ष्टुत्वे च रूपमेवम्। भ्राष्ट्रम् = भर्जनसाधनीभूतः पात्रविशेषः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुट् | क्षेप्ता | क्षेप्तारौ | क्षेप्तारः | प्र. |
| | क्षेप्तासि | क्षेप्तास्थः | क्षेप्तास्थः | म. |
| | क्षेप्तास्मि | क्षेप्तास्वः | क्षेप्तास्मः | उ. |
| लृट् | क्षेप्स्यति | क्षेप्स्यतः | क्षेप्स्यन्ति | प्र. |
| | क्षेप्स्यसि | क्षेप्स्यथः | क्षेप्स्यथ | म. |
| | क्षेप्स्यामि | क्षेप्स्यावः | क्षेप्स्यामः | उ. |
| लोट् | क्षिपतु-तात् | क्षिपताम् | क्षिपन्तु | प्र. |
| | क्षिप-तात् | क्षिपतम् | क्षिपत | म. |
| | क्षिपाणि | क्षिपाव | क्षिपाम | उ. |
| लङ् | अक्षिपत् | अक्षिपताम् | अक्षिपन् | प्र. |
| | अक्षिपः | अक्षिपतम् | अक्षिपत | म. |
| | अक्षिपम् | अक्षिपाव | अक्षिपाम | उ. |
| वि. लि. | क्षिपेत् | क्षिपेताम् | क्षिपेयुः | प्र. |
| | क्षिपेः | क्षिपेतम् | क्षिपेत | म. |
| | क्षिपेयम् | क्षिपेव | क्षिपेम | उ. |
| आ. लि. | क्षिप्यात् | क्षिप्यास्ताम् | क्षिप्यासुः | प्र. |
| | क्षिप्याः | क्षिप्यास्तम् | क्षिप्यास्त | म. |
| | क्षिप्यासम् | क्षिप्यास्व | क्षिप्यास्म | उ. |
| लुङ् | अक्षैप्सीत् | अक्षैप्ताम् | अक्षैप्सुः | प्र. |
| | अक्षैप्सीः | अक्षैप्तम् | अक्षैप्त | म. |
| | अक्षैप्सम् | अक्षैप्स्व | अक्षैप्स्म | उ. |
| लृङ् | अक्षेप्स्यत् | अक्षेप्स्यताम् | अक्षेप्स्यन् | प्र. |
| | अक्षेप्स्यः | अक्षेप्स्यतम् | अक्षेप्स्यत | म. |
| | अक्षेप्स्यम् | अक्षेप्स्याव | अक्षेप्स्याम | उ. |

आत्मनेपदपक्षे

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | क्षिपते | क्षिपेते | क्षिपन्ते | प्र. |
| | क्षिपसे | क्षिपेथे | क्षिपध्वे | म. |
| | क्षिपे | क्षिपावहे | क्षिपामहे | उ. |
| लिट् | चिक्षिपे | चिक्षिपाते | चिक्षिपिरे | प्र. |
| | चिक्षिपिषे | चिक्षिपाथे | चिक्षिपिध्वे | म. |
| | चिक्षिपे | चिक्षिपिवहे | चिक्षिपिमहे | उ. |
| लुट् | क्षेप्ता | क्षेप्तारौ | क्षेप्तारः | प्र. |
| | क्षेप्तासे | क्षेप्तासाथे | क्षेप्ताध्वे | म. |
| | क्षेप्ताहे | क्षेप्तास्वहे | क्षेप्तास्महे | उ. |
| लृट् | क्षेप्स्यते | क्षेप्स्येते | क्षेप्स्यन्ते | प्र. |
| | क्षेप्स्यसे | क्षेप्स्येथे | क्षेप्स्यध्वे | म. |
| | क्षेप्स्ये | क्षेप्स्यावहे | क्षेप्स्यामहे | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लोट् | क्षिपताम् | क्षिपेताम् | क्षिपन्ताम् | प्र. |
| | क्षिपस्व | क्षिपेथाम् | क्षिपध्वम् | म. |
| | क्षिपै | क्षिपावहै | क्षिपामहै | उ. |
| लङ् | अक्षिपत | अक्षिपेताम् | अक्षिपन्त | प्र. |
| | अक्षिपथाः | अक्षिपेथाम् | अक्षिपध्वम् | म. |
| | अक्षिपे | अक्षिपावहि | अक्षिपामहि | उ. |
| वि. लि. | क्षिपेत | क्षिपेयाताम् | क्षिपेरन् | प्र. |
| | क्षिपेथाः | क्षिपेयाथाम् | क्षिपेध्वम् | म. |
| | क्षिपेय | क्षिपेवहि | क्षिपेमहि | उ. |
| आ. लि. | क्षिप्सीष्ट | क्षिप्सीयास्ताम् | क्षिप्सीरन् | प्र. |
| | क्षिप्सीष्ठाः | क्षिप्सीयास्थाम् | क्षिप्सीध्वम् | म. |
| | क्षीप्सीय | क्षिप्सीवहि | क्षिप्सीमहि | उ. |
| लुङ् | अक्षिप्त | अक्षिप्साताम् | अक्षिप्सत | प्र. |
| | अक्षिप्थाः | अक्षिप्साथाम् | अक्षिब्द्ध्वम् | म. |
| | अक्षिप्सि | अक्षिप्स्वहि | अक्षिप्स्महि | उ. |
| लृङ् | अक्षेप्स्यत | अक्षेप्स्येताम् | अक्षेप्स्यन्त | प्र. |
| | अक्षेप्स्यथाः | अक्षेप्स्येथाम् | अक्षेप्स्यध्वम् | म. |
| | अक्षेप्स्ये | अक्षेप्स्यावहि | अक्षेप्स्यामहि | उ. |

**कर्मणि**—क्षिप्यते। **णिचि**—क्षेपयति-ते। **सनि**—चिक्षिप्सति-ते। **यङि**—चेक्षिप्यते। **यङ्लुकि**—चेक्षिपीति-चेक्षेप्ति। **कृत्सु**—क्षेपकः-क्षेपिका, क्षेप्ता-त्री, क्षिपन्-न्ती-ती, अभिक्षिपन्, प्रतिक्षिपन्, क्षिपमानः, क्षेपः, क्षेत्तुम्, क्षेपयितुम्, क्षिपा, क्षेपणम्, क्षिप्त्वा, क्षेपयित्वा, परिक्षिप्य, क्षेपम्।

**(१२८६) कृष—विलेखने**। (जोतना, हल चलाना)। **अप**—स्राव करना, बहाना, हीन करना। **अव**—तिस्कृत करना, बाहर निकालना, ऊपर उठाना। **आ**—आकर्षण करना, खींचना, उठाना, उत्तेजन करना। **सम्**—समेटना। **सनि**—खींचके समीप में लाना। **उत्**—उठाना, उद्धृत करना, उठा लेना, उत्तेजन करना, ऊपर उठाना। सक.। अनिट्। उभय.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | कृषति | कृषतः | कृषन्ति | प्र. |
| | कृषसि | कृषथः | कृषथ | म. |
| | कृषामि | कृषावः | कृषामः | उ, |
| लिट् | चकर्ष | चकृषतुः | चकृषुः | प्र. |
| | चकर्षिथ | चकृषथुः | चकृष | म. |
| | चकर्ष | चकृषिव | चकृषिम | उ. |
| लुट् | क्रष्टा | क्रष्टारौ | क्रष्टारः | प्र. |
| | क्रष्टासि | क्रष्टास्थः | क्रष्टास्थ | म. |
| | क्रष्टास्मि | क्रष्टास्वः | क्रष्टास्मः | उ. |

पक्षे—कर्ष्टा कर्ष्टारौ क्रष्टारः इत्यादि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृट् | क्रक्ष्यति | क्रक्ष्यतः | क्रक्ष्यन्ति | प्र. |
| | क्रक्ष्यसि | क्रक्ष्यथः | क्रक्ष्यथ | म. |
| | क्रक्ष्यामि | क्रक्ष्यावः | क्रक्ष्यामः | उ. |

पक्षे—कर्क्ष्यति कर्क्ष्यतः कर्क्ष्यन्ति इत्यादि

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लोट् | कृषतु-तात् | कृषताम् | कृषन्तु | प्र. |
| | कृष-तात् | कृषतम् | कृषत | म. |
| | कृषाणि | कृषाव | कृषाम | उ. |
| लङ् | अकृषत् | अकृषताम् | अकृषन् | प्र. |
| | अकृषः | अकृषतम् | अकृषत | म. |
| | अकृषम् | अकृषाव | अकृषाम | उ. |
| वि. लि. | कृषेत् | कृषेताम् | कृषेयुः | प्र. |
| | कृषेः | कृषेतम् | कृषेत | म. |
| | कृषेयम् | कृषेव | कृषेम | उ. |
| आ. लि. | कृष्यात् | कृष्यास्ताम् | कृष्यासुः | प्र. |
| | कृष्याः | कृष्यास्तम् | कृष्यास्त | म. |
| | कृष्यासम् | कृष्यास्व | कृष्यास्म | उ. |
| लुङ् | अक्राक्षीत्[१] | अक्राष्टाम् | अक्राक्षुः | प्र. |
| | अक्राक्षीः | अक्राष्टम् | अक्राष्ट | म. |
| | अक्राक्षम् | अक्राक्ष्व | अक्राक्ष्म | उ. |

पक्षे—प्र. अकार्क्षीत्[२] अकार्ष्टाम् अकार्क्षुः। म. अकार्क्षीः अकार्ष्टम् अकार्ष्ट। उ. अकार्क्षम् अकार्क्ष्व अकार्क्ष्म।

पक्षे—प्र. अकृक्षत्[३] अकृक्षताम् अकृक्षन्। म. अकृक्षः अकृक्षतम् अकृक्षत। उ. अकृक्षम् अकृक्षाव अकृक्षाम।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृङ् | अक्रक्ष्यत् | अक्रक्ष्यताम् | अक्रक्ष्यन् | प्र. |
| | अक्रक्ष्यः | अक्रक्ष्यतम् | अक्रक्ष्यत | म. |
| | अक्रक्ष्यम् | अक्रक्ष्याव | अक्रक्ष्याम | उ. |

पक्षे—अकर्क्ष्यत् अकर्क्ष्यताम् अकर्क्ष्यन् इत्यादि।

आत्मनेपदपक्षे

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | कृषते | कृषेते | कृषन्ते | प्र. |
| | कृषसे | कृषेथे | कृषध्वे | म. |
| | कृषे | कृषावहे | कृषामहे | उ. |

१ 'स्पृशमृशकृषतृपदृषां च्लेः सिज्वा वक्तव्यः' इति सिच् पक्षे रूपम्।
२ अमभावे सिचि वृद्धौ रूपम्।
३ पक्षे 'शल इगुपधा–' इति क्सः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लिट् | चकृषे | चकृषाते | चकृषिरे | प्र. |
| | चकृषिषे | चकृषाथे | चकृषिध्वे | म. |
| | चकृषे | चकृषिवहे | चकृषिमहे | उ. |
| लुट् | क्रष्टा | क्रष्टारौ | क्रष्टारः | प्र. |
| | क्रष्टासे | क्रष्टासाथे | क्रष्टाध्वे | म. |
| | क्रष्टाहे | क्रष्टास्वहे | क्रष्टास्महे | उ. |

पक्षे—कर्ष्टा कर्ष्टारौ कर्ष्टारः इत्यादि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृट् | क्रक्ष्यते | क्रक्ष्येते | क्रक्ष्यन्ते | प्र. |
| | क्रक्ष्यसे | क्रक्ष्येथे | क्रक्ष्यध्वे | म. |
| | क्रक्ष्ये | क्रक्ष्यावहे | क्रक्ष्यामहे | उ. |

पक्षे—कर्क्ष्येते कर्क्ष्येते कर्क्ष्यन्ते इत्यादि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लोट् | कृषताम् | कृषेताम् | कृषन्ताम् | प्र. |
| | कृषस्व | कृषेथाम् | कृषध्वम् | म. |
| | कृषै | कृषावहै | कृषामहै | उ. |
| लङ् | अकृषत | अकृषेताम् | अकृषन्त | प्र. |
| | अकृषथाः | अकृषेथाम् | अकृषध्वम् | म. |
| | अकृषे | अकृषावहि | अकृषामहि | उ. |
| वि. लि. | कृषेत | कृषेयाताम् | कृषेरन् | प्र. |
| | कृषेथाः | कृषेयाथाम् | कृषेध्वम् | म. |
| | कृषेय | कृषेवहि | कृषेमहि | उ. |
| आ. लि. | कृक्षीष्ट | कृक्षीयास्ताम् | कृक्षीरन् | प्र. |
| | कृषीष्ठाः | कृक्षीयास्थाम् | कृक्षीध्वम् | म. |
| | कृक्षीय | कृक्षीवहि | कृक्षीमहि | उ. |
| लुङ् | अकृष्ट | अकृक्षाताम् | अकृक्षत | प्र. |
| | अकृष्ठाः | अकृक्षाथाम् | अकृढ्ध्वम् | म. |
| | अकृक्षि | अकृक्ष्वहि | अकृक्ष्महि | उ. |

पक्षे—**प्र.** अकृक्षत अकृक्षाताम् अकृक्षन्त। **म.** अकृक्षथाः अकृक्षाथाम् अकृक्षध्वम्। **उ.** अकृक्षि अकृक्षावहि अकृक्षामहि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृङ् | अक्रक्ष्यत | अक्रक्ष्येताम् | अक्रक्ष्यन्त | प्र. |
| | अक्रक्ष्यथाः | अक्रक्ष्येथाम् | अक्रक्ष्यध्वम् | म. |
| | अक्रक्ष्ये | अक्रक्ष्यावहि | अक्रक्ष्यामहि | उ. |

पक्षे—**प्र.** अकर्क्ष्यत अकर्क्ष्येताम् अकर्क्ष्यन्त। **म.** अकर्क्ष्यथाः अकर्क्ष्येथाम् अकर्क्ष्येध्वम्। **उ.** अकर्क्ष्ये अकर्क्ष्यावहि अकर्क्ष्यामहि।

**कर्मणि**—कृष्यते। **णिचि**—कर्षयति-ते। **सनि**—चिकृर्षिषति। **यङि**—चाकृष्यते। **यङ्लुकि**—चकृषीति-चरिकृषीति-चरीकृषीति-चर्कष्टि-चरिकर्ष्टि-चरीकर्ष्टि। **कृत्सु**—क्रष्टव्यम्-कर्ष्टव्यम्, कर्षणीयम्, कृष्यः, कृष्टः, कर्षन्, कृषती-कृषन्ती, कृषमाणः, क्रष्टुम्-कर्ष्टुम्, कर्षणम्, कृष्ट्वा, आकृष्य-सङ्कर्षणः, कृषिः, अपकर्षः, प्रकर्षः-आधिक्यम्, आकर्षः, निष्कर्षः।

**( १२८७ ) ऋषी**—(ऋष्) **गतौ**। (जाना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | ऋषति | ऋषतः | ऋषन्ति | प्र. |
| | ऋषसि | ऋषथः | ऋषथ | म. |
| | ऋषामि | ऋषावः | ऋषामः | उ. |
| लिट् | आनर्ष | आनर्षतुः | आनर्षुः | प्र. |
| | आनर्षिथ | आनर्षथुः | आनर्ष | म. |
| | आनर्ष | आनर्षिव | आनर्षिम | उ. |
| लुट् | अर्षिता | अर्षितारौ | अर्षितारः | प्र. |
| | अर्षितासि | अर्षितास्थः | अर्षितास्थ | म. |
| | अर्षितास्मि | अर्षितास्वः | अर्षितास्मः | उ. |
| लृट् | अर्षिष्यति | अर्षिष्यतः | अर्षिष्यन्ति | प्र. |
| | अर्षिष्यसि | अर्षिष्यथः | अर्षिष्यथ | म. |
| | अर्षिष्यामि | अर्षिष्यावः | अर्षिष्यामः | उ. |
| लोट् | ऋषतु-ऋषतात् | ऋषताम् | ऋषन्तु | प्र. |
| | ऋष-ऋषतात् | ऋषतम् | ऋषत | म. |
| | ऋषाणि | ऋषाव | ऋषाम | उ. |
| लङ् | आर्षत् | आर्षताम् | आर्षन् | प्र. |
| | आर्षः | आर्षतम् | आर्षत | म. |
| | आर्षम् | आर्षाव | आर्षाम | उ. |
| वि. लि. | ऋषेत् | ऋषेताम् | ऋषेयुः | प्र. |
| | ऋषेः | ऋषेतम् | ऋषेत | म. |
| | ऋषेयम् | ऋषेव | ऋषेम | उ. |
| आ. लि. | ऋष्यात् | ऋष्यास्ताम् | ऋष्यासुः | प्र. |
| | ऋष्याः | ऋष्यास्तम् | ऋष्यास्त | म. |
| | ऋष्यासम् | ऋष्यास्व | ऋष्यास्म | उ. |
| लुङ् | आर्षीत् | आर्षिष्टाम् | आर्षिषुः | प्र. |
| | आर्षीः | आर्षिष्टम् | आर्षिष्ट | म. |
| | अर्षिषम् | आर्षिष्व | अर्षिष्म | उ. |
| लृङ् | आर्षिष्यत् | आर्षिष्यताम् | आर्षिष्यन् | प्र. |
| | आर्षिष्यः | आर्षिष्यतम् | आर्षिष्यत | म. |
| | आर्षिष्यम् | आर्षिष्याव | आर्षिष्याम | उ. |

**कर्मणि**—ऋष्यते। **णिचि**—अर्षयति-ते। **सनि**—अर्षिषिषति। **कृत्सु**—अर्षकः-र्षिका, अर्षिता-त्री, अर्षयिता-त्री, ऋषन्-न्ती-ती, अर्षिष्यन्-न्ती-ती, ऋट्-ऋड्-ऋषौ ऋषः, ऋष्टम्-ष्टः-ष्टवान्, ऋषः, अर्षः, अर्षितव्यम्, अर्षणीयम्, ऋष्यम्, अर्ष्यम्, ऋष्यमाणः, आर्षितुम्, ऋष्टिः, अर्षणम्, अर्षित्वा, समृष्य, ऋषिः ऋषमः।

**( १२८८ ) जुषी**—**प्रीतिसेवनयोः**। (सेवा करना, प्रसन्न करना, सन्तुष्ट करना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। ईदित्।

१ जुषते। २ जुजुषे। ३ जोषिता। ४ जोषिष्यते। ५ जुषताम्। ६ अजुषत। ७ जुषेत्। ८ जोषीष्ट। ९ अजोषिष्ट। १० अजोषिष्यत।

**कर्मणि**—जुष्यते। **णिचि**—जोषयति-ते। ९ अजुजुषत्-त। **सनि**—जुजुषिषते-जुजोषिषते। **यङि**—जोजुष्यते। **यङ्लुकि**—जोजुष्टि। **कृत्सु**—जोषणीयम्, जोषणम्, जोषः, जोषकः, जोषी, जोषिता, जुष्टः, जुष्टिः, जोषितुम्, जोषितव्यम्, जोषित्वा, सञ्जुष्य, जुष्यम्, जुषमाणः, जोषिष्यमाणः, क्विपि-जुट्।

**( १२८९ ) ओविजी**—भयंसञ्चलनयोः। (डरना, डर से कम्पित होना, कांपना, आपद् ग्रस्त होना, विपत्ति में पड़ना)। सकर्म.। आत्मने.। ईदित्। प्रायेणायमुत्पूर्वः।

१ उद्विजते। २ उद्विविजे। उद्विजाते। ३ उद्विजिता। ४ उद्विजिष्यते। ५ उद्विजताम्। ६ उद्विजत। ७ उद्विजेत। ८ उद्विजिषीष्ट। ९ उद्विजिष्ट। १० उद्विजिष्यत।

**कर्मणि**—उद्विज्यते। **णिचि**—उद्वेजयति **सनि**—उद्विविजिषते। **यङि**—उद्वेविज्यते। **यङ्लुकि**—उद्वेविजीति-उद्वेवेक्ति। **कृत्सु**—उद्विजितव्यम्, उद्विजनीयम्, उद्वेज्यम्, उद्विग्नः, उद्विजमानः, उद्विजितुम्, उद्विजनम्, विजित्वा, उद्विज्य, वेगः, उद्वेगः।

**( १२९० ) ओलजी**—**व्रीडायाम्**। (लज्जित होना, मुंह छिपाना)। अकर्म.। सेट्। आत्मने.। ईदित्।

१ लजते। २ **प्र.** लेजे। **म.** लेजिषे। ३ लजिता। ४ लजिष्यते। ५ लजताम्। ६ अलजत। ७ लजेत। ८ लजिषीष्ट। ९ अलजिष्ट।

**कृत्सु**—लजित्वा, लजकः-जिका, लजिता-त्री, लाजयिता-त्री, लाजयन्-न्ती, लजमानः, लाजयमानः, लजिष्यमाणः, लाजयिष्यमाणः, लक्-लजौ-लजः, लग्नम्-लग्नः-लग्नवान्, लाजितः, लजः, लाजः, लजितव्यम्, लजनीयम्, लाज्यम्, दुर्लजः-सुलजः, लज्यमानः, लाजः, लजितुम्, लक्तिः, लजनम्, प्रलज्य।

**( १२९१ ) ओलस्जी**—**व्रीडायाम्**। (लज्जित होना)। अकर्म। सेट्। आत्मने.। ईदित्।

१ लज्जते। २ ललज्जे। ३ लज्जिता। ४ लज्जिष्यते। ५ लज्जताम्। ६ अलज्जत। ७ लज्जेत। ८ लज्जिषीष्ट। ९ अलज्जिष्ट। १० अलज्जिष्यत।

**भावे**—लज्जते। **णिचि**—लज्जयति-ते। ९. अलज्जत्-त। **सनि**—लिलज्जिषते। **यङि**—लालज्यते। **यङ्लुकि**—लालज्जीति-लालक्ति। **कृत्सु**—लज्जितव्यम्, लज्जनीयम्, लज्ज्यम्, लग्नः, लज्जमानः, लज्जितुम्, लज्जनम्, लज्जित्वा, विलज्ज्य, लज्जा, लज्जित इति तु इतचि।

**( १२९२ ) ओव्रश्चू**—**छेदने**। (छेद करना, कतरना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.।

१ वृश्चति। २ **प्र.** वव्रश्च वव्रश्चतुः वव्रश्चुः। **म.** वव्रश्चिथ-वव्रष्ठ वव्रश्चथुः। **उ.** वव्रश्चिव-वव्रश्च्व वव्रश्चिम वव्रश्चम। ३ व्रश्चिता-व्रष्टा। ४ व्रश्चिष्यति-व्रक्ष्यति। ५ वृश्यतु। ६ अवृश्यत्। ७ वृश्येत्। ८ वृश्यात् वृश्यास्ताम्। ९ अव्रश्चीत् अव्रश्चिष्टाम्। अव्राक्षीत् अव्राष्टाम्। १० अव्रश्चिष्यत्-अव्रक्ष्यत्।

**कर्मणि**—वृश्च्यते। **णिचि**—व्रश्चयति-ते। ९ अवव्रश्चत्। **सनि**—विव्रश्चिषति-विव्रक्षति। **यङि**—वरीवृश्च्यते। **यङ्लुकि**—वाव्रश्चीति-वाव्रष्टि। **कृत्सु**—व्रश्चकः-श्चिका, व्रश्चिता-त्री, व्रष्टा-ष्ट्री, व्रश्चयिता-त्री, व्रश्चन्-ती, व्रश्चयन्-त्री, व्रश्चितव्यम्, व्रष्टव्यम्, व्रश्चनीयम्, व्रश्च्यम्, वृक्णः, व्रश्चिष्यन्-व्रक्ष्यन् व्रश्चितुम्-व्रष्टुम्। व्रश्चित्वा, विवृश्च्य, वृक्षः, वृश्चिकः, वृक्णवान्, व्रश्चचः, व्रस्कः, मूलवृट्।

**( १२९३ ) व्यच—व्याजीकरणे**। (ठगना, फंसाना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.।

१ विचति। **ग्रहिज्येति** सम्प्रसारणम्। २ विव्याच विविचतुः। ३ व्यचिता। ४ व्यचिष्यति। ५ विचतु। ६ अविचत्। ७ विचेत्। ८ विच्यात्। ९ अव्याचीत्-अव्याचिष्टाम् अव्यचीत्-अव्यचिष्टाम्।

**कृत्सु**—व्याचकः-चिका, व्यचिता-त्री, व्याचयिता-त्री, विचन्-ती, विचिता-त्री, घञि-व्याचः, विचित्वा।

**( १२९४ ) उछि—उञ्छे**। (थोड़ा-थोड़ा एकत्र करना, थोड़ा थोड़ा बटोरना, बीनना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। उञ्छतीत्यादि भौवादिक (२१५) वत्। स्वरे विशेषः

**( १२९५ ) उच्छि—विवासे**। व्युच्छति इत्यादि (२१६) पूर्ववत्।

**( १२९६ ) ऋच्छ—गतीन्दियप्रलयमूर्तिभावेषु**। इन्द्रिय-प्रलयः = इन्द्रियनाशः। मूर्तिभावः = काठिन्यम्। (जाना, कठिन होना, इन्द्रिय का बलघट जाना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.।

१ ऋच्छति। २ **प्र.** आनर्च्छ आनर्च्छतुः आनर्च्छुः। **म.** आनर्च्छिथ। **उ.** आनर्च्छिव। ३ ऋच्छिता। ४ ऋच्छिष्यति। ५ ऋच्छतु। ६ आर्च्छत्। ७ ऋच्छेत्। ८ ऋर्च्छ्यात् ऋच्छ्यास्ताम्। ९ आर्च्छीत् आर्च्छिष्टाम्। १० आर्च्छिष्यत्। समृच्छते।

**भावे**—ऋच्छ्यते। **णिचि**—ऋच्छयति-ते। ९. आर्चिच्छत्-त। **सनि**—ऋचिच्छिषति। **कृत्सु**—ऋच्छकः-छिका, ऋच्छिता-त्री, ऋच्छयिता-त्री, ऋच्छन्-न्ती-ती, ऋच्छयन्-न्ती, ऋच्छिष्यन्-न्ती-ती, ऋच्छयिष्यन्-न्ती-ती, समृच्छमानः, ऋच्छयमानः, समृच्छिष्यमाणः, ऋच्छयिष्यमाणः, समृट्-समृड्-समृच्छौ-समृच्छः, ऋच्छितम्-तः, ऋच्छः, उपाच्छः, ऋचिच्छिषुः, ऋच्छितव्यम्, ऋच्छयितव्यम्, ऋच्छनीयम्, ऋच्छ्यम्, ऋच्छयमानः, ऋच्छः, ऋच्छितुम्, ऋच्छा, ऋच्छनम्, ऋच्छित्वा, समृच्छ्य।

**( १२९७ ) मिच्छ—उत्क्लेशे**। उत्क्लेशः = पीडा। (पीडा देना, कष्ट देना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। १ मिच्छति। २ मिमिच्छ। ४ मिच्छिष्यति। ९ अमिच्छीत्।

**(१२९८) जर्ज—परिभाषणहिंसातर्जनेषु** । (बोलना, हिंसा करना, ताड़ना करना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। जर्जति। जजर्ज। 'नदति' (५६) वत्।

**(१२९९-१३००) चर्च-झर्झ—परिभाषणभर्त्सनयोः** ।(बोलना, निन्दा करना, दोष लगाना, भयभीत करना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। चर्चति। झर्झति। इत्यादि 'नर्दति' (५६) वत्।

**(१३०१) त्वच—संवरणे** । (आच्छादित करना, ढांकना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। त्वचति। 'त्वगति' (१५०) वत्।

**कृत्सु**—त्वचनम्, त्वाचनम्, त्वक्तिः-त्वक्, त्वचना, त्वचितुम्, त्वाचयितुम्, त्वाचः, त्वच्यमानः, त्वाच्यमानः, त्वाच्यम्, त्वचनीयम्, त्वाचनीयम्, त्वचितव्यम्, त्वचः, त्वचितुम्-तः, त्वचितः, त्वाचयमानः, त्वचिष्यन्-न्ती-ती, त्वचन्-न्ती-ती, त्वाचयन्-त्वचयन्-न्ती, त्वचिता-त्री, त्वाचकः-चिका।

**(१३०२) ऋच—स्तुतौ** । (स्तुति करना, प्रार्थना करना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.।

१ ऋचति ऋचतः ऋचन्ति **प्र.** ऋच्वसि ऋचथः ऋचथ **म.** ऋचामि ऋचावः ऋचामः **उ.** २ आनर्च। ३ अर्चिता। ४ अर्चिष्यति। ५ ऋचतु-ऋच्यतात्। ६ आर्चत्। ७ ऋचेत्। ८ ऋच्यात्। ९ आर्चीत्। १० आर्चिष्यत्।

**कर्मणि**—ऋच्यते। **णिचि**—अर्चयति-ते। **सनि**—अर्चिचिषति। **कृत्सु**—अचर्कः-र्चिका, अर्चिता-त्री, अर्चयिता-त्री, ऋचन्-ती, अर्चयन्-न्ती, अर्चिष्यन्-न्ती-ती, अर्चयिष्यन्-न्ती-ती, अर्चयमानः, अर्चयिष्यमानः, ऋक्-ऋचौ-ऋचः, ऋचितम्-तः-तवान्, ऋचः अर्चः, अर्चितव्यम्, अर्चयितव्यम्, अर्चनीयम्, अर्च्यम्, ईषदर्चः, दुरर्चः, स्वर्चः, ऋच्यमानः, अर्च्यमानः, अर्चः, अर्चितुम्, ऋक्तिः, अर्चना, अर्चनम्, अर्चित्वा, अर्चयित्वा। समृच्य समर्च्य।

**(१३०३) उब्ज—आर्जवे** । (सीधी रीति से वर्ताव करना। अकर्म.। सेट्। परस्मै.। उब्जति। उब्जाञ्चकार। 'उज्झति' (१३०४) वत्।

**कृत्सु**—उब्जित्वा, समुब्ज्य, उब्जनम्, उब्जा, उब्जितुम्, उब्जः, उब्ज्यमानः, उब्जयम्, उब्जनीयम्, उब्जितव्यम्, उब्जितम्-तः-तवान्, उत्-उद्-उब्जौ उब्जः, उब्जिष्यन्-न्ती-ती, उब्जयिष्यन्, उब्जन्-उब्जती-न्ती, उब्जयन्-न्ती, उब्जिता-त्री, उब्जकः-जिका।

**(१३०४) उज्झ—उत्सर्गे** । (छोड़ना, त्यागना)। **प्र**—छूट जाना, मुक्त होना। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। १ उज्झति। २ उज्झाञ्चकार। ३ उज्झिता। ९ औज्झीत्।

**कर्मणि**—उज्झ्यते। **णिचि**—उज्झयति-ते। **सनि**—उजिज्झिषति। **कृत्सु**—उज्झितव्यः, उज्झित्वा, उज्झनीयः, उद्ध्यः-उज्झ्यः उज्झितः, उज्झन्, उज्झितुम्, उज्झनम्, समुज्झ्य।

**(१३०५) लुभ—विमोहने** । (मतिभ्रंश होना, भ्रान्त होना)। लोभ करना। सकर्म.। सेट्। परस्मै.।

१ लुभति। २ लुलोभ लुलुभतु। ३ लोभिता। **कृत्सु**—लोब्धा-ध्री, लोभकः-भिका, लोभयिता-त्री, निष्ठायाम्-विलुभितः, शतरि-लुभन्, क्त्वायां, लुभित्वा-लोभित्वा। लोभनीयम्, लुभितः।

**( १३०६ ) रिफ**—कत्थनयुद्धनिन्दाहिंसादानेषु। (बोलना, युद्ध करना, निन्दा करना, देना, दान देना)। सक.। सेट्। परस्मै.। रिफति। 'भिषति' (१३५२) वत्।

**( १३०७ ) तृप—तृप्तौ**। (तृप्त होना, प्रसन्न करना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.।

१ तृपति। २ **प्र.** ततर्प ततृपतुः **म.** ततर्पिथ ततृपथुः ततृप। **उ.** ततर्प ततृपिव ततृपिम। ३ तर्पिता। ४ तर्पिष्यति। ५ तृपतु। ६ अतृपत्। ७ तृपेत्। ८ तृप्यात्। ९ अतर्पीत्। १० अतर्पिष्यत्।

**कर्मणि**—तृप्यते। णिचि—तर्पयति-ते। ९. अतीतृपत्-अततर्पत्। **सनि**—तितर्पिषति। **यङि**—तरीतृप्यते। **यङ्लुकि**—तरितर्प्ति-तर्तर्प्ति-तरीतृपीति-तर्तृपीति। इत्यादि। **कृत्सु**—तर्पितव्यम्, तर्पणीयम्, तृप्यम्, तृपितः, तृपन्, तृपती-तृपन्ती, तर्पितुम्, तर्पणम्, तर्पित्वा, संतृप्य।

**( १३०८ ) तृम्फ—तृप्तौ**। (तृप्त होना, सन्तुष्ट होना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। १ तृम्फति। २ ततृम्फ। ३ तृम्फिता। ८ तृफ्यात्। ९ अतृम्फीत्। तृपति। (१३०७) वत्।

**( १३०९ ) तुप—हिंसायाम्**। (हिंसा करना, मारना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। तुपति 'कुच' धातुवत्।

**( १३१० ) तुम्प—हिंसायाम्**। सक.। सेट्। परस्मै.। तुम्पति पूर्ववत्।

**( १३११-१२ ) तुफ-तुम्फ—हिंसायाम्**। (मार डालना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। तुफति। तुम्फति। इत्यादि 'तुपति' गुम्फति वत्।

**( १३१३ ) दृप—उत्क्लेशे**। (पीडा करना, दुःख देना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। दृपति। 'तृपति' (१३०७) वत्।

**( १३१४ ) दृम्फ—उत्क्लेशे**। (पीडा करना, दुःख देना)। सक.। सेट्। परस्मै.। दृम्फति। 'तृम्फति' (१३०८) वत्।

**( १३१५ ) ऋफ—हिंसायाम्**। (हिंसा करना, मार डालना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। १. ऋफति। २. आनर्फ। 'ऋचति' (१३०२) वत्।

**कृत्सु**—ऋफ्यम्, अर्फणीयम्, अर्फितव्यम्, ऋफः, अर्फः, ऋफितम्-तः, ऋप्-ऋफौ-ऋफः, अर्फिष्यन्-न्ती-ती, ऋफन्-न्ती-ती, अर्फकः-र्फिका, अर्फिता-त्री, ऋफ्यमाणः, अर्फितुम्, ऋप्तिः, अर्फणम्, अर्फित्वा, समृफ्य।

**( १३१६ ) ऋम्फ—हिंसायाम्**। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। ऋम्फति। 'उब्जति' (१२९) वत्।

**कृत्सु**—ऋम्फकः-म्फिका, ऋम्फिता-त्री, ऋम्फन्-न्ती-ती, ऋम्फयन्-न्ती, ऋम्फिष्यन्-न्ती-ती, ऋप्-ऋब्-ऋम्फौ-ऋम्फः, ऋफितः-तम्, ऋम्फः, ऋम्फितव्यम्, ऋम्फयितव्यम्, ऋम्फणीयम्, ऋम्फयमाणः, ऋम्फः, ऋम्फितुम्, ऋम्फा, ऋम्फणा, ऋम्फणम्, ऋम्फित्वा।

**(१३१७) गुफ—ग्रन्थे**। (गूंथना, गुम्फन करना, रचना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। गुफति। 'कुचति' (१३६८) वत्।

**(१३१८) गुम्फ—ग्रन्थे**। (गूंथना, गुम्फन करना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। १ गुम्फति। २ जुगुम्फ। ३ गुम्फिता। ४ गुम्फिष्यति। ५ गुम्फतु। ६ अगुम्फत्। ७ गुम्फेत्। ८ गुफ्यात्। ९ अगुम्फीत्। १० अगुम्फिष्यत्।

**यङि**—जोगुम्फ्यते। **यङ्लुकि**—जोगुम्फीति-जोगुम्त। **कृत्सु**—गुफित्वा-गुम्फित्वा।

**(१३१९) उभ**—पूरणे। (भरना, पूर्ण करना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। १ उभति। ३ उवोभ ऊभतुः। **म.** उवोविथ। **उ.** उवोभ ऊभिव ऊभिम। ५ उभतु। ६ औभत्। ७ ऊभेत्। 'इख' धातु वत्। उभौ।

**(१३२०) उम्भ—पूरणे**। (भरना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। उम्भति। उम्भाञ्चकार। इखि धातुवत्।

**(१३२१) शुभ—शोभार्थे**। (सुन्दर होना, शोभायमान होना)। अक.। सेट्। परस्मै.। शुभति। कुच धातुवत्।

**(१३२२) शुम्भ—शोभार्थे**। (सुन्दर होना, शोभायमान होना)। अक.। सेट्। परस्मै.। शुम्भति, शुशुम्भ। कुञ्चति (१८५) वत्।

**कृत्सु**—शुम्भकः-शुम्भिका, शुम्भिता-त्री, शुम्भयिता-त्री, शुम्भन्-न्ती, शुम्भयन्-न्ती, शुम्भिष्यन्-न्ती-ती, शुम्भयिष्यन्-न्ती-ती, शुम्भयमानः, शुम्भयिष्यमाणः, शुम्भितव्यम्, शुम्भयितव्यम्, शुम्भनीयम्, शुम्भित्वा, शुम्भयित्वा।

**(१३२३) दृभी**—ग्रन्थे। (गूंथना, रचना)। सक.। सेट्। पर.। दृभति। 'तृपति' (१३०७) वत्। दृब्धः।

**(१३२४) चृती**—हिंसाग्रन्थनयोः। (पीडा देना, मार डालना, एकत्र करके बांधना, गूंथना)। सकर्म.। सेट्। पर.।

१ चृतति। २ चचर्त चचृततुः। ३ चर्तिता। **सेऽसिचि कृतचृते**— तीड्विकल्पः। ४ चर्त्स्यति चर्तिष्यति। ५ चृततु। ६ अचृतद्। ७ चृतेत्। ८ चृत्यात्। ९ अचर्तीत्। १० अचर्तिष्यत्।

**कृत्सु**—चर्तकः[१]-चर्तिका, चिचर्तिषकः-षिका, चिचृत्सकः-त्सिका, चरीचृतकः-तिका,

१ 'पुगन्तलघूपदस्य च' (७-३-८६) इति गुणः। एवं क्ङिद्भिन्ने लघूपधगुणो बोध्यः। एवं ण्यन्ते सर्वत्र गुणो ज्ञेयः।

चर्तिता-त्री, चर्तयिता-त्री, चृतन्[1]-न्ती-ती, चर्तयन्-न्ती, चर्तिष्यन्-चर्त्स्यन्-न्ती-ती, चर्तयिष्यन्-न्ती-ती, चर्तयमानः, चृत्-चृतौ-चृतः, चृतम्-चृतः-चृतवान्, चर्तः, चर्तितव्यम्, चर्तयितव्यम्, चर्तनीयम्, चर्त्यम्,[2] चृत्यमानः, चर्तः, चर्तितुम्, चर्तयितुम्, चृतिः, चर्तना, चर्तित्वा, चर्तयित्वा।

**( १३२५ ) विध—विधाने**। (विधान करना, नियम बनाना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। विधति। 'लिखति' (१३६५) वत्।

**कृत्सु**—वेधकः-धिका, वेधिता-त्री, वेधयिता-त्री, विविधिषकः[3]-विविधिषकः-षिका, वेधिता-त्री एवं सर्वाणि रूपाणि तौदादिककिलति धातुवत्।

**( १३२६ ) जुड—बन्धने गतौ**। (जाना, बांधना)। सेट्। परस्मै.। कुटादिः। जुडति। कुचधातुवत्।

**( १३२७ ) मृड—सुखने**। (सुख देना, प्रसन्न करना, सुखी होना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। मृडति। ममर्ड। मर्डिता। इत्यादि 'तृपति' (१३०७) वत्।

**कृत्सु**—मर्डकः-र्डिका, मर्डिता-त्री, मर्डयिता, मृडः[4]-मृडानी, क्तिनि-मृढिः[5], मृडित्वा[6]।

**( १३२८ ) पृड—सुखने**। (सुख देना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। पृडति। पपर्ड। 'तृपति' (१३०७) वत्।

**( १३२९ ) पृण—प्रीणने**। (आनन्द करना, सन्तोष पाना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। पृणाति। 'तृपति' (१३०७) वत्। पर्णकः-र्णिका।

**( १३३० ) वृण—प्रीणने**। (आनन्द करना, सन्तोष करना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। वृणति। ववर्ण। 'तृपति' (१३०७) वत्।

**( १३३१ ) मृण—हिंसायाम्**। (मार डालना)। सकर्म.। सेट्। पर.। मृणति। 'तृपति' (१३०७) वत्।

**कृत्सु**—मर्णकः-र्णिका, मर्णिता-त्री, मर्णयिता, मर्णिष्यन्-न्ती-ती, मर्णितव्यम्, मर्णनीयम्, मृण्यम्, मृण्यमानः, मृणम्, मर्णितुम्, मर्णनम्, मृणालम्[7]।

१ 'तुदादिभ्यः—' (३-१-७७) इति शः। तस्य ङिद्वदभावादङ्गस्य गुणो न। स्त्रियाम् 'आच्छीनद्योर्नुम्' (७-१-८०) इति नुम्विकल्पः।

२ 'ऋदुपधाच्चाक्लृपि चृतेः' (३-१-११०) इत्यत्र 'अचृतेः' इति पर्युदासात् 'ऋहलोर्ण्यत्' (३-१-१२४) इति ण्यति 'चर्त्यम्' इति भवति।

३ 'रलो व्युपधात्—' (१-२-२६) इति सनः क्त्वाप्रत्ययस्य च कित्वविकल्पः तेन क्त्वाप्रत्ययेऽपि विधित्वा वेधित्वा इति रूपद्वयं भवति।

४ 'इगुपधज्ञा—' (३-१-१३५) इति कर्तरि कप्रत्यये रूपम्। मृडस्य स्त्री इति विवक्षायां 'इन्द्रवरुण-भवशर्वरुद्रमृड—' (४-१-४९) इत्यादिना पुंयोगे ङिषि आनुगागमे मृडानी इति रूपं भवति।

५ 'तितुत्र—' (७-२-९) इतीण्निषेधे ढत्वे ष्टुत्वे च रूपमेव।

६ 'मृडमृड—' (१-२-७) इति सेटः क्त्वायाः कित्वात् गुणनिषेधे रूपमेवम्। 'न क्त्वा सेट्' (१-२-१८) इत्यस्य प्रतिषेधः।

७ 'तमिब्रिडिविलिमृणि—' इत्यादिना कालच् प्रत्यये रूपम्। मृणालम् = बिसम्।

**(१३३२) तुण**—कौटिल्ये। (टेढा होना, वक्र होना, बुरी नीति से वर्तना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.। तुणति कुच् धातुवत्। क्विपि-प्रतूण-प्रतूणो-प्रतूणः, शतरि-तुणन्-न्ती-ती। घञि-तोणः।

**(१३३३) पुण**—कर्मणिशुभे। (पवित्र होना, शुद्ध होना, धार्मिक कार्य करना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.। पुणति। कुच् धातुवत्।

**कृत्सु**—पोणकः-णिका, पोणिता-त्री, पोणयिता-त्री, पुणन्[1]-न्ती-ती, पोणयन्-न्ती, पोणिष्यन्-न्ती-ती, पोणयिष्यन्-न्ती-ती, पोणयमाणः, पुण्यम्[2]-पोण्यम्, पुण्यमानः, पोण्यमानः, पोणः, पोणितुम्, पोणयितुम्, पुणितिः,[3] पोणना, पोणनम्, पुणित्वा-पोणित्वा, पोणयित्वा, प्रपुण्य, प्रपोण्य, पुण्डरीकम्[4]।

**(१३३४) मुण**—**प्रतिज्ञाने**। (प्रण करना, वचन देना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। मुणति। कुच् धातुवत्।

**(१३३५) कुण**—**शब्दोपकरणयोः**। (शब्द करना, दानादिक से संरक्षण करना, संभालना)। अकर्म।. सेट्। परस्मै.। कुणति। २ चुकोण। ९ अकोणीत्। १० अकोणिष्यत्। इत्यादि। 'कुचति' (१३६८) वत्। कोणो वीणादिवादनम्।

**(१३३६) शुन**—**गतौ**। (जाना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। शुनति। 'कुचति' (१३६८) वत्। शोनकः-निका, औणादिके क्वुन्प्रत्यये शुनकः, शुनासीरः।

**(१३३७) तुण**—**हिंसागतिकौटिल्येषु**। (हिंसा करना, टेढा होना, वक्र होना, जाना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। १ तुणति। २ तुतोण। ३ तोणिता। 'कुचति' (१३६८) वत्।

**(१३३८) घुण**—**भ्रमणे**। (घूमना, भ्रमण करना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.। घुणति। जुघोण। घोणिता। 'कुचति' (१३६८) वत्।

**(१३३९) घूर्ण**—**भ्रमणे**। (घूमना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.। घूर्णति। २ जुघूर्ण। ३ घूर्णिता। ४ घूर्णिष्यति। ५ घूर्णतु। ६ अघूर्णत्। ७ घूर्णेत्। ८ घूर्ण्यात्। ९ अघूर्णीत्। १० अघूर्णिष्यत्।

**भावे**—घूर्ण्यते। ९ अघूर्णि। **णिचि**—घूर्णयति-ते। ९ अजुघूर्णत्। **सनि**—जुघूर्णिषति-ते। **कृत्सु**—घूर्णनीयम्, घूर्णनम्, घूर्णः, घूर्णकः, घूर्णी, घूर्णिता, घूर्णितः, घूर्णा, घूर्णितम्, घूर्णितव्यम्, घूर्णित्वा, सङ्घूर्ण्य, घूर्ण्यम्, घूर्णमानः, घूर्णिष्यन्-ष्यमाणः।

**(१३४०) खुर**—**ऐश्वर्यदीप्त्योः**। (ऐश्वर्यवान् होना, प्रकाशित होना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। खुरति। कुच् धातु वत्।

---

१ 'तुदादिभ्यः शः (३-१-७७) इति कर्तरि शप्रत्ययः। 'आच्छीनद्योर्नुम्' (७-१-८०) इति नुम् वा भवति।

२ 'जनिकृतिपुणिभ्यः क्यप्' इति भोजोक्तेः क्यप् भवति।

३ 'तितुत्रेष्वग्रहादीनाम्—' (वा. ७-२-९) इतीट् भवति।

४ 'पुण' इत्यस्य धातोर्णकारस्य डकारे, डप्रत्ययस्य रुडागमे च एवं रूमम्। 'पुण्डरीकं सिताम्भोजे सितच्छत्रे च भेषजे। पुंसि व्याघ्रेऽग्निदिङ् नागे कोशकारान्तरेऽपि च इति मेदिनी।

**( १३४१ ) कुर—शब्दे**। (शब्द करना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.। कुरति। ८. कूर्यात्।

**कृत्सु**—कुरन्[१]-न्ती-ती, कोरयन्-न्ती, कोरकः-रिका, कोरिता-त्री, कोरयिता-त्री, कोरिष्यन्-न्ती-ती, कोरयिष्यन्-न्ती-ती, व्यतिकुरमाणः[२], कोरयमाणः, व्यतिकोरिष्यमाणः, कोरयिष्यमाणः, कूः[३]-कुरौ-कुरः, कुरितम्-तः, कोरितः, कुरः, कोरणः, कोरः, कोरणीयम्, कूर्यम्, कोर्यम्, कुरितुम्, कोरयितुम्, कुरित्वा, कोरित्वा, दुष्कोरः, सुकोरः, विकीर्य।

**( १३४२ ) खुर—छेदने**। (काटना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। खुरति 'कुचति' कुच् धातुवत्। खुरः।

**( १३४३ ) मुर—संवेष्टने**। (घेरना, लपेटना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। १ मुरति। २ मुमोर। ३ मोरिता। ९ अमोरीत्। कुच् धातुवत्।

**कृत्सु**—मोरकः-रिका, मोरिता-त्री, मोरयिता-त्री, मुरन्-न्ती-ती, मोरयन्-न्ती, मोरिष्यन्-न्ती-ती, मोरयिष्यन्, मुरितम्-तः, मोरितः, मोरित्वा, मोर्यम्, मोरितुम्, मोरित्वा, मुरणीयम्, मोरणीयम्, मूः-मुरौ-मुरः, मुरः[४]-मुरा, मुरी[५]।

**( १३४४ ) क्षुर—विलेखने**। (कतरना, चीरना, छेदना, लकीर खीचना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। १ क्षुरति। २ चुक्षोर। ६ अक्षोरीत्। ८ क्षुर्यात्।

**कृत्सु**—क्षुरः, क्षुरिणो क्षुरकः।

**( १३४५ ) घुर—भीमार्थशब्दयोः**। (भयङ्कर होना, शब्द करना, आवाज करना, धुर्राना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.। घुरति। कुच्-संकोचने वत्।

**( १३४६ ) पुर—अग्रगमने**। (अग्रभाम में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.। पुरति। 'कुच' धातुवत्। ८ पूर्यात्। पुरम्, पुरुषः, पुरुषः।

**( १३४७ ) वृहू—उद्यमने**। (यत्न करना)। सकर्म.। वेट्। परस्मै.। वृहति। वर्हिता। इत्यादि तृहू धातुवत्।

**कृत्सु**—वर्हिकः-र्हिका, विवर्हिषकः, वर्हिता-त्री, वर्हयिता-त्री, वृहन्-ती, वर्हिष्यन्, वृहितम्-तः-तवान्, वर्हितव्यम्, वर्हणीयम्, वर्हितुम्, वर्हणम्, वृढः-वृढवान्, वर्हित्वा-वृढ्वा।

**( १३४८ ) तृहू—हिंसायाम्**। (मार डालना, दुःख देना)। सकर्म.। वेट्। परस्मै.। ऊदित्। १ तृहति। २ **प्र.** ततर्ह। **म.** ततर्हिथ-ततर्ढ। **उ.** ततृहिव-ततृह्व। ३ तर्हिता-तर्ढा। ४ तर्हिष्यति-तर्क्ष्यति। ९ अतर्हीत्-अताक्षीत्-अतृक्षत्।

१ 'तुदादिभ्यः शः' (३-१-७७) इति शः। 'आच्छीनद्योर्नुम्' (७-१-८०) इति नुम्।
२ 'कर्तरि कर्मव्यतिहारे' (१-३-१४) इति शानच्।
३ 'र्वोरुपधाया दीर्घ इकः' (८-२-७६) इति दीर्घे, विसर्गः।
४ 'इगुपधज्ञाप्रीकिरः कः' (३-१-१३५) इति कर्तरि क प्रत्ययः मुरा = औषधविशेषः।
५ गौरादिपाठात् (४-१-४१) स्त्रियां ङीषि रूपमेवम्।

**कृत्सु**—तर्हकः-र्हिका, तर्हिता-त्री, तर्ढा-ढ्री, तर्हयिता-त्री, व्यतितृहन्-न्ती-ती, तर्हयमाणः, तृढम्[१]-तृढः-तृढः-वान्, तर्हितः, प्रतर्ही, तर्हः, तर्हितव्यम्-तर्ढव्यम्, तर्हयितव्यम्, तर्हणीयम्, तृह्यम्, तृह्यमाणः, तर्ह्यमाणः, तर्हितुम्, तर्ढुम्, तृढिः, तर्हणा, तर्हणम्, तर्हित्वा, तृढ्वा,[२] प्रतृह्य, प्रतर्ह्य।

**( १३४९ ) स्तृहू—हिंसायाम्**। (मार डालना, दुःख देना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। स्तृहति। इत्यादि। 'तृहति' (१३४८) वत्।

**( १३५० ) तृन्हू—हिंसायाम्**। मार डालना, दुःख देना। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। तृन्हति। इत्यादि 'तृहति' (१३४८) वत्।

**( १३५१ ) इष—इच्छायाम्**। (इच्छा करना, चाहना)। **अनु**—ढूढना, **प्रति**—ग्रहण करना, लेना। सकर्म.। सेट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | इच्छति[३] | इच्छतः | इच्छन्ति | प्र. |
| | इच्छसि | इच्छथः | इच्छथ | म. |
| | इच्छामि | इच्छावः | इच्छामः | उ. |
| लिट् | इयेष | ईषतुः[४] | ईषुः | प्र. |
| | इयेषिथ | ईषथुः | ईष | म. |
| | ईयेष | ईषिव | ईषम | उ. |
| लुट् | एषिता-एष्टा | एषितारौ-एष्टारौ | एषितारः-एष्टारः | प्र. |
| | एषितासि-एष्टासि | एषितास्थः-एष्टास्थः | एषितास्थः-एष्टास्थ | म. |
| | एषितास्मि-एष्टास्मि | एषितास्वः-एष्टास्वः | एषितास्मः-एष्टास्मः | उ. |
| लृट् | एधिष्यति | एधिष्यतः | एधिष्यन्ति | प्र. |
| | एधिष्यसि | एधिष्यथः | एधिष्यथ | म. |
| | एधिष्यामि | एधिष्यावः | एधिष्यामः | उ. |
| लोट् | इच्छतु-इच्छतात् | इच्छताम् | इच्छन्तु | प्र. |
| | इच्छ-इच्छतात् | इच्छतम् | इच्छत | म. |
| | इच्छानि | इच्छाव | इच्छाम | उ. |
| लङ् | ऐच्छत् | ऐच्छताम् | ऐच्छन् | प्र. |
| | ऐच्छः | ऐच्छतम् | ऐच्छत | म. |
| | ऐच्छम् | ऐच्छाव | ऐच्छाम | उ. |
| वि. लि. | इच्छेत् | इच्छेताम् | इच्छेयुः | प्र. |
| | इच्छेः | इच्छेतम् | इच्छेत | म. |
| | इच्छेयम् | इच्छेव | इच्छेम | उ. |

१ ऊदित्वेमेनेड्विकल्पनात् निष्ठायाम् 'यस्य विभाषा' (७-२-१५) इतीण्णिषेधे, ढत्वादिकं भवति।
२ इट्पक्षे 'न क्त्वा सेट्' (१-२-१८) इति कित्वनिषेधात् गुणो भवति।
३ 'इषुगमि यमां छः। (७-३-७७) इति छत्वम्।
४ इ इष्=अतुस् इत्यत्र अतुस अपित्वेन कित्वात् गुणाभावे सवर्णदीर्घे रूपम्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आ. लि. | इष्यात् | इष्यास्ताम् | इष्यासुः | प्र. |
| | इष्याः | इष्यास्तम् | इष्यास्त | म. |
| | इष्यासम् | इष्यास्व | इष्यास्म | उ. |
| लुङ् | ऐषीत् | ऐषिष्टाम् | ऐषिषुः | प्र. |
| | ऐषीः | ऐषिष्टम् | ऐषिष्ट | म. |
| | ऐषिषम् | ऐषिष्व | ऐषिष्म | उ. |
| लृङ् | ऐषिष्यत् | ऐषिष्यताम् | ऐषिष्यन् | प्र. |
| | ऐषिष्यः | ऐषिष्यतम् | ऐषिष्यत | म. |
| | ऐषिष्यम् | ऐषिष्याव | ऐषिष्याम | उ. |

**कर्मणि**—इष्यते। **णिचि**—एषयति-ते। **सनि**—एषिषिषति। **कृत्सु**—एषकः-षिका, एष्टा[1]-ष्ट्री, एषिता-त्री, इच्छन्-न्ती-ती, एषिष्यन्-न्ती-ती, इट्[2]-इड्-इषौ-इषः, इष्टः[3]-ष्टम्-ष्टवान्, इषः, एषः, इच्छुः[4], शरणैषी[5], एष्टव्यम्, ऐषितव्यम्, एषणीयम्, एष्यम्, इष्यमाणः, एष्टुम्-एषितुम्, इष्टिः, इच्छा, एषणम्, एषणी, एषित्वा-इष्ट्वा, प्रेष्य, एषम्, इष्टका।

**( १३५२ ) मिष—स्पर्द्धायाम्**। (स्पर्धा करना, होड़ लगाना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.।

१ मिषति। २ मिमेष मिमिषतुः। म. मिमेषिथ। ३ मेषिता। इत्यादि 'लिखति' (१३६५) वत्। निमेषः-निमिषः मेषः-मेषी।

**( १३५३ ) किल—श्वैत्यक्रीडनयोः**। (सफेद होना, खेलना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.। किलति। चिकेल चिकिलतुः। 'चेटति' (३१५) वत्।

**कृत्सु**—केलकः-केलिता-त्री, केलयिता-त्री, किलन्-न्ती-ती, केलयन्-न्ती, केलिष्यन्-न्ती-ती, केलयिष्यन्-न्ती-ती, केलयमानः, केलयिष्यमाणः, किल्-किलौ-किलः, किलितम्-तः, केलितः-तम्, किलः, केलः, कीलः, केलितव्यम्, केलनीयम्, केल्यम्, किल्यमानः, केल्यमानः, केलः, केलितुम्, केलयितुम्, किल्तिः, केलना, केलनम्, किलित्वा-केलित्वा, संकिल्य, प्रकेल्य। केलिः-केली।

**( १३५४ ) तिल—स्नेहने**। (तेल लगाना, स्निग्ध होना, चिकना होना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.। तिलति। मिलति (१४२९) वत्।

**कृत्सु**—तेलकः-लिका, तेलिता-त्री, तेलयिता-त्री, कर्तरि क प्रत्ययः तिलः।

**( १३५५ ) चिल—वसने**। (कपड़े पहनना)। सकर्म. सेट्। चिलति, चिचेल। शेषं 'किल्' धातुवत्। चेलकः-लिका, चेलः = वस्त्रम्। गर्हिता ब्राह्मणी[6] = ब्राह्मणि चेली।

---

१ 'तीषसह–' (७-२-८४) इति तादेरार्धधातुकस्य इड्विकल्पः।
२ झलां जशोऽन्ते' (८-२-३९) इति जश्त्वम्। चर्त्वविकल्पः।
३ 'यस्य विभाषा' (७-२-१५) इतीण्णाषेधः।
४ 'बिन्दुरिच्छुः' (३-२-१६९) इति तच्छीलादिषु उप्रत्ययः छकारश्च निपातितः।
५ 'सुप्यजातौ–' (३-२-७८) इति णिनिः।
६ घरूपकल्पप्चेलड्ब्रुव– (६-३-४३) इति पूर्व पदस्य ह्रस्वः चेलडादयः वृत्ति विषये निन्दा द्योतकाः।

**( १३५६ ) चल—विलसने**। (खेलना, क्रीडा करना) सकर्म.। सेट्। परस्मै.। चलति। पूर्ववत्। स्वरे विशेषः

**( १३५७ ) इल—स्वप्नक्षेपणयोः** । (सोना, नींद लेना, फेंकना, उड़ाना, बिखेरना)। स्वप्नेऽकर्मकः। क्षेपणे सकर्म.। सेट्। परस्मै.।

१ इलति। २ प्र. इयेल इलतुः इलुः। म. इयेलिथ ईलथुः। उ. इयेल ईलिव ईलिम। ३ एलिता। ४ एलिष्यति। ५ इलतु। ६ ऐलत्। ७ इलेत्। ८ इल्यात्। ९ ऐलीत्।

**कृत्सु**—एलकः-लिका, एलिता-त्री, इलन्[1]-न्ती-ती, एलयन्-न्ती, एलिष्यन्-न्ती-ती, इल्-इलौ-इलः। इलितम्-तः, इलः[2], इला, एलः, एलितव्यम्, एलयितव्यम्, एलनीयम्, एल्यम्, इषदेलः, दुरेलः, स्वेलः, इल्यमानः, एलितुम्, एलयितुम्, इल्तिः, इलितिः, एलना, एलनम्, एलित्वा, एलयित्वा, समिल्य, समेल्य। इली छुरिकापीठम्। इला = पृथिवी।

**( १३५८ ) विल—सम्बरणे**। (वस्त्र पहिनना, ओढ़ना, छिद्र करना, चीरना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। विलति। 'लिखति' (१३६५) वत्। अविलम् = कलुषम्।

**( १३५९ ) बिल्ल—भेदने**। (भेदन करना, छेद करना।) बिलन्ति।

**( १३६० ) णिल—गहने**। (कुछ का कुछ समझना, घना होना, जमना, छिप जाना। दुर्बोध होना)। सक.। सेट्। परस्मै।. निलति। 'लिखति' (१३६५) वत्। नेलकः-प्रणेलकः-लिका, निलितम्-तः-तवान्। निलति शास्त्रं कुधीः।

**( १३६१ ) हिल—भावकरणे**। भावकरणम् = अभिप्रायसूचनम्। हेला = परविषयकानादरूपभावसूचनम्। भिदादिपाठात् अङ्। गुणो बाहुलकात्। (हाव भाव करना, नखरा करना, लीला करना, क्रीड़ा करना)। सक.। सेट्। परस्मै.। हिलति। जिहेल। 'लिखति' (१३६५) वत्।

**( १३६२-१३६३ ) शिल-षिल—उञ्छे**। (बीनना, एक एक करके बीनना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। शिलति, सिलति। 'लिखति' (१३६५) वत्।

**( १३६४ ) मिल—श्लेषणे**। (मिलना, संयुक्त होना, जुड़ना)। सक.। सेट्। उभय.। मिलति। मिलते।

**( १३६५ ) लिख—**अक्षरविन्यासे। (लिखना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | लिखति | लिखतः | लिखन्ति | प्र. |
| | लिखसि | लिखथः | लिखथ | म. |
| | लिखामि | लिखावः | लिखामः | उ. |

१ 'तुदादिभ्यः शः' (३-१-७७) इति शः 'सार्वधातुकमपित्' (१-२-४) इति शस्य ङिद् वद् भावाल्लघूपधगुणो न।

२ 'इगुपधज्ञाप्रीकिरः कः' (३-१-१३५) इति कर्तरि कः। टाप् स्त्रियाम्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लिट् | लिलेख | लिलिखतुः | लिलिखुः | प्र. |
| | लिलेखिथ | लिलिखथुः | लिलख | म. |
| | लिलेख | लिलिखिव | लिलिखिम | उ. |
| लुट् | लेखिता | लेखितारौ | लेखितारः | प्र. |
| | लेखितासि | लेखितास्थः | लेखितास्थ | म. |
| | लेखितास्मि | लेखितास्वः | लेखितास्मः | उ. |
| लृट् | लेखिष्यति | लेखिष्यतः | लेखिष्यन्ति | प्र. |
| | लेखिष्यसि | लेखिष्यथः | लेखिष्यथ | म. |
| | लेखिष्यामि | लेखिष्यावः | लेखिष्यामः | उ. |
| लोट् | लिखतु-लिखतात् | लिखताम् | लिखन्तु | प्र. |
| | लिख-लिखतात् | लिखतम् | लिखत | म. |
| | लिखानि | लिखाव | लिखाम | उ. |
| लङ् | अलिखत् | अलिखताम् | अलिखन् | प्र. |
| | अलिखः | अलिखतम् | अलिखत | म. |
| | अलिखम् | अलिखाव | अलिखाम | उ. |
| वि. लि. | लिखेत् | लिखेताम् | लिखेयुः | प्र. |
| | लिखेः | लिखेतम् | लिखेत | म. |
| | लिखेयम् | लिखेव | लिखेम | उ. |
| आ. लि. | लिख्यात् | लिख्यास्ताम् | लिख्यासुः | प्र. |
| | लिख्याः | लिख्यास्तम् | लिख्यास्त | म. |
| | लिख्यासम् | लिख्यास्व | लिख्यास्म | उ. |
| लुङ् | अलेखीत् | अलेखिष्टाम् | अलेखिषुः | प्र. |
| | अलेखीः | अलेखिष्टम् | अलेखिष्ट | म. |
| | अलेखिषम् | अलेखिष्व | अलेखिष्म | उ. |
| लृङ् | अलेखिष्यत् | अलेखिष्यताम् | अलेखिष्यन् | प्र. |
| | अलेखिष्यः | अलेखिष्यतम् | अलेखिष्यत | म. |
| | अलेखिष्यम् | अलेखिष्याव | अलेखिष्याम | उ. |

**कर्मणि**—लिख्यते। **णिचि**—लेखयति। **सनि**—लिलेखिषति-लिलिखिषति। **यङि**—लेलिख्यते। **यङ्लुकि**—लेलिखीति-लेलेक्ति। **कृत्सु**—लेखकः-खिका, लेखिता-त्री, लेखयिता-त्री, लिखन्-न्ती-ती, लेखयन्-न्ती, लेखिष्यन्-न्ती, लेखयमानः, लेखयिष्यमाणः, लिखितम्-तः, लेखितः-तम्, लेखितव्यम्, लेखयितव्यम्, लेखनीयम्, लेख्यम्, लेखितुम्, लेखनम्, लिखित्वा, लेखयित्वा, संलिख्य, लेखः, विलेखनः, लेखनी[1], हृल्लेखः[2],

१ ल्युडन्तात् स्त्रियां टित्वेन ङीपि रूपमेव।

२ हृदयं लिखतीति हृल्लेखः 'कर्मण्यण्' (३-२-१) इत्यणि, 'हृदयस्य हृल्लेख–' (६-३-५०) इति हृदयशब्दस्य 'हृत्' इत्यादेशः

विलेखी[1]-व्यालेखी, लेखा[2]-रेखा, दन्तलेखकः[3], लिखापयति। **उत्** = उल्लेखे, उल्लेखः। उल्लिखति। **वि** = चित्रीकरणम्।

(१३६६) **कुट—कौटिल्ये**। (टेढा होना, उगना, फंसाना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.। कुटादिः। कुटति। चुकोट चुकुटतुः। कुच सङ्कोचने वत्। कुट्मलम्, कोटरः, कुटिलम्, कुटी, ह्रस्वा कुटी, कुटीरः।

(१३६७) **पुट—संश्लेषणे**। (आलिङ्गन करना, गले लगाना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। कुटादिः। पुटति। कुच-सङ्कोचने वत्। पुटः, पुटिका, पोटकः, पुटिता-त्री, प्रपुतितम्-तः-तवान्।

(१३६८) **कुच—सङ्कोचने**। सङ्कोचो ह्रस्वीभावः। (आकुञ्चित होना या करना, **आ**—आकुञ्चित करना या होना, **सम्**—संकुचित करना या होना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.। कुटादिः। प्रायेणायं सम्पूर्णः प्रयुज्यते।

१ संकुचति। २ **प्र.** सञ्चुकोच सञ्चुकुचतुः **म.** सञ्चुकुचिथ। ३ संकुचिता। ४ संकुचतु। ५ समकुचत्। ६ संकुचेत्। ८ संकुच्यात्।

**कृत्सु**—संकोचकः-चिका, संकुचिता-त्री, संकुचन्-न्ती-ती, संकुचिष्यन्, कुक्-कुचौ-कुचः, संकुचितम्-तः, तवान्, संकुचितव्यम्, संकुचनीयम्, संकुच्यमानः, संङ्कोचः, संकुचितुम्, निकुचितिः, संकोचनम्-कुचनम्, कुचित्वा, सङ्कुच्य।

(१३६९) **गुज—शब्दे**। (शब्द करना, गुञ्जारव करना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.। कुटादिः। गुजति। ५. जुगोच। 'कुचति' (१३६८) वत्।

(१३७०) **गुड—रक्षायाम्**। (संरक्षण करना, बनाना)। सक.। सेट्। परस्मै.। कुटादिः। गुडति। जुगोड। 'कुचति' (१३६८) वत्। गुडः = इक्षु-विकारः।

(१३७१) **डिप—क्षेपे**। (फेंकना, उड़ाना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। कुटादिः। डिपति। २. डिडेप। इत्यादि।

(१३७२) **छुर—छेदने**। (कतरना, तोड़ना)। सकर्म. सेट्। परस्मै.। कुटादिः। छुरति। 'कुचति' (१३६५) वत्।

**कृत्सु**—छोरकः-रिका, छोरिती-त्री, चुच्छुरिषकः-षिका, चोच्छुरकः-रिका, छुरिका, छुरितम्, आच्छुरितकम् सोत्रासो हासः।

(१३७३) **स्फुट—विकसने**। (खिलना, प्रफुल्लित होना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.।

---

१ कर्मणि व्यतिहारे णचि, 'णचस्त्रियाम्— (५-४-१४) इत्यपि ङीपि रूपमेव।

२ 'भिदादि' (३-३-१०४) पाठादङि रूपमेव। तत्रैव गणे पाठात् लकारस्य पाक्षिको रेफादेशश्च। तेन रेखा इत्यपि साधुः

३ दन्तस्य लेखकः दन्तलेखकः 'नित्यं क्रीडाजीवकयोः' (२-२-१७) इति षठ्यन्तस्य दन्तशब्दस्य अकारान्तेन लेखकशब्देन तत्पुरुषसमासः। यस्य गजवाराहादिदन्तेषु चित्रं विलिख्य तन्मूलिका जीविका तत्रैवायं — जीविकार्थे समासः।

कुटादिः। १ स्फुटति। २ **प्र.** पुस्पोठ पुस्फुटतुः। **म.** पुस्फुटिथ। ३ स्फुटिता, ८ स्फुट्यत्। ९ अस्फुटीत्।

**भावे**—स्फुट्यते। **णिचि**—स्फोटयति। अस्फुटत्। **सनि**—पुस्फुटिषति। **यङि**—पोस्फुट्यते। **यङ्लुकि**—पोस्फोट्टि-पोस्फुटीति। **कृत्सु**—स्फोटकः-टिका, स्फोटिता-त्री, स्फुटन्-न्ती, स्फोटयन्-न्ती, स्फोटितम्-तः, स्पोटयमानः, स्फोटयिष्यमाणः, स्फुटितव्यम्, स्फोटयितव्यम्, स्फोटनीयम्, दुस्फुटः-सुस्फुटः, स्फुटितुम्, स्फोटयितुम्, स्फुटित्वा, स्फोटयित्वा, स्फुटनम्। अस्य धातोः कुटादित्वाम्, '**रलोव्युपधात्**–' (१-२-२६) इति सन्नन्ते कित्वविकल्पो न। ण्मुलि अङ्गुलिस्फोटम्। स्फोटः = शाब्दिकसमतं शब्दस्वरूपम्, रोगविशेषश्च।

**(१३७४) मुट—आक्षेपमर्दनयोः**। (निन्दा करना, दोष देना, मर्दन करना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। कुटादिः। मुटति। मुमोट। 'कुचति' (१३६८) वत्। मोटकः-टिका, मुटिता-त्री, मोटयिता-त्री।

**(१३७५) त्रुट—छेदने**। (छेद करना, कतरना, तोड़ना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। कुटादिः।

१ त्रुट्यति[१]-त्रुटति। २ **प्र.** तुत्रोट तुत्रुटतुः **म.** तुत्रुटिथ। ३ त्रुटिता। ४ त्रुटिष्यति। ५ त्रुट्यतु-त्रुटतु। ६ अत्रुट्यत्-अत्रुटत्। ७ त्रुट्येत्-त्रुटेत्। ८ त्रुट्यात्। ९ अत्रुटीत्।

**कृत्सु**—त्रोटकः-टिका, त्रुट्यन्-त्रुटन्-न्ती, त्रोटयन्-न्ती, त्रुटनीयम्, त्रोटनीयम्, त्रुटितव्यम्, त्रोट्यम्, त्रुटितुम्, त्रुटनम्। वित्रुट्य।

**(१३७६) तुट—कलहकर्मणि**। कलहकर्म = विवादः। (विवाद करना, झगड़ा करना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। कुटादिः। तुटति। 'कुचति' (१३६८) वत्। तुटिः।

**(१३७७-७८) चुट-छुट—छेदने**। (छेदा करना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। चुटति। छुटति। चुचोट। छुछोट। 'कुचति' (१३६८) वत्।

**(१३७९) जुट—बन्धने**। (बांधना, जोड़ना)। सकर्म. सेट्। परस्मै.। १ जुटति। २ जुजोट। ३ जोटिता। ९ अजोटीत्। १० अजोटिष्यन्। जोटकः-टिका, जुटिता-त्री, जोटयिता-त्री, टुड-बन्धने, इत्यपि केचित् पठन्ति। जुडति। जुजोट इत्यादि।

**(१३८०) कड—मदे**। (दुःख वा आनन्द में लीन होना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। कडति। चकाड। इत्यादि। 'गदति' (५२) वत्।

**कृत्सु**—कडिता-त्री, कडन्-न्ती-ती, कडितम्, कडितव्यम्, कडनीयम्, कडितुम्, कडनम्, कडित्वा, कडयित्वा, प्रकड्य।

**(१३८१) लुठ—संश्लेषणयोः**। लुट इत्यके, लुड इत्यन्ये। (संयोग करना, मिलाप करना, जोड़ना, आलिङ्गन करना)। लठति। कुच् (१३६८) वत्। अक.। सेट्। परस्मै.।

१ 'वा भ्राशभ्लाशभ्रमुक्रमुक्लमुत्रसित्रुटिलषः' (३-१-७०) इति श्यन् विकल्पः। अप्राप्तविभाषेयम्। तेन पक्षे शप्रत्ययोऽपि भवति।

कुटादिः लुठति। क्षोचति वत्।

**(१३८२) कृड—घनत्वे**। घनत्वं सान्द्रता। (दढ़ या कठिन होना, जमाना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.। कुटादिः। १ कृडति। २ चकर्ड। ३ कृडिता। ५ कृडतु। ८ कृड्यात्। ९ अकृडीत्।

**कृत्सु**—कर्डकः-र्डिका, कृडिता-त्री, कर्डयिता-त्री, कृडन्-न्ती-ती, कर्डयन्-न्ती, कृडिष्यन्-न्ती-ती, कर्डयिष्यन्-न्ती-ती, व्यतिकृडमानः, कर्डयमानः, व्यतिकृडिष्यमाणः, कर्डयिष्यमाणः[1], कृट्-ड्-कृडौ-कृडः, कृडितम्-तः, कर्डितः, कृडः,[2] कृडितव्यम्, कर्डयितव्यम्, कृडनीयम्, कर्डनीयम्, कृड्यम्,[3] कर्ड्यम्, कृड्यमानः, कर्ड्यमानः, कर्डः, कृडितुम्, कर्डयितुम्, कृड्ढिः[4], कर्डना, कृडनम्, कर्डनम्, कृडित्वा, कर्डयित्वा, विकृड्य, विकर्ड्य।

**(१३८३) कुड—बाल्ये**। (बालक के समान खेलना, खाना, (संधाते—पाठा० सायण १/९२) बटोरना, जमा करना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.। कुटादिः। कुडति। चुकोड। इत्यादि 'कुचतिः' (१३६८) वत्।

**(१३८४) पुड—उत्सर्गे**। (त्यागना) सक.। सेट्। पर.। कुटादिः। पुडति। 'कुघ्' धातु वत्।

**(१३८५) घुट—प्रतिघाते**। (मारना, मन मसोस करना घुटते रहना, प्रतिकार करना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। कुटादिः। घुटति। 'कुचति' (१२६८) वत्।

**(१३८६) तुड—तोडने**। तोडनं = भेदः। (तोड़ना, कतरना, दुःख देना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। तुडति। 'कुचति' (१३६८) वत्।

**(१३८७-८८) थुड-स्थुड—सम्बरणे**। खुड, छुड इत्येके। (आच्छादित करना, लपेटना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। थुडति। तुथोड। इत्यादि। 'कुचति' (१३६८) वत्। स्थुडति। तुस्थोड। 'स्फुटति' (१३७३) वत्।

**(१३८९-९०) स्फुर-स्फुल—सञ्चलने**। स्फुर-स्फुरणे, स्फल सञ्चलने इत्येके। स्फर इत्यन्ये। (हिलना, स्फुरित होना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.। कुटादिः।

१ स्फुरति। २ पुस्फोर। ३ स्फुरिता। ४ स्फुरिष्यति। ५ स्फुरतु-स्फुरतात्। ६ अस्फुरत्। ७ स्फुरेत्। ८ स्फूर्यात्[5]। ९ अस्फुरीत्। १० अस्फुरिष्यत्।

**णिचि**—स्फारयति[6]-ते-स्फोरयति-ते। एवमेव स्फुलति। **कृत्सु**—स्फोरकः-रिका, पुस्फुरिषकः-षिका, पोस्फुरकः-रिका, अस्य धातोः कुटादित्वात् सन्नन्ते **'रलो व्युपधात्–'**

१ 'कर्तरि कर्मव्यतिहारे' (७-४-९०) इति शानच्।
२ 'इगुपधज्ञा–' (३-१-१३५) इति कर्तरि कप्रत्ययः।
३ ऋदुपधाच्चाक्लृपिचृतेः (३-१-११०) इति क्यप्।
४ 'तितुत्र–' (७-२-९) इति इडभावे ढत्वे ष्टुत्वे च रूपम्।
५ हलिचेति दीर्घः।
६ चिस्फुरोर्णौ – इत्यात्वविकल्पः।

(१-२-२६) इति कित्त्वविकल्पो न। तेन एकमेव रूपम्। विस्फुरन्, विस्फारः[१], निष्फारः[२]-निः स्फारः निष्फारः निस्फारः विष्फारः विस्फारः।

स्फुलिङ्ग = अग्निकणः पूर्वोक्तसूत्रेण षत्व विकल्पे विस्फुलन्-विष्फुलन्-न्ती। स्फालः[३], निष्फालः-निस्फालः विष्फालः-विस्फालः।

**(१३९१) स्फुड—सम्वरणे।** (वस्त्रादि से वेष्टित करना, लपेटना, आच्छादित करना)। सक.। सेट्। परस्मै.। कुटादिः। स्फुडति। पुस्फोड। 'स्फुटति' (१३७३) वत्।

**(१३९२) चुड—संवरणे।** (लपेटना)। सक.। सेट्। परस्मै.। कुटादिः। चुडति। चुचोड। 'कुचति' (१३६८) वत्। स्त्रियां भावादौ भिदादि (३-३-१०४) पाठाद् अङ् उपधायाः, दीर्घश्च, चूडा = शिखा इति भवति।

**(१३९३) व्रुड—संवरणे।** (डूबना, ढेर करना, ढकना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। कुटादिः। व्रुडति। वुव्रोड। श्यनं बिना 'त्रुटति' (१३७५) वत्। व्रोडकः-डिका, व्रुडिता-त्री, व्रोडयिता-त्री, व्रुडन्-न्ती-ती।

**(१३९४) क्रुड—निमज्जने।** (डूबना)। सक.। सेट्। परस्मै.। कुटादिः। क्रुडति। चुक्रोड। 'त्रुटति' (१३७५) वत्।

**(१३९५) मृड—निमज्जने।** (डूबना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.। कुटादिः। मृडति ममर्ड 'कृडति' (१३८२) वत्।

**(१३९६) गुरी—उद्यमने।** (प्रयत्न करना, उद्योग करना)। अकर्म.। सेट्। आत्मने.। कुटादिः।

१. गुरते। २. जुगुरे। ३. गुरिता। ४. गुरिष्यते। ८. गुरिषीष्ट। ९. अगुरिष्ट। १०. अगुरिष्यत। गूर्यते। गूर्णः

**(१३९७) णू—स्तवने।** (स्तुति करना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.।

१ नुवति। २ प्र. नुनाव नुनुवतुः। म. नुनुविथ। उ. नुनाव-नुनव। ३ नुविता। ४ नुविष्यति। ५ नुवतु। ६ अनुवत्। ७ नुवेत्। ८ नूयात्। ९ अनुवीत्। अनुविष्टाम्। १० अनुविष्यत्।

**कर्मणि**—नूयते। **णिचि**—नावयति-ते। **सनि**—नुनूषति। **यङि**—नोनूयते। **यङ्लुकि**—नोनोति-नोनवीति। **कृत्सु**—नावकः-विका, नुविता[४]-त्री, नुवन्-न्ती-ती, नुविष्यन्-न्ती-ती, प्रणूः, प्रण्वौ[५]-प्रण्वः, नुतम्-नूतः-नूतवान्, नुवः, नुवितव्यम्, नुवनीयम्,

१ घञि 'स्फुरतिस्फुल्योर्घञि' (६-१-४७) इत्यात्वमत्रेति ज्ञेयम्।

२ 'स्फुरतिस्फुलत्योर्निर्निविभ्यः' (८-३-७६) इति विकल्पेन षत्वं भवति। तेन प्रत्येकं रूपद्वयं भवति।

३ 'स्फुरतिस्फुलत्योर्घञि' (६-१-४७) इति घञि आत्वम्।

४ अस्य धातोः कुटादिषु पाठात् 'गाङ्कुटादिभ्यः–' (१-२-१) इति ञित् णिद्भिन्नानां प्रत्ययानां ङिद्वद्भावातिदेशात् 'क्ङिति च' (१-१-५) इति गुणनिषेधे, उवङादेशे च नुविता, नुविष्यन् इत्यादीनि रूपाणि बोध्यानि।

५ क्विबन्ते द्विवचनादौ 'उपसर्गादिसमासेऽपि–' (८-४-१४) इति णत्वे, 'ओः सुपि' (६-४-८३) इति यण्।

नव्यम्, अवशयनाव्यम्[1], ईषन्नुवः-दुर्नुवः-सुनुवः, नुवः, नुवितुम्, नूतिः, नुवनम्, नूत्वा, प्रणूय।

**(१३९८) धू—विधूनने।** (कम्पित करना, कांपना)। सकर्म.। सेट्। कुटादिः। धुवति। दुधाव। इत्यादि 'नुवति' (१३६७) वत्। धावकः-विका, धुविता-त्री, धुवन्-ती, धावयन्[2]-न्ती, धुवनः[3], धुवित्रम्[4], धुवकः[5]।

**(१३९९) गु—पुरीषोत्सर्गे।** गुरीषोत्सर्गः = मलत्यागः। (मल त्याग करना, दस्त करना, पैखाना करना)। अकर्म.। अनिट्। परस्मै.। कुटादिः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | गुवति | गुवतः | गुवन्ति | प्र. |
| | गुवसि | गुवथः | गुवथ | म. |
| | गुवामि | गुवावः | गुवामः | उ. |
| लिट् | जुगाव | जुगुवतुः | जुगुवुः | प्र. |
| | जुगुविथ | जुगुवथुः | जुगुव | म. |
| | जुगुव-जुगाव | जुगुविव | जुगुविम | उ. |
| लुट् | गुता | गुतारौ | गुतारः | प्र. |
| | गुतासि | गुतास्थः | गुतास्थ | म. |
| | गुतास्मि | गुतास्वः | गुतास्मः | उ. |
| लृट् | गुष्यति | गुष्यतः | गुष्यन्ति | प्र. |
| | गुष्यसि | गुष्यथः | गुष्यथ | म. |
| | गुष्यामि | गुश्यावः | गुष्यामः | उ. |
| लोट् | गुवतु-गुवतात् | गुवताम् | गुवन्तु | प्र. |
| | गुव-गुवतात् | गुवतम् | गुवत | म. |
| | गुवानि | गुवाव | गुवाम | उ. |
| लङ् | अगुवत् | अगुवताम् | अगुवन् | प्र. |
| | अगुवः | अगुवतम् | अगुवत | म. |
| | अगुवम् | अगुवाव | अगुवाम | उ. |
| वि. लि. | गुवेत् | गुवेताम् | गुवेयुः | प्र. |
| | गुवेः | गुवेतम् | गुवेत | म. |
| | गुवेयम् | गुवेव | गुवेम | उ. |

१ 'ओरावश्यके' (३-१-१२५) इति ण्यत्। आवादेशः।
२ 'निगरणचलनार्थेभ्यः–' (१-३-८७) इति ण्यन्तान्नित्यं शतैव।
३ 'चलनशब्दार्थादकर्मकात्–' (३-२-१४८) इति ताच्छीलिको वुच्। अकर्मकत्वमस्य धातोर्विवक्षायां भवति।
४ 'अर्तिलूधूसुखनसहचरः इत्रः' (३-२-१८४) इति करणे इत्र प्रत्ययः। इत्र प्रत्ययस्य ङिद्वद्भावेन गुणनिषेधात् उवङादेशे धुवित्रम् इति भवति। केचित्तु गुणे धवित्रमित्युदाहरन्ति। 'प्राणा वै धवित्राणि' इति प्रयोगे छन्दसत्वाद् गुणः इति हरदत्तः।
५ 'आशिषि च' (३-१-१५०) इति वुन्। क्षिपकादिषु (वा. ७-३-४५) इति पाठात् धुवका इत्यत्र 'प्रत्ययस्थात्–' (७-३-४४) इति इत्वं न।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आ. लि. | गूयात् | गूयास्ताम् | गूयासुः | प्र. |
| | गूयाः | गूयास्तम् | गूयास्त | म. |
| | गूयासम् | गूयास्व | गूयास्म | उ. |
| लुङ् | अगुषीत् | अगुताम्[१] | अगुषुः | प्र. |
| | अगुषीः | अगुतम् | अगुत | म. |
| | अगुषम् | अगुष्व | अगुष्म | उ. |
| लृङ् | अगुष्यत् | अगुष्यताम् | अगुष्यन् | प्र. |
| | अगुष्यः | अगुष्यतम् | अगुष्यत | म. |
| | अगुष्यम् | अगुष्याव | अगुष्याम | उ. |

**भावे**—गूयते। **णिचि**—गावयति-ते। **सनि**—जुगुषति। **यङि**—जोगूयते। **यङ्लुकि**—जोगवीति-जोगुति। **कृत्सु**—गुवितव्यम्, गुवनीयम्, गुवम्-गाव्यम्, गूनः,[२] गुवन्, गुवती-गुवन्ती, गुतुम्, गुवनम्, गुत्वा, प्रगुत्य।

**(१४००) ध्रु**[३]—**गतिस्थैर्ययोः**। (जाना, स्थिर होना)। अकर्म.। अनिट्। परस्मै.। उकारान्तः। कुटादिः। ध्रुवति। दुध्राव। 'गुवति' (१३९९) वत्।

**कृत्सु**—ध्रुवितव्यम्, ध्रुवनीयम्, ध्रुवन्, ध्रुतुम्, ध्रुवनम्, ध्रुत्वा, प्रध्रुत्य। ध्रुवः पचाद्यच्।

**(१४०१) कुङ्**—**शब्दे**। (शब्द करना। भौंरे के समान शब्द करना। अस्पष्ट बोलना)। अकर्म.। अनिट्। आत्मने.। उकारान्तः। कुटादिः।

१ कुवते। २ चुकुवे। ३ कुता। ४ कुष्यते। ५ कुवताम्। ६ अकुवत। ७ कुवेत। ८ कुषीष्ट। **म.** ध्वम्। ९ अकुत। १० अकुष्यत।

**कृत्सु**—कुवितव्यम्, कुवनीयम्, कुवम्, आवश्यके काव्यम्, कुतः, कुवानः, कुतुम्, कुवनम्, कुत्वा, विकुत्य।

**(१४०२) पृङ्**—**व्यायामे**। व्यायामः = उद्योगः। (उद्यम करना)। प्रायेणायं वि, आङ् इत्युपसर्गद्वयपूर्वकः। अकर्म.। अनिट्। आत्मने.। ऋकारान्तः।

१ व्याप्रियते। २ व्यापप्रे। ३ व्यापर्ता। ८ व्यापृषीष्ट। ९ अपर्चिष्ट।

**कृत्सु**—पारकः-रिका, व्यापर्ता-व्यापर्त्री, व्यापारयिता-त्री, व्यापरिष्यन्-न्ती-ती, व्याप्रियमाणः, व्यापृत्-व्यापृतौ-व्यापृतः, व्यापृतम्-तः-तवान्, व्यापारितः, व्यापर्तव्यम्, व्यापरयितव्यम्, व्यापरिणीयम्, व्यापार्यम्, व्यापर्तुम्, व्यापरणम्, व्यापृत्य।

**(१४०३) मृङ्**[४]—**प्राणत्यागे**। (मरना, देह त्याग करना)। अकर्म.। अनिट्। आत्मने.।

---

१ कुटादित्वेन ङित्वात् गुणनिषेधे 'ह्रस्वादङ्गात्' इति सिचो लोपः।
२ 'दुग्वोर्दीर्घश्च' इति निष्ठानत्वं दीर्घश्च।
३ 'ध्रुव—' इति केचित् पठन्ति। तेषां मते सेडयं धातुः इट्पक्षे ध्रुवितः, ध्रुवितव्यम् इत्यादीनि रूपाणि ऊह्यानि। क्तिनि ध्रूतिः इति भवति।
४ अयं लिट् लुट् लृट् लृङ्क्षु परस्मैपदी।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | म्रियते | म्रियेते | म्रियन्ते | प्र. |
| | म्रियसे | म्रियेथे | म्रियध्वे | म. |
| | म्रिये | म्रियावहे | म्रियामहे | उ. |
| लिट् | ममार | मम्रतुः | मम्रुः | प्र. |
| | ममर्थ | मम्रथुः | मम्र | म. |
| | ममार-ममर | मम्रिव | मम्रिम | उ. |
| लुट् | मर्ता | मर्तारौ | मर्तारः | प्र. |
| | मर्तासि | मर्तास्थः | मर्तास्थ | म. |
| | मर्तास्मि | मर्तास्वः | मर्तास्मः | उ. |
| लृट् | मरिष्यति | मरिष्यतः | मरिष्यन्ति | प्र. |
| | मरिष्यसि | मरिष्यथः | मरिष्यथ | म. |
| | मरिष्यामि | मरिष्यावः | मिरष्यामः | उ. |
| लोट् | म्रियताम् | म्रियेताम् | म्रियन्ताम् | प्र. |
| | म्रियस्व | म्रियेथाम् | म्रियध्वम् | म. |
| | म्रियै | म्रियावहै | म्रियामहै | उ. |
| लङ् | अम्रियत | अम्रियेताम् | अम्रियन्त | प्र. |
| | अम्रियथाः | अम्रियेथाम् | अम्रियध्वम् | म. |
| | अम्रिये | अम्रियावहि | अम्रियामहि | उ. |
| वि. लि. | म्रियेत | म्रियेयाताम् | म्रियेरन् | प्र. |
| | म्रियेथाः | म्रियेयाथाम् | म्रियेध्वम् | म. |
| | म्रियेय | म्रियेवहि | म्रियेमहि | उ. |
| आ. लि. | मृषीष्ट[1] | मृषीयास्ताम् | मृषीरन् | प्र. |
| | मृषीष्ठाः | मृषीयास्थाम् | मृषीढ्वम् | म. |
| | मृषीय | मृषीवहि | मृषीमहि | उ. |
| लुङ् | अमृत[2] | अमृषाताम् | अमृषत | प्र. |
| | अमृथाः | अमृषाथाम् | अमृड्ढ्वम्-ढ्वम् | म. |
| | अमृषि | अमृष्वहि | अमृष्महि | उ. |
| लृङ् | अमरिष्यत् | अमरिष्यताम् | अमरिष्यन् | प्र. |
| | अमरिष्यः | अमरिष्यतम् | अमरिष्यत | म. |
| | अमरिष्यम् | अमरिष्याव | अमरिष्यत | उ. |

**भावे**—म्रियते। **णिचि**—मारयति।९ अमीमरत्। **सनि**—मुमूर्षति। **यङि**—मोम्रीयते। **यङ्लुकि**– मर्मति-मरीमर्ति-मर्मरीति। **कृत्सु**– मारकः-रिका, मर्ता-मर्त्री, मारयिता-त्री, म्रियमाणः[3]

१ 'उश्च' इति लिङ्सिचोः कित्वान्न् गुणः।

२ 'ह्रस्वादङ्गात्' इति सिचो लोपः।

३ शानचि 'तुदादिभ्यः–' (३-१-७७) इति शप्रत्यये, 'रिङ् शयग् लिङ् क्षु' (७-४-२८) इति रिङादेशे इयङादेशे रूपमेव।

मरिष्यन्[1]-न्ती-ती, मुमूर्षन्, अमृतम्[2], मरः,[3] अमरः, दुर्मरम्, मुमूर्षा, मरीचिः, मरुः, मृत्युः, मरुत्, मर्तः-मर्त्यः, मर्तव्यम्, मरणीयम्, मार्यम्, मृतः, मर्तुम्, मरणम्, मृत्वा, उन्मृत्य ।

( १४०४-०५ ) **रि-पि—गतौ** । (जाना) । सकर्म. । अनिट् । पर. । रियति । पियति । पियाय । 'क्षियति' (१४०७) वत् ।

( १४०६ ) **धि—धारणे** । (धारण करना, पास रखना या होना) । सकर्म. । अनि. । परस्मै. । धियति । दिधाय दिध्यतुः । दिधयिथ-दिधेथ । 'क्षियति' (१४०७) वत् ।

**कृत्सु**—धायकः, धायिका, शतरि-धियन्-धियन्ती धियती, आधितः ।

( १४०७ ) **क्षि—निवासगत्योः** । (निवास करना, जाना) । अकर्म. । अनि. । परस्मै. । १. क्षियति क्षियतः क्षियन्ति । लिडादिषु 'क्षयति' (२३६) वत् । ५. क्षियतु । ६. अक्षियत् । ७. क्षियेत् ।

**कृत्सु**—क्षियन्-न्ती-ती । क्षीणः, क्षितः, क्षित्वा, क्षेतुम् ।

( १४०८ ) **षू—प्रेरणे** । (प्रेरणा करना, कार्य में लगाना, उड़ाना) सकर्म. । सेट् । परस्मै. ।

१ सुवति । २ सुषाव सुषुवतु सुषुवुः **म.** सुषुविथ सुषुवथुः । ३ सविता । **म.** सवितासि । ४ सविष्यति । ५ सुवतु । ६ असुवत् । ७ सुवेत् । ८ सूयात् । ९ असावीत् । असाविष्टाम् । १० असोविष्यत् ।

**भावे**—सूयते । **णिचि**—सावयति-ते । **सनि**—सुसूषति । **यङि**—सोषूयते । **यङ्लुकि**—सोषोति-सोषवीति । **कृत्सु**—सोष्यन्-न्ती,-ती, सुवन्-ती, सावयमानः, सुतम्-तः, सोतव्यम्, सवनीयम्, सव्यम्, सूर्यः,[4] सविता,[5] सवित्रम्[6], सूतः,[7] प्रसवी,[8] सूरः,[9] सूर्या, सूरी मानवी चेत् ।

( १४०९ ) **कृ—विक्षेपे** । फेंक देना । **अप**—अलग करना । **अव**—फेंकना, **आ**—मरना, **प्रति**—दुःख देना, हिंसा करना, **वि**—विरल करना, **सम्**—एकत्र करना,

---

१ 'म्रियते लुंङ्लिङोश्च' (१-३-६१) इत्यात्मनेपदस्य नियमितत्वात्, स्यप्रत्ययस्य च शित् प्रत्ययत्वादिनिदानाभावादत्र परस्मैपदं भवति । विस्तरस्तु माधवीय धातुवृत्यादिषु बोध्यः । 'ऋद्धनोः स्ये' (७-२-७०) इतीडागमोऽत्रेति विशेषः ।

२ न म्रियते इत्यमृतम्, 'मतिबुद्धिपूजार्थेभ्यश्च' (३-२-१८८) इत्यत्र चकारस्यानुक्तसमुच्चयार्थत्वात् वर्तमाने क्तः ततो नञ् समासः ।

३ पचाद्यचि—मरः नञ् समासे अमरः = देवः

४ सुवति प्राणिनस्तत्तत्कर्मसु इति सूर्यः । 'राजसूयसूर्य–' (३-१-११४) इत्यत्र निपातनात् क्यप्, रुडागमश्च ।

५ 'तृन्' (३-२-१३५) इति ताच्छीलिकस्तृन्प्रत्ययः । सविता = सूर्यः प्रेरणशील इत्यर्थः ।

६ 'अर्तिलूधूसू–' (३-२-१८४) इति करणे इत्र प्रत्ययः ।

७ संज्ञायां क्तप्रत्यये रूपम् । सूतः = रथादीनां प्रेरकः सारथिः ।

८ 'जिदृक्षिविश्रीण्वमाव्यथाभ्यपरिभूप्रसूभ्यश्च' (३-२-१५६) इति इनि प्रत्ययः । प्रसवी = आज्ञप्ता ।

९ औणादिके कन् प्रत्यये रूपमेवम् । सूरः = सूर्यः । 'सूरसूर्यार्यमादित्य' इत्यमरः ।

**अभि**—उलांघना, नष्ट होना, **उप**—छेदन करना, हिंसा करना। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। १ किरति। २ चकार चकरतुः चकरः। **म.** चकरिथ। **उ.** चकार चकर चकरिव। ३ करिता-करीता। ४ करिष्यति-करीष्यति। ५ किरतु। ६ अकिरत्। ७ किरेत्। ८ कीर्यात्। ९ अकारीत् अकारिष्टाम्। १० अकरिष्यत्। उपस्किरति। उपचस्कार, उपास्किरत्, प्रतिस्किरति। अवकिरति। अवकिरत्। अपस्किरते।

**कर्मणि**—कीर्यते। २ चकरे। **णिचि**—कारयति-ते। ९ अचीकरत्। **सनि**—चिकरिषति[1]। **यङि**—चेकीर्यते। **यङ्लुकि**—चाकर्ति-चाकरीति। **कृत्सु**—करितव्यम्, करीतव्यम्, करणम्, करणीयम्, कार्यम्, कीर्णः, किरन्, किरन्ती, किरती, करितुम्-करीतुम्, कीर्त्वा, विकीर्य, उपस्करः, अवकरः, विष्किरः, विकिरः, अवकीर्णी।

**( १४१० ) गॄ—निगरणे**। (खाना, निगलना)। सकर्म.। सेट्। पर.।

१ गिरति-गिलति[2]। २ **प्र.** जगार-जगाल जगरतुः-जगलतुः जगरुः जगलुः। **म.** जगरिथ जगलिथ। ३ गरिता-गरीता, गलिता-गलीता। ४ गरिष्यति-गरीष्यति-गलिष्यति-गलीष्यति। ५ गिरतु-गिलतु। ६ अगिरत्-अगिलत्। ७ गिरेत्-गिलेत्। ८ गीर्यात्। ९ अगारीत्-अगालीत्। १० अगरिष्यत्। सङ्गिरन्ते[3], सञ्जगरिरे। अवगिरते[4]। उद्-उद्गमने। उद्गिरति।

**कर्मणि**—गीर्यते। **णिचि**—गारयति[5]-गालयति। **सनि**—जिगरिषति-जिगलिषति। **यङि**—जेगिल्यते[6]। **यङ्लुकि**—जागरीति-जागलीति-जागर्ति। **कृत्सु**—गरितव्यम्-गलितव्यम्, गरणीयम्-गलनीयम्, गार्यम्, गिरन्-गिलन्, गिरन्ती-गिलन्ती, गिरती-गिलती, गरितुम्-गलितुम्, गरीतुम्-गलीतुम्, गरणम्-गलनम्, गीर्त्वा, गलो ग्रीवा, गरो विषः, निगारः, उद्गारः, गुरुः, गरिमा, गरिष्ठः, गरीयान्, गर्भः, मुदं गिरतीति मुद्गरः।

**( १४११ ) दृङ्—आदरे**। (आदर करना, सत्कार करना)। सकर्म.। अनिट्। आत्मने.। प्रायेणायमाङ्पूर्वः

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | आद्रियते | आद्रियेते | आद्रियन्ते | प्र. |
| | आद्रियसे | आद्रियेथे | आद्रियध्वे | म. |
| | आद्रिये | आद्रियावहे | आद्रियामहे | उ. |
| लिट् | आदद्रे | आदद्राते | आदद्रिरे | प्र. |
| | आदद्रिषे | आदद्राथे | आदद्रिढ्वे-ध्वे | म. |
| | आदद्रे | आदद्रिवहे | आदद्रिमहे | उ. |

१ 'किरश्च पञ्चभ्यः' इति इट्।
२ 'ऋत इद्धातोः'। 'अचि विभाषा च' गिरते रेफस्य लत्वं वा स्यादजादौ।
३ 'समः प्रतिज्ञाने' इत्यात्मनेपदम्।
४ 'अवाद्ग्रः' इत्यात्मनेपदम्। तथाऽवगिरमाणैश्च पिशाचैर्मांसशोणितम्। इति भट्टिः।
५ 'निगरणचलनार्थेभ्यश्च।' इति परस्मैपदमेव।
६ 'लुपसदचरे–' ति भावगर्हायां यङ्। गर्हितं गिरति। 'ग्रो यङि' गिरते रेफस्य लत्वं स्याद्यङि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुट् | आदर्ता | आदर्तारौ | आदर्तारः | प्र. |
| | आदर्तासे | आदर्तासाथे | आदर्ताध्वे | म. |
| | आदर्ताहे | आदर्तास्वहे | आदर्तास्महे | उ. |
| लृट् | आदरिष्यते | आदरिष्येते | आदरिष्यन्ते | प्र. |
| | आदरिष्यसे | आदरिष्येथे | आदरिष्यध्वे | म. |
| | आदरिष्ये | आदरिष्यावहे | आदरिष्यामहे | उ. |
| लोट् | आद्रियताम् | आद्रियेताम् | आद्रियन्ताम् | प्र. |
| | आद्रियस्व | आद्रियेथाम् | आद्रियध्वम् | म. |
| | आद्रियै | आद्रियावहै | आद्रियामहै | उ. |
| लङ् | आद्रियत | आद्रियेताम् | आद्रियन्त | प्र. |
| | आद्रियथाः | आद्रियेथाम् | आद्रियध्वम् | म. |
| | आद्रिये | आद्रियावहि | आद्रियामहि | उ. |
| वि. लि. | आद्रियेत | आद्रियेयाथाम् | आद्रियेरन् | प्र. |
| | आद्रियेथाः | आद्रियेयाथाम् | आद्रियेध्वम् | म. |
| | आद्रियेय | आद्रियेवहि | आद्रियेमहि | उ. |
| आ. लि. | आदृषीष्ट | आदृषीयास्ताम् | आदृषीरन् | प्र. |
| | आदृषीष्ठाः | आदृषीयास्थाम् | आदृषीढ्वम् | म. |
| | आदृषीय | आदृषीवहि | आदृषीमहि | उ. |
| लुङ् | आदृत | आदृषाताम् | आदृषत | प्र. |
| | आदृथाः | आदृषाथाम् | आदृढ्वम् | म. |
| | आदृषि | आदृष्वहि | आदृष्महि | उ. |
| लृङ् | आदरिष्यत | आदरिष्येताम् | अदरिष्यन्त | प्र. |
| | आदरिष्यथाः | आदरिष्येथाम् | आदरिष्यध्वम् | म. |
| | आदरिष्ये | आदरिष्यावहि | आदरिष्यामहि | उ. |

**कर्मणि**—आद्रियते। २. आदद्रे। **णिचि**—आदारयति-ते। ९. **यङ्लुकि**— आददर्ति-आदरीदर्ति। **कृत्सु**—आदारकः-रिका, आदर्ता-आदर्त्री, आदरयिता-त्री, दारयन्-न्ती, आद्रियमाणः[१], दारयमाणः, आदरिष्यमाणः[२], आदृत्[३], आदृतौ-आदृतः। आदृतम्, आदृतः, आदृतवान्, दरः, आदरी[४], दारः, आदर्तव्यम्, दारयितव्यम्, आदरणीयम्, आदृत्य[५], दार्यम्, आदरः[६], आदर्तुम्, दारयितुम्, आदृतिः, दरणम्, दारणम्, दृत्वा, दारयित्वा, आदृत्य।

---

१ 'तुदादिभ्यः—' (३-१-७७) इति शप्रत्यये। 'रिङ् शयग् लिङ्क्षु' (७-४-२८) इति रिङादेशे, इयङादेशे च।
२ 'ऋद्धनोः स्ये' (७-२-७०) इति स्यप्रत्ययस्येडागमः।
३ क्विपि तुगागमे रूपम्। एवं ल्यप्यपि तुगागमो ज्ञेयः।
४ तच्छीलादिषु कर्तृषु 'जिदृक्षि—' (३-२-१५७) इत्यादिना इनि प्रत्यये।
५ 'एतिस्तुशास्वृदृजुषः—' (३-१-१०९) इति क्यपि, तुगागमे च।
६ 'ग्रहवृदृनिश्चिगमश्च' (३-३-५८) इति घञपवादोऽप् प्रत्ययः।

**(१४१२) धृङ्—अवस्थाने** । (रहना, स्थिर रहना, धारण करना) । अकर्म. । अनिट् । आत्मने. । १.ध्रियते । २.दध्रे । इत्यादि सर्वं 'द्रियति' (१४११) वत् । पुरन्ध्री,[१] महीध्रः[२]-कुध्रः । आधारः,[३] धर्मः[४], इमानि रूपाणि कृत्सु विशेषः ।

**(१४१३) प्रच्छ—ज्ञीप्सायाम्** । (पूछना, जानने की इच्छा करना) । सकर्म. । अनिट् । परस्मै. ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | पृच्छति[५] | पृच्छतः | पृच्छन्ति | प्र. |
| | पृच्छसि | पृच्छथः | पृच्छथ | म. |
| | पृच्छामि | पृच्छावः | पृच्छामः | उ. |
| लिट् | पप्रच्छ | पप्रच्छतुः | पप्रच्छुः | प्र. |
| | पप्रच्छिथ-पप्रष्ठ | पप्रच्छथुः | पप्रच्छ | म. |
| | पप्रच्छ | पप्रच्छिव | पप्रच्छिम | उ. |
| लुट् | प्रष्टा | प्रष्टारौ | प्रष्टारः | प्र. |
| | प्रष्टासि | प्रष्टास्थः | प्रष्टास्थ | म. |
| | प्रष्टास्मि | प्रष्टास्वः | प्रष्टास्मः | उ. |
| लृट् | प्रक्ष्यति | प्रक्ष्यतः | प्रक्ष्यन्ति | प्र. |
| | प्रक्ष्यसि | प्रक्ष्यथः | प्रक्ष्यथ | म. |
| | प्रक्ष्यामि | प्रक्ष्यावः | प्रक्ष्यामः | उ. |
| लोट् | पृच्छतु-तात् | पृच्छताम् | पृच्छन्तु | प्र. |
| | पृच्छ | पृच्छतम् | पृच्छत | म. |
| | पृच्छानि | पृच्छावः | पृच्छामः | उ. |
| लङ् | अपृच्छत् | अपृच्छताम् | अपृच्छन् | प्र. |
| | अपृच्छः | अपृच्छतम् | अपृच्छत | म. |
| | अपृच्छम् | अपृच्छावः | अपृच्छामः | उ. |
| वि. लि. | पृच्छेत् | पृच्छेताम् | पृच्छेयुः | प्र. |
| | पृच्छेः | पृच्छेतम् | पृच्छेत | म. |
| | पृच्छेयम् | पृच्छेव | पृच्छेम | उ. |
| आ. लि. | पृच्छ्यात् | पृच्छ्यास्ताम् | पृच्छ्यासुः | प्र. |
| | पृच्छ्याः | पृच्छ्यास्तम् | पृच्छ्यास्त | म. |
| | पृच्छ्यासम् | पृच्छ्यास्व | पृच्छ्यास्म | उ. |

१ पुरं धारयतीत्यर्थे 'संज्ञायां भृ—' (३-२-४६) इति खचि, पृषोदरादित्वात् उपधालोपे साधुः । स्त्रियां गौरादित्वात् ङीप् ।

२ 'कप्रकरणे मूलविभुजादिभ्य उपसंख्यानम्' । (वा. ३-२-५) इति कः, एवं कुं धरतीति कुध्रः इत्यत्रापि बोध्यम् ।

३ 'अवहाराधारावायानामुपसंख्यानम्' (वा. ३-३-१२२) इति घञन्तः निपात्यते । आध्रियतेऽस्मिन्नित्यर्थे = आधारः ।

४ धरति ध्रियते वाऽस्मिनाधार इति धर्मः = न्यायः । 'अर्तिस्तुसुहुसृधृ—' इति मन् प्रत्ययः ।

५ 'ग्रहिज्ये—' ति सम्प्रसारणम् ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुङ् | अप्राक्षीत् | अप्राष्टाम् | अप्राक्षुः | प्र. |
| | अप्राक्षीः | अप्राष्टम् | अप्राष्ट | म. |
| | अप्राक्षम् | अप्राक्ष्व | अप्राक्ष्म | उ. |
| लृङ् | अप्रक्ष्यत् | अप्रक्ष्यताम् | अप्रक्ष्यन् | प्र. |
| | अप्रक्ष्यः | अप्रक्ष्यतम् | अप्रक्ष्यत | म. |
| | अप्रक्ष्यम् | अप्रक्ष्याव | अप्रक्ष्याम | उ. |

आपृच्छते । संपृच्छते । **कर्मणि**—पृच्छयते । **सनि**—पिपृच्छिषति । **णिचि**—प्रच्छयति-ते । **यङि**—परीपृच्छयते । **यङ्लुकि**—पाप्रष्टि-पाप्रच्छीति । **कृत्सु**—प्रष्टव्यम्, प्रच्छनीयम्, प्रच्छयम्, पृष्टः, पृच्छन्, पृच्छती-पृच्छन्ती, प्रक्ष्यन्, प्रष्टुम्, प्रच्छनम्, पृष्ट्वा, आपृच्छ्य, प्रश्नः, पृच्छा, सम्पृच्छमानः, पृष्टिः ।

**( १४१४ ) सृज—विसर्गे** । (रचना कनरा, बनाना)। **उत्-वि-नि**—छोड़ देना । सकर्म. । अनिट् । परस्मै. ।

१ **प्र.** सृजति सृजतः सृजन्ति । **म.** सृजसि सृजथः सृजथ । **उ.** सृजामि सृजावः सृजामः । २ **प्र.** ससर्ज ससर्जतुः ससृजुः । **म.** ससर्जिथ-सस्रष्ठ ससृजथुः ससृज । उ. ससर्ज ससृजिव ससृजिम । ३ **प्र.** स्रष्टा स्रष्टारौ स्रष्टारः । **म.** स्रष्टासि स्रष्टास्थः स्रष्टास्थ । **उ.** स्रष्टास्मि स्रष्टास्वः स्रष्टास्मः ४ **प्र.** स्रक्ष्यति स्रक्ष्यतः स्रक्ष्यन्ति । **म.** स्रक्ष्यसि स्रक्ष्यथः स्रक्ष्यथ । **उ.** स्रक्ष्यामि स्रक्ष्यावः स्रक्ष्यामः । ५ **प्र.** सृजतु-सृजतात् सृजताम् सृजन्तु । **म.** सृज सृजतम् सृजत । **उ.** सृजानि सृजाव सृजाम । ६ **प्र.** असृजत् असृताम् असृजन् । **म.** असृजः असृजतम् असृजत । **उ.** असृजम् असृजाव असृजाम । ७ **प्र.** सृजेत् सृजेताम् सृजेयुः । **म.** सृजेः सृजेतम् सृजेत । **उ.** सृजेयम् सृजेव सृजेम । ८ **प्र.** सृज्यात् सृज्यास्ताम् सृज्यासुः । **म.** सृज्याः सृज्यास्तम् सृज्यास्त । उ. सृज्यासम् सृज्यास्व सृज्यास्म । ९ **प्र.** अस्राक्षीत् अस्राष्टाम् अस्राक्षुः । **म.** अस्राक्षीः अस्राष्टम् अस्राष्ट । **उ.** अस्राष्टम् अस्राक्ष्व अस्राक्ष्म । १० **प्र.** अस्रक्ष्यत् अस्रक्ष्यताम् अस्रक्ष्यन् । **म.** अस्रक्ष्यः अस्रक्ष्यतम् अस्रक्ष्यत । **उ.** अस्रक्ष्यम् अस्रक्ष्याव अस्रक्ष्याम ।

**कर्मणि**—सृज्यते । **णिचि**—सर्जयति-ते । **सनि**—सिसृक्षति । **यङि**—सरीसृज्यते । **यङ्लुकि**—सरीसर्ष्टि । **कृत्सु**—स्रष्टव्यम्, सर्जनीयम्, सृज्यम्, पाणिभ्यां सृज्यते पाणिसर्ग्या = रज्जुः । सृष्टः, सृजन्, सृजन्ती, सृजती, स्रक्ष्यन्, स्रष्टुन्, सर्जनम्, सृष्ट्वा, विसृज्य, सृष्टिः, स्रक्, रज्जुः, उद् - उत्सर्गे । उत्सृजति ।

**( १४१५ ) टुमस्जो—शुद्धौ** । (स्नान करना, नहाना, **नि**—डूबना, डुबकी लगाना)। अकर्म. । अनिट् । परस्मै. । १ मज्जति[1] । २ **प्र.** ममज्ज ममज्जतुः ममज्जुः । **म.** ममज्जिथ[2] ममङ्क्थ । उ. ममज्ज ममज्जिव ममज्जिम । ३ मङ्क्ता । ४ मङ्क्ष्यति । ५ मज्जतु । ६

१ मस् ज् + अ + ति इत्यत्र सस्यं चुत्वेन शः । तस्य पुनर्जश्त्वेन जः । सीदन्नन्धे तमसि विधुरो मज्जतीवान्तरात्मा इति भवभूतिः ।

२ भारद्वाजनियमात्थलि इड्विकल्पः । अनिट् 'मस्जिनशो— रिति नुम् ।

अमज्जत् । ७ मज्जेत् । ८ मज्ज्यात् । ९ अमाङ्क्षीत् अमाङ्क्तम् अमाङ्क्षुः । १० अमङ्क्ष्यत् ।

**भावे**—मज्ज्यते । **णिचि**—मज्जयति । ९ अमज्जत् । **सनि**—मिमङ्क्षति । **यङि**—मामज्ज्यते । **यङ्लुकि**—मामङ्क्ति । **कृत्सु**—मङ्क्तव्यम्, मज्जनीयम्, मज्जः, मग्नः[१], मग्नवान्, मज्जितः, सुमक्[२]-ग्-सुमजौ-सुमजः, मङ्क्ष्यन्-न्ती-ती, मज्जन्[३]-न्ती, मज्जयन्-न्ती, मङ्क्ता[४]-मङ्क्त्री, मज्जयिता-त्री, मज्जकः-ज्जिका, मद्ग्यम्[५], मद्ग्यः, मज्ज्यमानः, मद्गः, मज्जथुः[६], मज्जः, मङ्क्तुम्, मज्जयितुम्, मज्जा, मज्जना, मज्जनम्, मङ्क्त्वा[७]-मक्त्वा, मज्जयित्वा, प्रमज्ज्य । मद्गुः[८] मञ्जूषा[९], मद्गुरः ।

**( १४१६ ) रुजो—भङ्गे** । (दुःख या रोग से पीडित होना, टेढा होना, टूट जाना) । सक. । अनिट् । परस्मै. । १ रुजति । २ रुरोज । ३ रोक्ता । ४ रोक्ष्यति । ९ अरौक्षीत् ।

**कृत्सु**—रुजन्, रोजकः-जिका, रोक्ता-रोक्त्री, कूलमुद्रुजः, रोगः,[१०] हृद्रोगः[११]-हृदयरोगः, रुजा[१२], रुक्[१३], रुग्णः, रुग्णवान्, लुग्नम्, वीरुक् ।

**( १४१७ ) भुजो—कौटिल्ये** । (वक्र होना, टेढा होना) । अकर्म. । अनिट् । परस्मै. । ओदित् ।

१ भुजति । २ बुभोज । म. बुभोजिथ । ३ भोक्ता । ४ भोक्ष्यति । ८ भुज्यात् भुज्यास्ताम् । ९ अभौक्षीत् अभौक्ताम् ।

**कृत्सु**—भुजन्-न्ती-ती, भोक्ष्यन्-न्ती-ती, भुजानः, भोक्ष्यमाणः, भोक्तव्यम्, भोजनीयम्, भुज्यमानः, भोक्तुम्, भुक्तिः, भोजनम्, भुक्त्वा, उपभुज्य, भुग्नः, भुग्नवान्, विभुजन्-न्ती-ती, मूलविभुजः, भुजः, भोगः ।

**( १४१८ ) छुप—स्पर्शे** । (छूना, स्पर्श करना) । सकर्म. । अनिट् । परस्मै. ।

---

१ निष्ठायाम्, 'मस्जिनशोः—' (७-१-६०) इति नुमि, सकारस्य संयोगादिलोपे, नुमो नकारस्य 'अनिदिताम्—' ६-४-२४) इति लोपे, 'ओदितश्च' (८-२-४५) इति निष्ठानत्वे, नत्वस्यासिद्धत्वेन झल्परकत्वात् 'चोः कुः' (८-२-३०) इति कुत्वे च ।

२ क्विपि, संयोगदिलोपे, जकारस्य कुत्वे च ।

३ शतरि, तुदादित्वात् शपोऽपवादेन शप्रत्यये जश्त्वश्चुत्वयोश्च रूपमेवम् ।

४ तृचि अन्त्यात् पूर्वं नुमि, 'स्कोः संयोगाद्योरन्ते च' (८-२-२९) इति संयोगादिलोपे, रूपमेवम् ।

५ ण्यति, 'चजोः कु घिण्ण्यतोः' (७-३-५२) धातु जकारस्य कुत्वे, सकारस्य जश्त्वेन दकारे च ।

६ भावे, 'ट्वितोऽथुच्' (३-३-८९) इत्यथुच् प्रत्यये रूपमेवम् ।

७ क्त्वाप्रत्यये, 'जान्तनशां विभाषा' (६-४-३२) इत्यनुनासिकलोपनिषेधविकल्पः । निषेधविकल्पे विधिविकल्पपर्यवसानात् अनुनासिकलोपो विभाषा भवतीति बोध्यम् ।

८ मज्जत्यम्भसीति मद्गुः = जलपक्षिविशेषः । 'न्यङ् क्वादि' (७-३-५३) पाठात् जकारस्य कुत्वेन गकारः ।

९ मज्जत्यस्यामिति मञ्जूषा = पेटिका । 'मस्जेर्नुम् च' इत्युषन् प्रत्यये, नुमागमे च ।

१० 'पदरुजविशस्पृशो घञ्' (३-३-१६) इति कर्तरि घञ् । रुजतीति रोगः । 'चजोः—' (७-३-५२) इति कुत्वम् ।

११ 'वा शोकष्यञ् रोगेषु' (६-३-५१) इति हृदय शब्दस्य रोगशब्दे परे हृद्भावविकल्पः ।

१२ भिदादेः (३-३-१०४) आकृतिगणत्वेन तत्र पाठादङ् । प्रत्ययस्य ङित्वान्न गुणः ।

१३ 'रोगाख्यायां ण्वुल् बहुलम्' (३-३-१०८) इत्यत्र बहुलग्रहणात् रोगवाचकत्वेऽपि स्त्रियां सम्पदादि (वा. ३-३-१०८) पाठात् क्विप् ।

१ छुपति। २ चुच्छोप। म. चुच्छोपिथ। ३ छोप्ता। ८ छुप्यात्। ९ अच्छोप्सीत्। छुप्तः, छोप्तुम्, छुप्त्वा।

**(१४१९) रुश—हिंसायाम्।** (मार डालना)। सकर्म.। अनिट्। परस्मै.। रुशति। 'विशति' (१४१४) वत्।

**(१४२०) रिश—हिंसायाम्।** (मार डालना)। सकर्म.। अनि.। परस्मै.। रिशति। 'विशति' (१४२४) वत्।

**(१४२१) लिश—गतौ** (जाना)। सक.। अनिट्। पर.। लिशति। 'रिशति' (१४२०) वत्।

**(१४२२) स्पृश—संस्पर्शने।** (छूना, स्पर्श करना)। सकर्म.। अनिट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | स्पृशति | स्पृशतः | स्पृशन्ति | प्र. |
| | स्पृशसि | स्पृशथः | स्पृशथ | म. |
| | स्पृशामि | स्पृशावः | स्पृशामः | उ. |
| लिट् | पस्पर्श | पस्पृशतुः | पस्पृशुः | प्र. |
| | पस्पर्शिथ | पस्पृशथुः | पस्पृश | म. |
| | पस्पर्श | पस्पृशिव | पस्पृशिम | उ. |
| लुट् | स्त्रष्टा | स्त्रष्टारौ | स्त्रष्टारः | प्र. |
| | स्त्रष्टासि | स्त्रष्टास्थः | स्त्रष्टास्थ | म. |
| | स्त्रष्टास्मि | स्त्रष्टास्वः | स्त्रष्टास्मः | उ. |
| लृट् | स्त्रक्ष्यति | स्त्रक्ष्यतः | स्त्रक्ष्यन्ति | प्र. |
| | स्त्रक्ष्यसि | स्त्रक्ष्यथः | स्त्रक्ष्यथ | म. |
| | स्त्रक्ष्यामि | स्त्रक्ष्यावः | स्त्रक्ष्यामः | उ. |

पक्षे—स्पर्क्ष्यति स्पर्क्ष्यतः स्पर्क्ष्यन्ति इत्यादि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लोट् | स्पृशतु-तात् | स्पृशताम् | स्पृशन्तु | प्र. |
| | स्पृश-तात् | स्पृशतम् | स्पृशत | म. |
| | स्पृशानि | स्पृशाव | स्पृशाम | उ. |
| लङ् | अस्पृशत् | अस्पृशताम् | अस्पृशन् | प्र. |
| | अस्पृशः | अस्पृशतम् | अस्पृशत | म. |
| | अस्पृशम् | अस्पृशाव | अस्पृशाम | उ. |

पक्षे—अस्पार्क्षीत् अस्पार्ष्टाम् अस्पार्क्षुः इत्यादि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| वि.लि. | स्पृशेत् | स्पृशेताम् | स्पृशेयुः | प्र. |
| | स्पृशेः | स्पृशेताम् | स्पृशेत | म. |
| | स्पृशेयम् | स्पृशेव | स्पृशेम | उ. |
| आ.लि. | स्पृश्यात् | स्पृश्यास्ताम् | स्पृश्यासुः | प्र. |
| | स्पृश्याः | स्पृश्यास्तम् | स्पृश्यास्त | म. |
| | स्पृश्यासम् | स्पृश्यास्व | स्पृश्यास्म | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुङ् | अस्राक्षीत् | अस्राष्टाम् | अस्राक्षुः | प्र. |
| | अस्राक्षीः | अस्राष्टम् | अस्राष्ट | म. |
| | अस्राक्षम् | अस्राक्ष्व | अस्राक्ष्म | उ. |

पक्षे—अस्पृक्षत् अस्पृक्षताम् अस्पृक्षन् इत्यादि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृङ् | अस्रक्ष्यत् | अस्रक्ष्यताम् | अस्रक्ष्यन् | प्र. |
| | अस्रक्ष्यः | अस्रक्ष्यतम् | अस्रक्षयत | म. |
| | अस्रक्ष्यम् | अस्रक्ष्याव | अस्रक्ष्याम | उ. |

पक्षे—अस्पर्क्ष्यत् अस्पर्क्ष्यताम् अस्पर्क्ष्यन् इत्यादि।

**कर्मणि**—स्पृश्यते। **णिचि**—स्पर्शयति। **सनि**—पिस्पृक्षति। **यङि**—परीस्पृश्यते। **यङ्लुकि**—परीस्पर्ष्टि-पस्पर्ष्टि-परिस्पष्टि-परीस्पृशीति-परिस्पृशीति इत्यादि। **कृत्सु**—स्पर्शनीयम्, स्पर्शनम्, णिचः स्पर्शनम्-दानमित्यर्थः। स्पर्शः, स्पर्शकः, स्पर्शी, स्रष्टा-स्पर्ष्टा, स्पृष्टः, स्पृष्टिः, स्रष्टव्यम्, स्पर्ष्टव्यम्, स्प्रष्टुम्-स्पर्ष्टुम्, स्पृष्ट्वा, संस्पृश्य, स्पृश्यम्, स्पृशन्, स्रश्यन्-स्पर्क्ष्यन्, **कर्मणि**—स्पृश्यमाणः, स्रक्ष्यमाणः, स्पर्क्ष्यमाणः, उप-उपस्पृश्य-आचभ्य इत्यर्थः, मन्त्रस्पृक्, उदकस्पर्शः, व्योमस्पृक्,[१] जलस्पृक्, दिविस्पृक्, हृदिस्पृक्, शीतस्पर्शः, पृष्ठम्,[२] पार्श्वम्[३]।

(१४२३) **विच्छ—गतौ**। (जाना)। सक.। सेट्। परस्मै.। १ विच्छायति। २ विच्छायाञ्चकार विविच्छ। ३ विच्छयिता-विच्छिता।

**कृत्सु**—विच्छायकः-यिका, विच्छायिता-त्री, विच्छायन्-न्ती-ती, विच्छायिष्यन्, विच्छायितम्-तः, विच्छायितव्यम्, विच्छायनीयम्, विच्छायित्वा, प्रविच्छाय।

(१४२४) **विश—प्रवेशने**। प्रवेशनम् = अन्तर्गमनम्। (अन्दर प्रवेश करना, घुसना)। **प्र**- प्रवेश करना। **उप**—बैठना। **अभिनि**—समक्ष या सामने बैठना। आराम करना। **निर्**—मूच्छित होना, बाहर जाना, **परि**—उपहार देना, **सम्**—आराम करना, **सन्नि**—पास जाना या रहना, **समा**—प्रचार में लाना, समाना, **नि**—निवेश करना, वास करना)। सकर्म.। अनिट्. परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | विशति | विशतः | विशन्ति | प्र. |
| | विशसि | विशथः | विशथ | म. |
| | विशामि | विशावः | विसामः | उ. |

१ 'स्पृशोऽनुदके क्विन्' (३-२-५८) इति सुबन्त उपपदे क्विन्प्रत्यये रूपमेवम्। घृतं स्पृशति घृतस्पृक्, मन्त्रेण स्पृशति घृतस्पृक्, मन्त्रेण स्पृशति मन्त्रस्पृक्, जलेन स्पृशति जलस्पृक्। दिविस्पृक् हृदिस्पृक् इत्यत्र 'हृद्द्युभ्यां उपसंख्यानम्' (वा. ६-३-९) इति वचनात् सप्तम्या अलुक्।

२ औणादिके थक् प्रत्यये निपादनात् सकारलोपः। 'व्रश्च–' (८-२-३६) इत्यादिना शकारस्य षत्वम्। ष्टुत्वम्। पृष्ठम् = शरीरैकदेशः।

३ औणादिके श्वण् प्रत्यये सकारलोपे च।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लिट् | विवेश | विविशतुः | विविशुः | प्र. |
| | विवेशिथ | विविशथुः | विविश | म. |
| | विवेश | विविशिव | विविशिम | उ. |
| लुट् | वेष्टा | वेष्टारौ | वेष्टारः | प्र. |
| | वेष्टासि | वेष्टास्थः | वेष्टास्थ | म. |
| | वेष्टास्मि | वेष्टास्वः | वेष्टास्मः | उ. |
| लृट् | वेक्ष्यति | वेक्ष्यतः | वेक्ष्यन्ति | प्र. |
| | वेक्ष्यसि | वेक्ष्यथः | वेक्ष्यथ | म. |
| | वेक्ष्यामि | वेक्ष्यावः | वेक्ष्यामः | उ. |
| लोट् | विशतु-तात् | विशताम् | विशन्तु | प्र. |
| | विश-तात् | विशतम् | विशत | म. |
| | विशानि | विशाव | विशाम | उ. |
| लङ् | अविशत् | अविशताम् | अविशन् | प्र. |
| | अविशः | अविशतम् | अविशत | म. |
| | अविशम् | अविशाव | अविशाम | उ. |
| वि. लि. | विशेत् | विशेताम् | विशेयुः | प्र. |
| | विशेः | विशेतम् | विशेत | म. |
| | विशेयम् | विशेव | विशेम | उ. |
| आ. लि. | विश्यात् | विश्यास्ताम् | विश्यासुः | प्र. |
| | विश्याः | विश्यास्तम् | विश्यास्त | म. |
| | विश्यासम् | विश्यास्व | विश्यास्म | उ. |
| लुङ् | अविक्षत् | अविक्षताम् | अविक्षन् | प्र. |
| | अविक्षः | अविक्षतम् | अविक्षत | म. |
| | अविक्षम् | अविक्षाव | अविक्षाम | उ. |
| लृङ् | अवेक्ष्यत् | अवेक्ष्यताम् | अवेक्ष्यन् | प्र. |
| | अवेक्ष्यः | अवेक्ष्यतम् | अवेक्ष्यत | म. |
| | अवेक्ष्यम् | अवेक्ष्याव | अवेक्ष्याम | उ. |

**कर्मणि**—विश्यते। ९ अवेशि। **णिचि**—वेशयति-ते। **सनि**—विविक्षति। **यङि**—वेविश्यते। **यङ्लुकि**—वेविशीति-वेवेष्टि। **कृत्सु**—प्रविशन्-न्ती-ती, प्रवेक्ष्यन्-न्ती-ती, वेशयिष्यन्-न्ती-ती, निविशमानः, व्यतिविशमानः, वेशयमानः, व्यतिवेक्ष्यमानः, वेशयिष्यमाणः, विट्-ड्-विशौ विशः, विष्टम्[1]-ष्टः-ष्टवान्, वेशितम्-तः, वेष्टव्यम्, वेशनयीम्, वेश्यम्, विष्टः, वेष्टुम्, वेशनम्, विष्ट्वा, प्रविश्य, वेशः, वेश्म, वेशन्तः, देवविशा, विषयी-विशयी, प्रायोपवेशिका, कल्याणेऽभिनिवेशः, पापेऽभिनिवेशः, विटपः, विष्टपम् त्रिविष्टम्, विशालम्,[2] विश्वम्[3]।

१ 'क्तिच् क्तौ च संज्ञायाम्' (३-३-१७४) इति संज्ञायाम् क्तप्रत्ययः
२ औणादिके कालच् प्रत्यये रूपमेवम्। विशन्ति तस्मिन् वहवोऽनेनेति विशालं = प्रथु। वस्तुतः 'वेः शालच्-' (५-२-२८) इति वे शालच् प्रत्ययेनैव सिद्धमिदम्।
३ औणादिके क्वन् प्रत्यये रूपम्। विशन्ति तस्मिन् सर्वम् इति विश्वम्।

**(१४२५) मृश—आमर्शने**। आमर्शनं स्पर्शः। (स्पर्श करना, छूना)। परा– सलाह देना, **वि**—विचार करना, मनन करना, **सम्**—स्पर्श करना। सकर्म.। अनिट्। परस्मै.।

१ मृशति। २ ममर्श। ३ म्रष्टा-मर्ष्टा। ४ म्रक्ष्यति-मर्क्ष्यति। **कर्मणि**—मृश्यते। **णिचि**—मर्शयति-ते। **सनि**—मिमृक्षति। **कृत्सु**—मर्शनीयम्, मर्शनम्, मर्शः, मर्शकः, मर्शी, म्रष्टा, मर्ष्टा, मृष्टः, मृष्टिः, म्रष्टुम्, मर्ष्टुम्, म्रष्टव्यम्, मर्ष्टव्यम्, मृष्ट्वा, सम्मृश्य, मृश्यम्, मृशन्, मृश्यमानः, म्रश्यन्-माणः, मर्क्ष्यन्-माणः, परामर्शः, विमर्शः, अभिमर्षनम्।

**(१४२६) णुद-(नुद) —प्रेरणे** (प्रेरणा करना)। सकर्म.। अनिट्। परस्मै.। नुदति। सर्वं परस्मैपदि 'नुदति' (१२८२) वत्। इह पुनः पाठे कर्त्रभिप्रायेऽपि क्रियाफले परस्मैपदार्थः।

**(१४२७) षद्लृ—विशरणगत्यावसादनेषु**। (चलना, शक्तिहीन होना, जाना, खिन्न होना)। विशरणे अकर्म.। सेट्। परस्मै. सीदति। सर्वं भौवादिकं 'सीदति' वत्। दह पुनः पाठे प्रयोजनं तु शतरि स्त्रियां सीदती सीदन्ती इति नुम् विकल्पः।

**(१४२८) शद्लृ—शातने**। पूर्ववत्। स्वरे विशेषः।

**(१४२९) मिल—सङ्गमे**। (मिलना, संयुक्त होना, जुड़ना)। अकर्म.। सेट्। उभयपदी।

१ मिलति-ते। २ मिमेल-मिमिले। ३ मेलिता। **म.** मेलितासि-से। ४ मेलिष्यति-ते। ५ मिलतु-ताम्। ६ अमिलत्-त। ७ मिलेत्-त। ८ मिल्यात्-मिलिषीष्ट। ९ अमेलीत्। अमेलिष्ट। १० अमेलिष्यत्-त।

**भावे**—मिल्यते। **णिचि**—मेलयति-ते। **सनि**—मिमिलिषते-मिमेलिषते। **यङि**—मेमिल्यते। **यङ्लुकि**—मेमिलीति-मेमेल्ति। **कृत्सु**—मेलितव्यम्, मेलनीयम्, मेल्यम्, मिलिता, मिलन्, मिलती-मिलन्ती, मिलमानः, मेलुतम्, मेलनम्, मिलित्वा-मेलित्वा, संमिल्य।

**(१४३०) मुच्लृ—मोक्षणे**। (मुक्त करना, छोड़ना, त्याग करना)। सकर्म.। अनिट्। उभय.।

१ **प्र.** मुञ्चति मुञ्चतः मुञ्चन्ति। **म.** मुञ्चसि मुञ्चथः मुञ्चथ। **उ.** मुञ्चामि मुञ्चावः मुञ्चामः। २ **प्र.** मुमोच मुमुचतुः मुमुचुः। **म.** मुमोचिथ मुमुचथुः मुमुच। **उ.** मुमोच मुमुचिव मुमुचिम। ३ **प्र.** मोक्ता मोक्तारौ मोक्तारः **म.** मोक्तासि मोक्तास्थः मोक्तास्थ। **उ.** मोक्तास्मि मोक्तास्वः मोक्तास्मः। ४ **प्र.** मोक्ष्यति मोक्ष्यतः मोक्ष्यन्ति। **म.** मोक्ष्यसि मोक्ष्यथः मोक्ष्यथ। **उ.** मोक्ष्यामि मोक्ष्यावः मोक्ष्यामः। ५ **प्र.** मुञ्चतु-मुञ्चतात् मुञ्चताम् मुञ्चन्तु। **म.** मुञ्च-मुञ्चतात् मुञ्चतम् मुञ्चत। **उ.** मुञ्चानि मुञ्चाव मुञ्चाम। ६ **प्र.** अमुञ्चत् अमुञ्चताम् अमुञ्चन्। **म.** अमुञ्चः अमुञ्चतम् अमुञ्चत। **उ.** अमुञ्चम् अमुञ्चाव अमुञ्चाम। ७ मुञ्चेत् मुञ्चेताम् मुञ्चेयुः। **म.** मुञ्चेः मुञ्चेतम् मुञ्चेत। **उ.** मुञ्चेयम् मुञ्चेव मुञ्चेम। ८ **प्र.** मुच्यात् मुच्यास्ताम् मुच्यासुः। **म.** मुच्याः मुच्यास्तम् मुच्यास्त। **उ.** मुच्यासम् मुच्यास्व मुच्यास्म। ९ **प्र.** अमुचत् अमुचताम् अमुचन्। **म.** अमुचः

**अमुचतम्** अमुचत। **उ.** अमुचम् अमुचाव: अमुचाम:। १० **प्र.** अमोक्ष्यत् अमोक्ष्यताम् अमोक्ष्यन्। **म.** अमोक्ष्य: अमोक्ष्यतम् अमोक्ष्यत। **उ.** अमोक्ष्यम् अमोक्ष्याव अमोक्ष्याम।

आत्मनेपदपक्षे—१ मुञ्चते। २ ममुचे। ३ मोक्ता। ४ मोक्ष्यते। ५ मुञ्चताम्। ६ अमुञ्चत। ७ मुञ्चेत। ८ मुक्षीष्ट। ९ अमुक्त। **म.** अमुक्था:। **उ.** अमुक्षि अमुञ्चवहि अमुञ्चमहि। १० अमोक्ष्यत।

**कर्मणी**—मुच्यते। **णिचि**—मोचयति-ते। **सनि**—मुमुक्षति अकर्मकस्य, मुमुक्षते, मोक्षते। **यङि**—मोमुच्यते। **यङ्लुकि**—मोमुचीति-मोमोक्ति। **कृत्सु**—मोक्तव्यम्, मोचनीयम्, मोक्यम्, अवश्यमोच्यम्, मुक्त:, मुञ्चन्,[1] मुञ्चती, मुञ्चन्ती, मुञ्चमान:, मोक्ष्यन्-मोक्ष्यमाण:, मोक्तुम्, मोचनम्, मुक्त्वा, उन्मुच्य, मोक्ष:, मुक्ति:, जलमुक्,[2] आमुञ्चति = धारयति। प्रतिमुञ्चति = प्रत्यर्पयति। विमुञ्चति। मोच:।

**(१४३१) लुप्लृ—छेदने।** (छेद करना, कतरना, चीरना, टुकड़े-टुकड़े करना, वि—लुप्त करना)। सकर्म.। अनिट्। उभयपदी। मुचादि:

१ लुम्पति-ते। २ परस्मैपदे—**प्र.** लुलोप लुलुपतु: लुलुपु:। **म.** लुलोपिथ लुलुपथु: लुलुप। **उ.** लुलोप लुलोपिव लुलुपिम। आत्म. **प्र.** लुलुपे लुलुपाते। **म.** लुलुपिषे। **उ.** लुलुपे लुलुपिवहे लुलुपिमहे। ३ **प्र.** लोप्ता। **म.** लोप्तासि-से। ४ लोप्स्यति-ते। ५ लुप्यात्-लुप्सीष्ट। अलुपत् अलुपताम् अलुपन्। आत्म. अलुप्त अलुप्साताम् अलुप्सत। अलोप्यत्-त।

**कर्मणि**—लुप्यते। **णिचि**—लोपयति-ते। ९. अलूलुपत्-त-अलुलोपत्त-त[3]। **सनि**—लुलुप्सति-ते। **यङि**—लोलुप्यते। **यङ्लुकि**—लोलोप्ति-लोलोपीति। **कृत्सु**—लोप्तव्यम्, लोपनीयम्, लोप्यम्, लुप्त:, लुम्पन्, लुम्पन्ती-लुम्पती, लुम्पमान:, लोप्स्यन्-लोप्स्यमान:, लोप्तुम्, लोपनम्, लुप्त्वा, विलुप्य, लोप:, लोप्त्रम्।

**(१४३२) विद्लृ—लाभे।** (प्राप्त करना)। सकर्म.। अनिट्। व्याघ्रमूत्यादिमते सेट्। कोऽयं धातु:। उभय.। मुचादि:।

१ विन्दति-त। २ विवेद-विविदे। ३ वेत्ता-वेदिता। ४ वेत्स्यति-ते। वेदिष्यते-ते। विन्दतु-विन्दताम्। ६ अविन्दत्-त। ७ विन्देत्-त। ८ विद्यात्-वित्सीष्ट-वेदिषीष्ट। ९ अविदत्-अवित्त, अविदिताम्-अवित्साताम्-अवेदिषाताम्-अवेदिषत। अविदन्-अवित्सत। १० अवेदिष्यत्-त अवेदिष्ट।

**कर्मणि**—विद्यते। **णिचि**—वेदयति-ते। **सनि**—विविदिषति-ते। विवेदिषति-ते। **यङि**—वेविद्यते। **यङ्लुकि**—वेवेत्ति। **कृत्सु**—वेत्तव्यम्-वेदितव्यम्, वेदनीयम्, वेद्यम्,

१ शतरि 'तुदादिभ्य:–' (३-१-७७) इति शप्रत्यये 'शे मुचादीनाम्' (७-१-५९) इति नुमि, च मुञ्चन् इति रूपम्। एवमेव शानजन्तेऽपि मुञ्चान इत्यत्र प्रक्रिया बोध्या।

२ जल मुञ्चतीत्यर्थे 'क्विप् च' (३-२-७६) इति कर्मणि उपपदे क्विप्। कर्मण्यण् अत्र न भवति।

३ 'काव्यादीनां वेति वक्तव्यम्' इति उपधाह्रस्वविकल्प:।

वित्तम्[१] = धनम्, वित्तः = पुरुषः, अन्यत्र विन्नः, विन्दन्-न्ती-ती, विन्दमानः, वेत्तुम्-वेदितुम्, वेदनम्, वित्त्वा-विदित्वा-वेदित्वा, संविद्य, विन्दः,[२] गोविन्दः,[३] कुविन्दः, अरविन्दम्, परिवेत्ता, वेदना[४], परिवृत्तिः,[५] ब्राह्मणवेदं[६] (भोजयति), यावद्वेदं[७] (भोजयति) चोरवेदं[८] (निहन्त्यसौ)।

**(१४३३) लिप—उपदेहे**। उपदेहो लेपनम्। (लीपना, पोतना, विलेपन करना)। सकर्म.। अनिट्। उभयपदी मुचादिः।

१ लिम्पति-ते। २ लिलेप-लिलिपे। ३ लेप्तासि-से। ६ अलिम्पत-त। ८ लिप्यात्। ९. अलिपत-अलिपत-अलिप्त।

**कर्मणि**—१ लिप्यते। ९ अलेपि। **णिचि**—लेपयति-ते। अलीलिपत्-त। इत्यादि 'लुम्पति' (१४३१) वत्। **कृत्सु**—लेपनीयम्, लेपनम्, लेपः, लेपकः, लेप्ता, लिप्तः, लिप्तिः, लेप्तव्यम्, लिप्ता, संलिप्य, लेप्यम्, लिम्पन्, लिम्पमानः, लिप्यमानः, लेप्स्यन्, लेप्स्यमानः, अव = गर्वे। अक.। अवलिम्पति। अवलेपः, अनु = चन्दनादिविमर्दने। अनुलिम्पति। अनुलेपः

**(१४३४) षिच्—क्षरणे**। (सींचना, छींटा देना)। सकर्म.। अनिट्। उभयपदी मुचादिः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | सिञ्चति | सिञ्चतः | सिञ्चन्ति | प्र. |
| | सिञ्चसि | सिञ्चथः | सिञ्चथ | म. |
| | सिञ्चामि | सिञ्चावः | सिञ्चामः | उ. |
| लिट् | सिषेच | सिषिचतुः | सिसिचुः | प्र. |
| | सिषेचिथ | सिषिचथुः | सिषिच | म. |
| | सिषेच | सिषिचिव | सिषिचिम | उ. |
| लुट् | सेक्ता | सेक्तारौ | सेक्तारः | प्र. |
| | सेक्तासि | सेक्तास्थः | सेक्तास्थ | म. |
| | सेक्तास्मि | सेक्तास्वः | सेक्तास्म | उ. |

१ 'वित्तो भोगप्रत्यययोः' (८-२-६८) इति निष्ठान्तस्य निपातः।

२ 'अनुपसर्गाल्लिम्पविन्द–' (३-१-१३८) इति शप्रत्यये मुचादित्वात् 'शे मुचादीनाम्' (७-१-५९) इति नुमि, शपि, पररूपे च।

३ गवादिषु विन्देः सत्तायाम् (वा. ३-१-१३८) इति शः। गां विन्दतीति गोविन्दः।

४ ण्यन्तात्। 'घट्टिवन्दिविदिभ्यश्च' (३-३-१०७) इति युचि।

५ 'क्तिच्क्तौ च संज्ञायाम्' (३-३-१७४) इति क्तिच्। 'परिवृत्तिस्तु तज्जायान्' इत्यमरः।

६ 'कर्मणि दृशिविदोः साकल्ये' (३-४-२९) इति साकल्यविशिष्टे कर्मण्युपपदे णमुल्। यं यं ब्राह्मणं = ब्राह्मणत्वेन जानाति लभते वा तं भोजयतीत्यर्थः।

७ 'यावति विन्दजीवोः' (३-४-३०) इति णमुल् प्रत्ययः। यावत् लभते तावद् भुक्त इत्यर्थः।

८ 'कर्मणि दृशिविदोः–' (३-४-२०) इति णमुल्। चोरवेदम् = यान् चोरभूतान् लभते विचारयति वेत्ति वा तान् सर्वानपि हन्तीत्यर्थः। 'चोरवेदं निहन्त्यसौ–' इति प्रक्रिया सर्वस्वे।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृट् | सेक्ष्यति | सेक्ष्यतः | सेक्ष्यन्ति | प्र. |
| | सेक्ष्यसि | सेक्ष्यथः | सेक्ष्यथ | म. |
| | सेक्ष्यामि | सेक्ष्यावः | सेक्ष्यामः | उ. |
| लोट् | सिञ्चतु-तात् | सिञ्चताम् | सिञ्चन्तु | प्र. |
| | सिञ्च-तात् | सिञ्चतम् | सिञ्चत | म. |
| | सिञ्चानि | सिञ्चाव | सिञ्चाम | उ. |
| लङ् | असिञ्चत् | असिञ्चताम् | असिञ्चन् | प्र. |
| | असिञ्चः | असिञ्चतम् | असिञ्चत | म. |
| | असिञ्चम् | असिञ्चाव | असिञ्चाम | उ. |
| वि. लि. | सिञ्चेत् | सिञ्चेताम् | सिञ्चेयुः | प्र. |
| | सिञ्चेः | सिञ्चेतम् | सिञ्चेत | म. |
| | सिञ्चेयम् | सिञ्चेव | सिञ्चेम | उ. |
| आ. लि. | सिच्यात् | सिच्यास्ताम् | सिच्यासुः | प्र. |
| | सिच्याः | सिच्यास्तम् | सिच्यास्त | म. |
| | सिच्यासम् | सिच्यास्व | सिच्यास्म | उ. |
| लुङ् | असिचत् | असिचताम् | असिचन् | प्र. |
| | असिचः | असिचतम् | असिचत | म. |
| | असिचम् | असिचाव | असिचाम | उ. |
| लृङ् | असेक्ष्यत् | असेक्ष्यताम् | असेक्ष्यन् | प्र. |
| | असेक्ष्यः | असेक्ष्यतम् | असेक्ष्यत | म. |
| | असेक्ष्यम् | असेक्ष्याव | असेक्ष्याम | उ. |

**आत्मनेपदपक्षे**—१ सिञ्चते। २ सिषिचे। ३ सेक्ता। ४ सेक्ष्यते। ५ सिञ्चताम्। ६ असिञ्चत। ७ सिञ्चेत। ८ सिक्षीष्ट। ९ असिचत। १० असेक्ष्यत।

**कर्मणि**—सिच्यते। **णिचि**—सेचयति-ते। ९ असीषिचत्-त। **सनि**—सिसिक्षति[१]। **यङि**—सेसिच्यते[२]। **यङ्लुकि**—सेषिचीति-सेषेक्ति। **कृत्सु**—सेक्तव्यम्, सेचनीयम्, सेच्यम्, सिक्तः, सिञ्चन्, सिञ्चन्ती, सिचती, सिञ्चमानः, सेचनम्, सिक्त्वा, निषिच्य, सेक्रम्, अभिषिञ्चति, अभिषेकः, निषिञ्चति, निषेकः, उत्सिञ्चति, उत्सिषिचे, उत्सेको गर्वः।

**(१४३५) कृती—छेदने**। (कतरना, काटना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। मुचादिः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट्. | कृन्तति | कृन्ततः | कृन्तन्ति | प्र. |
| | कृन्तसि | कृन्तथः | कृन्तथ | म. |
| | कृन्तामि | कृन्तावः | कृन्तामः | उ. |

१ 'स्तौतिण्योरेवेति नियमान्न षत्वम्।
२ 'सिचो 'यङि' इति न षत्वम्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लिट् | चकर्त | चकृततुः | चकृतुः | प्र. |
| | चकर्तिथ | चकृतथुः | चकृत | म. |
| | चकर्त | चकृतिव | चकृतिम | उ. |
| लुट् | कर्तिता | कर्तितारौ | कर्तितारः | प्र. |
| | कर्तितासि | कर्तितास्थः | कर्तितास्थ | म. |
| | कर्तितास्मि | कर्तितास्वः | कर्तितास्मः | उ. |
| लृट् | कर्तिष्यति | कर्तिष्यतः | कर्तिष्यन्ति | प्र. |
| | कर्तिष्यसि | कर्तिष्यतः | करिष्यन्ति | म. |
| | कर्तिष्यामि | कर्तिष्यावः | कर्तिष्यामः | उ. |
| | कर्त्स्यति | कर्त्स्यतः | कर्त्स्यन्ति इत्यादि | |
| लोट् | कृन्ततु-कृन्ततात् | कृन्तताम् | कृन्तन्तु | प्र. |
| | कृन्त-तात् | कृन्ततम् | कृन्तत | म. |
| | कृन्तानि | कृन्ताव | कृन्ताम | उ. |
| लङ् | अकृन्तत् | अकृन्तताम् | अकृन्तन् | प्र. |
| | अकृन्तः | अकृन्तम् | अकृन्तत | म. |
| | अकृन्तम् | अकृन्ताव | अकृन्ताम | उ. |
| वि. लि. | कृन्तेत् | कृन्तेताम् | कृन्तेयुः | प्र. |
| | कृन्तेः | कृन्तेतम् | कृन्तेत | म. |
| | कृन्तेयम् | कृन्तेव | कृन्तेम | उ. |
| आ. लि. | कृत्यात् | कृत्यास्ताम् | कृत्यासुः | प्र. |
| | कृत्याः | कृत्यास्तम् | कृत्यास्त | म. |
| | कृत्यासम् | कृत्यास्व | कृत्यास्म | उ. |
| लुङ् | अकर्तीत् | अकर्तिष्टाम् | अकर्तिषुः | प्र. |
| | अकर्तीः | अकर्तिष्टम् | अकर्तिष्ट | म. |
| | अकर्तिषम् | अकर्तिष्व | अकर्तिष्म | उ. |
| लृङ् | अकर्तिष्यत् | अकर्तिष्यताम् | अकर्तिष्यन् | प्र. |
| | अकर्तिष्यः | अकर्तिष्यतम् | अकर्तिष्यत | म. |
| | अकत्तिष्यम् | अकर्तिष्याव | अकत्तिष्याम | उ. |
| | अकर्त्स्यत् | अकर्त्स्यताम् | अकर्त्स्यन् इत्यादि। | |

**कर्मणि**—कृत्यते। **णिचि**—कर्तयति-ते। **सनि**—चिकर्तिषति-चिकृत्सति। **यङि**—चरीकृत्यते। **यङ्लुकि**—चरीकर्ति-चरीकृतीति। **कृत्सु**—कर्तकः-र्तिका, कर्तिता-त्री, कर्तयिता-त्री, कृन्तन्[१]-न्ती-ती, कर्तयन्-न्ती, कर्तिष्यन्-कर्त्स्यन्-न्ती-ती, कर्तयिष्यन्-न्ती-ती, व्यतिकृन्तमानः[२], कर्तयमानः, व्यतिकर्तिष्यमाण-व्यतिकर्त्स्यमानः, कर्तयिष्यमाणः,

१ 'शे मुचादीनाम्' (७-१-५९) इति नुम्।
२ 'कर्तरि कर्मव्यतिहारे' (१-३-१४) इति शानच्।

काष्टकृत्-कृतौ-कृतः, कृत्तम्[१], त्तः, कर्तितः, कृतः[२], विकर्तनः,[३] कर्तः, कर्तितव्यम्, कर्तयितव्यम्, कर्तनीयम्, कृत्यम्,[४] कर्त्यम्, कृत्यमानः, कर्त्यमानः, कर्तितुम्, कर्तयितुम्, कृतिः, कर्तना, कर्तनम्, कर्तित्वा, कर्तयित्वा, विकृत्य, विकर्त्य ।

( १४३६ ) **खिद—परिघाते**। (दुःख देना, सताना)। सकर्म.। अनिट्। परस्मै.। मुचादिः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | खिन्दति | खिन्दतः | खिन्दन्ति | प्र. |
| | खिन्दसि | खिन्दथः | खिन्दथ | म. |
| | खिन्दामि | खिन्दावः | खिन्दामः | उ. |
| लिट् | चिखेद | चिखिदतुः | चिखिदुः | प्र. |
| | चिखेदिथ | चिखिदथुः | चिखिद | म. |
| | चिखेद | चिखिदिव | चिखिदिम | उ. |
| लुट् | खेता | खेतारौ | खेतारः | प्र. |
| | खेतासि | खेतास्थः | खेतास्थ | म. |
| | खेतास्मि | खेतास्वः | खेतास्मः | उ. |
| लृट् | खेत्स्यति | खेत्स्यतः | खेत्स्यन्ति | प्र. |
| | खेत्स्यसि | खेत्स्यथः | खेत्स्यथ | म. |
| | खेत्स्यामि | खेत्स्यावः | खेत्स्यामः | उ. |
| लोट् | खिन्दतु-खिन्दतात् | खिन्दताम् | खिन्दन्तु | प्र. |
| | खिन्द-खिन्दतात् | खिन्दतम् | खिन्दत | म. |
| | खिन्दानि | खिन्दाव | खिन्दाम | उ. |
| लङ् | अखिन्दत् | अखिन्दताम् | अखिन्दन् | प्र. |
| | अखिन्दः | अखिन्दतम् | अखिन्दत | म. |
| | अखिन्दम् | अखिन्दाव | अखिन्दाम | उ. |
| वि. लि. | खिन्देत् | खिन्देताम् | खिन्देयुः | प्र. |
| | खिन्देः | खिन्देतम् | खिन्देत | म. |
| | खिन्देयम् | खिन्देव | खिन्देम | उ. |
| आ. लि. | खिद्यात् | खिद्यास्ताम् | खिद्यासुः | प्र. |
| | खिद्याः | खिद्यास्तम् | खिद्यास्त | म. |
| | खिद्यासम् | खिद्यास्व | खिद्यास्म | उ. |

१ 'श्वीदितो निष्ठायाम्' (७-२-१४) इति इण्णिषेधः ।

२ 'इगुपध–' (३-१-१३५) इति कर्तरि कः प्रत्ययः ।

३ नन्द्यादिपाठात् 'नन्दिग्रहि–' (३-१-१३४) इति कर्तरि ल्युः । विशेषेण कर्तयति भक्तानां रोगादिकमिति विकर्तनः = सूर्यः ।

४ 'ऋगुपधाच्चाक्लृपि–' (३-१-११०) इति क्यप् ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुङ् | अखैत्सीत् | अखैत्ताम् | अखैत्सुः | प्र. |
| | अखैत्सीः | अखैत्तम् | अखैत्त | म. |
| | अखैत्सम् | अखैत्स्व | अखैत्स्म | उ. |
| लृङ् | अखेत्स्यत् | अखेत्स्यताम् | अखेत्स्यन् | प्र. |
| | अखेत्स्यः | अखेत्स्यतम् | अखेत्स्यत | म. |
| | अखेत्स्यम् | अखेत्स्याव | अखेत्स्याम | उ. |

**कर्मणि**—खिद्यते। **णिचि**—खेदयति। **सनि**—चिखित्सति। **यङि**—चेखिद्यते। **यङ्लुकि**—चेखिदीति-चेखेत्ति। **कृत्सु**—खेतव्यम्, खेदनीयम्, खेद्यम्, खिन्नः, खिन्दन्, खिन्दन्ती, खिन्दती, खेतुम्, खेदनम्, खित्वा, परिखिद्य।

**( १४३७ ) पिश—अवयवे**। (टुकड़े-टुकड़े करना, चीरना, पीसना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। मुचादिः।

१ पिशति। २ **प्र.** पिपेश पिपिशतुः पिपिशुः। **म.** पिपेशिथ पिपिशथुः पिपिश। **उ.** पिपेश पिपिशिव पिपिशिम। ३ पेशिता। ४ पेशिष्यति। ५ पिशतु। ६ अपिशत्। ७ पिशेत्। ८ पिश्यात्। ९ **प्र.** अपेशीत् अपेशिष्टाम् अपेशिषुः। **म.** अपेशीः अपेशिष्टम् अपेशिष्ट। **उ.** अपेशिषम् अपेशिष्व अपेशिष्म।

**कृत्सु**—पेशकः-शिका, पिशित्वा-पेशित्वा, पिशितम्, पेशी, पिशुनः, पिशङ्गः, पिशङ्गी, पिंशन्[1]-ती।

इति तुदादयः ॥ ६ ॥



१ शतरि तुदादित्वात् शप्रत्यये, 'शे मुचादीनाम्' (७-१-५९) इति नुमि रूपमेवम्।

# अथ रुधादयः (७)

(१४३८) **रुधिर—आवरणे**। (रोकना, घेर लेना, घेरना, **अभिसम्**—प्रतिरोध करना, मना करना, **अव**—सावधान रहना, चतुरता से रहना। **उप**—घेरना, **प्रति**—रोकना। **सन्नि**—बन्द करना। द्विकर्म.। अनिट्। उभय.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | रुणद्धि[१] | रुन्धः[२] | रुन्धन्ति | प्र. |
| | रुणत्सि | रुन्धः | रुन्ध | म. |
| | रुणध्मि[३] | रुन्ध्वः | रुन्ध्मः | उ. |
| लिट् | रुरोध | रुरुधतुः | रुरुधुः | प्र. |
| | रुरोधिथ | रुरुधथुः | रुरुध | म. |
| | रुरोध | रुरुधिव | रुरुधिम | उ. |
| लुट् | रोद्धा | रोद्धारौ | रोद्धारः | प्र. |
| | रोद्धासि | रोद्धास्थः | रोद्धास्थ | म. |
| | रोद्धास्मि | रोद्धास्वः | रोद्धास्मः | उ. |
| लृट् | रोत्स्यति | रोत्स्यतः | रोत्स्यन्ति | प्र. |
| | रोत्स्यसि | रोत्स्यथः | रोत्स्यथ | म. |
| | रोत्स्यामि | रोत्स्यावः | रोत्स्यामः | उ. |
| लोट् | रुणद्धु-रुन्धात् | रुन्धाम् | रुन्धन्तु | प्र. |
| | रुन्धि[४]-रुन्धात् | रुन्धम् | रुन्ध | म. |
| | रुणधानि | रुणधाव | रुणधाम | उ. |
| लङ् | अरुणत्-द् | अरुन्धाम् | अरुन्धन् | प्र. |
| | अरुणः[५]-त्-द् | अरुन्धम् | अरुन्ध | म. |
| | अरुणधम् | अरुन्ध्व | अरुन्ध्म | उ. |
| वि. लि. | रुन्ध्यात् | रुन्ध्याताम् | रुन्ध्युः | प्र. |
| | रुन्ध्याः | रुन्ध्यातम् | रुन्ध्यात | म. |
| | रुन्ध्याम् | रुन्ध्याव | रुन्ध्याम | उ. |
| आ. लि. | रुध्यात् | रुध्यास्ताम् | रुध्यासुः | प्र. |
| | रुध्याः | रुध्यास्तम् | रुध्यास्त | म. |
| | रुध्यासम् | रुध्यास्व | रुध्यास्म | उ. |

१ रुध् + लट् इति स्थिते 'रुधादिभ्यः श्नम्' इति श्नम् अनुबन्धलोपे, श्नमो मित्वात्सोन्त्याचः परो भवति। नित्यत्वात्स गुणं बाधते। रु न ध् ति इति जाते। झषस्तथोर्धोऽधः' इति तकारस्यय धत्वे रुनध् ति जाते धकारस्य जश्त्वेन दकारे, 'रषाभ्यां नो ण' इति नस्य णत्वे। 'रुणद्धि' इति रूपम्। अत्र 'रुनध' इत्यङ्गम्।

२ रुणध् + तस् इति स्थिते श्नसोरल्लोपः इत्यकारलोपे, णत्वस्यासिद्धत्वादनुस्वारे 'रुन्धः' इति।

३ 'रुणध्मि सवितुर्मार्गम्' भट्टिः' (६-३५)।

४ 'सेर्ह्यपिच्च' इति हेरपित्वात् 'श्नसो' रित्यलोपे 'हुझल्भ्योहेर्धिः' इति हेर्धित्वे 'रुन्धि' इति रूपम्।

५ हल्ड्यादिति सिचो लोपे जश्त्वे च विकल्पे 'दश्च' इति वा रुत्वे च रूपाणि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुङ् | अरुधत् | अरुधताम् | अरुधन् | प्र. |
| | अरुध: | अरुधतम् | अरुधत | म. |
| | अरुधम् | अरुधाव | अरुधाम | उ. |
| पक्षे— | अरौत्सीत् | अरौद्धाम् | अरौत्सु: | प्र. |
| | अरौत्सी: | अरौद्धम् | अरौद्ध | म. |
| | अरौत्सम् | अरौत्स्व | अरौत्स्म | उ. |
| लृङ् | अरोत्स्यत् | अरोत्स्यताम् | अरोत्स्यन् | प्र. |
| | अरोत्स्य: | अरोत्स्यतम् | अरोत्सत | म. |
| | अरोत्स्यम् | अरोत्स्याव | अरोत्स्याम | उ. |
| | | आत्मनेपदपक्षे | | |
| लट् | रुन्धे | रुन्धाते | रुन्धते[1] | प्र. |
| | रुन्त्से | रुन्धाथे | रुन्द्ध्वे | म. |
| | रुन्धे | रुन्ध्वहे | रुन्ध्महे | उ. |
| लिट् | रुरुधे | रुरुधाते | रुरुधिरे | प्र. |
| | रुरुधिषे | रुरुधाथे | रुरुधिध्वे | म. |
| | रुरुधे | रुरुधिवहे | रुरुधिमहे | उ. |
| लुट् | रोद्धा | रोद्धारौ | रोद्धार: | प्र. |
| | रोद्धासे | रोद्धासाथे | रोद्धाध्वे | म. |
| | रोद्धाहे | रोद्धास्वहे | रोद्धास्महे | उ. |
| लृट् | रोत्स्यते | रोत्स्येते | रोत्स्यन्ते | प्र. |
| | रोत्स्यसे | रोत्स्येथे | रोत्स्यध्वे | म. |
| | रोत्स्ये | रोत्स्यावहे | रोत्स्यामहे | उ. |
| लोट् | रुन्द्धाम् | रुन्धाताम् | रुन्धताम् | प्र. |
| | रुन्त्स्व | रुन्धाथाम् | रुन्दध्वम् | म. |
| | रुणधै | रुणधावहै | रुणधामहै | उ. |
| लङ् | अरुन्ध | अरुद्धाताम् | अरुन्धत | प्र. |
| | अरुन्धा: | अरुन्धाथाम् | अरुन्ध्वम् | म. |
| | अरुन्धि | अरुन्ध्वहि | अरुन्ध्महि | उ. |
| वि. लि. | रुन्धीत | रुन्धीयाताम् | रुन्धीरन् | प्र. |
| | रुन्धीथा: | रुन्धीयाथाम् | रुन्धीध्वम् | म. |
| | रुन्धीय | रुन्धीवहि | रुन्धीमहि | उ. |
| आ. लि. | रुत्सीष्ट | रुत्सीयास्ताम् | रुत्सीरन् | प्र. |
| | रुत्सीष्ठा: | रुत्सीयास्थाम् | रुत्सीध्वम् | म. |
| | रुत्सीय | रुत्सीवहि | रुत्सीमहि | उ. |
| लुङ् | अरुद्ध | अरुत्साताम् | अरुत्सत | प्र. |
| | अरुद्धा: | अरुत्साथाम् | अरुद्ध्वम् | म. |
| | अरुत्सि | अरुत्स्वहि | अरुत्स्महि | उ. |

१ 'आत्मनेपदेष्वनत:' इति झस्य अत् इत्यादेशे रूपम्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृङ् | अरोत्स्यत | अरोत्स्येताम् | अरोत्स्यन्त | प्र. |
| | अरोत्स्यथाः | अरोत्स्येथाम् | अरोत्स्यध्वम् | म. |
| | अरोत्स्ये | अरोत्स्यावहि | अरोत्स्यामहि | उ. |

**कर्मणि**—रुध्यते। **णिचि**—रोधयति। ९ अरूरुधत्। **सनि**—रुरुत्सति[१]-रुरुत्सते। **यङि**—रोरुध्यते। **यङ्लुकि**—रोरुधीति-रोरोद्धि। **कृत्सु**—रोधकः-धिका, रोद्धा-रोद् ध्री, रोधयिता-त्री, रोद्धव्यम्, रोधनीयम्, रोध्यम्, रुद्धः, रुन्धन्, रुन्धती, रुन्धानः, रोत्स्यन्, रोत्स्यती-रोत्स्यन्ती, रोद्धुम्, रोधनम्, अङ्गरोधी[२], उपरोधी, प्रतिरोधी,[३] अनुरोधी[४], वज्रे[५] उपरुध्य-वज्रोपरोधम्, रोधनः,[६] मार्गरुत्[७]-द्-रुधौ-रुधः, विरोधी[८]। उपरुणद्धि, विरुणद्धि, अनुरुणद्धि = उपकरोति अनुगृह्णाति वा।

**(१४३९) भिदिर्**—विदारणे। (चीरना, तोड़ना)। सकर्म.। अनिट्। उभयपदी।

परस्मैपदे—१ प्र. भिनत्ति भिन्तः भिन्दन्ति। म. भिनत्सि भिन्थः भिन्थ। उ. भिनद्मि भिन्द्वः भिन्द्मः। २ प्र. बिभेद बिभिदतुः बिभिदुः। म. बिभेदिथ बिभिदथुः बिभिद। उ. बिभेद बिभिदिव बिभिदिम। ३ प्र. भेत्ता भेत्तारौ भेत्तारः। म. भेत्तासि भेत्तास्थः भेत्तास्थ। उ. भेत्तास्मि भेत्तास्वः भेत्तास्मः। ४ प्र. भेत्स्यति भेत्सयतः भेत्स्यन्ति। म. भेत्स्यसि भेत्स्यथः भेत्स्यथ। उ. भेत्स्यामि भेत्स्यावः भेत्स्यामः। ५ प्र. भिनत्तु-भिन्तात् भिन्ताम् भिन्दन्तु। म. भिन्दि-भिन्दतात् भिन्तम् भिन्त। उ. भिनदानि भिनदाव भिनदाम। ६ प्र. अभिनत् अभिन्ताम् अभिन्दन्। म. अभिनः-अभिनत् अभिन्तम् अभिन्त। उ. अभिनदम् अभिन्दव अभिन्दम। ७ भिन्द्यात् भिन्द्याताम् भिन्द्युः। म. भिन्द्याः भिन्द्यातम् भिन्द्यात। उ. भिन्द्याम् भिन्द्याव भिन्द्याम। ८ प्र. भिद्यात् भिद्यास्ताम् भिद्यासुः। म. भिद्याः भिद्यास्तम् भिद्यास्त। उ. भिद्यासम् भिद्यास्व भिद्यास्म। ९ प्र. अभिदत् अभिदताम् अभिदन्। म. अभिदः अभिदतम् अभिदत। उ. अभिदम् अभिदाव अभिदाम। पक्षे—अभैत्सीत् अभैत्ताम् अभैत्सुः। इत्यादि। १० प्र. अभेत्स्यत् अभेत्स्यताम् अभेत्स्यन्। अभेत्स्यः अभेत्स्यतम् अभेत्स्यत। अभेत्स्यम् अभेत्स्याव अभेत्स्याम।

**आत्मनेपदपक्षे**—१ प्र. भिन्ते भिन्दाते भिन्दते। म. भिन्दसे भिन्दाथे भिन्द्ध्वे। उ. भिन्दे भिन्द्वहे भिन्द्महे। २ प्र. बिभिदे बिभिदाते बिभिदिरे। म. बिभिदिषे बिभिदाथे

१ 'हलन्ताच्च' इति कित्वान्न गुणः।

२ अङ्गानि रुणद्धीति अङ्गरोधी। 'ग्रह्यादिषु' (३-१-१३४) इति कर्मण्यणोपवादो णिनिप्रत्ययः। एवम् उपरुणद्धीति उपरोधी इत्यत्रापि ग्रह्यादित्वादेव णिनिः।

३ 'भविष्यति सप्तम्यादयः' (३-३-३) इत्यत्रापि गणे पाठात् भविष्यत् काले, औणादिको णिनिरत्र।

४ 'सम्पृचानुरुध–' (३-२-१४२) इत्यादिना ताच्छीलिको घिनुण् प्रत्ययः।

५ 'सप्तम्यां चोपपीडरुधकर्षः' (३-४-४९) इति 'सप्तम्यन्ते तृतीयान्ते चोपपदे उपसर्गादस्मात् णमुल्। 'तृतीया प्रभृतीनि–' (२-२-२१) इति समासविकल्पः।

६ नन्द्यादिषु पाठपरिकल्पनादत्र कर्तरि ल्युप्रत्ययः।

७ मार्गं रुणद्धीति मार्गरुध् 'क्विप् च' (३-२-७६) इति कर्मण्युपपदे क्विप्।

८ विशेषेण रुणद्धीति विरोधी 'सुप्यजातौ–' (३-२-७८) इति ताच्छील्ये णिनिः।

विभिदिध्वे। उ. विभिदे विभिदिवहे विभिदिमहे। ३ प्र. भेत्ता भेत्तारौ भेत्तारः। म. भेत्तासे भेतासाथे भेत्ताध्वे। उ. भेत्ताहे भेत्तास्वहे भेत्तास्महे। ४ प्र. भेत्स्यते भेत्स्येते भेत्स्यन्ते। म. भेत्स्यसे भेत्स्येथे भेत्स्यध्वे। उ. भेत्स्ये भेत्स्यावहे भेत्स्यामहे। ५ प्र. भिन्ताम् भिन्दाताम् भिन्दताम्। म. भिन्त्स्व भिन्दाथाम् भिन्दध्वम्। उ. भिनदै भिनदावहै भिनदामहै। ६ प्र. अभिन्त अभिन्दाताम् अभिन्दत। म. अभिन्त्थाः अभिन्दाथाम् अभिन्द्ध्वम्। उ. अभिन्दि अभिन्द्वहि अभिन्द्महि। ७ प्र. भिन्दीत भिन्दीयाताम् भिन्दीरन्। म. भिन्दीथाः भिन्दीयाथाम् भिन्दीध्वम्। उ. भिन्दीय भिन्दीवहि भिन्दीमहि। ८ प्र. भित्सीष्ट भित्सीयास्ताम् भित्सीरन्। म. भित्सीष्ठाः भित्सीयास्थाम् भित्सीध्वम्। उ. भित्सीय भित्सीवहि भित्सीमहि। ९ प्र. अभित्त अभित्साताम् अभित्सत। म. अभित्थाः अभित्साथाम् अभिद्ध्वम्-अभद्ध्वम्। उ. अभित्सि अभित्स्वहि अभित्स्महि। १० प्र. अभेत्स्यत अभेत्स्येताम् अभेत्स्यन्ते। म. अभेत्स्यथाः अभेत्स्येथाम् अभेत्स्यध्वम्। उ. अभेत्स्ये अभेत्स्यावहि अभेत्स्यामहि।

**कर्मणि**—भिद्यते। **णिचि**—भेदयति-ते। **सनि**—बिभित्सति-बिभित्सते। **यङि**—बेभिद्यते। **यङ्लुकि**—बेभिदीति-बेभेत्ति। **कृत्सु**—भेत्तव्यम्, भेदनीयम्, भेद्यम्, भित्तम्,[1] भिन्नम्, भिन्दन्, भिन्दती-भिन्दन्ती, भिन्दानः, भेत्तुम्, भित्त्वा, विभिद्य, भिदेलिमानि[2] = काष्ठानि, भिद्यो[3] = नदः, भिदुरम्, भिदा, भिदिरम् = वज्रम्, भेदः, विभेदः प्रकाशः, संभेदः = संश्लेषः। भेदकः- दिका, भेत्ता-भेत्री, भेदयिता-त्री, भेत्स्यन्-न्ती, भेदयिष्यन्- न्ती-ती, भेत्स्यमानः, भेदयिष्यमाणः, गोत्रभिद्[4] काष्ठभिद्, उद्भित्, प्रभित्-प्रभिदौ-प्रभिदः, भित्तम् (शकलम्), भित्तः, भिन्नवान्, भेदितम्-तः, उद्भिदः,[5] कर्णभेदी[6], भिन्दुरम्[7]।

**(१४४०) छिदिर्—द्वैधी करणे**। (छिन्न-भिन्न करना)। **आ**—बलपूर्वक टुकड़े करना, **उत्**—हिंसा करना, कतरना, **वि**—अलग-अलग करना या होना। सकर्म.। अनिट्। उभय.। छिनति-छिनते इत्यादि। भिनति (१४३९) वत्।

**कृत्सु**—छिदिरम्, छिदा, शीर्षच्छेद्यः, छिन्नम्[8]-छिन्नः, छिन्नवान्, छेदितः, छेदः, छिदः,[9] छिदुरः,[10] छेत्तव्यम्, छेदयितव्यम्, छेदनीयम्, छेद्यम्, छिदेलिमः,[11] (जीर्णरज्जुः)

१ भित्तं शकलम्। भिन्नमन्यत्।
२ 'केलिमर उपसंख्यानम्' (वा. ३-१-९६) इत्यनेन केलिमर प्रत्ययः।
३ भिनत्ति कूलमित्यर्थेऽनदेऽभिधेये कर्तरि 'भिद्योद्ध्यौ नदे' (३-१-११५) इति क्यप् निपात्यते।
४ गोत्र भिनत्तीति गोत्रभित् इन्द्रः। 'सत्सूद्विषद्रुहदुह्युजविदभिद–' (३-२-६१) इत्यादिना कर्मण्युपपदे उपसर्गे उपपदेऽपि क्विप् प्रत्ययः।
५ 'इगुपध–' (३-१-१३५) इत्यादिना कर्तरि कप्रत्ययः कित्वान्न गुणः।
६ कर्णं भिनत्तीति कर्णभेदी रुक्षध्वनिः पिशुनश्च। ताच्छील्ये णिनि प्रत्यये रूपमेवम्।
७ 'विदिभिदिच्छिदेः कुरच्' (३-१-१६२) इति ताच्छीलिकः कुरच्प्रत्ययः।
८ 'रदाभ्यां निष्टातो नः पूर्वस्य च दः' (८-२-४२) इति निष्ठानत्वम्।
९ 'इगुपधज्ञा–' (३-१-१३५) इति कर्तरि कः।
१० 'विदिभिदिच्छिदेः कुरच्' (३-२-१६२) इति ताच्छीलिकः कुरच् प्रत्ययः। प्रत्ययस्य कित्वान्न गुणः।
११ 'केलिमर उपसंख्यानम्' (वा. ३-१-९६) इति केलिमर प्रत्ययः। प्रत्ययस्य कित्वान्न गुणः

छेद्यम्, छिद्यमानः, छेद्यमानः, छेत्तुम्, छेदयितुम्, विच्छित्तिः,[१] छिदा, छेदना, छेदनम्, छित्वा, छेदयित्वा, प्रच्छिद्य, छेदकः[२]-दिका, छेत्ता-त्री, छेदयिता-त्री, छिन्दन्[३], छेत्स्यन्[४]-न्ती-ती, छेदयिष्यन्-न्ती-ती, छिन्दानः, छेदयमानः, छेत्स्यमानः।

(**१४४१**) **रिचिर्—विरेचने**। विरेचनम् = पृथग् भावः। निःसारणमिति क्षीरस्वामी। (अलग होना, मलशुद्धि होना गर्भपात कराना, झाड़ा होना)। **अति**—अतिक्रमण करना। **वि**—मल शुद्धि होना। सकर्म.। अनिट्। उभय.।

१ **प्र.** रिणक्ति रिक्तः रिञ्चन्ति। **म.** रिणक्षि रिङ्क्थः रिङ्क्थ। **उ.** रिणच्मि रिञ्च्वः रिञ्च्मः। २ **प्र.** रिरेच रिरिचतुः रिरिचुः। **म.** रिरेचिथ रिरिचथुः रिरिच। **उ.** रिरेच रिरिचिव रिरिचिम। ३ **प्र.** रेक्ता रेक्तारौ रेक्तारः। ४ रेक्ष्यति। ५ **प्र.** रिणक्तु-रिङ्क्तात् रिङ्क्ताम् रिञ्चन्तु। **म.** रिङ्ग्धि-रिङ्क्तात् रिङ्क्तम् रिङ्क्त। **उ.** रिणचानि रिणचाव रिणचाम। ६ **प्र.** अरिणक्-ग् अरिङ्क्ताम् अरिञ्चन्। **म.** अरिणक्-ग् अरिङ्क्तम् अरिङ्क्त। **उ.** अरिणचम् अरिञ्च्व अरिञ्च्म। ७ **प्र.** रिञ्च्यात् रिञ्च्याताम् रिञ्च्युः **म.** रिञ्च्याः रिञ्च्यातम् रिञ्च्यात। **उ.** रिञ्च्याम् रिञ्च्याव रिञ्च्याम। ८ **प्र.** रिच्यात् रिच्यास्ताम् रिच्यासुः। **म.** रिच्याः रिच्यास्तम् रिच्यास्त। **उ.** रिच्यासम् रिच्यास्व रिच्यास्म। ९ **प्र.** अरिचत् अरिचताम् अरिचन्। **म.** अरिचः अरिचतम् अरिचत। **उ.** अरिचम् अरिचाव अरिचाम। पक्षे— **प्र.** अरैक्षीत् अरैक्ताम् अरैक्षुः। **म.** अरैक्षीः अरैक्तम् अरैक्त। **उ.** अरैक्षम् अरैक्ष्व अरैक्ष्म। १० अरेक्ष्यत्।

**आत्मनेपदपक्षे**—१ रिङ्क्ते। २ रिरिचे। **म.** रिरिचिषे। **उ.** रिरिचिवहे। ३ **म.** रेक्तासे। ४ रेक्ष्यते। ५ रिङ्क्ताम्। **म.** रिङ्क्ष्व। **उ.** रिणचै। ६ अरिङ्क्त अरिञ्चाताम्। **म.** अरिङ्क्थाः। **उ.** अरिञ्चि अरिञ्च्वहि। ७ रिञ्चीत रिञ्चीयाताम्। ८ रिक्षीष्ट। ९ अरिक्त अरिक्षाताम् अरिक्षत। **म.** अरिक्थाः। **उ.** अरिक्षि अरिक्ष्वहि। १० अरेक्ष्यत।

**कर्मणि**—रिच्यते। **णिचि**—रेचयति। ९ अरीचित्-त। **सनि**—रिरिक्षति-ते। **यङि**—रेरिच्यते। **यङ्लुकि**—रेरेक्ति-रेरिचीति। **कृत्सु**—रेक्तव्यम्, रेचनीयम्, रेच्यम्, रिक्तः,[५] रिञ्चन्,[६] रिञ्चती, रिञ्चानः, रेक्तुम्, रेचनम्, रिक्तवा, विरिच्य, रेकः, रिक्थम्,[७] रेचकः-चिका, रेक्ता-रेक्ती, रेचयिता-त्री, रेक्ष्यन्-न्ती-ती, रिञ्चानः, रेचयमानः, रेक्ष्यमाणः, रेचयिष्यमाणः, रेकः-अतिरेकः-व्यतिरेकः-उद्रेकः, विरेचनम्,

१ 'छिदा द्वैधी-भावे' (गणसूत्रम् ३-३-१०४) इति वचनात् अङ्। अन्यत्र विच्छित्तिः इति क्तिन्नपि भवति।
२ 'पुगन्तलघूपदस्य च' (७-३-८६) इत्युपधायाः गुणः।
३ 'रुदादिभ्यः–' (३-१-७८) इति श्नम् विकरणप्रत्ययः। 'श्नसोरल्लोपः' (६-४-१११) इत्यकारलोपः। एवं छिन्दानः इत्यत्रापि ज्ञेयम्।
४ इडभावः, लघूपधगुणश्च। 'खरि च' इति दकारस्य चर्त्वेन तकारः।
५ 'क्तिच् क्तौ च संज्ञायाम्' (३-३-१७४) इति संज्ञायां कर्तरि क्तप्रत्ययः। रिक्तः = निर्धनः।
६ शतरि विकरणप्रत्यये श्नमि, 'श्नसोरल्लोपः' (६-४-१११) इत्यकार लोपे, नकारस्य अनुस्वारे परसवर्णेचेति रूपम्।
७ 'पातृतुदिवचिरिचि–' इति थक् प्रत्ययः। कित्वान्न गुणः। रिच्यते तदिति रिक्थम् = गृहमूलधनम्। गोत्रजद्रव्यमिति केचित्।

विरिञ्चः[1]-विरिञ्चिः-विरिचिनः, रेक्णः[2]।

**( १४४२ ) विचिर्—पृथग् भावे।** (अलग करना या होना, टूटना, छूटना)। सकर्म.। अनिट्। उभय.। विनक्ति-विङ्क्ते। इत्यादि रिणक्ति (१४४१) वत्।

**कृत्सु**—वेचकः-चिका, वेत्ता-त्री, वेचयिता-त्री, क्तप्रत्यये विक्तम्[3]-क्तः, घञि-विवेकः,[4] विवेकी[5] विविचः[6]। शेषं सर्वाणि रूपाणि रिञ्चति वत्।

**( १४४३ ) क्षुदिर्—सम्पेषणे।** (कूटना, पीसना, चूर्ण बनाना)। सकर्म.। अनिट्। उभय.।

१ **प्र.** क्षुणत्ति, क्षुन्तः क्षुन्दन्ति। **म.** क्षुणत्सि क्षुन्थः। **उ.** क्षुणद्मि क्षुन्द्वः। २ **प्र.** चुक्षोद चक्षुदतुः चुक्षुदुः। **म.** चुक्षोदिथ चुक्षुदथुः। **उ.** चुक्षुदिव। ३ क्षोत्ता। ४ क्षोत्स्यति। ५ **प्र.** क्षुणतु-क्षुन्तात् क्षुन्ताम्। **म.** क्षुन्धि। **उ.** क्षुणदानि। ६ **प्र.** अक्षुणत् अक्षुन्ताम् अक्षुन्त। **उ.** अक्षुणदम् अक्षुन्द्व। ७ क्षुन्द्यात्। ८ क्षुद्यात् क्षुद्यास्ताम्। ९ **प्र.** अक्षुदत् अक्षुदताम्। पक्षे-अक्षौत्सीत् अक्षौत्ताम् अक्षौत्सुः। १० अक्षोत्स्यत्।

**आत्मनेपदपक्षे**—१ **प्र.** क्षुन्ते क्षुन्दाते। **म.** क्षुन्त्से क्षुन्दाथे क्षुन्ध्वे। **उ.** क्षुन्दे क्षुन्द्वहे। २ **प्र.** चुक्षुदे चुक्षुदाते चुक्षुदिरे। **म.** चुक्षुदिषे। **उ.** चुक्षुदिवहे। ३ क्षोत्ता। ४ क्षोत्स्यते। ५ क्षुन्ताम् क्षुन्दाताम्। **म.** क्षुन्त्स्व। **उ.** क्षुणदै। ६ **प्र.** अक्षुन्त अक्षुन्दाताम् अक्षुन्दत। **म.** अक्षुन्थाः। **उ.** अक्षुन्दि। ७ क्षुन्दीत क्षुन्दीयाताम् क्षुन्दीरन्। ८ क्षुत्सीष्ट क्षुत्सीयास्ताम्। ९ अक्षुत्त अक्षुत्साताम्। १० अक्षोत्स्यत।

**कर्मणि**—क्षुद्यते। **णिचि**—क्षोदयति। **सनि**—चुक्षुत्सति-ते। **यङि**—चोक्षुद्यते। **यङ्लुकि**—चोक्षोत्ति-चोक्षुदीति। **कृत्सु**—क्षोतव्यम्, क्षोदनीयम्, क्षोद्यम्, क्षुण्णः, क्षुदन्, क्षुन्दन्ती-ती, क्षुन्दानः, क्षोत्तुम्, क्षोदनम्, क्षुत्वा, संक्षुद्य, क्षुदः, क्षोदीयान्, क्षोदिष्टः, क्षोदिमा, क्षौद्रम्।

**( १४४४ ) युजिर्—योगे।** (जुड़ना, मिलाप करना, एकत्र करना)। **अनु**—पूछना, प्रश्न करना। **अभि**—बोलना, दोष लगाना। **उप**—उपकार करना, उपयोग करना। **नि**—आज्ञा करना, हुक्म करना। **प्र**—योग्य होना, दिखाना, **वि**—अलग करना, पृथक् करना। **विनि**—व्यय करना, नियमित करना, गूंथना, एकत्र करना। **विप्र**—अलग-अलग करना। **सम्**—युक्त करना। मिलाप करना। **समा**—बहुत विचार करना। अकर्म.। अनिट्। उभय.।

१ 'विरिञ्चः - विरिञ्चिः - विरिचिनः' एते पृषोदरादयः (६-३-१०९) इति माधवीयधातुवृत्तिः।

२ 'रिचेर्धने धिच्च' इति असुन्प्रत्ययः। धित्वात् कुत्वम्। रेक्णः = धनम्।

३ 'रम्या इति प्राप्तवती पताका रागं विविक्ता इति वर्धयन्ति'। (शिशु.व. ३-५३)।

४ निष्ठाया अनिट्त्वात् 'चजोः कु घिण्यतोः' (७-३-५२) इति कुत्वे।

५ 'संपृचानुरुध-विविच-' (३-२-१४२) इति चाच्छीलादिषु कर्तृषु घिनुण् प्रत्यये, कुत्वे च रूपमेव। विवेकी = युक्तायुक्तविशेषज्ञः।

६ 'किकिनावुत्सर्गश्छन्दसि सदादिभ्यो दर्शनात्' (वा. ३-२-१७१) इति वचनेन भाषायां किप्रत्यये, एत्वाभ्यास-लोपयोश्चेति रूपम्।

१ प्र. युनक्ति युङ्क्तः युञ्जन्ति। म. युनक्षि। उ. युनज्मि। २ प्र. युयोज युयुजतुः युयुजुः। म. युयोजिथ। उ. युयुजिव। ३ योक्ता। ४ योक्ष्यति। ५ युनक्तु। म. युङ्धि। उ. युनजानि। ६ अयुनक् अयुङ्क्ताम् अयुञ्जन्। म. अयुनक्। उ. अयुनजम्। ७ युज्ज्यात् युज्ज्याताम्। ८ युज्यात् युज्यास्ताम्। ९ अयुजत् पक्षे- अयोक्षीत्। १० अयोक्ष्यत्।

**आत्मनेपदपक्षे**—१ प्र. युङ्क्ते युञ्जाते। म. युङ्क्षे। उ. युञ्जे। २ प्र. युयुजे युयुजाते युयुजिरे। म. युयुजिषे युयुजाथे युयुजिध्वे। उ. युयुञ्जे युयुजिवहे युयुजिमहे। ३ योक्ता। ४ योक्ष्यते। ५ प्र. युङ्क्ताम् युञ्जाताम् युञ्जताम्। म. युङ्क्ष्व युञ्जाथाम् युञ्जध्वम्। उ. युनजे युनजावहै युनजामहै। ६. प्र. अयुङ्क्त अयुञ्जाताम् अयुञ्जत। म. अयुञ्क्थाः अयुञ्जाथाम् अयुञ्जध्वम्-ढ्वम्। उ. अयुक्षि अयुक्ष्वहि अयुक्ष्महि। ७ युञ्जीत युञ्जीयाताम्। ८ प्र. युक्षीष्ट युक्षीयास्ताम् युक्षीरन्। म. युक्षीष्ठाः युक्षीयास्थाम् युक्षीध्वम्। उ. युक्षीय युक्षीवहि युक्षीमहि। ९ प्र. अयुक्त अयुक्षाताम् अयुक्षत। म. अयुक्थाः अयुक्षाथाम् अयुग्ध्वम् अयुगड्ढ्वम्। उ. अयुक्षि अयुक्ष्वहि अयुक्ष्महि। १० अयोक्ष्यत अयोक्ष्येताम्।

**कर्मणि**—युज्यते। **णिचि**—योजयति-ते। **सनि**—युयुक्षति-ते। **यङि**—योयुज्यते। **यङ्लुकि**—योयुजीति-योयोक्ति। **कृत्सु**—योक्तव्यम्, योजनीयम्, युग्यः[1] = गौः, प्रयोज्यः,[2] नियोज्यः, अवश्ययोज्यः, योग्यः,[3] यौगिकः, युक्तः, युञ्जन्-न्ती-ती, युञ्जानः, योक्तुम्, योजनम्, युक्त्वा, प्रयुज्य, योक्त्रम् = युगबन्धनम्, योगी, प्रयोगः, युगम्। योजकः-जिका, योक्ता-योक्त्री, योजयिता। प्रयुङ्क्ते[4]। उपड्युक्ते, नियुङ्क्ते, उद्युङ्क्ते, अनुयुङ्क्ते।

**( १४४५ ) उच्छृदिर—दीप्तिदेवनयोः।** (चमकना, प्रकाशित होना, क्रीडा करना, खेलना)। दीप्तावकर्म.। देवने सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ छृणत्ति-छृन्तः। छृन्ते। २ चच्छर्द चच्छृदतुः। चच्छृदे। ३ छर्दिता। ४ सेसिचि-छर्दिष्यति-ते-छत्सर्यति-ते। ८ छृद्यात्-छर्तिषीष्ट-छृत्सीष्ट। ९ अच्छृदत्-अच्छर्दीत्। अच्छर्दि अछृत। १० अच्छर्दिष्यत्-अच्छत्सर्यत्-त। छृत्वा-छर्दित्वा। इत्यादि छिनत्ति (१४४०) वत्।

**( १४४६ ) उतृदिर—हिंसाऽनादरयोः।** (हिंसा करना, अपमान करना)। सक.। सेट्। उभय.। तृणति 'उछृदिर' धातुवत्।

**( १४४७ ) कृती—वेष्टने।** (घेर लेना, वेष्टति करना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। ईदित्। कृणत्ति कृन्तः कृन्तति 'मृणत्ति' वत्।

**( १४४८ ) ञिइन्धी—दीप्तौ।** (प्रकाशित होना)। अकर्म.। सेट्। आत्मने.।

---

१ 'युग्यं च पत्रे' इति कर्मणि करणे वा क्यपि कुत्वं निपात्यते।
२ 'प्रयोज्यनियोज्यौ शक्यार्थे', इति ण्यति कुत्वाभावो निपात्यते।
३ योगायप्रभवति इत्यर्थे 'योगाद्यच्च' इति यद्व्रत्रौ।
४ 'स्वाराद्यन्तोपसर्गादिति वक्तव्यम्' इत्यात्मनेपदम्।

१ प्र. इन्धे इन्धाते इन्धते। म. इन्त्से इन्धाथे इन्ध्वे। उ. इन्धे इन्ध्वहे इन्ध्महे। २ इन्धाञ्चक्रे-इन्धाम्बभूव-इन्धामास। ३ इन्धिता। ४ इन्धिष्यते। ५ प्र. इन्धाम् इन्धाताम् इन्धताम्। म. इन्त्स्व इन्धाथाम् इन्ध्वम्। उ. इनधे। ६ प्र. ऐन्ध ऐन्धाताम् ऐन्धत। म. ऐन्धाः ऐन्धाथाम् ऐन्ध्वम्। उ. ऐन्धि ऐन्ध्वहि। ७ इन्धेत इन्धेयाताम्। ८ इन्धिषीष्ट इन्धिषीयास्ताम्। म. इन्धिषीष्ठाः इन्धिषीध्वम्। उ. ऐन्धिष्ट ऐन्धिषाताम्। १० ऐन्धिष्यत।

**भावे**—इध्यते। **णिचि**—इन्धयति-ते। ९ ऐन्दिधत्-त। **सनि**—इन्दिधिषते। **कृत्सु**—इन्धितव्यम्, इन्धनीयम्, इन्ध्यम्, इद्धः, इन्धानः, इन्धितुम्, इन्धनम्, इन्धित्वा, समिद्धय, एधः, समित्। इन्धकः-न्धित्वा, इन्धिता-त्री, समिध्-समिधौ-समिधः, अग्नीध्, भ्राष्ट्रमिन्धः, अग्निमिन्धः, इद्धवान्, इन्धिताम्।

**( १४४९ ) खिद—दैन्य**। (खिन्न होना, दुःखी होना)। अकर्म. अनिट्। आत्मने.।

१ खिन्ते। म. खिन्त्से। उ. खिन्दे खिन्द्वहे। २ प्र. चिखिदे। म. चिखिदिषे। उ. चिखिदिवहे। ३ खेत्ता। ४ खेत्स्यते। ५ खिन्ताम् खिन्दाताम्। म. खिन्त्स्व। उ. खिनदै। ६ अखिन्त। म. अखिन्थाः। उ. अखिन्दि। ७ खिन्दीत। ८ खित्सीष्ट खित्सीयास्ताम्। ९ अखित्त अखित्साताम्। १० अखेत्स्यत।

**भावे**—खिद्यते। **णिचि**—खेदयति। **सनि**—चिखित्सते। **यङि**—चेखिद्यते। **यङ्लुकि**—चेखिदीति-चेखेत्ति। **कृत्सु**—खेतव्यम्, खेदनीयम्, खेद्यम्, खिन्नः, खिन्दानः, खेत्तुम्, खेदनम्, खित्वा, संखिद्य, खेदः।

**( १४५० ) विद—विचारणे**। (मनन करना, विचार करना)। सकर्म.। अनिट्। आत्मने.। विन्ते विदाते। इत्यादि 'खिनत्ति' (१४४९) वत्।

**कृत्सु**—वित्तः[१]-विन्नः, वेदकः-दिका, वेत्ता-त्री, वेदयिता-त्री, शानचि विन्दानः,[२] वेदिः[३]।

**( १४५१ ) शिष्लृ—विशेषणे**। विशेषणं गुणान्तरोत्पादनम्। (विशेषता बताना, भिन्नता दिखाना, गुण दोष दिखाना)। सकर्म.। अनिट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | शिनष्टि | शिष्टः | शिषन्ति | प्र. |
| | शिनक्षि | शिष्ठः | शिष्ठ | म. |
| | शिनष्मि | शिष्वः | शिष्मः | उ. |
| लिट् | शिशेष | शिशिषतुः | शिशषुः | प्र. |
| | शिशेषिथ | शिशिषथुः | शिशिष | म. |
| | शिशेष | शिशिषिव | शिशिषिम | उ. |

१ 'नुदविदोन्दत्र–' (८-२-५६) इति निष्ठातकारस्य नकारादेशो विकल्पेन भवति। तेन रूपद्वयम्। तथा च भाष्यम्– (७-२-५८) 'वेत्तेस्तु विदितो निष्ठा विद्यतेः विन्न इष्यते।'

२ 'रुदादिभ्यः श्नम्' (३-१-७८) इति विकरणप्रत्यये श्नमि, 'श्नसोरल्लोपः' (६-४-१११) अल्लोपे च रूपमेवम्।

३ औणादिके (१-४७) इ प्रत्यये रूपम्। वेत्ति विदन्ति विन्ते वा वेदिः = त्रेतारन्यभिष्ठानम्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुट् | शेष्टा | शेष्टारौ | शेष्टारः | प्र. |
| | शेष्टासि | शेष्टास्थः | शेष्टास्थ | म. |
| | शेष्टास्मि | शेष्टास्वः | शेष्टास्मः | उ. |
| लृट् | शेक्ष्यति | शेक्ष्यतः | शेक्ष्यन्ति | प्र. |
| | शेक्ष्यसि | शेक्ष्यथः | शेक्ष्यथ | म. |
| | शेक्ष्यामि | शेक्ष्यावः | शेक्ष्यामः | उ. |
| लोट् | शिनष्टु-शिष्टात् | शिष्टाम् | शिषन्तु | प्र. |
| | शिण्ढि-ण्ढितात् | शिष्टम् | शिष्ट | म. |
| | शिनषाणि | शिनषाव | शिनषाम | उ. |
| लङ् | अशिनट्-ड् | अशिष्टाम् | अशिषन् | प्र. |
| | अशिनट्-ड् | अशिष्टम् | अशिष्ट | म. |
| | अशिनषम् | अशिष्व | अशिष्म | उ. |
| वि. लि. | शिष्यात् | शिष्याताम् | शिष्युः | प्र. |
| | शिष्याः | शिष्यातम् | शिष्यात | म. |
| | शिष्याम् | शिष्याव | शिष्याम | उ. |
| आ. लि. | शिष्यात् | शिष्यास्ताम् | शिष्यासुः | प्र. |
| | शिष्याः | शिष्यास्तम् | शिष्यास्त | म. |
| | शिष्यासम् | शिष्यास्व | शिष्यास्म | उ. |
| लुङ् | अशिषत् | अशिषताम् | अशिषन् | प्र. |
| | अशिषः | अशिषतम् | अशिषत | म. |
| | अशिषम् | अशिषाव | अशिषाम | उ. |
| लृङ् | अशेक्ष्यत् | अशेक्ष्यताम् | अशेक्ष्यन् | प्र. |
| | अशेक्ष्यः | अशेक्ष्यतम् | अशेक्ष्यत | म. |
| | अशेक्ष्यम् | अशेक्ष्याव | अशेक्ष्याम | उ. |

**कर्मणि**—शिष्यते। **णिचि**—शेषयति। ९ अशीषिषत्। **सनि**—शिशिक्षति। **यङि**—शेशिष्यते। **यङ्लुकि**—शेशीषीति-शेशेष्टि। **कृत्सु**—शेष्टव्यम्, शेषणीयम्, शेष्यम्, शिष्टः, शिषन्, शिषती, शेष्टुम्, शिष्णम्, शिष्ट्वा, विशिष्य, विशेषः[1] वैशेषिकः, शेषः, महाविशिष्टः[2]।

(१४५२) **पिष्लृ—सञ्चूर्णने हिंसायाञ्च**। (चूर्ण करना, पीसना, मारना)। सकर्म.। अनिट्। परस्मै.।

१ **प्र.** पिनष्टि पिष्टः पिषन्ति। **म.** पिनक्षि पिष्टः पिष्ट। **उ.** पिनष्मि पिष्वः पिष्मः। २ **प्र.** पिपेष पिपिषतुः पिपिषुः। **म.** पिपेषिथ। **उ.** पिपेष पिपिषिव। ३ पेष्टा। ४ पेक्ष्यति।

१ विशिष्यते इति विशेषः — कणादसंमतः पदार्थविशेषः। विशेष एव वैशेषिकः विनयादित्वात् (५-४-३४) स्वार्थे ठक् तस्य इकादेशः।

२ महत्या विशिष्टः महाविशिष्टः संज्ञा विशेषः। 'महदात्वे घासकरविशिष्टेषूपसंख्यानम्' (वा. ६-३-४६) इत्यात्वम्। पुंवद्भावश्च।

५ पिनष्टु। ६ अपिनट्-ड्। ७ पिष्यात् पिष्याताम्। ८ पिष्यात् पिष्यास्ताम्। ९ अपिषम्। १० अपेक्ष्यत्। सर्वं शिनष्टि (१४५३) वत्।

कृत्सु—पेष्टव्यम्, पेषणीयम्, पेष्यम्, पिष्यमाणः, पेक्ष्यमाणः, पेषः, पेष्टुम्, पिष्टिः, पेषणा, पेषणम्, पिष्ट्वा, विनिष्पिष्य, पिषः, पिष्टम्[1]-ष्टः, पिट्-पिषौ पिषः, पेक्ष्यम्;-न्ती-ती, (चौरस्य) पिषन्[2]-न्ती-ती, पेषकः-षिका, पेष्टा-पेष्ट्री, पेशयिता-त्री, शुष्कपेषम्[3]-चूर्णपेषम्, उरः प्रतिपेषम्,[4] उदपेषं[5] पिनष्टि। मूर्धपेषम्। पिनाकः,[6] पिष्याकम्।

(१४५३) **भञ्जो**—आमर्दने। (नष्ट करना)। सकर्म.। अनिट्। परस्मै.।

१ **प्र.** भनक्ति भङ्क्तः भञ्जन्ति। **म.** भनक्षि भङ्क्थः भङ्क्थ। **उ.** भनज्मि भञ्ज्वः भञ्ज्मः। २ **प्र.** बभञ्ज बभञ्जतु बभञ्जुः। **म.** बभञ्जिथ-बभङ्क्थ बभञ्जथुः बभञ्ज। **उ.** बभञ्ज बभञ्जिव बभञ्जिम। ३ भङ्क्ता। ४ भङ्क्ष्यति। ५ **प्र.** भनक्तु-भङ्क्तात् भङ्क्ताम् भञ्जन्तु। **म.** भङ्ग्धि भङ्क्तम् भङ्क्त। **उ.** भनजानि भनजाव भनजाम। ६ **प्र.** अभनक्-ग् अभङ्क्ताम् अभञ्जन्। **म.** अभनक्-ग् अभङ्क्तम् अभङ्क्त। **उ.** अभनजम् अभञ्ज्व अभञ्ज्म। ७ भञ्ज्यात्। ८ भज्यात् भज्यास्ताम् भज्यासुः **म.** भज्याः भज्यास्तम् भज्यास्त। **उ.** भज्यासम् भज्यास्व भज्यास्म। ९ **प्र.** अभाङ्क्षीत् अभाङ्क्ताम् अभाङ्क्षुः। **म.** अभाङ्क्षीः, अभाङ्क्तम् अभाङ्क्त। **उ.** अभाङ्क्षम् अभाङ्क्ष्व अभाङ्क्ष्म। १० अभङ्क्ष्यत्।

**कर्मणि**—भज्यते। ९ अभाजि अभञ्जि। **णिचि**—भञ्जयति। ९ अभञ्जत्। **सनि**—बिभङ्क्षति। **यङि**—बम्भज्यते। **यङ्लुकि**—बम्भञ्जीति-बम्भङ्क्ति। **कृत्सु**— भङ्क्तव्यम्, भञ्जनीयम्, भङ्ग्यम्, भग्नः, भञ्जन्, भञ्जती, भङ्क्तुम्, भञ्जनम्, प्रभञ्जनः, भक्त्वा-भङ्क्त्वा, विभज्य, भङ्गुरम्, भङ्गः।

(१४५४) **भुज**—**पालनाभ्यवहारयोः**। अभ्यवहारः = भोजनम्। (संरक्षण करना, पालन करना, खाना, भक्षण करना)। सकर्म.। अनिट्। पालने-परस्मै अन्यत्र आत्मने.।

१ भुनक्ति भुङ्क्तः भुञ्जन्ति। २ **प्र.** बुभोज बुभुजतुः। **म.** बुभोजिथ। **उ.** बुभुजिव। ३ भोक्ता। ४ भोक्ष्यति। ५ भुनक्तु। ६ अभुनक्-ग्। ७ भुञ्ज्यात्। ८ भुज्यात् भुज्यास्ताम्। ९ अभौक्षीत् अभौक्ताम् अभौक्षुः। १० अभोक्ष्यत्।

---

१ 'क्तिच् क्तौ च संज्ञायाम्' (३-३-१७४) इति संज्ञायां क्तप्रत्ययः। पिष्टः = सक्तुः।

२ 'जासिनि प्रहणनाटक्राथपिषां हिंसायाम्' (२-३-५६) इति कर्मणि षष्ठी। हिंसाभिन्नार्थे तु 'धानाः पिषन्' इत्यत्र न।

३ 'शुष्क चूर्णरूक्षेषु पिषः' (३-४-३५) इति ण्वुल्। 'कषादिषु यथाविध्यनुप्रयोगः' (३-४-४६) इति णमुलन्तधातोरेवानुप्रयोगः। एवं चूर्णपेषम्, रुक्षपेषम् इत्यत्रापि ज्ञेयम्।

४ 'स्वाङ्गे–' (३-४-५४) इत्यनुवर्तमाने 'परिक्लिश्यमाने च' (३-४-५५) इति द्वितीयान्तात् ण्वुल्। कृत्स्नमुरः पीडयन्तो युध्यन्ते इत्यर्थः।

५ 'स्नेहने पिषः' (३-४-३८) इति णमुल्। 'पेषंवासवाहनधिषु च' (६-३-५८) इति उदकशब्दस्योदादेशः। उदकेन पिनष्टीत्यर्थः।

६ 'पिनाकादयश्च' (३-३४) इति आकप्रत्यये, षकारस्य नकारः गुणभावश्च निपानात् युगागमः, षकारस्य णकारः गुणाभावश्च। अतः पिण्याकम् इत्यपि सिद्धम्। पिण्याकम् = तिलपिष्टकल्कः।

**पालनभिन्नेऽर्थे आत्मनेपदम्**—१ भुङ्क्ते भुञ्जाते भुञ्जते। म. भुङ्क्षे। उ. भुञ्जे भुञ्ज्वहे। २ प्र. बुभुजे। ३ भोक्तासे। ४ भोक्ष्यते। ५ प्र. भुङ्क्ताम् भुञ्जाताम्। म. भुङ्क्ष्व भुञ्जाथाम् भुङ्ग्ध्वम्। उ. भुनजै। ६ अभुङ्क्त। म. अभुङ्क्थाः। उ. अभुञ्जि। ७ भुञ्जीत। ८ भुक्षीष्ट। ९ अभुक्त अभुक्षाताम् अभुक्षत १० अभोक्ष्यत।

**कर्मणि**—भुज्यते। **णिचि**—भोजयति। **सनि**—बुभुक्षति-बुभुक्षते। **यङि**—बोभुज्यते। **यङ्लुकि**—बोभोक्ति-बोभुजीति। **कृत्सु**—भोक्तव्यम्, भोजनीयम्, भोज्यम्-भोग्यम्, भुक्तः, भुञ्जन्[१]-ती, भुञ्जानः,[२] भोक्तुम्, भोजनम्, भुक्त्वा, संभुज्य, भोगः, भुजः। भोजकः-जिका, भोक्ता-त्री, भोजयिता-त्री, भोजयन्-न्ती, भोक्ष्यन्-न्ती-ती, भोजयिष्यन्-न्ती-ती, भोजयमानः, बुभुक्षमाणः, भोक्ष्यमाणः, भोजयिष्यमाणः, हुतभुक्, हव्यभुक्, बलिभुक्[३]-बलिभुजौ-बलिभुजः, भुक्तवान्, प्रभुक्तः,[४] भोजितः, बुभुक्षितः, भोजः[५], विश्वभोजः[६], उष्णभोजी[७]-शीतभोजी, कलहभोजी, अश्राद्धभोजी,[८] भुज्यमानः, भोज्यमानः, उपभुज्य-उपभोज्य। अग्रेभोजं[९] भुक्त्वा, भुज्युः,[१०] भुजिष्यम्[११] भुजिष्या।

**( १४५५ ) तृह—हिंसायाम्**। (मार डालना, दुःख देना)। सक.। सेट्। परस्मै.।

१ प्र. तृणेढि तृण्ढः तृहन्ति। म. तृणेक्षि तृण्ढः तृण्ढ। उ. तृणेह्मि तृह्वः तृह्मः। २ प्र. ततर्ह ततृहतुः ततृहुः। म. ततर्हिथ ततृहथुः ततृह। उ. ततर्ह ततृहिव ततृहिम। ३ प्र. तर्हिता तर्हितारौ तर्हितारः। म. तर्हितासि तहितास्थः तर्हितास्थ। उ. तर्हितास्मि तर्हितास्व तर्हितास्म। ४ प्र. तर्हिष्यति तर्हिष्यतः तर्हिष्यन्ति। म. तर्हिष्यसि तर्हिष्यथः तहिष्यथ। उ. तार्हिष्यामि तर्हिष्यावः तर्हिष्यामः ५ प्र. तृणेढु तृण्ढात् तृण्ढाम् तृहन्तु। म. तृण्ढि-तृण्ढात् तृण्ढम् तृण्ढ। उ. तृणहानि तृणहाव तृणहाम। ६ प्र. अतृणेट्-ड् अतृण्ढाम् अतृंहन्। म. अतृणेट्-ड् अतृण्ढम्

१ शतरि शपो रुधादित्वेन श्नमि, 'श्नसोरल्लोपः' (६-४-१११) इति श्नमोऽकारस्य लोपे नकारस्य श्चुत्वेन ञकारे चेति रूपम्।

२ भुजोऽनवने (१-३-६६) इत्यनेन अवनभिन्नार्थे आत्मनेपदं शानच्। ण्यन्तेऽपि पालनार्थे शानज् ज्ञेयः। सन्नन्तेऽपि पालनार्थे 'पूर्ववत् सनः' (१-३-६२) इति शानज् भवतीति ज्ञेयम्।

३ कर्मणि उपपदे 'क्विप् च' (३-२-७६) इति कर्तरि क्विप्। बलिभुक् = वायसः।

४ 'आदिकर्मणि क्तः कर्तरि च' (३-४-७१) इति कर्तरि क्तः। प्रभुक्तो गोरसं कृष्णः प्रभुक्तोऽनेन गोरसः। इति प्रः सर्वस्वे। अस्य भक्षणार्थकत्वात् 'क्तोऽधिकरणे च ध्रौव्यगतिप्रत्यवसानार्थेभ्यः' (३-४-७६) इति अधिकरणेऽपि क्त प्रत्ययो बोध्यः।

५ इगुपधलक्षणं कप्रत्ययं बाधित्वा 'अज्विधिः सर्वधातुभ्यः षठ्यन्ते च पचादयः' (का. ३-१-१३४) इति वचनात् कर्तरि अच् प्रत्ययः।

६ विश्वं भुनक्ति इति विश्वभोजः। 'कर्मण्यण्' (३-२-१) इत्यण् प्रत्ययः।

७ 'सुप्यजातौ णिनिस्ताच्छील्ये' (३-२-७८) इति ताच्छील्ये णिनिः प्रत्ययः। एवं शीतभोजी कलहभोजी इत्यत्रापि बोध्यम्। कलहं भुनक्ति = पालयति इति कलहभोजी = नारदः।

८ 'व्रते' (३-२-८०) इति णिनिप्रत्ययः। सति भोजनेऽश्राद्धमेव भुङ्क्ते इत्यत्र व्रतं गम्यते।

९ 'विभाषाऽग्रेप्रथमपूर्वेषु' (३-४-२४) इति अग्रेप्रथमपूर्वशब्देषूपपदेषु समानकर्तृकयोः पूर्वकाले क्त्वाणमुलौ विकल्पेन भवतः।

१० 'भुजभृड्भ्याम्–' इति युक् प्रत्ययः। भुज्युः = गन्धर्वः।

११ 'रुचिभुजिभ्याम् किप्यन्' इति किप्यन् प्रत्ययः। भुजिष्यम् = भोग्यम्। भिजुष्या = दासी।

अतृण्ढ। उ. अतृणहम् अतृह्व अतृह्म। ७ प्र. तृह्यात् तृह्याताम् तृह्युः। म. तृह्याः तृह्यातम् तृह्यात। उ. तृह्याम् तृह्याव तृह्याम। ८ प्र. तृह्यात् तृह्यास्ताम् तृह्यासुः। म. तृह्याः तृह्यास्तम् तृह्यास्त। उ. तृह्यासम् तृह्यास्व तृह्यास्म। ९ प्र. अतर्हीत् अतर्हिष्टाम् अतर्हिषुः म. अतर्हीः अतर्हिष्टम् अतर्हिष्ट। उ. अतर्हिषम् अतर्हिष्व अतर्हिष्म। १० प्र. अतर्हिष्यत्। म. अतर्हिष्यः। उ. अतर्हिष्यम्।

**कर्मणि**—तृह्यते। **णिचि**—तर्हयति। ९ अतीतृहत्। **सनि**—तितर्हिषति। **यङि**—तरीतृह्यते। **यङ्लुकि**—तरीतर्ढि-तरीतृहीति। **कृत्सु**—तर्हितव्यम्, तर्हयितव्य्, तर्हणीयम्, तृह्यम्,[1] तर्ह्यम, तृह्यमाणः, तर्ह्यमाणः, तर्हः, तर्हितुम्, तर्हयितुम्, तृढिः[2], तर्हणा, तर्हणम्, तर्हित्वा,[3] तर्हयित्वा, प्रतृह्य, प्रतर्ह्य, तर्हकः-र्हिका, तर्हिता-त्री, तर्हयिता-त्री, तृहन्[4]-न्ती, व्यतितृहन्[5]-न्ती, तर्हयन्, तर्हिष्यन्-न्ती-ती, तर्हमाणः, तर्हयिष्यमाणः, तृहितम्-तः-तवान्, तृहः, तर्हः।

**( १४५६ ) हिसि—हिंसायाम्।** (मारना, दुःख देना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | हिनस्ति | हिंस्तः | हिंसन्ति | प्र. |
| | हिनस्ति | हिंस्थः | हिंस्थ | म. |
| | हिनस्मि | हिंस्वः | हिंस्मः | उ. |
| लिट् | जिहिंस | जिहिंसतुः | जिहिंसुः | प्र. |
| | जिहिंसिथ | जिहिंसथुः | जिहिंस | म. |
| | जिहिंस | जिहिंसिव | जिहिंसिम | उ. |
| लुट् | हिंसिता | हिंसितारौ | हिंसितारः | प्र. |
| | हिंसितासि | हिंसितास्थः | हिंसितास्थ | म. |
| | हिंसितास्मि | हिंसितास्वः | हिंसितास्मः | उ. |
| लृट् | हिंसिष्यति | हिंसिष्यतः | हिंसिष्यन्ति | प्र. |
| | हिंसिष्यसि | हिंसिष्यथः | हिंसिष्यथ | म. |
| | हिंसिष्यामि | हिंसिष्यावः | हिंसिष्यामः | उ. |
| लोट् | हिंनस्तु-हिंस्तात् | हिंस्ताम् | हिंसन्तु | प्र. |
| | हिन्धि-न्धि-तात् | हिंस्तम् | हिंस्त | म. |
| | हिनसानि | हिनसाव | हिंनसाम | उ. |
| लङ् | अहिनत्-द् | अहिंस्ताम् | अहिंसन् | प्र. |
| | अहिनत्-द् | अहिंस्तम् | अहिंस्त | म. |
| | अहिनसम् | अहिंस्व | अहिंस्म | उ. |

१ 'ऋदुपधाच्चाक्लृपि चृतेः' (३-१-११०) इति भावकर्मणोः क्यप्।

२ 'तितुत्र—' (७-२-९) इति इण्णिषेधे, ढत्वधत्वष्टुत्वढलोपः।

३ 'न क्त्वा सेट्' (१-२-१८) इति कित्वनिषेधाद् गुणः।

४ 'रुधादिभ्यः श्नम्' (३-१-७८) इति श्नम्, विकरणप्रत्ययः, तस्य मित्वात् अन्त्यादचः परो भवति। 'श्नसोरल्लोपः (६-४-१११) इति अल्लोपः। 'नश्चापदान्तस्य झलि' (८-३-२४) इति नकारस्यानुस्वारः।

५ 'न गतिहिंसार्थेभ्यः—' (१-३-१५) इति कर्मव्यतिहारे शानचो निषेधः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| वि. लि. | हिंस्यात् | हिंस्याताम् | हिंस्युः | प्र. |
| | हिंस्याः | हिंस्यातम् | हिंस्यात | म. |
| | हिंस्याम् | हिंस्याव | हिंस्याम | उ. |
| आ. लि. | हिंस्यात् | हिंस्यास्ताम् | हिंस्यासुः | प्र. |
| | हिंस्याः | हिंस्यास्तम् | हिंस्यास्त | म. |
| | हिंस्यासम् | हिंस्यास्व | हिंस्यास्म | उ. |
| लुङ् | अहिंसीत् | अहिंसिष्टाम् | अहिंसिसुः | प्र. |
| | अहिंसीः | अहिंसिष्टम् | अहिंसिष्ट | म. |
| | अहिंसिषम् | अहिंसिष्व | अहिंसिष्म | उ. |
| लृङ् | अहिंसिष्यत् | अहिंसिष्यताम् | अहिंसिष्यन् | प्र. |
| | अहिंसिष्यः | अहिंसिष्यतम् | अहिंसिष्यत | म. |
| | अहिंसिष्यम् | अहिंसिष्याव | अहिंसिष्याम | उ. |

**कर्मणि**—हिंस्यते। **णिचि**—हिंसयति-ते। ९. अजिहिंसत्-त। **सनि**—जिहिंसिषति। **यङि**—जेहिंस्यते। **यङ्लुकि**—जेहिंसीति-जेहिंस्ति। **कृत्सु**—हिंसितव्यम्, हिंसनीयम्, हिंस्यम्, हिंसितः, हिंसन्, हिंसती, हिंसितुम्, हिंसनम्, हिंसित्वा, प्रहिंस्य, हिंसकः,[1] हिंस्रः,[2] हिंसा,[3] हिंसः, सिंहः[4]।

**(१४५७) उन्दी—क्लेदने**। (आर्द होना, गीला होना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.।

१ **प्र.** उनत्ति उन्तः उन्दन्ति। **म.** उनत्सि। **उ.** उनद्मि। २ उन्दाञ्चकार। ३ उन्दिता। ४ उन्दिष्यति। ५ उनत्तु। **म.** उन्धि **उ.** उनदानि उनदाव। ६ औनद्-त् औन्ताम्। **म.** औनः-औनद्-त् औन्तम् औन्त। उ. औनदम् औद्व। ७ उन्द्यात् उन्द्याताम्। ८ उद्यात् उद्यास्ताम्। ९ औन्दीत् औन्दिष्टाम् १० औन्दिष्यत्।

**कर्मणि**—उद्यते। **णिचि**—उन्दयति-ते। **सनि**—उन्दिदीषति। ९. औन्दिदिषत्। **कृत्सु**—उन्दितव्यम्, उन्दनीयम्, उन्द्यम्, उत्तम्-उन्नम्, उन्दन्, उन्दती, उन्दितुम्, उन्दनम्, उन्दित्वा, समुद्य, ओदनः, उदकम् इन्दुः।

**(१४५८) अञ्जू—व्यक्ति म्रक्षणं कान्तिगतिषु**। (जोड़ना)। सकर्म.। वेट्। परस्मै.। व्यक्तिः = प्रकटता। म्रक्षणं = घृतादिसेकः (प्रकट करना सराहना, विख्यात करना, तेल मर्दन करना, चमकना, जाना)। **अभि**—अभ्यञ्जन् करना, तेल मर्दन करना, **वि**—स्पष्ट करना, उत्पन्न करना। **अधि**—मरना, संवारना। **आ**—तेल मलना। **नि**—तेल मलना, छिपना। **प्रति**—तेल मलना, संवारना, सजाना। **सम्**—तेल मलना, मान करना, मरना, एकत्र करना।

१ 'निन्दहिंस–' (३-२-१४६) इति ताच्छीलिको वुञ्। हिंसकः = क्रूरः।

२ 'नमिकम्पिस्म्यजसकमहिंसदीपो रः' (३-२-१६७) इति ताच्छीलिको र प्रत्ययः। 'नेड् वशि कृति' (७-२-८) इतीण्निषेदः।

३ 'गुरोश्च हलः' (३-२-१०३) इति स्त्रियामकारप्रत्ययः।

४ पचाद्यचि हिनस्तीति सिंहः। सिंहो वर्णविपर्यात् इत्युक्तेः पृषोदरादित्वात् (६-३-१०९) वर्णयोर्विपर्ययः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | अनक्ति | अङ्क्तः | अञ्जन्ति | प्र. |
| | अनक्षि | अङ्क्थः | अङक्थ | म. |
| | अनज्मि | अञ्ज्वः | अञ्ज्मः | उ. |
| लिट् | आनञ्ज | आनञ्जतुः | आनञ्जुः | प्र. |
| | आनञ्जिथ | आनञ्जथुः | आनञ्ज | म. |
| | आनञ्ज | आनञ्जिव | आनञ्जिम | उ. |
| लुट् | अङ्क्ता | अङ्क्तारौ | अङ्क्तारः | प्र. |
| | अङ्क्तासि | अङ्क्तास्थः | अङ्क्तास्थ | म. |
| | अङ्क्तास्मि | अङ्क्तास्वः | अङ्क्तास्मः | उ. |

**इट् पक्षे—प्र.** अञ्जिता अञ्जितारौ अञ्जितारः। **म.** अञ्जितासि अञ्जितास्थः अञ्जितास्थ। **उ.** अञ्जितास्मि-स्वः-स्मः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृट् | अञ्जिष्यति | अञ्जिष्यतः | अञ्जिष्यन्ति | प्र. |
| | अञ्जिष्यसि | अञ्जिष्यथः | अञ्जिष्यथ | म. |
| | अञ्जिष्यामि | अञ्जिष्यावः | अञ्जिष्यामः | उ. |

**इड्विकल्पे—प्र.** अङक्ष्यति। **म.** अङक्ष्यसि। **उ.** अङक्ष्यामि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लोट् | अनक्तु-अङ्क्तात् | अङ्क्ताम् | अञ्जन्तु | प्र. |
| | अङ्ग्धि-अङ्क्तात् | अङ्क्तम् | अङ्क्त | म. |
| | अनजानि | अनजाव | अनजाम | उ. |
| लङ् | आनक् | आङ्क्ताम् | आञ्जन् | प्र. |
| | आनक्-ग् | आङ्क्तम् | आङ्क्त | म. |
| | आनजम् | आञ्ज्व | आञ्ज्म | उ. |
| वि. लि. | अञ्ज्यात् | अञ्ज्याताम् | अञ्ज्युः | प्र. |
| | अञ्ज्याः | अञ्ज्यातम् | अञ्ज्यात | म. |
| | अञ्ज्याम् | अञ्ज्याव | अञ्ज्याम | उ. |
| आ. लि. | अज्यात् | अज्यास्ताम् | अज्यासुः | प्र. |
| | अज्याः | अज्यास्तम् | अज्यास्त | म. |
| | अज्यासम् | अज्यास्व | अज्यास्म | उ. |
| लुङ् | आञ्जीत् | आञ्जिष्टाम् | आञ्जिषुः | प्र. |
| | आञ्जीः | आञ्जीष्टम् | आञ्जिष्ट | म. |
| | आञ्जिषम् | आञ्जिष्व | आञ्जिष्म | उ. |
| लृङ् | आञ्जिष्यत् | आञ्जिष्यताम् | आञ्जिष्यन् | प्र. |
| | आञ्जिष्यः | आञ्जिष्यतम् | आञ्जिष्यत | म. |
| | आञ्जिष्यम् | आञ्जिष्याव | आञ्जिष्याम | उ. |

**इड्विकल्पे प्र.** आङ्क्ष्यत्। **म.** आङ्क्ष्यः। **उ.** आङ्क्ष्यम्।

**कर्मणि**—अज्यते। **णिचि**—अञ्जयति। ९ आञ्जिजत्। १० आञ्जयिष्यत्। **सनि**—अञ्जिजिषति। ९ आञ्जिजिषीत्। १० आञ्जिजिषिष्यत्।

**कृत्सु**—व्यञ्जितव्यम्-अङ्क्तव्यम्, अञ्जयितव्यम्, व्यञ्जनीयम्, व्यङ्ग्यम्[१]-आज्यम्[२], व्यञ्जयम्, ईषदञ्जः-दुरञ्जः-स्वञ्जः, व्यज्यमानः,[३] अङ्गः, अञ्जः, व्यञ्जितुम्-व्यङ्क्तुम्, अञ्जयितुम्, व्यक्तिः, व्यञ्जा, अञ्जनम्, व्यञ्जना, अञ्जित्वा, अक्त्वा[४]-अङ्त्वा, व्यञ्जयित्वा, अभिव्यज्य, अञ्जलिः[५], व्यक्तम्-क्तः-क्तवान्, व्यञ्जितम्, व्यञ्जकः-ञ्जिका, व्यञ्जिता-त्री, अञ्जयिता-त्री, व्यङ्क्ता[६]-त्री, व्यञ्जन्[७]-न्ती, व्यञ्जयन्-न्ती, व्यञ्जिष्यन्-व्यङ्क्ष्यन्-न्ती-ती, व्यञ्जयमानः, व्यञ्जयिष्यमाणः। द्वयञ्जलिः, द्वयञ्जलम्,[८] व्यञ्जलम्।

**( १४५९ ) तुञ्चु—सङ्कोचने**। (सङ्कुचित होना, सङ्कोच होना)। सकर्म.। वेट्। परस्मै.।

१ तनक्ति तङ्क्तः तञ्चन्ति। २ **प्र.** ततञ्च। **म.** ततञ्चिथ-ततङ्क्थ। **उ.** ततञ्चिव-ततञ्च्व। ३ तञ्चिता-तङ्क्ता। ४ तञ्चिष्यति-तङ्क्षयति। ५ तनक्तु। **म.** तङ्ग्धि। **उ.** तनचानि। ६ अतनक् अतङ्क्ताम्। ७ तञ्च्यात् तञ्च्याताम्। ८ तच्यात् तच्यास्ताम्। ९ अतञ्चीत्-अताङ्क्षीत्।

**कर्मणि**—तच्यते। **कृत्सु**—तञ्चितव्यम्-तङ्क्तव्यम्, तञ्चयितव्यम्, तञ्चनीयम्, तङ्क्यम्, तञ्चयम्, तच्यमान, तञ्च्यमानः, आतङ्कः, तञ्चः, तञ्चितुम्-तङ्क्तुम्, तञ्चयितुम्, तञ्चा, तञ्चना, तञ्चनम्, तञ्चित्वा-तक्त्वा, तञ्चयित्वा, प्रतच्य, प्रतञ्च्य, तक्तम्-क्तः-क्तवान्, तञ्चितः, संतक्-संतग्-संतचौ-संतचः, तञ्चन्-ती, तञ्चयन्-न्ती, तञ्चिष्यन्-तङ्क्षन्-न्ती-ती, तञ्चयिष्यन्-न्ती-ती, तञ्चयमानः, तञ्चयिष्यमाणः, तञ्चकः-ञ्चिका, तञ्चिता-तङ्क्ता-त्री, तञ्चयिता-त्री,।

**( १४६० ) ओविजी—भयचलनयोः**। (डरना, डर से कम्पित होना, कांपना, आपद् ग्रस्त होना, चलना।) अकर्म.। सेट्। परस्मै.। प्रायेणायम् उत्पूर्वः।

१ **प्र.** विनक्ति विङ्क्तः विञ्जन्ति। **म.** विनक्षि विङ्क्थः विङ्क्थ। **उ.** विनज्मि विञ्ज्वः विञ्ज्मः। २ **प्र.** विवेज विविजतुः। **म.** विविजिथ विविजथुः। **उ.** विवेज विविजिव विविजिम। ३ विजिता। ४ विजिष्यति। ५ **प्र.** विनक्तु। विङ्क्ताम् विञ्जन्तु। **म.** विङ्ग्धि। विङ्क्तम्। **उ.** विनजानि। ६ **प्र.** अविनक्-ग् अविङ्क्ताम् अविञ्जन्। **म.** अविनक्-ग् अविङ्क्तम्। **उ.** अविजम् अविञ्ज्व। ७. विज्यात् विञ्ज्याताम्। ८ विज्यात् विज्यास्ताम्। ९ अविचीत् अविजिष्टाम्। १० अविजिष्यत्।

**भावे**—विज्यते। **णिचि**—वेजयति। **सनि**—विविजिषति। **यङि**—वेविज्यते। **यङ्लुकि**—वेविजीति-वेवेक्ति। **कृत्सु**—उद्वेजकः-जिका, उद्विजिका[९]-त्री, उद्वेजयिता-

१ 'चचोः कु घिण्ण्यतोः' (७-३-५२) इति कुत्वम्।
२ 'आङ्पूर्वादञ्जेः संज्ञायामुपसंख्यानम्' (वा. ३-१-१०९) इति क्यपि रूपम्। उपधानकारलोपः।
३ 'अनिदिताम्—' (६-४-२४) इति नलोपः।
४ 'जान्तनशां विभाषा' (६-४-३२) इति वा उपदानकारलोपः।
५ औणादिके अलिच् प्रत्ययः।
६ 'स्वरतिपूति—' (७-२-४४) इति ऊदित्वाद् इड्विकल्पः।
७ 'रुदादिभ्यः' (३-१-७८) इति श्नम् प्रत्यये 'श्नलोपे' (६-४-२३) 'श्नसोरल्लोपः' (६-४-१११)।
८ द्वे अञ्जली परिमाणमस्येत्यत्र 'द्वित्रिभ्यामञ्जलेः' इति टज्वा।
९ तृचि, 'विज इट्' (१-२-२) इति इडादिप्रत्ययः, ङिद्वद्भावाद् गुणो न भवति। एवं तव्यतादिषु च ज्ञेयम्।

त्री, उद्वेजयन्-न्ती, उद्वेजयिष्यन्-न्ती-ती, उद्विजमानः, उद्विजिष्यमाणः, वेविज्यमानः, उद्विक्-ग्, उद्विजौ-उद्विजः, उद्विग्नम्[1]-नः-नवान्, उद्वेजितः, उद्वेगः, उद्वेगनः, विजितव्यम्, वेजयितव्यम्, वेजनीयम्, उद्वेजनीयम्, उद्वेग्यम्[2], उद्वेज्यम्, विज्यमानः, वेज्यमानः, ईषद्वेजः-दुर्वेजः-सुवेजः, उद्विजितुम्, उद्वेजयितुम्, वेगितम्[3], उद्वेक्तिः, उद्वेजना, उद्वेजनम्, विजित्वा,[4] वेजयित्वा, उद्वेज्य।

**(१४६१) वृजी—वर्जने**। (छोड़ना, वर्जित करना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.।

१ वृणक्ति वृङ्क्तः वृञ्जन्ति। **म.** वृणक्षि। **उ.** वृणज्मि वृञ्ज्वः वृञ्ज्मः। २ **प्र.** ववर्ज ववृजतुः ववृजुः। **म.** ववर्जिथ ववृजथुः। **उ.** ववर्ज ववृजिव ववृजिम। ३ वर्जिता। ४ वर्जिष्यति। ५ वृणक्तु-वृङ्क्तात् वृङ्क्ताम् वृञ्जन्तु। **म.** वृङ्ग्धि। उ. वृणजानि। ६ **प्र.** अवृणक्-ग् अवृङ्क्ताम् अवृञ्जन्। **म.** अवृणक्-ग् अवृङ्क्तम्। **उ.** अवृणजम् अवृञ्ज्व अवृञ्ज्म। ७ वृञ्ज्यात् वृञ्ज्याताम्। ८ वृज्यात् वृज्यास्ताम्। ९ अवर्जीत् अवर्जिष्टाम्। १० अवर्जिष्यत्।

**कर्मणि**—वृज्यते। **णिचि**—वर्जयति-ते। **सनि**—विवर्जिषति। **यङि**—वरीवृज्यते। **यङ्लुकि**—वरिवृजीति-वरीवृजीति-वर्वक्ति-वरिवक्ति-वर्वृजीति। **कृत्सु**—वर्जकः-र्जिका, वर्जिता-त्री, वर्जयिता-त्री, वृञ्जन्-ती, वर्जयन्-न्ती, वृक्तः,[5] प्रवर्ग्यम्[6], वर्जित्वा,[7] वृजिनम्,[8] वर्णः, वर्जितव्यम्, वर्जनीयम्, वृज्यम्, वर्जितुम्, वर्जनम्, विवृज्य।

**(१४६२) पृची—सम्पर्के**। (सम्पर्क करना, स्पर्श करना, संयोग करना)। सक.। सेट्। परस्मै.। पृणक्ति। इत्यादि 'वृणक्ति' (१४६१) वत्।

**कृत्सु**—पर्चकः-र्चिका, पिपर्चिषकः-र्षिका, परीपृचकः-चिका, पृञ्चन्[9]-ती, घञि-सम्पर्कः[10], घिनुणि सम्पर्की,[11] निष्ठायाम्-पृक्तः।

इति रुदादयः ॥ ७ ॥



१ निष्ठायाम्, ईदित्वात् 'श्वीदितो निष्ठायाम्' (७-२-१४) इति अनिट्त्वात् इण्निषेधे ओदित्वात् निष्ठातकारस्य नकारे चकारस्य कुत्वे च रूपमेवम्।

२ निष्ठायामनिट्त्वात् 'चजोः—' (७-३-५२) इति कुत्वे रूपमेवम्।

३ घञन्तात् वेगशब्दात् तारकादित्वात्, इतचि रूपमेवम्।

४ 'न क्त्वा सेट्' (१-२-१८) इति कित्त्वनिषेधं बाधित्वा 'विज इट्' (१-२-२-) इति नित्यं ङित्वम्।

५ ईदित्वात् 'श्वीदितो निष्ठायाम्' (७-२-१४) इति निष्ठायामिडागमनिषेधः।

६ ण्यति, 'चजोः कु घिण्ण्यतोः' (७-३-५२) इति कुत्वम्।

७ 'न क्त्वा सेट्' (१-२-१८) इति कित्वनिषेधाद् गुणः।

८ 'वृजेः किञ्च' इति इनच् प्रत्ययः किच्च भवति। कित्वान्न गुणः। वृज्यते वृणक्ति वा वृजिनम् = पापम्।

९ शतरि 'रुदादिभ्यः—' (३-१-७८) इति श्नम् विकरणप्रत्ययः। मित्वादन्त्यादचः परो भवति। 'श्नसोरल्लोपः' (६-४-१११) इति श्नमोऽकारस्य लोपः। नकरस्यानुस्वारे, परसवर्णे च रूपमेवम्।

१० निष्ठायामनिट्त्वेन 'चजोः कु—' (७-३-५२) इति घञि कुत्वम्। 'वागथाविव सम्पृक्तौ' इति रघु.।

११ 'सम्पृचानुरुध—' (३-२-१४२) इत्यादिना सम्पूर्वकादस्मात् कर्तरि, तच्छीलादिष्वर्थेषु घिनुण् प्रत्ययः। 'चजोः—' (७-३-५२) इति कुत्वम्।

# अथ तनादयः ( ८ )

( १४६३ ) **तनु—विस्तारे**। विस्तारः = दैर्घ्यम्। (फैलाना, बढ़ाना)। सक.। सेट्। उभय.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | तनोति[१] | तनुतः[२] | तन्वन्ति[३] | प्र. |
| | तनोषि | तनुथः | तनुथ | म. |
| | तनोमि | तनुवः[४]-तन्वः | तनुमः-तन्मः | उ. |
| लिट् | ततान | तेनतुः[५] | तेनुः | प्र. |
| | तेनिथ | तेनथुः | तेन | म. |
| | ततान-ततन | तेनिव | तेनिम | उ. |
| लुट् | तनिता | तनितारौ | तनितारः | प्र. |
| | तनितासि | तनितास्थः | तनितास्थ | म. |
| | तनितास्मि | तनितास्वः | तनितास्मः | उ. |
| लृट् | तनिष्यति | तनिष्यतः | तनिष्यन्ति | प्र. |
| | तनिष्यसि | तनिष्यथः | तनिष्यथ | म. |
| | तनिष्यामि | तनिष्यावः | तनिष्यामः | उ. |
| लोट् | तनोतु-तनुतात् | तनुताम् | तन्वन्तु | प्र. |
| | तनु[६]-तनुतात् | तनुतम् | तनुत | म. |
| | तनवानि | तनवाव | तनवाम | उ. |
| लङ् | अतनोत् | अतनुताम् | अतन्वन् | प्र. |
| | अतनोः | अतनुतम् | अतनुत | म. |
| | अतनवम् | अतन्व | अतन्म | उ. |
| वि. लि. | तनुयात् | तनुयाताम् | तनुयुः | प्र. |
| | तनुयाः | तनुयातम् | तनुयात | म. |
| | तनुयाम् | तनुयाव | तनुयाम | उ. |
| आ. लि. | तन्यात् | तन्यास्ताम् | तन्यासुः | प्र. |
| | तन्याः | तन्यास्तम् | तन्यास्त | म. |
| | तन्यासम् | तन्यास्व | तन्यास्म | उ. |

१ तन् + ति इति स्थिते, 'तनादिभ्यः उः' इति 'उ' प्रत्ययः, तन् उ ति इति जाते, सार्वधातुके' इति गुणे रूपम्।

२ तसादौ ङित्वान्न गुणः।

३ 'हुश्नुवो—' इति यण्।

४ 'लोपश्चास्यान्यतरस्यां म्वोः' इत्युकारलोपविकल्पः।

५ 'अत एकहल्मध्ये—' इति एत्वाभ्यासलोपौ।

६ 'उतश्च प्रत्यया—' इति हेर्लुक्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुङ् | अतानीत्[१] | अतानिष्टाम् | अतानिषुः | प्र. |
| | अतानीः | अतानिष्टम् | अतानिष्ट | म. |
| | अतानिषम् | अतानिष्व | अतानिष्म | उ. |

पक्षे– अतनीत् अतनिष्टाम् अतनिषुः इत्यादि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृङ् | अतनिष्यत् | अतनिष्यताम् | अतनिष्यन् | प्र. |
| | अतनिष्यः | अनिष्यतम् | अतनिष्यत | म. |
| | अतनिष्यम् | अतनिष्याव | अतनिष्याम | उ. |

आत्मनेपदपक्षे

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | तनुते | तन्वाते | तन्वते | प्र. |
| | तनुषे | तन्वाथे | तनुध्वे | म. |
| | तन्वे | तन्वहे-तनुवहे | तन्महे-तनुमहे | उ. |
| लिट् | तेने | तेनाते | तेनिरे | प्र. |
| | तेनिषे | तेनाथे | तेनिध्वे | म. |
| | तेने | तेनिवहे | तेनिमहे | उ. |
| लुट् | तनिता | तनितारौ | तनितारः | प्र. |
| | तनितासे | तनितासाथे | तनिताध्वे | म. |
| | तनिताहे | तनितास्वहे | तनितास्महे | उ. |
| लृट् | तनिष्यते | तनिष्येते | तनिष्यन्ते | प्र. |
| | तनिष्यसे | तनिष्येथे | तनिष्यध्वे | म. |
| | तनिष्ये | तनिष्यावहे | तनिष्यामहे | उ. |
| लोट् | तनुताम् | तन्वाताम् | तन्वताम् | प्र. |
| | तनुष्व | तन्वाथाम् | तनुध्वम् | म. |
| | तनवै | तनवावहै | तनवामहै | उ. |
| लङ् | अतनुत | अतन्वाताम् | अतन्वत | प्र. |
| | अतनुथाः | अतन्वाथाम् | अतनुध्वम् | म. |
| | अतन्वि | अतन्वहि-अतनुवहि | अतन्महि अतनुमहि | उ. |
| वि. लि. | तन्वीत | तन्वीयाताम् | तन्वीरन् | प्र. |
| | तन्वीथाः | तन्वीयाथाम् | तन्वीध्वम् | म. |
| | तन्वीय | तन्वीवहि | तन्वीमहि | उ. |
| आ. लि. | तनिषीष्ट | तनिषीयास्ताम् | तनिषीरन् | प्र. |
| | तनिषीष्ठाः | तनिषीयास्थाम् | तनिषीध्वम् | म. |
| | तनिषीय | तनिषीवहि | तनिषीमहि | उ. |
| लुङ् | अतत[२]-अतनिष्ट | अतनिषाताम् | अतनिषन् | प्र. |
| | अतथाः, अतनिष्ठाः | अतनिषाथाम् | अतनिड्ढ्वम्-निध्वम् | म. |
| | अतनिषि | अतनिष्वहि | अतनिष्महि उ. | |

१ 'अतो हलादे लघोः' इति परस्मैपदपरे सिचिवा वृद्धिः।

२ 'तनादिभ्यस्तथासोः' इति वा सिज् लोपः, 'अनुदात्तोपदेशे–' इति अनुनासिकलोपः।

| लृङ् | अतनिष्यत | अतनिष्यताम् | अतनिष्यन्त | प्र. |
| --- | --- | --- | --- | --- |
| | अतनिष्यथाः | अतनिष्येथाम् | अतनिष्यध्वम् | म. |
| | अतनिष्ये | अतनिष्यावहि | अतनिष्यामहि | उ. |

**कर्मणि**—तायते[१]-तन्यते। ७ तायताम्-तन्यताम्। आर्धधातुकेषु कर्तरिवत्। ९ अतानि। इति विशेषः। **णिचि**—तानयति-ते। ९ अतीतनत्। **सनि**—तितनिषति[२]-ते। तितंसति[३]-ते-तितांसति-ते। **यङि**—तन्तन्यते। **यङ्लुकि**—तन्तनीति-तन्तन्ति। **कृत्सु**—तनितव्यम्, तननीयम्, तान्यम्, तन्वती, तनितुम्, तननम्, तानना, तनित्वा-तत्वा, वितत्य,[४] प्रतान्य, तन्तुः, तनूः, तनुः, तातः, तन्त्रम्, तितउः = चालनी। तानकः-निका, तनिता-त्री, तानयिता-त्री, तन्वन्[५]-ती, तानयन्-न्ती, तनिष्यन्-न्ती-ती, तानयिष्यन्-न्ती-ती, तन्वानः, तानयमानः, तनिष्यमाणः, तानयिष्यमाणः, परीतत्, पुरीतत्[६]-पुरीततौ-पुरीततः, ततः[७]-ततम्-सन्ततम्-सततम्-तवान्, तनितः,[८] तानितः, अवतानः[९], तानयितव्यम्, तानवीयम्, तान्यम्, तन्यमानः[१०]-तानयमानः, तान्यमानः, तानः-वितानः-सन्तानः, तानयितुम्, ततिः, विततिः[११]-सन्ततिः, तन्तिः,[१२] तानना, तानयित्वा।

(१४६४) **षणु**—**सनु** = दाने। सनुते (देना, दान करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

८. सनोति[१३]। इत्यादि 'तनोति' (१४६४) वत्। विशेषस्तु ८ सायात्[१४]-सन्यात्-सनिषीष्ट। सायास्ताम्-सन्यास्ताम्-सनिषीयास्ताम्। ९ असानीत्- असनीत्-असातः-असनिष्ट। असानीः-असनीः, असाथाः-असनिष्ठाः।

---

१ 'तनातेर्यकि' इति वा आत्वम्।

२ 'तनिपतिदरिद्रातिभ्यः सन इड्वा वक्तव्यः' इति इड्विकल्पः।

३ इडभावे 'तनोतेर्विभाषा' इति झलादौ सनि वा दीर्घः।

४ 'वा ल्यपि' (६-६-३८) इत्यत्र व्यवस्थितविभाषाश्रयणात् तनोत्यादीनां नित्यमनुनासिकलोपः।

५ 'तनादिभ्य उः' (३-१-७९) इति उः विकरणप्रत्ययः। यणादेशः। एवं तन्वान इत्यत्रापि बोध्यम्।

६ क्विपि, 'गमः क्वौ' (६-४-४०) इत्यत्र 'गमादीनमिति वक्तव्यम्' (वा. ६-४-४०) इत्युक्तत्वात् गमप्रकाराणां ग्रहणेनास्यापि अनुनासिकलोपे, तुकि, 'नहिवृतिवृषिव्यधिरुचिसहितनिषु क्वौ' (६-३-१६) इति पूर्वपदस्य दीर्घे च रूपम्। पुरि = शरीरे तनोति = विस्तृतो भवति इत्यर्थे, 'हलन्तात् सप्तम्याः संज्ञायाम्' (६-३-९) इत्यलुकि, 'महिवृत्ति—' (६-३-११६) इति पूर्वपदस्य दीर्घे च रूपम्। पुरीतत् = नाडीविशेषः।

७ सनि वैकल्पिकेट्त्वादस्य, 'यस्य विभाषा' (७-२-१५) इति निष्ठायामिण्णिषेधे, 'अनुनासिकस्य क्विझलोः क्ङिति' (६-४-१५) इति नलोपे रूपम्। 'समो वा हिततततयोः—' (वा. ६-३-१०९) इति समो मकारस्य वा लोपः।

८ 'द्वितीयाश्रितातीतपतित—' (२-१-१४) इत्यत्र पतितेति निपातनात् 'यस्य विभाषा' (७-२-१५) इत्यस्यानित्यत्वं कुत्रचित् बोध्यते। तेन धावितमिमराजभिया इत्यादि। कुत्रचित् निष्ठायामिड् भवतीति ज्ञेयम्। एवमत्रापि निष्ठायामिटि तनितमिति भवतीति प्रक्रियासर्वस्वे।

९ 'तनोतेरुपसंख्यानम्' (वा. ३-१-१४०) इति कर्तरि णप्रत्ययः, पचाद्यचोऽपवादः। अवतनोतीत्यवतानः।

१० 'तनोतेर्यकि' (६-४-४४) इति धातुनकारस्य आत्वविकल्पः। आत्वपक्षे सवर्णदीर्घे तायमानः इति भवति।

११ 'तितुत्र—' (७-२-९) इति इण्णिषेधः नकारलोपः

१२ 'क्तिच्क्तौ च संज्ञायाम् (३-३-१७४) इति क्तिचि, 'तितुत्र—' (७-२-९) इतीण्णिषेधे, 'न क्तिचि दीर्घश्च (६-४-३९) इति दीर्घ अनुनासिकलोपयोनिषेधः।

१३ 'तनादिभ्यस्तथासोः' इति वा सिज्लोपः। 'अनुदात्तोपदेशे—' ति अनुनासिकलोपः।

१४ 'तनोतेर्यकि इति वा आत्वम्।

**कर्मणि**—सायते-सन्यते। **सनि**—सिषासति-सिसनिषति। **यङि**—सासायते-संसन्यते। सातः[1] सतिः।

**( १४६५ ) क्षिणु—हिंसायाम्।** (मारना, जान से मारना, दुःख देना, सताना, तोड़ना)। सक.। सेट्। उभय.।

१ प्र. क्षिणोति-क्षेणोति। म. क्षिणोषि-क्षेणोषि। उ. क्षिणोमि-क्षेणोमि। २ प्र. चिक्षेण चिक्षिणतुः चिक्षिणुः। म. चिक्षेणिथ। उ. चिक्षिणिव। ३ क्षेणितासि। ४ क्षेणिष्यति। ५ क्षिणोतु-क्षेणोतु। म. क्षिणु-क्षेणु। उ. क्षिणवानि-क्षेणवानि क्षिणवाव-क्षेणवाव। ६ प्र. अक्षिणोत्-अक्षेणोत्। म. अक्षिणोः-अक्षेणोः। उ. अक्षिणवम्-अक्षेणवम् अक्षिणुव-अक्षिण्व-अक्षेणुव-अक्षेण्व। ७ क्षिणुयात्-क्षेणुयात्। ८ क्षिण्यात्। ९ अक्षेणीत् अक्षेणिष्टाम्। १० अक्षेणिष्यत्।

**आत्मनेपदे**—१ क्षिणुते-क्षेणुते क्षिण्वाते-क्षेण्वाते। म. क्षिणुषे-क्षेणुषे। उ. क्षिणुवहे-क्षेणुवहे-क्षिण्वहे-क्षेण्वहे। २ प्र. चिक्षिणे। म. चिक्षिणिषे। उ. चिक्षिणिवहे। ३. क्षेणितासे। ४ क्षेणिष्यते। ५ क्षिणुताम्-क्षेणुताम्। म. क्षिणुष्व-क्षेणुष्व। उ. क्षिणवै-क्षेणवै। ६ अक्षिणुत-अक्षेणुत। ७ क्षिण्वीत-क्षेण्वीत। ८ क्षेणिषीष्ट। ९ अक्षित-अक्षेणिष्ट अक्षेणिषाताम् अक्षिथाः अक्षिष्ठाः। १० अक्षेणिष्यत।

**कर्मणि**—क्षिण्यते। **णिचि**—क्षेणयति। **सनि**—चिक्षिणिषति-चिक्षेणिषति। **यङि**—चेक्षिण्यते। **यङ्लुकि**—चेक्षेणीति-चेक्षेति। **कृत्सु**—क्षेणितव्यम्, क्षेणनीयम्, क्षेण्यम्, क्षितः, क्षिण्वन्-क्षेण्वन्, क्षिण्वती-क्षेण्वती, क्षिण्वानः-क्षेण्वानः, क्षेणुतुम्, क्षेणनम्, क्षिणित्वा-क्षेणित्वा-क्षित्वा, प्रक्षित्य क्षितिः।

**( १४६६ ) क्षणु—हिंसायाम्।** (मारना, जान से मार देना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। उदित्।

१ क्षणोति-क्षणुते। उ. क्षण्वः-क्षणुवः। क्षण्वहे-क्षणुवहे। २ चक्षाण-चक्षणे। ९ अक्षणीत्-अक्षत-अक्षणिष्ट। म. अक्षथाः-अक्षणिष्ठाः। 'सनोति' (१४६४) वत्। क्षत्वा-क्षणित्वा, क्षतः, क्षतम्।

**( १४६७ ) ऋणु—गतौ।** (जाना)। सक.। सेट्। उभय.। उदित्।

ऋणोति-अर्णोति, ऋणुते-अर्णुते। २ आनर्ण-आनृणे। ३ अर्णिता। ९ आर्णीत्-आर्त आर्णिष्ट। **कृत्सु**—अर्णितव्यम्, अर्णयितव्यम्, अर्णनीयम्, अर्णकः[2]-र्णिका, अर्णिता-त्री, अर्णयिता-त्री, अर्णुवन्[3]-वती, अर्णयन्-न्ती, अर्णिष्यन्-न्ती-ती, अर्णयिष्यन्-न्ती-ती, अर्णुवानः, अर्णयमानः, अर्णिष्यमाणः, अर्णयिष्यमाणः, ऋत्[4]-ऋतौ- ऋतः,

१ 'यस्य विभाषा' इत्यनिट्त्वम्। अनिटि क्त्वादावनुनासिकलोपं बाधित्वा 'जनसने–' त्यात्वम्।

२ 'पुगन्तलघूपधस्य–' (७-३-८६) इति गुणः।

३ 'तनादिकृञ्भ्यः उः' (३-१-७९) इति उः विकरणप्रत्ययः। विकरणनिमित्तके गुणे, उर्वाङ च रूपम्।

४ 'अनुदात्तोपदेशवनतितनोत्यादीनाम्–' (६-४-३७) इति अनुनासिकलोपे तुक्।

ऋतम्[१]-ऋतः, अर्णतम्-तः, ऋणः[२], अर्णः, अर्णिषुः, ऋण्यम्, ऋण्वन्, अर्ण्यम्, अर्ण्यमाणः, अर्णः, स्वर्णम्[३] सुवर्णम्, अर्णितुम्, अर्णयितुम्, ऋतिः, अर्णना, अर्णिनिषा अर्णनम्, अर्णित्वा[४]-ऋत्वा, समृत्य,[५] प्रार्त्य,[६] समर्ण्य, अर्णवः।

**(१४६८) तृणु**—अदने। अदनम् = भक्षणम्। (खाना)। सक.। सेट्। उभय.। तृणोति-तर्णोति-तृणुते-तर्णुते। 'तनोति' (१४६३) वत्।

**कृत्सु**—तर्णितव्यम्, तर्णयितव्यम्, तर्णनीयम्, तृण्यमानः, तर्ण्यमानः, तर्णिष्यन्-न्ती-ती, तर्णयिष्यन्-न्ती-ती, तर्णुवानः, तर्णिष्यमाणः, तर्णकः-र्णिका, तर्णिता-त्री, तर्णयिता-त्री, तर्णुवन्[७]-तृण्वन-ती, तर्णयन्[८]-न्ती, तृण्[९]-तृणौ-तृणः, तृत्[१०]-तृतौ-तृतः, तृतम्[११]-तः-तवान्, तर्णितः, तृणः, तर्णः,[१२] तृण्यम्[१३], तर्ण्यम्, तृणम्,[१४] कर्तृणम्,[१५] तर्णः, तर्णितुम्, तर्णयितुम्, तृतिः,[१६] तृण्टि, तर्णना, तर्णनम्, तर्णित्वा[१७], तृत्वा, तर्णयित्वा, प्रतृत्य[१८]-प्रतृण्य, प्रतर्ण्य।

**(१४६९) घृणु**—दीप्तौ। (चमकना, प्रकाशित होना)। सक.। सेट्। उभय.। उदित्।

उप्रत्ययनिमित्तौ लघूपधगुणः संज्ञापूर्वको विधिरनित्य इति न भवतीति मैत्रादयः। भवत्येवेत्यन्ये। रूपद्वयम्। घृणोति-घर्णोति। घृणुते-घर्णुते। जघर्ण-जघृणे। अघर्णीत्-अघृत-अघर्णिष्ट। घृतः, घर्णित्वा-घृत्वा, घृणा।

---

१ उदित्वात् क्त्वायामिड्विकल्पात् 'यस्य विभाषा' (७-२-१५) इति क्तिनि, इडभावपक्षे क्त्वाप्रत्यये च बोध्यम्।
२ 'इगुपधज्ञा—' (३-१-१३५) इति कर्तरि कः।
३ 'हलश्च' (३-३-१२१) इति संज्ञायां घञ्'। 'लिङ्गमशिष्यं, लोकाश्रयत्वाल्लिङ्गस्य' इति न्यायात् नपुंसकलिङ्गत्वम्।
४ 'उदितो वा' (७-२-५६) इति क्त्वायामिड्विकल्पः। इट्पक्षे 'न क्त्वा सेट्' (१-२-१८) इति कित्वनिषेधाद् गुणः।
५ 'वा ल्यपि' (६-२-१८) इत्यत्र व्यवस्थितविभाषाश्रयणात् अनुनासिकलोपो नित्यः। तुक्।
६ 'उपसर्गादृति धातौ' (६-१-९१) इति वृद्धिरेकादेशः।
७ 'तनादिकृञ्भ्यः उः' (३-१-७९) इति उः विकरणप्रत्ययः, 'श्नुधातु—' (६-४-७७) इत्युवङ्, स्त्रियाम् उगित्वेन ङीप्। आत्रेयादयस्तु 'संज्ञापूर्वको विधिरनित्यः' इत्याश्रित्य गुणाभावं मत्वा, तृण्वन्-ती इति रूपमाहुः।
८ 'ण्यन्तात् निगरणचलनार्थेभ्यश्च' (१-३-८७) इति परस्मैपदमेव। तेन शानच् न भवति।
९ विधिरूपमेव। तेन अनुनासिक लोपो न भवति।
१० क्विपि तु 'गमः क्वौ' (६-४-४०) इत्यत्र 'गमादीनामिति वक्तव्यम्' (वा. ६-४-४०) इति वार्तिकात् अनुनासिकलोपे, तुकिरूपमेवं भवति।
११ 'अनुदात्तोपदेशवनतितनोत्यादीनामनुनासिकलोपो झलि क्ङिति' (६-४-३७) इत्यनुनासिकलोपे रूपम्।
१२ 'आशिषि च' (३-१-१५०) इति वुन्।
१३ ऋदुपधाच्चाक्लृपिचृतेः' (३-१-११०) इति क्यप्।
१४ 'घञर्थे कविधानम्' (वा. ३-३-५८) इति कप्रत्ययः। कित्वान्न गुणः।
१५ 'तृणे च जातौ' (६-३-१०३) इति तत्पुरुषे कद्भावः।
१६ क्तिनि, 'अनुदात्तोपदेश—' (६-१-३७) इत्यनुनासिकलोपे रूपम्।
१७ 'उदितो वा' (७-२-५६) इति क्त्वायामिड्विकल्पः। इट्पक्षे 'न क्त्वा सेट्' (१-२-१८) इति कित्वनिषेधात् गुणे तर्णित्वा इति रूपम्। इडभावपक्षे अनुनासिकलोपे गुणाभावः।
१८ 'वा ल्यपि' (६-४-३८) इति अनुनासिकलोपविकल्पः। लोपपक्षे तुकि प्रतृत्य इति रूपम्।

**( १४७० ) वनु—याचने** । (याचना करना, मांगना) । सकर्म. । सेट् । आत्मने.[1] ।

१ वनुते वन्वाते वन्वते । **म.** वनुषे । **उ.** वन्वे वनुवहे-वन्वहे । २ ववने ववनाते । ३ वनिता । **म.** वनितासे । ४ वनिष्यते । ५ वनुताम् वन्वाताम् वन्वताम् । **म.** वनुष्व । **उ.** वनवै । ६ अवनुत अवन्वाताम् । **म.** अवनुथाः । **उ.** अवन्वि । ७ वन्वीत । ८ वनिषीष्ट । ९. अवत-अवनिष्ट अवनिषाताम् । **म.** अवथाः-अवनिष्ठाः । १० अवनिष्यत ।

**कर्मणि**—वन्यते । **णिचि**—वानयति । **सनि**—विवनिषते । **यङि**—ववन्यते । **यङ्लुकि**—ववनीति-ववन्ति । **कृत्सु**—वनितव्यम्, वननीयम्, वान्यम्, वतः, वन्वानः, वनितुम्, वननम्, वनित्वा-वत्वा, प्रवत्य, प्रवीयकः-पनीपकः

**( १४७१ ) मनु—अवबोधने** । (जानना, समझना, विचार करना, मानना) । सक. । सेट् । आत्मने. । मनुते । मनुताम् । इत्यादि 'वनोति' (१४७०) वत् । २ मेने मेनाते मेनिरे ।

**कर्मणि**—मन्यते । **णिचि**—मानयति-ते । **सनि**—मिमनिषते । **यङि**—मंमन्यते । **यङ्लुकि**—मंमनीति-मंमन्ति । **कृत्सु**—मनितव्यम्, मननीयम्, मान्यम्, मनितम्, मन्वानः, मननम्, मनित्वा-मत्वा, संमत्य ।

**( १४७२ ) टुकृञ्—करणे** । (करना) । **अति**—(आत्म) अधिक करना । **अधि**—(आत्म) जीतना, अधिकार होना । दूसरे के अनुकूल करना । **अप**—(आत्म) उपकार कना । **आ**—(आत्म) वेषान्तर करना, भेष बदलना । **उत्**—(आत्म) मार डालना, मरणोन्मुख होना, बटोरना । **उदा**—(आत्म) दूषण लगाना, छलना । **उप**—(पर) उपकार करना, **उपस्**—(उभय) पलटना, बदलना, स्वच्छ करना, जमा करना । **तिरस्**—(परस्मै) अषमान करना, तिरस्कार करना । दुस् (दुष्) (परस्मै) दुष्कर्म करना । खराब काम करना । **निरा**—(आत्मने) भर्त्सना करना, निन्दा करना, तिनके समान मानना, त्यागना । परिस् (परिष्) (परस्मै) स्वच्छ करना, परिष्कार करना । **परा**—(पर) निराकरण करना, अच्छी रीति से वर्तना । **प्र**—(आत्मने) प्रारम्भ करना, जल्दी करना । **प्रति**—(आत्मने. ।) प्रतीकार करना, बदला लेना । **प्रत्युप**—(आत्मने) प्रत्युपकार करना । **वि**—(आत्मने) ढूढना, शब्द करना । **वि**—(पर) बदलना, कम्पित करना । **व्या**—(आत्मने) स्पष्ट करना, समझाना । **संस्**—(पर) स्वच्छ करना, सुसंस्कृत करना । **सु**—(पर) अच्छा करना ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | करोति | करुतः | कुर्वन्तु | प्र. |
| | करोषि | कुरुथः | कुरुथ | म. |
| | करोमि | कुर्वः | कुर्मः | उ. |
| लिट् | चकार | चक्रतुः | चक्रुः | प्र. |
| | चकर्थ | चक्रथुः | चक्र | म. |
| | चकार-चकर | चकृव | चकृम | उ. |

१ चान्द्रास्त्वमु परस्मैपदिनमाहुः । तन्मते वनोति ववान इत्यादि परस्मैपद 'तनोति' (१४६३) वत् ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुट् | कर्ता | कर्तारौ | कर्तारः | प्र. |
| | कर्तासि | कर्तास्थः | कर्तास्थ | म. |
| | कर्तास्मि | कर्तास्वः | कर्तास्म | उ. |
| लृट् | करिष्यति | करिष्यतः | करिष्यन्ति | प्र. |
| | करिष्यसि | करिष्यथः | करिष्यथ | म. |
| | करिष्यामि | करिष्यावः | करिष्यामः | उ. |
| लोट् | करोतु-करुतात् | कुरुताम् | कुर्वन्तु | प्र. |
| | कुरु-कुरुतात् | कुरुतम् | कुरुत | म. |
| | करवानि | करवाव | करवाम | उ. |
| लङ् | अकरोत् | अकुरुताम् | अकुर्वन् | प्र. |
| | अकरोः | अकुरुतम् | अकुरुत | म. |
| | अकरवम् | अकुर्व | अकुर्म | उ. |
| वि. लि. | कुर्यात् | कुर्याताम् | कुर्युः | प्र. |
| | कुर्याः | कुर्यातम् | कुर्यात | म. |
| | कुर्याम | कुर्याव | कुर्याम | उ. |
| आ. लि. | क्रियात् | क्रियास्ताम् | कुर्यासुः | प्र. |
| | क्रियाः | क्रियास्तम् | क्रियास्त | म. |
| | क्रियासम् | क्रियास्व | क्रियास्म | उ. |
| लुङ | अकार्षीत् | अकार्ष्टाम् | अकार्षुः | प्र. |
| | अकार्षीः | अकार्ष्टम् | अकार्ष्ट | म. |
| | अकार्षम् | अकार्ष्व | अकार्ष्म | उ. |
| लृङ् | अकरिष्यत् | अकरिष्यताम्. | अकरिष्यन् | प्र. |
| | अकरिष्यः | अकरिष्यतम् | अकरिष्यत | म. |
| | अकरिष्यम् | अकरिष्याव | अकरिष्याम | उ. |
| | | आत्मनेपदे | | |
| लट् | कुरुते | कुर्वाते | कुर्वते | प्र. |
| | कुरुषे | कुर्वाथे | कुरुध्वे | म. |
| | कुर्वे | कुर्वहे | कुर्महे | उ. |
| लिट् | चक्रे | चक्राते | चक्रिरे | प्र. |
| | चकृषे | चक्राथे | चकृढ्वे | म. |
| | चक्रे | चकृवहे | चकृमहे | उ. |
| लुट् | कर्ता | कर्तारौ | कर्तारः | प्र. |
| | कर्तासे | कर्तासाथे | कर्ताध्वे | म. |
| | कर्ताहे | कर्तास्वहे | कर्तास्महे | उ. |
| लृट् | करिष्यते | करिष्येते | करिष्यन्ते | प्र. |
| | करिष्यसे | करिष्येथे | करिष्यध्वे | म. |
| | करिष्ये | करिष्यावहे | करिष्यामहे | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लोट् | कुरुतात् | कुर्वाताम् | कुर्वताम् | प्र. |
| | कुरुष्व | कुर्वाथाम् | कुरुध्वम् | म. |
| | करवै | करवावहै | करवामहै | उ. |
| लङ् | अकुरुत | अकुर्वाताम् | अकुर्वन्त | प्र. |
| | अकुरुथाः | अकुर्वाथाम् | अकुरुध्वम् | म. |
| | अकुर्वि | अकुर्वहि | अकुर्महि | उ. |
| वि. लि. | कुर्वीत | कुर्वीयाताम् | कुर्वीरन् | प्र. |
| | कुर्वीथाः | कुर्वीयाथाम् | कुर्वीध्वम् | म. |
| | कुर्वीय | कुर्वीवहि | कुर्वीमहि | उ. |
| आ. लि. | कृषीष्ट | कृषीयास्ताम् | कृषीरन् | प्र. |
| | कृषीष्ठाः | कृषीयास्थाम् | कृषीढ्वम् | म. |
| | कृषीय | कृषीवहि | कृषीमहि | उ. |
| लुङ् | अकृत | अकृषाताम् | अकृषत | प्र. |
| | अकृथाः | अकृषाथाम् | अकृढ्वम्-ड्ढ्वम् | म. |
| | अकृषि | अकृष्वहि | अकृष्महि | उ. |
| लृङ् | अकरिष्यत | अकरिष्येताम् | अकरिष्यन्त | प्र. |
| | अकरिष्यथाः | अकरिष्येथाम् | अकरिष्यध्वम् | म. |
| | अकरिष्ये | अकरिष्यावहे | अकरिष्यामहे | उ. |

**कर्मणि**—क्रियते । २ चक्रे । ९ अकारि । **णिचि**—कारयति-ते । २. कारयाञ्चकार-चक्रे । ९. अचीकरत्-त । **सनि**—चिकीर्षति-त । **यङि**—चेक्रीयते । **यङ्लुकि**— चर्करीति-चरीकरीति । **कृत्सु**—कारकः-रिका, चिकीर्षकः[1]-र्षिका, चेक्रीयकः[2]-यिका, कर्ता-त्री, कारयिता-त्री, चिकिर्षिता-त्री, चेक्रीयता-त्री, कुर्वन्[3], उपकुर्वन्, चित्रंविकुर्वन्[4], अनुकुर्वन्,[5] पराकुर्वन्, कारयन्-न्ती, चिकीर्षन्-न्ती, करिष्यन्[6]-न्ती-ती, कारयिष्यन्-न्ती-ती, चिकीर्षिष्यन्-न्ती-ती, कुर्वाणः, उत्कुर्वाणः, उदाकुर्वाणः, उपकुर्वाणः, प्रकुर्वाणः, अधिकुर्वाणः, विकुर्वाणः, कारयमाणः, चिकीर्षमाणः, चेक्रीयमाणः, संचेस्क्रीयमाणः,[7] करिष्यमाणः, कारयिष्यमाणः, चिक्रीर्षिष्यमाणः, चेक्रीयिष्यमाणः, सुकृत्,[8] कर्मकृत्, पापकृत्-मन्त्रकृत-पुण्यकृत्

१ 'अज्झनगमां सनि' (६-४-१६) इति दीर्घे, 'इको झल्' (१-२-९) इति सनः कित्वे, 'ऋत इद् धातोः' (७-१-१००) इति इत्वे रपरत्वे, 'सन्यङोः' (६-१-९) इति द्वित्वादिकम् ।

२ 'रिङ् शयग् लिङक्षु' (७-४-२८) इति रिङादेशे, द्वित्वे, 'गुणो यङ्लुकोः' (७-४-८२) इत्यभ्यासस्य गुणे, 'अकृत्सार्वधातुकयोः—' (७-४-२५) इति दीर्घः ।

३ 'तनादिभ्यः उः' (३-१-७९) इत्युप्रत्यये, गुणे, 'अत उत् सार्वधातुके' (६-४-११०) इत्युत्वे, उप्रत्ययस्य यणादेशः ।

४ वे शब्दकर्मणः । (१-३-३४) इत्यत्र 'शब्दकर्मणः' इत्युक्तत्वादत्र न शानच् ।

५ 'अनुपराभ्यां कृञः' (१-३-७९) इति शतृप्रत्ययः ।

६ 'ऋद्धनोः स्ये' (७-२-७०) इतीडागमः स्यप्रत्ययस्य ।

७ 'संपरिभ्यां करोतौ भूषणे' (६-१-१३७) इति सुट् । 'सुटः कात् पूर्वः' (६-१-१३५) ।

८ 'सुकर्मपापमन्त्रपुण्येषु कृञः' (३-२-८९) इति स्वादिषु भूते कर्तरि क्विप् । तुक् ।

शास्त्रकृत्[१]-भाष्यकृत्-कृतौ-कृतः, कृतम्-कृतः, कृतवान्, उपस्कृता[२] (ब्राह्मणाः) परिष्कृता[३] (कन्या), उपस्कृतं[४] (भुक्ते), कारितम्, चिकीर्षितः, चेक्रीयितः-तवान् करः,[५] क्षेमकरः,[६] किङ्करः-किङ्करा-किङ्करी-यत्करः- यत्करा-तत्करः-तत्करा- तस्करः- तस्करा-बहुकर-बहुकरा, कुम्भकारः, अन्धकारः, सत्यङ्कारः, अगदङ्कारः, अस्तुङ्कारः, शङ्करः-शङ्करा-शङ्करी, यशस्करः, यशस्करी (विद्या), शोककर, दर्वीकरः, त्रासकरी, ज्योतिष्करः, क्रीडाकरः, श्राद्धकरः, वचनकरः, कार्यकरः, पारस्करः (देशः) मस्करः (वेणुः) दिवाकरः,[७] विभाकरः, निशाकरः, प्रभाकरः, भास्करः, कारकरः, कारस्करः (वृक्षः) अन्तकरः, अनन्तकरः, आकरः-नान्दीकरः, लिपिकरः, लिविकरः, बलिकरः, भक्तिकरः, कर्तृकरः चित्रकरः क्षेत्रकरः, एककरः, (द्विकरः-त्रिकरः), जङ्घाकरः[८] बाहुकरः[९], अहस्करः[१०] धनुष्करः, अरुष्करः,[११] कर्मकर[१२], कर्मकारः, शब्दकारः, श्लोककारः, कलहकारः, गाधाकारः, वैराकारः, चाटुकारः-सूत्रकारः, मन्त्रकारः, पदकारः, स्तम्बकारि (व्रीहिः), शरत्करिः (वत्सः), स्तम्बकारः, शकृत्कारः, मेघङ्करः, ऋतिङ्करः, भयङ्करः, अभयङ्करः, क्षेमङ्करः, प्रियङ्करः, क्षेमकारः,[१३] प्रियकारः, मद्रकारः, कडङ्करः[१४], मस्करी, अकारी[१५], अपकारी,[१६] प्रियकारी अनपकारी, उपकारी, राजकृत्वा,[१७] राजकृत्वरी, सहकृत्वा,[१८] सहकृत्वरी, विश्वकर्मा,[१९]

---

१ 'सुकर्म–' (३-२-८९) इति सूत्रे उपपदनियमाभावात्, क्विप् च (३-२-७६) इति क्विपि 'शास्त्रकृत्' इत्यादिसिसद्धिः ।

२ 'समवाये च' (६-१-१३८) इति सुट् । उपस्कृताः = सङ्घीभूता = इत्यर्थः

३ सुटः परिनिविभ्यः सेवसितसयसिवुसहसुट्स्तुस्वञ्जाम्' (८-३-७०) इति षत्वम् ।

४ विकृतं भुङ्क्ते, वाक्याध्याहारेण ब्रवीति, इति क्रमेणार्थः । 'उपात् प्रतियत्न–' (६-१-१३९) इति सुट् ।

५ 'शिवशमरिष्टस्य करे' (४-४-१४३) 'कर्मणि घटोऽठच्' (५-२-३५) इति निर्देशाभ्यां 'पचादेः' (३-१-१३४) आकृतिगणत्वं बोध्यते । तेन सर्वेभ्यो धातुभ्योऽच् प्रत्ययो भवति ।

६ 'पचाद्यचि' (३-१-१३४) गङ्गाधरमूघरादिवत् षष्ठीसमासे साधुः । अत एव 'अल्पारम्भः क्षेमकरः' इति प्रयोग उपपद्यते ।

७ 'दिवाविभा–' (३-२-२१) इति टः प्रत्ययः । दिवा = दिवसे प्राणिनः चेष्टायुक्तान् करोतीति दिवाकरः ।

८ 'जङ्घाकरः' इत्यत्र जङ्घाशब्देन लक्षणया तत्साध्यवेगो लक्ष्यते ।

९ 'बाहुकरः' इत्यत्र बाहुशब्देन बाहुसाध्या गतिः प्रवृत्तिर्वा बोध्यते ।

१० 'कस्कादिषु च' (८-३-४८) इति सूत्रे गणपाठात् सत्वम् तेन जिह्वामूलीयो न भवति ।

११ 'धनुष्करः अरुष्करः' इत्यत्र 'नित्यं समासेऽनुत्तरपदस्थस्य' (४-३-४५) इति षत्वम् ।

१२ 'कर्मणि भृतौ (३-२-२२) इति टः । भृतिं यः सेवते स कर्मकरः, अन्यत्र कर्मकारः ।

१३ 'क्षेमप्रियभद्रेऽण् च' (३-२-४४) इति खजनौ ।

१४ 'कडङ्करदक्षिणाच्छ च' (५-१-६९) इति सूत्रे निपातनात् मुम् ।

१५ 'ग्रह्यादि–' (३-१-१३४) गणे पाठात् अताच्छीलिको णिनिः नञ्युपपदे ।

१६ 'सुप्यजातौ णिनिस्ताच्छील्ये' (३-२-७८) इति ताच्छीलिको णिनिः ।

१७ 'राजनि युधिकृञः (३-२-९५) इति भूते क्वनिप् । राजनं कृतवान् राजकृत्वा । तुक् । स्वशक्त्या नृपं कृतवान् इत्यर्थः (प्रक्रियासर्वस्वे) ।

१८ 'सहे च' (३-२-९६) इति क्वनपि तुका सहकृत्वा = सहकारी । स्त्रियां वनो र च (४-१-७) इति ङीपि रेफादेशे च सहकृत्वरी इति रूपम् ।

१९ 'अन्येभ्योऽपि दृश्यते' (३-२-७५) इति मनिन् प्रत्यये, नेड् वशि कृति' (७-२-८) इति इण्णिषेधे च रूपम् । विश्वं कर्म अस्मात् अस्य वा इति विश्वकर्मा = देवशिल्पी ।

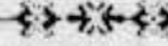
अलङ्करिष्णुः,[१] निराकरिषुः, चक्रिः,[२] कारकः, कारिका, कारः, चिकीर्षुः, चकारयिषुः चेक्रियः, कर्तव्यम्, कारायितव्यम्, चिकीर्षितव्यम्, चेक्रीयितव्यम्, करणीयम्, कारणीयम्, चिकीर्षणीयम्, चेक्रीयणीयम्, कृत्यम्-कार्यम्, ईषत्करः-दुष्करः-सुकरः, ईषदाढ्यङ्करः-दुराढ्यङ्करः-स्वाढ्यङ्करः, क्रियमाणः, संस्क्रियमाणः, कार्यमाणः, चिकीर्ष्यमाणः, चेक्रीय्यमाणः, कारः, उपकारः अपकारः-प्राकारः, चक्रम्, कृत्रिमम्, असंस्कृत्रिमम्, कर्तुम्-व्याकर्तुम्, कृतिः, क्रिया, कृत्या, कारिः कारिका, कारणा, चिकीर्षा, चिकारयिषा, चेक्रीया, करणम्, आढ्यङ्करणम्, सुभगङ्करणम्, स्थूलङ्करणम्, पलितङ्करणम्-नग्नङ्करणम्-अन्धङ्करणम्-अन्धङ्करणी, प्रियङ्करणम्, उष्णङ्करणम्, भद्रङ्करणम्, स्वाढ्यङ्करणम्,[३] कारणम्, चिकीर्षणम्, चेक्रीयणम्, कृत्वा, तिरस्कृत्वा[४]-तिरः कृत्वा, उपाजेकृत्वा[५]-अन्वाजेकृत्वा, साक्षात्कृत्वा[६], उरसिकृत्वा,[७] मनसिकृत्वा, मध्येकृत्वा, पदेकृत्वा-निवचनेकृत्वा[८], नीचैःकृत्वा-उच्चैःकृत्वा[९], तिर्यक्कृत्वा[१०], मुखतः कृत्वा, नानाकृत्वा[११]-विनाकृत्वा-द्विधाकृत्वा-द्वैधंकृत्वा-द्वेधाकृत्वा, कारयित्वा, चिकीर्षित्वा, चेक्रीयित्वा, उपकृत्य, नीचैःकृत्य, उच्चैःकृत्य, तिर्यक्कृत्य, गलतःकृत्य, नानाकृत्य-विनाकृत्य, द्विधाकृत्य-द्वैधंकृत्य-द्वेधाकृत्य, कारिकाकृत्य,[१२] ऊरीकृत्य-उररीकृत्य-शुक्लीकृत्य[१३]-वषट्कृत्य-पटपटाकृत्य, खाट्कृत्य, सत्कृत्य-असत्कृत्य[१४], अलङ्कृत्य[१५], पुरस्कृत्य[१६],

---

१ अलङ्कृञ् निराकृञ्–' (३-२-१३६) इत्यादिना ताच्छीलिक इष्णुच् प्रत्ययः ।
२ 'भाषायां धाञ् कृ–' (वा. ३-२-१७१) इत्यनेन किः, किन् वा प्रत्ययः । चक्रिः = कर्त्ता ।
३ 'भयाढ्यादिषु तदन्तग्रहणम्' (भाष्यम् १-१-७२) इति वचनात् तदन्तविधिः ।
४ 'विभाषा कृञि' (१-४-७२) इति गतिसंज्ञाविकल्पः । यदि गतिसंज्ञा, तदानी, तिरसोऽन्यतरस्याम्' (८-३-४२) इति विसर्जनीयस्य सत्वविकल्पः । यदा गतिसंज्ञा न तदानीं विसर्जनीयः, समासोऽपि न । एवं ल्यबपि ।
५ 'उपाजेऽन्वाजे' (१-४-७३) इति गतिसंज्ञायां समासविकल्पः । यदा समासः, तदानी ल्यबपि ।
६ 'साक्षात्प्रभृतीनि च' (१-४-७४) इति गतिसंज्ञा । 'साक्षात् प्रभृतिषु च्व्यर्थवचनम्' (वा. १-४-७४) इति वचनात् च्व्यर्थे एव गतिसंज्ञा । समासे तु ल्यप् ।
७ 'अनत्याधान उरसिमनसी' (१-४-७५) इति गतिसंज्ञायां समासविकल्पः । एवं ल्यप्यपि । अत्याधानम् = उपश्लेषनम् तदभावोऽनत्याधानम् ।
८ 'मध्ये पदे निवचने च' (१-४-७६) इति गति संज्ञायां समासविकल्पः । अत्रापि चकारात् 'अनत्याधाने' इत्यनुवर्तते । निवचनम् = वचनाभावः । निवचने-कृत्वा = वाचं नियम्येत्यर्थः ।
९ अव्ययेऽयथाभिप्रेताख्याने कृञः क्त्वाणमुलौ' (३-४-५९) इति क्त्वाणमुलौ । 'तृतीयाप्रभृतीन्यतरस्याम्' (२-२-२१) इति समासविकल्पः । ततश्च ल्यबपि । अन्यथाभिप्रेताख्यानं नाम = अप्रियस्योच्चैः प्रियस्य च नीचैः कथनम् ।
१० 'तिर्यच्यपवर्गे' (३-४-६०) इति कृञः क्त्वाणमुलौ । अपवर्गः = समाप्तिः । ल्यबप्येवम् ।
११ 'नानार्थप्रत्यये च्व्यर्थे' (३-४-६२) इति कृञः क्त्वाणमुलौ, ल्यबपि । 'धार्थत्वेन' द्वित्र्योश्च' (५-३-४५) इति धमुञः, 'एधाच्च' (५-३-४६) इति एधावश्च ग्रहणम् ।
१२ 'कारिकाशब्दस्योपसंख्यानम्–' (वा. १-४-६०) इति गतिसंज्ञायां समासे ल्यप् ।
१३ 'अनुकरणं चनितिपरम्' (१-४-६२) इति गतिसंज्ञायां समासे ल्यपि रूपम् ।
१४ 'आदरानादरयोः सदसती' (१-४-६३) इति गतिसंज्ञायां समासे ल्यपि रूपम् । प्रीत्यतिशयः = आदरः । परिभवः, औदासीन्यं वा अनादरः ।
१५ अनेकार्थकस्यालंशब्दस्य 'भूषणेऽलम्' (१-४-६४) इति भूषणेऽर्थे गतिसंज्ञायां समासे ल्यप् ।
१६ 'पुरोऽव्ययम्' (१-४-६७) इति गतिसंज्ञायां, 'नमस्पुरसोर्गत्योः' (८-३-४०) इति विसर्जनियस्य सत्वे च रूपम् ।

नमस्कृत्य, हस्तेकृत्य[१], पाणौकृत्य, प्राध्वंकृत्य,[२] जीविका-कृत्य[३]-उपनिषत्कृत्य, तिरस्कृत्य-तिरः-कृत्य, उपाजेकृत्य-अन्वाजेकृत्य, साक्षात्कृत्य, उरसिकृत्य-मनसिकृत्य, मध्येकृत्य-पदेकृत्य-निवचनेकृत्य, लवणङ्कृत्य[४], विकार्य प्रचिकीर्ष्य, प्रचेक्रीय्य।

## इति तनादयः ॥ ८ ॥



१ 'नित्यं हस्ते पाणावुपयमने' (१-४-७७) इति नित्यं गतिसंज्ञायां समासे ल्यप्। उपयमनम् = दारकर्म।

२ 'प्राध्वं बन्धने' (१-४-७८) इति जित्ये गतिसंज्ञायां समासे ल्यप्, प्राध्वं कृत्य = बन्धनेनाकूलं कृत्वेत्यर्थः।

३ 'जीविकोपनिषदावौपम्ये' (१-४-७९) इति नित्यगतिसंज्ञायां समासे ल्यप्।

४ साक्षात्प्रभृतिषु (१-४-७४) लवणशब्दस्य गतिसंज्ञासन्नियोगेन मान्तत्वं निपात्यते, तेन लवणाकृत्येति भवति।

# अथ क्र्यादयः ( ९ )

( १४७३ ) **डुक्रीञ्—द्रव्यविनिमये।** (खरीदने, बदले मे लेना, **वि**—बेचना)। सकर्म.। अनिट्। उभयपदी।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | क्रीणाति | क्रीणीतः[1] | क्रीणन्ति[2] | प्र. |
| | क्रीणासि | क्रीणीथः | क्रीणीथ | म. |
| | क्रीणामि | क्रीणीवः | क्रीणीमः | उ. |
| लिट् | चिक्राय | चिक्रियतुः | चिक्रियुः | प्र. |
| | चिक्रयिथ-चिक्रेथ | चिक्रियथुः | चिक्रिय | म. |
| | चिक्राय-चिक्रिय | चिक्रियिव | चिक्रियिम | उ. |
| लुट् | क्रेता | क्रेतारौ | क्रितारः | प्र. |
| | क्रेतासि | क्रेतास्थः | क्रेतास्थ | म. |
| | क्रितास्मि | क्रेतास्वः | क्रेतास्मः | उ. |
| लृट् | क्रेष्यति | क्रेष्यतः | क्रेष्यन्ति | प्र. |
| | क्रेष्यसि | क्रेष्यथः | क्रेष्यथ | म. |
| | क्रेष्यामि | क्रेष्यावः | क्रेष्यामः | उ. |
| लोट् | क्रीणातु-क्रीणीतात् | क्रीणीताम् | क्रीणन्तु | प्र. |
| | क्रीणीहि-क्रीणीतात् | क्रीणीतम् | क्रीणीत | म. |
| | क्रीणानि | क्रीणाव | क्रीणाम | उ. |
| लङ् | अक्रीणीत् | अक्रीणीताम् | अक्रीणन् | प्र. |
| | अक्रीणाः | अक्रीणीतम् | अक्रीणीत | म. |
| | अक्रीणाम् | अक्रीणीव | अक्रीणीम | उ. |
| वि. लि. | क्रीणीयात् | क्रीणीयाताम् | क्रीणीयुः | प्र. |
| | क्रीणीयाः | क्रीणीयातम् | क्रीणीयात | म. |
| | क्रीणीयाम् | क्रीणीयाव | क्रीणीयाम | उ. |
| आ. लि. | क्रीयात् | क्रीयास्ताम् | क्रियासुः | प्र. |
| | क्रीयाः | क्रीयास्तम् | क्रीयास्त | म. |
| | क्रियासम् | क्रीयास्व | क्रीयास्म | उ. |
| लुङ् | अक्रैषीत् | अक्रैष्टाम् | अक्रैषुः | प्र. |
| | अक्रैषीः | अक्रैष्टम् | अक्रैष्ट | म. |
| | अक्रैषम् | अक्रैष्व | अक्रैष्म | उ. |
| लृङ् | अक्रेष्यत् | अक्रेष्यताम् | अक्रेष्यन् | प्र. |
| | अक्रेष्यः | अक्रेष्यतम् | अक्रेष्यत | म. |
| | अक्रेष्यम् | अक्रेष्याव | अक्रेष्याम | उ. |

१ 'ई हल्यघोः' इत्यनेन ईत्वम्।
२ 'श्नाभ्यस्तयोरातः' इत्याकारलोपः।

आत्मनेपदे

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | क्रीणीते | क्रीणाते | क्रीणते | प्र. |
| | क्रीणीषे | क्रीणाथे | क्रीणीध्वे | म. |
| | क्रीणे | क्रीणीवहे | क्रीणीमहे | उ. |
| लिट् | चिक्रिये | चिक्रियाते | चिक्रियिरे | प्र. |
| | चिक्रियिषे | चिक्रियाथे | चिक्रियिध्वे | म. |
| | चिक्रिये | चिक्रियिवहे | चिक्रियिमहे | उ. |
| लुट् | क्रेता | क्रेतारौ | क्रेतारः | प्र. |
| | क्रेतासे | क्रेतासाथे | क्रेतासाध्वे | म. |
| | क्रेताहे | क्रेतास्वहे | क्रेतास्महे | उ. |
| लृट् | क्रेष्यते | क्रेष्येते | क्रेष्यन्ते | प्र. |
| | क्रेष्यसे | क्रेष्येथे | क्रेष्यध्वे | म. |
| | क्रेष्ये | क्रेष्यावहे | क्रेष्यामहे | उ. |
| लोट् | क्रीणीताम् | क्रीणाताम् | क्रीणताम् | प्र. |
| | क्रीणीष्व | क्रीणीथाम् | क्रीणीध्वम् | म. |
| | क्रीणै | क्रीणावहै | क्रीणामहै | उ. |
| लङ् | अक्रीणीत | अक्रीणाताम् | अक्रीणत | प्र. |
| | अक्रीणीथाः | अक्रीणाथाम् | अक्रीणीध्वम् | म. |
| | अक्रीणि | अक्रीणीवहि | अक्रीणीमहि | उ. |
| वि. लि. | क्रीणीत | क्रीणीयाताम् | क्रीणीरन् | प्र. |
| | क्रीणीथाः | क्रीणीयाथाम् | क्रीणीध्वम् | म. |
| | क्रीणीय | क्रीणीवहि | क्रीणीमहि | उ. |
| आ. लि. | क्रेषीष्ट | क्रेषीयास्ताम् | क्रेषीरन् | प्र. |
| | क्रेषीष्ठाः | क्रेषीयास्थाम् | क्रेषीध्वम् | म. |
| | क्रेषीय | क्रेषीवहि | क्रेषीमहि | उ. |
| लुङ् | अक्रेष्ट | अक्रेषाताम् | अक्रेषत | प्र. |
| | अक्रेष्ठाः | अक्रेषाथाम् | अक्रेढ्वम् | म. |
| | अक्रेषि | अक्रेष्वहि | अक्रेष्महि | उ. |
| लृङ् | अक्रेष्यत | अक्रेष्येताम् | अक्रेष्यन्त | प्र. |
| | अक्रेष्यथाः | अक्रेष्येथाम् | अक्रेष्यध्वम् | म. |
| | अक्रेष्ये | अक्रेष्यावहि | अक्रेष्यामहि | उ. |

**कर्मणि**—क्रीयते। **णिचि**—क्रापयति[१]-ते। ९ अचिक्रपत्। **सनि**—चिक्रीषति-ते। **यङि**—चेक्रीयते। **यङ्लुकि**—चेक्रेति-चेक्रयीति।

१ 'क्रीङ्जीनां णौ' इत्यात्वे, अर्तिह्रीब्लीरी–ति पुक्।

**कृत्सु**—क्रेतव्यम्। क्रयणीयम्। क्रेतुं शक्यं-क्रय्यम्[१]। क्रेतुं योग्यं-क्रेयम्। क्रीतः। क्रीतवान्। क्रीणती। क्रीणानः। क्रेतुम्। क्रयणम्। क्रीत्वा। विक्रीय। क्रयः। विक्रयः। ण्यन्तस्य क्रापयित्वा। क्रापयितुम्। क्रापयन्-माण। विक्रीणाति। विक्रीणीते। परिक्रीणीते[२]। अवक्रीणीते।

**(१४७४) प्रीञ्—तर्पणे कान्तौ च**। कान्तिः = कामना। (प्रीति करना, तृप्त करना, कामना करना)। सक.। अनिट्। उभय.। प्रीणाति - प्रीणीते। इत्यादि '**क्रीणाति**' (१४७३) वत्। **णिचि**– प्रीणयति-ते। ९ अपिप्रीणत्-त।

**कृत्सु**—प्रीणकः, प्रायकः[३]-यिका, प्रीणकः-णिका, वत्सप्रीः,[४] प्रियः, प्रेयान्।

**(१४७५) श्रीञ्—पाके**। (पकाना)। सकर्म.। अनिट्। उभय.। श्रीणाति-श्रीणीते। इत्यादि 'क्रीणाति' (१४०३) वत्। **णिचि**—श्राययति-ते। ९ अशिश्रियत्-त।

**(१४७६) मीञ्—बन्धने हिंसायाञ्च**। (बाँधना, मार डालना या दुःख देना)। सक.। अनिट्। उभय.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | मीनाति | मीनीतः | मीनन्ति | प्र. |
| | मीनासि | मीनीथः | मीनीथ | म. |
| | मीनामि | मीनीवः | मीनीमः | उ. |
| लिट् | ममौ | मिम्यतुः | मिम्युः | प्र. |
| | ममिथ-ममाथ | मिम्यथुः | मिम्य | म. |
| | ममौ | मिम्यिव | मिम्यिम | उ. |
| लुट् | माता | मातारौ | मातारः | प्र. |
| | मातासि | मातास्थः | मातास्थ | म. |
| | मातास्मि | मातास्वः | मातास्मः | उ. |
| लृट् | मास्यति | मास्यतः | मास्यन्ति | प्र. |
| | मास्यसि | मास्यथः | मास्यथ | म. |
| | मास्यामि | मास्यावः | मास्यामः | उ. |
| लोट् | मीनातु-मीनीतात् | मीनीताम् | मीनन्तु | प्र. |
| | मीनीहि-मीनीतात् | मीनीतम् | मीनीत | म. |
| | मीनानि | मीनाव | मीनाम | उ. |
| लङ् | अमीनात् | अमीनीताम् | अमानन् | प्र. |
| | अमीनाः | अमीनीतम् | अमीनीत | म. |
| | अमीनाम् | अमीनीव | अमीनीम | उ. |

१ क्रय्यस्तदर्थे।
२ 'परिव्यवेभ्यः क्रियः' इति अकर्त्रभिप्रायेऽपिआत्मनेपदम्।
३ 'धूञ्प्रीञोर्नुग् वक्तव्यः' (वा. ७-३-३७) इति ण्यन्ते सर्वत्र नुगागमे णत्वे च प्राणिकः, प्रीणयिता-इत्यादीनि रूपाणि भवन्ति।
४ वत्सान् प्रीणातीति वत्सप्रीः। क्विपि रूपमेवम् काशिकायां (६-४-१४८) रूपमेतदुदाहृतम्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| वि. लि. | मीनीयात् | मीनीयाताम् | मीनीयुः | प्र. |
| | मीनीयाः | मीनीयातम् | मीनीयात | म. |
| | मीनीयाम् | मीनीयाव | मीनीयाम | उ. |
| आ. लि. | मीयात् | मीयास्ताम् | मीयासुः | प्र. |
| | मीयाः | मीयास्तम् | मीयास्त | म. |
| | मीयासम् | मीयास्व | मीयास्म | उ. |
| लुङ् | अमासीत् | अमासिष्टाम् | अमासिषुः | प्र. |
| | अमासीः | अमासिष्टम् | अमासिष्ट | म. |
| | अमासिषम् | अमासिष्व | अमासिष्म | उ. |
| लृङ् | अमास्यत् | अमास्यताम् | अमास्यन् | प्र. |
| | अमास्यः | अमास्यतम् | अमास्यत | म. |
| | अमास्यम् | अमास्याव | अमास्याम | उ. |

आत्मनेपदे

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | मीनीते | मीनाते | मीनते | प्र. |
| | मीनीषे | मीनाथे | मीनीध्वे | म. |
| | मीने | मीनीवहे | मीनीमहे | उ. |
| लिट् | मिम्ये | मिम्याते | मिम्यिरे | प्र. |
| | मिम्यिषे | मिम्याथे | मिम्यिध्वे-मिम्यिढ्वे | म. |
| | मिम्ये | मिम्यिवहे | मिम्यिमहे | उ. |
| लुट् | माता | मातारौ | मातारः | प्र. |
| | मातासे | मातासाथे | माताध्वे | म. |
| | माताहे | मातास्वहे | मातास्महे | उ. |
| लृट् | मास्यते | मास्येते | मास्यन्ते | प्र. |
| | मास्यसे | मास्येथे | मास्यध्वे | म. |
| | मास्ये | मास्यावहे | मास्यामहे | उ. |
| लोट् | मीनीताम् | मीनाताम् | मीनताम् | प्र. |
| | मीनीष्व | मीनाथाम् | मीनीध्वम् | म. |
| | मीनै | मीनावहै | मीनामहै | उ. |
| लङ् | अमीनीत | अमीनाताम् | अमीनत | प्र. |
| | अमीनीयाः | अमीनाथाम् | अमीनीध्वम् | म. |
| | अमीनि | अमीनीवहि | अमीनीमहि | उ. |
| वि. लि. | मीनीत | मीनीयाताम् | मीनीरन् | प्र. |
| | मीनीथाः | मीनीयाथाम् | मीनीध्वम् | म. |
| | मीनीय | मीनीवहि | मीनीमहि | उ. |
| आ. लि. | मासीष्ट | मासीयास्ताम् | मासीरन् | प्र. |
| | मासीष्ठाः | मासीयास्थाम् | मासीध्वम् | म. |
| | मासीय | मासीवहि | मासीमहि | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुङ् | अमास्त | अमासाताम् | अमासत | प्र. |
| | अमास्थाः | अमासाथाम् | अमाद्ध्वम्-अमाध्वम् | म. |
| | अमासि | अमास्वहि | अमास्महि | उ. |
| लृङ् | अमास्यत | अमास्येताम् | अमास्यन्त | प्र. |
| | अमास्यथाः | अमास्येथाम् | अमास्यध्वम् | म. |
| | अमास्ये | अमास्यावहि | अमास्यामहि | उ. |

**कर्मणि**—मीयते। **णिचि**—मापयति-ते। **सनि**—मित्सति-ते। **यङि**—मेमीयते। **यङ्लुकि**—मेमयीति-मेमेति। **कृत्सु**—मायकः[१]-यिका, मापकः[२]-पिका, मित्सक[३]-त्सिका, मेमीयकः-[४]यिका, माता-मात्री, मापयिता-त्री, मीनन्-प्रमीमन्-ती, प्रमीणानः, मीतम्-मीतः, मीतवान्, मीत्वा, प्रमाय,[५] ईषत्प्रमयः-दुष्प्रमयः-सुमयः, मयः-प्रमयः, मीनानः, मातव्यः, मानीयः, मेयः, मातुम्, मानम्, मीत्वा, प्रमाय, मेयूः, प्रमीणाति।

**( १४७७ ) षिञ्—बन्धने।** (बांधना, गूंथना, फन्दे से पकड़ना)। सकर्म.। अनिट्। उभयपदी।

१ सिनाति-सिनीते। २ सिषाय, सिष्यतुः सिष्युः। **म.** सिषयिथ-सिषेथ सिष्यथुः सिष्य। **उ.** सिषाय-सिषय सिष्यिव सिष्यिम। **आत्मनेपदे**—**प्र.** सिष्ये सिष्याते सिष्यिरे। **म.** सिष्यषे सिष्याथे सिष्यिढ्वे-ध्वे। **उ.** सिष्ये सिष्यिवहे सिष्यिमहे। ३ सेता। **म.** सेतासि-सेतासे। ४ सेष्यति-सेष्यते। ५ **प्र.** सिनातु-सिनीताम्। ६ असिनात्-असिनीत। ७ सिनीयात्-सिनीत। ८ सीयात् सेषीष्ट। **म.** ढ्वम्। ९ असैषीत्। असैष्टाम्-असेष्ट। असेषाताम्। १० असेष्यत्-त।

**कर्मणि**—सीयते। **णिचि**—साययति। **सनि**—सिसीषति-ते। **यङि**—सेषीयते। **यङ्लुकि**—सेषयीति-सेषेति। **कृत्सु**—सेतव्यम्, , सयनीयम्, सेयः, सितः, सिनन्, सिनती, सिनानः, सेतुम्, सयनम्, सित्वा, प्रसित्य।

**( १४७८ ) स्कुञ्—आप्रवणे।** (कूदना, फुदकना, उड़ाना, ऊपर उठाना, आच्छादित करना, ढकना)। सकर्म.। अनिट्। उभय.। उकारान्तः।

**स्तन्भुस्तम्भु**-इति श्नुः। श्ना च। २ स्कुनोति स्कुनुतः स्कुन्वन्ति-स्कुनुते स्कुन्वाते स्कुन्वते। स्कुनाति स्कुनीतः स्कुनन्ति-स्कुनीते स्कुनाते स्कुनते। २ चुस्काव-चुस्कुवे। ३ स्कोता। **म.** स्कोतासि-से। ४ स्कोष्यति-ते। ८ स्कूयात् स्कूयास्ताम्। स्कोषीष्ट, स्कोषीयास्ताम्। ९ अस्कौषीत्, अस्कौष्टाम्। अस्कोष्ट अस्कोषाताम्।

१ 'मीनातिमिनोतिदीङां ल्यपि च' (६-१-५०) इति एज्विषये आकारः। युगागमः। एवमेव णवुल् प्रभृतिष्वपि ज्ञेयम्।
२ ष्यन्तेऽप्येज् विषत्वेनाकारे, आदन्तलक्षणो पुगागमे च रूपमेव सर्वत्र ज्ञेयम्।
३ 'सनि मीमा–' (७-४-५४) इत्यनेन इस्, अभ्यासलोपतकारादिकं यथायथं सन्नन्ते सर्वत्र ज्ञेयम्।
४ यङ एज्विषयत्वाभावेन आकारो न। अभ्यासे गुणः। एवमेव यङन्ते सर्वत्र ज्ञेयम्।
५ 'मीनातिमिनोतिदीङां ल्यपि च' (६-१-५०) इत्यनेन ल्यप्यप्याकारः।

**सनि**—चुस्कूषति-ते। **यङि**—चोस्कूयते। **यङ्लुकि**—चोस्कोति। **णिचि**—स्कावयति। ९. अचुस्कुवत्। **कृत्सु**—स्कुत्वा, स्कुतः, स्कपकः विका, स्कुन्वन्- स्कुन्वती-स्कुन्वान, इति श्नुक्किरण विशिष्टोऽपि शतरि, शानचि चाधिकः। क्रमप्राप्तः श्नाप्रत्ययोऽपि भवत्येव, स्कुनन्-न्ती-स्कुनानः।

**( १४७९ ) युञ्—बन्धने**। (बांधना)। सकर्म.। अनिट्। उभय.।

१ युनाति-युनीते। २ **प्र.** युयाव, युयुवतुः युयुवुः। **म.** युयविथ-युयोथ युयुवथुः युयुव। **उ.** युयाव-युयव युयुविव युयुविम। **आत्म. प्र.** युयुवे युयुवाते। **म.** युयुविषे। **उ.** युयुविवहे। ३ **प्र.** योता। ६ योतासि-योतासे। ४ योष्यति-त। ५ युनातु-युनीताम्। ६ अयुनात्-अयुनीत। ७ युनीयात्-युनीत। ८ यूयात् यूयास्ताम्। **आत्मने.** योषीष्ट, योषीयास्ताम्। ९ अयौषीत्-अयोष्ट। १० ओयष्यत्-त।

**कर्मणि**—यूयते। **णिचि**—यावयति-ते। **सनि**—युयूषति-ति। **यङि**—योयूयते। **यङ्लुकि**—योयोति। **कृत्सु**—योतव्यः, यवनीयः, याव्यः-यव्यः, युतः, युतवान्, युनन्, युनती, युनानः, योतुम्, यवनम्, युत्वा, संयुत्य।

**(१४८०) क्नूञ्—शब्दे**। (शब्द करना, आवाज करना)। सक.। सेट्। ञित्। उभय.।

१.क्नूनाति-क्नूनीते।२.चुक्नाव-चुक्नुवे।४.क्नविष्यति।९.अक्नावीत्-अक्नविष्ट। इत्यादि क्रीणति (१४७३) वत्।

**( १४८१ ) द्रूञ्—हिंसायाम्**। (हिंसा करना,मार डालना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। ऊकारान्तः। ञित्। १ द्रूणाति-द्रूणीते. २ दुद्राव-दुद्रवे। ९ अद्रावीत्-अद्रविष्ट। इत्यादि 'क्रीणाति' (१४७३) वत्।

**( १४८२ ) पूञ्—पवने**। (पवित्र करना, स्वच्छ करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। प्वादिः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | पुनाति[१] | पुनीतः | पुनन्ति | प्र. |
| | पुनासि | पुनीथः | पुनीथ | म. |
| | पुनामि | पुनावः | पुनामः | उ. |
| लिट् | पुपाव | पुपुवतु | पुपुवुः | प्र. |
| | पुपविथ | पुपुवथुः | पुपुव | म. |
| | पुपाव-पुपव | पुपुविव | पुपुविम | उ. |
| लुट् | पविता | पवितारौ | पवितारः | प्र. |
| | पवितासि | पवितास्थः | पवितास्थ | म. |
| | पवितास्मि | पवितास्वः | पवितास्मः | उ. |

१ 'प्वादीनां ह्रस्वः' इति शिति ह्रस्वः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृट् | पविष्यति | पविष्यतः | पविष्यन्ति | प्र. |
| | पविष्यसि | पविष्यथः | पविष्यथ | म. |
| | पविष्यामि | पविष्यावः | पविष्यामः | उ. |
| लोट् | पुनातु-पुनीतात् | पुनीताम् | पुनन्तु | प्र. |
| | पुनीहि-पुनीतात् | पुनीतम् | पुनीत | म. |
| | पुनानि | पुनाव | पुनाम | उ. |
| लङ् | अपुनात् | अपुनीताम् | अपुनन् | प्र. |
| | अपुनाः | अपुनीतम् | अपुनीत | म. |
| | अपुनाम् | अपुनीव | अपुनीम | उ. |
| वि. लि. | पूनीयात् | पुनीयाताम् | पुनीयुः | प्र. |
| | पुनीयाः | पुनीयातम् | पुनीयात | म. |
| | पुनीयाम् | पुनीयाव | पुनीयाम | उ. |
| आ. लि. | पूयात् | पूयास्ताम् | पूयासुः | प्र. |
| | पूयाः | पूयास्तम् | पूयास्त | म. |
| | पूयासम् | पूयास्व | पूयास्म | उ. |
| लुङ् | अपावीत् | अपाविष्टाम् | अपाविषुः | प्र. |
| | अपावीः | अपाविष्टम् | अपाविष्ट | म. |
| | अपाविषम् | अपाविष्व | अपाविष्म | उ. |
| लृङ् | अपविष्यत् | अपविष्यताम् | अपविष्यन् इत्यादि। | |

आत्मनेपदे

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | पुनीते | पुनाते | पुनते | प्र. |
| | पुनीषे | पुनाथे | पुनीध्वे | म. |
| | पुने | पुनीवहे | पुनीमहे | उ. |
| लिट् | पुपुवे | पुपुवाते | पुपुविरे | प्र. |
| | पुपुविषे | पुपुवाथे | पुपुविध्वे | म. |
| | पुपुवे | पुपुविवहे | पुपुविमहे | उ. |
| लुट् | पविता | पवितारौ | पवितारः | प्र. |
| | पवितासे | पवितासाथे | पविताध्वे | म. |
| | पविताहे | पवितास्वहे | पवितास्महे | उ. |
| लृट् | पविष्यते | पविष्येते | पविष्यन्ते | प्र. |
| | पविष्यसे | पविष्येथे | पविष्यध्वे | म. |
| | पविष्ये | पविष्यावहे | पविष्यामहे | उ. |
| लोट् | पुनीताम् | पुनाताम् | पुनताम् | प्र. |
| | पुनीष्व | पुनाथाम् | पुनीध्वम् | म. |
| | पुनै | पुनावहै | पुनामहै | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लङ् | अपुनीत | अपुनाताम् | अपुनत | प्र. |
| | अपुनीथाः | अपुनाथाम् | अपुनीध्वम् | म. |
| | अपुनि | अपुनीवहि | अपुनीमहि | उ. |
| वि. लि. | पुनीत | पुनीयाताम् | पुनीरन् | प्र. |
| | पुनीथाः | पुनीयाथाम् | पुनीध्वम् | म. |
| | पुनीय | पुनीवहि | पुनीमहि | उ. |
| आ. लि. | पविषीष्ट | पविषीयास्ताम् | पविषीरन् | प्र. |
| | पविषीष्ठाः | पविषीयास्थाम् | पविषीध्वम्-ढ्वम् | म. |
| | पविषीय | पविषीवहि | पविषीमहि | उ. |
| लुङ् | अपविष्ट | अपविषाताम् | अपविषत | प्र. |
| | अपविष्ठाः | अपविषाथाम् | अपविध्वम्-ढ्वम् | म. |
| | अपविषि | अपविष्वहि | अपविष्महि | उ. |
| लृङ् | अपविष्यत | अपविष्येताम् | अपविष्यन्त | प्र. |
| | अपविष्यथाः | अपविष्येथाम् | अपविष्यध्वम् | म. |
| | अपविष्ये | अपविष्यावहि | अपविष्यामहि | उ. |

**कर्मणि**—पूयते। ९ अपावि। **णिचि**—पावयति-ते। ९ अपीवत्-त। **सनि**—पुपूषति-ते। **यङि**—पोपूयते। **यङ्लुकि**—पोपोति-पोपवीति। **कृत्सु**—पवितव्यम्, पावयितव्यम्, पावकः-विका, पविता-त्री, पावयिता-त्री, पुनन्[१]-पुनती, पावयन्-न्ती, पविष्यन्-न्ती-ती, पावयिष्यन्-न्ती-ती, पुनानः, पावयमानः, पविष्यमाणः पाविष्यमाणः, खलपूः,[२] खलप्वौ-खलप्वः, पूतम्[३]-पूतः-तवान्-पूनः[४]-पूनवान्, पवितुः, पवः-पवनः,[५] पुपविवान्,[६] पवित्रम्,[७] पोता,[८] पानः, पावनः,[९] प्रपवनीमय्,[१०] प्रपावनीयम्,[११] विपूयः,[१२] पव्यम्, अवश्यपाव्यम्, पाव्यम्, पूयमानः, पाव्यमानः, पावः,

१ शतरि 'क्र्यादिभ्य–' (३-१-८१) इति श्ना विकरण प्रत्ययः। 'श्नाभ्यस्तयोरातः' (६-४-११२) इत्याकारलोपः, 'प्वादीनां ह्रस्वः' (७-३-८०) इति ह्रस्वे रूपमेवम्। एवं शानजन्तेऽपि प्रक्रिया ज्ञेया।

२ खलं पुनातीति खलपूः। क्विपि रूपमेवम्। द्विवचनादौ 'ओः सुपि' (६-४-८३) इति यण्।

३ 'श्र्युकः क्किति' (७-२-११) इति निष्ठायामिण्निषेधः। एवं क्तिनि, क्त्वायाम्, ल्यपि चेण्निषेधो ज्ञेयः।

४ ल्वादित्वेन नित्यं निष्ठानत्वे प्राप्ते, 'पूञो विनाशे' (वा. ८-२-४४) इत्यर्थविशेषे निष्ठानत्वम्। पूनाः यवाः विनष्टा इत्यर्थः।

५ 'नन्द्यादित्वात्' (३-१-१३४) कर्तरि युप्रत्ययः।

६ लिटः क्वसौ, द्विर्वचने, इडागमे, उत्तरखण्डे गुणे, न शसददवादिगुणानाम्' (६-४-१२६) इति न एत्वाभ्यासलोपः।

७ 'कर्तरि चर्षिदेवतयोः' (३-२-१८६) इति कर्तरि करणे च इत्रप्रत्ययः।

८ ण्यन्तादस्मात् नन्द्यादित्वात् कर्तरि ल्युप्रत्ययः।

९ 'तृन्' (३-२-१३५) इति कर्तरि तच्छीलादिषु तृन् प्रत्ययः। बाहुलकादिडागमो न।

१० 'न मापूपूकमि–' (८-४-३४) इति णत्वनिषेधः।

११ 'ण्यन्तभादीनामुपसंख्यानम्' (वा. ८-४-३४) इति णत्वनिषेधः।

१२ 'विपूयविनीयजित्या मुञ्जकल्कहलिषु (३-१-११७) इति मुञ्जेऽभिधेये क्यपि रूपमेवम।

निष्पावः,[1] निष्पावः[2], उत्पावः,[3] पोत्रम्[4]-पोत्रः, पवित्रम्,[5] पवितुम्, पावयितुम्, पूतिः, पविः,[6] पावना, पवनम्, पावनम्, पूत्वा, पावयित्वा, प्रपूय, प्रयात्र, पूगः,[7] पोतः[8] प्रण्यम्,[9] पुत्रः[10] ।

**(१४८३) लूञ्—छेदने।** (कतरना, काटना, चीरना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। प्वादिः। ल्वादिश्च। लुनाति-लुनीते। इत्यादि 'पुनाति' (१४८२) वत्। विशेषः लवित्रम्, लूत्वा, लूनः, लावकः।

**(१४८४) स्तृञ्—आच्छादने।** (वस्त्रादि से आच्छादित करना, वस्त्र ओढाना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। प्वादिः ल्वादिश्च।

१ **प्र.** स्तृणाति-णीते। २ **प्र.** तस्तार[11] तस्तरतुः[12] तस्तरुः[13]। **म.** तस्तरिथ तस्तरथुः तस्तर। **उ.** तस्तार-तस्तर तस्तरिव तस्तरिम। **आत्मने.—प्र.** तस्तरे तस्तराते तस्तरिरे। **म.** तस्तरिषे तस्तराथे तस्तरिध्वे। **उ.** तस्तरे तस्तरिवहे तस्तरिमहे। ३ स्तरिता[14] स्तरीता। ४ स्तरिष्यति-ते-स्तरीष्यति-ते। ५ स्तृणातु-स्तृणीयात्। **म.** स्तृणीहि-स्तृणीयात्।

**उ.** स्तृणानि- स्तृणै। ६ अस्तृणात्-अस्तृणीत। ७ स्तृणीयात्-स्तृणीत। ८ स्तीर्यात्[15]-स्तरिषीष्ट-स्तीर्षीष्ट। ९ अस्तारीत्-अस्तारिष्टाम्[16] अस्तारिषुः। **आत्म.—** अस्तीर्ष्ट[17] अस्तरीष्ट-अस्तरिष्ट। १० अस्तरिष्यत्-अस्तरीष्यत्-त।

**कर्मणि**—स्तीर्यते। **णिचि**—स्तारयति-ते। ९. अतिस्तरत्। **सनि**—तिस्तीर्षति-ते-तिस्तरीषति-ते-तिस्तरिषति-ते। **यङि**—तेस्तीर्यते। **यङ्लुकि**—तास्तरीति-तास्तर्ति। **कृत्सु**—स्तरितव्यः-स्तरीतव्यः, स्तरणीयः, स्तार्यः, स्तृणन्-स्तृणती, स्तृणानः, स्तरितुम्-स्तरीतुम्,

१ 'निरभ्यो—पूल्वोः' (३-३-२८) इति निष्पूर्वकादस्मात् घञ् प्रत्ययः। निष्पावः = धान्यविशेषः।

२ 'परिमाणाख्यायां सर्वेभ्यः' (३-३-२०) इति घञ्। निष्पावः = सूर्यः। निष्पूयते = शोध्यते तुषाद्यपनयनेन यस्तण्डुलादिः सः निष्पावः। शूर्पस्यापि प्राक्काले परिमाणवाचकत्वात् प्रत्ययोत्पत्तिरिति ज्ञेयम्।

३ 'उदि श्रयति यौतिपूद्रुवः' (३-३-४९) इति भावे घञ्।

४ 'हलसूकरयोः पुवः' (३-२-१८३) इति करणे ष्ट्रन् प्रत्यये रूपम्।

५ 'पुवः संज्ञायाम्' (३-२-१८५) इति करणे इत्र प्रत्ययः। पवित्रम् = दर्भः चक्रं च।

६ 'इणजादिभ्यः' (वा. ३-३-९४) इति भावे इण् प्रत्ययः। बाहुलकात् वृद्धि र्न। गुणस्तु भवत्येव। पविः = वज्रम्। अजादिः = अजधातुप्रकारः।

७ 'छापूञ्—' इति गक् प्रत्ययः। पूगः = संघातः।

८ औणादिके तन् प्रत्यये रूपम्। पुनाति इति पोतः = अग्निः। पुत्रः।

९ 'पूञो यण्णुट् ह्रस्वश्च' इति यत्प्रत्यये णुडागमे, उपधाया ह्रस्वे च रूपमेवम्। ह्रस्वविधानात् गुणो न।

१० 'पुञों ह्रस्वश्च इति त्रप्रत्यये। धातो ह्रस्वे च रूपमेवम्।

११ 'अचो ञ्णिति' इति वृद्धिः।

१२ 'ऋच्छत्यृताम्' इति गुणः।

१३ कम्बलान्परितस्तरुः। भट्टिः १४/११।

१४ 'वृतो वा' इति दीर्घविकल्प।

१५ 'ऋत इद्धातो इति इत्वे', हलि च' इति दीर्घे च रूपम्। आत्मनेपदे तु' लिङ्सिचोरात्मनेपदेषु' इति इड्विकल्पः। इडभावपक्षे— 'उश्च इति कित्वाद्गुणनिषेधः।

१६ 'वृतो वा' इति प्राप्तो दीर्घविकल्पः 'सिचि च परस्मैपदेषु' इत्यनेन निषिद्ध्यते।

१७ 'लिङ्सिचो' रिति इडभावपक्षे, 'ऋत इद्धातोः' इति इत्वे, 'हलि चे' ति दीर्घः।

स्तरणम्, स्तीर्त्वा, विस्तीर्य, स्तॄः = धूमः, स्तारकः-रिका, स्तरीता-स्तरिता-त्री, स्तारयिता-त्री, मणिप्रस्तारः,[1] (हविषाम्) प्रस्तरः, पटस्य विस्तारः[2] शब्द विषये तु विस्तरः विष्टारः,[3] विष्टरः[4], अवस्तारः[5], आस्तीर्णः, स्तीर्णिः[6] तरी-मेघः, शय्या च, स्तरीमास्तीर्य।

**( १४८५ ) कॄञ्—हिंसायाम्**। (हिंसा करना, मार डालना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। प्वादिः ल्वादिश्च। कृणाति-कृणीते। चकार-चकरे। चकरतुः-चकराते। इत्यादि 'स्तृणाति' (१४८४) वत्।

**( १४८६ ) वॄञ्—वरणे**। (पसन्द करना, स्वीकार करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। प्वादिः ल्वदिश्च।

१ वृणाति-वृणीते। २ ववार-ववरे। ३ वरिता-वरीता। **म.** वरितासि-वरीतासि-ते। ४ वरिष्यति-वरीष्यति-ते। ५ वृणातु-वृणीताम्। ६ अवृणात्-अवृणीत। ७ वृणीयात्- वृणीत। ८ वूर्यात्-वरिषीष्ट-वूर्षीष्टा। ९ अवारीत्-अवरिष्ट-अवरीष्ट-अवूर्ष्ट। १० अवरिष्यत्-त-अवरीष्यत्-त।

**कर्मणि**—वूर्यते। **णिचि**—वारयति-ते। ९. अवीवरत्-त। **सनि**—वुवूर्षति-ते। विवरिषति-ते। विवरीषति-ते। **यङि**—वोवूर्यते। **यङ्लुकि**—वावरीति-वावर्ति। **कृत्सु**—वरि (री) तव्यः वरणीयः, वर्यः, वूर्णः, वृणन्, वृणती, वृणानः। वूर्त्वा, आवूर्य।

**( १४८७ ) धूञ्—कम्पने**। (कम्पित कनरा, हिलाना, क्षोभित करना) सक.। सेट्। उभय.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | धुनाति | धुनीतः | धुनन्ति | प्र. |
| | धुनासि | धुनीथः | धुनीथ | म. |
| | धुनामि | धुनीवः | धुनीमः | उ. |
| लिट् | दुधाव | दुधुवतुः | दुधुवुः | प्र. |
| | दुधविथ-दुधोथ | दुधुवथुः | दुधुव | म. |
| | दुधाव-दुधुव | दुधुविथ | दुधुविम | उ. |
| लुट् | धविता | धवितारौ | धवितारः | प्र. |
| | धवितासि | धवितास्थः | धवितास्थ | म. |
| | धवितास्मि | धवितास्वः | धवितास्मः | उ. |

पक्षे—धोता धोतारौ धोतारः इत्यादि।

---

१ 'प्रे स्त्रोऽयज्ञे' (३-३-३२) इति प्रशब्द उपपदे यज्ञभिन्नविषये घञ्। यज्ञ विषये हविषाम् प्रस्तारः इति अप् प्रत्यय एव।

२ 'प्रथने वावशब्दे' (३-३-३३) इति वि इत्युपसर्गे उपपदे प्रथने गम्यमाने घञ् प्रत्ययः। शब्दविषये विस्तारः।

३ 'छन्दोनाम्नि च' (३-३-३४) इति छन्दो विषये नाम्नि घञ् प्रत्यये, छन्दोनाम्नि च' (८-३-९४) इति षत्वे च रूपमेवम्।

४ विस्तीर्यते इति विष्टरः। विपूर्वकात् स्तृधातोः 'ऋदोरप्' (३-३-५७) इत्यप् प्रत्यये 'वृक्षासनयोर्विष्टरः' (८-३-९३) इति षत्वे च रूपमेवम्। विष्टरः = आसनम्, अश्वत्थवृक्षश्च।

५ 'अवेतृस्त्रोर्घञ्। (३-३-१२०) इति करणाधिकरणयोर्घञ्।

६ 'ऋल्वादिभ्यः क्तिन्–' (३-३-९४) इति क्तिनस्तकारस्य नकारः। णत्वञ्च।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृट् | धविष्यति | धविष्यतः | धविष्यन्ति | प्र. |
| | धविष्यसि | धविष्यथः | धविष्यथ | म. |
| | धविष्यामि | धविष्यावः | धविष्यामः | उ. |

पक्षे—धोष्यति धोष्यतः धोष्यन्ति इत्यादि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लोट् | धुनातु-धुनीतात् | धुनीताम् | धुनन्तु | प्र. |
| | धुनीहि | धुनीतम् | धुनीत | म. |
| | धुनानि | धुनाव | धुनाव | उ. |
| लङ् | अधुनात् | अधुनीताम् | अधुनन् | प्र. |
| | अधुनाः | अधुनीतम् | अधुनीत | म. |
| | अधुनाम् | अधुनीव | अधुनीम | उ. |
| वि. लि. | धुनीयात् | धुनीयाताम् | धुनीयुः | प्र. |
| | धुनीयाः | धुनीयातम् | धुनीयात | म. |
| | धुनीयाम् | धुनीयाव | धुनीयाम | उ. |
| आ. लि. | धूयात् | धूयास्ताम् | धूयासुः | प्र. |
| | धूयाः | धूयास्तम् | धूयास्त | म. |
| | धूयासम् | धूयास्व | धूयास्म | उ. |
| लुङ् | अधावीत् | अधाविष्टाम् | अधाविष्ट | प्र. |
| | अधावीः | अधाविष्टम् | अधाविष्ट | म. |
| | अधाविषम् | अधाविष्व | अधाविष्म | उ. |
| लृङ् | अधाविष्यत् | अधाविष्यताम् | अधाविष्यन् | प्र. |
| | अधाविष्यः | अधाविष्यतम् | अधाविष्यत | म. |
| | अधविष्यम् | अधविष्याव | अधविष्याम | उ. |

पक्षे—अधोष्यत् अधोष्यताम् अधोष्यन् प्र.

आत्मनेपदे

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | धुनीते | धुनाते | धुनते | प्र. |
| | धुनीषे | धुनाथे | धुनीध्वे | म. |
| | धुने | धुनीवहे | धुनीमहे | उ. |
| लिट् | दुधुवे | दुधुवाते | दुधुविरे | प्र. |
| | दिधुविषे | दुधुवाथे | दुधुविध्वे-ढ्वे | म. |
| | दुधुवे | दुधुविवहे | दुधुवमहे | उ. |
| लुट् | धविता | धवितारौ | धवितारः | प्र. |
| | धवितासे | धवितासाथे | धविताध्वे | म. |
| | धविताहे | धवितास्वहे | धवितास्महे | उ. |

पक्षे—धोता धोतारौ धोतारः इत्यादि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृट् | धविष्यते | धविष्येते | धविष्यन्ते | प्र. |
| | धविष्यसे | धविष्येथे | धविष्यध्वे | म. |
| | धविष्यसे | धविष्यावहे | धविष्यामहे | उ. |

पक्षे—धोष्यते धोष्येते धोष्यन्ते इत्यादि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लोट् | धुनीताम् | धुनाताम् | धुनताम् | प्र. |
| | धुनीष्व | धुनाथाम् | धुनीध्वम् | म. |
| | धुनै | धुनावहै | धुनामहै | उ. |
| लङ् | अधुनीत | अधुनाताम् | अधुनत | प्र. |
| | अधुनीथाः | अधुनाथाम् | अधुनीध्वम् | म. |
| | अधुनि | अधुनीवहि | अधुनीमहि | उ. |
| वि. लि. | धुनीत | धुनीयाताम् | धुनीरन् | प्र. |
| | धुनीथाः | धुनीयाथाम् | धुनीध्वम् | म. |
| | धुनीय | धुनीवहि | धुनीमहि | उ. |
| आ. लि. | धविषीष्ट | धविषीयास्ताम् | धविषीरन् | प्र. |
| | धविषीष्ठाः | धविषीयास्थाम् | धविषीढ्वम्-ध्वम् | म. |
| | धविषीय | धविषीवहि | धविषीमहि | उ. |

पक्षे—धोषीष्ट धोषीयास्ताम् धोषीरन्

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुङ् | अधविष्ट | अधविषाताम् | अधविषत | प्र. |
| | अधविष्ठाः | अधविषाथाम् | अधविषिध्वम्-ढ्वम् | म. |
| | अधविषि | अधविष्वहि | अधविष्महि | उ. |

पक्षे—अधोष्ट अधोषाताम् अधोषत इत्यादि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृङ् | अधविष्यत | अधविष्येताम् | अधविष्यन्त | प्र. |
| | अधविष्यथाः | अधविष्येथाम् | अधविष्यध्वम् | म. |
| | अधविष्ये | अधविष्यावहि | अविष्यामहि | उ. |

पक्षे—अधोष्यत अधोष्येताम् अधोष्यन्त इत्यादि।

**कर्मणि**—धूयते। **णिचि**—धूनयति-ते। ९ अदुधुनत्-त। **सनि**—दुधूषति-ते। **यङि**—दोधूयते। **यङ्लुकि**—दोधोति-दोधवीति। **कृत्सु**—धवितव्यम्-धोतव्यम्, धवनीयम्, धव्यम्-धाव्यम्, धुनः, धुनन्,[१] धुनती, धुनानः, धवितुम्-धोतुम्, धवन्, धूत्वा, विधूय, धावकः-विका, धूनकः-निका, धूनिः[२]।

**(१४८८) शॄ—हिंसायाम्**। (हिंसा करना, मार डालना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। प्वादिः ल्वादिश्च।

१ **प्र.** श्रृणाति श्रृणीतः। **म.** श्रृणासि। **उ.** श्रृणामि। २ **प्र.** शशार शश्रतुः[३]-

१ शतरि 'क्र्यादिभ्यः–' (३-१-८१) इति शना प्रत्यये 'प्वादीनां ह्रस्वः' (७-३-८०) इति ह्रस्वे च रूपम्। एवं शानजन्तेऽपि प्रक्रिया ज्ञेया।

२ 'ॠल्वादिभ्यः क्तिन् निष्ठावद् वक्तव्यः' (वा. ८-२-४४) इति क्तिनस्तकारस्य नकारः।

३ 'असंयोगात्–' इति अपितो लिटः कित्वे श्रृदृपां ह्रस्वे वा' इति ह्रस्वपक्षे यणादेशः। 'अन्यदा ऋच्छत्यृताम्' इति गुणः।

शशरतुः शश्रुः-शशरुः। म. शशरिथ शशरथुः-शश्रथुः शशर-शश्र। उ. शशार-शशर-शशरिव[1]-शश्रिव शशरिम-शश्रिम। ३ शरिता-शरीता। ४ शरिष्यति-शरीष्यति। ५ श्रृणातु। म. श्रृणीहि। उ. श्रृणानि। ६ अश्रृणात् अश्रृणीताम्। म. अश्रृणाः। उ. अश्रृणाम्। ७ श्रृणीयात् श्रृणीयाताम्। ८ शीर्यात् शीर्यास्ताम्। ९ अशारीत् अशारिष्टाम्। १० अशरिष्यत्-अशरीष्यत्।

**कर्मणि**—शीर्यते। **णिचि**—शारयति-ते। ९ अशीशरत्। **सनि**—शिशरिषति-शिशरीषति-शिशीर्षति। **यङि**—शेशीर्यते। **यङ्लुकि**—शाशरीति शाशर्ति। **कृत्सु**—शरितव्यः-शरीतव्यः, शरणीयः, शीर्यः, शीर्णः, श्रृणन्, श्रृणती, शरितुम्-शरीतनम्, शरणम्, शीर्त्वा, विशीर्य, शारो = वायुः वर्णश्च, शशरुः, शरीरम्, शरत्।

**(१४८९) पॄ—पालनपूरणयोः**। (पालन करना, पूर्ति करना, पूर्ण करना, भरना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। ल्वादिश्च।

१ **प्र.** पृणाति पृणीतः पृणन्ति। **म.** पृणासि। **उ.** पृणामि। २ **प्र.** पपार पपरतुः पप्रतुः। **म.** पपरिथ। **उ.** पपरिव पप्रिव। ३ परिता-परीता। ४ परिष्यति-परीष्यति। ५ **प्र.** पृणातु। **म.** पृणीहि। **उ.** पृणानि। ६ अपृणात्। ७ पृणीयात् पृणीयाताम्। ८ पूर्यात् पूर्यास्ताम्। ९ अपारीत् अपारिष्टाम्। १० अपरिष्यत्-अपरीष्यत्।

**कर्मणि**—पूर्यते। **णिचि**—पारयति-ते। ९ अपीपरत्-त। **सनि**—पिपरिषति-पिपरीषति-पुपूर्षति। **यङि**—पोपूर्यते। **यङ्लुकि**—पापरीति-पपार्ति। **कृत्सु**—परितव्यम्-परीतव्यम्, परणीयम्, पार्यम्, पूर्णः, पृणन्, पृणती, परितुम्-परीतुम्, परणम्, पूर्त्वा, परिपूर्य।

**(१४९०) वॄ—वरणे**। (वरण करना, पसन्द करना, आश्रय देना, सम्भालना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। वृणाति। ववारेत्यादि 'वृञ्-वरणे धातुवत्।

**(१४९१) भॄ—भर्त्सने भरणे च**। (घुड़कना, तिरस्कार करना, संरक्षण करना, पालन करना, धारण करना)। सकर्म॥ सेट्। परस्मै.। ऋकारान्तः। प्वादिः ल्वादिश्च. भृणाति। इत्यादि परस्मैपदि– 'स्तृणाति' (१३८४) वत्।

**(१४९२) मॄ—हिंसायाम्**। (मार डालना या दुःख देना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। प्वादिः ल्वादिश्च। मृणाति। ममार ममरतुः। मूर्यात् 'मृणाति' (१३८९) वत्। मारकः-रिका, मरिता-त्री, मारयिता-त्री, मृणन्[2]-मृणती, मूर्णम्[3]-मूर्णः-मूर्णवान्, मूर्णिः[4]।

---

१ 'असंयोगात्–' इति कित्वेन श्र्युकः किती–' ति प्राप्तस्य इण्णिषेधस्य क्रादिनियमेन बाधे नित्यमिट्।
२ शतरि क्र्यादित्वात् श्ना प्रत्यये, 'प्वादीनां ह्रस्व' (७-३-८०) इति ह्रस्वे, 'श्नाभ्यस्तयोरातः' (६-४-११२) इत्याकारलोपे णत्वे च रूपमेवम्।
३ धातोरुत्वे रपरत्वे 'ल्वादिभ्यः' (८-२-४४) इति निष्ठानत्वे, दीर्घे णत्वे च रूपमेवम्।
४ 'ऋल्वादिभ्यः क्तिन् निष्ठावद् वाच्यः' (वा. ८-२-४४) इति क्तिनस्तकारस्य नत्वे उत्वादिके च रूपमेवम्।

**(१४९३) दॄ—विदारणे।** (चीरना, फाड़ना, टुकड़े-टुकड़े करना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। प्वादिः।

१ दृणाति। २ **प्र.** ददार दद्रतुः-ददरतुः दद्रुः-ददरुः। **म.** ददरिथ दद्रथुः-ददरथुः। दद्र-ददर। **उ.** ददार-ददर दद्रिव-ददरिव। दद्रिम-ददरिम। ३ दरिता-दरीता। ४ दरिष्यति। ५ दृणातु। ६ अदृणात्। ७ दृणीयात्। ९ अदारीत्। १० अदरिष्यत् अदरीष्यत्। इत्यादि 'श्रृणाति' (१४८८) वत्। भयेर्थे दरयति। अन्यत्र दारयति।

**कृत्सु**—पुरन्दरः, भगन्दरो: रोगः। दाराः, दृषद्। दारकः[१]-रिका, दरिता[२]-दरीता-त्री, दारयिता-दरयिता-त्री, दृणन्[३]-ती, दारयन्-दरयन्-न्ती, दरिष्यन्-दरीष्यन्-दारयिषन्यन्-दरयिष्यन-न्ती-ती, व्यतिदृणानः,[४] दारयमाणः-दरयमाणः, व्यतिदरिष्यमाणः-व्यतिदरीष्यमाणः, प्रदीः[५]-प्रदिरौ-प्रदिरः, ददृत,[६] दीर्णम्[७]-दीर्णः-दीर्णवान्, दारितः-दरितः, दरः[८]-दरी, दाराः,[९] पुरन्दरः,[१०] भगन्दरः[११], विदारी, दरितव्यम्, दरीतव्यम्, दारयितव्यम्, दरयितव्यम्, दरणीयम्-दारणीयम्,-दार्यम्, दर्यम्, ईषद्दरःदुर्दरः-सुदरः, दीर्यमाणः, दार्यमाणः-दर्यमाणः, दरितुम्-दरीतुम्, दारयितुम्, दरयितुम्, दीर्णिः,[१२] दारणा-दरणा, दरणम्, दारणम्-दरणम्, दीर्त्वा,[१३] दारयित्वा-दरयित्वा, विदीर्य, विदार्य[१४]-विदरय्य, उरोविदारं[१५] दृतिः,[१६] दारुः,[१७]

---

१ 'इत्वोत्वाभ्यां गुणवृद्धी विप्रतिषेधेन' (वा. ७-१-१०२) इति वचनात् इत्वं बाधित्वाऽत्र वृद्धिः। एवं गुणवृद्धियोग्यस्थलेषु ज्ञेयम्।

२ तृचि, इटो दीर्घक्किल्पाद्रूपद्वयम्। एवं तव्यंदादिष्वपि ज्ञेयम्।

३ शतरि, 'क्र्यादिभ्यः–' (३-१-८१) इति श्नाप्रत्यये, 'प्वादीनां ह्रस्वः' (७-३-८०) इत्यङ्गस्य ह्रस्वे, 'श्नाभ्यस्तयोरातः' (६-४-११२) इत्याकारलोपे ण्त्वे च रूपम्। एवं शानजन्तेऽपि प्रक्रिया ज्ञेया।

४ 'कर्तरि कर्मव्यतिहारे च' (१-३-१४) इति शानच्।

५ क्विपि, इत्वे रपरत्वे च, 'र्वोरुपधाया दीर्घ इकः' (८-२-७६) इति दीर्घे विसर्गे च रूपम्।

६ भयार्थादस्मात्, तच्छीलादिषु कर्तृषु 'दृणाते र्ह्रस्वश्च' (वा. ३-२-१७८) इति क्विपि, अङ्गस्य द्वित्वे ह्रस्वे च 'ह्रस्वस्य पिति कृति–' (६-१-७१) इति तुकि च रूपम्।

७ निष्ठायाम्, इत्वे रपरत्वे, दीर्घे च 'रदाभ्याम्' (८-२-४२) इति निष्ठानत्वे णत्वे च रूपम्।

८ पचादिषु पाठात् अच्। स्त्रियाम् गौरादिपाठात् (४-१-४१) ङीष् इति माधवः। पचादिषु दरट् इति पाठात् टित्वेन 'टिड्ढा–' (४-१-१५) इति ङीप् इति क्षीरस्वामी।

९ 'दारजारौ कर्तरि णिलुक् च' (वा. ३-३-२०) इति कर्तरि घञ्। दारयन्ति इति द्वाराः = पत्नी। बहुवचनं तु लोकाद् भवति।

१० 'पूः सर्वयोर्दारिसहोः' (३-२-४१) इति ण्यन्तात् खच् 'खित्यनव्ययस्य (६-३-६६) इति वर्तमाने, 'अरुर्द्विषदजन्तस्य–' (६-३-६७) इति मुम्। 'खचि ह्रस्वः' (६-४-९४) इति वा, 'मितां ह्रस्वः' (६-४-९२) इति वा ह्रस्वः। 'वार्चयमपुरन्दरौ च' (६-३-६९) इत्यनेन निपातनादमन्तत्वम्। पुरं दारयतीति पुरन्दरः = इन्द्रः।

११ भगे च दारेति वक्तव्यम् (वा. ३-२-४१) इति खचि, मुमि च रूपम्। भगन्दरः— व्याधिविशेषः।

१२ 'ऋल्वादिभ्यः–' (वा. ८-२-४२) इति क्तिनस्तकारस्य नत्वे णत्वे च रूपम्।

१३ 'श्र्युकः क्किति' (७-२-११) इति क्त्वाया इण्निषेधः।

१४ भवार्थे ण्यन्तात् ल्यपि, उपधाह्रस्वे, 'ल्यपि लघुपूर्वात्' (६-४-५६) इति णेरयादेशः।

१५ 'परिक्लेश्यमाने च' (३-४-५५) इति णमुल्।

१६ 'दृणाते क्रिद्घ्रस्वश्च' इति ति प्रत्यये रूपम्। ह्रस्वश्च। दृतिः = भस्त्रा।

१७ 'दृसनिजनि–' इति ञुण् प्रत्यये वृद्धौ च रूपम् दारुः = काष्ठम्।

दर्दरीकम्,[1] दारुणः,[2] दरत्,[3] दृषत्,[4] दर्दुरः,[5] उदरम्[6]।

**(१४९४) जॄ—वयोहानौ**। (जीर्ण होना, वृद्ध होना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.। जृणाति। इत्यादि 'दृणाति' (१४९३) वत्।

**कृत्सु**—जरीता[7]-जरिता-त्री, जारयिता-त्री, जारकः-रिका, जृणन्[8]-ती, जारयन्-न्ती, जरिष्यन्-जरीष्यन्-न्ती-ती, जारयिष्यन्-न्ती-ती, जारयमाणः, जारयिष्यमाणः, जीः,[9] जीरौ, जिरः, जीर्णम्[10]-जीर्णः-जीर्णवान्, जारिसः, जरः, जजीर्वान्[11]-जेरिवान्, जरीतव्यम्-जरितव्यम्, जारयितव्यम्, जरणीयम्, जारणीयम्, जार्यम्, जीर्यमाणः,[12] जार्यमाणः, जारः, जरीतुम्-जरितुम्, जारयितुम्, जीर्णिः,[13] जारणा, जरणम्, जारणम्, जरीत्वा[14]-जरित्वा, जारयित्वा, प्रजीर्य, प्रजार्य।

**(१४९५) नॄ—नये**। (ले जाना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। प्वादिः ल्वादिश्च। नृणाति। ननार। 'दृणाति' (१४९३) वत्। **णिचि**—नरयति-ते। नयभिन्नेऽर्थे नारयति। नीर्णः।

**(१४९६) कॄ—हिंसायाम्**। (मारना, मार डालना, दुःख देना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। परस्मैपद 'कृणाति' (१८८५) वत्। कर्त्रभिप्राये क्रियाफलेऽपि परस्मैपदार्थमिह पुनः पाठः।

**(१४९७) ॠ—गतौ**। (जाना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। प्वादिः।

१ ऋणति। २ अराञ्चकार। ३ अरिता-अरीता। ४ अरिष्यति-अरीष्यति। ५ ऋणातु। ६ आर्णात्। ७ ऋणीयात्। ८ ईर्यात्। ९ आरीत्।

**कर्मणि**—ईर्यते, प्रेर्यते। **कृत्सु**—अरीतव्यम्-अरितव्यम्, अरणीयम्, अर्यम्, आर्यम्, ईषदरः-दुररः-स्वरः, ईर्यमाणः, अरः, आरः, अरीतुम्-अरितुम्, ईर्णिः, आरणा, अरणम्, आरणम्,

---

१ 'फर्फरीकादयश्च' इत्यत्र पाठात् साधुः। दर्दरीकम् = वाद्यविशेषः।

२ 'कॄवृदारिभ्य उनन्' इत्युनन् प्रत्ययः। दारुणः = घोरः।

३ 'श्रृदृभसोऽदिः' इत्यादिप्रत्ययः। दरत् = भीरुः।

४ 'दृणातेः पुग्घ्रस्वश्च' इत्यदिप्रत्यये षुगागमह्रस्वौ भवतः। दृषत् = शिला।

५ 'मुकुरदर्दुरौ' इत्युसन् प्रत्ययो दुगागमः गुणश्च निपात्यते। दुर्दुरः = मण्डुकः।

६ 'उदि दृणातेरलचौ पूर्वपदान्त्यलोपश्च। इति अल् अच् व प्रत्ययः। उदरम् = जठरम्।

७ 'वृतो वा' (७-२-३८) इति इटो दीर्घविकल्पः।

८ 'क्र्यादिभ्यः श्ना' (३-१-८१) इति श्ना विकरणप्रत्ययः। 'श्नाभ्यस्तयोरातः' (६-४-११२) इत्याकारलोपः 'ऋवर्णान्नस्य णत्वं वाच्यम्' (वा. ८-४-१) इति णत्वे, 'प्वादीनां ह्रस्वः' (७-३-८०) इति ह्रस्वे च रूपम्।

९ क्विपि, इत्वे रपरत्वे, 'र्वोरुपधायां दीर्घ इकः' ८-२-७६) इति दीर्घः।

१० श्र्युकः क्किति (७-२-११) इति इण्णिषेधः। इत्वरपरत्वयोः, रदाभ्यां निष्ठतो नः पूर्वस्य च दः' (८-२-४२) इति निष्ठानत्वे, णत्वे च रूपम्।

११ 'छान्दसः क्वसुः क्वचिद् भाषायां भवति।' इति न्यायेन लिटः क्वस्वादेशे द्वित्वे 'वाजॄभ्रमुनसाम्' (६-४-१२४) इत्येत्वाभ्यासलोपविकल्पे रूपद्वयं भवति।

१२ भावे यकि इत्वरपरत्वयोः, 'हलिच' (८-२-७७) इति दीर्घे णत्वे च रूपम्।

१३ ॠल्वादिभ्यः क्तिन् निष्ठावद्वाच्यः' (वा. ४-२-४२) इति क्तिनस्तकारस्य नत्वे णत्वे च रूपम्।

१४ 'श्र्युकः क्किति: इति इण्णिषेधे प्राप्ते, जॄव्रश्च्वोः क्त्वि' (७-२-५५) इति नित्यमिट्। दीर्घविकल्पः।

ईर्त्वा, आरयित्वा, समीर्य, समार्य, आरकः-रिका, अरीता-अरिता, ऋणन्-ती, आरयन्-न्ती, अरीष्यन्-अरिष्यन्-न्ती, आरयमाणः, आरयिष्यमाणः, समीर्णम्-र्णः-र्णवान्, अरितम्-तः, अरः, आरः।

**(१४९८) गॄ—शब्दे**। (शब्द करना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.। प्वादिः ल्वादिश्च। गृणति। जगार इत्यादि 'कृणाति' (१४८६) वत्। गृणातीति गुरुः।

**(१४९९) ज्या—वयोहानौ**। (वृद्ध होना, जीर्ण होना, पुराना होना)। अकर्म.। अनिट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | जिनाति | जिनीतः | जिनन्ति | प्र. |
| | जिनासि | जिनीथः | जिनीथ | म. |
| | जिनामि | जिनीवः | जिनीमः | उ. |
| लिट् | जिज्यौ | जिज्यतुः | जिज्युः | प्र. |
| | जिज्यिथ-जिज्याथ | जिज्यथुः | जिज्य | म. |
| | जिज्यौ | जिज्यिव | जिज्यिम | उ. |
| लुट् | ज्याता | ज्यातारौ | ज्यातारः | प्र. |
| | ज्यातासि | ज्यातास्थः | ज्यातास्थ | म. |
| | ज्यातास्मि | ज्यातास्वः | ज्यातास्मः | उ. |
| लृट् | ज्यास्यति | ज्यास्यतः | ज्यास्यन्ति | प्र. |
| | ज्यास्यसि | ज्यास्यथः | ज्यास्यथ | म. |
| | ज्यास्यामि | ज्यास्यावः | ज्यास्यामः | उ. |
| लोट् | जिनातु-जिनीतात् | जिनीताम् | जिनन्तु | प्र. |
| | जिनीहि-जिनीतात् | जिनीतम् | जिनीत | म. |
| | जिनानि | जिनाव | जिनाम | उ. |
| लङ् | अजिनात् | अजिनीताम् | अजिनन् | प्र. |
| | अजिनाः | अजिनीतम् | अजिनीत | म. |
| | अजिनाम् | अजिनीव | अजिनीम | उ. |
| वि. लि. | जिनीयात् | जिनीयाताम् | जिनीयुः | प्र. |
| | जिनीयाः | जिनीयातम् | जिनीयात | म. |
| | जिनीयाम् | जिनीयाव | जिनीयाम | उ. |
| आ. लि. | जीयात् | जीयास्ताम् | जीयासुः | प्र. |
| | जीयाः | जीयास्तम् | जीयास्त | म. |
| | जीयासम् | जीयास्व | जीयास्म | उ. |
| लुङ् | अज्यासीत् | अज्यासिष्टाम् | अज्यासिषुः | प्र. |
| | अज्यासीः | अज्यासिष्टम् | अज्यासिष्ट | म. |
| | अज्यासिषम् | अज्यासिष्व | अज्यासिष्म | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृङ् | अज्यास्यत् | अज्यास्यताम् | अज्यास्यन् | प्र. |
| | अज्यास्यः | अज्यास्यतम् | अज्यासत | म. |
| | अज्यास्यम् | अज्यास्याव | अज्यास्याम | उ. |

**कर्मणि**—जीयते। **णिचि**—ज्यायति-ते। **सनि**—जिज्यासति। **यङि**—जेनीयते। **यङ्लुकि**—ज्यायति-ज्यायेति। **कृत्सु**—ज्यातव्यम्, ज्यानीयम्, ज्येयम्, जीनः, जिनम्, जिनती, ज्यातुम्, ज्यानम्, जीत्वा, प्रज्याय, ज्यश्च इति सम्प्रसारणाभावः, ज्यानिः।

**( १५०० ) री—गतिरेषणयोः**। शेषणं = वृक शब्दः, हिंसा च। (जाना, अरण्य शिशु के समान पुकारना, पीडा करना, दुःख देना, मारना)। गतौ सकर्मः। अनिट्। परस्मै.। ईकारान्तः। प्वादिः ल्वादिश्च।

१ रीणाति। २ रिराय रिर्यतुः। **म.** रिरयिव-रिरेथ। ३ रेता। ४ रेष्यति। ५ रिणातु। **म.** रिणीहि। ८ रीयात्। ९ अरैषीत्। **णिचि**—रेपयति-ते। रीणः।

**( १५०१ ) ली—श्लेषणे**। (युक्त होना, प्राप्त होना, मिलना)। सकर्म.। अनिट्। पर.। ईकारान्तः। प्वादिः ल्वादिश्च। लिनाति। 'व्रीणाति' (१५०४) वत्। लीनः = लयं प्राप्तः। एरच्। लयः। विभाषा लीयतेः। लेता-लाता। प्रलीयते-विलीयते = नश्यति।

**( १५०२ ) ब्ली—वरणे**। (पसन्द करना, ढूढ निकालना, बीनना। आच्छादन करना)। सकर्म.। अनिट्। परस्मै.। ईकारान्तः। प्लादिः ल्वादिश्च। ब्लिनाति ब्लीनाति। 'व्रीणाति' (१५०४) वत्। **णिचि**—ब्लेपयति।

**( १५०३ ) प्ली—गतौ**। (जाना)। सकर्म.। अनिट्। परस्मै.। प्वादिः ल्वादिश्च। प्लिनाति। 'व्रीणाति' (१५०४) वत्। प्लीनः।

**( १५०४ ) व्री—वरणे**। (वरण करना, ढूढकर निकालना, पसन्द करना, बीनना, आच्छादन करना)। सकर्म.। अनि.। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | व्रीणाति[१] | व्रीणीतः | व्रीणन्ति | प्र. |
| | व्रीणासि | व्रीणीथः | व्रीणीथ | म. |
| | व्रीणामि | व्रीणीवः | व्रीणीमः | उ. |
| लिट् | विव्राय | विव्रियतुः | विव्रियुः | प्र. |
| | विव्रयिथ-विव्रेथ | विव्रियथुः | विव्रिय | म. |
| | विव्राय-विव्रय | विव्रियिव | विव्रियिम | उ. |
| लुट् | व्रेता | व्रेतारौ | व्रेतारः | प्र. |
| | व्रेतासि | व्रेतास्थः | व्रेतास्थ | म. |
| | व्रेतास्मि | व्रेतास्वः | व्रेतास्मः | उ. |
| लृट् | व्रेष्यति | व्रेष्यतः | व्रेष्यन्ति | प्र. |
| | व्रेष्यसि | व्रेष्यथः | व्रेष्यथ | म. |
| | व्रेष्यामि | व्रेष्यावः | व्रेष्यामः | उ. |

१ अयमपि प्लादिरिति मते 'व्रिणाति' इत्यादि ह्रस्वमपि।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लोट् | व्रीणातु-व्रीणीतात् | व्रीणीताम् | व्रीणन्तु | प्र. |
| | व्रीणीहि-व्रीणीतात् | व्रीणीतम् | व्रीणीत | म. |
| | व्रीणानि | व्रीणाव | व्रीणाम | उ. |
| लङ् | अव्रीणात् | अव्रीणीताम् | अव्रीणन् | प्र. |
| | अव्रीणाः | अव्रीणीतम् | अव्रीणीत | म. |
| | अव्रीणाम् | अव्रीणीव | अव्रीणीम | उ. |
| वि. लि. | व्रीणीयात् | व्रीणीयाताम् | व्रीणीयुः | प्र. |
| | व्रीणीयाः | व्रीणीयातम् | व्रीणीयात | म. |
| | व्रीणीयाम् | व्रीणीयाव | व्रीणीयाम | उ. |
| आ. लि. | व्रीयात् | व्रीयास्ताम् | व्रीयासुः | प्र. |
| | व्रीयाः | व्रीयास्तम् | व्रीयास्त | म. |
| | व्रीयासम् | व्रीयास्व | व्रीयास्म | उ. |
| लुङ् | अव्रेषीत् | अव्रेष्टाम् | अव्रेषुः | प्र. |
| | अव्रेषीः | अव्रेष्टम् | अव्रेष्ट | म. |
| | अव्रेषम् | अव्रेष्म | अव्रेष्म | उ. |
| लृङ् | अव्रेष्यत् | अव्रेष्यताम् | अव्रेष्यन् | प्र. |
| | अव्रेष्यः | अव्रेष्यतम् | अव्रेष्यत | म. |
| | अव्रेष्यम् | अव्रेष्याव | अव्रेष्याम | उ. |

**कर्मणि**—व्रीयते। **णिचि**—व्राययति-ते। **सनि**—विव्रीयति। **यङि**—वेव्रीयते। **यङ्लुकि**—वेव्रयीति-वेव्रेति। **कृत्सु**—व्रायकः-यिका, व्रेता-त्री, व्राययिका-त्री, व्रिणन्-[१]न्ती, व्राययन्-न्ती, व्रेष्यन्-न्ती-ती, व्राययिष्यन्-न्ती-ती, व्रेतव्यम्, व्रयणीयम्, व्रीतः, व्रीणः, व्रीणम्, व्रेतुम्, व्रीत्वा, विव्रीय, व्रेपयति[२], व्रेयम्, व्रयणम्।

**(१५०५) भ्री—भये।** भरणे इत्येके। (डरना, धारण करना, आश्रय देना, पालन करना)। अकर्म.। अनिट्। परस्मै.। प्वादिः। भ्रिणाति। केषाञ्चिन् मतेऽस्य प्वादित्वं नास्ति। तदा भ्रीणाति। 'व्रीणाति' (१५०४) वत्।

**(१५०६) क्षीष्—हिंसायाम्।** (दुःख देना, पीडादेना, मार डालना)। सकर्म.। अनिट्। परस्मै.। प्वादिः। षित्। १ क्षिणाति। २ चिक्षाय। चिक्षियतुः। ३ क्षेता। ८ क्षीयात्। ९ अक्षैषीत्। प्वादित्वमस्य नास्तीति मते क्षीणातीत्यादि षित्वादङ् क्षियः। 'व्रीणाति' (१५०४) वत्।

---

१ शतरि, 'क्र्यादिभ्यः श्ना' (३-४-८१) इति श्नाविकरणप्रत्ययः। तस्य 'श्नाभ्यस्तयोरातः (६-४-११२) इत्याकारलोपे, 'प्लादीनां ह्रस्वः' (७-३-८०) इति ह्रस्वे च रूपम्। ये तु प्लादित्वमस्य नाभ्युपगच्छन्ति, तेषां मते व्रीणन् इति दीर्घघटितत्वमेव रूपम्।

२ "स्वामिकाश्यपादयः 'अतिह्रीव्री–' (७-३-३६) इति षष्ठन्तो व्रेपयतीति पुकं प्रतिपन्नाः" इति धातुवृत्तिः। क्षीरतरङ्गिण्यां तु अत्र नैतादृशः पाठः उपलभ्यते इतः पूर्वं 'ब्ली वरणे' इत्यत्र धातौ। ब्लेपयतीति पुग् विशिष्टत्वेन उदाहियते।

**(१५०७) ज्ञा—अवबोधने**। (जानना, समझाना)। **अनु**—अनुमोदन करना, आज्ञा करना, स्वीकार करना। **अप**—छिपाना, आच्छादित करना, **अव**—अपमान करना, मान खण्डन करना, **उप**—प्रथम जानना, पहिले समझना। **परि**—जान लेना, परिज्ञान कर लेना। **सम्**—प्रतिज्ञा करना, वचन देना। उत्कण्ठा पूर्वक स्मरण करना, अच्छी तरह जानना। **प्रत्यभि**—पहिचानना। **वि**—स्पष्ट जानना। सकर्म.। अनिट्। परस्मै.। मित्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | जानाति[१] | जानीतः | जानन्ति | प्र. |
| | जानासि | जानीथः | जानीथ | म. |
| | जानामि | जानीवः | जानीमः | उ. |
| लिट् | जज्ञौ | जज्ञतुः | जज्ञुः | प्र. |
| | जज्ञिथ-जज्ञाथ | जज्ञथुः | जज्ञ | म. |
| | जज्ञौ | जज्ञिव | जज्ञिम | उ. |
| लुट् | ज्ञाता | ज्ञातारौ | ज्ञातारः | प्र. |
| | ज्ञातासि | ज्ञातास्थः | ज्ञातास्थ | म. |
| | ज्ञातास्मि | ज्ञातास्वः | ज्ञातास्मः | उ. |
| लृट् | ज्ञास्यति | ज्ञास्यतः | ज्ञास्यन्ति | प्र. |
| | ज्ञास्यसि | ज्ञास्यथः | ज्ञास्यथ | म. |
| | ज्ञास्यामि | ज्ञास्यावः | ज्ञास्यामः | उ. |
| लोट् | जानातु-जानीतात् | जानीताम् | जानन्तु | प्र. |
| | जानीहि-जानीतात् | जानीतम् | जानीत | म. |
| | जानानि | जानाव | जानाम | उ. |
| लङ् | अजानात् | अजानीताम् | अजानन् | प्र. |
| | अजानाः | अजानीतम् | अजानीत | म. |
| | अजानाम् | अजानीव | अजानीम | उ. |
| वि. लि. | जानीयात् | जानीयाताम् | जानीयुः | प्र. |
| | जानीयाः | जानीयातम् | जानीयात | म. |
| | जानीयाम् | जानीयाव | जानीयाम | उ. |
| आ. लि. | ज्ञायात् | ज्ञायास्ताम् | ज्ञायासुः | प्र. |
| | ज्ञायाः | ज्ञायास्तम् | ज्ञायासुः | म. |
| | ज्ञायासम् | ज्ञायास्व | ज्ञायास्म | उ. |
| लुङ् | अज्ञासीत् | अज्ञासिष्टाम् | अज्ञासिषुः | प्र. |
| | अज्ञासीः | अज्ञासिष्टम् | अज्ञासिष्ट | म. |
| | अज्ञासिषम् | अज्ञासिष्व | अज्ञासिष्म | उ. |
| लृङ् | अज्ञास्यत् | अज्ञास्यताम् | अज्ञास्यन् | प्र. |
| | अज्ञास्यः | अज्ञास्यतम् | अज्ञास्यत | म. |
| | अज्ञास्यम् | अज्ञास्याव | अज्ञास्याम | उ. |

१ ज्ञाजनोर्जा। इति जादेशे।

एवं– प्रतिजानाति । अनुजानाति । अवजानाति । प्रतिजानीते । संजानीते । अपजानीते ।

**कर्मणि**—ज्ञायते । २ जज्ञे । ९ अज्ञायि । **णिचि**—ज्ञापयति-ते-ज्ञपयति-ते । ९ अजिज्ञपत्-त । **सनि**—जिज्ञासते । **यङि**—जाज्ञायते । **यङ्लुकि**—जाज्ञाति-जाज्ञेति । **कृत्सु**—ज्ञायकः[१] यिका, ज्ञापकः[२]-ज्ञपकः[३] पिका, ज्ञाता-त्री, ज्ञापयिता-ज्ञपयिता-त्री, जिज्ञासकः[४]-सिका, जिज्ञासिता-त्री, जानन्[५]-ती (मातुः) सञ्जानन्[६] (पितुः) प्रतिजानन्, ज्ञापयन्-ज्ञपयन्-न्ती, जिज्ञयिष्यन्-ज्ञीप्सन्-न्ती, अनुजिज्ञासनम्[७]-न्ती, ज्ञास्यन्-न्ती-ती, ज्ञापयिष्यन्-न्ती-ती, ज्ञीप्सिष्यन्-न्ती-ती, अपजाननः[८], (सर्पिषो) जानानः[९], संजानानः,[१०] सहस्तं प्रतिजानानः, (धर्मं) जिज्ञासमानः,[११] सुज्ञाः,[१२] सुज्ञौ-सुज्ञः, ज्ञातम्-ज्ञातः-ज्ञातवान्, ज्ञापितः-ज्ञपितः-ज्ञप्तः,[१३] ज्ञः,[१४] अज्ञः, पथि-प्रज्ञः,[१५] प्राज्ञः,[१६] अभिज्ञः, नयज्ञः,[१७] मनसा ज्ञायी,[१८] नीतिज्ञः, ज्ञापः-ज्ञपः, जिज्ञयिषुः-ज्ञप्सुः, जिज्ञासुः,

१ 'आतो वुक् चिण्कृतोः' (७-३-३३) इति ण्वुलि परतो युगागमः । एवं घञि णवुल्यपि ज्ञेयम् ।
२ मारणाद्यर्थस्याप्रतीत्या अत्र मित्वं न, अतः, उपधाह्रस्वो न । एवं सर्वत्र ण्यन्ते मारणाद्यर्थाप्रतीतौ ज्ञेयम् ।
३ घटादौ 'मारणतोषणनिशामनेषु ज्ञा' इति जानातेः मित्संज्ञायाम्', आदन्तलक्षणे पुगागमे उपधाह्रस्वे रूपमेवम् । एवं ण्यन्ते ह्रस्वघटितरूपस्योपपत्तिः सर्वत्र ज्ञेया ।
४ अस्यधातोणर्यन्तात् सनि रूपाणि प्रदर्शितानि । तत्र हेतुस्तु 'सनीवन्तर्धभ्रस्जदम्भुश्रिस्वृयूर्णुमरज्ञपिसनाम्' (७-२-४९) इति सूत्रेण ण्यन्तात् परस्य सन इडविकल्प एव इट्पक्षे जिज्ञपयिषकः इति रूपम् । एवं इट्पक्षे सर्वत्र ण्यन्तात् सनि रूपं ज्ञेयम् । इडभावपक्षे, 'आपज्ञपृधामीत्' (७-४-५५) इतीत्वे, 'अत्र लोपोऽभ्यासस्य' (७-४-५८) इति अभ्यासलोपे च रूपम् ज्ञीप्सक इत्यादि । एवं ण्यन्तात् सनि इडभावपक्षे रूपं ज्ञेयम् ।
५ 'क्र्यादिभ्यः–' (३-१-८१) इति श्ना विकरण प्रत्ययः । 'ज्ञाजनोर्जा' (७-३-७९) इति जादेशे, 'श्नाभ्यस्तयोः–' (६-४-११२) इत्याकारलोपे नुमि च रूपम्, अस्य प्वादित्वेऽपि 'प्वादीनां ह्रस्व (७-३-८०) इति ह्रस्वो न, 'जा' इति दीर्घादेशविधानसामर्थ्यात् । एवं जानानः इत्यत्रापि प्रक्रिया ज्ञेया ।
६ 'संप्रतिभ्यामनाध्याने' (१-३-४६) इत्यत्र 'अनाध्याने' इत्युक्तत्वात् प्रकृते शानच् न, आध्यानम् = उत्कण्ठापूर्व स्मरणम् ।
७ 'विभाषोपपदेन प्रतीयमाने' (१-३-७७) इत्यत्र शानचो विकल्पितत्वात्, पक्षे शता भवति ।
८ 'अपह्नवे ज्ञः' (१-३-४४) इति जानातेः शानच् । शतम् अलपत इत्यर्थः ।
९ 'अकर्मकाच्च' (१-३-४५) इत्यात्मनेपदं शानच् । 'ज्ञोऽविदर्थस्य करणे' (२-३-५१) इति सूत्रेण शेषत्वेन विवाक्षित्वे षष्ठी ।
१० 'संप्रतिभ्यामनाध्याने' (१-३-४६) इति शानच् । शतम् अपेक्षमाणः ।
११ 'ज्ञाश्रुस्मृदृशां सनः' (१-३-५७) इति सनन्तात् शानच् ।
१२ क्विपि, रुत्वविसर्गौ भवतः । आकारान्तोऽयं शब्दः ।
१३ 'वा दान्तशान्त–' (७-२-२७) इति ण्यन्तात् निष्ठायां मित्वपक्षे इडभावो विकल्पेन निपातितः । तेन रूपद्वयं बोध्यम् ।
१४ 'इगुपधज्ञाप्रीकिरः कः' (३-१-१३५) इति कर्तरि कप्रत्ययः । आदन्तलक्षणणप्रत्ययस्यापवादः ।
१५ प्रकर्षेण पन्थानं जानातीति पथिप्रज्ञः । 'प्रे दाज्ञः' (३-२-६) इति क प्रत्ययः । 'आतो लोप इटि च' (६-४-४४) इति आकारलोपः ।
१६ आतोपसर्गे कः (३-२-३) इति कप्रत्ययः । आकारलोपः । प्रकर्षेण आ = समन्तात् जानातीति प्राज्ञः = पण्डितः ।
१७ 'आतोऽनुपसर्गे कः' (३-२-३) इति कर्मोपपदे कर्तरि कप्रत्ययः । आकारलोपः ।
१८ 'सुप्यजातौ णिनिस्ताच्छील्ये' (३-२-७८) इति ताच्छील्ये णिनिः' मनसः संज्ञायाम् (६-३-४) इति स्थिते 'आज्ञापयिनि च' (६-३-५) इति तृतीया अलुक् ।

ज्ञातव्यम्, ज्ञापयितव्यम्-ज्ञपयितव्यम्, ज्ञानीयम्, ज्ञापनीयम्-ज्ञपनीयम्, जिज्ञासनीयम्, ज्ञेयम्, ज्ञाप्यम्-ज्ञप्यम्, जिज्ञापयिष्यन्, ज्ञीप्सयन्, जिज्ञास्यन्, ज्ञायमानः, ज्ञाप्यमानः, ज्ञप्यमानः, ज्ञायः, ज्ञापः, ज्ञपः, ज्ञातुम्, ज्ञापयितुम्-ज्ञपयितुम्, ज्ञातिः,[१] आज्ञा,[२] अनुज्ञा, उपज्ञा,[३] उपज्ञम्, संज्ञा, प्रज्ञा, ज्ञानम्, ज्ञप्यम्, ज्ञपनम्, ज्ञात्वा, ज्ञापयित्वा, ज्ञपयित्वा, विज्ञाय, अनुज्ञाप्य अनुज्ञपय्य[४]।

**(१५०८) बन्ध—बन्धने** । (बांधना)। **आ**—चारों ओर से बांधना। **अनु**—जोड़ना, चिपकाना, एकत्र करना, अनुसरण करना। **नि**—बन्धन मुक्त करना, इकट्ठा करना। **सम्**—मिलाप करना। सकर्म.। अनिट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | बध्नाति | बध्नीतः | बध्नन्ति | प्र. |
| | बध्नासि | बध्नीथः | बध्नीथ | म. |
| | बध्नामि | बध्नावः | बध्नामः | उ. |
| लिट् | बबन्ध | बबन्धतुः | बबन्धुः | प्र. |
| | बबन्धिथ | बबन्धथुः | बबन्ध | म. |
| | बबन्ध | बबन्धिव | बबन्धिम | उ. |
| लुट् | बन्द्धा | बन्द्धारौ | बन्द्धारः | प्र. |
| | बन्द्धासि | बन्द्धास्थः | बन्द्धास्थ | म. |
| | बन्द्धास्मि | बन्द्धास्वः | बन्द्धास्मः | उ. |
| लृट् | भन्त्सयति | भन्त्सयतः | भन्त्सयन्ति | प्र. |
| | भन्त्सयसि | भन्त्सयथः | भन्त्स्यथ | म. |
| | भन्त्स्यामि | भन्त्स्यावः | भन्त्स्यामः | उ. |
| लोट् | बध्नातु-बध्नीतात् | बध्नीताम् | बध्नन्तु | प्र. |
| | बधान-बध्नीतात् | बध्नीतम् | बध्नीत | म. |
| | बध्नानि | बध्नाव | बध्नाम | उ. |
| लङ् | अबध्नात् | अबध्नीताम् | अबध्नन् | प्र. |
| | अबध्नाः | अबध्नीतम् | अबध्नीत | म. |
| | अबध्नाम् | अबध्नीव | अबध्नीम | उ. |
| वि. लि. | बध्नीयात् | बध्नीयाताम् | बध्नीयुः | प्र. |
| | बध्नीयाः | बध्नीयातम् | बध्नीयात | म. |
| | बध्नीयाम् | बध्नीयाव | बध्नीयाम | उ. |
| आ. लि. | बध्यात् | बध्यास्ताम् | बध्यासुः | प्र. |
| | बध्याः | बध्यास्तम् | बध्यास्त | म. |
| | बध्यासम् | बध्यास्व | बध्यास्म | उ. |

१ 'क्तिच् क्तौ च संज्ञायाम्' (३-३-१७४) इति क्तिच्।
२ 'आतश्चोपसर्गे' (३-३-१०६) इत्यङ्।
३ उपज्ञायते इत्युपज्ञा। कर्मण्यङ्। पाणिन्युपज्ञं व्याकरणम्। इत्यत्र पाणिनिकर्तृकप्राथमिकज्ञानविषयो व्याकरणमित्यर्थः। 'उपज्ञोपक्रमं तदाद्याचिख्यासायाम्' (२-४-२१) इति नपुंसकत्वम्।
४ 'ल्यपि लघुपूर्वात्' (६-४-५६) इति मित् पक्षे ण्यन्ताल्ल्यपि णेरयादेशः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुङ् | अभान्त्सीत् | अबान्धाम् | अभान्त्सुः | प्र. |
| | अभान्त्सीः | अबान्धम् | अबान्ध | म. |
| | अभान्त्सम् | अभान्त्स्व | अभानत्स्म | उ. |
| लृङ् | अभन्त्स्यत् | अभन्त्स्यताम् | अभन्त्स्यन् | प्र. |
| | अभन्त्स्यः | अभन्त्स्यतम् | अभन्त्स्यत | म. |
| | अभन्त्स्यम् | अभन्त्स्याव | अभन्त्स्याम | उ. |

**कर्मणि**—बध्यते। ९ अबन्धि। **णिचि**—बन्धयति-ते। ९ अबबन्धत्-त। **सनि**—बिभन्त्सति। **यङि**—बाबध्यते। **यङ्लुकि**—बावन्धीति-बन्धि। **कृत्सु**—बन्धकः- न्धिका, बिभन्त्सकः[१]-त्सिका, बन्द्धा[२]-बन्द्ध्री, बन्धयिता-त्री, बध्नन्[३]-ती, बन्धयन्-न्ती, बिभन्त्सन्-न्ती, भन्त्स्यन्[४]-न्ती-ती, बन्धयिष्यन्-न्ती-ती, बन्धयमानः, बन्धयिष्यमाणः, भत्[५]-भध् बधौ-बधः, बद्धः, बद्धम्-बद्धवान्, चक्रबद्धः[६]-दृषद्बद्धः, बन्धितः, बन्धः, सुतानुबन्धः,[७] बिभन्त्सुः, बन्धव्यम्, बन्धयितव्यम्, बन्धनीयम्, बन्ध्यम्, ईषद्बन्धः दुर्बन्धः- सुबन्धः, बध्यमानः, बन्ध्यमानः, पर्यङ्कबन्धः,[८] चक्रबन्धः, दृषद्बन्धः, अनूबन्धः[९], बन्द्धुम्, बन्धयितुम्, बिभन्त्सितुम्, बन्धा,[१०] बद्धिः, बन्धना, बन्धनम्, बद्ध्वा, बन्धयित्वा, अनुबध्य, प्रबन्ध्य, चक्रबन्धम्,[११] बद्धः, बन्धुः,[१२] बधिरः,[१३] ब्रध्नः[१४]-बुध्नः, बन्धुरः,[१५] बन्धूकः[१६]।

१ सन्नन्ताण्वुलि, भषभावचर्त्वादिकेषु रूपमेवम्। सर्वत्र सन्नन्तेषु एवमेव प्रक्रियेति ज्ञेयम्।

२ तृचि, 'झषस्तथोः–' (८-२-४०) इति धत्वम्। 'झलां जश् झशि' (८-४-५३) इति धातुधकारस्य दकारः। तस्य 'झरो झरि–' (८-४-६५) इति पाक्षिको लोपः।

३ शतरि क्र्यादित्वात् श्ना प्रत्यये, 'अनिदिताम्–' (६-४-२४) इति धातुनकारस्य लोपे, 'श्नाभ्यस्तयोः–' (६-४-११२) इत्याकारलोपे च रूपमेवम्।

४ स्यप्रत्ययेऽपि भषभावचर्त्वादिकं यथायथमुह्यम्।

५ क्विपि, उपधानकारलोपे, भषभावचर्त्वविकल्पयो रूपम्।

६ क्तप्रत्ययान्तात् 'सप्तमी–' (२-३-३६) इति योगविभागात् समासः।

७ सुतमनुबध्नातीति सुतानुबन्धः। 'कर्मण्यण्' (३-२-१) इत्यण्।

८ पर्यङ्के बन्धः पर्यङ्कबन्धः। 'सिद्धशुष्कपक्वबन्धैश्च' (२-१-४१) इति सप्तमीतत्पुरुषः। 'तत्पुरुषे कृति–' (६-३-१४) इति प्राप्तस्यालुकः। 'नेन्सिद्धबद्ध्नातिषु च' (६-३-१९) इति निषेधः।

९ अनुबध्यते इत्यनूबन्धः = प्रत्ययगतः कित्वङित्वादिर्विशेषः। 'उपसर्गस्य घञ्यमनुष्ये बहुलम्' (६-३-१२२) इति दीर्घः।

१० धातोः संयोगान्तत्वेन गुरुत्वात् 'गुरोश्च हलः' (३-३-१०३) इत्यकारप्रत्यये रूपमेवम्। क्तिनि विवक्षिते तु क्तित्वेनोपधानकारलोपे बद्धिः इत्यपि साधुः।

११ 'अधिकरणे बन्धः' (३-४-४१) इति णमुल्। चक्रे बद्ध इत्यर्थः। कषादित्वात् यथाविधानुप्रयोगः

१२ औणादिके उप्रत्यये रूपमेवम्।

१३ औणादिके किरच् प्रत्यये प्रत्ययस्य कित्त्वेनोपधानकारलोपे च रूपमेवम्। बद्धमस्य श्रवणेन्द्रियमिति बधिरः = श्रोत्रेन्द्रियहीनः।

१४ 'बन्धेर्ब्रधिबुधि च' इति नक् प्रत्यये ब्रधि बुधि-इत्यादेशयोश्च रूपे सिद्ध्यतः। कित्त्वादुपधानकारलोपः। ब्रध्नः = सूर्यः। बुध्नः = संकल्पो मनः देवो वा।

१५ बाहुलकादौणादिके उरच् प्रत्यये रूपम्। 'बन्धूर-बन्धुरौ स्यातां नम्रसुन्दरयोस्त्रिषु' इति रन्तिदेववचनाद् दीर्घमध्यमोऽप्यस्तीति विज्ञायते।

१६ औणादिके ऊकप्रत्यये रूपम्। बन्धूकम् = पुष्पविशेषः।

(१५०९) **वृङ्—सम्भक्तौ**। (सेवा करना, परिचर्या करना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.।

१ **प्र.** वृणीते वृणाते वृणते। **म.** वृणीषे वृणाथे वृणीध्वे। **उ.** वृणे वृणीवहे वृणीमहे। २ **प्र.** वव्रे वव्राते वव्रिरे। **म.** ववृषे वव्राथे ववृढ्वे। **उ.** वव्रे ववृवहे। ३ वरिता-वरीता। ४ वरिष्यते-वरीष्येते। ५ वृणीताम् वृणाताम् वृणताम्। **म.** वृणीष्व वृणाथाम् वृणीध्वम्। **उ.** वृणै। ६ अवृणीत। **म.** अवृणीथाः। **उ.** अवृणि। ७ वृणीत वृणीयाताम्। ८ वरिषीष्ट-वृषीष्ट। ९ अवरिष्ट-अवरीष्ट-अवृत। १० अवरिष्यत-अवरीष्यत।

**कर्मणि**—व्रियते। **णिचि**—वारयति। ९. अवीवरत्। **सनि**—विवरिषते-विवरीषते-वुवूर्षते। **यङि**—वेव्रीयते। **यङ्लुकि**—वरिवर्ति-वरीवर्ति। **कृत्सु**—वरितव्यम्-वरीतव्यम्, वरणीयम्, वार्यः, वृतः, वृणानः, वरितुम्-वरीतुम्, वरणम्, वृत्वा, परावृत्य, वरेण्यः।

(१५१०) **श्रन्थ—विमोचनप्रतिहर्षयोः**। (त्याग करना, विमोचन करना, आनन्द करना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.।

१ श्रथ्नाति। २ **प्र.** शश्राथ-शश्रन्थ-श्रेथ शश्रथतुः श्रथतुः-शश्रन्थतुः शश्रेथुः-श्रेथुः-शश्रन्थुः। **म.** शश्रन्थिथ श्रेथिथ-शश्रथिथ। **उ.** शश्राथ-शश्रथ शश्रथिव-श्रेथिव-शश्रथिव। ३ श्रन्थिता। ४ श्रन्थिष्यति। ५ श्रथ्नातु। ६ अश्रथ्नात्। ७ श्रथ्नीयात्। ८ श्रथ्यात्। ९ अश्रन्थीत्। १० अश्रन्थिष्यत्।

**कर्मणि**—श्रथ्यते। **णिचि**—श्रन्थयति-ते। ९. अशश्रन्थत्-त। **सनि**—शिश्रन्थिषति। **यङि**—शाश्रथ्यते। **यङ्लुकि**—शाश्रन्थीति-शाश्रन्ति। **कृत्सु**—श्रन्थितव्यम्, श्रन्थनीयम्, श्रन्थित्वा[1]-श्रथित्वा, श्रन्थनम्, श्रन्थ्यम्, श्रन्थितुम्, प्रश्रथः हिमश्रथः, श्रेथिवान्[2], श्रन्थना[3]।

(१५११) **मन्थ—विलोडने**। (विलोना, मथना)। द्विकर्म.। सेट्। परस्मै.।

१ मथ्नाति। २ ममन्थ। ३ मन्थिता। ४ मन्थिष्यति। ५ मथ्नातु। **म.** मथान। **उ.** मथ्नानि। ६ अमथ्नात्। ७ मथ्नीयात्। ८ मथ्यात्। ९ अमन्थीत्। १० अमन्थिष्यत्।

**कर्मणि**—मथ्यते। **णिचि**—मन्थयति-ते। ९. अममन्थत्-त। **सनि**—मिमन्थिषति। **यङि**—मामथ्यते। **यङ्लुकि**—मामन्थीति-मामन्ति। **कृत्सु**—मन्थक-न्थिका, मन्थिता-त्री, मन्थयिता-त्री, मन्थाः[4], मन्थितव्यम्, मन्थनीयम्, मन्थ्यम्, मथितः, मन्थन्, मन्थितुम्, मथ्नन्, मथित्वा-मन्थित्वा, प्रमथ्य।

---

१ 'नोपधात् थफान्ताद् वा' (१-२-२३) इति कित्त्वविकल्पः। कित्त्वपक्षे 'अनिदिताम्–' (६-४-२४) इति नकारलोपः

२ क्वसौ, 'श्रन्थिग्रन्थि–' (वा. १-२-६) इत्यादिना लिटः कित्वान्न लोपे, 'एत्वाभ्यासलोपवत्र वक्तव्यौ, इति हरदत्तवचनात् एत्वाभ्यासलोपौ:। 'वस्वेकाच्–' (७-२-६७) इतीट्।

३ 'ण्यासश्रन्थो युच्' (३-३-१०७) इति युचि श्रन्थना।

४ 'मन्थः' इति इनि प्रत्ययः किच्च। मथ्नातीति मन्थाः = वायुः वैशाखः, वज्रश्च। 'पथिमथि–' (७-१-८५) इत्याकारे, 'इतोऽत्–' (७-१-८६) इत्यकारे च प्रथमैकवचने रूपमेवम्। 'वैशाखो मन्थनमन्थानो मन्थदण्डके' इत्यमरः (२-७४)।

**( १५१२ ) श्रन्थ—सन्दर्भे** । (रचना करना, क्रम से रखना) । सकर्म. । सेट् । परस्मै. । श्रथ्नाति । 'श्रथ्नाति' (१५१०) वत् ।

**( १५१३ ) ग्रन्थ—सन्दर्भे** । (ग्रन्थ लिखना, सन्दर्भ लगाना ।) । सकर्म. । सेट् । परस्मै. । ग्रथ्नाति इत्यादि सर्वं 'श्रथ्नाति' (१५१०) वत् ।

**( १५१४ ) कुन्थ—संश्लेषणे** । (मिलकर रहना) । सकर्म. । सेट् । पर. । कुथ्नाति । चुकोथ ।

**( १५१५ ) मृद—क्षोदे, क्षोदनं = सञ्चूर्णनम्** । (पीसना, कूटना, चूर्ण करना, मर्दन करना) । सकर्म. । सेट् । परस्मै. ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | मृद्नति | मृद्नीतः | मृद्नन्ति | प्र. |
| | मृद्नासि | मृद्नीथः | मृद्नीथ | म. |
| | मृद्नामि | मृद्नीवः | मृद्नीमः | उ. |
| लिट् | ममर्द | ममृदतुः | ममृदुः | प्र. |
| | ममर्दिथ | ममृदथुः | ममृद | म. |
| | ममर्द | ममृदिव | ममृदिम | उ. |
| लुट | मर्दिता | मदितारौ | मर्दितारः | प्र. |
| | मर्दितासि | मर्दितास्थः | मर्दितास्थ | म. |
| | मर्दितास्मि | मर्दितास्वः | मर्दितास्मः | उ. |
| लृट् | मर्दिष्यति | मर्दिष्यतः | मर्दिष्यन्ति | प्र. |
| | मर्दिष्यसि | मर्दिष्यथः | मर्दिष्यथ | म. |
| | मर्दिष्यामि | मर्दिष्यावः | मर्दिष्यामः | उ. |
| लोट् | मृद्नातु-मृद्नीतात् | मृद्नीताम् | मृद्नन्तु | प्र. |
| | मृदान-मृदनीतात् | मृद्नीतम् | मृद्नीत | म. |
| | मृद्नानि | मृद्नाव | मृद्नाम | उ. |
| लङ् | अमृद्नात् | अमृद्नीताम् | अमृद्नन् | प्र. |
| | अमृद्नाः | अमृद्नीतम् | अमृद्नीत | म. |
| | अमृद्नाम् | अमृद्नीव | अमृद्नीम | उ. |
| वि. लि. | मृद्नीयात् | मृद्नीयाताम् | मृद्नीयुः | प्र. |
| | मृद्नीयाः | मृद्नीयातम् | मृद्नीयात | म. |
| | मृद्नीयाम् | मृद्नीयाव | मृद्नीयाम | उ. |
| आ. लि. | मृद्यात् | मृद्यास्ताम् | मृद्यासुः | प्र. |
| | मृद्याः | मद्यास्तम् | मृद्यास्त | म. |
| | मृद्यासम् | मृद्यास्व | मृद्यास्म | उ. |
| लुङ् | अमर्दीत् | अमर्दिष्टाम् | अमर्दिषुः | प्र. |
| | अमर्दीः | अमर्दिष्टम् | अमर्दिष्ट | म. |
| | अमर्दिषम् | अमर्दिष्व | अमर्दिष्म | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृङ् | अमर्दिष्यत् | अमर्दिष्यताम् | अमर्दिष्यन् | प्र. |
| | अमर्दिष्यः | अमर्दिष्यतम् | अमर्दिष्यत | म. |
| | अमर्दिष्यम् | अमर्दिष्याव | अमर्दिष्याम | उ. |

**कर्मणि**—मृद्यते। **णिचि**—मर्दयति। ९. अमीमृदत्-अममर्दत्। **सनि**—मिमर्दिषति। **यङि**—मरीमृद्यते। **यङ्लुकि**—मरीमदीति-मर्मति मर्मृदीति-मरीमृदीति-मरिमृदीति। **कृत्सु**—मर्दकः-र्दिका, मर्दिता-त्री, मर्दयिता-त्री, मृत्-मृदौ, मृदः, मर्दितव्यम्, मर्दनीयम्, मृद्यम्, मृद्नन्, मर्दितुम्, मर्दनम्, मृदित्वा, मृत्तिका[1]-मृत्सा, मृत्स्ना, मुरमर्दनः,[2] मर्दनम्, प्रमृद्य, मृद्यः,[3] महिषासुरमर्दिनी,[4] मृदङ्ग[5]।

**(१५१६) मृड—क्षोदे सुखे च**। क्षोदनं = संचूर्णनम्। (चूर्ण करना, कूटना, सुख देना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। मृड्नाति। 'मृद्नाति' (१५१५) वत्।

**(१५१७) गुध—रोषे**। (क्रोध करना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.। गुध्नाति। 'मुष्णाति' (१५३०) वत्।

**(१५१८) कुष—निष्कर्षे**। तच्च अन्तर्गतस्य बहिर्निस्सरणम्। (बाहर निकालना, रगड़के निकालना, कसौटी पर घिसके सोने आदि की परीक्षा करना)। **अव**—सिद्ध या स्थापित करना। **निस्**—खीचकर बाहर निकालना। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। कुष्णाति। 'मुष्णाति' (१५३०) वत्।

**कृत्सु**—कुषकः-षिका, कोषकः-षिका, कोषिता-त्री, कोष्टा-ष्ट्री, कुष्णन्-न्ती, कोषयन्-न्ती, कोषिष्यन्-न्ती-ती, कोषयिष्यन्-न्ती-ती, निष्कोषिष्यन्-निष्कोक्ष्यन्, कोषयमाणः, कोषयिष्यमाणः, कुषितम्-तः, जिनष्कुषितम्-तः, कुषः, कोषः, कोषितव्यम्, निष्कोष्टव्यम्, कोषणीयम्, कोष्यम्, कुष्यमाणः, कुष्टिः, कोषणा, कोषणम्, कुषित्वा, विकुष्य।

**(१५१९) क्षुभ—संचलने**। (मथना)। अकर्म.। सेट्। परस्मै.। क्षुभ्नादिः। १ क्षुभ्नाति। २ चुक्षोभ। ३ क्षोभिता। ४ क्षुभ्यात्। ९ अक्षोभीत्। क्षुभ्नादित्वान्न णत्वम्। 'मुष्णाति' (१५३०) वत्।

**(१५२०) णभ—हिंसायाम्**। (मार डालना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। नभ्नाति। ननाभ नेभतुः। अनभीत्-अनाभीत्। नाभकः-भिका, नभ्नन्-ती, नभिष्यन्-न्ती-ती।

**(१५२१) तुभ—हिंसायाम्**। (मार डालना)। सकर्म.। सेट्। परस्मै.। क्र्यादि 'क्षुभ' धातुवत्। तुभित्वा-तोभित्वा, तुब्धः, तोभकः-भिका, तोभिता-त्री, तोभयिता-त्री, शतरि तुभ्नन्-ती।

---

१ 'मृदस्तिकन्' (५-४-३९) इति मृच्छब्दात् स्वार्थे तिकत् प्रत्यये रूपमेवम्।

२ 'नन्द्यादेः' (३-१-१३४) आकृतिगणत्वात् कर्तरि ल्युप्रत्ययः। मुरं मर्दयतीति मुरमर्दनः।

३ 'ऋदुपधात्—' (३-१-११०) इति क्यप् प्रत्ययः।

४ बाहुलकात् 'कृत्यल्युटो बहुलम्' (३-३-११३) इति कर्मणि उपपदे कर्तरि ल्युटि, स्त्रियां टित्वात् ङीपि च रूपमेवम्।

५ 'विडादिभ्यः कित्' इति अङ्गच् प्रत्ययः। मृदङ्गः = वाद्यविशेषः।

**( १५२२ ) क्लिशू—विबाधने**। (क्लेश या दुःख देना, हरकत करना, दुःख सहन करना)। सकर्म.। वेट्। परस्मै.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | क्लिश्नति | क्लिश्नीतः | क्लिश्नन्ति | प्र. |
| | क्लिश्नसि | क्लिश्नीथः | क्लिश्नीथ | म. |
| | क्लिश्नामि | क्लिश्नीवः | क्लिश्नीमः | उ. |
| लिट् | चिक्लेश | चिक्लिशतुः | चिक्लिशुः | प्र. |
| | चिक्लेशिथ | चिक्लिशथुः | चिक्लिश | म. |
| | चिक्लेश | चिक्लिशिव | चिक्लिशिम | उ. |
| लुट् | क्लेशिता | क्लेशितारौ | क्लेशितारः | प्र. |
| | क्लेशितासि | क्लेशितास्थः | क्लेतास्थ | म. |
| | क्लेशितास्मि | क्लेशितास्वः | क्लेशितास्मः | उ. |

पक्षे—क्लेष्टा क्लेष्टारौ क्लेष्टारः इत्यादि।

४ क्लेशिष्यति-क्लेक्ष्यति। ५ क्लिश्नातु। ६ अक्लिश्नात्। ७ क्लश्नीयात्। ८ क्लिश्यात्। ९ अक्लेशीत्-अक्लिक्षत्। १० अक्लेशिष्यत्-अक्लेक्ष्यत्।

**कर्मणि**—क्लिश्यते। **णिचि**—क्लेशयति। ९ अचिक्लिशत्। **सनि**—चिक्लेशिषति-चिक्लिक्षति। **यङि**—चेक्लिश्यते। **यङ्लुकि**—चेक्लिशीति-चेक्लेष्टि। **कृत्सु**—क्लेशनीयम्। क्लेशनम्। क्लेशनः। क्लेशः। क्लेशी, क्लेशिता-क्लेष्टा, क्लिष्टः, क्लिष्टिः, क्लेशितुम्, क्लेष्टुम्, क्लेशितव्यम्, क्लेष्टव्यम्, क्लेशित्वा, क्लिष्ट्वा, संक्लिश्य, क्लेश्यः, क्लिश्नन्, क्लिश्यमानः, क्लेशिष्यन्-क्लेक्ष्यन्, क्लेशिष्यमाणः, क्लेक्ष्यमाणः।

**( १५२३ ) अश—भोजने**। (खाना, भोजना करना), अति—अधिक खाना। सकर्म.। सेट्। परस्मै.।

१ प्र. अश्नाति, अश्नीतः अश्नन्ति। म. अश्नासि, अश्नीथः, अश्नीथ। उ. अश्नामि, अश्नीवः, अश्नीमः। २ प्र. आश, आशतुः, आशुः। म. आशिथ आशथुः आश। उ. आश, आशिव आशिम। ३ आशिता। ४ आशिष्यति। ५ अश्नातु। ६ आश्नत्[१] आशान। ७ अश्नीयात्। ८ अश्यात् अश्यास्ताम् ९ आशीत् आशिष्टाम् आशिषुः। १० आशिष्यत्।

**कर्मणि**—अश्यते। ९ आशि। **णिचि**—आशयति। **सनि**—आशिशिषति। **यङि**—अशाश्यते। **कृत्सु**—अशनीयम्, अशनम्, आशकः, आशी, अशिता, अशितः, अष्टिः, अशितुम्, अशित्वा, अशितव्यम्, अश्नन्, अशिष्यन्, अशिष्यमाणः, ण्यन्तस्य, आशना, आशयिता, आशयित्वा, आशयितुम्, आशयन्, सनन्तस्य-अशिशिषा, अशिशिषुः।

**( १५२४ ) उध्रस—उञ्छे**। (बीनना, एक एक करके चुनना। ऊपर फेंकना, उड़ा देना)। सकर्म.। सेट्। पर.। १ ध्रस्नाति। २ दध्रास दध्रसतुः। ५ ध्रसिता। ९ अध्रासीत्। ११ केचित् उध्रस् इत्येव धातुं वदन्ति। तन्मते १ उध्रस्नाति। २ उद्ध्रासाञ्चकार। ९ औध्रासीत्।

१ 'हलः श्नः शानज्झौ' अशान भरतोद्यान् (भट्टिः २०/२३)

**( १५२५ ) इष—आभीक्ष्ण्ये** । (बार-बार करना) । सक. । सेट् । परस्मै. ।

१ इष्णाति । ५ इष्णातु । ७ ऐष्ण्यात् । ८ इष्णीयात् । आर्धधातुके 'इष्यति' वत् । **कृत्सु**—एषितव्यम्-एष्टव्यम् । इष्टः । इष्णन्, एषितुम्-एष्टुम् एषित्वा-इष्ट्वा ।

**( १५२६ ) विष—विप्रयोगे** । (उपयोग न होने से अलग करना या निकाल देना) । अकर्म. । सेट् । परस्मै. ।

१ विष्णाति । २ विवेष विविषतुः । ३ वेष्टा । ४ वेक्ष्यति । ५ विष्णातु । **म.** विषाण । ६ अविष्णात् । ७ विष्णीयात् । ८ विष्यात् । ९ अविक्षत् । क्लिश्नाति (१५२२) वत् ।

**कृत्सु**—वेषकः-षिका, वेष्टा-वेष्ट्री, वेषयिता-त्री, विविक्षिता-त्री, वेषिषिता-त्री ।

**( १५२७-२८ ) प्रुष-प्लुष—स्नेहन-सेवनपूरणेषु** । (सौम्य होना, स्निग्ध होना, चिकना होना, सींचना, पूर्ण करना, भरना) । सक. । सेट् । परस्मै. । प्रुष्णाति प्लुष्णाति इत्यादि पुष्णाति (१५२९) वत् ।

**( १५२९ ) पुष—पुष्टौ** । पालन करना, पोषण करना । **परि-सम्**—उत्कृष्ट होना, पालन करना । सक. । सेट् । परस्मै. ।

१ पुष्णति, पुष्णीतः पुष्णन्ति । २ **प्र.** पुपोष पुपुषतुः पुपुषुः । **म.** पुपोषिथ पुपुषथुः पुपुष । **उ.** पुपोष पुपुषिव पुपुषिम । ३ पोषिता । ४ पोषिष्यति । ५ पुष्णातु । ६ अपुष्णात् । ७ पुष्णीयात्, पुष्णीयास्ताम् । ८ पुष्यात् पुष्यास्ताम् । ९ अपोषीत् अपोषिष्टाम् । १० अपोपिष्यत् ।

**कर्मणि**—पुष्यते । **णिचि**—पोषयति-ते । ९. अपूपुषत्-त । **सनि**—पुपुषिषति । **यङि**—पोपुष्यते । **यङ्लुकि**—पोपुषीति पोपोष्टि । **कृत्सु**—पोषितव्यम्, पोषणीयम्, पोष्यम्, पुषितः, पुष्णन्, पुष्णती, पोषितुम्, पोषणम्, पुषित्वा, पोषित्वा, परिपुष्य ।

**( १५३० ) मुष—स्तेये** । (चुराना, चोरी करना) । सक. । सेट् । परस्मै. ।

१ मुष्णाति । ९ अमोषीत् । इत्यादि सर्वं 'पुष्णाति' (१५२९) वत् ।

**कृत्सु**—मोषकः-षिका, मुमिषिषकः-षिका, मोमुषकः-षिका, मोषिता-त्री, मोषयिता-त्री, मुमुषिषिता-त्री, मोमुषिता-त्री, मुषित्वा ।

**( १५३१ ) खच—भूतप्रादुर्भावे** । भूतप्रादुर्भावोऽतिक्रान्तोत्पत्तिः । (मर्यादा होने पर भी देर से जन्म लेना । सम्पत्ति युक्त करना । 'स्वेच्छया पवित्र करना) । सकर्म. । सेट् । परस्मै. ।

१ खच्ञाति, खच्ञीतः खच्ञन्ति । २ चखाच । ३ खचिता । ५ खच्ञातु । **म.** खचान । ९ अखाचीत्-अखचात् । खचित्वा । खचितः ।

**( १५३२ ) हेठ—भूतप्रादुर्भूते** । सर्वं 'खच्ञाति' (१५३१) वत् ।

**( १५३३ ) ग्रह—उपादाने** । (लेना, स्वीकार करना) । **अनु**—(उ.) कृपा करना, अनुग्रह

करना । **अव**—अटकाना । **उत्**—(पर) विश्वास करना । **प्रति**—अनुमोदन करना, गले लगाना, आलिङ्गन करना, **वि**—झगड़ना, अलग अलग करना । **सम्**—बटोरना, एकत्र करना । सकर्म. । सेट् । उभय. ।

१ गृह्णति-गृह्णीते । २ जग्राह, जग्रहिथ-जग्रहे । ३ ग्रहीतासि-से । ४ ग्रहीष्यति-ते । ५ गृह्णातु-गृह्णीताम् । ६ अगृह्णात्-अगृह्णीत । ७ गृह्णीयात्-गृह्णीत । ८ गृह्यात्-ग्रहीषीष्ट । ९ अग्रहीत्-अग्रहीष्ट । १० अग्रहीष्यत्-त ।

**कर्मणि**—गृह्यते । ९ अग्राहि । **णिचि**—ग्राहयति-ते । ९ अजीग्रहत्-त । **सनि**—जिघृक्षति-ते । **यङि**—जरीगृह्यते । **यङ्लुकि**—जाग्रहीति-जाग्राढि । **कृत्सु**—ग्रहीतव्यम्, ग्रहणीयम्, प्रगृह्यम्, गृह्यकः, ग्राह्यः, गृहीतः, गृह्णन्, गृह्णती, गृह्णानः, ग्रहीतुम्, ग्रहणम्, गृहीत्वा, प्रतिगृह्य, ग्राही, ग्रहः, गृहम्, फलेग्रहिः, गृहित्वा, सङ्गृह्य, गृह्णानः, ग्रहीष्यमाणः ।

॥इति क्र्यादयः ॥ ९ ॥



# अथ चुरादयः ( १० )

( १५३४ ) चुर—स्तेये। (चोरी करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | चोरयति | चोरयतः | चोरयन्ति | प्र. |
| | चोरयसि | चोरयथः | चोरयथ | म. |
| | चोरयामि | चोरयावः | चोरयामः | उ. |
| लिट् | चोरयामास | चोरयामासतुः | चारयामासुः | प्र. |
| | चोरयामासिथ | चोरयामासथुः | चोरयामास | म. |
| | चोरयामास | चोरयामासिव | चोरयामासिम | उ. |
| लुट् | चोरयिता | चोरयितारौ | चोरयितारः | प्र. |
| | चोरयितासि | चोरयितास्थः | चोरयितास्थ | म. |
| | चोरयितास्मि | चोरयितास्वः | चोरयितास्मः | उ. |
| लृट् | चोरयिष्यति | चोरयिष्यतः | चोरयिष्यन्ति | प्र. |
| | चोरयिष्यसि | चोरयिष्यथः | चोरयिष्यथ | म. |
| | चोरयिष्यामि | चोरयिष्यावः | चोरयिष्यामः | उ. |
| लोट् | चोरयतु-तात् | चोरयताम् | चोरयन्तु | प्र. |
| | चोरय-तात् | चोरयतम् | चोरयत | म. |
| | चोरयाणि | चोरयाव | चोरयाम | उ. |
| लङ् | अचोरयत् | अचोरयताम् | अचोरयन् | प्र. |
| | अचोरयः | अचोरयतम् | अचोरयत | म. |
| | अचोरयम् | अचोरयाव | अचोरयाम | उ. |
| वि. लि. | चोरयेत् | चोरयताम् | चोरयेयुः | प्र. |
| | चोरयेः | चोरयतम् | चोरयेत | म. |
| | चोरयेयम् | चोरयेव | चोरयेम | उ. |
| आ. लि. | चोर्यात् | चोर्यास्ताम् | चोर्यासुः | प्र. |
| | चोर्याः | चोर्यास्तम् | चोर्यास्त | म. |
| | चोर्यासम् | चोर्यास्व | चोर्यास्म | उ. |
| लुङ् | अचूचुरत् | अचूचुरताम् | अचूचुरन् | प्र. |
| | अचूचुरः | अचूचुरतम् | अचूचुरत | म. |
| | अचूचुरम् | अचूचुराव | अचूचुराम | उ. |
| लृङ् | अचोरयिष्यत् | अचोरयिष्यतः इत्यादि। | | |

**आत्मनेपदपक्षे**[1]—१ **प्र.** चोरयते चोरयेते चोरयन्ते। **म.** चोरयसे चोरयेथे चोरयध्वे। **उ.** चोरये चोरयावहे चोरयामहे। २ **प्र.** चोरयाञ्चक्रे चोरयाञ्चक्राते चोरयाञ्चक्रिरे। **म.** चोरयाञ्चकृषे चोरयाञ्चक्राथे चोरयाञ्चकृढ्वे। **उ.** चोरयाञ्चक्रे चोरयाञ्चकृवहे चोरयाञ्चकृमहे।

१ 'णिचश्च' इति कर्तृगामिनि क्रियाफले आत्मनेपदम्।

३ चोरयिता । ४ चोरयिष्यते । ५ प्र. चोरयताम् चोरयेताम् चोरयन्ताम् । म. चोरयस्व चोरयेथाम् चोरयध्वम् । उ. चोरयै चोरयावहै चोरयामहै । ६ अचोरयत । ७ चोरयेत । ८ चोरयिषीष्ट । ९ अचूचुरत । १० अचोरयिष्यत ।

**कर्मणि**—चोरयते। अस्माद्धातुमण्णिचि एवमेव रूपाणि। **सनि**—चुचोरयिषति-चुचोरयिषते। ण्यन्तधातूनामनेकाच्त्वान्न यङ्लुकौ। **कृत्सु**—चोरकः-रिका, चुचोरयिषकः-र्षिका, चोरयिता-त्री, चुचोरयिषिता-त्री, चोरयन्-न्ती, चुचोरषन्-न्ती, चोरयिष्यन्-न्ती-ती, चुचोरयिषिष्यन्-न्ती-ती, चोरयमाणः, चुचोरयिषमाणः, चोरयिष्यमाणः, चुचोरयिष्यमाणः, चोः[१]-चोरौ-चोरः, चोरितम्-तः, चोरः[२], चौरः, चुचोरयिषुः, चोरयितव्यम्, चुचोरयिषितव्यम्, चोरणीयम्, चोर्यम्, चुचोरयिष्यम्, इषच्चोरः-दुश्चोरः-सुचोरः, चोर्यमाणः, चोरयितुम्, चोरणा,[३] चुरा,[४] व्यथचोरी,[५] चोरणम्, चोरयित्वा, प्रचोर्य ।

**(१५३५) चिति—स्मृत्याम्**। (चिन्तन करना, स्मरण करना, याद करना, चिन्ता करना।) सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ चिन्तयति-ते। २ चिन्तयामास-से, चिन्तयाम्बभूव-वे। ३ चिन्तयितासि-से। ४ चिन्तयिष्यति-से। ५ चिन्तयतु-ताम्। ६ अचिन्तयत्-त। ७ चिन्तयेत्-त। ८ चिन्त्यात्-चिन्तयिषीष्ट। ९ अचिचिन्तत्-त। १० अचिन्तयिष्यत्-त।

**कर्मणि**—चिन्त्यते। ९ अचिन्ति। अचिन्तयिषाताम् अचिन्तिषाताम्। **सनि**—चिचिन्तयिषन्ति-ते,चिचिन्तिषति। **कृत्सु**—चिन्तनीयम्,चिन्तनम्,चिन्तकः,चिन्ती,चिन्तयिता, चिन्तितः, चिन्तना, चिन्ता, चिन्तयितुम्, चिन्तयितव्यम्, चिन्तयित्वा, सञ्चिन्त्य, चिन्त्यम्, चिन्तयन्-मानः, चिन्त्यमानः, चिन्तमिष्यन्-ष्यमाणः, कर्मणि– चिन्तयिष्यमाणः।

**(१५३६) यत्रि—सङ्कोचे**। (सङ्कोच करना, लजाना)। सकर्म.। सेट्। उभय।

१ यन्त्रयति-ते। २ यन्त्रयामास-से। ३ यन्त्रयितासि-से। ४ यन्त्रयिष्यति-ते। ५ यन्त्रयतु-ताम्। ६ अयन्त्रयत्-त। ७ यन्त्रयेत्-त। ८ यन्त्रयात्-यन्त्रयिषीष्ट। ९ अयन्त्रयत्-त। १० अयन्त्रयिष्यत्-त।

**सनि**—यियन्त्रयिषति-ते। **कृत्सु**—यन्त्रणीयम्। यन्त्रणम्, यन्त्रः, यन्त्रकः, यन्त्रयिता, यन्त्रितः,क्तिन् नास्ति,युच्-यन्त्रणा। यन्त्रयितव्यम्,यन्त्रःयितुम्,यन्त्रयित्वा,संयन्त्रा,यन्त्रणम्, यन्त्रयन्, यन्त्रयमाणः, यन्त्रयिष्यन्-ष्यमाणः, **कर्मणि**—यन्त्रिष्यमाणः।

१ णिनिमित्तके लघूपधगुणे पदान्तरेफस्य विसर्गः।
२ चोर एव चौरः। 'प्रज्ञादिभ्यश्च' (५-४-३८) इति स्वार्थेऽण् प्रत्ययः। पचादिषु (३-१-१३४) 'चोरट्' इति टित्करणेन पाठात् स्त्रियां ङीप्।
३ 'ण्यासश्रन्थो युच्' (३-३-१०७) इति युच्।
४ 'छत्रादिभ्यो णः' (४-४-६२) इत्यत्र (गणे) 'चुरा' इति पाठात् अङ् गुणाभावः णिलोपश्च। चुरा शीलमस्या इत्यर्थे स्त्रियां चौरी। 'ताच्छीलिकेऽपि णेऽण् कृतं कार्यं भवति' (परिभाषा ८८) इति वचनात् ङीष्।
५ 'कर्मव्यतीहारे णच् स्त्रियाम्' (३-३-४३) इति णच्। णचस्त्रियामञ्। (५-४-१४) इति अञ्। ङीष्। 'न कर्मव्यतिहारे। (७-३-६) इति ऐजागमनिषेधः।

**(१५३७) स्फुडि—परिहासे**। स्फुटि इत्यपि। (विनोद करना, हंसी करना, ठट्ठा करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। स्फुडयति-ते।

**(१५३८) लक्ष—दर्शनाङ्कनयोः**। (देखना, चिह्न करना, संकेत लगाना, तारतम्य देखना, विवेचन करना)। **उप**—एक अर्थ के कहने से दूसरे अर्थ का बोध करना। **सम्**—अच्छी तरह जानना। सकर्म.। सेट्। उभय. लक्ष्यति-ते।

**कर्मणि**—लक्ष्यते। ९ अलक्षि। **सनि**—लिलक्षयिषति। **कृत्सु**—लक्षकः-क्षिका, लिलयिषकः-षिका, लक्षयिता-त्री, लिलयिषिता-त्री, ल्युटि-लक्षणम्[१], यति—लक्ष्यम्, लाक्षणिकः, लक्ष्मीः,[२] लक्ष्मणः,[३] उपलक्ष्य।

**(१५३९) कुद्रि—अनृतभाषणे**। कुद्द इत्येके। कुडि इत्यपरे। (झूठ बोलना)। सकर्म.। सेट्। उभय। इदित्। कुन्द्रयति-ते, कुन्द्रति-ते, अचुकुन्द्रत्-त।

**(१५४०) लड—उपसेवायाम्**। (पालन करना, चाहना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। लाडयति-ते।

**(१५४१) मिदि—स्नेहने**। (स्निग्ध होना, पिघलना, पोतना, प्रीति करना, नरम होना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। मिन्दयति-ते।

**(१५४२) ओलडि—उत्क्षेपणे**। ओकारे धात्ववयव इत्येके। नेत्यपरे। उलडि इत्यन्ये। (ऊपर को फेंकना, ऊपर उड़ाना)। सक.। सेट्। उभय.। लण्डयति-ते। लण्डम् = पुरीषम्। अयं भाषार्थेऽपि।

**(१५४३) जल—अपवारणे**। लज इत्येके। (ढाँकना, निवारण करना, जाल से ढांकना)। सक.। सेट्। उभय.। जालयति-ते। जालितः। जालम्।

**(१५४४) पीड—अवगाहने**। (दुःख देना, पीडा करना, चेताना)। सक.। सेट्। उभय.।

१ पीडयति-ते। २ पीडयाञ्चकार-चक्रे। ३ पीडयिता। ४ पीडयिष्यति-ते। ५ पीडयतु-ताम्। ६ अपीडयत्-त। ७ पीडयेत्-त। ८ पीडयात्-पीडयिषीष्ठ। ९ अपीपिडत्[४]-अपिपीडत्-त। १० अपीडयिष्यत्-त।

**कर्मणि**—पीडयते। ९ अपीडि। **सनि**—पिपीडयिषति-ते। **आ**—भूषणे आपीडयति। **कृत्सु**—पीडनीयम्, पीडनम्, पीडः, पीडकः, पीडी, पीडयिता, पीडितः, पीडा[५], णिजन्तस्य–पीडना, पीडयितुम्, पीडयितव्यम्, पीडयित्वा, सम्पीड्य, पीड्यः, पीडयन्-मानः, पीड्यमानः,

१ लक्ष्यतेऽनेनेति लक्षणम्। रेखा, तिलकाद्यङ्कनम्, व्याकरणदिशास्त्रञ्च।

२ 'लक्षेर्मुट् च' (द.उ. १-८४) इति ईप्रत्ययौ मुडागमश्च।

३ 'लक्ष्मया अच्च' (ग.सू. ५-२-१००) इति मत्वर्थीये नकारप्रत्यये णत्वे ईकारस्याकारे 'लक्ष्मणः' इति रूपम्। लक्ष्मणः = रामस्यानुजः।

४ 'भ्राजभासे–' त्यादिना चङ्युपधाह्रस्वविकल्पः।

५ युचं बाधित्वा भिदादिपाठात् (३-४-४९) अङ्।

पीडयिष्यन्-ष्यमाणः, **कर्मणि**—पीडयिष्यमाणः, जनपीडः[१], मुष्टिपीडम्, नयोपपीडम्, तिलपीडकः,[२] बाहूपपीडम् ।

**( १५४५ ) नट—अवस्यन्दने** । (दिखाना) । सकर्म. । सेट् । उभय. । नाटयति-ते ।

**( १५४६ ) श्रथ—प्रयत्ने** । प्रस्थान इत्येके । (प्रयत्न करना, जाना) । सक. । सेट् । उभय. । श्राथयति-ते ।

**( १५४७ ) बध—संयमने** । बन्ध इति चान्द्रः । (नियन्त्रित करना । बांधना) । सक. । सेट् । उभय ॥ बाधयति-ते ।

**( १५४८ ) पॄ—पूरणे** । (पूर्ण करना, मारना) । सक. । सेट् । उभय. । पारयति-ते ।

**( १५४९ ) ऊर्ज—बलप्राणनयोः** । (शक्तिमान् होना, 'पराक्रमी' होना, जीना, जिलाना) । सक. । सेट् । उभय. । ऊर्जयति-ते । ९ और्जिजत्-त । **सनि**—ऊर्जिजयिषति-ते । ऊर्क् । ऊर्जितम् ।

**( १५५० ) पक्ष—परिग्रहे** । चूर्ण प्रेषणे । (ग्रहण करना, लेना, एक पक्ष का स्वीकार करना, एक ओर होना ।) सक. । सेट् । उभ. । पक्षयति-ते ।

**कृत्सु**—पक्षकः-क्षिका, पक्षयन्-न्ती, पक्षयमाणः, सुपक्[३]-सुपक्षौ-सुपक्षः, पक्षितम्-तः, पक्षः, पिपक्षयिषुः, पक्षयितव्यम्, पक्ष्यम्, पक्षणा, पक्षणीयम्, पक्षयितुम्, पक्षणम्, पक्षयित्वा, संपक्ष्य ।

**( १५५१-५२ ) वर्ण-चूर्ण—प्रेरणे** । वर्ण वर्णन इत्येके । (आज्ञा करना, प्रेरणा करना, रंग देना, रंगना, खींचना, संकोच करना) । सक. । सेट् । उभय. । वर्णयति-ते । चूर्णयति-ते ।

**( १५५३ ) प्रथ—प्रख्याने** । (विस्तार करना, फैलाना, जावना) । सकर्म. । सेट् । उभय. । प्राथयति-ते । प्राथकः-थिका । इत्यादीनि सर्वाणि रूपाणि चौरादिक कलापयतिवत् ज्ञेयानि । 'नान्येमितोऽहेतौ' (ग.सू. भ्वादौ) इति सम्भवद्धेतुमण्णिचां चुरादिणिचि मित्त्वनिषेधात् घटादिकार्यमत्र नेति ज्ञेयम् । प्राथितः[४] ।

**( १५५४ ) पृथ—प्रक्षेपे** । (फेंकना, उड़ाना, प्रेरणा करना, भेजना) । सकर्म. । सेट् । उभय. ।

१ पर्थयति-ते । २ पर्थयाञ्चकार-चक्रे । ३ पर्थयिता । ४ पर्थयिष्यति । ५ पर्थयतु । ६ अपर्थयत् । ७ पर्थयिष्यति । ८ पर्थ्यात् । ९ **प्र.** अपीपृथत् अपीपृथताम् अपीपृथन् । **म.** अपीपृथः । **उ.** अपीपृथम् । **पक्षे**—अपपर्थत् अपपर्थताम् अपपर्थन् इत्यादि । १० अपर्थयिष्यत् । पथितः ।

---

१ 'कर्मण्यण्' (३-२-१) इति अण् प्रत्यये रूपम् । जलान् । आ = समन्तात् पीडयतीति विग्रहः ।

२ पीडयतीति पीडकः । तिलस्य पीडकः पिलतीडकः तैलाविष्करणार्थे दारुविशेषः ।

३ ण्यन्तेऽत्र क्विपि संयोगान्तलोप एव । न तु संयोगदिलोपः । तेन रूपमेवम् ।

४ अप्राथितो वजगृहेऽपि च पर्थितोऽभूत् । (धातु. का. ३/१५)

( १५५५ ) **षम्ब—सम्बन्धने** । (संयोग करना, मिलाप करना, जोड़ना) । सकर्म. । सेट् । उभय. ।

१ सम्बयति-ते । ९ प्र. अससम्बत् अससम्बताम् असम्बयन् । म. अससम्बः असम्बतम् असम्बत । उ. अससम्बम् अससम्बाव अससम्बाम ।

**कृत्सु**—सम्बकः-म्बिका । सम्बयिता-त्री, सम्बयिष्यन्-न्ती-ती, सम्बयमानः, सम्बयिष्यमाणः, सम्बितुम्, सम्बयितव्यम्, सम्बनीयम्, सम्बयितुम्, सम्बनम्, सम्बयित्वा, विसम्ब्य ।

( १५५६ ) **शम्ब—सम्बन्धने** । (ढेर करना, बटोरना, एकत्र करना, जोड़ना) । सकर्म. । सेट् । उभय. । शम्बयति-ते । इत्यादि ।

( १५५७ ) **भक्ष—अदने** । (भोजन करना, खाना) । सकर्म. । सेट् । उभय. ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | भक्षयति | भक्षयतः | भक्षयन्ति | प्र. |
| | भक्षयसि | भक्षयथः | भक्षयथ | म. |
| | भक्षयामि | भक्षयावः | भक्षयामः | उ. |
| लिट् | भक्षयाञ्चकार | भक्षयाञ्चक्रतुः | भक्षयाञ्चक्रुः | प्र. |
| | भक्षयाञ्चकर्थ | भक्षयाञ्चक्रथुः | भक्षयाञ्चक्रुः | म. |
| | भक्षयाञ्चकार-चकर | भक्षयाञ्चकृव | भक्षयाञ्चकृम | उ. |
| लुट् | भक्षयिता | भक्षयितारौ | भक्षयितारः | प्र. |
| | भक्षयितासि | भक्षयितास्थः | भक्षयितास्थ | म. |
| | भक्षयितास्मि | भक्षयितास्वः | भक्षयितास्मः | उ. |
| लृट् | भक्षयिष्यति | भक्षयिष्यतः | भक्षयिष्यन्ति | प्र. |
| | भक्षयिष्यसि | भक्षयिष्यथः | भक्षयिष्यथ | म. |
| | भक्षयिष्यामि | भक्षयिष्यावः | भक्षयिष्यामः | उ. |
| लोट् | भक्षयतु-तात् | भक्षयताम् | भक्षयन्तु | प्र. |
| | भक्षय-तात् | भक्षयतम् | भक्षयत | म. |
| | भक्षयाणि | भक्षयाव | भक्षयाम | उ. |
| लङ् | अभक्षयत् | अभक्षयताम् | अभक्षयन् | प्र. |
| | अभक्षयः | अभक्षयतम् | अभक्षयत | म. |
| | अभक्षयम् | अभक्षयाव | अभक्षयाम | उ. |
| वि. लि. | भक्षयेत् | भक्षयेताम् | भक्षयेयुः | प्र. |
| | भक्षेयेः | भक्षयेतम् | भक्षेयत | म. |
| | भक्षयेम् | भक्षयेव | भक्षयेम | उ. |
| आ. लि. | भक्ष्यात् | भक्ष्यास्ताम् | भक्ष्यासुः | प्र. |
| | भक्ष्याः | भक्ष्यास्तम् | भक्ष्यास्त | म. |
| | भक्ष्यासम् | भक्ष्यास्व | भक्ष्यास्म | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुङ् | अबभक्षत् | अबभक्षताम् | अबभक्षन् | प्र. |
| | अबभक्षः | अबभक्षतम् | अबभक्षत | म. |
| | अबभक्षम् | अबभक्षाव | अबभक्षाम | उ. |
| लृङ् | अबभक्षयिष्यत् | अबभक्षयिष्यताम् | अबभक्षयिष्यन् | प्र. |
| | अबभक्षयिष्यः | अबभक्षयिष्यतम् | अबभक्षयिष्यत | म. |
| | अबभक्षयिष्यम् | अबभक्षयिष्याव | अबभक्षयिष्याम | उ. |

**सनि**—बिभक्षयिषति-ते। **कृत्सु**—भक्षकः-क्षिका, भक्षयिता-त्री, भक्षयन्[१]-न्ती, भक्षयिष्यन्-न्ती-ती, भक्षयमाणः, भक्षयिष्यमाणः, भक्षितम्-तः, भक्षयितव्यम्, भक्षणीयम्, भक्ष्यम्, भक्ष्यमाणः, भक्षणम्, भक्षयित्वा, संभक्ष्य, मांसभक्षः[२]-मांसभक्षाः, इक्षुभक्षिका,[३] भक्[४]-भग्-भक्षौ-भक्षः।

**( १५५८ ) कुट्ट—छेदनभर्त्सनयोः**। (कतरना, निन्दा कना, दोष लगाना, रगड़ना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। कुट्टयति-ते। ९ अचुकुट्टत्-त।

**सनि**—चुकुट्टयिषति-ते। **कृत्सु**—कुट्टकः-ट्टिका, कुट्टयिता-त्री, कुट्टयन्-न्ती-ती, कुट्टयमानः, कुट्टयिष्यमाणः, कुट्-कुट्टौ-कुट्टः, कुट्टितम्-तः, कुट्टः, कुट्टाकः[५], कुट्टाकी[६], कुट्टयितव्यम्, कुट्टनीयम्, कुट्यम्, कुट्यमानः, कुट्टयितुम्, कुट्टनम्, कुट्टयित्वा, संकुट्य।

**( १५५९-६० ) पुट्ट-चुट्ट—अल्पीभावे**। (कम होना, अल्प होना, बटोरना)। अकर्म.। सेट्। उभय.। पुट्टयति-ते-चुट्टयति-ते।

**( १५६१-६२ ) अट्ट-षुट्ट—अनादरे**। (अनादर करना, अपमान करना।) सकर्म.। सेट्। उभय.। अट्टयति-ते। ९. अट्टिटत्-त। षुट्टयति-ते।

**( १५६३ ) लुण्ट—स्तेये**। लुण्ठ इत्येके। (चुराना, लूटना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ लुण्टयति। २ लण्टयाञ्चकार। ३ लुण्टयिता। ४ लुण्टयिष्यति। ५ लुण्टयतु। ६ अलुण्टयत्। ७ लुण्टयेत्। ८ लुण्ट्यात्। ९ अलुलुण्टत्। १० अलुण्टयिष्यत्।

**कृत्सु**—लुण्टकः-लुण्टयिता-त्री, लुण्टयितव्यम्, लुण्टनीयम्, लुण्टनम्, लुण्टयित्वा, लुण्टयितुम् इत्यादि।

---

१ 'निगरणचलनार्थेभ्यः–' (१-३-८७) इति ण्यन्तादस्य नित्यं परस्मैपदमेव। अत्रास्य पुनः हेतुमण्णिचि, 'गतिबुद्धिप्रत्यवसानार्थ–' (१-४-५२) इति प्रयोज्यस्य कर्मत्वम्। 'भक्षेरहिंसार्थस्य' (वा. १-४-५२) इति वार्तिकेन निषिध्यते। हिंसायां तु 'भक्षयति यवान् बलिवर्दान्' इति भाष्यम्। अत्र भक्षयतिः 'सर्वे सचेतना भावाः' इति न्यायेन हिंसायाम् वर्तते। यवानां सचेतनत्वात् हिंस्यत्वम्।

२ 'शीलिकामिभक्ष्याचरिभ्यो णः' (वा. ३-२-१) इति कर्मण्युपपदे णप्रत्ययः। मांसं भक्षयतीति मांसभक्षः। स्त्रियां णप्रत्ययान्तत्वेन टापि मांसभक्षा इति रूपम्। 'स्तुतिशीला हरिकामा फलभक्षा कानने व्रताचारा' इति प्र. सर्वस्वे।

३ 'पर्यायार्हर्णोत्पत्तिषु–' (३-३-१११) इत्यनेन अर्हार्थे ण्वुच् प्रत्ययः। इक्षुभक्षणमर्हति इति इक्षुभक्षिका।

४ ण्यन्तादस्मात् क्विपि, संयोगान्तलोपे जश्त्वचर्त्वयो रूपमेवम्।

५ 'जल्पभिक्षलुण्ठकुट्टवृङः षाकन्' (३-२-१५५) इति ताच्छीलिकः षाकन् प्रत्ययः।

६ स्त्रियां षित्वात् 'षिद् गौरादिभ्यश्च' (४-१-४१) इति ङीष् भवति।

**( १५६४-६५ ) शठ-श्वठ—असंस्कारगत्योः** । (ठीक न बनाना, आधा ही छोड़ना, असंस्कृत रखना, जाना, चलना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ शाठयति-ते। २ शाठयाञ्चकार-चक्रे। ३ शाठयतु। ४ शाठयिष्यति। ५ शाठयतु। ६ अशाठयत्। ७ शाठयेत्। ८ शाठ्येत्। ९ अशशाठत्। १० अशाठयिष्यत्। एवं १ श्वाठयति-ते। २ श्वाठयाञ्चकार। इत्यादि।

**( १५६६-६७ ) तुजि-पिजि—हिंसाबलादाननिकेतनेषु**। (मार डालना, बलवान् होना, ग्रहण करना, रहना, वसति करना)। सकर्म.। सेट्। उभय. ।

१ तुञ्जयति-ते। २ तुञ्जयाञ्चकार-चक्रे। ३ तुञ्जयिता। ४ तुञ्जयिष्यति। ५ तुञ्जयतु। ६ अतुञ्जयत्। ७ तुञ्जयेत्। ८ तुञ्ज्यात्। ९ **प्र.** अतुतुञ्जत् अतुतुञ्जताम् अतुतुञ्जन्। **म.** अतुतुञ्जः अतुतुञ्जतम् अतुतुञ्जत। उ. अतुतुञ्जम् अतुतुञ्जाव अतुतुञ्जाम। १० अतुञ्जयिष्यत्।

**कृत्सु**—तुञ्जकः-ञ्जिका, तुञ्जयिता-त्री, तुञ्जयितव्यम्, तुञ्जनीयम्, तुञ्जयित्वा, तुञ्जयितुम्, तुञ्जनम्, घञि-तुञ्जः। वितुञ्ज्य, तुञ्जयमानः, तुञ्जयिष्यमाणः। तुञ्जयन्-न्ती, तुञ्जयिष्यन्-न्ती-ती। एवं पिञ्जयति-ते। पिञ्जकः-ञ्जिका, पिञ्जयित्वा, पिञ्जयितुम्। भावे घञर्थेऽचि विपिञ्जः।

**( १५६८ ) पिस—गतौ**। (जाना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ पेसयति-ते। २ पेसयाञ्चकार-चक्रे। ३ पेसयिता। ४ पेसयिष्यति। ५ पेसयतु। ६ अपेसयत्। इत्यादि। संपेसयन्।

**( १५६९ ) षान्त्व ( सान्त्व ) —साम प्रयोगे**। (सान्त्वना देना, समाधान करना, विवेक की बाते करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ सान्त्वयति-ते। २ सान्त्वयाञ्चकार-चक्रे। ३ सान्त्वयिता। ४ स्वान्त्वयिष्यति। ५ सान्त्वयतु। ६ असान्त्वयत्। ७ सान्त्वयेत्। ८ सान्त्व्यात्। ९ अससान्त्वत्-त। १० असान्त्वयिष्यत्-त।

**सनि**—सिषान्त्वयिषति-ते। **कृत्सु**—सान्त्वकः-न्त्विका, सान्त्वयिता-त्री, सान्त्वयमाणः, सान्त्वितः, सान्त्वयितव्यम्, सान्त्वयितुम्, स्वान्त्वनम्, सान्त्वयित्वा, प्रस्वान्त्व्य।

**( १५७०-७१ ) श्वल्क-वल्क—परिभाषणे**। (बोलना, भाषण करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। श्वल्कयति-ते वल्कयति-ते। इत्यादि।

**कृत्सु**—श्वल्कनम् सुश्वल्कनाः सुमधुरप्रिय वल्कनाभिः-(धा.का. ३।१७)। वल्ककः-ल्किका, वल्वयिता-त्री, निष्ठायां वल्कितं-तः-तवान्, वल्कलनम् = वृक्षत्वक्।

**( १५७२ ) ष्णिह ( स्निह ) —स्नेहने**। (स्नेह करना)। अकर्म। सेट्। उभय.।

१ **प्र.** स्नेहयति-ते स्नेहयतः स्नेहयन्ति। **म.** स्नेहयसि स्नेहयथः स्नेहयथ। **उ.** स्नेहयामि स्नेहयावः स्नेहयामः। २ स्नेहयाञ्चकार-चक्रे। ३ स्नेहयिता। ४ स्नेहयिष्यति। ५ स्नेहयतु। ६ अस्नेहयत्। ७ **प्र.** स्नेहयेत् स्नेहयेताम् स्नेहयुयुः। **म.** स्नेहय स्नेहयतम् स्नेहयत। **उ.**

स्नेहयानि स्नेहयाव स्नेहयाम । ८ स्नेह्यात् । ९ **प्र.** असिष्णिहत् असिष्णिहताम् असिष्णिहन् । म. असिष्णिहः असिष्णिहतम् असिष्णिहत । **उ.** असिष्णिहम् असिष्णिहाव असिष्णिहाम । १० अस्नेहयिष्यत् ।

(१५७३) **स्मिट—अनादरे** । (अनादर करना, अपमान करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ स्मेटयति-ते । २ स्मेटयाञ्चकार-चक्रे । ३ स्मेटयिता । ४ स्मेटयिष्यति । ५ स्मेटयतु । ६ अस्मेटयत् । ७ स्मेटयेत् । ८ स्मेट्यात् । ९ **प्र.** असिस्मिटत् असिस्मिटताम् असिस्मिटन् । **म.** असिस्मिटः असिस्मिटतम् असिस्मिटत । उ. असिस्टिम् असिस्मिटाव असिस्मिटाम । १० अस्मेटयिष्यत् ।

**कृत्सु**—स्मेटकः-टिका, स्मेटयिता-त्री, स्मेटयमानः, स्मेटयिष्यमाणः, स्मेटितम्-तः, स्मटेयः, स्मेटयितव्यम्, स्मेटनीयम्, स्मेट्यमानः, स्मेटयिष्यन्, स्मेटयितुम्, स्मेटनम्, प्रस्मेट्य ।

(१५७४) **श्लिष—श्लेषणे** । आलिङ्गने च । (मिलाप करना, आलिङ्गन करना, गले लगाना, सटे रहना, चिपके रहना)। सक.। सेट्। उभय.।

१ श्लेषयति-ते । २ श्लेषयाञ्चकार-चक्रे । ३ श्लेषयिता । ४ श्लेषयिष्यति । ५ श्लेषयतु । ६ अश्लेषयत् । ७ श्लेषयेत् । ८ श्लेष्यात् । ९ **प्र.** अशिश्लिषत् अशिश्लिषताम् अशिश्लिषन् । **म.** अशिश्लिषः अश्लिश्लिषतम् अशिश्लिषत । **उ.** अशिश्लिषम् अशिश्लिषाव अशिश्लिषाम । १० अश्लेषयिष्यत् ।

**कृत्सु**—श्लेषकः-षिका, श्लेषयिता-त्री, श्लेषयन्-न्ती, श्लेषयिष्यन्-न्ती-ती, श्लेषयमानः, श्लेषयिष्यमाणः, श्लेषितः-तम्, श्लेषयितव्यम्, श्लेषणीयम्, श्लेषयितुम्, श्लेषनम्, श्लेषयित्वा, प्रश्लेष्यः ।

(१५७५) **पथि—गतौ** । (जाना)। सक.। सेट्। उभय.।

१ पन्थयति-ते । २ पन्थयाञ्चकारः-चक्रे । ३ पन्थयिता । ४ पन्थयिष्यति । ५ पन्थयतु । ६ अपन्थयत् । ७ पन्थयेत् । ८ पन्थ्यात् । ९ **प्र.** अपपन्थत् अपपन्थताम् अपपन्थन् । **म.** अपपन्थः अपपन्थतम् अपपन्थत । **उ.** अपपन्थम् अपपन्थाव अपपन्थाम । १० अपन्थयिष्यत् ।

**कृत्सु**—पन्थकः-पन्थिका, पन्थयितव्यम्, पन्थनीयम्, पन्थयिता-त्री, पन्थयिष्यन्-न्ती, पन्थयित्वा, प्रपन्थ्य, पन्थयितुम्, पन्थनम् ।

(१५७६) **पिच्छ—कुट्टने** । (कूटना, कतरना, चीरना, बहुत दुःख देना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ पिच्छयति-ते । २ पिच्छयाञ्चकार-चक्रे । ३ पिच्छयिता । ४ पिच्छयिष्यति । ५ पिच्छयतु । ६ अपिच्छयत् । ७ पिच्छयेत् । ८ पिच्छ्यात् । ९ **प्र.** अपिपिच्छत् अपिपिच्छताम् अपिपिंच्छन् । **म.** अपिपिच्छः अपिपिच्छतम् अपिपिच्छत । **उ.** अपिपिच्छम् अपिपिच्छाव अपिपिच्छाम । १० अपिच्छयिष्यत् ।

**कृत्सु**—पिच्छकः-च्छिका, लुटि-पिच्छनम्, पिच्छयिता-त्री, पिच्छयन्-न्ती-ती, पिच्छयमानः, पिच्छयिष्यमाणः, पिच्छयितव्यम्, पिच्छनीयम्, पिच्छयन्, पिच्छयितुम्, पिच्छयित्वा।

**( १५७७ ) छदि—सम्वरणे**। (ढकना, आच्छादन करना, लपेटना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ छन्दयति-ते। २ छन्दयाञ्चकार-चक्रे। ३ छन्दयिता। ४ छन्दयिष्यति। ५ छन्दयतु। ६ अछन्दयत्। ७ छन्दयेत्। ८ छन्द्यात्। ९ अचच्छन्दत्-त। १० अछन्दयिष्यत्।

**कृत्सु**—छन्दकः-न्दिका, छन्दन्-न्ती, छन्दयिता-त्री, छन्दयिष्यन्-न्ती-ती, छन्दयमानः, छन्दयिष्यमाणः, छन्दितम्, छन्दयितव्यम्, छन्दनीयम्, छन्दयितुम्, छन्दनम्, छन्दयित्वा, प्रछन्द्य।

**( १५७८ ) श्रण—दाने**। (देना, दान करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। प्रायेणायं विपूर्वः।

१ श्राणयति-ते। २ श्राणयाञ्चकार-चक्रे। ३ श्राणयिता। ४ श्राणयिष्यति। ५ श्राणयतु। ६ अश्राणयत्। ७ श्राणयेत्। ८ श्राण्यात्। ९ अशिश्रणत्-त। १० अश्राणयिष्यत्।

**सनि**—शिश्राणयिष्यति-ते। **कृत्सु**—विश्राण्य,[1] विश्राणितम्,[2] यच्-विश्राणम्,[3] विश्राणायितुम्, श्राणयित्वा, श्राणकः, विश्राणिका, विश्राणयिता-त्री, शिश्राणयिषकः-षिका, विश्राणयन्-न्ती, विश्राणयिष्यन्-न्ती-ती, विश्राणयमानः, विश्राणयिष्यमाणः, विश्राणितम्, विश्राणयितव्यम्, विश्राणनीयम्, विश्राणः, विश्राणयितुम्।

**( १५७९ ) तड—आघाते**। (मारना, ताड़न करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ ताडयति-ते। २ ताडयाञ्चकार-चक्रे। ३ ताडयिता। ४ ताडयिष्यति। ५ ताडयतु। ६ अताडयत्। ७ ताडयेत्। ८ ताड्यात्। ९ अतीतडत्-त। १० अताडयिष्यत्। **सनि**—तिताडयिषति-ते।

**कृत्सु**—ताडकः-डिका, ताडयिता-त्री, ताडयन्-न्ती, ताडयिष्यन्-न्ती-ती, ताडयित्वा, सन्ताड्य, ताडयितुम्, ताडनम्, ताडयितव्यम्, ताड्यमानः, ताडितः-तम्-तवान्, सन्ताडनम्, सन्ताडितः, तण्डुलः,[4] तडागः।

**( १५८० ) खड—भेदने**। (टुकड़े करना, खण्डित करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ खाडयति-ते। २ खाडयाञ्चकार-चक्रे। ३ खाडयिता। ४ खाडयिष्यति। ५ खाडयतु।

---

१ 'वेश्मानि रामः परिवर्हवन्ति विश्राण्य सौहार्यनिधिः सुहृद्भ्यः' (रघुवंशे १४/१५)

२ 'विमथ्य विश्राणितमेतदीयं द्विषा देवि मरुत्वदाद्या'। (याद. १८/१०१)

३ 'कथं न शक्नोऽनुनयो महर्षेः विश्राणनाच्चान्यपयस्विनीनाम्।' (रघु. २/५४)

४ औणादिके (१०-१७) उल प्रत्यये नुमागमः, ह्रस्वश्च निपात्यते। तण्डुलः = व्रीहिसारः। ह्रस्वश्व निपात्यते। ताड्यते इति तण्डुलः। संज्ञाशब्देषु केवलं व्युत्पत्तिमात्रं प्रदर्श्यते। नावयवार्थेऽनिनिवेशः कार्यः।

६ अखाडयत्। ७ खाडयेत्। ८ खाड्यात्। ९ अचीखडत्-त। १० अखाडयिष्यत्।

**कृत्सु**—खाडक-डिका, खाडनम्, खाडयित्वा, खाडयितुम्, खाडयितव्यम्, खाडनीयम्, खड्गः।

**(१५८१) खडि—भेदने**। (टुकड़े करना, खण्डित करना, काटना, विभाग करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। इदित्।

१ खण्डयति-ते। २ खण्डयाञ्चकार-चक्रे। ३ खण्डयिता। ४ खण्डयिष्यति। ५ खण्डयतु। ६ अखण्डयत्। ७ खण्डयेत्। ८ खण्ड्यात्। ९ अचखण्डत्-ते। खण्डः = शकलम्।

**(१५८२) कुडि—भेदने**। (भेदन करना, टुकड़े करना, काटना, विभाग करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ कुण्डयति-ते। २ कुण्डयाञ्चकार-चक्रे। ३ कुण्डयिता। ४ कुण्डयिष्यति। ५ कुण्डयतु। ६ अकुण्डयत्-त। ७ कुण्डयेत्। ८ कुण्ड्यात्। ९ अचुकुण्डत्-त। १० अकुण्डयिष्यत्।

**(१५८३) कुडि—रक्षणे**। (रक्षा करना, संभालना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। कुण्डयति-ते (१५८२) वत्।

**(१५८४) गुडि—वेष्टने**। रक्षणे इत्यके। (घेरना, घेर लेना, पीसना, चूर्ण करना, संरक्षण करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ गुण्डयति-ते। २ गुण्डयाञ्चकार-चक्रे। ३ गुण्डयिता। ४ गुण्डयिष्यति-ते। ५ गुण्डयतु। ६ अगुण्डयत्। ७ गुण्डयेत्। ८ गुण्ड्यात्। ९ **प्र.** अजुगुण्डत् अजुगुण्डताम् अजुगुण्डन्। **म.** अजुगुण्डः अजुगुण्डतम् अजुगुण्डत। **उ.** अजुगुण्डम् अजुगुण्डाव अजुगुण्डामः। १० अगुण्डयिष्यत्।

**कृत्सु**—गुण्डकः-ण्डिका, गुण्डयिता-त्री, गुण्डयन्, गुण्डयिष्यन्-न्ती, गुण्डयित्वा, प्रगुण्ड्य, गुण्डयितुम्, गुण्डयितव्यम्, गुण्डनम्, गुण्डितः-तम्-तवान्।

**(१५८५) खुडि—खण्डने**। (टुकड़े करना, चीरना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ खुण्डयति-ते। २ खुण्डयाञ्चक्रे-चकार। ३ खुण्डयिता। ४ खुण्डयिष्यति। ५ खुण्डयतु। ६ अखुण्डयत्। ७ खुण्डयेत्। ८ खुण्ड्यात्। ९ अचुखुण्डत्-त। १० अखुण्डयिष्यत्।

**(१५८६) वटि—विभाजने**। (अलग करना, पृथक् करना, हिस्सा करना, बाँटना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ वण्टयति-ते। २ वण्टयाञ्चकार-चक्रे। ३ वण्टयिता। ४ वण्डयिष्यति। ५ वण्टयतु। ६ अवण्डयत्-त। ७ वण्टयेत्। ८ वण्ट्यात्। ९ **प्र.** अववण्टत्-त। अववण्टताम् अववण्टन्।

म. अववण्टः अववण्टतम् अववण्टत। उ. अववण्टम् अववण्टाव अववष्टाम। १० अवण्टयिष्यत्।

**कृत्सु**—वण्टकः-ण्टिका, वण्टयिता-त्री, वण्टयन्-न्ती, वण्टन्-न्ती, वण्टमानः, वण्टयमानः, वण्टिष्यमाणः, वण्टितम्-तः-तवान्, वण्टयितव्यम्, वण्टयितुम्, वण्टयित्वा, प्रवण्ट्य।

**(१५८७) मडि—भूषायां हर्षे च**। (अलङ्कृत करना, आनन्दित होना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ मण्डयति-ते। २ मण्डयाञ्चकार-चक्रे। ३ **प्र.** मण्डयिता मण्डयितारौ मण्डयितारः। **म.** मण्डयितासि मण्डयितास्थः मण्डयितास्थ। **उ.** मण्डयितास्मि मण्डयितास्वः मण्डयितास्मः। ४ **प्र.** मण्डयिष्यति मण्डयिष्यतः मण्डयिष्यन्ति। **म.** मण्डयिष्यसि मण्डयिष्यथः मण्डियिष्यथ। **उ.** मण्डयिष्यामि मण्डयिष्यावः मण्डयिष्यामः। ५ **प्र.** मण्डतु-मण्डयतात् मण्डयताम् मण्डयन्तु। **म.** मण्डय-मण्डयतात् मण्डयतम् मण्डयत। **उ.** मण्डयानि मण्ड्याव मण्डयाम। ६ **प्र.** अमण्डयत् अमण्डयताम् अमण्डयन्। **म.** अमण्डयः अमण्डयतम् अमण्डयत। **उ.** अमण्डयम् अमण्डयाव अमण्डयाम। ७ **प्र.** मण्डयेत् मण्डयेताम् मण्डयेयुः। **म.** मण्डयेः मण्डयेतम् मण्डयेत। **उ.** मण्डयेयम् मण्डयेव मण्डयेम। ८ **प्र.** मण्ड्यात् मण्ड्यास्ताम् मण्ड्यासुः। **म.** मण्ड्याः मण्ड्यास्तम् मण्ड्यास्त। **उ.** मण्ड्यासम् मण्ड्यास्व मण्ड्यास्म। ९ **प्र.** अममण्डत् अममण्डताम् अममण्डन्। **म.** अममण्डः अममण्डतम् अममण्डत। **उ.** अममण्डम् अवमण्डाव अवमण्डाम। १० **प्र.** अमण्डयिष्यत्। **म.** अमण्डयिष्यः। **उ.** अमण्डयिष्यम्।

**कृत्सु**—मण्डकः-ण्डिका, मण्डयिता-त्री, मण्डयित्वा, विमण्ड्य, मण्डयितुम्, मण्डयितव्यम्, मण्डनम्, मण्डयिष्यन्-न्ती, मण्डयमानः, मण्डयिष्यमाणः।

**(१५८८) भडि—कल्याणे**। (शुभ कार्य करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। इदित् करणात् णिचो वैकल्पिकत्वम्।

१ भण्डयति-ते। २ भण्डयाञ्चकार-चक्रे। ३ भण्डयिता। ४ भण्डयिष्यति। ५ भण्डयतु-भण्डयतात्। ६ अभण्डयत्-त। ७ भण्डयेत्। ८ भण्ड्यात्। ९ **प्र.** अबभण्डत् अबभण्डताम् अबभण्डन्। **म.** अबभण्डः अबभण्डतम् अबभण्डत। **उ.** अबभण्डम् अबभण्डाव अबभण्डाम। १० अभण्डयिष्यत्।

**कृत्सु**—भण्डकः-ण्डिका, भण्डयित्वा, प्रभण्ड्य, भण्डयितुम्, भण्डयितव्यम्, भण्डनीयम्, भण्डितः-तम्-तवान्, भण्डयन्-न्ती, भण्डयमानः, भण्डयिष्यमाणः, भण्डनः,[1] भाण्डम्,[2] भण्डिलः[3]।

**(१५८९) छर्द—वमने**। (वमन करना)। अकर्म.। सेट्। उभय.।

---

१ अनुदात्तेतश्च हलादेः (३-२-१४९) इति ताच्छीलिके युचि रूपमेवम्।

२ भण्डते इति भण्डः। पचाद्यच् भण्ड एव भाण्डम् = पात्रादिकम्। स्वार्थेऽणि रूपमेवम्।

३ बाहुलकात् औणादिके इलच् प्रत्यये रूपमेवम्। भण्डिलः = दूतः।

१ छर्दयति-ते। २ छर्दयाञ्चकार-चक्रे। ३ छर्दयिता। ४ छर्दयिष्यति। ५ छर्दयतु। ६ अछर्दयत्-त। ७ छर्दयेत्। ८ छर्द्यात्। ९ **प्र.** अचच्छर्दत् अचच्छर्दताम् अचच्छर्दन्। **म.** अचच्छर्दः अचच्छर्दतम् अचच्छर्दत। **उ.** अचच्छर्दम् अचच्छर्दाव अचच्छर्दाम। १० अर्छदयिष्यत्।

**कृत्सु**—छर्दकः-छर्दिका, प्रच्छर्दिका,[1] छर्दयिता-त्री, छर्दयन्-न्ती, छर्दयिष्यन्-न्ती-ती, छर्दयमानः, छर्दयिष्यमाणः, प्रच्छर्दितः-तम्-तवान्। छर्दयितुम्, छर्दनीयम्, छर्द्यम्, छर्दमानः, छर्दः, छर्दयितुम्, छर्दनम्, छर्दयित्वा, प्रच्छद्य।

**(१५९०-९१) पुस्त-बुस्त—आदरानादरयोः**। (सत्कार करना आदर करना, तिरस्कार करना, अनादर करना धिक्कारना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। पुस्तयति-ते। बुस्तयति-ते इत्यादि।

**(१५९२) चुद—संचोदने**। सञ्चोदनम् = प्रश्नः, प्रेरणं वा प्रश्ने द्विकर्मकः। (प्रेरणा करना, पूछना, प्रश्न करना, प्रार्थना करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ चोदयति-ते। २ चोदयाञ्चकार-चक्रे। ३ चोदयिता। ४ चोदयिष्यति। ५ चोदयतु। ६ अचोदयत्। ७ चोदयेत्। ८ चोद्यात्। ९ अचूचुदत्-त। १० अचोदयिष्यत्।

**कृत्सु**—चोदकः-दिका, चोदयिता-त्री, चोदयन्-न्ती, (मानवकमर्थं) चोदयन्, चोदयिष्यन्-न्ती-ती, चोदयमानः, चोदयिष्यमाणः, प्रचोत्[2]-प्रचोदौ-प्रचोदः, चोदितम्-तः-तवान्, चोदः, चोदयितव्यम्, चोदनीयम्, चोद्यम्, चोद्यमानः, चोदयितुम्, चोदना, चूडा[3], चुचोदयिषा, चोदनम्, चोदयित्वा, प्रचोद्य, परिचोद्य।

**(१५९३-९४) नक्क-धक्क—नाशने**। (उच्छेद करना, नाश करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ नक्कयति-ते। २ नाक्कयाञ्चकार-चक्रे। ३ नक्कयिता। ४ नक्कयिष्यति। ५ नक्कयतु। ६ अनक्कयत्-त। ७ नक्कयेत्। ८ नक्क्यात्। ९ **प्र.** अननक्कत् अननक्कताम् अननक्कन्। **म.** अननक्कः अननक्कतम् अननक्कत। **उ.** अननक्कम् अननक्काव अननक्काम। १० अनक्कयिष्यत्।

**कृत्सु**—नक्ककः-क्किका, प्रनक्कयिता[4]-त्री, नक्कयित्वा, प्रनक्क्य, नक्कयन्-न्ती-ती, नक्कयमानः, नक्कयिष्यमाणः, नक्कयितव्यम्, नक्कनीयम्, नक्कयितुम्, नक्कयम्। एवं धक्कयति-ते। धक्कयाञ्चकार-चक्रे। इत्यादि।

---

१ 'रोगाख्यायां ण्वुल् बहुलम्' (३-३-१०८) इति स्त्रियां भावादौ ण्वुल्। 'प्रत्ययस्थात् कात् पूर्वस्यात इदाप्यसुपः' (७-३-४४) इति इत्वम्। प्रच्छर्दिका = वमथुः। 'प्रच्छर्दिका वमिश्च स्त्री पुमांस्तु वमथुः समाः।' इत्यमरः।

२ णिनिमित्तको गुणः।

३ भिदादिषु (३-३-१०४) निपातनात् धातोरुपधाया दीर्घः दकारस्य डकारः णिलोपश्च भवति 'माधवधातुवृत्तिः' अबाधकान्यपि निपातनानि, परिभाषा ११८ इति वचनात् 'चोदना' इत्यपि साधुः।

४ नकारादित्वात् षोपदेशाभावादस्य धातोः 'उपसर्गादसमासेऽपि णोपदेशस्य' (८-४-१४) इति विहितं णत्वं न।

**( १५९५-९६ ) चक्क-चुक्क—व्यथने** । (दुःख देना, दुःख पाना) । सक. । सेट् । उभय. । चक्कयति-ते । चुक्कयति-ते । चक्कयाञ्चकार-चक्रे । चुक्कयाञ्चकार-चक्रे । इत्यादि ।

**( १५९७ ) क्षल—शौचकर्मणि** । (स्वच्छ करना, पवित्र करना, धोना, **प्र**—धोना) । सकर्म. । सेट् । उभय. ।

१ **प्र.** क्षालयति क्षालयतः क्षालयन्ति **म.** क्षालयसि क्षालयथः क्षालयथ । **उ.** क्षालयामि क्षालायावः क्षालयामः । २ **प्र.** क्षालयाञ्चकार क्षालयाञ्चक्रतुः क्षालयाञ्चक्रुः । **म.** क्षालयाञ्चचकर्थ क्षालयाञ्चक्रथुः क्षालयाञ्चक्र । **उ.** क्षालयाञ्चकार-चकर क्षालयाञ्चकृव क्षालयाञ्चकृम । ३ **प्र.** क्षालयिता क्षालयितारौ क्षालयितारः । **म.** क्षालयितासि क्षालयितास्थः क्षालयितास्थ । **उ.** क्षालयितास्मि क्षालयितास्वः क्षालयितास्मः । ४ **प्र.** क्षालयिष्यति । **म.** क्षालयिष्यसि । **उ.** क्षालयिष्यामि । ५ **प्र.** क्षालयतु-क्षालयतात् क्षालयताम् क्षालयन्तु । **म.** क्षालय-तात् क्षालयतम् क्षालयत । **उ.** क्षालयानि क्षालयाव क्षालयाम । ६ **प्र.** अक्षालयत् अक्षालयताम् अक्षालयन् । **म.** अक्षालयः अक्षालतम् अक्षालयत । **उ.** अक्षालयम् अक्षालयाव अक्षालयाम । ७ **प्र.** क्षालयेत् क्षालयेताम् क्षालयेयुः । **म.** क्षालयेः क्षालयेतम् क्षालयेत । **उ.** क्षालयेयम् क्षालयेव क्षालयेम । ८ **प्र.** क्षाल्यात् क्षाल्यास्ताम् क्षाल्यासुः । **म.** क्षाल्याः क्षाल्यास्तम् क्षाल्यास्त । **उ.** क्षाल्यासम् क्षाल्यास्व क्षाल्यास्म । ९ **प्र.** अचिक्षलत् अचिक्षलताम् अचिक्षलन् । **म.** अचिक्षलः अचिक्षलतम् अचिक्षलत । **उ.** अचिक्षलम् अचिक्षलाव अचिक्षलाम । १० **प्र.** अक्षालयिष्यत् । **म.** अक्षालयिष्यः । **उ.** अक्षालयिष्यम् । **आत्मने.** क्षालयते क्षालयाञ्चक्रे । इत्यादि ।

**कृत्सु**—क्षालकः-लिका, क्षालयन्-न्ती-ती, क्षालयिता-त्री, क्षालयित्वा, प्रक्षाल्य, क्षालयितुम्, क्षालयिष्यमानः, क्षालयमानः, क्षालितः-तम्-तवान्, इत्यादि ।

**( १५९८ ) तल—प्रतिष्ठायाम्** । (स्थापना करना, बिठाना, पूर्ण होना, सिद्ध करना) । सकर्म. । सेट् । उभय. ।

१ तालयति-ते । २ तालयाञ्चकार-चक्रे । ३ तालयिता । ४ तालयिष्यति । ५ तालयतु । ६ अतालयत् । ७ तालयेत् । ८ ताल्यात् । ९ प्र. अतीतलत् अतीतलताम् अतीतलन् । म. अतीतलः अतीतलम् अतीतलत । उ. अतीतलम् अतीतलाव अतीतलाम । १० अतालयिष्यत् ।

**कृत्सु**—तालकः-लिका, तालयिता-त्री, तालयित्वा, प्रताल्य, तालयितुम्, तालयन्-न्ती, तालयमानः, तालयिष्यमाणः, तालम्, तलः, (पचाद्यचि), तलम्-अच् ।

**( १५९९ ) तुल—उन्माने** । (तोलना, वजन करना) । सकर्म. । सेट् । उभय. ।

१ तोलयति-ते । २ तोलयाञ्चकार-चक्रे । ३ तोलयिता । ४ तोलयिष्यति । ५ तोलयतु । ६ अतोलयत् । ७ तोलयेत् । ८ तोल्यात् । ९ **प्र.** अतूतुलत् अतुतूलताम् अतूतुलन् । **म.** अतूतुलः अतूतुलम् अतूतुलत । **उ.** अतूतुलम् अतूतुलाव अतूतुलाम । १० अतोलयिष्यत् ।

**कृत्सु**—तोलकः-लिका, तोलयिता-त्री, तोलयन्-न्ती, तुतोलयिषन्-न्ती, तोलयिष्यन्-न्ती-ती, तोलयमानः, तोलयिष्यमाणः, प्रोतल्-प्रतोलौ-प्रतौलः, तोलितम्-तः-तवान्, तोलः, तुलः, तुतोलयिषुः, तोलयितव्यम्, तुतोलयितव्यम्, तोलनीयम्, तोल्यम्, तोल्यमानः, तोलयितुम्, तोलयित्वा, प्रतोल्य, तोलना[1]-तुलना, तुला, तोलनम्।

**( १६०० ) दुल—उत्क्षेपे**। (उचकना, उठाना, फेंकना, डोलना, हिलना, झूला झुलाना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ दोलयति-ते। २ दोलयाञ्चकार-चक्रे। ३ दोलयिता। ४ दोलयिष्यति। ५ दोलयतु। ६ अदोलयत्-त। ७ दोलयेत्। ८ दोल्यात्। ९ **प्र.** अदूदुलत अदुदूलताम् अदूदुलन्। **म.** अदूदुलः अदूदुलतम् अदूदुलत। **उ.** अदूदुलम् अदूदुलाव अदूदुलाम। १० अदोलयिष्यत्।

**कृत्सु**—दोलकः-लिका, दोलयिता-त्री, दोलयन्-न्ती, दोलयिष्यन्-न्ती-ती, दोलायमानः, दोलायिष्यमाणः, दोलितम्, दोलः, दोलितः-तवान्, दोलयितव्यम्, दोलनीयम्, दोल्यम्, दोल्यमानः, दोलयितुम्, दोलना, दोलनम्, दोलयित्वा, प्रदोल्य, दोला[2], दुलिः,[3] सन्दोलयन्।

**( १६०१ ) पुल—महत्त्वे**। (रशि होना, ढेर होना, बढ़ना, ऊंचा होना)। सकर्म.। सेट्। ऊभय.।

१ पोलयति-ते। २ पोलयाञ्चकार-चक्रे। ३ पोलयिता। ४ पोलयिष्यति। ५ पोलयतु। ६ अपोलयत्। ७ पोलयेत्। ८ पोल्यात्। ९ **प्र.** अपूपुलत् अपूपुलताम् अपूपुलन्। **म.** अपूपुलः अपूपुलतम् अपूपुलत। **उ.** अपूपुलम् अपूपुलाव अपूपुलाम। १० अपोलयिष्यत्।

**कृत्सु**—पोलकः-लिका, पोलयिता-त्री, पोलयित्वा, प्रपोल्य, पोलयितुम्, पोलनीयम्, पोलनम्, पोलयमानः, पोलनम्-न्ती, पोलयिष्यन्-न्ती, पोलितः-तम्-तवान्।

**( १६०२ ) चुल—समुच्छ्राये**। (बढ़ाना, ऊँचा करना, भिगोना, डुबोना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। चोलयति-ते। चोलयाञ्चकार-चक्रे। इत्यादि।

**कृत्सु**—चोलकः-लिका, चोलयिता-त्री, चोलयन्-न्ती, चोलयिष्यन्-न्ती-ती, चोलयमाणः, चोलयिष्यमाणः, चोलितुम्-तः-तवान्, चोलः, चोलयितुम्, चोलना, चोलनम्, चोलयित्वा, प्रचोल्य, क्विपि—चोल्-चोलौ-चोलः, चोलना इति स्त्रियां युचि।

१ बाहुलकात् गुणाभाव रूपम्। 'चिन्तिपूजि—' (३-३-१०५) इत्यत्र चकारात् 'तुला' इति मैत्रेयः। अन्ये तु णिजभावे प्रमाणाभावात् 'तुल्यार्थैः—' (२-२-६२) इत्यादौ तुला इति निपातनादङि णिलुकि तुला इति' इत्युक्तम्।

२ 'भिदादेः' (३-३-१०४) आकृतिगणत्वात्, ण्यन्तात् प्राप्तं युचं बाधित्वा, अङ् प्रत्यये णिलोपे च दोला इति रूपमेवम्।

३ 'अचः इः' (उ. १-६७) इति इकारप्रत्यये रूपम्। 'बहुलमन्यत्रपि संज्ञाच्छन्दसोः' (उ. ८-४०) इति णेर्लुक्। दुलिः = कमठी।

**(१६०३) मूल—रोहणे**। (बीजारोपण करना, बोना, कलम करना, उत्—जड़ से उखाड़ना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ मूलयति-ते। २ मूलयाञ्चकार-चक्रे। ३ मूलयिता। ४ मूलयिष्यति-ते। ५ मूलयतु-मूलयतात्। ६ अमूलयत्। ७ मूलयेत्। ८ मूल्यात्। ९ अमूमुलत्। १० अमूलयिष्यत्।

**कृत्सु**—मूलकः-लिका, मूलयिता-त्री, अस्यधातोः, उभयपदित्वात्, शतरि-मूलयन्-न्ती, मूलयिष्यन्-न्ती-ती, मूलकः[1], मूलः, मूलयमानः, मूलयिष्यमाणः, मूलितम्-तः-तवान्, मूलयितव्यम्, मूलनीयम्, मूल्यम्, मूलयितुम्, मूलनम्, मूलयित्वा, उन्मूल्य।

**(१६०४) कल—क्षेपे**। (उड़ाना, फेंकना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। १ कालयति-ते। २ कालयाञ्चकार-चक्रे। ९ अचीकलत्-त।

**सनि**—चिकालयिषति-ते। **कृत्सु**—कालकः-लिका, कालयिता-त्री, कालयन्-न्ती, कालयिष्यन्-न्ती-ती, कालयमानः, कालयिष्यमाणः, काल्-कालौ-कालः, कालयितव्यम्, कालनीयम्, काल्यम्, ईषत्कालः-दुष्कालः-सुकालः, काल्यमानः, कालः, कालयितुम्, कालना, कालनम्, कालयित्वा, प्रकाल्य।

**(१६०५) विल—क्षेपे**। (उड़ाना, फेंकना, प्रेरणा करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ वेलयति-ते। २ वेलयाञ्चकार। ३ वेलयिता। ४ वेलयिष्यति। ५ वेलयतु। ६ अवेलयत्-त। ७ वेलयेत्। ८ वेल्यात्।

**कृत्सु**—वेलकः-लिका, वेलयिता-त्री, ल्युटि-प्रवेलनम्।

**(१६०६) बिल—भेदने**। (छेद करना, चीरना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। वेदयति-ते। इत्यादि।

**(१६०७) तिल—स्नेहने**। (तेल लगाना, स्निग्ध होना, चिकना होना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ तेलयति-ते। २ तेलयाञ्चकार-चक्रे। तेलयाम्बभूव तेलयामास। ३ तेलयिता। ४ तेलयिष्यति-ते। ५ तेलयतु। ६ अतेलयत्-त। ७ तेलयेत्। ८ तेल्यात्। ९ **प्र.** अतीतिलत् अतीतिलताम् अतीतिलन्। **म.** अतीतिलः अतीतिलतम् अतीतिलत। **उ.** अतीतिलम् अतीतिलाव अतीतिलाम। १० अतेलयिष्यत्।

**कृत्सु**—तेलकः-लिका, तेलयिता-त्री, तेलयन्-तितेलयिष्यन्-न्ती-ती, तेलयिष्यन्, तेलयित्वा, तेलयितुम्, तेलनम्, तेलयितुम्, प्रतेल्य।

**(१६०८) चल—भृतौ**। (पालना, बढ़ाना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ चालयति-ते। २ चालयाञ्चकार-चक्रे। ३ चालयिता। ४ चालयिष्यति। ५ चालयतु।

१ स्वार्थे कन् प्रत्यये रूपमेवम्। मूलकः = शाकविशेषः।

६ अचालयत्-त। ७ चालयेत्। ८ चाल्यात्। ९ अचीचलत्। १० अचालययिष्यत्।

**कृत्सु**—चालकः-लिका, चालयिता-त्री, चालयन्-न्ती, चालयित्वा, प्रचाल्य, चालयितुम्, चालनम्, चालः, चालयमानः, चालयिष्यमाणः, चालितः-तम्-तावन्।

**(१६०९) पाल—रक्षणे**। (पालन करना, संरक्षण करना)। सकर्म.। सेट्। उभय।

१ पालयति-ते। २ पालयाञ्चकार-चक्रे। ३ पालयिता। ४ पालयिष्यति। ५ पालयतु। ६ अपालयत्-त। ७ पालयेत्। ८ पाल्यात्। ९ **प्र.** अपीपलत् अपपिलताम् अपीपलन्। **म.** अपीपलः अपीपलतम् अपीपलत। **उ.** अपीपलम् अपीपलाव अपीपलाम। १० अपालयिष्यत्-त।

**कृत्सु**—पालकः-पालिका, पालयिता-त्री, पालयन्-न्ती, पालयिष्यन्-न्ती-ती, पाल्-पालौ-पालः, पालितम्-तः-तवान्, पालः, पालयितव्यम्, पालनीयम्, पाल्यम्, पाल्यमानः, पालयितुम्, पालना, पालनम्, पालयित्वा, संपाल्य, कपोतपाली[1]।

**(१६१०) लष—हिंसायाम्**। (हिंसा करना, माल डालना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। लासयति-ते। इत्यादि।

**(१६११) शूल्व—माने**। (नापना, गिनना, तोलना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। शुल्वयति-ते। इत्यादि।

**(१६१२) शूर्प—माने**। (नापना, तोलना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ शूर्पयति-ते। २ शूर्पयाञ्चकार-चक्रे। ३ शूर्पयिता। ४ शूर्पयिष्यति-ते। ५ शूर्पयतु। ६ अशूर्पयत्-त। ७ शूर्पयेत्। ८ शूर्प्यात्। ९ **प्र.** अशुशूर्पत् अशुशूर्पताम् अशुशूर्पन्। **म.** अशुशूर्पः अशुशूर्पतम् अशुशूर्पत। **उ.** अशुशूर्पम् अशुशूर्पाव अशुशूर्पाम। १० अशूर्पयिष्यत्।

**कृत्सु**—शूर्पकः-र्पिका, शूर्पयिता-त्री, शूर्पनम्, शूर्पयित्वा, प्रशूर्प्य, शूर्पयितुम्, शूर्पयन्-न्ती, शूर्पयिष्यन्-न्ती-ती, शूर्पितः-तम्-तवान्, शूर्पम्[2], शौर्पम्[3]-शौर्पिकम्, घञि-शूर्पः, शूर्पसदृशं नखमस्या इति शूर्पनखा[4]।

**(१६१३) चुट—छेदने**। (कतरना, चोट मारना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ चोटयति-ते। २ चोटयाञ्चकार-चक्रे। ३ चोटयिता। ४ चोटयिष्यति। ५ चोटयतु।

---

१ कपोतं पालयतीति कपोतपालः। 'कर्मण्यण्' (३-२-१) इत्यण्। स्त्रियाम् अणन्तत्वेन ङीप्।

२ एरचि पचाद्यचि वा णिलोपे रूपमवेम्। शूर्पम्=प्रस्फोटनम्।

३ शूर्पेण क्रीतं शैर्पम् शौर्पिकम्। अत्र 'शूर्पादञ् अन्यतरस्याम्' (५-१-२६) इति आर्हीयेष्वर्थेषु अञ् प्रत्ययः। ठञोऽपवादः पक्षे सोऽपि भवति।

४ 'नखमुखात् संज्ञायाम्' (४-१-५) इति ङीप्। 'पूर्वपदात् संज्ञायामगः' (८-४-५) इति णत्वं च संज्ञायामेवेति णत्वाभावष्टाप् च' इति धातुकाव्यव्याख्यायाम्। (३-२२) मल्लिनाथस्तु 'शूर्पणखा इति णत्वविशिष्टमेव पठित्वा व्याचख्यौ (रघु. १३/३२)।

६ अचोटयत्-त । ७ चोटयेत । ८ चोट्यात् । ९ **प्र.** अचूचुटत् अचूचुटताम् अचूचुटन् । **म.** अचूचुटः अचूचुटतम् अचूचुटत । **उ.** अचूचुटम् अचूचुटाव अचूचुटाम । १० अचोटयिष्यत्-त ।

**कृत्सु**—चोटकः-चिका, चोटयिता-त्री, चोटयन्-न्ती, चोटयिष्यन्-न्ती-ती, चोटयित्वा, प्रचोट्य, चोटयितुम्, चोटनम्, चोटः, चोटितम्-तः-तवान् । विचोटी (णिनि प्रत्ययः) ।

**( १६१४ ) मुट—सञ्चूर्णने** । (चूर्ण करना, मर्दन करना) । सकर्म. । सेट् । उभय. । मोटयति-ते । इत्यादि ।

**( १६१५-१६ ) पडि-पसि—नाशने** । (नष्ट करना) । सकर्म. । सेट् । उभय. । पण्डयति-ते । पंसयति-ते । इत्यादि ।

**( १६१७ ) व्रज—मार्गसंस्कारगत्योः** । (संस्कार करना, पूर्ण करना, तैयार करना, सिद्ध करना, जाना, घूमना) । सकर्म. । सेट् । उभय. ।

१ व्राजयति-ते । २ व्राजयाञ्चकार-चक्रे । ३ व्राजयिता । ४ व्राजयिष्यति । ५ व्राजयतु । ६ अव्राजयत्-त । ७ व्राजयेत । ८ व्राज्यात् । ९ अवीव्रजत् । १० अव्राजयिष्यत् ।

**कृत्सु**—व्राजकः-जिका, व्राजयिता-त्री, व्राजयन्-न्ती, व्राजयिष्यन्-न्ती-ती, व्राजयित्वा, प्रव्राज्य, व्राजयितुम्, व्राजितम्-तः, तवान्, व्राजः, व्राजयमानः, व्राजयिष्यमाणः ।

**( १६१८ ) शुल्क—अतिस्पर्शने** । (शुल्क = कर लगाना, उत्पत्ति कर देना, उत्पन्न करना) । सकर्म. । सेट् । उभय. ।

१ शुल्कयति-ते । २ शुल्वयाञ्चकार-चक्रे । ३ शुल्कयिता । ४ शुल्कयिष्यति । ५ शुल्कयतु । ६ अशुल्कयत् । ७ शुल्कयेत् । ८ शुल्क्यात् ।

**( १६१९ ) चपि—गत्याम्** । (जाना) । सकर्म. । सेट् । उभय. ।

१ चम्पयति-ते । २ चम्पयाञ्चकार-चक्रे । ३ चम्पयिता । ४ चम्पयिष्यति । ५ चम्पयतु । ६ अचम्पयत् । ७ चम्पयेत् । ८ चम्प्यात् । ९ अचीचपत् । १० अचम्पयिष्यत् ।

**कृत्सु**—चम्पकः-म्पिका, चम्पयिता-त्री, चम्पयन्-न्ती, चम्पयिष्यन्-न्ती-ती, चम्पमानः, चम्पितः-तम्-तवान्, चम्पयित्वा, चम्पयितुम् ।

**( १६२० ) क्षपि—क्षान्त्याम्** । (सहन करना, कहना, दया करना, चमकना) । सकर्म. । सेट् । उभय. ।

१ क्षम्पयति-ते । २ क्षम्पयाञ्चकार-चक्रे । ३ क्षम्पयिता । ४ क्षम्पयिष्यति । ५ क्षम्पयतु । ६ अक्षम्पयत्-त । ७ क्षम्पयेत् । ८ क्षम्प्यात् । ९ अचक्षम्पत्-त । १० अक्षम्पयिष्यत् । पक्षे क्षमति क्षम्पते । इत्यादि ।

**कृत्सु**—क्षम्पकः-म्पिका, क्षम्पयिता-त्री, क्षम्पयित्वा, क्षम्पयितुम्, क्षम्पमानः, क्षम्पयन्-न्ती, क्षम्पयिष्यमाणः, क्षम्पनम्, क्षम्पितः-तम्-तवान् ।

**( १६२१ ) छजि—कृच्छ्रजीवने** । (कठिन जीवन व्यतीत करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। छञ्जयति-ते। इत्यादि।

**( १६२२-२३ ) श्वर्त-श्वभ्र—गत्याम्** । (जाना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ श्वर्तयति-ते। श्वभ्रयति-ते। २ श्वर्तयाञ्चकार-चक्रे। श्वभ्रयाञ्चकार-चक्रे। ३ श्वर्तयिता श्वभ्रयता। ४ श्वर्तयिष्यति-ते। श्वभ्रयिष्यति-ते। ५ श्वर्तयतु। श्वभ्रयतु। ६ अश्वर्तयत्-त। अश्वभ्रयत्-त। ७ श्वर्तयेत् श्वभ्रयेत्। ८ श्वर्त्यात् श्वभ्र्यात्। ९ अश्वर्तत्। अशश्वभ्रत्। १० अश्वर्तयिष्यत्। अश्वभ्रयिष्यत्।

**कृत्सु**—श्वर्तकः-र्तिका, श्वभ्रकः-भ्रिका, श्वभ्रं = छिद्रम्।

**( १६२४ ) ज्ञप[१]—ज्ञानज्ञापनमारणतोषणनिशामनेषु** । (जानना, समझना, सिखाना समझाना, आनन्दित करना, प्रसन्न करना, मारना, ठोकना, तीक्ष्ण करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। मित्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | ज्ञपयति | ज्ञपयतः | ज्ञपयन्ति | प्र. |
| | ज्ञपयसि | ज्ञपयथः | ज्ञपयथ | म. |
| | ज्ञपयामि | ज्ञपयावः | ज्ञपयामः | उ. |
| लिट् | ज्ञपयाञ्चकार | ज्ञपयाञ्चक्रतुः | ज्ञपयाञ्चक्रुः | प्र. |
| | ज्ञपयाञ्चकर्थ | ज्ञपयाञ्चक्रथुः | ज्ञपयाञ्चक्र | म. |
| | ज्ञपयाञ्चकार-चकर | ज्ञपयाञ्चकृव | ज्ञपयाञ्चकृम | उ. |
| लुट् | ज्ञपयिता | ज्ञपयितारौ | ज्ञपयितारः | प्र. |
| | ज्ञपयितासि | ज्ञपयितास्थः | ज्ञपयितास्थ | म. |
| | ज्ञपयितास्मि | ज्ञपयितास्वः | ज्ञपयितास्मः | उ. |

१ जानातीति श्नि सिद्ध्येत् ज्ञपयति तु पुनर्मारणादौ घटादेः णौ (चौ) मित्वेऽपीदमेव 'ज्ञप मिद्' (ज्ञपनम्) इति पदं ज्ञापने मारणादौ। तेनार्थाज् ज्ञापनेऽर्थे ज्ञपयतिपदवज् ज्ञापयेदित्यपि स्याद् उक्तस्योक्तिः 'णिचश्चे' (१-३-७४) ल्युदिता विहये, ज्ञपयेज् 'ज्ञा नियोगे'। (श्लोक ८) इति देवः। अत्र क्षीरस्वामी घटादो 'मारणतोषणनिशानेषु 'ज्ञा' इति, चुरादौ, ज्ञप मारणतोषणनिशानेषु मिच्च' इति चापठत् पशुं संज्ञपयति, विष्णुं विज्ञपयति, शस्त्रं प्रज्ञपयति, इति क्रमेणोदाजहार च। मारणाद्यर्थेषु ज्ञपधातोः पुनर्मित्वविधानं व्यर्थमित्याशङ्क्य, स्वार्थे णिचि, एष्वर्थेषु मित्त्वसिद्धिः फलमिति, चुरादिण्यन्तेभ्यः कर्तृगामिन्यपि क्रियाफले परस्मैपदमेव भवतीति चाभिहितवान्। एवञ्च सति, 'प्रच्छ ज्ञीप्सायाम्' 'श्लाघहनुङ्स्थाशपां ज्ञीप्स्यमानः' (१-४-३४) इत्यादिषु क्रमेण ज्ञानज्ञापनार्थयोः प्रतीयमानत्वात्, वृत्तिन्यासपदमञ्जर्यादिभिस्तथैवाभ्युपगतत्वात् तत्र च मित्त्वप्रयुक्तकार्याणां दर्शनाच्च, क्षीरस्वामिमते तयोः प्रयोगयोरसङ्ग्रहः स्यात्। तदर्थं माधवीयधातु वृत्यादिबहुग्रन्थानुरोधेनात्र 'ज्ञप मिच्च' इत्येव पाठः प्रामाणिकः। यथाप्रयोगं ज्ञाने, ज्ञापने च ज्ञपधातुर्मिद् भवतीति सूत्रार्थः। अत एव सिद्धान्तकौमुद्याम् अयं धातुर्ज्ञाने, ज्ञापने च' इत्येवोक्तम्। घटादौ' निशामनेषु' इतिपाठेन चाक्षुषज्ञानव्यतिरिक्तेऽर्थे मित्त्वाभावः प्रतीयते। अत्र च बोधने। एवञ्च, विज्ञापयति, विज्ञपयति इति रूपद्वयस्यापि साधुत्वं बोध्यम्। 'तज्ज्ञापयत्याचार्यः' (महाभाष्यम्), 'विज्ञापना भर्तृषु सिद्धिमेति' इत्यादिप्रयेगेषु न काप्यनुपपत्तिः एतएव पुरुषकारे (श्लो. ८) 'एवञ्च, 'ज्ञप मिच्च' इत्येव पाठो युक्ततमः।' इत्युक्तं सङ्गच्छते।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृट् | ज्ञपयिष्यति | ज्ञपयिष्यतः | ज्ञपयिष्यन्ति | प्र. |
| | ज्ञपयिष्यसि | ज्ञपयिष्यथः | ज्ञपयिष्यथ | म. |
| | ज्ञपयिष्यामि | ज्ञपयिष्यावः | ज्ञपयिष्यामः | उ. |
| लोट् | ज्ञपयतु-तात् | ज्ञपयताम् | ज्ञपयन्तु | प्र. |
| | ज्ञपय | ज्ञपयतम् | ज्ञपयत | म. |
| | ज्ञपयानि | ज्ञपयाव | ज्ञपयाम | उ. |
| लङ् | अज्ञपयत् | अज्ञपयताम् | अज्ञयपन् | प्र. |
| | अज्ञपयः | अज्ञपयतम् | अज्ञपयत | म. |
| | अज्ञपयम् | अज्ञपयाव | अज्ञपयाम | उ. |
| वि. लि. | ज्ञपयेत् | ज्ञपयेताम् | ज्ञपयेयुः | प्र. |
| | ज्ञपयेः | ज्ञपयेतम् | ज्ञपयेत | म. |
| | ज्ञपयेयम् | ज्ञपयेव | ज्ञपयेम | उ. |
| आ. लि. | ज्ञप्यात् | ज्ञप्यास्ताम् | ज्ञप्यासुः | प्र. |
| | ज्ञप्याः | ज्ञप्यास्तम् | ज्ञप्यास्त | म. |
| | ज्ञप्यासम् | ज्ञप्यास्व | ज्ञप्यास्म | उ. |
| लुङ् | अजिज्ञपत् | अजिज्ञपताम् | अजिज्ञपन् | प्र. |
| | अजिज्ञपः | अजिज्ञपतम् | अजिज्ञपत | म. |
| | अजिज्ञपम् | अजिज्ञपाव | अजिज्ञपाम | उ. |
| लृङ् | अज्ञपयिष्यत् | अज्ञपयिष्यताम् | अज्ञपयिष्यन् | प्र. |
| | अज्ञपयिष्यः | अज्ञपयिष्यतम् | अज्ञपयिष्यत | म. |
| | अज्ञपयिष्यम् | अज्ञपयिष्याव | अज्ञपयिष्याम | उ. |

**कर्मणि**—ज्ञप्यते। १ अज्ञपि, अज्ञापि। **सनि**—ज्ञप्सति। नियोगार्थेतु आज्ञापयतीत्यादौ न ह्रस्वः। **कृत्सु**—ज्ञपकः[१]-पिका, जियज्ञयिषकः-ज्ञप्सकः[२]-प्सिका, ज्ञपयिता-त्री, जिज्ञपयिषिता-त्री, ज्ञीप्सिता-त्री, ज्ञपयन्-न्ती, विज्ञपयन्, जिज्ञपयिष्यन्-न्ती-ती, ज्ञीप्सिष्यन्-न्ती-ती, ज्ञपयमानः, जिज्ञपयिषमाणः, ज्ञप्समानः, ज्ञपयिष्यमाणः, जिज्ञपयिषिष्यमाणः, ज्ञप्सिष्यमाणः, प्रज्ञप्-प्रज्ञब्[३]-प्रज्ञपौ-प्रज्ञपः, ज्ञपितः[४]-ज्ञप्तः-ज्ञप्तवान्, जिज्ञपयिषितः-ज्ञीप्सितः- तवान्, ज्ञपः, जिज्ञपयिषुः-ज्ञप्सुः, ज्ञपयितव्यम्, जिज्ञपयिषतव्यम्, ज्ञप्सितव्यम्, ज्ञप्यमानः, जिज्ञपयिष्यमाणः, ज्ञीप्स्यमानः, जिज्ञयिषः-ज्ञप्सः, ज्ञपयितुम्, जिज्ञपयिषितुम्-ज्ञप्सितुम्, ज्ञापना, ज्ञप्तिः[५],

१ मित्संज्ञकत्वादस्य धातोर्णौ परत उपधाया वृद्धौ, 'मितां ह्रस्वः' (६-४-९२) इति ह्रस्वः। एवं सर्वत्र ज्ञेयम्।

२ 'सनीवन्तर्धभ्रस्जदम्भुश्रिस्वृयूर्णुभरज्ञपिसनाम्' (७-२-४९) इति सूत्रेण सन इड्विकल्पः। इडभावपक्षे, 'आपज्ञपृधामीत्' (७-४-५५) इतीत्वे, 'सन्यङो' (६-१-९) इति द्वित्वे, 'अत्र लोपोऽभ्यासस्य' (७-४-५८) इत्यभ्यासलोपे रूपमेवम्' एवं सन्नन्ते सर्वत्रेडभावपक्षे रूपम्, इट्पक्षे तु जिज्ञपयिषकः इत्यादीनि रूपाणीति च बोध्यम्।

३ क्विपि, क्विब्लोपे चर्त्वविकल्पे च रूपम्।

४ 'वा दान्तशान्तपूर्णदस्तस्पष्टछन्नज्ञप्ताः' (७-२-२७) इति सूत्रेण इण्णिषेदो विकल्पेन भवति। तेन रूपद्वयम्।

५ बाहुलकात् क्तिन्। 'तितुत्र—' (७-२-९) इति इण्णिषेधः।

जिज्ञपयिषा-ज्ञीप्सा, ज्ञपनम्, जिज्ञपयिषणम्, ज्ञीप्सनम्, ज्ञपयित्वा, जिज्ञपयिषित्वा, ज्ञीप्सित्वा, विज्ञपय्य[१], प्रजिज्ञपयिष्य-प्रज्ञीप्स्य।

**( १६२५ ) यम—च परिवेषणे।** (स्वाधीन रखना, काबू मे रखना, पोषण करना, खाने को देना)। ज्ञपादित्वान्मित्। परिवेषणभिन्नेऽर्थे न मित्। यामयति-ते। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ यमयति-ते। २ यमयाञ्चकार-चक्रे। ३ यमयिता। ४ यमयिष्यति-ते। ५ यमयतु। ६ अयमयत्-त। ७ यमयेत्। ८ यम्यात्। ९ अयीमयत्। १० अयमयिष्यत्।

**कृत्सु**—यमकः-मिका, यमयिता-त्री, यमयित्वा, प्रयम्य, यमयितुम्, यमनम्, यमयमानः, यमयिष्यमाणः, यमयन्-न्ती, यमयिष्यन्-न्ती-ती।

**( १६२६ ) चह—परिकल्कने।** (ठगना, दुष्कर्मी होना)। परिकल्कनं =दम्भं शाट्यञ्च। अकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः ज्ञपित्वान्मित्।

१ चहयति-ते। २ चहयाञ्चकार-चक्रे। ३ चहयिता। ४ चहयिष्यति। ५ चहयतु। ६ अचहयत्-त। ७ चहयेत्। ८ चह्यात्। ९ अचहत्-त। १० अचहयिष्यत्। विकल्पे-चाहयति-ते। इत्यादि।

**कृत्सु**—चहकः-हिका, चहयिता-त्री, चहयित्वा, प्रचह्य, चहयितुम्, चहयितव्यम्, चहनीयम्।

**( १६२७ ) रह—त्यागे।** (छोड़ना, त्याग करना)। **वि**—अलग होना, भिन्न होना। सकर्म.। सेट्। उभय.। ज्ञपादिः। रहयति-ते। रहयाञ्चकार-चक्रे। इत्यादि।

**( १६२८ ) बल—प्राणने।** (बलयुक्त होना या करना, स्पष्ट करना)। सक.। सेट्. उभय.। ज्ञपदित्वान्मित्।

१ बलयति-ते। २ बलयाञ्चकार-चक्रे। ३ बलयिता। ४ बलयिष्यति-ते। ५ बलयतु। ६ अबलयत्। ७ बलयेत्। ८ बल्यात्। ९ अबबलयत्। १० अबलयिष्यत्।

**कृत्सु**—बलकः-लिका, बिबलयिषकः-षिका, बलयन्-न्ती, बलयित्वा, प्रबल्य, बलयितुम्-बलनम्, बलितः-तम्-तवान्, बलयितव्यम्, बलयमानः, बलयिष्यमाणः।

**( १६२९ ) चिञ्—चयने।** (ढूँढना, बटोरना, एकत्र करना)। **अप**—नाश करना, विध्वंस करना, **सम्**—संचय करना, जोड़ना, **उप**—पाना, प्राप्त करना, **निर्**—निश्चय करना, ठहरना, **विनिद्**—ठीक निश्चय करना। सकर्म.। सेट्। उभय.। ज्ञपदित्वान्मित्वम्। **'चिक्स्फुरोर्णौ'** इति आत्वपक्षे पुक्।

१ चपयिष्यति-ते। २ चपयाञ्चकार-चक्रे। ३ चपयिता। ४ चपयिष्यति-ते। ५ चपयतु। ६ अचपयत्। ७ चपयेत्। ८ चप्यात्। णिजभावपक्षे—चयति-ते।

१ 'ल्यपि लघुपूर्वात्' इति णेरयादेशः।

**कृत्सु**—चपकः[१]-पिका, चयकः-यिका, चिचपयिषकः-चिचययिषकः-षिकः, चायकः[२]-यिका, चपयिता-चययिता-त्री, चिचपयिषिता-चिचपयिषिता-त्री, चेता-त्री, प्रणिचपयन्[३]-प्रणिचययन्-न्ती, चिचयिषन्-चिचययिषन्-न्ती, चयन्-न्ती, चपयिष्यन्-चययिष्यन्-न्ती-ती, चेष्यन्-न्ती-ती, चपयमानः, चययमानः, चिचपयिषमाणः, चिचययिषमाणः, चयमानः, चपयिष्यमाणः, चययिष्यमाणः, चिचपयिषिष्यमाणः, चिचययिषिष्यमाणः, चेष्यमाणः, विचत्[४]-विचतौ-विचतः, चप्-चपौ-चपः, चपितः-चयितः. चिपत्-तः-तवान्, चपः-चयः, चिचपयिषुः-चिचययिषुः, चपयितव्यम्, चययितव्यम्, चेतव्यम्, चपनीयम्, चयनीयम्, चिचपयिषणीयम्, चिचययिषणीयम्, चप्यम्-चय्यम्, चप्यमानः- चय्यमानः, चेयम्-चीयमानः, चपयितुम्-चययितुम्, चेतुम्, चपना-चयना, चितिः, चपनम्-चयनम्, चपयित्वा-चपयित्वा, चित्वा, संचपय्य[५]-संचयय्य, प्रचित्य, चापम्[६]-चयम्-चायम्-चयम्।

**( १६३० ) घट्ट—चलने**। (जाना, स्थानान्तरण करना, **परि**—फैलाना, घोटना, **वि**—मांजना, घोना, विगाडना)। अकर्म.। सेट्। उभय.।

१ घट्टयति-ते। २ घट्टयाञ्चकार-चक्रे। ३ घट्टयिता। ४ घट्टयिष्यति-ते। ५ घट्टयतु। ६ अघट्टयत्-त। ७ घट्टयेत्। ८ घट्ट्यात्। ९ अजघट्टत्-त। १० अघट्टयिष्यत्।

**कर्मणि**—घट्ट्यते।९ अघट्टि। अघट्टयिषाताम्। अघट्टिषाताम्। **कृत्सु**—घट्टकः-ट्टिका, घट्टयिता-त्री, घट्टयितव्यम्, घट्टनीयम्, घट्टनम्, घट्टः, घट्टी, घट्टितः, घट्टना, घट्टयितुम्, घट्टयित्वा, सङ्घट्ट्य, घट्टयन्-मानः, घट्टयमानः, घट्टयिष्यमाणः, **कर्मणि**—घट्टिष्यमाणः।

**( १६३१ ) मुस्त—सङ्घाते**। (ढेर करना, बटोरना, एकत्र करना, राशि करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ मुस्तयति-ते। २ मुस्तयाञ्चकार-चक्रे। ३ मुस्तयिता। ४ मुस्तयिष्यति। ५ मुस्तयतु। ६ अमुस्तयत्-त। ७ मुस्तयेत्। ८ मुस्त्यात्। ९ अमुमुस्तत्। १० अमुस्तयिष्यत्।

**कृत्सु**—मुस्तकः-स्तिका, शतरि-मुस्तयन्-न्ती, मुस्तयिष्यन्-न्ती-ती, मुस्तयिता-त्री, मुस्तयित्वा, मुस्तयितुम्, मुस्तः

**( १६३२ ) खट्ट—संवरणे**। (आच्छादन करना, छिपाना, ढांकना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

---

१ 'चिस्फुरोर्णौ' (६-१-५४) इत्यात्वविकल्पः आत्वपक्षे आदन्तलक्षणे पुगागमे, ज्ञपादिपञ्चकपाठेन मित्वात्, णौ उपधायाः 'मितां ह्रस्वः' (६-४-९२) इति ह्रस्वः। आत्वाभावपक्षे, वृद्धौ, आयादेशे ह्रस्वे च रूपम्। एवं ण्यन्ते सर्वत्र रूपद्वयस्योपपत्तिर्ज्ञेया।

२ ञित्वकरणसामर्थ्याण्णिचो वैकल्पिकत्वेन णिजभावपक्षे शुद्धाद्धातोः चायकः-यिका इत्यादीनि रूपाणि प्रदर्शितानि।

३ 'शेषे विभाषाऽकखादावषान्त उपदेशे' (८-४-१८) इति नेः णत्वविकल्पः।

४ अत्र यकारस्य बलि लोपे, 'ह्रस्वस्य पिति कृति—' (६-१-७१) इति तुगागमः।

५ 'ल्यपि लघुपूर्वात्' (६-४-५६) इति णेरयादेशः।

६ 'चिण्णमुलोदीर्घोऽन्यतरस्याम्' (६-४-९३) इति णमुल्परे णौ दीर्घविकल्पः।

१ खट्टयति-ते। २ खट्टयाञ्चकार-चक्रे। ३ खट्टयिता। ४ खट्टयिष्यति-ते। ५ खट्टयतु। ६ अखट्टयत्-त। ७ खट्टयेत्। ८ खट्ट्यात्। ९ अचखट्टत्-त। १० अखट्टयिष्यत्।

(१६३३-३५) **षट्ट-स्फिट्ट-चुबि—हिंसायाम्**। (मार डालना, या दुःख देना, पीड़ा देना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। सट्टयति-ते। सट्टयाञ्चकार-चक्रे। स्फिट्टयति-ते। स्फिट्टयाञ्चकार-चक्रे। चुम्बयति-ते। इत्यादि।

(१३३६) **पूल—सङ्घाते**। (ढेर लगाना, बटोरना, सञ्चित करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

पूलयति-ते। पूलयाञ्चकार-चक्रे। पूलयिता। पूलयिष्यति-ते। पूलयतुः। अपूलयत्-त। पूलयेत्। पूल्यात्। अपूपुलत्-त। अपूलयिष्य-त्। केचित् पूण इति वदन्ति। तत्पक्षे-पूणयति-ते। पूणयाञ्चक्रे-चकार। इत्यादि।

**कृत्सु**—पूलक-लिका, पूलयिता-त्री, पूलयित्वा, प्रपूल्य, पूलयितुम्, पूलनम्, पूलयमानः, पूलयिष्यमाणः, पूलः[1]।

(१३३७) **पुंस—अभिवर्धने**। (बढ़ना, वृद्धि होना, बढ़ाना, वृद्धि करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ पुंसयति-ते। २ पूंसयाञ्चकार-चक्रे। ३ पुंसयिता। ४ पुंसयिष्यति-ते। ५ पुंसयतु। ६ अपुंसयत्-त। ७ पुंसयेत्। ८ पुंस्यात्। ९ अपूपुंसत्-त। १० अपुंसयिष्यत्।

**कृत्सु**—पुंसकः-सिका, पुंसयिता-त्री, पुंसना, पुन्[2]-पुंसौ-पुंसः, शतरि-पुंसयन्-न्ती, पुंसयित्वा, पुंसयितुम्, पुंसनम्, पुंसयमानः, पुंसयिष्यमाणः।

(१६३८) **टकि—बन्धने**। (बाँधना, जोड़ना, टांकना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ टङ्कयति-ते। २ टङ्कयाञ्चकार-चक्रे। ३ टङ्कयिता। ४ टङ्कयिष्यति-ते। ५ टङ्कयतु। ६ अटङ्कयत्-त। ७ टङ्कयेत्। ८ टङ्क्यात्। ९ **प्र.** अटटङ्कत् अटटङ्कताम् अटटङ्कन्। **म.** अटटङ्कः अटटङ्कतम् अटटङ्कत। **उ.** अटटङ्कम् अटटङ्काव अटटङ्काम। १० अटङ्कयिष्यत्।

**कर्मणि**—टङ्क्यते। **कृत्सु**—टङ्कनम्, टङ्कनीयम्, टटङ्कः-ङ्किका, टङ्की, टङ्किता, टङ्कितः-तम्-तवान्, टङ्का, टङ्कना, टङ्कयितुम्, टङ्कयितव्यम्, टङ्कयित्वा, उट्टङ्क्य, टङ्क्यम्, टङ्क्यन्-मानः, टङ्क्यमानः, टङ्कयिष्यन्-ष्यमाणः।

(१६३९) **धूस (धूष-धूश) —कान्तिकरणे**। (शोभित होना, अलङ्कृत होना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। धूसयति-ते। धूषयति-ते। धूशयति-ते।

(१६४०) **कीट—वर्णे**। (रंगना, रंग में डूबोना, बांधना, जंग लगाना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

---

१ 'हलश्च' (३-३-१२१) इति संज्ञायां घञ्। पूलः = मूलिकाविशेषः।

२ 'नकारजावनुस्वारपञ्चमौ झलि धातुषु। सकारजश्शकारश्चेषट्टिवर्गस्तवर्गजः॥' इति अभियुक्त्याऽत्रानुस्वारो नकारस्थानिकः। तेन क्विपि संयोगान्तलोपे नकारान्तं रूपं प्रथमैकवचने बोध्यम्।

१ कीटयति-ते। २ कीटयाञ्चकार-चक्रे। ३ कीटयिता। ४ कीटयिष्यति-ते। ५ कीटयतु। ६ अकीटयिष्यति-त। ७ कीटयेत्। ८ कीट्यात्. ९ अचीकिटत्। १० अकीटयिष्यत्।

**कृत्सु**—कीटकः-टिका, कीटयिता-त्री, कीटयन्-न्ती, कीटयिष्यन्-न्ती-ती, कीटयमानः कीटयिष्यामाणः,कीट्-कीटौ-कीटः,कीटितः तम् वान्,कीटः,कीटयितव्यम्,कीटनीयम्,कीट्यम्, कीट्यमानः, कीटयितुम्, कीटना, कीटनम्, कीटयित्वा, प्रकीट्य।

**( १६४१ ) चूर्ण—सङ्कोचने**। (सिकुड़ना)। **सम्**—टुकड़े टुक़ड़े कर देना। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ चूर्णयति-ते। २ चूर्णयाञ्चकार-चक्रे। ३ चूर्णयिता। ४ चूर्णयिष्यति। ५ चूर्णयतु। ६ अचूर्णयत्। ७ चूर्णयेत्। ८ चूर्ण्यात्। ९ अचुचूर्णत्-त। १० अचूर्णयिष्यत्।

**कर्मणि**—चूणर्यते। अचूर्णि। **कृत्सु**—चूर्णनीयम्, चूर्णनम्, चूर्णकः-र्णिका, चूर्णी, चूर्णयिता-त्री, चूर्णितः, चूर्णना, चूर्णयितुम्, चूर्णयितव्यम्, चूर्णयित्वा, संचूर्ण्य, चूर्ण्य, चूर्णयन्-मानः, चूर्ण्यमानः, चूर्णयिष्यन्-ष्यमाणः, **कर्मणि**—चूर्णयिष्यमाणः।

**( १६४२ ) पूज—पूजायाम्**। (पूजा करना, अर्चना करना, सम्मान करना)। **सम्**—उत्तम प्रकार से आदर सत्कार करना, अच्छी तरह से पूजा करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ पूजयति-ते। २ पूजयाञ्चकार-चक्रे। ३ पूजयिता। ४ पूजयिष्यति-ते। ५ पूजयतु। ६ अपूजयत्। ७ पूजयेत्। ८ पूज्यात्। ९ अपूपुजत्-त। १० अपूजयिष्यत्।

**कर्मणि**—पूज्यते। **सनि**—पुपूजयिषति-ते। **कृत्सु**—पूजकः-जिका, पूजयिता-त्री, पूजयितव्यम्, पूजनीयम्, पूजनम्, पूजी, पूजितवान्, पूजा[१], पुनर्ण्यन्तस्य पूजना, पूजयितुम्, पूजयित्वा-सम्पूज्य,पूज्यः,पूजयन्-मानः,पूज्यमानः,पूजयिष्यन्-ष्यमाणः,कर्मणि– पूजिष्यमाणः, पूजितः,[२] राजपूजितः।

**( १६४३ ) अर्क—स्तवने**। तपन इत्येके। (प्रशंसा करना, स्तुति करना, गरम करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ अर्कयति-ते। २ अर्क्याञ्चकार-चक्रे। ३ अर्कयिता। ४ अर्कयिष्यति-ते। ५ अर्कयतु। ६ आर्कयत्-त। ७ अर्कयेत्। ८ अर्क्यात्। ९ **प्र.** आर्चिकत् आर्चिकताम् आर्चिकन्। **म.** आर्चिकः आर्चिकतम् आर्चिकत। **उ.** आर्चिकम् आर्चिकाव आर्चिकाम। १० अर्कयिष्यत्।

---

१ 'चिन्तिपूजिकथिकुम्बिचर्चश्च' (२-३-१०५) इति स्त्रियां भावादौ युजपवादोऽङ् प्रत्ययः।

२ मतिबुद्धिपूजार्थेम्यश्च (३-२-१८८) इति वर्तमाने क्तः। 'क्तस्य च वर्तमाने' (२-३-६७) इति कर्तरि षष्ठी। 'क्तेन च पूजायाम्' (२-२-१२) इति समासनिषेधः 'राजपूजितः' इति प्रयोगस्तु राज्ञा पूजितः इति तृतीया समासे साधुः।

**कृत्सु**—अर्ककः-र्किका, अर्कयिता-त्री, अर्कयन्-न्ती, अर्कयिष्यन्-न्ती-ती, अर्कयमानः, अर्कयिष्यमाणः, अर्क्[१]-अर्कौ-अर्कः, अर्कितः[२]-तम्-तवान्, अर्कः, अर्कयितव्यम्, अर्कणीयम्, अर्क्यम्, ईषदर्कः, दुरर्कः, स्वर्कः, अर्क्यमाणः, अर्कयितुम्, अर्कणा[३], अर्कणम्, अर्कयित्वा, समर्क्य।

**(१६४४) शुठ—आलस्ये।** (अलसाना, आलस्य करना)। अकर्म.। सेट्। उभय.।

१ शोठयति-ते। २ शोठयाञ्चकार-चक्रे। ३ शोठयिता। ४ शोटयिष्यति-ते। ५ शोठयतु। ६ अशोठयत्-त। ७ शोठयेत्। ८ शोठ्यात्। ९ अशूशुठत्। १० अशोठयिष्यत्।

**कृत्सु**—शोठकः-ठिका, शोठयिता-त्री, शोठयित्वा, प्रशोठ्य, शोठयितुम्, शोठः, शोठयन्-न्ती, शोठयिष्यन्-न्ती-ती, शोठयमानः, शोठयिष्यमाणः, शोठनम्।

**(१६४५) शुठि—शोषणे।** (सूखना, सुखाना, शोषण करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। शुण्ठयति-ते। शुण्ठयाञ्चकार-चक्रे। इत्यादि संशुण्ठितः।

**(१६४६) जुड—प्रेरणे।** (प्रेरणा करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ जोडयति-ते। २ जोडयाञ्चकार-चक्रे। ३ जोडयिता। ४ जोडयिष्यति-ते। ५ जोडयत्। ६ अजोडयत्-त। ७ जोडयेत्। ८ जोड्यात्। ९ अजूचुडत्-त। १० अजोडयिष्यत्।

**कृत्सु**—जोडकः-डिका, जोडयिता-त्री, विजोडितः।

**(१६४७) गज—शब्दार्थौ।** (शब्द करना)। अकर्म.। सेट्। उभय.।

१ गाजयति-ते। २ गाजयाचङ्कार-चक्रे। ३ गाजयिता। ४ गाजयिष्यति-ते। ५ गाजयतु। ६ अगाजयत्-त। ७ गाजयेत्। ८ गाज्यात्। ९ अजीगजत्-त। १० अगाजयिष्यत्।

**कृत्सु**—गाजकः-जिका, जागयिता-त्री, गाजयन्-न्ती, गाजयितुम्, गाजयितव्यम्, गाजनीयम्, गाजयिष्यमाणः, गाजितः-तम्-तवान्।

**(१६४८) मार्ज—शब्दार्थौ।** (शब्द करना)। अकर्म.। सेट्। उभय.।

१ मार्जयति-ते। २ मार्जयाञ्चकार-चक्रे। ३ मार्जयिता। ४ मार्जयिष्यति-ते। ५ मारजयतु। ६ अमार्जयत्-त। ७ मार्जयेत्। ८ मार्ज्यात्। इत्यादि।

**कृत्सु**—मार्जक-र्जिका, मार्जयिता-त्री, मार्जयित्वा, प्रमार्ज्य, मार्जयुतम्, मार्जनम्, मार्जयन्-न्ती, मार्जयिष्यन्-न्ती, मार्जमानः, मार्जयमानः, मार्जयिष्यमाणः मार्जः, मार्जितः-तम्-तवान्।

**(१६४९) मर्च—शब्दार्थौ।** (शब्द करना) अकर्म.। सेट्। उभय.। मार्चयति-ते। इत्यादि।

---

१ 'रात्सस्य' (८-२-२४) इति नियमात् ककारस्य संयोगान्तलोपो न।
२ 'निष्ठायां सेटि' (६-४-५२) इति णेर्लोपः।
३ 'ण्यासश्रन्थो युच्' (३-३-१०७) इति युच्।

**( १६५० ) घृ—प्रस्रवणे** । (बूद-बूद गिरना, चूना, टपकना) । अकर्म. । सेट् । उभय. । ऋकारान्त घारयति-ते ।

**( १६५१ ) पचि—विस्तारवचने** । (फैलाना, पसारना, प्रपञ्च करना) । सकर्म. । सेट् । उभय. ।

१ पञ्चयति-ते । २ पञ्चयाञ्चकार-चक्रे । ३ पञ्चयिता । ४ पञ्चयिष्यति । ५ पञ्चयतु । ६ अपञ्चयत्-त । ७ पञ्चयेत् । ८ पञ्च्यात् । ९ अपपञ्चत्-त । १० अपञ्चयिष्यत्-त ।

**कृत्सु**—पञ्चकः-पञ्चिका, पञ्चयिता-त्री, पञ्चयित्वा, प्रपञ्चय, पञ्चयन्-न्ती, पञ्चयिष्यमाणः, घञि - प्रपञ्च ।

**( १६५२ ) तिज—निशाने** । निशानं = तीक्ष्णी करणम् । (तीक्ष्ण करना, पैना करना, धार लगाना, **आ.** (तितिक्षते) क्षमा करना, सहना) । सकर्म. सेट्. उभय. ।

१ तेजयति-ते । २ तेजयाञ्चकार-चक्रे । ३ तेजयिता । ४ तेजयिष्यति-ते । ५ तेजयतु । ६ अतेजयत्-त । ७ तेजयेत् । ८ तेज्यात् । ९ **प्र.** अतीतिजत् अतीतिजताम् अतीतिजन् । **म.** अतीतिजः अतीतिजतम् अतीतिजत । **उ.** अतीतिजम् अतीतिजाव अतीतिजाम । १० अतेजयिष्यत् ।

**कृत्सु**—तेजकः-जिका, तेजयित्वा, प्रतेज्य, तेजयितुम्, तेजयितव्यम्, तेजनीयम्, णिजन्ते सनि तु– तितेजयिषकः-षिका, तितेजयिषिता-त्री, तितेजयिष्यन् ।

**( १६५३ ) कृत—संशब्दने** । (प्रसिद्ध करना, कीर्तित होना) । सकर्म. । सेट् । उभय. ।

१ कीर्तयति-ते । २ कीर्तयाञ्चकार-चक्रे । ३ कीर्तयिता । ४ कीर्तयिष्यति-ते । ५ कीर्तयतु । ६ अकीर्तयत्-त । ७ कीर्तयेत् । ८ कीर्त्यात् । ९ अचीकृतत्-त । अचिकीर्तत्-त । १० अकीर्तयिष्यत्-त ।

**सनि**—चिकीर्तयिषति-ते । **कृत्सु**—कीर्तकः-र्तिका कीर्तयिता-त्री, कीर्तयित्वा, प्रकीर्त्य, कीर्तनम्, कीर्तयितुम्, कीर्तयन्-न्ती, कीर्तयिष्यन्-न्ती, कीर्तिः, कीर्तना, कीर्तितः ।

**( १६५४ ) वर्ध—छेदनपूरणयोः** । (काटना, चीरना, भरना, पूर्ण करना) । सकर्म. । सेट् । उभय. ।

१ वर्धयति-ते । २ वर्धयाञ्चकार-चक्रे । ३ वर्धायिता । ४ वर्धयिष्यति-ते । ५ वर्धयतु । ६ अवर्धयत्-त । ७ वर्धयेत् । ८ वर्ध्यात् । ९ **प्र.** अववर्धत् अववर्धताम् अववर्धन् । **म.** अववर्धः अववर्धतम् अववर्धत । **उ.** अववर्धम् अववर्धाव अववर्धाम । १० अवर्धयिष्यत्-त ।

**कर्मणि**—वर्ध्यते । **कृत्सु**—वर्धकः-र्धिका, वर्धयिता-त्री, वर्धयितुम्, वर्धयित्वा, प्रवर्ध्य, वर्धयन्-न्ती, वर्धयिष्यन्, वर्धमानः, वर्धयिष्यमाणः ।

**( १६५५ ) कुबि—आच्छादने** । (आच्छादित करना, ढांकना) । सकर्म. । सेट् । उभय. । इदित् ।

१ कुम्बयति-ते। २ कुम्बयाञ्चकार-चक्रे। ३ कुम्बयिता। ४ कुम्बयिष्यति-ते। ५ कुम्बयतु। ६ अकुम्बयत्-त। ७ कुम्बयेत्। ८ कुम्ब्यात्। ९ अचुकुम्बत्-त। १० अकुम्बयिष्यत्-त।

**कृत्सु**—कुम्बकः-म्बिका, कुम्बयिता-त्री, कुम्बयितुम्, कुम्बयित्वा, प्रकुम्ब्य, कुम्बनम्।

**(१६५६-५७) लुबि-तुबि—अदर्शने**। (नष्ट होना, गुप्त होना, उदृश्य होना)। अकर्म.। सेट्। उभय.।

१ लुम्बयति-ते। तुम्बयति-ते। २ लुम्बयाञ्कार-चक्रे। तुम्बयाञ्चकार-चक्रे। ३ लुम्बयिता, तुम्वयिता। ४ लुम्बयिष्यति-ते। तुम्बयिष्यति-ते। ५ लम्बयतु। तुम्बयतु। ६ अलुम्बयत्-त। अतुम्बयत्-त। ७ लुम्बयेत्। तुम्बयेत्। ८ लुम्ब्यात्। तुम्ब्यात्। ९ अलुलुम्बत्। अतुतुम्बत्। १० अलुम्बयिष्यत्-त। अतुम्बयिष्यत्-त।

**कर्मणि**—लुम्ब्यते। तुम्ब्यते। **कृत्सु**—लुम्बकः, तुम्बकः, कर्मणि क्त प्रत्यये लुम्बितम्-तः-तवान्।

**(१६५८) ह्लप—व्यक्तायां वाचि**। (स्पष्टोच्चराण करना, बोलना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। ह्लपयति-ते। ह्लपयाञ्चकार-चक्रे। ९. अजिह्लपत्-त।

**(१६५९) चुटि—छेदने**। (कतरना, तोड़ना, चुटिया मारना, नोचना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ चुण्टयति-ते। २ चुण्टयाञ्चकार-चक्रे। ३ चुण्टयिता। ४ चुण्टयिष्यति। ५ चुण्टयतु। ६ अचुण्टयत्-त। ७ चुण्टयेत्। ८ चुण्ट्यात्। ९ अचुचुण्टत्-त। १० अचुण्टयिष्यत्।

**कर्मणि**—चुण्ट्यते। **कृत्सु**—चुण्टकः-ण्टिका, चुण्टयिता-त्री, चुण्टयित्वा, प्रचुण्ट्य, चुण्टयितुम्, चुण्टनम्, चुण्टयन्-न्ती, चुण्टयिष्यन्-न्ती-ती, चुण्टितः-तम्-तवान्।

**(१६६०) इल—प्रेरणे**। (प्रेरणा करना, प्रोत्साहित करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ एलयति-ते। २ एलयाञ्चकार-चक्रे। ३ एलयिता। ४ एलयिष्यति-ते। ५ एलयतु। ६ **प्र.** ऐलयत् ऐलयताम् ऐलयन्। **म.** ऐलयः ऐलयतम् ऐलयत। **उ.** ऐलयम् ऐलयाव ऐलयाम। ७ एलयेत्। ८ एल्यात्। ९ **प्र.** ऐलिलत् ऐलिलताम् ऐलिलन्। **म.** ऐलिलः ऐलिलतम् ऐलिलत। **उ.** ऐलिलम् ऐलिलाव ऐलिलाम। १० एलयिष्यत्-त।

**कृत्सु**—एलकः-लिका, एलयिता-त्री, एलयन्-न्ती, एलयिष्यन्-न्ती-ती, एलयमानः, एलयिष्यमाणः, एलितम्-तः, एलिलिषुः, एलयितव्यम्, एलनीयम्, एल्यम्, एल्यमानः, एलः, एलयितुम्, एलना, एलनम्, एलयित्वा, समेल्य।

**(१६६१) म्रक्ष—म्लेच्छने**। (मिश्रित करना, अशुद्ध करना)। अकर्म.। सेट्। उभय.। म्रक्षयति-ते। म्रक्षकः-क्षिका, म्रक्षयिता-त्री, अनयम्रक्-म्रक्षौ म्रक्षः।

**(१६६२) म्लेच्छ—अव्यक्तायां वाचि।** (अस्पष्ट या अशुद्ध बोलना, असंबद्ध सम्भाषण करना, म्लेच्छ भाषा बोलना, जंगली भाषा बोलना)। अकर्म.। सेट्। उभय.।

१ म्लेच्छयति-ते। २ म्लेच्छयाञ्चकार-चक्रे। ३ म्लेच्छंयिता। ४ म्लेच्छयिष्यति-ते। ५ म्लेच्छयतु। ६ अम्लेच्छयत्-त। ७ म्लेच्छयेत्। ८ म्लेछ्यात्। ९ **प्र.** अमिम्लेच्छत् अमिम्लेच्छताम् अमिम्लेच्छन्। **म.** अमिम्लेच्छः अमिम्लेच्छतम् अमिम्लेच्छत। **उ.** अमिम्लेच्छम् अमिम्लेच्छाव अमिम्लेच्छाम। १० अम्लेच्छयिष्यत्-त।

**कृत्सु**—म्लेच्छकः-च्छिका, म्लेच्छयिता-त्री, म्लेच्छयितुम्, म्लेच्छयित्वा, प्रम्लेच्छ्य, म्लेच्छयन्-न्ती, म्लेच्छयिष्यन्, म्लेच्छयितव्यम्, म्लेच्छनीयम्, म्लेच्छः, म्लेच्छितम्-तः-तवान्।

**(१६६३) ब्रूस—हिंसायाम्।** (मार डालना, दुःख देना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। बूसयति-ते।

**(१६६४) बर्ह—हिंसायाम्।** (मार डालना, दुःख देना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। बर्हयति-ते। बर्हकः-र्हिका-त्री, बर्हयिता-त्री, बर्हयितुम्, बर्हयित्वा-प्रबर्ह्य।

**(१६६५) गुर्द—पूर्व निकेतने।** (रहना, वास करना, बसना, आमन्त्रण करना)। अकर्म.। सेट्। उभय.।

१ गूर्दयति-ते। २ गूर्दयाञ्चकार-चक्रे। ३ गूर्दयिता-त्री। ४ गूर्दयिष्ति-ते। गूर्दयतु। ६ अगूर्दयत्-त। ७ गूर्दयेत्। ८ गूर्द्यात्। ९ अजुगूर्दत्-त। १० अगूर्दयिष्यत्।

**कृत्सु**—गूर्दकः-र्दिका, गूर्दयिता-त्री, गूर्दयिष्यन् इत्यादि।

**(१६६६) जसि—रक्षणे मोक्षणे च।** (संरक्षण करना, मुक्त करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। जंसयति-ते।

**(१६६७) ईड—स्तुतौ।** (स्तुति करना, प्रशंसा करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। १ ईडयति-ते। २ ईड्याञ्चकार-चक्रे। ३ ईडयिता। ४ इडयिष्यति-ते।

**कृत्सु**—ईडकः-डिका, ईडयिता-त्री, ईडयन्-न्ती, ईडयिष्यन्-न्ती-ती, ईडयमानः, ईडयिष्यमाणः, ईट्-इडौ-ईडः, ईडितम्-तः, ईडः, ईडयितव्यम्, ईडनीयम्, ईड्यम्, ईडयमानः, ईडयितुम्, ईडना, ईडनम्, ईडयित्वा, समीड्य।

**(१६६८) जसु—हिंसायम्।** (मार डालना, दुःख देना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ जासयति-ते। २ जासयाञ्चकार-चक्रे। ३ जासयिता। ४ जासयिष्यति-ते। ५ जासयितु। ६ अजासयत्-त। ७ जासयेत्। ८ जास्यात्। ९ अजीजसत्। १० अजासयिष्यत्-त।

**कर्मणि**—जास्यते। **कृत्सु**—जासकः-सिका, जासयिता-त्री, जासयन्-न्ती, जिजासयिषन्-न्ती, जसन्-न्ती, जिजसिषन्-न्ती, जासयिषन्-न्ती-ती, जासयमानः,

जासयिष्यमाणः, उज्जाः[1]-उज्जासौ-उज्जासः, जासितः, जिजासयिषितः, जस्तं[2]-तः, जासः, असुरजासी,[3] जासयितव्यम्, जासनीयम्, जास्यम्, जास्यमानः, जासयितुम्, जासना, जासनम्, (चौरस्य)[4] उज्जासन्, जासयित्वा, जसित्वा[5]-जस्त्वा, प्रजास्य।

**(१६६९) पिडि—सङ्घाते**। (ढेर करना, राशि करना)। अकर्म.। सेट्। उभय.।

पिण्डयति-ते। पिण्डयाञ्चकार-चक्रे। **कृत्सु**—पिण्डयिता-त्री। पिण्डयित्वा, प्रपिण्ड्य, संपिड्य, पिण्डयितुम्, पिण्डनम्, पिण्डकः-ण्डिका, पिण्डयमानः, पिण्डयिष्यमाणः, पिण्डयन्, पिण्डयिष्यन्।

**(१६७०) रुष—रोषे**। (क्रोध करना, गुस्सा करना)। अकर्म.। सेट्। उभय.।

१ रोषयति-ते। २ रोषयाञ्चकार-चक्रे। ३ रोषयिता। ४ रोषयिष्यति-ते। ५ रोषयतु। ६ अरोषयत्-त। ७ रोषयेत्। ८ रोष्यात्। ९ **प्र.** अरुरुषत्-त। अरुरुषताम् अरुरुषन्। **म.** अरुरुषः अरुरुषतम् अरुरुषत। **उ.** अरुरुषम्। १० अरोषयिष्यत्।

**कर्मणि**—रोष्यते। **कृत्सु**—रोषकः-षिका, रोषयिता-त्री, रोषयित्वा, प्ररोष्य, रोषयितुम्, रोषयितव्यम्, रोषनीयम्, रोषयन्-न्ती, रोषयिष्यन्-न्ती-ती, रोषयमानः, रोषयिष्यमाणः, रोषितः-तम्। रोषः, प्ररोषः।

**(१६७१) डिप—क्षेपे**। संघाते च (फेंकना, मारना, एकत्र करना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। आकुस्मीयः।

१ डेपयते। २ डेपयाञ्चक्रे। ३ डेपयित। **म.** डेपयितासे। ४ डेपयिताहे। ४ डेपयिष्यते डेपयिष्यते डेपयिष्यन्ते। **म.** डेपयिष्यसे डेपयिष्येथे डेपयिष्यध्वे। **उ.** डेपयिष्ये डेपयिष्यावहे डेपयिष्यामहे। ५ **प्र.** डेपयताम् डेपयेताम् डेपयन्ताम्। **म.** डेपयस्व डेपयेथाम् डपयेध्वम्। **उ.** डेपयै डेपयावहै डेपयामहै। ६ अडेपयत। ७ **प्र.** डेपयेत डेपयेताम् डेपयेरन्। **म.** डेपयेथाः डेपयेयाथाम् डेपयेध्वम्। **उ.** डेपयेय डेपयेवहि डेपयेमहि। ८ **प्र.** डेपयिषीष्ट डेपयिषीयास्ताम् डेपयिषीरन्। **म.** डेपयिषीष्ठाः डेपयिषीयास्थाम् डेपयिषीढ्वम्। **उ.** डेपयिषीध्वम्। **उ.** डेपयिषीय डेपयिषीवहे डिपयिषीमहि। ९ **प्र.** अडीडिपत अडीडिपेताम् अडीडिपन्त। **म.** अडीपथाः अडीडिपेथाम् अडीडिपध्वम्। **उ.** अडीडिपे। १० अडेपयिष्यत।

**(१६७२) ष्टूप—समुच्छ्राये**। (ढेर लगाना, राशि करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ स्तूपयति-ते। २ स्तूपयाञ्चकार-चक्रे। ३ स्तूपयिता। ४ स्तूपयिष्यति-ते। ५ स्तूपयतु। ६ अस्तूपयत्-त। ७ स्तूपयेत्। ८ स्तूप्यात्। ९ अतुस्तुपत्। १० अस्तूपयिष्यत्-त।

---

१ णिजन्तात् क्विपि उपधावृद्धौ क्विब्लोपे च, 'ससजुषो रुः' (८-२-६६) इति रुत्वे विसर्गे च रूपम्।
२ उदित्वेन क्त्वायामिड्विकल्पनात्, निष्ठायाम्, 'यस्य विभाषा' (७-२-१५) इतीण्णिषेधः।
३ 'इत्थं वदत्युसरजासिनि पिण्डितायस्सथेमाऽथ रोषितमतिः प्रतिमल्लडेपी।' (धातु.का. ३-३२)।
४ कर्मणः शेषत्वविवक्षायाम् 'जासिनिप्रहण—' (२-३-५६) इति षष्ठी भवति। तस्य च 'प्रतिपदविधाना षष्ठी न समस्यते' इति वचनात् समासाभावः फलम्।
५ 'उदितो वा' (७-२-५६) इति क्त्वायामिड्विकल्पः तेन रूपद्वयम्।

**कर्मणि**—स्तूप्यते। **कृत्सु**—स्तूपकः-पिका, स्तूपयिता-त्री, स्तूपयितुम्, स्तूपयित्वा, प्रस्तूप्य, प्रस्तूपनम्, स्तूपयन्-न्ती, स्तूपयिष्यन्-न्ती-ती, स्तूपयिष्यन्-न्ती, स्तूपयमानः, स्तूपयिष्यमाणः।

**( १६७३ ) चित—संचेतने**। (विचार कनरा, चिन्तन करना, स्मरण करना, याद करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। आकुस्मीयः।

१ **प्र.** चेतयते चेतयेते चेतयन्ते। **म.** चेतयसे चेतयेथे चेतयध्वे। **उ.** चेतये चेतयावहे चेतयामहे। २ **प्र.** चेतयाञ्चक्रे चेतयाञ्चक्राते चेतयाञ्चक्रिरे। **म.** चेतयाचकृषे चेतयाञ्चक्राथे चेतयाञ्चकृढ्वे। **उ.** चेतयाञ्चक्रे चेतयाञ्चकृवहे चेतयाञ्चकृमहे। ३ **प्र.** चेतयिता चेतयितारौ चेतयितारः। **म.** चेतयिसासे चेतयितासाथे चेतयिताध्वे **उ.** चेतयिताहे चेतयितास्वहे चेतयितास्महे। ४ **प्र.** चेतयिष्यते चेतयिष्येते चेतयिष्यते। **म.** चेतयिष्यसे चेतयिष्येते चेतयिष्यध्वे। **उ.** चेतयिष्ये चेतयिष्यावहे चेतयिष्यामहे। ५ **प्र.** चेतयताम् चेतयेताम् चेतयन्ताम्। **म.** चेतयस्व चेतयेथाम् चेतयध्वम्। **उ.** चेतेये चेतयावहै चेतयामहै। ६ **प्र.** अचेतयत अचेतयेताम् अचेतयन्त। **म.** अचेतयथाः अचेतयेथाम् अचेतयध्वम्। **उ.** अचेतये अचेतयावहि अचेतयामहि। ७ **प्र.** चेतयेत चेतयेताम् चेतयेरन्। **म.** चेतयथाः चेतयेयाथाम् चेतयेध्वम्। **उ.** चेतयेय चतयेवहि चेतयेमहि। ८ **प्र.** चेतयिषीष्ट चेतयिषीयास्ताम् चेतयिषीरन्। **म.** चेतयिषीष्ठाः चेतयिषीयास्थाम् चेतयिषीढ्वम्-ध्वम्। **उ.** चेतयिषीय चेतयिषीवहि चितयिषीमहि। ९ **प्र.** अचीचितत अचीचितेताम् अचीचितन्त। **म.** अचीचितथाः अचीचितेथाम् अचीचितध्वम्। **उ.** अचिचिते अचीचितावहि अचीचितामहि। १० **प्र.** अचेतयिष्यत् अचेतयिष्येताम् अचेतयिष्यन्त। **म.** अचेतयिष्यथाः अचेतयिष्येथाम्-अचेतयिष्यध्वम्। **उ.** अचेतयिष्ये अचेतमिष्यावहि अचितयिष्यामहि।

**कृत्सु**—चेतकः-तिका, चेतयिता-त्री, चेतयमानः, चेत्-चेतौ-चेतः, चेतितम्-तः, चेतः, चेतम्ः-चेतनः, चेतयितव्यम्, चेतनीयम्, चेत्यम्, चेत्यमानः, चेतयितुम्, चेतना, चेतनम्, चेतयित्वा, प्रचेत्य।

**( १६७४ ) दशि—दंशने**। (ढंसना, काटना, दंश मारना)। सकर्म॥ सेट्। आत्मने.। आकुस्मीयः।

१ दंशयते। २ दंशयाञ्चक्रे। ३ दंशयिता। ४ दंशयिष्यति। ५ दंशयताम्। ६ अदंशयत। ७ दंशयेत। ८ **प्र.** दंशयिषीष्ट दंशयिषीयास्ताम् दंशयिषीरन्। **म.** दंशयिषीष्ठाः। **उ.** दंशयिषीय। ९ **प्र.** अददंशत अददंशेताम् अददंशन्त। **म.** अददंशथाः अददंशेथाम् अददंशध्वम्। **उ.** अददंशे अददंशावहि अददंशामहि। १० अददंशयिष्यत।

**कृत्सु**—दंशकः-शिका, दंशयिता-त्री, दंशयन्-न्ती, दंशयिष्यन्-न्ती-ती, दंशयमानः, दंशयिष्यमाणः, देंशितः, दंशः, दंशयितव्यम्, दंशनीयम्, दंश्यम्, दंश्यमानः, दंशनम्, दंशयित्वा, संदंश्य।

**( १६७५ ) दसि—दर्शनदंशनयोः**। (देखना, काटना, डसना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। आकुस्मीयः। दंसयते। दंसयाञ्चक्रे। इत्यादि (१६७४) वत्।

**( १६७६ ) डप—संघाते**। (एकत्र करना, बटोरना, राशि करना)। सक.। सेट्। आत्मने.। आकुस्मीयः।

१ डापयते। २ डापयाञ्चक्रे। ३ डापयिता। ४ डापयिष्यते। ५ डापयताम्। ६ अडापयत। ७ डापयेत। ८ डापयिषीष्ट। ९ अडीडपत। १० अडापयिष्यत।

**कृत्सु**—डापकः-पिका,डापयित्वा,प्रडाप्य,डापयितुम्,डापयितव्यम्,डापनीयम्,डापनम्, डापयिता-त्री।

**( १६७७ ) डिप—क्षेपे संघाते त**। (फेंकना, एकत्र करना, बटोरना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। आकुस्मीणः। डेपयते। डेपयाचक्रे। इत्यादि।

**( १६७८ ) तत्रि—कुटुम्बधारणे**। कुटुम्बः = परिवारः। (फैलाना, कुटुम्ब पोषण करना, प्रधान होना)। अकर्म.। सेट्। आत्मने.। आकुस्मीयः।

१ तन्त्रयते। २ तन्त्रयाचक्रे। ३ तन्त्रयिता। ४ तन्त्रयिष्यते। ५ तन्त्रयताम्। ६ अतन्त्रयत। ७ तन्त्रयेत। ८ तन्त्रयिषीष्ट। ९ **प्र.** अततन्त्रत अततन्त्रेताम् अततन्त्रन्त। **म.** अततन्त्रथाः अततन्त्रेथाम्, अततन्त्रध्वम्। **उ.** अततन्त्रे अततन्त्रेवहि। अततन्त्रेमहि। १० अतन्त्रयिष्यत। इदित्वाण्णिजभावे तन्त्रति।

**सनि**—तितन्त्रयिषते। **कृत्सु**—तन्त्रकः-न्त्रिका, तन्त्रयिता-त्री, तन्त्रयमाणः,[१] तन्त्रयित्वा, तन्[२]-तन्त्रौ-तन्त्रः, तन्त्रितः-तन्त्रः, स्वतन्त्रः, तन्त्रयितव्यम्, तन्त्रणीयम्, तन्त्र्यम्, तन्त्रयितुम्, तन्त्रणा, तन्त्रणम्, प्रतन्त्र्य।

**( १६७९ ) मत्रि—गुप्तपरिभाषणे**। (गुप्त भाषण करना)। आ—सत्कार करना, सम्मान करना, **नि**—आमन्त्रण करना, बुलाना। सकर्म.। सेट्। आत्मने। आकुस्मीयः।

१ मन्त्रयते। २ मन्त्रयाञ्चक्रे। ३ मन्त्रयिता। ४ मन्त्रयिष्यते। ५ मन्त्रयताम्। ६ अमन्त्रयत। ७ मन्त्रयेत। ८ मन्त्रयिषीष्ट। ९ अममन्त्रत। १० अमन्त्रयिष्यत।

**कर्मणि**—मन्त्र्यते। **सनि**—मिमन्त्रयिषते। **कृत्सु**—मन्त्री,[३] मन्त्रः[४]। शेषं तन्त्रि धातुवत्।

**( १६८० ) स्पश—ग्रहणसंश्लेषणयोः** (लेना, संयोग करना, जोड़ना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। आकुस्मीयः। स्पाशयते। निष्ठायाम् '**वा दान्तशान्तपूर्णदस्तस्पष्ट–**' (७-२-२०) इति निपातनात् स्पष्टः-स्पाशित इति रूपद्वयम् ल्यपि प्रस्पाश्य।

१ 'आकुस्मादात्मनेपदिनः' इति वचनात् आत्मनेपदं शानच्।
२ क्विपि, णिलोपे, पूर्वरेफस्य संयोगान्तलोपे, पश्चात् तकारस्यापि संयोगान्तलोपः।
३ 'ग्रह्यादिषु (३-१-१३४) 'मन्त्री' इति पाठात् णिनि प्रत्ययः।
४ 'एरच्' (३-३-५६) इति भावेऽच् प्रत्ययः।

**(१६८१) तर्ज—तर्जने।** (धिक्कारना, निन्दा करना, डराना, धुड़कना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। आकुस्मीयः।

१ तर्जयते। २ तर्जयाञ्चक्रे। ३ तर्जयिता। ४ तर्जयिष्यते। ५ तर्जयताम्। ६ अतर्जयत। ७ तर्जयेत। ८ तर्जयिषीष्ट। ९ अततर्जत। १० अतर्जयिष्यत।

**(१६८२) भर्त्स—तर्जने।** (धिक्कारना, निन्दा करना, डराना, धुड़कना)। सकर्म.। सेट्। आत्म.। आकुस्कीयः। भर्त्सयते। भतर्सयाञ्चक्रे। इत्यादि। भर्त्सकः-सिका, प्रभर्त्सः, भर्त्सयमानः।

**(१६८३) बस्त—अर्दने।** (दुःख देना, मार डालना, लजाना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। आकुस्मीयः। बस्तयते।

**(१६८४) गन्द—अर्दने।** (दुःखदेना, मार डालना, लजाना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। गन्दयते।

**(१६८५) विष्क—हिंसायाम्।** (मार डालना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। विष्कयते।

**(१६८६) निष्क—परिमाणे।** (मापना, तोलना, गिनना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। आकुस्मीयः।

१ निष्कयते। २ निष्कयाञ्चक्रे। ३ निष्कयिता। ४ निष्कयिष्यते। ५ निष्कयताम्। ६ अनिष्कयत। ७ निष्कयेत। ८ निष्यकयिषीष्ट। ९ **प्र.** अनिनिष्कत अनिनिष्केताम् अनिनिष्कन्त। **म.** अनिनिष्कथाः अनिनिष्केथाम् अनिनिष्कध्वम्। **उ.** अनिनिष्के अनिनिष्कावहि अनिनिष्कामहि। १० अनिष्कयिष्यत

**कृत्सु**—निष्ककः-ष्किका, निष्कयित्वा, निष्कयितुम्, निष्कनम्, निष्कयितुम्, निष्कितम्।

**(१६८७) लल—ईप्सायाम्।** (इच्छा करना, चाहना, रमण करना, रति करना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। आकुस्मीयः। लालयते।

**(१६८८) कूण—सङ्कोचे।** (संकुचित होना, ऐंठना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः।

१ कूणयति-ते। २ कूणयाञ्चकार-चक्रे। ३ कूणयिता। ४ कूणयिष्यति-ते। ५ कूणयतु। ६ अकूणयत्-त। ७ कूणयेत्-त। ८ कूण्यात्। ९ अचूकुणत्-त। १० अकूणयिष्यत्।

**कृत्सु**—कूणकः-णिका। कूणयिता-त्री, कूणयित्वा, कूणयितुम्, कूणनम्, कूणयन्-न्ती, कूणयिष्यन्-न्ती-ती, कूणः।

**(१६८९) तूण—पूरणे।** (भरना, पूर्ण करना)। सकर्म। सेट्। आत्मने.। आकुस्मीयः।

१ तूणयते। २ तूणयाञ्चक्रे। ३ तूणयिता। ४ तूणयिष्यते। ५ तूणयताम्। ६ अतूणयत। ७ तूणयेत। ८ तूणयिषीष्ट। ९ अतूतुणत। १० अतूणयिष्यत।

**कृत्सु**—तूणकः-णिका, तूणयिता-त्री, तूणयित्वा, प्रतूण्य, तूणयितुम्, तूणनम्, तूणयन्-न्ती, तूणयिष्यन्-न्ती-ती, तूणयमानः, तूणयिष्यमाणः।

**(१६९०) भ्रूण**—आशाविशङ्कयोः। (आशा करना, भरोसा करना, शङ्का करना, गर्भ धारण करना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। आकुस्मीयः।

१ भ्रूणयते। २ भ्रूणयाञ्चक्रे। ३ भ्रूणयिता। ४ भ्रूणयिष्यते। ५ भ्रूणयताम्। ६ अभ्रूणयत। ७ भ्रूणयेत। ८ भ्रूणयिषीष्ट। ९ अबुभ्रूणत। १० अभ्रूणयिष्यत।

**कृत्सु**—भ्रूणकः-णिका, भ्रूणयिता-त्री, भ्रूणयितुम्, भ्रूणयित्वा, प्रभ्रूण्य, भ्रूणनम्, भ्रूणयन्-न्ती, भ्रूणयिष्यन्, भ्रूणयमाणः, भ्रूणयिष्यिमाणः, भ्रूणितः-तम्, भ्रूणः।

**(१६९१) शठ**—श्लाघायाम्। प्रशंसा करना, स्तुति करना। सकर्म.। सेट्. आत्मने.। आकुस्मीयः। शाठयते शाठयाञ्चक्रे इत्यादि।

**(१६९२) यक्ष**—पूजायाम्। (आराधना करना, पूजा करना, सत्कार करना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.।

१ यक्षयते। २ यक्षयाञ्चक्रे। ३ यक्षयिता। ४ यक्षयिष्यते। ५ यक्षयताम्। ६ अयक्षयत। ७ यक्षयेत। ८ यक्षयिषीष्ट। ९ अययक्षत। १० अयक्षयिष्यत।

**कर्मणि**—यक्ष्यते। कृत्सु—यक्षकः-क्षिका, यक्षयिता-त्री, यक्षयितुम्, यक्षयित्वा, प्रयक्ष्य, यक्षयितव्यम्, यक्षणीयम्, यक्षणम्, यक्षयन्-न्ती-ती, यक्षयितः-तम् यक्षयिष्यन्-न्ती-ती, यक्षयमानः, यक्षयिष्यमाणः।

**(१६९३) स्यम**—वितर्के। (चिन्तन करना, मनन करना, तर्क वितर्क करना, विचार करना)। सक.। सेट्। आत्मने.। आकुस्मीयः। स्यामयते। स्यामयाञ्चक्रे।

**कृत्सु**—स्यामकः-मिका, स्यामयिता-त्री, स्यामयितुम्, स्यामयित्वा, प्रस्याम्य, स्यामयमानः, स्यामयिष्यमानः, स्यामयन्-न्ती, स्यामयिष्यन्-न्ती-ती, स्यामयमानः, स्यामयिष्यमाणः, युचि-स्यामनः।

**(१६९४) गूर**—उद्यमने। (प्रयत्न करना, उद्योग करना) सकर्म.। सेट्। आत्मने.। आकुस्मीयः।

१ गूरयते। २ गूरयाञ्चक्रे। ३ गूरयिता। ४ गूरयिष्यते। ५ गूरयताम्। ६ अगूरयत। ७ गूरयेत। ८ गूरयिषीष्ट। ९ अजूगुरत। १० अगूरिष्यत।

**(१६९५) शम**—आलोचने। (प्रसिद्ध करना, स्पष्टता से दिखाना, जाहिर कना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। आकुस्मीय।

१ शामयते। २ शामयाञ्चक्रे। ३ शामयिता। ४ शामयिष्यते। ५ शामयताम्। ६ अशामयत। ७ शामयेत। ८ शामयिषीष्ट। ९ अशीशमत। १० अशामयिष्यत।

**कृत्सु**—शामकः-मिका, शामयिता-त्री, शामः, शामयित्वा, प्रशाम्य, शामयितुम्, शामनम्, शामयमानः, शामयिष्यमानः, शामयन्-न्ती, शामयिष्यमाणः, शामा-कृष्णवर्णा-शाकविशेषः।

**( १६९६ ) लक्ष—आलोचने**। (आलोचना करना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। आकुस्मीयः।

१ लक्षयते। २ लक्षयाञ्चक्रे। ३ लक्षयिता। ४ लक्षयिष्यते। ५ लक्षयताम्। ६ अलक्षयत। ७ लक्षयेत। ८ लक्षयिषीष्ट। ९ अललक्षत। १० अलक्षयिष्यत।

**कृत्सु**—लक्षकः-क्षिका, लक्षयिता-त्री, लक्षयित्वा, लक्षयितुम्, लक्षयितव्यम्, लक्षणीयम्, लक्षणम्, लक्षः, लक्षयन्, लक्षयिष्यन्, लक्षयणः, लक्षयमानः, लक्षयिष्यमाणः।

**( १६९७ ) कुत्स—अवक्षेपणे निन्दने च**। (दोष लगाना, निन्दा करना, तिरस्कार करना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। आकुस्मीयः।

१ कुत्सयते। २ कुत्सयाञ्चक्रे। ३ कुत्सयिता। ४ कुत्सयिष्यते। ५ कुत्सयताम्। ६ अकुत्सयत। ७ कुत्सयेत। ८ कुत्सयिषीष्ट। ९ **प्र.** अचुकुत्सत अचुकुत्सेताम् अचुकुत्सन्त। **म.** अचुकुत्सथाः अचुकुत्सेथाम् अचुकुत्सध्वम्। **उ.** अचुकुत्से उचुकुत्सावहि अचुकुत्सामहि। १० अकुत्सयिष्यत।

**कृत्सु**—कुत्सकः-त्सिका, कुत्सयिता-त्री, कुत्सयमानः, कुत्सयिष्यमाणः, कुत्[१]-कुत्सौ-कुत्सः, कुत्सितुम्[२]-तः, कुत्सः-कुत्सनः,[३] कौत्सः,[४] कुत्सयितव्यम्, कुत्सनीयम्, कुत्स्यम्, कुत्सयितुम्, कुत्सयित्वा, प्रकुत्स्य। कुत्सना, कुत्सा[५]।

**( १६९८ ) त्रुट—छेदने**। (कतरना, तोड़ना, टूटना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। आकुस्मीयः।

१ त्रोतटयते। २ त्रोट्याञ्चक्रे। ३ त्रोटयिता। ४ त्रोटयिष्यते। ५ त्रोटयताम्। ६ अत्रोटयत। ७ त्रोटयेत। ८ त्रोटयिषीष्ट। ९ अतुत्रुटत। १० अत्रोटयिष्यत।

**कृत्सु**—त्रोटकः-टिका, त्रोटयिता-त्री, त्रोटयितव्यम्, त्रोटनीयम्, त्रोटयमानः, त्रोटयिष्यमाणः, त्रोट्-त्रोटौ-त्रोटः, त्रोटितः-तम्, त्रोटः, त्रोट्यम्, त्रोट्यमानः, त्रोटयितुम्, त्रोटना, त्रोटनम्।

---

१ 'संयोगान्तस्य लोपः' (८-२-२३) इति सकारलोपः।

२ 'निष्ठायां सेटि' (६-४-५२) इति णेर्लोपः।

३ 'अनुदात्तेतश्च हलादेः' (३-२-१४९) इति युच् ताच्छीलिकः

४ कुत्सः = तन्नामा ऋषिः। तस्यापत्यामित्यर्थे ऋष्यण्।

५ 'कुत्सश्च कुत्सायाम्' (४-१-१६५) इत्यत्र निर्देशबलात् ण्यन्तादपि बाहुलकात् भावे स्त्रियामङ्। केचितु— 'अनित्याण्यन्ताश्चुरादयः' इत्याश्रित्य कुत्सा— 'कुत्सितव्यमिदं ज्ञेयम्—' इत्यादि प्रयोगाणां साधुत्वमाचक्षते। 'चिन्तिपूजिकथिकुम्बिचर्चश्च' (३-३-१०५) इत्यत्र चकारस्यानुक्तसमुच्चयार्थकत्वात् युजपवादोऽङ् इति क्षीरस्वामी।

**( १६९९ ) गल—स्रवणे**। (टपकना)। **अव**—नीचे गिरना, **वि**—नजदीक जाना, मदद लेना। अकर्म.। सेट्। आत्मने.। आकुस्मीयः। गालयते। ९. अजीगलत।

**( १७०० ) भल—आभण्डने**। (निरूपण कना, वाद विवाद करना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। प्रायेणायं निपूर्वः।

१ निभालयते। २ निभालयाञ्चक्रे। ३ निभालयिता। ४ निभालयिष्यते। ५ निभालयताम्। ६ अभालयत। ७ निभालयेत। ८ निभालयिषीष्ट। ९ अबीभलत। १० अभालयिष्यत।

**कृत्सु**—निभालकः-लिका, निभालयिता-त्री, निभालयितुम्, ल्युटि-निभालनम्, निभालयित्वा, निभालनीयम्, निभालयमानः, निभालयिष्यमाणः, निभालनम्, निभालः, निभालना।

**( १७०१ ) कूट—आप्रदाने अवसादने च**। (नही देना, छल करना, अस्पष्ट गूढ या मालूम न हो ऐसा करना, राशि करना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। आकुस्मीयः।

१ कूटयते। २ कूटयाञ्चक्रे। ३ कूटयिता। ४ कूटयिष्यते। ५ कूटयताम्। ६ अकूटयत। ७ कूटयेत। ८ कूटयिषीष्ट। ९ अचूकूटत। १० अकूटयिष्यत।

**कर्मणी**—कूट्यते। **कृत्सु**—कूटकः-टिका, कूटयिता, कूटयमानः[1], कूटयिष्यमाणः, कूट्-कूटौ-कूटः, कूटितम्-तः, कूटः, कूटयितव्यम्, कूटनीयम्, कूट्यम्, कुट्यमानः, साङ्कुटिनम्,[2] कूटयितुम्, कूटना, कूटनम्, कूटयित्वा, सङ्कूट्य।

**( १७०२ ) कुट्ट—प्रतापने**। (गरम करना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। आकुस्मीयः। कुट्टयते। अचुकुट्टत। सर्वं 'कूट' धातु (१७०१) वत्।

**( १७०३ ) वञ्चु—प्रलम्भने**। (ठगना, फंसाना, प्रतारणा करना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। आकुस्मीयः।

१ वञ्चयते। २ वञ्चयाञ्चक्रे। ३ वञ्चयिता। ४ वञ्चयिष्यते। ५ वञ्चयताम्। ६ अवञ्चयत। ७ वञ्चयेत। ८ वञ्चयिषीष्ट। ९ अववञ्चत। १० अवञ्चयिष्यत।

**कृत्सु**—वञ्चकः-चिका, वञ्चयिता-त्री, वञ्चयितुम्, वञ्चयित्वा, वञ्चयितव्यम्, वञ्चनीयम्, वञ्चनम्, वञ्चयमानः, वञ्चयिष्यमाणः, वञ्चयन्-न्ती, वञ्चिष्यन्-न्ती-ती।

**( १७०४ ) वृष—शक्तिबन्धने**। शक्तिबन्धनं = प्रजनसामथर्यम्, शक्तिसम्बन्धश्च। (गर्भवती होना, अमानवी परक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पति करने का समर्थ होना)। अकर्म.। सेट्। आत्मने.। आकुस्मीयः। वर्षयते।

**( १७०५ ) मद—तृप्तियोगे**। (तृप्त करना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। आकुस्मीयः

१ 'आ कुस्मादात्मनेपदिनः' इति गणसूत्रं चुरादौ। तेन शानजेव।
२ 'अभिविधौ भाव इनुण्' (३-३-४४) इतीनुण्। 'अण् इनुणः' (५-४-१५) इति नित्यमण् तद्धितः। 'इनण्यनपत्ये' (६-४-१६४) इत्यनेन प्रकृतिभावः।

१ मादयते। २ मादयाञ्चक्रे। ३ मादयिता। ४ मादयिष्यते। ५ मादयताम्। ६ अमादयत। ७ मादयेत। ८ मादयिषीष्ट। ९ अमीमदत। १० अमादयिष्यत।

**कर्मणि**—माद्यते। **कृत्सु**—मादकः-दिका, मादयिता-त्री, मादयमानः, मादयिष्यमाणः, मादयन्-न्ती, मादयिष्यन्-न्ती-ती, मादयितुम्, मादयितव्यम्, मादनीयम्, मादितः-तम्, मादः, मदः।

**( १७०६ ) दिवु—परिपूजने**। दुःख देना, शोक करना। अकर्म.। सेट्। आत्मने.। देवयते।

**( १७०७ ) गृ—विज्ञाने**। (समझना, जानना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। ऋकारान्तः। आकुस्मीयः।

१ गारयते। २ गारयाञ्चक्रे। ३ गारयिता। ४ गारयिष्यते। ५ गारयताम्। ६ अगारयत। ७ गारयेत। ८ गारयिषीष्ट। ९ अजीगरत। १० अगारयिष्यत।

**( १७०८ ) विद—चेतनाख्याननिवासेषु**। (शरीर की सुध रखना, समझना, जानना)। **नि-वि-निर्**—समझाके कहना, **प्रति**—देना, अर्पण करना। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। आकुस्मीयः।

१ वेदयते। २ वेदयाञ्चक्रे। ३ वेदयिता। ४ वेदयिष्यते। ५ वेदयताम्। ६ अवेदयत। ७ वेदयेत। ८ वेदयिषीष्ट। ९ **प्र.** अवीविदत अवीविदेताम् अवीविदन्त। **म.** अवीविदथाः अवीविदेथाम् अवीविदध्वम्। **उ.** अवीविदे अवीविदावहि अवीविदामहि। १० अवेदयिष्यत।

**कृत्सु**—वेदकः-दिका, वेदयिता-त्री, वेदयित्वा, वेदयितुम्, वेदयितव्यम्, वेदनीयम्, वेदयमानः, वेदयिष्यमाणः, वेदयन्-न्ती, वेदयिष्यन्-न्ती-ती, वेदः, वेदनम्, वेद्यम्।

**( १७०९ ) मान (मन) —स्तम्भे**। स्तम्भः = गर्वः। (गर्व करना, स्थिर करना, गर्विला होना)। अकर्म.। सेट्। आत्मने.। आकुस्मीयः।

१ मानयते। २ मानयाञ्चक्रे। ३ मानयिता। ४ मानयिष्यते। ५ मानयताम्। ६ अमानयत। ७ मानयेत। ८ मानयिषीष्ट। ९ अमीमनत। १० अमानयिष्यत।

**कृत्सु**—मानकः-निका, मानयिता-त्री, मानः, मानयन्-न्ती, मानयिष्यन्-न्ती-ती, मानयितुम्, मानयित्वा, आमान्य, मानयितव्यम्, माननीयम्, मानितः-तम्।

**( १७१० ) यु—जुगुप्सायाम्**। (अपमान करना, दोष लगाना, निन्दा करना)। अकर्म.। सेट्। आत्मने.। उकारान्तः आकुस्मीयः। १ यावयते। २ यावयाञ्चक्रे। ९ अयीयवत।

**( १७११ ) कुस्म—कुत्सितस्मये**। (अयोग्य रीति से हंसना)। अकर्म.। सेट्। आत्मने.।

१ कुस्म्यते। २ कुस्मयाञ्चक्रे। ३ कुस्मयिता। ४ कुस्मयिष्यते। ५ कुस्मयताम्। ६ अकुस्मयत। ७ कुस्मयेत। ८ कुस्मयिषीष्ट। ९ अचुकुस्मत। १० अकुस्मयिष्यत।

**कर्मणि**—कुस्मयते। **कृत्सु**—कुस्मकः-स्मिका, कुस्मयिता-त्री, कुस्मयमानः, कुस्मयिष्यमाणः, कूः-कुस्मौ-कुस्मः, कुस्मितम्-तः, कुस्मः, कुस्मनः, कुस्मयितव्यम्, कुस्मनीयम्, कुस्म्यमानः, कुस्मयितुम्, कुस्मना, कुस्मनम्, कुस्मयित्वा, प्रकुस्म्य।

( १७१२ ) **चर्च—अध्ययने**। (पढ़ना, अध्ययन करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। चर्चयति-ते। ९ अचचर्चत्-त। **सनि**—चिचर्चयिषति-ते। चर्चा, चर्चितम्।

( १७१३ ) **बुक्क—भषणे**। (भौंकना, कुत्ते के समान शब्द करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ बुक्कयति-ते। २ बुक्कयाञ्चकार-चक्रे। ३ बुक्कयिता। ४ बुक्कयिष्यति-ते। ५ बुक्कयतु-बुक्कयताम्। ६ अबुक्कयत्-त। ७ बुक्कयेत्-त। ८ बुक्क्यायात् बुक्कयिषीष्ट। ९ अबुबुक्कत्-त। १० अबुक्कयिष्यत्-त।

**कृत्सु**—बुक्ककः-बुक्किका, बुक्कयिता-त्री, बुक्कयन्-न्ती, बुक्कयिष्यन्-न्ती-ती, बुक्कयितुम्, बुक्कयित्वा, प्रबुक्क्य, बुक्कयितव्यम्, बुक्कनीयम्।

( १७१४ ) **शब्द—उपसर्गादाविष्कारे च**। (शब्द करना, भाषण करना, प्रकट करना, **प्र-प्रति-वि**—स्पष्ट बोलना, वचन देना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ शब्दयति-ते। २ शब्दयाञ्चकार-चक्रे। २ शब्दयिता। ३ शब्दयिष्यति-ते। ५ शब्दयतु-शब्दयताम्। ६ अशब्दयत्-त। ७ शब्दयेत्-त। ८ शब्द्यात्-शब्दयिषीष्ट। ९ अशशब्दत्-त। १० अशब्दयिष्यत्-त।

( १७१५ ) **कण—निमीलने**। (आंखे मूंदना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। काण्यादि।

१ काणयति-ते। २ काणयाञ्चकार-चक्रे। ३ काणयिता। ४ काणयिष्यति-ते। ५ काणयतु-काणयताम्। ६ अकाणयत्-त। ७ काणयेत्-त। ८ काण्यात्-काणयिषीष्ट। ९ अचीकणत्-अचकाणत्-त। १० अकाणयिष्यत्।

**कृत्सु**—काणकः-णिका, काणयिता-त्री, काणयन्-न्ती, काणयिष्यन्-न्ती-ती, काणयमानः, काणयिष्यमाणः, काण्-काणौ-काणः, काणितम्-तः, काणः, काणयितव्यम्, काणनीयम्, काण्यम्, काण्यमाणः, काणयुतम्, काणना, काणनम्, काणयित्वा, सङ्काण्य।

( १७१६ ) **जभि—नाशने**। (नष्ट करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ जम्भयति-ते। २ जम्भयाञ्चकार-चक्रे। ३ जम्भयिता। ४ जम्भयिष्यति-ते। ५ जम्भयतु-जम्भयताम्। ६ अजम्भयत्-त। ७ जम्भयेत्-त। ८ जम्भयात्-जम्भयिषीष्ट। ९ अजजम्भत्-त। १० अजम्भयिष्यत्-त।

**कृत्सु**—जम्भकः-म्भिका, जम्भयिता-त्री, जम्भयन्-न्ती, जम्भयित्वा, जम्भयितुम्, जम्भनम्।

**( १७१७ ) षूद—क्षरणे** । हिंसायाम् च । (टपकना, झरना । घाव करना, मार डालना, मारने का यत्न करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ सूदयति-ते। २ सूदयाञ्चकार-चक्रे। ३ सूदयिता। ४ सूदयिष्यति-ते। ५ सूदयतु-सूदयताम्। ६ असूदयत्-त। ७ सूदयेत्-त। ८ सूद्यात्-सूदयिषीष्ट। ९ असूषुदत्-त। १० असूदयिष्यत्-त।

**कृत्सु**—सूदकः-दिका, सूदयिता-त्री, सूदयित्वा, सूदनम्, सूदयितुम्, सूदयितव्यम्, सूदयन्-न्ती, सूदयिष्यन्-न्ती-ती, सूदयमानः, सूदयिष्यमाणः, सूदितः-तम्, मधुसूदनः[1], सूदः,[2] सूदिता[3]।

**( १७१८ ) जसु—ताडने** । (ताड़ना करना, उपेक्षा करना, मारना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ जासयति-ते। २ जासयाञ्चकार-चक्रे। ३ जासयिता। ४ जासयिष्यति-ते। ५ जासयतु-जासयताम्। ६ अजासयत्-त। ७ जासयेत्-त। ८ जास्यात्-जासयिषीष्ट। ९ अजीजसत्-त। १० अजासयिष्यत्-त।

**कृत्सु**—जासकः-सिका, जासयिता-त्री, जासयन्-न्ती, जासयमानः, जासयिष्यमाणः, उज्जाः-उज्जासौ, उज्जासः, जासितः, जिजासयिषितः, जस्तं-तः, जासः, असुरजासी, जासयितव्यम्, जासनीयम्, जास्यम्, जास्यमानः, जासयितुम्, जासना, जासयित्वा, प्रजास्य।

**( १७१९ ) पश—बन्धने** । (बांधना, बेड़ी डालना, फांस लगाना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ पाशयति-ते। २ पाशयाञ्चकार-चक्रे। ३ पाशयिता। ४ पाशयिष्यति-ते। ५ पाशयतु-पाशयताम्। ६ अपाशयत्-त। ७ पाशयेत्-त। ८ पाश्यात्-पाशयिषीष्ट। ९ अपीपशत्-त। १० अपाशयिष्यत्-त।

**कृत्सु**—पाशकः-शिका, पाशयिता-त्री, अस्य धातोः णिज् विकल्पो नास्तीति विशेषः। पाशितवान्।

**( १७२० ) अम—रोगे** । (बीमार होना, रोग ग्रस्त होना, अजीर्ण रोग युक्त होना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ आमयति-ते। २ आमयाञ्चकार-चक्रे। ३ आमयिता। ४ आमयिष्यति-ते। ५ आमयतु-आमयताम्। ६ आमयत्-त। ७ आमयेत्-त। ८ आम्यात्-आमयिषीष्ट। ९

---

१ मधु सूदयतीति मधुसूदनः = विष्णुः। कर्मण्युपपदेऽणं बाधित्वा नन्द्यादिषु (३-१-१३४) पाठात् कर्तरि ल्युः

२ सूदयतीति सूदः = पाचकः।

३ अनित्यण्यन्तत्वात् चुरादीनां णिजभावपक्षे अनुदात्तेत्वपक्षे 'सूददीपदीक्षश्च' (३-२-१५३) इति निषेधात् न युच् प्रत्ययः 'तृन्' (३-२-१३५) इति तृन्नेव इति केचित्। 'वस्तुतो णिजभावपक्षे शेषात् कर्तरि—' (३-१-७८) इति परस्मैपदस्यैवानुशासनात् न युचः प्रसक्तिः, न वा युचो निषेधस्येति बोध्यम्।

प्र. आमिमत्-त आमिमताम् आमिमन्। म. आमिमः आमिमतम् आमिमत। उ. आमिमम् आमिमाव आमिमाम। १० आमयिष्यत्-त।

**कृत्सु**—आमकः-मिका, आमयिता[१]-त्री, आमयन्[२]-न्ती, आमयिष्यन्-न्ती-ती, आमयमानः, आमयिष्यामानः, आन्[३]-आमौ-आमः, आमितम्-तः-तवान्, आमः, आमयः[४], आमयितव्यम्, आमनीयम्, आम्यम्, आम्यमानः, आमयितुम्, आमना, आमनम्, आमयित्वा, समाम्य।

**(१७२१) चट**—भेदने। (मार डालना, तोड़ना, **उत्**—उच्चाटन करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। चाटयति-ते। चाटयाञ्चकार-चक्रे इत्यादि।

**कृत्सु**—चाटकः-टिका, चाटयिता-त्री, चाटयितुम्, चाटयितव्यम्, चाटनीयम्, चाट्यम्, चाटितः-तम्, चाटयित्वा, प्रचाट्य।

**(१७२२) स्फुट**—भेदने। (कतरना, छेदना, तोड़ना, चीरना, विकसित करना या दुःख देना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ स्फोटयति-ते। २ स्फोटयाञ्चकार-चक्रे। ३ स्फोटयिता। ४ स्फोटयिष्यति-ते। ५ स्फोटयतु-स्फोटयताम्। ६ अस्फोटयत्-त। ७ स्फोटयेत्-त। ८ स्फोट्यात्-स्फोटयिषीष्ट। ९ अपुस्फुटत्-त। १० अस्फोटयिष्यत्-त।

**(१७२३) घट**—सङ्घाते। (घोटना, हिलाना, बटोरना, **उत्**—उद्घाटन करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ घाटयति-ते। २ घाटयाञ्चकार-चक्रे। ३ घाटयिता। ४ घाटयिष्यति-ते। ५ घाटयतु-ताम्। ६ अघाटयत्-त। ७ घाटयेत्-त। ८ घाट्यात्-घाटयिषीष्ट। ९ अजीघटत्-त। घटा करिणां समूहः।

**(१७२४) दिवु**—मर्दने। (मर्दन करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। देवयति-ते। देवयाञ्चकार-चक्रे। देवयिता-त्री इत्यादि सर्वं 'दिवु' धातु (१७०६) वत्।

**(१७२५) अर्ज**—प्रतियत्ने। (अर्जन करना, उद्योग करना, तैयार करना)। **अति**—जाने देना, दूर करना, **अनु**—मुक्त करना, **उद्**—चलाना। सकर्म.। सेट्। उभय.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | अर्जयति | अर्जयतः | अर्जयन्ति | प्र. |
| | अर्जयसि | अर्जयथः | अर्जयथ | म. |
| | अर्जयामि | अर्जयावः | अर्जयामः | उ. |

१ अमन्तत्वेन मित्वं तु न। 'नान्ये मितोऽहेतौ' (ग.सू. चुरादौ) निशेषात्। स्वार्थे णिचि परतः ज्ञपादिपञ्चकव्यतिरिक्ताः मितो न भवन्तीति तदर्थः।

२ द्रागामयन् विजटतस्थिकायाऽथ मुष्ट्या प्रास्फोटत् धातुकाव्य (३/३९)।

३ 'मो नो धातोः'(८-२-६४) इति नत्वम्। न चात्र स्थानिवद् भावः—'पूर्वत्रासिद्धे—'(१-१-५८) इति तन्निषेधात्।

४ औणादिकः अयच्। रोगः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लिट् | अर्जयाञ्चकार | अर्जयाञ्चक्रतुः | अर्जयाञ्चक्रुः | प्र. |
| | अर्जयाञ्चकर्थ | अर्जयाञ्चक्रथुः | अर्जयाञ्चक्र | म. |
| | अर्जयाञ्चकार-चकर | अर्जयाञ्चकृव | अर्जयाञ्चकृम | उ. |
| लुट् | अर्जयिता | अर्जयितारौ | अर्जयितारः | प्र. |
| | अर्जयितासि | अर्जयितास्थः | अर्जयितास्थ | म. |
| | अर्जयितास्मि | अर्जयितास्वः | अर्जयितास्मः | उ. |
| लृट् | अर्जयिष्यति | अर्जयिष्यतः | अर्जयिष्यन्ति | प्र. |
| | अर्जयिष्यसि | अर्जयिष्यथः | अर्जयिष्यथ | म. |
| | अर्जयिष्यामि | अर्जयिष्यावः | अर्जयिष्यामः | उ. |
| लोट् | अर्जयतु-तात् | अर्जयताम् | अर्जयन्तु | प्र. |
| | अर्जय | अर्जयतम् | अर्जयत | म. |
| | अर्जयानि | अर्जयाव | अर्जयाम | उ. |
| लङ् | आर्जयत् | आर्जयताम् | आर्जयन् | प्र. |
| | आर्जयः | आर्जयतम् | आर्जयत | म. |
| | आर्जयम् | आर्जयाव | आर्जायाम | उ. |
| वि. लि. | अर्जयेत् | अर्जयेताम् | अर्जयेयुः | प्र. |
| | अर्जयेः | अर्जयेतम् | अर्जेयत | म. |
| | अर्जयेयम् | अर्जयेव | अर्जयेम | उ. |
| आ. लि. | अर्ज्यात् | अर्ज्यास्ताम् | अर्ज्यासुः | प्र. |
| | अर्ज्याः | अर्ज्यास्तम् | अर्ज्यास्त | म. |
| | अर्ज्यासम् | अर्ज्यास्व | अर्ज्यास्म | उ. |
| लुङ् | आर्जिजत् | आर्जिजताम् | आर्जिजन् | प्र. |
| | आर्जिजः | आर्जिजतम् | आर्जिजत | म. |
| | आर्जिजम् | आर्जिजाव | आर्जिजाम | उ. |
| लृङ् | आर्जयिष्यत् | आर्जयिष्यताम् | आर्जयिष्यन् | प्र. |
| | आर्जयिष्यः | आर्जयिष्यतम् | आजयिष्यत | म. |
| | आर्जयिष्यम् | आर्जयिष्याव | आर्जयिष्याम | उ. |

**कृत्सु**—अर्जकः-र्जिका, अर्जयिता-त्री, अर्जयन्-न्ती, अर्जयिष्यन्-न्ती-ती, अर्जयमानः, अर्जयिष्यमाणः, अर्जितम्-तः, अर्जः, अर्जयितव्यम्, अर्जनीयम्, अर्ज्यम्, अर्ज्यमानः, अर्जतुम्, अर्जना, अर्जनम्, अर्जयित्वा, समर्ज्य, अर्जुनः[१]।

(१७२६) **घुषिर् (घुष्)** —**विशब्दने**। (मन में विचार कर कहना, घोषित करना, तरह-तरह के शब्द करना)। **आ**—मिलकर रोना, ढिढोरा पीटना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। इरित्।

१ औणादिकः उनन् प्रत्ययो णिलुक् च। अर्जुनः = वृक्षः पार्थश्च।

१ घोषयति-ते। २ घोषयाञ्चकार-चक्रे। ३ घोषयिता। ४ घोषयिष्यति-ते। ५ घोषयतु-ताम्। ६ अघोषयत्-त। ७ घोषयेत्-त। ८ घोष्यात्-घोषयिषीष्ट। ९ अजूघुषत्-त। १० अघोषयिष्यत्-त। णिजभावपक्षे घोषति घोषतः घोषन्ति इत्यादि।

कृत्सु—घोषकःषिका, घोषयिता-त्री, घोषयन्-न्ती, घोषयिष्यन्-न्ती-ती, घोषयमानः, घोषयिष्यमाणः, घोषयितुम्, घोषयित्वा, उद्घोष्य, घोषयितव्यम्, घोषणीयम्, घोषितः-तम्, घोषः, घोषणा।

**(१७२७) आङः क्रन्द**—सातत्ये। (बुलाना, पुकारना)। अकर्म.। सेट्। उभय.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | आक्रन्दयति | आक्रन्दयतः | आक्रन्दयन्ति | प्र. |
| | आक्रन्दयसि | आक्रन्दयथः | आक्रन्दयथ | म |
| | आक्रन्दयामि | आक्रन्दयावः | आक्रन्दायामः | उ |
| लिट् | आक्रन्दयाञ्चकार | आक्रन्दयाञ्चक्रतुः | आक्रन्दयाञ्चक्रुः | प्र |
| | आक्रन्दयाञ्चकर्थ | आक्रन्दयाञ्चक्रथुः | आक्रन्दयाञ्चक्र | म. |
| | आक्रन्दयाञ्चकर्थ | आक्रन्दयाञ्चकृव | आक्रन्दयाञ्चकृम | उ. |
| लुट् | आक्रन्दयिता | आक्रन्दयितारौ | आक्रन्दयितारः | प्र. |
| | आक्रन्दयितासि | आक्रन्दयितास्थः | आक्रन्दयितास्थ | म. |
| | आक्रन्दयितास्मि | आक्रन्दयितास्वः | आक्रन्दयितास्मः | उ. |
| लृट् | आक्रन्दयिष्यति | आक्रन्दयिष्यतः | आक्रन्दयिष्यन्ति | प्र. |
| | आक्रन्दयिष्यसि | आक्रन्दयिष्यथः | आक्रन्दयिष्यथ | म. |
| | आक्रन्दयिष्यामि | आक्रन्दयिष्यावः | आक्रन्दयिष्यामः | उ. |
| लोट् | आक्रन्दयु-तात् | आक्रन्दयताम् | आक्रन्दयन्तु | प्र. |
| | आक्रन्दय | आक्रन्दयतम् | आक्रन्दयत | म. |
| | आक्रन्दयानि | आक्रन्दयाव | आक्रन्दयाम | उ. |
| लङ् | आक्रन्दयत् | आक्रन्दयताम् | आक्रन्दयन् | प्र. |
| | आक्रन्दयः | आक्रन्दयतम् | आक्रन्दयत | म. |
| | आक्रन्दयम् | आक्रन्दयाव | आक्रन्दयाम | उ. |
| वि. लि. | आक्रन्दयेत् | आक्रन्दयेताम् | आक्रन्दयेयुः | प्र. |
| | आक्रन्दयेः | आक्रन्दयेतम् | आक्रन्दयेत | म. |
| | आक्रन्दयेयम् | आक्रन्दयेव | आक्रन्दयेम | उ. |
| आ. लि. | आक्रन्द्यात् | आक्रन्द्यास्ताम् | आक्रन्द्यासुः | प्र. |
| | आक्रन्द्याः | आक्रन्द्यास्तम् | आक्रन्द्यास्त | म. |
| | आक्रन्द्यासम् | आक्रन्द्यास्व | आक्रन्दयास्म | उ. |
| लुङ् | आचक्रन्दत् | आचक्रन्दताम् | आचक्रन्दन् | प्र. |
| | आचक्रन्दः | आचक्रन्दतम् | आचक्रन्दत | म. |
| | आचक्रन्दम् | आचक्रन्दाव | आचक्रन्दाम | उ. |
| लृङ् | अकन्दयिष्यत् | अक्रन्दयिष्यताम् | अक्रन्दयिष्यन् | प्र. |
| | अक्रन्दयिष्यः | अक्रन्दयिष्यतम् | अक्रन्दयिष्यत | म. |
| | अक्रन्दयिष्यम् | अक्रन्दयिष्यावः | अक्रन्दयिष्यामः | उ. |

**कर्मणि**—आक्रन्द्यते। **कृत्सु**—आक्रन्दकः, आक्रयिता-त्री, आक्रयितुम्, आक्रन्दयित्वा, आक्रन्तुम्, आक्रन्दयन्-न्ती, आक्रन्दयिष्यन्, आक्रन्दयितव्यः, आक्रन्दयम्, आक्रन्दयिष्यन्-न्ती-ती, आक्रन्दयमानः, आक्रन्दयिष्यमाणः।

**( १७२८ ) लस—शिल्पयोगे**। (चतुर होना, कुशल होना, कला-कौशल जानना)। अकर्म.। सेट्। उभय.।

१ लासयति-ते। २ लासयाञ्चकार-चक्रे। ३ लासयिता। ४ लासयिष्यति-ते। ५ लासयतु-ताम्। ६ अलासयत्-त। ७ लासयेत्-त। ८ लास्यात्-लासयिषीष्ट। ९ अलीलसत्-त। १० अलासयिष्यत्-त।

**कृत्सु**—लासकः-सिका, लासकी = नर्तकी, लास्यम्-नर्तनम्, लासयिता-त्री, लासयन्-न्ती, लासयमानः, लासयिष्यमानः, लासयितुम्, लासयित्वा, लासयितव्यम्, लासनीयम्, लासः, लासमानः, लासितः-तम्।

**( १७२९ ) तसि—अलङ्करणे**। (सजाना, अलङ्कृत करना)। **अव**—सजाना, अलङ्कृत करना। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ तंसयति-ते। २ तंसयाञ्चकार-चक्रे। ३ तंसयिता। ४ तंसयिष्यति-ते। ५ तंसयतु-ताम्। ६ अतंसयत्-त। ७ तंसयेत्-त। ८ तंस्यात्-तंसयिषीष्ट। ९ अततंसत्-त। १० अतंयिष्यत्-त। प्रायेणायम् अवपूर्णः।

**कर्मणि**—तंस्यते। **कृत्सु**—अवतंसकः-सिका, अवतंसयिता-त्री, अवतंसयित्वा, अवतंसयितुम्, अवतंसनम्, अवतंसः, अवतंसयितव्यम्, अवतंसनीयम्, अवतंसयन्-न्ती, अवतंसयिष्यन्-न्ती-ती, अवतंसमानः, अवतंसयिष्यमाणः।

**( १७३० ) भूष—अलङ्करणे**। (सजाना, अलङ्कृत करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ **प्र.** भूषयति-ते भूषयतः भूषयन्ति। **म.** भूषयसि भूषयथः भूषयथ। **उ.** भूषयामि भूषयावः भूषयामः। २ **प्र.** भूषयाञ्चकार भूषयाञ्चक्रतुः भूषयाञ्क्रुः। **म.** भूषयाञ्चकर्थ भूषयाञ्चक्रथुः भूषयाञ्चक्र। **उ.** भूषयाञ्चकार-चकर भूषयाञ्चकृव भूषयाञ्चकृम। भूषयाम्बभूव, भूषयामास। ४ **प्र.** भूषयिता भूषयितारौ भूषयितारः। **म.** भूषयतासि भूषयतास्थः भूषयतास्थ। **उ.** भूषयतास्मि भषयतास्वः भूषयतास्मः। ४ **प्र.** भूषयिष्यति भूषयिष्यतः भूषयिष्यन्ति। **म.** भूषयिष्यसि भूषयिष्यथः भूषयिष्यथ। **उ.** भूषयिष्यामि भूषयिष्यावः भूषयिष्यामः। ५ भूषयतु-भूषयतात्। भूषयताम् भूषयन्तु। **म.** भूषय। **उ.** भूषयाणि। ६ **प्र.** अबूषयत्। **म.** अभूषयः। **उ.** अभूषयम्। ७ **प्र.** भूषयेत् भूषयेताम् भूषयेयुः। **म.** भूषयेः भूषयेतम् भूषयेत। **उ.** भूषयेयम् भूषयेव भूषयेम। ८ **प्र.** भूष्यात् भूष्यास्ताम् भूष्यासुः। **म.** भूष्याः भूष्यास्तम् भूष्यास्त। **उ.** भूष्यासम् भूष्यास्व भूष्यास्म। ९ **प्र.** अबूभुषत् अबूषताम् अबूभुषन्। **म.** अबूभुषः अबूभुषतम् अबूषत। **उ.** अबूभुसम् अबूभुषाव अबूभुषाम। १० अभूषयिष्यत्।

**कर्मणि**—भूष्यते। कृत्सु—भूषकः-षिका, भूषयिता-त्री, भूषयन्-न्ती, भूषयिष्यन्-न्ती-ती, भूषयमाणः, भूषयिष्यमाणः, भूष्-ड्-भूषौ भूषः, भूषितम्-तः, भूषः, भूषयितव्यम्, भूषणीयम्, भूष्यम्, भूष्यमाणः, भूषयितुम्, भूषयित्वा, प्रभूष्य।

**(१७३१) अर्ह—पूजायाम्**। (पूजा करना, सत्कार करना, पूजनीय होना, पूजा योग्य होना, योग्य होना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | अर्हयति | अर्हयतः | अर्हयन्ति | प्र. |
| | अर्हयसि | अर्हयथः | अर्हयथ | म. |
| | अर्हयामि | अर्हयावः | अर्हयामः | उ. |
| लिट् | अर्हयाञ्चकार | अर्हयाञ्चक्रतुः | अर्हयाञ्चक्रुः | प्र. |
| | अर्हयाञ्चकर्थ | अर्हयाञ्चक्रथुः | अर्हयाञ्चक्र | म. |
| | अर्हयाञ्चकार-चकर | अर्हयाञ्चकृव | अर्हयाञ्कृम | उ. |
| लुट् | अर्हयिता | अर्हयितारौ | अर्हयितारः | प्र. |
| | अर्हितासि | अर्हितास्थः | अर्हितास्थ | म. |
| | अर्हितास्मि | अर्हितास्वः | अर्हितास्मः | उ. |
| लृट् | अर्हयिष्यति | अर्हयिष्यतः | अर्हयिष्यन्ति | प्र. |
| | अर्हयिष्यसि | अर्हयिष्यथः | अर्हयिष्यथ | म. |
| | अर्हयिष्यामि | अर्हयिष्यावः | अर्हयिष्यामः | उ. |
| लोट् | अर्हयतु-तात् | अर्हयताम् | अर्हयन्तु | प्र. |
| | अर्हय | अर्हयतम् | अर्हयत | म. |
| | अर्हयाणि | अर्हयाव | अर्हयाम | उ. |
| लङ् | आर्हयत् | आर्हयताम् | आर्हयन् | प्र. |
| | आर्हयः | आर्हयतम् | आर्हयत | म. |
| | आर्हयम् | आर्हयाव | आर्हयाम | उ. |
| वि. लि. | अर्हयेत् | अर्हयेताम् | अर्हयेयुः | प्र. |
| | अर्हयेः | अर्हयेतम् | अर्हयेत | म. |
| | अर्हयेयम् | अर्हयेव | अर्हयेम | उ. |
| आ. लि. | अर्ह्यात् | अर्ह्यास्ताम् | अर्ह्यासुः | प्र. |
| | अर्ह्याः | अर्ह्यास्तम् | अर्ह्यास्त | म. |
| | अर्ह्यासम् | अर्ह्यास्व | अर्ह्यास्म | उ. |
| लुङ् | आर्जिहत् | आर्जिहताम् | आर्जिहन् | प्र. |
| | आर्जिहः | आर्जिहतम् | आर्जिहत | म. |
| | आर्जिहम् | आर्जिहाव | आर्हिजाम | उ. |
| लृङ् | आर्हयिष्यत् | आर्हयिष्यताम् | आर्हयिष्यन् | प्र. |
| | आर्हयिष्यः | आर्हयिष्यतम् | आर्हयिष्यत | म. |
| | आर्हयिष्यम् | आर्हयिष्याव | आर्हयिष्याम | उ. |

**आत्मनेपदे**—१ अर्हयते। २ अर्हयाञ्चक्रे। ३ अर्हयिता। ४ अर्हयिष्यते। ५ अर्हयताम्। ६ आर्हयत। ७ अर्हयेत। ८ अर्हयिषीष्ट। ९ आर्जिहत। १० आर्हयिष्यत।

**कर्मणि**—अर्ह्यते। **सनि**—अर्जिहयिषति-ते। **कृत्सु**—अर्हकः-र्हिका, अर्हयिता-त्री, अर्हयन्-न्ती, अर्हयिष्यन्-न्ती-ती, अर्हयमाणः, अर्हः, अर्हयितव्यम्, अर्हणीयम्, अर्ह्यम्, अर्ह्यमाणः, अर्हयितुम्, अर्हणा, अर्हणम्, अर्हयित्वा, समर्ह्य।

**(१७३२) ज्ञा—नियोगे**। (आज्ञा करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ ज्ञापयति-ते। २ ज्ञापयाञ्चकार-चक्रे। ३ ज्ञापयिता। ४ ज्ञापयिण्यति-ते। ५ ज्ञापयतु-ताम्। ६ अज्ञापयत्-त। ७ ज्ञापयेत्-त। ८ ज्ञाप्यात्-ज्ञापयिषीष्ट। ९ अजिज्ञापत्-त। १० अज्ञापयिष्यत्-त।

**कृत्सु**—ज्ञापकः-पिका, ज्ञापयिता-त्री, ज्ञास्यन्-न्ती, ज्ञापयन्-न्ती-ती, ज्ञापयमानः-ज्ञपयमानः, जिज्ञासमानः, इत्यादि 'ज्ञा-अववोधने' वत्।

**(१७३३) भज—विश्राणने**। (देना, दान करना, पकाना,[1] सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ भाजयति-ते। २ भाजयाञ्चकार-चक्रे। ३ भाजयिता। ४ भाजयिष्यति-ते। ५ भाजयतु-ताम्। ६ अभाजयत्-त। ७ भाजयेत्-त। ८ भाज्यात्-भाजयिषीष्ट। ९ अबीभजत्-त। १० अभाजयिष्यत्-त।

**कृत्सु**—भाजकः-जिका, भाजयिता-त्री, भाजयमानः, भाजयिष्यमाणः, भाजयन्-न्ती, भाजयिष्यन्-न्ती-ती, भाजयित्वा, भाजयितुम्, भाजयितव्यम्, भाजनीयम्, भाजितः-तम्।

**(१७३४) शृधु—प्रसहने प्रहसने च**। प्रहसनम् = अभिभवः विद्रवो वा। (सहन करना, सहना। अनादर करना, अपमान करना, परामव करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। शर्धयति-ते। ९. अशीश्रृधत्-त। अशीशृधताम् अशीशृधन्।

**कृत्सु**—शर्धकः-र्धिका, शर्धयिता-त्री, शर्धयित्वा, प्रशर्ध्य, शर्धयितुम्, शर्धयिता-त्री, शर्धणीयम्, निष्ठायाम्, शर्धितम्, शृद्धम्-शृद्धः, ल्युटि शर्धनम्, क्त्वायाम्– शर्धित्वा-शृद्ध्वा।

**(१७३५) यत—निकारोपस्कारयोः**। (दुःख देना, मारना, कष्ट देना, मना करना, रोकना, **निर**—बदला चुका लेना, दान देना, अपने पास जो दूसरे की वस्तु हो उसे लौटा देना, **वि**—घृष्टता करना)। अकर्म.। सेट्। उभय.।

१ यातयति-ते। २ यातयाञ्चकार-चक्रे। ३ यातयिता। ४ यातयिष्यति-ते। ५ यातयतु-ताम्। ६ अयातयत्-त। ७ यातयेत्-त। ८ यात्यात्-यातयिषीष्ट। ९ **प्र.** अयीयतत्-त अयीयतताम् अयीयतन्। **म.** अयीयतः अयीयतम् अयीयत। **उ.** अयीयतम् अयीयताव अयीयताम। १० अयातयिष्यत्-त।

१ 'भाजी श्राणा = पक्वा चेत्' (अष्टा. ४-१-४२) भाषायां 'भाजी' पक्वं पत्रशाकम्।

**कृत्सु**—यातकः-तिका, यातयिता-त्री, यातयित्वा, प्रयात्य, यातयितव्यम्, यातनीयम्, यातयितुम्, यातना = तीव्र वेदना, '**ण्यासश्रन्थ**' (३-३-१०७) इति युचि रूपम्।

**( १७३६ ) रक—आश्वादने**। (स्वाद लेना, चखना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। राकयति-ते। राककः-किका, राकयिता-त्री, राकितः इत्यादि।

**( १७३७ ) लग—आस्वादने**। (स्वाद लेना, चखना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। लागयति-ते। लागकः-गिका, लागयिता-त्री, लागयितव्यम्, लागनीयम्, लागितः।

**( १७३८ ) अञ्चु—विशेषणे**। (विशेषित करना, सम्मानित करना, हटाना, पृथक् करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ अञ्चयति-ते। २ अञ्चयाञ्चकार-चक्रे। ३ अञ्चयिता। ४ अञ्चयिष्यति-ते। ५ अञ्चयतु-ताम्। ६ आञ्चयत्-त। ७ आञ्चयेत्-त। ८ आञ्च्यात्-आञ्चयिषीष्ट। ९ आञ्चिचत्-त। १० आञ्चयिष्यत्-त।

**कृत्सु**—अञ्चकः-ञ्चिका, अञ्चयिता-त्री, अञ्चयन्-न्ती, अञ्चयिष्यन्-न्ती-ती, अञ्चयिष्यमाणः, अञ्चः, अञ्चयितव्यम्, अञ्चनीयम्, अञ्च्यम्, अञ्चयमानः, अञ्चना, अञ्चनम्, अञ्चयित्वा, प्राञ्च्य।

**( १७३९ ) लिगि—चित्रीकरणे**। (विभिन्न रंगों से रंग देना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। लिङ्गयति-ते।

**कृत्सु**—लिङ्गकः-ङ्गिका, लिङ्गयिता-त्री, लिङ्गयन्-न्ती, आलिङ्गना, लिङ्गयमानः, लिङ्गयिष्यमाणः, लिङ्गितः-तम्, लिङ्गः, लिङ्गयितव्यम्, लिङ्गनीयम्, लिङ्ग्यम्, लिङ्गयितुम्, लिङ्गना, लिङ्गनम्, लिङ्गयित्वा, विलिङ्ग्य।

**( १७४० ) मुद्—संसर्गे**। (मिश्रित करना, एकत्र करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। मोदयति-ते। मोदकः-दिका, मोदयिता-त्री, मोदयन्, मोदयिष्यन्-न्ती।

**( १७४१ ) त्रस—धारणग्रहणवारणेषु**। (पकड़ना, हरण करना, जबरन लेना, मना करना, डराना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ त्रासयति-ते। २ त्रासयाञ्चकार-चक्रे। ३ त्रासयिता। ४ त्रासयिष्यति-ते। ५ त्रासयतु-ताम्। ६ अत्रासयत्-त। ७ त्रासयेत्-त। ८ त्रास्यात्-त्रासयिषीष्ट। ९ **प्र.** अतित्रसत्-त अतित्रसताम् अतित्रसन्। **म.** अतित्रसः अतित्रसतम् अतित्रसत। **उ.** अतित्रसम् अतित्रसाव अतित्रसाम। १० अत्रासयिष्यत्-त।

**कृत्सु**—त्रासकः-सिका, त्रासयिता-त्री, इत्यादि।

**( १७४२ ) उध्रस—उञ्छे**। (बीनना, एक एक करके चुनना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। घ्रासयति-ते। पक्षे- उध्रासयति-ते।

**( १७४३ ) मुच—प्रमोचने**। (छोड़ना, द्रव्यादि देना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | मोचयति | मोचयतः | मोचयन्ति | प्र. |
| | मोचयसि | मोचयथः | मोचयथ | म. |
| | मोचयामि | मोचयावः | मोचयामः | उ. |
| लिट् | मोचयाञ्चकार | मोचयाञ्चक्रतुः | मोचयाञ्चक्रुः | प्र. |
| | मोचयाञ्चकर्थ | मोयाञ्चक्रथुः | मोचयाञ्चक्र | म. |
| | मोचयाञ्चकार-चकर | मोचयाञ्चकृव | मोचयाञ्चकृम | उ. |
| लुट् | मोचयिता | मोचयितारौ | मोचयितारः | प्र. |
| | मोचयितासि | मोचयितास्थः | मोचयितास्थ | म. |
| | मोचयितास्मि | मोचयितास्वः | मोचयितास्मः | उ. |
| लृट् | मोचयिष्यति | मोचयिष्यतः | मोचयिष्यन्ति | प्र. |
| | मोचयिष्यसि | मोचयिष्यथः | मोचयिष्यथ | म. |
| | मोचयिष्यामि | मोचयिष्यावः | मोचयिष्यामः | उ. |
| लोट् | मोचयतु-तात् | मोचयताम् | मोचयन्तु | प्र. |
| | मोचयः | मोचयतम् | मोचयत | म. |
| | मोचयानि | मोचयाव | मोचयाम | उ. |
| लङ् | अमोचयत् | अमोचयताम् | अमोचयन् | प्र. |
| | अमोचयः | अमोचयतम् | अमोचयत | म. |
| | अमोचयम् | अमोचयाव | अमोचयाम | उ. |
| वि. लि. | मोचयेत् | मोचयेताम् | मोचयेयुः | प्र. |
| | मोचयेः | मोचयेतम् | मोचयेत | म. |
| | मोचयेयम् | मोचयेव | मोचयेम | उ. |
| आ. लि. | मोच्यात् | मोच्यास्ताम् | मोच्यासुः | प्र. |
| | मोच्याः | मोच्यास्तम् | मोच्यास्त | म. |
| | मोच्यासम् | मोच्यास्व | मोच्यास्म | उ. |
| लुङ् | अमूमुचत् | अमूमुचताम् | अमूमुचन् | प्र. |
| | अमूमुचः | अमूमुचतम् | अमूचुचत | म. |
| | अमूमुचम् | अमूमुचाव | अमूमुचाम | उ. |
| लृङ् | अमोचयिष्यत् | अमोचयिताम् | अमोचयिष्यन् | प्र. |
| | अमोचयिष्यः | अमोचयिष्यतम् | अमोचयिष्यत | म. |
| | अमोचयिष्यम् | अमोचयिष्याव | अमोचयिष्याम | उ. |

**आत्मनेपदे**—१ मोचयते। २ मोचयाञ्चक्रे। ३ मोचयिता। ४ मोचयिष्यते। ५ मोचयताम्।६ अमोचयत।७ मोचयेत।८ मोचयिषीष्ट।९ अमूमुचत।१० अमोचयिष्यत।

**कर्मणि**—मुच्यते। **कृत्सु**—मोचकः-चिका, मोचयिता-त्री, मोचयन्-न्ती, मोचयिष्यन्-न्ती-ती, मोचयमानः, मोचयिष्यमाणः, मोचितः-तम्, मोचः, मोचयितव्यम्, मोचनीयम्, मोच्यम्, मोच्यमानः, मोचयितुम्, मोचना, मोचनम्, मोचयित्वा, प्रमोच्य।

**(१७४४) वस—स्नेहमोहच्छेदापहरणेषु**। (स्नेह करना, कतरना, छेदा करना, नष्ट करना, अपहरण करना, मोह करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ वासयति-ते। २ वासयाञ्चकार-चक्रे। ३ वासयिता। ४ वासयिष्यति-ते। ५ वासयतु-ताम्। ६ अवासयत्-त। ७ वासयेत्-त। ८ वास्यात्-वासयिषीष्ट। ९ अवीवसत्-त। १० अवासयिष्यत्-त।

**कृत्सु**—वासकः-सिका, वासयिता-त्री, वासयन्-न्ती, विवासयिष्यन्। इत्यादि।

**(१७४५) चर—संशये**। (सन्देह करना, संशय करना)। **वि**—विचार करना, **उत्**—उच्चारण करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। प्रायेणायं विपूर्वकः।

१ चारयति-ते। २ चारयाञ्चकार-चक्रे। ३ चारयिता। ४ चारयिष्यति-ते। ५ चारयतु-ताम्। ६ अचारयत्-त। ७ चारयेत्-त। ८ चार्यात्-चारयिषीष्ट। ९ अचीचरत्-त। १० अचारयिष्यत्-त।

**कर्मणि**—विचार्यते। **सनि**—चिचारयिषति। **कृत्सु**—विचारकः-रिका, विचारयिता-त्री, विचारयन्-न्ती, विचारयिष्यन्-न्ती-ती, विचारयितुम्, विचारयमानः, विचारयिष्यमानः, विचारयित्वा, विचारयितव्यम्, विचारणीयम्, विचारितः-तम्, विचारः।

**(१७४६) च्यु—सहने**। हसने चेत्येके। (सहना, सहन करना, हंसना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ च्यावयति-ते। २ च्यावयाञ्चकार-चक्रे। ३ च्यावयिता। ४ च्यावयिष्यति-ते। ५ च्यावयतु-ताम्। ६ अच्यावयत्-त। ७ च्यावयेत्-त। ८ च्याव्यात्-च्यावयिषीष्ट। ९ अचुच्युवत्-त। १० अच्यावयिष्यत्-त।

**कर्मणि**—च्याव्यते। **कृत्सु**—च्यावकः-विका, च्यावयिता-त्री, च्यावयन्-न्ती, च्यावयिष्यन्, च्यावयमानः, च्यावयिष्यमाणः, च्यौः-च्यावौ-च्यावः, च्यावितम्-तः-तवान्, च्यावः-च्यावयितव्यम्, च्यावनीयम्, च्याव्यम्, च्याव्यमानः, च्यावयितुम्, च्यावना, च्यावनम्, च्यावयित्वा, प्रच्याव्य।

**(१७४७) भुवः—अवकलकने चिन्तने च**। अवकल्कनं = मिश्रीकरणं चिन्तनं वा। (मिलाना, मिश्रित करना, चिन्तन करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ भावयति-ते। २ भावयाञ्चकार-चक्रे। ३ भावयिता। ४ भावयिष्यति-ते। ५ भावयतु-ताम्। ६ अभावयत्-त। ७ भावयेत्-त। ८ भाव्यात्-भावयिषीष्ट। ९ अबीभवत्-त। १०. अभावयिष्यत्-त।

**कर्मणि**—भाव्यते। **कृत्सु**—भावकः-विका, भावयिता-त्री, भावयन्[१]-न्ती,

१ 'भू अवकलने' इति पठितव्ये सति, 'भुवोऽवकलने इति पाठः 'अनित्यण्यन्तत्वार्थपञ्चमी' इति ज्ञापयतीत्याहुः। तेन णिजभावपक्षे, धातोश्चिन्तनार्थकत्वे अकर्मकत्वेन, चिन्तनस्य च चितवत्कर्तृकत्वेन 'अणावकर्मकात् चितवत्कर्तृकात्' (१-३-८७) इति ण्यन्तात् परस्मैपदमेव। मिश्रीकरणाद्यर्थान्तरे तु यथासम्भवमात्मनेपदमपि धातोरस्य भवत्यपि बोध्यम्।

भावयिष्यन्-न्ती-ती, भावयमानः, भावयिष्यमाणः, भावितम्-तः, भावः, भावुकः,[1] भावनः,[2] भावयितव्यम्, भावनीयम्, भाव्यम्, भाव्यमानः, विभावयिष्यमाणः, भावयितुम्, भावना, भावनम्, भावयित्वा, प्रभाव्य, विभाव्य।

**(१७४८) कृप—अवकल्कने।** (कल्पना करना, विचार करना, मिश्रित करना, चित्रित करना, रंगना)। अकर्म.। सेट्। उभय.।

१ कल्पयति-ते। २ कल्पयाञ्चकार-चक्रे। ३ कल्पयिता। ४ कल्पयिष्यति-ते। ५ कल्पयतु-ताम्। ६ अकल्पयत्-त। ७ कल्पयेत्-त। ८ कल्प्यात्-कल्पयिषीष्ट। ९ अचकल्पत्-त। १० अकल्पयिष्यत्-त।

**कर्मणि**—कल्प्यते। **कृत्सु**—कल्पकः-ल्पिका, कल्पयिता-त्री, कल्पयन्-न्ती, कल्पयिष्यन्-न्ती-ती, कल्पयमानः, कल्पयिष्यमाणः, कल्-कल्पौ-कल्पः, कल्पितम्-तः, कल्पः, कल्पनः, कल्पना, कल्पयितुम्, कल्पनम्, कल्पयित्वा, प्रकल्प्य।

**(१७४९) ग्रस—ग्रहणे।** (ग्रहण करना, पकड़ लेना, हरण करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ ग्रासयति-ते। २ ग्रासयाञ्चकार-चक्रे। ३ ग्रासयिता। ४ ग्रासयिष्यति-ते। ५ ग्रासयतु-ताम्। ६ अग्रासयत्-त। ७ ग्रासयेत्-त। ८ ग्रास्यात्-ग्रासयिषीष्ट। ९ अजिग्रसत्-त। १० ग्रासयिष्यत्-त।

**कर्मणि**—ग्रास्यते। **कृत्सु**—ग्रासकः-सिका, ग्रासयिता, ग्रासयन्-न्ती, ग्रासयिष्यन्-न्ती-ती, ग्रासयित्वा, प्रग्रास्य, ग्रासः, ग्रासनम्, ग्रासयितुम्, ग्रासना।

**(१७५०) पुष—धारणे।** (धारण करना, पालन करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ पोषयति-ते। २ पोषयाञ्चकार-चक्रे। ३ पोषयिता। ४ पोषयिष्यति-ते। ५ पोषयतु-ताम्। ६ अपोषयत्-त। ७ पोषयेत्-त। ८ पोष्यात्-पोषयिषीष्ट। ९ अपूपुषत्-त। १० अपोषयिष्यत्-त।

**कर्मणि**—पोष्यते। **कृत्सु**—पोषकः-षिका, पोषयिता-त्री, पोषयन्-न्ती, पोषयिष्यम्-न्ती-ती, पोषयमानः, पोषयिष्यममाणः, पोषितम्-तः-तवान् प्रपोषितः, पोषः, पोषयित्वा, प्रपोष्य, पोषयतुम्।

**(१७५१) दल—विदारणे।** (चीरना, फाड़ना, टुकड़े करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१. दालयति-ते।

---

१ तच्छीलतद्धर्मतत्साधुकारिष्वर्थेषु 'लषपतपदस्थाभूवृषः—' (३-२-१५४) इत्यनेन उकञ् प्रत्ययः। 'णेरनिटि' (६-४-५१) इति णिलोपः। 'न वाचमवमन्यन्ते नर्तकीमिव भावुकाः (याद. अ. १/७) इत्यत्र भावुकाः = भावनाकृतो भगवद् भक्ताः। 'भुवोऽवकलने' इति भवतेर्णिजन्तात् 'लषपत—' (३-२-१५४) इत्यादिना उकञ् प्रत्ययः। 'अवकल्कनम् = चिन्तनम्' इति व्याख्यानम्। इति अप्पय्यदीक्षितोक्तेः धातोरस्यैवोकञ् विधायके सूत्रे ग्रहणमित्यपि बोध्यम्।

२ ण्यन्तादस्मात् नन्द्यादेराकृतिगणत्वात् कर्तरि स्युः। भावनः = चिन्तकः।

**( १७५२ ) पट—भासार्थः भाषार्थो वा**। (चमकना, बोलना)। **उत्**—समूल नष्ट कर देना, जड़ से उखाड़ देना, **वि**—भाग जाना, विदारण करना, गिरा देना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। पाटयति-ते।

**( १७५३ ) पुट्—भासार्थः भाषार्थो वा**। (चमकना, प्रकाशित होना, बोलना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। पोटयति-ते।

**कृत्सु**—पोटकः-टिका, पोटयिता-त्री, पोटयित्वा, पोटयितुम्, पोटनम्, पोटः विपोटयितव्यम्.

**( १७५४ ) लुट्—भासार्थः भाषार्थो वा**। (चमकना, भाषण देना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। लोटयति-ते। इत्यादि।

**( १७५५ ) तुजि—भाषार्थः भासार्थो वा**। (चमकना, भाषण देना)।

१ तुञ्जयति-ते। २ तुञ्जयाञ्चकार-चक्रे। ३ तुञ्जयिता। ४ तुञ्जयिष्यति-ते। ५ तुञ्जयतु-ताम्। ६ अतुञ्जयत्-त। ७ तुञ्जयेत्-त। ८ तुञ्ज्यात्-तुञ्जयिषीष्ट। ९ अतुतुञ्जत्-त। १० अतुञ्जयिष्यत्-त।

**कर्मणि**—तुञ्ज्यते। **कृत्सु**—तुञ्जकः-ञ्जिका, तुञ्जयिता, तुञ्जयन्-न्ती, तुञ्जयिष्यन्-न्ती-ती, तुञ्जयमानः, तुञ्जयिष्यमाणः, तुञ्जः, तुञ्जयितव्यम्, तुञ्जनीयम्, तुञ्जयितुम्, तुञ्जनम्, तुञ्जयित्वा, प्रतुञ्ज्य।

**( १७५६ ) मिजि—भाषायाम्**। (बोलना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। मिञ्जयति-ते।

**( १७५७ ) पिजि—भाषायाम्**। (बोलना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। पिञ्जयति-ते।

**( १७५८ ) लुजि—भाषायाम्**। सकर्म.। सेट्। उभय.। लुञ्जयति-ते।

**( १७५९ ) भजि—भाषायाम्**। सकर्म.। सेट्। उभय.। बोलना, कहना। सकर्म.। सेट्। उभय.। भञ्जयति-ते।

**( १७६० ) लघि—भासार्थः भाषार्थे वा**। (चमकना, आगे बढ़ना, लांघना, बोलना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ लङ्घयति-ते। २ लङ्घयाञ्चकार-चक्रे। ३ लङ्घयिता। ४ लङ्घयिष्यति। ५ लङ्घयतु-ताम्। ६ अलङ्घयत्-त। ७ लङ्घयेत्-त। ८ लङ्घ्यात्-लङ्घयिषीष्ट। ९ **प्र.** अललङ्घत्-त अललङ्घताम् अललङ्घन्। **म.** अललङ्घः अललङ्घतम् अललङ्घत। **उ.** अललङ्घम् अललङ्घाव अललङ्घाम। १० अलङ्घयिष्यत्-त।

**कर्मणि**—लङ्घ्यते। **कृत्सु**—लङ्घयकः-घिता, लङ्घयिता-त्री, लङ्घयन्-न्ती, लङ्घयमानः, लङ्घयिष्यमाणः, लङ्घयितुम्, लङ्घयितव्यम्, लङ्घनीयम्, लङ्घनम्।

**( १७६१ ) त्रसि—भाषार्थो भासार्थो वा**। (बोलना, कहना, चमकना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। १ त्रंसयति-ते। २ त्रंसयताञ्चकार-चक्रे। ९ अतित्रसत्-त।

**कर्मणि**—त्रंस्यते। **कृत्सु**—त्रंसकः-सिका, त्रंसयिता-त्री, त्रंसयन्-न्ती, त्रंसयिष्यन्-न्ती-ती, त्रंसयित्वा, प्रत्रंस्य, त्रंसयितुम्, तंसः त्रंसनम्, तंत्रः, तंत्रसयितव्यम्, त्रंसनीयम्।

**( १७६२ ) पिसि—भाषार्थः भासार्थो वा**। (चमकना, कहना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। पिंसयति-ते।

**कर्मणि**—पिंस्यते। **कृत्सु**—पिंसकः-सिका, पिंसयिता-त्री, पिंसयन्-न्ती, पिंसयिष्यन्-न्ती-ती, पिंसयमानः, पिंसयिष्यमाणः, पिंसयितुम्, पिंसयितव्यम्, पिंसनीयम्, पिंसः।

**( १७६३ ) कुसि—भाषार्थः भासार्थो वा**। (कहना, चमकना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। कुंसयति-ते। भ्रुवा कुंसयति = भ्रूकुंसः।

**( १७६४ ) दशि—भाषायाम्**। (कहना, डंक मारने के समान बोलना)। सक.। सेट्. उभय.।

१ दंशयति-ते। २ दंशयाञ्चकार-चक्रे। ३ दंशयिता। ४ दंशयिष्यति-ते। ५ दंशयतु-ताम्। ६ अदंशयत्-त। ७ दंशयेत्-त। ८ दंश्यात्-दंशयिषीष्ट। ९ अददंशत्-त। १० अदंशयिष्यत्-त।

**( १७६५ ) कुशि—भाषायाम्**। सकर्म.। सेट्। उभय.। कुंशयति-ते। कुंशति-ते। ९ अचुकुंशत्-त।

**कृत्सु**—कुंशकः-शिका, कुंशयिता-त्री, कुंशयन्-न्ती, कुंशयिष्यन्-न्ती-ती, कुंशयमानः, कुंशयिष्यमानः, कुन्-कुंशौ-कुंशः, कुंशितः-तम्, कुंशः, कुंशयितव्यम्, कुंशनीयम्, कुंश्यम्, कुंश्यमानः, कुंशयितुम्, कुंशयित्वा, प्रकुंश्य।

**( १७६६ ) घट—भाषार्थः भासार्थो वा**। (चमकना, प्रकाशित होना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। घाटयति-ते।

**( १७६७ ) घटि—भाषायाम् भासायां वा**। (चमकना, प्रकाशित होना, शब्द करना, बोलना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ घण्टयति-ते। २ घण्टयाञ्चकार-चक्रे। ३ घण्टयिता। ४ घण्टयिष्यति-ते। ५ घण्टयतु-ताम्। ६ अघण्टयत्-त। ७ घण्टयेत्-त। ८ घण्ट्यात्-घण्टयिषीष्ट। ९ अजघण्टत्-त। १० अघण्टयिष्यत्-त।

**कृत्सु**—घण्टकः-ण्टिका, घण्टयिता-त्री, घण्टयन्-न्ती, घण्टयिष्यन्-न्ती-ती, घण्टयितुम्, घण्टयित्वा, प्रघण्टम्, घण्टयितव्यम्, घंण्टनम्।

**( १७६८ ) बृहि—भाषायाम्**। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ बृंहयति-ते। २ बृंहयाञ्चकार-चक्रे। ३ बृहयिता। ४ बृहयिष्यति-ते। ५ बृंहयतु-ताम्। ६ अबृहंयत्-त। ७ बृंहयिष्यत्-त। ८ बृंह्यात् बृंहयिषीष्ट। ९ अबीबृंहयत्-त। अबृहंयिष्यत्-त।

**कर्मणि**—बृंह्यते। **कृत्सु**—बृंहयन्-न्ती, बृंहयिष्यन्-न्ती-ती, बृंहयमानः, बृंहयिष्यमाणः, बृंहयित्वा, बृंहयितुम्, बृंहः।

**( १७६९ ) बर्ह—भाषायाम्**। सकर्म.। सेट्। उभय.। १ बर्हयति-ते। २ बर्हयाञ्चकार-चक्रे।

**( १७७० ) बल्ह—भाषायाम्**। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ बल्हयति-ते। २ बल्याञ्चकार-चक्रे। ९ अबबल्हत्-त। कृत्सु– बल्हकः-किका, बल्हिता-त्री, बल्हयन्-न्ती, बल्हयितुम्, बल्हयितव्यम्, इत्यादि।

**( १७७१ ) गुप—भाषायाम्**। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ गोपयति-ते। २ गोपयाञ्चकार-चक्रे। ३ गोपयिता। ४ गोपयिष्यति-ते। ५ गोपयतु-ताम्। ६ अगोपयत्-त। ७ गोपयेत्-त। ८ गोप्यात्-गोपयिषीष्ट। ९ अजूगुपत्-त। १० अगोपयिष्यत्-त।

**कर्मणि**—गोप्यते। **कृत्सु**—गोपकः-पिका, गोपयिता-त्री, गोपयन्-न्ती, गोपयिष्यन्-न्ती, गोपयिष्यन्-न्ती-ती, गोपयमानः, गोपयिष्यमाणः, गोपितः-तम्, गोपः, गोपयितव्यम्, गोपनीयम्, गोपयित्वा, प्रगोप्य।

**( १७७२ ) धूप—भाषायाम्**। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ धूपयति-ते। २ धूपयाञ्चकार-चक्रे। ३ धूपयिता। ४ धूपयिष्यति-ते। ५ धूपयतु-तात्। ६ अधूपयत्-त। ७ धूपयेत्-त। ८ धूप्यात्-धूपयिषीष्ट। ९ **प्र.** अदूधुपत्-त। **म.** अदूधुपः। **उ.** अदूधुपम्। १० अधूपयिष्यत्-त।

**कर्मणि**—धूप्यते। **कृत्सु**—धूपकः-पिका, धूपयिता-त्री, धूपयन्-न्ती, धूपयिष्यन्-न्ती-ती, धूपयमानः, धूपयिष्यमाणः, धूपयित्वा, प्रधुप्य, धूपयित्वा, धूपः, धूप्यम्, धूपितः-तम्।

**( १७७३ ) विच्छ—भाषायाम्**। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ विच्छयति-ते। ९ **प्र.** अविविच्छत्-त। **म.** अविविच्छः। **उ.** अविविच्छम्।

**( १७७४ ) चीव—भाषायाम्**। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ चीवयति-ते। **कृत्सु**—चीवकः-चिका, चीवयिता-त्री, चीवयित्वा, चीवयितव्यम्, चीवनीयम्, चीवनम्, क्विपि-च्यूः[1]-च्यूवौ-च्युवः।

**( १७७५ ) पुथ—भाषायाम्**। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ पोथयति-ते। २ पोथयाञ्चकार-चक्रे। ३ पोथयिता। ४ पोथयिष्यति-ते। ५ पोथयतु-पोथयताम्। ६ अपोथयत्-त। ७ पोथयेत्-त। ८ पोथ्यात्-पोथयिषीष्ट। ९ अपूपुथत्-त। १० अपोथयिष्यत्-त।

---

१ क्विपि, णिलोपे, 'च्छ्वोः शुडनुनासिके च' (६-१-१९) इति वकारस्य ऊठि, यणि रूपम्।

**कृत्सु**—पोथकः-थिका, पोथयिता-त्री, पोथयन्-न्ती, पोथयित्वा, प्रपोथ्य, पोथयितुम्, पोथयिष्यन्-न्ती, पोथयमानः, पोथयिष्यमाणः, पोथः, पोथनम्।

**( १७७६ ) लोकृ—भाषायाम्**। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ लोकयति-ते। २ लोकयाञ्चकार-चक्रे। ३ लोकयिता। ४ लोकयिष्यति-ते। ५ लोकयतु-ताम्। ६ अलोकयत्-त। ७ लोकयेत्-त। ८ लोक्यात्-लोकयिषीष्ट। ९ अलुलोकत्-त। १० अलोकयिष्यत्-त।

**कृत्सु**—लोककः-किका, लोकयिता, लोकन्[१]-न्ती, लोकयमानः, लोकयिष्यमाणः, लोक्-लोकौ-लोकः, लोकितः, लोकः, लोकयितव्यम्, लोकनीयम्, लोक्यम्, लोक्यमानः, लोकितुम्, लोकना, लोकनम्, लोकयित्वा, विलोक्य।

**( १७७७ ) लोचृ—भाषायाम्**। सकर्म.। सेट्। उभय.। लोचयति-ते। ९. अलुलोचत्-त।

**कृत्सु**—लोचकः-चिका, लोचयिता-त्री, लोचयमानः, लोचयिष्यमाणः, लोचयितुम्, लोचयित्वा।

**( १७७८ ) णाद—भाषायाम्**। सक.। सेट्। उभय.।

१ नादयति-ते। २ नादयाञ्चकार-चक्रे। ३ नादयिता। ४ नादयिष्यते। ५ नादयतु-ताम्। ६ अनादयत्-त। ७ नादयेत्-त। ८ नाद्यात्-नादयिषीष्ट। ९ अनीनदत्-त। १० अनादयिष्यत्-त।

**कर्मणी**—नाद्यते। **कृत्सु**—नादकः-दिका, नादयिता-त्री, नादयन्-न्ती, नादयिष्यन्-न्ती-ती, नादयमानः, नादयिष्यमाणः, नादितम्-तः, नादः, नादयितव्यम्, नादनीयम्, नाद्यम्, नाद्यमानः, नादयितुम्, नादना, नादनम्, नादयित्वा, प्रनाद्य।

**( १७७९ ) कुप—भाषायां क्रोधे च**। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ कोपयति-ते। २ कोपयाञ्चकार-चक्रे। ३ कोपयिता। ४ कोपयिष्यति-ते। ५ कोपयतु-ताम्। ६ अकोपयत्-त। ७ कोपयेत्-त। ८ कोप्यात्-कोपयिषीष्ट। ९ अचूकुपत्-त। १० अकोपयिष्यत्-त।

**कर्मणि**—कोप्यते। **कृत्सु**—कोपकः-पिका, कोपयिता-त्री, कोपयन्-न्ती, कोपयिष्यन्, कोपयमानः, कोपयिष्यमाणः, कोपितः-तम्, कोपयितुम्, कोपयित्वा, प्रकोप्य, कोपयितव्यम्, कोपनीयम्, कोपः, कोप्यमानः।

**( १७८० ) तर्क—भाषायाम्**। वितर्कणे च। (बोलना, कहना, प्रकाशित होना, चमकना, तर्क करना, कल्पना, वाद करना, शङ्का करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

---

१ आस्वदीयत्वात् णिजभावपक्षे शतरि परस्मैपदमेव।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | तर्कयति | तर्कयतः | तर्कयन्ति | प्र. |
| | तर्कयसि | तर्कयथः | तर्कयथ | म. |
| | तर्कयामि | तर्कयावः | तर्कयामः | उ. |
| लिट् | तर्कयाञ्चकार | तर्कयाञ्चक्रतुः | तर्कयाञ्चक्रुः | प्र. |
| | तर्कयाञ्चकर्थ | तर्कयाञ्चक्रथुः | तर्कयाञ्चक्र | म. |
| | तर्कयाञ्चकार-चकर | तर्कयाञ्चकृव | तर्कयाञ्चकृम | उ. |
| लुट् | तर्कयिता | तर्कयितारौ | तर्कयितारः | प्र. |
| | तर्कयितासि | तर्कयितास्थः | तर्कयितास्थ | म. |
| | तर्कयितास्मि | तर्कयितास्वः | तर्कयितास्मः | उ. |
| लृट् | तर्कयिष्यति | तर्कयिष्यतः | तर्कयिष्यन्ति | प्र. |
| | तर्कयिष्यसि | तर्कयिष्यथः | तर्कयिष्यथ | म. |
| | तर्कयिष्यामि | तर्कयिष्यावः | तर्कयिष्यामः | उ. |
| लोट् | तर्कयतु-तात् | तर्कयताम् | तर्कयन्तु | प्र. |
| | तर्कय | तर्कयतम् | तर्कयत | म. |
| | तर्कयाणि | तर्कयाव | तर्कयाम | उ. |
| लङ् | अतर्कयत् | अतर्कयताम् | अतर्कयन् | प्र. |
| | अतर्कयः | अतर्कयतम् | अतर्कयत | म. |
| | अतर्कयम् | अतर्कयाव | अतर्कयाम | उ. |
| वि. लि. | तर्कयेत् | तर्कयेताम् | तर्कयेयुः | प्र. |
| | तर्कयेः | तर्कयेतम् | तर्कयेत | म. |
| | तर्कयेयम् | तर्कयेव | तर्कयेम | उ. |
| आ. लि. | तर्क्यात् | तर्क्यास्ताम् | तर्क्यासुः | प्र. |
| | तर्क्याः | तर्क्यास्तम् | तर्क्यास्त | म. |
| | तर्क्यासम् | तर्क्यास्व | तर्क्यास्म | उ. |
| लुङ् | अततर्कत् | अततर्कताम् | अततर्कन् | प्र. |
| | अततर्कः | अततर्कतम् | अततर्कत | म. |
| | अततर्कम् | अततर्काव | अततर्काम | उ. |
| लृङ् | अतर्कयिष्यत् | अतर्कयिष्यताम् | अतर्कयिष्यन् | प्र. |
| | अतर्कयिष्यः | अतर्कयिष्यतम् | अतर्कयिष्यत | म. |
| | अतर्कयिष्यम् | अतर्कयिष्याव | अतर्कयिष्याम | उ. |

आत्मनेपदे—१ अतर्कयत। २ अतर्कयाञ्चक्रे। ३ अतर्कयिता। ४ अतर्कयिष्यते। ५ अतर्कयताम्। ६ अतर्कयता। ७ तर्कयेत। ८ तर्कयिषीष्ट। ९ अततर्कत। १० अतर्कयिष्यत।

**कर्मणि**—तर्क्यते। **कृत्सु**—तर्ककः-र्किका, तर्कयिता, तर्कयन्-न्ती, तर्कयिष्यन्-न्ती-ती, तर्कयमाणः, तर्कयिष्यमाणः, तर्कयित्वा, वितर्क्य, तर्कयितुम्, तर्कः, तार्किकः, तार्कितः-तम्, तर्कयमाणः, तर्कयितव्यम्, तर्कणीयम्।

**(१७८१) वृतु—भासार्थे।** भाषार्थो वा। सकर्म.। सेट्.। उभय.।

१ वर्तयति-ते। २ वर्तयाञ्चकार-चक्रे। ३ वर्तयिता। ४ वर्तयिष्यति-ते। ५ वर्तयतु-ताम्। ६ अवर्तयत्-त। ७ वर्तयेत्। ८ वर्त्यात्। ९ **प्र.** अवीवृतत् अवीवृतताम् अवीवृतन्। **म.** अवीवृतः अवीवृततम् अवीवृतत। **उ.** अवीवृतम् अवीवृताव अवीवृताम। पक्षे– अवर्तत्-त। १० अवर्तयिष्यत्-त।

**कर्मणि**—वर्त्यते। **कृत्सु**—वर्तकः-र्तिका, वर्तयिता-त्री, वर्तयन्-न्ती, वर्तयिष्यन्। इत्यादि।

**(१७८२) वृधु—भाषायाम्।** सकर्म.। सेट्। उभय.। वर्धयति-ते। ९ अवीवृधत्-त। वर्धकः-र्धिका, वर्धयिता-त्री, वर्धयन्-न्ती, वर्धयमाणः, वर्धयिष्यमाणः, इत्यादि।

**(१७८३) रुट—भाषायाम्।** सक.। सेट्। उभय.। रोटयति-ते। ९ अरुरुटत्-त।

**(१७८४) लजि—भाषायाम्।** सकर्म.। सेट्। उभय.। लञ्जयति-ते। अललजत्-त। लञ्जकः, लञ्जयिता-त्री।

**(११७८५) अजि—भाषायाम्।** सकर्म.। सेट्। उभय.। अञ्जयति-ते। अञ्जिजत्-त। अञ्जकः, अञ्जयिता-त्री।

**(१७८६) दसि—भाषायाम्।** सकर्म.। सेट्। उभय.। दंसयति-ते। अददंसत्-त। दंसकः, दंसयिता, दंसयित्वा।

**(१७८७) भृशि—भाषायाम्।** सकर्म.। सेट्। उभय.। भृंशयति-ते। भृंशकः-शिका, भृंशयितव्यम्, भृंशयितुम्।

**(१७८८) रुशि—भाषायाम्।** सकर्म.। सेट्। उभय.। रुंशयति-ते। रुंशकः, रुंशयन्, रुंशयिता-त्री।

**(१७८९) शीक—भाषायाम्।** सकर्म.। सेट्। शीकयति-ते। अशीशिकत्-त।

**(१७९०) रुसि—भाषायाम्।** सकर्म.। सेट्। उभय.। रुंशयति-ते। रुंसयितव्यम्, रुंसकः, रुंसयित्वा।

**(१७९१) नटि—भाषायाम्।** सकर्म.। सेट्। उभय.। नण्टयति-ते। नण्टकः-टिका, नण्टयित्वा, इत्यादि।

**(१७९२) पुटि—भाषायाम्।** सकर्म.। सेट्। उभय.। पुण्टयति-ते ९ अपूपुटत्-त। पुण्टकः-पुण्टयित्वा।

**(१७९३) जि—भाषायाम्।** अकर्म.। सेट्। उभय.। जापयति-ते।

**कृत्सु**—जापकः-पिका, जापयिता-त्री, जापयन्-न्ती, जापयितुम्, जापयमानः, जापयिष्यमाणः, जापः।

**(१७९४) चि—भाषायाम्।** सकर्म.। सेट्। उभय.। चापयति-ते।

**कृत्सु**—चापकः-पिका, चापयिता-त्री, पापयन्-न्ती, चापयितुम्.

**( १७९५ ) रधि—भाषायाम्**। सकर्म.। सेट्। उभय.। रंधयति-ते।

**कृत्सु**—रंधकः-धिका, रंधयिता-त्री, रंधयन्-न्ती, रंधयितुम्, रंधयितव्यम्, रंधनीयम्, रंधितः-तम्।

**( १७९६ ) लघि—भासार्थः**। भाषार्थो वा। (चमकना, आगे बढ़ जाना, बोलना)। अकर्म.। सेट्। उभय.।

१ लङ्घयति-ते। २ लङ्घयाञ्चकार-चक्रे। ३ लङ्घयिता। ४ लङ्घयिष्यति-ते। ५ लङ्घयतु-तात्। ६ अलङ्घयत्-त। ७ लङ्घयेत्-त। ८ लङ्घ्यात्-लङ्घिष्यीष्ट। ९ अललङ्घत्-त। १० अलङ्घयिष्यत्-त।

**कृत्सु**—लङ्घकः-ङ्घिका, लङ्घयिता-त्री, लङ्घयन्-न्ती, लङ्घयिष्यन्-न्ती-ती, लङ्घयितुम्, लङ्घितुम्, लङ्घितः-तम्, लङ्घयितव्यम्, लङ्घनीयम्।

**( १७९७ ) अहि—भाषायाम्**। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ अंहयति-ते। ९ **प्र.** आंजिहत्-त। आंजिहताम् आंजिहन्। **म.** आंजिहः आंजिहतम् आंजिहत। **उ.** आंजिहम् आंजिहाव आंजिहाम।

**कृत्सु**—अंहकः-हिका, अहंयिता-त्री, अंहयन्-न्ती, अंहयिष्यन्-न्ती-ती, अंहयमानः, अंहयिष्यमाणः, अंहयितुम्, अंहः, अंहयितव्यम्, अंहनीयम्, अंहयित्वा, प्रांह्य, अंहितम्-तः।

**( १७९८ ) रहि—भाषायाम्**। सकर्म.। सेट्। उभय.। रंहयति-ते। ९ अररंहत्-त।

**( १७९९ ) महि—भाषायाम्**। सकर्म.। सेट्। उभय.। मंहयति-ते। अममंहत्-त। मंहकः-हिका, महंयिता-त्री।

**( १८०० ) लडि—भाषायाम्**। सकर्म.। सेट्। उभय.। लण्डयति-ते। अललण्डत्-त।

**( १८०१ ) तड—भासायां भाषायां वा**। चमकना, धमकाना। सक.। सेट्। उभय.। ताडयति-ते।

**( १८०२ ) नल—भाषायाम्**। सकर्म.। सेट्। उभय.। नालयति-ते।

**( १८०३ ) पूरी—आप्यायने**। (तृप्त करना, पूर्ण करना, पूर्ण होना, भरना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | पूरयति | पूरयतः | पूरयन्ति | प्र. |
| | पूरयसि | पूरयथः | पूरयथ | म. |
| | पूरयामि | पूरयावः | पूरयामः | उ. |
| लिट् | पूरयाञ्चकार | पूरयाञ्चक्रतुः | पूरयाञ्चक्रुः | प्र. |
| | पूरयाञ्चकर्थ | पूरयाञ्चक्रथुः | पूरयाञ्चक्र | म. |
| | पूरयाञ्चकार-चकर | पूरयाञ्चकृव | पूरयाञ्चकृम | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुट् | पूरयिता | पूरयितारौ | पूरयितारः | प्र. |
| | पूरयितासि | पूरयितास्थः | पूरयितास्थ | म. |
| | पूरयितास्मि | पूरयितास्वः | पूरयितास्मः | उ. |
| लृट् | पूरयिष्यति | पूरयिष्यतः | पूरयिष्यन्ति | प्र. |
| | पूरयिष्यसि | पूरयिष्यथः | पूरयिष्यथ | म. |
| | पूरयिष्यामि | पूरयिष्यावः | पूरयष्यामः | उ. |
| लोट् | पूरयतु-तात् | पूरयताम् | पूरयन्तु | प्र. |
| | पूरय-तात् | पूरयतम् | पूरयत | म. |
| | पूरयाणि | पूरयाव | पूरयाम | उ. |
| लङ् | अपूरयत् | अपूरयताम् | अपूरयन् | प्र. |
| | अपूरयः | अपूरयतम् | अपूरयत | म. |
| | अपूरयम् | अपूरयाव | अपूरयाम | उ. |
| वि. लि. | पूरयेत् | पूरयेताम् | पूरयेयुः | प्र. |
| | पूरयेः | पूरयेतम् | पूरयेत | म. |
| | पूरयेयम् | पूरयेव | पूरयेम | उ. |
| आ. लि. | पूर्यात् | पूर्यास्ताम् | पूर्यासुः | प्र. |
| | पूर्याः | पूर्यास्तम् | पूर्यास्त | म. |
| | पूर्यासम् | पूर्यास्व | पूर्यास्म | उ. |
| लुङ् | अपूपुरत् | अपूपुरताम् | अपूपुरन् | प्र. |
| | अपूपुरः | अपूपुरतम् | अपूपुरत | म. |
| | अपूपुरम् | अपूपुराव | अपूपुराम | उ. |
| लृङ् | अपूरयिष्यत् | अपूरयिष्यताम् | अपूरयिष्यन् | प्र. |
| | अपूरयिष्यः | अपूरयिष्यतम् | अपूरयिष्यत | म. |
| | अपूरयिष्यम् | अपूरयिष्याव | अपूरयिष्याम | उ. |

**आत्मने**—पूरयते। २ पूरयाञ्चक्रे। ३ पूरयिता। ४ पूरयिष्यते। ५ पूरयताम्। ६ अपूरयत। ७ पूरयेत। ८ पूरयिषीष्ट। ९ अपूपुरत। १० अपूरयिष्यत।

**कर्मणि**—पूर्यते। **कृत्सु**—पूरकः-रिका, पूरयिता-त्री, पूरन्[१]-न्ती, पूरिष्यन्-न्ती-ती, पूरयमानः, पूरयिष्यमाणः, पूः-पूरौ-पुरः, पूरितः-तम्, पूरयितव्यम्, पूरणीयम्, पूर्यम्, पूर्यमाणः, पूरयिंतुम्, पूरणा, पूरणम्, पूरयित्वा, प्रपूर्य।

**(१८०४) रुज—हिंसायाम्**।(मारना, हिंसा करना, दुःख देना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ रोजयति-ते। २ रोजयाञ्चकार-चक्रे। ३ रोजयिता। ४ रोजयिष्यति-ते। ५ रोजयतु-ताम्। ६ अरोजयत्-त। ७ रोजयेत्-त। ८ रोज्यात्-रोजयिषीष्ट। ९ अरुरुजत्-त। १० अरोजयिष्यत्-त।

१ णिजभावपक्षे, शतरि 'शेषात् कर्तरि' (१-३-७८) इति परस्मैपदं भवति।

**कृत्सु**—रोजकः-जिका, रोजयिता-त्री, रोजयन्-न्ती, रोजयमानः, रोजयिष्यमाणः, रोजितः-तम्, रोजयितव्यम्, रोजनीयम्, रोज्यम्, रोज्यमानः, रोजयितुम्, रोजयित्वा, प्ररोज्य। रुक्, रुजा।

**( १८०५ ) ष्वद (स्वद) —आस्वादने**। (स्वाद लेना, चखना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ स्वादयति-ते। २ स्वादयञ्चकार-चक्रे। ३ स्वादयिता। ४ स्वादयिष्यति-ते। ५ स्वादयतु-ताम्। ६ अस्वादयत्-त। ७ स्वादयेत्-त। ८ स्वाद्यात्-स्वादयिषीष्ट। ९ असिस्वदत्-त। १० अस्वादयिष्यत्-त।

**कर्मणि**—स्वाद्यते। **कृत्सु**—स्वादकः-दिका, स्वादयिता-त्री, स्वादयन्-न्ती, स्वादयिष्यन्-न्ती-ती, स्वादितम्-तः, स्वादयितव्यम्, स्वादनीयम्, स्वाद्यम्, स्वाद्यमानः, स्वादयितुम्, स्वादयित्वा, आस्वाद्यम्, स्वाद्यमानः, स्वादयितुम्, स्वादयित्वा, आस्वाद्य।

**( १८०६ ) युज—संयमने**। (संयत करना, बांधना, वश में रखना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। आधृषीयः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | योजयति | योजयतः | योजयन्ति | प्र. |
| | योजयसि | योजयथः | योजयथ | म. |
| | योजयामि | योजयावः | योजयामः | उ. |
| लिट् | योजयाञ्चकार | योजयाञ्चक्रतुः | योजयाञ्चक्रुः | प्र. |
| | योजयाञ्चकर्थ | योजयाञ्चक्रथुः | योजयाञ्चक्र | म. |
| | योजयाञ्चकार-चकर | योजयाञ्चकृव | योजयाञ्चकृम | उ. |
| लुट् | योजयिता | योजयितारौ | योजयितारः | प्र. |
| | योजयितासि | योजयितास्थः | योजयितास्थ | म. |
| | योजयितास्मि | योजयितास्वः | योजयितास्मः | उ. |
| लृट् | योजयिष्यति | योजयिष्यतः | योजयिष्यन्ति | प्र. |
| | योजयिष्यसि | योजयिष्यथः | योजयिष्यथ | म. |
| | योजयिष्यामि | योजयिष्यावः | योजयिष्यामः | उ. |
| लोट् | योजयतु-तात् | योजयताम् | योजयन्तु | प्र. |
| | योजय-तात् | योजयतम् | योजयत | म. |
| | योजयानि | योजयाव | योजयाम | उ. |
| लङ् | अयोजयत् | अयोजयताम् | अयोजयन् | प्र. |
| | अयोजयः | अयोजयतम् | अयोजयत | म. |
| | अयोजयम् | अयोजयाव | अयोजयाम | उ. |
| वि. लि. | योजयेत् | योजयेताम् | योजयेयुः | प्र. |
| | योजयेः | योजयेतम् | योजयेत | म. |
| | योजयेयम् | योजयेव | योजयेम | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आ. लि. | योज्यात् | योज्यास्ताम् | योज्यासुः | प्र. |
| | योज्याः | योज्यास्तम् | योज्यास्त | म. |
| | योज्यासम् | योज्यास्व | योज्यास्म | उ. |
| लुङ् | अयूयुजत् | अयूयुजताम् | अयूयुजन् | प्र. |
| | अयूयुजः | अयूयुजतम् | अयूयुजत | म. |
| | अयूयुजम् | अयूयुजाव | अयूयुजाम | उ. |
| लृङ् | अयोजयिष्यत् | अयोजयिष्यताम् | अयोजयिष्यन् | प्र. |
| | अयोजयिष्यः | अयोजयिष्यतम् | अयोजयिष्यत | म. |
| | अयोजयिष्यम् | अयोजयिष्याव | अयोजयिष्याम | उ. |

**आत्मनेपदे**—१ योजयते। २ योजयाञ्चक्रे। ३ योजयिता। ४ योजयिष्यते। ५ योजयताम्। ६ अयोजयत्। ७ योजयेत। ८ योजयिषीष्ठ। ९ अयूयुजत। १० अयोजयिष्यत।

**कर्मणि**—योज्यते। **कृत्सु**—योजकः-जिका, योजयिता-त्री, योजयितुम्, योजयित्वा, प्रयोज्य, योजयन्-न्ती, योजयिष्यन्-न्ती-ती, योजयमानः, योजयिष्यमाणः, योजः।

**(१८०७) पृच—संयमने**। (स्पर्श करना, छूना, अटकाना, हरकत करना, संयमन करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। आधृषीयः।

१ पर्चयति-ते। २ पर्चयाञ्चकार-चक्रे। ३ पर्चयिता। ४ पर्चयिष्यति-ते। ५ पर्चयतु-पर्चयताम्। ६ अपर्चयत्-त। ७ पर्चयेत्-त। ८ पर्च्यात्-पर्चयिषीष्ट। ९ अपीपृचत्-त। १० अर्पयिष्यत्-त।

**कर्मणि**—पर्च्यते। **कृत्सु**—पर्चकः-र्चिका, पर्चयिता-त्री, पर्चयन्-न्ती, पर्चयिष्यन्-न्ती-ती, पर्चयितुम्, पर्चयित्वा, प्रपर्च्य। पर्चितुम्-तः, पर्चः।

**(१८०८) अर्च—पूजायाम्**। (पूजा करना, अर्चना करना)।

१ अर्चयति-ते। २ अर्चयाञ्चकार-चक्रे। ३ अर्चयिता। ४ अर्चयिष्यति-ते। ५ अर्चयतु-ताम्। ६ आर्चयत्-त। ७ अर्चयेत्-त। ८ अर्च्यात्-अर्चयिषीष्ट। ९ आर्चिचत्-त। १० अर्चयिष्यत्।

**णिजभावे आत्मनेपदे**—१ अर्चते। २ **प्र.** आनर्चे आनर्चाते आनर्चिरे। **म.** आनर्चिषे आनर्चाथे आनर्चिध्वे। **उ.** आनर्चे आनर्चिवहे आनर्चिमहे। ३ आर्चिता। **म.** आर्चितासे। **उ.** आर्चिताहे। ४ आर्चिष्यते। ५ अर्चताम्। ६ **प्र.** आर्चत आर्चेताम् आर्चन्त। **म.** आर्चथाः आर्चेथाम् आर्चध्वम्। **उ.** आर्चे आर्चावहि आर्चामहि। ७ **प्र.** अर्चेत। **म.** अर्चस्व। **उ.** अर्चै। ८ अर्चिषीष्ट। ९ **प्र.** आर्चिष्ट आर्चिषाताम् आर्चिषत। **म.** आर्चिष्ठाः आर्चिषाथाम् आर्चिड्ढ्वम्-ध्वम्। **उ.** आर्चिषी आर्चिष्वहि आर्चिष्महि। १० आर्चिष्यत।

**कृत्सु**—अर्चकः-र्चिका, अर्चयिता-त्री, अर्चयन्-न्ती, अर्चयिष्यन्-न्ती-ती, अर्चयमानः, अर्चितः, अर्चः, अर्चयितव्यम्, अर्चनीयम्, अर्च्यम्, अचर्यमानः, अर्चयितुम्, अर्चना, अर्चनम्, अर्चयित्वा, समर्च्य।

**( १८०९ ) षह (सह) —मर्षणे**। (सहना, सहन करना, शक्तिमान होना, सन्तुष्ट होना)। **उत्**—उत्साहित होना, उद्योग करना, यत्न करना, वि– दृढ़ निश्चय करना, निर्णय करना। सकर्म.। सेट्। उभय.। आधृषीयः।

१ साहयति-ते। २ साहयाञ्चकार-चक्रे। ३ साहयिता। ४ साहयिष्यति-ते। ५ साहयतु-ताम्। ६ असाहयत्-त। ७ साहयेत्-त। ८ साह्यात्-साहयिषीष्ट। ९ असीषहत्-त। १० असाहयिष्यत्-त। णिजभावपक्षे—१ सहति। २ ससाह। ३ सहिता। ४ सहिष्यति। ५ सहतु-तात्। ६ असहत्। ७ सहेत्। ८ सह्यात्। ९ असहीत् असहिष्टाम् असहिषुः। १० असहिष्यत्।

**कर्मणि**—साह्यते-सह्यते। **कृत्सु**—साहकः-हिका, साहयिता-त्री, साहयन्-न्ती, साहयिष्यन्-न्ती-ती, साहयमानः, साहयिष्यमाणः, साहयितुम्, साहयित्वा, प्रसाह्य, साहयितव्यम्, साहनीयम्, साह्यम्।

**( १८१० ) ईर—क्षेपे**। (फेंकना)। **प्र**—प्रेरणा करना। **उत्**—कहना, बोलना, **सम्**—वायु के समान जाना। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ ईरयति-ते। ६ ऐरयत्-त। ९ **प्र.** ऐरिरत् ऐरिरताम् ऐरिरन्। **म.** ऐरिरः ऐरिरतम् ऐरिरत। **उ.** ऐरिरम् ऐरिराव ऐरिराम।

**कृत्सु**—ईरकः-रिका, ईरयिता-त्री, ईरयन्-न्ती, ईरयमाणः, ईरयिष्यमाणः, ईरितः-तम्, ईरः, ईरयितव्यम्, ईरणीयम्, ईर्यम्, ईर्यमाणः, ईरयितुम्, ईरणा, ईरणम्, ईरयित्वा, समीर्य।

**( १८११ ) ली—द्रवीकरणे**। (पतला करना, गलाना)। **आ**—खर्च करना, **प्रवि**—प्राप्त करना, सम्पादित करना। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ लाययति-ते। ९ अलीलयत्-त। पक्षे—१ लीनयति[१]-ते। २ लीनयाञ्चकार-चक्रे। ३ लीनयिता। ४ लीनयिष्यति-ते। ५ लीनयतु-ताम्। ६ अलीनयत्-त। ७ लीनयेत्-त। ८ लीन्यात्-लीनयिषीष्ट। ९ अलीलनत्-त। १० अलीनयिष्यत्-त।

**( १८१२ ) वृजी—वर्जने**। (छोड़ना, वर्जित करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। आधृषीयः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | वर्जयति | वर्जयतः | वर्जयन्ति | प्र. |
| | वर्जयसि | वर्जयथः | वर्जयथ | म. |
| | वर्जयामि | वर्जयावः | वर्जयामः | उ. |
| लिट् | वर्जयाञ्चकार | वर्जयाञ्चक्रतुः | वर्जयाञ्चक्रुः | प्र. |
| | वर्जयाञ्चकर्थ | वर्जयाञ्चक्रथुः | वर्जयाञ्चक्र | म. |
| | वर्जयाञ्चकार-चकर | वर्जयाञ्चकृव | वर्जयाञ्चकृम | उ. |

१ लीलोर्नुग्लुकावन्यतरस्यां स्नेहनिपातने (७-३-९३) इति नुक्। पक्षे 'आधृषाद्वा' इत्यनेन विकल्पे कर्तरि शप् लयति।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुट् | वर्जयिता | वर्जयितारौ | वर्जयितारः | प्र. |
| | वर्जयितासि | वर्जयितास्थः | वर्जयितास्थ | म. |
| | वर्जयितास्मि | वर्जयितास्वः | वर्जयितास्मः | उ. |
| लृट् | वर्जयिष्यति | वर्जयिष्यतः | वर्जयिष्यन्ति इत्यादि। | |
| लोट् | वर्जयतु | वर्जयताम् | वर्जयन्तु इत्यादि। | |
| लङ् | अवर्जयत् | अवर्जयताम् | अवर्जयन् | प्र. |
| | अवर्जयः | अवर्जयतम् | अवर्जयत | म. |
| | अवर्जयम् | अवर्जयाव | अवर्जयाम | उ. |
| वि. लि. | वर्जयेत् | वर्जयेताम् | वर्जयेयुः | प्र. |
| | वर्जयेः | वर्जयेतम् | वर्जयेत | म. |
| | वर्जयेयम् | वर्जयेव | वर्जयेम | उ. |
| आ. लि. | वर्ज्यात् | वर्ज्यास्ताम् | वर्ज्यासुः | प्र. |
| | वर्ज्याः | वर्ज्यास्तम् | वर्ज्यास्तम | म. |
| | वर्ज्यासम् | वर्ज्यास्व | वर्ज्यास्म | उ. |
| लुङ् | अवीवृजत् | अलवीवृजताम् | अवीवृजन् | प्र. |
| | अवीवृजः | अवीवृजतम् | अवीवृजत | म. |
| | अवीवृजम् | अवीवृजाव | अवीवृजाम | उ.य |

पक्षे—अववर्जत् अववर्जताम् अववर्जन् इत्यादि।

लृङ् अवर्जयिष्यत् अवर्जयिष्यताम् अवर्जयिष्यन् इत्यादि।

पक्षे—वर्जति वर्जतः वर्जन्ति इत्यादि।

**कृत्सु**—वर्जकः-र्जिका, वर्जयिता-त्री, वर्जयन्-न्ती, वर्जयिष्यन्-न्ती-ती, वर्जयमानः, वर्जयिष्यमाणः, वर्जितम्-तः, वर्जयितुम्, वर्जयित्वा, प्रवर्ज्य, वर्जयितव्यम्, वर्जनीयम्, वर्ज्यमानः, वर्जनम्, वर्जः अपपृक्तः।

**(१८१३) वृञ्—आवरणे**। (आच्छादित करना, ढंकना)। **अप**—संरक्षण करना, दूर हटाना आ—घेरना, लपेटना, **विर**—समाप्त करना, निवारण करना, स्पष्ट करना या होना, **सम्**—छिपाना, **अप**—छोड़ना, दान देना। सकर्म.। सेट्। उभय.। आधृषीयः।

१ वारयति-ते। २ वारयाञ्चकार-चक्रे। ३ वारयिता। ४ वारयिष्यति-ते। ५ वारयतु-ताम्। ६ अवारयत्-त। ७ वारयेत्-त। ८ वार्यात्-वारयिषीष्ट। ९ **प्र.** अवीवरत्-त। अवीवरताम् अवीवरन्। **म.** अवीवरः अवीवरतम् अवीवरत। **उ.** अवीवरम् अवीवराव अवीवराम। १० अवारयिष्यत्-त।

**कर्मणि**—वार्यते। **कृत्सु**—वारकः-रिका, वारयिता-त्री, वारयन्-न्ती, वारयिष्यन्-न्ती-ती, वारयमानः, वारयिष्यमाणः, वारः, वारयितुम्, वारयित्वा, प्रवार्य, वारयितव्यम्, वारणीयम्, वारितः-तम्।

**(१८१४) जॄ—वयोहानौ**। (वृद्ध होना, जीर्ण होना)। अकर्म। सेट्। ऋकारान्तः उभय.। आधृषीयः।

१ जारयति-ते। २ जारयाञ्चकार-चक्रे। ३ जारयिता। ४ जारयिष्यति-ते। ५ जारयतु-ताम्। ६ अजारयत्-त। ७ जारयेत्-त। ८ जार्यात्-जारयिषीष्ट। ९ अजीजरत्-त। १० अजारयिष्यत्-त। आधृषाद्वा इति णिजभाव पक्षे—१ जरति। २ जजार। ३ जरिता। ४ जरिष्यति। ५ जरतु-तात्। ६ अजरत्। ७ जरेत्। ८ जीर्यात्। ९ अजारीत् अजारीष्टाम् अजारिषुः इत्यादि पक्षे अजरत्। १० अजरिष्यत्।

**कृत्सु**—जारकः-रिका, जारयिता-त्री, जारयन्-न्ती, जारयिष्यन्-न्ती-ती, जारयमानः, जारयिष्यमाणः, जारयितुम्, जारयित्वा, प्रजार्य, जारयितव्यम्, जारणीयम्, जारः, जारितः-तम्।

**(१८१५) ज्रि—वयोहानौ**। (वृद्ध होना, जीर्न होना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। आधृषीयः। ज्रायति-ते। 'आधृषाद् वा' इति णिजभावे ज्रयति।

**(१८१६) रिच—वियोजनसंपर्चनयोः**। (एकत्र करना, जोड़ना, बांधना, अलग-अलग करना, फैलाना दस्त करना, पेट साफ करना, रेचक दवा देना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। आधृषीयः।

१ प्र. रेचयति रेचयतः रेचयन्ति। म. रेचयसि रेचयथः रेचयथ। उ. रेचयामि रेचयावः रेचयामः। २ रेचयाञ्चकार-चक्रे। ३ रेचयिता। ४ रेचयिष्यति। ५ रेचयतु-तात्-ताम्। ६ **प्र.** अरेचयत् अरेचयताम् अरेचन्। **म.** अरेचयः अरेचयतम् अरेचयत। **उ.** अरेचयम् अरेचयाव अरेचयाम। ७ **प्र.** रेचयेत्-त रेचयेताम् रेचयेयुः। **म.** रेचयेः रेचयेतम् रेचयेत। **उ.** रेचयेयम् रेचयेव रेचयेम। ८ रेच्यात्-रेचयिषीष्ट। ९ **प्र.** अरीरिचत्-त अरीरिचताम् अरीरिचन्। **म.** अरीरिचः अरीरिचतम् अरीरिचत। **उ.** अरीरिचम् अरीरिचाव अरीरिचाम। १० अरेचयिष्यत्। 'आधृषादवा' इति णिजयाव पक्षे—रेचति इत्यादि।

**कृत्सु**—विरेचकः-चिका, रेचयिता-त्री, रेचयन्-न्ती, विरेचयिष्यन्-न्ती-ती, विरेचयमानः, विरेचयिष्यमाणः, विरेचनम्, विरेचयितुम्, रेचित्वा, विरेच्य, विरेचयितव्यम्, विरेचनीयम्, विरेचितः-तम्, विरेचः।

**(१८१७) शिष—असर्वोपयोगे**। (शेष रखना, बचा रखना, पूरा खर्च न करना)। **वि**—अधिक होना, ज्यादा होना, सकर्म.। सेट्। उभय.। आधृवीयः।

१ शेषयति-ते। २ शेषयाञ्चकार-चक्रे। ३ शेषयिता। ४ शेषयिष्यति-ते। ५ शेषयतु-ताम्। ६ अशेषयत्-त। ७ शेषयेत्-त। ८ शेष्यात्-शेषयिषीष्ठ, ९ **प्र.** अशीशिषत् अशीशिषताम् अशीशिषन्। **म.** अशीशिषः अशीशिषतम् अशीशिषत। **उ.** अशीशिषम् अशीशिषाव अशीशिषाम। १० अशेषयिष्यत्। 'आधृषाद् वा' इति णिजभाव पक्षे—शेषति शेषतः शेषन्ति। इत्यादि।

**सनि**—रिरेचयिषति-ते। **कृत्सु**—शेषकः-षिका, शेषयिता-त्री, शेषयन्-न्ती, शेषयिष्यन्-न्ती, शेषयमानः, शेषयिष्यमाणः, शेषितः-तम्, शेषः, शेषयितुम्, शेषयित्वा, शेषणीयम्, विशेषः = अधिकः, शेषयितव्यम्, विशेष्य।

**( १८१८ ) तप—दाहे।** (तप्त होना, जलना, जलाना, तप्त करना, मन या शरीर में जलना)। **अनु**—पश्चात्ताप करना, **परि-सम्**—पश्चात्ताप करना दुःख करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। आधृषीयः।

१ तापयति-ते। २ तापयाञ्चकार-चक्रे। ३ तापयिता। ४ तापयिष्यति-ते। ५ तापयतु-ताम्। ६ अतापयत्-त। ७ तापयेत्-त। ८ ताप्यात्। ९ अतीतपत्-त। १० अतापयिष्यत्-त।

**कर्मणि**—ताप्यते। **कृत्सु**—तापकः-पिका, तापयिता-त्री, तापयन्-न्ती, तापयिष्यन्-न्ती-ती, तापयितव्यम्, तापनीयम्, तापयितुम्, तापयित्वा, प्रताप्य, तापः, तापितम्-तः, तापयमान, तापयिष्यमाणः, ताप्यम्, ताप्यमानः।

**( १८१९ ) तृप—तृप्तौ दीपने च।** (तृप्त होना, प्रसन्न होना, तृप्त करना, प्रसन्न करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। आधृषीयः।

तर्पयति-ते। ९ अतीतृपत्-त-अततर्पत्-त। णिजभावे तर्पति। तर्पिता। **सनि**—तितर्पयिषति-ते।

**( १८२० ) छृदी—संदीपने।** (जलाना, प्रज्वलित करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। आधृषीयः।

१ छर्दयति-ते। २ छर्दयाञ्चकार-चक्रे। ३ छर्दयिता। ४ छर्दयिष्यति-ते। ५ छर्दयतु-ताम्। ६ अछर्दयत्-त। ७ छर्दयेत्-त। ८ छर्द्यात्-छर्दयिषीष्ट। ९ **प्र.** अचछर्दत् अचर्छदताम् अचर्छदन्। **म.** अचर्छदः अचर्धतम् अचछर्दत। **उ.** अचर्छतम् अचर्छदाव अचर्छदाम। पक्षे—अचच्छृदत् अचच्छृदताम् अचच्छृन् इत्यादि। १० अर्छदयिष्यत्-त। णिजभाव पक्षे- छर्दति छर्दतः छर्दन्ति। इत्यादि।

**कृत्सु**—छर्दकः-र्दिका, छर्दयिता-त्री, छर्दयन्-न्ती, छर्दयिष्यन्-न्ती-ती, छर्दयमानः, छर्दिष्यमाणः, छर्दितः, छर्दयितुम्, छर्दयमानः, छदिष्यमाणः, छर्दितः, छर्दयितुम्, छर्दयित्वा, प्रछर्द्य, छर्दयितव्यम्, छर्दनीयम्, ण्यन्तात्, णिजभाव पक्षे—शुद्धात् शुद्धप्रकृतिकसन्नन्तात् यङन्ताच्च छर्दकः-र्दिका, चिच्छर्दिषकः[1]-षिका, चरीच्छृदकः-दिका।

**( १८२१ ) दृभी—ग्रन्थे।** (भये) (सम्बन्ध लगाना, सन्दर्भ लगाना, डरना)। सकर्म। सेट्। उभय.। आधृषीयः।

१ दर्भयति-ते। २ दर्भयाञ्चाक-चक्रे। ३ दर्भयिता। ४ दर्भयिष्यति-ते। ५ दर्भयतु-ताम्। ६ अदर्भयत्-त। ७ दर्भयेत्-त। ८ दर्भ्यात्-दर्भयिषीष्ट। ९ अदीदृभत्-त। १०

१ 'से सिचि–' (७-२-५६) इति इड्विकल्पः नास्य धातो र्भवति 'तत्र रुधादिसाहचर्येण, 'उ छृदिर्–' इति रौधादिकधातोरेव ग्रहणात्। अत एवात्र धातौ ईदित्करणं सार्थकम्। अन्यथा, णिजभावपक्षे, 'से सिचि–' (७-२-५६) इतीड्विकल्पनेन, 'यस्य विभाषा' (७-२-१५) इतीण्णिषेधे सिद्धे ईदित्करणं व्यर्थं स्यात्' प्रकृते तु णिजभावपक्षे शुद्धे 'श्वीदितः–' (७-२-१४) इतीण्णिषेधेः।

अदर्भायिष्यत्-त। **णिजभावपक्षे**—१ दर्भति दर्भतः दर्भन्ति। ९ अदर्भीत् अदर्भिष्टाम् अदर्भिषुः। अदर्भीः अदर्भिष्टम् अदर्भिष्ट। अदर्भिषम् अदर्भिष्व अदर्भिष्म।

**कृत्सु**—दर्भकः-र्भिका, दर्भयिता-त्री, दर्भयन्-न्ती, दर्भयिष्यन्-न्ती-ती, दर्भयमानः, दर्भयिष्यमाणः, दर्भयित्वा, प्रदर्भ्य, दर्भयितुम्, दर्भयितव्यम्, दर्भनीयम्, दर्भितः-तम्, दर्भः। आधृषीयत्वेन णिज्विकल्पनात्, णिजभावपक्षे ईदित्वात् शुद्धातोः दर्भन्, निष्ठायामिण्णिषेधे दृब्धम्, दृब्धः दृब्धवान्, इत्यादि रूपाणि भवन्ति।

**( १८२२ ) दृभ—सन्दर्भे**। (सन्दर्भ लगाना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। आधृषीयः। दर्भयति-ते। (१८२१) वत्।

**( १८२३ ) श्रथ—मोक्षणे हिंसायाञ्च**। (मुक्त करना, छोड़ना, मारना, पीड़ा देना)। सकर्म. सेट्। उभय.। आधृषीयः। श्राथयति-ते। ९. अशिश्रथत्-त।

**( १८२४ ) मी—गतौ**। (जाना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। आधृषीयः। ईकारान्तः। माययति-ते। अमीमयत्-त।

**कृत्सु**—मायकः-यिका, मिमाययिषकः-षिका, मिमीषकः-षिका, मेमीयकः[1]-यिका, माययिता-त्री, मिमाययिषिता-त्री, मेता[2]-त्री, मिमिषिता-त्री, मेमीयिता-मीणिजभाव पक्षे–मयन्-न्ती।

**( १८२५ ) ग्रन्थ—बन्धने सन्दर्भे च**। (बांधना, गांठ लगाना)। **उत्**—छोड़ देना, मुक्त करना, सन्दर्भ लगाना। सकर्म.। सेट्। उभय.। आधृषीयः।

१ ग्रन्थयति-ते। २ ग्रन्थयाञ्चकार-चक्रे। ३ ग्रन्थयिता। ४ ग्रन्थयिष्यति-ते। ५ ग्रन्थयतु-ताम्। ६ अग्रन्थयत्-त। ७ ग्रन्थयेत्-त। ८ ग्रन्थ्यात्-ग्रन्थयिषीष्ट। ९ अजग्रन्थत्-त। १० अग्रन्थयिष्यत्-त।

**कृत्सु**—ग्रन्थकः-न्थिका, ग्रन्थयिता-त्री, ग्रन्थयन्-न्ती, ग्रन्थयिष्यन्-न्ती-ती, ग्रन्थयमानः, ग्रन्थयिष्यमाणः, ग्रन्थितम्-तः, ग्रन्थयितुम्, ग्रन्थयितव्यम्, ग्रन्थनीयम्, ग्रन्थः = शास्त्रम्।

**( १८२६ ) शीक—आमर्षणे**। (छूना, स्पर्श करना, शान्त होना, सहना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। आधृषीयः।

१ शीकयति-ते। ९ **प्र.** अशीशिकत्-त अशीशिकताम् अशीशिकन्। **म.** अशीशिकः अशीशिकतम् अशीशिकत। **उ.** अशीशिकम् अशीशिकाव अशीशिकाम। णजभावपक्षे–१ शीकति। २ **प्र.** शिशीक शिशीकतुः शिशीकुः। **म.** शिशीकिथ शिशीकथुः शिशीक। **उ.** शिशीक शिशीकिव शिशीकिम। ३ शीकिता। ४ शीकिष्यति। ५ शीकतु-तात्। ६

१ 'सनि मीमा–' (७-४-५४) इत्यत्र अचौरादिकैर्धातुभिः सह साहचर्यात् नास्य ग्रहणम्' अतोऽत्र न 'इस्' भवादिकमित्यतः, 'इको झल्' (१-२-९) इति सनः कित्वम्, 'अज्झनगमां सनि' (६-४-५६) इत्यनेन (पर्जन्यन्यायेन) दीर्घः। 'श्विडीडिवर्णेष्वथ शीङ्श्रियावपि' (व्याघ्रभूतिकारिका, भाष्ये, ७-२-१०) इति नियमाण्णिजभावपक्षे इडागमो नेत्यादिकं यथायथमूह्यम्।

२ शुद्धे तृजन्ते इडभावात् गुणे रूपमेवम्।

अशीकत्। ७ शीकेत्। ८ शीक्यात्। ९ प्र. अशीकीत् अशीकिष्टाम् शीकिषुः। म. अशीकीः अशीकिष्टम् अशीकिष्ट। उ. अशीकिषम् अशीकिष्व अशीकिष्म। १० अशीकिष्यत्।

**कृत्सु**—शीककः-किका, शीकयिता-त्री।

(१८२७) **चीक—आमर्षणे**। (सहन करना, सहना, उतावला होना, असहिष्णु होना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। आधृषीयः चीकयति-ते। ९ अचीचिकत्-त। णिजभावपक्षे—चीकति चीकतः चीकन्ति। इत्यादि सर्वं शीकयति (१८२६) वत्।

(१८२८) **अर्द—हिंसायाम्**। (मारना, वध करना, दुःख देना, सताना)। सकर्म.। सेट्। उभयय। आधृषीयः

१ अर्दयति-ते। २ अर्दयाञ्चकार-चक्रे। ३ अर्दयिता। ४ अर्दयिष्यति-ते। ५ अर्दयतु-तात्। ६ अर्दित्-त। ७ अर्दयेत्-त। ८ अर्द्यात्-अर्दयिषीष्ट। ९ आर्दिदत्-त। १० अर्दयिष्यत्-त। णिजभावपक्षे अर्दति-ते।

**कृत्सु**—अर्दकः-र्दिका, अर्दयिता-त्री, अर्दिता-त्री, अर्दयन्-न्ती, अर्दन्-न्ती, अर्दयिष्यन्-न्ती-ती, अर्दिष्यन्-न्ती-ती, अर्दयमानः, अर्दमानः,[१] अर्दयिष्यमाणः, अर्दिष्यमाणः, अर्त्[२]-अर्द्-अर्दौ-अर्दः, अर्दितम्-तः, समर्णः[३]-न्यर्णः-व्यर्णः-अभ्यर्णः,[४] अभ्यर्दितः-तवान्, अर्दः, अर्दिदयिषुः, जनार्दनः[५], समर्दी,[६] अर्दयितव्यम्, अर्दितव्यम्, अर्दनीयम्, अर्द्यम्, अर्द्यमानः, अर्दयितुम्, अर्दना, अर्दयित्वा, समर्द्य।

(१८२९) **हिसि—हिंसायाम्**। (हिंसा करना, मारना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। आधृषीयः

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | हिंसयति | हिंसयतः | हिंसयन्ति | प्र. |
| | हिंसयसि | हिंसयथः | हिंसयथ | म. |
| | हिंसयामि | हिंसयावः | हिंसयामः | उ. |
| लिट् | हिंसयाञ्चकार | हिंसयाञ्चक्रतुः | हिंसयाञ्चक्रुः | प्र. |
| | हिंसयाञ्चकर्थ | हिंसयाञ्चक्रथुः | हिंसयाञ्चक्र | म. |
| | हिंसयाञ्चकार-चकर | हिंसयाञ्चकृव | हिंसयाञ्चकृम | उ. |
| लुट | हिंसयिता | हिंसयितारौ | हिंसयितारः | प्र. |
| | हिंसयितासि | हिंसयितास्थः | हिंसयितास्थ | म. |
| | हिंसयितास्मि | हिंसयितास्वः | हिंसयितास्मः | उ. |

१ शाकटायनमते णिजभावपक्षेऽनुदात्तेत्वात् शानच् भवति।
२ 'वाऽवसाने' (८-४-५६) इति चर्त्वविकल्पः। 'रात् सस्य' (८-२-२४) इति नियमात् संयोगान्तलोपो न।
३ णिजभावपक्षे 'अर्देस्संनिविभ्यः' (७-२-२४) इतीण्णिषेधे, 'रदाभ्यां—' (८-२-४२) इति निष्ठानत्वे णत्वम्।
४ 'अभेश्चाविदूर्ये' (७-२-२५) इति निष्ठायामिण्णिषेधः। विदूरे तु 'अभ्यार्दित' इत्येव।
५ णिजभावपक्षे नन्द्यादित्वात् (३-१-१३४) कर्तरि ल्युः।
६ 'सुप्यजातौ—' (३-२-७८) इति णिनिः ताच्छील्ये।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृट् | हिंसयिष्यति | हिंसयिष्यतः | हिंसयिष्यन्ति | प्र. |
| | हिंसयिष्यसि | हिंसयिष्यथः | हिंसयिष्यथ | म. |
| | हिंसयिष्यामि | हिंसयिष्यावः | हिंसयिष्यामः | उ. |
| लोट् | हिंसयतु-तात् | हिंसयताम् | हिंसयन्तु | प्र. |
| | हिंसय-तात् | हिंसयतम् | हिंसयत | म. |
| | हिंसयानि | हिंसयाव | हिंसयाम | उ. |
| लङ् | अहिंसयत् | अहिंसयताम् | अहिंसयन् | प्र. |
| | अहिंसयः | अहिंसयतम् | अहिंसयत | म. |
| | अहिंसयम् | अहिंसयाव | अहिंसयाम | उ. |
| वि. लि. | हिंसयेत् | हिंसेयेताम् | हिंसयेयुः | प्र. |
| | हिंसयेः | हिंसयेताम् | हिंसयेत | म. |
| | हिंसयेयम् | हिंसयेव | हिंसयेम | उ. |
| आ. लि. | हिंस्यात् | हिंस्यास्ताम् | हिंस्यासुः | प्र. |
| | हिंस्याः | हिंस्यास्तम् | हिंस्यास्त | म. |
| | हिंस्यासम् | हिंस्यास्व | हिंस्यास्म | उ. |
| लुङ् | अजिहिंसत् | अजिहिंसताम् | अजिहिंसन् | प्र. |
| | अजिहिंसः | अजिहिंसतम् | अजिहिंसत | म. |
| | अजिहिंसम् | अजिहिंसाव | अजिहिंसाम | उ. |
| लृङ् | अहिंसयिष्यत् | अहिंसयिष्यताम् | अहिंसयिष्यन् | प्र. |
| | अहिंसयिष्यः | अहिंसयिष्यतम् | अहिंसयिष्यम् | म. |
| | अहिंसयिष्यम् | अहिंसयिष्याव | अहिंसयिष्याम | उ. |

**णिजभावपक्षे**—१ हिंसति-ते। २ जिहिंस। ३ हिंसिता। ४ हिंसिष्यति। ५ हिंसतु-तात्। ६ अहिंसत्। ७ हिंसेत्। ८ हिंस्यात्। ९ **प्र.** अहिंसीत् अहींसिष्टाम् अहिंसिषुः। **म.** अहिंसीः अहिंसिष्टम् अहिंसिष्ट। **उ.** अहिंसिषम् अहिंसिष्व अहिंसिष्म। १० अहिंसिष्यत्।

**कृत्सु**—हिंसकः-सिका, हिंसयिता-त्री, हिंसयन्-न्ती, हिंसयिष्यम्, हिंसयमानः, हिंसयिष्यमाणः, हिंसयुतम्, हिंसयितव्यम्, हिंसनीयम्, हिंसितः-तम्, हिंसयित्वा, प्रहिंस्य।

**( १८३० ) अर्ह—पूजायाम्**। (पूजा करना, अर्चना, करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। आधृषीयः। अर्हयति-ते। णिजभावपक्षे—अर्हति-ते। सर्वं (१७३१) वत्।

**( १८३१ ) आङःषद—पद्यर्थे गतौ च**। (चढ़ाई करना, जाना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। आधृषीयः।

१ आसादयति-ते। २ आसदयाञ्चकार-चक्रे। ३ आदादयिता। ४ आसादयिष्यति-ते ५ आसादयतु-ताम्। ६ आसायत्-त। ७ आसादयेत्-त। ८ आसाद्यात्-आसादयिषीष्ट। ९ आसात्सीत्-त। १० आसादयिष्यत्। णिजभावपक्षे—आसादति-ते।

**कृत्सु**—आसादकः-दिका, आसादयिता-त्री, आसादयन्-न्ती, आसादयिष्यमान्-न्ती-ती, आसादयमानः, आसादयिष्यमाणः, आसादयितुम्, आसादयितव्यम्, आसादनीयम्, आसाद्य, आसादः, आसादितुम्-तम्, आसाद्यमानः, पक्षे– आसदन्-न्ती, आसदिष्यमाणः, आसादितुम्। इत्यादि।

**( १८३२ ) शुन्ध—शौचकर्मणि**। (शुद्ध होना, शुद्ध करना)। अकर्म.। सेट्। उभय.। आधृषीयः।

१ शुन्धयति-ते। २ शुन्धयाञ्चकार-चक्रे। ३ शुन्धयिता। ४ शुन्धयिष्यति-ते। ५ शुन्धयतु-शुन्धयताम्। ६ अशुन्धयत्-त। ७ शुन्धयेत्-त। ८ शुन्ध्यात्-शुन्धयिषीष्ट। ९ **प्र.** अशुशुन्धत्-त अशुशुन्धताम् अशुशुन्धन्। **म.** अशुशुन्धः अशुशुन्धताम् अशुशुन्धथा। **उ.** अशुशुन्धम् अशुशुन्धाव अशुशुन्धाम। १० अशुन्धयिष्यत्-त। णिजभावपक्षे—१ शुन्धति। २ **प्र.** शुशुन्धे शुशुन्धाते शुशुन्धिरे। **म.** शुशुन्धिषे शुशुन्धाथे शुशुन्धिध्वे। ३ शुन्धिता। ४ शुन्धिष्यति-ते। ५ शुन्धतु-ताम्। ६ अशुन्धत्-त। ७ शुन्धयेत्-त। ८ शुन्ध्यात्-त। शुन्धिष्ट। ९ अशुन्धिष्ट अशुन्धिषाताम्। १० अशुन्धिष्यत्-त।

**कृत्सु**—शुन्धकः-धिका, शुन्धयिता-शुन्धिता-त्री, शुन्धयन्-शुन्धन्-ती, शुन्धयिष्यन्-शुन्धिष्यन्-न्ती-ती, शुन्धयितुम्-शुन्धितुम्, शुन्धयित्वा, शुन्धित्वा, प्रशुन्ध्य, शुन्धितः-तम्, शुन्धयितव्यम्, शुन्धनीयम्, शुन्ध्यमानः।

**( १८३३ ) छद—अपवारणे**। (हटाना, छिपाना, आच्छादित करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः। १ छदयति-ते। ९ अचिच्छदत्-त। छदकः-दिका छदयिता-त्री।

**( १८३४ ) जुष—परितर्कणे**। (परितर्कणं ऊहो हिंसा वा सुखे च। परिपर्तण इत्यन्ये। परितर्पणं = तृप्तिक्रिया। (विचार करना, चाहना पीड़ा करना, मार डालना, तर्क करना, सुख देना, संतुष्ट होना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। आधृषीयः।

१ जोषयति-ते। २ जोषयाञ्चकार-चक्रे। ३ जोषयिता। ४ जोषयिष्यति-ते। ५ जोषयतु-ताम्। ६ अजोषयत्-त। ७ जोषयेत्-त। ८ जोष्यात्-जोषयिषीष्ट। ९ अजूजुषत्-त। १० अजोषयिष्यत्-त। णिजभावपक्षे—जोषति। जुजोष।

**कृत्सु**—जोषकः-षिका, जोषयिता-त्री, जोष्यन्-न्ती, जोषयिष्यन्-न्ती-ती, जोषयमाणः, जोषशयिष्यमाणः, जोषयितुम्-जोषितुम्, जोषयितव्यम्-जोषितव्यम्, जोषणीयम्, जोषयित्वा, जोषियत्वा, जुषित्वा, प्रजोष्य, जोट्-जोड्-जोषौ-जोषः, जोषितः-जोषितवान्, जोषः, जोषितव्यम्, जोष्यम्, जोष्यमाणः, जुष्यमाणः, जोषयितुम्, जोषितुम्, जोषणा, जुष्टिः, जोषणम्, सञ्जोष्य-सञ्जुष्य।

**( १८३५ ) धूञ्—कम्पने**। (कपाना, कम्पित करना, हिलाना, शोभित करना, **अव**—नष्ट करना, **वि**—प्रकल्पित करना, क्षोभित करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। ऊकारान्तः। आपृधीयः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | धूनयति[1] | धूनयतः | धूनयन्ति | प्र. |
| | धूनयसि | धूनयथः | धूनयथ | म. |
| | धूनयामि | धूनयावः | धूनयामः | उ. |
| लिट् | धूनयाञ्चकार | धूनयाञ्चक्रतुः | धूनयाञ्चक्रुः | प्र. |
| | धूनयाञ्चकर्थ | धूनयाञ्चक्रथुः | धूनयाञ्चक्र | म. |
| | धूनयाञ्चकार-चकर | धूनयाञ्चकृव | धूनयाञ्चकृम | उ. |
| लुट् | धूनयिता | धूनयितारौ | धूनयितारः | प्र. |
| | धूनयितासि | धूनयितास्थः | धूनयितास्थ | म. |
| | धूनयितास्मि | धूनयितास्वः | धूनयितास्मः | उ. |
| लृट् | धूनयिष्यति | धूनयिष्यतः | धूनयिष्यन्ति | प्र. |
| | धूनयिष्यसि | धूनयिष्यतः | धूनयिष्यथ | म. |
| | धूनयिष्यामि | धूनयिष्यावः | धूनयिष्यामः | उ. |
| लोट् | धूनयतु-तात् | धूनयताम् | धूनयन्तु | प्र. |
| | धूनय | धूनयतम् | धूनयत | म. |
| | धूनयानि | धूनयाव | धूनयाम | उ. |
| लङ् | अधूनयत् | अधूनयताम् | अधूनयन् | प्र. |
| | अधूनयः | अधूनयतम् | अधूनयत | म. |
| | अधूनयम् | अधूनयाव | अधूनयाम | उ. |
| वि. लि. | धूनयेत् | धूनयेताम् | धूनयेयुः | प्र. |
| | धूनयेः | धूनयेतम् | धूनयेत | म. |
| | धूनयेयम् | धूनयेव | धूनयेम | उ. |
| आ. लि. | धून्यात् | धून्यास्ताम् | धून्यासुः | प्र. |
| | धून्याः | धून्यास्तम् | धून्यास्त | म. |
| | धून्यासम् | धून्यास्व | धून्यास्म | उ. |
| लुङ् | अदूधुनत् | अदूधुनताम् | अदूधुनन् | म. |
| | अदूधुनः | अदूधुनतम् | अदूधुनत | म. |
| | अदूधुनम् | अदूधुनाव | अदूधुनाम | उ. |
| लृङ् | अधूनयिष्यति | अधूनयिष्यताम् | अधूनयिष्यन् | प्र. |
| | अधूनयिष्यः | अधूनयिष्यतम् | अधूनयिष्यत | म. |
| | अधूनयिष्यम् | अधूनयिष्याव | अधूनयिष्याम | उ. |

**णिजभावपक्षे**—१ धुवति। २ दुधाव। ३ धविता। ४ धविष्यति। ५ धवतु-तात्। ६ अधवत्। ७ धवेत्। ८ धूयात्। ९ अधावीत्। १० अधविष्यत्।

१ 'धूञ्प्रीञोर्नुग् वक्तव्यः' (वा. ३-१-२८) इत्यत्र, प्रीञा साहचर्यात् क्र्यादेवरेव ग्रहणामिति पक्षे, 'हेतुमण्ण्यान्तादेव नुगागमः, न तु स्वार्थण्यन्तात् इति पर्यवसानात्, अस्य धातोः स्वार्थण्यन्तत्वात् नुगागमे रूपमेवम्, अत्र पक्षे धावयति-ते इत्यादीनि रूपाणि ज्ञेयानि।

**कृत्सु**—धावक-विका, धूनयिता-त्री, धूनयन्-न्ती, धूनयिष्यन्-न्ती-ती, धूनयमानः, धूनयिष्यमाणः, धूनितम्-धावितम्-तः-तवान्, धूनः, धूनयितव्यम्, धूननीयम्, धून्यम्, धून्यमानः, धूनयितुम्, धूननम्, धूनयितव्यम्, प्रधून्य ।

**( १८३६ ) प्रीञ्—तर्पणे कान्तौ च**। (प्रीति करना, तृप्त करना, कामना करना, कान्तिमान होना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। ईकारान्तः। आधृषीयः।

१ प्रीणयति-ते। २ प्रीणयाञ्चकार-चक्रे। ३ प्रीणयिता। ४ प्रीणयिष्यति-ते। ५ प्रीणयतु-ताम्। ६ अप्रीणयत्-त। ७ प्रीणयेत्-त। ८ प्रीण्यात्-प्रीणयिषीष्ट। ९ प्र. अपिप्रिणत् अपिप्रिणताम् अपिप्रिणन्। म. अपिप्रिणः अपिप्रिणतम् अपिप्रिणत। उ. अपिप्रिणम् अपिप्रिणाव अपिप्रिणाम। १० अप्रीणयिष्यत्-त। णिजभावपक्षे—१ प्रयति-ते। २ प्र. पिप्राय पिप्रियतुः पिप्रयुः। म. पिप्रियिथ पिप्रियथुः पिप्रिय। उ. पिप्राय-पिप्रय पिप्रियिव पिप्रियिम। ३ प्रयिता। ४ प्रयिष्यति। ५ प्रयतु-तात्। ६ अप्रयत्। ७ प्रयेत्। ८ प्रीयात्। ९ प्र. अप्रायीत् अप्रायिष्टाम् अप्रायिषुः। म. अप्रायीः अप्रायिष्टम् अप्रायिष्ट। उ. अप्रायिषम् अप्रायिष्व अप्रायिष्म। १० अप्रयिष्यत्।

**कृत्सु**—प्रीणकः[१]-णिका, प्रायक[२]-यिका, पिप्रीणयिषकः[३]-पिप्राययिषकः-षिका, प्रायकः[४]-यिका, पिप्रीषकः[५]-षिका पेप्रीयकः[६]-यिका, प्रीणयिता-त्री, पिप्रीणयिषिता-त्री, प्रेता-त्री, पिप्रीषिता-त्री, पेप्रीयिता-त्री, प्रीणयन्-न्ती, पिप्रीणयिषन्-न्ती, प्रयन्[७]-न्ती, पिप्रीषन्-न्ती, प्रीणयिष्यन्-पिप्रीणयिषिष्यन्-न्ती-ती, प्रेष्यन्-न्ती-ती, पिप्रीषिष्यन्-न्ती-ती, मित्रप्रीः-मित्रप्रियौ-मित्रप्रियः, प्रीणितम्-तः, प्रीणः, प्रियः, प्रीणयितव्यम्, प्रेतव्यम्, प्रीणनीयम्, प्रयणीयम्, प्रीण्यम्, प्रेयम्, प्रीण्यमानः, प्रीयमाणः, प्रीणयितुम्, प्रेतुम्, प्रीणना, प्रीतिः, प्रीणनम्, प्रयनम्, प्रीणयित्वा प्रीत्वा, विप्रीण्य, विप्रीय।

**( १८३७ ) श्रन्थ—सन्दर्भे**। (रचना करना, क्रम से रखना, गूंथना, गुल्फित करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। आधृषीयः। १ श्रन्थयति-ते। ९ अशश्रन्थत्-त। णिजभावपक्षे–१ श्रन्थति-ते। २ शश्रन्थ। ९ प्र. अश्रन्थीत् अश्रन्थीष्टाम् अश्रन्थीषुः। म. अश्रन्थीः अश्रन्थतम् अश्रन्थत। उ. अश्रन्थिषम् अश्रन्थिष्व अश्रन्थिष्म।

---

१ 'धूञ् प्रीञोर्नुग् वक्तव्यः' (वा. ७-३-३७) इति ण्यन्ते सर्वत्र नुगागमो भवति।

२ 'धूञ् प्रीञो–' (वा. ७-३-३७) इति नुगागमः, 'धूञ्' साहचर्येण क्रैयादिकस्य प्रीणातेर्णाविवेति, हरदत्तादिमते तु नुगभावात् वृद्धौ, आयादेशे च रूपमेवम्। एवमेव तृजादिष्वपि प्राययिता-त्री इत्यादीनि रूपाणि यथायथमूह्याणि।

३ चुरादिप्रीञोऽपि नुगागमवादिनां पक्षे ण्यन्तात् सनि रूपमेवम्। हरदत्तादिमते तु पिप्राययिषकः इत्यदीनि रूपाणीति च ज्ञेयम्।

४ 'आधृषाद्वा' (गण.सू. चुरादौ) इति वचनेन णिचो वैकल्पिकत्वात्, णिजभावपक्षे शुद्धाद्रूपमेवम्।

५ णिजभावपक्षे सनि 'एकाच उपदेशे–' (७-२-१०) इतीण्णिषेधे, सनः कित्वे, दीर्घे च रूपम्। धातोरस्य चुरादि पठितस्य सेट्त्वेऽपि णिजभावपक्षे भ्वादिपाठेऽनिटत्वं शास्त्रवशादिति ज्ञेयम्।

६ णिजभावपक्षे शुद्धात् यङन्ते रूपमेवमिति ज्ञेयम्।

७ णिजभावपक्षे शुद्धात् 'शेषात् कर्तरि–' (१-३-७८) इति शतैव।

**( १८३८ ) ग्रन्थ—सन्दर्भे**। (ग्रन्थ लिखना, सन्दर्भ लगाना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ ग्रन्थयति-ते। २ ग्रन्थयाञ्चकार-चक्रे। ३ ग्रन्थयिता। ४ ग्रन्थयिष्यति-ते। ५ ग्रन्थयतु-ताम्। ६ अग्रन्थयत्-त। ७ ग्रन्थयेत्-त। ८ ग्रन्थ्यात्-ग्रन्थयिषीष्ट। अजग्रन्थत्। अग्रन्थयिष्यत्-त। णिजभावपक्षे—ग्रन्थति इत्यादि।

**कृत्सु**—ग्रन्थकः-थिका, ग्रन्थयिता-त्री, ग्रन्थयन्-न्ती, ग्रन्थयिष्यन्-न्ती-ती, ग्रन्थयमानः, ग्रन्थयिष्यमाणः, ग्रन्थयितुम्, ग्रन्थयितव्यम्, ग्रन्थनीयम्, ग्रन्थः, ग्रन्थनम्, ग्रन्थयित्वा, प्रग्रन्थ्य।

**( १८३९ ) आप्लृ—लम्भने**। (प्राप्त होना, पाना) **अभि—वि**—चारों ओर से व्यापना, **अव**—पाना, **परि**—चारों ओर से व्यापना, **परिसम्**—समाप्त करना, पूरा करना। सकर्म.। सेट्। उभय.। आधृषीयः। आपयति-ते। आपति-ते। ९ आपिपत्-त। आपत्-त।

**कृत्सु**—आपकः-पिका, आपयिता-त्री, आपयन्-न्ती, आप्स्यन्, आपयिष्यन्-न्ती-ती, प्रापयमाणः, आपः, आप्तव्यम्, आपयितुम्, आपयितव्यम्, आपनीयम्, आपनम्, आपयित्वा, प्रापणा, आपितुम्, ण्यन्तात् सनि तु आपिपयिषकः-षिका, आपिपयिषिता-त्री, आपिपयिषन्-न्ती, आपिपयिषिष्यन्-न्ती-ती, आपिपयिषमाणः, आपिपयिषिष्यमाणः, आपिपयिषितः-तं-तवान्, आपिपयिषुः, आपिपयिषितव्यम्, आपिपयिषणीयम्, आपिपयिष्यम्, आपिपयिष्यमाणः, आपिपयिषणीयम्, आपिपयिष्यम्, आपिपयिष्यमाणः, आपिपयिषितुम्, आपिपयिषः, इत्यादि।

**( १८४० ) तनु—श्रद्धोपकरणयोः, हनन इत्यन्ये**। (श्रद्धा करना, आश्रय देना, सहायता करना, शब्द करना, मार डालना, पीडा करना)। **वि-सम्**—बढाना, लम्बा करना। सकर्म.। सेट्। उभय.। आधृषीयः।

१ तानयति-ते। २ तानयाञ्चकार-चक्रे। ३ तानयिता। ४ तानयिष्यति-ते। ५ तानयतु-ताम्। ६ अतानयत्-त। ७ तानयेत्-त। ८ तान्यात्-तानयिषीष्ट। ९ **प्र.** अतीतनत् अतीतनताम् अतीतनन्। **म.** अतीतनः अतीतनतम् अतीतनत। **उ.** अतीतनम् अतीतनाव अतीतनाम। १० अतानयिष्यत्-त। णिजभावपक्षे—१ तनति। २ **प्र.** ततान तेनतुः तेनुः। **म.** तेनिथ तेनथः तेन। **उ.** ततान-ततन तेनिव तेनिम। ३ तनिता। ४ तनिष्यति। ५ तनतु-तात्। ६ अतनत्। ७ तनेत्। ८ तन्यात्। ९ अतानीत् अतानिष्टाम्। १० अतनिष्यत्।

**कृत्सु**—तानकः-तिका, अततानक-निका, तानयिता-त्री, तनिता-वितनिता-त्री, तानयन्-न्ती, तानयिष्यन्-न्ती-ती, तानयमानः, तानयिष्यमानः, तानितम्, तानः, तानयितव्यम्,ताननीयम्, तान्यम्, तान्यमानः, तानयितुम्, तानना, तानम्, तानयित्वा, प्रतान्य, वितान्य, वितन्, तनम्, नितान्तम्[1]।

**( १८४१ ) वद—सन्देशवचने**। भाषणे इति हेमचनद्र जैन कातन्त्रादयः। वाक् सन्देहवचनयोः इति वोपदेवः। (कहना, बोलना, सन्देश वचन कहना, भाषण करना)। **अनु**—अनन्तर बोलना, पीछे बोलना। **अप**—निन्दा करना, अपकारक भाषण करना,

१ क्तप्रत्यये 'अनुनासिकस्य–' (६-४-१५) इति दीर्घे च रूपमेवम्।

**अभि**—सत्कार पूर्व अभिनन्द करना, नमस्कार करना, **उप**—समझाकर कहना, **परि**—विरुद्ध बोलना, **प्रति**—उत्तर देना, जवाव देना, **विप्र**—(उ.) विलाप करना, वकवाद करना, **विसम्**—(प.) वचन भंग करना, कहने के अनुकूल न करना, **सम्प्र**—(आ.) एकत्र होकर सपष्ट कहना। समकर्म.। सेट्। उभय.। आधृषीयः।

१ वादयति-ते। २ वादयाञ्चका-चक्रे। ३ वादयिता। ४ वादयिष्यति-ते। ५ वादयतु-ताम्। ६ अवादयत्-त। ७ वादयेत्-त। ८ वाद्यात्-वादयिषीष्ट। ९ **प्र.** अवीवदत्-त अवीवदताम् अवीवदन्। **म.** अवीवदः अवीवदतम् अवीवदत। **उ.** अवीवदम् अवीवदाव अवीवदाम। १० अवादयिष्यत्-त।

णिजभावपक्षे—१ वदते। २ ववदे। ३ वदिता। ४ वदिष्यते। ५ वदेताम्। ६ अवदत। ७ वदेत। ८ **प्र.** वदिषीष्ट। वदिषीयास्ताम् वदिषीरन्। **म.** वदिषीष्ठाः वदिषीयस्थाम् वदिषीध्वम्। उ. विदषीय वदिषीवहि वदिषीमहि। ९ **प्र.** अवदिष्ट अवदिषाताम् अवदिषत। **म.** अवदिष्वः अवदिषाथाम् अवदिड्ढ्वम्-ध्वम्। **उ.** अवदिषि अवदिष्वहि अवदिष्महि। १० अवदिष्यत।

**कृत्सु**—वादकः-दिका, वादयिता-त्री, वादयमानः-वादयिष्यमाणः, वादयिष्यन्-न्ती-ती, वादितः-तम्, वादयितव्यम्, वादनीयम्, वाद्यम्, वाद्यमानः, वादयितुम्, वादः, वादना, वादनम्, वादयित्वा, अनुवाद्य।

**( १८४२ ) वच—परिभाषणे**। (बोलना, कहना, समझाना, पढ़ना, **प्र**—बोलने का प्रारम्भ करना)। सक.। सेट्। उभय.। आधृषीयः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | वाचयति | वाचयतः | वाचयन्ति | प्र. |
| | वाचयसि | वाचयथः | वाचयथ | म. |
| | वाचयामि | वाचयावः | वाचयामः | उ. |
| लिट् | वाचयाञ्चकार | वाचयाञ्चक्रतुः | वाचयाञ्चक्रुः | प्र. |
| | वाचयाञ्चकर्थ | वाचयाञ्चक्रथुः | वाचयाञ्चक्रुः | म. |
| | वाचयाञ्चकार-चकर | वाचयाञ्चकृव | वाचयाञ्चकृम | उ. |
| लुट् | वाचयिता | वाचयितारौ | वाचयितारः | प्र. |
| | वाचयितासि | वाचयितास्थः | वाचयितास्थ | म. |
| | वाचयितास्मि | वंचयितास्वः | वाचयितास्मः | उ. |
| लृट् | वाचयिष्यति | वाचयिष्यतः | वाचयिष्यन्ति | प्र. |
| | वाचयिष्यसि | वाचयिष्यथः | वाचयिष्यथ | म. |
| | वाचयिष्यामि | वाचयिष्यावः | वाचयिष्यामः | उ. |
| लोट् | वाचयतु-तात् | वाचयताम् | वाचयन्तु | प्र. |
| | वाचय-तात् | वाचयतम् | वाचयत | म. |
| | वाचयानि | वाचयाव | वाचयाम | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लङ् | अवाचयत् | अवाचयताम् | अवाचयन् | प्र. |
| | अवाचयः | अवाचयतम् | अवाचयत | म. |
| | अवाचयम् | अवाचयाव | अवाचयाम | उ. |
| वि. लि. | वाचयेत् | वाचयेताम् | वाचयेयुः | प्र. |
| | वाचयेः | वाचयेतम् | वाचयेत | म. |
| | वाचयेयम् | वाचयेव | वाचयेम | उ. |
| आ. लि. | वाच्यात् | वाच्यास्ताम् | वाच्यासुः | प्र. |
| | वाच्याः | वाच्यास्तम् | वाच्यास्त | म. |
| | वाच्यासम् | वाच्यास्व | वाच्यास्म | उ. |
| लुङ् | अवीवचत् | अवीवचताम् | अवीवचन् | प्र. |
| | अवीवचः | अवीवचतम् | अवीवचत | म. |
| | अवीवचम् | अवीवचाव | अवीवचताम | उ. |
| लृङ् | अवाचयिष्यत् | अवाचयिष्यताम् | अवाचयिष्यन् इत्यादि। | |

**णिजभावपक्षे**—१ वचति वचतः वचन्ति इत्यादि। २ **प्र.** ववाच ववचतुः ववचुः। **म.** ववचिथ ववचथुः ववच। **उ.** ववाच-ववच ववचिव ववचिम। ३ वचिता। ४ वचिष्यति। ५ वचतु। ७ वचेत्। ८ वच्यात्। ९ अवाचीत् अवाचिष्ट। अवाचिषुः। म. अवाचीः अवाचिष्टम् अवाचिष्ट उ. अवाचिषम् अवाचिषाव अवाचिषाम। १० अवचिष्यत्।

**कृत्सु**—वाचकः-चिका, वाचयिता-त्री, वक्ता-त्री, विवक्षिता-त्री, वावचिता-त्री, वाचयन्-न्ती, वाचयिष्यन्-न्ती-ती, वाचयमानः, विवाचयिष्यमाणः, वाचयिष्यमाणः, वाचितम्-तः, वाचः, वाचयितव्यम्, वाचनीयम्, वाच्यम्, वाच्यमानः, वाचयितुम्, वाचना, वाचयित्वा, प्रवाच्य। णिजभावपक्षे—वचन्-न्ती, वक्ष्यन् इत्यादि।

**(१८४३) मान—पूजायाम्**। (सत्कार करना, मानना)। **प्र.** प्रमाण करना, **अप-अव**—अपमान करना, तिरस्कार करना। सकर्म.। सेट्। उभय.। आघृषीयः।

१ मानयति-ते। ९ अमीमनत् अमीमनताम् अमीमनन्। अमीमनः अमीमनतम् अमीमनत। अमीमनम् अमीमनाव अमीमनाम। **णिजभावपक्षे**—१ मानति। २ **प्र.** ममान ममानतुः ममानुः। **म.** ममानिथ ममानथुः ममान। **उ.** ममान ममानिव ममानिम। ३ मानिता। ४ मनिष्यति। ५ मानतु-तात्। ६ अमानत्। ७ मानेत्। ८ मान्यात्। ९ अमानीत् अमानिष्टाम् अमानिषुः। १० अमानिष्यत्।

**कृत्सु**—मानकः-निका, मानयिता-मानिता-त्री, मानयितुम्-मानितुम्, मानयितव्यम्, मानितः, मानः।

**(१८४४) भू—प्राप्तौ**। (प्राप्त करना, मिल जाना, चिन्तन करना)। सकर्म.। सेट्।

आत्मने.[1] । आधृषीयः।

१ भावयते। २ भावयाञ्चक्रे। ३ भावयिता। ४ भावयिष्यते। ५ भावयताम्। ६ अभावयत। ७ भावयेत। ८ भावयिषीष्ट। ९ अबीभवत। १० अभावयिष्यते।

**कृत्सु**—भावकः-विका, बुभूषकः-षिका, बोभूयकः-यिका, भावयिता-त्री, भावयितुम्, भावयितव्यम्, भावनीयम्, भावयित्वा, प्रभाव्य, भावितः-तम्, भावयन्-न्ती, भावयिष्यन्-न्ती-ती, भावयमानः, भावयिष्यमाणः, भावः, प्रभावः।

**( १८४५ ) गर्ह—विनिन्दने**। (दोष लगाना, निन्दा करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। आधृषीयः

१ गर्हयति-ते। २ गर्हयाञ्चकार-चक्रे। ९ अजगर्हत्-त। णिजभावपक्षे—गर्हति। इत्यादि।

**( १८४६ ) मार्ग—अन्वेषणे संस्कारे च**। (अन्वेषण करना, ढूंढना, स्वच्छ करना, शुद्ध करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। आधृषीयः।

१ मार्गयति-ते। २ मार्गयाञ्चकार-चक्रे। ३ मार्गयिता। ४ मार्गयिष्यति-ते। ५ मार्गयतु-ताम्। ६ अमार्गयत्-त। ७ मार्गयेत्-त। ८ मार्ग्यात्-मार्गयिषीष्ट। ९ अममार्गत्-त। १० अमार्गयिष्यत्-त। **णिजभावपक्षे**—१ मार्गति। २ ममार्ग। ९ **प्र.** अमार्गीत् अमार्गिष्टाम् अमार्गिषन्। **म.** अमार्गीः अमार्गिष्टम् अमार्गिष्ट। **उ.** अमार्गिषम् अमार्गिष्व अमार्गिष्म। इत्यादि।

**कृत्सु**—मार्गकः-र्गिका, मार्गयिता-त्री, मार्गयन्-न्ती, मार्गयिष्यन्-न्ती-ती, मार्गः-पन्थाः। इत्यादि।

**( १८४७ ) कठि—शोके**। प्रायेण उत्पूर्वोऽयमुत्कण्ठायाम्। (उत्कण्ठित होना। शोक करना)। **उत्**—उत्कण्ठित होना। अकर्म.। सेट्। उभय. आधृषीयः।

१ कण्ठयति-ते। ९ **प्र.** अचकण्ठत्-त अचकण्ठताम् अचकण्ठन्। **म.** अचकण्ठः अचकण्टतम् अचकण्ठत। **उ.** अचकण्ठम् अचकण्ठाव अचकण्ठाम। **णिजभावपक्षे**—कण्ठति कण्ठतः कण्ठन्ति। ९ **प्र.** अकण्ठीत् अकण्ठिष्टाम् अकण्ठिषुः। **म.** अकण्ठीः अकण्ठिष्टम् अकण्ठिष्ट। **उ.** अकण्ठिषम् अकण्ठिषाव अकण्ठिषाम।

---

१ 'भू प्राप्तौ, आत्मनेपदी इति चुरादिषु 'आधृषीयेषु पठ्यते' आधृषीयत्वेनास्य णिज्विकल्पः। णिजभावपक्षे आत्मनेपदमेव, परस्मैपदमेव चात्र पक्षद्वयम्। णिच् सन्नियोगेनैवात्मनेपदविधानम्, णिजभापक्षे तु परस्मैपदमेवेति पुरुषकारे सप्रभाणं सांग्रहं च साधितम्। णिजभावपक्षे आत्मनेपदमेवास्य धातोरित्यत्र क्षीरस्वामिना 'याचितारश्च नः सन्तु दातारश्च भवावहै।' इति श्लोकः कश्चिदुदाहृतः। 'मंनोरमां मा भवते–' इति श्लोकोऽप्यात्मनेपदानुकूलत्वेन सुधाकरेण भूवादिसूत्रे (१-३-१) उदाहृत इति मा. धातुवृत्यादि ग्रन्थात् ज्ञायते। 'वर्षाभ्वश्च' (६-४-८४) इत्यत्र वर्षासु भवति, वर्षा वा भवते' इकि कैयटविवरण भाष्यानुकूलम्। 'अन्ये तु पुराणव्याकरणेषु 'भुवोणिङ्' इति सूत्रस्य णिङो ङकारः प्रत्ययान्तादात्मनेपदार्थः, प्रकृतौ तु केवलादिति श्री मद्रादिभिः व्याख्यानात् तन्त्रान्तरवचनानुरोधेन सन्नियोगन्यायो बाध्यते इत्याहुः।' इति धातुवृत्ति वचनादात्मनेपदं णिजभावपक्षेऽपि प्रामाणिकम्, बहुवैयाकरणसम्मतं चेति ज्ञेयम्।

**कृत्सु**—उत्कण्ठकः-ण्ठिका, कण्ठयिता-त्री, कण्ठयितुम्, उत्कण्ठनीयम्, इत्यादि।

**( १८४८ ) मृजू—शौचालङ्कारयोः**। (स्वच्छ करना, धोना, पवित्र होना, अलङ्कृत करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। ऊदित् आधृषीयः।

१ मार्जयति-ते। २ मार्जयाञ्चकार-चक्रे। ३ मार्जयिता। ४ मार्जयिष्यति-ते। ५ मार्जयतु-ताम्। ६ अमार्जयत्-त। ७ मार्जयेत्-त। ८ मार्ज्यात्-मार्जयिषीष्ट। ९ अमीमृजत्-त। १० अमार्जयिष्यत्। णिजभावे—१ मार्जति। २ ममार्ज। ९ **प्र.** अमार्जीत् अमार्जिष्टाम् अमार्जिषुः। **म.** अमार्जीः अमार्जिष्टम् अमार्जिष्ट। **उ.** अमार्जिषम् अमार्जिष्व अमार्जिष्म। पक्षे—अमार्क्षीत् अमार्ष्टाम् अमार्क्षुः। इत्यादि।

**कृत्सु**—मार्जकः-र्जिका, मार्जयिता-त्री, मार्जयन्-न्ती, मार्जयिष्यन्-न्ती-ती, मार्जयमानः, मार्जयिष्यमाणः, मार्जयितुम्, मार्जित्वा, मार्जयितव्यम्, मार्जनीयम्, मार्जितः-तम्, मार्जः, मार्ज्यमानः, मार्ज्यम्।

**( १८४९ ) मृष—तितिक्षायाम्**। (सहन करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। आधृषीयः।

१ मर्षयति। २ मर्षयाञ्चकार-चक्रे। ३ मर्षयिता। ४ मर्षयिष्यति-ते। ५ मर्षयतु-ताम्। ६ अमर्षयत्-त। ७ मर्षयेत्-त। ८ मार्ष्यात्-मर्षयिषीष्ट। ९ अमीमृषत्-त। १० अमर्षयिष्यत्-त। णिजभावे—१ मर्षते। २ **प्र.** ममृषे ममृषाते ममृषिरे। **म.** ममृषिसे ममृषाथे ममृषिध्वे। **उ.** ममृषे ममृषिवहे ममृषिमहे। ३ **प्र.** मषिता। **म.** मषितासे। **उ.** ममृताहे। ४ मर्षिष्यते। ५ **प्र.** मर्षताम् मर्षेताम् मर्षन्ताम्। **म.** मर्षस्व मर्षेथाम् मर्षध्वम्। **उ.** मर्षै मर्षावहै मर्षामहै। ६ **प्र.** अमर्षत अमर्षन्ताम् अमर्षन्त। ७ मर्षेत। ८ **प्र.** मर्षिषीष्ट मर्षिषीयास्ताम् मर्षिषीरन्। **म.** मर्षिषीष्ठाः मर्षिषीयास्थाम् मर्षिषीध्वम्। **उ.** मर्षिषीय मर्षिषीवहि मर्षिषीमहि। ९ **प्र.** अमर्षिष्ट अमषिषाताम् अमर्षिषत। **म.** अमर्षिष्ठाः अमर्षियाथाम् अमर्षिड्ढ्वम्-ध्वम्। **उ.** अमर्षिषि अमर्षिवहि अमर्षिमहि। १० अमर्षिष्यत्।

**कृत्सु**—मर्षकः-र्षिका, मर्षयिता-त्री, मर्षयन्-न्ती, मर्षयिष्यन्-न्ती, मर्षयमाणः, मर्षयिष्यमाणः, मर्षयितुम्, मर्षयितव्यम्, मर्षणीयम्, मषितः-तम्। **णिजभावे**—मृड्-ड्-मृषौ मृषः। मृषित्वा, मर्षित्वा। इत्यादि।

**( १८५० ) धृष—प्रसहने**। (जीतना, पराभव करा, अधीर होना, घबरा जाना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। आधृषीयः। धर्षयति-ते। ९. अदीधृषत्-त। **णिजभावे**—धर्षति। २. दधर्ष ९. अधर्षीत्।

**( १८५१ ) कथ—वाक्यप्रबन्धे**। (कहना, व्याख्यान करना, बयान करना)। सकर्म. सेट्। उभय.

१ कथयति-ते। २ कथयाञ्चकार-चक्रे। ३ कथयिता। ४ कथयिष्यति-ते। ५ कथयतु-ताम्। ६ अकथयत्-त। ७ कथयेत्-त। ८ कथ्यात्-कथयिषीष्ट। ९ **प्र.** अचकथत् अचकथताम् अचकथन्। **म.** अचकथः अचकथतम् अचकथत। **उ.** अचकथम् अचकथाव अचकथाम्। १० अकथयिष्यत्-त।

**कृत्सु**—कथकः-थिका, कथयिता-त्री, कथयन्-न्ती, कथयिष्यन्-न्ती-ती, कथयमानः, कथयिष्यमाणः, कत्-कद्-कथौ-कथः, कथितम्-तः, कथः, कथयितव्यम्, कथनीयम्, कथ्यम्, ईषत्कथः-दुष्कथः-सुकथः, कथ्यमानः, कथयितुम्, कथा, कथनम्, कथयित्वा, प्रकथय्य।

**( १८५२ ) वर—ईप्सायाम्**। (इच्छा करना, चाहना, आशा करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | वरयति | वरयतः | वरयन्ति | प्र. |
| | वरयसि | वरयथः | वरयथ | म. |
| | वरयामि | वरयावः | वरयामः | उ. |
| लिट् | वरयाञ्चकार | वरयाञ्चक्रतुः | वरयाञ्चक्रुः | प्र. |
| | वरयाञ्चकर्थ | वरयाञ्चक्रथुः | वरयाञ्चक्र | म. |
| | वरयाञ्चकार-चकर | वरयाञ्चकृव | वरयाञ्चकृम | उ. |
| लुट् | वरयिता | वरयितारौ | वरयितारः | प्र. |
| | वरयितासि | वरयितास्थः | वरयितास्थ | म. |
| | वरयितास्मि | वरयितास्वः | वरयितास्मः | उ. |
| लृट् | वरयिष्यति | वरयिष्यतः | वरयिष्यन्ति | प्र. |
| | वरयिष्यसि | वरयिष्यथः | वरयिष्यथ | म. |
| | वरयिष्यामि | वरयिष्यावः | वरयिष्यामः | उ. |
| लोट् | वरयतु-तात् | वरयताम् | वरयन्तु | प्र. |
| | वरय-तात् | वरयतम् | वरयत | म. |
| | वरयाणि | वरयाव | वरयाम | उ. |
| लङ् | अवरयत् | अवरयताम् | अवरयन् | प्र. |
| | अवरयः | अवरयतम् | अवरयत | म. |
| | अवरयम् | अवरयाव | अवरयाम | उ. |
| वि.लि. | वरयेत् | वरयेताम् | वरयेयुः | प्र. |
| | वरयेः | वरयेतम् | वरयेत | म. |
| | वरयेयम् | वरयेव | वरेयम | उ. |
| आ.लि. | वर्यात् | वर्यास्ताम् | वर्यासुः | प्र. |
| | वर्याः | वर्यास्तम् | वर्यास्त | म. |
| | वर्यासम् | वर्यास्व | वर्यास्म | उ. |
| लुङ् | अववरत् | अववरताम् | अववरन् | प्र. |
| | अववरः | अववरतम् | अववरत | म. |
| | अववरम् | अववराव | अववराम | उ. |
| लृङ् | अवरयिष्यत् | अवरयिष्याततम् | अवरयिष्यन् | प्र. |
| | अवरयिष्यः | अवरयिष्यतम् | अवरयिष्यत | म. |
| | अवरयिष्यम् | अवरयिष्याव | अवरयिष्याम | उ. |

**आत्मनेपदे**—१ वरयते। २ वरयाञ्चक्रे। ३ वरयिता। ४ वरयिष्यते। ५ वरयताम्। ६ अवरयत। ७ वरयेत। ८ वरयिषीष्ट। ९ अववरत। १० अवरयिष्यत।

**कृत्सु**—वरकः[1]-रिका, वरयिता-त्री, वरयन्-न्ती, वरयिष्यन्-न्ती-ती, क्विपि-वः वरौ वरः, ल्यपि-संवरय्य,[2] वरयितुम्, वरयितव्यम्, वरणीयम्, वरः, वरयमानः, वरयिष्यमाणः, वरितः-तम्, वरणा, वर्यमाणः।

**( १८५३ ) गण—संख्याने**। (गिनना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः।

१ गणयति-ते। २ गणयाञ्चकार-चक्रे। ३ गणयिता। ४ गणयिष्यति-ते। ५ गणयतु-ताम्। ६ अगणयत्-त। ७ गणयेत्-त। ८ गण्यात्। ९ अजगणत्-त। १० अगणयिष्यत्-त।

**सनि**—जिगणयिषति। **कर्मणि**—गण्यते। **कृत्सु**—गणकः-णिका, गणयिता-त्री, गणयन्-न्ती, गणयिष्यन्-न्ती-ती, गणयमानः, गणयिष्यमाणः, गणितः-तम्, गणयितुम्, गणयितव्यम्, गणनीयम्, गण्यमानः, गणः, गणयित्वा, प्रगण्य, विगण्य।

**( १८५४ ) शठ—सम्यग् अवभाषणे**। (दुर्भाषण करना, दुर्वचन कहना, मौन धारण करना, चुप रहना)। अकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्त।

१ शठयति-ते। ९ **प्र.** अशशठत् अशशठताम् अशशठन्। **म.** अशशठः अशशठतम् अशशठत। **उ.** अशशठम् अशशठाव अशशठाम।

**कृत्सु**—शठकः-ठिका, शठयिता-त्री, शठयन्-न्ती, शठयिष्यन्-न्ती-ती, शठयमानः, शठयिष्यमाणः, शठितः-तम्, शठः, शठयितुम्, शठयितव्यम्, शठनीयम्, शठयित्वा, प्रशठ्, शठ्यमानः, शठ्यम्।

**( १८५५ ) श्वठ—सम्यगवभाषणे**। (दुर्भाषण देना, दुर्वचन कहना, गाली बकना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः। श्वठयति-ते। अशश्वठत्-त।

**कृत्सु**—श्वठकः-ठिका, श्वठयिता-त्री, श्वठयन्-न्ती, श्वठयिष्यन्-न्ती-ती, श्वठयमानः, श्वठयिष्यमाणः।

**( १८५६ ) पट—ग्रन्थे**। (गूंथना, लपेटना, हिस्से करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः।

१ पटयति-ते। २ पटयाञ्चकार-चक्रे। ३ पटयिता, ४ पटयिष्यति-ते। ५ पटयतु-ताम्। ६ अपटयत्-त। ७ पटयेत्-त। ८ पट्यात्-पटयिषीष्ट। ९ अपपटत्-त। १० अपयिष्यत-त।

**कृत्सु**—पटकः-टिका, पटयिता-त्री, पटयन्-न्ती, पटयिष्यन्-न्ती-ती, पटयमानः, पटयिष्यमाणः, पटितः-तम्, पटयितुम्, पठयितव्यम्, पटनीयम्, पट्यम्, पट्यमानः, पटः, पटयित्वा, प्रपट्य।

१ अत्र सर्वत्र अल्लोपस्य स्थानिवत्त्वात् उपधावृद्धि न भवति।
२ 'ल्यपि लघुपूर्वात्' (६-४-५६) इति णेरयादेशे। रूपमेवम्।

**(१८५७) वट—ग्रन्थे।** (गूंथना, लपेटना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः।

१ वटयति-ते। २ वटयाञ्चकार-चक्रे। ३ वटयिता। ४ वटयिष्यति-ते। ५ वटयतु-ताम्। ६ अवटयत्-त। ७ वटयेत्-त। ८ वट्यात्-वटयिषीष्ट। ९ अववटत्-त। १० अवटयिष्यत्-त।

**कृत्सु**—वटकः[१]-टिका, वटयिता-त्री, वटयन्-न्ती, वटयिष्यन्-न्ती, वटयमानः, वटयिष्यमाणः, वटितः-तम्, वटयित्वा, संवट्य, वट्यमानः, वटः, वट्यम्।

**(१८५८) रह—त्यागे।** (त्यागना, छोड़ना)। वि—अलग होना, भिन्न होना। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१. रहयति-ते। २. रहयाञ्चकार-चक्रे। ३. रहयिता। ४. रहयिष्यति-ते। ५. रहयतु-ताम्। ६. अरहयत्-त। ७. रहयेत्-त। ८. रह्यात्-रहयिषीष्ट। ९. अररहत्-त। १०. अरहयिष्यत्-त।

**कृत्सु**—रहकः-हिका, रहयिता-त्री, रहयन्-न्ती, रहयिष्यन्-न्ती-ती, रहयमानः, रहयिष्यमाणः, रह्यम्, रहितः-तम्, रहयितम्, रहयितव्यम्, रहणीयम्, रहयित्वा-प्ररह्य, रह्यमानः।

**(१८५९) स्तन—देवशब्दे।** (मेघ की गर्जना होना)। अकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः।

१ स्तनयति-ते। २ स्तनयाञ्चकार-चक्रे। ३ स्तनयिता। ४ स्तनयिष्यति-ते। ५ स्तनयतु-ताम्। ६ अस्तनयत्-त। ७ स्तनयेत्-त। ८ स्तन्यात्-स्तनयिषीष्ट। ९ अतस्तनत्-त। १० अस्तनयिष्यत्-त।

**कर्मणि**—स्तन्यते। **सनि**—तिस्तनयिषति-ते। **कृत्सु**—स्तनकः-निका, स्तनयिता-त्री, स्तनयन्-न्ती, स्तनयिष्यन्-न्ती-ती, स्तनयमानः, स्तनयिष्यमाणः, स्तनयितुम्, स्तनितः-तम्, स्तनयितव्यम्, स्तननीयम्, स्तन्यम्, स्तनः, स्तन्यमानः, स्तनयित्वा, प्रस्तन्य।

**(१८६०) गदी—देवशब्दे।** (मेघ की गर्जना)। अकर्म.। सेट्। उभय.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | गदयति-ते | गदयतः | गदयन्ति | प्र. |
| | गदयसि | गदयथः | गदयथः | म. |
| | गदयामि | गदयावः | गदयामः | उ. |
| लिट् | गदयाञ्चकार | गदयाञ्चक्रतुः | गदयाञ्चक्रुः | प्र. |
| | गदयाञ्चकर्थ | गदयाञ्चक्रथुः | गदयाञ्चक्र | म. |
| | गदयाञ्चकार-चकर | गदयाञ्चकृव | गदयाञ्चकृम | उ. |
| लुट् | गदयिता | गदयितारौ | गदयितारः | प्र. |
| | गदयितासि | गदयितास्थः | गदयितास्थ | म. |
| | गदयितास्मि | गदयितास्वः | गदयितास्मः | उ. |
| लृट् | गदयिष्यति | गदयिष्यतः | गदयिष्यन्ति | प्र. |
| | गदयिष्यसि | गदयिष्यथः | गदयिष्यथ | म. |
| | गदयिष्यामि | गदयिष्यावः | गदयिष्यामः | उ. |

१ अदन्तपाठसामर्थ्यात् अत्र सर्वत्र अल्लोपस्य स्थानिवत्वात् उपधावृद्धि र्न भवति।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लोट् | गदयतु-तात् | गदयताम् | गदयन्तु | प्र. |
| | गदय | गदयतम् | गदयत | म. |
| | गदयानि | गदयाव | गदयाम | उ. |
| लङ् | अगदयत् | अगदयताम् | अगदयन् | प्र. |
| | अगदयः | अगदयतम् | अगयत | म. |
| | अगदयम् | अगदयाव | अगयाम | उ. |
| वि. लि. | गदयेत् | गदयेताम् | गदयेयुः | प्र. |
| | गदयेः | गदयेतम् | गदयेत | म. |
| | गदयेयम् | गदयेव | गदयेम | उ. |
| आ. लि. | गद्यात् | गद्यास्ताम् | गद्यासुः | प्र. |
| | गद्याः | गद्यास्तम् | गद्यास्त | म. |
| | गद्यासम् | गद्यास्व | गद्यास्म | उ. |
| लुङ् | अजगदत् | अजगदताम् | अजगदन् | प्र. |
| | अजगदः | अजगदतम् | अजगदत | म. |
| | अजगदम् | अजगदाव | अजगदाम | उ. |
| लृङ् | अगदयिष्यत् | अगदयिष्यताम् | अगदयिष्यन् | प्र. |
| | अगदयिष्यः | अगयिष्यतम् | अगयिष्यत | म. |
| | अगदयिष्यम् | अगदयिष्याव | अगदयिष्याम | उ. |

**आत्मनेपदे**—१ गदयते। २ गदयाञ्चक्रे। ३ गदयिता। ४ गदयिष्यते। ५ गदयताम्। ६ अगदयत। ७ गदयेत। ८ गदयिषीष्ट। ९ अजगदत। १० अगदयिष्यत।

**कर्मणि**—गद्यते। **कृत्सु**—गदकः-दिका, गदयिता-त्री, गदयन्-न्ती, गदयिष्यन्-न्ती, गदयमानः, गदयिष्यमाणः, गदितः-तम्, गद्यम्, गद्यमानः, गदयितुम्, गदयितव्यम्, गदनीयम्, गदः, गदयित्वा, प्रगद्य।

**( १८६१ ) पत—गतौ वा**। (जाना, नीचे गिरना, उतरना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः।

१ पतयति-ते। वा वचनात् पतति। २ पतयाञ्चकार-चक्रे। ३ पतयिता। ४ पतयिष्यति-ते। ५ पतयतु-ताम्। ६ अपतयत्-त। ७ पतयेत्-त। ८ पत्यात्। ९ अपपतत्-त। १० अपयिष्यत्-त।

**कर्मणि**—पत्यते। **कृत्सु**—पतकः-तिका, पतयिता-त्री, पतयन्-न्ती, पतयिष्यन्-न्ती-ती, पतयमानः, पतयिष्यमाणः, पतयमानः, पतयिष्यमाणः, पतितः-तम्, पत्यम्, पतः, पतयितुम्, पतयितव्यम्, पतनीयम्, पतयित्वा, प्रपत्य।

**( १८६२ ) पष—गतौ**। सकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः। पषयति-ते। पषकः-षिका।

**( १८६३ ) स्वर—आक्षेपे**। (शब्द करना, आवाज करना, दोष लगाना, निन्दा करना, आक्षेप करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः।

१ स्वरयति-ते। २ स्वरयाञ्चकार-चक्रे। ३ स्वरयिता। ४ स्वरयिष्यति-ते। ५ स्वरयतु-ताम्। ६ अस्वरयत्-त। ७ स्वरयेत्-त। ८ स्वर्यात्-स्वरयिषीष्ट। ९ असस्वरत्-त। १० अस्वरयिष्यत्-त।

**कृत्सु**—स्वरकः-रिका, स्वरयिता-त्री, स्वरयन्-न्ती, स्वरयिष्यन्-न्ती-ती, स्वरयमानः, स्वरयिष्यमाणः, स्वरितः-त, स्वरः, सुस्वरः, सुस्वरी, स्वर्यमाणः, स्वरयितुम्, स्वरयित्वा, प्रस्वर्य, स्वरयितव्यम्, स्वरनीयम्, स्वरुः = वज्रम् (औणादिके उप्रत्ययः)

**( १८६४ ) रच—प्रतियत्ने**। प्रतियत्नः = संस्कारः। (रचना, शिल्पकार्य करना, ग्रन्थ बनाना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | रचयति | रचयतः | रचयन्ति | प्र. |
| | रचयसि | रचयथः | रचयथ | म. |
| | रचयामि | रचयावः | रचयामः | उ. |
| लिट् | रचयाञ्चकार | रचयाञ्चक्रतुः | रचयाञ्चक्रुः | प्र. |
| | रचयाञ्चकर्थ | रचयाञ्चक्रथुः | रचयाञ्चक्र | म. |
| | रचयाञ्चकार-चकर | रचयाञ्चकृव | रचयाञ्चकृम | उ. |
| लुट् | रचयिता | रचयितारौ | रचयितारः | प्र. |
| | रचयितासि | रचयितास्थः | रचयितास्थ | म. |
| | रचयितास्मि | रचयितास्वः | रचयितास्मः | उ. |
| लृट् | रचयिष्यति | रचयिष्यतः | रचयिष्यन्ति | प्र. |
| | रचयिष्यसि | रचयिष्यथः | रचयिष्यथ | म. |
| | रचयिष्यामि | रचयिष्यावः | रचयिष्यामः | उ. |
| लोट् | रचयतु-तात् | रचयताम् | रचयन्तु | प्र. |
| | रचय-तात् | रचयतम् | रचयत | म. |
| | रचयानि | रचयाव | रचयाम | उ. |
| लङ् | अरचयत् | अरचयताम् | अरचयन् | प्र. |
| | अरचयः | अरचयतम् | अरचयत | म. |
| | अरचयम् | अरचयाव | अरचयाम | उ. |
| वि. लि. | रचयेत् | रचयेताम् | रचयेयुः | प्र. |
| | रचयेः | रचयेतम् | रचयेत | म. |
| | रचयेयम् | रचयेव | रचयेम | उ. |
| आ. लि. | रच्यात् | रच्यास्ताम् | रच्यासुः | प्र. |
| | रच्याः | रच्यास्तम् | रच्यास्त | म. |
| | रच्यासम् | रच्यास्व | रच्यास्म | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लुङ् | अररचत् | अररचताम् | अररचन् | प्र. |
| | अररचः | अररचतम् | अररचत | म. |
| | अररचम् | अररचाव | अररचाम | उ. |
| लृङ् | अरचयिष्यत् | अरचयिष्यताम् | अरचयिष्यन् | प्र. |
| | अरचयिष्यः | अरचयिष्यतम् | अरचयिष्यत | म. |
| | अरचयिष्यम् | अरचयिष्याव | अरचयिष्याम | उ. |

**आत्मनेपदे**—१ रचयते। २ रचयाञ्चक्रे। ३ रचयिता। ४ रचयिष्यते। ५ रचयताम्। ६ अरचयत। ७ रचयेत। ८ रचयिषीष्ट। ९ अररचत। १० अरचयिष्यत।

**कर्मणि**—रच्यते। **सनि**—रिरचयिषति-ते। **कृत्सु**—रचकः-चिका, रचयिता-त्री, रचयन्-न्ती, रचयिष्यन्-न्ती-ती, रचयमानः, रचयिष्यमाणः, रच्यमानः, रचितः-तम्, रचः, रचयतुम्, रचयित्वा, प्ररच्य, रचयितव्यम्, रचनीयम्, रचना, रचनम्।

(१८६५) **कल—गतौ सङ्ख्याने च**। (जाना, गिनना)। **आ**—बांधना लेना, **परि**—याद करना, **वि**—व्याकुल होना, **सम्**—सारांश निकाल कर कहना, तात्पर्य कहना, संकलन करना, मिलाना। सकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः।

१ कलयति-ते। २ कलयाञ्चकार-चक्रे। ३ कलयिता। ४ कलयिष्यति-ते। ५ कलयतु-ताम्। ६ अकलयत्-त। ७ कलयेत्-त। ८ कल्यात्-कलयिषीष्ट। ९ अचकलत्। १० अकलयिष्यत्-त।

**कर्मणि**—आकल्यते। **सनि**—चिकालयिषति-ते। **कृत्सु**—कलकः-लिका, कलयिता-त्री, कलयन्-न्ती, कलयिष्यन्-न्ती-ती, कलयमानः, कलयिष्यमाणः, कलितः-तम्, कलः, कल्यम्, कलनम्, कलना, कलयितुम्, कलयितव्यम्, कलनीयम्, कलयित्वा, आकल्य।

(१८६६) **चल—परिकल्कने**। (पीसना, कूटना)। अकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः। ज्ञपदित्वान्मित्।

१ चहयति-ते। २ चहयाञ्चकार-चक्रे। ३ चहयिता। ४ चहयिष्यति-ते। ५ चहयतु-ताम्। ६ अचहयत्-त। ७ चहयेत्-त। ८ चह्यात्-चहयिषीष्ट। ९ अचीचहत्-त। १० अचहयिष्यत्-त।

**कर्मणि**—चह्यते। **कृत्सु**—चहकः-हिका, चहयिता-त्री, चहयन्-न्ती, चहयिष्यन्-न्ती-ती, चहयमानः, चहयिष्यमाणः, चह्यमानः, चहनम्, चह्यम्, चहना, चहितम्-तः, चहयितुम्, चहयित्वा, प्रचह्य, चहयितव्यम्, चहनीयम्, चह्यम्।

(१८६७) **मह—पूजायाम्**। (सम्मान करना, पूजा करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः।

१ महयति-ते। २ महयाञ्चकार-चक्रे। ३ महयिता। ४ महयिष्यति-ते। ५ महयतु-ताम्। ६. अमहयत्-त। ७ महयेत्-त। ८ मह्यात्-महयिषीष्ट। ९ अममहत्-त। १० अमहयिष्यत्-त।

**कर्मणि**—मह्यते। कृत्सु—महकः[1]-हिका, महयिता-त्री, महयन्-न्ती, महयिष्यन्-न्ती-ती, महयमानः, महयिष्टमाणः, महितम्-तः, महः, मह्यमानः, महयितुम्, महयित्वा, प्रमह्य, महयितव्यम्, महनीयम्, महना, मह्यम्, महनम्, महः[2]-मही, मघवन्[3]।

( १८६८ ) **सार—दौर्बल्ये**। (दुर्बल होना)। अकर्म.। सेट्। उभय.।

१ सारयति-ते। २ सारयाञ्चकार-चक्रे। ३ सारयिता। ४ सारयिष्यति-ते। ५ सारयतु-ताम्। ६ असारयत्-त। ७ सारयेत्-त। ८ सार्यात्-सारयिषीष्ट। ९ अससारत्-त। १० असरयिष्यत्-त।

**कृत्सु**—सारकः-रिका, सारयिता-त्री, सारयन्-न्ती, सारयिष्यन्-न्ती-ती, सारयमानः, सारयिष्यमाणः, सारितम्-तः, सार्यम्, सारणम्, सारयितुम्, सारयित्वा, प्रसार्य, सारयितव्यम्, सारणीयम्, सार्यमानः, सारणा, सारः = रसः, संसारः।

( १८६९ ) **कृप—दौर्बल्ये**। (दुर्बल होना)। अकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः। कृपयति-ते। कृपकः-पिका।

( १८७० ) **अथ—दौर्बल्ये**। (दुर्बल होना)। अकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः। अथयति-ते।

( १८७१ ) **स्पृह—ईप्सायाम्**। (इच्छा करना, चाहना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | स्पृहयति | स्पृहयतः | स्पृहयन्ति | प्र. |
| | स्पृहयसि | स्पृहयथः | स्पृहयथ | म. |
| | स्पृहयामि | स्पृहयावः | स्पृहयामः | उ. |
| लिट् | सृहयाञ्चकार | स्पृहयाञ्चक्रतुः | स्पृहयाञ्चक्रुः | प्र. |
| | स्पृहयाञ्चकर्थ | स्पृहयाञ्चक्रथुः | स्पृहयाञ्चक्र | म. |
| | स्पृहयाञ्चकार-चकर | स्पृहयाञ्चकृव | स्पृहयाञ्चकृम | उ. |
| लुट् | स्पृहयिता | स्पृहयितारौ | स्पृहयितारः | प्र. |
| | स्पृहयितासि | स्पृहयितास्थः | स्पृहयितास्थ | म. |
| | स्पृहयितास्मि | स्पृहयितास्वः | स्पृहयितास्मः | उ. |
| लृट् | स्पृहयिष्यति | स्पृहयिष्यतः | स्पृहयिष्यन्ति | प्र. |
| | स्पृहयिष्यसि | स्पृहयिष्यथः | स्पृहयिष्यथ | म. |
| | स्पृहयिष्यामि | स्पृहयिष्यावः | स्पृहयिष्यामः | उ. |

१ अस्य धातोः अदन्तेषु पाठसामर्थ्यात् अल्लोपस्य स्थानिवद् भावेन णिच् परत्वाभावात् 'अत उपधायाः' (७-२-११६) इति वृद्धिर्न ज्ञेयम्।

२ 'पुंसि संज्ञायां घः–' (३-३-११८) इति घप्रत्यये रूपमेवम्। स्त्रियां गौरादिपाठात् (४-१-४१) ङीषि 'मही' इति सिद्ध्यति।

३ 'श्वन्नुक्षन्–' इति कनिन् प्रत्यये धकारेऽन्तादेशे वुगागमे च निपातिते रूपमेवम्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लोट् | स्पृहयतु-तात् | स्पृहयताम् | स्पृहयन्तु | प्र. |
| | स्पृहय | स्पृहयतम् | स्पृहयत | म. |
| | स्पृहयाणि | स्पृहयाव | स्पृहयाम | उ. |
| लङ् | अस्पृहयत् | अस्पृहयताम् | अस्पृहयन् | प्र. |
| | अस्पृहयः | अस्पृहयतम् | अस्पृहयत | म. |
| | अस्पृहयम् | अस्पृहयाव | अस्पृहयाम | उ. |
| वि. लि. | स्पृहयेत् | स्पृहयेताम् | स्पृहयेयुः | प्र. |
| | स्पृहयेः | स्पृहयेतम् | स्पृहयेत | म. |
| | स्पृहयेयम् | स्पृहयेव | स्पृहयेम | उ. |
| आ. लि. | स्पृह्यात् | स्पृह्यास्ताम् | स्पृह्यासुः | प्र. |
| | स्पृह्याः | स्पृह्यास्तम् | स्पृह्यास्त | म. |
| | स्पृह्यासम् | स्पृह्यास्व | स्पृह्यास्म | उ. |
| लुङ् | अपस्पृहत् | अपस्पृहताम् | अपस्पृहन् | प्र. |
| | अपस्पृहः | अपस्पृहतम् | अपस्पृहत | म. |
| | अपस्पहृम् | अपस्पृहाव | अपस्पृहाम | उ. |
| लृङ् | अस्पृहयिष्यत् | अस्पृहयिष्यताम् अस्पृहयिष्यन् इत्यादि। | | |

**आत्मनेपदे**—१ स्पृहयते। २ स्पृहयाञ्चक्रे। ३ स्पृहयिता। ४ स्पृहयिष्यते। ५ स्पृहताम्। ६ अस्पृहयत। ७ स्पृहयेत। ८ स्पृहयिषीष्ट। ९ अपस्पृहत। १० अस्पृहयिष्यत।

**कृत्सु**—स्पृहकः-हिका, स्पृहयिता-त्री, स्पृहयन्-न्ती, पुष्पेभ्यः स्पृहयन्-न्ती, स्पृहयाय्यः, स्पृहयिष्यन्-न्ती-ती, स्पृहयमानः, स्पृहयिष्यमाणः स्पृहयितुम्, स्पृहयित्वा, प्रस्पृह्य, स्पृहयितव्यम्, स्पृहयनीयम्, स्पृहः, स्पृह्यमानः, स्पृहनम्, स्पृहितः-तम्।

**( १८७२ ) भाम—क्रोधे**। (क्रोध करना, धुड़कना)। अकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः।

१ भामयति-ते। २ भामयाञ्चकार-चक्रे। ३ भामयिता। ४ भामयिष्यति-ते। ५ भामयतु-ताम्। ६ अभामयत्-त। ७ भामयेत्-त। ८ भाम्यात्-भामयिषीष्ट। ९ अबभामत्-त। १० अभामयिष्यत्-त।

**कृत्सु**—भामकः-मिका, भामयिता-त्री, भामयन्[१]-न्ती, भामयिष्यन्-न्ती-ती, भाममानः, भामयिष्यमाणः, भामितः-तम्, भाम्यम्, भामः, भामयितुम्, भामयित्वा, प्रभाम्य, भामयितव्यम्, भामनीयम्, भाम्यम्, भामः, भामनः[२], भाम्यमानः, भामिनी,[३] भामियितुम्, भामनम्।

**( १८७३ ) सूच—पैशुन्ये**। (उपकार की इच्छा से कहना, सूचना करना, बात कहना, दूसरे की न्यूनता दिखाना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः।

---

१ अणावकर्मकात् चित्तवत्कर्तृकात् (१-३-८८) इति ण्यन्तात् परस्मैपदमेव।

२ ताच्छीलादिषु कर्तृषु 'अनुदात्तेतश्च हलादेः' (३-२-१४९) इति युच्।

३ भामः = क्रोधः सोऽस्याऽस्तीति भामिनी = स्त्री। मत्वर्थीय इनि प्रत्यये, 'ऋन्नेभ्यः—' (४-१-५) इति ङीपि रूपमेवम्।

१ सूचयति-ते। २ सूचयाञ्चकार-चक्रे। ३ सूचयिता। ४ सूचयिष्यति-ते। ५ सूचयतु-ताम्। ६ असूचयत्-त। ७ सूचयेत्-त। ८ सूच्यात्-सूचयिषीष्ट। ९ असुसूचत्-त। १० असूचयिष्यत्-त

**कृत्सु**—सूच्यते। सूचकः-चिका, सूचयिता-त्री, सूचयन्-न्ती, सूचयिष्यन्-न्ती-ती, सूचयमानः, सूचयिष्यमाणः, सूचितम्-तः, सूचः, सूचयितव्यम्, सूचनीयम्, सूच्यम्, सूच्यमानः, सूचयितुम्, सूचना, सूचनम्, सूचयित्वा, विसूच्य। यङि— सोसूचकः 'सूचिसूत्रि–' वा (३-१-२२) इत्यादिना अनेकाच्त्वेऽपि यङि। सूची,[1] सूचिः, विषूचिका, सूक्ष्म[2]।

( १८७४ ) **खेट—भक्षणे**। (खाना, भक्षण करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः।

१ खेटयति-ते। २ खेटयाञ्चकार-चक्रे। ३ खेटयिता। ४ खेटयिष्यति-ते। ५ खेटयतु-ताम्। ६ अखेटयत्-त। ७ खेटयेत्-त। ८ खेट्यात्-खेटयिषीष्ट। ९ अचिखेटत्-त। १० अखेटयिष्यत्-त।

**कर्मणि**—खेट्यते। **कृत्सु**—खेटकः, खेटिका, खेटयिता-त्री, खेटयन्-न्ती, खेटयिष्यन्-न्ती-ती, खेटयमानः, खेटयिष्यमाणः, खेटितम्-तः, खेटनम्, खेट्यम्, खेटना, खेटः, खेट्यमानः, खेटयितुम्, खेटयितव्यम्, खेटनीयम्, खेटयित्वा, प्रखेट्य।

( १८७५ ) **क्षोट—क्षेपे**। (भेजना, फेंकना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः।

१ क्षोटयति-ते। २ क्षोटयाञ्चकार-चक्रे। ३ क्षोटयिता। ४ क्षोटयिष्यति-ते। ५ क्षोटयतु-ताम्। ६ अक्षोटयत्-त। ७ क्षोटयेत्-त। ८ क्षोट्यात्। ९ अचुक्षोटत्-त। १० अक्षोटयिष्यत्-त।

**कर्मणि**—क्षोट्यते। **कृत्सु**—क्षोटकः-टिका, क्षोटयिता-त्री, क्षोटयन्-न्ती, क्षोटयिष्यन्, क्षोटयमानः, क्षोटयिष्यमाणः, क्षोटनम्, क्षोटः, क्षोटमानः, क्षोट्यम्, क्षोटयितुम्, क्षोटयितव्यम्, क्षोटम्, क्षोटयितव्यम्, क्षोटनीयम्, क्षोटयित्वा, प्रक्षोट्य।

( १८७६ ) **गोम—उपलेपने**। (लेपना, पोतना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः।

१ गोमयति-ते। २ गोमयाञ्चकार-चक्रे। ३ गोमयिता। ४ गोमयिष्यति-ते। ५ गोमयतु-ताम्। ६ अगोमयत्-त। ७ गोमयेत्-त। ८ गोम्यात्-गोमयिषीष्ट। ९ अजुगोम्यत्-त।

**कर्मणि**—गोम्यते। **कृत्सु**—गोमकः-मिका, गोमयिता-त्री, गोमयन्-न्ती, गोमयिष्यन्-न्ती-ती, गोमयमानः, गोमयिष्यमाणः, गोम्यम्, गोमः, गोमनम्, गोम्यमानः, गोमयितुम्, गोमयित्वा, प्रगोम्य, गोमयितव्यम्, गोमनीयम्।

( १८७७ ) **कुमार—क्रीडायाम्**। (बालक के समान खेलना, क्रीडा करना)। अकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः। कुमारयति-ते। ९ अचुकुमारत्-त। कुमारः।

१ पचादिगणपाठात् (३-१-१३४) सूची इति भवति।
२ औणादिके स्मन् प्रत्यये रूपमेवम्। सूचयति सूच्यते वा सूक्ष्मम् = अणुः।

**( १८७८ ) शील—उपधारणे** । उपधारणं = परिचयः । (धारण करना, पहिचानना) । सकर्म. । सेट् । उभय. । प्रायेणायं परिपूर्वकः ।

१ परिशीलयति-ते । २ परिशीलयाञ्चकार-चक्रे । ३ परिशीलयिता । ४ परिशीलयिष्यति-ते । ५ परिशीलयतु-ताम् । ६ अशीलयत्-त । ७ शीलयेत्-त । ८ शील्यात्-शीलयिषीष्ट । ९ **प्र.** अशिशिलत्-त अशिशिलताम् अशिशिलन् । **म.** अशिशीलः अशिशीलतम् अशिशीलत । **उ.** अशिशीलम् अशिशीलाव अशिशीलाम । १० अशीलयिष्यत्-त ।

**कर्मणि**—परिशील्यते । **कृत्सु**—परिशीलकः-लिका, परिशीलयिता-त्री, परिशीलयन्-न्ती, परिशीलयिष्यन्-न्ती-ती, शीलयमानः, शीलयिष्यमाणः, परिशीलम्, परिशील्यम्, शीलः, शील्यमानः, शीलयितुम्, शीलयितव्यम्, शीलनीयम्, शीलयित्वा, परिशील्य ।

**( १८७९ ) साम—सान्त्वप्रयोगे** । (सान्त्वना देना, समाधान करना, शान्त करना) । सकर्म. । सेट् । उभय. । अदन्तः ।

१ सामयति-ते । २ सामयाञ्चकार-चक्रे । ३ सामयिता । ४ सामयिष्यति-ते । ५ सामयतु-ताम् । ६ असामयत्-त । ७ सामयेत्-त । ८ साम्यात्-सामयिषीष्ट । ९ **प्र.** अससामत् अससामताम् अससामन् । **म.** अससामः अससामतम् अससामत । **उ.** अससामम् अससामाव अससामाम । १० असामयिष्यत्-त ।

**कर्मणि**—साम्यते । **कृत्सु**—सामकः-मिका, सामयिता-त्री, सामयन्-न्ती, सामयिष्यन्-न्ती-ती, सामयमानः, सामयिष्यमाणः, साम्यम्, सामम्, सामितः-तम्, साम्यमानः, सामः, सामयितुम्, सामयितव्यम्, सामनीयम्, सामयित्वा, प्रसाम्य ।

**( १८८० ) वेल—कालोपदेशे** । (काल गणना करना, समय की गिनती करना, उपदेश करना, समय पर समझाना) । सकर्म. । सेट् । उभय. । अदन्तः ।

१ वेलयति-ते । २ वेलयाञ्चकार-चक्रे । ३ वेलयिता । ४ वेलयिष्यति-ते । ५ वेलयतु-ताम् । ६ अवेलयत्-त । ७ वेलयेत्-त । ८ वेल्यात्-वेलयिषीष्ट । ९ अविवेलत्-त । १० अवेलयिष्यत्-त ।

**कर्मणि**—वेल्यते । **कृत्सु**—वेलकः-लिका, वेलयिता-त्री, वेलयन्-न्ती, वेलयिष्यन्-न्ती-ती, वेलयमानः, वेलयिष्यमाणः, वेलनम्, वेलितः -तम्, वेल्यम्, वेलः, वेला = समयः, वेलना, वेल्यमानः, वेलयितुम्, वेलयितव्य्, वेलनीयम्, वेलयित्वा, प्रवेल्य ।

**( १८८१ ) पल्यूल—लवनपवनयोः** । (काटना, कतरना, शुद्ध करना, स्वच्छ करना, गिराना) । सकर्म. । सेट् । उभय. । अदन्तः । पल्यूलयति-ते । ९. अपपल्यूलत्-त ।

**कृत्सु**—पल्यूलकः-लिका, पल्यूलयिता-त्री, पल्यूलयन्-न्ती, पल्यूलयिष्यन्-न्ती-ती, पल्यूलयमानः, पल्यूलयिष्यमाणः, पल्यूल्यम्, पल्यूलः, पल्यूलनम्, पल्यूलना, पल्यूलयितुम्, पल्यूलयितव्यम्, पल्यूलनीयम्, पल्यूल्यमानः, पल्यूलितः-तम्, पल्यूलयित्वा, प्रपल्यूल्य ।

**(१८८२) वात—सुखसेवनयोः**। प्रीति सेवनयोरित्येके। गतौ च इत्यन्ये। (सुखी होना, आननन्द करना, सेवा करना, प्रेम करना, जाना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः।

१ वातयति-ते। २ वातयाञ्चकार-चक्रे। ३ वातयिता। ४ वातयिष्यति-ते। ५ वातयतु-ताम्। ६ अवातयत्-त। ७ वातयेत्-त। ८ वात्यात्-वातयिषीष्ट। ९ अववातत्-त। १० अवातयिष्यत्-त।

**कर्मणि**—वात्यते। **कृत्सु**—वातकः-तिका, वातयिता-त्री, वातयन्-न्ती, वातयिष्यन्-न्ती-ती, वातयमानः, वातयिष्यमाणः, वातः, वातितः-तम्, वात्यम्, वात्यमानः, वातयितुम्, वातयित्वा, प्रवात्य, वातयितव्यम्, वातनीयम्।

**(१८८३) गवेष—मार्गणे**। (ढूढना, पता लगाना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः।

१ गवेषयति-ते। २ गवेषयाञ्चकार-चक्रे। ३ गवेषयिता। ४ गवेषयिष्यति-ते। ५ गवेषयतु-ताम्। ६ अगवेषयत्-त। ७ गवेषयेत्-त। ८ गवेष्यात् गवेषयिषीष्ट। ९ अजगवेषत्-त। १० अगवेषयिष्यत्-त।

**कर्मणि**—गवेष्यते। **कृत्सु**—गवेषकः-षिका, गवेषयिता-त्री, गवेषयन्-न्ती, गवेषयिष्यन्, गवेषयमाणः, गवेषयिष्यमाणः, गवेषनम्, गवेष्यम्, गवेषयितुम्, गवेषयितव्यम्, गवेषणीयम्।

**(१८८४) वास—उपसेवायाम्**। (वासित करना, सुगन्धित करना, धूप देना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः।

१ वासयति-ते। २ वासयाञ्चकार-चक्रे। ३ वासयिता। ४ वासयिष्यति-ते। ५ वासयतु-ताम्। ६ अवासयत्-त। ७ वासयेत्-त। ८ वास्यात्-वासयिषीष्ट। ९ अववासत्-त। १० अवासयिष्यत्-त।

**कर्मणि**—वास्यते। **कृत्सु**—वासकः-सिका, वासयिता-त्री, वासयन्-न्ती, वासयिष्यन्-न्ती-ती, वासयमानः, वासयिष्यमाणः, वास्यम्, वासः, वासनम्, वास्यमानः, वासितः-तम्, वासयितुम्, वासयित्वा, प्रवास्य, वासयितव्यम्, वासनीयम्।

**(१८८५) निवास—आच्छादने**। (आच्छादित करना, लपेटना, ठहरना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः।

१ निवासयति-ते। २ निवासयाञ्चकार-चक्रे। ३ निवासयिता। ४ निवासयिष्यति-ते। ५ निवासयतु-ताम्। ६ अनिवासयत्-त। ७ निवासयेत्-त। ८ निवास्यात्-निवासयिषीष्ट। ९ **प्र.** अनिनिवासत्-त अनिनिवासताम् अनिनावसन्। **म.** अनिनिवासः अनिनिवासतम् अनिनिवासत। **उ.** अनिनिवासम् अनिनिवासाव अनिनिवासाम। १० अनिवासयिष्यत्-त।

**कर्मणि**—निवास्यते। **कृत्सु**—निवासकः-सिका, निवासयिता-त्री, संनिवास्य, निवासयन्-न्ती, निवासयिष्यन्-न्ती-ती, निवासयमानः, निवासयिष्यमाणः, निवास्यम्, निवासः, निवासितुम्, निवास्यमानः, निवासयितव्यम्, निवासनीयम्, निवासितः-तम्, निवासनम्।

**(१८८६) भाज—पृथक्कर्मणि** । (टुकड़े-टुकड़े करना) । **वि**—विभाजन करना । सकर्म. । सेट् । उभय. । अदन्तः ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | भाजयति | भाजयतः | भाजयन्ति | प्र. |
| | भाजयसि | भाजयथः | भाजयथ | म. |
| | भाजयामि | भाजयावः | भाजयामः | उ. |
| लिट् | भाजयाञ्चकार | भाजयाञ्चक्रतुः | भाजयाञ्चक्रुः | प्र. |
| | भाजयाञ्चकर्थ | भाजयाञ्चक्रथुः | भाजयाञ्चक्र | म. |
| | भाजयाञ्चकार-चकर | भाजयाञ्चकृव | भाजयाञ्चकृम | उ. |
| लुट् | भाजयिता | भाजयितारौ | भाजयितारः | प्र. |
| | भाजयितासि | भाजयितास्थः | भाजयितास्थ | म. |
| | भाजयितास्मि | भाजयितास्वः | भाजयितास्मः | उ. |
| लृट् | भाजयिष्यति | भाजयिष्यतः | भाजयिष्यन्ति | प्र. |
| | भाजयिष्यसि | भाजयिष्यस्थः | भाजयिष्यथ | म. |
| | भाजयिष्यामि | भाजयिष्यावः | भाजयिष्यामः | उ. |
| लोट् | भाजयतु-तात् | भाजयताम् | भाजयन्तु | प्र. |
| | भाजय-तात् | भाजयतम् | भाजयत | म. |
| | भाजयम् | भाजयाव | भाजयाम | उ. |
| लङ् | अभाजयत् | अभाजयताम् | अभाजयन् | प्र. |
| | अभाजयः | अभाजयतम् | अभाजयत | म. |
| | अभाजयम् | अभाजयाव | अभाजयाम | उ. |
| वि. लि. | भाजयेत् | भाजयेताम् | भाजयेयुः | प्र. |
| | भाजयेः | भाजयेतम् | भाजयेत | म. |
| | भाजयेयम् | भाजयेव | भाजयेम | उ. |
| आ. लि. | भाज्यात् | भाज्यास्ताम् | भाज्यासुः | प्र. |
| | भाज्याः | भाज्यास्तम् | भाज्यास्त | म. |
| | भाज्यासम् | भाज्यास्व | भाज्यास्म | उ. |
| लुङ् | अबभाजत् | अबभाजताम् | अबभाजन् | प्र. |
| | अबभाजः | अबभाजतम् | अबभाजत | म. |
| | अबभाजम् | अबभाजाव | अबभाजाम | उ. |
| लृङ् | अभाजयिष्यत् | अभाजयिष्यताम् | अभाजयिष्यन् | प्र. |
| | अभाजयिष्यः | अभाजयिष्यतम् | अभाजयिष्यत | म. |
| | अभाजयिष्यम् | अभाजयिष्याव | अभाजयिष्याम | उ. |

**आत्मनेपदे**—१ भाजयते । २ भाजयाञ्चक्रे । ३ भाजयिता । ४ भाजयिष्यते । ५ भाजयताम् । ६ अभाजयत । ७ भाजयेत । ८ भाजयिषीष्ट । ९ अबभाजत । १० अभाजयिष्यत ।

**कर्मणि**—विभाज्यते। **कृत्सु**—विभाजकः-जिका, भाजयिता-त्री, भाजयन्-न्ती, भाजयिष्यन्-न्ती-ती, भाजयमानः, भाजयिष्यमाणः, भाज्यमानः, भाजः, विभागः, भाज्यः, विभाज्यः, विभाजितः-तम्, विभाजनम्, भाजना, भाजयितुम्, भाजयितव्यम्, भाजनीयम्, भाजयितव्यम्, विभाज्य।

**(१८८७) समाज—प्रतीतिदर्शनयोः, प्रीतिसेवनयोरित्यके**। (प्रीति करना, स्नेह करना, सेवा करना, देखना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः।

१ समाजयति-ते। २ समाजयाञ्चकार-चक्रे। ३ समाजयिता। ४ समाजयिष्यति-ते। ५ समाजयतु-ताम्। ६ असमाजयत्-त। ७ समाजयेत्-त। ८ समाज्यात्-समाजयिषीष्ट। ९ अससमाजत्-त। १० असमाजयिष्यत्-त।

**कर्मणि**—समाज्यते। **कृत्सु**—समाजकः-जिका, समाजयिका-त्री, समाजयन्-न्ती, समाजयिष्यन्-न्ती-ती, समाजयमानः, समाजयिष्यमाणः, समाजनम्, समाज्य, समाजितः-तम्, समाज्यमानः, समाजः, समाजयितुम्, समाजयितव्यम्, समाजनीयम्, समाजयित्वा, प्रसमाज्य। समाजना।

**(१८८८) ऊन—परिहाणे**। (कम करना, घटाना, संक्षेप करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | ऊनयति | ऊनयतः | ऊनयन्ति | प्र. |
| | ऊनयसि | ऊनयथः | ऊनयथ | म. |
| | ऊनयामि | ऊनयावः | ऊनयामः | उ. |
| लिट् | ऊनयाञ्चकार | ऊनयाञ्चक्रतुः | ऊनयाञ्चक्रुः | प्र. |
| | ऊनयाञ्चकर्थ | ऊनयाञ्चक्रथुः | ऊनयाञ्चक्र | म. |
| | ऊनयाञ्चकार-चकर | ऊनयाञ्चकृव: | ऊनयाञ्चकृम | उ. |
| लुट् | ऊनयिता | ऊनयितारौ | ऊनयितारः | प्र. |
| | ऊनयितासि | ऊनयितास्थः | ऊनयितास्थ | म. |
| | ऊनयितास्मि | ऊनयितास्वः | ऊनयितास्मः | उ. |
| लृट् | ऊनयिष्यति | ऊनयिष्यतः | ऊनयिष्यन्ति | प्र. |
| | ऊनयिष्यसि | ऊनयिष्यथः | ऊनयिष्यथ | म. |
| | ऊनयिष्यामि | ऊनयिष्यावः | ऊनयिष्यामः | उ. |
| लोट् | ऊनयतु-तात् | ऊनयताम् | ऊनयन्तु | प्र. |
| | ऊनय-तात् | ऊनयतम् | ऊनयत | म. |
| | ऊनयानि | ऊनयाव | ऊनयाम | उ. |
| लङ् | औनयत् | औनयताम् | औनयन् | प्र. |
| | औनयः | औनयतम् | औनयत | म. |
| | औनयम् | औनयाव | औनयाम | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| वि. लि. | ऊनयेत् | ऊनयेताम् | ऊनयेयुः | प्र. |
| | ऊनयेः | ऊनयेतम् | ऊनयेत | म. |
| | ऊनयेयम् | ऊनयेव | ऊनयेम | उ. |
| आ.लि. | ऊन्यात् | ऊन्यास्ताम् | ऊन्यासुः | प्र. |
| | ऊन्याः | ऊन्यास्तम् | ऊन्यास्त | म. |
| | ऊन्यासम् | ऊन्यास्व | ऊन्यास्म | उ. |
| लुङ् | औनिनत् | औनिनताम् | औनीनन् | प्र. |
| | औनिनः | औनिनतम् | औनिनत | म. |
| | औनिनम् | औनिनाव | औनिनाम | उ. |
| लृङ् | औनयिष्यत् | औनयिष्यताम् | औनयिष्यन् | प्र. |
| | औनयिष्यः | औनयिष्यतम् | औनयिष्यत | म. |
| | औनयिष्यम् | औनयिष्याव | औनयिष्याम | उ. |

**आत्मनेपदे**—१ ऊनयते। २ ऊनयाञ्चक्रे। ३ ऊनयिता। ४ ऊनयिष्यते। ५ ऊनयताम्। ६ औनयत। ७ ऊनयेत। ८ ऊनयिषीष्ट। ९ औनिनत। १० औनयिष्यत। **कर्मणि**—ऊन्यते। **कृत्सु**—ऊनकः-निका, ऊनयिता-त्री, ऊनयन्-न्ती, ऊनयिष्यन्-न्ती-ती, ऊः-ऊनौ-ऊनः, ऊनितम्-तः-तवान्, ऊनः, मासोनः, ऊनयितव्यम्, ऊननीयम्, ऊन्यम्, ऊन्यमानः, ऊनः, ऊनयितुम्, ऊनना, ऊननम्, ऊनयित्वा, समून्य।

**(१८८९) ध्वन—शब्दे**। (शब्द करना, आवाज करना)। अकर्म.। सेट्। उभय.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | ध्वनयति | ध्वनयतः | ध्वनयन्ति | प्र. |
| | ध्वनयसि | ध्वनयथः | ध्वनयथ | म. |
| | ध्वनयामि | ध्वनयावः | ध्वनयामः | उ. |
| लिट् | ध्वनयाञ्चकार | ध्वनयाञ्चक्रतुः | ध्वनयाञ्चक्रुः | प्र. |
| | ध्वनयाञ्चकर्थ | ध्वनयाञ्चक्रथुः | ध्वनयाञ्चक्र | म. |
| | ध्वनयाञ्चकार-चकर | ध्वनयाञ्चकृव | ध्वनयामञ्चकृम | उ. |
| लुट् | ध्वनयिता | ध्वनयितारौ | ध्वनयितारः | प्र. |
| | ध्वनयितासि | ध्वनयितास्थः | ध्वनयितास्थ | म. |
| | ध्वनयितास्मि | ध्वनयितास्वः | ध्वनयितास्मः | उ. |
| लृट् | ध्वनयिष्यति | ध्वनयिष्यतः | ध्वनयिष्यन्ति | प्र. |
| | ध्वनयिष्यसि | ध्वनयिष्यथः | ध्वनयिष्यथ | म. |
| | ध्वनयिष्यामि | ध्वनयिष्यावः | ध्वनयिष्यामः | उ. |
| लोट् | ध्वनयतु-तात् | ध्वनयताम् | ध्वनयन्तु | प्र. |
| | ध्वनय-तात् | ध्वनयतम् | ध्वनयत | म. |
| | ध्वनयानि | ध्वनवयाव | ध्वनयाम | उ. |
| लङ् | अध्वनयत् | अध्वनयताम् | अध्वनयन् | प्र. |
| | अध्वनयः | अध्वनयतम् | अध्वनयत | म. |
| | अध्वनयम् | अध्वनयाव | अध्वनयाम | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| वि. लि. | ध्वनयेत् | ध्वनयेताम् | ध्वनयेयुः | प्र. |
| | ध्वनयेः | ध्वनयेतम् | ध्वनयेत | म. |
| | ध्वनयेयम् | ध्वनयेव | ध्वनयेम | उ. |
| आ. लि. | ध्वन्यात् | ध्वन्यास्ताम् | ध्वन्यासुः | प्र. |
| | ध्वन्याः | ध्वन्यास्तम् | ध्वन्यास्त | म. |
| | ध्वन्यासम् | ध्वन्यास्व | ध्वन्यास्म | उ. |
| लुङ् | अदध्वनत् | अदध्वनताम् | अदध्वनन् | प्र. |
| | अदध्वनः | अदध्वनतम् | अदध्वनत | म. |
| | अदध्वनम् | अदध्वनाव | अदध्वनाम | उ. |
| लृङ् | अध्वनयिष्यत् | अदध्वनयिष्यताम् | अध्वनयिष्यन् | प्र. |
| | अध्वनयिष्यः | अध्वनयिष्यतम् | अध्वनयिष्यत | म. |
| | अध्वनयिष्यम् | अध्वयिष्याव | अध्नयिष्याम | उ. |

**आत्मनेपदे**—१ ध्वनयते। २ ध्वनयाञ्चक्रे। ३ ध्वनयिता। ४ ध्वनयिष्यते। ५ ध्वनयताम्। ६ अध्वनयत। ७ ध्वनयेत। ८ ध्वनयिषीष्ट। ९ अदध्वनत। १० अध्वनयिष्यत।

**कर्मणि**—ध्वन्यते। **कृत्सु**—ध्वनकः-निका, ध्वनयिता-त्री, ध्वनयन्-न्ती, ध्वनयिष्यन्-न्ती-ती, ध्वनयमानः, ध्वनयिष्यमाणः, ध्वनितम्-तः, ध्वनः, ध्वनिः, ध्वनयितव्यम्, ध्वननीयम्, ध्वन्यम्, ध्वन्यमानः, ध्वनयितुम्, ध्वनना, ध्वननम्, ध्वनयित्वा, प्रध्वन्य।

**( १८९० ) कूट—परितापे**। परिदाहे इत्यन्ये। (दुःख देना, जलाना, दग्ध करना)। अकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः।

१ कूटयति-ते। २ कूटयाञ्चकार-चक्रे। ३ कूटयिता। ४ कूटयिष्यति-ते। ५ कूटयतु-ताम्। ६ अकूटयत्-त। ७ कूटयेत्-त। ८ कूट्यात् कूटयिषीष्ट। ९ अचुकूटत्-त। १० अकूटयिष्यत्-त।

**कर्मणि**—कूट्यते। **कृत्सु**—कूटकः-टिका, कूटयिता-त्री, कूटयन्-न्ती, कूटयिष्यन्-न्ती-ती, कूटयमानः, कूटयिष्यमाणः, कूटितम्-तः, कूटनम्, कूट्यम्, कूटयमानः, कूटना, कूटयितुम्, कूटयितव्यम्, कूटनीयम्, कूटयित्वा, प्रकूट्य।

**( १८९१ ) संकेत—आमन्त्रणे**। (आमन्त्रण करना, बुलाना, संकेत करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ संकेतयति-ते। २ संकेतयाञ्चकार-चक्रे। ३ सङ्केतयिता। ४ सङ्केतयिष्यति-ते। ५ सङ्केतयतु-ताम्। ६ असङ्केतयत्-त। ७ सङ्केतयेत्-त। ८ सङ्केत्यात्-सङ्केतयिषीष्ट। ९ अससङ्केतत्-त। १० असंकेतयिष्यत्-त।

**कर्मणि**—सङ्केत्यते। **कृत्सु**—सङ्केतः-तिका, संकेतयिता-त्री, सङ्केतयन्-न्ती, सङ्केतयिष्यन्-न्ती-ती, सङ्केतयमानः, सङ्केतयिष्यमाणः, सङ्केतितः-तम्, सङ्केतः, सङ्केतनम्, सङ्केत्यम्, सङ्केत्यमानः, सङ्केतयितुम्, सङ्केतयितव्यम्, सङ्केतनीयम्।

**(१८९२) ग्राम—आमन्त्रणे**। आमन्त्रणं = गूढोक्तिः। (बुलाना, बुद्धिपूर्वक कहना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ ग्रामयति-ते। २ ग्रामयाञ्चकार-चक्रे। ३ ग्रामयिता। ४ ग्रामयिष्यति-ते। ५ ग्रामयतु-ताम्। ६ अग्रामयत्-त। ७ ग्रामयेत्-त। ८ ग्राम्यात्-ग्रामयिषीष्ट। ९ अजग्रामत्-त। १० अग्रामयिष्यत्-त।

**कर्मणि**—ग्राम्यते। **कृत्सु**—ग्रामकः-मिका, ग्रामयिता-त्री, ग्रामयन्-न्ती, ग्रामयिष्यन्-न्ती-ती, ग्रामयमानः, ग्रामयिष्यमाणः, ग्रामः, ग्रामितः-तम्, ग्राम्यम्, ग्रामनम्, ग्राम्यमानः, ग्रामयितुम्, ग्रायितव्यम्, ग्रामणीयम्।

**(१८९३) कुण—आमन्त्रणे**। (बुलाना, ज्ञान पूर्वक कहना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः।

१ कुणयति-ते। २ कुणयाञ्चकार-चक्रे। ३ कुणयिता। ४ कुणयिष्यति-ते। ५ कुणयतु-ताम्। ६ अकुणयत्-त। ७ कुणयेत्-त। ८ कुण्यात्-कुणयिषीष्ट। ९ अचुकुणत्-त। १० अकुणयिष्यत्-त।

**कर्मणि**—कुण्यते। **कृत्सु**—कुणकः-णिका, कुणयिता-त्री, कुणयन्-न्ती, कुणयिष्यन्-न्ती-ती, कुणयमानः, कुणयिष्यमाणः, कुणितम्-त, कुण्यम्, कुणः, कुणनम्, कुण्यमानः, कुणयितुम्, कुणयितव्यम्, कुणनीयम्, कुणयित्वा, प्रकुण्य।

**(१८९४) गुण—आमन्त्रणे**। (बुलाना, बुद्धिपूर्वक कहना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ गुणयति-ते। २ गुणयाञ्चकार-चक्रे। ३ गुणयिता। ४ गुणयिष्यति-ते। ५ गुणयतु-ताम्। ६ अगुणयत्-त। ७ गुणयेत्-त। ८ गुण्यात्-गुणयिषीष्ट। ९ **प्र.** अजुगणत्-त अजुगुणताम् अजुगुणन्। **म.** अजगुणः अजुगुणतम् अजुगुणत। **उ.** अजुगुणम् अजुगुणाव अजुगुणाम। १० अजुणायिष्यत्-त।

**कर्मणि**—गुण्यते। **कृत्सु**—गुणकः-णिका, गुणयिता-त्री, गुणयन्-न्ती, गुणयिष्यमाणः, गुणयमानः, गुणः, गुणितः-तम्, गुण्यम्, गुणनम्, गुण्यमानः, गुणयितुम्, गुणयितव्यम्, गुणनीयम्, गुणयित्वा, प्रगुण्य।

**(१८९५) केत—श्रावणे आमन्त्रणे च**। (बुलाना, आमन्त्रित करना, श्रवण करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः। केतयति-ते। ९ अचिकेतत्-त।

**(१८९६) कूट—सङ्कोचनेऽपि**। (सङ्कुचित होना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः। कूटयति-ते।

**(१९९७) स्तेन—चौर्ये**। (चुराना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | स्तेनयति | स्तेनयतः | स्तेनयन्ति | प्र. |
| | स्तेनयसि | स्तेनयथः | स्तेनयथ | म. |
| | स्तेनयामि | स्तेनयावः | स्तेनयामः | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लिट् | स्तेनयाञ्चकार | स्तेनयाञ्चक्रतुः | स्तेनयाञ्चक्रुः | प्र. |
| | स्तेनयाञ्चकर्थ | स्तेनयाञ्चक्रथुः | स्तेनयाञ्चक्र | म. |
| | स्तेनयाञ्चकार-चकर | स्तेनयाञ्चकृव | स्तेनयाञ्चकृम | उ. |
| लुट् | स्तेनयिता | स्तेनयितारौ | स्तेनयितारः | प्र. |
| | स्तेनयितासि | स्तेनयितास्थः | स्तेनयितास्थ | म. |
| | स्तेनयितास्मि | स्तेनयितास्वः | स्तेनयितास्मः | उ. |
| लृट् | स्तेनयिष्यति | स्तेनयिष्यतः | स्तेनयिष्यन्ति | प्र. |
| | स्तेनयिष्यसि | स्तेनयिष्यथः | स्तेनयिष्यथ | म. |
| | स्तेनयिष्यामि | स्तेनयिष्यावः | स्तेनयिष्यामः | उ. |
| लोट् | स्तेनयतु-तात् | स्तेनयताम् | स्तेनयन्तु | प्र. |
| | स्तेनय-तात् | स्तेनयतम् | स्तेनयत | म. |
| | स्तेनयानि | स्तेनयाव | स्तेनयाम | उ. |
| लङ् | अस्तेनयत् | अस्तेनयताम् | अस्तेनयन् | प्र. |
| | अस्तेनयः | अस्तेनयतम् | अस्तेनयत | म. |
| | अस्तेनयम् | असेतनयाव | अस्तेनयाम | उ. |
| वि. लि. | स्तेनयेत् | स्तेनयेताम् | स्तेनयेयुः | प्र. |
| | स्तेनयेः | स्तेनयेतम् | स्तेनयेत | म. |
| | स्तेनयेयम् | स्तेनयेव | स्तेनयेम | उ. |
| आ. लि. | स्तेन्यात् | स्तेन्यास्ताम् | स्तेन्यासुः | प्र. |
| | स्तेन्याः | स्तेन्यास्तम् | स्तेन्यास्त | म. |
| | स्तेन्यासम् | स्तेन्यास्वः | स्तेन्यास्मः | उ. |
| लुङ् | अतिस्तेनत् | अतिस्तेनताम् | अतिस्तेनन् | प्र. |
| | अतिस्तेनः | अतिस्तेनतम् | अतिस्तेनत | म. |
| | अतिस्तेनम् | अतिस्तेनाव | अतिस्तेनाम | उ. |
| लृङ् | अस्तेनयिष्यत् | अस्तेनयिष्यताम् | अस्तेनयिष्यन् | प्र. |
| | अस्तेनयिष्यः | अस्तेनयिष्यतम् | अस्तेनयिष्यत | म. |
| | अस्तेनयिष्यम् | अस्तेनयिष्याव | अस्तेनयिष्याम | उ. |

**आत्मनेपदे**—१ स्तेनयते। २ स्तेनयाञ्चक्रे। ३ स्तेनयिता। ४ स्तेनयिष्यते। ५ स्तेनयताम्।६ अस्तेनयत।७ स्तेनयेत।८ स्तनयिषीष्ट।९ अतिस्तेनत।१० अस्तेनयिष्यत।

**कर्मणि**—स्तेन्यते। **कृत्सु**—स्तेनकः-निका, स्तेनयिता-त्री, स्तेनयन्-न्ती, स्तेनयिष्यन्-न्ती-ती स्तेनयमानः, स्तेनयिष्यमाणः, स्तेनः, स्तेनितः-तम्, स्तेन्यम्, स्तेन्यमानः, स्तेननम्, स्तेनयितुम्, स्तेयितव्यम्, स्तेनयित्वा, प्रस्तेन्य। स्तेयम्, स्तैन्यम्।

**(१८९८) पद—गतौ।** (जाना, स्थानान्तर करना)। **आ**—होना, मिलना, दुर्दैव का अनुभव करना, **उप**—उत्पन्न करना, समीप रहना, चिपक के रहना, **प्र**—प्राप्त करना,

प्रारम्भ करना, **प्रवि**—ठहरना, स्थापन करना, **प्रति**—पाना, अनुमोदन करना, मुक्त करना, **वि**—दुःख का अनुभव करना, विपत्तिग्रस्त होना, **व्या**—मार डालना या दुःख होना, **सम्**—वृद्धि को प्राप्त होना, बढ़ना, **उत्**—उत्पन्न होना, **अनु**—अनुरण करना। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। अदन्तः। आवर्गीयः।

१ पदयते। २ पदयाञ्चक्रे। ३ पदयिता। ४ पदयिष्यते। ५ पदयताम्। ६ अपदयत। ७ पदयेत। ८ पदयिषीष्ट। ९ अपपदत। १० अपदयिष्यत।

**कर्मणि**—पद्यते। **कृत्सु**—पदकः-दिका, पदयिता-त्री, पदयन्-न्ती, पदयिष्यन्-न्ती-ती, पदयमानः, पदयिष्यमाणः, पदः, पदनम्, पदितः-तम्, पद्यमानः, पद्यम्, पदयितुम्, पदनीयम्, पदयितव्यम्, पदयित्वा, प्रपद्य।

**(१८९९) गृह—ग्रहणे**। (लेना, स्वीकरना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। अदन्तः, आवर्गीयः। गृह्यते। ९ अजगृहत।

**(१९००) मृग—अन्वेषणे**। (अन्वेषण करना, शिकार करना, ढूढना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। अदन्तः। आगर्वीयः

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | मृगयते | मृगयेते | मृगयन्ते | प्र. |
| | मृगयसे | मृगयेथे | मृगयध्वे | म. |
| | मृगये | मृगयावहे | मृगयामहे | उ. |
| लिट् | मृगयाञ्चक्रे | मृगयाञ्चक्राते | मृगयाञ्चक्रिरे | प्र. |
| | मृगयाञ्चकृषे | मृगयाञ्चक्राथे | मृगयाञ्चकृढ्वे | म. |
| | मृगयाञ्चक्रे | मृगयाञ्चकृवहे | मृगयाञ्चकृमहे | उ. |
| लुट् | मृगयिता | मृगयितारौ | मृगयितारः | प्र. |
| | मृगयितासे | मृगयितासाथे | मृगयिताध्वे | म. |
| | मृगयिताहे | मृगयितास्वहे | मृगयितास्महे | उ. |
| लृट् | मृगयिष्यते | मृगयिष्येते | मृगयिष्यन्ते | प्र. |
| | मृगयिष्यसे | मृगयिष्येथे | मृगयिष्यध्वे | म. |
| | मृगयिष्ये | मृगयिष्यावहे | मृगयिष्यामहे | उ. |
| लोट् | मृगयताम् | मृगयेताम् | मृगयन्ताम् | प्र. |
| | मृगयस्व | मृगयेथाम् | मृगयध्वम् | म. |
| | मृगयै | मृगयावहै | मृगयामहै | उ. |
| लङ् | अमृगयत | अमृयेताम् | अमृगयन्त | प्र. |
| | अमृगयथाः | अमृगयेथाम् | अमृगयध्वम् | म. |
| | अमृगये | अमृगयावहि | अमृगयामहि | उ. |
| वि. लि. | मृगयेत | मृगयेयाताम् | मृगयेरन् | प्र. |
| | मृगयेथाः | मृगयेयाथाम् | मृगयेध्वम् | म. |
| | मृगयेय | मृगयेवहि | मृगयेमहि | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आ. लि. | मृगयिषीष्ट | मृगयिषीयास्ताम् | मृगयिषीरन् | प्र. |
| | मृगयिषीष्ठाः | मृगयिषीयास्थाम् | मृगयिषीढ्वम्-ध्वम् | म. |
| | मृगयिषीय | मृगयिषीवहि | मृगयिषीमहि | उ. |
| लुङ् | अममृगत | अममृगेताम् | अममृगन्त | प्र. |
| | अममृगथाः | अममगेथाम् | अममृगध्वम् | म. |
| | अममृगे | अममृगावहि | अममृगामहि | उ. |
| लृङ् | अमृयिष्यत | अमृयिष्येताम् | अमृगयिष्यन् | प्र. |
| | अमृगयिष्यथाः | अमृगयिष्येथाम् | अमृगयिष्यध्वम् | म. |
| | अमृगयिष्ये | अमृगयिष्यावहि | अमृगयिष्यामहि | उ. |

**कर्मणि**—मृग्यते । **कृत्सु**—मृगकः-गिका, मृगयिता-त्री, मृगयन्-न्ती, मृगयिष्यन्-न्ती-ती, मृगयमानः, मृगयिष्यमाणः, मृगः, मृगितः-तम्, मृग्यम्, मृग्यमानः, मृगयितुम्, मृगयित्वा, प्रमृग्य, मृगयितव्यम्, मृगनीयम् ।

**( १९०१ ) कुह—विस्मापने** । (आश्चर्य या चमत्कार दिखाना । मोहित करना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। आवार्गीयः। अदन्तः।

१ कुहयते । २ कुहयाञ्चक्रे । ३ कुहयिता । ४ कुहयिष्यते । ५ कुहयताम् । ६ अकुहयत । ७ कुहयेत । ८ कुहयिषीष्ट । ९ अचुकुहत । १० अकुहयिष्यत ।

**कर्मणि**—कुह्यते । **कृत्सु**—कुहकः-हिका, कुहयिता-त्री, कुहयन्-न्ती, कुहयिष्यन्-न्ती-ती, कुहयमानः, कुहयिष्यमाणः, कुह्यम्, कुहः, कुहनम्, कुह्यमानः, कुहितम्, कुहयितुम्, कुहयितव्यम्, कुहनीयम्, कुहयित्वा, प्रकुह्य ।

**( १९०२ ) शूर—विक्रान्तौ** । (पराक्रमी होना, शूरवीर होना, बहादुरी दिखाना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। अदन्तः। आवर्गीयः।

१ शूरयते । २ शूरयाञ्चक्रे । ३ शूरयिता । ४ शूरयिष्यते । ५ शूरयताम् । ६ अशूरयत । ७ शूरयेत । ८ शूरयिषीष्ट । ९ **प्र.** अशुशूरत अशुशूरेताम् अशुशूरन्त । **म.** अशुशूरयः असुरेथाम् अशुशूरध्वम् । **उ.** अशुशूरे अशुशूरावहि असुशूरामहि । १० अशूरायिष्यत ।

**कृत्सु**—शूरकः-रिका, शूरयिता-त्री, शूरयन्-न्ती, शूरयिष्यन्, शूरयमानः, सूरयिष्यमाणः, शूरः, शूरनम्, शूरयित्वा, प्रशूर्य, शूरयितुम्, शूरयितव्यम्, शूरणीयम्, शूरितः-तम् ।

**( १९०३ ) वीर—विक्रान्तौ** । (पराक्रमी होना, शूरवीर होना, पराक्रम करना)। सकर्म.। सेट्। आत्म.। अदन्तः। आवर्गीयः।

१ वीरयते । २ वीरयाञ्चक्रे । ३ वीरयिता । ४ वीरयिष्यते । ५ वीरयताम् । ६ अवीरयत । ७ वीरयेत । ८ वीरयिषीष्ट । ९ **प्र.** अविवीरत अविवीरताम् अविवीरन्त । **म.** अविवीरथाः अविवीरेथाम् अविवीरध्वम् । **उ.** अविवीरे अविवीरावहि अविवीरामहि ।

**कृत्सु**—वीरकः-रिका, वीरयिता-त्री, वीरयन्-न्ती, वीरयिष्यन्-न्ती-ती, वीरयमानः, वीरयिष्यमाणः, वीरः, वीरणम्, वीर्यम्, वीरितः-तम्, वीरयितुम्, वीरयितव्यम्, वीरणीयम्, वीर्यमाणः, वीरयित्वा, प्रवीर्य ।

**(१९०४) स्थूल—परिवृहणे।** (मोटा होना, स्थूल होना, शरीर पुष्ट होना)। अकर्म.। सेट्। आत्मने.। अदन्तः आवर्गीयः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | स्थूलयते | स्थूलयेते | स्थूलयन्ते | प्र. |
| | स्थूलयसे | स्थूलयेथे | स्थूलयध्वे | म. |
| | स्तूलये | स्थूलयावहे | स्थूलयामहे | उ. |
| लिट् | स्तूलयाञ्चक्रे | स्थूलयाञ्चक्राते | स्थूलयाञ्चक्रिरे | प्र. |
| | स्थूलयाञ्चकृषे | स्थूलयाञ्चक्राथे | स्थूलयाञ्चकृढ्वे | म. |
| | स्थूलयाञ्चक्रे | स्थूलयाञ्चकृवहे | स्थूलयाञ्चकृमहे | उ. |
| लुट् | स्थूलयिता | स्थूलयितारौ | स्थूलयितारः | प्र. |
| | स्थूलयितासे | स्थूलयितासाथे | स्थूलयिताध्वे | म. |
| | स्थूलयिताहे | स्थूलयितास्वहे | स्थूलयितास्महे | उ. |
| लृट् | स्थूलयिष्यते | स्थूलयिष्येते | स्थूलयिष्यन्ते | प्र. |
| | स्थूलयिष्यसे | स्थूलयिष्येथे | स्थूलयिष्यध्वे | म. |
| | स्थूलयिष्ये | स्थूलयिष्यावहे | स्थूलयिष्यामहे | उ. |
| लोट् | स्थूलयताम् | स्थूलयेताम् | स्थूलयन्ताम् | प्र. |
| | स्थूलयस्व | स्थूलयेथाम् | स्थूलयध्वम् | म. |
| | स्थूलये | स्थूलयावहै | स्थूलयामहै | उ. |
| लङ् | अस्थूलयत | अस्थूलयेताम् | अस्थूलयन्त | प्र. |
| | अस्थूलयथाः | अस्थूलयेथाम् | अस्थूलयध्वम् | म. |
| | अस्थूलये | अस्थूलयावहि | स्थूलयामहि | उ. |
| वि. लि. | स्थूलयेत | स्थूलयेताम् | स्थूलयेध्वम् | प्र. |
| | स्थूलयेथाः | स्थूलयेथाम् | स्थूलयध्वम् | म. |
| | स्थूलयेय | स्थूलयेवहि | स्थूलयेमहि | उ. |
| आ. लि. | स्थूलयिषीष्ट | स्थूलयिषीयास्ताम् | स्थूलयिषीरन् | प्र. |
| | स्थूलयिषीष्ठाः | स्थूलिषीयास्थाम् | स्थूलयिषीढ्वम्-ध्वम् | म. |
| | स्थूलयिषीय | स्थूलयिषीवहि | स्थूलयिषीमहि | उ. |
| लुङ् | अतुस्थूलत् | अतुस्थूलेताम् | अतुस्थूलन्त | प्र. |
| | अतुस्थूलथाः | अतुस्थुलेथाम् | अतुस्थूलध्वम् | म. |
| | अतुस्थुले | अतुस्थूलावहि | अतुस्थूलामहि | उ. |
| लृङ् | अस्थूलयिष्यत | अस्थूलयिष्येताम् | अस्थूलयिष्यन्त | प्र. |
| | अस्थूलयिष्यथाः | अस्थूलयिष्येथाम् | अस्थूलयिष्यध्वम् | म. |
| | अस्थूलयिष्ये | अस्थूलयिष्यावहि | अस्थूलयिष्यामहि | उ. |

**कृत्सु**—स्थूलकः-लिका, स्थूलयिता-त्री, स्थूलयन्-न्ती, स्थूलयिष्यन्-न्ती-ती, स्थूलयमानः, स्थूलयिष्यमाणः, स्थूलः, स्थूलनम्, स्थूलितम्, स्थूल्य, स्थूल्यमानः, स्थूलयितुम्, स्थूलयितव्यम्, स्थूलनीयम्, स्थूलयित्वा, प्रस्थूल्य।

**(१९०५) अर्थ—उपयाच्ञायाम्।** (मांगना, याचना करना)। सकर्म.। सेट्। आत्मने.। अदन्त:। आगर्वीय:[1]। क्वचित् परस्मैपदमपि।

१ अर्थयते। २ अर्थयाञ्चक्रे। ३ अर्थयिता। ४ अर्थयिष्यते। ५ अर्थयताम्। ६ आर्थयत। ७ अर्थयेत। ८ अर्थयिषीष्ट। ९ आर्तथत। १० आर्थयिष्यत।

**कर्मणि**—अर्थ्यते। **सनि**—अर्तिथयिषते। **कृत्सु**—अर्थक:-र्थिका, अर्थयिता-त्री, अर्थयन्-न्ती, अर्थयमान:, अर्थयिष्यमाण:, अर्थ्[2]-अर्थौ-अर्थ:, अर्थितम्-त:-तवान्, अर्थ:, विद्यार्थी,[3] अर्थयितव्यम्, अर्थनीयम्, अर्थ्यम्, ईषदर्थ:, दुरर्थ:, स्वर्थ:, अर्थ्यमान:, अर्थयितुम्, अर्थना, अभ्यर्थना, अर्थनम्, अर्थयित्वा, समर्थ्य, अभ्यर्थ्य[4]।

**(१९०६) सत्र—सन्तानक्रियायाम्।** (फैलाना, विस्तार करना, सम्बन्ध करना, संसर्गी होना)। अकर्म.। सेट्। अदन्त:। आगर्वीय:

१ सत्रयते। २ सत्रयाञ्चक्रे। ३ सत्रयिता। ४ सत्रयिष्यते। ५ सत्रयताम्। ६ असत्रयत। ७ सत्रयेत। ८ सत्रयिषीष्ट। ९ **प्र.** अससत्रत अससत्रेताम् अससत्रन्त। **म.** अससत्रथा: अससत्रेथाम् अससत्रध्वम्। **उ.** अससत्रे अससत्रावहि अससत्रामहि। **उ.** असत्रयिष्यत।

**कर्मणि**—सत्र्यते। **कृत्सु**—सत्रक:-त्रिका, सत्रयिता-त्री, सत्रयन्-न्ती, सत्रयिष्यन्-न्ती-ती, सत्रयमान:, सत्रयिष्यमाण:, सत्र:, सत्रनम्, सत्रित:-तम्, सत्र्यमान:, सत्र्यम्, सत्रयितुम्, सत्रयित्वा, संसत्र्य, सत्रयितव्यम्, सत्रनीयम्।

**(१९०७) गर्व—माने।** (अभिमान करना)। अकर्म.। सेट्। आत्मने.।

१ गर्वयते। २ गर्वयाञ्चक्रे। ३ गर्वयिता। ४ गर्वयिष्यते। ५ गर्वयताम्। ६ अगर्वयत। ७ गर्वयेत। ८ गर्वयिषीष्ट। ९ अजगर्वत। १० अगर्वयिष्यत।

**कृत्सु**—गर्वक:-र्विका, गर्वयिता-त्री, गर्वयन्-न्ती, गर्वयिष्यन्-न्ती-ती, गर्वयमान:, गर्वयिष्यमाण:, गर्व:, गर्वनम्, गर्वित:-तम्, गर्व्यम्, गर्वयितुम्, गर्वयितव्यम्, गर्वनीयम्, गर्वयित्वा, प्रगर्व्य, गर्व्यमान:।

**(१९०८) सूत्र—वेष्टने।** (सूत से लपेटना, रस्सी बांटना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्त:।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | सूत्रयति | सूत्रयत: | सूत्रयन्ति | प्र. |
| | सूत्रयसि | सूत्रयथ: | सूत्रयथ | म. |
| | सूत्रयामि | सूत्रयाव: | सूत्रयाम: | उ. |

१ 'आगर्वादात्मनेपदिन:' इति गण सू. चुरादौ। तेन ण्यन्ताच्छानजेव। 'प्रार्थयन्ति शयनोत्थित प्रिया:' इत्यादि तु कृदन्तात् 'तत्करोति–' इति णिचि नेयम् इति मा.धा. वृत्तौ॥

२ 'रात् सस्य' (८-२-२४) इति नियमात् इति संयोगान्तलोपो न।

३ 'सुप्यजातौ णिनिस्ताच्छील्ये' (३-२-७८) इति णिनि:।

४ 'न जिह्वियाञ्चकाराथ सीतामभ्यर्थ तर्जित:। नाप्यूर्जा विभरामास वैदेह्यां त्रसितो भृशम्॥ भ.का. ६/३।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लिट् | सूत्रयाञ्चकार | सूत्रयाञ्चक्रतुः | सूत्रयाञ्चक्रुः | प्र. |
| | सूत्रयाञ्चकर्थ | सूत्रयाञ्चक्रथुः | सूत्रयाञ्चक्र | म. |
| | सूत्रयाञ्चकार-चकर | सूत्रयाञ्चकृव | सूत्रयाञ्चकृम | उ. |
| लुट् | सूत्रयिता | सूत्रयितारौ | सूत्रयितारः | प्र. |
| | सूत्रयितासि | सूत्रयितास्थः | सूत्रयितास्थ | म. |
| | सूत्रयितास्मि | सूत्रयितास्वः | सूत्रयितास्मः | उ. |
| लृट् | सूत्रयिष्यति | सूत्रयिष्यतः | सूत्रयिष्यन्ति | प्र. |
| | सूत्रयिष्यसि | सूत्रयिष्यथः | सूत्रयिष्यथ | म. |
| | सूत्रयिष्यामि | सूत्रयिष्यावः | सूत्रयिष्यामः | उ. |
| लोट् | सूत्रयतु-तात् | सूत्रयताम् | सूत्रयन्तु | प्र. |
| | सूत्रय-तात् | सूत्रयतम् | सूत्रयत | म. |
| | सूत्रयाणि | सूत्रयाव | सूत्रयाम | उ. |
| लङ् | असूत्रयत् | असूत्रयताम् | असूत्रयन् | प्र. |
| | असूत्रयः | असूत्रयतम् | असूत्रयत | म. |
| | असूत्रयम् | असूत्रयाव | असूत्रयाम | उ. |
| वि. लि. | सूत्रयेत् | सूत्रयेताम् | सूत्रयेयुः | प्र. |
| | सूत्रयेः | सूत्रयेतम् | सूत्रयेत | म. |
| | सूत्रयेयम् | सूत्रयेव | सूत्रयेम | उ. |
| आ. लि. | सूत्र्यात् | सूत्र्यास्ताम् | सूत्र्यासुः | प्र. |
| | सूत्र्याः | सूत्र्यास्तम् | सूत्र्यास्त | म. |
| | सूत्र्यासम् | सूत्र्यास्व | सूत्र्यास्म | उ. |
| लुङ् | असुसूत्रत् | असुसूत्रताम् | असुसूत्रन् | प्र. |
| | असुसूत्रः | असुसूत्रतम् | असुसूत्रत | म. |
| | असुसूत्रम् | असुसूत्राव | असुसूत्राम | उ. |
| लृङ् | असूत्रयिष्यत् | असूत्रयिष्यताम् | असूत्रयिष्यन् | प्र. |
| | असूत्रयिष्यः | असूत्रयिष्यतम् | असूत्रयिष्यत | म. |
| | असूत्रयिष्यम् | असूत्रयिष्याव | असूत्रयिष्याम | उ. |

आत्मनेपदे—१ सूत्रयते। २ सूत्रयाञ्चक्रे। ३ सूत्रयिता। ४ सूत्रयिष्यते। ५ सूत्रयताम्। ६ असूत्रयत। ७ सूत्रयेत। ८ सूत्रयिषीष्ट। ९ असुसूत्रत। १० असूत्रयिष्यत।

**कर्मणि**—सूत्रयते। **कृत्सु**—सूत्रकः-त्रिका, सूत्रयिता-त्री, सूत्रयन्-न्ती, सूत्रयिष्यन्-न्ती-ती, सूत्रयमानः, सूत्रयिष्यमाणः, सूत्रम्, सूत्रयम्, सूत्रनम्, सूत्र्यमानः, सूत्रयितुम्, सूत्रयित्वा, प्रसूत्र्य, सूत्रयितव्यम्, सूत्रणीयम्।

(१९०९) **मूत्र—प्रस्रवणे**। (मूतना, पेशाब करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः।

१ मूत्रयति-ते। २ मूत्रयाञ्चकार-चक्रे। ३ मूत्रयिता-त्री। ४ मूत्रयिष्यति-ते। ५ मूत्रयतु-ताम्। ६ अमूत्रयत्-त। ७ मूत्रयेत्-त। ८ मूत्र्यात्-मूत्रयिषीष्ट। ९ अमुमूत्रत्-त। १० अमूत्रयिष्यत-त।

**कर्मणि**—मूत्र्यते। **कृत्सु**—मूत्रकः-त्रिका, मूत्रयिता-त्री, मूत्रयन्-न्ती, मूत्रयिष्यन्-न्ती-ती, मूत्रयमानः, मूत्रयिष्यमाणः, मूत्रः, मूत्रनम्, मूत्र्यम्, मूत्रयमाणः, मूत्रयितुम्, मूत्रयित्वा, प्रमूत्र्य, मूत्रयितव्यम्, मूत्रणीयम्।

**( १९१० ) रूक्ष—पारुष्ये**। (कठिन होना, रुक्ष होना, कठोर वचन बोलना, नीरस होना, शुष्क होना)। अकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः।

१ रूक्षयति-ते। २ रूक्षयाञ्चकार-चक्रे। ३ रूक्षयिता। ४ रूक्षयिष्यति-ते। ५ रूक्षयतु-ताम्। ६ अरूक्षयत्-त। ७ रूक्षयेत्-त। ८ रूक्ष्यात्-रूक्षयिषीष्ट। ९ अरूरुक्षत्-त। १० अरूक्षयिष्यत्।

**कर्मणि**—रूक्ष्यते। **कृत्सु**—रूक्षकः-क्षिका, रूक्षयिता-त्री, रूक्षयन्-न्ती, रूक्षयिष्यन्-न्ती-ती, रूक्षयमानः, रूक्षयिष्यमाणः, रूक्षः, रूक्ष्यम्, रूक्षणम्, रूक्ष्यमानः, रूक्षयितुम्, रूक्षयितव्यम्। रूरुक्षनीयम्, रूक्षयित्वा, प्ररूक्ष्य।

**( १९११ ) पार—कर्मसमाप्तौ**। (कार्य पूर्ण करना)। सकर्म.।·सेट्। उभय.। अदन्तः।

१ पारयति-ते। २ पारयाञ्चकार-चक्रे। ३ पारयिता। ४ पारयिष्यति-ते। ५ पारयतु-ताम्। ६ आपारयत्-त। ७ पारयेत्-त। ८ पार्यात्-पारयिषीष्ट। ९ अपपारत्-त। १० अपारयिष्यत्-त।

**कर्मणि**—पार्यते। **कृत्सु**—पारकः-रिका। पारयिता-त्री, पारयन्-न्ती, पारयिष्यन्-न्ती-ती, पारयमानः, पारयिष्यमाणः, पारः, पारयितुम्, पारयितव्यम्, पारनीयम्, पारयित्वा, संपार्य, पार्यमाणः, पारणम्, पारणा, पारितः-तम्।

**( १९१२ ) तीर—कर्म समाप्तौ**। (कार्य पूर्ण करना, पार करना)। अकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः। तीरयति-ते। ९. अतितीरत्-त।

**कृत्सु**—तीरकः-रिका, तीरयिता-त्री, तीरयन्-न्ती, तीरयिष्यन्-न्ती-ती, तीरयमानः, तीरयिष्यमाणः, तीर्यमाणः, तीरयित्वा, प्रतीर्य, तीरयितुम्, तीरम्, दक्षिणतीरम्, दक्षिणतारम्, उत्तरतीरम्, उत्तरतारम्, '**दिक् छब्देभ्यः तीररस्य तारभावो वा वक्तव्यः**' (वा. ६-३-१४९) इती वचनेन तीरस्य तारभावो विकल्पेन भवति। ल्युटि तीरणम्।

**( १९१३ ) पुट—संसर्गे**। (संसर्ग करना, आलिङ्गन करना, एक में एक अटकाना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः।

१ पुटयति-ते। २ पुटयाञ्चकार-चक्रे। ३ पुटयिता। ४ पुटयिष्यति-ते। ५ पुटयतु-ताम्। ६ अपुटयत्-त। ७ पुटयेत्-त। ८ पुट्यात्-पुटयिषीष्ट। ९ अपुपुटत्-त। १० अपुटयिष्यत्-त।

**कर्मणि**—पुट्यते। **कृत्सु**—पुटकः-टिका, पुटयिता-त्री, पुटयन्-न्ती, पुटयिष्यन्-न्ती-ती, पुटयमानः, पुटयिष्यमाणः, पुटितः-तम्, पुटनम्, पुटः, पुट्यमानः, पुट्यम्, पुटयितुम्, पुटयित्वा, प्रपुट्य, संपुट्य, पुटयितव्यम्, पुटनीयम्।

(**१९१४**) **धेक**—**दर्शने**। (देखना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः। धेकयति-ते।

(**१९१५**) **कत्र**—**शैथिल्ये**। (ढीला करना, शिथिलता करना, छोड़ना, मुक्त करना)। अकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः।

१ कत्रयति-ते। २ कत्रयाञ्चकार-चक्रे। ३ कत्रयिता। ४ कत्रयिष्यति-ते। ५ कत्रयतु-ताम्। ६ अकत्रयत्-त। ७ कत्रयेत्-त। ८ कत्र्यात्-कत्रयिषीष्ट। ९ अचकत्रत्-त। १० अकत्रयिष्यत्-त।

**कर्मणि**—कत्र्यते। **कृत्सु**—कत्रकः-त्रिका, कत्रयिता-त्री, कत्रयन्-न्ती, कत्रयमाणः-कत्रयिष्यन्-न्ती-ती, कत्रयिष्यमाणः, कत्, कत्रः, कत्रितम्-तः, कत्रयितव्यम्, कत्रणीयम्, कत्र्यम्, ईषत्कत्रः-दुष्कत्रः-सुकत्र, कत्र्यमाणः, कत्रयितुम्, कत्रणा, कत्रणम्, कत्रयित्वा, संकत्र्य।

(**१९१६**) **वष्क**—**दर्शने**। (देखना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। वष्कयति-ते। ९. अववष्कत्-त।

(**१९१७**) **चित्र**—**चित्रीकरणे**। (तस्वीर खींचना, चित्र बनाना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | चित्रयति | चित्रयतः | चित्रयन्ति | प्र. |
| | चित्रयसि | चित्रयथः | चित्रयथ | म. |
| | चित्रयामि | चित्रयावः | चित्रयामः | उ. |
| लिट् | चित्रयाञ्चकार | चित्रयाञ्चक्रतुः | चित्रयाञ्चक्रुः | प्र. |
| | चित्रयाञ्चकर्थ | चित्रयाञ्चक्रथुः | चित्रयाञ्चक्र | म. |
| | चित्रयाञ्चकार-चकर | चित्रयाञ्चकृव | चित्रयाञ्चकृम | उ. |
| लुट् | चित्रयिता | चित्रयितारौ | चित्रयितारः | प्र. |
| | चित्रयितासि | चित्रयितास्थः | चित्रयितास्थ | म. |
| | चित्रयितास्मि | चित्रयितास्वः | चित्रयितास्मः | उ. |
| लृट् | चित्रयिष्यति | चित्रयिष्यतः | चित्रयिष्यन्ति | प्र. |
| | चित्रयिष्यसि | चित्रयिष्यथः | चित्रयिष्यथ | म. |
| | चित्रयिष्यामि | चित्रयिष्यावः | चित्रयिष्यामः | उ. |
| लोट् | चित्रयतु-तात् | चित्रयताम् | चित्रयन्तु | प्र. |
| | चित्रय-तात् | चित्रयतम् | चित्रयत | म. |
| | चित्रयाणि | चित्रयाव: | चित्रयामः | उ. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लङ् | अचित्रयत् | अचित्रयताम् | अचित्रयन् | प्र. |
| | अचित्रयः | अचित्रयतम् | अचित्रयत | म. |
| | अचित्रयम् | अचित्रयाव | अचित्रयाम | उ. |
| वि. लि. | चित्रयेत् | चित्रयेताम् | चित्रयेयुः | प्र. |
| | चित्रयेः | चित्रयेतम् | चित्रयेत | म. |
| | चित्रयेयम् | चित्रयेव | चित्रयेम | उ. |
| आ. लि. | चित्र्यात् | चित्र्यास्ताम् | चित्र्यासुः | प्र. |
| | चित्र्याः | चित्र्यास्तम् | चित्र्यास्त | म. |
| | चित्र्यासम् | चित्र्यास्व | चित्र्यास्म | उ. |
| लुङ् | अचिचित्रत् | अचिचित्रताम् | अचिचित्रन् | प्र. |
| | अचिचित्रः | अचिचित्रतम् | अचिचित्रत | म. |
| | अचिचित्रम् | अचिचित्राव | अचिचित्राम | उ. |
| लृङ् | अचित्रयिष्यत् | अचित्रयिष्यताम् | अचित्रयिष्यन् | प्र. |
| | अचित्रयिष्यः | अचित्रयिष्यतम् | अचित्रयिष्यत | म. |
| | अचित्रयिष्यम् | अचित्रयिष्याव | अचित्रयिष्याम | उ. |

**आत्मनेपदे**—१ चित्रयते। २ चित्रयाञ्चक्रे। ३ चित्रयिता। ४ चित्रयिष्यते। ५ चित्रयताम्। ६ अचित्रयत। ७ चित्रयेत। ८ चित्रयिषीष्ट। ९ अचिचित्रत। १० अचित्रयिष्यत।

**कर्मणि**—चित्र्यते। **कृत्सु**—चित्रकः-त्रिका, चित्रयिता-त्री, चित्रयन्-न्ती, चित्रयिष्यन्-न्ती-ती, चित्रयमाणः, चित्रयिष्यमाणः, चित्रम्, चित्रितः-तम्, चित्रितम्-तः, चित्र्यम्, चित्र्यमाणः, चित्रयितुम्, चित्रयित्वा, प्रचित्र्य, चित्रयितव्यम्, चित्रणीयम्, चित्-चित्रौ-चित्रः, ईषच्चित्रः-दुश्चित्रः-सुचित्रः, चित्रणम्, चित्रणा, चिचित्रयिषुः, चिचित्रयिषा।

**( १९१८ ) अंस—समाघाते**। (मार डालना, चोट पहुंचाना)। अकर्म.। सेट्। उभय.। अंसयति-ते।

**( १९१९ ) वट—विभाजने ग्रन्थे च**। (विभाजन करना, अलग अलग करना, गूंथना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः।

१ वटयति-ते। २ वटयाञ्चकार-चक्रे। ३ वटयिता। ४ वटयिष्यति-ते। ५ वटयतु-ताम्। ६ अवटयत्-त। ७ वटयेत्-त। ८ वट्यात्-वटयिषीष्ट। ९ अववटत्-त। १० अवटयिष्यत-त।

**कर्मणि**—वटयते। **कृत्सु**—वटकः-टिका, वटयिता-त्री, वटयन्-न्ती, वटयिष्यन्-न्ती-ती, वटयमानः, वटयिष्यमाणः, वटः, वटितम्-तः, वट्यम्, वट्यमानः, वटयितुम्, वटयित्वा, प्रवट्य, वटयितव्यम्, वटनीयम्, इदित्पाठपक्षे—वण्टकः-ण्टिका, वण्टयिता, इत्यादीनि रूपाणि भवन्ति। वण्टापयकः[१]-यिका, इति अस्य धातोः विशेषः। इदित्त्वाण्णिज्विकल्पः, इत्यपि ज्ञेयम्.

१ 'कथादिपातिस्फायो युग् लुग् वत्वम्' इति शाकटायनसूत्रात् कथादीनां धातूनां णौ परतः पुगागमे, वृद्धौ च एवं रूपम्। इति माधवः (चुरादौ लञ्जधातुप्रकरणे)।

**( १९२० ) लज—प्रकाशने**। (प्रकट होना, स्पष्ट होना)। अकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः।

१ लजयति-ते। २ लजयाञ्चकार-चक्रे। ३ लजयिता। ४ लजयिष्यति-ते। ५ लजयेत्-त। ६ अलजयत्-त। ७ लजयेत्-त। ८ लज्यात्-लजयिषीष्ट। ९ अललजत्-त। १० अलजयिष्यत्-त।

**कृत्सु**—लजकः-जिका, लजयिता-त्री, शतरि-लजयन्, ल्यपि-संलजय्य।

**( १९२१ ) मिश्र—सम्पर्के**। (मिश्रित करना, एकत्र करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः।

१ मिश्रयति-ते। २ मिश्रयाञ्चकार-चक्रे। ३ मिश्रयिता। ४ मिश्रयिष्यति-ते। ५ मिश्रयतु-ताम्। ६ अमिश्रयत्-त। ७ मिश्रयेत्-त। ८ मिश्र्यात्-मिश्रयिषीष्ट। ९ अमिमिश्रत्-त। १० अमिश्रयिष्यत्-त।

**कर्मणि**—मिश्र्यते। **कृत्सु**—मिश्रकः-श्रिका, मिश्रियिता-त्री, मिश्रयन्-न्ती, मिश्रयिष्यन्-न्ती-ती, मिश्रयमानः, मिश्रयिष्यमाणः, मिश्रितः-तम्-तवान्, मिश्रणम्, मिश्र्यमानः, मिश्र्यम्, मिश्रयितुम्, मिश्रयित्वा, विमिश्र्य, मिश्रयितव्यम्, मिश्रणीयम्।

**( १९२२ ) सङ्ग्राम[1]—युद्धे**। (युद्ध करना, लड़ाई करना) अकर्म.। सेट्। आत्मने.। अदन्तः।

१ सङ्ग्रामयते। २ संग्रामयाञ्चक्रे। ३ संग्रामयिता। म. संग्रामयितासे। ४ संग्रामयिष्यते। ५ संग्रामयताम्। ६ संग्रामयत। ७ संग्रामयेत। ८ संग्रामयिषीष्ट। ९ अससंग्रामत। १० असंग्रामयिष्यत।

**कर्मणि**—संग्राम्यते। **कृत्सु**—संग्रामकः-मिका, संग्रामयिता-त्री, संग्रामयन्-न्ती, संग्रामयिष्यन्, संग्रामयमानः, संग्रामयिष्यमाणः, संग्रामः, संग्रामणम्, संग्रामयित्वा, संग्रामयितव्यम्, इत्यादि।

**( १९२३ ) स्तोम—श्लाघायाम्**। (प्रशंसा करना, स्तुति करना, आत्मश्लाघा करना, मुंह देखकर बोलना, खुशामद करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | स्तोमयति | स्तोमयतः | स्तोमयन्ति | प्र. |
| | स्तोमयसि | स्तोमयथः | स्तोमयथ | म. |
| | स्तोमयामि | स्तोमयावः | स्तोमयामः | उ. |
| लिट् | स्तोमयाञ्चकार | स्तोमयाञ्चक्रतुः | इत्यादि। | |
| लुट् | स्तोमयिता | स्तोमयितारौ | स्तोमयितारः इत्यादि। | |

१ 'भृशादिभ्यः–' इत्यत्र कैयटे–' संग्रामयतिरनुदात्तेद् बोद्धव्यः' इति। पदमञ्जर्याञ्च 'अनुदात्तेदयं संग्रामयतिरिष्यते' इति। तथा च भाष्यमपि 'असंग्रामयत शूरः' इति। संग्रामशब्दात् 'तत्करोति' (ग.सू. चुरादिः) इति णिचापि सिद्धाविह संज्ञाविह पाठः– सोपसर्गात् संघातात् प्रत्ययार्थः, तेन असंग्रामयत इत्युपसर्गात् पूर्वमड् भवति। तथा संग्रामयिता इत्यत्राधीत्येत्यादिवल्लब् न भवति।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लृट् | स्तोमयिष्यति | स्तोमयिष्यतः | इत्यादि। | |
| लोट् | स्तोमयतु | स्तोमयताम् | स्तोमयन्तु | प्र. |
| | स्तोमय | स्तोमयतम् | स्तोमयत | म. |
| | स्तोमयानि | स्तोमयाव | स्तोमयाम | उ. |
| लङ् | अस्तोमयत् | अस्तोमयताम् | अस्तोमयन् | प्र. |
| | अस्तोमयः | अस्तोयतम् | अस्तोमयत | म. |
| | अस्तोमयम् | अस्तोमयाव | अस्तोमयाम | उ. |
| वि. लि. | स्तोमयेत् | स्तोमयेताम् | स्तोमयेयुः | प्र. |
| | स्तोमयेः | स्तोमयेतम् | स्तोमयेत | म. |
| | स्तोमयेयम् | स्तोमयेव | स्तोमयेम | उ. |
| आ. लि. | स्तोम्यात् | स्तोम्यास्ताम् | स्तोम्यासुः | प्र. |
| | स्तोम्याः | स्तोम्यास्तम् | स्तोम्यस्त | म. |
| | स्तोम्यासम् | स्तोम्यास्व | स्तोम्यास्म | उ. |
| लुङ् | अतुस्तोमत् | अतुस्तोमताम् | अतुस्तोमन् | प्र. |
| | अतुस्तोमः | अतुस्तोमतम् | अतुस्तोमत | म. |
| | अतुस्तोमम् | अतुस्तोमाव | अतुस्तोमाम | उ. |
| लृङ् | अस्तोमयिष्यत् | अतुस्तोमयिष्यताम् | इत्यादि। | |

आत्मने—१ स्तोमयते। २ स्तोमयाञ्चक्रे। ३ स्तोमयिता। ४ स्तोमयिष्यते। ५ स्तोमयताम्। ६ अस्तोमयत। ७ स्तोमयेत। ८ स्तोमयिषीष्ट। ९ अतुस्तोमत। १० अस्तोमयिष्यत।

**कर्मणि**—स्तोम्यते। **कृत्सु**—स्तोमकः-मिका, स्तोमयिता-त्री, स्तोमयन्-न्ती, स्तोमयिष्यन्-न्ती-ती, स्तोमयमानः, स्तोमयिष्यमाणः, स्तोमः, स्तोमनम्, स्तोम्यम्, स्तोम्यमानः, स्तोमयितुम्, स्तोमयित्वा, स्तोमयितव्यम्, स्तोमनीयम्।

**(१९२४) छिद्र—कर्णभेदने**। (कानों का छिदवाना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः।

१. छिद्रयति-ते। २. छिद्रयाञ्चकार-चक्रे। ३. छिद्रयिता। ४. छिद्रयिष्यति-ते। ५. छिद्रयतु-ताम्। ६. प्र. अच्छिद्रयत् अच्छिद्रयताम् अच्छिद्रयन्। म. अच्छिद्रयः अच्छिद्रयतम् अच्छिद्रयत। उ. अच्छिद्रयम् अच्छिद्रयाव अच्छिद्रयाम। ७. छिद्रयेत्। ८. छिद्रयात् छिद्रयिषीष्ट। ९. प्र. अचिच्छिद्रः अचिच्छिद्रताम् अचिच्छिद्रन्। म. अचिच्छिद्रः अचिच्छिद्रतम् अचिच्छिद्रत। उ. अचिच्छिद्रम् अचिच्छिद्राव अचिच्छिद्राम। १०. अच्छिद्रयिष्यत्-त।

**कर्मणि**—छिद्र्यते। **कृत्सु**—छिद्रकः-दिका, छिद्रयिता-त्री, छिद्रयन्-न्ती, छिद्रयिष्यन्-न्ती-ती, छिद्रयमाणः, छिद्रयिष्यमाणः, छिद्रितम्-तः, छिद्रः, छिद्रयितव्यम्, छिद्रणीयम्, छिद्रयमाणः, छिद्रयितुम्, छिद्रणा, छिद्रणम्, छिद्रयित्वा, प्रच्छिद्रय।

(१९२५) **अन्ध—दृष्ट्युपघाते**। (अन्धा होना, दिखाई न देना, आंखे मूंदना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१. अन्धयति-ते। २. अन्धयाञ्चकार-चक्रे। ३. अन्धयिता। ४. अन्धयिष्यति-ते। ५. अन्धयतु-ताम्।६.आन्धयत्-त।७.अन्धयेत्-त।८.अन्ध्यात्-अन्धयिषीष्ट।९.प्र.आन्दिधत् आन्दिधताम् आन्दिधन्। म. आन्दिधः आन्दिधतम् आन्दिधत। उ. आन्दिधम् आन्दिधाव आन्दिधाम। १०. आन्धयिष्यत्-त।

**कर्मणि**—अन्ध्यते। **कृत्सु**—अन्धकः-धिका, अन्धयिता, अन्धयन्-न्ती, अन्धयिष्यन् अन्धयमानः, अन्धयिष्यमाणः, अन्धः, अन्धितम्-तः, अन्धनम्, अन्ध्यमानः, अन्धयितुम्, अन्धितम्-तः, अन्धनम्, अन्ध्यमानः, अन्धयितुम्, अन्धयित्वा, प्रान्ध्य, अन्धयितव्यम्, अन्धनीयम्, अन्धना, इषदन्धः, दुरन्धः-स्वन्धः, अन्-अन्धौ अन्धः अन्ध्यम्, जनुषान्धः[1]।

(१९२६) **दण्ड—दण्डनिपातने**। (शासन करना, दण्ड देना)। द्विकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः।

१ दण्डयति-ते। २ दण्डयाञ्चकार-चक्रे। ३ दण्डयिता। ४ दण्डयिष्यति-ते। ५ दण्डयतु-ताम्।६ अदण्डयत्-त।७ दण्डयेत्-त।८ दण्ड्यात्-दण्डयिषीष्ट।९ अददण्डत्-त। १० अदण्डयिष्यत्-त।

**कर्मणि**—दण्ड्यते। **सनि**—दिदण्डयिषति-ते। **कृत्सु**—दण्डकः-डिका, दण्डयिता-त्री, दण्डयन्-न्ती, दण्डयिष्यन्-न्ती-ती, दण्डयमानः, दण्डयिष्यमाणः, दण्डः, दण्डनम्, दण्डितः-तम्, दण्ड्यमानः, दण्डयितुम्, दण्डयित्वा, विदण्ड्य।

(१९२७) **अङ्क—पदे लक्षणे च**। (चिह्न करना, गिनना, टहलना, अकड़ के चलना, गोद में लेना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | अङ्कयति | अङ्कयतः | अङ्कयन्ति | प्र. |
| | अङ्कयसि | अङ्कयथः | अङ्कयथ | म. |
| | अङ्कयामि | अङ्कयावः | अङ्कयामः | उ. |
| लिट् | अङ्कयाञ्चकार | अङ्कयाञ्चक्रतुः | इत्यादि | |
| लुट् | अङ्कयिता | अङ्कयितारौ | इत्यादि | |
| लृट् | अङ्कयिष्यति | अङ्कयिष्यतः | इत्यादि | |
| लोट् | अङ्कयतु-तात् | अङ्कयताम् | अङ्कयन्तु | प्र. |
| | अङ्कय | अङ्कयतम् | अङ्कयत | म. |
| | अङ्कयानि | अङ्कयाव | अङ्कयाम | उ. |
| लङ् | आङ्कयत् | आङ्कयताम् | आङ्कयन् | प्र. |
| | आङ्कयः | आङ्कयतम् | आङ्कयत | म. |
| | आङ्कयम् | आङ्कयाव | आङ्कयाम | उ. |

१ 'पुसोऽनुजो जनुषान्ध इति वक्तव्यम्' (वा. ६-३-३) इति तृतीयायाः अलुक्।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| वि. लि. | अङ्क्ये | अङ्क्येताम् | अङ्क्येयुः | प्र. |
| | अङ्क्येः | अङ्क्येतम् | अङ्क्येत | म. |
| | अङ्क्येयम् | अङ्क्येव | अङ्क्येम | उ. |
| आ. लि. | अङ्क्यात् | अङ्क्यास्ताम् | अङ्क्यासुः | प्र. |
| | अङ्क्याः | अङ्क्यास्तम् | अङ्क्यास्त | म. |
| | अङ्क्यासम् | अङ्क्यास्व | अङ्क्यास्म | उ. |
| लुङ् | आञ्चिकत् | आञ्चिकताम् | आञ्चिकन् | प्र. |
| | आञ्चिकः | आञ्चिकतम् | आञ्चिकत | म. |
| | आञ्चिकम् | आञ्चिकाव | आञ्चिकाम | उ. |
| लृङ् | आङ्क्यिष्यत् | आङ्क्यिष्यताम् | आङ्क्यिष्यन् इत्यादि। | |

**कर्मणि**—अङ्क्यते। **कृत्सु**—अङ्कक:-किका, अङ्कयिता-त्री, अङ्कयन्-न्ती, अङ्कयिष्यन्-न्ती-ती, अङ्कयमानः, अङ्कयिष्यमाणः, अन्-अङ्कौ-अङ्कः, अङ्कितम्-तः-तवान्, अङ्क, अङ्कयितुम्, अङ्कना, अङ्कनम्, अङ्कयित्वा, समङ्क्य।

( **१९२८** ) **अङ्ग —पदे लक्षणे च**। सक.। सेट्। उभय.। अदन्तः। अङ्गयति-ते। इत्यादि (१९२६) वत्।

( **१९२९** ) **दुःख—तत् क्रियायाम्**। (दुःख देना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः।

१ दुःखयति-ते। २ दुःखयाञ्चकार-चक्रे। ३ दुःखयिता। ४ दुःखयिष्यति-ते। ५ दुःखयतु-ताम्। ६ अदुःखयत्-त। ७ दुःखयेत्-त। ८ दुःख्यात्-दुःखयिषीष्ट। ९ अदुदुःखत्-त। १० अदुःखयिष्यत्-त।

**कर्मणि**—दुःख्यते। **कृत्सु**—दुःखकः-खिका, दुःखयिता-त्री, दुःखयन्-न्ती, दुःखयिष्यन्-न्ती-ती, दुःखयमानः, दुःखयिष्यमाणः, दुःखः, दुःखनम्, दुःखयित्वा, प्रदुःख्य, दुःखयितुम्, दुःखयितव्यम्, दुःखनीयम्।

( **१९३०** ) **सुख—तत्क्रियायाम्**। (सुखी करना, आनन्दानुभव करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। सुखयति-ते। दुःखयति (१९२९) वत्।

( **१९३१** ) **रस—आस्वादनस्नेहनयोः**। (स्वाद लेना, चखना, प्रीति करना, प्यार करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.।

१ रसयति-ते। २ रसयाञ्चकार-चक्रे। ३ रसयिता। ४ रसयिष्यति-ते। ५ रसयतु-ताम्। ६ अरसयत्-त। ७ रसयेत्-त। ८ रस्यात्-रसयिषीष्ट। ९ अररसत्-त। १० अरसयिष्यत्-त।

**कर्मणि**—रस्यते। **सनि**—रिरसयिषति-ते। **कृत्सु**—रसकः-सिका, रसयिता-त्री, रसयन्-न्ती, रसयिष्यन्-न्ती-ती, रसयमानः, रसयिष्यमाणः, सुरसः-सुरसौ-सुरसः, रसयितुम्, रस्यमानः, रसयितव्यम्, रसनीयम्, रसः, विरसः, सुरसः, सुरसी।

**(१९३२) व्यय—वित्तसमुत्सर्गे।** (खर्च करना, व्यय करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः।

१ व्ययति-ते। २ व्यययाञ्चकार-चक्रे। ३ व्यययिता। ४ व्यययिष्यति-ते। ५ व्ययतु-ताम्। ६ अव्यययत्-त। ७ व्ययेत्-त। ८ व्यय्या व्यययिषीष्ट। ९ अवव्ययत्-त। १० अव्यययिष्यत्-त।

**कर्मणि**—व्यय्यते। **सनि**—विव्यययिषति-ते। **कृत्सु**—व्ययकः-यिका, व्यययिता-त्री, व्ययन्-न्ती, व्यययिष्यन्-न्ती-ती, व्यययमानः, व्यययिष्यमाणः, व्ययः-तम्, व्ययनम्, व्यय्यमानः, व्यययितुम्, व्यययित्वा, प्रव्यय्य, व्यययितव्यम्, व्ययनीयम्, व्ययितः-तम्।

**(१९३३) रूप—रूपक्रियायाम्।** (बनाना, आकार बनाना, रचना करना, मन में रूपाकृति बनाना)। **नि**—स्पष्ट बोलना, समझाके कहना, निरूपण करना। सकर्म।. सेट्। उभय.। रूपस्य दर्शनं करणं वा रूपक्रिया।

१ रूपयति-ते। २ रूपयाञ्चकार-चक्रे। ३ रूपयिता। ४ रूपयिष्यति-ते। ५ रूपयतु-ताम्। ६ अरूपयत्-त। ७ रूपयेत्-त। ८ रूप्यात्-रूपयिषीष्ट। ९ अरुरूपत्-त। १० अरूपयिष्यत्-त।

**कर्मणि**—रूप्यते। **सनि**—रुरुपयिषति-ते। **कृत्सु**—रूपकः-पिका, रूपयिता-त्री, रूपयन्, रूपयिष्यन्, रूपयमानः, रूपयिष्यमाणः, रूपितः-तम्, रूपः, रूपणम्, रूपणा, रूप्यमानः, रूपयितुम्, रूपयित्वा, प्ररूप्य, रूपयितव्यम्, रूपणीयम्।

**(१९३४) छेद—द्वैधीकरणे।** (छेद करना)। **वि**—पृथक् करना। सकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः।

१ छेदयति-ते। २ छेदयाञ्चकार-चक्रे। ३ छेदयिता। ४ छेदयिष्यति-ते। ५ छेदयतु-ताम्। ६ अच्छेदयत्-त। ७ छेदयेत्-त। ८ छेद्यात्-छेदयिषीष्ट। ९ **प्र.** अचिच्छेदत् अचिच्छेदताम् अचिच्छेदन्। **म.** अचिच्छेदः अचिच्छेदतम् अचिच्छेदत। **उ.** अचिच्छेदम् अचिच्छेदाव अचिच्छेदाम।

**कर्मणि**—छिद्यते। **कृत्सु**—छेदकः-दिका, छेदयिता-त्री, छेदयन्-न्ती, छेदयिष्यमाणः, छेदयमानः, छेदयिष्यमाणः, छेदितः-तम्, छेद्यम्, छेद्यमानः, छेदनम्, छेदयितुम्, छेदयित्वा, विच्छेद्य, छेदयितव्यम्, छेदनीयम्।

**(१९३५) छद—अपवारणे।** (हटाना, छिपाना, बचाना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः। १ छदयति-ते। ९ अचिच्छदत्-त।

**कृत्सु**—छदकः-दिका, छदयन्-न्ती, छदयिष्यन्-न्ती, छदयमानः, छदयिष्यमाणः।

**(१९३६) लाभ—प्रेरणे।** (प्रेरणा करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः। लाभयति-ते। लाभकः-भिका, लाभयिता-त्री, इत्यादि।

**(१९३७) व्रण—गात्रविचूर्णने**। (क्षत करना, घाव करना, जखमी करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः। १ व्रणयति-ते। २ व्रणयाञ्चकार-चक्रे।

**कृत्सु**—व्रणयिता-त्री, व्रणयन्-न्ती, व्रणयिष्यन्, व्रणयमाणः, व्रणयिष्यमाणः, व्रणयितुम्, व्रणयितव्यम्, व्रणकः-णिका, व्रण्यमाणः, व्रणितः-तम्।

**(१९३८) वर्ण—वर्णक्रियाविस्तारगुणवचनेषु**। (वर्णन करना, विस्तृत करना, फैलाना, प्रशंसा करना, चमकना, प्रकाशित करना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लट् | वर्णयति | वर्णयतः | वर्णयन्ति | प्र. |
| | वर्णयसि | वर्णयथः | वर्णयथ | म. |
| | वर्णयामि | वर्णयावः | वर्णयामः | उ. |
| लिट् | वर्णयाञ्चकार | वर्णयाञ्चक्रतुः | वर्णयाञ्चक्रुः | प्र. |
| लुट् | वर्णयिता | वर्णयितारौ | वर्णयितारः इत्यादि। | |
| लृट् | वर्णयिष्यति | वर्णयिष्यतः | वर्णयन्ति इत्यादि। | |
| लोट् | वर्णयतु-तात् | वर्णयताम् | वर्णयन्तु | प्र. |
| | वर्णय-तात् | वर्णयतम् | वर्णयत | म. |
| | वर्णयाणि | वर्णयाव | वर्णयाम | उ. |
| लङ् | अवर्णयत् | अवर्णयताम् | अवर्णयन् | प्र. |
| | अवर्णयः | अवर्णतम् | अवर्णयत | म. |
| | अवर्णयम् | अवर्णयाव | अवर्णयाम | उ. |
| वि. लि. | वर्णयेत् | वर्णयेताम् | वर्णयेयुः | प्र. |
| | वर्णयेः | वर्णयेतम् | वर्णयेत | म. |
| | वर्णयेयम् | वर्णयेव | वर्णयेम | उ. |
| आ. लि. | वर्ण्यात् | वणर्यास्ताम् | वणर्यासुः | प्र. |
| | वर्ण्याः | वर्ण्यास्तम् | वर्ण्यास्त | म. |
| | वर्ण्यासम् | वर्ण्यास्व | वर्ण्यास्म | उ. |
| लुङ् | अववर्णत् | अववर्णताम् | अववर्णन् | प्र. |
| | अववर्णः | अववर्णतम् | अववर्णत | म. |
| | अववर्णम् | अववर्णाव | अववर्णाम | उ. |
| लृङ् | अवर्णयिष्यत् | अवर्णयिष्यताम् | अवर्णयिष्यन् इत्यादि। | |

आत्मनेपदे—१ वर्णयत। २ अवर्णयाञ्चक्रे। ३ वर्णयिता। ४ वर्णयिष्यत। ५ वर्णयताम्। ६ अवर्णयत। ७ वर्णयेत। ८ वर्णयिषीष्ट। ९ अववर्णत। १० अवर्णयिष्यत।

**कर्मणि**—वर्ण्यते। **सनि**—विवर्णयिषति-ते। **कृत्सु**—वर्णकः-र्णिका, वर्णयिता-त्री, वर्णयन्, वर्णयिष्यन्, वर्णयमानः, वर्णयिष्यमाणः, वर्णितः-तम्, वर्णनम्, वर्णना, वर्णयितुम्, वर्णयितव्यम्, वर्णनीयम्, वर्णयित्वा, विवर्ण्य।

**(१९३९) पर्ण—हरितभावे**। (हरा करना, हरा होना)। अकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः।

१ पर्णयति-ते। २ पर्णयाञ्चकार-चक्रे। ३ पर्णयिता। ४ पर्णयिष्यति-ते। ५ पर्णयतु-ताम्। ६ अपर्णयत्। ७ पर्णयेत्-त। ८ पर्ण्यात्-पर्णयिषीष्ट। ९ अपपर्णत्-त। १० अपर्णयिष्यत्-त।

**कर्मणि**—पर्ण्यते। **कृत्सु**—पर्णकः-र्णिका, पर्णयिता-त्री, पर्णयन्-न्ती, पर्णयिष्यन्-न्ती-ती, पर्णयमाणः, पर्णयिष्यमाणः, पर्णितम्, पर्णयित्वा, प्रपर्ण्य, पार्णयितव्यम्, पर्णणीयम्, पर्ण्यमाणः, पर्णयितुम्।

**(१९४०) विष्क—दर्शने**। (देखना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः विष्कयति-ते।

**(१९४१) क्षिप—प्रेरणे**। अकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः। क्षिपयति-ते।

**(१९४२) वस—निवासे**। (निवास करना, वसना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः। वसयति-ते।

**(१९४३) तुत्थ[१]—आवरणे**। आवरणम् = आच्छादनम्। (आच्छादित करना, परदा डालना)। सकर्म.। सेट्। उभय.। अदन्तः।

१ तुत्थयति-ते। २ तुत्याञ्चकार-चक्रे। ३ तुत्थयिता। ४ तुत्थयिष्यति-ते। ५ तुत्थयतु-ताम्। ६ अतुत्थयत्-त। ७ तुत्थयेत्-त। ८ तुत्थ्यात्-तुत्थयिषीष्ट। ९ अतुतुत्थत्-त। १० अतुत्थयिष्यत्-त।

**कर्मणि**—तुत्थ्यते। **कृत्सु**—तुत्थकः-त्थिका, तुत्थयिता-त्री, तुत्थयन्-न्ती, तुत्थयिष्यन्-न्ती-ती, तुत्थयमानः, तुत्थयिष्यमाणः, तुत्-तुत्थौ-तुत्थः, तुत्थितः-तम्-तवान्, तुत्थः, तुत्थयितव्यम्, तुत्थनीयम्, तुत्थ्यम्, ईषत् तुत्थः-दुस्तुत्थः-सुतुत्थः, तुत्थ्यमानः, तुत्थयितुम्, तुत्थना, तुत्थनम्, तुत्थयित्वा, प्रतुत्थ्य, तुत्थम्।

इति चुरादयः ॥ १० ॥

बृहद्धातुकुसुमाकरः सम्पूर्णः।

---

१ धातुकाव्ये (३-६४) 'अतूत्थिताङ्ग–' इत्युदाहरणदर्शनात् 'तूत्थ' इति तत्सम्मतः पाठ इति ज्ञायते।

बृहद्धातुकुसुमाकरे

# धातुकोशः

## ( अकारादिक्रमेण सकलधातूनामनुक्रमणिका )

| धातवः | धा॰सं॰ | गण | पृष्ठाः |
|---|---|---|---|
| उठ उपघाते | ३३८ | १ | १०७ |
| उतृदिर् हिंसाऽनादरयोः | १४४६ | ७ | ५६२ |
| उध्रस उञ्छे | १७४२ | १० | ६५४ |
| उध्रस उञ्छे | १५२४ | ९ | ६०८ |
| उन्दी क्लेदने | १४५७ | ७ | ५६८ |
| उबुन्दिर् निशामने | ८७६ | १ | २३० |
| उब्ज आर्जवे | १३०३ | ६ | ५२३ |
| उभ पूरणे | १३१९ | ६ | ५२५ |
| उम्भ पूरणे | १३२० | ६ | ५२५ |
| उर्द माने क्रियायाञ्च | २० | १ | २५ |
| उर्वी हिंसायाम् | ५६९ | १ | १४३ |
| उष दाहे | ६९६ | १ | १६६ |
| उहिर् अर्दने | ७३९ | १ | १७२ |
| ( ऊ ) | | | |
| ऊन परिहाने | १८८८ | १० | ६९५ |
| ऊयी तन्तुसन्ताने | ४८३ | १ | १२८ |
| ऊर्ज बलप्राणनयोः | १५४९ | १० | ६१४ |
| ऊर्णुञ् आच्छादने | १०३९ | २ | ३४६ |
| ऊष रुजायाम् | ६८३ | १ | १६४ |
| ऊह वितर्के | ६४८ | १ | १५६ |
| ( ऋ ) | | | |
| ऋ गतौ | १०९८ | ३ | ४०२ |
| ऋ गतिप्रापणयोः | ९३६ | १ | २७० |
| ऋच स्तुतौ | १३०२ | ६ | ५२३ |
| ऋच्छ गतीन्द्रियप्रलयमूर्तिभावेषु | १२९६ | ६ | ५२२ |
| ऋज गतिस्थानार्जनोपार्जनेषु | १७६ | १ | ७१ |
| ऋजि भर्जने | १७७ | १ | ७२ |
| ऋणु गतौ | १४६७ | ८ | ५७५ |
| ऋधु वृद्धौ | १२७१ | ५ | ५०१ |
| ऋधु वृद्धौ | १२४५ | ४ | ४७२ |
| ऋफ हिंसायाम् | १३१५ | ६ | ५२४ |
| ऋम्फ हिंसायाम् | १३१६ | ६ | ५२४ |
| ऋषी गतौ | १२८७ | ६ | ५२० |
| ( ॠ ) | | | |
| ॠ गतौ | १४९७ | ९ | ५९७ |
| ( ए ) | | | |
| एजृ कम्पने | २३४ | १ | ८९ |
| एजृ दीप्तौ | १७९ | १ | ७३ |
| एठ विबाधायाम् | २६७ | १ | ९५ |
| एध वृद्धौ | २ | १ | ९ |
| एषृ गतौ | ६१८ | १ | १५२ |
| ( ओ ) | | | |
| ओखृ शोषणालमर्थयोः | १२१ | १ | ६२ |
| ओजृ अपनयने | ४५४ | १ | १२३ |
| ओप्यायी वृद्धौ | ४८८ | १ | १२९ |
| ओलजी व्रीडायाम् | १२९० | ६ | ५२१ |
| ओलडि उत्क्षेपणे | १५४२ | १० | ६१३ |
| ओलस्जी व्रीडायाम् | १२९१ | ६ | ५२१ |
| ओविजी भयचलनयोः | १२८९ | ६ | ५२१ |
| ओविजी भयचलनयोः | १४६० | ७ | ५७० |
| ओवै शोषणे | ९२१ | १ | २५५ |
| ओव्रश्चू छेदने | १२९२ | ६ | ५२१ |
| ओहाक् त्यागे | १०९० | ३ | ३९१ |
| ओहाङ् गतौ | १०८९ | ३ | ३९० |
| ( क ) | | | |
| कक लौल्ये | ९० | १ | ५६ |
| ककि गतौ | ९४ | १ | ५७ |
| कख हसने | १२० | १ | ६२ |
| कखे हसने | ७८४ | १ | १९३ |
| कगे नोच्यते | ७९१ | १ | १९४ |
| कच बन्धने | १६८ | १ | ७० |
| कचि दीप्तिबन्धनयोः | १६९ | १ | ७० |

| धातवः | धा॰सं॰ | गण | पृष्ठाः |
|---|---|---|---|
| क्लिदू आर्द्रीभावे | १२४२ | ४ | ४७० |
| क्लिश उपतापे | ११६१ | ४ | ४२८ |
| क्लिशू विबाधने | १५२२ | ९ | ६०८ |
| क्लीवृ अधाष्टर्ये | ३८१ | १ | ११४ |
| क्लेवृ सेवने | ५०६ | १ | १३० |
| क्लेश अव्यक्तायां वाचि | ६०७ | १ | १५० |
| क्वण शब्दार्थे | ४५० | १ | १२३ |
| क्वथे निष्पाके | ८४६ | १ | २११ |
| क्षजि गतिदानयोः | ७६९ | १ | १८९ |
| क्षणु हिंसायाम् | १४६५ | ८ | ५७५ |
| क्षप ज्ञानज्ञापनमारणतोषणनिशाननिशामनेषु | १६२४ | १० | ६२८ |
| क्षपि क्षान्त्याम् | १६२० | १० | ६२७ |
| क्षमु सहने | १२०६ | ४ | ४६० |
| क्षमुष् सहने | ४४२ | १ | १२० |
| क्षर सञ्चलने | ८५१ | १ | २१४ |
| क्षल शौचकर्मणि | १५९७ | १० | ६२३ |
| क्षि क्षये | २३६ | १ | ९० |
| क्षि निवासगत्योः | १४०७ | ६ | ५४० |
| क्षि हिंसायाम् | १४७६ | ५ | ५०२ |
| क्षिणु हिंसायाम् | १४६६ | ८ | ५७५ |
| क्षिप प्रेरणे | १९४१ | १० | ७१४ |
| क्षिप प्रेरणे | १२८५ | ६ | ५१५ |
| क्षिप्र प्रेरणे | ११२१ | ४ | ४१० |
| क्षिवि प्रीणनार्थे | ५९४ | १ | १४५ |
| क्षीज अव्यक्ते शब्दे | २३७ | १ | ९० |
| क्षीवु निरसने | ५६७ | १ | १४३ |
| क्षीवृ मदे | ३८२ | १ | ११४ |
| क्षीष् हिंसायाम् | १५०६ | ९ | ६०[illegible] |
| ( टु ) क्षु शब्दे | १०३६ | २ | ३४६ |
| क्षुदिर् सम्पेषणे | १४४३ | ७ | ५६१ |
| क्षुध बुभुक्षायाम् | ११९० | ४ | ४५० |
| क्षुभ सञ्चलने | ७५१ | १ | १७९ |
| क्षुभ सञ्चलने | १२३९ | ४ | ४७० |

| धातवः | धा॰सं॰ | गण | पृष्ठाः |
|---|---|---|---|
| क्षुभ सञ्चलने | १५१९ | ९ | ६०७ |
| क्षुर विलेखने | १३४४ | ६ | ५२८ |
| क्षेवु निरसने | ५६८ | १ | १४३ |
| क्षै क्षये | ९१३ | १ | २५३ |
| क्षोट क्षेपे | १८७५ | १० | ६९१ |
| क्ष्णु तेजने | १०३७ | २ | ३४६ |
| क्ष्मायी विधूनने | ४८६ | १ | १२८ |
| क्ष्मील निमेषणे | ५२० | १ | १३५ |
| ( ञि ) क्ष्विदा स्नेहविमोचनयोः | १२४४ | ४ | ४७२ |
| क्ष्वेलृ चलने | ५३९ | १ | १३६ |
| ( ख ) | | | |
| खच भूतप्रादुर्भावे | १५३१ | ९ | ६०९ |
| खच मन्थे | २३२ | १ | ८८ |
| खजि गतिवैकल्ये | २३३ | १ | ८९ |
| खट काङ्क्षायाम् | ३०९ | १ | १०० |
| खट्ट संवरणे | १६३२ | १० | ६३१ |
| खड भेदने | १५८० | १० | ६१९ |
| खडि भेदने | १५८१ | १० | ६२० |
| खडि मन्थे | २८३ | १ | ९७ |
| खद स्थैर्ये हिंसायाञ्च | ५० | १ | ४४ |
| खनु अवदारणे | ८७८ | १ | २३१ |
| खर्ज व्यथने पूजने च | २२९ | १ | ८७ |
| खर्द दन्तशूके | ६० | १ | ४८ |
| खर्ब गतौ | ४२१ | १ | ११८ |
| खर्व दर्पे | ५८२ | १ | १४४ |
| खल सञ्चये | ५४५ | १ | १३७ |
| खष हिंसायाम् | ६८६ | १ | १६६ |
| खादृ भक्षणे | ४९ | १ | ४३ |
| खिद त्रासे | ३०२ | १ | ९९ |
| खिद दैन्ये | ११७० | ४ | ४३६ |
| खिद्द दैन्ये | १४४९ | ७ | ५६३ |
| खिद परिघाते | १४३६ | ६ | ५५४ |
| खुजु स्तेयकरणे | २०० | १ | ८० |
| खुडि खण्डने | १५८५ | १० | ६२० |

| धातवः | धा॰सं॰ | गण | पृष्ठाः |
|---|---|---|---|
| तसु उपक्षये | १२१२ | ४ | ४६३ |
| तायृ सन्तानपालनयोः | ४८९ | १ | १२९ |
| तिकृ गतौ | १०५ | १ | ५७ |
| तिग आस्कन्दने गतौ च | १२६७ | ५ | ४९९ |
| तिज निशाने | ९७१ | १ | २८५ |
| तिज निशाने | १६५२ | १० | ६३५ |
| तिपृ क्षरणार्थे | ३६२ | १ | १११ |
| तिम आर्द्रीभावे | ११२३ | ४ | ४११ |
| तिल गतौ | ५३४ | १ | १३६ |
| तिल स्नेहने | १३५४ | ६ | ५३० |
| तिल स्नेहने | १६०७ | १० | ६२५ |
| तीकृ गतौ | १०६ | १ | ५७ |
| तीर कर्मसमाप्तौ | १९१२ | १० | ७०५ |
| तीव स्थौल्ये | ५६५ | १ | १४३ |
| तुज पालने | २४५ | १ | ९१ |
| तुज हिंसायाम् | २४४ | १ | ९१ |
| तुजि हिंसाबलादाननिकेतनेषु | १५६६ | १० | ६१७ |
| तुजि भाषायाम् | १७५५ | १० | ६५८ |
| तुट कलहकर्मणि | १३७६ | ६ | ५३४ |
| तुड तोडने | १३८६ | ६ | ५३५ |
| तुडि तोडने | २७६ | १ | ९७ |
| तुडृ तोडने | ३५१ | १ | १०९ |
| तुण कौटिल्ये | १३३२ | ६ | ५२७ |
| तुण हिंसागतिकौटिल्येषु | १३३७ | ६ | ५२७ |
| तुत्थ आवरणे | १९४३ | १० | ७१४ |
| तुद व्यथने | १२८१ | ६ | ५०४ |
| तुप हिंसायाम् | ४०४ | १ | ११८ |
| तुप हिंसायाम् | १३०९ | ६ | ५२४ |
| तुफ हिंसायाम् | १३११ | ६ | ५२४ |
| तुबि अर्दने | ४२८ | १ | ११८ |
| तुबि अदर्शने | १६५७ | १० | ६३६ |
| तुभ हिंसायाम् | १२४१ | ४ | ४७० |
| तुभ हिंसायाम् | १५२१ | ९ | ६०७ |
| तुभ हिंसायाम् | ७५३ | १ | १८२ |
| तुम्प हिंसायाम् | ४०५ | १ | ११८ |
| तुम्प हिंसायाम् | १३१० | ६ | ५२४ |
| तुम्फ हिंसायाम् | ४०९ | १ | ११८ |
| तुम्फ हिंसायाम् | १३१२ | ६ | ५२४ |
| तुर त्वरणे | ११०२ | ३ | ४०३ |
| तुर्वी हिंसायाम् | ५७० | १ | १४३ |
| तुल उन्माने | १५९९ | १० | ६२३ |
| तुष प्रीतौ | ११८४ | ४ | ४४६ |
| तुस शब्दे | ७१० | १ | १६८ |
| तुहिर् अर्दने | ७३७ | १ | १७२ |
| तूण पूरणे | १६८९ | १० | ६४१ |
| तूरी गतित्वरणहिंसनयोः | ११५२ | ४ | ४२७ |
| तूल निष्कर्षे | ५२७ | १ | १३६ |
| तूष तुष्टौ | ६७४ | १ | १६३ |
| तृणु अदने | १४६८ | ८ | ५७५ |
| (उ) तृदिर् हिंसाऽनादरयोः | १४४६ | ७ | ५६२ |
| तृंहू हिंसायाम् | १३५० | ६ | ५२९ |
| तृप प्रीणने | ११९५ | ४ | ४५३ |
| तृप तृप्तौ | १८११ | १० | ६७१ |
| तृप दीप्तौ | १३०७ | ६ | ५२४ |
| तृम्फ तृप्तौ | १३०८ | ६ | ५२४ |
| (ञि) तृषा पिपासायाम् | १२२८ | ४ | ४६६ |
| तृह हिंसायाम् | १४५५ | ७ | ५६६ |
| तृहु हिंसायाम् | १३४८ | ६ | ५२८ |
| तृ प्लवनतरणयोः | ९६९ | १ | २८३ |
| तेज पालने | २३१ | १ | ८८ |
| तेपृ क्षरणार्थे | ३६३ | १ | १११ |
| तेवृ देवने | ४९९ | १ | १३० |
| त्यज हानौ | ९८६ | १ | २९७ |
| त्वक्षू तनूकरणे | ६५६ | १ | १६० |

| धातवः | धा.सं. | गण | पृष्ठाः |
|---|---|---|---|
| मीमृ गतौ शब्दे च | ४६८ | १ | १२४ |
| मील निमेषणे | ५१७ | १ | १३४ |
| मीव स्थौल्ये | ५६४ | १ | १४३ |
| मुच प्रमोचने मोदने च | १७४३ | १० | ६५४ |
| मुचि कल्कने | १७२ | १ | ७१ |
| मुच्लृ मोक्षणे | १४३० | ६ | ५४९ |
| मुज शब्दे | २५० | १ | ९२ |
| मुजि शब्दे | २५१ | १ | ९२ |
| मुट आक्षेपमर्दनयोः | १३७४ | ६ | ५३४ |
| मुट सञ्चूर्णने | १६१४ | १० | ६२७ |
| मुड मर्दने | ३१३ | १ | १०२ |
| मुडि खण्डने | ३२६ | १ | १०२ |
| मुडि मार्जने | २७५ | १ | ९७ |
| मुण प्रतिज्ञाने | १३३४ | ६ | ५२७ |
| मुद हर्षे | १६ | १ | २२ |
| मुद संसर्गे | १७४० | १० | ६५४ |
| मुर वेष्टने | १३४३ | ६ | ५२८ |
| मुर्च्छा स्नेहसमुच्छ्राययोः | २१२ | १ | ८४ |
| मुर्वी बन्धने | ५७५ | १ | १४४ |
| मुष स्तेये | १५३० | ९ | ६०९ |
| मुस खण्डने | १२२० | ४ | ४६४ |
| मुस्त सङ्घाते | १६३१ | १० | ६३१ |
| मुह वैचित्ये | ११९८ | ४ | ४५५ |
| मूङ् बन्धने | ९६७ | १ | २८२ |
| मूत्र प्रस्रवणे | १९०९ | १० | ७०४ |
| मूल रोहणे | १६०२ | १० | ६२५ |
| मूल प्रतिष्ठायाम् | ५२९ | १ | १३६ |
| मूष स्तेये | ६७६ | १ | १६३ |
| मृग अन्वेषणे | १९०० | १० | ७०० |
| मृङ् प्राणत्यागे | १४०३ | ६ | ५३८ |
| मृक्ष सङ्घाते | ६६४ | १ | १६१ |
| मृजू शौचालङ्कारयोः | १८४८ | १० | ६२८ |
| मृजू शुद्धौ | १०६६ | २ | ३६८ |

| धातवः | धा.सं. | गण | पृष्ठाः |
|---|---|---|---|
| मृड सुखने | १३२७ | ६ | ५२६ |
| मृड निमज्जने | १३९५ | ६ | ५३६ |
| मृड क्षोदे | १५१६ | ९ | ६०७ |
| मृण हिंसायाम् | १३३१ | ६ | ५२६ |
| मृद क्षोदे | १५१५ | ९ | ६०६ |
| मृधु उन्दने | ८७४ | १ | २३० |
| मृश आमर्शने | १४२५ | ६ | ५४९ |
| मृष तितिक्षायाम् | ११६४ | ४ | ४२९ |
| मृष तितिक्षायाम् | १८४९ | १० | ६८२ |
| मृषु सेचने सहने च | ७०७ | १ | १६८ |
| मॄ हिंसायाम् | १४९२ | ९ | ५९५ |
| मेङ् प्रणिदाने | ९६१ | १ | २७८ |
| मेडृ उन्मादे | २९३ | १ | ९८ |
| मेदृ मेधाहिंसनयोः | ८६९ | १ | २२९ |
| मेधृ मेधाहिंसनयोः सङ्गमे च | ८७० | १ | २२९ |
| मेपृ गतौ | ३७१ | १ | १११ |
| मेवृ सेवने | ५०५ | १ | १३० |
| म्ना अभ्यासे | ९२९ | १ | २६५ |
| म्रक्ष म्लेच्छने | १६६१ | १० | ६३६ |
| म्रद मर्दने | ७६७ | १ | १८९ |
| म्रुचु गतौ | १९५ | १ | ७९ |
| म्रुञ्चु गतौ | १९३ | १ | ७९ |
| म्लुचु गतौ | १९६ | १ | ७९ |
| म्लुञ्चु गतौ | १९४ | १ | ७९ |
| म्लेच्छ अव्यक्तायां वाचि | १६६२ | १० | ६३७ |
| म्लेच्छ अव्यक्ते शब्दे | २०५ | १ | ८२ |
| म्लेडृ उन्मादे | २९२ | १ | ९८ |
| म्लेवृ सेवने | ५०६ | १ | १३० |
| म्लै हर्षक्षये | ९०४ | १ | २५० |
| **( य )** | | | |
| यक्ष पूजायाम् | १६९२ | १० | ६४२ |
| यज देवपूजासङ्गति- | १००२ | १ | ३१० |

समाप्तोऽयं धातुकोषः



## व्याकरण-ग्रन्थाः

* अनुवाद रत्नाकर । डॉ. रमाकान्त त्रिपाठी
* कौमुदी-कथा-कल्लोलिनी । आचार्य रामशरण शास्त्री
* परमलघुमञ्जुषा । संस्कृत-हिन्दी टीका सहित । आचार्य लोकमणि दाहाल
* प्रबन्धरत्नाकर । डॉ. रमेश चन्द्र शुक्ल
* बृहद्धातुकुसुमाकर ।(सिद्धान्तकौमुदी के सभी धातु-रूपों का संग्रह) पं. हरेकान्त मिश्र
* बृहच्छब्दकुसुमाकरः । पं. हरेकान्त मिश्र
* मुग्धबोध व्याकरणम् । बोपदेव विरचित ।सम्पा. जीवानंद विद्यासागर
* लघुसिन्दान्तकौमदी । महेशसिंह कुशवाह कृत विवेचनात्मक 'माहेश्वरी' हिन्दी व्याख्या-रूपसिद्धि सहित ।
* वाक्यपदीयम्: ब्रह्मकाण्ड । डॉ. शिवशङ्कर अवस्थी
* वाग्विज्ञान (भाषाशास्त्र) । आचार्य सीताराम चतुर्वेदी
* व्याकरणमहाभाष्यम् । 'प्रदीप' 'उद्योत'तथा पायगुण्डे कृत 'छाया' सहित । १-६ भाग सम्पूर्ण
* वैयाकरणभूषणसार । संस्कृत-हिन्दी टीका सहित । डॉ. चन्द्रिका प्रसाद द्विवेदी
* संस्कृत-भाषा । टी. बरो । अनुवादक— डॉ. भोलाशंकर व्यास
* सिद्धान्तकौमुदी । श्रीज्ञानेन्द्रसरस्वतीविरचित तत्त्वबोधिनीव्याख्यासंवलिता, 'सुबोधिनी' टीकासहिता । सम्पादक—श्रीवासुदेवलक्ष्मणशास्त्रीपणशीकर
* सिद्धान्तकौमुदी ।'बालमनोरमा' 'दीपिका' हिन्दी व्याख्या सहित । व्याख्याकार— श्री गोपालदत्त पाण्डेय । कारकान्तः —प्रथम भाग । समासादि द्विरुकान्त- द्वितीय भाग


चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान

३८ यू.ए. जवाहर नगर बंगलो रोड, दिल्ली-११०००७


बृहद्धातुकुसुमाकरः

पं. हरेकान्त मिश्रः

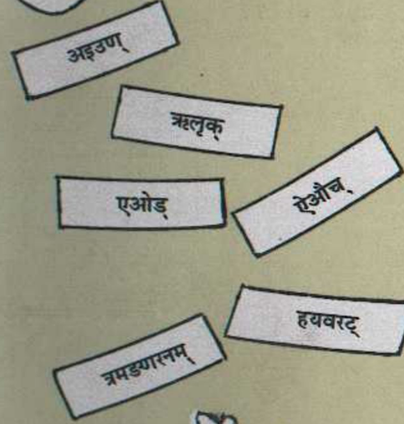



# बृहद्धातुकुसुमाक

टिप्पण्यादिविभूषित-ण्यन्त-सन्नन्त-यङन्त-य

भावकर्म-कृदन्तरूपसहितसार्थसकलधातुरूप






पं. हरेकान्त मिश्रः

दाहाल

ार

री' हिन्दी

हित ।

साद द्विवेदी

वलिता,
कर

बृहद्धातुकुसुमाकरः

पं. हरेकान्त मिश्रः




# बृहद्धातुकुसुमाकरः

टिप्पण्यादिविभूषित-ण्यन्त-सन्नन्त-यङन्त-यङ्लुङन्त-भावकर्म-कृदन्तरूपसहितसार्थसकलधातुरूपाणां सङ्ग्रहः



अइउण्

ऋलृक्

एओङ्

ऐऔच्

हयवरट्

ञमङणनम्



पं. हरेकान्त मिश्रः

॥ श्रीः ॥

व्रजजीवन प्राच्यभारती ग्रन्थमाला
७४

# बृहद्धातुकुसुमाकरः

( टिप्पण्यादिविभूषित-ण्यन्त-सन्नन्त-यङन्त-यङ्लुङन्त-भावकर्म-कृदन्तरूपसहितसार्थसकलधातुरूपाणां सङ्ग्रहः )

सङ्ग्रहकारः सम्पादकश्च
**पं. हरेकान्त मिश्रः**
साहित्याचार्यः, व्याकरणशास्त्री



**चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान**
दिल्ली

प्रकाशक
**चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान**
३८ यू. ए. बंगलो रोड, जवाहरनगर
दिल्ली ११०००७
दूरभाष : २३६३९१



संस्करण १९९९

मूल्य ४००-००

प्रधान वितरक
**चौखम्बा विद्याभवन**
चौक ( बनारस स्टेट बैंक भवन के पीछे )
पो. बा. नं. १०६९, वाराणसी २२१००१
दूरभाष : ३२०४०४

अन्य प्राप्तिस्थान
**चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन**
( भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक तथा वितरक )
के. ३७/११७, गोपालमन्दिर लेन
पो. बा. नं. ११२१, वाराणसी २२१००१
दूरभाष : ३३३४३१

---

लेज़र कम्पोजिंग
**स्क्रिप्शन्स**
क्यू. यू. २२८ ए, पीतमपुरा,
दिल्ली-३४

मुद्रक
**ए. के. लिथोग्राफर**
दिल्ली-३५

# समर्पणम्

न्यायाद्यनेकशास्त्रपरिशीलनविशदीकृतचेतसां विद्याविनोदवादकथाप्राप्त-
दाक्ष्याणां शाम्भवीचरणरजोभिर्निर्मलान्तःकरणानां परमोपासकानां
स्मेराननानां श्रीकामेश्वरसिंहदरभङ्गासंस्कृतविश्वविद्यालयीय-
दर्शनविभागाध्यक्षपदभाजामनेकानेकोपाधिभिर्विभूषितानां
श्रद्धेयचरणानां श्रीगुरुवर्याणां तत्रभवतां
डॉ. कीर्त्यानन्दझामहाभागानां
करकमलयोः सादरं समर्पणम्।

समर्पकः
**हरेकान्तमिश्रः**

# शुभाशंसनम्

अकारणकरुणाकारिणो जगज्जन्मादिकारणस्य भगवतो विश्वनाथस्याकम्पानुकम्पया ममान्तेवासी श्रीहरेकान्तमिश्रः श्रमक्रमाभ्यां व्याकरणशास्त्रं साहित्यञ्च सम्यगधीत्य बृहद्धातुकुसुमाकरनामकं महाग्रन्थं प्रणिनाय। अस्मिंश्च महाग्रन्थे सर्वविधोपात्तप्रत्ययानां सर्वेषां धातूनामेकत्रैव रूपाणि सन्तीत्यवगत्य न जाने मयि कीदृश आनन्दस्योद्रेकोऽजायत। अस्तु, लोके प्रतीतिव्यवहारनिर्वाहायैव वाक्यं प्रयुङ्क्ते जन इति निश्चप्रचम्। वाक्यार्थबोधसम्पादनायैव महाविदुषा गदाधरभट्टाचार्येण प्रत्ययार्थविचारपरोऽतिप्रसिद्धो व्युत्पत्तिवादः प्रकृत्यर्थविचारपरः शक्तिवादश्च व्यरचि। नागेशोऽपि शब्दशास्त्रस्य कीदृशो विद्वान् आसीदिति शास्त्रैकविचारदक्षाः पक्षपातहीनाः पण्डितप्रवरा जानन्त्येव। एवञ्च वाक्यं कीदृशं भवेदिति यदा विचारपथमायाति तदा सुप्तिङन्तचयो वाक्यमिति स्मृतिगोचरो भवति। अतश्च वाक्यप्रयोगे यदि तिङन्तस्य प्रयोगो न भवति, यथाऽधुना दृश्यते तदा तद्वाक्यं चमत्कृत्याधायकं पाण्डित्यपूर्णं पण्डितरूपैर्न गण्यते। सनादिप्रत्ययवशान्निष्पन्नानि रूपाणि येषां झटिति संस्मरणारूढानि न भवन्ति तेषां कृतेऽन्येषामपि च्छात्राणां कृते ग्रन्थोऽयं महानुपकारको भविष्यतीत्यहं विश्वसिमि। अन्ते च भगवन्तं श्रीविश्वनाथमहं प्रार्थये यदस्य महाग्रन्थलेखकस्य सकलविघ्नोपशान्तिपूर्वकसर्वविधमङ्गलं जायतामिति।


शुभाशंसकः

**डॉ॰ कीर्त्यानन्द झा**

स्नातकोत्तरदर्शनविभागाध्यक्षः

कामेश्वरसिंह-दरभङ्गा-संस्कृत-विश्वविद्यालयः

कामेश्वरनगरम्, दरभङ्गा

अभिनवपाणिनिरूपेण सम्मतानां तत्रभवतां श्रीमतां रामप्रसादत्रिपाठीमहाभागानां

**शुभाशिषः**

श्रीमता विद्वद्वर्येण हरेकान्तमिश्रेण सङ्गृहीतो बृहद्धातुकुसुमाकरः स्थालीपुलकन्यायेन मयावलोकितः। महता श्रमेण सम्पादितोऽयं ग्रन्थः स्वपरम्परायां महनीयं स्थानमाधत्ते। अत्र हि प्रायः सर्वेषामेव धातुपाठपठितधातूनां तिङन्त-ण्यन्त-सन्नन्तादिकृदन्तरूपाणि सम्यगुपस्थापितानि सन्ति। येन धातुतद्रूपपरम्पराज्ञानाय महत्सौकर्यं सञ्जायते। अनेन देववाणीनिषेवीवर्गोऽवश्यमेव लाभान्वितो भवतीति शम्।

**आचार्यः त्रिपाठी रामप्रसादः**

सं. सं. वि. वि. वाराणसी



श्रमक्रमानधीतशब्दविद्याप्रपञ्चा अपि संस्कृतिसनाथदिवौकोवाचि स्वमाशयं प्रचिकाशयिषवो लोका उच्चावचानि धातुरूपाणि चिकीर्षेयुरिति सम्भावना विषयीकृत्य तानुपकर्त्तुं मिथिलावयवजरिसों निवासि पं. हरेकान्तशर्मणा बह्वायस्य, सन्दृब्धं बृहद्धातुकुसुमाकरं नाम ग्रन्थं विदुषां दृष्टिपातेन पूतं लेखकमहोदयप्रयासं चातनुं फलेग्रहिं कामयते।

विद्यावाचस्पतिः

**रामचन्द्रमिश्रः**

का. सिं. द. सं. वि. दरभङ्गा



अस्मत्सुहृद्देवभाषाविलासविचक्षणः श्रीहरेकान्तमिश्रः बृहद्धातुकुसुमाकराख्यं ग्रन्थं प्रणैषीदिति विषयः मे महत्प्रमोदाय। अत्र हि यानि धातुरूपाण्युपस्थापितानि स्थाने स्थाने विषमस्थलटिप्पणीभिश्च समलङ्कृतानि तानि धातुरूपावबोधाय पर्याप्तसहायकानि। अनेन संस्कृतवाङ्मयभित्तिनिर्माणे एकेष्टका समुपस्थापितेति न कस्यापि द्वैमत्याय। सुविचक्षणोऽयं ग्रन्थकृद् साधुवादार्ह इति।

आचार्यः लोकमणिर्दाहालः

वाराणसी



# प्राक्कथनम्

संस्कृतभाषां व्युत्पित्सूनां व्युत्पत्तिबोधाय व्याकरणमेव परं बीजम्। उक्तञ्चाभियुक्तैः "मुखं व्याकरणम्, कणादं पाणिनीयञ्च सर्वशास्त्रोपकारकम्" इति। व्याकरणशास्त्रे प्रायेण भागद्वयं दरीदृश्यते। प्रकृतिनिरूपणं प्रत्ययनिरूपणञ्चेति। प्रकृतिप्रत्ययार्थज्ञानमन्तरेण सर्वाः खलु विद्याः नैष्फल्यमेवाधिगच्छन्ति। तत्रापि धातुप्रतिपाद्यक्रियाज्ञानं सर्वाधिक्येनावश्यकमस्ति। उक्तञ्च शब्दशक्तिप्रकाशिकायां जगदीशतर्कालङ्कारैः— "क्रियारहितवाक्यं नास्ति" इति। अतश्च धातुरूपज्ञानं सर्वेषां विशेषतः सुकुमारमतीनामतीव आवश्यकम्। परिशीलितव्याकरणागमानामपि सुधियां चेतसि सर्वदा सर्वसूत्राणामनिट्कत्वादिधातुधर्माणाञ्च स्फूर्तिर्नैवोपपद्यते, अस्फुरत्यपि च सूत्रे धातूनामनिट्कत्वादिधर्मे विद्वद्भिरपि 'अस्य धातोरस्मिन् प्रत्यये परे इदं रूपमिति कथङ्कारं ज्ञायेत' इति जिज्ञासोदैत्येव। अतश्च सूत्रानुसारेण परिनिष्ठितानि पाणिनिनिर्दिष्टसकलधातूनां कृदन्तसहितानि रूपाणि अस्मिन् ग्रन्थे प्रदर्शितानि, तानि च दृष्ट्वा यस्य धातोर्यस्मिन् प्रत्यये परे यथारूपं भवतीत्यनायासेन विज्ञातुं शक्यते। ततश्च उपसर्गयोगेन अर्थविशेषोद्बोधकरूपञ्च प्रदर्शितम्।

सिद्धान्तकौमुद्यनुसारेणात्र लडादिषु रूपं प्रदर्शितम्। कृदन्तानान्तु प्रसिद्धानामेव धातूनां रूपं प्रदर्शितम्। विपुलप्रमाणान्यनुसन्धाय प्राच्यनव्यग्रन्थकाराणामाशयमपि यथामति निरीक्ष्य महता परिशोधितमार्गेण परिश्रमेण च टिप्पणादिकं लिखितम्।

सकर्मकाकर्मकत्वमधिकृत्य ग्रन्थेऽस्मिन्ननुमोदितप्रकारोऽपि प्रदर्शितः।

'धातोरर्थान्तरे वृत्तेः धात्वोपसङ्ग्रहात्। प्रसिद्धेरविवक्षातः कर्मणोऽकर्मिका क्रिया'।

इति वाक्पदीयोक्तप्रदर्शितदिशा सकर्मकस्यैव धातोरर्थान्तरे वर्तमानात् धात्वर्थे कर्मण उपसङ्ग्रहात्, प्रसिद्धेः कर्मणः अविवक्षातश्चाकर्मकत्वमुक्तमनुसृत्य तत्र तत्र धात्वर्थाः लोके तेषां प्रयोगाणामालोडनपुरस्सरं ग्रन्थेऽस्मिन् प्रतिपादिताः। एवं "फलव्यापारयोरेकनिष्ठतायामकर्मकः" (वा.प.) इत्युक्तमप्यालोच्य सकर्मकत्वमकर्मकत्वञ्च निरूपितम्।

भाषानामैकाधिकसुप्तिङ्चयो वाक्यात्मा। तत्र वाक्येषु सुबन्तानां बाहुल्येन तत्पदज्ञानमेव प्रधानसम्पादनतामर्हति। तथापि तेष्वपि सुबन्तेषु धातुजशब्दानामेवाधिक्यात् प्रथमतो धातुरूपज्ञानं तदर्थज्ञानं तज्जशब्दज्ञानञ्च प्रथमसम्पादनीयम्। तज्ज्ञानोपायभूतेषु सत्स्वपि धातुवृत्त्यादिषु बहुषु ग्रन्थेषु किमर्थमयं प्रयास इति न संशयितव्यम्। ते च महान्तः प्रबन्धाः सकलशास्त्रार्थघटिता निखिलसूत्रोपन्यासयुता महामतिमालिभिरेवाधिगन्तुमलम्। न

तैः स्थूलमतीनां संस्कृतभाषामभ्यस्तां बालानां वा कोऽप्युपयोगः। प्रत्युत तथाभूतकठिनग्रन्थतो रूपज्ञानप्रयतने तत्काठिन्यावलोकनतो वैरस्यमेव सञ्जायेत तन्मनसीत्यवधार्य प्रयासोऽयमङ्गीकृतः। स च प्रयासोऽध्येतॄणामिदानीन्तनानां कियन्तमुपकारभारमादधातीति प्रत्यक्षमेवाग्रिमग्रन्थमवलोकयतामतस्तद्विषये कृतं बहुना लेखनेन।

यद्यपि अन्यस्मिन् ग्रन्थे धातुरूपनिरूपणे सत्यपि, तच्च दिङ्मात्रं विद्यते। यतो हि तत्र तत्र ग्रन्थे न सर्वधातुरूपाणि साकल्येन प्रतिपादितानि सन्त्यतोऽत्र सकलधातूनां प्रायशः कृदन्तरूपसहितानि दशलकारेषु सन्नन्त-यङन्त-यङ्लुगन्त-भावकर्म-ण्यन्तानाञ्च रूपाणि प्रदर्शितानि। सूचीनेत्रं विना नयनविहीनपुरुष इव ग्रन्थो विषीदति। अतो ग्रन्थान्तेऽकारादिक्रमेण सकलधातूनां सूचिकाऽपि प्रदर्शिता। एवं तत्र तत्र शास्त्रानुमोदितान् प्रयोगान् प्रवृत्तिनिमित्तानि च परामृश्य लिखितेष्वपि यत्र प्रमादादिवशादन्यथा ग्रहणमापतितं, तादृशस्थलेषु दोषानविगणय्याकारणकरुणाकरैः गुणग्रहणतत्परैर्भाव्यम्।

ग्रन्थेऽस्मिन् या काचिदपि नवीनता सम्भवेदपि चेत्तत्सर्वं ह्यस्माकं गुरुचरणानां डॉ॰ कीर्त्यानन्दझामहाभागानां कृपैव। ग्रन्थस्यास्य प्रणयने तद्विषयकपूर्ववर्तिविचक्षणेभ्योऽस्माभिर्बहु गृहीतम्। अतस्तेभ्यः सादरं कृतज्ञतां ज्ञापयामः। एवञ्च येषां येषां येभ्यो येभ्यो ग्रन्थेभ्यो वस्तु गृहीतं तेभ्यस्तेभ्यो नमो नमः।

एतत्प्रकाशने मयि प्रोत्साहवर्द्धकेभ्यः श्रीचौखम्बासंस्कृतप्रतिष्ठानसञ्चालकेभ्यो मुद्रणालयाध्यक्षेभ्यः सर्वेभ्यः श्रद्धेयेभ्यश्च धन्यवादान् समर्पयति।

विदुषामनुचरः
**हरेकान्तमिश्रः**

ग्राम, पो॰ जरिसो
दरभङ्गा ( बिहार )
१०-३-९४ ई.

# पूर्वपीठिका

**'भूवादयो धातवः'** (१।३।१)—क्रियावाचिनो भ्वादयो धातुसंज्ञाः स्युः। धातवो दशगणतया विभज्यन्ते। ते च—(१) भ्वादयः शब्विकरणाः। (२) अदादयो लुग्विकरणाः। (३) जुहोत्यादयः श्लुविकरणाः। (४) दिवादयः श्यन्विकरणाः। (५) स्वादयः श्नुविकरणाः। (६) तुदादयः शविकरणाः। (७) रुदादयः श्नम्विकरणाः। (८) तनादयः उविकरणाः। (९) क्र्यादयः श्नाविकरणाः। (१०) चुरादयः स्वार्थिकणिज्विकरणा इति।

प्रायः सर्वेभ्यो धातुभ्यो दश लकारा भवन्ति। लट्। लिट्। लुट्। लृट्। लेट्। लोट्। लङ्। लिङ्। लुङ्। लृङ्। इति दश लकाराः। एषु पञ्चमो लकारश्छन्दोमात्रगोचरः। अतोऽत्र स न प्रदर्श्यते। विध्याशीर्भेदेन लिङ् द्विविधः। तथा च लोकेऽपि दश लकाराः।

**'लः कर्मणि च भावे चाकर्मकेभ्यः'** (३।४।६९)—लकाराः सकर्मकेभ्यो धातुभ्यः कर्मणि कर्तरि च स्युरकर्मकेभ्यो भावे कर्तरि च लडादीनां लकारा इति प्राचां संज्ञाः। ताभिरिहापि व्यवहारः।

**'तिप् तस् झि सिप् थस् थ मिब्वस् मस् तातांझ थासाथांध्वम् इड्वहिमहिङ्'** (३।४।७८)— एतेऽष्टादश लादेशाः स्युः। एतेषां 'तिङ्' इति प्रत्याहारलब्धा संज्ञा।

**'तङानावात्मनेपदम्'** (१।४।१००)—तङ्प्रत्याहारभूताः त आतां झ, थास् आथाम् ध्वम्, इट् वहि महिङ् इति द्वितीयास्त्रयस्त्रिका लादेशाः प्रत्ययाः, शानच्-कानचौ च आत्मनेपदसंज्ञा स्युः।

**'लः परस्मैपदम्'** (१।४।९९)—आत्मनेपदभिन्नाः तिप् तस् झि, सिप् थस् थ, मिप् वस् मस् इति प्रथमे त्रयस्त्रिका लादेशाः परस्मैपदसंज्ञाः स्युः।

**'अनुदात्तङित आत्मनेपदम्'** (१।३।१२)—अनुदात्तेत उपदेशे यो ङित् तदन्ताच्च धातोर्लस्य स्थाने आत्मनेपदप्रत्ययाः स्युः। 'एध् वृद्धौ' अनुदात्तेत्। 'डीङ् विहायसा गतौ' ङित्।

**'स्वरितञितः कर्त्रभिप्राये क्रियाफले'** (१।३।७२)—स्वरितेतो ञितश्च धातोरात्मनेपदप्रत्ययाः स्युः क्रियाफले कर्तृगामिनि सति। अन्यगामिनि तु परस्मैपदप्रत्यया इत्यर्थः। 'डुपचष् पाके' स्वरितेत्। 'वेञ् तन्तुसन्ताने' ञित्। इत्यादय उभयपदिनः।

**'शेषात् कर्तरि परस्मैपदम्'** (१ ।३ ।७८)—आत्मनेपदनिमित्तहीनाद्धातोः कर्तरि परस्मैपदं स्यात् ।

**'तिङस्त्रीणि त्रीणि प्रथममध्यमोत्तमाः'** (१ ।४ ।१०१)—तिङ उभयोः पदयोः त्रयस्त्रिकाः क्रमात् प्रथमपुरुषमध्यमपुरुषोत्तमपुरुषसंज्ञाः स्युः ।

**'तान्येकवचनद्विवचनबहुवचनान्येकशः'** (१ ।४ ।१०२)—लब्ध-प्रथमपुरुषादिसंज्ञानि तिङस्त्रीणि त्रीणि वचनानि प्रत्येकमेकवचनादिसंज्ञानि स्युः ।

**'युष्मद्युपपदे समानाधिकरणे स्थानिन्यपि मध्यमः'** (१ ।४ ।१०५)—तिङ्वाच्यकारकवाचिनि युष्मदि प्रयुज्यमानेऽप्रयुज्यमाने च मध्यमपुरुषः स्यात् । त्वं भवसि । भवसि इत्येव वा ।

**'अस्मद्युत्तमः'** (१ ।४ ।१०७)—तथाभूतेऽस्मदि उत्तमपुरुषः स्यात् । अहं भवामि । भवामि इत्येव वा ।

**'शेषे प्रथमः'** (१ ।४ ।१०८)—मध्यमोत्तमयोरविषये प्रथमपुरुषः स्यात् । स भवति । केवलं भवति इति वा ।

**'तिङ्शित् सार्वधातुकम्'** (३ ।४ ।११३)—तिङः शितश्च धात्वधिकारोक्ता एतत्संज्ञाः स्युः ।

**'कर्तरि शप्'** (३ ।१ ।६८)—कर्त्रर्थे सार्वधातुके प्रत्यये परे धातुभ्यः शप् स्यात् । शपावितौ । 'अ' मात्रं शिष्यते ।

**'यस्मात्प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम्'** (१ ।४ ।१३)—यः प्रत्ययो यस्मात्क्रियते तदादि शब्दस्वरूपं तस्मिन् प्रत्यये परेऽङ्गसंज्ञं स्यात् । भवामि भविष्यामि इत्यादौ केवलो धातुः, विकरणप्रत्ययविशिष्टा 'भव' इत्यादयश्च अङ्गसंज्ञाः स्युः ।

**'सार्वधातुकार्धधातुकयोः'** (७ ।३ ।८४)—अनयोः परयोः इगन्ताङ्गस्य गुणः स्यात् । 'नी'—नयति । नेष्यति ।

**'आर्धधातुकं शेषः'** (३ ।४ ।११४)—तिङ्शिद्भ्योऽन्यो धातोरिति विहितः प्रत्ययः आर्धधातुकसंज्ञः स्यात् ।

**'पुगन्तलघूपधस्य च'** (७ ।३ ।८६)—पुगन्तस्य लघूपधस्य चाङ्गस्येको गुणः स्यात् सार्वधातुकार्धधातुकयोः । 'बुध्'—बोधति । बोधिष्यति ।

**'अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा'** (१ ।१ ।६५)—अन्त्याद् वर्णात् पूर्वो वर्णः उपधासंज्ञः स्यात् । 'बुध्' इत्यत्र उकार उपधा ।

अत्र प्रथमं विकरणप्रत्ययार्हाश्चत्वारो लृकाराः ततस्तदनर्हाः षट् इत्येवं क्रमेण दश लकाराः कथ्यन्ते ।

## परस्मैपदे

### (१) लटः[१] परिनिष्ठिताः प्रत्ययाः

| | एकवचने | द्विवचने | बहुवचने |
|---|---|---|---|
| प्रथमपुरुषे | ति (तिप्)[२] | तस् | अन्ति[३] (झि) |
| मध्यमपुरुषे | सि (सिप्) | थस् | थ |
| उत्तमपुरुषे | मि (मिप्) | वस् | मस् |

### (२) लिटः[४] प्रत्ययाः

**प्र.** अ[५] (णल्), अतुस्, उस्। **म.** थ[६] (थल्), अथुस्, अ। **उ.** अ (णल्), व, म।

१ 'वर्तमाने लट्' (३।२।१२३) वर्तमानक्रियावृत्तेर्धातोर्लट् स्यात्। अटावितौ।

२ तिप् सिप् मिप् इत्येते त्रयः प्रत्ययाः पितः। तत्फलं तु द्वेष्टि द्वेक्षि द्वेष्मि द्वेष्टु इत्यादौ गुणः।

३ 'झोऽन्तः' (७।१।३) प्रत्ययावयवस्य झस्य 'अन्त' इत्यादेशः स्यात्।

४ 'परोक्षे लिट्' (३।२।११५) भूतानद्यतनपरोक्षार्थवृत्तेर्धातोर्लिट् स्यात्। प्रयोक्तुरिन्द्रियगोचरत्वं परोक्षत्वम्। 'लिट् च' (३।४।१२५) लिडादेशस्तिङार्धधातुकसंज्ञ एव स्यान्न तु सार्वधातुकसंज्ञः।

५ 'परस्मैपदानां णलतुसुस्थलथुसणल्वमाः' (३।४।८२) लिटस्तिबादीनां नवानां णल् अतुस् उस्, थल् अथुस् अ, णल् व म इति नव आदेशाः स्युः।

६ 'आर्धधातुकस्येड् वलादेः' (७।२।३५) वलादेरार्धधातुकस्य इडागमः स्यात्। थ-व-म-स्यप्रभृतीनां प्रत्ययानां वलादित्वादिडागमे। इथ इव इम इस्य इत्यादयो भवन्ति। एतच्च सेड्धातुभ्य एव। 'एकाच उपदेशेऽनुदात्तात्' (७।२।१०) उपदेशे यो धातुरेकाजनुदात्तश्च ततः परस्य वलादेरार्धधातुकस्य इण्न स्यात्।

**सेडनिटो सङ्ग्रहः –**

ऊदृदन्तैर्यौतिरुक्ष्णुशीङ्स्नुनुक्षुश्विडीङ्श्रिभिः।
वृङ्वृञ्भ्यां च विनैकाचोऽजन्तेषु निहिताः स्मृताः॥ १ ॥

ऊकारान्तान् ऋकारान्तान् यु रु क्ष्णु शीङ् स्नु नु क्षु श्वि डीङ् श्रिञ् वृङ् वृञ् इत्येतांश्च विना अन्ये अजन्ता एकाचो धातवः निहिताः= अनुदात्ताः। तस्मात्ते अनिटः। ऊकारान्ताः ऋकारान्ताः युप्रभृतिवृञन्ताश्च धातवः उदात्ताः। तस्मात्ते सेटः।

**हलन्तेषु अनुदात्तानाह–**

शक्लृ-पच्-मुचि-रिच्-वच्-विच्-सिच्-प्रच्छि-त्यज्-निजिर्-भजः।
भञ्ज्-भुज्-भ्रस्ज्-मस्जि-यज्-युज्-रञ्ज्-रुज्-विजिर्-स्वञ्जि-सञ्ज्-सृजः॥ २ ॥
अद्-क्षुद्-खिद्-छिद्-तुदि-नुदः-पद्य-भिद्-विद्यतिर्-विनद्।
शद्-सदी-स्विद्यतिः-स्कन्दि-हदी-क्रुध्-क्षुधि-बुद्ध्यती॥ ३ ॥
बन्धिर्-युधि-रुधी-राधि-व्यध्-शुधः-साधि-सिद्ध्यती।
मन्थ-हन्नाप्-क्षिप्-छुपि-तप्-तिप्-तृप्यति-दृप्यति॥ ४ ॥
लिप्-लुप्-वप्-शप्-स्वप्-सृपि-यम्-रभ्-लभ्-गम्-नम्-यमो रमिः।

लिटि प्रत्ययाङ्गपरिष्करणं तिसृभिः विधाभिः सम्भवति। तत्र प्रथमा—धातोः[१] द्विवचनेन।

---

क्रुशि-दंशि-दिशी-दृश्-मृश्-रिश्-रुश्-लिश्-विश्-स्पृशः कृषिः॥ ५॥
त्विष्-तुष्-द्विष्-दुष्-पुष्य-पिष्-विष्-शिष्-शुष्-श्लिष्यतयो-र्घसः।
वसति-र्दह्-दिहि-दुहो-नह्-मिह्-रुह्-लिह्-वहिस्तथा॥ ६॥

१ गद् + णल् इति स्थिते—'लिटि धातोरनभ्यासस्य' (६।१।८) लिटि अभ्यासभिन्नस्य धात्ववयवस्य प्रथमस्य एकाचः द्वे स्तः। आदिभूतादचः परस्य तु द्वितीयस्य गद् गद् अ भवति। 'पूर्वोऽभ्यासः' (६।१।४) यत्र ये द्वे विहिते तयोः पूर्वोऽभ्याससंज्ञः स्यात्। अनेन प्रथमस्य 'गद्' इत्यस्य 'अभ्यास' इति संज्ञा। 'हलादिः शेषः' (७।४।६०) अभ्यासस्य आदिर्हल् शिष्यते अन्ये हलो लुप्यन्ते। ग गद् इति भवति। 'शर्पूर्वाः खयः' (७।४।६१) अभ्यासस्य शर्पूवाः खयः शिष्यन्ते। 'हलादिः शेषः' (७।४।६०) इत्यस्यापवादः। स्पर्ध् = स्पर्ध् स्पर्ध् = पस्पर्ध। 'अभ्यासे चर्च' (८।४।५४) अभ्यासे झलां चरः स्युः जशश्च। झलां जशः, खयां चर इत्यादिविवेक आन्तरतम्यात्। भण् भण् = बभण्। 'कुहोश्चुः' (७।४।६२) अभ्यासस्थकवर्गहकारयोश्चवर्गादेशः स्यात्। ग गद् = जगद्। हस् हस् = हहस् = जहस्। 'ह्रस्वः' (७।४।५९) अभ्यासस्याचो ह्रस्वः स्यात्। कूज् कूज् = कू कूज् = कुकूज् = चुकूज् + अ = चुकूज। 'एच इग्घ्रस्वादेशे' (१।१।४८) आदिश्यमानेषु ह्रस्वेषु मध्ये एचः इगेव स्यात्। वेष्ट्—वेष्ट् वेष्ट् = वे वेष्ट् = विवेष्ट् + ए = विवेष्टे। 'अत उपधायाः' (७।२।११६) उपधाया अतो वृद्धिः स्यात् ञिति णिति च प्रत्यये परे। जगद् + (णल्)अ इत्यत्र णलो णित्वात् उपधाभूतस्य गकारोत्तराकारस्य वृद्धौ 'जगाद' इति रूपम्। 'णलुत्तमो वा' (७।१।९१) उत्तमपुरुषैकवचनः णल् प्रत्ययो वा णित् स्यात्। जगाद—जगद। 'अत आदेः' (७।४।७०) अभ्यासस्य आतेरतो दीर्घः स्यात्। अत् + अ इति स्थिते, अत् अत् = अ अत् = आ अत् = सवर्णदीर्घे आत् + अ = आत। 'तस्मान्नुड् द्विहलः' (७।४।७१) द्विहलो धातोर्दीर्घीभूतादकारात्परस्य नुट् स्यात्। अर्द् = अर्द् अर्द् = अ अर्द् = आ अर्द् = आ न् अर्द् + अ = आनर्द।

अनुदात्ता हलन्तेषु धातवो द्व्यधिकं शतम्।
(एतद् द्व्यधिकशतादन्ये हलता धातवः सेटः)

धातुष्वपि कश्चिद् विशेषमाह—'कृसृभृवृस्तुद्रुस्रुश्रुवो लिटि' (७।२।१३) एभ्यो लिट इण्न स्यात्। कादीनां चतुर्णां ग्रहणं नियमार्थम्। प्रकृत्याश्रयः प्रत्ययाश्रयो वा यावानिण्निषेधः स लिटि चेत्तर्हि क्रादिभ्य एव। नान्येभ्यः। स्तुद्रुस्रुश्रुवां ग्रहणं थलि भारद्वाजनियमप्रापितस्य वमादिषु क्रादिनियमप्रापितस्य चेटो निषेधार्थम्। 'अचस्तास्वत्थल्यनिटो नित्यम्' (७।२।६१) उपदेशेऽजन्तो यो धातुस्तासौ नित्यानिट् ततः परस्य थल इण्न स्यात्। 'उपदेशेऽत्वतः' (७।२।६२) उपदेशेऽकारवतस्तासौ नित्यानिटः परस्य थल इण्न स्यात्। 'ऋतो भारद्वाजस्य' (७।२।६३)। तासौ नित्यानिटः ऋदन्तादेव थलो नेट् भारद्वाजस्य मतेन। तेन अन्यस्य स्यादेव।

अयमत्र सङ्ग्रहः —
अजन्तोऽकारवान् वा यस्तास्यनिट् थलि वेडयम्।
ऋदन्त ईदृङ् नित्यानिट् क्राद्यन्यो लिटि सेड् भवेत्॥

द्वितीया— एत्वाभ्यास-लोपाभ्याम्।[१] तृतीया—आम्[२] प्रत्ययकृभ्वस्त्यनुप्रयोगाभ्याम्।

## (३) लुटः[३] प्रत्ययाः

प्र. ता।[४] तारौ।[५] तारः। म. तासि।[६] तास्थः। तास्थ।

उ. तास्मि। तास्वः। तास्मः।

---

१ लिटि द्वितीया विधा—**'अत एकहल्मध्येऽनादेशादेर्लिटि'** (६।४।१२०) लिण्निमित्तादेशादिकं न भवति यदङ्गं तदवयवस्य असंयुक्तहल्मध्यस्थस्य अकारस्य एकारः स्यात् अभ्यासलोपश्च किति लिटि। 'असंयोगाल्लिट् कित्' (१।२।५) असंयोगात् परोऽपि लिट् कित् स्यात्। नद् = नेदतुः। नेदुः। ननाद इत्यत्र तिबादेशस्य णलः पित्वात् कित्त्वाभावात् एत्वाभ्यासलोपौ न स्तः। 'थलि च सेटि' (६।४।१२१) पिबादेशथलः पित्वेऽपि एत्वाभ्यासलोपौ भवतः। नेदिथ। लिण्निमित्तादेशादित्वात् चकणतुः इत्यत्र एत्वाभ्यासलोपौ न स्तः। ततर्दतुरित्यत्र संयुक्तहल्मध्यस्थत्वादकारस्य एत्वाभ्यासलोपौ च। आत्मनेपदे लिटि सर्वेषामपि प्रत्ययानामपित्त्वात् सर्वत्र एत्वाभ्यासलोपौ। देधे। देधाते। देधिरे।

२ लिटि तृतीया विधा—**'कास्प्रत्ययादाममन्त्रे लिटि'** (३।१।३५) 'कासृ' धातोः अनेकाच्कधातोश्च आम् स्याल्लिटि।'इजादेश्च गुरुमतोऽनृच्छः' (३।१।३६) इजादिर्यो धातुर्गुरुमान् ऋच्छत्यन्यः तत आम् स्याल्लिटि। 'दयायासश्च' (३।१।३७) दय् अय् आस् एभ्यः आम् स्याल्लिटि। उक्ष् + णल् इति स्थिते, उक्ष् आम् अ इति भवति। 'कृञ्चानुप्रयुज्यते लिटि' (३।१।४०) आमन्ताल्लिट्पराः कृभ्वस्तयोऽनुप्रयुज्यन्ते। उक्ष् आम् कृ अ इति भवति। अत्र अनुप्रयुज्यमानात् कृधातोर्लिटि परे द्वित्वादिकं भवति। 'आम्-प्रत्ययवत् कृञोऽनुप्रयोगस्य' (१।३।६३) आम् प्रकृत्या तुल्यमनुप्रयुज्यमानात् कृञोऽप्यात्मनेपदं स्यात्। प्रकृते आम् प्रकृतिकस्य उक्षधातोः परस्मैपदित्वात् कृञोऽपि परस्मैपदमेव भवति। कृधातोर्द्वित्वे कृ कृ। 'उरत्' (७।४।६६) अभ्यासकृवर्णस्य अत् स्यात् प्रत्यये परे। क कृ। 'कुहोश्चुः' इति चुत्वम्। च कृ। उपधावृद्धिः। चकार् + अ = चकार। उक्षाम् + चकार = उक्षाञ्चकार। एवं उक्षाम्बभूव। उक्षामास। अनुप्रयोग - सामर्थ्यात् अस्तेर्भूभावो न। णिजन्ताः सन्नन्ताः यङन्ता इत्यादयः अनेकाच्का धातवः।

३ 'अनद्यतने लुट्' (३।३।१५) भविष्यत्यनद्यतनेऽर्थे धातोर्लुट् स्यात्।

४ 'स्यतासी लृलुटोः' (३।१।३३) धातोः लङ्लृटोः परतः 'स्य' प्रत्ययः स्यात्। लुटि परतः 'तास्' प्रत्ययः स्यात्। 'जि-जये' + लुडादेशतिप्रत्यये गुणे च, जे + तास् + ति इति भवति। 'लुटः प्रथमस्य डारौरसः' (२।४।८५) लुटः प्रथमपुरुषप्रत्ययानां ति तस् अन्ति इति त्रयाणां डा रौ रस् इति त्रयः आदेशाः क्रमात् स्युः। जे तास् डा इति जाते, डादेशस्य डित्त्वसामर्थ्यादभस्यापि टेर्लोपः। तास् इत्यत्र टिभूतस्य 'आस्' इत्यस्य लोपे जे त् + आ = जेता इति भवति।

५ तास् + रौ इति स्थिते 'रि च' (७।४।५१) तासेरस्तेश्च लोपः स्यात् रादौ प्रत्यये परे। इति 'स्' इत्यस्य लोपे तारौ इति भवति।

६ 'तासस्त्योर्लोपः' (७।४।५०) तासेरस्तेश्च लोपः स्यात् सादौ प्रत्यये परे।

## (४) लृटः[१] प्रत्ययाः

प्र. स्यति।[२] स्यतः। स्यन्ति। म. स्यसि। स्यथः। स्यथ।

उ. स्यामि।[३] स्यावः। स्यामः।

## (५) लोटः[४] प्रत्ययाः

प्र. तु[५]–तात्।[६] ताम्।[७] अन्तु। म. हि[८]–तात्। तम्। त। उ. आनि[९]। आव। आम।

## (६) लङः[१०] प्रत्ययाः

प्र. त्।[११] ताम्। अन्। म. स्। तम्। त। उ. म्। व। म।

---

१ 'लृट् शेषे च' (३।३।१३) भविष्यदर्थाद्धातोर्लृट् स्यात् क्रियार्थायां क्रियायां सत्यामसत्यां च।

२ 'स्यतासी लृलुटोः' (३।१।३३) इति 'स्य' प्रत्ययः।

३ स्य + मि इत्यत्र 'अतो दीर्घो यञि' (६।३।१०१) अतोऽङ्गस्य दीर्घः स्यात् यञादौ सार्वधातुके परे। इति दीर्घे 'स्यामि' इत्यादि।

४ 'लोट् च' (३।३।१६२) विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्टसम्प्रश्नप्रार्थनारूपेष्वर्थेषु वाच्येषु द्योत्येषु वा लोट् स्यात्। विधिः = भृत्यादेः कार्येषु प्रवर्तनम्। निमन्त्रणम् = आवश्यके श्राद्धभोजनादौ दोहित्रादेः प्रवर्तनम्। आमन्त्रणम् = यथेच्छं क्रियतामित्यभ्यनूज्ञानम्। अधीष्टः = सत्कारपूर्वको व्यापारः। सम्प्रश्नः = इदं कार्यं न वा? इति विचार्य निर्धारणम्। प्रार्थनम् = याच्ञा।

५ 'एरुः' (३।४।८६) लोट इकारस्य उः स्यात्।

६ 'तुह्योस्तातङाशिष्यन्यतरस्याम्' (७।१।३५) आशिषि तुह्योस्तातङ् वा स्यात्। 'आशिषि लिङ्लोटौ' (३।३।१७३) एतौ आशिष्यपि भवतः।

७ 'लोटो लङ्वत्' (३।४।८५) लोटो लङ् इव कार्यं स्यात्। 'तस्थस्थमिपां ताम्-तम्-तामः' (३।४।१०१) ङितो लकारस्य आदेशभूतानां तस् थस् थ मिप् इत्येषां चतुर्णां ताम् तम् त अम् इत्यादेशाः स्युः। लङ् लिङ् लुङ् लृङ् एते ङितो लकाराः।

८ 'सेर्ह्यपिच्च' (३।४।८७) लोटः सेः हिः स्यात्। स अपिच्च भवति। अपित् फलं तु—'सार्वधातुकमपित्' (१।२।४) अपित् सार्वधातुक ङिद्वत् स्यात्। 'क्ङिति च' (१।१।५) गित् कित्ङिन्निमित्ते इग्लक्षणे गुणवृद्धी न स्तः। इति स्तुहि इत्यादौ गुणनिषेधः।

९ 'मेर्निः' (३।४।८९) लोटो मेः निः स्यात्। 'आडुत्तमस्य पिच्च' (३।४।९२) लोटः उत्तमपुरुषप्रत्ययानाम् आडागमः स्यात्। सः पिच्च भवति। पित्त्वफलं तु—द्वेषाणि द्वेषाव द्वेषाम इत्यत्र गुणः।

१० 'अनद्यतने लङ्' (३।२।१११) अनद्यतनभूतार्थवृत्तेर्धातोर्लङ् स्यात्। अतीतरात्रेरन्त्ययामेन आगामिरात्रेराद्ययामेन च सहितो दिवसः अद्यतनः। तद्भिन्नोऽनद्यतनः।

११ 'इतश्च' (३।४।१००) ङितो लस्य परस्मैपदमिकारान्तं यत्तदन्तस्य लोपः स्यात्। 'ति' इत्यत्र अन्तस्य इकारस्य लोपे 'त्' इति भवति।

## (७) विधिलिङः[१] प्रत्ययाः

प्र. यात्।[२] याताम्। युस्।[३] म. यास्। यातम्। यात। उ. याम्। याव। याम।

## (८) आशीर्लिङः[४] प्रत्ययाः

प्र. यात्।[५] यास्ताम्।[६] यासुः। म. यास्। यास्तम्। यास्त। उ. यासम्। यास्व। यास्म।

## (९) परस्मैपदे लुङः[७] प्रत्ययाः सप्तविधाः

तासु प्रथमा विधा—सिचो लोपेन।[८]

---

१ 'विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्टसम्प्रश्नप्रार्थनेषु लिङ्' (३।३।१६१) विध्यादिष्वर्थेषु लिङ् स्यात्।

२ 'यासुट् परस्मैपदेषूदात्तो ङिच्च' (३।४।१०३) लिङः परस्मैपदानां यासुडागमः स्यात्स चोदात्तो ङिच्च। 'ति' इत्यस्य यासुडागमे यास् ति इति भवति। 'सुट् तिथोः' (३।४।१७) लिङस्तकारथकारयोः सुट् स्यात्। तथा च यास् स् ति इति भवति। 'लिङः सलोपोऽनन्त्यस्य' (७।२।७९) सार्वधातुकलिङोऽनन्त्यस्य सस्य लोपः स्यात्। इति सकारद्वयस्यापि निवृत्तौ या ति इति भवति। ततः 'इतश्च' (३।४।१००) इति इकारलोपे 'यात्' इति भवति।

३ यास् + झि इति स्थिते सलोपे। या + झि इति स्थिते। 'झेर्जुस्' (३।४।१०८)। लिङो झेर्जुस् स्यात्, या + उस् इति जाते 'उस्यपदान्तात्' (६।१।९६) अपदान्तादवर्णादुसि परे पररूपमेकादेशः स्यात्। इति 'आ' इत्यस्य पररूपे युस् इति भवति।

४ 'आशिषि लिङ्लोटौ' (३।३।१७३)।

५ विधिलिङि उक्ते 'यासुट् परस्मैपदेषूदात्तो ङिच्च' (३।४।१०३) 'सुट् तिथोः' इति सूत्रे अत्र ग्राह्ये। यास् स् ति इति स्थिते। 'लिङाशिषि' (३।४।११६) आशिषि लिङस्तिङार्धधातुकसंज्ञः स्यात्। इति आशीर्लिङः आर्धधातुकत्वात् 'लिङः सलोप—' इति न प्रवर्तते। किन्तु 'स्कोः संयोगाद्योरन्ते च' (८।२।२९) पदान्ते झलि च परे यः संयोगः तदाद्योः सकारककारयोर्लोपः स्यात्। इति प्रथमं द्वितीयस्य सस्य, ततः प्रथमस्य च लोपः स्यात्। 'याति' इति जाते। 'इतश्च' इति इकारलोपे रूपम्।

६ तसस्तामादेशे यास् स् ताम् इति जाते 'स्कोरिति—' यासुटः सकारस्य लोपे रूपम्।

७ 'लुङ्' (३।२।११०) भूतार्थवृत्तेर्धातोर्लुङ् स्यात्।

८ 'च्लि लुङि' (३।१।४३) लुङि परे धातोः शबादीनां स्थाने 'च्लि' प्रत्ययः स्यात्। 'च्लेः सिच्' (३।१।४४) स्था + लुङ् = स्था च्लि लुङ् = स्था सिच् लुङ्। 'गातिस्थाघुपाभूभ्यः सिचः परस्मैपदेषु' (२।४।७७) एभ्यः सिचो लुक् स्यात्, गापाविह इणादेशपिबती गृह्यते। 'दाधा घ्वदाप्' (१।१।२०) दारूपा धारूपा धातवो 'घु' संज्ञा स्युः दाप्दैपौ वर्जयित्वा। 'लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः' (६।४।७१) एषु परेष्वङ्गस्य अडागमः स्यात् स चोदात्तो ङिच्च। इति धातोरडागमे अ + स्था + त् = अस्थात्। 'विभाषा घ्राधेट्शाच्छासः' (२।४।७८) घ्रा धेट् शो छो षो एभ्यः परस्य सिचो लुग् वा स्यात्। अघ्रासीत्। सिजलुगभावपक्षे—चतुर्थी विधा। इट्सकौ।

प्र. त् ।[१] ताम् ।[२] उस् ।[३] म. स् । तम् । त । उ. अम् । व । म ।

लुङि द्वितीया विधा—च्लेरङादेशेन ।[४]

प्र. अत् । अताम् । अन् । म. अस् । अतम् । अत । उ. अम् । अव । अम ।

लुङि तृतीया विधा—च्लेश्चङादेशेन ।[५]

प्र. अत् । अताम् । अन् । म. अस् । अतम् । अत ।

उ. अम् । अव । अम ।

लुङि चतुर्थी विधा—सगादेश[६] इडागमाभ्याम् ।

---

१ 'इतश्च' इति 'ति' इत्यस्यान्तलोपः ।

२ 'तस्थस्थमिपां—' (३ ।४ ।१०१) इति तामादेशः ।

३ 'सिजभ्यस्तविदिभ्यश्च' (३ ।४ ।१०९) सिचोऽभ्यस्ताद्विदेश्च परस्य ङित्सम्बन्धिनो झेर्जुस् स्यात् । 'आतः' (३ ।४ ।११०) सिज्लुकि आदन्तादेव झेर्जुस् स्यात् । अस्थुः । आदन्तभिन्नेभ्यस्तु अभूवन् इत्यादि ।

४ 'अस्यतिवक्तिख्यातिभ्योऽङ्' (३ ।१ ।५२) एभ्यश्च्लेरङ् स्यात् । 'लिपिसिचिह्वश्च' (३ ।१ ।५३) तथा 'पुषादिद्युताद्यॢदितः परस्मैपदेषु' (३ ।१ ।५५) श्यन्-विकरणपुषादेः द्युतादेः ॡदितश्च धातोः परस्य च्लेरङ् स्यात् परस्मैपदेषु । 'सर्तिशास्त्यर्तिभ्यश्च' (३ ।१ ।५६) एभ्यश्च्लेरङ् स्यात् । तथा च—अङादेशार्हा धातवस्तावत्— असु = क्षेपणे । वच् = परिभाषणे । ख्या = प्रकथने । लिप = उपदेहे । षिच = क्षरणे । ह्वेञ् = स्पर्धायां शब्दे च । दिवादौ पुष = पुष्टवित्यारभ्य गृधु = अभिकाङ्क्षायामित्यन्ताः ६४ धातवः पुषादयः । द्युतादयस्तु—भ्वादौ द्युत = दीप्तावित्यारभ्य कृपू = सामर्थ्ये इत्यन्ताः २३ धातवः । एषां 'द्युद्भ्यो लुङि' (१ ।३ ।९१) द्युतादिभ्यो लुङः परस्मैपदं वा स्यात् । इति परस्मैपदपक्षे अङ् । यथा—अद्युतत् । द्युतादीनामात्मनेपदपक्षे तु—इट् सिच्च । एकादशी विधा । अद्योतिष्ट । ॡदितस्तत्र तत्र द्रष्टव्याः । जौहोत्यादी गत्यर्थकौ ऋ सृ धातू शासु = अनुशिष्टौ च । इत्येतेभ्यो नित्यमङ् । 'इरितो वा' (३ ।१ ।५७) इरितो धातोश्च्लेरङ् वा स्यात् । जृस्तम्भुम्रुचुम्लुचुग्रुचुग्लुचुग्लुञ्चुश्विभ्यश्च' (३ ।१ ।९८) एभ्यः च्लेरङ् वा स्यात् ।

५ 'णिश्रिद्रुस्रुभ्यः कर्तरि चङ्' (३ ।१ ।९८) णिजन्तात् श्रयादिभ्यश्च च्लेश्चङ् स्यात् कर्त्रर्थे लुङि परे । 'चङि' (६ ।१ ।११) चङि परे अनभ्यासधात्ववयवस्य एकाचः प्रथमस्य द्वे स्तः अजादेस्तु द्वितीयस्य । स्रु = स्रवणे । द्वित्वम्—स्रु स्रु । 'हलादिः शेषः' (७ ।४ ।६०) सुस्रु अडागमः असुस्रु + अत् । 'अचिश्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ' (४ ।६ ।७७) श्नुप्रत्ययान्तस्य इवर्णोवर्णान्तधातोर्भ्रू इत्यस्य चाङ्गस्येयङुवङौ स्तोऽजादौ प्रत्यये परे । इति उवङ् । असुस्रुव् + अत् = असुस्रुवत् । 'विभाषा धेट्श्व्योः' (३ ।१ ।४०) आभ्यां च्लेश्चङ् वा स्यात् । धेट् = पाने—अदधत् । चङभावपक्षे प्रथमा विधा—अधात् । श्वयतेस्तु द्वितीया-षष्ठ्यावपि विधे ।

६ 'यमरमनमातां सक् च' (७ ।२ ।७३) एषां सक् स्यात् एभ्यः सिच इट् च परस्मैपदेषु । यथा—अयंसीत् ।

प्र. सीत् । सिष्टाम् । सिषुः । म. सीः । सिष्टम् । सिष्ट ।
उ. सिषम् । सिष्व । सिष्म ।
लुङि पञ्चमी विधा—क्सादेश[१] इडभावाभ्याम् ।
प्र. अत् । सताम् । सन् । म. सः । सतम् । सत ।
उ. सम् । साव । साम ।
लुङि षष्ठी विधा—अनिड्भ्यो धातुभ्यः सिजलोपाभावेन ।[२]
प्र. सीत् । स्ताम् । सुः । म. सीः । स्तम् । स्त ।
उ. सम् । स्व । स्म ।
लुङि सप्तमी विधा—सेड्भ्यो धातुभ्यः सिज्लोपाभावेन ।[३]
प्र. ईत् । इष्टाम् । इषुः । म. ईस् । इष्टम् । इष्ट । उ. इषम् । इष्व । इष्म ।

## (१०) लृङः[४] प्रत्ययाः

प्र. स्यत् ।[५] स्यताम्[६] स्यन् । म. स्यः । स्यतम् । स्यत । उ. स्यम् । स्याव । स्याम ।

## आत्मनेपदे

**१. लटः प्रत्ययाः**—प्र. त्रे ।[७] इते ।[८] अन्ते ।[९] म. से[१०] । इथे । ध्वे । उ. इ । वहे । महे ।
**२. लिटः प्रत्ययाः**—प्र. ए ।[११] आते । इरे । म. से । आथे । ध्वे । उ. ए । वहे । महे ।

---

१ 'शल इगुपधादनिटः क्सः' (३ ।१२ ।४५) इगुपधो यः शलन्तः तस्मादनिटः च्लेः क्सादेशः स्यात् । क्रुश = आह्वाने रोदने च । अक्रुक्षत् ।
२ सिज्लोपः, अङादेशः, चङादेशः, समागमः," क्सादेशः इति पञ्चविधास्वनन्तर्भूतेभ्यः अनिड्भ्यो धातुभ्यः इयं विधा भवति । 'वदव्रजहलन्तस्याचः' (७ ।२ ।३) वदेर्व्रजेर्हलन्तस्य चाङ्गस्याचः स्थानें वृद्धिः स्यात्सिचि परस्मैपदेषु । डुपचष् = पाके । अपाक्षीत्, अपाक्ताम् ।
३ आद्यासु पञ्चसु विधास्वन्तर्भूताः सेटो धातवोऽस्यां गण्यन्ते । षिधु = गत्याम् । असेधीत्, असेधिष्टाम् ।
४ 'लिङ्निमित्ते लृङ् क्रियातिपत्तौ' (३ ।३ ।१३९) हेतुहेतुमद्भावादिभविष्यत्यर्थे लृङ् स्यात् क्रियाया अनिष्पत्तौ गम्यमानायाम् ।
५ 'स्यतासी लृलुटोः' (३ ।१ ।३३) इति स्वः । 'इतश्च' (३ ।४ ।१००) इति इकारलोपः ।
६ 'तस्थस्थमिपाम्' (३ ।४ ।१०१) इति तामादेशः ।
७ 'टित आत्मनेपदानां टेरे' (३ ।४ ।९७) टितो लस्यात्मनेपदानां टेरत्वं स्यात् ।
८ 'सार्वधातुकमपित्' (१ ।२ ।४) इति ङिद्वत्त्वे 'आतो ङितः' (६ ।२ ।८१) अतः परस्य ङितामाकारस्य 'ईय्' स्यात् । आताम् इत्येतत् इय् + ताम् इति भवति । 'लोपो व्योर्वलि' (६ ।१ ।७६) वकारयकारयोर्लोपः स्याद् वलि । इति यलोपः । इताम् ततः टेरेत्वम् ।
९ 'झोऽन्तः' (७ ।१ ।३) इत्यन्तादेशः । टेरेत्वम् ।
१० 'थासः से' (३ ।४ ।८०) टितो लस्य थासः 'से' स्यात् ।
११ 'लिटस्तझयोरेशिरेच्' (३ ।४ ।८१) लिडादेशयोस्तझयोः एश् इरेच् एतौ स्तः ।

**३. लुटः प्रत्ययाः**—प्र. ता। तारौ। तारः। म. तासे। तासाथे। ताध्वे।[१] उ. ताहे।[२] तास्वहे। तास्महे।

**४. लृट् प्रत्ययाः**—प्र. स्यते।[३] स्येते[४]। स्यन्ते। म. स्यसे। स्येथे। स्यध्वे। उ. स्ये। स्यावहे।[५] स्यामहे।

**५. लोटः प्रत्ययाः**—प्र. ताम्।[६] इताम्। अन्ताम्। म. स्व।[७] इथाम्। ध्वम्। उ. ऐ।[८] आवहै। आमहै।

**६. लङः प्रत्ययाः**–प्र. त। इताम्।[९] अन्त। म. थास्। इथाम्। ध्वम्। उ. इ.। वहि। महि।

**७. विधिलिङः प्रत्ययाः**—प्र. ईत।[१०] ईयाताम्। ईरन्।[११] म. ईथाः। ईयाथाम्। ईध्वम्। उ. ईय।[१२] ईवहि। ईमहि।

**८. आशीर्लिङः प्रत्ययाः**—प्र. सीष्ट।[१३] सीयास्ताम्।[१४] सीरन्।[१५] म.

---

१ 'धि च' (८।२।२५) धादौ प्रत्यये परे सलोपः स्यात्।

२ 'ह एति' (७।४।५२) तासस्त्योः सस्य हः स्यादेति परे।

३ स्य + त = 'टित आत्मनेपदानां टेरे' (३।४।९७)।

४ स्य + आताम् 'आतो ङितः (७।२।८१) स्य इय् ताम् = 'लोपो व्योर्वलि' (६।१।७६) स्य इताम् = टेरेत्वम्। 'आद् गुणः' (६।१।८७) इति गुणः।

५ 'अतो दीर्घो यञि' (७।३।१०१)।

६ 'आमेतः' (३।४।९०) लोटः एकारस्याम् स्यात्। 'ते' इत्यत्र त्यस्य एकारस्य आम्भावे 'ताम्' इति भवति।

७ 'सवाभ्यां वामौ' (३।४।९१) सवाभ्यां परस्य लोडेतः क्रमात् व अम् इत्येतौ स्तः। 'से' इत्यत्र एकारस्य वकारे 'स्व' इति, 'ध्वे' इत्यत्र वकारात्परस्य एकारस्य अम्भावे 'ध्वम्' इति च भवति।

८ 'एत ऐ' (३।४।९३) लोडुत्तमस्य एत 'ऐ' स्यात्। 'आमेत' इत्यस्यापवादः।

९ 'आतो ङितः' (७।२।८१)।

१० 'लिङः सीयुट्' (३।४।१०२) लिङात्मनेपदस्य सीयुडागमः स्यात्। सीय् त इति भवति। 'लिङः सलोपोऽनन्त्यस्य' (७।२।७९) इति सलोपः। 'लोपो व्योर्वलि' इति यलोपः।

११ 'झस्य रन्' (३।४।१०५) लिङो झस्य रन् स्यात्।

१२ 'इटोऽत्' (३।४।१४६) लिङादेशस्य इटः अत् स्यात्। सीय् + इ = सीय् + अ = सकारलोपे वल्परत्वाभावात् यलोपाभावे ईय् इति भवति।

१३ 'लिङःसीयुट्' (३।४।१०२) 'सुट् तिथोः' (३।४।१०७) सीय् + स् + त = यलोपः। सीस् त = 'आदेशप्रत्यययोः (८।३।५१) इण्कवर्गाभ्यां परस्य अपदान्तस्य आदेशावयवश्च यः सकारः तस्य मूर्धन्यादेशः स्यात्। इति सुटः सकारस्य षत्वे ष्टुत्वे च 'सीष्ट' इति भवति।

१४ सीय् + आताम्। तकारात् प्राक् सुडागमे सीयास्ताम् इति भवति।

१५ 'झस्य रन्' सीयुट्। यलोपः।

सीष्ठाः।[१] सीयास्थाम्। सीध्वम्। उ. सीय। सीवहि। सीमहि।

**९. आत्मनेपदे लुङः प्रत्ययाः पञ्चविधाः**

लुङि प्रथमा विधा—च्लेरङादेशेन।[२]

प्र. त। इताम्। न्त। म. थास्। इथाम्। ध्वम्। उ. इ। वहि। महि।

लुङि द्वितीया विधा—च्लेश्चङादेशेन।[३] प्रथमावत्।

लुङि तृतीया विधा—अनिड्भ्यो धातुभ्यः[४] सिज्लोपाभावेन।

प्र. स्त। साताम्। सत। म. स्थाः। साथाम्। ध्वम्। उ. सि। स्वहि। स्महि।

लुङि चतुर्थी विधा—सेड्भ्यो धातुभ्यः[५] सिज्लोपाभावेन।

प्र. इष्ट। इषाताम्। इषत। म. इष्ठाः। इषाथाम्। इध्वम्।[६] उ. इषि। इष्वहि। इष्महि।

लुङि पञ्चमी विधा—क्सादेश ईडभावाभ्याम्।[७] प्र. सत। साताम्। सन्त। म. सथाः। साथाम्। सध्वम्। उ. सि। सावहि। सामहि।

**१०. लृङः प्रत्ययाः**—स्यत[८]। स्येताम्।[९] स्यन्त। म. स्यथाः। स्येथाम्। स्यध्वम्। उ. स्ये। स्यावहि। स्यामहि।

## भावकर्मणी

**'सार्वधातुके यक्'** (३।१।६७)— धातोर्यक् स्यात् भावकर्मवाचिनि सार्वधातुके परे।

**'भावकर्मणोः'** (१।३।१३)— एतयोर्विवक्षितयोः सतोः आत्मनेपदं स्यात्। भावार्थकलकाराणां युस्मदस्मद्भ्यां सामानाधिकरण्याभावात् प्रथमपुरुष एव। तिङ्वाच्यभावनाया लिङ्गसंख्यान्वयायोगात् एकवचनमेव। यथा—त्वया भूयते। मया भूयते। तेन तया तैर्वा भूयते इत्यादि। कर्मणि तु पुरुषत्रयं वचनत्रयमपि।

## हेतुमण्णिजन्ताः

**'तत्प्रयोजको हेतुश्च'** (१।४।५५)— कर्तुः प्रवर्तयिता हेतुसंज्ञः कर्तृसंज्ञश्च भवति। यथा—देवदत्तो गच्छति। गच्छन्तं देवदत्तं यज्ञदत्तः प्रेरयति। अत्र देवदत्तः कर्ता। तस्य

---

१ 'सीष्ट'वत्।

२ इयं द्वितीयायाः संवादिनी। तत्रोक्ताः सर्वे विधयोऽत्राप्यनुसन्धेयाः। यथा अवोचत। अवोचेताम्। अवोचन्त।

३ इयं तृतीयायाः संवादिनी। तत्रोक्तानि सर्वाणि सूत्राणि अत्राप्यनुसन्धेयानि। यथा—'गद व्यक्तायां वाचि' इत्यस्मात् णिचि, अजीगदत। अजीगदेताम्। अजीगदन्त।

४ इयं षष्ठ्याः संवादिनी। यथा—अपक्त अपक्षाताम् अपक्षत।

५ इयं सप्तम्याः संवादिनी। यथा—अबाधिष्ट अबाधिषाताम् अबाधिषत।

६ 'धि च' (८।२।३५) इति सलोपः।

७ इयं पञ्चम्याः संवादिनी। यथा—दिश = अतिसर्जने। अदिक्षत अदिक्षाताम् अदिक्षन्त।

८ 'स्यतासी—' (३।१।३३)

९ 'आतो ङितः' (७।२।८१) 'लुङ्लङ्लृङ्क्षु—' (६।४।७१)

प्रवर्तयिता यज्ञदत्तः हेतुसंज्ञो भवति कर्तृसंज्ञश्च।

**'हेतुमति च'** (३ ।१ ।२६)—प्रेरकव्यापारे प्रेषणादौ वाच्ये धातोर्णिच् स्यात्। णचावितौ। 'इ'मात्रं शिष्यते। यथा—गमि इति अयं णिजन्तो धातुः। तस्मात् शपि गमि अ इति स्थिते 'सार्वधातुके'—(७ ।३ ।८४) ति गुणे अयादेशे तिपि च 'गमयति' इति भवति। अत्र गमय इत्येतदङ्गम्।

**'णिचश्च'** (१ ।३ ।७४)— णिजन्ताद्धातोरात्मनेपदं स्यात्कर्तृगामिनि क्रियाफले। गमयते इत्यपि। गमि इत्यस्य अनेकाल्त्वात् लिटि आम्प्रत्ययकृभ्वस्त्यनुप्रयोगाभ्यां रूपनिष्पत्तिः। गमयाम्बभूव। गमयाञ्चकार। गमयामासेत्यादि। लुङि—तृतीयाद्वितीये विधे। अजीगमत्—अजीगमत।

## अथ सन्नन्ताः

**'धातोः कर्मणः समानकर्तृकादिच्छायां वा'** (३ ।१ ।७)— इषीकर्मीभूतव्यापारवाचकाद्धातोः सन् प्रत्ययो वा स्यात् इच्छायाम्। 'आर्धधातुकं शेषः' (३ ।४ ।११४) इति सन आर्धधातुकत्वम्। 'आर्धधातुकस्येड् वलादेः' (७ ।२ ।३५) इति इटि, 'इस' इति भवति। पठितुमिच्छति इत्यर्थे पठ् इस इति स्थिते 'सन्यङोः' (६ ।१ ।९) सन्नन्तस्य यङन्तस्य च प्रथमैकाचो द्वे स्तः अजादेस्तु द्वितीयस्य। लिटि उक्ताः सर्वेऽपि विधयोऽत्र ग्राह्याः। पठ् पठ् = पपठ् इस इत्यत्र 'सन्यतः' (७ ।४ ।७९) अभ्यासस्यात इकारः स्यात् सनि। पिपठिस, षत्वं 'पिपठिष, इत्यङ्गम् + ति पिपठिषति पठितुमिच्छति इति वाक्यं वा। 'पूर्ववत्सनः' (१ ।३ ।६२) सनः पूर्वो यो धातुस्तेन तुल्यं सन्नन्तादप्यात्मनेपदं स्यात्। सनः पूर्वो धातुः परस्मैपदं चेत् सन्नन्तात् परस्मैपदं भवति।

## अथ यङन्ताः

**'धातोरेकाचो हलादेः क्रियासमभिहारे यङ्'** (३ ।१ ।२२)— पौनःपुन्ये भृशार्थे च द्योत्ये एकाचो हलादेर्धातोर्यङ् स्यात्। पुनः पुनर्भवति इत्यर्थे भूधातोः यङ् भवति। 'सन्यङोः' (६ ।१ ।९)इति द्वित्वम्। जश्त्वम्। बूभूय इति जाते,'गुणो यङ्लुकोः' (७ ।४ ।८२) अभ्यासस्य गुणः स्याद्यङि यङ्लुकि च। 'बोभूय' इत्यङ्गम्। ङित्वात्तङ्। बोभूयते बोभूयेते। इत्यादि। धातोरनेकाच्त्वात्। लिटि तृतीया विधा।

## अथ यङ्लुगन्ताः

**'यङोऽचि च'** (२ ।४ ।७४)— यङोऽच् प्रत्यये परे लुक् स्यात्। चकारान्निमित्तं विनापि लुक्। चर्करीतं परस्मैपदमदादिवच्च इति परस्मैपदप्रत्यया एव। अदादाविव शपो लुक्। प्रत्ययलक्षणेन यङन्तत्वात् द्वित्वम्। अभ्यासकार्यम्। धातुत्वाल्लडादयः।

इति पूर्वपीठिका।

# प्रकरण-सूची





# सङ्केत-निर्देशः

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| लट् | — | १ | आत्म. | — | आत्मनेपदम् |
| लिट् | — | २ | पर. | — | परस्मैपदम् |
| लुट् | — | ३ | उभय. | — | उभयपदम् |
| लृट् | — | ४ | अक. | — | सकर्मकः |
| लोट् | — | ५ | सक. | — | सकर्मकः |
| लङ् | — | ६ | प्र. | — | प्रथमपुरुषः |
| विधिलिङ् | — | ७ | म. | — | मध्यमपुरुषः |
| आशीर्लिङ् | — | ८ | उ. | — | उत्तमपुरुषः |
| लुङ् | — | ९ | अनि. | — | अनिट् |
| लृङ् | — | १० | से. | — | सेट् |

